ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

सार्वदेशिक साप्ताहिक



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का मुख पत्र

वेदामृत

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व
उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।
यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
यजु० २५।१३

भावार्थ—जो पूर्ण परमात्मा
अपने भक्तों को अपना ज्ञान और
बल प्रकार से सब प्रदान करता
है सब विद्वान् लोग जिसकी
उपासना करते हैं और
उसकी ही वैदिक आज्ञा को
परोपकार मानते हैं, जिसकी
उपासना करना मुक्तिदायक है,
जिसकी भक्ति न करना बारम्बार
नाश है, अनेक जन्ममरणादि
कष्टों का देने वाला है। इसलिये
हमें प्रभु से हमें कभी विमुख न
होना चाहिये।

सम्पादक—
ओम्प्रकाश पुरुषार्थी

विदेशी धन के बल पर धर्म परिवर्त्तन का कुचक्र

भारतका नक्शा बदलने का घृणित षड़यंत्र

रामनाथपुरम के हरिजनो को अरब देशो मे
75 17 12 83 भेजने की योजना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के— पुस्तकालय गुरुकुल

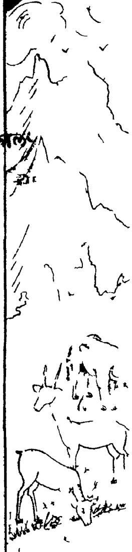
प्रधान	श्री रामगोपाल जी शालवाले
उपप्रधान	श्री राचन्द्रराव वन्देमातरम्
मन्त्री	श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी

श्री दयाचन्द मल्होत्रा, डा० अमरेश आर्य एवं
श्री नारायण स्वामी का तमिलनाडु के
रामनाथपुरम् के

देहाती क्षेत्रों का व्यापक दौरा

4, 6, 18, 20 रहस्यपूर्ण विस्तृत रिपोर्ट की
30, 32, 40, 30
41, 43, 44, 49, 50 प्रतीक्षा कीजिए ।

पृथ्वीराज शास्त्री
कार्यालय सचिव



मुद्रक—रघुनाथप्रसाद पाठक दूरभाष—२७४७७१ वर्ष १९ अङ्क ११ दयानन्दाब्द १५९ मार्गशीर्ष शु० ७ सं० २०४० ११ दिसम्बर १९८३ रविवार
सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०८४ वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति ४० पैसे [विदेश मे दो पौंड डाक खर्च अतिरिक्त] विदेश के लिए आजीवन सदस्यता का नियम नहीं है

महर्षि दयानन्द शताब्दी समारोह पलवल तेरह नवम्बर को सानन्द सम्पन्न

पलवल १३ नवम्बर

महर्षि दयानन्द शताब्दी समारोह बडे ही उत्साहपूर्ण वातावरण मे श्रद्धानन्द आर्य वीर व्यायामशाला मे धूमधाम के साथ मनाया गया।

सारे क्षेत्र से लोग ट्रेक्टो, मोटर साइकिलों और गाडियो पर ओ३मध्वज फहराते हुए शताब्दी समारोह स्थल मे जयघोष गुजाते भारी सख्या मे पहुचे।

स्थानीय शिक्षण सस्थाओ मे, दयानन्द हाई स्कूल, गुरुकुल गदपुरी, कन्या गुरुकुल हसनपुर के नाम विशेष कौशल के कारण उल्लेखनीय रहे।

इस अवसर पर राज्य स्तरीय मन्त्री, समाज शास्त्रियो और समाज सेवियो ने अपनी-अपनी श्रद्धाजलि महर्षि को प्रभावोत्पादक ढग से प्रस्तुत करते हुए उन्हे राष्ट्र-निर्माता घोषित किया और कहा कि वह स्वराज्य को सुराज मे बदलने के आकाक्षी थे। स्वप्न द्रष्टा थे।।

इस अवसर पर आर्य समाज के विभिन्न आन्दोलनो जैसे निजाम हैदराबाद, सत्याग्रह सिंध सत्याग्रह हिन्दी आन्दोलन, गौरक्षा आन्दोलन मे सक्रिय भाग लेने वाले पुरोधाओ को सम्मानित किया गया तथा समयोचित महर्षि दयानन्द पुष्पाजलि ग्रन्थ का विमोचन किया गया।

—लक्ष्मीचन्द मन्त्री
श्रद्धानन्द नगर पलवल

प्रान्तीय संचालक का दौरा सम्पन्न

पश्चिम उत्तर प्रदेश आर्य वीर दल के प्रान्तीय सर सचालक डा० बाल कृष्ण आर्य विकल ने बिन्दकी सितम्बर मे, घाटमपुर कुवाखेडा सुमेरपुर, पचरी हमीरपुर आदि स्थानो का दौरा किया। हमीरपुर मण्डल के सचालक श्री रामगोपाल आर्य ने पचरी मे सचालक जी का भव्य स्वागत किया और उनका परिचय आर्यजनो को दिया। इसके बाद सचालकजी के चार जोशीले बौद्धिक आर्य वीरो के बीच हुए जिनका आर्य वीरो पर अच्छा प्रभाव पडा। हर शाखा मे ४० से ५० आर्य वीर प्रतिदिन आते हैं।

—आर्यप्रकाश आर्य कार्यालय मन्त्री

समाचार

सीतापुर—आर्य वीर दल सीतापुर की वर्ष १९८३ ८४ की कार्यकारिणी समिति के पदाधिकारी तथा सदस्य—नगर सचालक श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य, नगर उप सचालक श्रीकृष्ण कुमार आर्य, नगर मन्त्री श्रीहरिश्चद्र नगर उप मन्त्री श्री दिनेश कुमार गुप्त, कोषाध्यक्ष श्री गोपी कृष्ण आर्य बौद्धिक शिक्षक श्री सन्तोष कुमार आचार्य, शाखा सचालक श्री किशोर कुमारसिंह तथा श्री जगदीशसिंह, श्री चादवेग, श्री प्रदीप कुमारसिंह एव रूप किशोर की सदस्यरूप नियुक्तिया जिला सचालक श्री वीरेन्द्र कुमार जिला सचालक द्वारा की गई।

नव गठित समिति ने अजमेर (राजस्थान) मे होने वाले महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह मे जनसेवा सुरक्षा कार्य के लिए अपने १५ आर्य वीर स्वय सेवको को भेजने का निश्चय किया था।

—वीरेन्द्र कुमार, जिला सचालक
आर्य वीर दल सीतापुर

डा० भवानीलाल भारतीय द्वारा लिखित स्वामी दयानन्द की शोधपूर्ण जीवनी का विमोचन

—अजमेर ४ नवम्बर आर्य समाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी पर डा० भवानीलाल भारतीय द्वारा डेढ लाख की लागत से प्रकाशित "नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती' शीर्षक ६५० पृष्ठो मे समाप्त जीवन चरित का विमोचन राजस्थान के मुख्य मन्त्री श्री शिवचरण माथुर के कर कमलो से सम्पन्न हुआ। प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी को इस ग्रन्थ की प्रति सादर भेंट की गई। डा० भारतीय ने यह जीवन चरित अपने वर्षो के अध्ययन, अनुसधान, तथा गवेषणा के पश्चात लिखा है।

साहित्य समीक्षा

स्वर सिद्धान्त

लेखक—श्री सोमदेव शास्त्री

पृष्ठ ११५
आकार डिमाई (बडा) आवरण आकर्षक सजिल्द
मूल्य २४) रुपये

आचार्य सोमदेव शास्त्री ने वैदिक और लौकिक सस्कृत भाषा मे स्वरो के सिद्धान्त को कुशलता से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है अपने प्राक्कथन मे लेखक ने स्वर सिद्धान्त विषय को स्वय गम्भीर विषय स्वीकारा है और 'यथेन्द्र शत्रु स्वरतोऽपराधात्' उदाहरण प्रस्तुत करके इस रचना की उपयोगिता को भी पाठको विशेषकर वैदिक साहित्य के अनुशीलन कर्त्ताओ के लिए आवश्यक माना है नि:सन्देह वेदार्थ मे रुचि रखने वाले तथा वैदिक साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन करने वाले अध्येताओ के लिए यह पुस्तक उपादेय है।

आर्य समाज मन्दिर सान्ताक्रुज (बम्बई) ने लेखक को और उनकी कृति को सहयोग देकर प्रशसनीय कार्य किया है अधिक अच्छा होता यदि मूल्य के अनुरूप छपाई और कागज भी अच्छा ही प्रयुक्त किया गया होता।

—रमेशचन्द्र शास्त्री

मेरी युरोप यात्रा (सचित्र)
लेखक—रामाज्ञा वैरागी
वैरागी कुटीर कलमबाग चौक मुजफ्फरपुर (बिहार)
प्राप्ति स्थान—अजन्ता लाज रक्सौल (बिहार)
मूल्य—२०)
२०×३०/१६ पृ० १४४
भूमिका लेखक—श्री सत्यकेतु विद्यालकार नई दिल्ली

यह पुस्तक श्री रामाज्ञा की युरोप यात्रा के सस्मरणो का सग्रह है जिनसे समुचित रूप से लाभ उठाया जा सकता है और उठाया जाना चाहिए।

यह पुस्तक आर्य प्रचारको एव आर्य नेताओ की विदेश यात्राओ के विवरण ग्रन्थो मे एक अच्छी अभिवृद्धि है।

— रघुनाथ प्रसाद पाठक

चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ गुरुकुल गौतम नगर में आयोजित

नई दिल्ली, श्रीमद् दयानन्द वेद विद्यालय ११९ गौतमनगर में २६-११-८३ को चतुर्वेद पारायण महायज्ञ के शुभारम्भ की पावन बेला मे श्रद्धेय श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती के कर कमलों द्वारा नव निर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ध्वजारोहण श्री स्वामी ओमानन्दजी सरस्वती के करकमलो से हुआ तथा यज्ञ के ब्रह्मा का आसन स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती ने अलकृत किया।

इस समारोह मे चौधरी दिलीपसिंह (प्रधान वेद विद्यालय) डा० लोकेशचन्द्र (सदस्य राज्य सभा) प्रोफेसर शेरसिंह पण्डित क्षितीशकुमार वेदालकार, श्री मनोहर विद्यालकार आदि विद्वानो ने यज्ञ प्रेमियो को सम्बोधित किया। यह १८ १२-८३ तक निरन्तर चलता रहेगा। ११-१२-८३ को साय ५ बजे श्री लाला रामगोपाल जी (प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) सभी यजमानो एव श्रोताओ को सम्बोधित करेगे। स्मरण रहे यज्ञ का समय प्रात: ६ से ९ बजे और साय ३ से ६ बजे तथा रात्रि को ७॥ से ९ बजे तक प्रतिदिन प्रवचन होता है। आप यथा समय पधारने की अनुकम्पा करे।

—हरिदेव आचार्य

सम्पादकीय

श्री बी. के. नेहरू की आरक्षणों विषयक आपत्तियों पर प्रतिक्रिया

सहयोगी हिन्दुस्तान टाइम्स (३०-१०-८३) ने श्री बी के नेहरू की आरक्षणो (परिगणित, अनुसूचित एव जन जातियो के लिए नियत) विषयक आशकाओ, आपत्तियो एव वेदनाओ पर अपनी प्रतिकूल प्रतिक्रिया व्यक्त करते और यह दिखाते हुए कि आरक्षण हरिजनो के लिए कोई खैरात न होकर अधिकार है उनका समर्थन किया है। यह भी स्पष्ट किया है कि सरकारी सर्विसों मे कार्यकुशलता और सुचारुता के ह्रास के कारण कोई और ही हैं आरक्षण नही हैं क्योकि इनसे लाभान्वित हुए सरकारी नौकरियो मे हरिजनो आदि का अनुपात बहुत कम है।

इन वैधानिक सरक्षणो की अवधि के विषय मे सहयोगी की मान्यता यह है कि जबकि हमारे समाज मे सामाजिक व्यवस्था एव परम्पराए जन्मना जात पात के र ग मे र गी हो और हमारी राजनीति जात पात और मजहब की लानत से विकृत हो तब तक अवधि की सीमा का निर्धारण सभव प्रतीत नही होता।

आरक्षण वा सरक्षण सहयोगी की दृष्टि मे, उच्च वर्गों की उदारता की देन नही है अपितु इनके अस्तित्व के मूल मे वर्तमान राजनीति है जिसने हरिजनो को आरक्षणो के रूप मे एक हथियार उपलब्ध कराया है।

सहयोगी हिन्दू (मद्रास) ने (१९ ११ ८३, अपने सम्पादकीय मे श्री नेहरू के पक्ष का समर्थन किया था। उस पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए श्री स्वामी नाथन लिखते है —

'निश्चय ही भूमण्डल के सभी पिछडे वर्ग सामाजिक और आर्थिक सहायता के पात्र हैं। इस सम्बन्ध मे दो मत नही हो सकते। अब जात पात और मजहब पर आधारित आरक्षण प्रणाली ऊल जलूल ढग से व्यवहृत होती है तब वह एक सामाजिक समस्या बन जाती है। इसमे बौद्धिक प्रतिभा और योग्यता को समुचित मान्यता न मिलने का सबसे बडा खतरा निहित रहता है। भारत जैसे विकास शील समाज को स्वस्थ आरक्षण प्रणाली को अपनाना चाहिए जिसके अन्तर्गत बचपन से ही पिछडे वर्गो की समानता के आधार पर नि शुल्क शिक्षा दीक्षा सुधार रक्षा, सहायता और प्रोत्साहन की व्यवस्था हो।

संसद और भिंडरावाले

नवभारत टाइम्स (५-१२-८३) लिखता है—

पजाब और असम दोनो राज्यो मे केन्द्र सरकार शायद इस नतीजे पर पहुची है कि चाद को ज्मीन पर लाने की असभव माग उग्रवादी लोग रख रहे हैं। यह एक ऐसी माग है जिस पर बात चीत बेकार है क्योकि चाद खिसक कर आधी दूर भी नही आ सकता। अत इसके अलावा कोई चारा नहीं है कि आन्दोलन को होने दिया जाए ताकि उबाल की सीमा तक खदबदाने के बाद वह अपने आप ठ डा पड जाए।

यह रणनीति कई बार सही साबित हुई है, लेकिन क्या वह पजाब मे भी सही साबित होगी ? यदि सिख आन्दोलन को चलने दिया गया, तो क्या वह अपने आप ठ डा पड जाएगा ? यदि वह ठ डा पडने वाला है तो क्या उत्तरी आयर लैंड की तरह बरसो तक उसे उबलने दिया जाए या वहा समझौता कर लिया जाए ? जाहिर हैं कि दिल्ली मे कोई सरकार भारत की एकता और अखण्डता की कुर्बानी देकर समझौता नही कर सकती। वह ऐसा कोई समझौता भी नहीं कर सकती जिसमे केन्द्र की सत्ता खोखली, दिखनौटी और एक धक्के से ढह जाने वाली बन जाए, और राज्य लगभग सर्वशक्तिमान हो जाए। तब रास्ता एक ही बचता है। पजाब मे जो भी सरकार बनें, वह अकालियो के सहयोग से ही बनें। अर्थात अकाली दल को सदा के लिए सिखो का एकमात्र प्रवक्ता मान लिया जाए। जिस काग्रेस ने मुस्लिम लीग को मुसलमानो का एकमात्र प्रवक्ता नही माना, वह आसानी से यह समाधान स्वीकार नही कर सकती, क्योकि यह एक साम्प्रदायिक समाधान है। हा, भारत को टूटता देखने के बजाय अकाली, काग्रेस गठबन्धन का विकल्प लाख गुना बेहतर है। लेकिन क्या आज के माहौल मे कोई अकाली नेता काग्रेस से सहयोग का जोखिम उठा सकता है ?

रास्ता समझौते का हो, चाहे सख्ती और दमन का, जरनैलसिंह भिंडरावाले का दोनो स्कीमो मे कोई स्थान नही हो सकता। यदि अकाली दल से दोस्ती करनी है तो यह जरूरी है कि भिंडरावाले का उग्रपथी नासूर पहले रास्ते से हटाया जाए। और यदि पुलिस के तरीको से शाति कायम करनी हैं, तो सबसे पहले यह भ्रांति खत्म करनी होगी, कि गुरु नानक निवास एक पृथक राष्ट्र है, जिसका झण्डा अलग है, जिसका सरगना अलग है जहा भारत के कायदे कानून नही चलते, और जहा किसी भी हिंसा या अपराध के बाद आप आराम से शरण ले सकते हैं। यदि भारत सरकार इस मामले मे सख्त हो जाए, तो शायद लाखो सिख भी राहत की सास लेगे, जो आज प्रति हिंसा के डर से अपना मु ह नही खोल सकते। जरनैलसिंह भिंडरावाले ने किसी भी सिख का नरमपथी होना मुश्किल बना दिया है। क्या भारत सरकार ऐसे कदम नही उठा सकती, जो सिखों को अपनी खोई हुई जबान दे सके। गुरु नानक निवास को भारत का अ ग बनाए रखने का साहस यदि हमने आज नही दिखाया तो खतरा है कि कल पजाब को भारत का अ ग बनाए रखना मुश्किल हो जाए। यह काम शान्ति से हो तो बहुत ही स्वागत योग्य है वर्ना अन्य तरीके भी निश्चय ही सोचे जाने चाहिए। यदि ऐसा नही किया तो प्रतिदिन यह काम ज्यादा मुश्किल होता जाएगा। जिस दिन एक डी आई. जी की हरमन्दिर साहब मे हत्या हुई उस दिन गुरु नानक निवास मे छिपे अपराधियो को पकडना क्या आज की तुलना मे अधिक आसान प्रतीत नही होता ?

जिम्मेवारी के साथ संतानोत्पत्ति की जाय पोप पाल का आदेश

परिवार और समाज को स्वस्थ सुदर, सुयोग्य सदाचारी और सुसस्कृत सदस्य प्रदान करने तथा अपने पैतृक एव नैतिक ऋण से उऋणहोने के निमित्त आर्य धर्म और सस्कृति मे स यम द्वारा सन्तानोत्पत्ति तथा परिवार नियोजन का विधान किया गया है। कृत्रिम साधनो से सन्तति निग्रह मे जहा स्वास्थ्य तथा नैतिकता विघातक अनेक खतरे हैं वहा समाज को सुयोग्य सदस्यो से वचित रह जाने का भी सबसे बडा वास्तविक खतरा समाज शास्त्रियो द्वारा निर्दिष्ट किया गया है। प्रसन्नता है दश-देशान्तर के धर्म और समाज के विज्ञ हितैषी और कर्णधार आर्य समाज की इस मान्यता को मान्य करते रहे हैं और अनुभवो के आधार पर कुछेक इसे मान्यता देने के लिए अब विवश भी होते देख पड रहे है।

रूटर द्वारा ६-१०-१९८३ को वेटिकन सिटी (रोम कथोलिक ईसाइयो का मुख्यतम हैडक्वार्टर) से प्रसारित एक समाचार को पढकर बडी प्रसन्नता हुई। श्रीयुत पोपजौन पाल ने ३८ जोडो के सामूहिक विवाह सस्कार के अवसर पर चर्च द्वारा निर्दिष्ट स्वाभाविक सन्तति निग्रह का समर्थन करते हुए वर वधुओ को उपदेश दिया कि उन्हे सन्तानोत्पत्ति के सन्दर्भ मे माता पिता के रूप मे सन्तान और समाज के प्रति अपनी उत्तरदायिता को सामने रखना चाहिए।

सामयिक चर्चा—

गलत कार्यवाही

यदि श्री हरचन्दसिंह लागोवाल की यह धारणा रही है कि राष्ट्रमंडल शासनाध्यक्षों के प्रति उनकी वेदना पूर्ण अपील अकाली या सिख वर्ग के हित मे सहायक सिद्ध होगी तो निश्चय ही यह गलत थी, उल्टे इससे लोगो की इस धारणा की पुष्टि हो सकती है वाहो रही है कि अकाली मोर्चे को बाहरी प्रेरणा और सहायता प्राप्त है।

पिछले बुधवार को उनके द्वारा प्रचारित ४ पृष्ठो की अपील में कहा गया है कि सिखो के दमन की निर्दय प्रक्रिया जारी है। उन्होने सिखो की स्थिति की उन यहूदियो के साथ तुलना की है जो हिटलर द्वारा सताए गए थे।

श्री लोंगोवाल ने दिल्लीमे उपस्थित शासनाध्यक्षो से तथा उनके प्रतिनिधियो से अपील की है कि वे उन सिखो की रक्षा करे जिनके हृदय मे सदा ही कौमी स्वतन्त्रता की भावनाए दृढ मूल रही है।

इस प्रसग में अनेक विश्व राष्ट्र प्रेमियो की जो प्रतिक्रिया प्रकाश मे आई है वा आ रही है उनसे स्पष्ट है कि बहुसख्य सिख बन्धुओ की दृष्टि मे श्री लौंगोवाल के आरोप न केवल हास्यास्पद ही है अपितु देश द्रोहात्मक भी हैं। अन्यो के समान उन पर यह सस्कार पडे बिना न रहेगा कि अकाली आन्दोलन को अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप देने वा भारत सरकार पर दबाव डालने का यह अवाछनीय एव असफल प्रयास है।

पिछले गुट निर्पेक्ष राष्ट्रो के सम्मेलन के और एशियायी खेलो के अवसर पर भी इसी प्रकार के असफल प्रयत्न किये गए थे।

श्री लोगोवाल यह देखने का अनुभव करते प्रतीत नही होते कि उनके इस प्रकार के प्रयास वा प्रचार से अकाली उग्रवादियो को उनके बाहरी तत्वो को ही प्रोत्साहन मिलेगा साथ ही पजाब मे साम्प्रदायिक भावनाओ को उत्तेजना मिलेगी जिसका स्वरूप हिंसा और आतकवाद से विकृत हुआ है। यदि उग्रवादियो के दबाव या उन्हे खुश करने के लिए उनके द्वारा यह कार्य किया गया है तो यह दुर्भाग्यपूर्ण ही कहा जा सकता है।

निरकारी बाबा (अप्रैल १९८०) की हत्या के मुख्य अपराधी रणजीतसिंह की अभी हाल मे गिरफ्तारी की गई है। हिंसा और अन्य कई सगीन अपराधो केलिए जिम्मेवार अनेक वाछित व्यक्तियो मे से यही पहली गिरफ्तारी है।

केन्द्रीय गृहमन्त्री ने अभी हाल मे लोक सभा मे ४५ वाछित व्यक्तियो की लिस्ट प्रस्तुत की थी जिनके गिरफ्तारी और कानूनी कार्यवाही से बचनेके लिए स्वर्णमदिर मे छुपे होने का विश्वास किया जाता है। इनमे से कुछेक के स्वर्ण मन्दिर मे वा उसके बाहर घूमने फिरने के सदर्भ मे काफी साक्षियो का उपलब्ध होना भी इगित किया जा रहा है और रणजीतसिंह की गिरफ्तारी ठोस साक्षी के रूप मे प्रस्तुत की जा रही है।

दयानन्द ने १८५७ की क्रान्ति में भाग नहीं लिया था

श्री बी०ऐस० हिरण्मय लिखते हैं (ओर्गनाजर २९-११-८३) १३ नवम्बर ८३ के ओर्जेनाइजर मे श्री प्रताप नारायण मिश्र का एक लेख छपा था जिसमें यह दिखाया गया था कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अग्रेजो के विरुद्ध १८५७ के विद्रोह का नेतृत्व किया था। परन्तु दुर्भाग्य से श्री मिश्र ने जो प्रमाण प्रस्तुत किए हैं वे विश्वसनीय नहीं है।

स्वामी दयानन्द कभी भूमिगत (छुपना) हुए होगे यह कहना हास्यास्पद है। यह महान् ऋषि सिंह जैसा साहसी था। कोई भी कठिनाई उसके मार्ग में बाधक नहीं हुई। वह सदैव धर्म की रक्षार्थ प्राण विसर्जन करने के लिए सन्नद्ध रहता था। उनके अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पर सरसरी दृष्टि डालने से ही यह बात स्पष्ट हो जाती है कि स्वामी जी स्पष्ट वक्ता और निर्भय थे। गोपनीयता नाम की कोई वस्तु होती है यह जानते तक नहीं थे।

केवल इस आधार पर कि स्वामी दयानन्द सरस्वती विदेशी शासन के विरुद्ध थे उन्होने १८५७ की क्रान्ति मे भाग लिया था, सोचना भयकर भूल होगी। निस्सन्देह महान् ऋषि मातृभूमि की स्वतन्त्रता के इच्छुक थे। परन्तु उनका दृष्टिकोण विशाल और प्रथमत. आध्यात्मिक था। विशुद्ध रूप मे वे वैदिक धर्म और वैदिक सस्कृति की पुनर्स्थापना के लिए ही देश की राजनीतिक स्वतन्त्रता के अभिलाषी थे। आर्य सचित और आर्य चरित्र की सस्थापना पर ही स्वामी दयानन्द की प्रवृत्तिया और प्रगतिया केन्द्रित थी। दयानन्द हिन्दू कहे जाने वाले धर्म के लिए वहीं थे जो ईसाइयत के लिए लूथर थे परन्तु दयानन्द का दृष्टि बिन्दु अधिक विशुद्ध और विशाल था और ध्येय उच्चतर था।

दलित वर्ग में प्रचार

सार्वदेशिक सभा की अन्तरग ने अपनी बैठक १९७२ मे आर्य समाज स्थापना शताब्दी के सदर्भ मे जो कार्यक्रम बनाकर समाजो मे प्रचारित किया था उसमे निहित दलितोद्धार एव अस्पृश्यता निवारण के लिए निम्नलिखित कार्यक्रम निर्धारित किया गया था।—

"दलितोद्धार आर्य समाज के कार्यक्रम का प्रमुख अग रहा है परन्तु कुछ समय से इस कार्य में शिथिलता आ गई है जिसके परिणाम स्वरूप दलित वर्ग मे एक विशेष प्रतिक्रिया का उदय हो रहा है इसलिए प्रत्येक आर्य समाज का कर्तव्य है कि -

१—वह अपने आर्य समाज मे अधिक से अधिक दलित वर्ग के लोगो को सदस्य बनाये।

२—प्रति सप्ताह दलितो मुख्यत. अस्पृश्य कहे जाने वालो में साप्ताहिक सत्सगो का आयोजन कर।

३—उनके अन्दर रात्रि पाठशालाओ, औषधालयो आदि के द्वारा सेवा कार्य करे।

४—अपने वार्षिक उत्सवो पर प्रीतिभोजो का अवश्य आयोजन करे।

५—प्रत्येक आर्य समाज अपने व्यय से कम से कम एक अस्पृश्य कहे वाले बच्चे को किसी गुरुकुल में पढने भेजे ताकि उनमे अपने पक्ष के समर्थक नेता बन सकें।

६—जन्मगत् जाति-पाति व छूत-छात विरोधी साहित्य तैयार करा के जनता मे वितरित कराना चाहिए।

७—अन्तर्जातीय विवाहो और मुख्यत. अस्पृश्य कहे जाने वालो के साथ वैवाहिक सम्बन्ध गुण, कर्म व स्वभाव का ध्यान रखते हुए किये जाय। ऐसे विवाह करने वाले नवयुवक नवयुवतियो का सार्वजनिक सम्मान करना चाहिये।

८—यथा सम्भव अपने यहा घरेलू कार्यों के लिए उनको ही अवसर दिया जाये।

९—अस्पृश्य कहे जाने वालो के विवाह वैदिक रीति से कराये जायें और आर्य जनो को उनमे भाग लेना चाहिये।

१०—अस्पृश्य कहे जाने वालो पर सवर्णों द्वारा किये जा रहे अत्याचारो व अन्यायो के निराकरण मे आर्य समाज को उनके रक्षार्थ सहयोग देना चाहिए। जैसा कि वह देता आ रहा है।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

महर्षि दयानन्द का वार्त्तालाप और उपदेश

ईश्वर पाप क्षमा नहीं करता

भाद्र पद शुक्ल नवमी को 'ईश्वर पाप क्षमा भी करता है' इस विषय पर महाराजका बरेलीमे पादरी स्काट के साथ सवाद प्रारम्भ हुआ। पादरी महाशय ने पूर्व पक्ष स्थापन करते हुए कहा 'मेरी यह प्रतिज्ञा नहीहै कि ईश्वर सजा नहीं देता। वह सजा तो अवश्य देता है परन्तु देता है समयानुसार और उचित रीति से। वह मनुष्य की भलाई के लिए पाप क्षमा भी कर देता है। जब वह पूर्ण है, सगुण है और चेतन है तो हमे समझना चाहिए कि वह हमे देखता है और हमारी चिन्ता भी करता है। ईश्वर की और हमारी समानता अवश्य है। बहुधा जीव और ईश्वर के गुण मिलते हैं। इससे हमे समझना चाहिए कि ईश्वर के साथ भी हमारा वैसा ही सम्बन्ध है जैसा हमारे सम्बन्धियो के साथ। वेद आदि सभी धार्मिक ग्रन्थ ईश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध राजा-प्रजा और पिता पुत्र का वर्णन करते हैं। उनके इस कथन में अवश्यमेव यह बात समाई हुई है कि परमात्मा भी राजा और माता-पिता के तुल्य ही व्यवहार करता है यद्यपि राजा और माता-पिता सजा देते हैं परन्तु उनका इसमें यही आशय होता है कि ये लोग सुधर जाय। यदि वे समझे कि सुधार क्षमा से हो सकता है तो वे क्षमा भी कर देते हैं।"

स्वामी जी ने पादरी महाशय के पक्ष का प्रतिवाद करते हुए कहा—"यह कहना कि परमेश्वर क्षमा कर देता हैं और दण्ड भी देता है परस्पर विरुद्ध है। क्या वह आधे कर्मों के लिए दण्ड देता और आधे कर्म क्षमा कर देता है अथवा कुछ न्यूनाधिक। जैसे हममे ज्ञान और न्याय आदि गुण हैं क्या वैसे ही ईश्वर मे है ?

मैं भी मानता हू कि ईश्वर के साथ हमारा राजा और पिता के समान सम्बन्ध है, परन्तु वह अन्याय के लिए नहीं है। ईश्वर में अन्याय नही है इसलिए वेदादि शास्त्रो मे पाप का क्षमा करना नहीं कहा। ईश्वर पाप क्षमा कर देता है यह मानने से वह पाप का बढ़ाने वाला सिद्ध हो जाता है। क्षमा की आड मे पापी जन पाप कर्म करने मे उत्साहित हो जाते हैं। परमात्मा सर्वज्ञ है इसलिए उसके कर्मों में भूल और भ्रान्ति नही होती। वह अपने स्वभाव से उल्टा कार्य भी नही करता। न्याय उसका स्वाभाविक गुण है। इससे उल्टा कर्म क्षमा कर देना भला वह कब करने लगा? परमात्मा दयालु है यह ठीक है परन्तु उसका न्याय और दया एक ही प्रयोजन को सिद्ध करते हैं। यदि एक डाकू को क्षमा कर दिया जाय तो वह कर्म दया मे नही गिना जायेगा। वह सहस्रो मनुष्यो की हत्या करने वाला दस्यु क्षमा प्राप्ति के अनन्तर चौगुने साहस से भ्रूण हत्या तक करने लगेगा। ईश्वर की दया का जो अर्थ पादरी महाशय ने समझा है वह ठीक नहीं।"

अब मुंशीराम आस्तिक बने

मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज) ने बरेली में ईश्वर विषय पर स्वामी जी महाराज से कई प्रश्न किए परन्तु स्वामी जी की युक्तियो ने उन्हें उस पक्ष मे ही अवाक् बना दिया। मुंशीराम ने तीन बार ये वाक्य दुहराए "महाराज! आपने मेरा मुह तो बन्द कर दिया परन्तु मुझ में अभी तक विश्वास का अकुर पैदा नहीं हुआ।" स्वामी जी ने उत्तर दिया 'वत्स! तुम्हारी युक्तियो का मैंने युक्तियों से खण्डन कर दिया है विश्वास तो परमात्मा की कृपा से हुआ करता है।"

अध्यात्म-सुधा

आओ सत्संग में चलें

आत्म-ज्ञान की ज्योति से परम आनन्द को प्राप्त करो।

सृष्टि के आदि काल से अनन्त योनियो के महाचक्र मे मानव आनन्द की तलाश मे भटक रहा है। परमानन्द की प्राप्ति ही मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य है। शान्ति के बिना मन की एकाग्रता के बिना और आत्म ज्ञान के बिना परम आनन्द को मानव प्राप्त कर नही पाता है।

योग की सिद्धियो से समृद्ध हो जाने पर मानव अपने को देव की संज्ञा का अधिकारी बना पाता है मन वचन और कर्म से जब मनुष्य निर्दोष बन जाता है तब मनुष्य समाधि अवस्था मे परम आनन्द का अलौकिक अनुभव करने लगता है।

हे मनुष्यो! उठो जागो अपने आपको पहचानो और आनन्द की अमृत धारा मे ज्ञान सागर मे गोता लगाकर बहुमूल्य रत्नो को प्राप्त कर अक्षय सुख के अधिकारी बनो। यह ध्यान रहे कि ज्ञानके बिना मनुष्य मोक्ष अवस्था को प्राप्त नही कर सकता। मन मन्दिर मे ज्ञान की ज्योति को जलाए बिना आत्म ज्ञान सम्भव नही।

मन एव मनुष्याणा कारणा बन्ध मोक्षयो—मन ही बन्धन और मोक्ष का कारण है। यह शास्त्रो का अमर उपदेश है यह ध्यान रहे मन के हारे हार है और मन के जीते जीत। मन के द्वारा अपनी इन्द्रियो पर विजय प्राप्त करने की साधना ही असली साधना है।

जिन महापुरुषो मे आत्म बल प्रादुर्भूत हो जाता है वे महात्मा जन जगत कल्याण मे प्रतिपल लगे रहकर अनुकरणीय बन जाते हैं। सुख दुख, सम्पत्ति विपत्ति मे दुर्दिनो की अन्धियारी मे जीवन और मृत्यु की विभिषिकाओ मे जिन महापुरुषो को परमात्मा की सत्ता का प्रत्यक्ष अनुभव होने लग जाता है वैसे महात्माओ के सम्पर्क मे आकर सामान्य मानव भी कुन्दन के समान चमकने लग जाता है।

हे मनुष्यो! सुनो और ध्यानपूवक सुनो! मृत्यु के विकराल जाल से यदि बचना चाहते हो तो अपने आपको पहचान कर ज्ञान की ज्योति को जलाकर अमर बनो।

वेदोक्त जीवन बिताये बिना भव सिन्धु से पार होना सवथा असम्भव है। अत कमवीर प्रणवीर और धमवीर बनो। आस्तिक बनो ईश अनुराग के पावन पराग मे पगो। चिर निद्रा को त्याग कर जगो जगत को जगा दो।

वेदो एव समस्त धम ग्रन्थो का सार क्या है? यदि इस रहस्य को जानने की इच्छा मानव के हृदय मे जागृत हो जाये तो वह धीरे धीरे सत्पथ की ओर प्रेरित होने लगता है अपने जीवन का आदर्श महाष बनाओ। आदशहीन जीवन व्यथ है। वीरो का आदशयुक्त जीवन हम सबके लिये प्रेरणा का स्रोत है।

विश्व के समस्त रत्नकोष से भी अधिक मूल्यवान आत्मज्ञान का प्रकाश पुञ्ज है। आत्मज्ञान को प्राप्त किये बिना मानव सशय को शूलो मे जीवन भर भटकता है। ज्ञानरूपी सूय उदित हो रहा है। आओ इस रवि की छवि को एक बार देखकर आनन्द के रत्न कोष के स्वामी बनो। भौतिक माया की ठीकरियो के पीछे जीवन नष्ट मत करो।

व चो अग्रे मधु मे—वेद भगवान का यह उपदेश है कि मेरी वाणी मे सदा माधुय का निवास हो। विश्व के मानव मात्र से ही नही, अपितु प्राणी मात्र से मित्रता का व्यवहार करो। सदा सत्य हितकारी और मधुर वचन

[शेष पृष्ठ १० पर]

उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व नास्तिक मुंशीराम महाराज के 'ओश्म्' व्याख्यान को सुनकर अत्यन्त प्रसन्न और प्रभावित हुए और महाराज के उपदेशो को नियम से सुनते रहे थे।

स० कर्ता—रघुनाथप्रसाद पाठक

सम्पादक के नाम पत्र

सरकारी लाटरियां बन्द हों

आज विश्व के लगभग सभी छोट बड देशो मे सरकारी लाटरी निकाली जाती है। भारत मे सबसे पहले सन १९६८ मे केरल सरकार ने लाटरी निकालना प्रारम्भ किया। इससे राज्य सरकार को लाखो रुपयो का लाभ हुआ। इससे आकर्षित होकर अन्य राज्य सरकारो ने भी लाटरी टिकट का व्यवसाय प्रारम्भ किया। आज लगभग सभी राज्यो मे लाटरी टिकटें बिक रही हैं। इसमे कोई सन्देह नहीं कि इस व्यवसाय मे आज देश भर मे लाखो लोगो की जीविका चलती है लेकिन इसके दुरगामी परिणामो से अपरिचित लोग इस व्यवसाय को बन्द करने की बात को सुनने को तैयार नहीं होते।

लाटरी एक प्रकार का जुआ है। जुआ आलस्य प्रमाद व्यसन दारिद्र्य और अपराधो का जनक है द्यूतमेतत् पुराकल्पे दृष्ट वैरकर नृणामा तस्माद द्यूत न सेवेत हास्यार्थमपि (विदुर नीति) अर्थात् जुए से लडाई झगड होते हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है इसलिए विनोद के लिए भी जुआ खेलना अनुचित है द्यूत समाहृव्य चैव राजा राष्ट्रान्निवारयेत् राज्यान्तकरण वेतो दोषो पृथ्वीक्षिताम (मनुस्मृति ६ २२१) अर्थात् निर्जीव या सजीव वस्तुओ की बाजी लगाकर जुआ खेलने से राज्य नष्ट हो जाते हैं इसलिए शासन का यह कतव्य है कि वह सभी प्रकार के जुए को समाप्त करे। गैम्बिलिग एण्ड क्रिश्चयन आयडियल्स के लेखक सिसिल एच रोज नामक विद्वान ने भी जुए को मूर्खों का खेल बताया है। उसने लिखा है कि जुआ खेलने की आदत से व्यक्ति का चरित्र भी गिर जाता है क्योंकि जुआरी की मनोवृत्ति कुछ दिए बिना परिश्रम किए बिना धन कमाने की होती है।

लोगो के जुआ खेलने के कई कारण बताए जाते हैं टूटा हुआ परिवार दिमागी कसरत करने का व्यसन भौतिक सम्पत्ति का अनुचित महत्व जल्दी अमीर बनने की इच्छा भाग्यवादी मनोवत्ति इत्यादि सुशिक्षा से इन बातो को दूर किया जा सकता है कल्याणकारी राष्ट्रके निर्माणकेलिए भारत सरकार कृत सकल्प है अत राज्य सरकारो को आदेश देकर लाटरी के रूप मे प्रच लित शासकीय जए को बन्द करादे और निजी जए को भी निमूल करने के लिए कह दे इस दिशा मे भारत सरकार और राज्य सरकारे जितनी जल्दी कदम उठायेगी उतना अच्छा है। —ज्येष्ठ वम्मन

११ ६६० चेम्बूर कालोनी बम्बई ४०००७४

जहा तक हमारा ज्ञान है प्रबल आन्दोलन होने पर कई राज्यो मे ये निरस्त की गई थी। लेखक महाशय को इस विषय मे राज्य मरकारो से सूचनाए प्राप्त करनी चाहिए। —सम्पादक

अजमेर शताब्दी में सार्वदेशिक (प्रकाशन) की उपेक्षा

शताब्दी समारोह के अन्तिम दिवस ६ नवम्बर को आय विद्वानो आय साहित्य के प्रकाशन सस्थानो तथा विभिन्न क्षत्रो मे सवश्रेष्ठ कायकर्ताओ कुछेक निर्दिष्ट आय परिवारो से सम्बन्धित व्यक्तियो का एक आयोजन कर सम्मानित किया गया परन्तु यह देखकर महान आश्चय हुआ कि आर्यसमाज व वैदिक साहित्य के प्रकाशक तथा सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रकाशन विभाग की सवथा उपेक्षा की गई। ऐसा करने से सावदेशिक प्रकाशन की तो कोई हानि नही हुई हा एक उक्ति अवश्य चरिताथ हो गई है।

यदि मणिस्त्रिपुणी प्रतिबध्यते

न स विरौति न चापिस शोभते ॥

भवति योजयितुवचनीयता ॥

अर्थात यदि स्वर्णाभूषण मे लगायी जाने वाली मणि (हीरे) को कोई सुनार रागे के जेवर मे लगा देता है तो वह न तो प्रतिरोध करता है और ना ही रागे के आभूषण मे अच्छा ही लगता है हा जो भी हीरे को रागे मे लगा देखता है लगाने वाले की भत्सना ही करता है।

—रमेशचन्द्र शास्त्री

मन्दिर प्रवेश पर रोक क्यों ?

एक समाचार के अनुसार जगन्नाथपुरी में श्रीमती इन्दिरागाधी के मन्दिर प्रवेश का जबरदस्त विरोध किया जा रहा है। यह विरोध श्रीमती इन्दिरा गाधी के पारसी जाति मे विवाह के आधार पर किया जा रहा है। विरोध करने वालो का तर्क है कि पारसी जाति मे विवाह के कारण श्रीमती इन्दिरा गाधी हिन्दू यात्री का दर्जा खो चकी हैं। पता चला है कि मन्दिर के प्रबन्धक यह कहते सुने गए हैं कि यदि श्रीमती इन्दिरा गाधी ने अपने पद के आधार पर प्रवेश करना चाहा तो वे उनकी लाश पर से गुजरने के बाद ही ऐसा कर सकेंगी।

हिन्दू कोई धर्म या जाति नही है जो हिन्द मे रहता है वह हिन्दू है। वास्तव मे हिन्दू इस देश की राष्ट्रीयता है धम नही। फिर ईश्वर धम भेद नही करता उसके दरबार मे सभी समान हैं भक्त भगवान के हैं भगवान भक्त के। यह अन्तर तो पण्डित पुजारी करते हैं भगवान नहीं।

शक्तिशाली विधर्मी जिन्होने मन्दिरो को तोडा मूर्तियो को खण्डित किया हिन्दुओ ने उनके समक्ष आत्म समपण किया और आज जो भक्त मन्दिर के श्रद्धावान है उसमे भक्तिभाव रखते हैं उसकी रक्षा के लिए प्रयत्नशील हैं उनके प्रवेश पर वह अपनी लाश बिछाता है। हिन्दू को सोचना चाहिए कि आज वह कहा जा रहा है ? समय कभी एकसा नहीं रहता है उसमे परिवर्तन होता रहता है। जो समय के साथ चलते हैं वही जीवित रहते हैं। अत हिन्दू को समय को देखकर उसके साथ चलना चाहिए और जीवित रहने के लिए अपनी नीतियों मे परिवतन करना चाहिए। किन्तु खेद है कि इस देश में हिन्दू समय को अदृश्यकर आत्म घातक नीति अपना रहा है। तिरस्कार और बहिष्कार के द्वारा अपने धर्मावलम्बियो को विधम की ओर धकेल रहा है। अपनी जनसख्या को स्वय कम कर रहा है और इस प्रकार अपने अस्तित्व के लिए सकट उत्पन्न कर रहा है। आज आवश्यकता है कि वह विश्व को प्रेम का सन्देश दे। अखिल विश्व को अपनी बाहुओ मे भर ले उन्हें अपना ले।

मैं जगन्नाथपुरी के धर्माचार्यों से प्रार्थना करता हू कि वे श्रीमती इन्दिरा गाधी को सादर मन्दिर मे आमन्त्रित करे और अपनी विशाल धार्मिक उदारता का परिचय दें। हिन्दू धम अति उदार है। उसमे सभी का समावेश है। आज हमे भेदभाव का नही एकात्मता का परिचय देना है। राष्ट के रूप में सबको सगठित करना है। इसी मे देश धम का कल्याण है।

सदा जीवत लाल चन्दूलाल मुम्बई

आवश्यक सूचना

उत्तर बिहार के रक्सौल मे आय वीर दल प्रशिक्षण शिविर दिनाक २० दिसम्बर से ३० दिसम्बर तक सम्पन्न होगा।

इसमे सावदेशिक आय वीर दल के प्रधान सचालक माननीय श्री बाल दिवाकर हस पधार रहे हैं। प्रशिक्षण श्री देवव्रत व्यायामाचार्य द्वारा होगा। बिहार के समस्त आय समाजो के अधिकारियों से निवेदन है कि अपनें समाज से कम से कम दो स्वय सेवक शिविर मे भाग लेने के लिए अवश्य भेजें।

—रामाज्ञा बैरागी

सचालक

आर्य वीर दल बिहार

महर्षि निर्वाण शताब्दी अजमेर मे उत्तर बिहार आर्य सभा तथा बिहार प्रान्तीय आर्य वीर दल के सचालक रामाज्ञा बैरागी श्री [illegible] आर्य ब्रह्मचारी ओम्प्रकाश जी एक सौ १०० आर्य वीरो का जत्था लेकर २ [illegible] बसो मे आकर भाग लिए मै वीर उत्तर बिहार आर्य सभा तथा आर्य वीर दल ने प्रशसनीय काय किया है। —रामकृष्ण [illegible] शास्त्री

आर्य समाज मुजफ्फरपुर

गायत्री मन्त्र की महिमा

("सरिता" पाक्षिक के दिसम्बर १९८२,११ के आक्षेपों का सप्रमाण उत्तर)

—डा० विश्व बन्धु "व्यथित"

अध्यक्ष हिन्दी विभाग, डी० ए० वी० कालेज अबोहर (पंजाब)

"सरिता" पाक्षिक जहा रोचक साहित्य और प्रगतिशील राजनैतिक समीक्षा के लिए प्रसिद्ध है, वहा आर्य संस्कृति पर निरन्तर आक्रमण करने का सुनियोजित आन्दोलन चलाने के लिए बदनाम भी है। रामायण, महाभारत, गीता और पुराणो पर विभिन्न आक्षेप करने के पश्चात् अब उसने अपने शरसधान का लक्ष्य "वेद" और वैदिक साहित्य को बनाना प्रारम्भ किया है। इसका नवीनतम निकृष्ट उदाहरण है, दिसम्बर १९८२-११ अक के १४१ से १४६ पृष्ठों पर प्रकाशित श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा का 'गायत्री की झूठी महिमा" शीर्षक लेख। इस लेख के कुछ वाक्य इस प्रकार हैं —

१ "गायत्री मन्त्र मानव द्वारा नही रचा गया तो क्या यह मन्त्र दानवरचित है।"

२ "यदि गायत्री मन्त्र को ईश्वर ने बनाया है, तो ईश्वर निरक्षर भट्टाचार्य और वज्र मूर्ख साबित होता है।"

३ "यह मन्त्र न केवल छन्दगत अशुद्धियो के युक्त है, अपितु संस्कृत व्याकरण की दृष्टि से भी पूरी तरह अशुद्ध है।"

४ "डाक्टर विश्व बन्धु ने उपरिलिखित दोनो वकल्पिक शुद्ध रूपो के अतिरिक्त एक अन्य रूप उपस्थित किया है।" इत्यादि

इस लेख की व्यापक प्रतिक्रिया हुई है। मेरे लिए तो और भी विडम्बना पूर्ण, क्योंकि उपर्युक्त वाक्य-४ को पढकर मेरे कई स्नेही और हितचिन्तक विक्षुब्ध हो गए प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु, प्रिंसिपल श्रीमती के० सचदेव प्रो० रोहतासंसिंह, श्री चान्द कुमार जायसवाल और प्रो० सेवाराम आदि ने तो अविश्वासपूर्ण मुद्रा मे घर आकर स्पष्टीकरण मागा कि मैं कब से वेद मे अशुद्धिया निकालने लगा ? इनमे से अनेक इस तथ्य से सुपरिचित थे कि मैं अपनी सद्य प्रकाश्य पुस्तक "वेदार्थ प्रक्रिया' मे इस गायत्रीमन्त्र को सर्वथा अनुपमेय और निर्दोष प्रमाणित कर चुका हू। अत मेरे द्वारा इस भ्रान्ति का मार्जन नितरा अपेक्षित है।

वैसे भी "सरिता" मे नित्यप्रति प्रकाशित ऐसे उत्तेजनापूर्ण लेखो से उद्वेलित पाठक सप्रमाण उत्तर की प्रत्याशा मे आतुर देखे गए हैं। अत सविरण समीक्षा करनी उचित है।

'सरिता' का एतद्विषयक समस्त नियोजन दो शैलियो मे चलता है। जैसे

१ हिन्दू समाज मे व्याप्त उन कुप्रथाओ या मिथ्या धारणाओ का खण्डन, जिनका सशक्त विरोध और सप्रमाण खण्डन सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द सरस्वती ने किया था। जैसे मूर्तिपूजा, मृतकश्राद्ध जन्मगत जाति, छुआछूत, अनमेल विवाह, नारी असमानता, अशिक्षा, बालविवाह और पौराणिक मिथ्या कल्पनाओं का प्राय महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायियो के तर्कों के आधार पर (बिना उनका नामोल्लेख के) खण्डन का प्रयास।

इस पत्र के सचालक इस प्रवृत्ति के समर्थन मे प्राय यह प्रसिद्ध तर्क देते हैं कि वे हिन्दू समाज की गली सडी रूढियों के दोष दिखाकर जनसामान्य को इनसे बचने की प्रेरणा देकर एक महान सुधार-आन्दोलन का सूत्रपात कर रहे हैं। उनके इस तर्क मे शायद कोई बल होता यदि वे अपनी लेखनियो को यही तक सीमित रखते। लेकिन भारतीय मान्यताओ का खण्डन करने की उनकी दूसरी शैली ने उनका उद्देश्य और स्वरूप अनावृत करके रख दिया है।

२ "सरिता" के इस दूसरे आन्दोलन का निशाना हैं महर्षि दयानन्द द्वारा प्रशंसित और व्याख्यात "वेद" एव आर्षग्रन्थ और उनकी सर्वसुन्दर मान्यताए। वेदादि आर्षग्रन्थों पर कुठाराघात करते हुए वे उन्ही पौराणिको सायण, महीधरादि भाष्यकारों का आधार ग्रहण करते है, जिन्हे महर्षि दयानन्द ने भारीरथ प्रयास करके भ्रमित और अशुद्ध प्रमाणित करके उनके स्थान पर वेद के उत्तम, गरिमामडित, सर्वथा वैज्ञानिक, प्रामाणिक और लोककल्याणपूर्ण वेदभाष्य का प्रणयन किया था। आश्चर्य इस बात पर है कि "सरिता" के वेदनिन्दक और नास्तिक लेखको को महर्षि दयानन्द के जगत प्रसिद्ध वेदभाष्य को उद्धृत करने का क्यों साहस नही होता ? इसी से "सरिता" के दूषित पूर्वाग्रह और दुराग्रह का काफी सीमा तक पर्दाफाश हो जाता है।

"सरिता" में प्रकाशित प्रस्तुत लेख भी इन दोनो शैलियो का मिलाजुला नमूना है। इसका विश्लेषण छ भागो मे करके क्रमश समीक्षा करने से पाठको को सुविधा होगी। जैसे—

पुराण निन्दा इस लेख के बहुलाश में पद्म स्कन्द और देवी भागवत पुराण के आधार पर गायत्री जप और पापमोक्ष के सिद्धान्त का उपहास उडाया गया है। इसकी भाषाशैली में गालीगलौच का सा वातावरण है। जसे "यह स्तोत्र रचना निहायत बेहूदी है।" "गायत्री को वेद जननी या ब्राह्मणजननी कहना प्रमत्त प्रलाप है।" आदि

इस विषय मे पहले ही लिखा जा चुका है कि सरिता वाले कैसे, व्यर्थ पिष्टपेषण कर रहे हैं। लेकिन महर्षि दयानन्द द्वारा किए गए मिथ्या कल्पनाओ के खण्डन और 'सरिता" के इस तथाकथित सुधार आन्दोलन मे एक और भी अन्तर है, जिसकी ओर प्रसिद्ध इतिहासकार और समीक्षक डा० रामचन्द्र शुक्ल ने "उत्साह" निबन्ध मे इस प्रकार सकेत किया है।—

"किसी शुभ परिणाम पर दृष्टि रख कर निन्दा स्तुति मान-अपमानादि की कुछ परवा न करके प्रचलित प्रथाओ का उल्लघन करने वाले वीर या उत्साही कहलाते हैं।"

"यह देखकर बहुत से लोग केवल इस विरद (प्रशसा) के लोभ मे ही अपनी उछलकूद दिखाया करते हैं। शुभ या अशुभ परिणाम से उनसे कोई मतलब नही। मैंने कई छिछोरो और लम्पटो को विधवाओ की दशा पर दया दिखाते हुए उनके पापाचार की लम्बी चौडी दास्तान हरदम सुनते सुनाते पाया है।"

आशा है पाठक इतने से ही 'सरिता" के इस आन्दोलन की पृष्ठभूमि और इसके आधार पर की जाने वाली पुराण निन्दा के प्रसग से भली भान्ति परिचित हो जाए गे।

वेद निन्दा वेद की निन्दा करने हेतु पूर्वलिखित वाक्यो के अतिरिक्त भी ऐसे अनेक वाक्य बिना किसी प्रसगापेक्षा के भी लिखे गए हैं —

अकेले ऋग्वेद मे २४४९ मन्त्र गायत्री छन्द मे रचे गए हैं। क्या वे मूर्खों द्वारा बनाए गए हैं।"

'गायत्री मन्त्र मे सिवा बुद्धि की याचना के और कुछ नही। न कोई दार्शनिक चर्चा, न प्राकृतिक वर्णन न कोई मानव हृदय का उदगार और न कोई सास्कृतिक महत्व।"

गायत्री मन्त्र पर लगाए गए सभी आरोपो का उत्तर आगामी पृष्ठो पर पढकर पाठक 'सरिता" के लेखको की बुद्धि पर तरस खाने लगेगे। अत यहा अधिक लिखना बेकार है।

हिन्दू मान्यताओं का उपहास इस लेख मे एक ओर ईश्वर के अस्तित्व और स्वरूप, एव जन्मातरवाद के प्रति अनास्था उत्पन्न करने का प्रयास है दूसरी ओर पुराण मे वेद की निन्दा और स्वय वेद मे वेद निन्दा के प्रसग खोजने की मिथ्या कल्पना की गई है —

जैसे—'ईश्वर निरक्षर भट्टाचार्य और वज्रमूर्ख साबित होता है। साधारण संस्कृत जानने वाला भी ऐसी गलतिया नही कर सकता जैसी कि ईश्वर कही जाने वाली काल्पनिक सत्ता (ईश्वर) ने की हैं।'

जब तक जन्म मरण के चक्र का अस्तित्व ही सिद्ध नही होता तब तक उससे छूटने के लिए हाथ पैर मारने की क्या तुक है ?

"स्कदपुराण, देवी भागवत और पदमपुराण मे गायत्री मन्त्रके अतिरिक्त अन्य सभी मन्त्रो को कूडा करकट और निरर्थक बताया गया है।

'स्वय वेद मे गायत्री मन्त्र के छन्द को अपूर्ण छन्द बताया गया है। इत्यादि।

लेखक के शब्द "सरिता" के कलुषित उद्देश्य को उजागर करने के साथ उसकी मिथ्यावादिता के सजीव प्रमाण हैं। उसने लेख के बहुलाश मे पुराणो को वेद की अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशसा करते दिखाया है तो वही पुराण इतने घोर वेदनिन्दक कैसे हो गए ? इसी प्रकार स्वय वेद को वेद के विरुद्ध खडा करने

को साहस कहें या दुस्साहस ? यह भी विचारणीय है। वस्तुत यह लेख असंगतियों की गुत्थी है। एक ओर लेखक कहता है कि गायत्री मन्त्र अशुद्ध और बेकार है तो दूसरी ओर उसने कहा है—"यह निर्विवाद है कि इस मन्त्र मे बुद्धि की याचना की गई है। भाव अच्छा होने से मन्त्र को भी अच्छा कहना ही होगा। स्पष्ट है कि एक दिग्भ्रान्त लेखक जानबूझ कर जनता को भटका रहा है। (क्रमश)

हिन्दू मुस्लिम और ईसाई
गो रक्षा में सबकी भलाई
गो रक्षा सम्मेलन दिल्ली

ता० ४-५ मार्च १९८४

दिसम्बर ता० १७ १८ को दिल्ली मे होने वाले गो रक्षा सम्मेलन की तारीखो मे अपरिहार्य कारणो से बदल करना पड़ा है। आप महानुभावो को काफी असुविधा होगी इसके लिए क्षमा प्रार्थी है।

इस सम्मेलन के मौके पर देश भर में चल रहे गो रक्षा कार्यों का सिंहावलोकन होगा। (देवनार) मुबई एव दिल्ली मे चल रहे गो रक्षा सत्याग्रहो की जानकारी दी जायगी। अब तक के अनुभवो के आधार पर भावी काय क्रम निर्धारित किया जायगा।

सम्मेलन कार्यक्रम

रविवार ४ माच प्रात १० से १२ ३० दोपहर २ ३० से ६

सोमवार ५ माच प्रात ९ ३० से १२ ३० दोपहर २ ३० से ६

स्थान—प्यारेलाल भवन २ बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली २

निवास—सत्याग्रह कार्यालय १ अन्सारी रोड दरियागज नई दिल्ली २

फोन न० २७२२१९

सभी गो प्रमी महानुभावो से सादर निवेदन है कि सम्मेलन मे अवश्य पधारें। गो माता सबकी माता है। गो रक्षा में सबकी भलायी है। धर्म भेद वा अन्य किसी प्रकार का भेदभाव रखे बिना गो रक्षा सम्मेलन मे सभी महानुभाव सादर आमन्त्रित हैं। ता० ६ मार्च मगलवार को सत्याग्रह होगा। इसमे शामिल हो ऐसी अपेक्षा है।

राधाकृष्ण बजाज	विश्वनाथ जालान	विष्णु हरि डालमिया
सयोजक	स्वागत मन्त्री	स्वागताध्यक्ष
फोन २७२२१९	फोन २७२७२५	

अतिथियो की आवास व्यवस्था अन्सारी रोड दरियागज मे होगी।

सम्मेलन का स्थान प्यारेलाल भवन २ बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली रहेगा।

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर रक्सौल में बिहार प्रान्तस्थ आर्य समाजें कम से कम दो युवक भेजें

दिल्ली।

बिहार प्रान्त की समस्त आर्य समाजो से अनुरोध है कि वे सार्वदेशिक आर्य वीर दल बिहार के तत्वावधान में आयोजित, आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर मे, जो आगामी २० दिसम्बर से १० दिसम्बर १९८१ तक रक्सोल में आमन्त्रित किया गया है कम से कम दो-दो युवक जिनकी आयु अठारह वर्ष से ऊपर हो अवश्य भेजें। स्मरण रहे बिहार का सार्वदेशिक आर्य वीर दल के इतिहास निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। नोआखाली के संस्मरण अभी आप भूले न होंगे। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि बिहार प्रान्तस्थ आर्य समाजें इस शिविर को सफल बनाने में अपना सर्वात्मना सहयोग देंगे। आपके प्रान्तीय सचालक श्री रामाज्ञा वैरागी इस दिशा में जुटे हैं। उनका यथोचित आदर कीजिये।

बालदिवाकर हंस प्रधान सचालक

अजमेर पश्चिम उ०प्र० आर्य वीर दल शिविर सम्पन्न

उत्तर प्रदेश आर्य वीर दल प्रान्तीय सर सचालक डा० बालकृष्ण आर्य "विकल" जिन्दकी फतेहपुर की अध्यक्षता में मेरठ गाजियाबाद, बरेली, अलीगढ के २१० आर्य वीरों ने महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर में पूर्ण गणवेश में रहकर सराहनीय सेवा कार्य किया जिसकी सभी अधिकारियो ने भूरि-भूरि प्रशसा की। मेरठ, गाजियाबाद के आर्य वीरो के अस्त्र तथा व्यायाम प्रदर्शन का उद्घाटन, आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ उ०प्र० के प्रधान श्री प्रो० कैलाशनाथसिंह जी ने किया। आर्य वीरो ने वहां के ११ नामी बदमाशों को पुलिस के हवाले किया तथा काफी धन तथा सामान बरामद करके लोगो को वापस दिलाया। तिलहर से चले साइकिल जत्थे का दयानन्द नगर अजमेर में प्रान्तीय सचालक डा० बालकृष्ण आर्य द्वारा स्वागत किया गया। झांसी, हमीरपुर, हरदोई रामपुर मण्डल के सचालक भी शिविर में उपस्थित थे। माननीय प्रधान सचालक प० बाल दिवाकर जी हंस डा० बालकृष्ण आर्य 'विकल" के सेवा कार्य से काफी प्रभावित हुए। यह पहला ही अवसर था जब प्रधान सचालक के साथ हमारे प्रान्तीय सचालक डा० विकल ने एक शिविरमे कार्य किया आर्य वीरों की छावनी का निरीक्षण श्री प्रो० कैलाशनाथसिंह जी ने किया और डा० बालकृष्ण आर्य जी को हर प्रकार का सहयोग सभा से देने का वचन दिया। शिविर सयोजक श्री जयनारायण जी अलीगढ को धन्यवाद दिया।

—आर्य प्रकाश आर्य

कानपुर मडल आर्य वीर दल प्रतियोगिता सम्पन्न

११ अक्तूबर कानपुर नगर की छः शाखाओ के लगभग ५० आर्य वीरो की वार्षिक प्रतियोगिता आर्यसमाज गोविन्दनगर के तत्वावधान में लेनिन पार्क में सम्पन्न हुई जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में सार्वदेशिक आर्य वीर दल पश्चिम उत्तर प्रदेश के प्रान्तीय सर सचालक डा० बाल कृष्ण आर्य 'विकल" जिन्दकी ने आर्य वीरों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्य वीर दल एक चरित्र निर्माण की योजना को लेकर आगे बढ़ रहा है। यदि समाज से अज्ञान, अभाव अन्याय को मिटाना चाहते हो तो आर्य वीरों को तन, मन, धन से सहयोग कीजिये। आर्य वीर दल के दरवाजे मनुष्यमात्र के लिए खुले हुये हैं। आर्य वीरो को चाहिये कि वह पहले अपने को देखे। सचालक जी के ओजस्वी भाषण का काफी प्रभाव पड़ा। कार्यक्रम की अध्यक्षता नगर के प्रसिद्ध एडवोकेट [illegible] जी ने की। श्री हरिश्चन्द्र जी आर्य मंडल सचालक कानपुर का [illegible] कार्य सराहनीय है। इस समय कानपुर नगर में [illegible] चल रही है।

—[illegible]

इस्लाम धन के बल पर फैल रहा है

श्री ऐम० सादिक अरशद ने "इस्लाम धन के बल पर नहीं फैल रहा है" शीर्षक अपने पत्रमे (न०भा०टा० २५ नवम्बर) दावा किया है कि मीनाक्षीपुरम् आदि मे इस्लाम धन के बल पर नही फैल रहा है। वस्तुत सम्पादकीय मे आपने इस तथ्य का जो सकेत किया था, वह ठीक ही था।

मीनाक्षीपुरम् के सामूहिक इस्लामीकरण के दौरान जो रिपोर्ट तथा समाचार छपे थे, उनसे यह स्पष्ट हो गया था कि इसके मूल में अरब देशो का पेट्रो डालर है। उस समय बलात या प्रलोभन से बनाए गए कई हरिजनो ने खुले तौर पर दिल्ली मे प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरागाधी के सामने स्पष्ट कहा था कि उन्हे धर्मान्तरण के लिए पाच-पांच सौ रुपए मिले थे। स्मरणोय है कि धर्मान्तरण के समाचार के मिलते ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का एक शिष्टमण्डल मीनाक्षीपुरम् पहुचा था, धर्मान्तरण की जाच की थी। जो रिपोर्ट उसने दी थी उसे समाचार पत्रो मे प्रकाशित किया था। मीनाक्षीपुरम् के हरिजन, थेवर व ब्राह्मणो का शिष्ट मण्डल दिल्ली आकर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपालशालवाले के नेतृत्व मे प्रधानमत्री से मिलाथा और उसमे सम्मिलित नवमुस्लिम हरिजनो ने ही उपरोक्त बात प्रधानमन्त्री को बताई थी। शिष्टमण्डल ने एक ज्ञापन भी प्रधानमन्त्री को दिया था। उससे पुष्टि हुई कि मीनाक्षीपुरम के हरिजनो के धर्मान्तरण के अवसर पर केरल, कोलम्बो और अरब देशो के लगभग ७ हजार मुसलमानो ने भाग लिया था जिसमे भोजन आदि पर लाखो रुपया व्यय हुआ। यह रुपया अरब पेट्रो डालर के रूप मे ही यहां आया था।

मीनाक्षीपुरम् मे हुए सरकारी जाच कमीशन के बारे में सार्वदेशिक सभा के शिष्टमण्डल न स्पष्ट कर दिया था कि सरकारी जाच कमीशन ने मीनाक्षीपुरम् में नही बल्कि वहा से ७ किलोमीटर दूर पानपोली मे बैठकर जाच की खानापूर्ति की थी क्योकि उन पर प्रभावशाली मुसलमानो और वहा के एम एल.ए का जो मुसलमान था, काफी दबाव था। इसलिए सरकारी रिपोर्ट पूर्णतया इकतरफा और सदिग्ध थी।

१८ सितम्बर के ट्रिब्यून मे श्री कुलदीप नय्यर के नाम से भारत सरकार की जो रिपोर्ट छपी है उसमे अरब देशो के धन की चर्चा इस प्रकार की गई है—

"पुनरुत्थानवादी वर्गों के मजबूत होने से, अल्पसख्यक वर्ग पर कट्टरपथी नेतृत्व के हावी हो जाने से अरब देशो से पुनरुत्थानवादी वर्गों को बडी-बडी धनराशिया प्राप्त होने से और मुस्लिम जगत में भारत के बाहर हो रहे इस्लामी करण के गठबधन से प्रभावित होने के कारण हिन्दू दलो और सगठनो मे चिन्ता व्याप्त हो गई है।

इसी कारण भारत सरकार यह व्यवस्था कर रही है कि धार्मिक सगठनो को भारत से बाहर से जो पैसा मिले, वह धर्मान्तरण के लिए इस्तेमाल न हो।"

आर्य समाज लोभ, लालच और धन के बल पर हरिजनो के इस्लामी करण को रोकने के लिए कटिबद्ध होकर काम कर रहा है। गत वर्ष मीनाक्षीपुरम् का आर्य सम्मेलन बहुत प्रभावशाली रूप मे सम्पन्न हुआ था। जिन हरिजनो ने वहा इस्लाम ग्रहण कर लिया था, व पुन सब हिन्दू धर्म मे वापस आ गए।

हाल ही मे समाचार पत्रो मे प्रकाशित हुआ था कि तमिलनाडु के रामनाथपुरम् में ५ हजार हरिजन पोगल के अवसर पर इस्लाम धर्म में प्रविष्ट होगे। वहा ११ हरिजन परिवार जो पहले ही इस्लाम ग्रहण कर चुके थे, उन्होने बताया कि सवर्णों के अत्याचार अथवा भेदभाव आदि से उन्होने धर्मान्तरण नहीं किया था अपितु मुसलमानो ने उन्हें लालच दिया था कि इस्लाम ग्रहण करने पर उन्हे अरब देशो मे नौकरी दी जायेगी। इस काड में मुसलमानो को पुलिस ने जो इस तरह धर्मान्तरण के लिए जिम्मेदार थे, हिरासत मे ले लिया है।

रामनाथपुरम के धर्मान्तरण के इस षडयन्त्र के सम्बन्ध मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने प्रधानमन्त्री श्रीमती गाधी और गृहमन्त्री श्री सेठी से भी बातचीत की है जिसका समाचार हिन्दी व अग्रजी के प्रमुख पत्रो में भी प्रकाशित हुआ था। इस समय रामनाथपुरम् मे आर्य समाज के कार्यकर्त्ता इस धर्म परिवर्तन को रोकने के लिए हरिजनो से सम्पर्क कर रहे हैं। आर्य समाज के नेता भी वहा शीघ्र ही पहुच रहे हैं। तमिलनाडु के मुख्यमन्त्री और राज्यपाल से भी आर्य समाज का शिष्टमण्डल मद्रास मे मिल चुका है।

सम्पादक नवभारत टाइम्स —रघुनाथप्रसाद पाठक

[पृष्ठ ५ का शेष]

ही बोलो।

वसुधैव कुटुम्बकम्—समस्त वसुधा को अपनी कुटुम्ब मानकर परमात्मा की दृष्टि से प्यार करो। पराई आग मे कूदना सीखो। गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामायण मे लिखा है —

परहित सरिस धर्म नही भाई।
पर पीडा सम नही अधमाई ॥

मानव जीवन मे सन्तोष रूपी धन ही परमधन है। सन्तोष के बिना चक्रवर्ती सम्राट भी कगालो का कगाल है। इसलिये आनन्द प्राप्त करना चाहते हो तो दूसरो के शोषण से नही, अपने श्रम और पुरुषार्थ से प्राप्त धन मे ही सन्तोष करो।

जब तक मनुष्य काम वासनाओ का कीडा बन कर रहेगा तब तक वह अपने आपको पहचान न सकेगा। इसीलिये अपने आपको पहचानो। जीवात्मा और परमात्मा के शुद्ध स्वरूप को जानकर परमात्मा की उपासना मे जो आनन्द एक सन्त तपस्वी को प्राप्त होता है उस आनन्द को शब्दो मे व्यक्त नही किया जा सकता। इसलिये भौतिक पदार्थो के सुख से इन्द्रियो को विरत करके आत्मज्ञान की ज्योति जगाओ और परम आनन्द को प्राप्त करो।

—वेद पथिक धर्मवीर आर्य
सराय रुहेला, नई दिल्ली-५

वार्षिक उत्सव

आर्य समाज सैक्टर ३२ चण्डीगढ़ के पावन वार्षिक उत्सव (२२,२३ अक्तूबर) को यहां आचार्य सत्यप्रिय जी की वेद कथा और सवश्री जयदेव जी जतोई वाले प्रमप्रकाश की मडली ने शोभायमान् किया यहा उत्सव पर पधारे हुये स्वामी रामेश्वरानन्द जी स्वामी श्रद्धानन्द जी, प० सच्चिदानन्द शास्त्री, प० निरजनदेव जी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब और डा० भवानीलाल भारतीय के ओजस्वी मनोहर उपदेशो से नगर की जनता ने अतीव आनन्द प्राप्त किया।

उत्सव मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान आदरणीय लाला राम गोपाल जी शालवाले के पधारने पर नगर की सब समाजो की ओर से पुष्प मालाओ से किया गया उनका स्वागत एक विशेष समारोह था जिस के पश्चात् राष्ट्र एकता सम्मेलन के अध्यक्ष पद से सिंह गर्जन करते हुये लाला जी ने कहा कि देश की अखण्डता को तार-तार करने वालो के विरुद्ध केन्द्र की सरकार को सख्त नोटिस लेना चाहिये। दो वष से पजाब मे हो रहे कत्ले आम पर गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुये आपने कहा कि इस प्रान्त को सेना के सुपुर्द करके तोड फोड करने वालो को जहाँ कडा दण्ड मिलना चाहिये वहा भिण्डरा वाले के भडकीले भाषणो पर सरकार पाबदी लगाये जिसमे सारे प्रान्त का वातावरण उत्तरोत्तर विषैला होता जा रहा है।

सम्मेलन में एक प्रस्ताव श्री आशुराम आर्य ने इस सम्बन्ध मे प्रस्तुत किया जो सर्व सम्मति से पारित होकर पजाब तथा केन्द्रीय सरकारो को भेजा गया इस अवसर पर एक प्रेस का फ्रस भी बुलाई गई जिसको लाला जी तथा श्री पृथिवीसिंह आजाद ने सम्बोधित किया। उत्सव की कार्यवाही चण्डीगढ आकाशवाणी से भी प्रसारित की गई। —आशुराम आर्य सयोजक

राष्ट्र एकता सम्मेलन मे पारित प्रस्ताव

आर्य समाज सैक्टर ३२ चण्डीगढ के वार्षिक उत्सव पर आयोजित यह राष्ट्र रक्षा सम्मेलन देश की अखण्डता को क्षति पहुँचाने के प्रयत्नो और अलगाववादी तत्वो की गतिविधियो पर गहरी चिन्ता व्यक्त करता है।

इस सभा का यह निश्चित मत है कि आजादी के विगत ३६ वर्षों के राजनैतिक सगठनो द्वारा अल्पसख्यको के नाम पर राष्ट्रवादी जनता और बहुमत को मौलिक अधिकारो से वचित किया जा रहा है।

यह सम्मेलन जनता को सावधान करना अपना कर्त्तव्य समझता है कि ससार के किसी भी देश मे अल्पसख्यक समस्या नही है। केवल भारत की स्वतन्त्रता को धूमिल करने के लिये ही यहा अल्पसख्यक मुस्लिम ईसाई तथा इसी प्रकार के अन्य समुदायो की अनुचित मांगो को स्वीकार किया जा रहा है। सरकार की इसी कमजोर नीति के कारण अलगाववादी तत्व दिन प्रतिदिन देशद्रोही प्रवृत्तियो को बढ़ावा दे रहे है।

इस सम्मेलन को आश्चर्य है कि पजाब मे अकाली आदोलन अब हिंसात्मक ताण्डव नृत्य के रूप मे सामने आ रहा है यह सम्मेलन भारत सरकार एव पजाब के राज्यपाल से अनुरोध करता है कि इस प्रकार के हिंसक आदोलन को सख्ती से दबाए। यदि सरकार शीघ्र ही पजाब मे शान्ति स्थापित करने में असमर्थ या असफल रही तो देश भर में इसकी प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक है।

यह सम्मेलन पजाब के हिन्दुओ पर किये जा रहे अत्याचारो की भर्त्सना करता है और पजाब के हिन्दु समाज को देश भर के राष्ट्रवादियो द्वारा आश्वासन देता है कि पजाब के लोगो के दुख मे भारतभर के हिन्दू पजाब के हिन्दुओ के साथ हैं।

आशुराम आर्य सयोजक ओमप्रकाश आर्य मन्त्री



श्री लाला रामगोपाल जी प्रधान सार्वदेशिक सभा के पधारने पर स्वागतार्थ चण्डीगढ मे आए हुए चौधरी विक्रमलाल प्रधान आर्य समाज सैक्टर ३२ श्री आशुराम आर्य सरक्षक सयोजक लाला जी के साथ हैं श्री प० सच्चिदानन्द जी शास्त्री

आर्यवीर दल-शिविर तथा बैठक

दिल्ली प्रदेश के समस्त आर्यवीर दल, आर्य समाजें, आर्य सस्थाएं तथा आर्य जन ध्यान दें

आर्य वीर दल प्रदेश का एक शिविर शुक्रवार दिनांक २३ दिसम्बर १९८३ साय ५ बजे से २५ दिसम्बर १९८३ रविवार प्रात ९ बजे तक आर्य समाज मन्दिर राजोरी गार्डन नई दिल्ली २७ मे होना निश्चित हुआ है।

दिल्ली प्रदेश की समस्त आर्य समाजो सस्थाओ के प्रधान तथा मन्त्री महोदय तथा अन्य जनो से प्रार्थना है कि उपरोक्त शिविर मे सम्मिलित होने के लिए अधिक से अधिक सख्या मे आर्य वीरो के नाम तथा आर्य समाज इत्यादि का नाम आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के कार्यालय १५ हनुमान रोड नई दिल्ली मे १०.१२.८३ तक अवश्य सूचित कर दे।

बैठक इसी उपलक्ष्य मे समस्त आर्य समाजो आर्य सस्थाओ के सदस्य तथा आर्य जनो की एक विशेष बैठक शनिवार दिनांक १०.१२.८३ साय ५ बजे आर्य समाज मदिर राजोरी गार्डन नई दिल्ली २७ मे होगी। सभी महानुभावो से प्रार्थना है कि इस बैठक मे ठीक समय पर पधारने का कष्ट करे तथा मार्ग दर्शन करके अनुगृहीत करे।

प्रियतमदास सवन्त	जगन्देव आर्य	हरिदेव आर्य
अधिष्ठाता	सह सचालक	मन्त्री

आर्य वीर दल (दिल्ली प्रदेश)

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली १

हैदराबाद (दक्षिण) में १७-१८ दिसम्बर ८३ को साम्प्रदायिकता विरोधी राष्ट्रीय सम्मेलन

स्थान—राजधानी होटल का सभागार

अध्यक्ष : श्री रामगोपाल शालवाले, पूर्व ससद सदस्य

उद्घाटन श्री एच० आर० खन्ना भू पू महान्यायवादी सर्वोच्च न्यायालय

मुख्य अतिथि श्री धर्मवीर जी भू पू राज्यपाल पश्चिम बगाल

वक्ता श्री लक्ष्मीमल सिंघवी एडवोकेट सुप्रीमकोर्ट
श्री बेद व्यास जी एडवोकेट
श्री सोमनाथ एडवोकेट

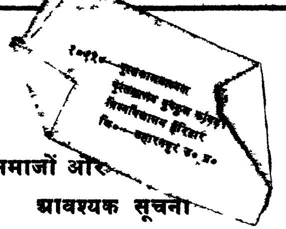
आदि नेतागण तथा विधि विशेषज्ञ पधारे रहे हैं।

निवेदक—

वन्देमातरम् रामचन्द्रराव
सयोजक

ओ३मप्रकाश पुरुषार्थी
मन्त्री सावदेशिक सभा

रामचन्द्रराव कल्याणी
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश



आर्यसमाजों और आवश्यक सूचना

समस्त आर्य समाजो आर्य शिक्षण सस्थाओ प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं को सूचित किया जाता है कि शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे सावदेशिक आर्य वीर दल समिति का नियमानुसार गठन किया हुआ है।

युवाशक्ति को चरित्रोन्मुख करने हेतु सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री बालदिवाकर हस उप प्रधान सचालक डा० देवव्रत व्यामाचार्य विधि सम्मत सगठन का सचालन कर रहे हैं।

कुछ दिनो से कुछ लोग अनुशासन की उपेक्षा करते हुए युवा लोगो के भोलेपन का लाभ उठाकर सावदेशिक सभा की अवमानता कर रहे हैं जो सवथा अनुचित है। मेरा आर्य मात्र एव सभा से सम्बन्धित सभी सस्थाओ से अनुरोध है कि वे सगठन की एक रूपता के हित मे सार्वदेशिक आर्य वीर दल को ही मजबूत बनाए और इस प्रकार के अन्य सगठनो को किसी भी प्रकार का सहयोग न करे।

—ओम्प्रकाश त्यागी सभा मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली-२ मे मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८४] वर्ष १९ अङ्क २।

मार्गशीर्ष शु० १३ स० २०४० रविवार १८ दिसम्बर १९८३

दयानन्दाब्द १५९ दूरभाष २७४७७१
वार्षिक मूल्य १६) एक प्रति ४० पैसे

स्वातन्त्र्य वीर सावरकर को श्रद्धांजलि

(हमारे कार्यालय संवाददाता द्वारा)

नई दिल्ली । वीर सावरकर जन्म शताब्दी समारोह नागरिक समिति द्वारा विठ्ठल भाई पटेल भवन मे आयोजित एक सभा मे मुख्य वक्ताओं ने देश की आजादी मे सावरकर की भूमिका को सराहते हुए उन्हे अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की ।

इस सभा की अध्यक्षता करते हुए सेवा निवृत न्यायमूर्ति श्री एच० आर० खन्ना ने कहा कि सावरकर न केवल एक क्रान्तिकारी योद्धा थे, बल्कि उन्होने क्रान्तिकारी भी पैदा किए और उन्हे राष्ट्र की आजादी की लड़ाई लड़ने की प्रेरणा भी दी ।

श्री खन्ना ने कहा कि आज की पीढी आजादी के बारे मे बहुत कम जानती है, उसे गुलामी के जीवन के बारे मे कुछ पता नही, जिससे हमें मुक्त कराने के लिए वीर सावरकर ने कितना अपमान एवम् कष्ट झेला था ।

भूतपूर्व मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री केदारनाथ साहनी ने इस बात पर खेद प्रकट किया कि आज राष्ट्र को उनका जितना कृतज्ञ होना चाहिए उतना नहीं है । श्री साहनी ने कहा कि सावरकर ने कुरीतियो को समाप्त करके समाज सुधार का बीड़ा उठाया था ।

रामगोपाल शालवाले प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने उन्हें एक प्रखर राष्ट्रवादी बताते हुए कहा कि उनकी आत्मा भारत की संस्कृति के साथ जुड़ी हुई थी । कोई भी देश तभी आजाद रह सकता है जब कि उसकी संस्कृति फले-फूले और उसकी संस्कृति को बनाए रखने का बड़ा प्रयास किया जाय और वीर सावरकर ने ऐसा ही किया था ।

प्रो० वेदव्यास ने जो वीर सावरकर नागरिक समिति के प्रधान हैं वीर सावरकर को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की और श्री बा०एल० चावला ने जो महामन्त्री हैं, कहा कि वीर सावरकर उच्चकोटि के नेता और देशभक्त थे । देश उनको कभी नही भूल सकता ।



हरियाणा स्टील प्रखाइड एण्ड कम्पनी के मालिक श्री ओम्प्रकाश गोयल श्री रामगोपाल शालवाले का पाछे दिखाई देती कार भेंट करते हुए, साथ मे सभा के महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी तथा संयुक्त मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ।

सम्पादक—ओम्प्रकाश पुरुषार्थी

सहसम्पादक—रघुनाथप्रसाद पाठक

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस की शोभा यात्रा

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य की ११-१२-८३ को आर्य समाज मन्दिर करोल बाग नई दिल्ली मे एक बैठक हुई। इसकी मासिक साधारण सभा की बैठक मे सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पारित किया गया। 'प्रतिवर्ष की भांति स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रणी सेनानी, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की बलिदान जयन्ती पर रविवार २५ दिसम्बर १९८३ को विशाल शोभा यात्रा पूर्व निश्चित मार्ग पर निकाली जायेगी। यह शोभा यात्रा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन नया बाजार से प्रारम्भ होकर खारी बावली, नया बास, लालकुआ हौज काजी, चावडी बाजार, नई सडक चादनी चौक दरीबाकला रामचन्द्र देहलवी मार्ग से होती हुई परेड मैदान मे सार्वजनिक श्रद्धाजलि सभा मे परिणत हो जायेगी। इसी मार्ग पर सन १९२६ मे स्वामी जी की शवयात्रा निकली थी। आर्य केन्द्रीय सभा सरकार से साधिकार माग करती है कि इस वर्ष भी आर्य जनो की भावनाओ को देखते हुए, इसी मार्ग पर समुचित यातायात एव सुरक्षा का प्रबन्ध करे।

महादेवी वर्मा को ज्ञानपीठ पुरस्कार

हिन्दी गीतिकाव्य की अद्वितीय कवयित्री श्रीमती महादेवी वर्मा को, २८ नवम्बर को एशियाई खेलगाव के विशाल सभागार मे, ब्रिटेन की प्रधानमन्त्री श्रीमती मार्गरेट थैचर ने १९८२ के ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया। सम्मान के रूप मे उन्हे डेढ लाख रु० का चैक, वाग्देवी की प्रतिमा और प्रशस्ति पत्र भेट किया गया।

इस अवसर पर श्रीमती थैचर ने महादेवी जी की एक कविता के एक अश का अपने भाषण मे अग्रेजी अनुवाद सुनाया और भारत के विदेश मन्त्री श्री पी० वी० नरसिंह राव ने जो स्वय साहित्य-मर्मज्ञ विद्वान हैं, जिसे अपने भाषण मे उद्धृत किया, इस कविता का अश इस प्रकार है —

प्रथम पद

घोर तम छाया चारो ओर घटायें घिर आई घनघोर।
वेग मारुत का है प्रतिकूल हिले जाते है पर्वत मूल॥
गरजता सागर बारम्बार कौन पहुचा देगा उस पार?

अन्तिम पद है

सुनाई किसने पल मे आन कान मे मधुमय मोहक तान?
तरी को ले जाओ मझधार डूब कर हो जाओगे पार।
विसर्जन ही है कर्णधार वही पहुचा देगा उस पार॥

राजस्थान में आयुर्वेद के निदेशक श्री प्रहलाद रांय देराश्री नियुक्त

जयपुर दिनाक २६ अक्टूबर १९८३ को राजस्थान सरकार ने एक आदेश प्रसारित कर आयुर्वेद के प्रख्यात चिकित्सक श्री प्रहलाद राय देराश्री को आयुर्वेद निदेशक नियुक्त किया है।

श्री देराश्री वर्षो आयुर्वेद विभाग, राजस्थान मे अनेक उच्च पदो पर कार्यरत रहे। सफल चिकित्सक, आचार्य तथा प्रशासनिक अधिकारी के रूप मे अनेक नगरो म आप पदासीन रहे।

श्री देराश्री का जन्म दिनाक २५ नवम्बर १९२८ को राजस्थान के भीलवाडा जिले के बनेडा ग्राम मे हुआ तथा प्रारम्भिक शिक्षा बनेडा व भीलवाडा मे सम्पन्न हुई तदनन्तर राजकुमारसिंह आयुर्वेद कालेज इन्दौर से बी० आई० एम० एम० उत्तीर्ण कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया साथ ही बी०ए० एल० एल० बी० साहित्य रत्न की भी उपाधिया प्राप्त की।

आपके निदेशक कार्यभार सम्भालते ही राजस्थान आयुर्वेद के आयुर्वेद चिकित्सको के वेतनमान मे पुन वृद्धि हुई तथा प्रशासन में जागरूकता उत्पन्न हुई।

आयुर्वेद जगत को इस नियुक्ति से अत्यन्त हर्ष है।

—मुनिदेव उपाध्याय, वरिष्ठ चिकित्सक

सेनेगल में हिन्दी विदेशी भाषा के रूप में पढ़ाई जाएगी

नई दिल्ली १ दिसम्बर (वार्ता)। लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड ने अफ्रीकी देश सेनेगल द्वारा अपने यहां हिन्दी को विदेशी भाषा के रूप में पठन-पाठन आरम्भ कराने पर प्रसन्नता व्यक्त की है।

सेनेगल के ससदीय प्रतिनिधिमडल के सम्मान में आज आयोजित रात्रि भोज के अवसर पर बोलते हुए श्रीजाखड ने वहां तमिल और सस्कृत का अध्ययन शीघ्र आरम्भ कराने पर भी खुशी जाहिर की।

(नवभारत टाइम्स २-१२-८३)

उपदेशक और भजनीकों की आवश्यकता है

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को ऐसे उपदेशको और भजनीको की आवश्यकता है, जिन्हे आर्य समाज के सिद्धान्तो की पूर्ण जानकारी हो और जो आर्य समाज के इतिहास को भी जानते हो। जिन्हे इस क्षेत्र का कुछ अनुभव होगा, उन्हे प्राथमिकता दी जायेगी। वेतन का ग्रेड निम्न प्रकार होगा —

उपदेशक—६००-३०-७२० कार्य क्षमता रोक ४०-१०००।
भजनीक—३५०-२५-४५० कार्य क्षमता रोक ३०-६००।
महगाई अलौस इसके अतिरिक्त होगा। २२५) मासिक।

जो महानुभाव पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के अधीन आर्य समाज की सेवा करना चाहते हैं वह निम्न लिखित पते पर आवेदन-पत्र भेजें, जिसमे अपनी योग्यता और अनुभव का विस्तार पूर्वक विवरण दिया गया हो।

—रामचन्द्र जावेद
महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब,
गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा
जालन्धर शहर १४४००४

सम्पादकीय

हिन्दू-सिख विभेद कैसे पनपा ?

"आज का उभरता हुआ ज्वलन्त प्रश्न है कि क्या सिख पन्थ हिन्दू धर्म से भिन्न है ? १८७२ के 'एडिनबरा रिव्यू' के एक अङ्क में लिखा है, "पृथ्वी पर हिन्दू एक अत्यन्त प्राचीन राष्ट्र है, जो सभ्यता और सुसंस्कृति में अद्वितीय है।" हिन्दू धर्म, जैसा कि सर्वविदित है, संसार के प्राचीनतम धर्मों में से एक है तथा इसका उद्गम भारत देश है। इसे "वैदिक धर्म", "सनातन धर्म" आदि नामों से पुकारा गया है। समय-समय पर हिन्दू धर्म में आई कुरीतियों को दूर करने के लिए अनेक मतों का अभ्युदय होता रहा है। वास्तव में हिन्दुत्व स्वयं कोई 'इज़म' अथवा मत (रिलीजन) नहीं है, परन्तु इसके विकास में अनेक मतों ने योगदान दिया है। निश्चय ही सिख पन्थ भी उसकी एक अभिन्न कड़ी है।

यदि ऐतिहासिक सन्दर्भ में देखा जाए तो ऐसा लगेगा कि धार्मिक स्वतन्त्रता व समन्वय की यह भावना हिन्दू धर्म की विशेषता रही है। समय-समय पर हिन्दू धर्म में, अनेक धार्मिक सम्प्रदायों तथा उपासना पद्धतियों का विकास हुआ परन्तु इसका सम्बन्ध सदैव उसकी मूल धारा से रहा। गुरुनानक देव से लेकर १८४७ ई. तक समन्वय का यह निरन्तर प्रवाह अबाध गति से चलता रहा।

ब्रिटिश राजनीति का षड्यन्त्र

परन्तु १८४९ ई० में पंजाब के अंग्रेजी साम्राज्य में विलीनीकरण से इस प्रवाह को रोकने तथा योजनापूर्वक अलगाव की भावना पैदा करने का प्रयास हुआ। अलगाव का मुख्य कारण ब्रिटिश राजनीतिज्ञों का प्रयास था। लार्ड डलहौजी को लगा कि पंजाब के अंग्रेजी राज्य में मिल जाने से सिखों की संख्या निरन्तर घटती जाएगी। अतः सिख सैनिकों को लम्बे बाल रखने तथा दाढ़ी रखने के लिए प्रेरित किया, उनके लिए सिख ग्रन्थी नियुक्त किए तथा उनके लिए गुरुद्वारा जाना अनिवार्य किया। उसने "बांटो और राज्य करो" के विभाजनकारी शास्त्र का भी उपयोग किया। सिखों को भी "राजभक्त" तथा "देशद्रोही" दो भागों में बांटा गया। जिन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध १८५७ ई० में भाग लिया था, उन्हें अनेक यातनाएं कष्ट तथा देश निकाला दिया गया तथा "जी हुजूर" सिख नेताओं का एक नया वर्ग तैयार किया गया। इन्हीं जी-हुजूर नेताओं के माध्यम से इस पृथक्करण की भावना को उत्तेजित किया गया गुरुमुखी लिपि एवं जन्म तथा विवाह के संस्कारों को योजना पूर्वक अलगाव की भावना पैदा करने में उपयोग किया गया।

तत्कालीन ग्रन्थों तथा घटनाओं के अध्ययन करने से स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि हिन्दू समाज में सिखों को अलग करने की प्रवृत्ति के जन्मदाता अंग्रेज ही थे जिनका उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य को बहुत देर तक बनाए रखना था। अंग्रेजों की हिन्दु-मुस्लिम तथा केशधारी व गैर-केशधारी हिन्दुओं को अलग करने की नीति में बड़ी समानता दिखाई देती है। जिस प्रकार सर सय्यद अहमद खां जैसे व्यक्ति को सरकारी सम्मान दिए गए, वैसे ही वफादार सिख नेताओं को ऊंचे ऊंचे स्थान दिए गए।

१८९२ ई०में खालसा कालिज,अमृतसर की स्थापना हुई जिसकी व्यवस्थापिका समिति का अध्यक्ष लाहौर के अंग्रेज कमिश्नर को बनाया गया। इसके सदस्य अमृतसर के कलेक्टर तथा शिक्षा निदेशक इत्यादि होते थे। शीघ्र ही यह कालेज 'चापलूसों का कालेज' के नाम से प्रसिद्ध हो गया परन्तु अभी भी अंग्रेज अपनी योजना में पूर्णतः सफल नहीं हुए।

मैकालिफ की छद्म योजना

अंग्रेजों की सिख पन्थ को हिन्दू धर्म से अलग करने की विनाशक योजना को आंशिक सफलता १९वीं शताब्दी के अन्तिम दशक में मिली। इस योजना को सफल करने में श्री मैक्स आर्थर मैकालिफ ने वही कार्य किया जो कांग्रेस के जन्मदाता ह्यूम अथवा अलीगढ़ कालेज के प्रिंसिपल मिस्टर बेक ने किया था। मैकालिफ अंग्रेजी साम्राज्य की सुरक्षा तथा सिख व हिन्दुओं में भेद भाव उत्पन्न करने के प्रयोग में काफी सफल हुए।

मैकालिफ आयरलैंड का रहने वाला व्यक्ति था। उसका जन्म २९ सितम्बर १८३७ ई० को हुआ था। १८६२ में आई० सी० एस० की परीक्षा पास कर उसकी पहली नियुक्ति बंगाल में हुई। पंजाब में अपना भविष्य उज्ज्वल देखते हुए उसने अपना तबादला पंजाब करवा लिया। यहां आकर उसने हिन्दी व फारसी का ज्ञान प्राप्त किया। १८ वर्ष तक न्यायाधीश के रूप में पंजाब में कार्य किया। सरकारी नियमों में संशोधन होने से उसे लगा कि पंजाब तबादला करने पर उसे आर्थिक हानि हुई है, अतः वह पुनः बंगाल जाने का प्रयास करने लगा। तत्कालीन वायसराय लार्ड रिपन ने उसके प्रार्थना पत्र को स्वीकार नहीं किया। १८८२ ई. में वह डिप्टी कमिश्नर एवं १८८४ ई० में जालन्धर डिवीजन का डिविजनल व सेशन जज नियुक्त हुआ तथा इसी पद पर १८८८ ई० में उसका स्यालकोट तबादला हो गया। इसी बीच मैकालिफ ने पुनः बंगाल जाने के प्रयत्न किए। सम्भवतः इसके मुख्य कारण मैकालिफ का अपने एक वकील के प्रति अशिष्ट व्यवहार, सरकारी कार्य के प्रति उदासीनता तथा उपेक्षा थी।

जब मैकालिफ को तबादला न होने से निराशा हो गई तो उसने अपना ध्यान दूसरी ओर लगाया। वह एक बार दीवाली के अवसर पर अमृतसर गया तथा सिख पन्थ से अत्यधिक प्रभावित हुआ। उसने 'कलकत्ता रिव्यू" में कई लेख लिखे। गुरुमुखी लिपि का ज्ञान प्राप्त किया, ज्ञानियों से सम्पर्क स्थापित किया। सिंह सभाओं में भाग लेना प्रारम्भ किया। फरीदकोट नाभा व पटियाला के राजाओं ने उसे सहायता दी।

१८९३ ई० में उसने "आदि ग्रन्थ" का अंग्रेजी में अनुवाद करने का विचार किया तथा पंजाब सरकार से यह प्रार्थना की कि उसे सरकारी नौकरी से मुक्त कर अनुवाद करने के लिए 'स्पेशल ड्यूटी" पर लगाया जाए। मैकालिफ ने यह भी बताया कि सिक्ख धर्म के इस ग्रन्थ का अनुवाद करना "लाभकारी" होगा। उसने इससे पूर्व १८७७ ई० में एक जर्मनी मिशनरी डा० ट्रम्प के अंग्रेजी अनुवाद की कटु आलोचना भी की।

अक्तूबर १८९८ ई० "एशियाटिक क्वाटरली रिव्यू" में अपने एक लेख में मैकालिफ ने इस ग्रन्थ का अनुवाद करने के पीछे अपने उद्देश्य को स्पष्ट किया है। उसका यह कथन है कि यूरोप, अमरीका, आस्ट्रेलिया आदि देशों में अनेक लोग सिख पन्थ को हिन्दू धर्म का अङ्ग ही समझते हैं। वह उनके इस भ्रम को दूर करना चाहता है। स्वयं मैकालिफ ने इस ग्रन्थ का अंग्रेजी अनुवाद राजनैतिक दृष्टि से भी उपयोगी बतलाया। मैकालिफ का कहना है कि वह इस स्तर से डा० ट्रम्प द्वारा किए गए गलत अनुवाद का कुछ प्रायश्चित कर सकेगा तथा इसके द्वारा विश्व को नए धर्म से परिचित करायेगा। अतः मैकालिफ का मुख्यतः राजनैतिक उद्देश्य था। १६ नवम्बर १८८८ के सिंह सभा, अमृतसर द्वारा लार्ड डफरिन को एक स्मृति पत्र का हवाला देते हुए उसने लिखा है कि अगर "हमारे पवित्र ग्रन्थ का विश्वसनीय अनुवाद हुआ तो वह उसी तरह सच्चे व राजभक्त सिख रहेंगे जैसा कि पहले ब्रिटिश सरकार के थे।"

(शेष पृष्ठ ९ पर)

सामयिक चर्चा—

जब निहंग अजीतसिंह ने बेटा बताकर एक हिन्दू युवक के जीवन की, गुरुनानकदेव जी तथा सिख पन्थ की गौरव गरिमा की रक्षा की और मानवता को धन्य किया

उनका नाम है बाबा अजीत सिह। वे निहग है उन्होने तरन तारन के निकट पट्टी मे अपहृत बस के ४ हिन्दू यात्रिया की निर्मम हत्या होते देखी थी। उन्होने ७ नवम्बर को दिल्ली मे इस लोम हर्षक काड का आखो देखा वर्णन किया है।

बाबा की आयु ६६ वर्ष की है। निहगो की पोशाक धारण किए हुए थे और हाथ मे तलवार थी। उन्होने हरबसलाल हिन्दू यात्री को अपना बेटा बताकर उग्रवादियो के हाथो से कत्ल होने से बचाया था।

इस काड का वर्णन करते हुए उन्होने कहा उग्रवादियो मे से एक ने जो इस हत्याकाड का नेतृत्व कर रहा था बस यात्रियो को बताया कि उन्हे पडोस के एक देश मे इस प्रकार का प्रशिक्षण प्राप्त हुआ है। ये ९ उग्रवादी जवान थे तथा पगडिया बाधे हुए थे और उनके दाढिया भी थी।

१७ नवम्बर के प्रात ६॥ बजे यात्रियो से भरी हुई बस अमृतसर से रवाना हुई। बस मे बेतहाशा भीड थी। परन्तु जब यह तरन तारन पहुची तो उससे कुछ यात्री उतर गए परन्तु उनसे ज्यादा चढ भी गए। इन चढने वालो में ९ उग्रवादी भी थे।

बस के तरन तारन से करीब २ किलोमीटर दूर जाने पर एक उग्रवादी ने एक रिवाल्वर निकाला और ड्राइवर की ओर झपटा और उसे कहा कि बस को फौरन रोक दो यदि नही रोकी तो गोली से भून दिया जायगा।

ड्राइवर ने बस रोक दी। जब वह बस से उतरने लगा तो एक उग्रवादी ने उसे पीछे से खीचकर कहा कि वह बस के भीतर ही रहे। इसके बाद वह उग्रवादी बस चलाने बैठ गया।

एक दूसरे उग्रवादी ने जिसके हाथ मे भी रिवाल्वर था यात्रियो को बस के भीतर ही रहने का आदेश दिया। उग्रवादिया न हिन्दू यात्रियो को यह भी हुक्म दिया कि उनके पास जो कुछ माल मत्ता हो वह सब उनके हवाले करदे।

इससे पहले एक उग्रवादी ने कन्डक्टर (सवाहक) के मुह पर एक तमाचा जडा और उसका नकदी व थैला छीन लिया क्याकि उसके मुह से शराब की गध आ रही थी।

हरबसलाल बाबा अजीत सिह के पास वाली सीट पर बैठे थे जो कत्ल के लिए चुने जाने वालो मे से एक थे। हरबस लाल अमृतसर के एक बेक मे कार्य करते हैं। उग्रवादियो ने उन्हे सीट पर से उठने रिस्ट वाच एव नकदी उनके हवाले कर देने का हुक्म दिया। बाबा अजीतसिंह ने उग्रवादी को जो बस मे इधर उधर चक्कर लगा रहा था कहा कि हरबललाल उनका बेटा है और वे दोनो दो बेटियो का रिश्ता तय करने एक साथ जा रहे हैं।

बाबा के कथनानुसार उग्रवादियो को उनके इस कथन पर विश्वास न हुआ। उन्होने पूछा कि यदि वह उनका बेटा होता तो उसकी दाढी मूछ मुडी हुई न होती। बाबा को हरबसलाल की जान बचाने का एक बहाना तुरन्त सूझ पडा। उन्होने उन्हे कहा कि 'मेरे इस बेटे को पहलवानी का शौक है इसीलिए इसने दाढी मूछ मुडवा रखी है। बाबा ने भेंटकर्त्ता (ए आर विग देखे हिन्दुस्तान टाइम्स ८ १२ ८३) को यह भी बताया कि 'हरबसलाल की जान मैंने नही अपितु गुरु नानकदेव जी महाराज ने बचाई है।'

बस के हरकत म आने पर जो उग्रवादी उसे चला रहा था वह तुरन्त उसे सडक से हटाकर एक निर्जन स्थान पर ले गया। यह बस एक गड्ढे मे गिरी थी जिसे उग्रवादियो ने मुसाफिरो की सहायता से उसे बाहर निकाला था। नौजवान कातिलो ने हिन्दू मुसाफिरो को बस से खीचकर बाहर निकालना शुरू कर दिया। एक नवक हिन्दू को एक उग्रवादी अपने हाथो से उठाकर बस के पिछले दरवाजे पर ले गया और गोली मारकर उसकी हत्या कर दी। तीन अन्य हिन्दू यात्रियो को भी गोली का निशाना बनाया और दया करने और क्षमा करने की उनकी बातो को भी अनसुना कर दिया था।

आक्रोशपूर्ण प्रतिक्रिया

हिन्दुस्तान टाइम्स के २६ ११-८३ के अक मे श्री खुशवन्तसिह ने जान मे वा अनजान मे चर्बी भक्षण को भक्ष्य वा निर्दोष दिखाने की गलत चेष्टा की थी और अपने विश्लेषण की पुष्टि मे प्राचीन आर्य गोमास भक्षी थे और पौराणिको ने वैदिक शिक्षाओ मे हेरफेर करके गऊ को पूज्या की पदवी प्रदान की और उसका मास अभक्ष्य ठहराया वही थोथी अनर्गल एव शरारत पूर्ण दलील दी जिसका निष्पक्ष विद्वानो और अनुसधान कर्त्ताओ के द्वारा जिनमे पाश्चात्य विद्वान भी सम्मिलित है अनेक बार खण्डन किया जा चुका है और जो पाश्चात्य विद्वान कहे जाने वाले कुछेक स्वार्थी लोगो की शरारत स्पष्ट की जा चुकी है क्योकि वेद मे सर्वत्र गऊ अघन्या इगित की गई है। और उन तथाकथित विद्वानो ने स्वार्थ सिद्धि हेतु वा अज्ञानवश अर्थ का अनर्थ करके घोर अपराध किया है। इस प्रकार की गलत व्याख्याओ और निष्कर्षों को मान्यता देने वा देते रहने वाले भारतीयो को मूर्खों की सज्ञा देते हुए इनका अनुसरण न करने का आह्वान करते हुए स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था कि मूर्खों अपना निष्पक्ष और विद्वत्तापूर्ण अनुसन्धान करो।

इस लेख के सदर्भ मे बडी आक्रोशपूर्ण प्रतिक्रिया हुई है और वास्तव मे होनी थी। एक बन्धु का कहना है कि खुशवन्तसिह ने भारत के प्रत्येक नागरिक की आम भावनाओ का व्यगात्मक मखौल किया है।

उन्होने किसी भी प्रकार की चर्बी के खाने को वैध करार देने और फलत हिन्दू आदर्शों व परम्पराओ को खतरे मे डालने का व्यर्थ प्रयास किया है। एक दूसरे समीक्षक के अनुसार लेखक महोदय चर्बी के मामले मे फसे अपराधियो का बचाव करते प्रतीत होते हैं जिन्हे किसी प्रकार क्षमा नही किया जा सकता। एक तीसरे की दृष्टि मे यह ठीक है कि अनजान मे चर्बी वा अन्य किसी ऐसी चीज का खाना पाप नही है परन्तु इसे खाद्यतैलो मे मिलाना और भोले भाले और निर्दोष व्यक्तियो को खिलाना जो उसके विरुद्ध हो पाप और अपराध ही है।

दूसरे विवाह के लिए इस्लाम में धर्मांतरण अवैध किया जाय

आर्य समाज की मांग का समर्थन

श्री डा० तहीर मुहम्मद ने २७-१०-८३ के हिन्दुस्तान टाइम्स मे छपे अपने लेख मे जिसका शीर्षक था 'धर्मान्तरण और कानून' विलायत राज बनाम सुनीला के केस का हवाला दिया है (देखें ए० आई० आर० १९८३ दिल्ली ३५१) जिसकी पैरवी श्री सी० वी० बनाई ऐडवोकेट ने विलायत राज की ओर से की थी

इस लेख की समीक्षा करते हुए ऐडवोकेट महोदय ने कहा है कि (हिन्दुस्तान टा० ९ १२ ८३) हिन्दू पति पत्नी के दोनो के इस्लाम ग्रहण कर लेने पर मुस्लिम कानून के अनुसार उन दोनो का हिन्दू धार्मिक विधान और प्रथा से हुआ विवाह स्वत एक माहिदा हो जाता है या नही यह सुनिश्चित नही है।

धोखेधडी से हिन्दू धर्म से इस्लाम मे धर्मान्तरण को रोकने का ऐडवोकेट महोदय ने सुझाव दिया है और एक प्रकार से आर्य समाज की इस माग की पुष्टि की है कि कानून मे इस प्रकार का सशोधन किया जाय कि उस हिन्दू को जिसका हिन्दू विधान से विवाह हुआ हो और जिसकी पत्नी जीवित हो, उस समय तक दूसरा विवाह करने की अनुमति न होगी जब तक कि उस कानून के अन्तर्गत जिसके अन्तर्गत दोनो का विवाह हुआ हो विवाह विच्छेद न हो जाय।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

शरीर में आत्मा का स्थान

—कर्म नारायण कपूर, दिल्ली-५

१. आत्मा का निवास स्थान मन है—एको ह देवो मनसि प्रविष्टः—यह देव-जीवात्मा मन मे प्रविष्ट रहता है। (अथर्व. १०-८-२८)। इसी प्रकार ऋग्वेद (१-१६४-३७) की सूक्ति है—निण्यः सन्नद्धो मनसा चरामि-अर्थात मैं मन से अच्छी प्रकार बंधा हुआ और उसमें छिपा हुआ विचरता हूं।

२. मन आत्मा के सूक्ष्म शरीर का एक तत्व है। (साख्य ३-९) यह हृदय में स्थित है—हृत्प्रतिष्ठम तन्मेमन: (यजु: ३४-६)। इसी भाव को अथर्ववेद में इस प्रकार वर्णन किया है:—

इमानि यानि पञ्चेन्द्रियाणि मनः षष्ठानि मे हृदि ब्रह्मणा, संशितानि (१९-९-५)

अर्थात:—ये पांच ज्ञानेन्द्रियां तथा छठा मन मेरे हृदय मे उत्तम रूप से आश्रित है।

३. निरुक्त में 'हृदय' की व्युत्पत्ति करते हुए लिखा है कि हृदय को हृदय इसलिए कहते हैं क्योंकि यह तीन काम करता है—'हृ' से हरित 'द' से ददाति 'य' से याति—यह लेता है, देता है, और चलता है। हृदय द्वारा लेना-देना रुधिर का होता है। हृदय शरीर के अशुद्ध रुधिर को लेकर फिर उसे फेफड़ों द्वारा शुद्ध कर शरीर को देता रहता है और इसी उद्देश्य से गति करता रहता है। (देखें: प्रो: सत्यव्रत सिद्धांतालंकार कृत एकादशोपनिषद पृ. ५५६)

४. वैदिक संध्या का दूसरा तथा तीसरा मन्त्र इस प्रकार है—

[क] ओं वाक् वाक्, ओं प्राणः प्राण., ओ चक्षु चक्षु., ओं श्रोत्रम श्रोत्रम, ओं नाभिः, ओं हृदयम:, ओ कण्ठ., ओं शिर:, ओं बाहुभ्यां यशो बलम्, ओ करतल कर पृष्ठे ॥

[ख] ओं भू पुनातु शिरसि, ओं भुवः पुनातु नेत्रयो, ओं स्वः पुनातु कण्ठे, ओं महः पुनातु हृदये, ओं जनः पुनातु नाभ्याम्, ओ तपः पुनातु पादयो, ओं सत्यं पुनातु पुनः शिरसि, ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र ॥

इन मन्त्रों में हृदय का स्थान कण्ठ और नाभि के मध्य दर्शाया गया है। तीसरे मन्त्र में शरीर के अंगों का क्रम नैसर्गिक, सुनिश्चित तथा आसानी से सिद्ध होने वाला है।

इस प्रसंग में अथर्ववेद ?-८-१२ द्रष्टव्य है जहां पर उदर क्लोमन नाभि और हृदय के रोगों की चिकित्सा का वर्णन है। यह शरीर के अंग कण्ठ के नीचे और कटि प्रदेश के ऊपर है।

इन मन्त्रों से सिद्ध हो जाता है कि शरीर में हृदय का स्थान कण्ठ से नीचे नाभि से ऊपर बांए फेफड़े के पास है।

५. आधुनिक चिकित्सा शास्त्र के अनुसार हृदय शरीर की सबसे अधिक महत्वपूर्ण इन्द्रिय है जिसका संचालन बन्द होने पर प्राणी की मृत्यु हो जाती है। हृदय शरीर में नाभि से ऊपर और बाए स्तन के पास स्थित होता है। यह केन्द्रीय स्थान है, जहां शरीर का अशुद्ध रक्त लगातार आता रहता है स्वच्छ शुद्ध होकर शरीर के प्रत्येक भाग मे धमनियों द्वारा पहुंचता रहता है।

हृदय में दो पम्प होते हैं, एक दायी ओर और दूसरा बाई ओर। दांयी ओर वाला पम्प शरीर से आने वाले रक्त को फेफड़ो मैं भेजता रहता है जहां उसे ताजा आकसीजन मिलती रहती है। बाई और वाला पम्प इस शुद्ध हुए रक्त को एओरटा (Aorta) नाम वाली नाड़ी के द्वारा शरीर के प्रत्येक भाग भेजता रहता है।

६. "मस्तिष्क के कोषाणुओं (Cells) के लिए यह आवश्यक है कि उसे रक्त में पाए जाने वाले आकसीजन तथा अन्य पौष्टिक घटकों की सामग्री प्रचुर मात्रा में लगातार मिलती रहे।

यदि मस्तिष्क के कोषाणुओं को ४-१० मिनटो से अधिक रक्त न मिले तो वे मृत हो जाते हैं। अतः यह जानना उपयोगी होगा कि मस्तिष्क को रक्त किस प्रकार मिलता है। हृदय से सचकीली धमनियों के जाल द्वारा रक्त लगातार मस्तिष्क में पम्प होता रहता है। यहां धमनियां छोटी छोटी धमनियों में बंटी होती है और रक्त कैपिलिरियों (Capalirries) द्वारा मस्तिष्क के कोषाणुओं को पहुंचता है। (द्र: strokes P. 3 Published by All India Heart Foundation)

७. कई विद्वानों का मत है कि हृदय मस्तिष्क के अतिरिक्त और कोई अंग नही हो सकता (द्र: वेदवाणी जुलाई १९८३ पृ. ५-१०, सार्वदेशिक १७ जुलाई १९८३ पृ. ७-८)। इन विद्वानो ने दर्शन और आयुर्वेद के ग्रन्थो का सहारा लेकर अपने मत का प्रतिपादन किया है।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

परार्थ दानदाता को वीर और सत्पुत्र प्राप्त होता है

प्र यं राये निनीषसि मर्तो यस्ते वसो दाशत्।
स वीरं धत्ते अग्न उक्थशंसिनंत्मना सहस्रपोषिणम् ॥

ऋक्० ८-१०३-४

ऋषि—सोभरिः कण्व। देवता-अग्निः। छन्द. बृहती।

शब्दार्थ—हे (वसो) सबको बसाने वाले! (य: मतः) जो मानव (ते) तेरे निमित्त अर्थात् परार्थ (दाशत्) कुछ देता है, और (यम्) जिसको तू (राये (प्र निनीषसि) प्रणयोपरान्त पति पत्नी के समान, समृद्धि करना चाहता है, (स:) वह मनुष्य (अग्ने) सबके उन्नायक! तेरी कृपा से (उक्थ शसिनम्) सामगायक वेद प्रवक्ता और (सहस्रपोषिणम्) सहस्रो प्राणियों के पोषणकर्ता (वीरम्) वीर पुत्र को (त्मना) अपने कर्मानुसार (धत्ते) धारण करता है-और वह पुत्र उसके पास रहता है।

निष्कर्ष—जो परार्थ कर्म करता है, और जिसे तू उन्नत करना चाहता है, वह सत्पुत्र प्राप्त करता है। परार्थ करने पर भी सत्पुत्र न मिले तो समझ लेना, अभी सर्वोन्नायक प्रभु की ऐसी इच्छा नही है।

सामवेद के मन्त्र सख्या ५८ मे 'य निनीषसि' के स्थान पर 'यो निनीषति' है। तब अर्थ होगा जो तेरे निमित्त देता है, और जो प्राणीमात्र को समृद्ध करना चाहता है, उसे सत्पुत्र मिलता है।

तुम दूसरो को समृद्ध करोगे तो परमात्मा तुम्हें प्रवक्ताशुचि और सहस्राधिक जन का पोषणकर्ता—श्रीमान् पुत्र देगा, जिसके द्वारा तुम समृद्ध होओगे, और तुम्हारा यश बढ़ेगा। और इस तरह तुम्हारा कुल योगियों का जन्मदाता बन जाएगा। गीता मे—शुचीनां श्रीमता गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायतो' द्वारा इसी बात का समर्थन किया है।

केवल वेद प्रवक्ता अथवा शुचि, या केवल सहस्रपोषी अथवा श्रीमान होना पर्याप्त नही है। क्योंकि केवल शुचि वेदवक्ता को अपने भरण-पोषण के लिए दूसरों पर निर्भर होना पड़ेगा और केवल सहस्रपोषी श्रीमान के भोगासक्त और अहंकारी बन जाने का भय रहता है। इसलिए आदर्श पुत्र तो वही होगा, जो वेद प्रवक्ता भी हो, और सहस्रपोषी भी हो।

विशेष—मन्त्र के ऋषि शब्द का अर्थ संकेत करता है कि—कण कण करके प्रगति करने वालों का वशज (काण्व) और सपथ के धन से अपना भरण पोषण करने वाला (सोभरिः) ही, स्वय प्रगतिशील बनकर दूसरो को आगे ले जाने वाला अग्नि बनता है।

मन्त्र के छन्द शब्द का अर्थ सकेत करता है कि काण्व सोभरि बनने के लिए अपने हृदय को उदार और मन को धीर-वृहत् बनाना चाहिए।

अर्थ पोषक प्रमाण—

काण्व. सोभरिः-कण् (मतौ)+अपत्य प्रत्यय, सु (सुपथा)+भर. एव सोभरि.।

उक्थ शंसिनम—उच्यते परितो भाष्यते यतदुक्थम्-सामवेदो वा। उणादि २-९

उक्थं शसति तम्—सामवेद या वेद का प्रवक्ता या पाठी।

प्र निनीषति—प्रणयपूर्वक आगे ले जाना चाहता है।

प्र- प्राणियों को निनीषति—आगे ले जाना चाहता है।

सहस्रपोषिणम् - पुषू पुष्टौ, पुष् धारणे। दाशत्—दाशृ-दाने।

पुत्रं ददाति दाशुषे। ऋक् ५-२५-५ दधद्रत्नानि दाशुषे। ऋक् ४-१५-३

इन दो मन्त्र खण्डो के आधार पर वीर का अर्थ पुत्र किया है। वह पुत्र वीर तो होना ही चाहिए।

मनोहर विद्यालंकार

सम्पादक के नाम पत्र

पाठ्य पुस्तक में मनुस्मृति

महाराष्ट्र सरकार द्वारा ८ वी कक्षा के लिए प्रकाशित इतिहास की पाठ्यपुस्तक पढकर दुख होता है। उसमे वैदिक धर्म का जो स्वरूप प्रस्तुत किया गया है उससे लगता है कि उसके लेखक को इस विषय का ज्ञान नही है क्योकि उसमे जो बातें लिखी गयी हैं वे १९ वी सदी के पाश्चात्य विद्वानों के अपने विचार थे, गत सौ सालो मे उनके विचारो मे भी पर्याप्त परिवर्तन हुआ है कई पाश्चात्य विद्वानों ने वेदो को समझने के लिए पुरी प्रामाणिकता के साथ प्रयत्न किया है उनमे जैनिन मिलर जे गोंडा, प्रभृति विद्वानो के नाम उल्लेखनीय हैं किन्तु हमारे बच्चो के लिए पाठ्य पुस्तक लिखने वाले, अंग्रेजो के समय मे लिखी गयी पुस्तको को ही आधार बनाकर लिखा करते हैं यह शोचनीय है।

दूसरी बात यह है कि उस पुस्तक मे मनुस्मृति पर कुठाराघात किया गया है, उसमे स्पष्ट रूप से लिखा गया हैं 'मनुस्मृति का दृष्टिकोण पक्षपातपूर्ण हैं' 'मनुस्मृति के सिद्धान्त और नियम समता, स्वतन्त्रता तथा मानवता के विरोधी प्रतीत होते हैं" इत्यादि, यहा प्रतीत' शब्द ध्यान देने योग्य है, इससे लगता है कि लेखक ने जो बातें लिखी हैं, उन पर उसे पूरा विश्वास नही है, ऐसी स्थिति मे किसी ग्रथ के बारे मे बच्चो की पाठ्य पुस्तको मे आक्षेप करना बिल्कुल अनुचित है, जो लोग "न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति" (स्त्री को स्वतन्त्र छोडना ठीक नही) वाक्य को उठाकर मनु की निन्दा करते हैं वे इस बात को भूल जाते हैं कि मनु ने यह भी लिखा है कि जहा नारी जाति का सम्मान होता है, वहा धार्मिक विद्वान पैदा होते हैं, '(यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते तत्र रमन्ते देवता), अशिक्षित नारी सम्मान नही प्राप्त कर सकती है, (अशिक्षित नारी का तात्पर्य यह नही कि जो स्कूल कालेज नही गयी, अशिक्षित वही है जिसको घर या घर के बाहर के अच्छे सस्कार प्रशिक्षण इत्यादि नही प्राप्त हो और जिसकी बुद्धि का विकास नही हुआ हो। इसी प्रकार लोग शूद्रो को नीचा दिखाने का आरोप मनु महाराज पर लगाते हैं, यह भी गलत है, उसी मनुस्मृति मे स्पष्ट रूप से यह भी लिखा गया है कि 'जन्मना जायते शूद्र सस्कारात् द्विज उच्यते' अर्थात जन्म से प्राय सभी (ज्ञान दृष्टि से शून्य) अज्ञानी अशिक्षित होते हैं और सुशिक्षा आदि से वे द्विज बन जाते हैं, विद्या और तप से ब्राह्मणत्व प्राप्त होता है इसके छोडने से ब्राह्मण भी शूद्र बन जाता है, मनुस्मृति मे जिन्हे शूद्र कहा गया है, वे आजकल के चतुर्थ श्रेणी के सेवक है, जो अपनी योग्यता बढाकर प्रथम श्रेणी तक भी पहुच सकते हैं। सम्पूर्ण मनुस्मृति को देखने पर और उसकी बातो को प्रकरणानुसार समझने पर, समानता स्वतन्त्रता अथवा मानवता विरोधी बातें कही भी नही दिखाई देगी, अत मेरा निवेदन है कि उपरोक्त पाठ्यपुस्तक मे शीघ्र परिवर्तन किया जाना चाहिए।

—ज्येष्ठ वर्मन

१९-६६० चैम्बूर कालोनी, बम्बई

महर्षि की मूर्ति की पूजा होगी

श्रीमन ! मैंने नवभारत टाइम्स के दिनाक १६-११-८३ के अक मे श्री अरविन्द कुमार गर्ग मेरठ का "अब महर्षि दयानन्द की मूर्ति की पूजा होगी" शीर्षक लेख पढा, और सम्भवत आपने भी उसे पढा ही होगा। क्या यह सत्य है कि कोई ऐसा प्रस्ताव सभा द्वारा पास हो गया है ? अगर ऐसा है तो ऋषि के मन्तव्यो पर घोर कुठाराघात होगा, और आर्य समाज सराय तरीन तो इसका विरोध करेगी ही और इसके विरोध मे यथा सम्भव पग भी उठायेगी।

मेरा अनुभव है कि ऐसी प्रतिमाओ के कारण ही मूर्ति पूजा आरम्भ हुई है मैंने स्वय दीक्षा शताब्दि मे जब कि मथुरा मे जलूस निकल रहा था, और जब गुरु विरजानन्द जी की कुटि पर लगे ऋषि के विशाल फोटू को देखा तो मैं वहा जलूस मे आए भक्तो की भावना को जानने की जिज्ञासा से अलग खडा हो गया, (मैंने ऋषि कृत ग्रन्थो का स्वाध्याय गुरुकुल वृन्दावन मे रहकर किया है) मेरा अटल विश्वास है कि महान व्यक्ति(धार्मिक महान व्यक्ति) की प्रतिमा बनाना मूर्तिपूजा का प्रारम्भ हैं, मैंने श्रद्धालुओं को ऋषि के फोटो को नमन करते प्रत्यक्ष देखा था, और सहसा मेरे मुख से निकल गया था, क्या यह मूर्तिपूजा नहीं है ? पास मे खडे एक पण्डा बोला कि केवल एक यही ऋषि के मन्तव्यो को मानने वाला है बाकी तो हमारे जसे ही हैं। इसी प्रकार के भाव "मूर्ति पूजा कहा से प्रारम्भ हुई" एक मोलाना से जो रिक्शा चलाता है मिले। मैं इस निष्कर्ष पर पहुचा हू कि अपरिपक्व श्रद्धालुओ के मनोभावो को रोका नही जा सकता ऐसी दशा मे एक मात्र यही उपचार है कि किसी महान आध्यात्मिक व्यक्ति की प्रतिमा न बनाई जाय। शायद इसीलिए ऋषि ने अपनी भस्मी किसी खेत मे बिखेर देने मे लिए कहा था। मैं समझता हू कि प्रतिमा बनाने से अधिक उत्तम होगा कि वैदिक साहित्य, व ऋषि द्वारा लिखित साहित्य का प्रकाशन बढाया जाय। वर्तमान मे व्यवसाय की दृष्टि को ओझल करके जो ग्रन्थ उपलब्ध नही है (ब्राह्मणादि आर्ष ग्रन्थ, गृह्य सूत्रादि का) प्रकाशन किया जाय तो श्रेष्ठ रहेगा, यही आर्यों के धन का श्रेष्ठ उपयोग होगा और यही निर्वाण शताब्दी की उत्तम उपलब्धि ही होगी। अगर हमारे कर्णधारो को ऋषि की स्मृति ही अभीष्ट है तो उन्हे चाहिए कि वह एक विशाल स्तूप बनावे जिसमे ऋषि के व वेद के अमूल्य वचन अंकित हो जो राष्ट्र की स्थायी निधि बन सके।

मैं कर्णधारो को स्पष्ट सचेत करता हू कि अगर उन्होंने महर्षि की प्रतिमा स्थापित भावुकता मे करने का निर्णय कर लिया है जिसकी मुझे आशा नहीं है तो प्रत्येक आर्य समाज को घोर विरोध करने के लिए विवश किया जायगा, और आर्य समाज सरायतरीन तो इसका घोर विरोध कर रही है। आ० प्र० निधि सभा उ० प्रदेश के उपप्रधान सेठ देवेन्द्र आर्य के भी यही विचार है। अगर ऐसा नही किया गया तो वह समय दूर नही जब हमभी उन मूर्ति पूजको मे गिने जाने लगे गे जिनका घोर विरोध ऋषि ने किया था और जिसका अन्तिम परिणाम हलाहल विष था। मेरे विचार मे जिस महर्षि की निर्वाण शताब्दी मनाई गई है उनके मन्तव्यो का प्रचार ही उसके प्रति श्रद्धा होगी। ऐसा मेरा मत है अन्यथा आप भी अन्य मतो के समान एक मतावलम्बी ही जायगे वैदिक धर्मी नही जैसा कि आप अब तक कहते आए हैं आशा है कि कर्णधार ध्यान देंगे।

—केशव देव आर्य

आ० स० सरायतरीन सम्भल (मुरादाबाद)

नोट—सार्वदेशिक सभा ने ऐसा कोई निर्णय नही किया है। सम्पादक

स्वतन्त्रता आंदोलन का इतिहास

नई दिल्ली, १-१२-८३ दिल्ली प्रशासन ने स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास नए सिरे से लिपिबद्ध कराने का बीडा उठाया है। उद्देश्य यह है कि इतिहास बच्चो के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सके।

मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री जगप्रवेश चन्द्र ने आज एक सवाददाता गोष्ठी में कहा कि भारतीय युवा पीढी को स्वतन्त्रता आंदोलन की पूरी जानकारी नहीं दी गई है। माध्यमिक विद्यालय स्तर की कक्षाओ के लिए निर्धारित सामाजिक अध्ययन की पुस्तकों में इस विषय पर केवल कुछ ही पाठ दिए गए हैं। उनमें भी पर्याप्त विवरण का अभाव है।

मुख्य कार्यकारी पार्षद का ख्याल है कि महान् स्वतन्त्रता सेनानियो तथा उनकी वीरतापूर्ण भूमिका और जन आन्दोलन के लिए महात्मागाधी की प्रेरणा तथा जवाहरलाल नेहरू और अन्य नेताओं द्वारा उसे कार्य रूप देने की बाते हर स्तर पर छात्रो में देशप्रेम की भावना भर सकती है।

श्री चन्द्र ने स्वतन्त्रता आन्दोलन के इतिहास की पुस्तक तैयार कराने को राष्ट्रीय आवश्यकता बताते हुए कहा कि 'बच्चो के लिए स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास' पर लिखी और अन्तिम रूप से चुनी गई पुस्तक के लेखक को ५० हजार रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा। पुस्तक लिखने के लिए एक वर्ष की अवधि और शब्द सख्या २५ से ३० हजार तक नियत की गई है। पांडुलिपि हिन्दी अथवा अंग्रेजी में लिखी जा सकती है।

(नवभारत टाइम्स १-१२-८३)

धर्म परिवर्तन क्यों ?

दो वर्ष पूर्व १९८१ में मीनाक्षीपुरम मे हरिजनो द्वारा बड़ी संख्या में इस्लाम धर्म स्वीकार करने की घटना से सारे देश में हल-चल मच गई थी। हिन्दू धर्म और आर्य समाज की पुण्य पताका फहराने वालो ने काफी शोर मचाया। राजा कर्णसिंह और महत अवैद्यनाथ को आगे कर विश्व हिन्दू परिषद ने प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर जप-तप, हवन-यज्ञ और उपदेशों का वृहद आयोजन किया। इस सिलसिले मे काफी धन भी एकत्र हुआ।

आर्य समाज के प्रयास से बहुत से लोग पुराने धर्म मे लौट भी आये। तमिलनाडु की सरकार ने धर्म परिवर्तन करने वालो को हरिजनों को दी जाने वाली सुविधाओं से वंचित करने की भी घोषणा की। ऐसा लगा कि धर्म परिवर्तन का यह क्रम रुक गया। पुनः अभी कुछ दिनों पूर्व रामनाथपुरम के आस-पास हरिजनों द्वारा इस्लाम धर्म स्वीकार करने की खबरें प्रकाश मे आयी हैं। प्राप्त समाचारों के अनुसार दक्षिण मे इस्लाम परस्ती का प्रवाह अन्दर ही अन्दर तेजी से चल रहा है।

ब्रिटिश शासन के दौरान हरिजनों द्वारा ईसाई धर्म स्वीकार करना असाधारण बात नहीं थी। विदेशी मिशनरियों को मोहक बातों से प्रभावित होकर सरकारी नौकरी और सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए बड़ी संख्या में हरिजनों, आदिवासियों, गिरिजनों ने ईसाई धर्म अपनाया, ईसाई धर्म तत्कालीन शासकों का धर्म था। वायसराय की काउंसिल और धारा सभाओं में प्रतिष्ठा का स्थान पाने के लिए कतिपय राजाओं और बड़े जागीरदारों ने भी ईसाइयत कबूल की। राजा का प्रभाव उसकी रैयत पर पड़ा और सहसा गिरिजाघरों में जाने वालों की संख्या में वृद्धि हुई।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात आशा की जाती थी कि विदेशी मिशनरियों द्वारा भारत में ईसाई मत का प्रचार बन्द हो जायेगा। पर हुआ इसके विपरीत, अंग्रेजों की दासता से मुक्त होने पर बर्मा और पाकिस्तान ने अपने देश से विदेशी मिशनरियों को निकाल दिया। भारत ने ऐसा नही किया। उल्टे तत्कालीन प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने एक विदेशी मिशनरी (सम्भवतः श्री एलेन) को नेफा के गवर्नर का सलाहकार नियुक्त कर दिया। परिणाम यह है कि उत्तरपूर्व के राज्यों में अंग्रेजी राज-भाषा बनने जा रही है और ईसाईयत मुख्य धर्म।

देश के प्रत्येक नगर में ईसाई मिशन द्वारा स्कूल, अस्पताल और अन्य कल्याणकारी संस्थानों के माध्यम से गरीबी का लाभ धड़ल्ले से उठाते हुए ईसाई धर्म के प्रेमियों की संख्या बढ़ाई जारही है, छोटे-छोटे बाजारों और उपनगरों में भी बच्चों के स्कूलों में हिन्दी के स्थान पर अंग्रेजी का प्रमुत्व बढ़ रहा है, हम अपने बच्चों को उन स्कूलों मे पढ़ाना गर्व की बात समझते है, इसका हानिकारक प्रभाव हमारी भाषा और भूषा पर पड़ रहा है, कालान्तर मे हमारी संस्कृति के व्यापक रूप से विकृत होने का खतरा उपस्थित हो गया है, यही क्रम यदि चलता रहा तो वह दिन दूर नही जब पृथक 'क्रिश्चियन स्टेट' की मांग उठ खड़ी होगी।

वोट के लोभ में हम विदेशी धन पर देश के अनेक स्थानों में 'दारुल उलूम' की स्थापना की इजाजत देते चले जा रहे हैं, मुसलमान शासकों ने भी इस प्रकार की संस्थाओं को स्थापित नहीं होने दिया था। अंग्रेजों ने भी विदेशी मूल की शिक्षा संस्थाओं को प्रश्रय नहीं दिया।

पेट्रो डालर के बल पर यह काम आज धड़ल्ले से हो रहा है। तैल-देशों में भारी संख्या में हमारे डाक्टर, टेकनिशियन तथा साधारण मजदूर गरीबी के कारण काम रहे हैं। वहां का पैसा हमारे यहां के गरीब लोगों को भ्रमित कर रहा है।

भारतीयों, विशेषतया अपने को हिन्दू कहने वाले लोगों को दिल पर हाथ रखकर यह सोचना चाहिए कि आखिर ये बेचारे गरीब हरिजन-गिरिजन अपना धर्म छोड़कर इस्लाम या ईसाई धर्म क्यों स्वीकार कर रहे हैं ? इसके आर्थिक कारण भी हैं, किन्तु सबसे बड़ा कारण सामाजिक भेदभाव है। सवर्ण हिन्दू अनुसूचित जाति और वन जाति के लोगों को हिकारत की नजर से देखते हैं। उन्हें उठने-बैठने में भी बराबरी का दर्जा नहीं देते। कुएं में पानी नहीं भरने देते, मन्दिरों में उन्हें पूजा की भी आज्ञा नहीं है।

हरिजनों-गिरिजनों को जो संवैधानिक संरक्षण, प्राप्त है उसे भी वापस लेने की लड़ाई लड़ने में कुछ लोग अपनी प्रतिष्ठा समझते हैं। डा. अम्बेदकर के नाम पर विश्वविद्यालय का नाम रखने से रोकने के लिए खून-खच्चर और आगजनी, तोड़ फोड़ पर उतारू होने वाले लोग उनमे बराबरी और स्नेह का संचार कैसे कर सकते हैं ?

पाठकों को स्मरण होगा कि कुछ वर्ष पूर्व देश के जाने माने नेता और तत्कालीन रक्षा मन्त्री बाबू जगजीवनराम ने वाराणसी मे स्व० डा० सम्पूर्णानन्दकी मूर्तिका अनावरण किया था। उनके चले जानेपर काशीके कुछ पंडितों ने उस पत्थर की मूर्ति को गंगाजल से धो कर शुद्ध किया था। यह शुद्ध करने वाला शैतान जब तक धर्म के ठेकेदारो के मस्तिष्क से नही भागता, धर्म परिवर्तन के भूत को रोका नही जा सकता। बाबू जगजीवनराम आर्थिक दृष्टि से किसी भी प्रकार किसी से पीछे नही हैं बराबर शासन में ऊंचे पदों पर विराजमान रहे हैं। उन्हें भी जो समाज में बराबरी का दर्जा नहीं पदों पर विराजमान रहे हैं, उन्हें भी जो समाज मे बराबरी का दर्जा नहीं देसकता, वह अकिंचन, दाने-दाने के मुहताज, चिथड़ो मे लिपटे हरीजनों-गिरिजनों को धर्मच्युत होने से कैसे बचा सकता है ?

इस देश में आवश्यकता है एक और महर्षि दयानन्द और महात्मा गाधी की जो अन्त्यजों को सचमुच गले लगाने की प्रेरणा प्रदान करे।

(असली भारत) २६-११-८३

(पृष्ठ ५ का शेष)

इस मत को स्वीकार करने में निम्न बाधायें उपस्थित होती है :

[क] कठोपनिषद (६-१६) के अनुसार हृदय की एक सौ एक नाड़ियां हैं उनमें से एक मूर्धा-सिर की ओर निकल गई है। प्रश्नोपनिषद (३-६-७) में भी ऐसा वर्णन मिलता है। उपनिषदों के यह वाक्य सिद्ध करते हैं कि हृदय का स्थान मस्तिष्क से भिन्न है।

[ख] यदि हृदय मस्तिष्क का अंग है तो इसकी पृथक संज्ञा देने की कोई आवश्यकता नहीं होती।

[ग] जब मस्तिष्क और हृदय मे पीड़ा होती है तो उनका अनुभव मस्तिष्क तथा छाती में होता है।

[घ] हृदय की धड़कन की जांच स्टेथस्कोप द्वारा छाती मे की जाती है न कि मस्तिष्क में।

[ङ] डाक्टर की छाती की बाई पसलियों को विद्युत की आरी से काटकर हृदय को शरीर से बाहर निकाल कर उसके पुराने वाल्व (Valve) को अथवा गली हुई नाड़ियों को निकाल कर नया वल्व व नई नाड़िया लगाकर हृदय को पुराने स्थान पर रखकर हृदय रोग का उपचार कर देते हैं। यह शल्य क्रिया इस तथ्य का अकाट्य प्रमाण है कि हृदय छाती मे नाभि के ऊपर और कण्ठ के मध्य मे स्थित है।

इस प्रसंग में यह प्रश्न उत्पन्न हो जाता है कि जब डाक्टर हृदय को शरीर से बाहर निकाल लेते हैं उस समय आत्मा कहा रहता है। इसका सीधा उत्तर यह है कि जिस प्रकार राजा अपनी राजधानी छोड़कर राज्य के किसी अन्य स्थान को चला जाता है वैसे ही आत्मा हृदय से निकलकर शरीर के किसी अन्य स्थान पर चला जाता है। वृहदारणायक उपनिषद (४-३-११) का कथन है कि अपने शरीर की रक्षा का भार प्राणों को सोपकर आत्मा स्वप्न में शरीर से बाहर विचर कर पुनः शरीर में आ जाता है। पाल ब्रन्टन ने अपनी पुस्तक 'ए हरमिट इन दी हिमाल्याज पृ: १८७ तथा "सर्च इन सीकरिट ईजिप्ट पृ० ७३-८५ पर अपनी आत्मा के शरीर से निकलने तथा अन्दर आने के अनुभव वर्णन किये है।

[च] सिर से पृथक होने पर मनुष्य के धड़ मे जीवन का रहना इस तथ्य की पुष्टि करता है कि आत्मा का स्थान हृदय है न कि मस्तिष्क, एक ऐसी घटना का उल्लेख जापान की १९८१-८२ की पत्रिका सोका गक्काई में मिलता है। जब एक चीनी युद्ध बन्दी का सिर उसके धड से तलवार द्वारा पृथक किया गया तो उसका धड़ पृथ्वी से उठकर चलने लगा परन्तु कुछ क्षणों के पश्चात पृथिवी पर गिर कर शान्त हो गया। ऐसा प्रतीत होता कि पुराने जमाने में बिना सिर के धड़ युद्धरत रहे (द्रः दयानन्द सन्देश अगस्त १९८३ पृष्ठ १५)

देशान्तर प्रचार

सुरीनाम देश

दक्षिण अफ्रिका स्थित ब्राजिल देश के उन्नियं भाग आटलान्टिक महासागर के किनारे ३ गयाना (फ्रेंच डच-बृटिश गयाना) के मध्य मे डच-गयाना (सुरीनाम) देश है। इस देशका क्षेत्रफल अनुमानत १८०,००० वर्ग किलोमीटर है जहा की जनसख्या केवल ४ लाख की है जाति वर्ग मे नीग्रो हिन्दुस्तानी-(इण्डोनेशियन) चीनी पुर्चगीज और गोरे जाति है "नीग्रो जाति अफ्रिका से पकड कर सुरिनाम स्टेट मालिको के हाथ बेचे जाते थे जो इनसे दास प्रथा मे काम कराते थे। जब १८६३ ई० मे दास प्रथा का खातमा हुआ और आजाद नीग्रो जगलो मे भाग चले तब मजदूरी के आवेदन मे डच सरकार ने भारत के शासक अग्रेजो से मजदूरो की माग की। सन १८७३ ई० ता० ५ जून को सर्वप्रथम लालारूख जहाज से ४१० मजदूर सुरिनाम आये लगातार ६४ जहाजो मे कुल ३४,००५ मजदूर इस देश मे आये। आज भारतीयो को जनसख्या अनुमानत १५०,००० की है जिनकी अपनी भाषा, सस्कृति व धर्म जीवित जागृत है।

सुरिनाम (डच-गायना) देश होलेण्ड का उपनिवेश था जिन्होंने करीब ३०० वर्ष तक इस देश पर शासन किया।

२५ नवम्बर १९७५ ई० की इस देश को आजादी मिली और डेमोक्रेटिक विधान अनुसार यह देश प्रजातन्त्र हो गया।

देश की आर्थिक दशा सदिग्ध होने के कारण कुछ लोग होलेण्ड मे आ बसे जिनमे नीग्रो करीब १०००,०० और भारतीय करीब ६०,००० है। असेम्बली शासक और सैनिक दल मे कुछ अनबन के कारण मिलिटरी ने देश पर ता० २५ फरवरी १९८० को कब्जा कर लिया तभी से अब तक मिलिटरी शासन चल रहा है इस समय यहा के प्रेसीडेन्ट श्री रामदत्त मिश्र और प्राइम मिनेस्टर श्री अलिबक्स हैं।

आर्य समाज

जब भारतीय जन समाज मे आडम्बरो का हाहाकार मच रहा था हिन्दू बच्चे बच्चिया ईसाईयो के गोद मे जा रहे थे, मुसलमानी का बोलबाला बढ रहा था तभी महर्षि स्वामी दयानन्द की आवाज सन १९१८ से ही हमारे देश मे पहुचने लगी। सन १९२२ तक असगठित रूप मे यत्र-तत्र आर्यसमाज का प्रचार होता था।

इसे सगठित रूप देने के लिये आर्य समाज स्थापित किया गया। सन १९२७ के अधिवेशन मे इस समाज का नामकरण, आर्य दिवाकर किया गया। ता० ५ फरवरी १९३० को इस सस्था की रजिस्टरी सुरिनाम सरकार ने कर ली।

सन १९३० मे एक विशाल भूमि (४०,०००) वर्ग मीटर खरीदी गई। जिस पर आर्य समाज के सभी कार्यक्रमो के लिए पर्याप्त स्थान होगया। अब तक गरीब भारतीयो के बच्चे ईसाई अनाथालय मे दाखिल किये जाते थे जिस के कारण ३६०,०० भारतीयो मे करीब १४००० ईसाई हो गये थे। अब आर्य समाज के प्रचार से करीब २०० ००० भारतीयो मे अनुमानत १००० ईसाई रह गये हैं।

उपरोक्त समस्या के निवारणार्थ आर्य दिवाकर ने एक अनाथाश्रम बनवाने की योजना बनाई जिसका उद्घाटन दीपावली स्वामी दयानन्द निर्वाण अर्द्ध शताब्दी के अवसर पर ता० २८ अक्टूबर १९३३ को हुआ अनाथालय का नामकरण स्वामी दयानन्द अनाथालय किया गया।

पुराने अनाथालय के स्थानपर नया अनाथालय करीब ५००,००० गिल्डर खर्च कर बनवाया गया है जिसमे २०० अनाथ बच्चो के लिए लगभग पर्याप्त स्थान है।

आर्य दिवाकर के अधीन कुल २२ आर्य समाजें हैं जिनके अपने मन्दिर सम्पत्ति है।

मिशनरी पाठशालायें कुल १६ हैं जिनमे प्रायमरी से कालेज तक शामिल हैं—भगभग ६००० बच्चे इन स्कूलोमे कुछ-अग्रेजी आदि शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं—मास्टरो की सख्या १२५ हैं हिन्दी की पढाई स्कूल के समय के बाद होती हैं।

मुख्य मन्दिर पुराना हो चला था जिसके स्थान पर अब नया मन्दिर बन रहा है जिस पर अनुमानत ५००,००० गिल्डर खर्च होंगे। आर्य दिवाकर के बजट मे आमदनी खर्च करीब २०,००,००० गिल्डर वार्षिक रहता है।

सुरिनाम मे १२५००० हिन्दुओ मे करीब ३२००० आर्य समाजी हैं जिनमे से अनुमानन ८० फीसदी आर्य दिवाकर के सदस्य हैं। आर्य समाजों की सस्थायें ३ विभाग मे बटी हैं —

१—आर्य दिवाकर स्थापित १९२७
२—आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापित १९३६
३—प्रान्तिक आ० प्र० सभा १९५३
४—प्रभाकर आर्य समाज १९६५

आर्य दिवाकर के आधुनिक कार्यकर्ता

१—श्री राम रुद्र दिहल अध्यक्ष
२—श्री सुखदेव डुब्बा उपाध्यक्ष
३—श्री रामस्वरूप बसराज (वकील) सचिव
४—श्री बुधदेव शिवनाथ उपसचिव
५—श्री जगदेव स्वयबर कोषाध्यक्ष
६—श्री दरिदत्त भिखारी उपकोषाध्यक्ष
७—श्री प० सूर्यप्रसाद बीरे पुस्तकाध्यक्ष
८—श्री रजीतसिंह सदस्य
९—श्री महाबीर सदस्य

प्रचारक मण्डल के कार्यकर्त्तागण

१—प० आर० शिवरत्न शास्त्री अध्यक्ष
२—प० हरिचरण प्रीतिमन उपाध्यक्ष
३—प० चन्द्रदत्त रामचरण सचिव
४—प० श्रीमती एस० द्वारिकासिंह उपसचिव
५—प० एक कालीचरण

—प० आर० शिवरत्न शास्त्री

यह सभा सार्वदेशिक सभा से सम्बद्ध है। —सपादक

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक पत्र के ऐसे सभी ग्राहको को पुनः सूचित किया जाता है जिन्होंने अपना वार्षिक चन्दा अभी तक कार्यालय में जमा नहीं कराया, जब कि अधिकतर ग्राहको के साथ पत्र-व्यवहार भी हो चुका है। धार्मिक सस्था होने के कारण पत्र उनको नियमित रूप से भेजा जा रहा है। अगर ३० दिसम्बर तक शुल्क कार्यालय मे जमा नही हुआ तो विवश होकर हमे पत्र भेजना बन्द करना पडेगा।

मनिआर्डर भेजते समय ग्राहक संख्या अवश्य लिखें। कुछ ग्राहको के नम्बर नीचे दिये जाते हैं जिनके पास कई वर्ष का शुल्क शेष है। कृपया शीघ्र भेजें।

ग्राहक संख्या—४८८७, ४८१५, ४११५, ४११०, ४१२१, ४११४, ४१५७, ४१७४, ४११०, ५००८, ५०२४, ५०१७, ५०११, ५०६४, ५०६३, ५०७४, ५०८८, ५०९०, ५०९७, ५१०१, ५१०३, ५१२२, ५१४३, ५१४१, ५१५६, ५१५७, ५१६१, ५१६४, ५१८३, ५१८७, ५११८, ५२०४, ५२०५, ५२०६, ५२०८, ५२१७, ५१२१, ५२१०, ५२३५, ५२३७, ५२३१, ५२४६, ५२४७, ५२५५A, ५२५५, ५२५७, ५२७२, ५१८९, ५३०६, ५१११।

—जयनारायन शर्मा व्यवस्थापक

शिकायत

आर्य समाजी नेता श्री शर्मा की गिरफ्तारी पर माहिमपुर की जनता में आक्रोश व्याप्त है आर्य समाजद्वारा भीआक्रोश का प्रकाश किया गया है।

हथियारों की फसल से पेट की भूख नहीं मिट सकती

जीवन-मूल्यों की रक्षा ही स्वामी दयानन्द की सच्ची श्रद्धांजलि

"यद्यपि आज लोकतन्त्र मे धर्म निरपेक्षता तथा वैयक्तिक अधिकार तो हमें मिल गये हैं परन्तु धृति क्षमा दम अस्तेय शौच, इन्द्रिय-निग्रह धी, विद्या, सत्य और अक्रोध जैसे मानव मूल्य हमसे खो गये हैं। इन जीवन-मूल्यो मे भावात्मक एकता है चाहे कोई किसी भी सम्प्रदाय का मानने वाला क्यो न हो परन्तु इनमे सभी की निर्विरोध आस्था है। इन्ही की रक्षा के लिये स्वामी दयानन्द बलि हुये थे अत इन जीवन-मूल्यो की रक्षा ही ऋषि को सच्ची श्रद्धाजलि है।' यह शब्द हैं डा० सत्यव्रत शर्मा अजेय के जो कि उन्होने 'निर्वाण शताब्दी समारोह है उपलक्ष मे श्रीमन्नारायण मुनिश्चतुर्वेद की अध्यक्षता मे आयोजित आर्य समाज गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के अधिवेशन मे कहे। विज्ञान को मानव मूल्यो के ह्रास का कारण बताते हुये आगे उन्होने कहा कि विज्ञान ने मस्तिष्क को तो विकसित किया है परन्तु आत्मीयता तथा हार्दिक रागात्मक सम्बन्धो को भग्न कर दिया है। सच तो यह है कि वह हथियारो की फसल से पेट की भूख कदापि नही मिटा सकता। उसने सिनेमा आदि के आविष्कार से साहित्य और संगीत जैसी शिष्ट विशिष्ट ललित कलाओ को भी बिकाऊ माल बना दिया है। उसी ने आज के इन्सान को भौतिकता के मोहपाश मे फसा कर दहेज जैसी सामाजिक बुराइयो को जन्म दिया है। याचित द्रव्य देकर पति को पाने वाली पत्नी मे भला पति के प्रति सहज श्रद्धा और समर्पण के भाव कैसे उत्पन्न हो सकते हैं?

इसी अवसर पर विद्याभास्कर श्री सुरेन्द्र कुमार और सजीव कुमार बर्मन ने स्ववादित सितार पर मधुर स्वर लहरी मे ऋषि स्तवन किया। प हरिसिंह आचार्य, केशव प्रसाद शास्त्री तथा वैद्य श्यामसिंह आर्य आदि वक्ताओ ने भी स्वामी दयानन्द के जीवन चरित पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धाजलिया अर्पित की।

—केशव प्रसाद

आर्य समाज महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) सहारनपुर

हिन्दू-सिख विभेद कैसे पनपा?

(पृष्ठ १ का शेष)

मैकालिफ ने भारत के धर्मों को दो भागो मे बाँटा। ब्रिटिश सरकार के प्रति वफादार। उसने सिख पन्थ को पहली श्रेणी में रखा। उसने धार्मिक तटस्थता की नीति को 'आत्मघातक' बतलाया तथा सरकार को सिख धर्म का प्रचार करने के लिए "नियम" बनाने को कहा। उसने सिखो की वफादारी की प्रशसा करते हुए सरकार से अनुरोध किया कि उन्हे सेना मे अधिक स्थान दिया जाए। इतना ही नही, उसने स्वय भी लम्बे केश रख लिए व अपने को 'मैकालिफ सिंह" कहना प्रारम्भ कर दिया। सिख उसे "ज्ञानी जी" कहने लगे।

वास्तव मे मैकालिफ ने यह सिद्ध करने की कोशिश की कि सिख पथ हिन्दू समाज से बिल्कुल अलग है। खुफिया पुलिस की मदद से उसने अपने विचारो को तेजी से प्रचारित किया। उसने यह भी कहना शुरु किया कि गोमास खाने पर सिख पन्थ में प्रतिबन्ध नहीं है। तीर्थ यात्राओ की उसने कटु आलोचना की। गुरुमुखी लिपि के आधार पर अलग भिन्न विश्वविद्यालय स्थापित करने को प्रेरित किया।

षड्यन्त्र को समझें

अत मैकालिफ के जीवन-चरित्र के अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि वह सिखो में रानी विक्टोरिया के प्रति वफादारी की भावना बढाते हुए उन्हे हिन्दुओ से अलग रखना चाहता था। इस सबका परिणाम यह हुआ कि सिख व हिन्दुओ के बीच खाई बढती गई। बाद मे साम्प्रदायिक चुनाव, राजनैतिक स्वार्थ तथा कुछ सिखो मे धार्मिक कट्टरता की भावना ने इसे और बढावा दिया।"

ये विचार श्री डा० सतीश मित्तल ने पजाब केसरी (९-१२ ८३) में छपे अपने लेख मे व्यक्त किए हैं।



वेदभाष्य हिन्दी

सम्पूर्ण वेदभाष्य १० खण्ड सजिल्द मूल्य ४००) रु०

ऋग्वेद	५×४०	...	२००) रु०
यजुर्वेद	१×४०	...	४०) रु०
सामवेद	१×४०	—	४०) रु०
अथर्ववेद	१+४०	...	४०) रु०
अथर्ववेद	६+१०	...	८०) रु०

प्रथम २ जिल्द लेने पर १० प्रतिशत छूट दी जायगी। सम्पूर्ण सैट ४००) रु० के बजाय ३५०) रु० में दिया जावेगा।

सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी	६)	सजिल्द
ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	१२)	सजिल्द
संस्कार विधि	५)	सजिल्द

सत्यार्थ प्रकाश निम्न भाषाओं में भी उपलब्ध है

उड़िया	२०) रु०	चीनी	१०) रु०
आसमी	१२) रु०	मलियालम	२०) रु०
कन्नड़	२०) रु०	अंग्रेजी	२०) रु०
तेलगू	१०) रु०	गुजराती	१०) रु०
बंगला	२०) रु०	मराठी	१०) रु०

ओ३म् के झण्डे भी उपलब्ध हैं

बड़ा साईज	१-२२ मीटर+८६ cM	१२) रु०
बीच का	८६ cM.+६६ cM	८) रु०
छोटा	४३ cM +६६ cM	४) रु० ५० पैसे
दिव्य दर्शन		५१)

दैनिक यज्ञ पद्धति का नया संस्करण

मूल्य ६० पैसे प्रति ५०) सैकड़ा

श्री पं० देवव्रत धर्मेन्दु कृत विशिष्ट पुस्तकें

१—दयानन्द वचनामृत	...	१)
२—वैदिक सूक्ति सुधा	...	१)
३—वेद सन्देश	...	)७५

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
३/५ दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली।

ऋतु अनुकूल हवन सामग्री

हमने आर्य यज्ञ प्रेमियों के आग्रह पर संस्कार विधि के अनुसार हवन सामग्री का निर्माण हिमालय की ताजी जड़ी बूटियों से प्रारम्भ कर दिया है, जो कि उत्तम, कीटाणु नाशक, सुगन्धित एवं पौष्टिक तत्वों से युक्त है यह आदर्श हवन सामग्री अत्यन्त अल्प मूल्य पर प्राप्त है। थोक मूल्य ४) प्रति किलो।

जो यज्ञ प्रेमी हवन सामग्री का निर्माण करना चाहें वह सब ताजी हिमालय की वनस्पतियां हमसे प्राप्त कर सकते हैं वे चाहें तो कुटवा भी सकते हैं यह सब सेवा मात्र है।

योगी फार्मेसी, लकसर रोड
डाकघर गुरुकुल कांगड़ी २४९४०४, हरिद्वार (उ० प्र०)

पुरोहित की आवश्यकता

(महाराष्ट्र पुणे) आर्य समाज को पुरोहित की आवश्यकता है जो संस्कार आदि कराने मे निपुण हो और संगीत जानने वाला हो निवास एवं बिजली पानी का प्रबन्ध निःशुल्क होगा। दक्षिणा योग्यतानुसार दी जायेगी।

नीचे लिखे पते पर सम्पर्क करें
मन्त्री आर्य समाज २४८ नानापेठ पुणे (महाराष्ट्र)

श्री अमरेश आर्य (पूर्व शेख अमीर मोहम्मद अफजल उल उल्मा मद्रास विश्व विद्यालय की पढ़ने योग्य पुस्तकें

१—कुरान महर्षि दयानन्द की दृष्टि में एक अध्ययन (सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्दश समुल्लास पर वैज्ञानिक प्रकाश)	४)
२—मैंने दीने इस्लाम तर्क क्यो किया ?	२)५०
३—Why I gave up Islam	२)५०
४—मुस्लिम पर्सनल ला (इस्लामी शरीअत के आइने मे उर्दू)	)७५

वितरक:—

१—आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश, सुलतान बाजार हैदराबाद
२—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

सार्वदेशिक साप्ताहिक के एजेण्ट बनिए

५ प्रतियों से १५ प्रतियां मंगाने पर कमीशन	—	१० प्रतिशत
१५ प्रतियों से अधिक प्रतियां मंगाने पर कमीशन	—	२० "
५० प्रतियों से अधिक प्रतियां मंगाने पर कमीशन	—	२५ "

५ प्रतियों से कम मंगाने पर कोई कमीशन नहीं दिया जायगा।
एक ग्राहक बनाने पर कमीशन २/- रुपए



श्री रामगोपाल जी शालवाले प्रधान सा० सभा के नेतृत्व मे शिष्टमण्डल सिलर गाव की ओर प्रस्थान करते हुए—आगे लाला जी श्री मल्होत्रा जी श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम व श्री ओम्प्रकाशजी त्यागी तथा पीछे श्री अमरेश आर्य और प्रसरिपोटर



शिष्टमण्डल उत्तरश्रेशमगे (रामनाथपुरम मे जिना पाकिस्तान के से प्रसिद्ध गाव) के कमठ हिन्दू कार्यकर्त्ता श्री वीरमणि लाल जी श्री वन्देमातरम के बीच खड है।



श्री वन्देमातरम व त्यागी जी जनाब अब्दुल्ला के साथ जो पिछले दिनो मुसलमान हो गए थे पहले इसका नाम कनन था



लाला जी सिलर गाव के उन नव युवको और युवतियो के साथ जिन्होंने किसी कीमत पर भी धर्म परिवर्तन नही किया।



सिलूर गाव मे अलगर स्वामी जिसने हरिजनो का धर्मान्तरण किया उनका बेटा मुरलीधरण आज भी हिन्दू है। लाला जी त्यागी जी और श्री वन्देमातरम जी के बीच खड है।



हरिजन नेता श्री वेल और मन्दिर मण्डल प्रधान के साथ सार्वदेशिक सभा का शिष्टमण्डल अतियूर (यह वही ग्राम है जहा के ३०० कुटम्ब २८१ कुटम्ब मुसलमान हो चुके है) प्रस्थान करते हुए।

हैदराबाद (दक्षिण) में १७-१८ दिसम्बर ८३ को साम्प्रदायिकता विरोधी राष्ट्रीय सम्मेलन

स्थान—राजधानी होटल का सभागार

अध्यक्ष : श्री रामगोपाल शालवाले, पूर्व ससद सदस्य

उदघाटन श्री एच० आर० खन्ना भू पू महाधिवक्ता सर्वोच्च न्यायालय

मुख्य अतिथि श्री धर्मवीर जी भू पू राज्यपाल पश्चिम बगाल

वक्ता श्री लक्ष्मीमल सिंघवी एडवोकेट सुप्रीमकोर्ट

श्री वेद व्यास जी एडवोकेट

श्री [illegible] एडवोकेट

आदि नेतागण तथा विधि विशेषज्ञ पधार रहे हैं।

निवेदक—

वन्देमातरम् रामचन्द्रराव
सयोजक

ओ३मप्रकाश पुरुषार्थी
मन्त्री सार्वदेशिक सभा

रामचन्द्रराव कल्याणी
प्रधान—आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश

आर्यसमाजों और संस्थाओं के लिए आवश्यक सूचना

समस्त आर्य समाजो आर्य शिक्षण संस्थाओ प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं को सूचित किया जाता है कि शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे सार्वदेशिक आर्य वीर दल समिति का नियमानुसार गठन किया हुआ है।

युवाशक्ति को चरित्रोन्मुख करने हेतु सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री बालदिवाकर हस उप प्रधान सचालक डा० [illegible] [illegible] कर रहे हैं।

कुछ दिनो से कुछ लोग अनुशासन की उपेक्षा करते हुए युवा लोगों के भोलेपन का लाभ उठाकर सार्वदेशिक सभा की अवमानना कर रहे हैं जो सर्वथा अनुचित है। मेरा आर्य मात्र एव सभा से सम्बन्धित सभी सस्थाओं से अनुरोध है कि वे सगठन की एक रूपता के हित मे सार्वदेशिक आर्य वीर दल को ही मजबूत बनाए और इस प्रकार के अन्य सगठनो को किसी भी प्रकार का सहयोग न करे।

—ओम्प्रकाश त्यागी सभा मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली-२ में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा [illegible] दिल्ली २ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८४]
वर्ष १९ अङ्क ३।
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
पौष कृ० ६ सं० २०४० रविवार २५ दिसम्बर १९८३
दयानन्दाब्द १५९ दूरभाष २७४७७१
वार्षिक मूल्य १६) एक प्रति ४० पैसे

सार्वदेशिक सभा का वार्षिक अधिवेशन हैदराबादमें संपन्न

रामनाथपुरम् सम्बन्धी रिपोर्ट शीघ्र प्रसारित होगी

१९८५ में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी की पूर्णाहुति दिल्ली में

१० करोड़ रुपए की स्थिर निधि का आह्वान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि का वार्षिक अधिवेशन १५, १६ दिसम्बर को हैदराबाद के बाहेती भवन के समागार में सम्पन्न हुआ। बैठक की अध्यक्षता सभा प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने की। सभा मे वर्ष भर के लेखे-जोखे की स्वीकृति तथा अन्य प्रस्तुत विषयो पर विचार किया गया। इसके अतिरिक्त दक्षिण भारत मे इस्लामीकरण की लहर, पजाब मे अल्पसख्यक हिन्दुओ की सुरक्षा आदि विषयो पर भी गम्भीरतापूर्वक विचार हुआ।

सभा ने निम्न महत्वपूर्ण निर्णय लिए:--

१— आर्य समाज के शिष्टमण्डल की रामनाथपुरम् सम्बन्धी रिपोट भारत सरकार को प्रस्तुत करने के बाद शीघ्र प्रसारित की जायेगी।

२—१९८५ मे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह की पूर्णाहुति दिल्ली में की जायेगी।

३—देश-देशान्तर मे प्रान्तीय व स्थानीय स्तर पर निर्वाण शताब्दी समारोहो का आयोजन किया जायेगा।

४—युवाशक्ति को आय वीर दलो के माध्यम से प्रोत्साहन दिया जायेगा।

५—देश मे इस्लामीकरण व ईसाईकरण की रोकथाम हेतु १० करोड की स्थिर निधि का आह्वान।

सभा मे एक विशेष प्रस्ताव द्वारा पजाब में उग्रवादियो द्वारा हिन्दुओं की नृशंस हत्या की निन्दा करते हुए शोक प्रस्ताव पारित कर दिवंगत आत्माओं की सद्गति की प्रार्थना और उनके परिवारो के प्रति गहरी सहानुभूति प्रकट की।

एक अन्य प्रस्ताव द्वारा भारत सरकार से माग की गई कि देश की बहुसख्यक जनसख्या की धार्मिक भावनाओ का आदर करते हुए सम्पूर्ण देश के लिए गोहत्याबन्दी कानून शीघ्र बनाया जाये।



अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज

अधिवेशन मे सर्वश्री ओम्प्रकाश त्यागी सभा मन्त्री (भू० पू० ससद सदस्य), प० शिवकुमार शास्त्री (भू०पू० ससद सदस्य), प्रो० केशवनाथसिंह (भू०पू०मन्त्री उ०प्र०) प्रो०वेदव्यास प्रधान प्रादेशिक सभा, रामचन्द्रराव वन्देमातरम् (हैदराबाद), डॉ० किशनलाल (हैदराबाद), सोमनाथ मरवाह सीनियर एडवोकेट, दानवीर सेठ शुकराज जी मल्ला (उपप्रधान सभा), आचार्य भगवानदेव (ससद सदस्य), प्रो० शेरसिंह भू०पू० मन्त्री भारत सरकार के अतिरिक्त छोटूसिंह एडवोकेट (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान), प० वासुदेव शर्मा (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार), श्री इन्द्रराज (मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश), श्री सरदारीलाल वर्मा (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली), रामनाथ सहगल (मन्त्री आर्य प्रादेशिक सभा), दरबारीलाल (डी०ए०वी० मैनेजिंग कमेटी), मगलसेन चोपड़ा (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात) आनन्दमुनि (प्रधान महाराष्ट्र प्रतिनिधि सभा) रामचन्द्रराव कल्याणी (प्रधान आन्ध्र प्रदेश सभा) भगवतीप्रसाद गुप्त (प्रधान मुम्बई सभा), श्रीमती कौशल्यादेवी (प्रधाना आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश), गोपालदेव शास्त्री (मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा कर्नाटक), वीरेन्द्र (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब), और प० सच्चिदानन्द शास्त्री आदि प्रमुख महानुभाव अधिवेशन म सम्मिलित थे। इनके अलावा बगाल एव अन्य प्रान्तो के कई प्रतिनिधियो ने इस अधिवेशन मे भाग लिया।

सच्चिदानन्द शास्त्री
स०मन्त्री सभा

सम्पादक—ओम्प्रकाश पुरुषार्थी
सहसम्पादक—रघुनाथप्रसाद पाठक

हैदराबाद में साम्प्रदायिकता विरोधी राष्ट्रीय सम्मेलन

साम्प्रदायिकता के विस्तार पर गंभीर चिंता

कड़े हाथों से उसका निराकरण तथा अल्पसंख्यक आयोग को भंग करके मानवीय अधिकारों के आयोग की नियुक्ति की मांग

दक्षिण भारत मे मीनाक्षीपुरम के बाद मुसलमानो द्वारा तमिलनाडु के रामनाथपुरम क्षेत्र को इस्लामीकरण का केन्द्र बनाये जाने एव देश मे साम्प्रदायिकता की आग भडकाने और विघटनकारी तत्वो से देशवासियो को सावधान करने के लिए हैदराबाद के राजधानी होटल के सभागार मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरग एव वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर १७ १८ दिसम्बर १९८३ को साम्प्रदायिकता विरोधी राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता मे प्रारम्भ हुआ। सम्मेलन का उदघाटन भारत के भू० पू० जस्टिस श्री एच० आर० खन्ना ने किया। प्रमुख वक्ताओ मे भारत के सुप्रसिद्ध विधि-वेत्ता डा० एम०एल० सिघवी, प्रो० वेदव्यास, श्री धर्मवीर (भू पू राज्यपाल), श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम श्री ओम्प्रकाश त्यागी, प्रो० शेरसिंह तथा श्री वीरेन्द्र ने अपने अपने विचार प्रकट किए।

सम्मेलन म देश के अन्दर अरब पेट्रो डालर के बल पर दक्षिण भारत मे किए जा रहे इस्लामीकरण आदिवासी एव उ० पू० भारत मे ईसाईकरण पजाब मे उग्रवादियोके आदोलन से व्याप्त स्थिति पर गम्भीरता पूर्वक विचार प्रकट किए गए और साम्प्रदायिकता के इस फैलते हुए जहर के प्रति गहरी चिन्ता प्रकट की गई। सम्मेलन ने आर्यसमाज के शिष्टमण्डल द्वारा रामनाथ पुरम की रिपोर्ट की पुष्टि की और उसे तत्काल भारत सरकार को प्रस्तुत कर प्रसारित करने पर बल दिया।

राष्ट्रीय सम्मेलन ने यह भी अनुभव किया कि भारत सरकार को देश की बहुसख्यक हिन्दुओ की भावनाओ का आदर करना चाहिए और इस देश के सभी नागरिक चाहे वे किसी धर्म अथवा सम्प्रदाय को हो, उन्हें भारत के हितो के प्रति वफादार रहना चाहिए। जो लोग भारत मे पैदा होकर यहा की मिट्टी मे पलकर और अन्न खाकर भारत की अखण्डता एव राष्ट्रीयता के विरुद्ध काम कर रहे हैं वे देश के मित्र नही हैं। सम्मेलन ने वोटो की राजनीति और अल्पसख्यक आयोग के गठन पर तीखा कटाक्ष करते हुए भारत सरकार से माग की कि अल्पसख्यक आयोग को तोडकर मानव अधिकार आयोग की स्थापना की जाय और चुनावो मे वोट प्राप्ति का आधार जातिगत भावना को भडकाकर धर्म निरपेक्षता के सिद्धान्त के विरुद्ध आचरण न किया जाय।

सम्मेलन मे यह भी विचार प्रकट किया गयाकि आजकी विषम समस्याओं का समाधान भारत को आर्य राष्ट्र घोषित करने से हो सकता है।

राष्ट्रीय सम्मेलन मे यह भी निश्चय किया गया कि हरिजनो एव पिछडे बनवासी जन जातियो के हितो की रक्षाके दायित्व का निभाना भारत सरकार का कर्तव्य है। लोभ लालच के बल पर बलात धर्मपरिवर्तन किएगए लोगो को सरकारी सहायना नही दी जानी चाहिए।

रैक्सोल आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर तिथि परिवर्तन

२४ दिसम्बर से ४ जनवरी ८४ तक शिविर लगेगा

रैक्सोल। बिहार प्रान्तीय आर्य वीर दल के सचालक श्री रामाज्ञा वैरागी सूचित करते है कि रैक्सौल आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर अब २० दिसम्बर को न लगकर २४ दिसम्बर ८३ से ४ जनवरी १९८४ तक लगेगा। इस शिविर मे सार्वदेशिक आर्य वीर दल के सचालक श्री बालदिवाकर हस और उपप्रधान सचालक डा० देवव्रत व्यायामाचार्य ने पूरे समय रहकर युवको को प्रशिक्षित करने की स्वीकृति दे दी है। बिहार भर की आर्य समाजो को कम से कम दो दो युवक अवश्य भेजने चाहिए।

मन्त्री

आर्य वीर दल बिहार राज्य

चण्डीगढ़ में नई आर्य समाज की स्थापना

कार्तिक पूर्णिमा पर २६६६/४० सी मे विश्व वेद परिषद

चण्डीगढ की ओर से पूर्णमासेष्टि यज्ञ के उपरान्त श्री आशुराम आर्य की अध्यक्षता मे ४० सैक्टर मे नई आर्य समाज की स्थापना की गई जिसमें श्री हुकमचन्द गुलाठी प्रधान प्रो० सुरेन्द्र कुमार शास्त्री मन्त्री और श्रीमती सत्यवती कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

उपदेशक और भजनीकों की आवश्यकता है

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को ऐसे उपदेशको और भजनीको की आवश्यकता है जिन्हे आर्य समाज के सिद्धान्तो की पूर्ण जानकारी हो और जो आर्य समाज के इतिहास को भी जानते हो। जिन्हे इस क्षेत्र का कुछ अनुभव होगा उन्हे प्राथमिकता दी जायेगी। वेतन का ग्रेड निम्न प्रकार होगा —

उपदेशक—६००-३० ७२० कार्य क्षमता रोक ४०-१०००।

भजनीक—३५०-२५-४५० कार्य क्षमता रोक ३०-६००।

महगाई अलौंस इसके अतिरिक्त होगा। २२५) मासिक।

जो महानुभाव पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के अधीन आर्य समाज की सेवा करना चाहते हैं वह निम्न लिखित पते पर आवेदन-पत्र भेजें, जिसमें अपनी योग्यता और अनुभव का विस्तार, पूर्वक विवरण दिया गया हो।

—रामचन्द्र जावेद

महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब,

गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा

जालन्धर शहर १४४००४

[illegible]

श्रद्धाञ्जलि

२१ दिसम्बर १९८१ को श्रद्धानन्द बलिदान जयन्ती मनाई जायगी।

श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज महर्षि दयानन्द का सत्संग और उनकी अमरकृति सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थो का अध्ययन करने के पश्चात् आर्यसमाज की ओर आकृष्ट हुए थे।

आर्य समाज की सेवा की उनकी भावना यह थी कि सर्वप्रथम आर्य समाज का रजिस्टर्ड सदस्य बनने से पूर्व शब्द के ठीक अर्थ मे 'आर्य बना जाय' और अपने जीवन को वैदिक आदर्शों में ढाला जाय। इसके बाद अपने को आर्यसमाज की निष्काम सेवा मे सर्वात्मना लगा दिया जाय। स्वामी जी ने इस भावना को अपने जीवन में भली भांति चरितार्थ किया था।

वे प्रारम्भ से लेकर अन्त तक आर्यत्व का परिचय देते रहे। जिस वस्तु को बुराई समझा उसका परित्याग करने मे कटिबद्ध रहे। जिसे सत्य समझा उसके परिपालन मे निरत रहे। इसके लिए उन्हे बड़े से बड़ा कष्ट, परिश्रम और त्याग करना पड़ा।

उनकी इस भावना की पहली झांकी जीवन की त्रुटियों के परित्याग मे देखने को मिलती है। शराब और मास का परित्याग किया तो सदैव केलिए किया। ईसाइयोके स्कूलोमे आर्यहिन्दू बच्चो का पढ़ायाजाना धार्मिक एव सास्कृतिक विकास को दृष्टि से अवांछनीय माना तो अपनी कन्याओ को वहा से हटाकर कन्या महाविद्यालय जालन्धर की स्थापना कराथी। वर्तमान शिक्षा पद्धति मानवीय एव चारित्रिक मूल्यो की ओर उपेक्षा करती और वास्तविक शिक्षा का समुचित समाधान प्रस्तुत नहीं करती है इस सत्य के अ कित हो जाने पर गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करके ब्रह्मचर्य पर आधारित वैदिक शिक्षा पद्धति के उद्धार मे सलग्न हो गए।

वर्तमान जात-पात के अन्याय, सामाजिक कुरीतियो और रूढ़ियो के तोड़ने का दायित्व प्रत्येक भारतवासी और उनमे भी सबसे पहले आर्यों तथा आर्यसमाज के सदस्यो पर ही है। इस सत्य को अनुभव करके अपने बच्चो का विवाह जात-पात तोड़कर किया।

प्रत्येक आर्य के लिए यह आवश्यक है कि वह वर्णाश्रम व्यवस्था के आदर्श को क्रियात्मक रूप देने मे अग्रसर रहे। इसी भावना से प्रेरित होकर सन्यास ग्रहण किया।

दलितो, पतितो, पीड़ितों, असहायो, अनाथो, और विधवाओ की सेवा और उद्धार करना मानवीय और सामाजिक कर्त्तव्य है। इस भावना ने उन्हे अछूतोद्धार, शुद्धि, अकाल पीड़ितो की सेवा, रक्षा और गिरे हुओं को ऊंचा उठाने के कार्यों मे आजन्म संलग्न रखा।

देश के उत्थान एव सास्कृतिक एकीकरण की प्रक्रिया के रास्ते में विदेशी शासन तथा विदेशी आदर्शोंको बड़ी भारी बाधा मानकर उनके निराकरण मे भरसक योगदान किया।

कांग्रेस जाति मे रहते हुए आर्य समाज और उसके हितो को [illegible] के लिए भी न भुलाया। उनकी मान्यता थी कि शुद्धि एव अछूतोद्धार का विशुद्ध जातीय महत्त्व है। हिन्दू समाज की रक्षा और दृढ़ीकरण का कार्य है। अत इस [illegible] की गुजाइश नहीं है। सहस्रों मलकानों (आगरा) की व्यापक शुद्धि आर्य जाति की सेवा में एक बड़ी उल्लेखनीय देन थी।

आर्यभाषा हिन्दी को लोकप्रिय बनानेकेहेतु उन्होने कम महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं किया। हिन्दी को गुरुकुल की शिक्षा का माध्यम नियत किया अपने पत्र सद्धर्म प्रचारक को वर्षों तक उर्दू में निकालने के पश्चात् हिन्दी में निकाला। उर्दू मे दिल्ली से तेज और हिन्दी मे विजय पत्र निकाले अमृतसर कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष का भाषण उस समय की परम्परा के विपरीत हिन्दी मे पढ़ा।

अन्त में आर्य जाति तथा देश की सेवा मे निरत रहते हुए एक महान् नेता के रूप मे हमारा मार्ग दर्शन करते हुए, २३ दिसम्बर १९२६ को एक मतान्ध मुसलमान (अब्दुल रशीद) की गोली से शहादत प्राप्त की और अपने परम मित्र धर्मवीर पं० लेखराम जी को एक जनूनी मुसलमान के छुरे से आहत हुए हस्पताल ले जाते समय जो कामना की थी उसे शहादत के द्वारा पूर्ण किया।

स्वामी जी महाराज का जीवन आर्य समाज के एक मिशनरी और अनन्य प्रेमी का त्याग, कष्ट और बलिदान से परिपूर्ण जीवन रहा। जब वे जालन्धर में वकालत करते थे तब अकेले उन्होंने इस जिलेमें तथा बाहर प्रचारका जितना बड़ाकार्य किया उतना बीसियो प्रचारक भी मिलकर न कर पाते।

आर्य समाज पर और आर्य जाति पर जब जब आपत्ति आई वे सबसे पहले उसके निराकरण के लिए मैदान में आ डटे। पटियाला और धौलपुर के केस आर्य समाज के अस्तित्व को चुनौती लेकर आए। आर्य समाज को राजद्रोही सस्था उद्घोषित किए जाने के षडयन्त्र रचे गए। स्वामी जी महाराज ने इन चुनौतियो को स्वीकार किया और उनका डटकर सामना किया। फलतः आर्य समाज उन परीक्षणो को भट्टी में से गुजर कर खरा कुन्दन सिद्ध हुआ।

उनके महान् व्यक्तित्व, गुरुकुल के सफल परीक्षण और वैदिक मैगजीन नामक उनके पत्र ने आर्य समाज की कीर्ति को देश मे ही नही अपितु देश से बाहर भी विस्तृत किया।

वैदिक कर्मकाण्ड को जीवन की अन्तिम घड़ियो तक अपनाते रहे। सन्यासाश्रम मे यज्ञ हवन अनिवार्य नही है फिर भी वे इस नित्य कर्म को अन्त तक करते रहे।

महान् व्यक्तित्व

उनका व्यक्तित्व छाया हुआ व्यक्तित्व था। हृदय मे दृढ़ता और उदारता थी, भोलापन था। तप और त्याग की आभा भी थी। कर्मठता और निर्भयता की प्रति मूर्ति थे। अच्छे कार्य के लिए मर मिटने की धुन थी। उनका जीवन और मृत्यु दोनो ही प्रेरणाप्रद रहे। उनका नेतृत्व आर्यसमाज के लिए देन थी।

उनके बलिदान के समय आर्य जनो ने अनुभव किया था कि उनके ऊपर से एक बड़ा साया हट गया है और आर्य समाज अपने एक महान् नेता से वञ्चित हो गया है आर्य समाज आज भी उनके अभाव मे अपने को अकिंचन अनुभव करता है।

इन शब्दो के साथ श्रद्धा के इस महान् पुरुष के अज्ञात चरणो में एक प्रशसक विदेशी मनीषी के इस आह्वान को कि स्वामी श्रद्धानन्द जैसा बन और कर दिखाने का व्रत लेना ही सच्ची हीरो वर्शिप (वीर पूजा) होगी शिरोधार्य करते हुए अपनी विनीत श्रद्धाञ्जलि प्रस्तुत करते हैं।

ऋषि का संस्कृत और भाषा के प्रति प्रेम

मैडम ब्लैवटस्की ने महर्षि दयानन्द सरस्वती से उनके वेद भाष्य का अंग्रेजी अनुवाद करने की आज्ञा मागी थी। स्वामी जीने उन्हे इस आधार पर कि अंग्रेजी अनुवाद के प्रकाशित होने पर उन भारतीय आर्य छात्रो द्वारा हिन्दी सस्कृत के पठन पाठन के परित्याग का भय था जो स्वामी जी के वेद भाष्य को पढने के लिए हिन्दी और सस्कृत के लिए परिश्रम रत थे।

स्वामी जी ने लिखा था कि कल्पना करो कि इन सब बातो का समुचित प्रबन्ध हो जायगा किन्तु एक भारी दोष यह है कि अंग्रेजी पढने वाले भारतीय आर्य छात्र जो मेरे वेद भाष्य को पढने के लिए सस्कृत और हिन्दी

सामयिक चर्चा–

संभावित भस्मासुर से बचाव

आनुवंशिक शोध पर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की श्रीमती गांधी की अपील इस नई तकनीक मे विकासशील देशो की सहायता का सबूत है। लेकिन इसकी डरावनी सभावनाओं के खिलाफ उनकी चेतावनी बेहद जरूरी और सामयिक हैं। इतिहास गवाह है कि हर वैज्ञानिक खोज की अच्छी सभावनाओ के साथ विनाशकारी उपयोग भी जुड़े हुए हैं। चाहे सापेक्षता का सिद्धान्त हो या कार्बनिक रसायन और लेसर किरणो का चाहे हवा मे उड सकने की ताकत हो या जीव विज्ञान मे प्रगति, ये सभी खोज समाज की तत्कालीन समस्याओ से निबटने के लिए हुई थी लेकिन इनका इस्तेमाल मानव समाज के खिलाफ ही हो रहा है। हवाई जहाजो का सबसे ज्यादा इस्तेमाल अगर लड़ाइयो मे हुआ है तो सापेक्षता के सिद्धान्त का एटमबम बनाने मे। जैविक विज्ञान की खोज तरह-तरह की बीमारिया फैलाने के काम आरही है और रसायन विज्ञान के शोध मे सबसे ज्यादा पैसा मारक किस्म के रसायन बनाने मे लगाया जा रहा है। आनुवंशिक शोध से बनी अपार सभावनाओ के साथ उसके विनाशकारी इस्तेमाल से डर स्वाभाविक ही है।

विकसित देशो मे आनुवंशिकी शोधो को सतर्कता से छुपाने की प्रवृति ऐसे शक को बढावा देती है। अमेरिका मे इस विषय पर सबसे ज्यादा काम हुआ है और वहा वैज्ञानिको के कई खेमे भी बन गए हैं। उनमे से एक इस विषय की सभी सभावनाओ को खोजने की बात कर रहा है। दूसरा खेमा इस तरह के शोध पर नियन्त्रण चाहता है। अमेरिका और दूसरे विकसित यूरोपीय देशो मे बड़ी बड़ी दवाई कपनिया बाजार मे मुनाफा कमाने के बजाए सरकारी सहारा पसन्द करती हैं। यह बात इन देशो मे बढते रक्षा बजट से साफ नजर आती है। आनुवंशिकी प्रयोगशालाओ म पैसा लगाने वाली कपनिया अपने मुनाफे बढाते रहने के लिए रक्षा बजट बढाने पर जोर न देंगी इसकी क्या गारटी है?

लेकिन अगर विज्ञान का सदुपयोग हो सके तो आनुवंशिको शोध से न केवल उत्पादन प्रक्रिया बल्कि आदमी के इतिहास और मानवीय नैतिक मूल्यो मे एक नया मोड आ सकता है। अब तक प्रयोगशालाओ की टेस्ट ट्यूब मे ही लोग बनाए गए हैं लेकिन आनुवंशिकी शोध बाझपन को बिलकुल खत्म कर सकता है। प्राकृतिक खाद बनाकर रासायनिक खादो से जुडी समस्याए खत्म की जा सकती हैं। नए किस्मके पेड पौधे पैदा किए जासकते हैं और वनस्पति व जीव जतुओ का विनाश रोका जा सकता है। कई बीमारिया जो अब तक लाइलाज रही हैं ठीक की जा सकती हैं यहा तक कि मानसिक विकारो का भी आसानी से इलाज किया जा सकता है। यानी आनुवंशिक शोध से दुनिया मे जरूरत भर अनाज पैदा कर भुखमरी हमेशा क लिए खत्म की जा सकती है और साथ पूरे समाज के स्वस्थ रहने की गारन्टी भी। लेकिन जो विज्ञान यह सब कुछ कर सकता है वह नए तरहके आदमी भी बना सकता है। यह जार्ज आवरवेल के १९८४ की कल्पना के काफी करीब है। इसके पहले कि इस विषय पर शोध और आगे बढे इसके दुरुपयोग को रोकने और उससे बचने के तरीके निकालने होगे। लाजिमी है कि ताकत उनक हाथ म होगी जो जोर-शोर से इस विषय पर शोध कर रहे हैं। यानी यह प्रगति दुनिया मे अमीर-गरीब ताकतवर और बेचारे देशो समाजो का बन्टवारा पूरा कर सकती है इस हद तक कि जो गरीब हो वे फिर कभी सर न उठा सके। आज मुद्दा यह है कि डरावनी सभावनाओ से कैसे बचा जाए क्योकि इस विषय पर शोध अनजाने होते ही रहते हैं। (जनसत्ता १४-१२ ८३)

मे परिश्रम कर रहे हैं मेरे भाष्य के अग्रेजी अनुवाद के निकलने पर सस्कृत और हिन्दी सर्वथा छोड देंगे,

(४) इसका अन्तिम परिणाम हिन्दी तथा सस्कृत का विनाश है।

यह न समझे कि ऋषि अग्रेजी अनुवाद की उपयोगिता को अनुभव नही करते थे। इसके विपरीत व इस बात से भली भाति परिचित थे। अत उन्होने मैडम को लिखा कि यदि अनुवाद करना हा हो तो हमारे इस भाष्य के समग्र छप जाने पर ऐसा किया जाय क्योकि विदेश मे अग्रेजी आदि के द्वारा ही प्रचार सम्भव है।

पत्नी को जलाकर मार डालने के लिए मृत्यु दण्ड

उज्जैन के डिस्ट्रिक्ट और सेशन जज श्री बी० ए० शुक्ल ने ८ दिसम्बर ८३ को रामचन्द्र उर्फ कालिया को पत्नी को जलाकर मार डालने के अपराध मे मृत्यु दण्ड दिया।

इस्तगासे के अनुसार ७-९-८३ को रामचन्द्र ने अपनी पत्नी शरवती पर मिट्टी का तेल डालकर उसे जला दिया था और १४ सितम्बर को सरकारी हस्पताल मे शरवती का निधन हो गया था।

मरते समय शरवती ने अपने बयान मे कहा था कि उसके पति ने ही उसे जलाकर मारा है।

यह निर्णय जहा कई दृष्टियो से महत्त्वपूर्ण है वहा इस दृष्टि से भी अत्यन्त महत्त्व पूर्ण है कि मरते समय वे बयान को समुचित मान्यता दी गई है जिसे अकाट्य न मानने और अप्रमाण्य करने की वास्तविक अपराधियो को कानून की गिरफ्त से बचाने के लिए मुख्यत विधिवेत्ताओ के द्वारा पैरवी या माग की जाती रही है।

प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के जगन्नाथपुरी के मन्दिर में प्रवेश निषेध का कारण और प्रतिक्रिया

इस सम्बन्ध मे हम अपनी प्रतिक्रिया इन स्तम्भो मे व्यक्त कर चुके हैं। बम्बई के श्री भेन्डे ने जगन्नाथपुरी मन्दिर के प्रबन्धको को एक पत्र भेज कर अपनी प्रतिकूल प्रतिक्रिया से उन्हे अवगत किया और निषेध का कारण ज्ञात किया था। प्रबन्धको का उत्तर और श्री भेन्डे का पत्र २७ ११-८३ के सहयोगी ऑर्गेनाइजर मे छपे थे। श्री भेन्डे ने ऑर्गेनाइजर के पाठको को इन दोनो के सदर्भ म अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने का आह्वान किया था। इसके फलस्वरूप कई पाठको की प्रतिक्रिया १८ १२-१९८३ के ऑरगेनाइजर मे छपी है। सार्वदेशिक के पाठको के लाभार्थ श्री भेन्डे के पत्र, सचालको के उत्तर और १२ प्रतिक्रियाओ का सार नीचे अकित किया जाता है।

—सम्पादक

श्री भेन्डे का पत्र

१—उन सब व्यक्तियो के लिए मन्दिरो के द्वार खुले रहने चाहिए जो मूर्तियो के दर्शन वा पूजा पाठ करना चाहते हो।

२—यदि जाति का निर्णय जन्मना ही तो श्रीमती गाधी न सिर्फ हिन्दू ही अपितु ब्राह्मण भी है।

३—उनका विवाह हिन्दू विधि विधान के अन्तर्गत हुआ था।

उत्तर

'यह पत्र दुर्भावनापूर्ण है। क्या आप मुझे कोई ऐसा अधिकार पत्र दिखा सकते हैं जिसके अन्तर्गत प्राचीन रीति रिवाजो, प्रथाओ तथा कानून का रूप ली हुई व्यवस्थाओ का अतिक्रमण करने के लिए अधिकृत हुए हो।"

यहा की वास्तविक स्थिति और व्यवहृत होने वाली प्रथाओ का आपको जरा भी ज्ञान प्रतीत नही होता।

किसी भी समाचार से दु खी वा सन्तप्त होने की जरूरत नही है। जिन धार्मिक अनुष्ठानो और विशिष्टताओ का यहा अनुष्ठान और अनुसरण किया जाता है उन्हे किसी भी व्यक्ति की उच्च स्थिति या पद बदल नही सकते। नाही प्रथाओ एव परम्पराओ के सदर्भ मे कोई विशेष रियायत ही की जा सकती है।

आपने इस बात का समर्थन किया है कि जो व्यक्ति देवता की पूजा उपासना करने का इच्छुक हो उसके लिए मन्दिर के द्वार खुले रहने चाहिए। यह आपका अपना निजी कानून है जो कहीं भी व्यवहार मे नही आरहा है।

भगवान जगन्नाथ के मन्दिर की अन्य किसी मन्दिर वा देवालयो के साथ तुलना नही की जा सकती। आप भारत के उच्चतम न्यायालय से भी उच्च

(शेष पृष्ठ १० पर)

फीजी में प्रेरणास्रोत स्वामी श्रद्धानन्द

ब्रह्मदत्त स्नातक ६/१४४ रामकृष्णपुरम् नई दिल्ली-२२

गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना का विचार और प्रस्ताव सबसे प्रथम लाला मुन्शीराम ने ही पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के सामने रखा था। इसकी विधिवत स्थापना ४मार्च १९०२को हुई, परन्तु वैसे इससे पूर्व स्वामी दर्शनानन्द (पूर्व नाम प० कृपाराम) की प्रेरणा से १८९८ ई० मे ही सिकन्दराबाद (यू० पी०) मे प्रथम गुरुकुल खुल चुका था, जिसे बाद मे फर्रुखाबाद लेजाकर वृन्दावन हटाया गया। वहां वह आजभी चल रहा है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के इस प्रयोग परीक्षण का प्रभाव प्रशान्त महासागर के सुदूर स्थित द्वीप फीजी पर भी पड़ा। तदनुसार १९१८ मे सवेनी (लोटाका) समुद्र तट के पास रमणीक स्थान मे एक गुरुकुल की स्थापना हुई। यहां से प्रथम और द्वितीय चरण मे अच्छे बौद्धिक एव नैतिक स्तर के सार्वजनिक कार्यकर्त्ता निकले हैं। फीजी मे पत्रकारिता के युगप्रवर्तक पण्डित कमला प्रसाद मिश्र सम्पादक जय फीजी उनमे से अन्यतम हैं। पिछले दिनो भारत सरकार द्वारा हिन्दी के ५ विदेशी विद्वानो को पुरस्कृत किया गया, उनमे एक वे भी हैं। वे कवि तथा लेखक भी हैं। यहां के सुप्रीम कोर्ट मे धनानन्द मिश्र भी सवेनी के पूर्वछात्र रहे हैं।

वर्तमान में फीजी का गुरुकुल आवासीय सस्था न रहकर एक कक्षा सात तक का आदर्श स्कूल है। स्वामी श्रद्धानन्द की इस गुरुकुल की स्थापना मे प्रेरणा रही है। फीजी के उच्चकोटि के शिक्षा शास्त्री, ट्रेड यूनियन लीडर तथा सीनेटर प० अमीचन्द्र विद्यालकार स्वामी जी के आदेश पर ही यहा आये थे। उनके पूर्व प० गोपेन्द्र नारायण पथिक भी वृन्दावन गुरुकुल से यहा आये और यावज्जीवन फीजी की सेवा की। प० अमीचन्द्र की लन्दन से फीजी आते समय विमान दुर्घटना मे मृत्यु हो गयी। फीजी निवासियो ने स्वामी श्रद्धानन्द के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए राजधानी सूवा प एक आदर्श शिक्षा सस्था श्रद्धानन्द मैमोरियल स्कूल चलाया हुआ है, यो प० अमीचन्द्र के नाम पर बा नगर मे भी एक हाई स्कूल सफलतापूर्वक चल रहा है। इस प्रकार सुदूर फीजी मे स्वामी श्रद्धानन्द की शृ खला आज भी भली-भाति चल रही है।

नेहरू परिवार से निकटता

वर्तमान-प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी के दादा प० मोतीलाल नेहरू उस अधिवेशन के अध्यक्ष थे। दिग्गज राष्ट्रीय नेता महामना प० मदन मोहन मालवीय, श्रीमती एनी बीसेंट, लाला लाजपतराय, कस्तूरी श्रीनिवासन, मोहनदास करमचन्द गाधी, लोकमान्य बालगगाधर तिलक, राइट आनरेबल श्रीनिवास शास्त्री, राजर्षि गोखले आदि चोटी के व्यक्तियो ने उस महत्वपूर्ण अधिवेशन मे भाग लिया था। इस अधिवेशन के ऐतिहासिक ग्रुप फोटो मे युवक जवाहरलाल नेहरू सबसे अगली पक्ति मे जमीन पर बैठे हुए थे।

लाला नानकचन्द की अग्रेजी की राजभक्ति का पूरा बदला उनके बेटे मु शीराम (स्वामी जी का पूर्वनाम) तथा पोते-पोतियो ने उतार दिया। लाला मन्शीराम के सुपुत्र प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति चोटी के राष्ट्रीय पत्रकार होने के साथ १९२१ व १९३० मे राष्ट्रीय आन्दोलनो मे प्रमुख रहे, तथा बाद तक प्रदेश काग्रेस के अध्यक्ष रहे। स्वामी जी की पौत्री बहन सत्यवती अपने समय की प्रथम श्रेणी की महिला कार्यकर्मी थी। महात्मा मु शीराम के बडे पुत्र हरिश्चन्द्र जो गुरुकुल से पढने के बाद देश को अग्रेजो के चगुल से निकालने की धुन मे भारत छोडकर विदेशो मे सशस्त्र क्रान्ति की योजना मे लग गये थे, उनका पता बाद मे चला नही। क्रिया की प्रतिक्रिया अधिक बलशाली होती है, यह लाला नानकचन्द और उनकी सनति को देखकर सहज समझा जाता है।

नेहरू परिवार से निकटता की बात वर्तमान प्रधानमन्त्री के कारण महत्व की नही, क्योंकि इन्दिरा जी का तो तब जन्म ही हुआ होगा। वस्तुत मुन्शीराम और मोतीलाल नेहरू एक जमाने मे इलाहाबादमे सहपाठी रहे थे। बाद मे दोनों का सम्पर्क टूट गया। बात तब ताजा हुई जब कि अमृतसर कांग्रेस (१९१९) मे दोनो आमने सामने आए। तब तक मु शीराम स्वामी श्रद्धानन्द हो चुके थे और मोतीलाल देश के एक चोटी के वकील होने के बाद उसी वर्ष काग्रेस के सभापति चुने गये थे। उसमे स्वामी जी मेजबान बने और मोतीलाल जी मेहमान। अमृतसर रेलवे प्लेटफार्म पर दोना ने एक दूसरे को निकट से पहचाना और तब स्वामी जी ने कहा—

अरे, यह तो तुम हो। बहुत बडे नेता और वकील हो गए हो।" और पडित मोतीलाल भी कह उठे—

'मैं भी अपने सामने खडे एक त्यागी तपस्वी सन्यासी को देख रहा हू। वह अब मु शीराम नही। मेरा वह पूज्य बन गया है।" और फिर दोनो कौलमकौला (पजाबी शब्द है—उर्दू शब्द है बगलगीर) होकर हसते रहे।

उन्नति के शिखर पर विसगति का अग्रज उदाहरण देखिए। स्वामी श्रद्धानन्द नही, लाला मु शीराम पेशे से वकील थे। खूब आमदनी थी। कोतवाल बाप के बेलगाम बेटे थे। दूसरी ओर जालधर के रईस रायसाहिब सालिगराम के नमद दामाद भी बन गये। करेला और नीम चढा। खूब नाच गाना, वेश्यागामिता और मास-शराब चलता था। रोज रात को देर मे आना। नशे मे डूबे पति की सेवा करती, उनको भोजन कराती और बाद मे पत्नी शिव देवी स्वय भोजन करती। एक रात अधिक नशे मे मु शीराम भोजन करने की दशा मे नही रहे। पत्नी भी उस रात भूखीही सो गई। अगले दिन पहली बार मु शीराम को ज्ञात हुआ कि पत्नी शिव देवी उनके खाने के बाद ही भोजन करती है। इस पर वे अत्यन्त दुखित हुए और इसी प्रकार एक बार शराब का कर्ज उतारने के लिए जब पत्नी ने अपने मायके के सोने के कडे भी उनको दे दिए, तब उनकी आखें खुल गयी। डाकू से ऋषि बनने की बाल्मीकि की कहानी तो पुरानी है, परन्तु घोर पापी से महात्मा और उससे भी अगली सीढी सन्यासी-स्वामी बनने की उनकी मिसाल ताजी है।

और लाला मु शीराम की साधना की चरम परिणति सबसे प्रथम २६ अगस्त १८८९ को हुई। गुरुकुल कागडी की स्थापना के लिए अपनी सारी सम्पत्ति का दान करके और जनता जनार्दन के सामने झोली पसार कर जब लक्ष्य की सिद्धि हो गई, तब से उनको महात्मा पुकारा जाने लगा। यह उस साधक की दूसरी स्टेज थी। कम ही लोगो को यह पता है कि कर्मवीर (उनका तब यही विशेषण था) मोहनदास करमचन्द गाधी दक्षिण अफ्रीका से भारत वापस आने पर गुरुकुल कागडी मे कुछ काल तक ठहरे थे, और उनके भावी जीवन के कार्यक्रम की रूपरेखा वही बनी। वही महात्मा मु शीराम ने प्रथम बार गाधी जी को महात्मा कहकर सम्बोधित किया था। बाद म सारे विश्व ने गाधी जी को इसी विशेषण से पुकारा। मु शीराम उससे भी अगले चरण म पहुचकर महात्मा से सन्यासी-स्वामी की कोटि मे पहुच गये। दीप से दीप जले। यो स्वामी श्रद्धानन्द की जीवन यात्रा के प्रथम और अन्तिम दोना पडाव महत्वपूर्ण रह हे।

फीजी के आर्य विद्वान का देहान्त

लौतोका। फीजी के आर्य विद्वान प० भगवती प्रसाद का यहा एक अ परेशन क दौरान ३ दिसम्बर को देहान्त हो गया। उनकी आयु लगभग ५५ वर्ष थी और जीवन भर अविवाहित रहकर उन्होने आर्य समाज का प्रचार व कर्म काड के क्षेत्र म खूब काम किया था। अपने पीछे वे भाई-बहनो का विशाल परिवार छोड गए है।

व बडे सरल नम्र मृदुभाषी तथा स्वाध्यायशील विद्वान थे। भारतसे फीजी पहुचे प्रचारक कृष्ण जी से उन्होने वैदिक सिद्धान्तो का भलीभाति ज्ञान प्राप्त किया। वे सर्वथा निरामिषभोजी एव मनोषी व्यक्ति थे। फीजी म वैदिक पुरोहित सभा का सरक्षक प्रधान बनने पर उन्हाने मेरे साथ उपप्रधान का कार्य सुचारु रूप से किया था। इसके अतिरिक्त वे फीजी की आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान एव प० विष्णुदेव मैमोरियल स्कूल क मन्त्री भी थे। उनके दाह सस्कार पर राजधानी सूवा से आ० प्र० सभा क प्रधान श्री पूरनसिह एव पुरोहित सभा के मन्त्री प्रल्हाद आर्य के अतिरिक्त बडी सख्या म नरनारी उपस्थित हुए। पडित जी के निधन से निश्चय ही फीजी म एक समर्पित प्रचारक एव पुरोहित का अभाव हो गया है। प्रभु उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—ब्रह्मदत्त स्नातक

अवै० समाचार-पत्र एव जनसपर्क सलाहकार

ऋग्वेद और अमेरिका का उच्चतम न्यायालय

वियतनाम के युद्ध ने अमेरिका क अनेक नव युवको मे आन्तरिक विक्षोभ उत्पन्न कर दिया । उनमे से अनेको ने अनिवार्य सैनिक प्रशिक्षण लेने से इसलिए इकार कर दिया कि उनकी अतरात्मा युद्ध की विरोधी है। सीगर जकाब्सन और पीटर इन तीन नव युवको ने आत्मिक प्ररणा के आधार पर इस प्रशिक्षण से मुक्त रहने की माग की थी।

तीन विभिन्न जिला कोर्टो ने इस अपराध पर उन्हे जेल की सजा दी। इन तीनो ने अदालतो मे अपील की जिन्होने उनकी सजा रद्द कर दी अमेरीका सरकार यह मामला उच्चतम न्यायालय मे ले गई।

सीगर ने घोषणा की कि अपने धार्मिक विश्वास के कारण वह किसी भी प्रकार के युद्ध मे भाग लेने का हृदय से विरोधी है। उसने यह भी कहा कि वह उच्चतम सत्ता मे आस्था रखने के प्रश्न को खुला रखना पसन्द करेगा बजाय इसके कि हा या ना मे उत्तर दे। उसकी यह भी घोषणा थी कि परमात्मा की सत्ता मे उसके अविश्वास का अर्थ आवश्यक रूप से यह नही है कि विशुद्ध नैतिक धम मे उसकी आस्था न हो।

जकाब्सन की ऐसी उच्चतम सत्ता मे आस्था है जो मानव की सृजना करती है इस भाव मे कि वही सत्ता अन्ततोगत्वा मानव के अस्तित्व के लिए उत्तरदाता होती है। उसने यह भी कहा कि वही उच्चतम सत्ता है जिसका अस्तित्व मानव के अस्तित्व से सुस्पष्ट है। उसका सामाजिक और धार्मिक चिन्तन पर्याप्त विचार व मनन के बाद विकसित हुआ है। उसने अपने बयान को यह कहकर विराम दिया कि मानव का आशिक रूप से आध्यात्मिक होना आवश्यक है अत वह आशिक रूप मे सर्वोच्च सत्ता से मिलता जुलता है। उस सर्वोच्च सत्ता का सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक कानून यह है कि किसी भी मनुष्य को किसी अन्य उद्देश्य की सिद्धि के साधन क रूप मे मनमाने ढग से दूसरो के जीवन की बलि नही चढानी चाहिए।

पीटर ने सर्वोच्च सत्ता मे अपने विश्वास के प्रश्न का समाधान करते हुए कहा है कि यह बात परिभाषा पर निभर है। उसन परिभाषा के स्पष्टीकरण मे एक बयान प्रस्तुत किया जिसम कहा गया था कि मनुष्यो को समाप्त कर देना उस सर्वोच्च सत्ता के नैतिक विधान का उल्लघन करना है। वह इस विश्वास को प्रजा के राज्य के प्रति दायित्व से ऊपर समझता था। उसको सजा धार्मिक आधार पर दी गई था नही इस प्रश्न के उत्तर स्वरूप उसने रेवरेण्ड जौन होम्स की धम की परिभाषा प्रस्तुत की जिसका अथ है किसी ऐसी सत्ता की अनुभूति जो प्रकृति म प्रतिलक्षित होती है और जो मानव को उसके नियमो एव आदेशो क अनुकूल अपने जीवन को विकसित करने मे समथ बनाती है।

धर्म मानव स्वभाव की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है। यह है मानव की उच्च विचारधारा गहन चिन्तन और सर्वोत्कृष्ट जीवन प्रणाली। पीटर ने अपनी आस्था का स्रोत अपनी जन तन्त्रीय अमेरिकन सस्कृति का अध्ययन एव मनन बताया जो पाश्चात्य धार्मिक एव दार्शनिक परम्परा की विशेषताओ से युक्त है। सर्वोच्च सत्ता मे अपनी आस्था के प्रसग मे उसने कहा कि मैं यह सोचता हू कि आप इसे सर्वोच्च सत्ता या ईश्वर म आस्था कह सकते हैं। परन्तु जिन शब्दो का मैं प्रयोग करता हू उनसे ऐसा आभास नही मिलता।

खुला मस्तिष्क :—

सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशो ने अपने मस्तिष्क की खिडकिया खुली रखीं और विविध देशो की दार्शनिक हवाओ को उनमे प्रवेश करने दिया। सर्वोच्च सत्ता की भावना एव अथ को समझने के लिए उन्होने भारतवर्ष और ऋग्वेद की ओर दृष्टि फेरी। न्यायाधीशो ने ऋग्वेद क निम्नलिखित शब्दो की ओर सकेत करते हुए उन्हे विश्वसनीय समझा —

'सर्वोच्च सत्ता शब्द का धर्म के क्षेत्र मे सकुचित पारिभाषिक अर्थ नहीं है। हमारी यहूदी और ईसाई सभ्यता के प्रादुर्भाव से बहुत पहले परमात्मा की भावना विविध रूपों मे बद्धमूल हो चुकी थी। एक मात्र हिन्दू धर्म, और बौद्ध धर्म के उल्लेख से ही परमात्मा के स्वरूप, उसकी व्यापकता एवं सर्वोपरिता का विश्लेषण स्पष्ट हो जाता है। हिन्दू धर्म मे सर्वोच्च सत्ता विविध धार्मिक देवी देवताओ का रूप लिए हुए है जिसमे ब्रह्मा विष्णु और महेश मुख्य हैं। एक दूसरी उपास्या दैवी शक्ति है जिसकी व्यापक रूप से पूजा होती है। यह शक्ति विनाशक एव रचनात्मक दोनो मानी गई हैं। यद्यपि हिन्दू धर्म विविध देवी देवताओ की पूजा उपासना से परिवेष्टित है तथापि इसकी आस्था एक ही परमात्मा मे रहती है जिसका सदैव अस्तित्व रहता है और जो विविध गुणो से सयुक्त होता हैं। इस भावना की अभिव्यक्ति ऋग्वेद के मण्डल १ सूक्त १६४ मन्त्र ४६ मे की गई है जो हिन्दुओं का सबसे पुराना पवित्र ग्रन्थ है।

वे इसे इन्द्र मित्र वरुण अग्नि और गरुत्मान के नाम से पुकारते हैं। परन्तु वास्तविक सत्ता एक ही है। यद्यपि ऋषि लोग इसे विविध नामो— अग्नि यम एव मातरिश्वा के नाम से सम्बोधित करते हैं।

इन्द्र मित्र वरुणमग्निमाहुरथो दिव्य स सुपर्णो गरुत्मान।
एक सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्नि यम मातरिश्वानमाहु ॥४६॥

भावार्थ—जैसे अग्नि आदि पदार्थो के इन्द्र आदि नाम हैं वैसे एक परमात्मा के अग्नि आदि सहस्रो नाम वर्तमान हैं जितने परमेश्वर क गुण, कम स्वभाव हैं उतने ही इस परमात्मा के नाम हैं यह जानना चाहिए।

भारतीय दर्शन शास्त्र ने जिसकी अनेक शाखाय हैं सर्वोच्च सत्ता के सबध मे भिन्न भिन्न सिद्धान्त प्रस्तुत किये हैं। उपनिषदो के अनुसार जो हिन्दुओ के पवित्र धम ग्रन्थ हैं उनके आधार पर सर्वोच्च सत्ता वह शक्ति है जो सृष्टि की रचना और सहार करती है और प्रलय काल मे समस्त निर्मित चीज उसी मे लीन हो जाती हैं। उपनिषदो मे सामान्य सर्वोच्च सत्ता का द्योतक ब्रह्म शब्द प्रयुक्त किया गया हे। दार्शनिक रूप से सर्वोच्च सत्ता अनुभूत की जाने योग्य अत्युत्तम गुणवान सत्ता है जो सत् चित् और आनन्द है। यह सभी सृष्टि का आदि मूल है। इस दृष्टि से ब्रह्मा ईश्वर है सृष्टि का कर्ता है और उपास्य है। यद्यपि वेदान्त की दृष्टि मे यह सत्ता अपूर्ण और परिमित है।

स्मृति-श्रुति :—

यह बात मनोरजक है कि प्राचीनकाल के अनेक लोगो ने अपनी उपलब्धियो को अमर बनाने के यत्न मे मूल्यवान सामग्री यथा स्वर्ण रजत (चान्दी) सगमरमर पीतल आदि का उपयोग किया है, परन्तु प्राचीन आर्यों ने ऐसा नहीं किया। उन्होने ऐसी सामग्री का सहारा लिया जो सब स सूक्ष्म एव चपल देख पडती है और वह है शब्दोच्चारण। इसके द्वारा उन्होने वायु परिचालित वह स्मृति भवन स्थापित किया है जो तीस या चालीस शताब्दियो से अधिक काल के बाद भी समय और प्रकृति के थपेडो से अछूता रहकर खडा रहा। मिश्र के पिरामिड रेगिस्तान की हवा की टक्कर से क्षतविक्षत हुए भूकम्पों ने सगमरमर को तोडा और चोरो द्वारा सोना चुराया गया। परन्तु वेदो का पीढी दर पीढी प्रतिदिन बिना नागा पाठ होता रहा और वे मस्तिष्क के जीवित तत्व में से होकर एक महान धारा के सदृश प्रवाहित होते रहे।

यह असाधारण शक्ति और सजीवता कहा से आई? अतीत काल से असख्य व्यक्तियो के धार्मिक और दार्शनिक विचारो को परिपुष्ट करने एव मूर्तरूप देने की शक्ति कहा से आयी?

परम्परा इसका उत्तर यह देती है कि वेद स्वत प्रमाण हैं। सभ्यता की बुनियाद मे भारत ने जो शिला रखी वह वेद ही है जिन में दिव्य ज्योति से युक्त ऋषियो द्वारा परिलक्षित सृष्टि के नियम और उसकी व्यवस्था का प्रकार समन्वित है जिसको युग-युगान्तर पर्यन्त लोगों के लाभार्थ एक विशेष भाषा मे अभिव्यक्ति की गई। यह ज्ञान हमे मौखिक परम्परा के द्वारा प्राप्त हुआ है और इसकी व्यवस्था इतनी बारीकी से एवं कुशलता से की गई कि उसमें काट छाट या प्रक्षेप की गुजाइश ही नहीं है। प्रारम्भिक धर्म का यह

[शेष पृष्ठ १० पर]

गायत्री मन्त्र की महिमा

('सरिता' पाक्षिक के दिसम्बर १९८२ ११ के आक्षेपो का सप्रमाण उत्तर)

—डा० विश्व बन्धु "अधित"

अध्यक्ष हिन्दी विभाग डी० ए० वी० कालेज अबोहर (पजाब)

(गताक से आगे)

छन्द दोष—लेखक ने इस प्रसिद्ध गायत्री मन्त्र को छन्द की दृष्टि से अशुद्ध बताकर साधारण पाठक को बहकाने का असाधारण प्रयास किया है उसकी दूरदृष्टि की इसलिए भी दाद देनी पडती है कि उसने इस मन्त्र को लगडी और अशुद्ध गायत्री सिद्ध करने के लिए जो एक मात्र साक्षी दी है वह स्वय वेदमन्त्र की है। क्या अदमत विदग्धता है। लेकिन चालाक आदमी स्वय अपनी चालाकी मे मारा जाता है। कोई भी सजग पाठक वेद को कैसे सरिता के विधेयाक के समान मान सकता है जिसका सृजन ही वेदकी निन्दा के लिए हुआ हो। अत लेखक के इसी अन्त विरोधी प्रमाण से यह सिद्ध हो जाता है कि निचृद गायत्री उसकी मिथ्या कल्पना के आधार पर कोई लगडा या अपूर्णछन्द नही है अपितु इस गायत्री छन्द का ही अपर प्रकार है। इस विषय मे लेखक के वचनो का विश्लेषण आवश्यक है। उसका कथन है—

जिस गायत्री मन्त्र की इतनी ज्यादा महिमा गायी गई है उसके सम्बन्ध मे रोचक तथ्य यह है कि वह अशुद्ध छन्द है। शुद्ध गायत्री मे तीन पाद और प्रत्येक पाद में आठ वर्ण होते हैं। आलोच्य जपनीय मन्त्र के प्रथम पाद मे आठ की जगह सात वर्ण हैं। अत वह लगडा छन्द है। स्वय वेद मे इस गायत्री मन्त्र के छन्द को निचृद गायत्री (२३ वर्णों वाला अपूर्ण छन्द) बताया गया है। देखिए यजुर्वेद ३१ ३५ २२ ७ ३० २ ऋग्वेद ३ ६२ १० सामवेद मन्त्रसख्या १४६२)

यहा शर्मा जी ने सफेद झूठ बोलने का रिकार्ड कायम कियाहै। उपयुक्त गिनाये भी मन्त्र मे एक शब्द क्या कोई एक वर्ण भी ऐसा नही जो गायत्री मन्त्र को लगडा या अशुद्ध बताता हो। यजुर्वेद के मन्त्र २२ ७ मे यह पाठ है— विजृम्भमानाय स्वाहा त्रिचताम स्वाहा। अब शर्मा जी ने न जाने किसी खास चश्म से इसे हा निचृद के स्थान पर विचत् पढ लिया हो। और तब भी किस व्याकरण से विचृताय स्वाहा का यह अर्थ होगा कि गायत्री मन्त्र अशुद्ध छन्द है। यही नही यजुर्वेद मे ३१ ३५ सख्या वाला कोई मन्त्र ही नहीं। बेचारे शर्मा जी भूल गए कि यह अध्याय तो २२ मन्त्रो वाला पुरुषसूक्त है। इसमे २३वा मन्त्र ही नही तो ३५वा कहा से आएगा। इसे कहते हैं कि चोर के पाव नही होते।

अब रही मन्त्र के प्रथम पाद मे आठ के स्थान पर सात वर्ण होने की बात और इसे लगडा छन्द सिद्ध करने की कहानी। इस विषय मे अपना बात कहने से पूर्व आदरणीय शर्मा जी से कुछ प्रश्न पूछने को मन करता है।

'चारो वेदो में केवल इसी मन्त्र के प्रथम पाद मे सात वर्ण हैं ?

'वेद मे निचृद गायत्री छन्द कुल कितने मन्त्रो का है

'क्या गायत्री मन्त्र के केवल दो ही रूप उपलब्ध हैं गायत्री और निचृद गायत्री ?

यदि गायत्री के और भी अन्य रूपभेद हैं वे कितने हैं और उनके क्या नाम हैं ? वेद मे अन्य छन्दो अनुष्टुप त्रिष्टुप जगती बृहती पक्ति अष्टि शक्वरी और उष्णिक आदि छन्दो का भी केवल एक ही रूप है अथवा उनके भी निचृद् विराट् आदि रूपभेद हैं ? आदि

यह भी बतावें कि क्या आप अपने प्रयास से ही स्वाध्याय करके इन प्रश्नों का उत्तर खोजकर बता सकेंगे और जब तक आप पुन अध्ययन मे प्रवृत्त होकर ज्ञिकम्मा बनें तब तक आपके पाठक क्या आपके द्वारा फैलाई गई भ्रान्ति का शिकार बने रहें ?

नही पाठकों के साथ इस प्रकार का अन्याय कदापि सहा नही अत हम अपने पाठको के साथ आपको भी यह तथ्य समझा देना अपना कर्त्तव्य समझते हैं कि वेद में छन्दों के भेद और लौकिक सस्कृत के भेद एक समान नही होते। अत यह आवश्यक नही कि वेद के मन्त्रो में आप लौकिक छन्दो के समान नियम खोज सकें।

वस्तुत वेद मे छन्दों की सख्या को सीमित करने के उद्देश्य से उन्हे विभिन्न वर्गों और उपवर्गों मे बाटा गया है। अत उपर्युक्त गायत्री जगती बृहती पक्ति अष्टि शक्वरी अनुष्टुप त्रिष्टुप और उष्णिक आदि वर्ग है प्राय इन सभी वर्गों के विराट निचृद आर्षी आसुरी भुरिग और प्राजापत्या आदि उपभेद हैं। इनके योग से ही अनेक अन्य उपवग भी बनते हैं। जैसे गायत्री छन्द के ही कुछ उपवग या रूपभेद इस प्रकार है—

गायत्री छन्द निचृद गायत्री छन्द विराड गायत्री आर्षी गायत्री आसुरी गायत्री विराडार्षी गायत्री निचदार्षी गायत्री स्वराडार्षी गायत्री प्राजापत्या गायत्री भुरिग गायत्री भुरिग त्रिपाद गायत्री वर्धमाना गायत्री और पिपीलिकामध्या निचृद गायत्री छन्द इत्यादि। इसी प्रकार अन्य छन्दवर्गों के भी उपवर्ग (प्रकार) हैं।

इन उपवर्गों के रूपभेद का एक विशिष्ट लक्षण उनके विभिन्न पादो म वर्ण सख्या का कम या अधिक होना भी है। बच्चा भी समझता है कि किसी उद्यान मे अनेक रग के गुलाब होने से उस बगीचे की सम्पन्नता और शोभा मे वृद्धि होती है। पीले काले या सफेद गुलाब को लगडा या अपूर्ण बताने वाले महानुभाव को बच्चे क्या कहेंगे वही जानें।

माननीय सुरेन्द्र कुमार शर्मा जी की ज्ञानवृद्धि के लिए इतना बताना और अभीष्ट है कि वेद मे (७+८+८वर्णों) के निचृद गायत्री छन्द का केवल यही एक चर्चित मन्त्र उदाहरण नही अपितु इस छन्द मे सकडो मन्त्र है। यजुर्वेद के ३६ वें और २२ वें अध्याय मे ही जहा इस मन्त्र का भूर्भुव स्व (व्याहृति) से युक्त और विरहित पाठ प्राप्य है ७ मन्त्र गायत्री छन्द मे है और ७ ही निचृद गायत्री छन्द मे हैं। इन्ही अध्यायो मे उपयुक्त अन्य वर्गों के अनेक भेदो के साथ साथ गायत्री वर्ग के भी अनेक उपवर्गों के उदाहरण मिलते है। लेखक यदि और जानकारी बढाना चाह तो यजुर्वेद के ८ वे अध्याय को देखने का कष्ट कर उन्हे इस अकेले अध्याय मे गायत्री के ८ उपवर्गों के उदाहरण सहज ही मिल जायेंगे। इस विषय म इससे अधिक यहा बताना कठिन है उसके लिए तो अन्तेवासी बननेकी महती आवश्यकता है। सामान्य पाठको को इतना पढकर ही पता चल जाएगा कि सरिता ने इस लेख मे किस महामूढता का परम प्रदर्शन करने का पुरुषार्थ किया है।

व्याकरणिक अशुद्धि सामान्य पाठक को सर्वाधिक चोकाने वाला कुतर्क है इस मन्त्र मे व्याकरणिक अशुद्धियो की खोज और उसके बेतुके समाधान सुझाने का हास्यास्पद प्रयास। इस विषय म शर्मा जी का कहना है —

यह मन्त्र न केवल छन्दगत अशुद्धियोसे युक्त है अपितु सस्कृत व्याकरण की दृष्टि से भी पूरी तरह अशुद्ध है। मन्त्र के शुरू का तत् शब्द नपुसकलिंग है और तीसरे पाद का सम्बन्ध निदेशक सर्वनाम यो पुल्लिंग है। तत् और यो' परस्पर सम्बद्ध हैं लेकिन लिंगगत असगति के कारण इनका परस्पर अन्वय नही हो सकता। व क्यारम्भ मे नपुसकलिंग तत् है अत या तो उसी के अनुसार यो के स्थान पर यत् हो या प्रारम्भ मे नपु० तत् को सवितु का विशेषण बनाया जाए। अन्यथा गायत्री मन्त्र व्याकरणिक अशुद्धियो की गुत्थी मात्र रह जाताहै। —क्रमश

सार्वदेशिक आर्य वीर दल ने अजमेर शताब्दी समारोह में गरिमापूर्ण सेवा की

अजमेर। महर्षि दयानन्द शताब्दी समारोह में देश के कोने कोने से पधारे तेरह सौ पैंतीस आर्य वीरो ने दयानन्द नगर और ऋषि उद्यान मे हुए आयोजनो की व्यवस्था सुरक्ष का उत्तरदायित्व निर्वाह करने मे रात दिन एक करते हुए अहर्निश सेवा की जिसकी सराहना महर्षि दयानन्द समारोह समिति के सम्बन्धित सर्वोच्च अधिकारियो ने मुक्त कठ से की है। यहा हम पूज्य स्वामी सत्य प्रकाश जी द्वारा सार्वदेशिक आर्य वीर दल के सचालक महोदय को भेजे पत्र को अविकल रूप से प्रकाशित कर रहे हैं।

श्री बालदिवाकर हस जी

ईश्वर की महती कृपा से निर्वाध शताब्दी समारोह समाप्त हुआ। आपने इस अवसर पर हमारी जो सहायता की और कठोर परिस्थितियो मे आपने शान्ति और स्नेह से जो तपस्या की, वह आपके गौरवके सर्वथा अनुकूल थी।

आर्य वीर दलके सभी युवको और स्वय सेवकों को मेरा आशीर्वाद कहे। उनकी मूल्यवान सेवाओं ने हमारी बडी सहायता की।

सस्नेह आशीर्वाद।

सेवा मे,

श्री बालदिवाकर हस जी — ह०

आर्य वीर दल — (स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

नई दिल्ली ११०००२

स्मरण रहे आर्य वीरो ने जो बम्बई, मध्य प्रदेश, आध्र उत्तर प्रदेश हरियाणा गुजरात आदि से तेरह सौ पैंतीस की सख्या मे पधारे थे अत्यन्त मनोयोग से दयानन्द नगर के टैन्टो मे बसे आर्यों की तन मन से सेवा की। उन्होने मौके पर ग्यारह इश्तिहारी गुण्डो को पकडकर अजमेर पुलिस को सौंपा ध्वजोत्तोलन का नयना भिराम दृश्य अनुशासनपूण था जिसकी चायना और जापान के प्रतिनिधि तक ने प्रधान सचालक जी से मुक्त कण्ठ से प्रशसा की। ऋषि उद्यान मे पूज्यपाद महात्मा दयानन्द जी द्वारा किये जा रहे यज्ञानुष्ठान से जहा आर्य नर नारियो को शुचिता एव अध्यात्मवाद का रचनात्मक सन्देश मिल रहा था वहा श्री सत्यपाल जी शिक्षक के नेतृत्व मे आर्य वीर दल हरियाणा सेवा सुरक्षा का उतरदायित्व सम्हाले हुए था।

ईश कृपा पुलिस सहयोग, आर्य वीर दल सैनिको की कतव्य निष्ठा, समारोह समितिके सदस्यो के अथक प्रयास, और आर्यों की महर्षि दयानन्द के प्रति अपार श्रद्धा से समारोह सानन्द सम्पन्न हुआ। समारोह मे गौरक्षा, हैदराबाद एव सिन्ध के सत्याग्रहियो की स्वतन्त्रता सैनानी स्तर की पुरजोर माग अपने आप मे जिस स्तर पर मुखरित हुई वह उल्लेखनीय है।

—सवाददाता

प्रान्तीय समाओं के वार्षिक निर्वाचन

उत्तर प्रदेश लखनऊ

१ सर्वश्री कैलाशनाथसिंह अध्यक्ष २ श्रीमती सन्तोष कुमारी कपूर उपाध्यक्ष ३ प्रेमचन्द्र शर्मा उपाध्यक्ष, ४ देवेन्द्र आर्य उपाध्यक्ष ५ कपूरचन्द आजाद ६ इन्द्रराज मन्त्री, ७ जमनारायण अरुण उपमन्त्री ८ मनमोहन तिवारी उपमन्त्री, ९ खेमसिंह आर्य उपमन्त्री, १० वीरेन्द्ररत्नम् उपमन्त्री, ११ विद्यासागर कोषाध्यक्ष १२ वीरेन्द्रपाल शर्मा सहकोषाध्यक्ष, १३ विनय कुमार पुस्तकाध्यक्ष १४ राम कुमार आर्य सहपुस्तकाध्यक्ष।

—खेमसिंह आर्य, उपमन्त्री

हिमाचल प्रदेश

(१) प्रधान स्वामी सुबोधानन्द, (२) उपप्रधान प० मथुरादास, (३) रामानन्द आचार्य कृष्णलाल आर्य (४) महामन्त्री भगवान चैतन्य, (५) उपमन्त्री आचार्य मनोहरलाल, (६) प्रचार मन्त्री गोविन्दराम आर्य, (७) कोषाध्यक्ष कृष्णचन्द्र आर्य, (८) लेखा निरीक्षक सोहनलाल आर्य।

सार्वदेशिक के लिए प्रतिनिधि—(१) स्वा० सुबोधानन्द, (२) भगवान चैतन्य, (३) प० विद्याधर, (४) स्वा० सुमेधानन्द सरस्वती, (५) आ० रामानन्द, (६) कृष्णलाल आर्य।

—भगवान चैतन्य

कलौदा जिला गाजियाबाद

आर्य समाज प्राचीन मन्दिर कलौंदा जिला गाजियाबाद का वार्षिक निर्वाचन १ दिसम्बर १९८३ को समाज मन्दिर मे सम्पन्न हुआ।

प्रधान डा० रनजीतसिंह मन्त्री रणजीतसिंह राणा निर्वाचित हुए।

रामप्रसाद बिस्मिल-आजीवन दृढ़ आर्य और ब्रह्मचारी

—आचार्य दीनानाथ सिद्धांतालंकार

जीवन मे निराश और राज्य सिंहासन पर आरूढ होने के लिए सर्वथा उत्साह हीन युधिष्ठिर को महाभारत उद्योग पर्व मे भीष्म पितामह कर्तव्य पालन के लिए प्रेरित करते हुए कहते हैं —

"द्वाविमौ पुरुषौ लोके सूर्यमण्डल भेद कारकौ ।
एक परिव्राट सन्यासी द्वितीय रण सम्मुखेहत ॥

इस ससार में दो प्रकार के पुरुष सूर्य मण्डल के प्रकाश को भी चीरकर उत्तम लोक को प्राप्त करते हैं, प्रथम परिव्राट सन्यासी और दूसरा युद्ध मे छाती पर गोली खाकर शरीर त्याग करने वाला—

फांसी के तख्ते पर—भविष्य उज्ज्वल

भारत के स्वतन्त्रता सग्राम मे जिन युवको ने स्वेच्छा से अनगिनत कष्टो का प्रसन्नता से वरण करते हुए इस पुनीत यज्ञ मे अपनी आहुति दी उनमे काकोरी काण्ड के अग्रगण्य नेता आपाद मस्तक दृढ आर्य और ऋषि दयानन्द भक्त ३० वर्षीय ब्रह्मचर्य व्रत पालक राम प्रसाद बिस्मिल मूर्धन्य हैं। अमर शहीद चन्द्र शेखर आजाद, भगतसिंह इत्यादि अनेक बलिदानियो को उनके जीवन से ही प्रबल प्रेरणा और स्फूर्ति मिली और अभी तक मिल रही है। "बिस्मिल" उर्दू के एक मुर्दा दिल मे धडकन पैदा करने वाले शायर भी थे। काकोरी षडयन्त्र काण्ड मे १९ दिसम्बर, १९२७ सोमवार (पौष कृष्णा ११ सम्वत् १९८४ वि०) प्रात ६ ३० बजे गोरखपुर मे वेद मन्त्रो का सस्वर पाठ और प्रभु प्रार्थना के साथ रामप्रसाद फासी की रस्सियो को हर्ष विभोर हो आलिगन करते हुए भारत माता के पवित्र चरणो मे सदा के लिए अर्पित हो गए। अपने जीवन के इस परम वन्दनीय दिवस से दो दिन पूर्व अर्थात १६ दिसम्बर १९२७ को बिस्मिल अपनी आत्मकथा मे लिखते हैं —

'अतएव नियत समय पर इहलीला समाप्त करनीहोगी—यद्यपि यह बात वह परब्रह्म ही जानता है कि किन कर्मों के परिणाम स्वरूप कौन सा शरीर इस आत्मा को ग्रहण करना होगा किन्तु अपने लिए यह मेरा दृढ विश्वास है कि मैं उत्तम शरीर धारण कर नवीन शक्तियो सहित अतिशीघ्र पुन भारत मे ही किसी निकटवर्ती सम्बन्धी या इष्ट मित्र के गृह मे जन्म ग्रहण करूगा—। मेरा उद्देश्य रहेगा कि मनुष्य मात्र को सभी प्राकृतिक पदार्थो पर समानाधिकार प्राप्त हो। इसकी पवित्र वेदवाणी का अनुपम घोष मनुष्य मात्र के कानो तक पहुचाने मे समर्थ हो सकू।"

शहादत के लिए उत्सुक

इसी प्रसग मे बिस्मिल ने अपने हृदय की आत्म बलिदान की उत्सुक आकाक्षाओ को जिन चुभते शेरो मे प्रकट किया है उनमे कुछ ये हैं—

१ सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल मे है।
देखना है जोश कितना बाजुए कॉतिल मे है ॥
२ वतन की आबरू का पास देखे कौन करता है।
सुना है आज मकतल मे हमारा इम्तहा होगा ॥
जुदा मत हो मेरे पहलू से ए दर्दे वतन हर्गिज।
न जाने बादे मुर्दम मैं कहा और तू कहा होगा ॥
३ शहीदो की चिताओ पर जुडेंगे हर बरस मेले।
वतन पै मरने वालो का यही बाकी निशा होगा।
४ इलाही वह भी दिन होगा जब अपना राज देखेंगे।
जब अपनी ही जमी होगी, जब अपना आसमा होगा ॥

राम प्रसाद का जन्म उत्तर प्रदेश के शाहजहानपुर नगर मे ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ११ सम्वत् १९५४ मे एक ब्राह्मण परिवार मे हुआ।

स्वामी सोमदेव का प्रभाव विदेशी शासन का अन्त करने का प्रण

आठवी कक्षा के छात्र रामप्रसाद के जीवन पर जिस व्यक्ति ने सर्वाधिक प्रभाव डाला तथा उसे शुद्ध आर्य, राष्ट्र सेवक, विदेशी शासन का कट्टर शत्रु और देश की स्वतन्त्रता का दीवाना बना दिया वह था स्वामी सोमदेव सरस्वती। योगी देशभक्त विद्वान प्रचार करते हुए जब शाहजहापुर आए, तब राम प्रसाद उनके पवित्र जीवन उन्नत विचार, त्यागमय जीवन, दृढ आर्य समाजी लाहौर मे सब प्रकार सुख-सुविधाओ से गृहत्याग, अविवाहित पूर्णत क्रान्तिकारी से प्रभावित हुआ। स्वामीजी को शौच के समय पेट से खून गिरने की बीमारी थी। शरीर दुर्बल था। रामप्रसाद शिष्य के रूपमे इस आदरणीय गुरु की तन-मन-धन सब प्रकार से अहर्निश सेवा करते थे। विदेशी शासन का अन्त करने का सकल्प स्वामी जी की प्रेरणा और अहर्निश सत्सग से दृढ मूल हो गया। उन्ही की प्रेरणा से रामप्रसाद ने अपने गुरुदेव का चरणस्पर्श करते हुए यह प्रतिज्ञा की :—

"जीवन पर्यन्त अग्रेजी राज्य के विध्वस करने का प्रयत्न करूगा और उसमे किसी प्रकार की त्रुटि न करूगा—युवक के शब्दो मे यही से मेरे क्रान्तिकारी जीवन का सूत्रपात हुआ।" इस व्रत का पालन करने के लिए ही रामप्रसाद आजीवन अविवाहित ही रहे।

'८ वीं लखनऊ कांग्रेस, क्रांतिदल स्थापित—नेता बिस्मिल"

१९१८ दिसम्बर बडे दिनो की छुट्टियो मे लखनऊ मे काग्रेस का वार्षिक समारोह था। उन दिनो काग्रेस का नेतृत्व नर्म दल के हाथ मे था। प्रथम दिन काग्रेस के सभापति कलकत्ता से वहा आए। विशेष स्वागत नही हुआ। दूसरे दिन लोक मान्य तिलक आए-गर्म दल के नेता और युवक वर्ग के अनन्य प्रिय। उनका स्वागत करने के लिए नगर निवासी-विशेषत नौजवान रेलवे स्टेशन पर उमड पडे जिनके प्रमुख नेताओ मे रामप्रसाद बिस्मिल भी थे। लोकमान्य के स्टेशन से बाहर आने पर जोशीले युवको ने बग्घी के घोडे खोल दिए तथा उस पर अपने इस आदर्श नेता को बैठने के लिए बाध्य कर स्वय अपने कन्धे लगा उसका जुलूस आकाशभेदी क्रान्तिकारी नारो के साथ समूचे शहर मे से निकाला गया। इस ऐतिहासिक अवसर पर उत्तर भारत के विभिन्न प्रदेशो से अनेक क्रान्तिकारी सम्मिलित हुए। विशेषत बगाल की क्रान्तिकारी सस्था "अनुशीलन समिति' के योगशचन्द्र चटर्जी रासबिहारी बोस, शचीन्द्र सान्याल, बाराणसी के राजेन्द्र लाहडी। इन सब की प्रेरणा मे हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन" क्रान्तिकारी सस्था कायम की गई। उत्तर प्रदेश का दायित्व बिस्मिल को सोपा गया जिसके सदस्य उस समय १० युवक थे।

"काकोरी" स्टेशन पर सरकारी खजाने की लूट

इस समय सबसे बडी आवश्यकता हथियारो और उनकी प्राप्ति के लिए धन की थी यह निश्चय किया गया कि किसी व्यक्ति या परिवार को न लूटा जाए क्योकि इससे जन सहयोग प्राप्त करने मे बडी बाधा पडती है। सरकारी खजाना लूटने का ही निर्णय किया गया। सयोगवश एक दिन बिस्मिल ने देखा कि सहारनपर से चलने वाली शाहजहानपुर लखनऊ पैसेन्जर म गार्ड के डिब्बे मे रखे गए लोहे के तालाबन्द बक्से मे प्रत्येक स्टेशन पर उस दिन की आमदनी मोहरबन्द चमडे की थैली मे भर इसमे रखी जाती है। लखनऊ के पास एक छोटा स्टेशन "काकोरी" है। बिस्मिल ने इस खजाने को "काकोरी स्टेशन" पर इस पैसेन्जर गाडी से लूटने के लिए १० युवको को साथ ले ९ अगस्त १९२५ सायकाल ४ बजे हमला कर दिया। योजना के अनुसार इन युवको ने गाडी पर चढ जजीर खीच गाडी रुकवा बन्दूको सहित गाडी के दोनो ओर खडे हो मुसाफिरो को यह आश्वासन दे दिया कि कोई रेल डिब्बे से नीचे न उतरे, जो उतरेगा वह गोली का शिकार होगा उनके जान माल का कोई खतरा नही है।" हमने केवल गार्ड के डिब्बे मे से खजाने को लूटना है। गाडी रुकने पर गार्ड नीचे उतरा, उसे आदेश दे प्लेटफार्म पर औधे मुह लिटा दिया गया। लोहे का सन्दूक उतार छैनियो से ताला तोड, समस्त धनराशि दो चादरो मे समेट यह युवक दल चुपचाप लखनऊ शहर की ओर रवाना हो गया। रास्ते मे किसी न रोका नही और पूछ ताछ भी न की। यह सब युवक २०-२२ वर्ष आयु के ही थे।

कट्टर आर्य और कट्टर मुस्लिम—मित्र फांसी पर लटके

देश मे भयकर सनसनी फैल गई थी। दिन दहाडे इस प्रकार खजाना

लूटे जाने की अनोखी घटना से नौकरशाही की जडे हिलने लगी। सर्वत्र पुलिस की भर्त्सना का बाजार गर्म था। दर्जनों ग्राहित अन्धाधुन्ध पकड़े गए दो सरकारी गवाह बन गए। अन्त मे १८ को विभिन्न सजाये हुई जिनमे फासी की सजा रामप्रसाद बिस्मिल के अतिरिक्त रोशनसिंह, राजेन्द्र लाहिडी और अशफाक उल्ला तीनो को हुई और उत्तरप्रदेश के विभिन्न जेलो मे इन चारो ने हसते-हसते भारत माता के चरणो मे अपने प्राण अर्पित किए। यहा कट्टर आर्य समाजी, मुसलमानो की शुद्धि करने वाले रामप्रसाद बिस्मिल और कट्टर मुस्लिम युवक, अशफाक देश मे सर्वत्र व्यापक हिन्दू-मुस्लिम दगो का वातावरण अनेक प्रकार के प्रलोभन दिए जाने पर भी दोनो के पारस्परिक स्नेह सम्बधी जीवन के अन्तिम श्वास तक अक्षुण्ण, देश के तत्कालीन इतिहास का एक महान आश्चर्य, बिस्मिल के शब्दो मे— सबको आश्चर्य था कि एक कट्टर आर्य समाजी और मुसलमान का मेल कैसा ? अशफाक सच्चे देश-भक्त और मुसलमान थे।

जेल में दैनिक हवन और भाग जाने की सुविधाएं
बिस्मिल की अन्तर्ध्वनि

पर गीता के स्थित प्रज्ञ की तरह रामप्रसाद बिस्मिल जेल की इस काल कोठरी मे प्रसन्न। प्रतिदिन सन्ध्या-उपासना, अग्निहोत्र, भजन-कीर्तन के अतिरिक्त जेल के समस्त अधिकारी, सिपाही, चौकीदार इन सबके इस विशुद्ध जीवन पर मुग्ध सबकी ओर से भरपूर सहानुभूति कृपादृष्टि सहयोग, सेवा सुविधाओ का अर्पण। जेल के यह सब कार्यकर्ता अग्निहोत्र की राख को पवित्र समझ अपने बच्चो परिवार के कल्याण के लिए स्वय आग्रहपूर्वक घेर ले जाते। बिस्मिल कहते हैं—'जेलर से लेकर चौकीदार तक सब की ओर से मुझे जेल मे अनायास और बेरोक टोक भाग जाने की सुविधा और किसी प्रकार भी पकड़े न जाने की गारण्टी। एक बार भाग जाने का विचार आया तब पूर्णत ईश्वर भक्त और दृढ आर्य रामप्रसाद बिस्मिल के हृदय से तत्काल अन्तर्ध्वनि हुई उन्ही के शब्दो मे—

तत्क्षण ध्यान आया कि जिन प० चम्पालाल (जेलर) और उनके कर्मचारियो की कृपा से सब प्रकार की सदभावनाए और सुविधाए प्राप्त हो रही है तब उनके बुढापे म पेन्शन आदि के हकदार उन्ही के साथ विश्वासघात कर निकल भागू। सोचा जीवन भर किसी के साथ विश्वासघात न किया - अब भी विश्वासघात किसी के साथ न करूगा। मुझे उस समय विश्वास हो गया था कि मुझे फासी की सजा होगी।"

(पृष्ठ ६ का शेष)

सर्वोत्कृष्ट कीर्ति स्तम्भ ऋग्वेद है जिसमे पुरातत्व के कोई चिन्ह नही हैं, जिसका न कोई मठ है और न मन्दिर है और न जिसका वस्तुत कोई इतिहास है जो हिन्दू धर्म शास्त्रो के सिद्धान्तो व आदेशो का निरूपण करता है और जिसमे हजारो मन्त्र हैं।"

अदालत ने फैसला दिया कि हम इस परिणाम पर पहुचे है कि काग्रस (शासन सभा) ने परमात्मा के नाम के स्थान मे सर्वोच्च सत्ता का प्रयोग किया। ऐसा करते हुए वह धार्मिक प्रशिक्षण और विश्वास के अर्थ का स्पष्टीकरण कर रही थी जिससे कि उस स्पष्टीकरण मे समस्त वर्गों का समावेश हो जाय और राजनैतिक, मनोवैज्ञानिक एव दार्शनिक विचार बाहर रखे जायें। हमारा विश्वास हैं कि इस परिभाषा के अन्तर्गत सर्वोच्च सत्ता मे आस्था की कसौटी यही है कि निर्दिष्ट विश्वास जो सच्चा एव सुसगत हो विश्वासधारी के जीवन मे रूढिगत परमात्मा मे विश्वास से परिपूर्ण जीवन के साथ साथ ग्रहण कर सकता है या नही। जब कि इस प्रकार के विश्वासधारियो के जीवन मे समानान्तर स्थान रखते हो तब हम यह नही कह सकते कि सर्वोच्च सत्ता से सम्बद्ध एक विश्वास ठीक है और दूसरा ठीक नही है।"

उच्चतम न्यायालय ने सर्वसम्मति से उन तीनो नवयुवको की जो धर्म प्रेरणा से शुद्ध हृदय से अनिवार्य सैनिक प्रशिक्षण के विरोधी थे इस प्रशिक्षण से मुक्त किये जाने की माग को स्वीकार किया और सरकारी तर्क को रद्द कर दिया। —राम पजवानी

(नेशनल हैरल्ड, दिल्ली २५-४-७६)

यह फैसला वेद प्रेमियों मुख्यत आर्यजनो के लिए उत्साहवर्द्धक है यद्यपि समीक्षा के रूप मे कुछ कहे जाने की गुंजाइश है। —सम्पादक

[पृष्ठ ४ का शेष]

न्यायालय नही है जहा अपील की जा सकती हो।

आप एक ऐसे सिद्धान्त का प्रचार करते हैं जो धर्म निरपेक्षता की भावना के नितान्त विरुद्ध हो। साथ ही आप हिन्दू धर्म मे हस्तक्षेप करने के लिए गैर हिन्दुओं को प्रोत्साहित करते हैं। यह बात खतरनाक है।

जाति या वर्ण का निर्णय जन्म से नही होता (गीता को देखें)।

"हिन्दुओ का प्रथानुमोदित कानून धर्मान्तरण को अगीकार नही करता परन्तु हिन्दू किसी भी गैर हिन्दू धर्म को स्वीकार करने मे स्वतन्त्र हैं।"

(—सम्पादक ऑर्गेनाइजर २७-११-८३)

स्व० श्री फीरोज गाधी पारसी थे और पारसी गैर हिन्दू हैं। हिन्दू स्त्री का गैर हिन्दू के साथ विवाह निश्चय ही धर्मान्तरण का एक मार्ग है।

मुझे पता नही है कि आप उनके विवाह मे आमन्त्रित था उन विधि-विधानो के साक्षी थे या नहीं जो हिन्दू विधि-विधान के साथ होने वाले विवाहों के लिए अनिवार्य और आवश्यक होते हैं। इसकी मुझे जानकारी मिलनी चाहिए।

मुख्य द्वार पर लगे इस आदेश का कि कट्टर (पुरातनवादी, सनातनी) हिन्दू के अतिरिक्त अन्य किसीका प्रवेश वर्जित है।" अति क्रमण या उल्लंघन नहीं किया जा सकता।

कृपया अपने द्वेष पूर्ण अपराध तथा पत्र के लिए सार्वजनिक रूप से क्षमा मागें।

प्रतिक्रिया

(१)

श्री मेन्डे के दुखी होने का कारण समझ मे नही आ रहा है। प्रधान-मन्त्री का मन्दिर मे जाने का ध्येय राजनीतिक था अर्थात प्रणव मन्त्री मण्डल को टूटने से बचाना। मन्दिर मे दर्शनार्थ जाने की व्यवस्था भी उडीसा गवर्नमेन्ट ने ही की थी।

इस सन्दर्भ मे श्री प० जवाहरलाल जी नेहरू की धारणा का उल्लेख कर देना जरूरी जान पडता है जो उन्होने श्रीमती सरोजिनी नायडू को भेजे पत्र मे व्यक्त की थी। उन्होने लिखा था 'अरे! कितनी भोडीवह मूर्ति है।"

यदि श्रीमती इन्दिरा गाधी मूर्ति के दर्शन के लिए लालायित हो तो वे रथ यात्रा के वार्षिकोत्सव पर आकर दर्शन कर सकती हैं जबकि सभी वर्गों के लाखो व्यक्ति दर्शन करते हैं। (रामकृष्ण त्रिपाठी मद्रास)

(२)

मन्दिर पर लगे इस आदेश का कि कट्टर हिन्दू के अतिरिक्त अन्य किसी के लिए प्रवेश वर्जित है वर्तमान स्थिति मे हटा दिया जाना जरूरी देख पडता है। शुद्धि सम्बन्धी एक दूसरा मुद्दा विवादास्पद है। शुद्धि का वर्जन और हिन्दू के लिए धर्मान्तरण की छूट का प्रथानुमोदित विधान हिन्दुओं के लिए घातक है।

हजारो लाखो गैर हिन्दू अपने पुराने हिन्दू दायरे मे वापस आ चुके हैं। क्या प्रथानुमोदित विधान के अनुसार इनका दर्शनार्थ जगन्नाथ मन्दिर मे प्रवेश वर्जित किया जा सकता है ? या किया जाना समुचित होगा ? हिन्दू लोग अनेक पुरानी सडी गली रूढियो के शिकार हो चुके हैं। जन्मगत जाति-भेद तथा शुद्धि वर्जन के कारण हजारो भाई विधर्मी बने हैं। इस सम्बन्ध मे हमे बहुत सावधान रहना है। हमे सभी को हिन्दू दायरे मे रहने और रखने के लिए प्रोत्साहित करना और उन्हे बनाए रखने की स्थितियो को पैदा करना है। बिछुडे हुए अन्य धर्मावलम्बी को गले लगाने के लिए हमे सक्षम रहना चाहिए और जो हमारे धर्म की सहिष्णुता एवं समानता से आश्वस्त होकर इसमे शामिल होने के लिए उत्सुक हो, उनके लिए हमारे द्वार खुले रहने चाहिए।

विभाजन के कारण हम हिन्दू मातृभूमि के कुछेक भागों मे अल्पसख्यक बन गए हैं। इस्लामीकरण ईसाईकरण की प्रक्रिया अब भी जोरों के साथ क्रियान्वित हो रही है जिसके फलस्वरूप खण्डित भारत के कुछेक भागो मे हम पुन अल्पसख्यक हो गए हैं जिसके कारण विभाजित मातृभूमि के और भी विभाजित होने का खतरा पैदा हो गया है। (डॉ० एस० अशिक वर्कोरकूहे)

(शेष पृष्ठ १२ पर)

॥ ओ३म् ॥

महात्मा रसीलाराम वैदिक वानप्रस्थाश्रम

आनन्दधाम गढ़ी (ऊधमपुर)

चलो



पूज्य माता आनन्दशक्ति वानप्रस्थ

पूज्या माता आनन्द शक्ति जी वानप्रस्थ २/३३६ सुभाषनगर नई दिल्ली-२७ वानप्रस्थाश्रम गढ़ी (ऊधमपुर) में स्थायी रूप से पधार गई हैं। पूज्या माता आनन्दशक्ति जी ने २७ नवम्बर १९८३ से १५ जनवरी १९८४ तक ५० दिन का आदर्श मौन रखा है। पूज्या माता जी ४० दिन एक समय का हल्का भोजन और अन्तिम १० दिन अनशन करेंगी। १५ जनवरी १९८४ रविवार दोपहर १२ बजे यज्ञ की पूर्णाहुति होगी। उस समय पूज्या माता सुपर्णायति जी आर्य संन्यासिनी माता आनन्दशक्ति जी का व्रत खुलवायेंगी और आशीर्वाद देंगी। १५ जनवरी रविवार प्रातः ७ बजे "गोपाल भवन कच्ची छावनी जम्मू" से आश्रम के लिए बसें रवाना होंगी। आश्रम से सायं ४ बजे बसें जम्मू के लिए रवाना होंगी। आने-जाने का किराया १०), भोजन और ठहरने का प्रबन्ध आश्रम की ओर से होगा। बाहर से आने वाले व्यक्ति १४ जनवरी तक "गोपाल भवन कच्ची छावनी जम्मू" पहुंच जायें, ठहरने और भोजन का प्रबन्ध "गोपाल भवन जम्मू" में होगा। अपनी-अपनी सीट बुक करवाने के लिए "गोपाल भवन कच्ची छावनी जम्मू, फोन नं० ४२९५०" से सम्पर्क करें।

१. पूज्या माता आनन्दशक्ति जी ने आश्रम की उन्नति के लिए ५० दिन का एकान्तवास किया है। माता जी ५० दिन तक किसी भी व्यक्ति से नहीं मिलेंगी।
२. पूज्या माता जी १५ जनवरी १९८४ को आश्रम में ऐलोपैथिक फ्री डिस्पेंसरी का उद्घाटन करेंगी। ध्यान रहे कि आश्रम में आयुर्वैदिक धर्मार्थ औषधालय पहले से ही चल रहा है।
३. पूज्या माता जी ने आश्रम के अमृत चश्मे और आनन्द सरोवर को खूबसूरत बनाने के लिए १२०००) रुपया दान किया है। अमृत चश्मे का पानी किसी भी अमृत से कम नहीं। पानी इतना पाचक है कि आप आश्रम में रोगी बनकर आयेंगे और योगी बनकर जायेंगे।
४. पूज्या माता जी ने आश्रम में अपने नाम का कमरा बनवाने के लिए २१०००) रुपया दान किया है।
५. पूज्या माता जी की सुपुत्री ब्रह्मचारिणी रामदेवी जी आर्य युवति परिषद् की प्रधाना, जो कि ११० युवतियों का जत्था लेकर देहली से अजमेर ऋषि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर गई थीं, १५ जनवरी १९८४ को आश्रम में पधार रही हैं।
६. १५ जनवरी १९८४ को आश्रम में पूर्णाहुति के बाद ऋषिलंगर (भण्डारा) होगा।
७. यज्ञ के अध्यक्ष श्री पं० हरिश्चन्द्र जी होंगे।
८. आश्रम की "निर्माण और योजना" पुस्तक मुफ्त मगायें।
९. पत्र-व्यवहार "गोपाल भवन कच्ची छावनी जम्मू" के पते पर करें।
१०. २००० व्यक्तियों के भोजन का प्रबन्ध भी किया गया है, दानी व्यक्ति दान देकर पुण्य के भागी बनें।

निवेदक :—

गोपालभिक्षु वानप्रस्थ प्रधान

विद्याभानु शास्त्री मन्त्री

महात्मा रसीलाराम वैदिक वानप्रस्थाश्रम

आनन्दधाम गढ़ी (ऊधमपुर)

रजि० न० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (२८-१२-१९८३) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० ९३
Licensed to post without p epaym[illegible] No. 93 Post in D.P S O on 23 12 83

(पृष्ठ १० का शेष)

(३)

श्री वनमाली (अध्यक्ष जगन्नाथपुरी मन्दिर ट्रस्ट) ने अपने उत्तर मे कट्टर हिन्दू शब्द का उल्लेख किया है परन्तु इसकी व्याख्या नही की। फिर भी उनके पत्र की प्रवृत्ति व भाषा से उनका अभिप्राय सुस्पष्ट देख पडता है। इसी प्रकार के वे कट्टर हिन्दू थे जिन्होने काला पहाड को और उसके माध्यम से एक मुस्लिम देश को (वर्तमान बगला देश) जन्म दिया। ये ही कट्टर हिन्दू थे जिण्होने काश्मीर नरेश को स्वेच्छया पुन हिन्दू दायरे मे आने वाले हजारो नवमुस्लिमो को रोका था जिसके कारण आज काश्मीर मे ९० प्रतिशत मुसलमान है और पाकिस्तान जिन्दाबाद' का नारा गु जायमान है। इसी प्रकार के कट्टर हिन्दुओ ने कल के मीनाक्षीपुरम और आज के रामनाथपुरम का मार्ग बनाया था।

महात्मा गाधी अपने को पक्का सनातनी उदघोषित करते थे। उन्होने यह ठीक ही कहा था कि 'हमारी (कट्टर पन्थी हिन्दुओ) आखें गन्दी है हमारी विचार सरणि उससे भी गन्दी है और शरीर सर्वाधिक गन्दे हैं क्योकि हम हिन्दू धर्म को आचरण मे नही ला रहे है।" हिन्दू न जाति है न धर्म है यह तो राष्ट्रीयता है।

(डी० वेन्कय्या नाला गेट बाजार
पो० कृष्ण लका विजयवाडा)

टिप्पणी

धर्म तो वैदिक धर्म ही है जो आचरण का विषय है और जो सत्य, अहिसा आदि दश लक्षणो से युक्त है जिसका निरूपण वेद से वेदानुमोदित स्मृतियो, आदि धर्मशास्त्रो से सत्पुरुषो के भव्य आचरण से और अपनी पवित्र अन्तप्रेरणा से होता है। (सपादक सार्व०)

१०१३०—पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार
जि०—सहारनपुर उ० प्र०

आर्यसमाजों और संस्थाओं के लिए आवश्यक सूचना

समस्त आर्य समाजो आर्य शिक्षण सस्थाओ प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओ को सूचित किया जाता है कि शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे सार्वदेशिक आर्य वीर दल समिति का नियमानुसार गठन किया हुआ है।

युवाशक्ति को चरित्रोन्मुख करने हेतु सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री बालदिवाकर हस उप प्रधान सचालक डा० देवव्रत व्यायामाचार्य विधि सम्मत सगठन का सचालन कर रहे हैं।

कुछ दिनो से कुछ लोग अनुशासन की उपेक्षा करते हुए युवा लोगो के भोलेपन का लाभ उठाकर सार्वदेशिक सभा की अवमानता कर रहे हैं जो सर्वथा अनुचित है। मेरा आर्य मात्र एव सभा से सम्बन्धित सभी सस्थाओ से अनुरोध है कि वे सगठन की एक रूपता के हित मे सार्वदेशिक आर्य वीर दल को ही मजबूत बनाए और इस प्रकार के अन्य सगठनो को किसी भी प्रकार का सहयोग न करे।

—ओम्प्रकाश त्यागी सभा-मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागज नई दिल्ली-२ मे मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८५] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दयानन्दाब्द १६० दूरभाष २७४७७१
वर्ष ११ अङ्क १६] चैत्र शु० १५ स० २०४१ रविवार १५ अप्रैल १९८४ वार्षिक मूल्य १६) एक प्रति ४० पैसे

श्री बाबू जगजीवनरामजी का वक्तव्य भ्रांतिपूर्ण

देश के मूल निवासी शूद्र नहीं आर्य ही थे

वैदिक धर्म ही विश्व धर्म है और रहा है।

सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले द्वारा स्पष्टीकरण

दिल्ली ९ अप्रैल।

मेरा ध्यान श्रीयुत बाबू जगजीवनराम जी के उस भाषण की ओर आकृष्ट किया गया है जो उन्होने ६-४-८४ को दिल्ली मे हुए दलित साहित्यकार सम्मेलन का उदघाटन करते हुए दिया था। इस भाषण मे उन्होने कहा बताते हैं कि शूद्रो को आर्यों से सम्मान मागने की जरूरत नही है। शूद्रो का धम आर्यों और वेदो से भी पुराना है और उनके इतिहास को पूरी तरह खत्म कर देने का योजनाबद्ध षडयन्त्र रचा गया है। हिन्दू धम शूद्रों पर उत्तरदायित्व तो डालता है अधिकार नही देता। यह बेईमानी है। शूद्र पौरुष व क्षमता से भरी जाति है जिनका दमन करने की आर्यों ने साजिश की। आप लोग वेद मत पढो। यह आपके काम नही आयगा। हमें दर्शन से नहीं साध्य से मतलब है। आप अपन गौरवको तलाशो आदि २

हमे इस भाषण की रिपोट पर विश्वास नही हुआ क्योकि बाबू जगजीवनराम वैदिक शिक्षाओ पर आधारित आर्य समाज के दलितोद्धार एव अस्पृश्यता निवारण आदि के कार्यों को न केवल मान्यता ही देते रहे हैं अपितु इनकी प्रशसा भी करते रहे हैं।

श्री जगजीवनराम ने अनेक बार हरिजनो को यह कह कर ईसाइयत इस्लाम आदि मे जाने से रोका है कि वे अपने हिन्दू धर्म पर ही दृढ रहे जो वैदिक धम का ही विकृत रूप है और इसमे सुधार का काय प्रगति पर है। इसमें ज्यो २ सुधार होगा हरिजनो की स्थिति सुधरती जायगी। इतना ही नही कई वर्ष पूव लोभ और जोर जबदस्ती से ईसाई आदि बने सैकडो हरिजनो को हिन्दू धर्म मे वापस लाने का भी उन्हे श्रेय प्राप्त रहा।

शूद्र धर्म जैसी कभी कोई चीज इस देश मे नही रही है। वैदिक धम ही रहा है। शूद्रके धर्म को आर्योंसे भी पुराना बताना इतिहास और परम्परा के साथ खिलवाड करना ही है। हा मनु महाराज ने 'जन्मना जायते शूद्र' कहकर जन्म के समय सभी को शूद्र (असंस्कृत) बताया था। यत बाबू जी की स्थापनाए प्रमाण रहित है और वे यथावसर अपनी मान्यताए बदलते रहते हैं अत उनकी विस्तार पूर्वक समीक्षा करना अनावश्यक है। परन्त यह कहे बिना नही रहा जा सकता कि भारत के मूल निवासी आर्य ही थे। उन्होंने ही इसे बसाया था। यह सुनसान था इसमे मानव निवास न था। आर्य लोग ईरान आदि से यहा नही आए थे न उन्होने तथा कथित मूल निवासियो को मार पीट आदि करके उन्हे भगाया था और उनकी भूमि आदि पर कब्जा किया था। ये तथ्य महर्षि दयानन्द सरस्वती श्री स्वामी विवेकानन्द जी, श्री अविनाशचन्द्र आदि २ धर्माचार्यों, विद्वानो ऋष्यक इतिहासकारों पुरातत्त्व वेत्ताओ की स्थापनाओ, अनुसधानो आदि २ से भी यहा तक कि निष्पक्ष विदेशी, विद्वानो व इतिहास विदो की घोषणाओ से अनेक बार प्रमाणित हो चुके हैं।

प्रारम्भ मे मानवीय गुणो व गुण पर आधारित दो ही वर्ग थे आर्य और अनार्य्य (दस्यु)। ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र का विभाजन श्रम से सम्बद्ध था। इनमे दर्जे का भेद न था किस्म का ही भेद था जिसका निर्धारण गुरुकुलो आदि मे गुण कर्म और स्वभावानुसार होता था और आवश्यकतानुसार राजतन्त्र द्वारा नियमन होता था। शूद्र ब्राह्मण और ब्राह्मण शूद्र होता था हो सकता था। इसके अनेक उदाहरण शास्त्रो स्मृतियो और इतिहासो मे उपलब्ध है।

यह ठीक है कि मध्य युग मे कुछेक स्वार्थी विद्वानो ने जान बूझकर स्त्री शूद्रोनाधीयताम की वेद विरुद्ध व्यवस्थाए देकर शूद्रो को केवल सेवा करने का अधिकार निरूपित किया जिसमे अब लगभग पूर्णत सुधार हो चुका है जिसका सर्वाधिक श्रय वर्तमानकाल मे महर्षि दयानन्द को प्राप्त है। अनेक साहित्यकारो विद्वानो अन्वेषको ने यह प्रमाणित किया हुआ है कि प्राचीनकाल मे शूद्रो को भी विद्या आदि पढने का उतना ही अधिकार था जितना द्विजो आदि को। क्योंकि धर्मशास्त्र मे प्रत्येक मनुष्य के लिए यह अनुशासन किया गया है कि वह अपने पुत्रो को प्रारम्भ से ही शिक्षा दिलावे। यहा भी शूद्रो और ब्राह्मणो मे कोई पृथक करण नही किया गया है। यहा तक कि शूद्र तक से भी विद्या ग्रहण करने की व्यवस्था की गई है।

वर्ण परिवर्तन

ऐसे अनेक व्यक्तियों के उदाहरण व प्रमाण दिए जा सकते है जो ब्राह्मण वश मे उत्पन्न हुए और राक्षस व दस्यु कहलाए वा राक्षसो और चाडालों (दस्युओ) के घर मे पैदा हुए और आर्य बने।

दोषारोपण में षडयन्त्र क्रियारत

इस सक्षिप्त विश्लेषण से यह सहज ही स्पष्ट हो जाता है जैसा कि अब से बहुत पूव अन्य नेताओ ने स्पष्ट किया था कि यह मात्र झूठा दोषारोपण है जो कुछ स्वार्थी व्यक्ति आर्यो को बदनाम करने और हिन्दुओ के राज नतिक पक्ष को कमजोर बनाने के लिए चमार आदि दलित वर्गों को हिन्दुओ से पृथक तथा घृणा युक्त करके उन्हे ईसाई और मुसलमान बनाने या अपने निहित स्वार्थों की पूत्यर्थ यह कहते फिरते हैं कि चमार और मेहतर आदि वर्ग ही हिन्दुस्तान के मूल निवासी है जो युद्ध म पकडे गए थे और जिन्होने विजेता आर्यों के कहने से नीच व्यवसायो को अपना लिया था। (शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—ओमप्रकाश पुरुषार्थी
सहसम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

मानवता की सेवा ही सृष्टि के रचयिता का सर्वोत्तम मूल्यांकन

—ओम्प्रकाश त्यागी

सृष्टि-रचना काल का यदि ध्यान पूर्वक मनन किया जाय तो स्पष्ट होता है कि मानव ही ईश्वरकी सर्वोच्च कृति है। मानवके कल्याणार्थ ही ईश्वर ने इस जगत की रचना की ताकि वह अपने कर्मों के भोग भोगता हुआ अपने निष्काम कर्मो से मोक्ष की प्राप्ति कर सके। वास्तव मे इस जगत् की रचना के पीछे ईश्वर की एक मात्र इच्छा प्राणी मात्र के कल्याण की थी। इसी उद्देश्य की पूर्तिके निमित्त ईश्वर ने इसे बुद्धि दी और अपना ज्ञान भी दिया।

सृष्टि रचना का ज्यो ज्यो अध्ययन किया जाय तो देखने मे इसके समस्त अगो का धम भिन्न भिन्न है, परन्तु सबका सम्बन्ध एक ही से है। अर्थात् सब एक दूसरे के पूरक हैं। सबका उद्देश्य मानव की सहायता करना है।

वास्तव मे देखा जाय तो समूचे जगत् की उत्पत्ति के पीछे ईश्वर का एक ही सिद्धान्त है कि वह प्राणियो का कल्याण चाहता है मानवता की सेवा ही सृष्टि के रचनाकार का सर्वोत्तम मूल्याकन है।

समस्त धर्मो का मत

ससार मे धर्म की भावना रखने वाले लोगो ने उसके ज्ञान के आधार पर धर्म का लक्ष्य मानव या मानव समाज की सेवा करना कहा है। इसी भाव को सभी ने दस भागो मे वर्णित किया है। धर्म के इन दस भागो मे किसी का मतभेद नही है। इन्ही दस अगो को भिन्न भिन्न रूपो मे धर्म का सार कह सकते हैं या मानव की सेवा को ही धर्म का सार कहा जा सकता है। जो इसान धर्म के इस भाव को नही मानता उसे धार्मिक कहना या समझना भूल है।

जो व्यक्ति ईश्वर मे विश्वास नही करते हैं, वे भी मानव सेवा को अपना ध्येय मानते हैं। उनकी मानव सेवा का आधार कुछ भी क्यो न हो, परन्तु वे लोग लोभ लालच अथवा स्वार्थ आदि को इसके मार्ग से दूर कर देते हैं। लक्ष्य उनका भी यही है कि मानव को मानवो की सेवा का ही अर्थ लेना चाहिए। आज ससार मे रूस चीन आदि इसी मन्त्र को मानते है।

भिन्नता क्यों ?

कुछ धार्मिक लोग साम्प्रदायिक होते हैं। वे मानव सेवा को अपने वर्ग तक सीमित रखते है। उनकी मानव सेवा अपने ही वर्ग तक सीमित रहती है। वर्तमान साम्प्रदायिक दगो का भी कारण यही सकुचित भावना है, इसे हमे दूर करना चाहिए।

मानव सेवा की भावना

मानव-सेवा की एक आदर्श भावना वैदिक धर्म मे है। वेद मे अनेको मन्त्र इसकी प्रशसा मे आते हैं। परन्तु इन मन्त्रो मे सभी प्राणियो की सेवा करने को कहा गया है। लोभ-लालच तथा अपने लाभ के लिए जो कोई इससे हटता है उसे पाप कहा है। मानव सेवा को ही योग-दर्शन मे एक उच्च सेवा कहा है। एक आदर्श योगी की पहचान भी यही है कि उसके जीवन का एक मात्र लक्ष्य बिना किसी चाह के मानव-सेवा है।

सचमुच ही मानव सेवा ही ईश्वर की सच्ची उपासना है इसी के द्वारा मानव अपने को ऊचा उठाता हुआ मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। ईश्वर के इस प्रधान गुण को धारण करना ही मोक्ष का मार्ग है। यही वैदिक धर्म का मुख्य उपदेश है। आशा है आप मेरी बातो पर ध्यान देकर मानव-सेवा को अपना लक्ष्य बनावेगे।

मानव सेवा —अपने परिवार की सेवा तो प्राणी मात्र करता ही है, परन्तु अपने व्यक्तियो के अलावा ससार के व्यक्तियो के लिए बिना लोभ-लालच अथवा कामना के जो सेवा की जाती है, वही सच्ची मानव सेवा है। दूसरे लोगो के सकट निवारण तथा सेवादि मे हजारो लोगों ने अपना तन, धन लगाया है, बस इसी सेवा को मानव सेवा कहते हैं।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम को एक अंग्रेज विद्वान् की श्रद्धांजलि

महात्मा राम महामानव थे, ईश्वर के अवतार न थे। उनकी पितृभक्ति, भ्रातृप्रेम पत्नीव्रत, वीरता, कर्त्तव्य परायणता, सत्य और न्याय के साथ समझौता न करने की प्रवृत्ति एव आचरण प्रत्येक व्यक्ति तथा मतावलम्बी के लिए अनुकरणीय है।

जब तक हिमालय पर्वत स्थिर रहेगा और गगा यमुना प्रवाहित होती रहेगी, राम की कीर्ति भी अमर रहेगी।

जब महामानव राम ने गुरु वशिष्ठ से पूछा कि –"राम राज्य किस प्रकार स्थापित हो सकता है तो गुरुदेव ने उत्तर मे कहा था— "सच्चरित्र, धर्म परायण एव सभ्य राज्य पवित्र होता है और चरित्र-हीन राज्य देर सवेर मे नष्ट हो जाता है।"

तमिलनाडू प्रशासन के पुनर्धर्मान्तरण सरक्यूलर की वैधता को चुनौती

नई दिल्ली ४ अप्रैल। सुप्रीम कोर्ट ने आज 'आदिवासी जाति मानव अधिकार रक्षक आन्दोलन के मन्त्री द्वारा प्रस्तुत समादेश याचिका को सुनवाई के लिए स्वीकार किया है जिसमे तमिलनाडू प्रशासन के १६ और २५ अगस्त १९८३ के सरक्यूलर की वैधता को चुनौती दी गई है।

इस सरक्यूलर मे यह प्रावधान किया गयाहै कि यदि कोई व्यक्ति ईसाइयत को छोडकर पुन हिन्दू धर्म मे वापस आ जाय परिगणित वर्गो के लिए आरक्षित सर्विस के लिए चुना जाकर नियुक्त कर दिया जाय तो उसके द्वारा पुन धर्मान्तिरण किए जाने की अवस्था मे उसे सर्विस से हाथ धोना पडगा।

प्रार्थी ने याचिका मे कहा है कि सरक्यूलर सविधान की धारा १४,१६ और २५ का अतिक्रमण करता है जिनमे कानून के समक्ष सभी नागरिक धर्म आदि के भेदभाव के बिना समान है और उनके मौलिक अधिकारो की रक्षा, किसी भी धर्म को मानने आचरण करने और प्रचार करने की स्वतन्त्रता देने की सविधान मे व्यवस्था की हुई है।

प्रार्थी के अनुसार इस सरक्यूलर का प्रभाव यह हो रहा है कि परिगणित जातियो के अनेकानेक सदस्यो को जो पूर्व से गवर्नमेन्ट सर्विस मे है, अपनी अन्तरात्मा की आवाज पर ईसाइयत या इस्लाम को स्वीकार करने के लिए सर्वप्रथम अपनी सर्विस से इस्तीफा देना होगा।

याचिका मे इस सरक्यूलर के विरुद्ध कई अन्य कानूनी मुद्दे उठाए गए हैं।

(पृष्ठ १ का शेष)

चमार आदि वर्गों के आर्यो (हिन्दुओ) के अन्तर्गत होने का सब से बडा प्रमाण यह भी है कि उनके आपस मे गोत्र मिलते हैं जैसाकि अनेकानेक उदाहरणो मे से निम्न ३ ४ उदाहरणो से स्पष्ट है —

खण्डेलवाल=चमार, ब्राह्मण वैश्य मेहतर
वसिष्ठ=चमार, ब्राह्मण जम्मू स्टेट वसिष्ट
सोलकी=चमार, राजपूत भगी
गौड=चमार, राजपूत ब्राह्मण
जावलिया=चमार, ब्राह्मण
गोयल=चमार, वैश्य

—सच्चिदानन्द शास्त्री
स०- मन्त्री सभा

सम्पादकीय

ऋषि की मृत्यु कैसे हुई ?

आर्य-पथिक पण्डित लेखराम जी ने जोधपुर और अजमेर जाकर जो छानबीन की उसका परिणाम उनकी मृत्यु के पश्चात प्रकाशित स्वामी जी के जीवन-चरित्र मे दिया है। उस वृत्तान्त मे चार बातें मुख्य थी —

(१) स्वामी जी की मृत्यु दूध के साथ दिए हुए विष से हुई।

(२) विष देने की प्रेरणा जोधपुर के महाराज की नन्ही जान नाम की वेश्या के षड्यन्त्र से की गई।

(३) जब तक स्वामी जी जोधपुर मे बीमार रहे तब तक उनका इलाज ठीक नही हुआ।

(४) समझा जाता है कि डा० अलीमर्दान खा के इलाज से स्वामी जी का रोग दिनो-दिन बढता गया।

यह प्रारम्भिक वृत्तान्त था जिसे प्राय सभी ने अब तक प्रामाणिक माना है। कुछ वर्षों के पश्चात उस वृत्तान्त मे एक नई बात जुड गई। यह कहा गया कि विष देने वाले रसोइये का नाम जगन्नाथ था। जगन्नाथ के मन मे स्वामी जी की दशा देख कर पश्चात्ताप उत्पन्न हुआ और उसने अपना दोष स्वामी जी के सामने स्वीकार कर लिया। इस पर स्वामी जी ने इस भय से कि आर्य लोग जगन्नाथ को कठोर दण्ड न दिलवा दे, सिरहाने के नीचे से निकाल कर पाच सौ रुपये की थैली देते हुए कहा, 'जो हुआ सो हुआ, अब तुम इस रुपयेको लेकर नैपाल भाग जाओ, अन्यथा मेरे शिष्य तुम्हे दु खी करेंगे।"

घटना के इस भाग का मूल स्रोत क्या है ? और वह कहाँ तक प्रमाणित है, यह अभी तक विदित नही हो सका परन्तु व्याख्याना और भजनो द्वारा प्रचारित होकर जगन्नाथ और उसक नैपाल जाने की बात भी मुख्य घटना का भाग बन गई है।

इस वृत्तान्त पर कुछ बडी-बडी आपत्तिया उठाई गई हैं। उनकी चर्चा भी यहा आवश्यक है।

पहली आपत्ति स्वर्गीय शाहपुराधीश सर नाहरसिंह जी के उस वक्तव्य से उत्पन्न हुई, जो उन्होने मथुरा की श्रीमद्दयानन्द जन्म शताब्दी के अवसर पर दिया था। उनके वक्तव्य के सम्बद्ध भाग को मैं सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित वृत्तान्त से उद्धृत करता हू। आपने कहा—

'स्वामी जी अपने लिए रसोई बनाने वाला आदमी मुझसे ले गये थे। स्वामी जी को विष दिया गया यह बात गलत है। स्वामी जी जोधपुर मे बीमार होकर आबू चले गये और आबू से वे अजमेर आकर रहे थे। मैं ख्याल भी नही कर सकता कि उन्हे विष दिया गया था। जो लोग उनके पास रोटी बनाने वाले थे वे अभी तक मेरे यहा नौकरी करते हैं। उनका नाम श्रीकृष्ण और कल्लू हैं।"

दूसरी आपत्ति जोधपुर के पुराने आर्य समाजी के एक वक्तव्य से खडी हुई है। श्री डी० पी० जौहरी, गरमी के दिनो मे जोधपुर गये। वे पानी की तलाश मे एक तालाब के किनारे पहुचे और वहा उन्होने ७० वर्ष के वृद्ध आर्य समाजी को सन्ध्या करते देखा। जब उन्होने सन्ध्या समाप्त की तो श्री जौहरी ने उनसे स्वामी जी की मृत्यु के सम्बन्ध मे बातचीत आरम्भ की। जौहरी जी के प्रश्नो का उत्तर देने से पहले वृद्ध महाशय ने उनसे यह शपथ ले ली कि उनका नाम प्रकाशित नही किया जायगा। यह शपथ लेकर जो कहानी वृद्ध महाशय ने जौहरी जी को सुनाई उसका सक्षेप यह है —

"जिन दिनो महर्षि दयानन्द जोधपुर मे थे, अग्रेजी सरकार की ओर से रियासत के एक अत्यन्त आवश्यक अन्तरंग विषय पर, चिटठी प्राप्त हुई, जिसका उत्तर शीघ्र मांगा गया था। रियासत की कौंसिल अभी उस पर विचार ही कर रही थी कि महाराजा ने उस चिटठी की चर्चा महर्षि से कर दी। महर्षि ने जो सलाह दी महाराजा ने उसक अनुसार ही उत्तर भेज दिया। उत्तर ऐसा चतुरतापूर्ण था कि उससे इण्डिया आफिस चकित हो उठा। वहा से रेजीडेन्ट को लिखा गया कि जिस दरबार म इस पत्र पर चर्चा हुई उसकी तस्वीर भेजी जाय। जिससे पता लग सके कि यह उत्तर किसके दिमाग की उपज है। उस चित्र से भी जब इण्डिया आफिस की जिज्ञासा शान्त न हुई तो महाराजा से सीधा पूछा गया। महाराजा ने सरलता से स्वामी जी का नाम लिख भेजा। तब विलायत से गवर्नर जनरल को यह भर्त्सना की गई कि स्वामी दयानन्द जैसे राजद्रोही को प्रचार करने के लिए खुला क्यो छोडा गया ?"

यह वृत्तान्त सुनाकर वृद्ध महाशय ने कहा कि इस घटना की रोशनी मे यह समझना कठिन नहीं है कि स्वामी जी को विष दिलाने वाले कौन थे और सरकारी डाक्टरो ने उनका ठीक इलाज क्यो नही किया ? इस घटना की चर्चा महात्मा मुशीराम ने अपनी "Arya Samaj Detractors" नाम की पुस्तक मे भी की है।

जोधपुर के एक वृद्ध सज्जन ने, जिन्होने स्वामी जी के दर्शन किये थे एक नई बात बतलाई है। उनका कहना है कि स्वामी जी के निर्वाण के कुछ समय के पश्चात जोधपुर के कुए मे से एक लाश निकली थी, जिसके सम्बन्ध मे समझा गया था कि वह स्वामी जी को विष देने वाले व्यक्ति की है। उनका विचार है कि रसोइये ने पश्चात्ताप की भावना से प्रेरित होकर आत्महत्या कर ली थी।

इन उपर्युक्त आपत्तियो मे से पहली सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। सर नाहरसिंहजी महर्षि के केवल अनुयायी ही नही थे शिष्य भी थे। उनके कथन की आसानी से उपेक्षा नही की जा सकती। उनका कथन यह है कि उनके भेजे हुए रसोइयो ने स्वामी जी को विष नही दिया। वह इतना ही कह भी सकते थे। यह सर्वथा सम्भव है कि उन दोनो के अतिरिक्त तीसरे नौकर ने दूध मे विष मिलाकर स्वामी जी को पिला दिया। शाहपुराधीश यह नही कह सकते थे कि स्वामी जी की मृत्यु विष से नही हुई। मृत्यु किस चीज से हुई यह कहने का अधिकार तो केवल उन चिकित्सको को था जिन्होने अन्तिम दिनो मे स्वामी जी की चिकित्सा की। उन सभी चिकित्सको का यह मत था कि महर्षि का वह रोग, जिसने उनके शरीर का अन्त किया, विष से उत्पन्न हुआ। शाहपुराधीश जी के वक्तव्य से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उनके दिये नौकर विष देने के अपराधी नही थे। प्रतीत होता है कि किसी तीसरे नौकर ने वह पाप कर्म किया और अपने अपराध के दण्ड से बचने के लिए रात मे ही भाग गया।

दूसरा प्रश्न यह है कि वह व्यक्ति भाग कर गया कहा ? दो तरह की बातें कही गई हैं। दोनो को ही जनश्रुति कह सकते हैं। जगन्नाथ को नेपाल मे या अन्यत्र कौन सज्जन मिले और जगन्नाथ ने क्या कहा इसका कोई प्रामाणिक विवरण नही मिलता। इसमे भी कोई पुष्ट प्रमाण नही है कि जोधपुर के कुए मे से जो लाश निकली वह उसी व्यक्ति की थी जिसने स्वामी जी को विष दिया। दोनो ही सम्भावनाए इतनी काल्पनिक हैं कि उन्हे ऐतिहासिक सत्य नही माना जा सकता। महर्षि को विष देने के षड्यन्त्र मे कौन कौन सी शक्तिया सम्मिलित थी इस प्रश्न का उत्तर देने मे भी बहुत कुछ कल्पना से काम लेना पडेगा। दोनो ही बातें सत्य हैं। नन्ही जान वेश्या स्वामी जी से रुष्ट होगई थी इसमे कोई सन्देह नही। और यह भी असन्दिग्ध है कि अग्रेजी सरकार राजस्थान मे स्वामी जी के बढते हुए प्रभाव से बहुत असन्तुष्ट थी। यह सर्वथा सम्भव है कि उस समय दोनो ही विरोधी शक्तिया मिल गई हो। सरकारी डाक्टरो द्वारा महर्षि के रोग की उपेक्षा केवल नन्ही जान की प्रेरणा से नही हो सकती। स्वामी जी महाराजा के मेहमान थे। महाराजा के छोटे भाई महाराजा सर प्रतापसिंह स्वामी जी के परम भक्त थे। वह पूरा यत्न कर रहे थे कि स्वामी जी का इलाज भली प्रकार हो। परन्तु ज्यो ज्यो इलाज होता गया त्यो त्यो रोग बढता गया। रियासत के अन्दर और उसके बाहर अन्य रियासतो मे तथा अजमेर मे भी उस समय यह माना जाता था कि इलाज से रोग घटने की जगह बढ रहा है। इसी कारण महर्षि को जोधपुर से आबू ले जाया गया था। यह सन्देह निर्मूल नही प्रतीत होता कि महर्षि की मृत्यु के पीछे कवल एक वेश्या का हाथ नही था, कोई जबरदस्त हाथ था जो पर्दे के पीछे से इशारे दे रहा था।

इस प्रकार, सब पहलुओ और आपत्तियो पर विचार करके हम निम्न-लिखित परिणाम पर पहुचते हैं —

(१) महर्षि की मृत्यु विष से हुई।

(२) विष दूध मे मिलाकर किसी नौकर ने दिया। वह न

सामयिक चर्चा—

न्यूयार्क से प्रचरित अकाली नेतृत्व से अपील

श्री चन्द्र गुप्त न्यूयार्क से लिखते हैं (दि० ३०-३-८४)

"मैं अमेरिका स्थित एक भारतीय हू, मै तत्काल शान्त और सामान्य स्थिति कायम करने की पजाब की सभी पार्टियो से अपील करता हू।

लोकतन्त्र मे किसी आन्दोलन के देर तक सडको पर चलते रहने का कोई औचित्य नही होता। इस नियम के अपवाद भी है। यदि कोई आन्दोलन हिंसामय बन जाता है और उग्रतत्वो को जान-माल की क्षति पहुचाने का अवसर प्राप्त हो जाता है तो वह वापस ले लिया जाना चाहिए। उस समय जबकि भारत पर एक अत्याचारी विदेशी शासन था, महात्मा गाधी ने चोराचोरी काड के होते ही वह स्थगित कर दिया था।

मै मुख्यत अकाली नेतृत्व को प्रेरणा करूगा कि वह अपनी शिकायतो के निराकरणार्थ भारतीय लोकतात्रिक प्रक्रिया को कुछ और समय प्रदान करे। लोकतन्त्र मे जनता के प्राय सभी वर्गों की शिकायते और मागे होती है। यदि सभी वर्ग अपनी शिकायतो को हवा देने के लिए सडको का और अपनी एक या सभी शिकायतो के तात्कालिक निराकरण के लिए हिंसा का आश्रय ले ले तो निश्चय ही लोकतन्त्र असह्य दबाव से आवृत्त हो जायेगा।

शायद अकाली नेतृत्व का विश्वासहै कि केन्द्र मे वर्तमान प्रशासक दल का रुख (काग्रेस आई) उनकी वास्तविक भावनाओ के प्रति सहानुभूति पूर्ण नही है। इस पर भी उसका सर्वप्रथम उपाय वा विकल्प आन्दोलन नही होना चाहिये। सच तो यह है कि अकाली नेतृत्व अन्य कई उपायो का अवलम्बन कर सकता है। हो सकता है है कि अगले वर्ष होने वाले आम चुनावो मे सत्तारूढ काग्रेस (इ) दल सत्ता से वचित हो जाय। यद्यपि कोई भी भावी शासन के विषय मे सुनिश्चित भविष्यवाणी नही कर सकता है तथापि गैर काग्रेसी शासन व्यवस्था सन्तोषजनक समाधान करने मे सफल हो सकती है।

अकाली दल के नेतृत्व को लोकतन्त्र के सस्थागत ढाचे को समस्याओ के समाधानार्थ पर्याप्त समय देना चाहिए। यदि यह आन्दोलन जारी रहता है तो इससे अधिकाधिक हिंसा और अशान्ति व्याप्त होगी और निर्दोष व्यक्ति मारे जायेगे अपग होगे या बर्बाद होगे मा का प्यारा बेटा, स्त्री का प्रिय पति, बच्चे का प्रिय पिता निशाना बनाए जाने वालो की लिस्ट मे हो सकगे।

देश ने जो उन्नति की है आन्दोलन के फैलने से उसे क्षति पहुच सकती है। इतना ही नही राष्ट्रीय ढाचे मे बर्बरता व्याप्त कर सकता है। आसाम की दुखजनक घटनाओ से यह स्पष्ट ही है।

इटली से अमेरिका मे आए प्रवासी बन्धुओ का कहना है कि उनके देश के कुछेक स्थानो पर दूसरे महायुद्ध मे मारे गए भारतीय सैनिको के शव दबे पाए जाते है। उनके सिख, हिन्दू, मुस्लिम और ईसाई नाम है। यदि ये सब एक साथ मर सकते है तो उन्हे एक साथ रहने मे कोई दिक्कत पेश नही आनी चाहिए।

पजाब की पवित्र भूमि पर तत्काल शान्ति होने से परस्पर आदर और विश्वास के साथ एक साथ रहने की प्रक्रिया प्रगतिशील होगी।

देकर लापता हो गया। सम्भव है, पश्चात्ताप की भावना से प्रेरित होकर कुए मे डूब गया हो और यह भी सम्भव है कि कही दूर देश मे जा छुपा हो।

(३) विष देने की प्रेरणा करने वाले षडयन्त्र कारियो मे कौन-कौन थे निश्चय से यह कहना कठिन है। उससे पूर्व की घटनाओ पर दृष्टि डालें तो यह प्रतीत होता है कि विष दिलाने मे नन्ही भगतन वेश्या और उसके साथियो का और इलाज को बिगाडने मे किसी सरकारी एजेण्ट का हाथ था।

(४) शाहपुराधीश के दिए हुए दोनो रसोइये निर्दोष थे।

इन्द्र विद्यावाचस्पति

(आर्य समाज का इतिहास) भाग १ पृ० ३२०-३२४

बधाई

यह जानकर बडी प्रसन्नता हुई कि सुप्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार श्री प० क्षेमचन्द्र जी सुमन को दिल्ली प्रशासन की हिन्दी अकादमी सम्मानित करेगी।

अकादमी के सचिव श्री पालीवाल के अनुसार साहित्य सेवियों को सम्मानित करने के कार्यक्रम की शुरुआत श्री सुमन को पुरस्कृत करके की जा रही है। श्री सुमनजी को एक प्रशस्ति पत्र तथा ५१००) रुपए भेंट किए जायेगे।

वस्तुत श्री सुमन जी की साहित्य सेवा का रिकार्ड लम्बा और प्रशस्त है। हिन्दी कवि, पत्रकार लेखक के रूप मे उन्होने अनेक कीर्तिमान स्थापित किए है। 'दिवगत हिन्दी' सेवी ग्रन्थ उनकी एक भव्य अमर कृति है।

इन सबके परिपेक्ष्य मे श्री सुमन जी इस पुरस्कार के सर्वथा अधिकारी है। श्री सुमन आर्य समाज की ही कृति है। उनको सम्मानित किया जाना न केवल हिन्दी को ही एक प्रकार से आर्यसमाज को भी सम्मानित किया जाना है। इस सम्मान के लिए हम अपनी तथा सार्वदेशिक परिवार की ओर से सुमन जी को हार्दिक बधाई देते है।

उल्लेखनीय है कि श्री सुमन जी को अभी हाल मे प्रशासन ने पद्मश्री की उपाधि से अलकृत किया है।

श्री धर्मेन्दु जी शतायु हों

१३ अप्रैल ८४ को श्री प० देवव्रत जी धर्मेन्दु ८१वे वर्ष मे पदार्पण करेगे।

इस अवसर पर हमारी शुभ-कामनाए उनके साथ है। हमारी कामना है कि पडितजी जीवन के सौ बसन्त देखे और अपने इस लम्बे जीवन से यथापूर्व आर्य समाज को अधिकाधिक लाभान्वित करते एव यशस्वी बनाते रहे। श्री पडित जी स्वनिर्मित आर्य श्रेष्ठि है और उनका व्यक्तित्व एव कर्तृत्व यहा तक कि सर्वस्व आर्यसमाज की सेवा उसके कार्य एव वर्चस्व के विस्तार पर अर्पित है। आर्यकुमारो के उत्थान का कार्य उनके सामाजिक कार्यक्रम का एक विशिष्ट अग रहा है और है और उन्हे अनेक सुयोग्य कुमारो को आर्यसमाज के अर्पण करने का श्रेय प्राप्त रहा है।

श्री पडित जी न केवल एक उच्चकोटि के आर्योपदेशक ही वरन सुयोग्य लेखक और साहित्यकार भी है। सार्वदेशिक के पाठक एव आर्य जनता उनके कर्मठ जीवन, कार्यकलाप एव कीर्तिमानो से परिचित ही है।

त्रिभाषा की रट

कोई भी फार्मूला तभी कारगर कहा जा सकता है जब वह अमल मे आ सके। त्रिभाषा फार्मूले वाली राष्ट्रीय शिक्षानीति पच्चीस साल पहले घोषित की गई थी लेकिन अब तक उसे ईमानदारी के साथ कभी भी अमल मे नही लाया गया। फिर भी रट आज भी उसी की है। भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री सजीव रेड्डी ने 'तेलुगु विज्ञान पीठम' का उद्घाटन करते हुए कहा है कि इस फार्मूले पर अमल के लिए कारगर कदम उठाए जाए। वे कारगर कदम क्या होगे?

त्रिभाषा फार्मूला इस उद्देश्य से तैयार किया गया था कि देश की सभी भाषाओ को उचित सम्मान मिले। नौकरी पाने मे किसी एक भाषा के बोलने वालो को अन्य लोगो के मुकाबले ज्यादा असुविधा का सामना नकरना पडे, सरकारी कामकाज सुचारु रूप से चले, राज्यो के बीच तथा केन्द्र और राज्यो के बीच सवाद सरलता के साथ हो तथा राष्ट्रीय एकता को बढावा मिले। ये सारी अपेक्षाए धरी की धरी रह गई है। लेकिन ऐसा हुआ क्यो? कारण स्पष्ट है। लोग भाषा तब सीखते है जब उसके साथ रोजी-रोटी का सवाल जुड़

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्य समाज

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की एक विदेशी महिला की दृष्टि में

श्रीमती ईला व्हीलर विलकाक्स अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिकी कवियित्री थी जिनकी पुस्तके अ ग्रजी भाषा-भाषी जगत मे लाखो की सख्या मे बिकती थी। उनका भारत की आधुनिक फिलास्फी शीर्षक लेख १६०६ मे न्यूयार्क (अमेरिका) के 'ईवनिग जनरल मे' छपा था। आर्यसमाज के सम्बन्ध मे उनके उद्गार निम्न रूप मे प्रकाश मे आए थे —

"भारत के प्राचीन धर्मों के विषय मे हमने बहुत कुछ सुना और पढा है। भारत महान वेदो की भूमि है जो,ईसा के जन्म से ३०००वर्ष पूर्व के (करोडो वर्ष पूर्व के—सम्पादक सार्वदेशिक) महान् ग्रन्थ है जिनमे न केवल पूर्ण जीवन के ही धार्मिक आदर्श सन्निहित है अपितु जिनमे वे सच्चाईया भी पाई जाती है जो विज्ञान द्वारा प्रतिपादित हो चुकी है। विद्युत शक्ति रेडियम, वायुयान आदि सभी का उन ऋषियो को ज्ञान था जिन्होने वेदो की रचना की थी। जिस व्यक्ति ने वेदो का अध्ययन किया है भले ही वह भारत की पतितावस्था से परिचित हो उसे भारत मे फैले हुए बीसियो परस्पर विरोधी मतो, स्त्रियो की भयावह अज्ञानता, बाल-विवाह और बलात वैधव्य की बुराइयो और जन-सामान्य मे व्याप्त पशुओ एव लैंगिक चिन्हो की पूजा की विद्यमानता से धक्का लगे विना नही रह सकता। इन दुरवस्थाओ ने और जात-पात के विद्वेष ने जिसने भारत को असख्य वर्गो एव सम्प्रदायो मे विभक्त किया हुआ है उस भूमि को जिसे कभी महान होने का गौरव प्राप्त था अन्धविश्वासो और पतन के गढे मे विलीन किया हुआ है। इन दुरवस्थाओ का विना दिग्दर्शन किए ठीक परिज्ञान प्राप्त करना असम्भव है। ब्राह्मणो द्वारा जिनकी सभी सम्प्रदायो पर प्रभुसत्ता व्याप्त है वेदो की भव्य-शिक्षाओ का गलत अर्थ लगाया गया। जो ब्राह्मण उनकी व्याख्या करने और शिक्षा देनेका दावा करते है वे ही स्वय अपने मन्दिरो मे पूजनीय पदार्थो के रूप मे उन चिन्हो और पशुओकी मूर्तिया स्थापित करते है जिनका वेद प्रबल विरोध करते है।

भगवान बुद्ध का आज भारतमे लाखो व्यक्तियो के द्वारा एकमात्र नाम ही लिया जाता है जिन्होने ईसा के जन्म से ५०० वर्ष पूर्व इस सुन्दर फिलासफी को पुनरुज्जीवित करने के लिए अपना समस्त जीवन लगा दिया था और जिन्होने ससार को वह धर्म दिया जिसके सिद्धान्त उस धर्म से बहुत मिलते-जुलते हैं जिसका बाद मे ईसा ने प्रचार किया था। इस उच्च धर्म की पुरोहितो द्वारा की गई व्याख्या को लोग मानते और उन निकम्मे एव कृत्रिम अनुष्ठानो को करते है जो उनके लिए नियत कर दिए गए है और जो उस भावना से शून्य हैं जो महान् आचार्य ने मृत प्राय धर्म मे समन्वित की थी। भारत की पतितावस्था मे जडवादियो के एक सम्प्रदाय का भी प्रादुर्भाव हुआ जो प्रत्येक अध्यात्म तत्त्व का निषेध करता था और जिसकी खाने-पीने और मौज उडाने के सिवा अन्य किमी वस्तु मे आस्था न थी।

अब आर्यसमाज के रूप मे मार्ग को प्रकाशित करने वाला प्रकाश अवतरित हुआ है जिसका सघठन अत्यन्त पुरुषार्थी वीर एव प्रतिभावान नवयुवको तथा प्रौढ व्यक्तियो की सदस्यता के द्वारा हुआ है। पहला आर्य समाज १८७५ मे बम्बई मे स्थापित हुआ था। आर्यसमाज प्राचीन धर्म का प्रचार करता है। इसके सस्थापक पूज्य स्वामी दयानन्द ने किसी नए सिद्धान्त की शिक्षा देने का दावा नही किया है। वह सदैव अपने श्रोताओ को यह बात स्मरण कराते रहते थे कि उन्होने और आर्यसमाज ने एकमात्र उस धर्म के पुनरुद्धार एव प्रचार का उद्देश्य अपने सामने रखा हैं जिसकी शिक्षा वेदो ने दी और जिसका प्राचीन कालीन आर्य अनुसरण करते थे। इस प्रकार आर्य समाज एक नया आन्दोलन है परन्तु इसकी आस्था प्राचीन वैदिक धर्म मे है और यह इसी का प्रचार करता है। आर्य समाज का सदस्य इस दृष्टिकोण को सामने रखकर इस बात का खण्डन करता है कि उसका धर्म उस धर्म का एक सम्प्रदाय है जो हिन्दू धर्म कहा जाता है। वह यह मानता है कि आज जो हिन्दू धर्म' कहा जाता है वह प्राचीन वैदिक धर्म का विकृत रूप है और उसे पुनर्जीवित करके प्रस्तुत करना आर्यसमाज का सर्वोपरि कार्य है।

आर्यसमाज के मन्तव्यानुसार मानव का उच्चतम ध्येय सच्ची आत्मिकोन्नति या मोक्ष की प्राप्ति है। यह ध्येय कब्र के बाहरपार्थिव मौज विहार, मुर्दों एव महात्माओ के साहचर्य की भावना से भिन्न है। आर्य की मोक्ष का आदर्श पाप निवृत्ति एव आत्मोद्धार है। इस आदर्श पर चलना बडा दुरुह कार्य है और इसके लिए आत्मा पर कठोर नियन्त्रण रखना होना है। इस धर्म का यह एक प्रधान लक्ष्य है कि आत्मा का विकास और पापों की निवृति एकमात्र मानव के अपने ही प्रयत्नो से सम्भव हो सकती है। भौतिक एव नैतिक जगत मे कर्म के ही विधान का प्रभुत्व रहता है। शरीर को स्वस्थ एव सबल रखने के लिए मानव को स्वय ही प्रयत्नशील होना पडता हैं। किसी दूसरे का पेट यह कार्य नही कर सकता। उसे स्वय ही मल को बाहर फकना होता है। मलमूत्र के बाहर निकालने की किसी अन्य की प्रणाली यह कार्य नही कर सकती। अन्य व्यक्ति तो परिस्थितियो को बदल ही मकते हे।

आर्य समाज को मान्यता के अनुसार हमारे पाप एव पुण्य हमसे चिपके रहने है। अन्यो के गुण हमारा सवथा उद्धार नही कर सकते। आर्य समाज इस बात से सवथा इ कार करता है कि किसी बिचौलिए के माध्यम से मानव के पापो की क्षमा वा प्रायश्चित सम्भव हो सकता है। इस आदश पर पहुचने के लिए हमे अपने ही प्रयत्नो पर निर्भर होना पडता है।

यह प्रयत्न किस प्रकार होना चाहिए, इसके लिए आर्य समाज सर्वप्रथम वैयक्तिक नियन्त्रण विकास एव सुधार पर बल दिता है। सर्व प्रथम हमे प्रतिदिन प्रभु की उपासना करनी चाहिए। शुद्ध एव पवित्र सज्जनो की सगति मे रहना चाहिए इससे जीवन पवित्र होता है। वेदाध्ययन, प्रात एव सायकाल सन्ध्या करना आर्य का सर्व प्रथम कर्त्तव्य है। मै यहा सन्ध्या की व्याख्या प्रस्तुत नही कर सकती। मैं केवल इतना ही कह सकता हू कि सन्ध्या समृद्ध जीवन के लिए प्रार्थना के साथ प्रारम्भ होती है। समृद्ध जीवन का अर्थ सकुचित समृद्धि नही होता (भौतिक एव आध्यात्मिक उन्नति का समन्वय पूर्वक सम्पादन —सम्पादक सार्वदे०) इसके आगे उपासक स्वस्थ एव शक्ति सम्पन्न शरीर, शुद्ध बुद्धि मेधा, प्रफुल्ल और पवित्र हृदय तथा लम्बे, सक्रिय और यशस्वी जीवन के लिए प्रार्थना करता है। वह प्रभु के सच्चे स्वरूप मे ध्यान लगाता और अन्त मे इस प्रार्थना के साथ ब्रह्म यज्ञ को समाप्त करता है कि प्रभु उसे अपने को उसके (ईश्वर के) हाथो मे सोप दने मे समर्थ बनाए। आर्य का दूसरा दैनिक कर्त्तव्य यज्ञ हवन का करना है जिससे उपासक का आत्मिक विकास होने के साथ २ जीवन की स्वास्थ्य विषयक अवस्थाओ मे भी सुधार हो। अन्य दैनिक कर्त्तव्य बड बूढो का सत्कार, उनकी सेवा शुश्रुषा, जीव दया, आतिथ्य आदि से सम्बद्ध है।

यह जान लेना रुचिकर है कि इस सघठनके सभी सदस्य स्त्रियो को बाल-विवाह अनमेल विवाह और वैधव्य के अभिशापो से मुक्त करने के लिए चिन्तित एव प्रयत्नशील रहते हैं।

आर्यसमाज की शिक्षा है कि आत्मा अमर है। इस जीवन के साथ ही यह अस्तित्व मे नही आता और नाही पार्थिव शरीर का अन्त हो

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सामन्त जयमल तथा उसकी वीर पत्नि

लेखिका—सरला कपिला, A II ग्रीनपार्क नई दिल्ली

जब महाराणा संग्रामसिंह की मृत्यु हुई, तो उनका पुत्र उदयसिंह बहुत छोटा था। उनके भतीजे विक्रमसिंह ने राज्य का भार सम्भाला। वह बहुत विलासी तथा आलसी था। राज्य के अनुशासन का बोझ पूर्ण रूप से निभा नहीं रहा था। यह देखकर गुजरात के नवाब बहादुरशाह ने एक बड़ी सेना लेकर चित्तौडगढ पर आक्रमण कर दिया। महारानी कर्णदेवी, कर्मवती तथा कलावती ने एक सुरंग के मुह पर खडे होकर उसका सामना किया तथा हिमायु को राखी भेज कर सहायता की याचना की थी। हिमायु की सेना आने तक वीर रमणियो ने नवाब का सामना बहुत वीरता तथा योग्यता से किया, तथा चित्तौडगढ को नवाब के पंजे मे जाने से बचा लिया।

हिमायू की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र अकबर भारत का सम्राट बना। चित्तौडगढ का अधीश्वर उदयसिंह हुआ। अकबर बहुत नीतिज्ञ था, इसी कारण भारत के इतिहास मे उसका नाम (अकबर दी ग्रेट) लिखा गया। उसने राजपूतो की वीरता तथा उत्साह के विषय मे बहुत कुछ सुना था। वह जानता था कि जब तक वह राजपूतो से जातीय सम्बन्ध न बनायेगा और उनको अपने राजदरबार मे उच्च पदो पर नियुक्त न करेगा उसका राज्य न विस्तृत होगा और न ही स्थिर रह सकेगा। उसने राजपूतो से रोटी बेटी का सम्बन्ध कर लिया।

अम्बर की राज कन्या जिसका नाम जोधाबाई था वह उसकी महारानी थी। यही जहागीर की माता थी। जोधाबाई का भतीजा राजा मानसिंह उसके दरबार मे उच्च पद पर नियुक्त था। मानसिंह बहुत वीर साहसी योद्धा था। वास्तव मे उसने लगभग सारा भारत अकबर के लिये विजय किया था। यह अतिश्योक्ति, न होगी कि मानसिंह की तलवार पर अकबर का विशाल राज्य था।

राजस्थान के बहुत से राजपूतो ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली थी। केवल चित्तौडगढ के सिसौदिया वंशी राजपूतो ने उसके सामने सिर नहीं झुकाया था। अकबर के दात चित्तौडगढ पर लगे हुये थे। उसने एक विशाल सेना लेकर चित्तौडगढ पर आक्रमण कर दिया। उदयसिंह बहुत कायर था। उसमे अपने पिता की वीरता, साहस उत्साह तथा धर्म निष्ठा आदि एक गुण भी न था। यदि हम उसे उदय के स्थान पर अस्तसिंह कहे तो अतिश्योक्ति न होगी। उसने अपने को निबल और असहाय समझकर एक सामन्त जिसका नाम जयमल था चित्तौडगढ का भार उसे सौंप दिया और स्वयम् मेवाड की ओर चला गया। वहा उसने उदयपुर की नीव डाली।

जयमल बहुत वीर साहसी राजपूत था। उसने प्रण किया, कि जब तक शरीर मे अन्तिम प्राण रहेगे वह दुर्ग पर यवन पताका फहराने न देगा।

अकबर की एक विशाल सेना ने चारो ओर से गढ को घेर लिया। वीर राजपूत भी युद्ध के लिए उद्यत थे। छ मास तक घमासान युद्ध होता रहा पर अकबर किले पर विजय प्राप्त न कर सका। वह हैरान था कि किले मे किसी ओर से भी कोई सामग्री नही जा सकती है किन्तु न जाने ये राजपूत कैसे इतनी वीरता से लड रहे हैं ?

दिन के समय जितना भाग दीवार का नष्ट होता था रात्रि मे उसे ठीक कर लिया जाता था। एक रात्रि म जब सामन्त जयमल टूटी हुई दिवार का निरीक्षण कर रहा था अकबर की दृष्टि उस पर पडी। उसने उसी समय निहत्थे शत्रु पर निशाना साधा। सिंह पुरुष जयमल इस वार से अनभिज्ञ था, वह उसी समय वीर गति को प्राप्त हो गया। जिस बन्दूक से अकबर ने जयमल की हत्या की थी, वह आज भी दिल्ली के लाल किले मे रखी हुई है। अकबर ने उस बन्दूक का नाम फतह बन्दूक रखा था।

राजपूत सेनापति की मृत्यु से और भी उत्साह से भर गये और बहुत वीरता से लडने लगे। उन्होने प्राणो की आहुति देने का निश्चय किया हुआ था। जब जयमल की पत्नि ने अपने पति की इस भान्ति वीरगति को प्राप्त होने का समाचार सुना तो निश्चय किया कि वह अकबर से इसका बदला अवश्य लेगी।" दूसरे दिन वेश बदल कर गायिका क रूप मे वह अकबर के खेमे मैं पहुँच गई। वह गान विद्या मे बहुत निपुण थी। रात्रि का समय था। अकबर तथा उसके राजा महाराजा और दरबारी बैठे हुए थे। द्वारपाल ने आकर झुक कर सलाम की और कहा जहापनाह, एक गायिका द्वार पर खडी है, वह चाहती है कि आप सबको अपना गाना सुनाये।" अकबर अभी कुछ सोच ही रहे थे कि राजा महाराजाओ ने अकबर से सविनय प्रार्थना "की कि वे सब बहुत समय से युद्ध कर रहे हैं अब कुछ थकावट भी महसूस कर रहे हैं यदि आपकी अनुमति होजावे तो थोडे समय के लिये मनोरंजन होजावे।" अकबर ने द्वारपाल को आज्ञा दी कि वह गायिका को भीतर आने दें।

गायिका ने खेमे मे प्रवेश किया और जैसा उस समय दरबार मे झुककर शहनशाह को सलाम करने की प्रथा थी वैसे ही सलाम किया और कहा, मेरा अहो भाग्य है कि मैं आपकी सेवा कर कुछ गाने के द्वारा कर तथा थोडे समय के लिए मनोरंजन हो जावे। गाना प्रारम्भ हुआ सब मुक्त कण्ठ से प्रशसा कर रहे थे, समा बन्धा हुआ था, दो तीन घण्टे क्षणो मे व्यतीत हो गये। अकबर बहुत प्रसन्न हुआ, उसने पाच सौ स्वर्ण मुक्ता छदमवेशी गायिका को पारितोषिक मे दिए। रात अधिक हो गईथी। गायिका ने अकबर से प्रार्थना की कि मेरा निवास स्थान यहा से बहुत दूर है। यदि आपकी नजरे इनायत हो जावे तो मैं रात्रि मे इसी खेमे मे एक कोने मे रात काट लू, प्रात होते ही अपने निवास स्थान को चली जाऊगी। अकबर ने उसको वहा रहने की आज्ञा दे दी। जब सभा विसर्जित हो गई सब व्यक्ति वहा से चले गये तो वीर रमणी ने अकबर को पृथ्वी पर पटक दिया और उसके वक्ष स्थल पर बैठ गई और कमर से तलवार निकार कर कहा "मैं आज तुझे यमलोक पहुँचा कर ही अपने कर्त्तव्य से उऋण हूगी। तुमने मेरे पूज्य पति को जब वह किले की दीवार का निरीक्षण कर रहा था तथा निःशस्त्र था उस पर वार करके उसे धराशाही किया। तुमने उसे धोखे से मारा है।"

अकबर बहुत परेशान था वह शोर मचा कर बहुत से सैनिको को एकत्रित कर सकता था किन्तु एक स्त्री उसकी छाती पर तलवार लिये बैठी है यदि कोई देखेगा तो क्या कहेगा। उसने बहुत कोशिश की कि किसी प्रकार उसको अपनी छाती से परे ढकेल दे पर असफल रहा। उसको विदित था कि राजपूत शरणागत का कभी वध नही करते। उसने गिडगिडा कर कहा "माता मेरा अपराध क्षमा करो मैं आपका पुत्र हू, मुझे जीवन दान दो" वीर रमणी ने तिरस्कार पूर्ण दृष्टि से उसे देखा और कहा, 'हम राजपूत हैं हम कभी शरणागत का वध नही करते ओ पापी तूने मुझे मा कहकर पुकारा है और प्राणो की भिक्षा मागी है मै तुझे जीवन दान देती हू।"

इसके पश्चात वीर रमणी किले मे चली गई। दूसरे दिन अपने पति के शव को गोद मे रख कर अग्नि प्रज्वलित करके सती हो गई। अकबर ने बहुत प्रयत्न किया कि किसी प्रकार वह किले मे प्रवेश कर सके और अपनी विजय पताका वहा फहराये। छ मास से भी अधिक समय हो गया था अकबर बहुत परेशान था उसकी समझ मे नही आता था राजपूतो को खाद्य सामग्री तथा अन्य वस्तुए कैसे उपलब्ध होती हैं जब कि चारो ओर से किला मुगल सेना से घिरा हुआ था। ज्हा किले की दीवार का हिस्सा दिन के युद्ध मे टूटता था वीर राजपूत उसे दूसरे दिन तक ठीक कर लेते थे। बहुत सोच विचार के पश्चात अकबर ने अपनी सेना को आज्ञा दी कि किले की दीवार तक एक सुरग बनाओ और जब वह सुरग तैयार हो जावे तो उसमे बारूद भर कर आग लगा दो। दो तीन माह सुरग बनाने मे लग गये उसमे बारूद भर कर आग लगा दी गई। किले की दीवार टूट टूट कर गिर रही थी। अकबर क्या देखता है "कि पत्थर की दीवार के स्थान पर राजपूतो की दीवार वहा पर खडी है। राजपूत सिर पर केसरिया पगडिया बाधे हाथो मे तलवार लिये खडे हैं वह अपनी जननी जन्म भूमि पर बलिदान होने के लिये उद्यत हैं यह दृश्य देखकर अकबर सकपकाकर रह गया कुछ क्षणो के लिए उसके हृदय मे राजपूतों के प्रति प्रेम और श्रद्धा उत्पन्न हुई

(शेष पृष्ठ ७ पर)

पुलीस गुरुद्वारों में १९२० से ही प्रविष्ट होती रही है

श्री वी० ऐम० सिन्हा

[१]

पजाब मे गुरुद्वारो मे पुलिस प्रवश की अनेक घटनाए पढने और सुनने को मिलती है न केवल उनके प्रबन्धको को सुरक्षा प्रदान करने के लिए ही अपितु कानून और व्यवस्था का उल्लघन करने वाले व्यक्तियो को बाहर निकालने के लिए भी जिन्होने उनमे शरण ली थी। इसका विरोध न तो सिखो ने और नाही अकाली नेताओ ने कभी किया था।

वतमान इतिहास मे १९२० से ही यह क्रम शुरू हुआ उल्लिखित है। प्रारम्भ मे अकाली दल ने निर्णय किया था कि हर मन्दिर साहब श्री अकाल तख्त और सरोवर की परिक्रमा के भीतर पुलीस प्रवेश की अनुमति नही दी जानी चाहिए। साथ ही यह भी निश्चय किया गया था कि यदि इन स्थानो मे से किसी स्थान मे रहने वाले किसी व्यक्ति को किसी अपराध के सम्बन्ध मे पुलीस तलब करेगी तो वह तुरन्त पुलीस के हवाले कर दिया जायगा बिना इस ख्याल के कि उसका ओहदा कितना ही ऊचा हो। इस निणय का कडाई के साथ पालन किया जाता था।

१२ अक्टोबर १९२३ को तमाम शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी अवैध उदघोषित कर दी गई थी। सब सदस्यो न गिरफ्तारी से बचने के लिए अकाल तख्त मे शरण ली। जब पुलीस ने उनकी गिरफ्तारी के लिए कायवाही करने की धमकी दी तो अकाल तख्त के वरिष्ठ पुजारियो के आदेश निर्देश पर उन्होने अपने को गिरफ्तारी के लिए पेश कर दिया। बाद मे उन सब पर अभियोग चला और दो दो साल की कैद की सजा दी गई साथ ही प्रत्येक को २००) जुर्माने की भी।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के दफ्तरो म अकाल तख्त दरबार साहिब और अन्य गुरुद्वारो मे पुलीस का प्रवेश वर्जित नही था। यह बात इस तथ्य से सुस्पष्ट है कि १२ १० १९२३ को पुलीस दफ्तरो और इन स्थानो मे घुसी और तमाम रिकार्ड उठाकर ले गई था। पुलीस प्रवेश धार्मिक भावनाओ को ठेस पहुचाने वाला अकालियो ने कभी नही माना।

१९२५ मे शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी ने सुरक्षा प्रदान करने के लिए पुलीस प्रवेश का स्वय आह्वान किया था। यह उस समय किया था जब कि बाबा गुरदीपसिंह (कामा गाटा प्रसिद्धि के) तथा भाई मूर्नसिह जो शिरोमणि कमेटी के दो विरोधी वर्गों से सम्बद्ध थे क्रमश उसके प्रधान और मन्त्री निर्वाचित हुए थे। चुनाव के तुरन्त बाद दोनो वर्गों ने शिरोमणि प्रबन्धक कमेटी के दफ्तर पर कब्जा करने की कोशिश की और इस प्रक्रिया मे दोनों गुटो के सदस्यो ने एक दूसरे पर हमला किया। हत्या के मामले की तहकीकात के लिए भी पुलीस को गुरुद्वारे मे प्रवेश की अनुमति दी गई थी उदाहरणार्थ गुरुद्वारा कमेटी के अध्यक्ष अमरसिंह झब्बल के निमन्त्रण पर पुलीस तरनतारन के गुरुद्वारा मे प्रविष्ट हुई थी। उसे यह दिखाना था कि सरोवर की परिक्रमा पर एक व्यक्ति की मृत्यु कैसे हुई थी। पुलीस गुरुद्वारो मे कई दिन तक रही और किसी ने भी इसका विरोध नही किया था।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के प्रारम्भिक दिनो मे भी पुलीस प्रवेश की घटनाए उपलब्ध हैं। जब महसामपुर गुरुद्वारेके निहगो ने मात्र लाइसस शुदा बन्दूकें और राइफलें रखने से इन्कार कर दिया तो जिलाधीश और पुलीस सुपरिन्टेन्डेन्ट ने गवनमेन्ट से यह आर्डर प्राप्त किया कि यदि वे लाइसेंस प्राप्त करने से इन्कार कर दे तो पुलीस उन हथियारो को जबरदस्ती छीन ले। जब निहगो ने आडरका विरोध किया तो जिलाधीश ने गुरुद्वारे के १०० सैनिकों से घिरवा दिया और निहगों को अपने हथियार पुलीस के हवाले करने का आडर दे दिया। परन्तु उन्होने गोलिया चला दी। इस पर सैनिक हरकत मे आए और उन्होने तमाम निहगो को मय उनके हथियारो के गिरफ्तार कर लिया। इस सघर्ष मे ४ निहग मारे गए और तीन सैनिक बुरी तरह जख्मी हुए। उन दिनो स्वर्णसिह गृहमन्त्री थे और किसी ने भी सैनिक कायवाही का विरोध नहीं किया था।

जब पजाब के मुख्यमन्त्री सरदार प्रतापसिह कैरो की राजमाग पर हत्या कर दी गई थी तब अकाली दल के अध्यक्ष श्री मोहर्नसिह तूर का इस हत्या मे हाथ होने का सन्देह किया गया था। अत पुलीस को उनकी जरूरत पडी। श्री तूर ने दरबार साहिब के परिसर के भीतर डेरा लगा लिया। एक दिन पुलीस ने उन्हें सरोवर की पवित्र परिक्रमा के चहुं ओर घूमते हुए देख लिया। दो तकडे पुलीस मैंने उन पर झपट उन्हे कौली भर कर उठाय और मन्दिर के बाहर ले आए। इसके पश्चात वे एक पुलीस स्टेशन पर कमरे मे बन्द कर दिए गए। किसी भी सिख या अकाली नेता ने विरोध की कोई आवाज नहीं उठाई। (हिन्दुस्तान टाइम्स ३ २ ८४)

(पृष्ठ ६ का शेष)

किन्तु कुछही क्षणोके उपरान्त भीषण नर सहार होने लगा। एक एक राजपूत ने दस दस बीस बीस यवन सैनानियो को यमलोक पहुचाया होगा। अन्त मे सब राजपूत वीर गति को प्राप्त हुए। जब किला मुगलो के हाथ आ गया अकबर ने किले मे प्रवेश किया वहा कुछ भी शेष न था वीर रमणिया जौहर कर चुकी थी उस समय भी अग्नि प्रचण्ड रूप धारण किये हुए थीं। अकबर सून चित्तौडगढ को प्राप्त कर सका वहा का सारा वैभव नष्ट हो चुका था। अकबर ने किले का दरवाजा निकाल कर आगरे भिजवा दिया।

यह हमारे पूवजो का इतिहास है। कहा भारत सम्राट की असख्य सेना कहा मुट्ठी भर राजपूत ! वे स्वतन्त्रता की वेदी पर हसते २ प्राणो को न्यौछावर करते थे। क्या आज भी भारतवासियो के हृदय मे जननी जन्म भूमि पर बालदान होने की भावना पैदा हो सकेगी ? भगवान भारत की पुत्रियो तथा पुत्रो मे फिर से मातृ भूमि के लिए निस्वाथभाव तथा प्रम प्रदान करो जिससे फिर से भारतीय बलिदान की भूमि बन जावे।



आय वेमी बोलैट दयानन्द गाडन होम फार दी एजेड (आय वृद्ध आश्रम) डरबन (दक्षिण अफ्रीका) के अधिकारी एव कायकर्ता गण।

मुस्लिम युवक को शुद्धि

स्थानीय आय समाज अजमेर मे रविवारीय साप्ताहिक सत्सग के अवसर पर मुस्लिम युवक मोहम्मद अली की स्वेच्छा से प्राथना करने पर हिन्दू (वैदिक) धम मे प्रवेश प्रदान कर शुद्धि की गई। शुद्धि सस्कार श्री आचाय गोविन्दरामजी ने कराया।

अन्त मे समाज की ओर से उनका पुष्प मालाए पहनाकर स्वागत किया गया।

रासासिंह
मन्त्री
आय समाज अजमेर

श्री आनन्दमुनि (शेषराव वाघमारे)

—पं० प्रियदत्त शास्त्री
आर्य समाज माडल टाउन, पानीपत (हरियाणा)

श्री आनन्द मुनि आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ताओ मे से एक थे। उनके जीवन मे आर्य समाज के प्रति कूट कूट कर श्रद्धा भरी हुई थी। ऋषि दयानन्द जी के तो अनन्य भक्त थे। दक्षिण भारत के हृदय सम्राट प० नरेन्द्र जी का दाया हाथ थे। वह भी टूट गया। इनके स्वर्गवास से आर्य जगत् की बहुत क्षति हुई है। महाराष्ट्र मे वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिए इन्होने अपना सम्पूर्ण जीवन लगाया। वे महाराष्ट्र के गाव गाव मे जाकर मराठी भाषा मे अत्यन्त मधुर व सरस भाषा मे वेद प्रचार करते थे।

इनका जन्म एक ब्राह्मण कुल में हुआ था। आप जानते हैं कि महाराष्ट्र के ब्राह्मणो का जीवन जातिभेद से युक्त होता था। वाघमारे जी भी इसी विचार धारा मे पले थे। जब वाघमारे जी आर्य समाज के सम्पर्क मे आये तो सब पाखण्डो का खण्डन करके सारा जीवन वेद के अनुसार बनाया। आज आप देखेंगे कि उनका सारा परिवार ऋषि के कार्य मे लगा हुआ है। इस समय छुआछूत की बीमारी ने समाज को जर्जरित कर दिया था। मनुष्य को मनुष्य स्पर्श नही करता था। ऐसे भयानक समय मे वाघमारे जी ने अपनी सुपुत्रियो का विवाह अन्तर्जातीय कराया था। उनकी बिरादरी की ओर से उनको अनेक कष्ट दिए गए परन्तु ऋषि का परम भक्त अपने मार्ग से रत्ती भर भी विचलित नही हुआ। महाराष्ट्र मे यह पहला व्यक्ति था जिसने इस प्रकार का कार्य किया था।

उन्होने अपनी जवानी मे एक बाघ (शेर) को मारा था। इसीलिए इनका नाम भी लोगो ने वाघमारे रखा था। जैसा लोगो ने उनका नामकरण किया था वैसा ही उन्होने अपने जीवन को सार्थक कर दिखाया। वे अत्यन्त साहसी धैर्यशाली और कार्यकुशल थे।

सन १९३९ के हैदराबाद सत्याग्रह मे इन्होने रचनात्मक कार्य किया और कई बार जेल गए। वे अपने मुह से सुनाते थे कि मुसलमान मुझे मारना चाहते थे परन्तु मैं हमेशा राईफल लेकर घूमता था। डर क्या होता है मुझे पता नहीं था।"

वे मराठी भाषा मे प्रचार करते थे। उनको सुनने के लिए लोग लालायित रहते थे। उनके भाषणो मे रस होता था। उनका स्वभाव विनोदी था। बीच बीच मे लोगो को बहुत हसाते थे। जनता यही कहती थी कि अभी थोडा, अभी थोडा भाषण दो, फिर वे कहते थे भाषण तो बहुत हुआ अब अमल भी तो करना है। गुजोटी मे मराठवाडा आर्य महसम्मेलन सन १९७१ मे हुआ था। इस सम्मेलन के वह अध्यक्ष थे। गुजोटी जैसे स्थान मे महासम्मेलन को सफल करने वाले दो ही व्यक्ति थे एक प० नरेन्द्र जी और वाघमारे जी। निलगा आर्य समाज का निर्माण करने वाले भी वही थे। आज निलगा आर्य समाज का स्थान बहुत ऊचा है। वह भी एक ऐतिहासिक स्थान है? यही पर वाघमारे जी का घर है। अब तो वे वानप्रस्थ लेकर गाव गाव जाकर प्रचार कर रहे थे और सार्वदेशिक सभा के भी सदस्य थे। आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र के प्रधान भी थे। अभी तो महाराष्ट्र मे उनको बहुत कुछ करना था। बीच मे ही चल बसे।

वाघमारे जी का परिवार स्वर्ग समान है? उनके दो जामाद वेद के प्रकाण्ड विद्वान है। एक श्री प्रो० हरिश्चन्द्र जी रेणापुरकर संस्कृत के सुन्दर लेखक हैं। इनकी संस्कृत मे कवितायें भी पत्रिकाओ मे छपती है। दूसरे श्री प्रो वेदकुमार वेदालंकार वे भी संस्कृत के विद्वान हैं। सारे पुत्र और पुत्रिया योग्य हैं और सारे ही ऋषि दयानन्द का ही कार्य करते हैं। आज हमारे मे से एक महान देशभक्त समाजसेवी, क्रान्तिकारी, आर्य नेता का चले जाना हमारे लिए अत्यन्त दु ख का विषय है। ईश्वर से प्रार्थना है कि हे प्रभो! इस दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे और उनके परिवार को इस महान दु ख को सहन करने का सामर्थ्य प्रदान करे और वे सब अपने पिता के पदचिन्हो पर चलकर समाज व देश की सेवा कर सकें और उनके नाम को अमर करे।

सम्पादक के नाम पत्र

विचारणीय विषय

एक शका कई दिनो से मन मे उठ रही है कि ऋषि महान ने जिस सौ सवा सौ वर्ष पूर्व भारत मे नैष्ठिक ब्रह्मचारी एव नैष्ठिक ब्रह्मचारिणियो की शृ खला चलादी थी वह सफल रही और उसमे भारत का बहुत उपकार हुआ। किन्तु आज के कुत्सित वातावरण मे यदि गुरुकुलो मे यह प्रथा चलाई जावे कि अमुक निर्धारित वय अथवा परीक्षोत्तीर्ण के स्नातक गण गुण कर्म स्वभावानुसार गृहस्थ धर्म स्वीकार करके अध्ययन अध्यापन पौरोहित्य एव उपदेशक प्रचारक आदि का कार्य करे तो क्या बाधा है? गुरुकुल मे विद्याध्ययन रत होने के बाद रथ के दोना पहियो की भाति भारत की भलाई करते रहे।

गुरुकुलो के विद्यार्थी एव विद्यार्थिनिया यद्यपि सिनेमा व वीडियो आदि के अवलोकन से विरत भी रख जा सकते हैं किन्तु समाचार पत्रो आदि मे जो कुछ प्रकाशित चित्र, सिनेमा आदि के वीभत्स विज्ञापन एव अन्य अनेकों बातें पढकर उनकी रुचि रुधारा कहा कहा टकराती होगी। सबसे दयनीय दशा तो विद्यार्थिनियो की होगी जिनके भविष्य जीवन का कोई ठिकाना ठोर नही प्रतीत होता।

आप उचित समझ तो कभी समय निकालकर इस अत्यावश्यक विषय पर भी गम्भीरता पूर्वक विचार करके देश का उत्थान कीजिए।

—रघुनाथ सिंघल
नारियल बाजार, वाराणसी

सभा-प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले को पत्र

महोदय!

निवेदन है कि इस समाज की अन्तरग सभा की एक बैठक दिनाक ११-३-८४ दिन रविवार का प्रधान श्री सोमदेव जी की अध्यक्षता मे हुई जिसम निम्न प्रस्ताव पारित किए गए। अत सूचनार्थ एव आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित हैं।

१—जब कि देश म सार्वदेशिक आर्य प्र० सभा विद्यमान है तो विश्व आर्य सभा का कोई महत्व एव औचित्य नही।

२—आचार्य भगवानदेव जी द्वारा महर्षि दयानन्द की फीचर फिल्म मे दयानन्द का पात्र बनने पर यह समाज आपत्ति करता है।

३—राजनीतिक व्यक्तियो को समाज मे कोई भी पद देने पर यह समाज आपत्ति करता है।

—रघुनन्दनलाल उपमन्त्री
आर्यसमाज प्रेमनगर, देहरादून

(पृष्ठ ५ का शेष)

जाने पर इसका अन्त हो जाता है। हमारा वर्तमान जीवन एक बडी शृखला की एक कडी है और यही पर अनन्त जीवन का सूर्य और उसकी एक किरण आकर मिल जाते हैं। आत्मा लौकिक परिधान मे समुपस्थित हो जाता है। परन्तु यह समय की उपज नही होता। इस की धारा सदैव प्रवाहित रहती है।

आर्य समाज आत्म-विकास मे, चरित्र निर्माण मे, जीवन की उपयोगिता मे और नि स्वार्थ भाव मे परहित करते हुए भावी जीवन की तय्यारी करने मे आस्था रखता है। यह कट्टर पौराणिक वाद धार्मिक रूढिवाद और विकृत बौद्धमत के दुष्प्रभावों के शमन के लिए हितकारी दवाई है, यह ठीक उसी प्रकार का आन्दोलन है जैसा कि अमेरिका मे अन्धकार एव आतक से परिवेष्टित पुराने ढग की कट्टर ईसाइयत के विरुद्ध "न्यूथाट" नव विचार, नव चेतना आन्दोलन खडा किया गया है। आर्य समाज अमेरिका के इस आन्दोलन की भाति फले-फूले यही कामना है।

आर्य हुतात्मा पण्डित लेखराम ने एक अवसर पर इस ध्रुव सत्य का यह कहकर प्रतिपादन किया था कि वैदिक धर्म उसी अनुपात मे फैलेगा जिस अनुपात मे उस राष्ट्र मे जिसमे इसका प्रचार होगा जागृति उत्पन्न होगी। (वैदिक मैगज़ीन श्रावण सम्वत् १९६८)

मेरे मार्ग दर्शक

—रामगोपाल शालवाले वानप्रस्थ

लाला चतुरसेन जी का नाम सुनते ही मेरी पुरानी स्मृतियां जाग उठती हैं। वे मेरे उन परम स्नेही मित्रों और साथियों में थे जो मेरे भाइयों से भी अधिक प्रिय व सहयोगी रहे। आर्य समाज की सेवा करने का जो अवसर मुझे मिला उसका अधिकांश श्रेय स्व० चतुरसेन जी को ही जाता है। उनके परामर्श से ही मै निरन्तर समाज सेवा में आगे बढ़ता रहा। आज भी उनका स्मरण करके मुझे नई दिशा मिलती है।

लाला जी वैदिक वाङमय के गम्भीर विचारकथे। उन्होने सम्पूर्ण महाभारत का प्रकाशन अपने बलबूते पर किया और देश भर के विद्वानों तक पहुंचाया। सार्वदेशिक सभा ने जब चारों वेदों के हिन्दी भाष्य का निर्णय लिया तो लाला चतुरसेन जी ने ही इस महान् कार्य को अपने कन्धों पर उठाया व रातदिन काम करके वेदभाष्य के प्रकाशन का कार्य पूर्ण कराया। प्रूफ भी उन्होने ही देखे थे। छोटा व बड़ा हर काम अपने हाथ से करते थे।

लाला जी के सान्निध्य में पं० रामचन्द्र देहलवी व श्री व्यासदेव जी शास्त्री और आचार्य देवेन्द्रनाथ सांख्याचार्य ने दिल्ली में सैकड़ों शास्त्रार्थ कराये यद्यपि इनकी प्रबन्ध व्यवस्था मुझे ही करनी पड़ती थी किन्तु इस सम्बन्ध में सहयोग व मार्गदर्शन लाला चतुरसेन जी का ही रहता था। शिव मन्दिर आंदोलन का कार्यक्रम जो दिल्ली में चला उसमें मुझे कई बार जेल जाना पड़ा किन्तु लाला चतुरसेन जी ने बाहर रहकर आन्दोलन का संचालन बड़ी योग्यता से किया।

लाला चतुरसेन ने सामने आकर नाम के लिए काम नही किया। वे उस नीव के पत्थर की तरह अटल और स्थिर रहे जिसके ऊपर भव्य भवन खडे रहते है।

पत्थर में भगवान् कहां ?

पत्थर मे भगवान कहां है।
वह तो है इन्सान मे॥
ढूंढ़ पसारो कोना-कोना।
मिलता नही जहान में॥
भेद-भाव का भूत भयंकर॥
जकड़ा है ससार में॥
ऊंच-नीच की खाई पाटो।
भव सागर मझधार में॥
रंग-भेद की रीति-नीति मे।
जात-पांत का रगड़ा है॥
पैशाचिक ही कर्म जगत में।
आये दिन यह तगड़ा है॥
वैदिक धर्म महान् जगत् मे॥
गर उसको अपनायेगा॥
छूआ-छूत विहीन बनाकर।
सबको गले लगायेगा॥

--इन्दमोहन मिश्र "मोहन"

वर चाहिए

बी० एस० सी० पास गौरवर्ण गृह कार्य बुनाई कढ़ाई में दक्ष ऊंचाई साढ़े पांच फिट कन्या के लिए आर्य कायस्थ वर की आवश्यकता है। कन्या के माता पिता केन्द्रीय सरकार में कार्यरत हैं। पत्राचार निम्न पते पर करें—

श्री विजय मंगल प्रसाद
करबसी एम० पी० आई-२
ग्राम पोस्ट—बेरमो, जि० गिरिडीह बिहार

(पृष्ठ ४ का शेष)

जाता है। हिन्दी-भाषी क्षेत्रों के लोगों ने दक्षिण की भाषा सीखने का द्रविड़ प्राणायाम नही किया। दक्षिण के लोग हिन्दी सीखने में दिलचस्पी नही ले रहे हैं क्योकि उनके मन में अब तक यह भ्रम है कि हिन्दी राज्यो के लोगों की मातृभाषा हिन्दी है और बहुत कोशिश करने पर भी वे हिन्दीभाषियो का मुकाबला हिन्दीमे नही करसकेंगे।

भाषा समस्याका सीधा हल यहथा कि देशभरमे हिन्दी और क्षेत्रीय भाषा अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाई जाती और शिक्षा का माध्यम इनमें से किसी एक को चुनने की छूट दी जाती। किसी भी भाषा के बोलने वाले को ऊंचे से ऊंचे पद पर अपनी भाषा के जरिए पहुचने के अवसर होते। हिन्दी सम्पर्क भाषा होती। जहां तक तीसरी भाषा का सवाल है, अन्तराष्ट्रीय सम्पर्कों के लिए अंग्रेजी के साथ-साथ अन्य विदेशी भाषाओं को पढ़ने और इस्तेमाल करने की छूट दी जानी चाहिए थी। तब वाकई देश सच्चे माने में त्रिभाषी बनता। लेकिन आज देश द्विभाषी बन चुका है। अपनी मातृभाषा सीखने के बाद लोग अंग्रेजी सीखते है, हिन्दी नही। हिन्दी लोगों तक पहुचती जरूर है, लेकिन उसी तरह जैसे मानसून का पानी अनायास खेतों और कुओं में पहुंचता है। करोड़ों लोग ऐसे है जो कहेंगे कि हम हिन्दी समझते जरूर हैं और टूटी-फूटी बोल भी लेते है, लेकिन ठीक से बोलना लिखना नही आता। जो अनायास हिन्दी—ज्ञान अहिन्दी जनता में है, वह थोड़ा सा राष्ट्रीय प्रयत्न करने पर पर्याप्त सुसंगठित हिन्दी—ज्ञान बन सकता था। लेकिन ऐसी कई सम्भावनाओं का हम दोहन ही नही कर पाए क्योंकि ऐन मौके पर भाषा का प्रवाह गलत दिशा में मुड़ गया।

ये सुसगत विचार है जो सहयोगी नव भारत टाइम्स (दिल्ली) ने अपने ६-४-८४ के अंक में प्रकट किएहैं। —रघुनाथप्रसाद पाठक

आर्यसमाज कोई मत-पन्थ नहीं, एक आंदोलन है, यह एक ढाल है, देश-जाति की रक्षार्थ सभी हिन्दू मिलकर काम करें, आर्यसमाज स्थापना दिवस पर नेताओं का आह्वान

नई दिल्ली, २ अप्रैल

भारतीय सस्कृति हजारा लाखो वर्षों से चली आ रही है। विकट विपरीत परिस्थितियो मे भी वह बचती रही है। इसके दो मुख्य कारण हैं-पहला यह कि वेद और उपनिषदो पर यह आधारित है, जो कि शाश्वत सत्यो का निरुपण करते हैं। दूसरा यह कि उन सत्यों की व्याख्या युगानुसार करने के लिए अनेकानेक ऋषि-मुनि पैदा होते रहे हैं। १९ वीं शताब्दी मे ऐसी ही विकट परिस्थिति मे, जब ब्रिटिश राज से भारत पादाक्रान्त था, रूढिवाद हिन्दू समाज को खोखला कर चुका था, ईसाइयत और इस्लाम के आक्रमण आर्य जाति का विनाश करने पर तुले थे, दिव्य पुरुष महर्षि दयानन्द मैदान मे उतरे और १८७५ मे आर्य समाज की स्थापना कर उन्होने वैदिक धर्म एव भारतीय सस्कृति की रक्षा का बीडा उठाया। समाज के महत्वपूर्ण अगो स्त्री शूद्र को वेद पढने का उन्होने अधिकार दिया, जो भाई भूल-भुलैया मे पडकर हिन्दू धर्म छोड बैठे थे, उन्हें फिर से गले लगाने के लिए उन्होने "शुद्धि आदोलन" का सूत्रपात किया। शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र मे उन्होने तथा उनके आर्य समाज ने क्रान्तिकारी काम किया। आर्य समाज ने हिन्दू जाति की रक्षा के लिए ढाल का काम किया।"

उक्त शब्द आज 'विराट हिन्दू समाज" के अध्यक्ष श्री डा० कर्णसिह, ससत्सदस्य ने आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य द्वारा आयोजित 'आर्य समाज स्थापना दिवस" समारोह मे मुख्य अतिथि के रूप मे सहदेव मल्होत्रा आर्य पब्लिक स्कूल पजाबी बाग के प्रागण मे कहे। उन्होने कहा कि सस्कृति के मूल बीज बच्चा दादी नानी एव माता-पिता शिक्षा पद्धति तथा नेताओ के आचरण से सीखता था। आज तीनो ही गडबड मे हैं। अत हमे इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। उन्होने सुझाव दिया कि बडे स्तर पर एक "हिन्दू शिक्षा सम्मेलन' का आयोजन किया जाना चाहिए। आर्य समाज ने बहुत काम किया, पर बहुत कुछ करना अभी शेष है और हिन्दू समाज के सभी घटको को मिलकर अस्पृश्यता, दहेज, देश मे बढ रही विघटन की लहर हमारी सभ्यता सस्कृति पर बाहरी आक्रमणो आदि के विरुद्ध प्रचण्ड आदोलन आरम्भ करना चाहिए। आर्य समाज हमेशा हिन्दू धर्म की रक्षा की ढाल रही है आज की विषम परिस्थति मे उसे अधिक सक्रिय हो कर काम करना होगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले ने अध्यक्ष पद से बोलते हुए अपने सक्षिप्त भाषण मे उपस्थित जनो को उदबोधन किया कि आर्य समाज को साकार करने के लिए तन मन, धन से घोर प्रयास करने का आज पुन सकल्प लेना होगा। हमे जनसाधारण पर यही अच्छी तरह प्रकट करना होगा कि आर्य समाज न कोई मत है न पथ, न सम्प्रदाय। यह तो एक आन्दोलन है सत्य सनातन वैदिक धर्म के पुनरुद्धार का भारत राष्ट्र के पुनरुत्थान का। प्रात स्वामी दीक्षानन्द जी द्वारा ७० बालक बालिकाओ एव युवती अध्यापिकाओ के यज्ञोपवीत सस्कार पर प्रसन्नता प्रगट करते हुए उन्होने कहाकि ऐसे सस्कारो और यज्ञो द्वारा हम राष्ट्रीय एकता की भावना को बल देंगे। जमाना हमारी तरफ आ रहा है, केवल एक वर्ष मे ७ बडे मौलवियो ने वैदिक धर्म ग्रहण कर महर्षि दयानन्द के आन्दोलन का मिशनरी बनने का सकल्प किया है, यह दयानन्द और उनके आर्य समाज की बहुत बडी सफलता है।

सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री ओमप्रकाश जी पुरुषार्थी ने अपनी ओजस्वी वाणी मे कहा कि आज हमे यह सोचना है कि हमने क्या किया, क्या करना है। १९ वी शताब्दी म ससार ने दो महापुरुष पैदा किए जिन्होने क्रान्ति मचाई। पर कार्ल मार्क्स मानव कल्याण का आधार केवल आर्थिक शोषण का निराकरण मानकर सीमित दायरे मे बध गए। दयानन्द ने कहा कि ईश्वर धर्म, अर्थ नीतो को आधार बनाकर ही पूरा मानव कल्याण हो सकता है। वैदिक धर्म ही वास्तविक मानवधर्म है और उसके अधिकाधिक प्रचार प्रसार मे जुट जाने का हमे आज व्रत सकल्प लेना होगा। आर्य समाज की स्थापना १८७५ मे करके उन्होने सर्वप्रथम स्वराज्य व स्वदेशी, स्वधर्म, स्वभाषा को राष्ट्रीयता का आधार मानने की घोषणा की थी। आर्य समाज के सेवको ने स्वतन्त्रता-आदोलन मे बढचढ कर भाग लिया था। आज जब भारत पर चारो ओर से आक्रमण हो रहे हैं, हमे अधिक सक्रियता से काम करना होगा। हमे प्रबल आन्दोलन छेडना होगा यज्ञो-ओम के प्रचार के लिए युवको को आर्य समाज की ओर आकर्षित करने के लिए, छुआछूत दहेज आदि कुरीतियो के निवारण के लिए हरिजनों के मुहल्लो मे जा जा कर उनसे गले मिलने के लिए अग्रसर होना होगा।

विदेशो मे कई वर्ष वैदिक दुन्दुभी बजाने वाले प्रसिद्ध आर्य सन्यासी श्री दीक्षानन्द जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने वेदो को आर्य समाज का आधार बनाया था, उन्होने घोषणा की थी कि जो वेद पर उतरे, वही खरा, बाकी खोटा। देश जाति धर्म मे जो उलटी बाते घर कर गई थी, उन्होने वेद की कसोटी पर उन्हे उलटा कर सीधा कर दिया। आर्य समाज एक विशुद्ध राष्ट्रीय सस्था है, अत इसके नेताओ को आज के युग मे हिम्मत से यह बात कहनी चाहिए कि जो भारत देश को "माता" नही मानते, इसकी नदियो, पर्वतो, महापुरुषो, इतिहास, भाषा, साहित्य धर्म से प्यार नही करते, उन्हे उस देश मे चले जाना चाहिए जिससे वे प्यार करते है। उन्होने आह्वान किया कि प्रचार की गति भी तीव्र करनी चाहिए, हर जगह समाज, सन्यासी, सस्कृत, सन्ध्या, सस्कार की योजना क्रियान्वित करनी चाहिए।

श्री प० शिवकुमार शास्त्री ने कहा कि आज हमारे लिए आत्म-निरीक्षण का दिन है। महर्षि दयानन्द जब मैदान मे उतरे, तो उन्होने पहले ब्रह्म समाज आदि से मिलकर काम करने की बात सोची। पर जब उन्होने देखा कि वे वेद को नही मानते, अग्रेजी व अग्रेजी जगत के पक्षपाती है, तो उन्होने उनसे कोई समझौता नही किया। आज आर्यसमाज मे गलत बातो से समझौते की प्रवृत्ति बढ रही है, जिससे हमे सावधान रहना चाहिए। श्री पृथ्वीराज शास्त्री ने कहा कि आज का दिन लेखो-जोखो का दिन है उसे देखकर अधिक साधना करने का व्रत आज अपेक्षित है। हमे देश मे बढ रही विघटनकारी शक्तियो से लोहा लेना चाहिये और यज्ञोपवीत आदि सस्कारो को विराटरूप देकर हिन्दू समाज एव राष्ट्र मे एकता की भावना को दृढीभूत करना चाहिए।

समारोह के आरम्भ मे सहदेव मल्होत्रा आर्य विद्यालय के छात्र-छात्राओ ने नादान लोगो ने उस योगी का भेद नही पाया आदि गीतो तथा श्री राघव ने 'दुनिया बनाने वाले कैसी तेरी माया कही बरसात, कही धूप, कहो छाया है, आदि भजनो द्वारा उपस्थितजनो को मुग्ध किया।

अन्त मे आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव जी ने सभी वक्ताओ, उपस्थित जनो तथा आर्य विद्यालय की प्रिंसिपल श्रीमती ब्रजवाला तथा अपने साथियो प्रो० धर्मपाल, श्री राजेन्द्र दुर्गा तथा श्री सुरेन्द्रनाथ "हिन्दी" का धन्यवाद किया। शान्तिपाठ के साथ कार्यवाही समाप्त हुई।

—सुरेन्द्र "हिन्दी"

आर्य समाजों की गतिविधियां

सविधान संशोधन की मांग बौद्धों ने भी उठा दी

नई दिल्ली, २ अप्रैल। बौद्ध सवर्ष समिति के अध्यक्ष दादा साहेब रूपवते ने माग की है कि हिन्दू व्यक्तिगत कानून से अलग हटकर बौद्धो के लिए अलग व्यक्तिगत कानून बनाए जाए।

श्री रूपवते ने सविधान सशोधन मे सरकारी पहल का स्वागत करते हुए माग की कि २५ अनुच्छेद मे सशाधन पर विचार के समय, सरकार बौद्ध और जैन प्रतिनिधियो को भी आमन्त्रित करे।

इन्होने कहा कि सविधान के २५ व अनुच्छेद मे केवल सिख समुदाय का ही उल्लेख नही है, अपितु बौद्ध और जैन मत के अनुयाई भी इससे सम्बद्ध है। उन्होने कहा कि बौद्धो को भी अपनी अलग पहचान कायम करने की छूट होनी चाहिए।

इस सन्दर्भ मे उन्होने सविधान को नया रूप देने का सुझाव दिया। श्रीरूपवते ने कहा कि अनुसूचित जातियो से बौद्धधर्म मे आने वालो की माग मानी जानी चाहिये।

(नवभारत ३-४ ८४)

वैदिक पारिवारिक सत्संग समिति जालना द्वारा शोक प्रस्ताव

समिति ने ११-३-८४ को श्रीयुत आनन्दमुनि जी (शेषराव वाघमारे) के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित किया और उनके परिजनो के प्रति हार्दिक समवेदना प्रकट की गई।

प्रस्ताव मे श्री मुनिजी की आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र के प्रधान हैदराबाद सत्याग्रह के एक अग्रगण्य सेनानी एव विधायक के रूप मे आर्यसमाज व देश के प्रति कीगई उनकी विशिष्ट एव विविध सेवाओ की प्रशसा करते हुए उनके निधन को आर्य समाज की और महाराष्ट्र की महती क्षति बताई गई है।

—ब्रह्मदेव आर्य

विश्व वेद परिषद् चण्डीगढ

वार्षिक चुनाव १९८४ के लिये सम्पन्न हुआ। प्रधान श्री भवानीलाल भारतीय तथा मन्त्री श्री प० आशुराम आर्य निर्वाचित हुए। इनके अतिरिक्त ४ उपप्रधान, ४ उपमन्त्री, २४ अन्तरग सदस्य भी चुने गए। कोषाध्यक्ष श्री रघुनाथ राय आर्य तथा निरीक्षक श्री रामनाथ आर्य मनोनीत हुए। उपप्रधानो मे सुप्रसिद्ध आर्य अधिवक्ता श्री चौ० रूपचन्द जी भी सम्मिलित है।

शुद्धि समाचार

२३-३-८४ पचपेडवा निवासिनी 'मिन्नन' नामक मुस्लिम महिला का शुद्धि सस्कार करके उसका नाम मीरादेवी रखा गया। शुद्धि के उपरान्त उसका विवाह वीरपुर पचपेडवा निवासी श्री दीपकसिह के साथ सम्पन्न हुआ। इस शुद्धि एव वैवाहिक कार्यक्रम मे श्री इन्दु कुमार टेकडीवाल, बद्री प्रसाद रूगटा, प्रो० राजेन्द्र कपूर, गीताप्रेस हैन्डलूम मार्केट के व्यवसाई बन्धुओ ने सहयोग दिया।

—आर्य समाज लखीमपुर (उ० प्र०) ने उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महोदय को एक पत्र भेजकर उत्तर प्रदेश मे उर्दू को द्वितीय राज्यभाषा बनाने विषयक विधेयक को निरस्त्र कराने की माग कीहै।

—मन्त्री

उत्सव

आर्य समाज करोल बाग नई दिल्ली का वार्षिक महोत्सव २२ अप्रैल रविवार से ३० अप्रैल ८४ तक मनाया जाना निश्चित हुआ है।

— ख्यालचन्द गुप्त, मन्त्री

नव-वर्ष २०४१ शुभ हो

महर्षि दयानन्द की देन-"आर्य समाज"

"नमस्ते जी" माता-पिता यदि प्रात /साय हाथ जोडकर नमस्ते करे तो बच्चे भी अवश्य करग बडो का आदर बढेगा "सध्या-हवन यज्ञ-आरती" घर मे प्रभु का धन्यवाद-प्रतिदिन हवन यज्ञ हो तो वातावरण शुद्ध होगा एक मील तक प्रतिष्ठा फैलती है आयु लम्बी होती है वेद ज्ञान फैलता है एक ईश्वर-निराकार-रोम रोम मे रमा हुआ सर्व शक्तिमान है सर्वोत्तम नाम 'ओ३म्' है ऋषि-मुनियो ने सिद्ध किया है कि ईश्वर-आत्मा-प्रकृति तीनो अनादि अमर है आत्मा प्रभु के नियम से शरीरो मे आता है जैसा कर्म करेगा वैसा ही फल पायेगा। सत्य का ग्रहण-असत्य का त्याग करना चाहिये।

—आत्मदेव, दिल्ली

स्थापना दिवस

अशोक बिहार क्षेत्र की सभी आर्य समाजो ने मिल कर, आर्य समाज मन्दिर अशोक बिहार फेज-I म आय समाज स्थापना दिनस २-४ ८४ को बडे उत्साह के साथ मनाया। हवन यज्ञादि के उपरान्त श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री का ज्ञानवधक प्रवचन हुआ। सायकाल कार्यक्रम ६ बजे स ९ बजे तक चला।

मन्त्री आय समाज सावन पार्क

शुद्धि समाचार

८-३ ८४ को कु० विजय माला आनन्दराव शिक्षक (मैंदरगा सोलापुर) आयु २२ वष की शुद्धि करक उसका नाम विजय लक्ष्मी रखा गया और प्रहलाद राव कल्याण राव अध्यापक के साथ विवाह सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज तुलजापुर जि० उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)

शोक समाचार

बहन जानकी देवी का स्वगवास

आर्य प्रादेशिक सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल की बडी बहन जानकी देवी का ६ माच को अकस्मात् हार्टफेल होने से स्वर्गवास हो गया। उससे पहले वे पूर्ण स्वस्थ थी और अपने दैनिक कार्यो मे लीन थी। बिना किसी बीमारी एक दिन भी शय्या पर बिना पडे ६४ वष की आयु मे उनके इस स्वर्गवास से जहा समस्त परिवार वाले चकित रह गये वहा पडोसियो ने कहा कि ऐसी सहज मृत्यु बडे पुण्यो का ही परिणाम है।



उसी दिन शाम दयानन्द श्मसान घाट लोदी रोड मे शाम को उनकी अन्त्येष्टि हो गई। उनका पोता वायुयान से बम्बई से आया और उसने अपनी दादी की अग्नि क्रिया की। अन्त्येष्टि सस्कार के समय समस्त सहगल परिवार के अलावा विभिन्न आर्य समाज के कार्यकर्ता और अधिकारी गण भारी सख्या मे उपस्थित थे।

९ माच को आर्य समाज डिफेंस कालोनी मे शान्ति यज्ञ हुआ।

बहन जानकी देवी जी को २४-२५ वर्ष की आयु मे ही वैधव्य का दुख भोगना पडा उसके बाद दो पुत्रो का सन्ताप भी उन्हे सहना पडा। पिछले लगभग ४० वर्ष से वे सहगल जी के परिवार के साथ ही रह रही थी। सहगल जी अपनी पूज्या बहन को अपनी माता जी की तरह आदर देते थे। पर वे ऐसी कर्मठ महिला थी कि औरो से सेवा लेने के बजाय सदा समाज की सेवामे लगी रहती थी। उन्होने अपने जीवन मे "कुर्वन्नेवेह कर्माणि" के वैदिक आदर्श को जिस रूप मे चरितार्थ किया, वह सबके लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

—रामनाथ सहगल

ऋषि बोधोत्सव

२९ फरवरी ऋषि मेला आर्य युवक परिषद (रजि०) दिल्ली के तत्वावधान मे आर्य समाज का भावी कार्यक्रम विषय पर भाषण प्रतियोगिता श्री ला० इन्द्रनारायण जी की अध्यक्षता मे बड समारोहपूर्वक सम्पन्न हुई। इस प्रतियोगिता मे सर्वप्रथम पारितोषिक एवम सत्यप्रिया चल विजयोपहार दयानन्द माडल स्कूल पटेल नगर की छात्रा कु० सतपाल कौर ने प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त भिन्न २ स्कूलों व सस्थाओ के छात्र छात्राओ को बीस विशेष पारितोषिक दिए गए। उपस्थित आर्य जनता ने भी वक्ता बच्चो के उत्साहवर्धनार्थ लगभग पाच सौ रु० की राशि पुरस्कार स्वरूप दी। इस अवसर पर परिषद द्वारा अखिल भारतीय लेख प्रतियोगिता विश्व को आर्य कैसे बनाए विषय पर आयोजित विजयेता लेखको को नवनीतलाल सत्यप्रिया धर्मार्थ टस्ट दिल्ली की ओर से ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री बा० नवनीतलाल जी के करकमलो द्वारा एक हजार रु० राशि के नकद पारितोषिक दिए गए। इन प्रतियोगिताओ का सचालन परिषद के प्रधान प० देवव्रत धर्मेन्दु जी ने किया। —कमल किशोर आर्य

अपनी संतान को आर्य बनावें

यदि आप अपने बच्चो को आर्य बनाना चाहते हैं तो निम्न साहित्य अवश्य पढ़ावें —

१—धर्म-चिन्तन १५)
२—वैदिक धर्म १०)
३—आस्तिक नास्तिक सवाद २)

मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन नई दिल्ली २

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली-२ में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसादपाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन, नई दिल्ली २ से प्रकाशित।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सृष्टिसम्वत १९७२९४९०८५] वर्ष १९ अङ्क २१]

वैशाख कृ० १ स० २०४१ रविवार २९ अप्रेल १९८४

दूरभाष २७४७७१ वार्षिक मूल्य १६) एक प्रति ४० पैसे

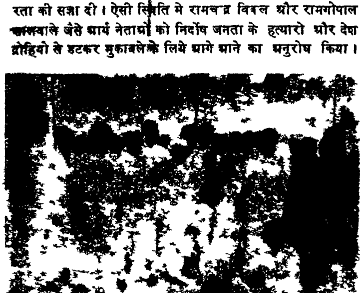
आर्यसमाज को अकालियों की चुनौती स्वीकार

—रामगोपाल शालवाले

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में रामचन्द्र विकल का भव्य स्वागत

फरीदाबाद १६ अप्रैल, श्री रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता मे राज्यसभा के नवनिर्वाचित सासद् श्री रामचन्द्र विकल का फरीदाबाद जिले के सभी आर्य समाजो और प्रमुख आर्य सस्थाओ द्वारा भव्य स्वागत किया गया। अध्यक्षीय भाषण मे श्री रामचन्द्र का स्वागत करते हुये लाला रामगोपाल शालवाले ने कहा कि उग्रवादियो द्वारा किये जा रहे लोमहर्षक अत्याचार सीमा को पार कर गये है। पानी सिर से उतर गया है। आय नेताओ को भी इन्होने धमकी भरे पत्र भेजना प्रारम्भ कर दिया है। इसे किसी भी कीमत पर सहन नही किया जा सकता। हम इनकी चुनौती को स्वीकार करते हैं। एक भी आर्य समाजी नेता अथवा काय-कर्त्ता को छडा गया तो इसका ब्याज सहित गिन-गिन कर बदला लिया जायेगा। आपने कहा कि श्री रामचन्द्र विकल जैसे विरले नेता आयसमाज की देन है।

इससे पूव गुरुकुल के सचालक स्वामी शक्तिवश ने सरकार द्वारा उग्रवादियो के प्रति बरती जा रही ढिलाई को कमजोर और काय-रता की सज्ञा दी। ऐसी स्थिति मे रामचन्द्र विकल और रामगोपाल शालवाले जैसे आर्य नेताओं को निर्दोष जनता के हत्यारो और देश द्रोहियो से डटकर मुकाबले के लिये आगे आने का अनुरोध किया।



बायें से स्वामी शक्तिवेश, स्वामी जगदीश्वरानन्द, लक्ष्मीचन्द, रामचन्द्र विकल ससद सदस्य, लाला रामगोपाल वानप्रस्थ अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, साहू, धर्मवीर, रामशरण शाटी, महेन्द्रपाल आर्य बैठे हुए बिहारीलाल पू० पू० विधायक

आपने कहा कि आर्य समाज तो आपके इशारे पर है ही। सारे देश की नजर आगे आने वाले नेता पर लगी है। जनता का न तो शासक और न ही विपक्ष पर विश्वास रह गया है।

इनके अतिरिक्त श्री स्वामी जगदीश्वरानन्द, स्वामी सत्यानन्द, उ०प्र० के भूतपूर्व विधायक श्री साहू, हरियाणा के भूतपूर्व विधायक बिहारीलाल बाल्मीकि, युवा प्रतिनिधि राजपाल छात्र ससद अध्यक्ष, जगवीर आदि नेताओ ने विकल जी के तप-त्याग की प्रशसा की। सयोजन श्री धर्मवीर एम०ए० ने किया।

अपने स्वागत का उत्तर देते हुये श्री विकल जी ने कहा कि यह गौरव आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द की देन है। आपने आर्य समाज के ईमानदार नेताओ और कार्यकर्त्ताओ को स्वस्थ राजनीति मे भाग लेने का आह्वान किया।

पंजाब में हिंसा फैलाने में पश्चिमी ताकतो का हाथ

बर्लिन ४ मार्च। पूर्वी जर्मनी के एक अग्रणी समाचार पत्र ने आरोप लगाया हैं कि भारत मे पृथक खालिस्तान राज्य बनवाने के लिए पश्चिमी ताकतें पजाब मे हिंसा को बढावा दे रही है।

ए डी एन सवाद समिति ने न्यूज दियूशलैड समाचार पत्र मे प्रकाशित एक खबर के हवाले से कहा है कि पजाब मे अपने क्रियाकलापो से पश्चिम की गुप्तचर सेवाए भारत और वहा की सरकार को कमजोर बनाने मे लगी हुई है। इस पत्र ने कहा कि इन गतिविधियो के कारण स्पष्ट है कि भारत ने अपना स्वतन्त्र रास्ता अख्तियार किया है। विकासशील देशो मे उसको काफी प्रतिष्ठा है और गुटनिरपेक्ष आदोलन का नेतृत्व उसके हाथ मे है।

न्यूज दियूशलैड ने लिखा है कि सोवियत सघ और अन्य समाजवादी देशो के साथ भारत के मित्रतापूर्ण सम्बन्ध हैं। एशिया अफ्रीका और लातीनी अमरीका मे वह राष्ट्रीय मुक्ति आदोलनो का समथन करता है तथा निरस्त्रीकरण और विश्व शाति का कट्टर पक्षधर है।

कुल मिलाकर यह सारी स्थिति विश्व पर आधिपत्य की इच्छा रखने वाली साम्राज्यवादी ताकतो को पसन्द नही है क्योकि वह उनकी योजनाओ के आडे आती है। इसलिए वे उत्तर पश्चिम भारत मे योजनाबद्ध तरीके से अशाति पैदा करने जैसी गतिविधिया अपनाती है।

[illegible]

सहसम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

सम्पादक के नाम पत्र

आर्य समाज पर लगाए गए निराधार आरोपों का खण्डन

आपके पत्र (१७ अप्रैल) में डा० महीपसिंह का पजाब खतरे की घण्टी सचमुच बज चुकी है का लेख पढा। इससे पूर्व उनका गतवर्ष जून का अत्यन्त विवादास्पद लेख पजाबी भाषा ही हिन्दू सिक्खोके बीच पुल बना सकती है" भी पढ़ा था जिसके प्रतिवाद को तब भी आपके पत्र में उपयुक्त स्थान नही दिया गया था।

वह पिछला और यह वर्तमान लेख प्रभाष जोशी एव गिरिलाल जैन के लेखों का बडा भोंडा और परस्पर विरोधी तर्कों से भरा प्रत्युत्तर है। वैसे उसका प्रतिपक्ष उन पत्रो मे प्रकाशित हो चुका है। स्वर्ण मन्दिर के भीतर और बाहर हत्याकाण्ड के जिम्मेदार व्यक्ति को सन्त कहना सिक्ख पंथ का खुला अपमान है। गुरु अर्जुन देव और गुरु तेग बहादुर की शहादत भी उनके शब्दों में गौरवपूर्ण नहीं रही। राजनीतिक हिंसा को उन्होंने स्वाभाविक बताया है, परन्तु बेचारे निरकारी और आर्य समाजी तो राजनैतिक पार्टिया नहीं हैं फिर इनके विरुद्ध कमबद्ध डा० महीपसिंह का प्रचार सन्त रूप राजनीतिज्ञों की आतंकवादी कार्रवाईयों का क्या खुला समर्थन नहीं है?

अपने लेख मे उन्होंने आतंकवादी सन्त को दर्जा और महत्व गुरुओं से भी ऊंचा कर दिया है। धर्मस्थानों में [illegible] एवं हिंसा के बारे मे वे पूरी तरह चुप हैं। इसके अतिरिक्त पजाब से बाहर रहने वाले एक तिहाई सिख (५० लाख) और विदेश स्थित सिखों के धन का पजाब मे राजनैतिक और हिंसा युक्त उपयोग उन्हे उचित जचता है। उनके पिछले लेखकी असमतता इसी बात सें स्पष्ट हो जाती है कि बेचारे निरकारी गुरुमुखी के पोषक होने के बावजूद दिन दहाडे सन्त जी के आदेश पर कत्ल किये जा रहे हैं। आर्य-समाज ने अपने मन्तव्यो के प्रचार के लिए हिन्दी के अतिरिक्त उर्दू अंग्रेजी आदि क्षत्रीय एव विदेशी भाषाओ का सर्वव उचित सहारा लिया है। यदि अकाली दल और उसके कोई सन्त ही सिक्ख पथ के पर्यायवाची हैं तो सहजधारी सिखो की भाति नामधारी रामदासिये और मजहबी भी ईरान की तरह कत्ल के शिकार हो सकते हैं।

हालत अब यह हो गयी है कि गुरुमुखी और पजाबी बोली के साहित्यकार डा० तिवारी और प्रीतलडी के सम्पादक ही नही पत्रकार और विरोधी राजनैतिक दलों के नेता और स्वय दरबारासिंह जैसे सिख नेता और सिक्ख पुलिस अधिकारी भी सन्त जी की हिट लिस्ट के शिकार हो चुके हैं और अभी अन्य सैकडो मतभेद रखने वाले सिखों और गैरसिखों की हत्या करके सन्त जी पजाबी नवयुवकों को डा० महीपसिंह के शब्दो मे सन्मार्ग पर ला रहे हैं। सिख गुरुओं ने पीरी की थी और आज वे अमर हैं जिस पटना साहब (बिहार) को गुरु गोविन्दसिंह को जन्म देने का गौरव प्राप्त है वहा के मजदूर जो पजाब के जमींदारों और उद्योगपतियो के लिए खून पसीना एक करके सोना उडेलते हैं, उन निरपराध हिन्दी भाषियो के प्रति निर्दय व्यवहार से भाषा और सस्कृति का नारा लगाने वाले डा० महीपसिंह के तर्क का खोखापन स्वय स्पष्ट हो जाता है।

प्रजातन्त्र मे स्टेनगनो से अपनी बात मनवाना और हरियाणा एवं दिल्ली मे १५ प्रतिशत पजाबी (गुरुमुखी लिपि में) भाषियों को द्वितीय राजभाषा का अधिकार मिलने के बाद भी ४८ प्रतिशत गैर सिखों को पंजाब मे पथ के नाम पर भाषायी स्वतन्त्रता देने का विरोध समझदार व्यक्ति नहीं करेगा, परन्तु जब हाथ मे कलम और तलवार दोनो आ जाय तब तो इस देश का रक्षक भगवान या उसके भक्त ही हो सकते हैं। पाकिस्तान और अमेरिका उग्रवादियो की कारवाइयो से खुश है।

—ब्रह्मदत्त स्नातक

सम्पादक नवभारत टाइम्स
नई दिल्ली

तन्त्र के बाजीगरो का घेरा

कृषि राज्य मन्त्री योगेन्द्र मकवाना दिल्ली के तांत्रिको के सम्मेलन मे अपनी मर्जी से नही आए थे। इसका उदघाटन करते हुए दिया गया उनका भाषण इसे स्पष्ट करने के लिए काफी है। उदघाटन के लिए पहले विदेश मन्त्री नरसिंह राव आने वाले थे। पर उन्होने केवल सदेश भेजकर छुट्टी पा ली। श्रीमती गांधी इस सम्मेलन का आयोजन करने वाली भारत निर्माण नाम की सस्था की सरक्षक हैं। [illegible] सबसे पहले उन्ही से [illegible] सोचकर वे नहीं आईं। हम नही जानते कि उनके इस ब्यौरे में कितना सच है कितना झूठ। लेकिन श्रीमती गांधी के इर्द गिर्द का दबाव न होता तो नरसिंह राव से लेकर योगेन्द्र मकवाना तक की [illegible] पड़ता।

परा विद्या के नाम पर किए गए इस सम्मेलन मे [illegible] की बाजीगरी करने वाले सभी चर्चित नाम थे। चाकलेट बाबा, टाट बाबा, बाल्टी बाबा से लेकर जादूगर [illegible] तक। [illegible] बाल्टी बाबा की वह बाजीगरी भी जिस पर होश्रो हवास वाला कोई भी आदमी भरोसा नहीं करेगा। ये सभी बाबा पिछले एक दशक से पूरी राजनीति पर छाए हुए हैं और [illegible]। जब राजनीति में गिरावट आती है ऐसे ही बाबाओं का बोलबाला बढता है।

तान्त्रिको का यह [illegible] संस्था भारत निर्माण १९८० मे श्रीमती गांधी के सत्ता मे लौटने के साथ अस्तित्व मे आई थी। [illegible] से लेकर २० सूत्री कार्यक्रम तक संस्था न जाने कितने धधे करती है। अब तक के दर्जनों कार्यक्रमो मे छोटे बडे सभी मंत्रियो को घेर कर वह अपना रुतबा और कार्य क्षेत्र बढाती रही है। इस सम्मेलन की स्वागत समिति के अध्यक्ष न्यायमूर्ति कुदाल हैं। इसके अलावा प्रशासनिक सेवा से लेकर विदेश सेवा तक के ऊंचे अफसर सम्मेलन का लाल पीला बिल्ला लगाए अखबारो के चक्कर लगा रहे थे और अपने सरकारी ओहदे से प्रभावित करते हुए अखबारवालो को समझा रहे थे कि सम्मेलन कितना महत्वपूर्ण है।

तान्त्रिको के ये तमाशे जिस तरह और जिन उद्देश्यो से किए जा रहे हैं वे खतरनाक और निंदनीय हैं। इन तान्त्रिको के चक्कर मे नौकरशाही और दूसरे बडे लोगो की बहुसख्या फस गई है। भूतपूर्व न्यायाधीश वी के कृष्ण अय्यर जैसे लोग भी इस जीवन के बाद अस्तित्व मानने और इन तन्त्र के बाजीगरो में फर्क नही कर पा रहे। परा विद्या या धर्म के बारे में एक निजी राय रखना और बात है व राज्य की ताकत का इस्तेमाल करते हुए [illegible] का ढिंढोरा पीटकर इन बाबाओ को बढावा देना बिल्कुल दूसरी बात है। सत्ता के दुरुपयोग पर तीखी आपत्ति की जानी चाहिए और इनमें मंत्रियो व दूसरे सरकारी अफसरो के भाग लेने के खिलाफ नैतिक और सामाजिक दबाव पैदा होना चाहिए। (जनसत्ता २१.४.८४)

[illegible]

नई दिल्ली, [illegible]

आर्य समाज की मांग एवं आह्वान

पंजाब को तुरन्त सेना के हवाले किया जाय

राष्ट्रवादी सिख पंजाब में सामान्य स्थिति स्थापित करने में सहयोग दें, उग्रवादियों द्वारा की जा रही सुनियोजित हिंसक कार्यवाहियां भारी खतरे की सूचक, इन्हें कुचलने तथा खतरे को टालने के लिए प्रशासन तुरन्त अपने कर्तव्य का पालन करें, उग्रवादी तत्वों को विदेशियों के हाथ का खिलौना न बनने का सत्परामर्श।

ये मांगें एवं आह्वान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री शालवाले एवं वरिष्ठ उपप्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम ने २०-४-८४ को प्रेस क्लब आफ इंडिया में आयोजित एक प्रेस सम्मेलन में की थी। प्रेस वक्तव्य अविकल रूप में नीचे दिया जाता है—सम्पादक

दिल्ली २० अप्रैल।

सरकार की टाल-मटोल नीति अन्य पक्षो के भाषणो मात्र से तथा तुष्टिकरण की नीति से पजाब की स्थिति निरन्तर बिगडती जा रही है भारत विरोधी विदेशी तत्वो के इशारे पर नाचने वाले कुछ लडाकू प्रवृत्ति वाले लोगो के षडयन्त्र का लक्ष्य है—भारत की उत्तर पश्चिम सीमा पर सर्वतत्र स्वतन्त्र खालिस्तान का निर्माण और यही आज की पजाब समस्या है। उनका विश्वास है यदि जिन्ना साहब डायरेक्ट एक्शन द्वारा, जिसके फलस्वरूप ५ हजार निर्दोष व्यक्तियो की जानें गई और १५ हजार लोगो को घायल करके पाकिस्तान बना सके तो वे भी उसी नीति का अनुकरण करते हुए स्वतन्त्र खालिस्तान बना सकते हैं।

हमे इस बात का भी पता है कि कुछ पाक सेना के अधिकारियो की देख-रेख मे देश आजाद होने के एक दम बाद जिस प्रकार कश्मीर पर कबायली दुराक्रमण कराया गया था, उसी प्रकार की कार्यवाही की तैयारी पाकिस्तान मे पिछले दस सालो से योजनाबद्ध रूप से चल रही है।

इसमे अन्तर इतना ही है कि इस बार कबायलियो के स्थान पर कुछ अकालियो और उनके सहयोगी अनियमित रूप म कार्य करने वाले पाक सेना अधिकारी हैं जिनका लक्ष्य यही है कि पजाब को अशान्त क्षेत्र बनाकर अपनी योजना सफल की जाए। उनका प्रशिक्षण भी इसी उद्देश्य से हुआ है।

योजनाबद्ध प्रकार से दशमेश रेजिमैण्ट द्वारा हो रहे सुनियोजित आक्रमण, अग्निकाड, आदि सभी कुछ भविष्य मे होने वाले दुराक्रमण एव भावी युद्ध की पूर्व सूचना है।

अभी कुछ दिन पूर्व दक्षिण मे निजामाबाद मे जो आन्ध्रप्रदेश की राजधानी हैदराबाद से १०० मील दूर स्थित है, ५ उग्रवादी सिख रियासत की पुलिस द्वारा पकडे गए जिनके बारे मे पता चला है कि उन्होने पजाब मे कई हत्याए की हैं। कुछ लोगो का यह विश्वास है कि इसी प्रकार से सारे देश मे उग्रवादी सिख, अराष्ट्रीय तत्व के स्थानीय लोगो से सहयोग प्राप्त कर विनाशकारी कार्य करने के लिए समूचे-देश मे फैल रहे हैं।

देश इस समय बडी भयानक स्थिति से गुजर रहा है। सत्तारूढ दल का कर्तव्य हो जाता है कि अविलम्ब कुछ परिणामकारी कदम उठाए अन्यथा जनता का उसमे विश्वास पूर्णतया समाप्त हो जायगा। राष्ट्र मे समूचे राष्ट्रवादी सिखो के वर्ग का देश के प्रति एक विशेष कर्त्तव्य है जिसको निभाने में वे भली भाति समर्थ हैं। वह कर्त्तव्य है-राष्ट्र मे सामान्य स्थिति लाने मे सहयोग देना जिससे इने गिने कुछ अकालियो द्वारा हिंसा काडो का नग्न नृत्य समाप्त हो।

समय की माग है कि सिख भाई व्यवस्थित रूप मे मनसा-वाचा-कर्मणा इस कार्य मे सलग्न हो जाय। आर्य समाज ऐसे कार्य मे इनका पूरा सहयोग देने में सदैव तत्पर रहेगा। हमारा तो सुझाव है कि यह उचित होगा कि राष्ट्रपति इस शान्ति स्थापना के पुनीत कार्य मे आगे बढकर स्वय नेतृत्व करें।

सत्ता का यह भी कर्तव्य है कि वह पूर्णतया व्यवस्था करे कि राष्ट्र का गुप्तचर विभाग सुदृढ तथा पूणतया विश्वासपात्र हो। अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर का जो रूप आज हम सबके सामने हैं, ऐसी स्थिति मे सरकार द्वारा उस मन्दिर मे प्रवेश न करने की नीति का हम कभी समर्थन नही कर सकते। अमृतसर का स्वर्णमन्दिर परिसर जो कभी सतो की वाणी और दर्शनो का केन्द्र था आज तो राष्ट्रघाती लोगो का शरण स्थल तथा देशद्रोही लोगो का अजेयगढ बना हुआ है। आर्य समाज तो यह भी चाहता है कि सरकार और देश की बुद्धिवादी जनता पूणतया जानने लगे कि केवल अमृतसर का स्वर्णमदिर ही नही देश के अनेक ऐसे और भी गुरुद्वारे उग्रवादियो के अजेयगढ बन चुके हैं और बनते जा रहे हैं। ऐसे स्थानो मे ही ये उग्रवादी लोग अपने का सुरक्षित जानकर शरण लेते हैं। राष्ट्र क अनेक नगरो म हो रही शान्ति यात्राए इस समस्या का हल नही है।

आज तो आवश्यकता है पूर्णतया देशभक्ति भावना की। राष्ट्र के प्रति निष्ठा की तथा उग्रवादियो को कही भी किसी भी स्थिति मे आश्रय न देने की। ऐसे कार्यो मे समर्पित देशभक्तो की सुरक्षा सत्ता का परम कर्त्तव्य हो जाता है। हम जानते हैं कि उग्रवादियो पर हमारे इन शातिपूर्ण सुझावो का कोई प्रभाव न होगा। फिर भी हमारी उनसे प्रार्थना है कि विदेशियो के हाथ का खिलौना बनकर अपने देश का विनाश न करें। देश द्रोह के घृणित मार्ग को अपनाने से उग्रवादियो का नाम आज ही नही सर्वदा के लिए इतिहास मे कलकित हो जायगा।

सरदार पटेल को सत्ता के नशे म चूर निजाम के विरुद्ध पुलिस कार्यवाही करने के लिए बाध्य होना पडा। उनके सामने राष्ट्र (देश) का खण्डित होना किसी भी स्थिति म सह्य न था। हमे अत्यन्त खेद है कि जब सरकार क कुछ प्रतिनिधि लोग कहते है कि पजाब की समस्या निजाम का हैदराबाद नही है। यदि पजाब की समस्या निजाम के हैदराबाद से अधिक शोचनीय है, तो उस समस्या को हल करने के लिए तीव्रतम एव अत्यन्त प्रभावशाली कदम उठाने की आवश्यकता है।

ध्यान रहे कि अमेरिकी सैनिक सहायता के आधार पर पाकिस्तान पजाब और काश्मीर मे उग्रवादियो की आड मे भारत के विरुद्ध पूरा मोर्चा ले रहा है। उधर देश के उत्तरपूर्व म भी लगभग स्थिति चिन्ताजनक है। पाकिस्तान का उग्रवादियो के कार्य मे पूर्ण सहयोग और सहमति का भाव निम्न कारणो से स्पष्ट हो जाता है।

(१) हथियारो की सप्लाई। (२) कमाण्डो टाइप योजनाओ को बनाना और बनाकर उनके कार्यान्वियन म सहयोग देना।

भय है कि महाशक्तियो क गुटो के सघर्ष मे कही उग्रवादियो के कारण राष्ट्र मे शत्रुता पूर्ण कार्यवाहियो को निरन्तर बढावा न मिलता रहे।

अत आर्य समाज का यह विचार है कि वर्तमान स्थिति म पजाब को तुरन्त सेना के हवाले किया जाय। इसके अतिरिक्त आज आम जनता यह विचार प्रकट करती है कि क्यो न, इस समय देश मे आपातकालीन स्थिति घोषित की जाय? परन्तु इसका उपयोग केवल मात्र देश और राष्ट्र के विभाजन से सुरक्षा करना ही हो और इस कार्य मे देश के राष्ट्रवादी तत्वो का भी सहयोग लिया जाना हितकर होगा।

रामगोपाल शालवाले
प्रधान

वन्देमातरम रामचन्द्रराव
वरिष्ठ उप प्रधान

सामयिक चर्चा—

बेमतलब हंगामा

बगला देश के भगोडो को लेकर असम मे जो कुछ हुआ और हो रहा है, वह किसी से छिपा नही। पश्चिम बगाल और उत्तर-पूर्वी बिहार मे भी लगभग वैसी ही स्थिति बन रही है। बागलादेश बार-बार यह दावा कर रहा है कि उसके अपने घर के हालात भारत से बेहतर हैं, फिर क्यो कोई बागला देशी भारत जायेगा या जाना चाहेगा ? स्पष्टत हकीकत बाग्लादेश के इस दावे को झुठलाते हैं। थोडी देर के लिए मान ले कि बाग्लादेश जो कुछ कह रहा है उसमे सचाई है तो भी भारत अपनी सरहद की हिफाजत के लिए कुछ करता है, तो उसे कोई एतराज क्यो हो ? उल्टे इस आम धारणा को वल मिलता है कि बाग्लादेश भारतीय सरहद इसलिए खुला रखवाना चाहता है कि जितने लोग वहा से भाग जाये उतना ही उसका अपना सिरदर्द कम होगा। आखिर भारत ही अकेला ऐसा देश नही है, जो अपनी सीमा को घेर रहा है। और भी कई देशो ने अपनी सीमाये घेर रखी है। शायद बाग्लादेश भी यह जानता है। इसलिए वह अब एक नया शगूफा छेड रहा है। अब वहा के प्रचार माध्यमो के जरिए यह कहलाया जा रहा है भारत बाग्लादेश से लगी सरहद पर फौजी तैयारी कर रहा है। जमाते इस्लामी के छात्र सगठन ने इसको लेकर विशाल प्रदर्शन भी किए है।

क्या वहा के लोगो को इतना भी नही मालूम कि फौजी तैयारियो का एलान नही किया जाता? अगर भारत का ऐसा कोई इरादा होता तो १९७१ मे भारतीय सैनिक एक-एक कर वापस नही बुला लिए जाते। यदि बाग्लादेश को लगता है कि भारतीय बाढ से उसकी अस्मिता पर चोट पहुचती है, तो वह अपनी सरहद के उस तरफ अपनी ओर से ऐसा ही बाड क्यो नही लगा लेता ? यह बताने की जरूरत नही कि बाग्ला देश से आए लोगो के कारण ही असम मे इतनी गडबड हुई है। आसमियो की यह आशका निर्मूल नही कि 'बहिरागतो' के प्रवेश को रोका नही जाता और नाजायज ढग से आकर असम मे बसने वाले विदेशियो को निकाला नही जाता, तो असम का वर्ग या जाति तथा सास्कृतिक सतुलन बिगड जाएगा। यह आशका धार्मिक विद्वेष को भी पनपा रही है। ऐसे मे भारत हाथ पर हाथ धरकर बैठा नही रह सकना। घुसपैठ को हर तरह से रोकना जरूरी है। अगर बाग्लादेश के पास बाढ लगाने से बेहतर कोई योजना हो तो भारत के सामने रख सकता है । ऐसा न कर भारत के नितान्त अपने मामले पर इतना हगामा खडा करने से बाग्लादेश का अपना ही इरादा सन्देह के घेरे मे आ जाता है। लोग यह सोचने को मजबूर होगे कि जनरल इरशाद सैनिक तानाशाह के रूप मे अपनी कुर्सी को हिलती देख एक नया फसाद खडा करना चाहते है, ताकि लोकतन्त्र की बहाली की माग कर रहे बाग्लादेशी अवाम का रुख दूसरी ओर मोडने मे आसानी हो। (न० भा०)

लन्दन के सिखों की महारानी को अपील

इग्लैड के सिखो ने रानी एलिजबेथ को अपील की है कि वे राष्ट्रमण्डल के प्रमुख की हैसियत से इन्दिरा गाधी की गवनमेन्ट और उनकी काग्रेस पार्टी के द्वारा भारत के सिखो पर हो रहे द्वेष पूण अत्याचारो को रोकने के लिए अपने अधिकार का प्रयोग करे।

शिरोमणि अकाली दल (यू के) की कान्फ्रेंस मे जो दल की स्लाघो शाख द्वारा शीची मार्ग स्थित गुरुद्वारा श्री गुरुसिह सभा मे आयोजित की गई थी सिखो ने एक प्रस्ताव पास करके महारानी को भेजने का निणय किया।

कान्फ्रेंस की कार्यवाही ६ घण्टे तक चलती रही। अकाली दल (यू के) के नेता श्री सम्पूरनसिंह चीमा ने कहा कि भारत मे उनके धर्म पर हो रहे अन्याय पूर्ण हमलोसे सिखो की रक्षार्थ महारानी से सहायता लेने का निश्चय किया हैं। प्रस्ताव मे कहा गया है कि हम महारानी स प्रार्थना करते हैं कि वे राष्ट्रमण्डल के एक देश के जो ससार भर मे सबसे बडा लोकतन्त्र होने पर गर्व करता है कानून पसन्द अल्पसख्यक वर्ग को जिन्हें निर्दयता पूर्वक सताया जा रहा है, रक्षा करे।

श्री चीमा ने यह भी कहा कि वे महारानी से भेंट करके अपना केस उनके समक्ष प्रस्तुत करेंगे क्योकि "हम अपने भाईयों, बहिनो और बच्चों का भारत में लज्जा जनक ढगसे अपमानित किया जाना सहन नही कर सकते।" वे इसी प्रकार का प्रस्ताव प्राइम मिनिस्टिर श्रीमती थैचर को भी भेजेंगे साथ ही दोनो विधान मण्डलों (हाउस आफ लार्ड्स एव हाउस आफ कामन्स) का भी समर्थन प्राप्त करेंगे।"

हम चाहते हैं कि प्रधानमन्त्री श्रीमती थैचर हमारे केस को श्रीमती इन्दिरा गाधी (प्रधानमन्त्री, भारत) के पास भेजने में अपने प्रभाव एक अधिकार का प्रयोग करें।

यह भी कहा कि 'हम यह अनुभव करते हैं कि हमारी आवाज इन्दिरा गाधी तक थैचर के द्वारा पहुँच सकती है।

जब से सिखो ने अपनी ४० धार्मिक एव राजनीतिक मागो को मनवाने पर जोर दिया तब से ही पजाब मे बडी गडबड फैल रही है। हजारो सिख पुरुषो, महिलाओ और बच्चो ने स्वेच्छया गिरफ्तारी दी है और आन्दोलन के दौरान अनेको ने अपने जीवन की बलि दी है।

"पजाब का राजनीतिक उफान इग्लैड मे चर्चा हो गया है जहा के सिखो मे बडी चिन्ता व्याप्त है और सिखो को अन्यायपूर्ण ढग से दण्डित करने और उनकी उचित मागो को स्वीकार न करने के कारण, उन्होंने इन्दिरा गवर्नमेन्ट को अमान्य कर दिया है।

कान्फ्रेन्स मे २९ अप्रैल को लन्दन मे विरोध जलूस निकालने का भी निश्चय किया गया है।

गुरुद्वारा श्री गुरुसिह सभा स्लाघो के महामन्त्री मि० प्रीतमसिंह टाइगर द्वारा सभा का सचालन हुआ।

इसमे इगलैड स्थित अनेक सिख सगठनो के प्रतिनिधियो ने बहुसख्या में भाग लिया। (दी ओबजर्वर २३-३-१९८४)

आशा है हमारा इग्लैड स्थित दूतावास शीघ्र ही इस अनर्गल प्रचार का खण्डन करेगा।

हिंसा से मतभेद नष्ट नहीं होता

श्री राजमोहन गाधी पजाब हत्या काड के सन्दर्भ मे स्टेट्समैन (१५ ४-१९८४) मे प्रकाशित अपने लेख मे चेतावनी देते हैं कि हत्या करना मुख्यतः कठिन नही होता परन्तु चुप करना एक पृथक बात होती है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि बल प्रयोग या हिंसा से मतभेद या पाखण्ड का अन्त नही हो पाता उल्टे इससे उन्हें बल ही प्राप्त होता है और उपयुक्त समय पर उल्टे प्रहार कर देते हैं। उनका सुझाव है कि पजाब जैसी समस्याओ का हल बुद्धि तर्क और पारस्परिक विचार विनिमय से ही हो सकता है।

श्री गाधी यह भी चेतावनी देते हैं कि पजाब मे अनिश्चित समय तक हिंसा के व्याप्त होने से किसी तानाशाह का सहज ही प्रादुर्भाव हो सकता है।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

अहिंसा का वैदिक स्वरूप

—रामगोपाल शालवाले वानप्रस्थ

अहिसा का अर्थ है वैर भाव का सर्वथा त्याग वा शरीर, वचन और कर्म से किसी को पीड़ित न करना (अहिसा प्रतिष्ठाया तत्सान्नियौ वैर त्याग पातजल योग दर्शन) अहिसा जीवन का एक विशिष्ट गुण और व्यवहार का सुनहरी नियम है।

मानव प्रकृति स्वभावत अहिंसक होती है। हिंस्र पशुओ की भाति वह हिंसक नही होती। यह तथ्य भी मानव को पशुओ से ऊपर रखता है। वेद का उपदेश है कि हम सब एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखे। अहिसा वह प्रधानतम गुण है जो हमे इस शिक्षा के क्रियान्वयन मे सहायता देता है। परन्तु यह योग्यता उसके अन्दर होती है, जो वीर हो। शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर भक्ति कार्यों के सम्यक अनुष्ठान से अर्जित यह गुण वीरता, मानसिक, आत्मिक तथा बाहुबल आदि से सम्बद्ध है, जिसका दुष्टो आदि का हृदय परिवर्तन करने वा आवश्यकतानुसार उनका नाश करने मे प्रयुक्त किया जाना शास्त्रो तथा नीतियो द्वारा समर्थित है। जो स्वय दुर्बल है वह अहिसक कैसा ? यह ठीक है कि अत्याचार करने वाला हिसक है, परन्तु अत्याचार को सहन करने वाला उससे भी बढकर हिसक हुआ जो अपने शरीर और आत्मा पर हिसा करने का अवसर देता है।

हम मानव हैं, हमे हिसा का अधिकार प्राप्त नही है परन्तु आत्म-रक्षा के लिए यथावसर यदि हम हिसा का सदुपयोग करते है तो वह हिसा अहिसा बन जाती है। इस आधार पर यह भी स्वीकार करना होगा कि अहिसा का दुरुपयोग हिसा है और हिसा का सदुपयोग अहिसा है।

इस सम्बन्ध मे महामना मालवीयजी की विचारधारा मननीय है उन्होने कहा था —

'मै अहिसा जैसे जनोपकारक और मानवीय सिद्धान्त का विनम्र भक्त हू। परमात्मा के किसी निर्दोष प्राणी को दुःख देना मैं पाप समझता हू, परन्तु अहिसा के इस सिद्धान्त के अपवाद भी हैं जो बहुत प्राचीन काल से स्वीकृत हुए चले आ रहे हैं। मनु महाराज ने कहा है कि किसी निर्दोष प्राणी को दुःख नही देना चाहिए परन्तु अपने जीवन और इज्जत की रक्षा के लिए आततायियो का वध करने का मनुष्य को अधिकार है जो किसी की हत्या करने आवे, सम्पत्ति लूटे, घरो मे आग लगाए अथवा स्त्रियो के सतीत्व पर आक्रमण करे। यो न्याय शास्त्रियो ने भी इस सिद्धान्त को व्यक्तिगत रक्षा के अधिकारो के अन्तर्गत रखा है। यही सिद्धान्त भारतीय दण्ड विधान मे सन्निहित है। महात्मा गाधी ने भी जो अहिसा के सबसे प्रबल समर्थक थे कहा था कि अहिसा के शस्त्र का प्रयोग उन्ही को करना चाहिए जो बलवान हो और अपनी रक्षा करने मे समर्थ हो।"

हिसा और अहिसा का देश, काल और परिस्थिति के अनुसार व्यवहार करना ही उचित है जैसा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लिखा है —

"सबसे प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य व्यवहार करना चाहिये।"

स्पष्ट है कि हमारा व्यवहार वैर विरोध रहित होना चाहिए, परन्तु इसके साथ ही धर्म एव मर्यादाओ के अनुकूल होना चाहिये जिसमे अनिवार्य होने पर हिसा वर्जित नही है और जो अहिसा का ही रूप लिये हुये हो। इसके अतिरिक्त महर्षि दयानन्द ने यज्ञ की वेद सम्मत व्याख्या और अनुष्ठान मे भी अहिसा की वरीयता का प्रतिपादन किया और पशु बलि, नर बलि आदि दानवीय अधर्म का खण्डन किया है। क्योकि वेदो मे निर्दोष उपयोगी पशुओ की रक्षा का स्पष्ट आदेश है (मानो पशून् पाहि, वेद) प्राणि मात्र के प्रति प्रेम का उपदेश वेदो मे सर्वत्र मिलता है। वहा स्पष्ट विधान है शनो-भवद्विपदेश चतुष्पदे अर्थात् दो पाये और चोपाए सबका कल्याण हो।

अशोक की हिंसा-अहिंसा

सम्राट अशोक की अहिसा के पीछे शक्ति ही थी जिसके कारण उन्होने लगभग ४० वर्ष पर्यन्त सुशासन किया और प्रजा शान्त, सुखी और समृद्ध रही, यद्यपि उन्होने अहिसा के प्रचार का उल्लेखनीय कार्य भी किया था। दुष्टो के दलन और वाह्य आक्रमण से बचाव के लिए वे एक प्रबल सेना रखते थे और क्षात्र धर्म का समुचित रीति से पालन करते थे। दूसरे शब्दो मे वैर-भाव के विना समाज की रक्षार्थ शत्रुओको परास्त करने तथा दुष्टोके नाश आदि मे वे विश्वास रखते थे। परन्तु दुर्भाग्य से उनके बौद्ध शास्त्र के द्वारा अहिसा का गलत स्वरूप प्रस्तुत होने तथा अनुपालन किये जाने से न केवल वे ही सत्ता से वचित हुए अपितु उनकी अहिसा भारतीयो पर विदेशी आक्रमण एव उनकी गुलामी का एक बडा कारण बन गई।

नमस्ते

अभिवादन का प्रतीक

—श्री ओमप्रकाश त्यागी

आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द जी महाराज ने आर्य जाति को धार्मिक तथा सामाजिक दृष्टि से बाधने के लिए वेद और वेदागो का सहारा लिया। उन्होने निर्देश दिया कि आपस मे मिलने पर हम एक दूसरे को नमस्ते' कहे। अभिवादन का यही ढग आदिकाल मे सर्वत्र चलना था। सभी लोग इसको अपनाने मे गौरव मानते थे। वेद-शास्त्रो मे सर्वत्र इसी का प्रयोग है। महाब ब्रह्मा से लेकर महर्षि जैमिनि पर्यन्त अभिवादन मे सर्वत्र नमस्ते' का ही प्रयोग होता था।

नमस्ते' का शब्द किसी एक व्यक्ति से नही अपितु सस्कृत भाषा से निकला है। इस लिए सभी के द्वारा एक दूसरे का सम्मान करने की दृष्टि से इसीका प्रयोग होता था। इस पर आपत्ति करने का किसी ने साहस ही नहीं किया। इसके जन्म काल से ही आज तक इसके विरुद्ध किसी ने कोई शब्द नही कहा। छोटा अपने बडो का आदर इसी शब्द से करता आया है। इसी शब्द को महर्षि दयानन्द ने हम से अपनाने की अपील की।

नमस्कार या नमस्कारम का शब्द भी प्रयोग होता था परन्तु इन शब्दो को लोग भगवान की स्तुति मे प्रयोग करते थे। मनुष्य आपस मे इसका प्रयोग नही करते थे।

नमस्ते' शब्द का प्रयोग करने का आदेश महर्षि दयानन्द जी ने क्यो दिया, क्योकि उस समय अभिवादन के लिए 'राम राम' जय सीताराम, जय कृष्ण आदि अनेको प्रकार के शब्द आर्य लोग अपने अभिवादन मे प्रयोग करते थे। ये शब्द हमारे पतन काल की देन थे जिन्हे दयानन्द जी ने एक ढोग समझ कर छोड दिया। महर्षि का एक मात्र लक्ष्य आर्य जाति को इसके प्राचीन धर्म तथा सामाजिक परम्पराओ पर लाना था।

नमस्ते' शब्द के दो भाग हैं—नम ते व्याकरण के विद्वान जानते हैं तुम्हारे लिए या आदर मे आपके लिए' इस प्रकार नमस्ते का अर्थ हुआ कि आपके लिए हम नम करते हैं। नम सत्कार श्रद्धा के साथ किसी के सन्मुख झुकना होता है। नमस्ते का एकमात्र अर्थ यही हुआ कि हम एक-दूसरे का आदर करने के लिए झुकते है।

आर्य लोग अपने अभिवादन के समय अपने दोनो हाथ जोडकर अपने हृदय के पास लाते हैं, और अपने सिर झुकाकर 'नमस्ते' शब्द का उच्चारण करते हैं। इसका स्पष्ट अर्थ है कि व्यक्ति अपने हृदय मस्तिष्क तथा हाथो की शक्ति से आगन्तुक का आदर करते हैं। कहने का तात्पर्य यही कि 'नमस्ते' कहने वाला अपनी सम्पूर्ण शक्ति से आप की श्रद्धा करता है।

१९३३ मे जब अमरीका मे सर्व धर्म सम्मेलन हुआ तो उसमे सबसे

(शेष पृष्ठ १० पर)

पत्र सूचना कार्यालय भारत सरकार

शहीद सुखदेव-कुछ स्मृतियां

श्री जयदेव थापर

महान भारतीय क्रांतिकारी और उर्दू शायर रामप्रसाद बिस्मिल ने लिखा था —

"शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मिटने वालों का यही बाकी निशां होगा॥"

और वास्तव मे पंजाब के हुसैनीवाला नामक स्थान मे प्रतिवर्ष २३ मार्च को ऐसा ही होता है। यहीं पर ५३ वर्ष पहले विदेशी शासको ने शहीद भगतसिंह राजगुरु और सुखदेव की अस्थियो को मिट्टी के तेल से जलाया था। प्रस्तुत लेख में श्री सुखदेव के ७२ वर्षीय भाई श्री जयदेव थापर ने इस अमर शहीद के जीवन के अविस्मरणीय संस्मरण प्रस्तुत किये हैं।

कई बार मनुष्य कुछ बनना चाहता है परन्तु परिस्थितियां उसे कुछ और ही बना देती हैं। ऐसा ही स्वर्गीय सुखदेव के साथ हुआ। इन्हें अंग्रेज शासको ने भगतसिंह और राजगुरु के साथ २३ मार्च, १९३१ को फांसी पर चढ़ा दिया था।

अपने छात्र जीवन मे सुखदेव ने उच्च शिक्षा के लिए विलायत जाने की योजना बनाई थी, परन्तु जन्मभूमि के प्रति अपने अटूट प्रेम के कारण उन्होंने संघर्ष और त्याग का जीवन ही अपनाया।

सुखदेव का जन्म लुधियाना के एक मध्यवर्गीय परिवार मे १५ मई, १९०७ को हुआ। सुखदेव के जन्म के तुरन्त बाद सुखदेव के पिता श्री रामलाल थापर और मेरे पिता स्वर्गीय श्री बालीराम थापर लायलपुर (अब पश्चिमी पाकिस्तान मे) आ गए। यहां उन्होंने अपनी दुकान खोली। सुखदेव की मां श्रीमती रालादेवी अपने पुत्र और परिवार के अन्य सदस्यो के साथ एक वर्ष बाद आई। सन् १९१२ मे सुखदेव ने राजकीय प्राथमिक विद्यालय मे प्रवेश लिया।

जब सुखदेव सिर्फ छ वर्ष के थे, उनके पिताजी का निधन हो गया और उनका परिवार हमारे ताऊजी श्री अचिंतराम थापर के साथ रहने लगा। श्री अचिन्तराम थापर स्वयं भी सक्रिय समाजसेवी और स्वतन्त्रता सेनानी थे। सन १९१९ मे मार्शला के दौरान वे जेल भी गए थे।

सुखदेव बहुत प्रतिभाशाली थे। वे घन्टो विचारमग्न रहा करते थे। वे कुश्ती के शौकीन थे। वे स्वभाव से ही परोपकारी थ। जब वे दस वर्ष के थ तब लायलपुर मे प्लेग का प्रकोप हुआ। इतनी छोटी अवस्था मे भी प्लेग पीड़ितों की सहायता करके उन्होंने सच्चे मनुष्य का कर्तव्य निभाया। सन १९१९ मे मार्शल ला के दौरान उनके ताऊजी श्री अचिन्तराम की गिरफ्तारी से सुखदेव के मन मे अंग्रेज शासको के प्रति घृणा उत्पन्न हो गई। इस घृणा की आग मे घी का काम किया उसके प्रधानाध्यापक की इस आज्ञा ने कि सभी छात्रो को यूनियन जैक हाथ मे लिए कम्पनी बाग जाना होगा। प्रधानाध्यापक ने यह चेतावनी भी दी कि अनुपस्थित छात्रो को कड़ी सजा दी जाएगी। सुखदेव ने इस आज्ञा को न मानने का निर्णय किया और इस अपमान जनक परेड मे हिस्सा न लेने के अपने निश्चय पर अडिग रहे।

सन् १९२२ मे सुखदेव ने १५ वर्ष की अवस्था में लायलपुर के सनातन धर्म हाई स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद उन्होंने लाहौर मे जाकर आगे पढ़ने का निर्णय लिया क्योंकि उन दिनों लायलपुर मे कोई महाविद्यालय नहीं था। उन्हीं दिनो लाला लाजपतराय ने लाहौर मे पंजाब कांग्रेस के तत्वावधान मे "नैशनल कालेज' खोलने की घोषणा की, ताकि असहयोग आंदोलन में भाग ले रहे विद्यार्थी अपनी उच्च शिक्षा अबाध रूप से प्राप्त कर सकें। सुखदेव को इस कालेज मे प्रवेश लेने के लिए अपने ताऊ लाला अचिन्तराम की अनुमति चाहिए थी जो उस समय अम्बाला जेल मे दो वर्ष की कैद भुगत रहे थे। सुखदेव ने उन्हे पत्र लिखा और उन्हीं की सलाह से नवनिर्मित नैशनल कालेज मे प्रवेश ले लिया। यह कालेज लाहौर के ब्राडला हाल के समीप स्थित था। वे कालेज के छात्रावास मे रहते थे।

इस कालेज की शिक्षा व्यवस्था उन दिनों के सरकारी कालेजो से एकदम अलग थी। सरकारी कालेजों में शिक्षा का उद्देश्य "क्लर्क" बनाना था जबकि नैशनल कालेज छात्रो को राजनीति के प्रति जागरूक और देशभक्त युवा बनने की ओर अभिमुख करता था। भगतसिंह ने भी लगभग इसी समय कालेज मे प्रवेश लिया। वे साइकिल से कालेज जाते थे और वह साइकिल सुखदेव के छात्रावास के कमरे मे रखते थे। इस तरह की छुटपुट मुलाकातों से धीरे-धीरे दोनो एक सुदृढ़ मैत्रीबन्धन में बंधे और इसी आकर्षण द्वारा कालान्तर मे दोनो ही साथ-साथ फांसी के फंदे पर झूल गए।

सुखदेव कालेज के प्रशिक्षक द्वारा लाठी और भाला चलाने का प्रशिक्षण लिया करते थे, साथ ही वे नियमित रूप से कुश्ती का भी अभ्यास किया करते थे। उन्होंने बालचर आंदोलन मे भी पूरी तरह हिस्सा लिया।

नैशनल कालेज के छात्रों ने सन् १९२४ मे एक संगठन की स्थापना की जिसका काम था जनता मे राजनैतिक जागृति लाना। इस संगठन का नाम था सत्याग्रह लीग। यह संगठन व्यवस्थित भाषणो, विचार गोष्ठियों और जादुई लालटेन जैसे खेलो द्वारा लोगो मे जागृति पैदा करता था। सत्याग्रह लीग का नाम बदलकर नौजवान भारत सभा कर दिया गया और इसके कार्यक्षेत्र मे विस्तार किया गया। अब इसका काम राष्ट्रीय चेतना लाने के साथ एक भूमिगत संगठन के रूप मे कार्य करना भी था। भगतसिंह इसके सचिव चुने गए और भगवतीचरण वर्मा प्रचार सचिव चुने गए। पढ़ाई के साथसाथ सुखदेव और भगतसिंह ने भूमिगत संगठन बनाने की दिशा मे कार्य करना आरम्भ किया और इसके लिए उन्हें सदस्यो की आवश्यकता थी। इस संगठन का नाम हिन्दुस्तान रिपब्लिकन पार्टी था। सन् १९२८ के सितम्बर की रात को दिल्ली के फिरोजशाह कोटला के खण्डहरो मे इस संगठन की एक बैठक मे इसका नया नामकरण हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन पार्टी हुआ और इसकी पंजाब शाखा का अध्यक्ष सुखदेव को बनाया गया।

सुखदेव की राजनैतिक गतिविधियों का विस्तृत विवरण षडयन्त्र के मामले के गवाहों जयगोपाल, हंसराज और फणीन्द्र घोष के वक्तव्यो से मिल सकता है।

२० अक्टूबर, १९२८ को जब सर जान साइमन की अध्यक्षता मे आयोग लाहौर पहुंचा, तब लाला लाजपतराय ने इसके विरोध मे एक बहुत बड़ा जलूस निकाला। पुलिस ने भयानक लाठी-प्रहार किया जिसके फलस्वरूप १७ नवम्बर को लाला लाजपतराय की मृत्यु हो गई। उनके इस आत्म बलिदान से समूचा देश स्तब्ध रह गया और नैशनल कालेज के राजनैतिक रूप से सक्रिय छात्रो मे रोष छा गया। हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन पार्टी की पंजाब शाखा के अध्यक्ष होने के कारण सुखदेव ने दो योजनाएं बनाई। स्वतन्त्रता के इतिहास मे अंकित ये दो योजनाएं थीं पंजाब नेशनल बैंक डकैती और सांडर्स हत्याकांड। इनके बाद ही सरदार भगतसिंह और बटुकेश्वरदत्त ने ८ अप्रैल, १९२९ को दिल्ली के असेम्बली सभा कक्ष मे बम फेंका जिसके लिए उन्हे आजीवन कारावास की सजा मिली। इसके कुछ ही समय बाद १५ अप्रैल, १९२९ को पुलिस ने लाहौर मे एक बम फैक्टरी का पता लगाया और सुखदेव जयगोपाल और किशोरीलाल को गिरफ्तार कर लिया। बिना समय गंवाए पुलिस ने हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन पार्टी के सभी सदस्यो को भी गिरफ्तार कर लिया और उन सभी के विरुद्ध प्रसिद्ध षडयन्त्र मामला बनाया गया। १० जुलाई, १९२९ को यह मामला विशेष दण्डाधिकारी पंडित श्रीकृष्ण की अदालत मे प्रस्तुत किया गया। अगले वर्ष ७ अक्तूबर को विशेष न्यायाधिकरण ने फैसला दे दिया। अभियुक्त भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु को फांसी की सजा तथा अन्य अभियुक्तों को सश्रम कठोर कारावास की सजा दी गई।

२३ मार्च, १९३१ को भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु को लाहौर जेल

भारत का मुसलमान कुण्ठा मुक्त हो

—सूर्यकान्त बाली

हाल ही मे सम्पन्न अखिल भारतीय मुस्लिम शिक्षा सम्मेलन कई दृष्टियो से बडा महत्वपूर्ण रहा । भारत के मुस्लिम समाज की विभिन्न समस्याओ पर इस सम्मेलन मे खुले दिल से और वस्तुनिष्ठ भावना से विचार विमर्श हुआ । यह बात बेशक अजीब है, पर सच्चाई यही है कि आज तक जितने भी मुस्लिम सम्मेलन भारत मे हुए हैं वे या तो कुछ इस प्रकार की मागो के बारे में प्रस्ताव पास कर समाप्त हो गये जो निरर्थक थी या जिनका पूरा होना स्वतन्त्र भारत मे सम्भव नही, या फिर इन सम्मेलनो मे इस्लाम की बात ही ज्यादा कर दी गई और कर्तव्य पूरा हुआ मान लिया गया । इन सम्मेलनों मे भारत के मुसलमानो के सामाजिक आर्थिक और शैक्षिक उत्थान की बात अक्सर नहीं की गई और अगर इस तरह की चर्चाए हुई भी तो उन्हें इस्लाम के धार्मिक आवरण मे लपेट कर बडे ही निस्तेज ढग से पेश किया गया । पहली बार इस सम्मेलन मे भारत के मुसलमानो के शैक्षिक उत्थान की बात बडे ही असरदार ढग से और तथ्यपरक दृष्टिकोण से उठाई गई है ।

पिछड़ेपन की समस्या

वैसे सामान्यत किसी देश के किसी खास सम्प्रदाय के बारे मे अलग से कुछ कहना विचित्र लग सकता है, लेकिन भारत के मुसलमानो के बारे में अलग से लिखना अनेक कारणो की वजह से जरूरी है । भारत मे हिन्दुओ के बाद मुसलमान ही सबसे बडी सख्या में हैं, और कुछ जिलो मे तो वे वहा के सामाजिक और राजनीतिक जीवन मे निर्णायक भूमिका अदा करने की स्थिति मे हैं । इस प्रकार का महत्वपूर्ण सम्प्रदाय अगर सामाजिक आर्थिक और शैक्षणिक पिछडेपन मे रहता है तो उसका प्रभाव पूरे राष्ट्रीय जीवन पर पडना स्वाभाविक है । इसमे कोई सन्देह नही कि आर्थिक और शैक्षिक दृष्टि से भारत का मुस्लिम सम्प्रदाय भारत मे रहने वाले शेष लोगो के मुकाबले मे अधिक पिछडा हुआ है और अखिल भारतीय मुस्लिम शिक्षा सम्मेलन के अध्यक्ष पद से बोलते योजना आयोग के सदस्य श्री मोहम्मद फजल ने इस पिछडेपन पर ठीक ही चिन्ता व्यक्त की है ।

भारत के मुसलमानो की सबसे बडी विडम्बना यह है कि उन्हे ऐसा लगता है कि देश का विशाल हिन्दू समाज उन्हे शक की निगाह से देखता है । वास्तविकता यह है कि देश के बहुत बडे ग्रामीण इलाको मे हिन्दू और मुसलमान इस प्रकार के सम्बन्धो की छाया मे रहते हैं जहा शक की धूप अथवा सन्देहों के तनाव का नामोनिशान नहीं है । वैवाहिक सम्बन्धो को छोडकर उनमे शेष सभी प्रकार के घनिष्ठ सामाजिक सम्बन्ध है । दक्षिण भारत मे भी वहा मुसलमानों का आगमन और नितान्त मित्रता-पूर्ण ढग से हुआ था, उनके हिन्दुओ के साथ बहुत ही सहज और तनावहीन सम्बन्ध है, परन्तु उत्तर भारत के कुछ कस्बो और शहरो मे इस प्रकार की सहज सामाजिकता के दर्शन कम होते हैं ।

मुसलमानो को अगर इस प्रकार की भावना कचोटती है कि हिन्दू उन्हे शक की निगाह से देखता है तो यह नितान्त अकारण भी नही है । जहा दक्षिण भारत मे मुसलमानो का आगमन मित्रतापूर्ण वातावरण मे हुआ वहा उत्तर भारत मे मुसलमानो का आगमन क्रूर आक्रमणकारियो के रूप मे हुआ । देश के अनेक मुसलमान शासको ने हिन्दुओ पर अथाह जुल्म ढाए और मन्दिरो को तोडकर उनकी भावनाओं के साथ खिलवाड किया । फिर १९४७ से पहले का मुस्लिम लीग का इतिहास और परिणामस्वरूप देश का विभाजन उन्ही क्रूर मुस्लिम शासको की परम्परा के साथ जोडकर देखा गया ।

परन्तु हमे यह सचाई भी नही भूलनी चाहिए कि कुछ अदूरदर्शी व्यक्तियो और हिन्दू तथा मुस्लिम सगठनो की बात छोड दें तो देश का आम हिन्दू और मुसलमान आपस मे कोई द्वेष या दुश्मनी नही रखता । भारत के हिन्दू और मुसलमान भारत के पुत्रो के समान रहे—जहा इसकी जिम्मेदारी हिन्दुओ की हैं वहा मुसलमानो की भी उतनी ही उससे अधिक जिम्मेदारी है । भारत के मुसलमानो को अपनी सही भूमिका निभा पाने के लिए कुछ आधारभूत विचारो को अपनाना जरूरी है । सबसे पहली बात यह है कि मुसलमानो को यह बात समझनी चाहिए कि १९४७ के विभाजन की भूल बैठ जाने के बाद उनका भाग्य और भविष्य अब इसी देश के साथ जुडा हुआ है । भारत के और स्वय उनके अलावा कोई भी उनका विकास नही कर सकता । बेशक इस्लाम विश्वव्यापी धर्म है पर उस हिसाब से तो प्रत्येक धर्म विश्वव्यापी है । इससे यह तथ्य छिप नही जाता कि हिन्दुओ के समान मुसलमानो की सामाजिक और आर्थिक उन्नति इसी देश के सामाजिक और आर्थिक तन्त्र के अन्तर्गत होगी इस तन्त्र से पृथक रह कर नही ।

गलत धारणा

दूसरी आधारभूत बात यह है कि भारत के आम मुसलमानो को इस भावना से मुक्त होना होगा कि वे कभी भारत के शासक थे और आज उन पर दुर्भाग्य आ पडा है । सच्चाई यह है कि भारत के मुसलमान इस देश की सतान है और इस स्थिति मे शासक या शासित की भावना से कुछ भी ० सीच होने वाला नही है । वास्तव मे केवल भारत के मुसलमान शासक ही

मे फासी पर लटका दिया गया । फासी के तख्ते पर वे यह कहते हुए चढ गए कि 'खुश रहो अहले वतन हम तो सफर करते हैं ।"

फासी से एक दिन पूर्व उनके सभी रिश्तेदार और मित्र केन्द्रीय कारावास के दरवाजे पर अन्तिम भेंट के लिए एकत्रित हो गए परन्तु ऐसा लगता था कि जेल अधिकारियों को अग्रेज शासको की ओरसे इस भेंट के लिए अनुमति न देने के आदेश मिले थे अत सभी लोग दोपहर दो बजे के लगभग निराश होकर लौट आए । हमारे रिश्तेदार पास ही श्री के० सचावन के घर गए । हमने यह सपने मे भी नही सोचा था कि हमारे देश के तीन होनहार सपूतो को नियम के विरुद्ध उसी शाम को फासी दे दी जाएगी ।

एक प्रत्यक्ष गवाह श्री दयानतराय हाडा—जो केन्द्रीय जेल मे पजाब षडयन्त्र मामले मे विचाराधीन कैदी थे—के अनुसार 'जेल अधीक्षक मोहम्मद अकबर खान ने साय ४ ३० बजे हमे कहा कि जेल निरीक्षक निरीक्षणके लिए आ रहे हैं अत हम अपने रिश्तेदारो से जल्दी ही मुलाकात समाप्तकर लें । राजगुरु, सुखदेव और भगतसिंह को हमारे बैरक के बिल्कुल सामने वाले सेलो मे रखा गया था । जेल अधीक्षक के आदेश के तुरन्त बाद ही सुखदेव को भगतसिंह से यह कहते सुना गया, 'सरदार जी, वे लाग आ गए" यह सुनते ही राजगुरु चिल्लाए "झण्डा ऊचा रहे हमारा" और भगतसिंह चिल्लाए "यूनियन जैक मुर्दाबाद" इसके बाद तीनो ही नारे लगाने लगे "इन्कलाब जिन्दाबाद", "साम्राज्यवाद मुर्दाबाद" । इनके साथ हमारे बैरक के २६ कैदी भी नारे लगाने लगे । इसके बाद बिल्कुल मौन छा गया । भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव को सभी नियमो के विरुद्ध सेल से निकाला और जेल की भीतरी दीवार के साथ बने फासी घर तक ले जाया जाने लगा । तीनो ने फिर नारे लगाए जिसका प्रत्युत्तर सभी कैदियो ने दिया ।"

"बाद में हमे पता चला कि तीनो शहीदो के शवो को २३ मार्च की रात को टुकडो मे काटकर बोरियो मे भरकर हुसैनीवाला मे सतलज के किनारे एक फौजी ट्रक मे ले जाया गया । हुसैनीवाला मे इन शवो को कंकरीट के सडक मे रखकर मिट्टी का तेल छिडककर जला दिया गया ।

यह खबर जगल मे आग की तरह फैल गई और २४ मार्च को पजाब मे कांग्रेस कमेटी और सेवा दलके सभी दफ्तरो के झण्डे उनके सम्मान मे झुका दिये गए । लाहौर में उनके शोक मे निकले जुलूस मे लगभग एक लाख लोगो ने भाग लिया । तीन तिरगो के नेतृत्व मे यह जुलूस रावी नदी के किनारे एकत्र हुआ । यहां राष्ट्रीय नेताओ ने तीनो शहीदो को श्रद्धाजलि दी ।

हर वर्ष २३ मार्च को उस जगह सरकार द्वारा एक विशाल शहीद मेले का आयोजन होता है जहा शहीदो के शवो को निर्दयता पूर्वक जलाया गया था और यही क्रांतिकारी और महान शायर बिस्मिल कह गए थे—

"शहीदो की चिताओ पर लगेंगे हर बरस मेले ।
वतन पर मिटने वालो का यही बाकी निशा होगा ॥ ■

विदेशी थे जो स्वयं को इस भावना से कभी मुक्त नहीं कर पाए कि उन्होंने तलवार के जोर पर इस देश को जीता है। इतिहास कितना भी कड़वा हो, वह सच्चा होता है। उस पर कोशिशों से डाला गया पर्दा आखिर खीसता है और सचाई प्रकट हो ही जाती है। भारतीय मुसलमानों की ९५ प्रतिशत से अधिक आबादी इसी देश के पुत्र हैं जो उस समय के विदेशी शासको की तलवार की क्रूरता द्वारा धर्मान्तरित कर दिये गये। इस लिए भारत के मुसलमानो के अपना स्वाभाविक भारतीय जीवन बिताने के लिए स्वय को इस गलत धारणा से मुक्त कर लेना चाहिए कि वे कभी इस देश के शासक थे। उन्हे स्वय को इस देश की सन्तान मानकर सहज जीवन यापन का अभ्यास कर लेना चाहिए।

भारत के मुसलमानो को एक और आधारभूत बात यह समझनी चाहिए कि यहा उनके सामाजिक जीवन को बहुसख्यक हिन्दू समाज से कोई खतरा नही है। इस्लाम के भारत प्रवेश के बाद का सारा इतिहास साक्षी है कि हिन्दू समाज ने या हिन्दू शासको ने कभी भी मुसलमानो के सामाजिक जीवन मे विघ्न नही डाला। भारत ने अपनी उसी स्वाभाविक परम्परा का पालन करते हुए सविधान मे सामाजिक जीवन की सुरक्षा मुसलमानो को दे रखी है। बेशक वोट की राजनीति का व्यापार करने वाले अनेक नेता और दल अक्सर मुसलमानो को बिना वजह याद दिलाते रहते हैं कि भारत में उनका जीवन खतरे मे है। लेकिन किसी भी प्रमाण से इस कल्पना को सही सिद्ध नही किया जा सकता।

वास्तव मे भारत के मुसलमानो की यही असली समस्या है कि उन्होने जिस प्रकार के नेतृत्व और जिस प्रकार की राजनीति के हाथ मे अपनी किस्मत की चाबी सोप रखी है उसी से उनकी उन्नति का मार्ग बन्द हुआ पड़ा है। मुसलमानो के धार्मिक नेतृत्व ने उन्हे हमेशा काल्पनिक खतरो से भयभीत किये रखा है और दूसरी ओर उन्होंने जिस प्रकार की राजनीति का आश्रय ले रखा है उससे मुसलमानो ने स्वय को कभी एक तो कभी दूसरे राजनीतिक दल द्वारा उपयोग किये जाने के लिए मानो खुला रखा हुआ है। नही तो क्या कारण है कि भारत की राजनीति मे मुसलमान एक सगठित वोट बैंक के अलावा अपनी और कोई पहचान नही बना पाए और आजादी के संतीस साल बाद भी मुसलमान शैक्षिक और आर्थिक दृष्टि से लगभग उसी मुकाम पर खड़े हैं जहा वे १९४७ में थे।

धार्मिक नेतृत्व

यह एक बहुत बड़ा सवाल हैं जिसका जवाब दे पाने के लिए भारत के मुसलमानो को कुण्ठामुक्त होकर सोचना पड़ेगा। उन्हे यह अनुभव करना है कि धार्मिक नेतृत्व पिछड़ेपन और कठमुल्लेपन की निश्चित गारन्टी है। ईरान और पाकिस्ताक के उदाहरण हमारे सामने हैं। इसी प्रकार मुसलमानो को यह भी अनुभव कर लेना चाहिए कि यदि वे अपनी राजनीति को सगठित वोट बैंक के रूप मे ही सजोए रखेंगे तो इससे सत्तासुख का भोग राजनीतिक दल करते रहेगे और बदले मे उन्हें आर्थिक पिछड़ापन, धार्मिक उन्माद, सामाजिक दिशाहीनता और शैक्षिक सकीर्णता दी जाती रहेगी। पिछले सैंतीस वर्षों का इतिहास साक्षी है कि उन्होने राजनीतिक दलो को सत्ता थमाई है और बदले मे निरन्तर पलने वाला सर्वतोमुखी पिछड़ापन हासिल किया है। सगठित वोट बैंक वाली कूपमण्डूकी राजनीति का परित्याग कर उन्हे स्वय को मुद्दो की राजनीति से जोड़ना चाहिए—शेष भारतवासियो के समान।

इस सारी पृष्ठभूमि मे अखिल भारतीय मुस्लिम शिक्षा सम्मेलन मे कही गई बातो का महत्व बहुत अधिक बढ जाता है। अध्यक्ष श्री मोहम्मद फजल ने दो बातो का उल्लेख खास तौर से किया। उन्होने एक बात यह कही कि मुसलमानो को परिवार नियोजन उपाय अपनाने के लिए शिक्षित करने के उद्देश्य से जोरदार प्रचार कार्यक्रम शुरू किए जाए। चुकि यह बात एक मुस्लिम अर्थशास्त्री ने कही है अत भारत के मुसलमानो के लिए इसका महत्व और भी बढ जाता है। भारत मे पृथक धर्मावलम्बियो के लिए सामाजिक कानून भी अलग होने चाहिए—इस धारणा की वैज्ञानिकता के बारे मे दो मत हो सकते हैं। लेकिन मुसलमानो के व्यक्तिगत कानून मे जिस प्रकार बहुविवाह की प्रथा अन्तर्निहित है उसे देखते हुए परिवार नियोजन की आवश्यकता और भी अधिक रेखांकित हो जाती है। जिस प्रकार भारत के शेष सभी धर्मावलम्बियो ने अपने धर्म के दायरे को सकुचित न करते हुए भी परिवार नियोजन को अपनाकर आर्थिक समृद्धि की ओर कदम बढाया है, उसका अनुकरण भारत के इस्लाम धर्मावलम्बियों को भी करना चाहिए।

श्री मोहम्मद फजल ने भारत के मुसलमानो को शैक्षिक दृष्टि से भी आगे बढने की जबर्दस्त प्रेरणा दी है। मानो इन्हीं के प्रेरणापूर्ण कथन को साकार करने के लिए अखिल भारतीय मुस्लिम शिक्षा सम्मेलन ने एक पचवर्षीय योजना तैयार की है जिसके अन्तगत दो मेडिकल कालेज, कुछ इजीनियरिंग कालेज तथा हर उस जिले मे जहां मुसलमान काफी हैं एक कालेज खोलने का प्रस्ताव किया है यह वास्तव मे एक उत्साह वर्धक योजना है। इससे मालूम पड़ता है कि भारत के जागरुक मुस्लिम बुद्धिजीवी मुसलमानो के शैक्षिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिए कृत सकल्प है। पर इस प्रशसनीय सकल्प शक्ति मे भी एक कमजोरी नजर आती है। वह कमजोरी यह है कि इस योजना मे मुसलमानो की शिक्षा को शेष भारतीयो की शिक्षा से अलग करके देखा जा रहा है। भारत मे अनेक मेडिकल कालेज और इजीनियरिंग सस्थान हैं तथा सैकड़ो कालेजो का जाल पूरे देश मे बिछा हुआ है। इन सबके रहते हुए भी मुसलमानो के लिए अलग शिक्षा सस्थाए खोलकर मुस्लिम समाज मे शिक्षा को अधिक कारगर ढग से फैलाया जा सकेगा—यह एक भ्रान्ति है। ऐसा लगता है कि इस शिक्षा सम्मेलन ने शायद इस तथ्य की ओर दृष्टिपात नही किया है कि अलीगढ़ और जामिया मिलिया इस्लामिया जैसे मुस्लिम विश्वविद्यालय होने के बावजूद इस समाज मे शिक्षा का वैसा विकास नही हो पाया जैसी अपेक्षा थी। वास्तव में भारत के मुसलमानो मे आधुनिक स्तर की शिक्षा का प्रसार हो, इसके लिए भारत में शिक्षा सस्थाओ की कमी नही हैं। कमी केवल शैक्षिक मानसिकता की है।

नौकरियों में आरक्षण

जिस प्रकार भारत के मुसलमानो के शैक्षिक विकास के लिए पृथक शिक्षा सस्थाए खोलने की कोई खास जरूरत नहीं है उसी प्रकार नौकरियों आदि मे आरक्षण की भी कोई जरूरत नहीं है। नोकरियो मे कोई आरक्षण की माग पूरे मुस्लिम समाज के आत्मविश्वास की कमी को दर्शाती है। आजादी से पहले अग्रेज यदि इस प्रकार की आरक्षण व्यवस्था के पक्ष मे थे तो यह उनकी 'फूट डालो और राज करो' की राजनीतिक चाल भर थी। आज भी जो नेता और दल मुसलमानो के नौकरियों मे आरक्षण की बातें करते हैं वे भी केवल अपनी राजनीतिक रोटी सेकने के लिए मुस्लिम समाज को भुलावे मे रखे हुए हैं।

भारत के मुसलमानो का भारत राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक और सास्कृतिक विकास के लिए हर प्रकार की कुण्ठा से मुक्त होकर आगे बढना है। तीसरी दुनिया के देशो मे से भारत ने विज्ञान, तकनालाजी, कृषि और उद्योग के क्षेत्रो मे जिस प्रकार की चमत्कारी उपलब्धिया हासिल की हैं उनके रहते हुए साम्प्रदायिक दृष्टिकोण, नौकरियो मे सम्प्रदाय के आधार पर आरक्षण शिक्षा का धार्मिक ताना-बाना, धर्मान्तरण की कोशिशे, एक ही देश के विभिन्न वर्गों मे शासक अथवा शासित का भाव—यह सारा सोच दकियानूसी और पिछड़े पन का प्रतीक माना जा रहा है। भारत का विशाल हिन्दू समुदाय अपने भीतर के दोषो पर स्वय निर्णायक प्रहार करता हुआ भारत राष्ट्र के बहुमुखी विकास मे जबदस्त योगदान कर रहा है। हिन्दुओ के समान मुसलमान भी इसी देश के पुत्र हैं, इसी देश की मिटटी की सन्तान हैं। उन्हे भी शेष देशवासियो के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर देश की आर्थिक, राजनीतिक और सास्कृतिक उन्नति के लिए सभी प्रकार की कुण्ठाओं, ऊचनीच की भावनाओ और धर्म की प्रतिगामी परिभाषाओ से मुक्त होकर आगे बढ़ना चाहिए। इस देश का इतिहास, सस्कृति, साहित्य और दर्शन, उद्योग विज्ञान और तकनालाजी मुसलमानो के भी उतने ही हैं जितने शेष भारतीयों के हैं। अखिल भारतीय मुस्लिम शिक्षा सम्मेलन ने मुसलमानों के सामाजिक और शैक्षिक विकास का सही मानचित्र खींचा है। इस प्रकार के सम्मेलन भारत के और जिलों में होने की जरूरत है।

अछूत नहीं : पारसमणि

१९३२ की एक सत्य घटना पर आधारित

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

(गताक से आगे)

(२)

सब लोग आनन्द के उत्तर की प्रतीक्षा मे थे। आनन्द के हृदय मे भीतर से उमडने वाले उस अनुराग की हिलौरे मार रही थी जिसका पुनीत आधार रूप नही वरन आर्य समाज की पद्धति और शिक्षाओ के अनुसार गुण, कर्म और स्वभाव था। उसने साफ साफ कह दिया-मुझे प्रकाश से प्रेम है परिवार के लोग मुझे भले ही छोड दें, मैं प्रकाश को नहीं छोड सकता।

\+ + +

माता रोगशय्या पर पडी थी। पुत्र माता के उपचार मे तन्मय था। कई रातें जागते हुए गुजर गयी थी। माता की दशा से पुत्र चिन्तित था। भावी अमगल की कल्पनाओं से उसका हृदय व्यथित हो उठता था। शहर का सबसे बडा डाक्टर आया। परीक्षा की गई। हृदय पर आघात और कमजोरी का निदान किया गया। हृदय के फेल हो जाने का भय बतलाया गया। दृढ निश्चयी पुत्र के सामने माता का प्रेम दुलार, मातृ प्रेम की मजुल स्मृतिया माता की आशाए प्रत्याशाए और माता के पुत्र के ऊपर अधिकार की भावनाए मूर्तिमान होकर उपस्थित हो गई, आनन्द ने एकात मे जाकर कई दिनोंसे बरबस रोके हुए अश्रु बन्ध को ढीला किया। खूब रोया। आसुओ को पोछता हुआ माता के निकट आया। माता की आखो मे आसू भरे थे। "भय्या तेरा और भय्यन का ब्याह न देख सकी" यह कहकर रोने लगी।

"क्यो अम्मा—यह क्या कहती हो ?

'मैया ठीक कहती हू। तू हमे छोड रहा है। भय्यन का अभी देखा ही क्या है ?"

'अम्मा यह मत कहो। तुम मुझे छोड सकती हो। पर मैं तुम्हे नही छोडूगा।"

"अरे क्यो मेरा मन रखता है ?

मैं सच कहता हू। मैंने खत भेजकर मना लिख दिया है।

आनन्द के इस वाक्य ने सजीवनी बूटी का काम कर दिया। माता की दशा मे परिवर्तन हुआ। हृदय को शान्ति मिली और वह कुछ दिनो के बाद पूर्ण स्वस्थ हो गयी।

× × +

प्रेम का इतिहास निराश प्रेमियो की आत्म हत्याओ की रोमाचकारी घटनाओ से परिपूर्ण है। इन घटनाओ की तह मैं प्राय वासनामय अतृप्त प्रेम का स्वाग, प्रेम का व्यापार, प्रेम का ढोग और भावुकता का उबाल होता है। इस प्रेम के उन्माद मे मनुष्य अपने आपको और अपने कर्तव्यो को भूल जाता है। उसका हृदय निराश और आत्मग्लानि के भावो से भर जाता है और वह सहसा आत्महनन के जघन्य पाप की ओर अग्रसर हो जाता है। प्रकाश का प्रेम स्वाभाविक था। वासना या विलास उसे छू तक न पाया था। वह प्रेम की हाट मे खडी थी। सौदा करना नही जानती थी। उसके हृदय मे शुद्ध सस्कारो के ग्रहण करने की शक्ति थी, क्षमता थी। वह अपने हृदय को अपने प्राणो को और अपने शरीर को आनन्द बाबू पर अर्पण कर चुकी थी उसे अपनी देह पर कोई अधिकार नही रह गया था फिर क्यो कर उसे निःशेष कर सकती थी। ऐसा करना वह आनन्द के प्रति विश्वासघात और भारतीय नारीके आदर्श के प्रतिकूल समझती थी। उसने अपने अरमानो को और अपनी उमगो को आनन्द की इच्छा पर बलि दे दी। वह अपने कर्तव्य को नही भूली। उस घोर निराशा मे भी आनन्द का ही बने रहने और अविवाहित जीवन बिताने का भीषण निश्चय कर लिया। प्रेम का स्वाभाविक और कर्तव्य पर अग्रसर करने वाला पहलू यही है। यह प्रेम-प्रेम ही था, उन्माद न था।

प्रकाश अपनी विधवा माता की एकमात्र पुत्री थी। प्रकाश के पिता की विपुल सम्पत्ति की अधिकारिणी प्रकाश थी। घर मे माता प्रकाश और प्रकाश का एक निकट सम्बन्धी भाई था। प्रकाश के निश्चय से घर के दोनो प्राणी बहुत दुखी और चिन्तित थे। अनेक उपाधिधारियो ने प्रकाश की माग पेश की। प्रकाश माहब्बत चापलूसी और इज्जत की चार दीवारी से घिरी थी। रग महलो और सम्पन्न घरानो मे स्त्रियो पर होने वाले पाशविक अत्याचारो और उनके मूकरोदन से परिचित थी। बन्दी की तरह राजप्रासादो मे विहार और विलास करने की अपेक्षा कगाल की झोपडी मे स्वच्छन्द जीवन व्यतीत करना अच्छा समझती थी। अनेक प्रकार के उसे प्रलोभन दिए गए परन्तु उसने तथा उसके आदर्श ने सबको ठुकरा दिया। भाई और माता विवश थे, लाचार थे।

अस्तबल की घटना बडी घटना न थी। ऐसी या इससे भयकर घटनाऐ हम प्रतिदिन देखते और सुनते हैं। किसी पर ये घटनाए प्रभाव डालती हैं और किसी पर नही। मनुष्य के जीवन के साथ घटनाओ का बडा सम्बन्ध होता है। घटनाए जीवन की धारा को बदल देती हैं। उस घटना से आनन्द के हृदय पर बडा असर हुआ था। उसके हृदय मे दया थी, करुणा थी परन्तु यह उसके हृदय की वस्तु थी। वह दूसरो के दुखो और क्लेशो को देखकर द्रवीभूत हो सकता था परन्तु उनके दुखो को बटाने या दूर करने के लिए मैदान मे आना उसके लिए कठिन था। अब वह कालेज से छुटटी पाने पर निकटवर्ती ग्रामो मे जाता और गाव के दुखी लोगो विशेषकर अछूतो के दुखो को सुनता और दूर करने का यत्न करता था तथा अछूनो मे सफाई रखने का, मद्यपान और मास भक्षण निषेध तथा सामाजिक करीतियो के दूर करने का विशेष यत्न करता था। उनके साधारण नागरिक अधिकारो को दिलाये जाने का कभी-२ यत्न करता। गाव के उच्च वर्ण के लोग उससे बहुत जलते थे।

रविवार का दिन था। कालेज की छुट्टी थी। आनन्द नरेला ग्राम मे पहुँचा। अछूत लोग कुए पर चढने वाले थे। गाव के लठैत बन्द भी तैयार थे। अछूतो के होश उड गए। किसी का साहस कुए पर चढने का न हुआ। एक एक करके घर की ओर जाने लगे। आनन्द अकेला रह गया। लठैत बन्दो को मौका मिला। उनके लट्ठ आनन्द के सिर पर टूट पडे। बेचारा अधमरा होकर पृथ्वी पर गिर पडा। गाव वालो ने सलाह करके उसे पक्की सडक पर डाल दिया जिससे किसी मोटर या लारी के नीचे दब कर मर जाय और वे खून के जुर्म से बरी रहें।

रात के ८ बज चुके थे। अन्धेरी रात थी। नरेले की ओर से वेग के साथ एक मोटर आ रही थी। एक नवयुवती मोटर चला रही थी। सहसा ही मोटर रुकी। नवयुवती और दूसरा मनुष्य गाडी से उतरे। खून से लथपथ लाश के निकट पहुँचे। आनन्द को देखकर प्रकाश की चीख निकल गई। आनन्द की नब्ज देखी। छाती पर हाथ रखा। आनन्द का जीवन दीप बुझा न था। बुझा चाहता था। भाई और बहन ने आनन्द को उठाकर गाडी मे रखा और हस्पताल मे ले गए। आनन्द के सिर मे ११ टाके भरे गये।

आनन्द की मरणासन्न अवस्था का समाचार सुनकर माता पिता भाई बहिन सब देहली को चल दिये। दोपहर के बारह बजे अस्पताल के निकट गाडी पहुची। आनन्द को देखकर माता फूट फूट कर रोने लगी। प्रकाश ने उठकर माता के चरण छुए। प्रकाश की माता ने समस्त घटना कह सुनाई और सान्त्वना दी। उसने बतलाया कि वह और उसकी पुत्री पिछली रात से एक क्षण के लिए भी वहा से नही हटे। डाक्टर ने कह दिया हैं कि खतरे की कोई बात नही है। आनन्द के पिता फूले न समाये। उनका हृदय भर आया। नेत्रो मे आसू आ गए। प्रकाश और उसकी माता की ओर सकेत करके आनन्द की माता से बोले "देखती हो इस जग मे अभी भी देवता हैं। गर ये न होते तो आज तुम आनन्द को इस दुनिया मे न देख पाती।'

(क्रमश)

गोरक्षा सम्मेलन

मेवात सुधार गोरक्षा सघर्ष समिति ग्राम रनसीका तहसील फरीदाबाद के तत्वावधान मे गोरक्षा सम्मेलन सम्पन्न हुआ जिसमे स्वामी शक्तिवेश जी स्वामी शान्तानन्दजी प० मूलचन्द वानप्रस्थी आदि-आदि नेभाग लिया।

आर्य समाजों की गतिविधियां

अभिनन्दन-पत्र

आर्य समाज सुनेल, राजस्थान ने श्रीयुत साधूराम जी बहुत सभी भवानी मण्डी को उनकी सराहनीय जल सेवा एवं अन्यान्य जनोपकारक कार्यों के आदर स्वरूप एक अभिनन्दन-पत्र भेंट किया है। श्री साधूराम जी भीषण परिस्थितियों मे ग्रस्त रहकर भी लोकोपकार के कार्य में दृढता पूर्वक संलग्न रहे। यद्यपि उनका शरीर वृद्ध है परन्तु उनकी कर्मठता युवकों जैसी ही बनी हुई है। वस्तुत: उनके द्वारा व उनकी देखरेख में हुए जनोपकारक कार्य से न केवल उनका ही अपितु समूचे नगर का सम्मान बढा है। इस समय समाज के मन्त्री श्री मोहनलाल आर्य हैं तथा प्रधान श्री बालासिंह आर्य।

सम्पन्न उत्सव

—आर्य समाज पंखा रोड सी ब्लाक जनकपुरी के तत्वावधान मे रविवार दिनाक १ अप्रैल १९८४ को आर्य समाज भवन निर्माण कार्य आरम्भ हुआ इस समारोह की अध्यक्षता श्री सरदारीलाल जी ने की इस अवसर पर कुछ दानी महानुभावो ने दान की घोषणा की।

—गया जिला आर्य सभा द्वारा १२ एवं १३ मार्च को वेद प्रचार कार्य सम्पन्न हुआ।

—दयानन्द बाल मन्दिर बिलौना रूप (बुलन्दशहर) मे होलीका आयोजन किया गया। इसमें रग एवं अभद्र होली खेलने का बहिष्कार किया गया।

—आर्य समाज बहजोई का ७ मार्च १९८४ को उत्सव सम्पन्न हुआ। उत्सव के उपरान्त चुनाव सम्पन्न हुआ प्रधान श्री चन्द्रपाल आर्य, मन्त्री श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य, कोषाध्यक्ष डा० लवकुमार आर्य।

(पृष्ठ ५ का शेष)

पहले यही निर्णय किया गया कि सम्मेलन में भाग लेने वाले आपस मे अभिवादन के लिए किस शब्द का प्रयोग करें। आर्य समाज की ओर से वेदो के विद्वान पूज्यपाद श्री प० अयोध्या प्रसाद जी ने 'नमस्ते' को प्रस्तुत किया। उनके शब्दो को सुनकर सभी लोगों ने इसे स्वीकार किया।

मुरादाबाद मे महर्षि दयानन्द जी की 'नमस्ते' शब्द पर ही श्री इन्द्रमन जी से बाते हुई। महर्षि ने उन्हे उत्तर देते हुए कहा कि 'इन्द्रमन जी। अभिमानी पुरुष बडा नही होना बडा वही है जिसने अपने अहकार को जीता, जो वास्तव मे जो बडेहैं अपने बडप्पन को आप प्रकट नही किया करते हमारे पूर्व जनो मे जितने भी ऋषि महर्षि और राजे महाराजे हुए हैं—उनमे से एक ने भी अपने मुख से अपनी बडाई नही की।

नमस्ते का अर्थ पैर पकडना नही है, इसका अर्थ है सम्मान सत्कार करना। सभी ऊ च नीच और छोटे-बडे मेल मिलाप मे समान सत्कार के भागी हैं। सर्वत्र होता भी ऐसा ही है। अच्छा आप ही अपने अन्त:करण मे कहे कि जब कोई मनुष्य आपके आवास पर आता है तो उस समय आप के हृदय मे क्या भाव उत्पन्न होता है श्री इन्द्रमन जी मौन साधे रहे। तब स्वामी जी ने फिर कहा महाशय इस बात को सभी जानते हैं कि जब कोई पूज्य और प्रतिष्ठित मनुष्य घर पर आता है तो उसे देखकर झुककर सम्मान देने को मन करता है। पुत्र से प्यार करने का भाव उत्पन्न होता है नौकर चाकरो को आइए बैठिए आदि शब्दो से सम्मानित करने की हृदय-प्रेरणा करता है। ऊपर कहे सारे भावों का प्रकाश 'नमस्ते' से प्रकट हो जाता है परन्तु उस समय परमेश्वर का नाम लेना असगत है। आत्मगत भावो के विपरीत है। जो भाव भीतर हो उसी को प्रकट करना शोभा देता है। पुरातन काल मे आर्य लोग नमस्ते ही कहा करते थे। यह शब्द वेदो मे भी अनेक बार आया है। आर्य जनों मे इसी का प्रचार होना चाहिए।"

इसीलिए आपस मे मिलने पर हमें 'नमस्ते' ही कहकर अभिवादन करना चाहिए। नमस्ते शब्द वेद तथा शास्त्रों द्वारा मान्यता प्राप्त सक्षिप्त सार्थक तथा कानों को अच्छा लगने वाला अभिवादन है। नमस्कार या नमस्कारम नही। इस विषय को हम विस्तार में न ले जाते हुए यहीं पर विराम देते हैं"

आर्य साहित्यकारों का विश्व कोश

मैं आर्य समाज के उन सभी दिवंगत एवं वर्तमान लेखकों का एक विशेष कोश तैयार कर रहा हूं जिन्होंने किसी भी भाषा मे आर्यसमाज तथा महर्षि दयानन्द विषयक ग्रन्थ लिखे हैं। यह कार्य अत्यन्त परिश्रम साध्य है। बड़ी कठिनाई तो यह है कि परलोकवासी लेखको की जन्म एवं मृत्यु की तिथियां तक उपलब्ध नहीं हैं। मेरा आर्य समाज के वर्तमान साहित्यकारों से निवेदन है कि वे इस विज्ञप्ति को पढ़ने का कष्ट करें तथा स्वजीवन तथा लेखन का विवरण मुझे भेजें।

—डा० भवानीलाल भारतीय
जी० ३ सेक्टर १४ चण्डीगढ़

भिंडरां, लौंगोवाल पक्षों द्वारा एक दूसरे पर भरपूर हमले

अमृतसर, १४ अप्रैल। इस बार बैसाखी के पर्व पर स्वर्ण मन्दिर के अन्दर इश्तिहार की बजाय इश्तहारों की लड़ाई का एक अजीब नजारा दिखाई दिया। स्वर्ण मन्दिर परिसर पर कब्जा जमाए बैठे सिखों के विभिन्न गुटों ने एक दूसरे पर सिखों के हितों के विरुद्ध काम करने का आरोप लगाया और कहा कि वे ये सब कुछ-एक ओर हिंदू साम्प्रदायिक तत्वों की और दूसरी ओर इ का की शै पर कर रहे हैं।

हरजीत सिंह भिंडरावाला के बेटे ने धर्मयुद्ध मोर्चे के डिक्टेटर श्री लोंगोवाल को एक इश्तहार में सारे हालात लिखा की खबर अब्बर अकाल ने श्री अपने एक इश्तहार में भिंडरां से आठ सवाल पूछे हैं जिनका जवाब कब, कैसे और किस रूप में दिलेगा—कोई नहीं जानता।

श्री गुरचरण सिंह लोंगोवाल ने बृहस्पतिवार की शाम को गुरुद्वारा मंजी साहिब के दीवान में भिंडरां के अनुयायियों पर सीधा वार करते हुए कहा कि जो व्यक्ति अकाली दल के नेतृत्व के खिलाफ इश्तहार छाप रहे हैं, वे कायर हैं। अगर उनमें कोई दम होता तो वे इश्तहारों पर अपने नाम देते। इन व्यक्तियों और भौंकते कुत्तों में कोई फर्क नहीं है।

सरकारी टुकड़ों पर पलने वाले

पंजाबी में प्रकाशित चार पृष्ठो के इश्तहार मे जिस पर भिंडरां का चित्र है, कहा गया है कि जब सिखों ने हरियाणा मे अपने अपमान का बदला लेने का प्रयास किया और निरंकुश पुलिस अधिकारियो और सिख विरोधी ताकतों का सफाया करने का काम हाथ मे लिया तो सरकारी टुकड़ों पर पलने वाले और हिन्दू साम्प्रदायिकवादियों से मिलीभगत रखने वाले अनेक सिख नेताओं ने भिंडरांवाले और उसके अनुयायियो को उग्रवादी पृथकतावादी, आतंकवादी और डकैत कहना शुरू कर दिया। लगभग हर रोज संसद में सिखों के धार्मिक नेता भिंडरांवाले के विरुद्ध अशिष्ट भाषा का प्रयोग किया। इस इश्तहार के अनुसार श्री लोंगोवाल ने उन सिख युवकों को गुमराह और सरकार के गुर्गे कहना शुरू कर दिया जिन्होंने सिखों के शत्रुओं का नामोनिशान मिटा दिया था। श्री लोंगोवाल अभी तक आदि ग्रंथ की मर्यादा को ही मानते थी। लेकिन उन्होंने यह कहना शुरू कर दिया कि सिखों की मांग पंजाबियो की मांगें हैं और इस तरह उन्होंने सिखों की आगे बलिदान के लिए सिखों के बलिदानों का निरादर किया।

बादल की पुत्री का विवाह इं का नेता के पुत्र से

इश्तहार मे कहा गया है प्रकाश सिंह बादल ने अपनी लड़की का विवाह कांग्रेस (इ) के एक नेता के लड़के से किया है और पंजाब के भूतपूर्व वित्तमन्त्री श्री बलवन्त सिंह ने सरकारी सहायता से अपनी तिजोरियो मे करोड़ों रुपये भर लिए हैं तो भी भिंडरांवाले को कांग्रेस (इ) का एजेंट कहा जाता है, इन सिख नेताओं को नहीं। इश्तहार मे आगे कहा गया है कि अकाल तख्त के मुखिया श्री किरपाल सिंह और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री प्रकाश सिंह और अकाली दल के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री तलवार सिंह सेखवां ने उन ८ सिखों की कोई परवाह न करते हुए जिन्हें ३ अप्रैल को केन्द्रीय आरक्षी पुलिस दल ने मौत के घाट उतार दिया था, चण्डीगढ़ में श्री बादल की पुत्री के विवाह में सम्मिलित होना बेहतर समझा। इतना ही नहीं संविधान की धारा २५ को सामूहिक रूप से जलाने के कार्यक्रम को रद्द करके श्री लोंगोवाल ने सिखों को दुनिया की नजरों में उपहास का पात्र बना डाला।

[illegible] ने पंजाबी में प्रकाशित अपने इश्तहार मे भिंडरांवाले पर आरोप लगाया है कि दरबार साहिब के ३१ अक्तूबर के बाद के [illegible] के जिन अनुयायियों को बराबर पीछे देखा गया था, उनके विरुद्ध भिंडरां ने कोई कार्रवाई नहीं की। इस कथित धार्मिक नेता ने सिखों के [illegible] १०७ नम्बर कमरे में २९ सितम्बर १९८३ को एक [illegible] के विरुद्ध भी कोई कार्रवाई नहीं की गई। इश्तहार में कहा गया है कि अखिल भारतीय सिख विद्यार्थी संघ के सदस्यों की करतूतें थीं। वे एक लड़की को जबरदस्ती पकड़कर दरबार साहिब में

सभा प्रधान श्री शालवाले के प्रति आभार प्रदर्शन

श्रद्धेय श्री महात्मा जी

सादर नमस्ते।

ईश्वर की महान अनुकम्पा एवं आपके पावन आशीर्वाद से आर्य समाज चित्रगुप्त गंज लश्कर का वार्षिकोत्सव सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

दिनांक ३ अप्रैल १९८४ को 'राष्ट्र रक्षा सम्मेलन मे मुख्य अतिथि के रूप मे आपने पधार कर जो उद्बोधन व संदेश दिया उसका नगर की जनता पर अभूतपूर्व प्रभाव पड़ा। साथ ही आर्य समाज के कार्यकर्ताओं विशेषकर युवावर्ग में नवीन रक्त का संचार कर दिया। कुछ घंटो आपके सान्निध्य मे रहने से हमें यह विश्वास हो गया कि आर्यसमाज आप जैसे महान नेताओ के हाथों सुरक्षित है। आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि आने वाले दिनों में हम द्विगुणित उत्साह के साथ आर्य समाज व महर्षि दयानन्द के संदेश को घर-घर पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे। धर्म और राष्ट्र की रक्षा के हित आप जो भी आदेश हमें प्रदान करेंगे उसके पालन में हम पीछे नहीं रहेंगे।

—किशोरी लाल गौतम

मन्त्री-आर्य समाज चित्रगुप्त गंज लश्कर



दिनांक ३ अप्रैल १९८४ को आर्यसमाज चित्रगुप्तगंज लश्कर (ग्वालियर) द्वारा आयोजित राष्ट्र रक्षा सम्मेलन मे मुख्य अतिथि के रूप मे महात्मा श्री रामगोपाल जी वानप्रस्थ सम्बोधित करते हुए। बाएं श्रीमती उमा जी प्रधान आर्यसमाज श्री इन्द्र प्रकाश गांधी मन्त्री म० भा० आर्य प्रतिनिधि सभा माननीय प्रो० शेरसिंहजी भू० पू० केन्द्रीय मन्त्री श्रद्धेय श्री लालाजी (सभा प्रधान) श्री मदनमोहन शास्त्री मेरा श्री विजयसिंहजी भजनोपदेशक श्री विश्वम्भर जी विद्यालंकार लश्कर श्री बाबूलाल गुप्त हैं।

टंकारा उपदेशक विद्यालय

महर्षि दयानन्द ट्रस्ट द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय मे विद्यार्थियो का प्रवेश १ से १५ जुलाई तक खुला रहेगा। अध्ययन काल ४ वर्ष हैं। जिसकी समाप्ति पर सिद्धान्ताचार्य का प्रमाण पत्र प्रदान किया जाता है। प्रवेश पाने के लिए १० वी परीक्षा पास होना आवश्यक है। पत्र-व्यवहार के लिए महर्षि दयानन्द उपदेशक विद्यालय टंकारा राजकोट गुजरात से सम्पर्क करें।

अकाल रैस्ट हाउस के कमरा नं० २४ और २५ मे ले गए। इसी विद्यार्थी संगठन के महासचिव श्री हरमिन्दर सिंह संधु की सगाई अकाल तख्त की सभी परम्पराओं के विपरीत स्वर्ण मन्दिर काम्प्लैक्स मे की गई।

व्यक्तिगत अहं की चिंता

अकाली दल ने शुक्रवार को यहां एक प्रेस वक्तव्य मे धर्मयुद्ध मोर्चे के नेतृत्व के विरुद्ध आलोचन की निन्दा की और कहा धर्मयुद्ध के ये आलोचक अकाली दल की कीमत पर अपने व्यक्तिगत अहं को तुष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं। (पंजाब केसरी १५ ४ ८४)

समीक्षा

गायत्री महिमा केसेट के माहात्म्य पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी श्री स्वामी दीक्षानन्द जी के उद्गार

दूर-दूर तक ध्वनि गू ज रही थी (तुन हमे उत्पन्न किया, पालन कर रहा है तू) बडी मधुर; बडी आकर्षक। यह गाना तो बहुत बार सुना था परन्तु इतना न भाया था। आखिर उसका संगीत मुझे अपने समीप खीच ही लाया, फिर तो सारा टेप एक बार मे ही सुन गया, पूरा टेप मा गायत्री महिमा से परिपूर्ण सवादात्मक शैली मे गायत्री गीता ही तैयार हो गयी। ब्रह्मा से लेकर दयानन्द ऋषियो से परि-पुष्ट,विवेकानन्द,से लेकर सर राधाकृष्णन् तक विचारकोसे प्रशसित। वेद चतुष्टय से लेकर पुराण पर्यन्त वैदिक और लौकिक साहित्य से प्रमाणित 'गायत्री गान' सुनकर मन अत्यन्त आल्हादित हो गया। ऐसा लगा कि प्रभात बेला मे 'गायत्री नवनीत' मिल गया। सरल, सरस सारूप सुपाच्य। केसेट क्या हुआ गागर मे सागर भर दिया।

मेरी हिन्दू मात्र से प्रार्थना है कि वह इस केसेट को अपने घरो मे, मन्दिरो मे, आर्य समाजों मे अवश्य रखें और हर प्रभात बेला में इस गायत्री गीता से दिग् दिगान्त को गू जा दे। —दीक्षानन्द

प्रवेश प्रारम्भ

श्रीमद् दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी (बल्लभगढ) फरीदाबाद हरियाणा मे नवीन सत्र हेतु प्रवेश प्रारम्भ है। कक्षा एक से शास्त्री पर्यन्त अध्ययन की सुव्यवस्था है। शिक्षा एव आवास नि शुल्क। निर्धन तथा मेधावी छात्रों को विशेष सुविधा। भोजन शुल्क पैंतीस रुपए मासिक। विशेष विवरण के लिए दो रुपए का डाकटिकट भेजकर पाठ विधि एव नियमावली प्राप्त करें।

मर्ि ... ली

अमृतसर, ... भवन के प्रांगण मे राष्ट्रीय सु... साप्ताहिक अंग्रेजी पत्रिका की प्रतियों की होली ...

समिति के सचिव श्री ओमप्रकाश वेद ने ... गया कि इस पत्रिका मे भगवान श्रीकृष्ण के आपत्तिजनक चित्र छापे ... हैं। इसलिए पत्रिका के सम्पादक, प्रकाशक लेखक के विरुद्ध हिन्दुओ की धार्मिक भावनाओं के साथ खिलवाड करने के आरोप मे मुकदमा दर्ज किया जा रहा है। श्री वेद ने सरकार से इस पत्रिका की प्रतियाँ को जब्त करने की मांग की है।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली-२ में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८५]
वर्ष १९ अङ्क २०]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
बैसाख शु० ५ स० २०४१ रविवार ६ मई १९८४

दयानन्दाब्द १६० दूरभाष : २७४७७१
वार्षिक मूल्य १६) एक प्रति ४० पैसे

उग्रवादियों द्वारा सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले और मंत्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी को १० जून तक मारने की धमकी

तथा १ लाख रुपया भिण्डरवाला को भेजने की मांग

दिल्ली २७ अप्रैल।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय दिल्ली मे आज तथाकथित पजाब रैजिमेण्ट की ओर से एक धमकी भरा पत्र प्राप्त हुआ है जिसमे सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला रामगोपाल जी शालवाले को चेतावनी देते हुए कहा गया है कि गुरु अवतार श्री भिण्डरवाला के खिलाफ बकवास बन्द करो और एक लाख रुपए भिण्डरवाले के नाम १० जून तक भेज दो। नही तो तुम्हे और तुम्हारे दीवानहाल को जल्दी ही उडा दिया जायेगा। तुम्हारे मन्त्री ओम्प्रकाश को १० जून के पहले भून दिया जायेगा। अब तुम्हारा वक्त आ गया है तुम किसी भी तरह नही बचोगे।

इस धमकी भरे पत्र के सन्दर्भ मे सभा के प्रवक्ता के प्रकट किया कि उग्रवादियो की इस प्रकार को दूषित मनोवृतियो से न तो हिन्दू-सिक्ख सद्भावना को बल मिलेगा और न ही पजाब की आग ठण्डी हो सकेगी। आर्य समाज के नेता सदैव अधर्म और अन्याय के विरुद्ध मौत का आलिंगन करते रहे हैं, उनके लिए इन चेतावनियो और धमकियो का कोई मूल्य नही है। अन्याय और अधर्म के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए ही आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानन्द ने की थी, आर्य समाज का प्रत्येक सैनिक राष्ट्रीय एकता धर्म और सस्कृति की रक्षा के लिए अपने कर्त्तव्य का पालन करने के लिए सदैव तैयार रहेगा।

प्रवक्ता ने यह भी बताया कि इसकी सूचना प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी जी केन्द्रीय गृहमन्त्री पी० सी० सेठी दिल्ली के उपराज्यपाल पुलीस अफसरो आदि को भी दे दी गई है।

पंजाब वेदों की पवित्र भूमि है

महान् सन्तों, गुरुओं, विद्वानों, देश भक्तों, वीरों और क्रांतिकारियो की जन्मदातृ है

इसके गौरव गरिमा को कलुषित न होने दो

"पजाब वेदों की भूमि है जो विशिष्ट और श्रेष्ठतम शिक्षाओ से ओत-प्रोत है।

यह महान् देश-भक्त स्वतन्त्रता आदोलन के प्रबल सेनानी पजाब केसरी लाला लाजपतराय की जन्म भूमि है जो देशभक्ति को सबसे ऊपर रखते थे।

यह सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी भगतसिह की जन्म भूमि है जो अपने कई साथियो के साथ देश की आजादी के लिए २३ वर्ष की उम्र मे हसते हसते फासी के तख्ते पर चढे थे।

स्वामी विवेकानन्द के समकालीन सुप्रसिद्ध देशभक्त सन्त स्वामी रामतीर्थ की भी यही जन्मभूमि है जिन्होने अविस्मरणीय शब्दो मे भारत की एकता का गीत गाया था:—

'भारत की भूमि मेरा शरीर है और कमोरिन मेरे पैर है। आदि-आदि

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अनेक बडे बड सिखो की सहायता से पजाब मे आर्य समाजो की स्थापना की थी। सिख पन्थ के सस्थापक गुरु-नानक देव जी ने तमाम देश को हिन्दुस्तान के नाम से सम्बोधित और इगित तथा विश्वप्रेम मानव जाति की सेवा के सदेश को प्रसारित किया था। वे मानव को सस्था से उपर रखते थे। मानव होना दिव्यता से ओत-प्रोत होना है। गुरु नानकदेव जी भारत के दिव्यता के सघठक के रूप मे याद किए जाते हैं।

मुसलिम आक्रान्ताओ का मुकाबला करने म पजाब ने हमेशा अनुकरणीय साहस और बलिदान का परिचय दिया है।

हा हन्त ! आज इस पवित्र गरिमामय राज्य मे क्या हो रहा है ?

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—ओम्प्रकाश पुरुषार्थी

सहसम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

विविध समाचार

देवनागरी भारतीय भाषाओं की संपर्क लिपि बने—जैल सिंह

नई दिल्ली, १५ अप्रैल। राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने देवनागरी को सभी भारतीय भाषाओं की सम्पर्क लिपि के तौर पर अपनाने की अपील की है। वे यहां संस्कृत भवन का शिलान्यास कर रहे थे।

राष्ट्रपति ने संस्कृत भाषा के पुनरुत्थान का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी है और यह राज्यों में सम्पर्क तथा देश की एकता बनाए रखने का काम कर सकती है।

समारोह में भारी संख्या में संस्कृत के विद्वान और प्रेमी मौजूद थे। संस्कृत भवन पर ५० लाख रुपये की लागत आएगी।

राष्ट्रपति ने कहा कि बहुत पुराने समय से ही यह भाषा देश की एकता में मदद देती रही है। आज भी कश्मीर से कन्याकुमारी और गुजरात से असम तक संस्कृत के प्रेमी बिखरे हुए हैं। उन्होंने कहा संस्कृत के पुनरुत्थान की जरूरत आज पहले से कहीं ज्यादा है, क्योंकि विज्ञान के विकास ने दुनिया को छोटा कर दिया है। अगर दुनिया के लोग एक परिवार की तरह नहीं रहते तो शांति कायम रहना मुश्किल है।

श्री जैल सिंह ने संस्कृत विद्वानों से इस भाषा को सरल बनाने को कहा। उन्होंने कहा भारत की १५ में से १४ भाषाएं संस्कृत से ही निकली हैं। यह महज धार्मिक भाषा नहीं है। इसमें गणित, विज्ञान, चिकित्सा और अर्थव्यवस्था जैसे विषयों की पुस्तकें हैं। समारोह अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन की ओर से किया गया था।

राष्ट्रपति ने उम्मीद जाहिर की कि संस्कृत साहित्य सम्मेलन की ओर से बनाये जा रहे संस्कृत भवन में भारत की बाकी १४ भाषाओं को भी जगह मिलेगी।

समारोह के लिए भेजे अपने संदेश में प्रधानमन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने संस्कृत को प्राचीन संस्कृति का आईना बताया। उन्होंने कहा कि रामायण जैसे महाकाव्य इसी भाषा में लिखे गए, जिनमें हमारे प्राचीन जीवन और सभ्यता का जिक्र है। उन्होंने कहा यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम इसकी रक्षा करें।

समारोह में इं का. के कार्यकारी अध्यक्ष कमलापति त्रिपाठी, पूर्व केन्द्रीय मन्त्री श्री उमाशंकर दीक्षित और संस्कृत सम्मेलन के कार्यकारी अध्यक्ष गिरधारीलाल गोस्वामी ने भी भाषण दिये।

म. प्र. में आदिवासियों के धर्मपरिवर्तन की जांच

भोपाल २३ अप्रैल। रायगढ़ जिले के ३६ आदिवासी परिवारों के ११५ व्यक्तियों का ईसाई मिशनरियों द्वारा धर्म परिवर्तन किए जाने की जांच की जायेगी।

भा ज पा. सदस्यों द्वारा इस विषय पर लाए गये ध्यानाकर्षण प्रस्ताव का उत्तर देते हुए मध्य प्रदेश के गृह राज्य मन्त्री श्री भारत सिंह ने सदन को बताया कि रायगढ़ के जशपुर नगर सब डिवीजन के गांव में उरां जाति के आदिवासियों के धर्म परिवर्तन की घटनाएं प्रकाश में आईं। प्राप्त जानकारी के अनुसार गत वर्ष २२ दिसम्बर से २४ दिसम्बर के मध्य सामूहिक धर्म परिवर्तन की दो घटनाओं की जानकारी पुलिस को दी गई। इन मामलों में तीन व्यक्तियों को बन्दी बनाया गया।

उन्होंने बताया कि गत ३ मार्च को इधरा ग्राम के सात आदिवासी निवासियों ने तहसीलदार जशपुर नगर के समक्ष शपथ पत्र दिया जिसमें उन्होंने कहा कि उनका मिशनरियों द्वारा झूठे प्रलोभन और आश्वासन देकर धर्म परिवर्तन कराया गया।

दूसरे मामले में ग्राम बहुवान के २२ आदिवासी परिवारों के ८४ व्यक्तियों का २२ दिसम्बर ८३ को धर्म परिवर्तन कराया गया।

नव भारत २४-४-८२

पंजाब और सत्यार्थप्रकाश

१७अप्रैल के नवभारत में डा० महीपसिंह ने अपने लेख में आदि से अन्त तक सत्यार्थ प्रकाश और आर्य समाज को पंजाब में हिन्दू और सिखों के बीच अलगाव के लिए दोषी ठहराया है। स्वामी जी ने एकादश समुल्लास प्रारम्भ करने से पूर्व अनुभूमिका में लिखा है—'मेरा तात्पर्य किसी की हानि व विरोध करने में नहीं किन्तु सत्यासत्य, का निर्णय करने कराने के लिए है, न कि वाद-विवाद विरोध करने कराने के लिए।'

स्वामी दयानन्द ने गुरुनानक जी के बारे में लिखा है—'नानक जी का आशय अच्छा था।' अतः यह भ्रामक विचार है कि पंजाब में अलगाव की नीति सत्यार्थ प्रकाश के कारण पैदा हुई।

—सोमदेव, आ समाज मेरठ शहर

फिजी के एक प्रचारक का देहावसान

प्राप्त सूचना के अनुसार फीजी द्वीप समूह के पश्चिमी भाग के एक प्रमुख पुरोहित एवं आर्य समाज के प्रचारक पंडित रामफेर (६३ वर्ष) का देहान्त ५ अप्रैल को लौतोका में हो गया है। पिछले एक वर्ष में उनके कुटुम्बी और प्रचार के सहयोगी एवं आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री भगौती प्रसाद का तथा बड़े पुत्र का देहान्त हुआ था। इसके साथ ही प० विष्णुदेव मैमोरियल स्कूल के मन्त्री श्री शिव प्रसाद का उक्त अवधि में निधन हुआ था। प० रामफेर इन दिनों उक्त स्कूल के खजांची पद पर भी अवैतनिक कार्य कर रहे थे।

प० रामफेर अत्यन्त स्वाध्यायशील और नम्र स्वभाव के व्यक्ति थे। उस क्षेत्र में उनके द्वारा आर्य समाज का प्रचार कार्य बहुत अच्छा चलता था। अपनी ६० वर्ष की आयु और ४० वर्ष के गृहस्थ जीवन की पूर्ति पर उन्होंने जो यज्ञ और समारोह किया था, उसके ब्रह्मा बनने का मुझे सम्मान उन्होंने दिया और सारा कार्य बड़ी श्रद्धा भक्ति से हुआ था।

लौतोका का क्षेत्र आर्य समाज का केन्द्र रहा है। वहीं उस देश का एकमात्र गुरुकुल सबनी में खुला और चल रहा है जिसमें वहां राष्ट्रीय स्तर के भारतवंशी एवं काइवीसिया ने भी शिक्षा पाई थी। अन्य आर्य शिक्षा संस्थाएं वहां चल रही हैं। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने उनकी आत्मा की सद्गति एवं परिवार को सान्त्वना के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा फीजी को पत्र भेजा है।

—ब्रह्मदत्त स्नातक
सार्व० समाचार पत्र एवं जनसंपर्क
सलाहकार सार्व० सभा

आर्य समाज राष्ट्रीय रक्षा अकादमी एन. डी. ए. खड़क वासला (पूना) का निर्वाचन

प्रधान सर्वश्री विक्रमसिंह, मन्त्री शान्तिप्रकाश, कोषाध्यक्ष भगतराम निर्वाचित हुए।

(पृष्ठ १ का शेष)

शैतान मानव के कंकालों को हाथ में लिए आगे बढ़ रहा है। दानव निर्दोष पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों के खून से अपनी प्यास बुझा रहा है। इसका मुकाबला करने में प्रशासन बुरी तरह फेल हो चुका है।

हमारे बहुत से सिख बन्धुओं ने इस असंगत हिंसा, रक्तपात और भ्रातृ हत्या की निन्दा की है। सच्चे सन्त हिंसा, घृणा, वैर द्वेष और निर्दोषों की निर्मम हत्या का प्रतिपादन नहीं करते हैं।

देश भक्त सिखों और हिन्दुओं को मिलकर देशद्रोही तत्त्वों के के घातक पूर्ण हथकण्डों को नाकारा करना चाहिए। घर में आग लगाकर भाई से भाई को लड़ाकर इस महान् देश की स्वतन्त्रता अखण्डता और एकता को खतरे में डालने वाले राजनीति से प्रेरित कुचक्रों से सावधान रहना चाहिए।

—आनन्दराव
एडोली (हिन्दू मदराज २७-४-८४)

सम्पादकीय

समविकास में ही हित सन्निहित है

आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द ने वैदिक आदर्श के अनुसार जीवनके दोनो अगो पर विचार किया। वह प्राइवेट जीवन (वैयक्तिक वा आन्तरिक जीवन) से प्रारम्भ करतेहै। परन्तु वही उसकी समाप्ति नही हो जाती। वैदिक आदर्श के अनुसार मनुष्य पहले अपने व्यक्तिगत जीवन को ठीक करे तब सामाजिक जीवन मे पग रखे। उन्होने जहा कही किसी सभा का वर्णन किया है वहा उसके सभासदो के लिए उन सब गुणो की आवश्यकता बताई है जिनके विना कोई वैयक्तिक जीवन बना ही नही सकता। महर्षि का कथन है कि समाज के प्रत्येक सदस्य और अधिकारी को पूर्ण सदाचारी होना चाहिए।

इस प्रसग मे यूनान और रोम इन दोनो पाश्चात्य जातियो की जीवन प्रणाली की आन्तरिक भावना पर दृष्टि डाल लेना उपयोगी होगा। इनकी जीवन नीति मे मौलिक भेद था। यूनान वाले आन्तरिक जीवन पर अधिक बल देते थे और रोम वाले वाह्य जीवन पर। यूनान का एक पुरुष अपने आन्तरिक जीवन को कलुषित होने से बचानेके लिये अपना प्राण दे देता था। रोम इसके विपरीत था। वहा सामाजिक जीवन ही सब कुछ समझा जाता था। अच्छे-अच्छे व्याख्यान देना, कौंसिलो मे भाग लेना और सीनेट का नेता होना ही सब कुछ था। घर के भीतर का आचार-अनाचार वाह्य समाज मे कुछ बाधा न डालने पाता था। एक व्यभिचारी पुरुष व्यभिचार करे तो कर सकता था। इससे समाज को क्या प्रयोजन? समाज किसी के घर मे क्यो झाकता फिरे। वहा यह देखा जाता था कि अमुक पुरुष अच्छा योद्धा या व्याख्याता है वा नही? इत्यादि-इत्यादि

ये दोनो अधूरे जीवन थे और इनसे अन्त मे समाज को हानि पहुची। आज न यूनान का वर्चस्व है और न रोम का। यदि जातियो के पतन के कारणो का भली प्रकार विश्लेषण किया जाय तो अवश्य ही ज्ञात होगा कि वैयक्तिक और सामाजिक जीवन का एकागी विकास ही उनके पतन का मुख्य कारण था।

आजकल का पाश्चात्य जीवन रोम की नकल है। वाह्य जीवन के आडम्बर के भीतर भीतरी जीवन का कोई मूल्य नही है। इसका एक ताजा उदाहरण इग्लैड का प्रोफ्यूमो काड है (१६६४) इग्लैड के कुछ लोगो ने प्रोफ्यूमो को बचाने के लिये डके की चोट यह कहा था कि उनके वैयक्तिक जीवन की बुराई को देखने या उसका पर्दाफाश करने का हमे कोई अधिकार नही है। यदि इस प्रसग के साथ देश की सुरक्षा न जुडी हुई होती तो शायद उसका बाल बाका न हुआ होता।

आर्यसमाज के जन्म से पूर्व हिन्दू समाज मे सार्वजनिक जीवन प्राय न था। हिन्दुओ का व्यक्तिवाद यूनान की भाति अपनी पराकाष्ठा पर था जिसने हिन्दू जाति के ह्रास एव पतन मे बहुत योग दिया। हम दान देते थे परन्तु अनाथालय न खोलते थे। हम मन्दिर बनाते थे परन्तु पाठशालाओ की ओर ध्यान न देते थे। हमे अपनी शुद्धि की चिन्ता थी, अपनी रक्षा और मोक्ष की चिन्ता थी परन्तु दूसरो की रक्षा, शुद्धि और मोक्ष की जरा भी चिन्ता न थी।

आर्य समाज ने लोगो का ध्यान व्यक्ति के साथ समष्टि के जीवन और विकास की ओर आकृष्ट किया। आर्य सभासदो ने इतने जोश के साथ कार्य करना शुरु किया कि जहा बाहर वाले इनके काम को देखकर मुह मे अगुली दबाने लगे वहा उनमे से अधिकाश अपने आपको भूल गए। परिणाम यह हुआ कि सस्थाए बढी, सार्वजनिक कार्यकर्त्ता बढे सदस्यो की सख्या बढी, कार्य का अमित विस्तार हुआ परन्तु भीतरी जीवन की परवाह न रही।

इस समय हमारा अधिकाश जीवन रोमन प्रथा के अनुसार चल रहा है, यदि यह कह दिया जाय तो इसमे अत्युक्ति न होगी। इसके अनेक उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं। यह स्थिति ठीक नही है। इसके निराकरण की परमावश्यकता है।

हमारा जितना ध्यान और बल सार्वजनिक जीवन के विकास और उसकी शुद्धता के अर्पित रहे उतना ही व्यक्तिगत एव पारिवारिक जीवन की शुद्धता और विकास पर रहना चाहिए। इनके समविकास मे ही आर्यसमाज और उसके सदस्यो का हित सन्निहित है। आर्य का जीवन निरीक्षण का जीवन होता है यह बात एक क्षण के लिए भी आखो से ओझल नही होने देनी चाहिए। भोगवाद के इस युग मे उसे अपने आचरण से भी उसके निराकरण म योग देना है।

बनावटी नैतिक नेतृत्व

इन दिनो सर्वत्र जीवन का दृष्टिकोण भोगवाद बना हुआ है। चमकीले एव भडकीले वस्त्रों एव हीरे जवाहिरातो से ढके हुए शरीरो के पीछे शरीर के बनाव श्रृगार, रतिसुख और धन के सिवा कोई वस्तु नही देख पडती। भोगवाद की प्रवृत्ति के कारण मनुष्य प्राय पशुओ से भी गया गुजरा देख पडता है।

जब हम जीवन के वास्तविक आनन्द पर विचार करते हैं, किसी उपयोगी कार्य को अच्छे साधनो से और अच्छे ढग से करने पर जो सन्तोष होता है, दूसरो का हित सम्पादन करने से जिस हार्दिक हर्ष की अनुभूति होती है, धर्म साहित्य, दर्शन और काव्य से जो हमे दूसरो के द्वारा विरासत मे मिलते है जिस आनन्द की उपलब्धि होती है उन सबकी तुलना मे उस जीवन को जीवन कहना भी ठीक नही है जिसका दिग्दर्शन प्रायः हमारी अदालतो मे होना है।

जो व्यक्ति इस प्रकार के गर्हित जीवन को न केवल जीवन ही अपितु अच्छा जीवन कहते है उनकी बुद्धि पर तरस आए, बिना नही रहता। उनकी इस भ्रान्ति को दृढ करने के लिए नैतिक नेतृत्व से जो प्रेरणाए मिलती है उन्हे देखकर अवाक् रह जाना पडता है। इग्लैंड के एक ईसाई पादरी ने (देखे वर्ल्ड फोरम अक्टोवर से दिसम्बर ६३ पृष्ठ १५६) जिनका नाम डा० अलेक्स कम्फर्ट है यह घोषणा करने का दुसाहस किया कि सतीत्व म उतनी भी विशेषता नही जितनी अस्वास्थ्यकर भोजन मे है। 'इंग्लैंड के बडे विशप जनता को यह विश्वास दिलाते है कि स्त्री पुरुष के लिए परमात्मा का एक बढिया तोहफा है।'

वैदिक सस्कृति त्याग प्रधान है। उसम स्त्रियो को पूज्या और अवध्या माना गया है। वैदिक सस्कृति शरीर को ही सब कुछ मानना नही सिखाती। वह शरीर को साधन मानना सिखाती है जिससे मानव परमात्मा की ओर बढने मे समर्थ हो सके। शरीर को आत्मा पर बोझ न बनने देना वैदिक सस्कृति की प्रमुखतम

श्रीयुत ओ०पी० गोयल को मातृ वियोग

श्री शालवाले का शोक सन्देश

सभा प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले ने प्रसिद्ध उद्योगपति एव आर्य समाजी नेता श्री गोयल जी को पूज्या माता शकोरीदेवी के निधन पर भेजे शोक सन्देश मे श्री गोयल जी तथा उनके परिजनो के प्रति समवेदना प्रकट की और दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करते हुए कहा है कि यद्यपि माता जी की आयु ८४ वर्ष की थी उनकी छत्रच्छाया और आशीर्वाद दीर्घ काल तक बना रहता किन्तु उनके निधन से परिवार के एक प्रमुख का साया उठ गया जिसकी पूर्ति नही हो सकती है।"

सामयिक चर्चा—

बाल्मीकि रामायण में उत्तरकांड प्रक्षिप्त है

श्रीयुत स्व० रघुवीर शरण दुबलिस मेरठ ने भास्कर प्रेस से बाल्मीकि रामायण का सरल भावानुवाद प्रक्षिप्त भाग की आलोचना सहित १६२० मे प्रकाशित किया था। उसकी भूमिका मे उन्होने स्पष्ट किया था कि यह रामायण ६ काड मे समाप्त की गई थी और सातवा उत्तरकाड महर्षि बाल्मीकि कृत नही अपितु प्रक्षिप्त भाग है। उनकी भूमिका का प्रासगिक भाग इस प्रकार है—

पौराणिक लोगा का विश्वास है कि श्री रामचन्द्र के जन्म से १० हजार वष पूव महर्षि बाल्मीकि ने रामायण का निर्माण किया था। पर यह बात असभव और सृष्टि नियम के विरुद्ध है। जिस समय श्री राम अयोध्या मे राज्य करते थे उसी समय उनकी विद्यमानता मे रामायण बनी। कुछ लोगो की यह मान्यता है कि वनवास दिये जाने पर जिस समय सीता जी बाल्मीकि के आश्रम मे वास करती थी तब ही उन्होने रामायण बनाई और लव कुश को प्रथम पढाया जिसको उन्होने श्री राम के राजसूय यज्ञ मे राजसभा मे जाकर सुनाया। पर यह बात भी रामायण से सिद्ध नही होती क्योकि सीता बनवास की कथा उत्तरकाड मे वर्णित है और उत्तर काड सर्वथा प्रक्षिप्त है, क्योकि वह कविवर बाल्मीकि का बनाया हुआ प्रतीत नही होता जिसका सबसे बडा प्रमाण यह है कि कलकत्ते के छपे पुस्तको मे उत्तरकाड बिल्कुल नही छपा। इसके अतिरिक्त युद्धकाण्ड के अन्त मे ग्रन्थ समाप्ति सूचक कथा माहात्म्य श्लोक हैं जो यद्यपि हमारी दृष्टि मे प्रक्षिप्त है पर इस बात की सूचना अवश्य देते है कि एक काल ऐसा था जबकि उत्तरकाड कही भी विद्यमान न था। इसलिए प्रक्षेपक बढाने वालो ने रामायण श्रवण का माहात्म्य प्रदशन करने के लिए इन श्लोको को सातवें काड मे बढाने के स्थान में छटे काड के अन्त मे बढाया।

उत्तरकाड सहित वर्तमान रामायण मे इस समय सात काड अनुमानत ६५० सग और २४ ५२८ श्लोक है। कतक तीर्थ टीकाकार ने बहुत से सर्गो को प्रक्षिप्त माना है, उन पर व्याख्या नही की है। ऐसे सग विशेषत उत्तरकाड के ही है। रामाभिरामी टीका ने भी कई सर्गो को प्रक्षिप्त माना है, उन पर व्याख्या नही की है। रामायण मे प्रक्षेपक या प्रक्षिप्त कथा पुराने टीकाकार भी मानते आए हैं। ऐसी दशा मे अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार किसी कथा को जो सगत प्रतीत नही होती अथवा किन्ही श्लोकों को जो प्रकरण के विरुद्ध हो क्षेपक बताना कोई पाप नही है। क्षेपक कथाओ का छोड देना भी कुछ बुरी बात नही है परन्तु क्षेपक निकालना दूध मे से पानी को पृथक कर देना नही तो घृत से छाछ अलग करने के समान कठिन अवश्य है, यह काम है बडे उत्तरदायित्व का।'

स्पष्ट हैं सीता बनवास की कथा कपोल कल्पित है। तुलसी कृत रामायण मे धोबी की कथा जिसके व्यग पर भगवती सीता को महात्मा राम ने बनवास दिया था वह और भी अधिक कपोल कल्पित एव भ्रामक है।'

आर्य पर्व पद्धति मे दिए गए राम के जीवन वृत्त मे इस घटना का उल्लेख हैं जिस पर उचित रीति से आपत्ति की जाती है। इसी प्रकार महात्मा कृष्ण के जीवन से सम्बद्ध कई बातें आपत्तिजनक बताई जाती है। इस ग्रन्थ की भूमिका मे महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज ने स्पष्ट कर दिया था कि इसके निबन्धों की उत्तरदायिता सभा पर न होगी अपितु प्रबन्धकार पर ही होगी। इसका अर्थ यह नही कि आपत्ति जनक स्थल बने ही रहने चाहिए। वे नये सस्करण मे निकाल दिए गए हैं।

१६२४ मे महात्मा गाधी ने आर्य समाज व सत्यार्थ प्रकाश की आलोचना की थी जिसकी अनावश्यकता और अनौचित्य का जन सामान्य तथा विशिष्ट वर्ग द्वारा देश व्यापी प्रतिवाद किया गया था। जब आर्य समाज का एक शिष्टमडल उनकी आलोचना को पक्षपातपूर्ण, भ्रामक और अयथार्थ सिद्ध करने के लिए उनसे मिला तो उन्होने आर्य समाज के पक्ष की यथार्थता को स्वीकार किया और अपनी आलोचना का एक प्रकार से प्रतिवाद यग इडिया मे कर दिया था इस प्रसग मे महात्मा जी ने कहा था कि महर्षि दयानन्द ने तुलसीकृत रामायणका खण्डन किया है जिससे करोडो देशवासी अनुप्राणित होते हैं। श्री स्व० प० रामचन्द्र जी देहलवी ने जो उस शिष्टमडल मे सम्मिलित थे यह कहकर महात्मा जी को निरुत्तर कर दिया था कि महर्षि दयानन्द ने पाठविधि मे ही तुलसी कृत रामायण को न रखने का प्रतिपादन किया है आम जनता के पठन पाठन के लिए नही। क्योकि वे छात्र गलत एव सही का निणय नही कर सकते। श्री देहलवी जी ने यह भी कहा था कि तुलसी दास ने राम का जो अलौकिक स्वरूप प्रस्तुत किया है उससे स्वय राम भी अनभिज्ञ रहे होगे। अवश्य वे महामानव और मर्यादा पुरुषोत्तम थे।

दहेज कानून संशोधन

यह एक तथ्य है कि ला कमीशन की ६१ वी रिपोर्ट को प्रस्तुत करने मे प्रशासन ने ८, ६ महीने का समय लगा दिया है जिसमे दहेज की मौतो के सम्बन्ध मे कार्यवाही किए जाने के लिए कानून मे कुछेक सुधारो के सुझाव दिए गए थे। यह भी सचाई है कि दिल्ली के कुछेक महिला सगठनो को सशोधित दहेज निवारक कानून के निर्माणार्थ एक बार पुन लोक सभा के समक्ष प्रदर्शन करना पडा है। इन दोनो तथ्यो की विद्यमानता मे इस शिकायत का किया जाना आश्चर्य जनक नहीं है कि प्रशासन इस घृणित सामाजिक समस्या से निपटने के लिए अभीष्ट आवश्यकता का परिचय न देकर कुछ उदासीनता का परिचय दे रहा है। यद्यपि ला कमीशन की रिपोर्ट गवर्नमेंट द्वारा दिए गए आकडो और पार्लियामेंट की सयुक्त सिलेक्ट कमेटी द्वारा सुझाए गए दहेज कानून मे सुधारों और परिवर्तनो पर आधारित है तथापि इनके क्रियान्वयन के लिए अभी तक विचाराधीन है, दूसरी ओर नवयुवती महिलाओ का उनकी शादियो के प्रारम्भिक वर्षो के भीतर जलाकर मारा जाना और इन हत्याओ की सख्या मे वृद्धि का होना जारी है।

कुछेक अनुसधानो एव अध्ययनो से यह स्पष्ट हुआ है कि वर्तमान कानून इस समस्या से भली भाति निपटने और न्याय प्राप्ति के लिए अपर्याप्त है। पिछले साल दिल्ली मे जो कुछेक दहेज सम्बन्धी मामले दर्ज किए गए थे उनमे ७ अपराधी अपराध मुक्त कर दिए गए थे।

महिलाओं के जलकर मरने के जो मामले दर्ज किए गए थे उनमे से ६० प्रतिशतक अकस्मात आग लग जाने की घटनाए अकित की गई थी। ५ प्रतिशतक हत्या के ५ प्रतिशत आत्म हत्या के केस दर्ज हुए थे।

इस प्रसग मे भारतीय साक्षी (गवाही) कानून मे ला कमीशन द्वारा सुझाए गए परिवतन बडे सहायक बताए जा रहे हैं। कमीशन का सुझाव है कि यदि विवाह के प्रथम पाच वर्षो के भीतर कोई महिला ससुराल मे घर के भीतर जहा वह पति के साथ रह रही है जलकर मरती है या वह घायल होती है तो इसे अकस्मात घटना न माना जाय। उस अवस्था मे जबकि दहेज के लिए माग जारी रह और पत्नी को सताया जाता रहे और विश्वसनीय साक्षी हो तो उसकी मौत को चाहे वह आत्महत्या के द्वारा हुई हो या मार डाली गई हो उसे स्वाभाविक नही अपितु दहेज की मौत स्वीकार किया जाय। कमीशन की यह भी सिफारिश है कि जो पति नियत समय के भीतर अपनी पत्नियो की मौतो की सूचना पुलिस को न दे उन्हे अपराधी माना जाय जब तक वे अपनी निर्दोषिता का प्रमाण (सबूत) दे। कमीशन ने एक और महत्व पूर्ण सुझाव दिया है और वह यह है कि विवाह के समय दिया गया धन तथा अन्य सामान ही मात्र दहेज नही माना जाय अपितु विवाह के बाद जो मागें समय समय पर की जाय वे भी दहेज में सम्मिलित समझी जाय। यद्यपि प्रशासन न गत वष बलात्कार और निर्दयता के सम्बन्ध मे दडसंहिता में सशोधन किया है परन्तु दहेज की मौतो का उसमे कोई उल्लेख नहीं किया गया है। ला कमीशन के सुझावो के क्रियान्वयन सहित सशोधित दहेज कानून का शीघ्र से शीघ्र बनना आवश्यक है। —रघुनाथ प्रसाद पाठक

विशेषता है। यह सासारिक सुख का उपभोग करने से नही रोकती। यह सिखाती है कि भोगो को भोगो परन्तु त्याग और भोग के समन्वय पूर्वक। वैदिक सस्कृति का इस दिशा मे दृष्टिकोण बडा उच्च है। उससे स्पष्ट है कि ससार के सुख तृष्णा की दृष्टि से अधिक मीठे परन्तु उपभोग की दृष्टि से थोथे होते है। इसके विपरीत आध्यात्मिक सुख आशाओ की अपेक्षा परिणाम मे अधिक सुखदायक होता है। अपने कर्त्तव्य के सम्पादन और परहित मे रत रहने से जो आनन्द मिलता है उसकी तुलना मे ससार का कोई भी आनन्द वरेण्य नही है। ससार का कल्याण त्याग प्रधान वृत्ति को अपनाने और भोगवाद के जहर और उसके जहरीले वातावरण से स्वय बचने तथा दूसरो को बचाने से ही सम्भव हो सकता है।

महर्षि दयानन्द का वार्त्तालाप और उपदेश

[१]

कुछेक आप बीती बातें

स्वामी जी महाराज अपने प्रेमियो मे बैठकर अपने जीवन की कुछेक बाते भी सुनाया करते थे।

एक दिन उन्होने बताया कि एक स्थान पर हमारा भाषण सुनकर वहा के कलक्टर ने कहा आपके भाषण पर यदि लोग चलने लग जाये तो इसका यह परिणाम निकलेगा कि हमे अपना बिस्तर बोरिया बाधना पडेगा।

[२]

एक दिन में चालीस कोस की पद-यात्रा

"आप लोग मेरे इस समय के दूर तक वायु सेवन करने जाने पर आश्चर्य करते है परन्तु अवधूत दशा मे मेरे लिए एक दिन चालीस कोस चलना एक साधारण बातथी। एक दिन मैंने गगातीर से चलकर इस महानदी के किनारे-किनारे गगा सागर सगम तक की यात्रा की। गगोतरी से रामेश्वर तक भी मैं चलकर गया हू।

[३]

पौष माघ की शीतल रातें नग्न रहकर काटी हैं

जब कभी रात को पढने के लिए तेल न मिलता तो मैं दूकानो के दियो की लौ मे बैठकर पढा करता था।

ग्रीष्म ऋतु की तेज धूप मे जलते हुए रेत पर मैंने कई दोपहर काटे हैं। बर्फ से ढकी पहाडो की शिलाओ और गगा तट पर पौष की रातो के पाले नगे निराहार सहन किए है।"

[४]

नीति से काम लेना क्यों अग्राह्य हुआ?

एक दिन कुछ पुरुषो ने स्वामी जी से निवेदन किया, 'आप यदि नीति से काम ले तो बडी सफलता हो।"

स्वामी जी ने उत्तर दिया यह नीति पहले ही मुझे बडी महगी पडी है, अब मेरा इसमे विश्वास नही है। राजा जय कृष्णदास (मुरादाबाद) कहा करते थे कि इस बात के रखने से लोग प्रसन्न होंगे। उस बात के न छेडने से अधिक सुविधा होगी। जयपुर मे शैवो ने कहा वैष्णवो का खण्डन कर दो हम आपके अनुयायी बन जायेंगे। वे तो वैसे ही रहे परन्तु अब जयपुर मे जाकर जब मै शैव मत का खण्डन करता हू तो वहा के ठाकुर लोग अपने गले से रुद्राक्ष की माला का एक दाना दिखाकर कहते है यह भी तो आपने ही पहनाई थी हम आपकी किस बात का सच्ची जाने।

[५]

धर्म ग्रन्थ पूजा क्यों अमान्य?

रायपुर मैं महाराज का एक काजो के साथ वार्त्तालाप हो रहा था। उत्तर प्रत्युत्तर में स्वामी जी ने धर्म ग्रन्थ की पुस्तक जमीन पर रख दी। इतने ही में काजी महाशय आपे से बाहर होने लगे और झुझला कर बोले 'आपने यह क्या अनर्थ ढाया है? धर्म ग्रन्थ पर पैर क्यो रख दिया?"

स्वामी जी ने कहा—'काजी जी' घबराइए नही। सोचिए तो सही कागज बनते किन पदार्थों से है। स्याही के प्रस्तुत होने की विधि भी विचारिए। छापेखाने मे छपे पत्रो की क्या दशा होती है और वे कहां-कहा रखे जाते हैं। इस क्रम पर भी जरा दृष्टि डालिए।

काजी महाशय सर्वथा निरुत्तर होकर उठ खडे हुए और अपने साथियो सहित वहा से चले गए।

[६]

जन्म और मृत्यु पर हर्ष शोक प्रकट नहीं करता।

रायपुर मे ठाकुर हरिसिंह की पत्नी के देहावसान पर एक सज्जन ने स्वामी जी से कहा "आप भी ठाकुर महाशय के यहा शोक प्रकट कर आइए।' इस पर उन्होने उत्तर दिया कि भद्र! मैने तो सारे सासारिक बन्धन तोड दिए हैं। किसी का जीना और मरना मेरे सामने समान है। मैं न तो किसी के जन्म पर प्रसन्नता का प्रकाश करने जाता हू और नाही मरने पर शोक ही प्रकट करता फिरता हू। मेरा सम्बन्ध तो उपदेश और धर्म के अतिरिक्त किसी से कुछ भी नही है।"

[७]

दान लेने की भव्य मर्यादा

बम्बई मे आर्य समाज मन्दिर के निर्माणार्थ एक निधि खोलीगई। लोग यथाशक्ति उसमे दान देते थे। उन्ही दिनो एक मारवाडी सज्जन श्री स्वामी जी के पास आया और नम्रता से कहने लगा 'भगवन्! मेरे पास दस हजार रुपए है, यह सारी राशि आर्यसमाज मन्दिर के निर्माणार्थ अर्पण करता हू। कृपा करके यह तुच्छ भेट स्वीकार कीजिए।"

स्वामी जी ने दानी महाशय की भावना की प्रशसा करते हुए कहा 'मैं आपकी सारी पू जी लेकर आपके परिवार को दूसरो पर आश्रित और भिखारी बनाना नही चाहता। जिस धर्म के अग का पालन करते पहला धर्म अग बिगड जाय वह धर्म ठीक नही है। उस मन्दिर की क्या शोभा होगी जिसके बनने मे आपका व्यापार बन्द हो जाय आपकी गृहस्थ यात्रा न चल सके। हा आप से एक हजार रुपया लिया जा सकता है।"

महाराज का जीवन उद्योग व पुरुषार्थ का जीवनथा। उनके पास आलस्य का अश तक न दिखाई देता था। उनके सेवक भी आलसी, निरुद्यमी, भूभार रूप न थे। प्रत्येक कर्मचारी कुछ न कुछ करता देख पडता था। स्वामी जी उपदेश दिया करते थे "जैसे देव यज्ञ के बाद देवो को दिया भोग भोगने मे पुण्य है वैसे ही मनुष्यो का उपकार करके उनका दिया भोगने का अधिकार है। यदि किसी का अन्नादि ग्रहण करने लगो तो पहले मन मे सोचो इसे लेने का मुझे कोई अधिकार भी है? दानियो के लिए मैं क्या कर रहा हू? व्यर्थ मे पर पुरुषार्थ जीवी बनना पाप है।

—स क० रघुनाथप्रसाद पाठक

अछूत नहीं : पारसमणि

१९३२ की एक सत्य घटना पर आधारित

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

(गतांक से आगे)

(३)

'अरे ! मैं तो लुट गई होती । यह कहकर माता हाथ जोडकर भगवान का स्मरण करने लगी ।

\+ \+ \+

पूरे एक महीने के बाद आनन्द स्वस्थ हुआ । प्रकाश और उसके भाई ने आनन्द की परिचर्या मे कोई कमी न रखी ।

प्रकाश पिछले पाच दिन से भरपेट भोजन न कर पाई थी । नींद उसे आती न थी । प्रकाश की सहृदयता ने आनन्द की माता के हृदय मे घर कर लिया । उसके प्रेम पूर्ण व्यवहार से आनन्द के परिवार के लोग बहुत प्रसन्न हुए ।

आनन्द की माता और उसकी भाभी पलग के पास बैठी आनन्द से बातें कर रही थी । भाभी ने मुस्कराते हुए देवर से कहा

'लाला ! सुनते भी हो ऐसी बहू लाओ जैसी इन मा जी की छोरी है । देखने मे क्या भालने मे क्या, शील सुभाव मे क्या बस एक ही है । बूढी चमारी पर मन मत ललचाओ ।'

माता ने प्रेम मे विह्वल होकर कहा कहे तो सच है, पर हमारे ऐसे भाग कहा अमीर घर की बेटी है । घमण्ड का नाम नहीं । बहू ! कैसी अच्छी छोरी है ? जिस घर मे जायगी वह घर रोशन ही हो जायगा ।"

आनन्द न मन ही मन हसकर आखें बन्द कर ली ।

\+ \+ \+

प्रकाश और उसकी माता आनन्द के परिवार को विदा कर रही हैं । आनन्द की माता ने हाथ जोडकर कहा—

देखियो जी । तुमने हम पर बडा अहसान किया है । तुम्ही लोगो के भाग से भय्या क प्राण बच गए हैं । हम गरीब है आशीष के सिवा दे ही क्या सकते हैं ? भगवान तुम्हारा भला करेगा ।"

प्रकाश की माता ने हसकर आनन्द की माता का हाथ पकड लिया और बोली—

तुम्हे बदला चुकाकर जाना होगा ऐसे ही नही जाने दू गी ।"

'हम गरीबो से क्या चाहती हो । हम किसी लायक नही है ?

'लो मेरी बेटी तुम्हारी हो चुकी यही बदला चाहती हू" प्रकाश की माता ने पुत्री का हाथ आनन्द की माता के हाथ मे पकडाते हुए कहा—

आनन्द की माता के नेत्रो से प्रसन्नता और कृतज्ञता के दो आसू टपक पडे ।

\+ \+ \+

प्रकाश की मुराद पूरी हुई और वह ससुराल मे आ गई । अपने साथ हजारो की सम्पत्ति लाई । बडे घर की बेटी थी गरीब घर मे ब्याही गई इसका उसे न दु ख था और न पश्चाताप । वह कुल यद्यपि गरीब था तथापि पवित्र और सदाचारी था । इसी पर प्रकाश को सन्तोष था । इस कुल मे आना वह अपना सौभाग्य समझती थी । ऐसे कुल मे जन्म लेने के लिए देवता तक तरसते हैं फिर प्रकाश क्योंकर प्रसन्न न होती ?

\+ \+ \+

आनन्द की माता महात्मा गांधी की बडी भक्त बन गई थी उनके आन्दोलन मे माता की बडी निष्ठा थी । पुत्र और पुत्र वधू क कारण माता के जीवन मे यह परिवर्तन हुआ था । गांधी जी ने आमरण अनशन का व्रत लिया था जिसने देश भर मे अछूतोद्धार की बिजली फूक दी थी ।

आनन्द की माता नित्य अखबार सुनती और आनन्द बडे प्रेम से माता को अखबार की बातें समझाता । रामझोल की चर्चा और स्थान स्थान पर अछूतो के कुओं और मन्दिरो के प्रवेश सम्बन्धी समाचारो को सुनकर माता का हृदय प्रेम और श्रद्धा से गद्‌गद् हो जाता ।

काशी मे विश्वनाथ मन्दिर को अछूतों के लिए खोल दिए जाने के समाचार से वह बडी प्रभावित हुई । बीच मे बोल उठी ।

'भय्या' इस व्रत के अनुस्थान (अनुष्ठान) मे अपने को भी कुछ करना चाहिए ।

'बताओ ! क्या करोगी ?'

'अछूतोद्धार का कुछ काम जरूर करना चाहिए ।'

प्रकाश माता की गोद मे आ लेटी और बोली—

'माता जी ! पहले अपने घर के अछूत का तो उद्धार करो ।'

'चल हट, मेरे घर में कोन मुआ अछूत होगा ।' माता ने होठ पिचकाते हुए कहा ।

'माता जी इस घर में अछूत मैं हू ।'

चुप रह ! पगली ! क्या अनहोनी बात कह रही है?

'नहीं अम्मा । यह वही चमार की छोकरी है जिसके लिए अबसे दो साल पहले आपने अपने घर का दरवाजा बन्द कर दिया था ।'

आनन्द ने हसते हुए कहा ।

'तुम दोनों बावले हो गए हो ।'

'नहीं अम्मा ! तुम्हारी कसम ! यह वही छोकरी है, सच मानो ।'

'अरे, क्या सच ?

'हा बिल्कुल सच, मालूम कर लेना ।

'माता ने जल्दी से प्रकाश को छाती से लगा लिया । उसके मुह को चूमा । प्रेम मे विभोर होकर बोली —

"बेटा । ना ! मेरी प्रकाश अछूत नही है । यह तो वही पारसमणि है जिसका उस दिन तूने जिकर (जिक्र) किया था ।

आनन्द का मस्तक माता के चरणो मे झुक गया । रुद्ध कण्ठ मे बोला 'अम्मा हमारा अछूतोद्धार यही है ।'

पिता ने भी बाहर से कहा 'असली अछूतोद्धार यही है । स्वामी दयानन्द और आर्य समाज का भी अछूतोद्धार यही है ।' (समाप्त)

सम्पादक के नाम पत्र

प्रेममय निःस्वार्थ भाव ही सुप्रेरणा के स्रोत

सार्वदेशिक दिनांक १ अप्रैल, ८४ मे प्रकाशित श्री एनुल हसन अंसारी मुजफ्फरनगर, का पत्र "हजरत मुहम्मद और गाय" शीर्षक पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई। इस सबन्ध में मैं संक्षिप्त मे जानकारी देना चाहता हू। श्री अन्सारी २१ वर्षीय युवक हैं। इनके और मेरे पत्र दैनिक 'हिन्दुस्तान' में प्राय प्रकाशित होने के कारण बिना व्यक्तिगत जाने पहचाने दो (२) वर्ष पूर्व पत्र व्यवहार आरंभ हो गया और मैंने अपनी आदत के अनुरूप इनके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे मार्गदर्शन करने लगा। यहा तक कि मेरी प्रेरणा से इन्होंने मास खाना सिग्रेट आदि पीना अर्थात सभी दुर्व्यसनो का परित्याग कर दिया है। सात्विक भोजन करते है। समाचार पत्रो को पत्र लिखने की इन्हे पूर्व जन्म सस्कारित-रुचि प्रतीत होती है। यह कुछ अस्वस्थ रहते थे। अत मैं स्वय १, २, ३ अप्रैल ८४ को मुजफ्फरनगर गया और इन्हे योगासनो द्वारा चिकित्सा का प्रशिक्षण दिया। बडी गम्भीरता से इन्होने लगभग २५ आसन सीखे। इन्हें प्राणायाम भी सिखाया है।

मैंने इन्हे पूर्व मे स्वाध्याय का महत्व दर्शाते हुए सत्यार्थ प्रकाश, गीता, रामायण तथा अन्य वैदिक विचारो से युक्त पुस्तकें भेजी थी। जब इनसे मैंने इनके अध्ययन के बारे मे पूछा तो इन्होंने बताया कि इन्होने सत्यार्थ प्रकाश के कई समुल्लास पढ़ लिए हैं और आगे पढ़ रहे हैं। इन्होने यह भी बताया कि सत्यार्थ प्रकाश इन्हे बहुत पसन्द आया और कहते थे कि इसमे कोई बिन्दु ऋषि ने छोडा नही है। इन्हें मैंने अच्छे विचारो का युवक पाया। भविष्य मे भी मैं इनका मार्ग दर्शक रहूगा क्योंकि यह मुझे पिता तुल्य मानते है और मैं इन्हें अपने पुत्र तुल्य। उपरोक्त लिखने का साराश यह है कि यदि हम आर्य विचारों को दूसरों तक निःस्वार्थ भाव से प्रीति पूर्वक पहुचायें तो प्रयास सफल होवें और समाज का कल्याण भी कर सकेंगे।

—रामसरन भटनागर
सस्थापक वैदिक सत्सग मुरादाबाद

दहेज से परहेज

विवाह से सम्बन्धित दहेज क्या है? अथर्ववेद काण्ड २ अनुवाक ६ सूक्त ३६ मन्त्र ७ पर विचार कीजिए—

इद हिरण्य गुल्गुल्वयमौक्षो अथो भग। एते पतिभ्यस्त्वामदु प्रतिकामाय वेत्तवे।

अर्थात् विवाह के उपरान्त कन्यापक्ष की ओर से कन्या और वर को दहेज (दैजा, दाय, यौतुक) मे अलकार वस्त्र, भोजन पदार्थ वाहन, गौ धन आदि दिया जाय और कन्या को पति-सेवा की शिक्षा दी जाय जिससे गृहस्थाश्रम सुखी-सम्पन्न हो।

कन्या पक्ष की ओर से सहर्ष दहेज देना शुभ पुण्य शोभा वैध है तथा वर-पक्ष की ओर से बलात दहेज लेना अशुभ पाप अशोभा अवैध है। धन को साधन मानना अर्थशास्त्र है—धन को साध्य मानना अनर्थशास्त्र है। दहेज-भाव के कारण लाचारी में कन्यायें कुआरी रह जाती है। दहेज-लोभ के वशीभूत होकर वधू को सताना और फिर कभी जला देना, मार देना कितना अकाम्नीय है! कितना बडा पाप है? कितना भयकर अपराध है? विपरीत आचरण का नाम ही तो अधर्म है।

विवाह की आयु-रेखा पार हो जाने पर कन्याओ मे ये लक्षण होते हैं- गहरी उदासी, अस्वाभाविक हसी, नेत्रो मे सूनापन, किसी कार्य मे मन न लगना, सहेलियों की बात चीत में रुचि न लेना, एकान्तवास की इच्छा आदि। बलात् दहेज के इच्छुक को 'भिक्षुक डाकू" कहा जा सकता है। बलात दहेज की कुप्रथा को दूर करने हेतु निम्न उपाय हैं—

(१) गुण-कर्म स्वभाव पर आधारित वर्ण व्यवस्था के अन्तर्गत गृहस्थाश्रम की नींव डाली जाय। (२) बलात दहेज मे प्राप्त धन पाच वर्ष के अन्दर सरकार अपने कोष में दान स्वरूप जमा करा लेवे। (३) अन्तरजातीय विवाह में वर-वधू को कोई सा भी वर्ण के वरण (चुनाव) की मान्यता-सुविधा हो। (४) दहेज के कारण हुई दुर्घटना से सम्बद्ध वर का विवाह पुन अन्यत्र न होने दिया जाय। (५) अपव्यय से बचने हेतु विवाह-सस्कार किसी मन्दिर मे सम्पन्न कराया जाय।

नारी जाति को सहारा चाहिए। बाल्यावस्था मे पिता का युवावस्था मे पति का और वृद्धावस्था मे पुत्र का सहारा चाहिए। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' अर्थात जहा नारी की पूजा होती है–वहा देवता निवास करते हैं।

दहेज से परहेज कीजिये।
गुण-कर्म स्वभाव देखिये॥

—स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती
आर्य समाज ताडीखेत (अल्मोडा)

वर्ण-व्यवस्था

भूतपूर्व उप प्रधानमन्त्री और जनता (ज) पार्टी के नेता श्री जगजीवन राम का लदन की एक टेलीविजन कम्पनी को दी गई भेंटवार्ता मे यह कहना कि भारत मे आजादी के ३७ वर्ष बाद भी वर्ण व्यवस्था को समाप्त नही किया गया है बल्कि इसे दिन-दिन और मजबूत किया जा रहा है स्वय अपने मुह पर तमाचा मारने के समान है। इन ३७ वर्षो मे २५ वर्ष से अधिक समय तक श्री जगजीवनराम स्वय एक केन्द्रीय मन्त्री रहे हैं। इस दौरान उन्होंने क्या किया? वास्तव मे वर्ण व्यवस्था श्री जगजीवन राम जैसे लोगो को ही लाभ पहुचा रही है। यदि सभी स्तरो पर आरक्षण समाप्त कर दिया जाये, तो वर्ण व्यवस्था शीघ्र समाप्त हो जायेगी। यदि श्री जगजीवन राम आगामी लोकसभा चुनावों में अपने निर्वाचन क्षेत्र सहसराम (सुरक्षित) से न खडे होकर किसी गैर सुरक्षित क्षेत्र से खडे हो तो हरिजनो को एक नई शक्ति प्राप्त होगी।

—देवेन्द्र कुमार
२२ मधुवन कालोनी मेरठ।

आठवीं सदी का भारत

आठवी सदी मे कोरिया के एक अल्प ज्ञात सत मैचो ने भारत की यात्रा की थी, और अपनी यात्रा का वृतात, एक पाडुलिपि मे लिखा था। १९०८ मे चीन मे फ्रास के एक सग्राहक पी पेलियट ने इस पाडुलिपि की खोज की थी, और पुराविदो ने इस पाडुलिपि को हाल ही मे अपनी मान्यता प्रदान की थी। अब इस पाडुलिपि का अग्रेजी अनुवाद 'ए पैसेज टू सेंट्रल इण्डिया' के नाम से प्रकाशित हुआ है।

इस पाडुलिपि के जिसके आधार पर कोरिया ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन ने एक वृत्तचित्र का निर्माण भी किया है तीन भागो मे दो अभी तक नहीं मिले हैं एक भाग मे ही जो वर्णन दिया गया है उससे तत्कालीन भारत के लोगो, धर्म रीति रिवाजो, राजस्व व्यवस्था और नागरिक सहिता के बारे मे जानकारी मिलती है। तत्कालीन लोक जीवन की जो झाकी इस पाडुलिपि मे प्रस्तुत की गयी है, उससे पता चलता है कि आज की भाति तब भी भारतीय जनता का मुख्य पेशा कृषि था, और राजा जनता से कोई कर नही लेता था। तब देश मे मृत्यु दण्ड की व्यवस्था भी नही थी। आजकल की भाति, तब भी अधिकाश भारतीय जनता गावो मे ही निवास करती थी। किसान वर्ष मे सिर्फ एक बार थोडी सी मात्रा मे अनाज देते थे जिसे राजा अपने खर्च से गावो से ले जाता था। बडे गावो को निगम गाम कहा जाता था। किसानो को राजा की ओर से बीज खाद मुफ्त दिया जाता था। खेत १ एकड से लेकर ८००० एकड तक होते थे। कृषि को राष्ट्रीय महत्व का सम्माननीय पेशा माना जाता था।

इस पाडुलिपि मे एक स्थान पर यह भी बताया गया है कि उन दिनो चोरी नही के बराबर होती थी, और घरो मे ताला लगाने का रिवाज नही था। इस बात की पुष्टि सस्कृत विद्वानो के इस कथन से भी होती है कि सस्कृत भाषा मे 'ताला चाबी' के लिए कोई पारिभाषिक शब्द नही है।

जब इस पाडुलिपि के दो लुप्त अश भी मिल जायगे तो आठवी सदी के भारत की, जो आज के भारत की तुलना मे स्वर्ग ही कहा जायगा के लोक-जीवन से सबन्धित विशालतर और प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध हो सकेगा।

—सदाजीवन लाल उपाध्यक्ष
भारत कल्याण प्रतिष्ठान बम्बई

स्वर्गीय श्री पं. रघुनन्दन शर्मा को श्रद्धांजलि

—आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र कुलपति

उत्तम भावो के निधान, परोपकार के पुण्यकर्मो को करने वाले अग्र-गन्ताओ के प्रधान कल्याणो के सविधान, प्रभुरचित सुन्दर वैदिक धर्म के मानने वालो मे प्रधान देश के स्वातन्त्र्य सग्राम यज्ञ मे समस्त वैभव की आहुति देने वाले, भारत मा के सुपुत्र, देशभक्तों के अभिनन्दनीय श्री शर्मा जी को नत शिर से यह प्रणामाञ्जलि समर्पित है।

जिन्होने अपने समस्त जीवन को नही जीवन के आधार भूत बुढापे के सहारे, वृद्ध नयनो के ज्योति पुञ्ज और तरूणाई के प्रसाद रूप, अपने प्रिय पुत्र दयानन्द को हैदराबाद के धर्म रक्षार्थ-सत्याग्रह मे प्रसन्न मन से भेज दिया ऐसे परम धर्मशील प्रात स्मरणीय महापुरुष को मैं प्रणाम करता हू।

आर्य सामाजिक जन, गुणगणो से विभूषित जिनको श्रद्धा से नतमस्तक है जिन्होने पथदर्शक नेता बनकर कांग्रेस के अध्यक्ष पद को कई वर्षों तक अलकृत किया इम तथा परलोक को सिद्ध करने वाले पवित्र कर्मों का आच-रण करने वाले, विद्वानो के वन्दनीय कर्मनिष्ठ उन परम तपस्वी को मैं प्रणाम करता हू।

अपने प्रिय गणो का मोह त्याग, स्वजन वर्ग से ममता रहित होकर उन्हे वियोग मे बिलखता हुआ छोडकर जो देवालय को चल दिए, स्वय तो ईश्वर के शरण मे जा बैठे, और वियोग के अथाह समुद्र मे डूबे दु खी हम लोगो को अपने असह्य वियोग से और भी दु खी करने वाले दिवगत उस परम-विरक्त को हम प्रणाम करते हैं।

हिन्दी-आन्दोलन, समग्र वैभव की खानि गोवश की रक्षा के लिए सत्या-ग्रह मे उन्होने अपने प्रियात्मज श्री सच्चिदानन्द शास्त्री को उत्साह भरे प्रसन्न मन से भेज दिया और बारम्बार ये शब्द कहे कि उन माता पिताओ के भाग्य धन्य धन्य हैं जिनकी सन्तान धर्म और राष्ट्र की रक्षा मे अपने जीवन की आहुतिया लगाती हैं?

जो सदा दीनो के सहायक रहे, विधवाओं के उद्धार कार्य मे लगे रहे। जिन्होने हरदोई मे बालिकाओ के लिए पाठशाला खोली, जो आज उपाधि महाविद्यालय के रूप मे है। सबके सेवाव्रती जिनके होठो पर कठोरता और अन्तर्हृदय मे नवनीत जैसी मृदुता सर्वदा रहती थी, वे पावन चरित, आबाल वृद्ध किसके वन्दनीय नही हैं।

नित्य स्वाध्याय से निष्कलुष मानस वाले सत्य वचनो की सुन्दर पावनी रचना वाले यज्ञादि उतम कर्मों मे नित्य प्रवृत मुनिकल्प श्री रघुनन्दन शर्मा जो अब भूलोक को छोड स्वर्गवासी हो गए हैं—वे किसके वन्दनीय नही है?

सर्वप्राणिहिताथ जब कही पर सार्वजनिक आयोजन किए जायेंगे, कठि-नता के समय धैर्य बधाने और सान्त्वना देने वाले उस महान अवलम्ब का अभाव हो गया जो ऐसे आडे समय मे सहायक बनते और नेतत्व किया करते थे।

हे त्राण कर्त्ता! तुम्हारे वियोग की यह वेला हमे सवथा दु सह्य हो गई है। हमारे मन की प्रसन्नता और अधरो की मुस्कान अब जाने कहा खो गई है। आसुओ की यह अजस्र धारा हमारे नेत्राञ्चल को अब नही छोडती, हमको रोता बिलखता छोड वृद्धवर के स्वर्ग चले जाने पर।

अपनी जीवन यात्रा की अन्तिम प्रस्थान वेला मे श्रद्धा परिपूर्ण जनता और जनपद के समस्त अधिकारी भाव विह्वल और शोक विकल हो गये थे। यहा से स्वग के लिए प्रस्थान पर सभी आर्यसमाजी अधीर और नि सहाय हो गए हैं।

दीनो के दु खहर्त्ता परमप्रभु से हम एक ही वर मागते हैं कि वे इस भू-मण्डल पर देश के उद्धार और धर्म की वृद्धि के लिए पवित्र आचरण वाले दानियो मे अग्रगण्य श्री प० रघुनन्दन शर्मा को एक बार फिर हम लोगो के बीच मे भेज दें।

आर्य समाज स्थापना दिवस

अल्मोडा। आर्य समाज मन्दिर ताडीखेत मे ईश्वरनाम-सवत्सर १ अरब, ९७ करोड, २९ लाख, ४१ हजार ८५ का कुमारम्भक प० प्रेमदेव शर्मा के पौरोहित्य एव महात्मा भक्तमुनि की अध्यक्षता मे चैत्र शुक्ल प्रतिपदा २०४१ विक्रमी (२ अप्रैल १९८४) को समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। उक्त अवसर पर स्वामी गुरुकुलानन्द फलाहारी ने कहा कि आज ही के दिन त्रिविष्टप (तिब्बत) मे भूमाता के गर्भ से उत्पन्न श्रेष्ठ सदाचारी मानवों को ऋग्वेद मे 'आर्य' कहा जाता है। महाभारतकाल तक आर्य सनातन वैदिक सस्कृति के प्रसार से विश्व मे सुख-शान्ति रही। कालान्तर मे आये अमानवीय सस्कृति को दूर करने हेतु प० कर्षण तिवारी के सुपुत्र स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सनातन वैदिकधर्म क प्रचार-प्रसारार्थ चैत्रशुक्ल प्रतिपदा १९३२ विक्रमी को आर्य समाज की स्थापना की।

निर्वाचन —

भगवानगंज अजमेर

प्रधान सर्वश्री पूर्णचन्द्र शर्मा, मन्त्री रामगोपाल, कोषाध्यक्ष भवानीशकर निर्वाचित हुए।

कर्णवास

प्रधान सर्वश्री यादराम, मन्त्री रूपनसिंह, कोषाध्यक्ष राजवीरसिंह निर्वाचित हुए।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा अलवर

प्रधान सर्वश्री विद्यासागर, मन्त्री प० हेतराम आर्य, कोषाध्यक्ष डा० राजेन्द्र कुमार, आचार्य सत्यप्रिय आर्य वेदप्रचार अधिष्ठाता निर्वाचित हुए।

सरक्षक छोटूसिंह एडवोकेट, सिवहारा (बिजनौर), प्रधान चौ० रणवीरसिंह, मन्त्री डा० सन्तराम तथा कोषाध्यक्ष सुनील कुमार निर्वाचित हुए।

ब्रह्मपुरी घोंडा दिल्ली

प्रधान सर्वश्री ओम्प्रकाश गुप्त, मन्त्री कृष्ण आर्य, कोषाध्यक्ष विन्देश्वर

आर्य समाज महमूदपुर

प्रधान सर्वश्री भगवत दयाल, मन्त्री रामेश्वर आर्य, कोषाध्यक्ष नन्दलाल

उज्जैन

प्रधान सर्वश्री नन्दलाल आर्य मन्त्री माधव कुमार, कोषाध्यक्ष गोपाल सोनी आर्य वीर दल अधिष्ठाता गोपाल गिरि निर्वाचित हुए।

रेणुकूट मिर्जापुर

प्रधान सर्वश्री बलधारीसिंह, मन्त्री गिरधारीलाल, कोषाध्यक्ष प्रहलाद राव

अल्मोड़ा

प्रधान सर्वश्री जगत प्रसाद, मन्त्री जयदत्त शास्त्री, कोषाध्यक्ष प्यारेलाल

आर्य समाज पवनपुरी हाऊसिंग) बोर्ड

प्रधान सर्वश्री विमल घोबराय, मन्त्री राधाचरण शर्मा, कोषाध्यक्ष रामनगीनासिंह निर्वाचित हुए।

वैदिक पारिवारिक सत्संग समिति आलना

प्रधान सर्वश्री सौ० सावित्री देवी शर्मा, मन्त्री रामानन्द शर्मा, कोषाध्यक्ष कृष्ण शर्मा (२२-३-८४) को सम्पन्न हुआ।

महर्षि दयानन्द मार्ग वरखंडी नाका (बांदा)

प्रधान सर्वश्री रामरतनसिंह, मन्त्री सुरेन्द्रनाथ पाडेय, कोषाध्यक्ष वेदप्रकाश गुप्त (२५-३-८४) को सम्पन्न हुआ।

तिलहर (शाहजहांपुर)

प्रधान सर्वश्री नन्दलाल आर्य, मन्त्री रामस्वरूप, कोषाध्यक्ष ब्रह्मप्रकाश

आर्य समाज शिवाजी पार्क बम्बई

प्रधान सर्वश्री जयन्तिलाल सघवी, मन्त्री कालीप्रसादसिंह भू० पू० प्रिन्सिपल दयानन्द विद्यालय माटुगा, कोषाध्यक्ष चरन भाई जोशा निर्वाचित हुए।

गोवंश की हत्या एक और आत्मदाह मांगता है

—राधेश्याम दांतरे

कुछ महीने पहले कानपुर देहात मे नीलगाय के अवैध शिकार पर रोक लगाने की माग पूरी न होने पर अपनी पूर्व घोषणा के अनुसार एक नवयुवक ने आत्मदाह कर लिया था। इस प्रसग में पुलिस पर आरोप रहा कि उसने पूर्व सूचना के बाद भी आत्मदाह रोकने के बजाय आत्मदाह करने वाले नव युवक को उकसाया ही था। अब जालौन जिले के एक समाजसेवी ने मार्च के अन्त मे प्रदेश के मुख्य मन्त्री श्रीपति मिश्र को एक लबा पत्र भेजते हुए उनसे पूछा है कि गोवश के अवैध वध को रोकने के लिए क्या आत्मदाह के अतिरिक्त अन्य भी कोई उपाय शेष रहा है? पत्र मे मुख्यमन्त्री जी से अपेक्षा की गई है कि मई ८४ के प्रथम सप्ताह तक अपने फैसले से अवगत कराने की कृपा करें। बाद मे प्रतीक्षा नही की जाएगी।

पत्र मे जो तथ्य दिए गए हैं वे चौकाने वाले हैं।

गोवध निषेध अधिनियम के तहत प्रदेश से बाहर बिक्री के लिए गौ वशजो के परिवहन परमिट जिलाधिकारी ही जारी कर सकते हैं। लेकिन वर्ष ८० ८१ मे कौंच रेलवे स्टेशन से पाच सौ बैल वध के लिए महाराष्ट्र (बम्बई) को लादे गए। परिवहन के ये परमिट कोंच के तत्कालीन पशु चिकित्सक डा० एस के त्यागी ने अपने हस्तलेख मे बनाए इन पर लघु हस्ताक्षर तत्कालीन जिला पशुधन अधिकारी के हैं। इस नियम के विरुद्ध कार्य और गोवध निषेध अधिनियम के अन्तर्गत अपराध की सप्रमाण शिकायत की गई। किन्तु अभी तक दोषी व्यक्तियो के विरुद्ध विभागीय तथा कानूनी कार्यवाही नहीं की गई।

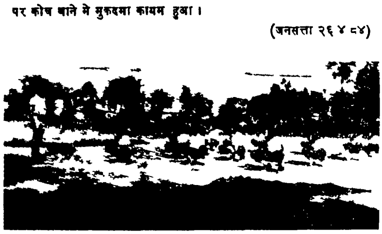
दूसरा आरोप है कि गोवध निषेध अधिनियम के अनुसार बिक्री के लिए जो परमिट जारी किए जायेंगे, उन पर बाहर ले जाए गए बैलो का विक्रय प्रमाण पत्र परमिट जारी होने के छह माह के भीतर जमा करना अनिवार्य है। किन्तु वर्ष ८१-८२ मे तत्कालीन जिला पशुधन अधिकारी डा० पी सी दिवाकर ने बगाल ले जाने के लिए १४०० बैलो के परमिट जारी किए किंतु छ माह तो क्या डेढ वर्ष तक हो जाने के बाद भी परमिट पाने वालो से विक्रय प्रमाण पत्र नही मांगा। इस सम्बन्ध मे एक शिकायत यह भी है कि चू कि डा० दिवाकर को जिलाधिकारी ने परमिट जारी करने का अधिकार दिया ही नही था, अत वे कोई भी परमिट जारी ही नही कर सकते थे, और यदि जारी कर ही दिया था तो उसकी अनिवार्य शर्त को पूरा कराते। मजेदार बात यह है कि जब ८३ के शुरू मे विधान सभा मे यह सवाल उठा तो शासन ने फरवरी ८३ में डा० दिवाकर को पत्र भेजकर निर्देश दिया कि वे शर्त पूरी न करने वाले परमिट धारको के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करें, किन्तु डा० दिवाकर ने मार्च और मई ८३ मे जब उक्त परमिट धारको के कारण बताओ नोटिस दिए तो अनेक लोगो ने लिखकर उत्तर भेज दिया कि आपने न चार-चार सौ रुपया लेकर परमिट दिए थे तो अब आप कानूनी कार्यवाही कैसे कर सकते हैं?

तीसरी शिकायत यह की गई है कि इन्ही डाक्टर दिवाकर ने नवम्बर ८१ को कोंच के आमीन नामक एक कसाई को कोंच से कानपुर तक प्रतिदिन दस क्विटल बीफ ले जाने का परमिट दिया था। कानूनन 'बीफ' के परिवहन व्यापार आदि का परमिट केवल उस व्यक्ति को दिया जा सकता है जिसके पास 'एफ' लायसेंस हो किन्तु जालौन जिले मे किसी के भी पास 'एफ' लायसेंस नहीं है। ऐसी स्थिति मे बीफ के लिए परमिट देना गोवध निषेध अधिनियम का खुला उल्लघन है। इस सम्बन्ध मे शिकायत करने पर डा० दिवाकर ने और फिर सरकार ने भी उत्तर दिया है कि "बीफ का तकनीकी अर्थ 'भैंस का मास" भी होता है।

चौथी शिकायत में कहा गया है कि कानूनन किसी बैल का वध तभी किया जा सकता है जब सक्षम अधिकारी (पशु चिकित्सक, राजपत्रित) बैल परीक्षण करके प्रमाण पत्र दे दे कि बैल बूढा अपग अनुपयोगी है। ६ जून से २१ जून ८२ तक कोंच के पशु चिकित्सक डा० महेन्द्र कुमार त्यागी छुटी पर अपने घर थे और इन्ही दिनों में एक कम्पाउडर वह भी अप्रशिक्षित बिना हस्ताक्षर मोहर के प्रमाण पत्र जारी करता रहा और इन अवैध परमिटो पर ११७ बैल दूसरे राज्यों मे ले जाकर काट डाले गए। इतना ही नही अपने कोंच के कार्यकाल मे जब जब डा० त्यागी छुट्टी पर गए तब तब वे प्रमाण पत्र कम्पाउडर को दे गए और कम्पाउडर अनधिकृत रूप से परमिट जारी करता रहा। इस प्रकार करीब पाच सौ बैल अवैध प्रमाण पत्रो पर कटवाए गए और बार-बार की गई शिकायतो के बाद भी डा० त्यागी के विरुद्ध आवश्यक कानूनी कार्रवाही अभी तक नही की गई।

पाचवा आरोप यह है कि नगरपालिका अधिनियम के अनुसार कोई प्रस्ताव तभी लागू हो सकता है जब (१) प्रस्ताव पारित करने के पहले उसे प्रचारित करके उस पर जन आपत्तिया आमंत्रित कर ली गई हो (२) उन आपत्तियो का निस्तारण कर लिया गया हो (३) प्रस्ताव पालिका मे विधिवत पारित किया गया हो (४) पारित प्रस्ताव की मडलायुक्त ने पुष्टि कर दी हो (५) तदुपरात पुष्टि किए गए प्रस्ताव का राजपत्र म प्रकाशन करा दिया गया हो। कोच नगर पालिका सीमा मे मार्च ७५ तक बैल नही कटते थे। १२ मार्च को एक तथाकथित प्रस्ताव पारित कर के नगर पालिका ने बैल काटा जाना मजूर किया। इस प्रस्ताव की कार्यवाही पुस्तिका पर एक भी सदस्य के हस्ताक्षर नही है। मात्र तत्कालीन चेयरमैन अख्तर अली के हस्ताक्षर हैं। इस प्रस्ताव के लिए तथाकथित रूप से मात्र तीसरी शर्त का पालन किया गया है शेष चार शर्तों का पालन नही किया गया है। कानूनन जब तक पाचो शर्तों का पालन न हो जाए तब तक प्रस्ताव लागू ही नही किया जा सकता। लेकिन कमाल यह है कि यह प्रस्ताव पारित तो १२ मार्च को हुआ और कोच पालिका की वधशाला मे बैल १० मार्च से ही काटे जाने लगे। आरोप मे कहा गया है कि जालौन, उरई और कालपी किसी भी नगर पालिका मे पाच वर्षो मे ही (पालिका अभिलेखो के अनुसार) लगभग पच्चीस हजार बैल काटे जा चुके हैं। चोरी छिपे काटे जाने वाले बैलो की सख्या तो लाखो मे बताई जाती है। पत्र मे कहा गया है कि प्रधान मन्त्री ने पत्राक १७० (२४ फरवरी ८२) लिखते हुए उ प्र सरकार सहित १४ अन्य राज्यो को लिखा था कि गोवध निषेध अधिनियम के न केवल शब्दो बल्कि उसकी भावना का भी पालन किया जाए और बहानेबाजी से गोवश का वध न होने दिया जाय। स्पष्ट है कि प्रधान मन्त्री चाहती हैं कि जरा भी गुजाइश हो तो गोवश का वध न होने दिया जाय किन्तु जालौन जिला प्रशासन (पुलिस नगर पालिका तथा पशुपालन सभी विभाग) इस पर आमादा है कि जरा भी गुजाइश हो तो गोवश का वध करा दिया जाए। पुलिस गोवध निषेध अधिनियम के अन्तर्गत दर्ज कराई जाने वाली रिपोर्टों को दर्ज ही नही करती और दर्ज करती है तो मुकद्दमा कायम नही करती। एक बार कोतवाली पुलिस महानिरीक्षक श्री आर पी गोबिल के आदेश पर मुकद्दमा कायम किया और दूसरी बार डी आई जी झासी प्रकाश सिह के आदेश पर कोंच थाने मे मुकदमा कायम हुआ।

(जनसत्ता २६ ४ ८४)



महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह के अवसर पर आयोजित व्यायाम प्रदर्शन मे कुरुक्षेत्र जिला के आर्य वीर व्यायाम करते हुए। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के उपप्रधान सचालक डा० देवव्रत व्यायामाचार्य निरीक्षण करते हुए दिखाई दे रहे है।

आर्य समाजों की गतिविधियां

हैदराबाद के आर्य समाज सत्याग्रहियों को भी स्वाधीनता सेनानी माना जाय

नई दिल्ली २१ अप्रैल

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने एक बयान मे कहा है कि उक्त सभा के अन्तर्गत निजामशाही के विरुद्ध १९३९ मे सविनय अवज्ञा, आन्दोलन धार्मिक एव नागरिक स्वतन्त्रता के लिए किया गया था, जिसमे उक्त राज्य के नागरिको के अलावा शेष भारत के हजारो सत्याग्रहियो ने भाग लिया था एक दर्जन से अधिक व्यक्तियो की वहा मृत्यु हो गयी थी। सरदार पटेल ने हैदराबाद पुलिस कार्रवाई के बाद हैदराबाद मे पहुचने पर इसीलिए कहा था कि यह सफलता आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओ के बलिदानो के द्वारा ही इतनी शीघ्र मिली है। हमारी माग है कि उनको भी तुरन्त स्वाधीनता सेनानी सम्मान भारत सरकार एव राज्य सरकारे प्रदान करे। इस विषय मे अ० भा० स्वतन्त्रता सेनानी सगठन को एव केन्द्र के गृहमन्त्री को शीघ्र कार्रवाई करके निर्णय करना चाहिए। श्री रामचन्द्रराव को उक्त आदोलन के समय निजामरियासत की जेलमे वन्देमातरम् कहने पर २१ बेंतो की सजा दी गयी थी और तभी से उनका यह नाम पड गया है। वे तेलुगू सम्मेलन के मुख्य कार्यकर्त्ताओ मे से एक है।

ईसाई युवती वैदिक धर्म में

स्थानीय आदर्श विवाह एव शुद्धि मन्दिर भागीरथपुरा इन्दौर मे ईसाई युवती कुमारी शोभा अब्राहम की शुद्धि की गई और उसकी ही इच्छा से शुद्धि के पश्चात उसका नाम शोभा आर्य रखा गया और बाद मे उसका विवाह सस्कार भी डा० धनाराम जी शर्मा के साथ सम्पन्न कराया गया। शुद्धि एव विवाह सस्कार आर्य पुरोहित डा० उदयभानु जी शर्मा द्वारा सम्पन्न हुए। इसकी सारी व्यवस्था शकरसिंह आर्य द्वारा कराई गई। वर-वधू को उपस्थित महानुभावों ने आशीर्वाद दिया।

आर्य समाज उज्जैन द्वारा पंजाब के उग्रवादियों के विरुद्ध निन्दा प्रस्ताव पारित

उज्जैन। दिनाक ७-४-८४ को आर्य समाज उज्जैन की अन्तरग सभा की बैठक उपप्रधान श्री ओम्प्रकाश जी की अध्यक्षता मे तथा दिनाक ८-४-८४ को आर्य समाज उज्जैन की साधारण सभा की बैठक उपप्रधान श्री गोपालदास भारती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमे आर्य समाज उज्जैन के द्वारा पजाब मे उग्रवादियों द्वारा फैलाई जा रही समस्या के विरोध मे निन्दा प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ।

आर्य समाज पदाधिकारियो सदस्यों तथा सर्वसाधारण आर्य नर-नारियो की ओर से प्रशासन से माग की गई कि वह आतंकवादियो को सख्ती से कुचले ताकि पजाब मे साम्प्रदायिक सौहार्द का वातावरण पुन कायम किया जा सके।　　डा० मणीन्द्र कुमार व्यास, मन्त्री

आर्य समाज हापुड़ द्वारा निन्दा प्रस्ताव

आर्य समाज हापुड के तत्त्वावधान मे हुई सामाजिक, शैक्षिक, एव व्यावसायिक सगठनो के विशिष्ट सदस्यो तथा नेताओ की सार्वजनिक सभा मे एक प्रस्ताव उग्रवादियो द्वारा निर्दोष हिन्दुओं, सिखो आदि की हत्याओ, लूट पाट अग्निदाह आदि की घटनाओं पर दुःख एव चिन्ता प्रकट करते हुए उग्रवादियो को कुचल कर शान्ति और व्यवस्था और सुरक्षा की स्थिति पैदा करने की सरकार से माग की गई। साथ ही अपराधियो को कानून की गिरफ्त मे लेकर उन्हे दण्डित करने का भी आह्वान किया गया। प्रस्ताव मे स्वर्ण मन्दिर अमृतसर मे छुपे अपराधियों की धरपकड उसे अड्डा बनाए जाने से रोकने के लिए पुलीस प्रवेश की भी सरकार से माग की गई। प्रस्ताव मे यह भी स्पष्ट किया गया है कि प्रशासन की इस ढिलाई से उग्रवादियो को प्रोत्साहन मिल रहा या मिल सकता है।

—डा० विजय भूषण आर्य, प्रधान

श्री पं० देवव्रतधर्मेन्दुजी 'आर्योपदेशक' का ८१वां जन्म दिवस

१३ अप्रैल १९८४ को परोपकारिणी यज्ञ समिति दिल्ली के तत्त्वावधान मे आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध आर्य नेता श्री प० देवव्रत धर्मेन्दु जी का ८१वा जन्म दिवस उनके निवास स्थान पर बड़े समारोहपूर्वक प्रतिवर्ष की भाति मनाया गया। सर्वप्रथम समिति की ओर से यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री धर्मेन्दु जी का हार्दिक अभिनन्दन व उत्तम स्वास्थ्य एव दीर्घआयुष्य की शुभकामनाएं की गई और अनेको आर्य बन्धुओं ने बधाइया भेजी। श्री धर्मेन्दु जी ने उपरोक्त समिति को तीन हजार तीन सौ रुपये की राशि दान दी थी। इस राशि से समिति ने श्री धर्मेन्दु जी के जीवन पर 'जीवन दर्शन' व 'सफल जीवन' नामक दो पुस्तकें प्रकाशित की हैं जो सभी सस्थाओ व आर्य भाई बहनों को निःशुल्क भेट की जा रही है। जो सज्जन पुस्तक प्राप्त करना चाहे वे २५ पैसे के डाक टिकट भेजकर समिति के महामन्त्री श्री कमल किशोर आर्य, १० ए। १५ शक्ति नगर दिल्ली ७ से प्राप्त करें।

— ललित प्रसाद बसल, उपप्रधान
परोपकारिणी यज्ञ समिति, दिल्ली

आर्य समाज कोसी कलां (मथुरा) उ० प्र० का निर्वाचन

प्रधान सर्वश्री ओम्प्रकाश आर्य, मन्त्री विजय कुमार आर्य, कोषाध्यक्ष वीरेन्द्र कुमार आर्य निर्वाचित हुए।

शहीद परिवार फंड से उग्रवादियों के शिकार ३५ परिवारों को ४.१५ लाख रुपये की सहायता

जालन्धर, २८ अप्रैल। दैनिक पजाब केसरी, हिन्द समाचार और जगवाणी समाचार पत्रो के समूह हिन्द समाचार ग्रुप द्वारा सचालित शहीद परिवार फण्ड से पजाब मे उग्रवादियो के शिकार हुए ३५ परिवारो को आज यहा ४ लाख १५ हजार रुपये वितरित किए गए। सहायता राशि प्राप्त करने वालो मे तीन सिख परिवार भी हैं।

प्रत्येक विधवा को बीस हजार और प्रत्येक आश्रित परिवार को १० हजार रुपये दिए गए। समाचार पत्रो के पाठको की ओर से १५ लाख रुपये प्राप्त हुए थे। इससे पूर्व नौ लाख रुपये ढिलवा और नौशहरा पुनुआ मे पिछले साल एक बस मे मारे गए नौ यात्रियो के निकट सम्बन्धियो को वितरित किये गये। इसी घटना मे मरे एक यात्री के परिवार वालो ने मदद लेने से इन्कार कर दिया था।

शहीद परिवार फण्ड कमेटी के सदस्य नया जमाना के सम्पादक जगजीत सिंह आनन्द, प्रताप के सम्पादक वीरेन्द्र तथा सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष सोहनलाल भी इस अवसर पर मौजूद थे।

जालन्धर के उपायुक्त और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक भी इस कार्यक्रम मे शामिल हुए।

श्री पं० धर्मेन्दु जी शतायु हों

१३ अप्रैल ८४ की सायकाल छात्रावास चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर सूरज पर्वत नई दिल्ली में श्री श्री प० धर्मेन्दु जी का ८१वा जन्म दिवस बडी धूमधाम से मनाया गया।

श्री राज कुमारी जी एम० ए० ने अध्यक्ष पद से श्री प० धर्मेन्दु जी के महान त्यागमय आदर्श जीवन पर प्रकाश डालते हुए इनके उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन की शुभ कामना करते हुए उन्हें हार्दिक बधाई दी।

सभी छात्राओं एव कर्मचारियों को प्रसाद वितरण करके सभा समाप्त हुई।

प्रवेश सूचना

श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा द्वारा सचालित उपदेशक महा विद्यालय मे प्रवेश १ जुलाई १९८४ से प्रारम्भ है। प्रवेश की अन्तिम तिथि १५ जुलाई ८४ है।

इस उपदेशक महाविद्यालय का एक मात्र उद्देश्य वैदिक धर्म प्रचारक व उपदेशक तैयार करना है। प्रवेशार्थी को कम से कम मैट्रिक या उसके समकक्ष योग्यता एव साथ २ सस्कृत भाषा का ज्ञान अनिवार्य है। उच्च श्रेणी वाले छात्र को प्राथमिकता दी जावेगी। चार वर्षीय पूर्ण पाठ्यक्रम काल में विद्यार्थी को भोजन, वस्त्र, आवास, पुस्तके व आवश्यक सामग्री नि शुल्क प्रदान की जावेगी। प्रत्येक विद्यार्थी के लिए अनुशासन व स्वस्थ्यता अनिवार्य है। स्थान सीमित है प्रवेश शीघ्र लें।

श्री हरिओम उपप्राचार्य
मि० आचार्य 'विद्यावाचस्पति"
उपदेशक महाविद्यालय टकारा
राजकोट (सौराष्ट्र) ३६३६५०

प्रवेश-सूचना

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा सस्थापित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ प्राचीन एव आधुनिक शिक्षा प्रणाली का अद्भुत सगम गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद में छात्रों को प्रवेश-तिथि १५ अप्रैल से ३१ जुलाई तक है। लिखित व मौखिक परीक्षा मे उत्तीर्ण होने पर कक्षा पाचवी मे प्रवेश दिया जावेगा। आधुनिक एव प्राचीन शिक्षा के साथ-साथ नैतिक शिक्षा, बौद्धिक एव शारीरिक विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता है। छात्रावास का विशेष प्रबन्ध है। गुरुकुल सरकार से मान्यता प्राप्त है।

—प्रधानाचार्य
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

नेपाल के सिख अकाली नेताओं से क्षुब्ध

नेपाल के बहुत से सिखो से सम्पर्क करने पर पता चला कि भारतीय अकाली दलसे वे बहुत नाराज है। इनका कहना था कि अकालियोके उग्रवादी रवैये से सिखो की प्रतिष्ठा गिरी है। सिख हिन्दू हैं या अलग कौम, इस प्रश्न पर तो एक सिख भाई बहुत ही गुस्से मे आ गए, उनका तो कहना था अगर कोई कुर्सी का भूखा या राष्ट्रपिता बनने के चक्कर मे सिख को अलग कौम कहता है तो उससे सिख अलग कौम नही हो जाते, वास्तव मे सिख भी हिन्दू ही हैं इसीलिए हाल ही म काठमाडो (नेपाल) मे हुए हिन्दू सम्मेलन मे बहुत से सिखो ने भाग लिया।

—नटवरलाल नेवटिया
(लक्ष्मी वस्तु भण्डार,
विराटनगर (नेपाल)

अकाली महिलाएं आगे आयें

नई दिल्ली ८ अप्रैल। भारतीय जनता पार्टी की उपाध्यक्ष श्रीमती विजय राजे सिंधिया ने महिलाओ, विशेषकर अकाली परिवारो की महिलाओ से पजाब मे हिंसा रोकने के लिए अपने प्रभाव का इस्तेमाल करने की अपील की है।

एक वक्तव्य मे उन्होने कहा है कि मा के दिल से की गई अपील से उन लोगो मे बुद्धिमत्ता जागृत करने मे मदद मिलेगी जो पजाब की शांति भग करने पर उतारू हैं। महिला इस बात को ज्यादा जानती हैं कि आतक और हिंसा के वातावरण मे जीना कैसे असभव है। पजाब में आज जो वातावरण है उसमें लोग मानो मौत के साये मे रह रहे हैं। महिलाओ को हिंसा के विरोध मे बडी सख्या मे बाहर निकलना चाहिए।

महर्षि दयानन्द शंभुदयाल आश्रम का उत्सव सानन्द सम्पन्न

गाजियाबाद। दयानन्द शम्भुदयाल आश्रम का वार्षिकोत्सव ८ अप्रैल से १५ अप्रैल १९८४ तक बडे ही समारोह और प्रभावशाली पद्धति से सम्पन्न हुआ। महर्षि लगर में भोजन नि शुल्क सातों दिवस चलता रहा।

पूज्यपाद सर्वश्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती, अमर स्वामी, दीक्षानन्द सरस्वती, जगदीश्वरानन्द सरस्वती आदि अनेक महानुभावो के प्रवचनो का सर्वसाधारण पर गहरा प्रभाव पडा। जनता ने मुक्त हस्त से दान देकर वैदिक धर्म के प्रति अपनी निष्ठा प्रकट की तथा वैदिक साहित्य खरीद कर अपनी स्वाध्याय प्रियता का परिचय दिया।

आश्रमवासियो ने इन दिनो अपनी सेवा द्वारा सर्वसाधारण पर अपनी अमिट छाप छोडी। महर्षि दयानन्द की जयजयकार से पडाल निनादित होता रहा।

—जनार्दन भिक्षु

ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न

अलीगढ। केन्द्रीय आर्य समाज मन्दिर अलीगढ के तत्वावधान मे ऋषि बोधोत्सव (शिव रात्रि पर्व) दिनाक २४-२-८४ से २९-२-८४ तक धूमधाम से मनाया गया। जिसमें प्रात काल भिन्न २ मुहल्लो मे प्रभात फेरिया निकाली गयी। प्रात ८ बजे से १० बजे तक सायकाल ७ ३० से १० बजे तक उच्च कोटि के विद्वानो सन्यासियों के प्रवचन हुए। दिनांक २९ २ ८४ को आर्य समाज प्रचार केन्द्र धनवरीगज मे यज्ञ के उपरान्त एक विशाल शोभा यात्रा सयोजक डा० मगाराम के सचालन मे प्रारम्भ हुई। आर्यसमाज धनवरी गज की ओर से दूध व मिष्ठान्न वितरण किया गया। शोभायात्रा का नेतृत्व आर्यसमाज के कर्मठ व लगनशील प्रधान श्री अमरनाथ प्रेमी नेकिबर। ओ३म की ध्वजा उठाये चल रहे थे। शोभा यात्रा मे जहा आर्य वीर दल के स्वयंसेवक अपनी वेशभूषा मे थे वहा कन्या गुरुकुल हाथरस को ब्रह्मचारिणिया अपने सुमधुर स्वरो मे ऋषि दयानन्द का गुणगान करती चल रही थी अनेक बाल मन्दिर तथा आर्य समाज के सभी प्रचार केन्द्रो के साथ ही जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी भी उपस्थित थे।

शोभा यात्रा धनवरीगज से उदयसिंह जैन रोड, बारहदरी पत्थर बाजार दुबे का पडाव होती हुई केन्द्रीय आर्य समाज मन्दिर मे पहुची। जहां जिलाधिकारी श्री पी० एल० पुनिया ने पहुंचकर शोभा यात्रा की भूरि २ प्रशसा करते हुए कहा कि मुझे आर्य समाज मे पहले से ही आना चाहिए था मैं यहा के वातावरण से प्रभावित हुआ हू। स्वागताध्यक्ष श्री शकरलाल जी लोहे वालो ने जिलाधीश महोदय का स्वागत किया ध्वजारोहण के पश्चात शोभा यात्रा मे शामिल महानुभावो ने ऋषि लगर मे भोजन किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम को सफल बनाने का श्रेय आर्य समाज के प्रधान श्री अमरनाथ प्रेमी व मन्त्री श्री मुमिन आर्य तथा स्वागताध्यक्ष श्री शकरलाल जी को है।

—विद्याधर आर्य शास्त्री, उपमन्त्री

[illegible]

अनुवादक—श्री डा० चिरंजीव भा०

नया सस्करण

मूल्य—१०)

सार्वदेशिक सभा ने बढ़ी हुई माग की पूर्त्यर्थ इस ग्रन्थ रत्न का दूसरा सस्करण अभी हाल में प्रकाशित कराया है जो सभा के पुस्तक भंडार से प्राप्य है।

उल्लेखनीय है कि यह अ ग्रेजी भाषा भाषी जनता मे बडा लोकप्रिय रहा है। स्वाध्याय, एव प्रचार के अतिरिक्त भेंट रूप में दिए जाने में भी इसका अत्यधिक उपयोग हुआ है।

५०० पृष्ठों के इस ग्रथ का मूल्य भी लागत से कम रखा गया है।

—ओम्प्रकाश त्यागी
सभा मन्त्री

(२)

हवन का चमत्कार

सम्पादक—राकेश मेहता

प्रकाशक—आर्य कुमार सभा (रजि) किंग्सवे दिल्ली

२०+३०×१६—पृ० २८ मूल्य)५०

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली-२ में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८५] वर्ष १९ अङ्क २३।
वैशाख शु० १३ स० २०४१ रविवार १३ मई १९८४
दूरभाष [illegible] २७७७७१
वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति ४० पैसे

आर्य नेताओं को दी गई धमकियों से आर्य जगत् में घोर रोष क्षोभ व्याप्त

केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर का प्रेस वक्तव्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले तथा महासचिव श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी को उग्रवादियो ने धमकी दी है कि यदि उन्होंने भिंडरावाला के खिलाफ जुबान बन्द न की तो उनकी हत्या कर दी जाएगी। उनकी इस धमकी से आर्य जगत् मे भारी क्षोभ व रोष व्याप्त है। उग्रवादी जान ले कि आर्य समाजी मौत से नही डरा करते। न कभी अपने कर्त्तव्य से विमुख हुए हैं। योगीराज श्री कृष्ण तथा देव दयानन्द के अनुयायी आत्मा की अमरता मे विश्वास रखते हैं। आत्मा को हथियार काट नही सकते, आग जला नहीं सकती पानी गला नही सकता और वायु सुखा नही सकता। तो फिर डर का सवाल ही क्या? ३० मार्च १९१९ के दिन चादनी चौक दिल्ली मे स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गोरो की सगीनो के आगे अपनी छाती तान दीथी। अब हर सच्चा आर्य समाजी उग्रवादियो की स्टेनगनो के आगे अपनी छाती तान देगा परन्तु बुजदिलो के आगे घुटने नही टेकेगा और न ही अपने कर्त्तव्य से विमुख होगा।

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः, ध्रुव जन्म मृतस्य च।
तस्मात् अपरिहार्येर्थे, न त्वं शोचितुमर्हसि॥

जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु होगी (उग्रवादियो तुमने भी एक दिन मरना है) और जिसका अन्त हुआ है, वह जन्म लेगा ही, इस प्रकार यह घटनाक्रम निरन्तर चालू रहता है। जब से सुना है कि मरने का नाम जिन्दगी है, सर पै कफन बाधे कातल को ढूढते है। अत आर्य समाजी को मौत का भय कर्त्तव्य विमुख नही कर सकता।

ओम्प्रकाश आर्य
मन्त्री पजाब आर्य युवक परिषद्

नन्दकिशोर एम०ए०
मन्त्री केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर

जब सिखों से फीस लेने से इन्कार किया

राय बहादुर दीवान बद्रीदास पजाब मे आर्यसमाज के एक स्तम्भ थे। लगभग २५वर्ष तक वे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान रहे।

पजाब के उच्चतम कोटि के वकीलो मे उनकी गणना होती थी। स्वतन्त्रता सग्राम के अनेक वीर सैनिको को उनके अभियोगो की मुफ्त पैरवी करके उन्हे दण्डित होने से बचाया। गैर आर्यसमाजी जनता मे भी उनकी योग्यता, देशभक्ति और सामाजिक योग क्षेत्र के उनके कारनामो की धाक बैठी हुई थी। वे उन्हे आदर एव सम्मान की दृष्टि से देखते थे।

सुप्रसिद्ध शहीद गज केस मे सिखो को विजय दिलाने से उनकी ख्याति देशव्यापी हो गई थी। उन्होने इस केस की पैरवी बिना फीस लिए की थी जब कि कहा जाता है मुसलमानो की ओर से श्री मुहम्मद अली जिन्ना ने पर्याप्त दैनिक फीस लेकर पैरवी की थी।

जब सिख बन्धु विजय के उपरान्त फीस की एक बडी राशि उन्हे कृतज्ञता पूर्वक देने लगे तब उन्होने यह कहकर कि "आपके और मेरे साझे गुरु हैं और हम सब भारत माता की सन्तान हैं, इस मुकदमे मे मैंने अपने कर्त्तव्य का पालन किया है, उसे स्वीकार करने से इन्कार कर दिया था। परन्तु कृतज्ञ सिख नेताओ को इससे सन्तोष न हुआ और उन्हे गुरुद्वारा में आमन्त्रित करके और सरोपा भट करके अपने को कृत्य कृत्य समझा था।"

उल्लेखनीय है कि दीवान बहादुर को कई बार हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश के पद पर नियुक्त किए जाने का आग्रह किया गया परन्तु उन्होने यह पद स्वीकार न किया इसलिए कि इस पद पर रहते हुए उन्हे न जाने कितने निर्दोषो को दडित करने का नैतिक अपराध और आत्महनन करना पड़ेगा।" —रघुनाथप्रसाद पाठक

पंजाब के बाहर के सिखों के हितोकी उपेक्षा

हिसार २ मई। हरियाना पीपिल पार्टी ने पजाब के अकाली नेताओ पर पजाब से बाहर रहने वाले सिखो के हितो की उपेक्षा करने का आरोप लगाया है।

इस नव निर्मित पार्टी के अध्यक्ष श्री सुच्चासिह कम्बोज ने अपने प्रेस वक्तव्य मे कहा है कि पजाब के अकाली लीडरो ने अपने भडकाने वाले बयानो तथा अनुत्तर दायित्व पूर्ण कार्यों से पजाब से बाहर रहने वाले सिखो के हितो को क्षति पहुचाई है।

उन्होने स्मरण कराया कि १९६२ मे अकाली नेतृत्व ने निर्णय किया था कि स्वर्ण मन्दिर के परिसर के भीतर से कोई राजनीतिक आन्दोलन नही चलाया जायेगा। परन्तु मन्दिर के परिसर से मोर्चा चलाकर अकाली नेताओ ने इस पवित्र स्थान को राजनीतिक केन्द्र के रूप मे परिवर्तित कर दिया है।

श्री सुच्चासिह ने यह भी कहा कि अकाली दल ने १९५५ मे एक प्रस्ताव पास करके भारतीय सविधान के प्रति निष्ठा का व्रत लिया था। सविधान की धारा २५ मे सशोधन की माग करके तथा उसकी कापिया जलाकर अकाली नेता व्रत भगकर रहेहै। (ट्रिब्यून ४-५-८४)

जो बोया सो काटो

धार्मिक उन्माद भी मनुष्य को क्या से क्या बना देता है। इसके कारनामे हम ईरान और ईराक के बीच युद्ध के रूप मे तो देख ही रहे हैं, आजकल पजाब मे भी उसके परिणाम हम भुगत रहे हैं। पाकिस्तान मे भी रोज-रोज नए गुल खिल रहे हैं। पाकिस्तान के लोग आजकल जनरल जिया-उल-हक की सैनिक तानाशाही से बहुत तग आए हुए हैं और लोकतांत्रिक चुनाव कराने की माग कर रहे हैं। जनरल जिया उसके उत्तर मे वहा इस्लामी लोकतन्त्र लाने की घोषणा कर रहे हैं जिसमें विशुद्ध इस्लामी धार्मिक नियमों के पाबन्द लोगो को ही वोट डालने और उम्मीदवार के रूप मे खडे होने का अधिकार प्राप्त होगा। इस पर यह बहस शुरू हो गई है कि इस्लामी धार्मिक नियमो का पाबन्द किस को माना जाएगा और उसका निर्णय कौन करेगा। इस सम्बन्ध में जनरल जिया ने एक इस्लामी नजरियाती कोंसिल बना रखी है, जिसके चेयरमैन हाईकोर्ट के जज जस्टिस तजील उल रहमान हैं। जस्टिस साहब ने जहा एक विशुद्ध मुसलमान के लिए कई और शर्तें व पाबन्दिया लागू की हैं वहा यह भी फतवा दे दिया है कि दाढी न रखना भी इस्लाम मे एक गुनाह है और जो भी मुसलमान दाढी नहीं रखता वह न तो वोट देने का अधिकारी है, न ही उम्मीदवार बनने का। इस्लामी नजरियाती कौंसिल की इस घोषणा पर पाकिस्तान मे खलबली मच गई है। बात इस पर टिप्पणी करता हुआ दैनिक "नवा-ए-वक्त" लिखता है—

"कम से कम इस मामले मे जस्टिस साहब मुझे बहुत पसन्द आए हैं। उन्होने मेरा पत्ता तो साफ किया ही है, खुद जनरल जिया-उल-हक पर भी हाथ साफ कर डाला है। जनरल साहब का संकल्प है कि इस्लाम का उल्लघन करने वाले लोगो को चुनाव उम्मीदवार होने का अधिकार तो क्या, वोट देने की भी इजाजत नही होगी। ताजा फतवे के अन्तर्गत जनरल साहब भी गुनाहगार ठहर गये और यदि इस फतवे को मानने की घोषणा कर दी जाए तो हम दोनो चुनाव और उसके प्रभावों से बचे रहेंगे, न वोट डालेंगे, न उम्मीदवार बनेंगे। लोगो की बहुत बडी सख्या के साथ भी यही व्यवहार होगा, अर्थात चुनाव भी हो जायेगा और नही भी होगा। मेरी मानें तो जनरल जिया असेम्बलियो के चुनावों के तुरन्त बाद दाढी रख लें। उनको अध्यक्ष पद का उम्मीदवार बनाने की इच्छा, जो वर्षो से मेरे दिल मे है, पूरी हो सकेगी। कोई औरत तो कम से कम इस फतवे के दृष्टिगत चुनाव के मैदान मे नहीं उतर सकेगी। न दाढी होगी, न सत्ता मिलेगी। इस तरह 'जनाना सियासत' के खतरो से शत-प्रतिशत सुरक्षित रहने का प्रबन्ध भी हो जाएगा। इसे कहते हैं, आम के आम, गुठलियों के दाम"।

औरतो की चर्चा चली है तो इस्लामी नजरियाती कोंसिल ने पाकिस्तान मे औरतो का दर्जा घटाकर आधा कर दिया है। अब पाकिस्तान की अदालतों मे जहा किसी मर्द की गवाही पूरी मानी जाती है, वहा औरतो की गवाही को आधे मर्द के बराबर स्वीकार किया जाता है। दूसरे शब्दो मे कहे तो हर क्षेत्र मे औरत का मान और मूल्य मर्द के मुकाबले मे आधा कर दिया गया है। इस पर पाकिस्तान में पढी-लिखी औरतो ने जिहाद शुरू कर रखा है। २१ अप्रैल को इस सिलसिले में लाहौर मे एक सेमिनार हुआ, जिसमे भाषण देते हुए एक प्रमुख मुस्लिम देवी मेहनाज रफी ने कहा है कि औरत के दर्जे के बारे मे नजरियाती कौंसिल का फतवा कुरआन और हदीस के अनुसार नही। उन्होने कहा कि जिस दौर मे औरत की आधी गवाही की बात की जाती थी, तब औरत इतनी प्रगतिशील न थी, जितनी अब है। एक और मुस्लिम महिला रेहाना तोफीक ने कहा कि इस्लाम ने सोच-विचार और पुनर्विचार के रास्तो को कभी बन्द नहीं किया। इस्लामी धार्मिक नियमो की व्याख्या वर्तमान समय के मूल्यों के अनुसार की जानी चाहिए। एक और महिला नसरीन मसूद ने कहा कि कुछ उलेमाओं का कहना है कि औरत की गवाही आधी इसलिए है, क्योकि औरतों को पूर्णता प्राप्त नहीं और कोई औरत इस्लाम मे पैगम्बर भी नहीं बनाई गयी। उलेमा कहते हैं कि १ लाख ३४ हजार पैगम्बर आए, लेकिन कुरान में किसी औरत पैगम्बर का जिक्र नही आया। इस पर मेहनाज ने पूछा कि कुरआन में यह भी तो कहीं जिक्र नहीं कि किसी औरत को पैगम्बर नहीं बनाया जाएगा, फिर यह क्यों मान लिया गया कि कोई औरत पैगम्बर न होगी। इस पर एक मौलवी साहब ने फरमाया कि कुरान मे इस बात का भी तो कोई जिक्र नहीं कि मर्द और औरत बराबर होंगे। उन्होंने कहा कि इस्लाम के तमाम इमाम औरत की हैसियत को आधा मानते हैं। हजरत के जमाने मे भी यही स्थिति थी, अब तक यही स्थिति है। यदि यह बात कुरआन पाक के विरुद्ध थी तो नबी करीम तो कुरआन के विरुद्ध कोई बात नहीं कह सकते थे।

दाढी और औरत के साथ साथ पाकिस्तान के मौलवियों ने एक बार फिर कादियानियो, अर्थात अहमदियों पर भी हमला शुरू कर दिया है। पाकिस्तान को अस्तित्व में लाने में सर जफरउल्लाह, जो अहमदी थे, अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका की बडे से बडा पाकिस्तानी नेता भी उपेक्षा नहीं कर सकता, परन्तु आज वही अहमदी उनके लिए मुसलमान कहलाने के भी अधिकारी नही रहे। पहले उन्हे पाकिस्तान मे अल्पसख्यक समुदाय करार दिया गया। अब ३७ साल के बाद एक अध्यादेश द्वारा उनको यह आदेश दिया गया है कि वह अपनी मस्जिदों का नाम मस्जिद नहीं रख सकते। यदि वह ऐसा करेंगे तो उन्हे गिरफ्तार करके सख्त सजाए दी जायेंगी और उनकी मस्जिदो को गिरा दिया जायेगा। इसके अलावा न उन्हे भविष्य में तब्लीग (मुसलमान बनाने) की इजाजत होगी, न ही मस्जिदों मे अजान देने की। अब पाकिस्तान मे अहमदी कुरान के हवाले दे रहे हैं, जिसमे अल्लाह ताला ने फरमाया है कि हर इन्सान को दुनिया में अधिकार है कि वह जो मजहब चाहे अपनाए क्योंकि दीन में कोई जबर जायज नही जो चाहे ईमान लाए, जो चाहे उससे इन्कार कर दे। अहमदी अब पाकिस्तान के विधान का हवाला भी देते हैं, जिसके अनुसार सब पाकिस्तानी बराबर हैं और उन्हें कानूनी सरक्षण का बराबर अधिकार प्राप्त हैं। परन्तु जब धर्म की जगह धार्मिक उन्माद ले लेता है, फिर ऐसी बातों को कौन पूछता है। फिर तो जिसकी लाठी, उसकी भैंस होती है। पाकिस्तान की नींव भी धार्मिक उन्माद पर रखी गई थी। अब इसी लाठी से जनरल जिया पाकिस्तान के लोगों को हाक रहे हैं। जो बोया है आखिर वही काटना पडेगा।

—रमेश

(पजाब केसरी २-५-८४)

उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज श्रद्धापुरी (रमेश नगर) का वार्षिक उत्सव दिनाक १८ अप्रैल से २२ अप्रैल तक समाज के प्रधान श्री सुन्दरदास की अध्यक्षता मे सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आयोजित स्त्री सम्मेलन मे आर्य समाज की उपदेशिका श्रीमती शकुन्तला आर्य ने महिलाओ की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालते हुए दहेज प्रथा का घोर विरोध किया और इसके जन-जागरण पर बल दिया। श्रीमती शीला राजपाल ने सरकार से मांग की कि दूरदर्शन से राष्ट्रीय प्रसारण मे विदेशी भाषा के स्थान पर राष्ट्र भाषा का अधिक से अधिक प्रयास करें ताकि देश की जनता अपने जीवन मे राष्ट्र भाषा का सही उपयोग कर सके।

इस अवसर पर राष्ट्र भाषा सम्मेलन के अतिरिक्त राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का भी आयोजन किया गया जिसमे देश की एकता पर बल दिया गया। देश की सभी भारतीय भाषाओंकी लिपि देवनागरी हो।

—कवर भान

सम्पादकीय

सार्वदेशिक सभा प्रधान के प्रेस वक्तव्य पर किए गए आक्षेपों का निराकरण

श्री कार्लेकर के भ्रमों का उच्छेदन

२०-४-८४ को सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपाल शालवाले तथा वरिष्ठ उपप्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् ने प्रेस कान्फ्रेन्स में पजाब की भयावह स्थिति को ठीक करने के सन्दर्भ में जो वक्तव्य दिया था और आवश्यकतानुसार आपात् स्थिति लागू करने का सुझाव दिया था उसके विरोध में ३-५-८४ के इण्डियन एक्सप्रेस में श्री हिरण्यमय कार्लेकर का एक लेख छपा है। उसके उत्तर में श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले ने इण्डियन एक्सप्रेस में प्रकाशनार्थ एक लेख भेजा है जिसमे आपत्तियों का खण्डन और वस्तु स्थिति का स्पष्टीकरण किया गया है। इसी का हिन्दी रूपान्तर यहां प्रकाशित किया जा रहा है।

—सम्पादक

३-५-८४ के इण्डियन एक्सप्रेस मे प्रकाशित श्री ऐच कार्लेकर के लेख मे जिसका शीर्षक है क्या दूसरी आपात् कालीन स्थिति ? मेरे इस सुझाव की कटु आलोचना की गईहै जो मैंने पजाब मे उग्रवादियो द्वारा व्याप्त कानून और व्यवस्था की असाधारण भयावह स्थिति से प्रभावी ढग से निपटने के लिए आपात् स्थिति लागू करने का दिया था। परन्तु यह लेख अपना ही खण्डन करने वाला है।

चू कि इस लेख से मेरे सम्बन्ध मे जनता के मस्तिष्क मे अनावश्यक सन्देह और भ्रम उत्पन्न हो सकते हैं अत मेरे द्वारा इनका निराकरण किया जाना आवश्यक है।

श्री कार्लेकर ने एक ओर पजाब की समस्या के समाधानार्थ इमरजैन्सी लागू किए जाने का विरोध किया है और दूसरी ओर उन्होंने स्वयं इसके लागू किए जाने का औचित्य भी स्वीकार किया है। उनके शब्दों मे "इमरजैन्सी का औचित्य यह है कि यह ऐसी कठोर कार्यवाहीकी अनुमति देती है जिसकी सामान्य सवैधानिक प्रक्रिया मे अनुमति नही होती।'

क्या पजाब मे मामूली सामान्य स्थिति है ? जबकि दिन दहाडे निर्दोष व्यक्ति गोलियो से भूने जा रहे है जहा अपराधी पकडे नही जा रहे हैं इसलिए कि उन्होने धार्मिक स्थानो मे शरण ली हुई हैं जब कि खुले आम सविधान जलाया जा रहा है क्या इस स्थिति को सामान्य स्थिति कहा जा सकता है और क्या सामान्य सवैधानिक प्रक्रिया से इस स्थिति पर काबू पाया जा सकता है ? क्या अराजकता की इस भयावह स्थिति से सफलता पूर्वक निपटने के लिए किसी कठोर कार्यवाही की आवश्यकता नही है जो उन लोगों के द्वारा पैदा की गई है जिनकी लोकतन्त्र या सविधान मे कोई आस्था नही है और जो विघटनकारी प्रवृत्तियो के हैं।

इमरजैन्सी लागू किए जाने का मेरा सुझाव इन उग्रवादियो और उनकी देशद्रोही प्रवृत्तियो से सम्बद्ध था। प्रभावी कठोर कार्यवाही किए जाने की आवश्यकता पर श्री चौधरी चरणसिंह एव श्री मोरार जी भाई देसाई प्रभृति नेताओ ने भी बल दिया है।

सत्य तो यह है कि अकालियो और उग्रवादियो ने सघीय राजनीतिक प्रणाली, मौलिक अधिकारो, कानून लागू करने के न्यायपालिका के अधिकारों, प्रेस की स्वतन्त्रता (जो कार्लेकर के अनुसार आपात् कालीन स्थिति मे कुठित हो सकती है) का पहले ही पजाब में नष्ट-भ्रष्ट किया हुआ है। निरकारियो की हत्याओं, राजकर्मचारियों, पुलीस अफसरों पर आक्रमणो, लाला जगतनारायण जी की हत्या, तथा अनेक निर्दोष व्यक्तियो की हत्याओ से साथ ही सम्पादको को दी गई धमकियो से जो उनकी नीतियो का समर्थन नही करते यह सच्चाई दिन की तरह रोशन है।

उग्रवादियो द्वारा शक्ति बन्दूक की नली से प्रवाहितहोती है।' इस थ्योरी का अवलम्बन किए जाने कि परिणाम स्वरूप लोकतन्त्र के आधार को पूर्व से ही चुनौती दी जा रही है।

श्री कार्लेकर ने पजाब मे शक्ति और बल प्रयोग का आश्रय लेने का विरोध किया है। शायद वे इस बात को भूल गए है कि बल प्रयोग से ही हैदराबाद का भारत मे विलय हुआ था और १९४७ मे काश्मीर की रक्षा हुई थी।

पजाब मे उग्रवादियो की प्रगतियो को कुचलने के लिए केन्द्र द्वारा शक्ति का प्रयोग किया जाना इस समय परमावश्यक है। अन्यथा बताया जाय कि हत्यारो के इन दलो से (जिनकी लोकतन्त्र के आधारभूत सिद्धान्तो म कोई आस्था या निष्ठा नही है) किस प्रकार निपटा जाय ?

श्री कार्लेकर ने अपने लेख मे उग्रवादियो से निपटने के लिए एक नया समाधान प्रस्तुत किया है। और वह है स्वशासित पृथक् राज्यो के निर्माण के साथ कानून व व्यवस्था के उपायो को सयोजित करना' क्या इस सुझाव के द्वारा श्री कार्लेकर खालिस्तान की वकालत नही कर रहे है ?

लेखक महोदय के इस सुझाव के सम्बन्ध म कि बागियो और उनके मित्रोके लिए लोकतत्रीय प्रक्रियाए खुली छोडदी जाय म उनको यह स्मरण कराना चाहता हू कि अकालियो को कभी भी इस प्रकार की प्रक्रियाओ म भागीदार बनने मे नही रोका गया है। क्या उन्होने १९८० तथा इससे पूर्व के बड चुनावोमे भाग नही लिया था और क्या वे १९७७ से १९८० तक केन्द्र और पजाब मे सत्तारूढ नही रहे थे ?

मेरा यह दृढ विश्वास है कि आज का उग्रवाद लोकतन्त्र के लिए इमरजैन्सी की अपक्षा अधिक भयावह है। इमरजैन्सी के वहम मे लेखक महोदय ने सशस्त्र सेनाओ को अनावश्यक रूप मे घसीटा है। सेना के हस्तक्षप का सुझाव देकर उन्होने हमारी सेनाओ की सुनहरी परम्पराओ की छवि धूमिल करने की कोशिश की है। यह एक सुविदित एव सुविख्यात तथ्य है कि भारतीय सशस्त्र सेनाए सदैव राजनीति से पृथक् रही हैं। उनका राजनीति मे लिप्त हो जाना अपमानजनक एव निन्दनीय है।

इमरजैन्सी की अवस्था म विरोधी दलो एव उग्रवादियो के सम्भावित गठबधन की आशका का भी लेखक ने सकेत दिया है। श्री कर्लेकर को यह विश्वास रखना चाहिए कि भारत का कोई भी समझदार राजनीतिक दल इतना देशद्रोही नही है कि वह किसी भी परिस्थिति में उग्रवादियों के साथ मिल जाय। परमात्मा का धन्यवाद है कि

सभा की अन्तरंग बैठक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग बैठक १० ६ ८४ (दस जून) को आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली मे होगी।

और

साम्प्रदायिकता विरोधी कन्वेन्शन

१० जून सायं ५ बजे विट्ठल भाई-पटेल भवन नई दिल्ली में होगा।

ओम्प्रकाश त्यागी
महामन्त्री

सामयिक चर्चा—

पाकिस्तान बनाना हमारा पागलपन था

पाकिस्तान के वयोवृद्ध सिंधी नेता जी एम. सईद ने विभाजन पूर्व भारत मे हुए पाकिस्तान आन्दोलन को 'सामूहिक पागलपन' की सज्ञा दी है।

उनका कहना है कि उनका 'जिये सिंध' आन्दोलन महात्मा गाधी और ईसा मसीह के अहिंसावादी दर्शन मे विश्वास रखता है। सिंधियो और खास-तौर पर सिंधी छात्रो मे पूज्य ८१ वर्षीय श्री जी एम सईद पाकिस्तान आन्दोलन के अग्रणी थे। इससे पहले वे भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस में थे। १९३८ मे उन्होने काग्रेस छोड दी थी।

उनका कहना है कि पाकिस्तान के अनुभव से उनका मोह भग हो गया है। अत अब वे स्वतन्त्र सिंध की माग कर रहे है। ३७ वर्ष पूर्व बने पाकिस्तान मे वे २१ वर्ष नजरबन्द रहे हैं। आज भी वे नजर बन्द हैं।

जमात ए इस्लामी के उर्दू दैनिक 'जसरात को दी गई भेंट वार्ता मे उनसे पूछा गया कि क्या पाकिस्तान बनाने का उन्माद सिंधियो मे पैदा करना गलत था?

श्री सईद ने कहा कि कभी कभी राष्ट्र मे एक प्रकार का सामूहिक पागल पन छा जाता है। उस समय पाकिस्तान आन्दोलन भी पागलपन के दौर से गुजर रहा था। उन्होने कहा कि यह एक ऐसा उन्माद था जिसने मौलाना अब्दुल कलाम आजाद जैसे व्यक्ति को भी नही बख्शा।

श्री सईद ने पाकिस्तान आन्दोलन के समय लोगो की तुलना नार्वे के रोडट्स से की जो वर्ष में एक खास समय पर आत्महत्या करने के लिए समुद्र की ओर दौड पडते हैं।

उन्होने कहा कि सिंधी अब अपनी अलग राष्ट्रीय पहचान के लिए सघर्ष कर रहे हैं व ईस्लाम या किसी अन्य वाद के लिए नही। यह लडाई अहिंसक होगी। उन्होने कहा कि हम महात्मा गाधी और ईसा मसीह के अनुयायी हैं जो एक गाल पर थप्पड खाकर दूसरा गाल भी आगे कर देते हैं।

पाकिस्तान आन्दोलन की एक अन्य परिभाषा मुस्लिम लीग (पगारो गुट) के प्रमुख पगारो के पीर ने दी है। (पजाब केसरी ३-५-८४)

हमारे यहा कोई ऐसी पार्टी नही जिसका नेतृत्व श्री कार्लेकर के हाथ मे हो। (समुचित क्षमा प्रार्थना के साथ)।

मेरे सुझाव की अन्धाधुन्ध आलोचना करते हुए, वे इमरजैन्सी के वास्तविक तथ्यो को भुला बैठे हैं। महात्मा गाधी के अनन्य भक्त और अनुयायी महान सन्त विनोबा भावे ने इसे अनुशासन पर्व' की सज्ञा दी थी।'

आचार्य कृपलानी ने कहा था 'भारत को इस कडवी दवा की जरूरत है। सत्य तो यह है कि यह बहुत समय पूर्व ही लागू हो जानी चाहिए थी।'

क्या ये लोग श्री कार्लेकर से कम देशभक्त और लोकतन्त्र वादी थे?

इस बात से कोई भी इन्कार नही कर सकता कि आपात कालीन अवस्था मे कुछेक अत्याचार किए गए थे। मैं तो केवल पजाब की जनता की मुसीबतो और कष्टो के निवारण के लिए न कि उनके कष्टो मे वृद्धि करने के लिए इमरजैन्सी का समर्थन कर रहा हू।

मैं इस बात को भी सुस्पष्ट कर देना चाहता हू कि मैंने कभी भी लोकतन्त्रीय पद्धति के मौलिक आधार को ठेस पहुचाने या समाप्त कर देने के हेतु इमरजैन्सी का समर्थन नही किया है। मेरा यह दृढ विश्वास है कि जब तक हमारी न्याय पालिका, लोकसभा, विधान सभाए सुदृढ और हमारे निर्वाचित प्रतिनिधियो मे गलती का विरोध और सच्चाई का समर्थन करने के लिए पर्याप्त नैतिक साहस और ईमानदारी रहती है तब तक कोई भी हमारे लोक तन्त्रीय ढाचे को नष्ट करके तानाशाह (डिक्टेटर) नही बन सकता।

मेरा पूर्ण विश्वास है कि वर्तमान हिंसा, आतक वाद का कडे हाथो से सामना करना चाहिए। मैं परमात्मा का आभारी हुआ यदि पजाब की समस्या को कडे हाथो से निपटाने का मेरा सुझाव (इमरजैन्सी तक लागू करने से) श्रीमती इन्दिरा गाधी को मधुर सगीत जान पडे और वे दृढता से कार्य करे।

रामगोपाल शालवाले
प्रधान सार्वदेशिक सभा

चरण स्पर्श

बडे सम्बन्धियो, विद्वानो एव महात्माओ के प्रति आदर और विनम्रता प्रदर्शित करने के लिए चरण स्पर्श की हमारी एक विशेष परम्परा है परन्तु अनेक विज्ञजनो को इस बात का खेद है कि पिछले कुछ समय से इसका राजनैतिक क्षेत्र मे दुरुपयोग और इसका महत्व कम किया जा रहा है जिसके लिए वे जी-हजूरी और चापलूसी को उचित रीत्या जिम्मेवार ठहरा रहे और कह रहे हैं कि सत्तारूढ लोगो का कृपा पात्र बनने या उन्हे प्रभावित करने का यह भी एक ढग है। आश्चर्य यह है कि कुछ मन्त्रीगण अपनी लोकप्रियता का अन्दाजा प्रतिदिन उनके पैर छूने वालो की सख्या से लगाने के लिए प्रसिद्ध बताए जाते हैं। कहा जाता है कि उत्तरप्रदेश के एक राजनेता अपने प्रशसको की सुविधा के लिए अपने पैर ही फैला दिया करते थे। परन्तु यह चरण-स्पर्श या पैर छुआने के लिए लालायित राजनेता के लिए आत्म-घाती सिद्ध होता या हो सकता है। आयु, श्रेणी और धर्म के भेद का ध्यान रखे बिना चरण स्पर्श शक्ति और सत्ता का प्रतीक बना देने से राजनेता के दिमाग का पारा आसमान पर चढ जाना स्वाभाविक है। समझदार व्यक्तियो को इस बात पर विशेष आश्चर्य नही होता क्योकि वे जानते होते हैं कि सत्ता मनुष्य को भ्रष्ट कर देती है और पूर्ण सत्ता पूर्णत भ्रष्ट कर देती है। उनकी मान्यता और कथन है कि ऐसा करना चामत्कारिक प्रभाव उत्पन्न करता है। एकमात्र चरण छूने से प्रत्येक बात क्षमा कर दी जाती है।

माल्यार्पण ठीक नही है

श्री वेदारिलाल आर्य मन्त्री जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा झासी लिखते हैं —

"१-३-१९८४ को आर्य कन्या इटर कालेज सीपरी बाजार झासी मे ऋषि बोधोत्सव का आयोजन किया गया जिसमे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के एक तैलचित्र का अनावरण मुख्य अतिथि उपशिक्षा निदेशक झासी मडल झासी के द्वारा कराया गया। साथ ही चित्र को माल्यार्पण भी कराया गया। यह चित्र माल्यापण सहित स्थानीय समाचार पत्रो मे प्रकाशित किया गया तथा समाचार भी प्रकाशित हुआ है।

इस सन्दर्भ मे यहा भाति-भाति की चर्चाए है।

"क्या सैद्धान्तिक दृष्टि से इस प्रकार का कार्य उचित है वा अनुचित।"

महर्षि के प्रति भक्तिभाव के प्रदर्शन की बात तो समझ मे आने वाली है परन्तु उनके चित्र पर माल्यार्पण करना युक्तियुक्त और महर्षि की भावना के अनुरूप नही जान पडता। इसमे मूर्ति पूजा की गन्ध आती है जो महर्षि के मन्तव्यो और आर्य समाज के सिद्धातो के अनुकूल नही है।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

अध्यात्म शिक्षण

सर्वपल्ली श्री राधाकृष्णन

यूनानियों ने बौद्धिक विकास और सौन्दर्योपासना को ही सब कुछ समझा। रोम वासियों ने नागरिक देश प्रेम और राज्य निष्ठा पर बल दिया परन्तु भारत में हम लोगों ने शिक्षा को उच्च जीवन में दीक्षित होने का साधन समझा। हम सब भौतिक जगत में उत्पन्न होते हैं और हमारे जीवन और हमारी शिक्षा का उद्देश्य आध्यात्मिक जगत् मे दूसरा जन्म लेने मे समर्थ बनाना रहा है।

सृष्टि के आरम्भ से ही हमारा यह आदर्श रहा है। मनुष्य को सर्वोपरि बनना होता है। वह अपूर्ण होता है और उसका विकास पूर्ण होना होता है। प्रकृति व्यवस्थित विकास की योजना प्रस्तुत करती है। जिस प्रकार बुद्धि रखने से व्यक्ति पशु से नितान्त भिन्न होता है उसी प्रकार अध्यात्म व्यक्ति बुद्धिजीवी व्यक्ति से भिन्न होता है। आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्य जिसमें बुद्धि है, इच्छा है और शक्ति है उच्चतर स्तर से कार्य करने मे समर्थ बनाया जाय। केवल आत्मा को बुद्धि के स्तर से ऊंचा उठाने के लिए 'अभय' अक्रम, सत्य और अहिंसा के गुण परमावश्यक होते हैं जागरूकता के ध्रुवीकरण और सामाजिकता के प्रसार से 'अभय' की प्राप्ति होती है। अक्रम का अर्थ है निष्कामभाव से कर्त्तव्य का पालन करना। अहिंसा का अभिप्राय है वैर और घृणा परित्याग। बुद्धि का विकास इतना होना चाहिए कि हम भय से रहित हो।

इच्छा को इतना शक्तिपूर्ण बनाना चाहिए कि वह ईश्वरोद्देश्य की पूर्ति मे सलग्न रहे। अहिंसा हमको यही सिखाती है कि हम किसी से द्वेष न करें वरन अपने कर्तव्यपालन मे दृढ़ रहें। यदि मानव को मोक्ष की प्राप्ति करनी अभीष्ट है तो उसे अपनी बुद्धि, इच्छा और भावनाओ की कायापलट करनी होगी। अध्यात्मपरायण और सामान्य मनुष्य मे इतना ही अन्तर होता है जितना पशु और मनुष्य में। अधिकाधिक बुद्धिवादी भावनाओं और ससारवादी बनने से ही काम नहीं चलता। जीवन मे कायापलट करने का प्रश्न है। क्या अब हम उस उत्तम आदर्श पर पहुंच सकेंगे जिस तक पहुंचना जीवन का उद्देश्य है। वह आदर्श है अपना पूर्ण विकास करना जिससे कि हम स्वार्थ भावना से प्रेरित होकर कर्मरत न हो। ससार के उतार चढ़ाव हमें प्रभावित न कर सके और चलितमन न हो सके।

बुद्धिजीवी व्यक्ति अध्यात्मपरायण कैसे बन सकता है? समस्त शास्त्र हमें शिक्षा देते हैं कि हम ध्यान, प्रार्थना और उपासना आदि मे रत रहे। हममें से बहुत से व्यक्ति ससार से विदा ले लेते हैं और जीवनोद्देश्य को नहीं समझ पाते। जीवन में थोड़ा सा धन सग्रह कर लेने पर हम समझ बैठते हैं कि हम जीवन में सफल रहे हैं। सच्चा व्यक्ति इन विशेषताओ की वास्तविकता का अनुभव करता है और जब उसे एकान्त साधना की आदत बनाने का आह्वान करता है तब वह ज्ञान आनन्द और सुख के समुद्र मे गोते लगाने लगता है। उच्च व्यक्ति एकाकी होता है। यह कहना सरल परन्तु करना कठिन होता है। इस प्रकार की मनोदशा बनाना दुरुह कार्य होता है। ध्येय कटकाकीर्ण देख पड़ने लगता है। एकाकीपन सूने पन से नितान्त भिन्न वस्तु होती है। यदि हम एकान्त साधना का विकास करने में असमर्थ हो तो ध्येय की प्राप्ति नहीं हो सकती। यदि हम इस कार्य में सफल हो जाते हैं तो हम सर्वत्र सुखी रहेंगे। चाहे हम भीड़ से घिरे हुए हो या अकेले हों। जो भी कार्य हम करें वह ईश्वरापण होना चाहिए। हममे से बहुत से यह सोचते हैं कि हम सत्य का अनुकरण कर रहे है परन्तु वास्तव में हम सत्य से परे होते हैं। हम हल्की बात चीत मे चुगली करने मे अपना समय नष्ट करते हैं और सत्य के नाम पर वैर द्वेष और निन्दा करने मे व्यस्त रहते हैं। ये बातें सत्य की खोज करने के वास्तविक ढग की विरोधी हैं।

प्रत्येक को अपने से यही प्रश्न करना चाहिए कि क्या मैं सच्चा और ईमानदार हू? क्या मैं अपने और परमात्मा के प्रति सच्चा हू जो मेरे हृदय मन्दिर में विराजमान है? जब तक मनुष्य इस प्रपच से हटकर अपने को परमात्मा के समक्ष खड़ा हुआ अनुभव नहीं करेगा तब तक उसे सत्य की अनुभूति नहीं हो सकती। यदि तुम आध्यात्मिक गुणों का विकास करना चाहते हो तो आत्मनिरीक्षण करना आरम्भ कर दो। यही ध्यान का अर्थ है। एक मात्र बुद्धि कौशल और दुनियादारी के गुण से तुम ईश्वर के निकट नहीं पहुच सकते।

वेद सुधा

ईश्वर एक है

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते।
य एतं देवमेकवृतं वेद ॥
न पञ्चमो न षष्ठोः सप्तमो नाप्युच्यते।
य एतं देवमेकवृतं वेद ॥
नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते। य एतं देवमेकवृत वेद ॥

अथर्व० १३ ४ १६ १८

अर्थ—(असल मे उसी ने सत्य को जाना है) जो यह जानता है कि वह परमात्मा एक ही है। (वह परमात्मा) न दूसरा, न तीसरा और न चौथा ही कहा जाता है। (असल मे उसी ने सत्य को जाना है) जो यह जानता है कि वह परमात्मा एक ही है। वह न पाचवा न छठा, न सातवा ही कहा जाता है। (असल मे उसी ने सत्य को जाना है) जो यह जानता है कि वह परमात्मा एक ही है। वह न आठवा, न नवा, न दसवा ही कहा जाता है।

व्याख्या—वेद ईश्वरीय ज्ञान है। अथर्ववेद के इन मन्त्रो मे निश्चित ढग से कहा गया है कि ईश्वर एक ही है। दो से दस तक यही दोहराया गया है कि वह केवल एक ही है और एक के सिवाय दूसरा तीसरा या और नहीं। इन मन्त्रो मे आए हुए देव शब्द का जो लोग देवी देवता अर्थ करते हैं यह उनकी अज्ञानता के कारण है। देव का अर्थ यहा प्रकाशमय परमात्मा है। ईश्वर के गुण अनेक हैं इसीलिए उसे अनेको नामो से पुकारा जाता है। ब्रह्मा विष्णु और महेश उसी के नाम है। वेदान्ती ब्रह्म और ईश्वर मे भेद मानते हैं। यह बिल्कुल गलत विचार है। ब्रह्म और ईश्वर एक ही सत्ता के अलग अलग नाम हैं। एक ईश्वर के अलावा किसी दूसरे को भी वैसा मानने से देश राष्ट्र और मानव समाज मे फूट पैदा हो जाया करती है। कई भगवान बनने लग जाते हैं। पाखण्ड, लालच और लूट खसूट फैलने लगती है। अन्ध विश्वास का बोलबाला हो जाने से पाप अत्याचार और अन्याय के जाल मे लोग कष्ट भोगा करते हैं।

—प्रो० ऐस एन भारद्वाज
प्रधान आर्य समाज लन्दन

हमारे शास्त्रार्थ महारथी

—श्री देवीदास आर्य, मेरठ छावनी

(१)

महर्षि याज्ञवल्क्य

एक बार ,मगध देश के सम्राट महाराजा जनक ने अपनी राजधानी मिथिला मे एक बडे यज्ञ का आयोजन किया जिसमें कई देशो के उच्चकोटि के विद्वान सम्मिलित हुए। यज्ञ की समाप्ति पर महाराज ने विद्वानो को सम्बोधित करके यह कहा "आप मे से जो सबसे अधिक विद्वान हो वह सभा मडप के बाहर खडी हुई गौओ को (जिनके सींगो मे सोना मढा हुआ है) ले जाए।" महाराज की यह बात सुनकर सब विद्वान आश्चर्य चकित हो गये और किंकर्तव्यविमूढ होकर एक दूसरे की ओर देखने लग पडे, किन्तु थोडी देर के पश्चात महर्षि याज्ञवल्क्य ने अपने शिष्य सोमश्रवा को यह आदेश दिया कि वह उन गौओ को हाक कर ले जाए। उनकी यह बात सुनकर महात्मा गर्गाचार्य की सुपुत्री गार्गी जो सभा मडप मे विराजमान थी उठकर खडी हो गई और महर्षि से यह कहने लगी कि "इन गौओ को ले जाने से पूर्व आप मेरे कुछ प्रश्नो का उत्तर देने की कृपा करे। यदि आपका उत्तर सतोषजनक हुआ तो मैं समझूगी कि आप ही सबसे अधिक विद्वान हैं।" जब महर्षि ने उनके प्रश्नो का उत्तर देने की बात स्वीकार कर ली तो गार्गी ने आत्मा परमात्मा सम्बन्धी उनसे कई प्रश्न किये जिनका उन्होने यथार्थ उत्तर दिया जिसे सुनकर गार्गी ने सभा मे बैठे हुए विद्वानो को सम्बोधित करते हुए यह कहा 'महर्षि ने मेरे प्रश्नो का उत्तर जिस उत्तमता से दिया है उससे मानना पडता है कि वह हम सबसे अधिक विद्वान हैं।"

इस एक घटना से ही सिद्ध हो जाता है कि प्राचीन काल मे न केवल पुरुष ही धुरन्धर विद्वान हुआ करते थे, अपितु देविया भी बडी विदुषी हुआ करती थी। इस सन्दर्भ मे भगवती सीता, माता कौशल्या, पडित विष्णुमित्र की सुपुत्री एव श्री मडन मिश्र की पत्नी भारती, महाराजा कुशध्वज की सुपुत्री वेदवती, श्री वृषभानु की पत्नी कलावती (जो राधा की माता थी) और महर्षि याज्ञवल्क्य की पत्नी मैत्रेयी के नाम उल्लेखनीय है। यह वेदज्ञ देविया यज्ञोपवीत धारण करती थी और प्रतिदिन सन्ध्या हवन भी करती थी। वे वेद वेदागो की पूर्ण ज्ञाता थी और उच्चकोटि के विद्वानो से शास्त्रार्थ भी कर सकती थी। हमारे ऋषि मुनि उन्हे गायत्री मन्त्र की दीक्षा देना अपना परम कर्तव्य समझते थे।

स्वामी शंकराचार्य

श्री स्वामी शकराचार्य जी तथा श्री मण्डन मिश्र जी दोनो उच्चकोटि के विद्वान वेदशास्त्रो के पूर्ण ज्ञाता तथा शास्त्रार्थ महारथी थे। श्री मण्डन मिश्र की पत्नी भागवती भारती की अध्यक्षता मे इन दोनो विद्वानो का द्वैतवाद एव अद्वैतवाद पर निरन्तर सोलह दिन शास्त्रार्थ हुआ था। अन्तिम दिन भारती ने बडे खेद के साथ अपने पतिदेव की पराजय की घोषणा कर दी और साथ ही श्री शकराचार्य जी को अपने साथ शास्त्रार्थ करने की चुनौती भी दे दी जिसे आचार्य जी ने स्वीकार कर लिया। इन दोनो के शास्त्रार्थ का यह परिणाम हुआ कि श्री शकराचार्य जी निरुत्तर हो गये। इस पर भारती ने उन्हें उत्तर देने के लिए एक वर्ष की अवधि प्रदान की। जब एक वर्ष के पश्चात उन्हे आचार्य जी का उत्तर मिला तो उससे दोनो पति पत्नी सन्तुष्ट हो गये और वैदिक धर्म की दीक्षा लेकर मरण पर्यन्त धर्म प्रचार करते रहे।

एक बार स्वामी शकराचार्य जी उज्जैन नगरी मे पधारे वहा श्री सुधन्वा राज्य करते थे। वे जैन ग्रन्थो के ज्ञाता थे और जैन मत मे विश्वास रखते थे। श्री आचार्य जी ने उन्हें कहा कि आप जैनियों के पण्डितों के साथ मेरा शास्त्रार्थ कराइये इस प्रतिज्ञा पर जो हारे सो जीतने वाले का मत स्वीकार कर ले और आप भी जीतने वाले का मत स्वीकार कीजियेगा। यह बात सुनकर महाराज बहुत प्रसन्न हुए और आचार्य जी को यह उत्तर दिया कि हम शास्त्रार्थ कराके सत्य असत्य का निर्णय अवश्य करावेंगे। उन्होंने जैनियों के पडितो को दूर-दूर से बुलवाया और श्री आचार्य जी से उनका शास्त्रार्थ कराया जो कई दिनों तक होता रहा। शकराचार्य जी का पक्ष 'वेद मत का स्थापन और जैनियो का खण्डन' जैनियो का पक्ष अपने मत का स्थापन और वेदमत का खण्डन था। शास्त्रार्थ का परिणाम यह हुआ कि जैनियो का मत खण्डित और शकराचार्य जी का मत अखण्डित रहा तब उन जैनियों के पंडित और स्वय राजा सुधन्वा ने स्वामी शकराचार्य जी के मत को स्वीकार कर लिया और जैन मत को छोड दिया। राजा सुधन्वा ने अन्य अपने इष्ट मित्र राजाओं को लिखकर श्री शकराचार्य से कई शास्त्रार्थ कराए, परन्तु जैनियों के पंडित पराजित होते गए। तत्पश्चात् श्री शकराचार्य के समूचे आर्यावर्त देश घूमने का प्रबन्ध सुधन्वा आदि राजाओं ने कर दिया और उनकी रक्षा के लिए साथ मे नौकर चाकर भी रख दिए, किन्तु कुछ समय के अनन्तर दो जैनियो ने छल कपट से उन्हें विष युक्त भोजन खिला दी जिससे उनकी क्षुधा मन्द हो गई और शरीर में फोडे फुन्सी हो गए जिसके कारण वह छ महीनो के भीतर स्वर्ग सिधार गए।

महर्षि दयानन्द ने आत्मविश्वास का शंख फूंका

—श्री रामकृष्ण विजयवर्गीय

विश्व के समस्त समाजो मे हिन्दू समाज प्राचीनतम् है। अपनी प्राचीनता एव ज्ञान के कारण यह गौरव शिखर पर था। काल क्रमानुसार इसमे विकृतिया आती रही और सन्तो-महापुरुषो ने इन विकृतियो को दूर करने का प्रयत्न किया। इन पुरुषो मे आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द का स्थान सर्वोपरि है। उनके जन्म के समय हिन्दू समाज मे निराशा, आलस्य, भाग्यवाद ने घर कर रखा था। ऐसी मुर्दा जाति मे महर्षि दयानन्द का स्थान सर्वोपरि है। उनके जन्म के समय हिन्दू समाज मे निराशा, आलस्य, भाग्यवाद ने घर कर रखा था। ऐसी मुर्दा जाति मे महर्षि दयानन्द ने काति का शख फूका और विशाल हिन्दू जाति मे आत्म विश्वास का भाव उत्पन्न किया। उन्होने हिन्दुओ को जुझारू बनाकर उनमे पुरुषार्थ जाग्रत किया। उन्होने वेदो की पुन प्रतिष्ठा की। यज्ञ के सम्बन्ध मे भ्रामक विचारो को दूर किया। यही कारण है कि देश के स्वतन्त्रता सग्राम मे आर्य समाज का सर्वाधिक योगदान रहा। आज भी आर्य समाज की देश को अत्यधिक आवश्यकता है। न्यायमूर्ति श्री रामकृष्ण विजयवर्गीय, उच्च न्यायालय इन्दौर ने आज आर्य समाज मल्हारगज मे उपरोक्त विचार आर्यसमाज स्थापना दिवस एव नव सवत्सरोत्सव पर प्रकट किए।

प० मनुदेव "अभय" विद्या वाचस्पति ने अपने ओजस्वी भाषण मे वर्तमान पजाब की चर्चा करते हुए कहा—हमारे सिख भ्रमित होकर अपनी अलग पहिचान के लिए हिंसा का मार्ग अपनाये हुए हैं। यह बडे दु ख की बात है। आर्य समाज इसके लिए सजग है और वह देश की सार्वभौमिकता पर आच नही आने देगा।

इसी अवसर पर अध्यक्ष पद से प० राजगुरु शर्मा ने कहा कि यदि भारतीय राजनीति से आर्य समाज को हटा दिया जावे तो यह राजनीति विधवा हो जावेगी। लाला लाजपतराय, भगतसिंह तथा स्वामी श्रद्धानन्द को हटाने पर राजनीति का महल लड-खडाकर नीचे गिर पडेगा। इस प्रकार आर्य समाज एक जागृत सस्था रही है।

इसी अवसर पर आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता तथा दानवीर सेठ श्री भागचन्द आर्य को न्यायमूर्ति श्री रामकृष्ण जी विजयवर्गीय ने अभिनन्दन-पत्र भेट किया। अपने सम्मान का उत्तर देते हुए श्री भागचन्द जी आर्य ने कहा कि मैं पुरुषार्थ एव ईमानदारी मे विश्वास करता हू। यह पवित्र धन उसी का सुपरिणाम है। मैंने समाज से ही धन प्राप्त किया है और समाज को ही अर्पित कर रहा हू।

इसके पूर्व प० राजगुरु शर्मा के आचार्यत्व मे विशेष यज्ञ हुआ। इसके प्रमुख यजमान श्री रामकृष्ण जी विजयवर्गीय थे। श्री गणपति वर्मा ने ध्वजोत्तलन किया। श्री हरिचरणलाल वर्मा ने प्रेरणादायी भजन प्रस्तुत किया। इस शुभ अवसर पर प० मनुदेव 'अभय', प० उदयभानु शर्मा तथा श्री सोमदेव वर्मा को ताम्रपत्र दिये गये। सह-भोज के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

आर्य समाज और सिख

—नरेन्द्र

जो अकाली नेता रात दिन इस बात पर जोर देते रहते हैं कि सिख हिन्दू नहीं है और वे एक अलग कौम हैं इन्हे अपना दृष्टिकोण सिद्ध करने के लिये कई पापड बेलने पड़ते हैं। ऐतिहासिक सच्चाइयो को तोडे मरोड़े बिना इनका काम नहीं बनता इसलिये झूठ सच सबका सहारा लिया जाता है। अकालियो और सिखो की बात तो मुझे समझ मे आती है लेकिन मजेदार बात यह है कि हिन्दुओ मे भी अनेको तथाकथित बुद्धिजीवी आपको मिल जायेंगे जो इन अकालियो के दृष्टिकोण को पूरी तरह तो नही लेकिन थोडे बहुत रूप से ठीक मानते हैं। इनमे से अनेको ऐसे हैं जो अकालियो के दावे को स्वीकार करते हैं कि पजाब मे हिन्दुओ और सिखो मे बिगाड उस समय प्रारम्भ हुआ जब पजाब के हिन्दुओ ने आर्य समाजियो के प्रभाव मे अपनी मातृभाषा पजाबी हिन्दी लिखानी शुरू कर दी। इससे ये लोग यह सिद्ध करना चाहते हैं कि इससे पहले अकालियो की ओर से कोई बात हुई ही न थी जिससे यह सिद्ध हो कि हिन्दू और सिख एक दूसरे से अलग है। लेकिन जब आर्य समाजियो ने पजाबी के बजाय हिन्दी लिखानी शुरू कर दी। और आर्य समाजो ने पजाबी को मातृभाषा मानने से इन्कार कर दिया तो सिखो को शिकायत उत्पन्न हो गई इसके बाद जो अकाली नेता थे इन्होने इस बात का पूरा पूरा लाभ उठाया।

मैं इससे पहले कई बार कह चुका हू कि पजाबी पजाब के हिन्दुओ की बोली है इनकी भाषा नही। बोली और भाषा मे बडा अन्तर है चू कि बहुत सारे अकाली नेता केवल पजाबी भाषा ही पढे हुए है इसलिये वे बोली और भाषा का अन्तर नहीं समझते और इस प्रकार कम समझ के कारण वे सिख जनता मे भी गलत प्रचार कर रहे हैं। इनका व्यवहार तो समझ मे आता है लेकिन यहा तो स्थिति यह है कि सिखो मे भी कई बुद्धिजीवी यही बात रटते रहते हैं। यह नही कि वे इस बात से अपरिचित हैं। लेकिन चू कि इस प्रकार के सिखो मे साधारण प्रचलित विचार के साथ होकर इस प्रकार सिख समाज मे लोकप्रिय हो सकते हैं। इसलिये वे इस गलत कथन को दोहराते जाते हैं। ठीक यही हाल हमारे हिन्दू बुद्धिजीवियो का है।

बहरहाल मैं इस लेख में सिखो और आर्य समाज के आपसी सम्बन्धो पर कुछ प्रकाश डालना चाहता हू। इन्ही दिनो स्वामी अग्निवेश का एक लेख मेरी नजरो से गुजरा है जिसमे आपने बताया है कि किस प्रकार आर्य समाज के बाद पजाब के सिखो ने अत्यन्त उत्साह से आर्य समाज का स्वागत किया। इससे ब्रिटिश सरकार परेशान हो उठी और जिस प्रकार वह दिन रात हिन्दुओ और मुसलमानो मे दीवार खडी करने के लिये मन्सूबे बनाती रहती थी इसी प्रकार इसने हिन्दुओं और सिखों मे भी मतभेद पैदा करने का प्रयत्न प्रारम्भ किया। आज जो अकाली यह कहते फिरते हैं कि हिन्दू और सिख दो अलग कौमे हैं इन्हे ब्रिटिश साम्राजियो की पौध कहा जा सकता है। खैर!

इस विषय मे मैं सन १९०३ मे प्रकाशित एक पुस्तक "स्वामी दयानन्द की जीवनी और उनके उपदेश" की ओर पाठको का ध्यान दिलाना चाहता हू। यह पुस्तक सरदार छज्जूसिह ने लिखी थी। इस पुस्तक को जो कोई पढेगा तो उसे स्पष्ट ज्ञात हो जायेगा कि श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती का स्वागत सिखों की ओर से हिन्दुओ के मुकाबले मे कही अधिक हुआ था। इसका कारण यह था कि आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द जी ने अनेकों इन बातों पर जोर दिया था जिनको सामने रखकर गुरु नानक देव जी ने अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया था। गुरु महाराज मूर्तिपूजा के विपरीत थे। हिन्दुओं मे जो दूसरी कुरीतिया आ गई थी उनसे बेजार थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती भी इन सब बुराइयों से हिन्दु समाज को पवित्र करने के लिए तडप रहे थे। इस कारण से सिखो ने आर्य समाज की स्थापना के बाद इस समाज का सरगर्म स्वागत किया। कितने लोगो को मालूम है कि १२ अगस्त सन १८७७ को अमृतसर में जब आर्य समाज की स्थापना हुई तो इसका प्रधान एक सिख था, सरदार नारायणसिह आप एक वकील थे। इस [illegible] आप केवल भावनाओ में आकर आर्य-समाज की ओर [illegible] थे। अमृतसर मे युग पुरुष स्वामी जी सरदार भगवान सिंह आनरेरी मजिस्ट्रेट और "ट्रिब्यून" समाचार पत्र के सस्थापक सरदार दयालसिह मजीठिया के अतिथि थे। गुजरांवाला मे आप सरदार महासिह के यहा ठहरते थे। जालन्धर मे श्री स्वामीजी के अतिथेय कपूरथला के महाराजा बिक्रमसिह थे। इनके अलावा सरदार बिशनसिह भी आपके आतिथेय रहे। इन तीनो सज्जनो ने बम्बई मे युग पुरुष महर्षि दयानन्द के भाषण सुने थे और उनसे प्रभावित होकर इन्होने स्वामीजी को पजाब आने का निमन्त्रण दिया। स्वामी जी की मृत्यु के बाद काफी वर्षों तक पजाब मे आर्य समाजें बनी इनमे सिख सरगर्म भाग लेते रहे। लाहौर मे सबसे पहले एक पत्रिका निकली जिस का नाम आर्य पत्रिका था। इसके सम्पादक एक सिख सज्जन सरदार अर्जुनसिह थे। श्री अर्जुनसिह स्वामी जी की मृत्यु के बाद बडा सरगर्म भाग आर्यसमाज मे लेते रहे और आपने इसका प्रचार भी खूब किया। आपने आर्य समाज के वैदिक दृष्टिकोण पर कई पुस्तकें भी लिखी। इसके अलावा आपके दो भाई सरदार छज्जूसिह ने दसो गुरुओ की जीवनिया और इनके उपदेशो पर भी कई पुस्तकें लिखी। देहरादून मे बाबा गुरुमुखसिह ने वैदिक साधना तपोवन की स्थापना के लिए एक भूमिका भाग दान मे दिया। आपभी बडे सरगर्म वैदिक मिशनरी थे। शहीदे आजम सरदार भगतसिह के पिता सरदार किशनसिह कट्टर आर्य समाजी थे। इनके भाई सरदार अजीतसिह की क्रांतिकारी गतिविधियो ने ब्रिटिश साम्राज्य को बेचैन करके रख दिया। आप पक्के आर्य समाजी थे। इसी प्रकार कई मान्य सिखो ने आर्य समाज को स्वीकार किया। इस प्रकार यह नही हुआ कि वे सिख नही रहे थे। आर्य समाज ने इनमे से किसी सिख पर जोर डाल आर्य समाजी न बनाया था। सच्चाई तो यह है कि चू कि इस समय तक ब्रिटिश साम्राज्य का हस्तक्षेप आरम्भ नहीं हुआ था। इसलिए ये लोग आर्यसमाज के आदोलन को सही रूपसे देख सकते थे और इस कारण से ये लोग भारी सख्या मे जगतगुरु महर्षि दयानन्द के अनु-यायी बनते गये। चू कि स्वामी जी हिन्दू समाज मे मूर्ति पूजा, जात-पात और रूढिवाद तथा अशिक्षाको समाप्त करके केवल एक ईश्वरकी पूजाका प्रचार करते थे और इन्ही बातो का प्रचार गुरु नानकदेवजी और दुसरे सिख गुरुओ ने किया इसलिए दोनो मे समानता को अनुभव करते हुए अनेको सिख आर्य समाजी बनते गये। वैसे भी इन लोगो ने देखा कि गुरुओ की वाणी मे अनेको बार वेद का वर्णन आता है। कहा जाता है कि गुरुग्रन्थ साहबमे ३३० बार वेदोका वर्णन है। गुरु नानकदेव ने अपनी वाणी मे कई बार वेदो का वर्णन किया है। डाक्टर तरनसिह जो पटियाला की पजाबी यूनिवर्सिटी के ह्यूमैनेटीज और धार्मिक स्टडीज की फैकल्टीज के डीन हैं अपनी पुस्तक मे लिखते हैं 'गुरु ग्रन्थ साहब मे लिखते हैं" आदि ग्रन्थ का बीज वेदो मे है और जब तक कोई वैदिक साहित्य और दूसरे इससे सम्बन्धित ग्रन्थोका अध्ययन नही करता तब तक इनकी गम्भीर फिलासफी को नही समझ सकता। चाहे वह कितना ही आलम फाजिल हो।"

कोई व्यक्ति जो गुरु ग्रन्थ साहब का अध्ययन करेगा उसे यह साफ नजर आ जायेगा कि इस पर हिन्दू ग्रन्थो का कितना प्रभाव है। पग पग पर हिन्दू देवी देवताओ का वर्णन है। हिन्दू प्रभाव का इससे बेहतर प्रमाण और क्या हो सकता है कि दरबार साहब मे इस सदी के शुरू के दिनो तक हिन्दू देवी देवताओ की मूर्तिया लगी हुई थीं। इसके बाद जब ब्रिटिश साम्राज्यवादियो ने सिखो के दिमाग मे पृथकता का कीडा डाला तो इन्हे इनकी उपस्थिति पर ऐतराज हो गया। बाद मे इन्हे यहा से हटा दिया गया। अग्रेजो ने सबसे पहले हिन्दुओ और सिखो को एक दूसरे से चीरने का विचार उस समय किया जब पजाबमे तडित-सा विद्रोह फूटपडने लगा इस समय हिन्दू सिखोने इकट्ठा होकर अग्रेजों का मुकाबला किया और इस पर सरकार ने लाला लाजपतराय और शहीदे आजम भगतसिह के चचा सरदार अजीतसिह को भारतसे निकाल कर बर्मा मे नजरबन्द कर दिया। सन १९०२ मे अग्रेजो के इशारे पर चीफ खालसा दीवान स्थापित किया गया। इसके बुनियादी लक्ष्यो मे एक था ब्रिटिश सरकार की वफादारी। इसलिए जब अपना कार्य शुरू किया तो सबसे पहले दरबार साहब से इन हिन्दू देवी देवताओ की मूर्तियो को निकाला। इन दिनों हिन्दू सिखो मे जो शादिया हुआ करती थी वे भी वैदिक प्रथा के अनुसार हुआ करती थी। यहा भी चीफ खालसा ने दखल देकर सिखो से

कहा कि वे हिन्दू नहीं इसलिए वे अपनी विवाह पद्धति नई बनाएं। सच्चा यह है कि आज भी जो शब्द शादी के समय बोले जाते हैं इनमें वेद और ब्रह्मा के नाम आते हैं। विवाह मण्डप में बैठे वर वधू को बताया जाता है कि अगर वे वैदिक शिक्षाओं पर कार्य करते रहें तो वे सम्पूर्ण बन्धे बन्धनों से छुटकारा प्राप्त कर सकेंगे।

इन दिनों चीफ खालसा दीवान का प्रभाव केवल हिन्दुओं के विपरीत ही न था बल्कि इन सिखों के प्रति भी था जो साधारण सिखो में राष्ट्रीयता की भावना का जागरण कर रहे थे। चू कि खालसा दीवान बनाया ही ब्रिटिश सरकार के प्रति सिखो मे वफादारी की भावना पैदा करने के लिए। इसलिए ये किसी ऐसे सिख को सहन न करते जो अंग्रेजो की किसी बात का विरोध करता था। चू कि नामधारी सिखो के आन्दोलन ने पजाब मे एक जबदस्त हलचल मचा कर रख दी थी। इसलिए चीफ खालसा दीवान के प्रभाव से इन निरकारियो को अकाल तख्त से गैर सिख निश्चित कर दिया गया। चीफ खालसा दीवान की तरह और भी कई सस्थाए ऐसी बनाई गई जिनका सिखो को हिन्दुओ से अलग करना तथा इनमे अग्रेजी साम्राज्य के प्रति वफादारी की भावना का प्रचार करना था। सिंह सभाए भी इसी उद्देश्य से बनाई गई थी। पहली सिंह सभा का पहला कार्य सिखों मे नामधारियो और निरकारियो के प्रति विशेष प्रचार करना था। यह अनुभव किया गया कि सिखों मे यह दोनो आंदोलन सफल हो रहे हैं। इसलिए इसे रोकने के लिये सिंह सभा मैदान मे उतरी। नामधारी चू कि शाकाहारी थे इसलिए इन्होने १५ जनवरी सन १८७२ को मालेर कोटला मे एक बूचडखाने पर आक्रमण कर दिया। ये पकड़े गये। इस पर ६५ को तोपो के मुह पर रख कर उड़ा दिया गया। इस सिलसिले मे नामधारियो के नेता बाबा रामसिंह को देश से निकाल कर रगून में नजरबन्द कर दिया गया। इस दिन से नामधारियो को एक गैरकानूनी संस्था कहा गया। अन्त मे सन १९२२ मे ब्रिटिश सरकार ने इनके विरुद्ध अपना आदेश वापिस ले लिया। यह भी एक राजनैतिक चाल थी। सन १८८३ मे पहली सिंह सभा स्थापित की गई। सन १८८६ मे दूसरी सिंह सभा स्थापित की गई। इस समय के ब्रिटिश गवर्नर सर इजर्टन इस सभा के सरक्षक थे और इस सभा का कार्य सिखो मे यह प्रचार करना था कि सिख हिन्दुओसे अलग हैं वे हिन्दू नहीं हैं। पजाबके गवर्नरके इशारे पर वायसराय ने भी इस सस्था को अपना आशीर्वाद दिया। सन १८९२मे सिंह सभाने अपना पहला कालिज खोला और एक अग्रेज को इसका प्रिंसिपल नियुक्त किया गया। जिन लोगों को इन सिखो का और बाद का काफी समय तक का इतिहास याद है वे अच्छी तरह जानते हैं कि किस प्रकार अग्रेज प्रिंसिपल भारतीय विद्यार्थियों मे ब्रिटिश सरकार के प्रति वफादारी का पाठ पढाया करते थे। बाद मे जब हिन्दुओ की ओर से डी ए वी कालिज खुले तो सिखो ने खालसा कालिज खोलने शुरू किए। इस शिक्षा नीति का प्रतिफल यह निकला कि पजाब मे लोग बाकी के सूबों के मुकाबले अच्छी पोजीशन प्राप्त करने लगे। पजाब मे हिन्दुओं और सिखों के कालिजो की देखा देखी मुसलमानो ने भी अपने कालिज खोले और इस प्रकार इनमें भी शिक्षा का अधिक प्रसार और प्रचार हुआ जिसका परिणाम यह हुआ कि उच्च नौकरियो पर जितने मुसलमान हुआ करते थे इनमे अधिक पजाब के ही हुआ करते थे।

आज कई अकाली धर्म निरपेक्षता का प्रचार यह कह कर करते हैं कि दरबार साहब की बुनियाद एक मुस्लिम फकीर हजरत मियां मीर ने रखी थी। यह ठीक है। लेकिन हिन्दुओंकी साम्प्रदायिक कहते हुए वे यह भूल जाते हैं कि लाहौर मे सबसे पहले आर्य समाज मन्दिर का इजलास २४ जून सन १८७७ को एक मुस्लिम डाक्टर रहीम खान के घर पर हुआ था और डाक्टर साहब ने आर्य समाज के दस नियमों को पढ़कर सुनाया था। गुरु नानकदेव जी ने सबसे अधिक जोर इस समय के लोगों मे मूर्ति पूजा और दकियानूसी विचारो की समाप्ति पर दिया। ठीक ही यह कार्य बाद में जगद्गुरु महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने किया। मूर्ति पूजा, जात पात, दकियानूसी रीति रिवाजो और अज्ञान का नाश स्वामी दयानन्द जी महाराज का सबसे बड़ा काम था। शायद यह ही कारण है कि आज से सौ वर्ष पहले कई सिख आर्य समाज की ओर आकर्षित हो गए थे। अब कई सिखो को शिकायत है कि स्वामी दयानन्द ने अपने ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" में सिखों और सिख गुरुओं पर कटाक्ष किए हैं। इस विषय मे एक बात कहना आवश्यक है और वह यह कि यह बात केवल इन्हीं दिनों में कुछ स्वार्थोंको लेकर शुरी लगना शुरू हुई है वर्ना सत्यार्थ प्रकाश के निर्माण के तुरन्त बाद किसी ने इसमें वर्णित स्वामी जी के विचारों पर कोई आपत्ति न की थी। युग प्रवर्तक स्वामी दयानन्द जी के इन विचारो के होते हुए भी सिख आर्य समाजी बने और बनते रहे। बाद मे सिखो में जब यह प्रचार शुरू हुआ कि सिखों की एक अलग कौम है इनकी एक अलग हस्ती है तो इन्होंने स्वामी जी महाराज के लेखों पर बुरा मानना शुरू किया। सच्चाई यह है कि स्वामी जी ने तो प्रत्येक धर्म में जो बुराइयां, जो कुरीतियां जो पाखण्ड आपको नजर आये उनका डट कर विरोध किया। उन्होने हिन्दुओ को भी माफ न किया। वास्तविकता तो यह है कि स्वामी दयानन्द तो सत्य के पुजारी थे। हिन्दू समाज में ही नहीं बल्कि प्रत्येक समाज मे आपको कमियां दिखाई दीं। इन पर आपने सबसे अधिक नुक्ताचीनी की। हिन्दू पडों और पण्डितों को आपने जितना स्वामी जी ने रगड़ा और किसी ने न रगड़ा था। यह इसलिए था कि आप कहीं भी कोई पाखण्ड या गलत बात सहन न करते थे और जो कोई व्यक्ति कोई बात वेदो के खिलाफ कहता इसे आप एक चैलेंज समझकर इसके साथ शास्त्रार्थ करते थे और इसमे आप सदा विजयी रहते थे। आपने श्री गुरु नानकदेव जी की किसी बात का विरोध केवल इसलिए नहीं किया था कि आप सिख हैं। एक बात विचारणीय है कि जैनियो ने सन १८८२ में एक मुकदमा स्वामी दयानन्द के विरुद्ध चलाया था कि उन्होंने इनकी धार्मिक भावनाओ को ठेस पहुंचाई है यह सब सत्यार्थ प्रकाश मे लिखित स्वामी जी के विचारों पर किया गया। लेकिन सिखो ने ऐसा कभी नहीं किया। आज कई सिख यह कहते हैं कि हिन्दू पजाबी को अपनी मातृभाषा नहीं मानते इस सिलसिले मे केवल यह ही कहा जाएगा कि अकालियो ने पजाबी भाषा को साम्प्रदायिक रगत न दी होती तो यह बिल्कुल ठीक सम्भव था कि हिन्दू इस पर ऐतराज न करते जो अब हो रहा है। मजेदार बात यह है कि अकालियों को पजाबी हिन्दुओ के व्यवहार पर ऐतराज है पजाबी मुसलमानो के व्यवहार पर कोई ऐतराज नहीं किया और न ही अकाली गुरुद्वारों ने इस बात पर जोर दिया है कि वे उर्दू छोड़कर पजाबी को अपनी मातृभाषा मानें ऐसा क्यो जरा सोचिये ?

(वीर अर्जुन ३०-४-८४)

सम्पादक के नाम पत्र

बुद्ध, महावीर और गांधी के देश में क्रूरतम यातनाओं के शिकार-निरीह मेंढक

"मेढकों की पिछली टांगों को उनके शरीर से काटा जाता है और वह भी ऐसी स्थिति मे जब वे जीवित और होश में होते हैं।' यह कथन है पर्यावरण विभाग के उन अधिकारियो का, जो वन्य जीवन बोर्ड की एक बैठक मे भारतीय कृषको के मित्र मेढकों की टागो के निर्यात पर आंशिक (पूर्ण नहीं) प्रतिबन्ध की मांग कर रहे थे। पूर्ण प्रतिबन्ध की माग करने का नैतिक साहस शायद उनमे इसलिए नही था, क्योकि वाणिज्य मन्त्रालय तो आंशिक प्रतिबंध के पक्ष मे भी नही है। उसका तर्क है कि मेढको की टागो की अमरीका तथा यूरोप मे सुस्वादु भोज्य पदार्थ के रूप मे भारी माग है और उनके निर्यात से देश को कीमती विदेशी मुद्रा मिलती है। एक बार उसके निर्यात पर पूर्ण प्रतिबन्ध लग गया, तो उसमे पुन प्रवेश करने मे देश को बडी कठिनाई होगी। फिलहाल इस बर्बरता पूर्ण व्यापार से वाणिज्य मन्त्रालय प्रतिवर्ष प्राय एक अरब रुपए कमाता है।

हमे पता नहीं कि अपने पशुपक्षी प्रेम की सदा दुहाई देने वाली प्रधानमन्त्री अपने वाणिज्य मन्त्रालय के इस बर्बर और अमानवीय दृष्टिकोण से परिचित हैं, या नही, किन्तु प्रख्यात ब्रितानी वैज्ञानिक श्री डेविड ब्राईटिंग ने एक रपट मे कहा है, 'मेढको के निर्यात से खेती और विशेषकर धान की खेती को नष्ट करने वाले कीटाणुओ का प्रकोप बढ जायेगा क्योंकि मेढक इन कीटाणुओ को खा जाते थे। अब उन्हे नष्ट करने के लिए गरीब किसानो को कीटाणु नाशक दवाओ पर निर्भर रहना पडेगा, जो कीमती होने के अलावा, फसलो के लिए हानिकारक भी सिद्ध होते हैं।"

यह सन्तोष का विषय है कि प्राकृतिक सतुलन को ध्यान मे रखते हुए सरकार ने वन्य जीव सरक्षण अधिनियम के अन्तगत 'उपयोगी जीव' घोषित कर ८० ग्राम तक वजन के मेढकों के निर्यात पर रोक लगा देने का निश्चय किया है। किन्तु, वन्यजीव प्रेमियो को पूरा सतोष तब होगा, जब निरीह मेढक के निर्यात पर सरकार पूर्ण प्रतिबन्ध लगा देगी। जो आदिवासी उन्हे जमा करने के काम मे लगे थे, उन्हे अन्य किसी उपयोगी कार्य मे लगाया जा सकता है।

—बहल फैमिलि ट्रस्ट की ओर से
बिहारीलाल मेलाराम, प्रन्यासी

विदेशी जासूसी संगठनों पर और ज्यादा कड़ी नजर रखे जाने की आवश्यकता

आजकल के प्रशिक्षित तथा सर्वसाधन सम्पन्न जासूस जिस सफाई और कुशलता के साथ दूसरे देशो पर जासूसी करते हैं, और उन्हे जिस प्रकार अपनी सरकार का पूरा सरक्षण उपलब्ध रहता है, उस कारण उन्हे पकडना आसान नही होता। इस बात को मद्देनजर रखते हुए भारत सरकार की इस बारे मे तारीफ करनी पडेगी कि १९७३ से लेकर आज तक उसने अनेक जासूसी षडयन्त्रो का भण्डाफोड किया है, और 'आफिशियल सीक्रेट एक्ट' के अन्तर्गत १०२ व्यक्तियो को दण्ड दिलाया है। १९७७ मे तत्कालीन विदेश मन्त्री श्री चह्वाण का अतिरिक्त निजी सचिव रूस को कुछ गुप्त सामग्री देते समय गिरफ्तार किया गया था। बाद मे केन्द्रीय सूचना सेवा का एक अधिकारी रूमानिया को गुप्त सूचना देते समय पकडा गया था। और पाकिस्तानी जासूस तो प्रतिवर्ष काफी सख्या मे पकडे जाते हैं।

इस क्रम मे सबसे ताजी घटना है, वायुसेना और थल सेना के दो उच्चाधिकारी सार्जेन्ट बन्धुओं की, जो ले० कमाडर (अवकाश प्राप्त) जसबीर सिंह तथा सेना के टेकेदार जसपालसिंह जिस के साथ अमरीका की कुख्यात जासूसी सस्था—सी० आई० ए० की जासूसी करते हुए रगे हाथो पकडे गए। इन्हें पकडवाने का श्रेय मिला देशभक्त तथा कर्तव्य परायण जसजीत सिंह को जिन्होंने ३०,०००) के प्रलोभन मे न आकर अपना कर्तव्य पूरा कर दिखाया।

सुरक्षा-मन्त्री तथा गृह-मन्त्री के इस आश्वासन से देश ने राहत की सांस ली है कि सुरक्षा तथा गुप्त अस्त्रों से सम्बन्धित गुप्त सूचनाओ को भविष्य मे अवकाशप्राप्त सेनाधिकारियो की पहुच से बाहर रखा जायगा, और उन पर निर्भरणीय अधिकारियो की ही निगरानी रहेगी। सुरक्षा-मन्त्री का यह कथन भी स्वागत योग्य था कि "सौ में से एक भ्रष्ट अधिकारी हो सकता है लेकिन ९९ प्रतिशत से भी अधिक अधिकारी देशभक्त और अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठावान हैं" तथा "देश सुरक्षा के मामले मे सदा पाकिस्तान से एक कदम आगे रहेगा।'

यू तो देश मे अनेक देशो के गुप्तचर सगठन निरन्तर सक्रिय हैं और देश के गुप्त फौजी भेदो को जानने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं तथापि उनमे सबसे अधिक सक्रिय, खतरनाक और साधन सम्पन्न है—सी आई ए जो अनेक स्तरो पर सक्रिय रहती है, और जिसके जासूसो से देशवासियो को सबसे अधिक सावधान और सतर्क रहने की आवश्यकता है।

भारत कल्याण मच की ओर से
सदा जीवत लाल चन्दूलाल कोषाध्यक्ष बम्बई

आर्यसमाज और नवयुवक

आजकल बहुधा यह सुना जाता है कि नौजवान आर्य समाज मे नही आते। किसी आर्य समाज के साप्ताहिक सत्सग मे चले जायें तो वहा युवक तो एक दो ही नजर आयेंगे अधिक सख्या वृद्ध व्यक्तियो की ही होती है। ऐसी हालत मे आर्य समाज की उन्नति कैसे होगी ? युवक तो तभी आयेंगे अगर उनकी रुचि के अनुकूल प्रोग्राम होगा। केवल सध्या हवन कर लेने से ऐसा नहीं हो सकता। युवको मे जवानी का जोश तथा सघर्ष करने की उमग होती है। जब से आर्य समाज ने बुराइयो के विरुद्ध आन्दोलन करना छोड दिया है तभी से युवक आर्यसमाज से दूर हो गए हैं। आर्य समाज कोई मत या फिरका तो है नही जो अन्य मतो की तरह युवक युवतिया अपने आप इसमे आते रहे। यह तो एक आन्दोलन है इसीलिए युवक तभी आयेंगे जब हमारे नेता भ्रष्टाचार, मासाहार, पाखण्ड अन्धविश्वास दहेज और अश्लील सिनेमा चित्रो इत्यादि के विरुद्ध सघर्ष करने का आह्वान करेंगे।

युवको को तैयार करने के लिए उनकी रुचि के अनुकूल प्रोग्राम बनाया जाए। आर्य समाजो के वार्षिकोत्सवो तथा अन्य अवसरो पर जो वाद विवाद तथा खेल प्रतियोगितायें रखी जाने लगी हैं वह बहुत अच्छा है इनको और बढाया जाए। युवको द्वारा नगर के पिछडे इलाको मे सेवा करने के लिए कैम्प लगाये जाय, व्यायामशालाएं खोली जायें और उनमे जूडो कराटे का भी प्रबन्ध किया जाए। युवको के लिए विद्वानो तथा महात्माओ द्वारा विशेष व्याख्यानो के प्रबन्ध किए जाये जिनमे शका समाधान का भी समय दिया जाए तथा युवकोपयोगी आर्य समाज का साहित्य बाटा जाए, विश्वविद्यालयो तथा विभिन्न कालेजो में ऐसा करना बडा उपयोगी रहेगा।

इस सबके लिए आर्य युवको का एक ही प्रभावशाली सगठन सार्वदेशिक सभा की देख रेख तथा प्रातीय सभाओं की सहायता से होना आवश्यक है। जिसके लिए काम करने वाले कुछ समर्पित युवक हों जो पूरा समय दे सकें तभी मनोवाछित लाभ हो सकता है। इनके भरण पोषण का प्रबन्ध सभाय करें ताकि उनको अपनी आजीविका की चिन्ता न रहे।

—अश्विनी कुमार पाठक लारेस रोड दिल्ली

आर्य समाजों की गतिविधियां

संस्कृत विश्व विद्यालय की अविलम्ब स्थापना हेतु मांग

संस्कृत साहित्य सम्मेलन के सचिव का प्रेस को दिया गया वक्तव्य

संस्कृत साहित्य सम्मेलन के सचिव श्री रामनारायण शास्त्री ने केन्द्रीय शिक्षामन्त्री श्रीमती शीला कौल को एक पत्र भेज कर मांग की है कि मध्य प्रदेश मे आपके मार्गदर्शन में एक संस्कृत विश्व विद्यालय की अविलम्ब स्थापना होनी चाहिए। श्री शास्त्री ने श्रीमती कौल का ध्यान १५ अप्रैल को संस्कृत सम्मेलन के अवसर पर डा० मण्डन मिश्र के निदेशक राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली की अध्यक्षता मे पारित संस्कृत विश्व विद्यालय सम्बन्धी प्रस्ताव क्रमांक २ की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया है जिसमे कहा गया है कि प्रदेश में एक संस्कृत विश्व विद्यालय की स्थापना होनी चाहिए जिससे प्रदेश के अनेको महाविद्यालयों तथा संस्कृत पाठशालाओ के पाठ्यक्रम मे एकरूपता लाई जा सकें। तथा प्रदेश की समस्त संस्कृत शिक्षण संस्थाओ को संस्कृत विश्व विद्यालय के साथ विलीन किया जा सकें।

श्री शास्त्री ने अपने पत्र मे भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के इस कथन का उल्लेख करते हुए लिखा है कि राष्ट्रीय एकता की कड़ी संस्कृत है इस बातको व्यवहारिक रूप देने तथा अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे संस्कृत के महत्व को बढाने की दृष्टि से म०प्र० प्रदेश की राजधानी भोपाल, मे एक विश्व संस्कृत सम्मेलन हेतु आपके मार्गदर्शन और आशीर्वाद की अपेक्षा प्रकट की है। अन्त मे अपने पत्र मे श्री शास्त्री ने लिखा है कि आज देश मे जो अराजकता बढ़ रही है आतंकवाद और भाषावाद के झगडे उत्पन्न हो रहे हैं तथा देश मे भ्रष्टाचार का बोलबाला है इन सब कुरीतियो को मिटाने के लिये तथा विश्व मे और देशमें नैतिकता विश्व शांति की स्थापना वसुधैव कुटुम्बकम की भावना का प्रचार और प्रसार करने के लिये अत्यन्त आवश्यक है कि कालीदास भोज विक्रमादित्य, भवभूति जैसे महाकवियो की धरती पर आपके मार्गदर्शन में एक विश्व संस्कृत सम्मेलन का आयोजन किया जावें।

श्री शास्त्री ने श्रीमती शीला कौल को लिखे पत्र की प्रतिलिपि प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री अर्जुनसिंह प्रदेश के राज्यपाल महोदय और राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के अध्यक्ष डा० मण्डन मिश्र को भी प्रेषित की हैं। अपने पत्र के सम्बन्ध मे श्री शास्त्री ने आशा व्यक्त की है कि इस कार्य मे हम प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्रीमान अर्जुनसिंह जी का भी विशिष्ट मार्गदर्शन और सहयोग प्राप्त कर सकेंगे।

—रामनारायण शास्त्री, सचिव
संस्कृत साहित्य सम्मेलन म० प्र०

वीर सावरकर समिति, दिल्ली

नई दिल्ली। वीर सावरकर समिति दिल्ली के अध्यक्ष प्रो० ए० के० मल्होत्रा ने अपने एक वक्तव्य मे कहा है कि वीर सावरकर जी का १०१वा जन्म दिन २८ मई को दिल्ली मे बड़ी धूम-धाम से मनाया जायेगा। इस अवसर पर मालवीय नगर व चांदनी चौक में सार्वजनिक सभाए की जायेंगी और उनके जीवन पर लघु पुस्तिकाए हैण्डबिल व पोस्टरों तथा भिन्न भिन्न स्थानो पर सावरकर जी के जीवन पर नुक्कड़ सभाए और विचार गोष्ठियां आयोजित की जायेंगी।

आगे प्रो० मल्होत्रा जी ने वीर सावरकर समिति दिल्ली की सभी शाखाओ को आदेश दिया है कि वे अपने अपने क्षेत्र मे नुक्कड़ सभाए व विचार गोष्ठिया आयोजित करे तथा साथ ही साथ २८ मई प्रातः प्रभात फेरिया भी निकालें।

—ए० के० मल्होत्रा

राष्ट्रपति महोदय को ज्ञापन

जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा गोरखपुर, नगर आर्य समाज गोरखपुर, आर्य युवक परिषद, भारत साधु समाज, विश्व हिन्दू रक्षा समिति पूर्वांचल जैन तथा पंजाबी समाज गोरखपुर के एक संयुक्त ज्ञापन मे राष्ट्रपति महोदय से निवेदन किया गया है कि वे उग्रवादियों की देश, धर्म और मानवता विरोधी दुष्प्रवृत्तियों एवं दुष्कृतियो को निर्मूल करने, निर्दोष हिन्दुओ आदि की हत्याओ को रोकने तथा सामान्य स्थिति कायम कराने के लिए अपने प्रभाव को काम में लाए। ज्ञापन मे प्रशासन की ढील पर रोष एवं चिन्ता भी व्यक्त की गई है।

विवाह संस्कार

चि० अरुण् कुमार ग्राम इटाहुवा पूर्णिया बिहार का शुभ विवाह श्री शिवनारायण यादव ग्राम झौव कोवारी, पूर्णिया बिहार की सुपुत्री के साथ वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ।

—रामेश्वर, प्रधान
आर्य समाज बरबेला (पूर्णिया)

निर्वाचन

आर्य समाज मुजफ्फरपुर का वार्षिक निर्वाचन २७.४.८४ को हुआ। प्रधान श्री पन्नालाल आर्य मन्त्री श्री कुलभूषण तथा कोषाध्यक्ष श्री रामकृष्ण बिजराज चुने गए।

जिला उपप्रतिनिधि सभा मिर्जापुर

वार्षिक चुनाव मे प्रधान श्री प्रकाशसिंह मन्त्री श्री बेचनसिंह कोषाध्यक्ष श्री रामसूरतसिंह चुने गए।

अ० भा० गोरक्षा प्रचार पदयात्री दिल्ली में

भारत वर्ष मे अभी तक गोरक्षा जैसे धार्मिक तथा आर्थिक महत्वपूर्ण प्रश्न [illegible] होने पर भी कष्मला है धार्मिक और सास्कृतिक देश [illegible] निरपेक्ष घोषित किया लेकिन गोहत्या को बन्द नही किया। जिसका परिणाम आज सारे देश को भुगतना पड रहा है, प्राणी हिंसा से पाप बढता है और पाप से अधर्म यानि धरती माता रुष्ट हो रही है। दुनिया मे शान्ति के लिए प्राणी हिंसा को रोकना होगा। इसके लिए भारत मे रहने वाले आर्य समाजी, सर्वोदयी, सनातन धर्मी, जैन, इन सबको हिंसा को रोकने के लिए एकजुट होना पडेगा।

ब्रह्मलीन संत विनोबा भावे जी, श्री योगिराज देवराहा बाबा के आशीर्वाद से तथा अखिल भारत कृषि गो सेवा संघ के सहयोग से १८ अप्रैल १९८१ से पदयात्रा चल रही है। यह पदयात्रा उत्तर प्रदेश के देहरादून जिले से प्रारम्भ हुई थी अब तक उ० प्र०, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, पाण्डिचेरी, हरियाणा प्रान्त की १७५०० कि० मी० की पदयात्रा करके २६ अप्रैल को दिल्ली ७॥ बजे गांधी समाधि राजघाट पर पहुची। वहां पर सर्वधर्म प्रार्थना हुई तत्पश्चात आर्य समाज मन्दिर दरियागंज मे ८ से ९ बजे तक सभा हुई।

शाम को ४ बजे १ अन्सारी रोड, गोरक्षा सत्याग्रह कार्यालय से जलूस निकला जैन मन्दिर पक्षी होस्पीटल में जाकर सभा के रूप मे बदला।

— प्रकाश चन्द्र जोशी

राष्ट्रीयता ही जीवन है

आर्यसमाज मन्दिर नीमच मे दीना नगर पंजाब के पूज्य स्वामी व्रतानन्द जी परिव्राट के दिनाक १ से ९ अप्रैल तक प्राणायाम, आसन, अस्त्र शस्त्र शिक्षा तथा प्रवचन आदि के कई जीवनोपयोगी कार्यक्रम हुए। पूज्य स्वामीजी ने अपने प्रवचनो मे राष्ट्रीयता पर बल देते हुए चरित्र की प्रधानता बताई।

राम नवमी पर्व मनाया गया

आर्यसमाज नीमच की ओर से मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम व शास्त्रार्थ-महारथी प० रामचन्द्र जी देहलवी का जन्म दिवस मनाया गया। उसके अन्तर्गत प्रभातफेरी निकली यज्ञ हुआ तथा श्री प्रेमसुख जी द्वारा इन महापुरुषो के जीवन पर प्रकाश डाला गया।

सभा प्रधान डा० मोहनदास जी रामनाणी ने आभार प्रकट किया।

आर्य वीरों द्वारा वैदिक धर्म प्रचार व मेला प्रचार शिविर

१० व ११ अप्रैल को शिवशंकरी मेले मे रामनवमी के शुभ अवसर पर "वैदिक धर्म प्रचार" व मेला प्रचार शिविर का सफल आयोजन किया गया।

३५ अनाथ बच्चो को उनके घर पहुचवाया गया। आर्य वीर दल बगहा व शिवशंकरी की सम्मिलित शाखा मे व्यायाम प्रतियोगिता हुई। विजयी वीरों को पुरस्कार वितरित किए गए।

—बेचनसिंह, मन्त्री
जिला सभा मीरजापुर

हीरक जयन्ती समारोह

आर्य समाज हापुड का हीरक जयन्ती समारोह दिनाक १२ मई ८४ से १६ मई १९८४ तक उत्साह सहित एवं पूर्ण गरिमा के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर विभिन्न सम्मेलन आयोजित किए गए हैं।

ज्ञातव्य है कि इस 'हीरक जयन्ती' वर्ष मे यह समाज सेवा की दृष्टि से एक रोगी वाहन (एम्बुलेंस) बनाने के लिये भी कृत संकल्प हैं।

—राजेन्द्र मोहन ग्रोवरायें

गोरक्षा सम्मेलन

आज दिनाक ४ अप्रैल १९८४ को श्री स्वामी सुतिक्ष्ण मुनि जी संस्थापक गौशाला नूंह की अध्यक्षता मे मेवात सुधार गौरक्षा संघर्ष समिति ग्राम रणसीका तहसील (फरीदाबाद) मे गौरक्षा सम्मेलन हुआ जिसमें निम्न प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया।

१—ग्राम रणसीका के निवासियो ने यह फैसला या (वायदा) किया है कि हमारे ग्राम रणसीका में भविष्य मे गौहत्या नही होगी। यदि होगी तो नियम के विरुद्ध कार्य करने वाले व्यक्ति को दण्ड दिया जायेगा।

२—सम्मेलन भारत सरकार से गौहत्या बन्दी केन्द्रीय कानून बनाने की माग करती है।

(क) इस सम्मेलन मे आर्य समाज व अन्य धार्मिक संगठनो के मुख्य कार्यकर्ताओं ने भाग लिया सर्वसम्मति से गौ हत्यारो के खिलाफ कानूनी कार्यवाही करवाई जायें।

—प० सुन्दरलाल, महामन्त्री

आर्य समाज बसीलाल नगर औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

नवयुवको मे चरित्र का निर्माण हो भारतीय सस्कृति का प्रसार हो, सस्कृत भाषा इस राष्ट्र की मातृभाषा बने व वेदो का प्रचार हो एव देश का हर नागरिक राष्ट्रीयता एव वैदिक धर्म का उपासक बनकर सबका प्रचारक हो इस उद्देश्य से महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ११० वष पूर्व बम्बई शहर मे आय समाज की स्थापना की। ये उदगार बम्बई के आय युवा नेता कैप्टिन देवरत्न आर्य ने १० ४ ८४ को आय समाज बसीलाल नगर के भवन का उद्घाटन करते प्रकट किए।

उन्होने कहा हिन्दू सिख भाई भाई हैं और जब तक गुरु ग्रन्थ साहब मे वेद राम और हिन्दू जैसे शब्द लिखे रहेंगे उन्हें कोई भी शक्ति हम से अलग नही कर सकती। आर्य समाज ने हर क्षेत्र मे पहल की है।

समारोह की अध्यक्षता श्री सग्रामसिंह चह्वाण ने की। अपने अध्यक्षीय भाषण म उन्होने आर्य समाज को हिन्दू जाति का सजग प्रहरी बताया। इस अवसर पर रिटायर्ड पुलिस उप निरीक्षक श्री ग० भोसले ने हिन्दू जाति के उत्थान के लिए आय समाज द्वारा की गई सेवाओ की प्रशसा की और राष्ट्रीय सकट पर आर्यों को जागरूक रहने का आह्वान किया। मराठवाडा विद्यापीठ के हिन्दी विभाग अध्यक्ष डा० चन्द्रभानुजी सोनवणे ने अपने भाषण में कहा उदघाटन का अर्थ खोलना है अत इस आर्य समाज भवन के द्वार मानव के कल्याण निमित्त सदा खुले रहने चाहिये।

समारोह का सयोजन आर्य विद्वान एव मन्त्री श्री ज्ञानेन्द्र जी शर्मा ने किया। अपने भाषण में आपने इस आर्य समाज की भावी योजनाओ पर प्रकाश डाला एव समस्त दानी महानुभावो का आभार प्रदर्शित किया। आपने कहा भवन निर्माण हेतु आर्यसमाज के प्रधान श्री योगमुनिजी वानप्रस्थ ने यह भूमि दान में दी तथा अपनी स्वर्गीय धर्मपत्नी सौ० भारतीदेवी की स्मृति मे ५००१) रुपया दकर एव उपप्रधान श्री बालकृ...

श्री सोमरत्न आर्य ने जिनके अथक प्रयत्नो से यह आर्य समाज भवन बनकर तैयार हुआ समस्त आगन्तुको का स्वागत किया एव धन्यवाद प्रदान किया। आय समाज के उपमन्त्री श्री इन्द्रदेव ने समस्त अतिथियों एव दान दाताओ का पुष्पमाला से स्वागत किया।

इस अवसर पर कैप्टिन देवरत्न आर्य ने एक प्रेस परिषद को भी सम्बोधित कर आर्य समाज की देश एव विदेशो मे चल रही गतिविधियो से परिचित कराया। उदघाटन से पूर्व प्रधान श्री योगमुनि वानप्रस्थी ने ध्वजारोहण किया एव यज्ञ द्वारा ईश प्रार्थना की गई।

—ज्ञानेन्द्र शर्मा

श्रद्धांजलि समर्पित

आर्य समाज नीमच की ओर से धार्मिक प्रकृति के सन्त और बाबू श्री लक्ष्मणसिंह कोठारी के असामयिक निधन पर दु ख प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की गई कि वह दिवगत पुण्यात्मा को सदगति प्रदान करे।

—जगदीश प्रसाद आर्य

सार्वदेशिक प्रैस दरियागंज नई दिल्ली-२ में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८५) वर्ष १९ अङ्क २४

ज्यष्ठ कृ० १, स० २०४१ रविवार २० मई १९८४

दयानन्दाब्द १६० दूरभाष : २७४७७१ वार्षिक मूल्य १६) एक प्रति ४० पैसे

क्या दूसरी आपात् स्थिति ?

३-५-८४ के इण्डियन एक्सप्रेस मे प्रकाशित श्री हिरण्य मय कार्लेकर के 'क्या दूसरी इमरजेन्सी ?' शीर्षक लेख मे आर्यसमाज के नेता श्री रामगोपाल शालवाले एव श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम् के प्रेस वक्तव्य मे दिए आपात् कालीन स्थिति लागू किए जाने के सुझाव पर लेखक की आपत्तिया पढने को मिली। प्रेस वक्तव्य को भली-भाति पढने पर विदित हुआ कि पजाब की भयावह स्थिति को ठीक करने हिंसा, उग्रवाद, आतकवाद मारकाट आगजनी, सम्पत्ति विनाश से सफलतापूर्वक निपटने के लिए और जनता को यह अनुभूति कराने के लिए कि पजाब मे कोई गवर्नमेट है पजाब मे सैनिक शासन या अनिवार्य होने पर विकल्प के रूपमे आपात् कालीन स्थिति उद्घोषित करने की माग की गई है और वह भी एक मात्र देश की अखण्डता, सुरक्षा, कानून व व्यवस्था की रक्षा के सुनिर्दिष्ट उद्देश्यो के लिए।

लेखक महोदय ने इसे तमाम देश के लिए अनिवार्यत अभिप्रत समझने की जहा भूल की है, वहा आर्य नेताओ एव उनकी मनोभावनाओ के प्रति भी अन्याय किया है। आश्चर्य यह है कि लेखक ने स्थिति से निपटने के लिए अपना कोई सुझाव नही दिया है।

यहा यह बात भी सुस्पष्ट की जानी जरूरी है कि आर्य समाज और उसके नेताओ के लक्ष्य मे राष्ट्रीय एकता अखण्डता, सुरक्षा, धर्म और सस्कृति की रक्षा और पजाब तथा देश के गौरव गरिमा को विखण्डित, विश्रृखलित और कलुषित न होने देना है उनका कोई राजनीतिक स्वार्थ नही है और न वह किसी राजनीतिक दल का पिछलग्गू है।

आर्यसमाज की मान्यता है और उसकी कई बार घोषणा की जा चुकी है कि प्रजातन्त्र के कुशलसचालन एव उसे वरदान बनाने के लिए उसके पीछे सच्चरित्रता और देश प्रेमकी शक्ति का होना अनिवार्य है।

आज के प्रजातन्त्र के विकृत स्वरूप को देखकर ही उच्चकोटि के राजनीतिज्ञो ने केन्द्रीय गवर्नमेंट के सशक्त एव टिकाऊ बनने के हेतु यह सुझाव दिया है कि केन्द्र की प्रशासकीय परिषद मे देश भर के चुने हुए सुयोग्य, अनुभवी एव कार्यकुशल सदस्य होने चाहिए निर्वाचित नही।

उल्लेखनीय है कि आर्य समाज ने पूर्व के प्रान्तो को राज्य का दर्जा दिए जाने और भाषायी आधार पर प्रान्तो के निर्माण का १९६३ मे ही भावी दुष्परिणामो के उल्लेख सहित विरोध किया था जिनमे से कुछेक दुष्परिणाम, प्रान्तवाद, भाषावाद, सत्ता की भूख और देश की अखण्डता और लडाई झगडो, मारकाट सुरक्षा के लिए खतरो के रूप मे हमारे सामने हैं।

सम्बद्ध प्रेस वक्तव्य मे उग्रवादी तत्वो को भी प्रेरणा की गई थी कि पजाब और देश हित की खातिर अपनी समाज और देश-विरोधी कार्यवाहियो को विराम दें और पथ भ्रष्ट न होकर सत्पथ पर आरूढ हो।

—ओम्प्रकाश त्यागी
महामन्त्री
सार्वदेशिक आ० प्र० सभा

शोक प्रस्ताव

हिन्द समाचार जगवाणी तथा पजाब केसरी के प्रधान सम्पादक श्री रमेशचन्द्र की जालन्धर मे उग्रवादियो द्वारा गोली से हत्या किए जाने पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय म एक शोक सभा का आयोजन किया गया। सभा मे प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले सभामन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी तथा अन्य अधिकारी और कार्यकर्त्ता आदि उपस्थित थे। शोक सभा मे श्री रमेशचन्द्र की हत्या पर गहरा दु ख प्रकट किया गया और पंजाब मे उग्रवादियो द्वारा राष्ट्रभक्तो राष्ट्रवादियो विद्वानो धर्म और सस्कृति के हितैषियो की हत्या, रक्तपात लूटपाट के घृणित एव नृशस कार्यों की कडी निन्दा की गई। उग्रवादियो के इन कारनामो से राष्ट्र का देशवासियो का और मानवता का सिर लज्जा से झुक गया है। पजाब मे वरिष्ठ नेताओं की हत्या और पजाब के बाहर अन्य नेताओ की हत्या की धमकी से राष्ट्रीय जीवन अस्थिर एव पगु बन गया है।

यह सभा भारत सरकार से अनुरोध करती है कि समय की गम्भीरता को देखे और पजाब मे उग्रवादियो के विरुद्ध कडा कदम उठाये। आर्य समाज उग्रवादियो की इन नृशस हरकतो पर भी सरकार की ढुलमुल नीति पर खेद प्रकट करता है।

यह सभा शहीद रमेशचन्द्र जी की आत्मा की सदगति के लिए प्रभु स प्रार्थना करती है और उनके परिजनो के प्रति हार्दिक समवेदना और सहानुभूति प्रकट करती है।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सयुक्तमन्त्री सभा

सम्पादक—[illegible]

सह सम्पादक-रघुनाथ प्रसाद पाठक

महर्षि दयानन्द को विष ही दिया गया था

—श्री राधेश्याम टेलर

इतिहास के पृष्ठो का जब गहन अध्ययन करते हैं तो भिन्न २ धारणाए इतिहासकारो को मिलती हैं ऐसी स्थिति में इतिहास के विद्यार्थी के मस्तिष्क मे कुछ भ्रान्तिया घर कर जाती हैं। वैसे प्राचीन इतिहास में जो इतिहास की दृष्टि से लिखा हुआ न होने के कारण सत्य के साथ असत्य का कुछ मिश्रण मिलता ही है। राजस्थान का इतिहास पहले गर्भ मे छिपा हुआ था परन्तु अब शनैं शनैं प्रकाश मे आ रहा है। राजस्थान जो कि राजपूताने के नाम से प्रसिद्ध है वहा के राजाओं के साथ महर्षि दयानन्द ने इस राजपूताने मे अपना काफी समय और विशेषरूप से अन्तिम समय यही बिताया था। बडे खेद के साथ लिखना पडता है कि महर्षि दयानन्द का जो कि इस राजपूताने को सुधारने में अपना अमूल्य योगदान दे रहे थे जोधपुर मे विष देने के कारण स्वर्गवास अजमेर मे हुआ।

महर्षि दयानन्द को विष दिया गया था या नहीं यह प्रश्न मस्तिष्क में काफी द्वन्द पैदा करता है और क्षण भर इतिहास के विद्यार्थी को सोचना भी पडता है। समय समय पर स्वामी जी की मृत्यु पर अनेक लेख प्रकाशित हुए जिनमे उनकी मृत्यु किस प्रकार हुई इसका वर्णन मिलता है। महर्षि दयानंद को विष किसने दिया विष दिया गया या नहीं इस पर अनेक पुस्तको व कई लेखो मे भिन्न भिन्न विचार मिलते हैं। महर्षि दयान द का जीवन चरित्र लिखने वालों मे श्री लेखराम जी श्री देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय श्री घासीराम जी श्री हरविलास शारदा व बाबा छज्जूसिंह इत्यादि अनेक विद्वानो ने अपने विचार इस पर लिखे हैं। स्वामी जी जोधपुर मे ३१ मई से १६ अक्टूबर तक रहे। हमेशा की भाति २९ सितम्बर, १८८३ की रात्रि को स्वामी जी ने दूध पिया और उसी रात्रि को स्वामी जी को दूध के साथ काच या संखिया दिया गया २९ सितम्बर १८८३ की रात्रि को दूध किसने दिया, इसका वर्णन भिन्न भिन्न प्रकार से मिलता है। श्री लेखराम जी अपनी पुस्तक पृष्ठ संख्या ९१४ पर लिखते हैं।

२९ सितम्बर १८८३ अर्थात चतुर्दशी की रात्रिको धोड मिश्र रसोइया जो शाहपुरा का रहने वाला था दूध पीकर सोए। उसी रात्रि को उदर शूल और जी मचलाने का कठिन और गम्भीर कष्ट उत्पन्न हुआ वमन करने पर विवश हुए। स्वामी जी ने किसी को नहीं जगाया और आप ही जल से कुल्ला करके सो गए। श्री हरविलास शारदा ने भी अपनी पुस्तक लाइफ आफ दयानन्द सरस्वती Life of Dayanand Saraswati पृष्ठ संख्या ३२४ पर लिखा है कि धोड मिश्र ने दूध पिलाया था।

उपरोक्त दो विद्वानो के अनुसार दूध पिलाने वाला धोड मिश्र ही था। इसके विपरीत हमे एक और व्यक्ति का नाम पुस्तकों में मिलता है वह कल्लू उर्फ जगन्नाथ का है। बहुत विद्वानो का मत है कि उस रात को दूध कल्लू जगन्नाथ ने पिलाया और नन्ही जान भगतन के कहिने से साठ-गाठ करके दूध के साथ बारीकी से काच को पीसकर संखिया दे दिया था।

आर्य मार्तण्ड जो अजमेर से प्रकाशित होता है उसमे एक लेख ३१मार्च १९२१ अ क ५ मे प्रकाशित हुआ जिसका शीर्षक था 'महर्षि दयानन्द को विष ही दिया गया। इस लेख को प्रकाशित कराने वाले महर्षि दयानन्द के परम शिष्य व राज घराने से निकटतम सम्बन्ध रखने वाले श्री राव राजा तेजसिंह जी थे उन्होंने लिखा कि स्वामी जी को दूध पिलाने वाला धोड ब्राह्मण नहीं वरन कल्लू उर्फ जगन्नाथ था। राव राजा तेजसिंह जी अपने लेख मे लिखते हैं—स्वामी जी महाराज को विष जरूर दिया गया था। विष देने के एक दिन पहले भी स्वामी जी का एक कपड़े का बैग था उसमे एक दुशाला तथा २ अशर्फी थी इस बेग को कलवा रसोइया ने छूरा या चाकू से काटकर दोनो मोहरे व दुशाला निकाल लिया। स्वामी जी ने उसको धमकाया और यह बात मैंने भी उससे पूछी। परन्तु टस से मस नहीं हुआ उसी रात कलवा दूध थकर लेकर आया और स्वामी जी महाराज को दिया। स्वामी जी दूध पीकर ९ बजे सो गए। प्रातःकाल ४ बजे उठे और जोर से पसली मे शूल चलने लगी, तब बाद में नमक मिलाकर पानी के लोटे में घोलकर पी गए और अ सुविधा डाक्टर जी करने लगे। स्वामी जी जान गए कि मुझे जहर दिया गया है।"

राव राजा तेजसिंह जी आगे लिखते है कि मैंने रात को स्वामी जी को मजे में सोता था और अब एकदम खराब हालत कैसे हो गई, तब मैंने कलवा को बुलाने का आदेश दिया, परन्तु कलवा वहां नहीं था और वह वहा से भाग गया।

आर्य मार्तण्ड में स्वामी जी की मृत्यु के विषय पर एक लेख ५ नवम्बर १९३२ मे महाराज सर प्रतापसिंह जी साहब के आधार पर कु० चांदकरण शारदा ने प्रकाशित किया था। इस लेख में वे लिखते हैं कि जोधपुर में स्वामी जी को विष देने वाला कालिया जिसका असली नाम जगन्नाथ कहा जाता है, नामक ब्राह्मण था न कि शाहपुरा का रहने वाला धोडमिश्र।

प० नानूराम ब्रह्मभट्ट का जो शाहपुरा से स्वामी को जोधपुर लिवाने को गए थे, कथन है कि कालिया नामक व्यक्ति ने एक माली से मिलकर नन्ही जान (भगतन) के प्रोत्साहन से दूध मे विष मिलाकर स्वामी जी को पिला दिया, इसी प्रकार मुन्शी देवी प्रसाद राजपूताने के प्रसिद्ध इतिहासज्ञ का लिखना है कि नन्हीं जान ने एक माली कोलाकच देकर स्वामी जी के रसोइया कालिया को बहका कर दूध में विष पिलवा दिया।"

नवम्बर १९२९ के सरस्वती के अक मे महाकवि चन्द के वंशधर नामक सचित्र लेख में भी प्रकाशित हुआ है कि "स्वामी जी के साथ जोधपुर निवासी कई आततायी लोगो ने खराब व्यवहार किया और उनकी जीवन लीला का अन्त इतना शीघ्र कराया—केवल इतना कहना काफी होगा कि इन दुष्टो मे से एक का नाम कलिया था जिसने एक दूसरे माली से मिल कर प्रसिद्ध वैश्या नन्ही भगतन के प्रोत्साहन से दूध के साथ विष मिलाकर स्वामी जी को पिला दिया।

चाद के क्रान्तिकारी मारवाडी अक के पृष्ठ २३१ २३६ सन् १९२९ पर मारवाड का जीवन चाप' नामक सचित्र लेख भी मिलता है।

इस प्रकार दो प्रकार के विचार हमारे सम्मुख हैं कुछ विद्वानों के कथन के अनुसार उस रात को दूध देने वाला धोड मिश्र था, और कई विद्वानों के अनुसार कलुआ था। कुछ भी हो हम इस निष्कर्ष पर अवश्य पहुचते हैं कि २९ तारीख की रात्रि को चाहे धोड ने दूध दिया हो अथवा कलुए ने, दूध मे कांच अथवा संखिया अवश्य दिया गया था। देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ने महर्षि जीवन चरित्र में जगन्नाथ रसोइए के बारे मे केवल एक कल्पित गाथा कही है क्योकि वह लिखते हैं कि मैंने जितने मनुष्यों से जगन्नाथ के बारे मे पूछा तो किसी ने भी जगन्नाथ का नाम नहीं लिया। महाराज के साथ कोई जगन्नाथ नाम का रसोइया था इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता है। कोई नहीं बतला सकता है कि वह कौन था, कहां का रहने वाला था और कब से स्वामी जी के साथ था। जब जगन्नाथ की गाथा को असत बताया है लेकिन फिर देवेन्द्र मुखोपाध्याय अपने ग्रन्थ पृष्ठ ३४१ पर लिखते हैं कि अधिक सम्भव है कि उन्हें संखिया दिया गया। इससे यह सिद्ध होता है कि देवेन्द्रनाथ यह तो स्वीकार करते हैं कि उन्हें संखिया दिया गया किसने दिया इसके बारे मे वे मौन हैं। लेखराम कृत महर्षि दयानन्द का चरित्र पृष्ठ संख्या ९२२ पर भी पीर इमाम अली का वक्तव्य लिखा गया है जिसके अनुसार स्वामी जी को विष दिया गया था।

बाबा छज्जूसिंह ने अपनी पुस्तक 'लाइफ एण्ड टीचिंग आफ स्वामी दयानन्द" जो १९०३ में प्रकाशित हुई थी उन्होंने भी अध्याय ८ पृष्ठ ८८ पर लिखा है कि २० अक्टूबर को अजमेर में ही हकीम पीर इमाम अली जो कि पीर जी के नाम से प्रसिद्ध थे, उन्हें बुलाया गया और उन्होंने पूरा निरीक्षण किया और उसने बताया कि स्वामी जी को विष ही दिया गया था।

डा० सूर्यमल जो कि सरकारी डाक्टर थे और जोधपुर में स्वामी जी को देखा था जहर देने की कथा को ही अनुमोदित करते थे।

स्वामीजी को विष दिया गया इसका वर्णन आर्य मार्तण्ड में २३ नवम्बर १९४१ के लेख—महाराजा सर प्रताप और महर्षि दयानन्द लेखक इतिहासज्ञ श्री जगदीशसिंह गहलोत से यह सिद्ध है कि स्वामी जी की वास्तव में विष के कारण ही मृत्यु हुई थी। वे लिखते हैं।

स० १९४० (१८८३ ए डी) का दीपावली दिवस भारत के लिए और विशेष रूप से मारवाड के लिए दुर्भाग्यशाली प्रमाण करेगा, जब कि स्वामी दयानन्द ने इस संसार को कुव्यवस्थिक का अवलम्ब करके, जो कि जोधपुर में

(शेष पृष्ठ ११ पर)

सम्पादकीय

आर्यसमाज क्या है ?

(एक सुविख्यात ईसाई मिशनरी की दृष्टि में)

श्री जे० सी० ओमान मे जो एक ईसाई मिशनरी थे और १९०९ के आस-पास गवर्नमेंट कालेज लाहौर मे प्राकृतिक विज्ञान के प्राध्यापक थे, भारत के कल्ट्स कस्टम और सुपरिस्टिशन (धर्म, रिवाज और अन्धविश्वास) भारत के ब्राह्मण, ईश्वर विश्वामी और मुसलमान, तथा भारत के सन्त, महात्मा और रहस्यवादी आदि कई अच्छे ग्रन्थ लिखे थे।

उन्होने 'भारत के धर्म, रिवाज और अन्धविश्वास नामक अपने ग्रन्थ मे यह दिखाने की व्यर्थ चेष्टा की थी कि आर्य समाज ईसाई और पाश्चात्य प्रभाव की उपज और राजनीतिक सस्था है। उनके विचारो और स्थापनाओ का उन दिनो प्रबल खण्डन हुआ था। वह अपने इस ग्रन्थ का सशोधित सस्करण निकालने वाले ही थे तभी उनका देहावसान हो गया। ओमान महोदय ने अपने ग्रन्थ के नए सस्करण की तय्यारी के प्रसग मे स्व० महात्मा हसराज जी से पत्राचार किया था। महात्मा जी ने उनके पास कई पुस्तक भेजी और स्व० श्री लाला लाजपतराय जी से जो उन दिनो इग्लैड मे थे भेट करने की उन्हे प्रेरणा की थी। श्री ओमान महोदय ने श्री लाला जी से भेट करके उनसे आर्य समाज के विषय मे कई प्रश्न पूछे थे। ये प्रश्न और उनके उत्तर एक लेख के रूप मे प्रकाशित हुए थे। उन प्रश्नो और उत्तरो मे से कतिपय महत्वपूर्ण प्रश्न एव उत्तर इस प्रकार हैं—

प्रश्न—क्या आर्य समाज पूर्णत हिन्दू सम्प्रदाय है ?

उत्तर—स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्वय एक मुसलमान को आर्यसमाज मे प्रविष्ट किया था। आर्यसमाज गुजरावाला ने भी एक मुस्लिम ग्रेजुएट को आर्य समाज मे दीक्षित किया था। ईसाई और मुसलमानो के बहुत से परिवार आर्यसमाज मे प्रविष्ट किए जा रहे हैं और आए दिन प्रविष्ट किए जाते हैं।

प्रश्न—क्या आर्य समाज मे प्रवेश की कोई धार्मिक विधि है ? यदि है तो उसका स्वरूप क्या है ?

उत्तर—हिन्दुओ का एक मात्र प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर कर देना पर्याप्त है। अहिन्दुओ के प्रवेश के लिए एक साधारण-सा सस्कार अनिवार्य होता है जिसको जरूरी नही है कोई जन्मना ब्राह्मण ही कराए। उपवास रखने, स्नान करने, हजामत बनवा लेने, कपडे बदल लेने और हवन हो जाने के बाद वह गायत्री को स्वीकार करता है। जो व्यक्ति मूलत यज्ञोपवीत धारण करने के अधिकारी होते है उन्हे पुन यज्ञोपवीत दिया जाता है। जो व्यक्ति मूलत हिन्दू नही होते उन्हे भी यज्ञोपवीत दिया जाता है। इसका कुछ विरोध होना स्वाभाविक था और विरोध हुआ भी है।

सार्वदेशिक आर्य प्रति० सभा ने एक शुद्धि पद्धति निर्धारित की हुई है।—सम्पादक सार्वदेशिक

प्रश्न—क्या आर्य समाज ने हिन्दुओ की जात-पात की प्रथा के साधारण नियमो का अतिक्रमण किया है ? क्या आर्यसमाजी अन्तर्जातीय विवाह करते और जात-पात के भेद-भाव के बिना एक दूसरे के साथ खान-पान का व्यवहार रखते हैं।

उत्तर—आर्य समाज मे सहभोज की प्रथा आम बात है। पजाब मे सम्मिलित खान-पान सामान्य बात है। विवाह के सम्बन्ध मे स्थिति बडी नाजुक है और परीक्षण के दौर मे है। उपजातियों मे तो विवाह प्राय: होते रहते हैं। आर्य समाज की नीति अन्तर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहित करनेकी है सिद्धान्तत: आर्यसमाज जन्मना जात-पात को स्वीकार नहीं करता।

(तब से लेकर अब तक सकडो अन्तर्जातीय एव अन्तर्प्रान्तीय विवाह हो चुके हैं और इस प्रकार के विवाहो को जायज बनाने के लिये सार्वदेशिक आ० प्र० सभा ने अन्तर्जातीय विवाह कानून भी १९३७ मे बनवाया था जो इस समय प्रचलित है।)

—स० सार्वदेशिक

प्रश्न—मुझे विदित है कि आर्यों का पुनर्जन्म मे विश्वास है और वे लोग गौ का आदर करते हैं। परन्तु क्या भावी जीवन और स्वर्ग-नरक के सम्बन्ध मे आर्यों के विचार कट्टर पन्थी हिन्दुओ जैसे हैं ?

उत्तर—यह ठीक है कि आर्यों का आवागमन मे विश्वास है और वे गौ को आदर की दृष्टि से देखते हैं। कट्टर पन्थी हिन्दुओ के स्वर्ग नरक को नही मानने। (आर्य सुख विशेष को स्वर्ग और दु ख विशेष को नरक मानता है। गौ माता के समान हमारा पालन करती है। उसका दूध सर्वोत्तम होता है। उसका अग प्रत्यग मानव के लिए हितकारी होता है। ऐसा उपकारी प्राणी वरदान है। इसलिए इसके प्रति आर्य की आदर भावना होती है। (वेद मे भी इसे 'अघ्न्या' बताया गया है—सपादक सार्वदेशिक) आर्य समाज तीन अनादि सत्ताओ का अस्तित्व स्वीकार करता है। ईश्वर जीव प्रकृति।

प्रश्न—आर्य समाज प्रथम आक्रमण करने वाले के रूप मे ईसाई विरोधी कहा जाता है। क्या यह बात ठीक है ?

उत्तर—निश्चय ही यह बात ठीक है परन्तु वह आक्रमण की पहल नही करता जो कुछ वह करता है रक्षणात्मक रूप मे ही करता है।

प्रश्न—मैं समझता हू कि नियोग सम्बन्धी स्वामी दयानन्द की शिक्षाओ को उनके अनुयायी स्वामी जी के सिद्धान्तो का आवश्यक अग मानते है।

उत्तर—आर्यसमाज नियोग को आवश्यक सिद्धान्त नही मानता। (लाला जी के इस उत्तर पर आपत्ति करते हुए वैदिक मैगजीन ने लिखा था कि नियोग वेदोक्त हैं अत आर्य समाज इसे भी अन्य सिद्धान्तो के समान ही वैदिक सिद्धान्त मानता है— वैदिक मैगजीन भाद्रपद स० १९६८ विक्रमी]

इस लेख का उपसहार करते हुए लेखक महोदय ने निम्नलिखित महत्वपूर्ण बात लिखी थी—

ब्राह्मण वर्णस्था दयानन्द ने जिन्हे किसी भी युरोपियन भाषा का ज्ञान न था वेदो की नई और बुद्धिसगत व्याख्या की है। यह बात इस तथ्य की सूचक है कि आधुनिक भावना बडी गर्हित हो चुकी है। ईसाई मिशन द्वारा आक्रमण की पहल किए जानेके सतत एव सगठित प्रयास ने धर्म परिवर्तन के सदभावना पूर्ण प्रयत्नो के प्रति विरोध भाव उत्पन्न करते हुए हिन्दुओ को अपने धर्म के मूलाधार पर पुन: विचार के लिए विवश किया। एक ओर साइ स की अकाट्य सच्चाइयो और दूसरी ओर ईसाई मिशन क खण्डन परक अटल रूख के मध्य कोई ताल-मेल न बैठ सकने के कारण भारत की विचार धारा का नेतृत्व करने वालो ने अनुभव किया कि कुछ न कुछ किया जाना चाहिए और वह भी शीघ्र ही। पुराने गढो की नीव हिल चुकी थी और देश का एक बडा भाग असुरक्षित था। इस विषय पर सम्यक् विचार करने के बाद मेरा यह विचार बना है कि आर्य समाज का उन असख्य समुदायो मे से एक बन जाना है जिनमे हिन्दू धर्म बटा हुआ है भले ही सख्या की दृष्टि से वह (आर्य समाज) न गण्य हो। कम सख्या वाला होने के बावजूद भी आर्य समाज सम्भवत भारत के पुनर्जागरण मे महत्वपूर्ण भूमिका निवाहेगा क्योकि यह मुख्यत अग्रेजी शिक्षा प्राप्त लोगो से बना है। सबसे बढकर इसका मूर्तिपूजा का खण्डन और एकेश्वर वाद का मण्डन भारत की धार्मिक विचार-धारा को प्रभावित किये बिना न रह सकेंगे।

लेखक महोदय के ऋषियो जैसे भविष्य दर्शन पर सहसा ही

सामयिक चर्चा—

सिख महिला की मानवता धन्य हो गई

एक महिला जालंधर से गुरदास पुर जाने वाली बस मे सफर कर रही थी। उसके पास तीन छोटे बच्चे थे।

सफर के दौरान वह महिला सबसे बड़े बच्चे की तरफ सबसे अधिक ध्यान दे रही थी। पास मे बैठे एक यात्री को यह देखकर आश्चर्य हुआ। उन्होने पहले यह सोचा कि शायद बड़ा बच्चा सबसे पहले पैदा हुआ इसलिए उससे सबसे अधिक प्यार होगा। परन्तु जब उन्होने मनोविज्ञान की दृष्टि से विचार किया तो उन्हें यह बात अस्वाभाविक सी जान पड़ी। मा का सबसे अधिक प्रेम छोटे बच्चे से होता है।

जब उन्हे मन मे समस्या का कोई समाधान न मिला तो उन्होने उस महिला से क्षमा मागते हुए पूछा 'आपको इस बच्चे से और बच्चो से ज्यादा दिलचस्पी क्यो है ?

महिला ने उन्हे कहा मेरे तीन बेटे हैं। उनमे सबसे बड़ा यह कुक्कू है। कुक्कू इस का प्यार का नाम है। यह मेरा गोद लिया हुआ है ?

आपको गोद लेने की क्या जरूरत पड़ गई थी ?

महिला ने उत्तर मे कहा 'भाई साहब ! बात यह है कि बचपन मे ही इसके माता पिता मर गए। इसका कोई दूर या पास का रिश्तेदार भी न था जो इसकी देखभाल कर सकता। इस बेचारे के प्रति भगवान ने कैसी निष्ठुरता दिखाई। लेकिन कुदरत सब घावो को भर देती है, उसकी विशाल उदार और ममतामयी गोद मे सभी के लिए स्थान है। मुझे इस बच्चे पर दया आई हालांकि मेरे पास अपने भी दो बच्चे पहले से मौजूद थे फिर भी दयावश मैंने इसे गोद ले लिया। तब से मैं ही इसका पालन कर रही हू।

इस वक्त पजाब के एक सिविल हस्पताल मे मैं डाक्टर हू। मैं और मेरे पति दोनो सिख है परन्तु कुक्कू के माता पिता हिन्दू थे। इसके माता-पिता के मत का आदर करने के कारण ही इसके बाल छोटे-छोटे कटे हुए हैं जबकि मेरे दूसरे दो बच्चों के केश सिख होने के कारण अनकटे हैं और हर सिख को इन पच ककारों का पालन करना जरूरी [illegible] है।

इतना ही नही मैं कभी कभी उसे मन्दिर मे भी ले जाती हू।'

यह कहकर उस महिला ने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा 'कुक्कू का टैकनिकल लाइन की तरफ रुझान है। यदि परमात्मा ने चाहा तो इसे एक दिन इंजीनियर बनाकर ही सन्तोष की सास लूगी।'

दयानन्द पर फिल्म बनाना अनुचित

न. भा. टा. मे समाचार प्रकाशित हुआ कि आचार्य भगवानदेव महर्षि दयानन्द फिल्म मे, जिसका निर्माण आर्य कला मन्दिर द्वारा किया जा रहा है, नायक की भूमिका निभाएगे।

खबर में यह तो लिखा था कि फिल्म मुहूर्त के समय आर्य समाज के अनेक प्रमुख नेता उपस्थित थे पर किसी प्रमुख आर्य समाजी नेता का नाम नही दिया गया था।

इस सन्दर्भ मे यह बताना जरूरी है कि १९७२ मे आयोजित 'आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह' मे आर्य समाज के मच से महर्षि दयानन्द के जीवन पर एक नाटक खेला गया था। जब नाटक प्रारम्भ हुआ तब आर्य सन्यासियो और आर्य जनता ने इसका घोर विरोध किया। उस समय आर्य जनता की भावनाओ का आदर करते हुए श्री ओमप्रकाश त्यागी, महामन्त्री आर्य सार्वदेशिक सभा ने उसे तुरन्त बन्द करवा दिया। स्वय स्वामी दयानन्द ने भी अपने ग्रथो मे नाटक वगैरह का विरोध किया है। दयानन्द पर फिल्म बनाना क्या दयानन्द के सिद्धातो का विरोध नहीं है ?

—रामेश्वर दास गुप्त
फ्लैट न० ८, टीचर्स होस्टल,
दौलत राम कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ७
(नव भारत ३०-४-८४)

अनुकरणीय उदाहरण

इन्दौर की २४ वर्षीया साधना ने जो बी० ए० बी० एड० है दहेज के लोभी दूल्हे से विवाह करने से न सिर्फ इन्कार ही किया अपितु उनके विरुद्ध मामला पुलिस मे दर्ज कराने का साहस भी किया। साधना का यह उदाहरण वरेण्य होने के साथ साथ अनुकरणीय भी है।

इन्दौर से २९ अप्रैल को प्रसारित समाचार मे कहा गया है कि कल रात यहा बरातियो को उस समय मिठाइयों के बदले पत्थर खाने पड़े जब पढ़ी-लिखी दुल्हन ने दहेज के लोभी दूल्हे से शादी करने से इन्कार कर दिया। चौबीस वर्षीया बी० एड० तक शिक्षित साधना नामक लड़की ने साहसपूर्वक पूरा मामला पुलिस को सौप दिया और माग की कि ऐसे दुष्ट दहेज लोभी को तत्काल गिरफ्तार किया जाये।

पुलिस ने मामला दर्ज कर जाच शुरू कर दी है और दूल्हे सहित कई लोगो को हिरासत मे ले लिया है। बारात यहा नलिया बाखल निवासी शरद कुमार वैष्णव के घर सागर से आई थी। दूल्हा रमेश शर्मा सागर विश्वविद्यालय मे प्रोफेसर है और उसके पिता पुलिस में सब इन्स्पेक्टर हैं।

पुलिस रिपोर्ट के अनुसार दोपहर के भोजन के पूर्व ही लड़के ने एक मोटर साइकिल और ५ हजार रुपये नगद की माँग की। लड़की के पिता द्वारा असमर्थता व्यक्त करने पर लड़के वालों ने धमकी दी, जिस पर श्री वैष्णव परेशानी में पड़ गये और रात तक लड़के वालो को समझाने का प्रयत्न करते रहे।

दुल्हन के रूप में सजी साधना ने सारी स्थिति को देखते हुए ऐसे घर जाने से इन्कार कर दिया जहां पैसों की ही कदर की जाती है।

पुलिस मे दिये गये बयान में साधना ने कहा कि ऐसे लोभी लोगो को कड़ी से कड़ी सजा देनी चाहिए तथा समाज को उनका बहिष्कार करना चाहिए। पुलिस सूत्रों के अनुसार देर रात को पहले लड़के वालों की ओर से उसके बाद लड़की वालों की ओर से पथराव हुआ। बारातियो की बस का टैम्पों से टक्कर पीछा किया गया। स्थिति को नियन्त्रण में करने के लिए पुलिस ने दूल्हे और उसके पिता को हिरासत में ले लिया है।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

विकृति एव असत्य की काली घटाये छा गई और उन्होने आवेश मे आकर कह दिया—'आर्य समाज ने अपने जन्म दिन से ही राजनीतिक आन्दोलन मे भाग लेने की प्रवृत्ति दिखाई है। आर्यसमाज वर्तमान मे इस दिशा मे बडा सक्रिय देख पडा है। यह एक तथ्य है और इससे यह जाहिर है कि आर्यसमाज की स्थापना मे धार्मिक भावनाएं इतनी अन्तर्हितन थी जितनी राष्ट्रीय भावनाए थी। इस दृष्टि से आर्य समाज उस धार्मिक आन्दोलन से स्पष्टन भिन्न है जिसका प्रादुर्भाव बगाल मे ब्रह्म समाज के रूप मे हुआ है।

दोनो सम्प्रदाय (समुदाय) जाहिर तौर पर एकेश्वरवादी और मूर्तिपूजा विरोधी है इनमे से एक आर्य समाज राष्ट्रीय सैनिक प्रवृत्तिमय और व्यावहारिक है और दूसरा जो नए (आर्य समाज) की तुलना मे पुराना है और जिसका उद्भव बगाल मे हुआ है विश्व-जनीन भाव प्रधान और स्वप्न जगत् मे विचरने वाला है।

आर्य समाज की व्यावहारिकता और सैनिक प्रवृत्ति के स्पष्टीकरण के रूप मे उन दिनो लिखा गया था कि यदि आर्यसमाज व्यावहारिक है तो निश्चय ही यह प्रारब्ध वाद जनित निष्क्रिय वाद को लोगो के हृदयो से निकालने मे समर्थ होगा और 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि' का प्रशस्त पाठ पढाता हुआ लोगो को कर्मवीर बनायेगा। यदि आर्य समाज युद्ध प्रवृत्ति रखने वाला है तो इस प्रवृत्ति का अर्थ एक मात्र आत्म-रक्षा ही है। यदि यह राष्ट्रवादी है तो निश्चय ही यह सर्व-प्रथम आध्यात्मिक दृष्टि से गिरे हुए भारतीयो को ऊचा उठाने के प्रयत्न मे तल्लीन है यद्यपि उसका लक्ष्य सर्वजन हित है जैसा कि उसके नियमो से भी सुस्पष्ट है। यह सार्वभौम सस्थान है जिसका लक्ष्य ससार का उपकार करना और समस्त ससार मे सुख, शान्ति और एकता की गगा प्रवाहित करना है। किसी देश की प्रचलित राजनीति से उसका कोई सम्बन्ध न रहा है और न हैं। आर्यसमाज राजनीति को धर्म का ही अङ्ग मानता है।

महर्षि दयानन्द का वार्त्तालाप और उपदेश

(१)

वेदों की महत्ता और सर्वोपरिता का विवेचन

उदयपुर में मौलवी अब्दुर्रहमान ने स्वामी जी महाराज से प्रश्नोत्तर किए जो लिखे भी जाते थे। वे इस प्रकार हैं।

"ऐसा कौनसा धर्म है जिसकी धर्म पुस्तक सब मनुष्यों की बोल-चाल और प्राकृत नियमों को सिद्ध करने में सक्षम हो।

उत्तर—जितने मत मिलते हैं वे भिन्न-भिन्न देशों की भाषाओं में भिन्न-भिन्न नियमों से ऐसे बने हैं कि एक दूसरे से मेल नही रखते। जहां जो मत उत्पन्न हुआ है उसके सारे गुण वहीं तक सीमा बद्ध है। मतों में एक दूसरे से ऐसे भिन्न चिह्न पाये जाते हैं कि जिन्हें दूसरे देखना भी पसन्द नहीं करते।

प्रश्न—ऐसी अवस्था में सच्चा धर्म कौनसा है?

उत्तर—मत सम्बन्धी सारी पुस्तकें हठधर्मी से भरी पड़ी हैं। इसलिए उनमें विश्वास के योग्य एक भी पुस्तक नहीं है। मेरी सम्मति में जो पुस्तक ज्ञान सम्बन्धी है वही सत्य है। उनमें पक्षपात नहीं हो सकता। ऐसी ही पुस्तक का सृष्टिक्रम के अनुकूल होना सम्भव है। मेरे आज तक के अन्वेषण में वेद ही ऐसी पुस्तक है। वह किसी एक देश की भाषा में नही है। वह ज्ञानमय है और उसकी भाषा भी ज्ञान भाषा है। इसलिए वेद पर ही निश्चय लाना चाहिए।

प्रश्न—क्या वेद मत की पुस्तक नही है?

उत्तर—नही, यह ज्ञान की पुस्तक है।

प्रश्न—मत का आप क्या अर्थ करते हैं?

उत्तर—पक्षपातयुक्त मन्तव्यों के समुदाय को मत कहते हैं।

प्रश्न—क्या वेद में सब गुण पाए जाते हैं?

उत्तर—हां, पाए जाते हैं।

प्रश्न—वेद जब किसी देश की भाषा में नहीं है तब वह सब भाषाओं पर कैसे प्रबल हो सकती है?

उत्तर—जो देश-विशेष की भाषा होतीहै वह व्यापक नहीं हो सकती।

प्रश्न—जब वह भाषा किसी देश की नही है तो वह सब पर प्रबल कैसे हो सकती है?

उत्तर—जैसे आकाश किसी एक स्थान का नही है परन्तु सर्वत्र व्यापक है ऐसे ही वेदों की भाषा देश भाषा न होने से सब भाषाओं में व्यापक है।

प्रश्न—यह भाषा किस की है?

उत्तर—ज्ञान की।

प्रश्न—उसका बोलने वाला कौन है?

उत्तर—इसका बोलने वाला सर्व देशी ब्रह्म है।

प्रश्न—इसका सुनने वाला कौन है।

उत्तर—इसके सुनने वाले अग्नि आदि चार ऋषि सृष्टि के आदिमें हुए हैं। उन्होंने परमात्मा से सुनकर सब मनुष्यों को सुनाया है।

प्रश्न—ईश्वर ने यह भाषा उन्हीं को क्यों सुनाई? क्या वे इस बोली को जानते थे?

उत्तर—वे चारों सर्वोत्तम थे। ईश्वर ने ही उनको तत्काल भाषा का भी ज्ञान करा दिया था।

प्रश्न—आप इसमें क्या युक्ति देते हैं?

उत्तर—कारण के बिना कार्य नहीं होता यही युक्ति है और ब्रह्मादि ऋषियों की साक्षी है।

प्रश्न—भूमंडल भर के सारे मनुष्य क्या एक ही कुल के हैं?

उत्तर—भिन्न-भिन्न कुलों के हैं। आदि सृष्टि में उतने ही जीव मनुष्य शरीर धारण करते हैं जितने गर्भ सृष्टि में शरीर धारण करने के योग्य होते हैं। वे जीव असंख्य होते हैं।

प्रश्न—इस पर कोई युक्ति दीजिए।

उत्तर—अब भी सब अनेक मां बाप की सन्तान हैं।

प्रश्न—जो आकृतियां मनुष्यों की है उनके शरीर क्या एक प्रकार के बने थे?

उत्तर—आदि में मनुष्यों में रंग और लम्बाई-चोड़ाई आदि का भेद-अवश्य था।

प्रश्न—सृष्टि की उत्पत्ति कब हुई?

उत्तर—सृष्टि को उत्पन्न हुए एक अर्ब छियानवें करोड़ और कई लाख वर्ष बीत गए हैं।

प्रश्न—आप किसी मत के नियमों का पालन करते हैं या नही?

उत्तर—जो धर्म ज्ञानानुकूल है मैं उसके सारे नियमों का पालन करता हूं।

प्रश्न—क्या उपादान कारण अनादि है? आप कितने पदार्थो को अनादि मानते है?

उत्तर—उपादान कारण अनादि है। जीवात्मा, परमात्मा और प्रकृति ये तीन पदार्थ अनादि है, इनका परस्पर सयोग-वियोग, कर्म और कर्मो का फल भोग प्रवाह से अनादि है।

प्रश्न—जो वस्तु हमारी बुद्धि की सीमा से बाहर है हम उसे अनादि कैसे मान लें?

उत्तर—जो वस्तुएं नही हैं वे कभी भी नही हो सकती। जो है वे पहले भी थी और आगे भी बनी रहेगी।

प्रश्न—वेद यदि ईश्वर का बनाया हुआ होता तो सूर्य इत्यादि की तरह सारे संसार के मानवों को इससे लाभ पहुचता।

उत्तर—वेद पवित्र, सूर्य्यादि पदार्थों की तरह ही सबको लाभ पहुंचाता है। सारे धर्मों के ग्रन्थों और पूजा की पुस्तकों का कारण वेद ही है। यह सबसे पहले है इसलिए जितने शुद्ध-विचार और ज्ञान की बाते दूसरे ग्रन्थों में पाई जाती है वेद से ली गई है। हानिकारक कथाएं ग्रन्थों के बनाने वालों की अपनी मन घड़न्त है। वेद में किसी का खण्डन-मण्डन नहीं पाया जाता है इसलिए यह पक्षपात रहित है। जैसे सृष्टि विद्या वाले सूर्य्यादि से अधिक लाभ उठाते हैं वैसे ही वेद का अनुशीलन करने वाले वेद से अधिकाधिक उपकार प्राप्त करते है।

(२)

रासलीला से बड़ों का अपमान होता है

कर्णवास में रावकर्ण सिंह ने महाराज से प्रश्न किया 'आप हमारे यहा रास में क्यों नही आये? सन्यासी होकर ऐसा करना अत्यन्त बुरा कर्म है। हमारे स्थान पर जब रासलीला होती है तो सभी पंडित संन्यासी सम्मिलित होते हैं।

महाराज ने उत्तर में कहा "आपके सामने आपके पूज्य पुरुषाओं के रूप भरकर मनुष्य आते हैं नाचते हैं और आप लोग बैठे-बैठे देखा करते हैं उस समय आप लोगों को लज्जा (शर्म) नही आती? आश्चर्य है किसी साधारण पुरुष के माता-पिता, परिजन का स्वरूप भरकर कोई नचावे तो उसे कितना बुरा लगता है। परन्तु आप कुलीन लोग अपने मान्य महापुरुषों के स्वरूप बनाकर उन्हें अपमानित करके प्रसन्न होते हैं।"

—सं० क० रघुनाथप्रसाद पाठक

हमारे शास्त्रार्थ महारथी

–श्री देवीदास आर्य, मेरठ छावनी

(२)

श्री कुमारिल भट्ट

श्री कुमारिल भट्ट उच्चकोटि के पडित एव वेद शास्त्रो के पूर्ण विद्वान थे। उन्होने बौद्ध भिक्षु धम्मपाल से बौद्ध दर्शन की शिक्षा प्राप्त की थी। एक बार उन्होने अपने गुरुदेव से यह कहा कि "सत्य सनातन वैदिक धर्म सम्बन्धी आपकी मान्यताएं भ्रात एव एकपक्षीय हैं"। इस पर गुरुजी ने उन्हें शास्त्रार्थ की चुनौती दे दी तो श्री कुमारिल ने सत्य असत्य के निर्णयार्थ सहर्ष उनसे शास्त्रार्थ करना स्वीकार कर लिया। तब गुरु ने उन्हे अगले दिन शास्त्रार्थ के लिए तैयार होकर आने का आदेश देते हुए यह कहा 'यदि तुम शास्त्रार्थ मे पराजित हुए तो तुम्हे गुरु द्रोह के अपराध पर तुषानल (धान की भूसी) मे जलना होगा।' श्री कुमारिल ने यह बात भी स्वीकार कर ली। दूसरे दिन गुरु शिष्य का शास्त्रार्थ हुआ किन्तु श्री धर्म्मपाल अपने शिष्य की शकाओ का यथार्थ उत्तर न दे सके और उन्होने भरी सभा मे अपनी पराजय स्वीकार कर ली। तब श्री कुमारिल ने उनके चरण स्पर्श करके उनसे सविनय प्रार्थना की कि वह बौद्ध धर्म को त्याग कर वैदिक धर्म का प्रचार करें, किन्तु वह न माने और लज्जा के कारण शीघ्र चिता पर बैठ कर स्वर्ग सिधार गये।

श्री स्वामी शकराचार्य और श्री कुमारिल भट्ट के बौद्ध भिक्षुओ और जैनियो के पडितो के साथ किये गये अनेको शास्त्रार्थो का यह परिणाम हुआ कि अधिकतर बौद्ध भिक्षु, भारत से प्रस्थान करके लका, बर्मा, चीन और जापान आदि विदेशो मे चले गये और उनके अनुयायी वैदिक धर्म की शरण में आ गये। इसी प्रकार बहुत से जैनी पडित अपने अनुयाइयो सहित वैदिक-धर्मी बन गये।

महर्षि दयानन्द

भारत के धार्मिक जगत मे जब महर्षि श्री स्वामी दयानन्द रूपी सूर्य उदय हुआ तो चहु ओर प्रकाश फैल गया। महाराज ने एक ही समय मे पौराणिको, जैनियो ईसाइयो और मुसलमानो को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा किन्तु कोई भी पडित, प्रचारक, पादरी और मौलवी अधिक देर तक उनके सामने न ठहर सका। श्री स्वामी जी अपने निश्चय और परीक्षानुसार ऋग्वेद से लकर पूर्व मीमासा पर्यन्त अनुमान से तीन हजार ग्रन्थो को प्रामाणिक मानते थे। दूसरे शब्दो मे आपने अपने जीवन काल मे तीन हजार से अधिक ग्रन्थो का अध्ययन कर लिया था, तभी तो उनमे से लगभग तीनहजार को प्रामाणिक माना।

स्वामी दयानन्द जी सात बार काशी पधारे किन्तु कोई भी पौराणिक पडित वेदो मे से मूर्ति पूजा सिद्ध न कर सका। काशी मे काशी नरेश श्री ईश्वर नारायण सिंह जी की अध्यक्षता मे आपका पौराणिक पडितो से मूर्ति पूजा पर शास्त्रार्थ हुआ। पौराणिको की ओर से सर्वश्री स्वामी विशुद्धानन्द बालशास्त्री माधवाचार्य ताराचरण आदि सत्ताइस प्रसिद्ध एव विख्यात पडित लाये गये। जब शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ तो महर्षि जी ने स्वामी विशुद्धानन्द जी को धर्म के लक्षण बताने के लिए कहा, किन्तु मनुस्मृति का यह श्लोक—

'धृति क्षमा दमोऽस्तेय शौचमिन्द्रिय निग्रह।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशक धर्मलक्षणम॥"

स्मरण न रहने के कारण वह उत्तर न दे सके। जब बालशास्त्री ने उनकी सहायतार्थ बोलना चाहा तो स्वामी जी ने उन्हें अधर्म के लक्षण बताने के लिये कहा। प्रश्न अति सरल था क्योकि धर्म के जो लक्षण हैं उनके प्रतिकूल ही अधर्म है किन्तु बाल शास्त्री को यह बात न सूझी और वह निरुत्तर होकर बैठ गये। इस प्रकार कुछ देर तक प्रश्न उत्तर होते रहे, किन्तु पौराणिक पडित वेदो मे से मूर्ति पूजा सिद्ध न कर सके। शास्त्रार्थ के पश्चात महर्षि दयानन्द एक मास तक काशी मे रहे और प्रतिदिन पौराणिक पडितो को शास्त्रार्थ के लिए ललकारते रहे, किन्तु किसी पडित ने उनसे पुन शास्त्रार्थ करने के लिए साहस न किया काशी शास्त्रार्थ के सम्बन्ध मे विभिन्न समाचार पत्रो द्वारा देश के कई प्रसिद्ध सुशिक्षित एव प्रतिष्ठित महानुभावो ने महर्षि की विजय की घोषणा की। कुछ समय के पश्चात् काशी नरेश को महर्षि के साथ किये गये दुर्व्यवहार के कारण पश्चाताप हुआ। अत जब महर्षि दूसरी बार काशी पधारे तो काशी नरेश ने बडे सम्मान से उनका स्वागत किया। उन्हे स्वर्ण सिंहासन पर बैठाया। आप रजत सिंहासन पर बैठे और अपने हाथों से महर्षि के गले मे फूलो की माला डाली और चरण वन्दना की।

एक बार स्वामी जी का कर्णवास मे पडित अम्बादत्त के साथ शास्त्रार्थ हुआ जिस पर पण्डित अम्बादत्त को मुह की खानी पडी। इस पर पौराणिको ने बुलन्दशहर से पडित हीरा बल्लभ को बुलवाया वे अपनी मूर्तियों को भी साथ लाये और प्रतिज्ञा की कि इन मूर्तियो को स्वामी जी के हाथो भोग लगवा कर ही उठूगा। ६ दिनो तक सस्कृत में शास्त्रार्थ होता रहा। अन्तिम दिन पडित जी ने अपनी पराजय स्वीकार कर ली और कहा 'स्वामी दयानन्द जी जो कुछ भी कहते हैं सब सत्य है, प्रामाणिक है और इनकी विद्या अगाध है और शास्त्रानुशीलन अपार है।" उसने उसी समय मूर्तियो को उठाकर गगा मे फेक दिया और उनके स्थान पर वेद स्थापित कर दिए।

३१ जुलाई सन १८६९ को कानपुर मे पडित हलधर ओझा के साथ स्वामी दयानन्द जी का सहायक कलेक्टर श्री डब्लू थेन की अध्यक्षता मे शास्त्रार्थ हुआ जिस पर श्रोतागण बडे प्रभावित हुए और अपनी प्रतिमाओ को गगा मे फेक दिया। तब ओझा जी ने निम्न विज्ञापन हिन्दी, सस्कृत, उर्दू तथा अग्रेजी में दिया।

'मूर्तियो का जल मे प्रवाहित करना अनुचित है। जो लोग स्वामी दयानन्द जी के मत को ग्रहण करे वे कृपया मूर्तिया कैलाश या बैकुण्ठ मन्दिर मे पहुचा दें। यदि उन्हे अवकाश न हो तो हमें सूचित करे, हम उठा लेगे।'

मध्यस्थ महोदय थेन साहब ने जो निर्णय किया वह इस प्रकार था—

Gentlemen —At the time in question I decided in favour of Dayanand Saraswati Fakir and I believe his arguments are in accordance with the Vedas I think he won the day If, you wish it I will give you my reasons for my decision in five days"

Kanpur — Yours obediently
7-8 1969 — (Sd) W Thaine

अर्थात् —

महाशयो! मेरी सम्मति मे शास्त्रार्थ के समय स्वामी दयानन्द सरस्वती सन्यासी की विजय हुई। उनकी युक्तिया वेदानुकूल थी। यदि आप चाहे तो मैं अपनी व्यवस्था की पुष्टि मे पाच दिनो मे प्रमाण भी दूगा।

कानपुर
७ ८ १८६९ — आपका
आज्ञाकारी थेन

बदरिया (सोरो के पास, उत्तर प्रदेश) के श्री अगदराम शास्त्री सस्कृत के धुरन्धर विद्वान तथा व्याकरण के पडित थे। जब उनका महर्षि दयानन्द जी के साथ मूर्ति पूजा पर शास्त्रार्थ हुआ तो वे बडे प्रभावित हुए और महर्षि जी के शिष्य बन गये। उन्होने अपनी मूर्तियो को गगा मे विसर्जित कर दिया और भागवत की कथा न करने की प्रतिज्ञा की। उनका अनुकरण करते हुए पडित बलदेव गिरि तथा अन्य लोगो ने भी अपनी मूर्तियो को गगा मे फेक दिया।

(क्रमश)

श्रीमती रमाबाई

—एम० सी० पाठक

श्री मद्दयानन्द प्रकाश में श्रीमती रमाबाई का परिचय इस प्रकार दिया गया है—

"श्री रमाबाई एक महाराष्ट्र ब्राह्मण पुत्री थी। उनका संस्कृत पांडित्य प्रख्यात था। वे धाराप्रवाह संस्कृत भाषण करती थी। उनके विचार कुछ स्वतन्त्रता लिए हुए थे। वे एक बंगीय कायस्थ से विवाह करना चाहती थी इसलिए बन्धु-बांधवों ने उन्हें घर से पृथक कर दिया था। वे कलकत्ता से मेरठ आई थीं। उस समय उनके साथ एक नौकर एक नौकरानी और बंगाली सभ्य था। सम्भवत यह वही भद्र पुरुष था जिसके साथ वे विवाह करना चाहती थीं।

रमा जी के मेरठ में अनेक भाषण हुए। उन दिनो पंडित भीमसेन जी, ज्वालादत्त जी, पालीराम जी और श्री ज्योतिस्वरूप जी आदि विद्यार्थियो ने महाराज से वैशेषिक दर्शन पढना आरम्भ किया। श्रीमती रमा जी भी पढा करती। श्री रमादि सभी पाठक महाराज की पाठन परिपाटी से अति प्रसन्न होते। किसी का कैसा भी संशय क्यो न हो पाठ पढते ही पढ़ते दूर हो जाता।

महाराज ने श्री रमा जी को उपदेश दिया 'इस समय आर्य जाति की पुत्रियों की अवस्था अतिशोचनीय है। ये संसार भर के भ्रमो और कुरीतियो का केन्द्र बन रही है। आप आजीवन ब्रह्मचारिणी रहकर उनका सुधार कीजिए। उनकी शिक्षा का बीडा उठाइए। उनको दीर्घ दुर्दशा से उभारिए। इस शुभ कार्य को आर्य समाज की पद्धति पर चलाते आपको धन की पर्याप्त सहायता होती रहेगी। महाराज ने उन्हे यह भी कहा 'आपके बिना मैंने आज तक सामने बैठाकर किसी स्त्री को कोई उपदेश नहीं दिया। आपको सम्मुख बैठाकर उपदेश सुनने का अवसर केवल इसलिए दिया गया है कि आप अद्वितीय विदुषी हैं। सम्भव है मेरे वचन सुनकर आप आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण करलें और स्त्री जाति के परोपकार रूप परम पुण्य कार्य मे प्राणपण से परायण हो जाय।" रमाजी ने विनीत निवेदनकिया 'महाराज गृहस्थ लोग भी तो उपकार का कार्य कर सकते हैं। उन्हे भी तो पुण्य कर्म की पूंजी उपार्जन करने का पुष्कल अवकाश मिल जाता है।"

इस पर स्वामीजी ने कहा 'बन्धु बान्धवों के विविध बन्धनो मे जकडे हुए जन पर-हित का उतना कार्य नहीं कर सकते जितना कि एक ब्रह्मचारी या ब्रह्मचारिणी कर सकती है। जब मनुष्य गृहस्थी के गहरे गड्ढे मे गढ जाता है तो परोपकार के भाव एक एक करके भूल जाते हैं। इसलिए रमा! आप अपने जीवन को परार्थ अर्पण कर दीजिए। महिला मण्डल का कार्य सिद्ध कीजिए।" जैसे ज्वरावेश मे मनुष्य को भोजन की रुचि नहीं होती ठीक वैसे ही प्रारब्ध कर्म के प्रभाव से श्रीमती रमा के हृदय मे महाराज के उपदेशो को स्थान न मिला। वे समस्त जीवन ब्रह्मचर्य व्रत मे बिताने के लिए उद्यत न हुई। एक मास से अधिक काल तक रमा जी ने श्री उपदेश श्रवण किए और फिर कलकत्ता को प्रस्थान कर गई। श्री रामगोपाल जी कृत लोक मान्य तिलक की वृहद अंग्रेजी जीवनी मे भी रमाबाई का परिचय दिया गया है जिसे उपर्युक्त परिचय का पूरक समझना चाहिए। वे लिखते हैं—

'१८८१ ई० मे बम्बई मे यह समाचार पहुचा कि रमाबाई नाम की एक विदुषी सुन्दरी कलकत्ता के शिक्षा क्षेत्रोमे बड़ी प्रख्यात हैं और उनके संस्कृत ज्ञान के समक्ष प्रतिष्ठ विद्वान हत-प्रभ हैं। परन्तु दुर्भाग्य की मारी वह विदुषी कलकत्ता छोड बम्बई पहुची और १८८२ मे उसने पूना को अपना निवास-स्थान बनाया। पूना पहुचने से पूर्व ही उसकी कीर्ति वहा पहुच चुकी थी। उसके रूप लावण्य, उसकी विद्वता और उसके वैधव्य का प्रजा पर बडा प्रभाव पड़ा। उनकी वक्तृत्व शक्ति और ज्ञान के कारण थोडे ही दिनो में बहुत से व्यक्ति उनके प्रशंसक हो गए और जब उन्होने पूना मे 'आर्य महिला समाज' नामक संस्था की स्थापना की तो पूना के प्रसिद्ध समाज सुधारक उस संस्था के संरक्षक बन गये।

परन्तु कुछ वर्षों के पश्चात उनके जीवन ने नाटकीय मोड़ लिया। मिशन [illegible] कुमारी डा. हीवर कोर्ड तथा कतिपय ईसाई [illegible] के सम्पर्क में आने पर वे इंग्लैंड गई और वहा से अमेरिका। अमरीका से 'ईसाई'-बनकर लौटी और वहा की एक ईसाई संस्था ने उन्हे आश्वासन दिया कि वे भारत मे शिक्षा और समाज-सेवा का जो कार्य करेंगी उसके लिए उन्हे १० वर्ष तक संस्था की ओर से आर्थिक सहायता प्राप्त होगी।

पूना मे उन्होने यह प्रकट किया कि ईसाई संस्था से मिलने वाली सहायता के कारण मैं इस बात के लिए बाध्य नही हू कि ईसाइयो का प्रचार करू। उन्होंने 'शारदा सदन' नामक एक संस्था स्थापित की जिसमे मुख्यत उच्चवर्गो की विधवाए प्रविष्ट की जाती थी। सर्वश्री राणाडे डा भाडार कर जी, श्री देशमुख और के० टी० तैलंग प्रभृति सुविख्यात समाज सुधारक इस संस्था के शुभ चिन्तक थे।

'क्रिश्चियन वीकली' नामक एक पत्र मे एक खबर छपी जिसने उस पर्दे मे छिद्र कर दिया जो संस्था की आन्तरिक प्रवृतियो को छुपाए रखता था। खबर यह थी कि सदन की ७ बालविधवाओं मे से २ विधवाए ईसाइयत मे दीक्षित होना चाहती है। संस्था मे एक ईसाई अध्यापक उन्हे शिक्षा देता है और वे प्रार्थना मे सम्मिलित होती हैं। इस समाचार मे यह भी कहा गया था कि यह संस्था ईसाई संस्था समझी जानी चाहिए। महात्मा तिलक को शुरू से ही इस संस्था के प्रति सन्देह था। उन्होने अपने पत्र केसरी' मे अपने भावो को व्यक्त करके हिन्दुओ को सावधान किया कि इस समाचार के असत्य सिद्ध होने तक वे अपनी लडकियो को संस्था मे प्रविष्ट न करे। बाद मे यह निश्चय हो जाने पर कि शारदा सदन' ईसाई प्रचार का केन्द्र है श्री राणाडे आदि सुधारको ने संस्था से अपना सम्बन्ध तोड दिया।

जहा तक हिन्दुओ का सम्बन्ध है वह संस्था हिन्दुओ की दृष्टि मे बहुत गिर गई यहा तक कि रमाबाई को उसे पूना जिले के एक ग्राम मे ले जाना पडा। जन साधारण हिन्दू ईसाई और मुसलमान बने हिन्दुओ को बडी घृणा की दृष्टि से देखते थे। स्वामी दयानन्द जी के आगमन से पहले ईसाई या मुसलमान बने हिन्दु का अपने धर्म मे वापस आना अचिन्त्य था। महाराष्ट्र मे अंग्रेजी शासन की जड जम जाने पर ईसाई मिशनरी हिन्दुओ को ईसाई बनाने के कार्य मे संलग्न हो गए। हिन्दुओ की ओर से ईसाई प्रचार का खण्डन करने का बडा नगण्य यत्न होता था। श्री बालशास्त्री नामक एक विद्वान समाज सुधारक ने कोर्ट की सहायता से एक ब्राह्मण लडके को जो ईसाई बना लिया गया था अपने अधिकार मे ले लिया परन्तु लडके को शुद्ध करके हिन्दू धर्म मे दीक्षित करना टेढी खीर थी। लडके का शुद्ध किया जाना हिन्दू धर्म के प्रति घोर अपराध और पाप माना गया। ब्राह्मणो का बवडर बडे उग्र रूप मे उठा।

इन विवरणो से स्पष्ट है कि रमाबाई ने विवाह किया था परन्तु वे शीघ्र ही विधवा हो गई थी। वे अत्यन्त भावुक प्रकृति की महिला थी। यदि हिन्दू समाज उन्हे शुद्ध करके पुन अपनाने का यत्न करता तो सम्भव था कि हिन्दू समाज को उनसे अमित लाभ हुआ होता।

१००वर्ष पूर्व टाइम्स आफ इंडिया बम्बई २५ अप्रैल १८८३ (२५-४-१९८४ के अंक मे पुनः प्रकाशित)

रमाबाई

यह जानकर हमारे बहुत से पाठको को आश्चय और शायद अन्य अनेको को निराशा होगी कि एक धार्मिक संस्थान ने सुप्रसिद्ध पंडिता रमाबाई को अपनी ओर आकृष्ट कर लिया है जिनके पिछली मेल से युरोप चले जाने की खबर मिली है।

'इन्दु प्रकाश' के अनुसार श्रीमती रमा उस मिशन के मार्ग दर्शन मे जिससे बम्बई के कौले फादर्स (Cowley Fathers) सम्बद्ध है अध्ययनार्थ इंग्लैंड रवाना हो गई है।

उनके अनेक मित्रोओर शुभचिंतको ने उन्हेसलाह दी थी कि वे बम्बईमे कुछ समय ठहरकर और अंग्रेजी का कुछ ज्ञान प्राप्त करके ही इंग्लैण्डजावें परन्तु इंग्लैंडदेखने का विचार ही उनकेदिमाग मे सर्वोपरि था और इसीलिए उन्होने प्रतीक्षा करना ठीक नही समझा और अचानक ही इंग्लैण्ड यात्रा का निर्णय कर डाला। उनके साथ एक दूसरी मराठा महिला एक सेविका और लगभग तीन वर्षीया छोटी पुत्री गई है।

पंडिता द्वारा संस्थापित स्थानीय आर्य महिला समाज ने यात्रा पर रवाना होने से पूर्व, एक पत्र द्वारा उन्हें प्रार्थना की थी कि वे इतनी जल्दी इंग्लैण्ड न जायें और समाज की स्थिति को सुदृढ बनाने मे उनकी मदद करें।'

देशान्तर प्रचार

एक करोड़ १० लाख से अधिक भारतवासी विदेशो में बसे ६० प्रतिशत ने नागरिकता त्यागी-धन का प्रलोभन बड़ा आकर्षक

आपको सम्भवत, यह जानकारी नहीं होगी कि भारत वर्ष से कितने लोग विदेशों में जाकर बस गये हैं ? प्रवासी भारतवासियों की संख्या, भारत सरकार द्वारा एकत्रित जानकारीके अनुसार सन् १९८० के १५ जुलाई तक एक करोड़ १० लाख एक हजार २९८ लोग विदेशों में जा कर बस गये हैं।

अंग्रेजी शासन काल में अंग्रेजों ने भारतीयों को सस्ते मजदूर होने के नाते विश्व में फैले हुए अपने सामाज्य में हर देश में भेजा। थोड़े से लोग उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिये जाते थे। कुछ उद्यमी लोग सिन्धी व गुजराती व्यापार के लिये भी विदेशों में जाने लगे।

अंग्रेजी शासन की समाप्ति पर, देश के अनेक नागरिक व्यापार नौकरी तथा शिक्षा के लिये विदेशों में जाकर बसने लगे। दुख तो इस बात का है कि इन लोगों ने धन और सम्पदा के सम्मोहन में अपने देश से नाता ही तोड़ लिया है। जहां वे रहते है वही के नागरिक बन बैठे है। १ करोड १० लाख प्रवासी भारतीयों मे से ६७ लाख, ६० हजार ५३६ लोगों ने भारतीय नागरिकता छोड़कर विदेशी नागरिकता ग्रहण कर ली है।

सबसे अधिक प्रवासी भारतीयों की संख्या नेपाल में है। नेपाल में भारतीय मूल के ३८ लाख लोग रहते हैं जिनमें से लगभग २९ लाख लोगों ने नेपाल की नागरिकता स्वीकार कर ली है।

भारतीय प्रवासियों की संख्या श्री लंका में १३ लाख ५० हजार है। इनमें से ८ लाख ३२ हजार ९८६ लोगों को वहां की नागरिकता मिल चुकी है। शेष का झगड़ा चालू है।

मलेशिया मे भारतीय मूल के नागरिक १२ लाख ८ हजार ५०० हैं जिनमें से १० लाख ९ हजार ५०० लोग मलेशिया की नागरिकता प्राप्त कर चुके है।

मारीशस में भा० मू० के नागरिकों की संख्या छ: लाख, २३ हजार है इनमें से छ लाख १२ हजार ५२७ को वहां की नागरिकता मिल चुकी है।

बर्तानिया में भारतीयों की संख्या ४ लाख है जिसमें से आधे लोगों को वहा की नागरिकता मिल चुकी है।

अमेरीका में ३ लाख भारतीय रहते हैं जिनमें से केवल ३५ हजार लोगों को ही वहा की नागरिकता मिल चुकी है। कैनाडा में एक लाख ७५ हजार लोग रहते हैं जिनमें से ९५ हजार लोगों को वहा की नागरिकता मिली है।

साम्यवादी देशोमें भारतीय मूल के लोग बहुत कम रहतेहैं। आप इसका अनुमान रूस से ही लगा सकते हैं जहा पर भारतीयों की कुल संख्या केवल ७५० है। इनमें केवल २ लोगों को ही रूस की नागरिकता मिली है। इसी प्रकार साम्यवाद के दूसरे स्वर्ग ? चीन में केवल ८ भारतीय रहते है जिनमें से किसी ने भी चीनी नागरिकता को ग्रहण नही किया है।

पोलैण्ड में ४९, साम्यवादी पूर्व जर्मनी में १००, योगोस्लेविया में ५० भारतीय रहतेहै परन्तु किसी को भी वहां की नागरिकता नहींहै

कुछ देश ऐसे भी है जहा पर बसे भारतीयों में से अधिकांश वहां के नागरिक बन गये हैं। फिजी में ३ लाख ६१० में से ३ लाख ६५० लोग फिजी के नागरिक बन चुके हैं। गयाना में ४ लाख २४ हजार ४०० भारतीय हैं जिनमें ४ लाख २४ हजार १०० लोगों को वहां की नागरिकता मिल चुकी है। केनिया में ७९००० भारतीयों में से ७२५०० लोग केनियाई हो गये हैं। जमैका में ५०३१८ में से ५०००० लोगों को वहां की नागरिकता मिल चुकी है। पुर्तगाल में ६००० भारतीय रहते हैं इनमें से ५९३९ लोग पुर्तगाली नागरिक हो चुके हैं। नीदरलैंड में १ लाख १ हजार ५०० भारतीय हैं इनमें से एक लाख लोगों ने मूल देश से नाता तोड़कर नीदरलैंड की नागरिकता स्वीकार की है। न्यूजीलैंड में १० हजार भारतीयों में ९२०० को वहां की नागरिकता मिली है। मोजमैबिक में २८०४१ में से २७७९२ लोगों ने वहां की नागरिकता स्वीकार की है। यमन में एक लाख भारतीय है इनमें से ५००को छोड़कर शेष सभी यमनी नागरिक हो चुके है।

अफ्रीकी देशों में ट्रीनीडाड और टोबागो में भारतीय अधिक है। इनकी संख्या ४ लाख २९ हजार है जिनमें से ४ लाख २० हजार लोगों ने वहां की नागरिकता ग्रहण की है। तनजानिया में ५९००० में ५५००० वहां के नागरिक हो चुके हैं। सूरीनाम में १ लाख २४ हजार ९०० भारतीय रहते हैं इनमें से १ लाख २४ हजार ७५० ने वहां की नागरिकता ग्रहण की है। अफगानिस्तान में ३० हजार लोगों में से २५००० लोगों ने वहां की नागरिकता ली है। आस्ट्रेलिया में १८५०९ भारतीयों में से १५९८५ लोग आस्ट्रेलियाई बन गये है सयुक्त अरब अमीरात मे १ लाख ५२हजार लोग रहतेहै उनमें हैं से केवल २ हजार लोगों को वहा की नागरिकता प्राप्त हुई है। कुवैत में ६५ हजार भारतीय रहते है इनमे से केवल १०० को कुवैती नागरिकता मिली है। इराक में १०२५० भारतीय है जिनमें से १७ हजार ईराकी नागरिक बन गए है। ईरान में २०८०० भारतीय हैं जिनमें ९२० को ही ईरानी नागरिकता मिली है छै: देश जिनमें रूमानिया मांगोलिया व कोरिया (साम्यवादी) ऐसे हैं जहा एक भी भारतीय नही रहता है।

(अजमेर केसरी (२-५-८३)

आर्य समाज उज्जैन स्थापना दिवस

आर्य समाज उज्जैन मे २-४-८४ को आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। उपस्थिति कार्यक्रम तथा भाषणों की दृष्टि से सार्वजनिक सभा बड़ी सफल रही। प्रमुख वक्ता थे श्री ओम्प्रकाश अग्रवाल श्री देवीलाल मन्त्री श्री मणीन्द्र कुमार आर्य समाज की आवश्यकता एवं महत्ता पर काफी प्रकाश डाला गया।

विशेष लेख २० सूत्री कार्यक्रम :

सती अब किसी पर आश्रित नहीं

कुमारी सती भट्टाचार्य राष्ट्रीय बचत सगठन की अगरतल्ला शाखा की महिला फील्ड एजेंट है। वह कमीशन के रूप मे प्रति माह लगभग १,०८० रुपये कमा रही है और उन्हे अब सरकारी अथवा अन्य रोजगार की कोई परवाह नही हैं।

सती जब १२ वर्ष की थी तो उसके पिता की मृत्यु हो गई थी तथा उसको अपनी विधवा मा और अपने लिए रोजी-रोटी कमानेहेतु उत्तरी त्रिपुरा राज्य के धर्म नगर मे सघर्ष करना पडा। दृढ इच्छा शक्ति होने के कारण उसने अपना अध्ययन जारी रखा और १९७४ मे स्नातक की परीक्षा पास की। स्थानीय रोजगार केन्द्र के जरिये सरकारी नौकरी पाने के लिए उसे चार वष तक इन्तजार करना पडा। रोजगार पाने की अपनी कोशिशो मे नाकाम हो जाने पर वह अपने घर से लगभग २००किलोमीटर दूर अगरतल्ला आ गई। उसने पुन नौकरी की तलाश की तथा ट्यूशनो के जरिये अपना जीवन-यापन किया।

अब सती भट्टाचार्य नौकरी पाने मे चारो तरफ से पूरी तरह से निराश हो चुकी थी तभी उसने सुना कि राष्ट्रीय बचत सगठन लोगो को लघु बचत करने के लिए प्रेरित करने हेतु महिला एजेन्ट नियुक्त कर रहा है। उसने राष्ट्रीय बचत सगठन के स्थानीय अधिकारी से सम्पर्क किया और अपना काम सीखने के बाद वह १९८२ मे राष्ट्रीय बचत सगठन की महिला एजेंट बन गई।

प्रथम तीन महीने सती के लिए बहुत कठिन रहे तथा इस अवधि के दौरान उसने कमीशन के रूप मे प्रति माह केवल २००) रुपये कमाये।

उसने लागो से सम्पर्क स्थापित करने के अपने तरीके मे सुधार किया और छ महीने के अनुभव के बाद वह ५००) रुपये प्रति माह कमाने लगी। इस समय १,०००) रुपये प्रति माह कमा रही है।

कठिन परिश्रम के बाद सती भट्टाचार्य अब अपने पैरो पर खडी है। वह अब आराम का जीवन बिता रही और अपनी विधवा मा की भी सहायता करती है। उसके अपने शब्दो मे, 'देश मे पढे-लिखे बेरोजगारोकी सख्या बढ रही है।" रोजगार केन्द्र और अन्य सरकारी एजेसिया, रोजगार उपलब्ध कराने मे सभी की सहायता नही कर सकती। परन्तु प्रत्येक को आशावादी होना चाहिए तथा ईमानदारी से कमाना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रो मे रहने वाले लोगो के लिए राष्ट्रीय बचत सगठन एक ऐसा ही साधन है। राष्ट्रीय बचत सगठन के महिला एजेट के रूप मे काम करने से मुझे सन्तोष मिलता है क्योंकि उससे मैं अपना, अपनी विधवा मा, अपने समाज और इससे बढकर अपनी छोटी-सी क्षमता मे, अपने देश का कुछ भला कर रही हू।

कृतज्ञता प्रकाश

हमारे पूज्य पिता (प० रघुनन्दन शर्मा) जी के निधन पर मुझे अनेक आर्य सज्जनो, आर्य समाजो, आर्य सस्थाओ,नेताओ विद्वतजनो, मित्रो, पिताजी के प्रशसको, तथा विविध राजकीय एव अराजकीय सघठनो उनके वरिष्ठ अधिकारियो के अनेक शोक सहानुभूति सूचक प्रस्ताव और सन्देश प्राप्त हुए हैं।

सार्वदेशिक के माध्यम से उनकी प्राप्ति स्वीकार करते हुए प्रेषको के प्रति अपनी तथा अपने परिजनो की ओर से हार्दिक आभार प्रकट करता हू।

निश्चय ही हम सबको आपकी सवेदना एव सहानुभूति से इस महान् वियोग को सहन करने मे बडा सबल प्राप्त हुआ है।

सच्चिदानन्द शास्त्री

सयुक्त मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

साहित्य समीक्षा

ओमानन्द योग साधना

तीन भागो मे २३×३६=१६ साइज मे साधारण कलेवर तथा गैटअप व मैकअप मे प्रकाशित इस पुस्तक के तीनो भागो का मूल्य १५११) है, प्रकाशन एव प्राप्ति स्थान ओ३मानन्द योगाश्रम, मनधारा प्रपात बडकेश्वर जि० खण्डवा (म० प्र०) है।

इधर कुछ वर्षों मे योग के नाम से बहुत सी पुस्तको का प्रकाशन हो रहा है, जिनमे योग के आठ अङ्गो मे से केवल आसन पर ही अधिक ध्यान दिया जाता है और योग का नाम लेकर पुस्तक को प्रचारित किया जाता है। विद्यालयो और महाविद्यालयो के पाठ्य-क्रम मे भी योग के नाम से प्रकाशित पुस्तकों को स्थान दिया गया है किन्तु उनमे योग के केवल एक अङ्ग "आसन" को ही दिखायागया है।

प्रस्तुत पुस्तक मे मनुष्य की शारीरिक, मानसिक और आध्यत्मिक उन्नति के लिए प्रथम भाग मे यम-नियम आसन प्राणायाम की व्याख्या कर उसकी उपयोगिता बतायी गई है। द्वितीय भाग मे प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एव समाधि विषय पर विस्तृत चर्चा की गयी है। अन्तिम एव तृतीय भाग मे 'योगासन द्वारा चिकित्सा" लिखकर असाध्य रोगो से छुटकारा पाने के उपाय बताये गये है।

यद्यपि प्रकाशन की दृष्टि से पुस्तक का मूल्य आवश्यकता से अधिक प्रतीत होता है परन्तु विषय और लेखक की कुशलता से अधिक प्रतीत नही होता। —रमेशचन्द्र शास्त्री

पंजाब समाचार

पंजाबी को साम्प्रदायिक रंग किसने दिया

कमलेश सचदेव ने अपने २६ अप्रैल के पत्र में डा. महीपसिंह के पत्र का समर्थन किया है।

आश्चर्य इस बात का है कि एक असत्य बात का अप्रमाणिक बात का ढिंढोरा किस दिलेरी और साहस से पीटा जा सकता है। पंजाब के वासी-पंजाबी हिन्दी और उर्दू, भाषाएं बोलते आए हैं। हिन्दू या आर्य समाजी ने पंजाबी बोलने का कभी विरोध भी नहीं किया। विभाजन से पूर्व संयुक्त पंजाब मे, पंजाबी तीन लिपियों में लिखी जाती थी। फारसी लिपि मे, नागरी लिपि में, और गुरुमुखी लिपि में। पंजाब का विभाजन हो गया। आज भी पाकिस्तानी पंजाब मे, पंजाबी, फारसी (उर्दू) लिपि मे लिखी जाती है। भारतीय पंजाब मे यदि पंजाबी, गुरुमुखी और नागरी लिपि में लिखी जाती तो इस पर किसी को क्यों और कैसे आपत्ति होनी चाहिये थी? वह तो एक पुरानी पवित्र परम्परा मात्र का निर्वाह मात्र था। झगड़ा तब आरम्भ हुआ जब ४० प्रतिशत वाले सबल अल्पमत को बगैर उनकी राय जाने उनकी इच्छा को समझे, पंजाबी को केवल गुरुमुखी लिपि मे ही लिखने की बाध्यता कर दी गई।

पंजाबी लेखन की प्राचीन परम्परा नष्ट कर दी गई। अल्पमत का गला घोट दिया गया। आप लिखते हैं धर्म के साथ भाषा को न जोड़ना चाहिए। हम आपके साथ सहमत हो जाते हैं परन्तु पंजाबी के साथ गुरुमुखी को जोड़ कर क्या किया गया? क्या पंजाबी को एक सम्प्रदाय विशेष की भाषा बनाने का प्रयत्न नहीं किया गया? केवल गुरुमुखी मे ही लिखने की जबरदस्ती क्या साम्प्रदायिकता नहीं है?

आप सत्य लिखने का दावा करते हैं तो यह सत्य भी लिखना चाहिए था कि १८७४ में छपे सत्यार्थ प्रकाश ने नफरत के बीज नही बोये थे खाई तो उस दिन पैदा कर दी गई थी जब १०० सवा सौ वर्ष पूर्व सिख बन्धुओं ने वीर बन्दा बैरागी को अपना मानने से इनकार कर दिया था। उसकी समस्त कुर्बानियों और प्रयत्नों पर पानी फेर दिया था। आर्य समाजियों को कोसने से काम नही चलेगा। क्या सच्ची बात कहना पाप है? सत्य कहने और सत्य सुन सकने, दोनो के लिए पत्थर का कलेजा चाहिए।　　न० भा० ४-५-८४

सिख उग्रवादी हिंसा अविवेकपूर्ण—मोनिटर

न्यूयार्क, ७ मई। क्रिश्चियन साइन्स मोनिटर ने आज अपने सम्पादकीय मे कहा—भारत मे सिख उग्रवादी हिंसा जारी रखकर सर्वाधिक अविवेक का परिचय दे रहे हैं।

पत्र मे कहा गया है—यदि श्रीमती इन्दिरा की सरकार शक्ति के साथ जवाब देने का निश्चय कर ले तो सिखों, जिनकी सख्या १०.४० करोड़ है, को हिन्दू पराजित कर देंगे।

पंजाब में हत्याओं के लिए अकाली दल जिम्मेदार

तिरुपति, ७ मई अखिल भारतीय युवा कांग्रेस (इ) ने पंजाब में वर्तमान दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति, हिंसात्मक घटनाओं और विवेकहीन हत्याओं के लिए अकाली दल को दोषी ठहराया है। यहा अखिल भारतीय युवा कांग्रेस (इ) के ब्लाक प्रमुखो के दो दिन के सम्मेलन में प्रस्तुत प्रस्ताव के मसौदे मे कहा गया है कि पंजाब की हिंसक घटनाओं में कई लोगों की जानें गई हैं। वहां की वर्तमान स्थिति के लिए अकाली दल पूरी तरह जिम्मेदार है। अकाली मोर्चे ने राष्ट्र की कीमत पर अपना स्वार्थ साधने के लिए हिंसा और अन्याय की आग भड़काई है तथा उसने साम्प्रदायिकता और क्षेत्रीयता का जहर फैलाया है।

युवा कांग्रेस के अध्यक्ष श्री तारिक अनवर ने अपने भाषण में कहा कि देश को कठिन समय का सामना करना पड़ रहा है। उसकी एकता के लिए सब तरफ से खतरा मंडरा रहा है। ऐसी स्थिति में युवकों को राष्ट्र निर्माण के लिए आगे आना चाहिए और देश की प्रगति के लिए कंधे से कंधा मिला कर काम करना चाहिए।

प्रस्ताव में कहा गया है कि विभिन्न विचारधारा वाली पार्टियों के संयुक्त मोर्चे और गठबन्धन करने से उनकी दयनीय दशा स्पष्ट जाहिर होती है। उन्होंने कहा कि विपक्षी दल का इंका की वैकल्पिक राष्ट्रीय पार्टी तैयार करने के बारे में कोई 'दम' नहीं है।

प्रस्ताव में कहा गया है कि राष्ट्रीय लोकतान्त्रिक मोर्चे तथा संयुक्त मोर्चे की कोई भी नीति या कार्यक्रम नहीं है।

प्रस्ताव में जम्मू-कश्मीर की स्थिति को चिन्ताजनक बताया गया है और कहा गया है कि राज्य सरकार वहां समाज विरोधी और साम्प्रदायिक शक्तियों के विरुद्ध कार्रवाई करने में असफल रही है।

प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने सम्मेलन के नाम अपने सन्देश में कहा है कि देश कठिन दौर से गुजर रहा है और युवाओं को इस चुनौती का सामना समर्पण और देश भक्ति की भावना से करना चाहिए। जब जब कि भारतीय समाज शताब्दियों की नींद से जागा है, कुछ शक्तियां इसके लिए नई समस्याएं पैदा कर रही हैं। हमें इन शक्तियों से चौकस रहना होगा।　　पंजाब केसरी ८-५-८४

खालिस्तान को लेकर लन्दन के अकालियों में झड़प

लन्दन, ७ मई (प्रेट्र)। बर्मिघम के एक सिख सम्मेलन में खालिस्तान के समर्थकों और विरोधियों के बीच आज गरमागरमी हुई।

अखण्ड कीर्तनी जत्था द्वारा आयोजित सम्मेलन में उस समय विवाद खड़ा हुआ जब खालिस्तान समर्थक नेता जगजीत सिंह चौहान ने खालिस्तान के समर्थन में प्रस्ताव रखा।

चौहान के समर्थकों ने घोषित कर दिया कि प्रस्ताव पास हो गया लेकिन लोंगोवाल समर्थक गुट ने इसे नहीं माना।

अकाली दल की एक शाखा के अध्यक्ष सम्पूरण सिंह चीमा ने बताया कि सम्मेलन में जैसे ही खालिस्तान समर्थक प्रस्ताव आया बहुत से लोग बाहर निकल गए।

लोंगोवाल समर्थक गुट ने बाद में एक प्रस्ताव रखा जिसमें कहा गया कि हम सिर्फ राज्य के लिए अधिक अधिकारों की मांग करते हैं और अकाली मांगों को शान्तिपूर्ण तरीके से पाना चाहते हैं।

चीमा ने बताया कि समानान्तर अकाली गुट के नेता ज्ञानी अमलोक सिंह ने खालिस्तान का विरोध किया।

पंजाब समस्या सुलझाएं या इस्तीफा दें

लास ऐन्जिलिस, १ मई (प्रे० ट्र०)। यहां बसे सिख समुदाय के सौ से ज्यादा सदस्यों ने आज यहां उस होटल के सामने दो घंटे शान्तिपूर्ण प्रदर्शन किया जहां राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ठहरे थे।

उनकी मांग थी कि पंजाब मसला शीघ्र हल किया जाए या राष्ट्रपति इस्तीफा दे उन्हे एक ज्ञापन दिया गया। इसमें कहा गया है कि हजारों मील दूर रहने के बावजूद वे अपने भाइयों के प्रति हो रहे अन्याय से दुःखी हैं।

ज्ञापन पर दस्तखत करने वालों में हैं—लास एन्जिलिस गुरुद्वारे, फ्रांसिस्को के सिख केन्द्र, १० अमेरिका अकाली दल और सिख कौन्सिल के प्रतिनिधि।

आर्यसमाज द्वारा धर्म परिवर्तन का विरोध

दिनांक २३ अप्रैल १९८४।

भिलाई नगर। आर्य समाज सम्पूर्ण विश्व मे हिन्दुओ मे जन-जागृति के लिये कार्यरत है। ईसाई मिशनरियो तथा मुस्लिमो द्वारा धर्म परिवर्तन अभी भी व्यापक पैमाने पर किया जा रहा है जिसका प्रबल विरोध आर्य समाज ने किया है और यह समाज धर्म परिवर्तन के सख्त खिलाफ है।

उक्त जानकारी आज यहा एक पत्रकार वार्ता मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री तथा भूतपूर्व ससद सदस्य श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने दी। वे यहा आर्य समाज के रजत जयन्ती समारोह एव प्रादेशिक महर्षि दयानन्द निर्वाण समारोह मे भाग लेने आये हुए थे। श्री त्यागी ने कहा कि हिन्दुओ मे धर्म परिवर्तन रोकने के लिये उन्हे उचित दिशा प्रदान की जा रही है हिन्दुओ का धर्म परिवर्तन कराना एक साधारण प्रक्रिया नही है यह धर्म परिवर्तन राजनैतिक उद्देश्यो की पूर्ति के लिये विदेशी मिशनरियो द्वारा किया करवाया जा रहा है। भारतवष म अमेरिका एव मिडिल ईस्ट के प्रतिनिधियो का जाल बिछा हुआ है। उन्होने आरोप लगाया कि मुस्लिमो द्वारा जनसख्या मे वृद्धि करके ५० वर्षो मे भारत को इस्लामिक राष्ट्र मे परिवर्तन का लक्ष्य रखा गया है। श्री त्यागी ने कहा कि कश्मीर मे धारा ३७० के अन्तर्गत प्रावधान रखा गया है कि कोई भी बाहर का निवासी कश्मीर मे स्थापित नही हो सकता और केन्द्रीय सरकार इसे मान्यता दे रही है। श्री त्यागी ने कहा विदेशी मिशनरियो के कारण ही मिजोरम नागालैंड एव मेघालय आज ईसाई प्रदेश बन चुके हैं।

आदिवासी तथा पिछडे वर्ग के लोगो के धर्मान्तरण के सम्बन्ध मे श्री त्यागी ने कहा कि इनकी सुरक्षा तथा सस्कृति को बनाये रखने का दायित्व सरकार का है, किन्तु सरकार इनके धर्मान्तरण की रोक-थाम के लिये कोई कदम नही उठा रही है। धर्म परिवर्तन के पश्चात् भी इन्हे हर प्रकार की सुविधा का लाभ देना पूर्णत गलत है। धर्म-निरपेक्षता को मान्यता देना उचित है, किन्तु सभी धर्म के लोगो को समान अधिकार दिये जाने चाहिये। श्री त्यागी ने सरकार की नीतियो की आलोचना करते हुए कहा कि वर्तमान सरकार की शिक्षा नीति पूर्णत दोष पूर्ण है तथा परिवार नियोजन मे गलत प्रयोजन किये गये हैं, जिससे हिन्दू बहुल देश मे हिन्दुओ का अस्तित्व खतरे मे हो गया है।

श्री त्यागी ने कहा कि देश के सामाजिक क्षेत्र मे ऐसे विध्वसक तत्व उत्पन्न हो गये हैं, जो देश के टुकडे-टुकड करवाने पर आमादा हैं। इन विध्वसक तत्वो को रोकने एव इसका प्रबल विरोध करने, हिन्दुओ की सस्कृति तथा अस्तित्व को कायम रखने के लिये अपने सीमित साधनो के द्वारा आर्य समाज कार्यरत है। अखिल भारतीय दयानन्द सस्थान के द्वारा राजस्थान, मध्यप्रदेश, उडीसा, दक्षिण बिहार, आसाम, नागालेड आदि क्षेत्रो मे हमारे आश्रम चलाये जा रहे हैं, अनेको स्थानो पर आर्य समाज द्वारा लोगो को शिक्षा देने के लिये विद्यालय भी चलाये जा रहे है। आपने कहा कि छत्तीसगढ मे आदिवासियो के धर्म परिवर्तन रोकने के लिये शीघ्र ही एक आश्रम की स्थापना की जा रही है। (नवभारत रायपुर २३-४-८४)

आवश्यकता

आर्यसमाज पिम्परी, पुणे ४११०१८ द्वारा सचालित आर्य विद्यामन्दिर के प्राथमिक विभाग के लिए प्रधानाध्यापक/प्रधानाध्यापिका की आवश्यकता है।

पदाभिलाषी प्रशिक्षित स्नातक (डी एड/बी एड.), अ ग्रेजी माध्यम से अध्यापन के कम से कम तीन वर्षीय अनुभवी हों, अ ग्रेजी माध्यम से शिक्षित व/या प्रधानाध्यापकीय अनुभवी को प्राथमिकता।

पुरुष/महिला दोनों आवेदन कर सकते हैं, पति पत्नी दोनो की नियुक्ति पर भी विचार किया जा सकेगा।

स्वाक्षरी में, अपेक्षाओं एव विवरण सहित लिखें—

सचिव—आर्य शिक्षा समिति

श्री छोटूसिह एडवोकेट का अभिनन्दन

श्री छोटूसिह एडवोकेट प्रधान राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा अभिनन्दन समारोह आर्यसमाज, स्वामी दयानन्द मार्ग अलवर के हाल म दिनाक ६-५-८४ को सम्पन्न हुआ। इस समारोह में भारी सख्या मे अलवर के नागरिको ने भाग लिया। नागरिक अभिनन्दन समिति के सयोजक डा० राजेन्द्र कुमार ने श्री छोटूसिह एडवोकेट की सेवाओ की प्रशसा करते हुए लिखित अभिनन्दन पत्र भेंट किया। इस अवसर पर आर्य कन्या विद्यालय समिति की मन्त्री श्रीमती कमलाशर्मा आर्य कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य श्री आर० के० माथुर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की ओर से श्री हारमल तोलानी, लोकदल की ओर से श्री जगत सिह दायसा, बार ऐसोसियशन की ओर से श्री श्रीराम यादव, बालविहार माध्यमिक विद्यालय की ओर से श्री शिवदान सिह तथा शहर की अनेक सस्थाओ के पदाधिकारियो ने श्री छोटूसिह एडवोकेट के द्वारा देश, समाज व शहर के लिए की गई सेवाओ का वर्णन करते हुए माल्यार्पण किया।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला रामगोपाल जी शालवाले ने इस अवसर पर विशेष रूप से श्री छोटूसिह एडवोकेट का अभिनन्दन करते हुए उनके द्वारा अनेक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनो जैसे सन १९७२ मे मारीशस के प्रधान मन्त्री श्री शिव सागर राम गुलाम की अध्यक्षता म अलवर मे ग्यारहवा आर्य महासम्मेलन सन १९८१ मे सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी समारोह उदयपुर मे सन १९८३ मे अजमेर म स्वामी दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के सफल आयोजनो का उल्लेख किया। उन्होने कहा कि एडवोकेट साहब ने आर्यसमाज को विदेशो मे ले जाने म सक्रिय योगदान दिया है। सन १९७३ मे मारिशस मे १००० आर्य नर-नारियो का ले जाना उनकी सगठन शक्ति वा सूझबूझ का परिचायक था। शालवाले जी ने आप द्वारा चलाई जा रही अनेक शिक्षण सस्थाओ एव अन्य सस्थाओ के सफल सचालन का भी उल्लेख किया।

आज की ज्वलन्त समस्या का उल्लेख करते हुए लाला जी ने कहा कि पजाब मे उग्रवादी सिख अनेक आर्य नेताओ को धमकिया दे रहे हैं इनके लिए सरकार को कडा रुख अपनाना चाहिए।

अन्त मे श्री छोटूसिह एडवोकेट ने सभी अभिनन्दन कर्ता नागरिको का हृदय से आभार प्रकट किया। देश हित समाज हित व शहर के उत्थान के लिए सदैव कार्य करने का सकल्प दोहराया।

डा० राजेन्द्र कुमार, स्वागत समिति अलवर

(पृष्ठ २ का शेष)

उनके विपक्षियो द्वारा विष को भोजन मे देने से जाती है। उपरोक्त पक्तिया लेखक ने महाराज प्रतापसिह की आत्म कथा पृष्ठ ३१२, ३१३ से उद्धृत की है।

इस प्रकार हमे स्वामी जी के भक्तों के अलावा दो प्रमुख राज घरानो से सम्बन्ध रखने वालो के लेख व विचार पढने को मिले। इनके आधार पर भी हम इस स्थिति तक पहुचते हैं कि महर्षि को वास्तव में विष ही दिया गया था।

अब हम एक प्रश्न जो महाराजाधिराज जसवन्तसिह जी ने डा० कर्नल एडम से पूछा था, क्योकि उन्हें भी स्वामी जी की मृत्यु होने पर सन्देह हुआ था, तभी उन्होने पूछा था—स्वामी जी ऐसे हट्टे-कट्टे होते हुए भी उनकी मृत्यु कैसे हो गई इस पर डा० कर्नल एडम ने उत्तर दिया था मैंने काच (दूर्बीन) लगाकर स्वामी जी का गला व मु ह देखा था जिससे साफ जाहिर होता था कि उनके पेट की आतो मे छेद हो गये थे और बाहर भी फफोले हो गये थे।

इससे बढकर हमे और कोई प्रमाण नही मिल सकता। प्रश्न यह जरूर भ्रान्ति पैदा करता है कि देने वाला कौन था शायद तेजसिह जी ने व शाहपुराधीश ने जोड का नाम इसलिए न बताया हो कि सम्भवत शाहपुरा की इसमे बदनामी होती, लेकिन इसमे शाहपुराधीश पर कोई दोष नही लगाया जा सकता। चाहे जो हो, यह सत्य है कि महर्षि को दूध मे काच या सखिया अवश्य दिया गया था मृत्यु पर कुछ समय तक असत्य का पर्दा डालकर सत्य को छुपा कर रखा जा सकता है परन्तु जब अन्त म पर्दा हटाया जाता है तो सत्य सामने आता है। यहा भी यह बात लागू होती है कुछ समय तक यह बात पर्दे मे रही परन्तु अन्त मे सब के सम्मुख आही

गई कि महर्षि को विष दिया —

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का उत्सव सम्पन्न

हरिद्वार —ज्वालापुर महाविद्यालय का उत्सव १२ से १४ अप्रैल तक बड़े धूम धाम से कुल भूमि मे मनाया गया।

वेद शिक्षा राष्ट्र-रक्षा सम्मेलनो के अतिरिक्त नवीन स्नातको का दीक्षान्त समारोह बड़ी ही सादगी के साथ सम्पन्न हुआ।

गुरुकुल के कुलपति डा० कपिल देव द्विवेदी तथा अध्यक्ष आचार्य गौरी शकर जी ने दीक्षा कार्य सम्पन्न कराया। लगभग ७० स्नातक निकले जिन्हे उपाधि वितरित की गई।

आय जगत के दो विद्वानो-डा०सत्यकेतु विद्यालकार इतिहासकार एव आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन, साहित्यकार को विद्यावाचस्पति की सम्मानित उपाधिसे अलकृत किया गया उत्सव-सानन्द सम्पन्न हुआ।

१०१५०—पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कागडी
विश्वविद्यालय हरिद्वार
जि०—सहारनपुर उ० प्र०

आर्य समाज टटीरी-मण्डी (बागपत रोड) में आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर ११ जून से २० जून १९८४ तक

आर्यसमाज टटीरी-मण्डी (बागपत रोड) मे सार्वदेशिक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर आगामी ११ जून से २० जून १९८४तक आचार्य देवव्रत व्यायामाचार्य के सरक्षण मे सम्पन्न होगा।

इस शिविर मे चौगामा क्षेत्र के विशेषत और देशभर के प्रबुद्ध युवक यौगिक व्यायाम सैनिक शिक्षा एव अनुशासन बद्ध जीवन का प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे।

शिविर के समापन के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री प० बालदिवाकर हस आर्य वीरो को दीक्षान्त उद्बोधन भाषण करेंगे। युवक खाकी निकर दो जेबो वाली कोल्ड (युक्त हाफ बाहो वाली सफेद कमीज) दो सैन्डो कट सफेद बनियान, दो लाल लगोट, सफेद मौजे, ब्राउन कपड़े के फलीट, कान तक की लाठी, डायरी, बाल पैन, ऋतुअनुकूल बिस्तर, थाली, लोटा साथ लावें। बागपत रोड स्टेशन, शाहदरा शामली रेल मार्ग पर स्थित है।

फूलसिह शास्त्री

सार्वदेशिक प्रेस [illegible] में मुद्रित तथा [illegible] मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा [illegible] से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सृष्टिसम्वत १९७२९४९०८५]
वर्ष १९ अङ्क २५]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
ज्येष्ठ शु० २ स० २०४१ रविवार २७ मई १९८४

दयानन्दाब्द १६० दूरभाष (२७४७७१)
वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति ४० पैसे

उग्रवादियों की हिंसक गतिविधियों से निपटने के लिये यदि सरकार अक्षम है तो आपात-स्थिति लागू करने के सिवाय श्री कार्लेकर के पास क्या समाधान है ?

आपात् स्थिति के दौरान श्री रामगोपाल शालवाले द्वारा आर्य समाज के हितों की रक्षा एवं पीड़ितों की सेवा सहायता के काय कलाप की कुछेक झलकियां।

सार्वदेशिक सभा प्रधान श्रीयुत लाला रामगोपाल जी शालवाले तथा वरिष्ठ उपप्रधान श्री वन्देमातरम रामचन्द्र राव के सयुक्त प्रेस वक्तव्य पर श्री हिरण्यमय कार्लेकर का एक आलोचनात्मक लेख ३ ५ ८४ के इण्डियन एक्सप्रस मे प्रकाशित हुआ था । इसका उत्तर ११-५-८४ के इण्डियन एक्सप्रेस मे लेखक महोदय के प्रत्युत्तर के साथ छपा था जिसमे पुन इमरजैन्सी लागू किए जाने के औचित्य और स्वय लाला जी के उन दिनो के काय कलाप के सम्बन्ध मे लिखने और स्पष्टीकरण की गु जाइश रह गई थी। नीचे के पत्र मे जो इण्डियन एक्सप्रेस को प्रकाशनार्थ भेजा गया है स्पष्टीकरण द्वारा श्री कार्लेकर की भ्रान्तियो का निराकरण किया गया है।

—सम्पादक सार्वदेशिक'
१६-५ =४

प्रत्युत्तर

"श्री हिरण्यमय कार्लेकर ने मेरे पत्र (देख इण्डियन एक्सप्रेस ११-५-१९८४) के उत्तर में जो कुछेक प्रश्न उठाएहे उनका स्पष्टीकरण आवश्यक है। इस समय देश के समक्ष ऐसी कई समस्याए विद्यमान है जिनसे 'आपात् स्थिति' जैसे सवैधानिक प्रावधानो के बिना प्रभावशाली ढग से निपटा नही जा सकता। इसी कारण जनता गवर्नमेन्ट ने भी उस प्रावधान को सविधान से नही हटाया था। यहा तक कि एक भिन्न नाम से मिसा (आन्तरिक सुरक्षा अधिनियम) को बनाए रखा गया था। संविधान के ४४वें सशोधन तथा उसमें जिन सरक्षणो की व्यवस्था की गई है, उनके परिपेक्ष्य मे आपात् कालीन स्थिति के प्रावधान के दुरुपयोग का भय काल्पनिक ही है।

इसके अलावा यदि गवर्नमेन्ट उग्रवादियो से निपटने के लिए जिनकी लोकतन्त्र के आदर्शों और मर्यादाओ के प्रति कोई आस्था नही है आपात स्थिति जैसी संवैधानिक प्रक्रिया को काम मे नही लाती है तो वह अपने उत्तरदायित्व से वचित हो जाती है।

देश की अखण्डता, लोकतान्त्रिक ढाचे की सुरक्षा तथा पजाब के उग्रवादियो के दमन के लिए आपातस्थिति की घोषणा ऐसी गवर्नमेट की रीति-नीति से नितान्त भिन्न है जो सेना और पुलिस की सहायता से सत्ता से चिपकी रहती है, 'वर्तमान स्थिति मे सेना के हवाले किए जाने के तर्क का कोई आधार नही है।

यदि लोकमत के दमन के लिए सत्ता और शक्ति का प्रयोग किया जाता है तो वह कभी सफल नही होता। यही कारण है कि जहा ऐलसाडर और अफगानिस्तान मे सत्ताधारी पक्ष विद्रोह को दवाने मे असफल रहा वहा हैदराबाद मे १९४७ मे सफल सिद्ध हुआ।

श्री कार्लेकर ने एक गम्भीर वैयक्तिक प्रश्न उठाया है कि १९७५ मे मै कहा था ? यदि वे आपात कालीन स्थिति के दौरान प्रकाशित सार्वदेशिक सभा के मुख पत्र साप्ताहिक सार्वदेशिक के अ को को पढ लेते तो निश्चय ही वे यह प्रश्न न उठा पाते। आपात् कालीन स्थिति के दौरान मैं आर्य समाज की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का महामन्त्री था। अनेक विघ्न वाधाओ के होते हुए भी मैने आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर चलना जारी रखा।

इस सन्दर्भ मे कुछेक घटनाए अ कित की जाती है। आपात कालीन स्थिति के दौरान १९७५ मे जब देहली विकास अधिकरण ने अन्धे जोश मे आर्य समाज मन्दिर ग्रीन पार्क को गिराया था तब मैंने मौके पर जाकर विरोध प्रदर्शन की व्यवस्था की थी जिसके परिणाम स्वरूप प्रशासन न केवल क्षमा मागने के लिए ही अपितु ७०० वर्ग गज के असल प्लाट के स्थान मे १२०० वर्ग गज का प्लाट देने के लिए विवश हो गया था। इतना ही नही असल जगह पर

(शेष पृष्ठ १२ पर)

इन्दिरा गांधी हिन्दू हैं, संजय भी हिन्दू थे

नई दिल्ली, १० मई। दिल्ली हाईकोर्ट ने व्यवस्था दी है कि श्रीमती इन्दिरा गाधी सजय की तिहाई जायदाद की हकदार हैं क्योकि सजय गाधी हिन्दू थे।

सजय की जायदाद के मुकदमे मे न्यायमूर्ति मागीलाल जैन ने मेनका गाधी की यह दलील नामजूर कर दी कि सजय हिन्दू नही थे क्योकि उनकी मा (श्रीमती इन्दिरा गाधी) भी हिन्दू नही हैं। मेनका ने कहा था कि इस वजह से हिन्दू उत्तराधिकार कानून इस मुकदमे मे लागू नही होता। उन्होने कहा था विशेष विवाह कानून की धारा २१ (ए) के तहत श्रीमती गाधी को जायदाद मे हिस्सा नही मिल सकता।

फैसले मे कहा गया कि श्रीमती इन्दिरा गाधी की शादी वैदिक तौर-तरीके से हुई थी। सजय का लालन-पालन भी हिन्दू तरीके से हुआ था। फिर सजय को कभी नवजोत' सस्कार के जरिए पारसी नही बनाया गया।

फैसले मे कहा गया है कि उत्तराधिकार कानून की धारा (२) की उपधारा (१) के स्पष्टीकरण (ख) के अनुसार सजय के माता-पिता मे से एक हिन्दू हैं और सजय हिन्दू परिवार मे पले हैं।

२१ फरवरी को जिला जज ने सजय गाधी के ४७१ लाख के शेयरो मे श्रीमता मेनका, वरुण फिरोज और श्रीमती इन्दिरा गाधी का तिहाई हिस्सा निर्धारित किया था। फैसले के खिलाफ श्रीमती मेनका गाधी ने हाईकोर्ट मे अपील की हाईकोर्ट ने २ मई को मेनका की अपील खारिज कर दी थी और जिला जज का फैसला बहाल रखा था। अदालत ने उस समय कहा था कि फैसले का कारण बाद मे बताया जाएगा।

न्यायमूर्ति मागी लाल जैन की अदालत मे यह मुकदमा चला। आज उन्होने फैसले की तफसील दी।

अदालत ने श्रीमती मेनका की यह दलील नामजूर कर दी कि विशेष ,विवाह कानून की धारा २१ (ए) अब लागू नही रही। अदालत ने कहा कि धारा २१ (ए) उत्तराधिकार कानून और विशेष विवाह कानून को कुछ धाराओ को स्पष्ट करने के लिए बनाई गई।

वरुण फिरोज के कानूनी हक की रक्षा के लिए हाईकोर्ट के सयुक्त रजिस्ट्रार आर०के० कौल को सरक्षक बनाने के बारे मे न्यायमूर्ति जैन ने कहा कि ऐसा करना जरूरी था क्योकि श्रीमती मेनका ने अपील मे वरुण को शामिल नही किया था। इसलिए वे (मेनका) वरुण की कानूनी तौर पर सरक्षक नही मानी जा सकती। मा (मेनका) अगर वरुण के कानूनो हितो की रक्षा को इच्छुक नही है तो अदालत की यह जिम्मेदारी है कि उसके (वरुण) हितो की रक्षा का प्रबन्ध किया जाए।

न्यायमूर्ति जैन ने कहा कि कानून ने वरुण को एक-तिहाई से ज्यादा हिस्सा नही दिया है जब कि श्रीमती इन्दिरा गाधी ने अपना हिस्सा भी देकर इसे दो-तिहाई कर दिया। उन्होने कहा—'अपनी दादी का अनायास विरोध कर वरुण को कुछ हासिल नही हो सकता। हा दादी अगर वरुण का हिस्सा भी दबा जाती तो फिर अदालत से शिकायत की जा सकती थी।

विद्वान न्यायाधीश ने मेनका की यह दलील भी नामजूर कर दी कि श्रीमती इन्दिरा गाधी वरुण का राजनैतिक लाभ उठा रही हैं।

याद रहे कि श्रीमती मेनका ने कहा था कि वरुण को श्रीमती गाधी के पास भेजना उन्होने इसलिए बन्द कर दिया है कि वहा उसे राजनैतिक प्रचार के लिए टीवी और प्रेस फोटोग्राफरों के सामने किया जाता है जिससे बच्चे को मानसिक कष्ट पहुच सकता है।

न्यायाधीश ने कहा भारत की प्रधानमन्त्री को राजनैतिक लाभ के लिए ऐसा ओछा खेल दिखाने की जरूरत नही होगी और वरुण को मानसिक कष्ट पहुचाने वाली शायद वे (श्रीमती इन्दिरा गाधी) अन्तिम व्यक्ति होगी।

अदालत ने कहा कि वरुण को अपनी दादी से दूर रखकर मेनका गाधी दादी-पोते के सहज और भावुक रिश्ते मे बाधा डाल रही हैं।

न्यायमूर्ति ने कहा 'सर्व साधन सम्पन्न' सास इन्दिरा गाधी और 'विधवा', बेसहारा' बहू मेनका गाधी के आपसी सम्बन्धो से अदालत का कोई मतलब नही है। अदालत किसी का सामाजिक या राजनैतिक पद देखकर फैसला नही लेती।

(श्रीमती मेनका के वकील ने अपील मे कहा था कि जिला जज ने सर्व साधन सम्पन्न श्रीमती गाधी के पक्ष मे फैसला दे कर कानून का मजाक उड़ाया है।)

न्यायाधीश ने कहा 'केवल इस कारण कि मुकदमे मे प्रधानमन्त्री भी एक पक्ष हैं, अदालत के प्रति कड़े और असम्मानजनक शब्दो का इस्तेमाल नही होना चाहिए। साधारण शब्दो मे भी किसी अदालत के फैसले की कानूनी खामियो को ऊची अदालत मे उठाया जा सकता है।

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल की कार्यकारिणी भंग तदर्थ समिति की नियुक्ति

आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल के पदाधिकारियो की लापरवाही, आपसी मतभेद, अनुशासनहीनता और आर्य समाज आसनसोल की स्थिति को ध्यान मे रखते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान माननीय श्री रामगोपाल शालवाले ने तत्सम्बन्धी शिकायतो के सदर्भ मे सभा मन्त्री श्री ओमप्रकाश जी त्यागी और कार्यालय सचिव श्री पृथ्वीराज शास्त्री को कलकत्ता भेजा। उनकी आख्या पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी ने २९-४-८४ को आर्य प्रतिनिधि सभा बगाल की कार्यकारिणी को जिसके प्रधान श्री रघुवीर प्रसाद गुप्त और मन्त्री श्री जगीलाल आर्य थे, भग करके कार्य सचालनार्थ एक तदर्थ समिति का निर्माण कर दिया। तदर्थ समिति के प्रधान श्री फूलचन्द आर्य और मन्त्री श्री जगदीश प्रसाद शुक्ल बनाए गए। तदर्थ समिति के वर्तमान कुल सदस्यो की सख्या ११ है।

बगाल प्रान्त की सभी आर्य समाजें सार्वदेशिक सभा के इस निर्णय का सगठन के हित मे पूरी तरह पालन कर अनुशासन पालन का परिचय दें।

— सच्चिदानन्द शास्त्री
सयुक्त मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा—शराब विरोधी आंदोलन आरंभ करेगी।

अन्तरंग सभा का महत्वपूर्ण निर्णय

रोहतक ९ अप्रैल। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की अन्तरग बैठक में जो कि सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता मे ८ अप्रैल को गुरुकुल कुरुक्षेत्र में सम्पन्न हुई, महत्वपूर्ण निर्णय किया गया है कि शराब से होने वाली हानि से जनता को बचाने के लिए शराब बन्दी आन्दोलन किया जायेगा।

इस उद्देश्य के लिए प्रदेश के १०० ठेकोपर कार्यकर्ता धरना देकर शराब खरीदने वालों को शराब की बुराईयो को समझाकर शराब न खरीदने की प्रेरणा करेंगे। शराब विरोधी साहित्य वितरित किया जावेगा।

सभा की ओर से सब आर्य समाजो को इस आन्दोलन की तैयारी के लिए परिपत्र भेज दिया गया है और सभा के अधिकारी प्रचारक तथा स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती हरियाणा का भ्रमण कर रहे हैं।

—केदारसिंह आर्य
कृते सभा मन्त्री

सम्पादकीय

अन्तरात्मा की आवाज को सुनो, बुराई से बचो और अपना सुधार करो

"बुरी चीजों मे भी अच्छी आत्मा का निवास होताहै "यह उक्ति एक चारण ने बहुत समय पूर्व उद्घोषित की थी। उस समय से लेकर अब तक इस उक्ति की सत्यता की द्योतक अनेक घटनाए प्रकाश मे आ चुकी हैं। इनसे इस धारणा को बल मिला है कि अन्त प्रेरणा वा सत् प्रेरणाओ से दानव भी मानव बन सकते और उनमे अच्छी आत्मा के शुभ्र दर्शन भी हो सकते है। यह कहावत ठीक ही है कि अन्त प्रेरणा पहले मानव पर बुराई से बचने की चोट करती है और इसके बाद बुराई की सजा देने की।

अभी हाल मे ऐसे कई मामले प्रकाश मे आए है जिनका निर्णय अदालतो ने नहो अपराधी की अन्तर्रात्मा ने करके आत्मा की शुद्धता के शुभ दर्शन कराए हैं।

पिछले नवम्बर मे मेरठ के निकटवर्ती गगसोना ग्राम के एक नवयुवक ने जिसने बलात्कार का अपराध किया था, पश्चाताप से अभिभूत होकर आत्महत्या की यद्यपि उसकी गिरफ्तारी नही होनी थी।

इससे पूर्व एक मामले मे दिल्ली के मुख्य मैट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट श्री के०पी० वर्मा ने एक विचाराधीन कैदी के विरुद्ध कोई कार्यवाही न की थी जिसने भरी अदालत मे मजिस्ट्रेट के ऊपर जूता फेककर मारा था। मजिस्ट्रेट ने कहा था "यह स्वय अपने दुष्कृत्य पर पश्चाताप करेगा।" और उससे पूछा था "रमेश! तुमने यह बुरी हरकत क्यो की?" मैंने तुम्हारा क्या बिगाडा था" रमेश को चुप देख कर उन्होने पुलिस को हिदायत की कि रमेश के विरुद्ध कोई कार्यवाही न की जाए। इस हिदायत ने अपना प्रभाव तुरन्त दिखाया। रमेश ने मजिस्ट्रेट की मेज पर अपना सिर दे मारा। यदि हमारे अधिकाधिक मजिस्ट्रेट अपराधियो को अन्तर्रात्मा के पश्चाताप के लिए प्रेरित करे तो निश्चय ही अपराधी अपने को अदालतो की सजाओ से भी अधिक कठोर सजा देते पाए जा सकते हैं।

पटियाला जेल की एक घटना उल्लेखनीय है। एक नवयुवक कैदी आधी रात को बिना पुलिस के पहरे मे सेन्ट्रल जेल को लौटा था। दो कास्टेबिल उसे राजपुरा ले गए थे जहा की अदालत मे उस पर मामला चल रहा था। सुनवाई के बाद उसने जेल की वापसी के लिए उन दोनो कास्टेबलो की काफी इन्तजार की। उन्होने (जो बाद में निलम्बित कर दिए गये थे) शराब पी और नशे मे धुत हो गए और इसी कारण अदालत मे नही पहुच पाए। इस पर उस नवयुवक कैदी ने अदालत में जेल को वापस जाने के लिए किराए के लिए कुछ लोगों से पैसे उधार लिए।

पूर्वी कास की इससे मिलती-जुलती एक घटना अभी हाल मे प्रकाश मे आई है। एक नवयुवक कैदी अपने घर वालो से मिलकर हसी-खुशी के साथ जेल को लौट आया था। वह कैदी १८ महीने की सजा भुगत रहा था परन्तु जेल के अधिकारियो ने उसे छोटे भाई के भुलावे मे जिसकी सजा की अवधि पूरी हो चुकीथी उसे जेल से रिहा कर दिया था। जेल के परेशान और चिन्तित अधिकारी और कर्मचारी उस समय आश्चर्य चकित रह गए जब उन्होने उस नवयुवक को जेल के फाटक पर दस्तक देते और यह आग्रह करते हुए देखा कि उसे बाकी अवधि की सजा भुगतने के लिए जेल की कोठरी मे जाने दिया जाए।

कन्सास नगर नामक स्थान की एक अन्य घटना बडी मार्मिक है। एक स्त्री को ३६ वर्ष के बाद आत्मग्लानि की घोर अनुभूति हुई। एक दिन पोर्टे हया स्टेट यूनिवर्सिटी की लाइब्रेरी को एक पकेट मिला जिसमे यूनानी भाषा की कविताओ का एक ग्रन्थ था। उसके साथ नार्थ केरालिनस की एक महिला का हाथ से लिखा पत्र था। उस पत्र मे उसने लिखा था कि जब वह द्वितीय महासमर के दौरान हया यूनिवर्सिटी की छात्रा थी नब उसने लाइब्रेरी का ग्रन्थ चुरा लिया था। "जब मुझे यह बोध हुआ कि पकडे न जाने का अर्थ चोरी न करना नही होता' तब मैंने इस ग्रन्थ को लौटाने का निश्चय कर लिया था। साठ सैन्ट कीमत की पुस्तक के जुर्माने स्वरूप १३१४ डालर का बैंक ड्राफ्ट भी नत्थी कर रही हू। १० सैन्ट प्रतिदिन के हिसाब मे ३६ वर्ष की यही राशि बनती थी' पुस्तकाध्यक्ष श्री रौबर्ट स्मिथ ने जुर्माने के ड्राफ्ट को वापस भेजते हुए उस महिला को ईमानदारी के लिए धन्यवाद दिया उन्होने यह कहा कि उस महिला को उसकी आत्माने काफी लम्बी सजा देदी।

अन्तर्रात्मा (जो परमात्मा की आवाज होती है) उन लोगो को सजा देती है जिन्हे कानून सजा नही दे पाता। श्री स्मिथ ने डेनमार्क की सत्तावन वर्ष की एक महिला का उदाहरण देते हुए लिखा कि उसने २० वर्ष पहले अपने पति की हत्याकर दी थी। उसकी आत्मा ने उसे इतना कचोटा कि वह स्वय थाने पर पहुची और अपनी गिरफ्तारी की पेशकश की। पुलिस अधिकारियो ने तुरन्त अपने रिकार्ड की छानबीन की। उन्हे ज्ञातहुआ कि वह महिला न तो पागल थी और न ही मजाक कर रही थी। उसका पति पक्का शराबी था। वह उसे शराब छोडने के लिए कह-कहकर थक गई थी उसे सबक सिखाने का उसने निश्चय करडाला। एक दिन उसने काफी मे कीटाणु नाशक कुछ दवाई घोलकर पिला दी यह सोचकर कि इससे पेट मे जो शूल उठेगा उसकी मार से वह कुटेव को छोड देगा। पहला प्याला कारगर न होने पर उसने वह दवाई मिलाकर कई प्याले पिलाये और अन्तिम प्याला घातक सिद्ध हुआ। वेदना से छटपटाते हुए उसने अपनी पत्नी की गोद मे प्राण छोड दिए। पुलिस अधिकारियो ने उसे यह कहकर गिरफ्तार करने से इन्कार कर दिया कि उसकी आत्मा ने २० वर्ष तक सजा दी जो कानून की सजा मे भी ज्यादा सख्त है।

वह एक नामी डाकू था। हत्या और डकैती के ग्यारह मामलो मे उसकी तलाश थी। उसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस ने कोई यत्न उठा न रखा था और गिरफ्तार कराने वाले को २५,००० हजार रुपये इनाम की घोषणा की हुई थी। एक दिन वह रात के नौ बजे डाका डालने की योजना बनाने के लिए एक कस्बे मे अकेला गया। उस समय आर्य समाज के उत्सव पडाल मे भारी जनसमूह के समक्ष एक बडे आर्य सन्यासी का व्याख्यान हो रहा था। वह डाकू भी व्याख्यान सुनने के लिए एक किनारे पर खडा हो गया। व्याख्यान

अन्तरंग बैठक

सार्वदेशिक सभा की अन्तरग बैठक १० जून के बजाय ३ जून को आर्य समाज दीवानहाल दिल्ली मे होगी।

और

साम्प्रदायिकता विरोधी सम्मेलन

विट्ठलभाई पटेल भवन नई दिल्ली मे १० जून के बजाय १७ जून को होगा।

ओम्प्रकाश त्यागी
सभा-मन्त्री

सामयिक चर्चा—

भारत के लिए अमेरिकन शासन प्रणाली ठीक है

भारत जैसे विशाल और विविधताओ वाले देश की एकता के लिए अमरीकी ढग का राष्ट्र पति शासन चालू किया जाना चाहिए। श्री चौ० चरणसिंह जी ४ मईको दिल्ली मे एक प्रस गोष्ठी को सम्बोधितकर रहे थे।

उन्होने अपने प्रेस वक्तव्य मे यह भी कहा कि अमेरिकन पद्धति विधायिका कार्य पालिका और न्याय पालिका के अधिकारो को पूरी तरह से अलग रखने के सिद्धान्त पर आधारित है। इस पद्धति के अन्तर्गत राज्यो को भारत की वर्तमान पद्धति के अन्तर्गत मिले अधिकारो से ज्यादा अधिकार प्राप्त है।

अमेरिका का राष्ट्रपति विधायिका के अधिकारो का उल्लंघन नहीं कर सकता। अमरीकी सविधान ने तानाशाही के बजाय दुनिया के सबसे खुले समाज को जन्म दिया है। भारत ने अगर अमरीकी पद्धति अपनाई होती तो केन्द्र राज्य सम्बन्धो का विवाद ही नही उठता।

इसी प्रकार का सुझाव श्री के. सुन्दरम ने दिया था (देखे हिन्दू, मद्रास २९-३ ७७) जो इस प्रकार है —

'प्रजातन्त्र के पुनरुज्जीवन के लिए एक ही विरोधी पार्टी आवश्यक है। इस बात की अनुभूति के लिए ३० वर्ष लगे हैं। भारत मे ससदीय शासन प्रणाली सफल नही हो सकती और हमे राष्ट्रपति टाइप की गवर्नमेंट ही अनुकूल पड सकती है। पता नहीं इस बात की अनुभूति के लिए कितने वर्ष लगेंगे फ्रास से हमे यह पाठ ग्रहण कर लेना चाहिए था।"

कम फिलासफी पर था। उसे वह व्याख्यान बडा पसन्द आया और व्याख्यान की समाप्ति तक खडा सुनता रहा। व्याख्यान के इन शब्दो ने कि मनुष्य के अच्छे बुरे कर्मों का अच्छा बुरा फल जरूर मिलता है और कोई भी परमात्मा के न्याय से नही बच सकता' उसकी आत्मा को झकझोड दिया। अगले दिन प्रात काल वह अपनी गिरफ्तारी देने के लिए जि० मजिस्ट्रेट के बगले पर पहुचा और कालबैल (घटी) को दबाया। मजिस्ट्रेट महोदय तुरन्त बाहर आए और आगन्तुक का नाम और आने का कारण मालम करने लगे। जब डाकू ने अपना छोटूराम नाम बताया तो उन्हे हर्षमिश्रित आश्चर्य हुआ। उन्होने पूछा वैल छोटूराम ! तुम खुद ही गिरफ्तारी के लिए क्यो आया है ? एक आर्य समाजी साधु का लक्चर सुनकर कामो का फल जरूर भोगना पडता है।

आदमी इन्सान के न्याय से बच सकता है पर ईश्वर के न्याय से नही बच सकता अच्छा अगर तुम आगे अपराध न करने का वचन दो तो हम तुम्हे मौत की सजा से बचाने का प्रयास करेंगे। वैल ! हम तुम्हारे सच्चे पश्चाताप से बडा खुश है और कम से कम हल्की से हल्की सजा दिलायगे। साहब ! अगर आगे अपराध करने की इच्छा होती तो मैं खुद ही गिरफ्तारी देने के लिए आपके पास न आता। यह कहकर छोटूराम वहीं बैठ गया।

आर्य समाज भवन को गिराने का मामला अलीगढ़ में भारी तनाव

अलीगढ (सम्वाददाता द्वारा)

आय समाज मन्दिर की ग्यारह दुकानो के चबूतरे तोडने के मामले पर शहर मे बडा तनाव पैदा हो गया है। आय समाजी लीडर डा० सोमदेव गुप्त की गिरफ्तारी के खिलाफ रोष प्रकट करने के लिए थाना गाधी पार्क पर धरना दिया गया।

आय समाज के कार्यकर्ताओ ने पुलिस की ज्यादतियो के खिलाफ नारे लगाए जिस पर पुलिस ने रात के नौ बजे धरना देने वालो पर लाठी चाज किया। श्री कृष्ण कुमार निरमान को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के डण्डे लगते ही श्री निरमान के सिर पर चोट आई। एक नाबालिग लडके को भी पुलिस ने बुरी तरह पीट डाला। विश्व हिन्दू परिषद और भारतीय जनसघ के लीडर डा० मगलराम और भारतीय जनता पार्टी के सचिव श्री भगवानदास ने पुलिस के जुल्म देखते हुए अपने आपको गिरफ्तारी के लिए पेश किया। इन दोनो लीडरो ने पुलिस थाने मे ही भूख हडताल शुरू कर दी। दूसरे दिन जब डा० सोमदेव गुप्त की गिरफ्तारी और पुलिस के जुल्म की खबर शहर में फैली तो पुराने शहर अलीगढ मे हडताल हो गयी धर्म समाज डिग्री कालेज के सामने चार लडको ने अलीगढ सिटी रोडवेज की एक बस मे सवार मुसाफिरो को नीचे उतार कर बस को आग लगा दी। पुलिस ने अखबार वालो को बताया कि थाने पर पथराव से एक कास्टेबल धर्मवीर जख्मी हो गया जिस पर पुलिस ने भीड को हटाने के लिए डण्डे बरसाए। (प्रताप १७ ५ ८४)

आर्य समाज अलीगढ़ को वस्तु स्थिति से अवगत करने का सभा प्रधान का आह्वान

इस समाचार के पढते ही सार्वदेशिक सभा प्रधान श्रीयुत रामगोपाल जी शालवाले ने एक विशेष पत्र आर्य समाज अलीगढ़ को वस्तु स्थिति से तुरन्त अवगत करने के लिए भेजा है।

संस्कारी बालक

बेलग्रेड विश्व विद्यालय के प्राकृत विज्ञान विभाग की क्लासो मे एक दस वर्ष का छात्र अपनी दुगनी उम्र के छात्रो के साथ पढ़ रहा है। साथ ही टीचर्स ट्रेनिंग कालेज के गणित विभाग की क्लासो मे पढने जाता है।

मापोर्डम मिसिया नामक यह लडका एक प्राइमरी स्कूल में पढ रहा है। जब वह ७ महीने का था तब ही बातचीत करने और २ वर्ष की आयु मे पुस्तके पढने लग गया था।

यह एक बिजली सस्थान के विशेषज्ञ मायोडोमा के साथ काम कर रहा है जिसमे कैमिस्ट्री और फिजिक्स (रसायन एव भौतिकी) की असाधारण प्रतिभा है।

विशेषज्ञो ने इस समय यह बताने से इन्कार किया है कि साइस के प्रति यह प्रतिभा जन्म जात है या क्या ? वे और अधिक प्रतिभा और योग्यता के दिग्दर्शन की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

पशु बलि पाप और अधर्म है

डरबन (दक्षिण अफ्रीका) से ३ मई को प्रसारित समाचार मे कहा गया है कि वहा के धार्मिक नेता ने स्थानीय हिन्दुओ से माग की है कि काल्पनिक और खून के प्यासे देवताओ पर बकरियो और पक्षियो की बलि न चढाए।

दक्षिण अफ्रीका की हिन्दू महासभा के अध्यक्ष श्री एम० महाराज ने डरबन के भारी आर्मैन मन्दिर पर एकत्र हिन्दुओ से यह अपील की।

सैकडो वर्षों से सिलिगो उत्सव मे पक्षियो और बकरो की बलि दी जाती है। इस बारे मे राम महाराज ने कहा कि आज कल बलि चढाना एक रैकेट बन गया है। उन्होने कहा कि भक्तो को पशुओ की बलि चढाने के बजाय अपने भीतर के पशु को खत्म करना चाहिए।

पशु बलि के विरुद्ध वेदादि शास्त्रो मे बहुत कुछ कहा गया है।

महात्मा गाधी ने इस प्रसग मे जो मत (यग इण्डिया हिन्दी भाग (पृ० ७६८ १९२१) प्रकट किया था वह माननीय एव अनुकरणीय है। वह इस प्रकार है —

'काली को बकरे बलिदान करना मैं बिलकुल अधर्म मानता हू और इसे मे हिन्दू धम का अग नही मानता हा इसमे कोई सन्देह नहीं है कि किसी समय (वाममार्गियो के काल मे) धम के नाम पर जीवों का बलिदान होता था पर यह धर्म नही और हिन्दू धम तो औरभी नही है।'

हिन्दू मुन्नानी सघके स्वयंसेवकों का अनशन

मदरास से (९-९ ८४) प्रसारित समाचार में कहा गया है कि हिन्दू मुन्नानी सघ के २५ स्वय सेवको ने तमिलनाडू गवर्नमेन्ट के रामनाथपुरम जिले का नाम 'कायदे मिल्लत के नाम से परिवर्तित करने के निर्णय के विरोध में ला कालेज के समक्ष एक दिन की सांकेतिक भूख हडताल की। इस सगठन ने एक प्रैस वक्तव्य के द्वारा सुझाव दिया था कि इस नए जिले का नाम श्री ऐम सी छागला जैसे राष्ट्रवादी मुसलमान के मैरेम्मालाई अडविस डा० अम्बेडकर या कामराजों के नाम पर रखा जाय।

सुझाव उपयुक्त ही है, परन्तु वोटों की खातिर मुस्लिम मतदाताओं की तुष्टीकरण की प्रवृत्ति के कारण सत्ता के भूखे राजनीतिज्ञों को उपयुक्तता या अनुपयुक्तता का कोई ध्यान नहीं रहता इस सबमें अब प्रतिक्रिया परिलक्षित होती देख पड रही है।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

वेद सुधा

वेद-वीणा

ओ३म् सोम रारन्धि नो हृदि गावो न यवसेष्वा
मर्य्य इव स्व ओक्ये ।। ऋग्वेद१।९१।१३

अर्थ—(सोम) हे शान्त्यादि गुण युक्त जगदीश्वर ! (रारन्धि नो हृदि) आप हमारे हृदय मन्दिर में रम्माण हूजिए-रमण कीजिए। मानव के शरीर में हृदय रूपी गुहा ही वह पवित्र स्थान है, जहां परम स्तुत्य देव छिपा हुआ है। (उस देवादि देव को आत्म साधक ही जान पाते हैं, अन्य साधारण जनों की गति वहां तक होती ही नहीं। (प्रभु किस भांति हमारे हृदय में रमण करें ? (गावो न यव सेष्वा) जैसे जौ के हरे खेत में गौएं कलोलें करती हैं। अथवा (मर्य्य इव स्व ओक्ये) जैसे मनुष्य स्वगृह में प्रवेश कर आनन्दित होता है। उसका मकान चाहे छोटी हवेली हो या कि कोठी या बंगला। क्योंकि स्वगृह में प्रवेश करने या विचरने से मनुष्य जितना सुख या आनन्द की अनुभूति अनुभव करता है, उतना सुख या आनन्द की प्रतीति उसको अन्य किसी सुन्दर कोठी बंगला या महल मे नही होती। यह एक प्राकृतिक सत्य है।

व्याख्या—महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कहा है कि 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।' उपर्युक्त श्रुति इस कथन की पुष्टि करती है। इस श्रुति में तीन पाद आए हैं। (१) रारन्धि नो हृदि। (२) गावो न यवसेष्वा। (३) मर्य्य इव स्व ओक्ये। अर्थात् हे प्यारे प्रभो आप शान्ति दाता हो, हमारे हृदय में रमण कीजिए, (किस भांति ?) जैसे गोएं जौ के हरे खेत मे आनन्द से कुलकुलाती हैं, अथवा मनुष्य अपने गृह में प्रवेश करके आनन्दित होता है।

प्रश्न उठता है कि वेद में जौ के खेत एवं मनुष्य को स्वगृह की ही उपमा क्यों दी ?

उत्तर—जौ के खेत का पौधा खाने में भी स्वादिष्ट होता है और नरम भी, गेहूं, चना आदि के पौधों के खेतों से। क्योंकि जौ के पौधे का नखुआ अन्य गेहूं, चना आदि की अपेक्षा नरम और अधिक पत्ती वाला होता है, जिसको पशु गौएं आदि बड़े चाव से खाते हैं और बैठते भी ऐसे हैं जैसे मनुष्य कालीन और मुलायम गद्दे पर बैठकर सुख अनुभव करता है। इसके अतिरिक्त अन्य किसी भी खेत में ये गुण दृष्टिगोचर नहीं होते। ठीक इसी प्रकार मनुष्य भी स्वगृह में निसंकोच और निर्भयता पूर्वक प्रवेश भी कर सकता है और विचरण भी। इस सत्य को प्रत्येक व्यक्ति स्वयं अनुभव करते होंगे।

उपरोक्त दोनों उदाहरणों से यह सिद्ध है कि वेद वर्णित सब सत्य है एवं उसमें कुछ रहस्य व सार भी है, जिसको हम भले ही अपनी अल्प बुद्धि के कारण न जान पाएं। इस श्रुति मेंयही प्रार्थना है"रारन्धिनो हृदि" अर्थात हे प्यारे प्रभो ! हमारे हृदय में रमण कीजिए। जब आपका रमण हृदय में होगा, तब आपकी भांति ही हमारा हृदय भी विशाल और उदार होगा। तब हमारा रोम रोम "आत्मवत् सर्व भूतेषु" का चित्र चित्रित करता रहेगा जो मानव जीवन का लक्ष्य है।

इसकी पुष्टि में कि 'ईश्वर की प्रतीति मानव हृदय में ही हो सकती है निम्न उदाहरण प्रस्तुत है—

(१) 'हृत्प्रतिष्ठं'। यजु० ३४।६ अर्थात ब्रह्म हृदय में स्थित है।

इस मानस देह में दोनों स्तनों के मध्य जो १० अंगुष्ठ मात्र पोला स्थान है—इसी को हृदयाकाश, हृदय पुण्डरीक या अनाहत चक्र भी कहते हैं।

(२) "वेनस्तत् पश्यन्निहितं गुहासत्। ३२।८ अर्थात (गुहा निहित) गुहा में छिपा (तत् सत्) उस सत्य ब्रह्म को (वेनः पश्यन) योगी जन ही देख पाते हैं।

(३) इसी आधार पर योगी राज कृष्ण ने भी गीता में अर्जुन को कहा है—

"ईश्वरः सर्व भूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्व भूतानि यंत्रा रूढानि मायया।। गीता १८।६१

अर्थात ईश्वर सब भूत प्राणियों के हृदय में बैठा हुआ है और सर्व प्राणियों को माया रूपी यंत्र (हेलीकोप्टर) पर बैठाकर भ्रमा रहा है। अर्थात यह तेरा बेटा है, यह तेरा पोता है, ये तेरे माता पिता, सारा परिवार है, यह तेरी कोठी, बंगला, ठाट बाट, यश व कीर्ति हैं, यह कैसा सुन्दर बाग बगीचा बस मनुष्य इसी मायाजाल में भ्रमता हुआ समस्त जीवन यूं ही गंवा देता है। उस प्यारे प्रभु की स्मृति ही नहीं आती।

अतः भगवान को हृदय में रमण कराने के लिए उचित है कि मानव इससे ऊपर उठकर संसार से आसक्ति और शरीर की अहता, ममता को त्याग कर आनन्द कन्द परमानन्द का आश्रय ग्रहण करे एवं अनन्य भक्ति श्रद्धा व प्रेम पूर्वक भगवान का चिन्तन करते हुए जीवन व्यतीत करें। तब ही वह प्यारा प्रभु हृदय में रमण करेगा। अन्य कोई मार्ग नही। वेद की श्रुति द्वारा यही प्रार्थना है—

याद रख—१. मानव जीवन ही मुक्ति का सोपान है।

२. मानव हृदय ब्रह्म के समान विशाल है। इति:

—राधेलाल पोद्दार

ओ३म् के दोहे

ओम् ही अक्षर रूप अरु व्यंजन बीच समाय।
अक्षर क्षर नही होत हैं स्वर संगीत सुहाय ।।१।।
ओम नाम के सूत्र में दीन्हें मन्त्र पिरोय।
ऋषियों के उर में यही माल सुशोभित होय ।।२।।
ओम ध्वनि सब ध्वनि में करे शक्ति संचार।
भिन्न-भिन्न सब में ध्वनि गूंज रही ओंकार ।।३।।
ओम नाम सब से बड़ा सब नामों का भूप।
सकल जगत ब्रह्माण्ड में इसका खिचा स्वरूप ।।४।।
ओम ध्वनि अति पावनी सबके मनको मोह।
रमण करे जो ओम में ओम उसी का होय ।।५।।

चौपाई

वन्दऊं वेद मान चित लायी,
सविता शक्ति जगत् समाई।
राखत ओम ध्वनि को संगे,
जो ध्वनियों पावन गंगे ।।

—शान्तिदेवी राजकोट

हमारे शास्त्रार्थ महारथी

–श्री देवीदास आर्य, मेरठ छावनी

(३)

श्री पं० लेखराम जी

महर्षि श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज के निर्वाण प्राप्त करने के पश्चात श्री पंडित लेखराम जी ने अपने लेखो, व्याख्यानो एवं अन्य मतावलम्बियो (विशेषकर मुसलमानो और ईसाईयो) से किये गये शास्त्रार्थो द्वारा धार्मिक जगत मे क्रांति उत्पन्न कर दी जिसके परिणाम स्वरूप सीमा प्रान्त और पजाब के प्रत्येक नगर और सहस्रो ग्रामो मे आर्य समाजो की स्थापना हुई ओर अधिकतर आर्य समाजो ने अपने मन्दिर भी बना लिए। आर्य समाजो की सदस्य सख्या भी दिन प्रतिदिन बढती गई।

श्री पडित जी का जन्म ८ चैत्र सम्वत १९१५ विक्रमी शुक्रवार के दिन श्री प० तारासिंह के घर सैयदपुर ग्राम तहसील चकवाल, जिला जेहलम मे हुआ था।

पडित जी ने छोटी-बडी ३३ पुस्तकें लिखी। उन्हे छ भाषाओ अर्थात हिन्दी, सस्कृत, उर्दू, फारसी, अरबी और गुरुमुखी का ज्ञान तो था, किन्तु वे अ ग्रेजी नही जानते थे। स्वर्गीय महता जैमिनी जी के कथनानुसार अ ग्रेजी न जानते हुए भी आपने अपनी पुस्तको मे २१३ अ ग्रेजी पुस्तको के प्रमाण दिये। आप प्राय किसी अ ग्रेजी पढे लिखे व्यक्ति को अपने पास बिठा लेते और उन्हे अ ग्रेजी की पुस्तकें देकर उनका अनुवाद सुना करते थे। जहा कही अपने काम की बात देखते उसे लिख लेते थे।

श्री पडित जी के पास २६ मनुस्मृतियें थी। श्री महात्मा मुशीराम जी (स्वामी श्रद्धानन्द जी) के कथनानुसार 'जहा दूसरे वक्ताओ के एक घन्टे तक व्याख्यान के पश्चात श्रोता घबरा जाते हैं वहा तीन घन्टो तक आर्य पथिक की वक्तृता सुनने के पश्चात भी एक घन्टा और बैठने को तैयार रहते थे।'

पडित जी ने कई पुस्तकें मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी की पुस्तको के उत्तर मे लिखी थी। पडित जी ने मिर्जा को कई बार शास्त्रार्थ की चुनौती दी, किन्तु उन्हे पडित जी के साथ शास्त्रार्थ करने का साहस न हुआ। एक बार पडित जी स्वय मिर्जा के जन्म स्थान (कादियान जिला गुरदास पुर पजाब) मे गये थे। एक दिन जब पडित जी मिर्जा के मकान मे बैठे हुए उनसे वार्तालाप कर रहे थे तो अरबी भाषा के एक शब्द 'खारिक' के अर्थ पर दोनो का विचार भेद हो गया। श्री पडित जी "खारिक आदत" का अर्थ 'स्वभाव के विपरीत' करते थे, किन्तु मिर्जा ने कहा कि कुरान शरीफ की परिभाषा मे 'खारिक' के यह अर्थ नही हैं। उनकी इस बात का पडित जी ने यह उत्तर दिया कि यह शब्द कुरान शरीफ मे है ही नही। जब मिर्जा ने कुरान शरीफ मे से निकाल कर दिखाने की बात कही तो पडित जी ने उनके हाथो मे कुरान शरीफ देकर कहा कि दिखलाइये यह शब्द कहा लिखा है? तब मिर्जा ने आद्योपान्त कुरान शरीफ के सब पृष्ठ देखें किन्तु उन्हे यह शब्द कही भी न मिला। इस पर मिर्जा ने पडित जी की बात की पुष्टि कर दी।

मिर्जा ने पहिले अपनी पुस्तको मे लिखा था कि वेद किसी लोहार या मेमार (राज) के पुराने विचार हैं। वेद नास्तिक मत के समर्थक हैं।' 'वेद ईश्वरीय गुणो के विरोधी हैं' 'आर्यो की बुद्धि को धर्मान्धता ने ले लिया और उनकी आखें ईर्ष्या और द्वेष के कारण जाती रही। अब इस प्रकाश युग मे वेदो को ईश्वर का ज्ञान बनाना चाहते हैं।' इत्यादि।

पडित जी की पुस्तकें पढने के पश्चात्-मिर्जा के वेद सम्बन्धी विचार परिवर्तित हो गये। अत मरने से कुछ दिन पूर्व मिर्जा ने एक और पुस्तक "पैगामे सुलह' (सन्धि का सदेश) नामक लिखी जिसमे वेद सम्बन्धी निम्न विचार व्यक्त किये —

"वेद मनुष्यकृत नही क्योकि मनुष्यकृत पुस्तको मे यह आकर्षण शक्ति नही होती कि सदा के लिए करोडो व्यक्तियो को अपनी ओर खीच सके। बस हमारे सम्मुख वेद की सत्यता की यह एक युक्ति पर्याप्त है कि आर्यवर्त्त के कई करोड व्यक्ति हजारो वर्षो से इसे ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं। जो कुछ इसकी शिक्षा मे भूल है वह वेद के भाष्यकारो की भूल समझते है" "जितनी सच्ची शिक्षा इस्लाम मे पाई जाती है वह वैदिक शिक्षा मे विद्यमान है। वेद ने कोई ऐसी शिक्षा नही दी जो बुद्धि के विरुद्ध हो या ईश्वर पर पक्षपात का आरोप लगाती हो।'

जब मुसलमान प्रचारक शास्त्रार्थो मे कही भी पडित जी के सामने नही ठहर सके और न ही उनकी पुस्तको का कोई सतोषजनक उत्तर दे सके तो उन्होंने मिर्जापुर, प्रयाग, लाहौर दिल्ली और बम्बई मे अभियोग चलाये जो पडित जी को बिन बुलाये ही खारिज हो गए। वे मेरठ, अमृतसर और पेशावर मे भी अभियोग चलाना चाहते थे, किन्तु वकीलो ने अनुमति न दी। तत्पश्चात मुसलमान प० जी को हत्या की धमकी देने लगे किन्तु वे उनसे भयभीत न हुए। अन्त मे ६ मार्च सन १८९७ ई० को एक धर्मान्ध व्यक्ति ने छल कपट से उनके निवास स्थान पर उनके पेट मे छुरा घोप दिया जिसके कारण श्री पडित जी तो वीरगति को प्राप्त हो गए, किन्तु आर्य समाज रूपी कल्पवृक्ष को अपने रक्त से सींचकर उसकी जड़ें पाताल तक पहुचा गए।

श्री स्वामी दर्शनानन्द जी

श्री स्वामी दर्शनानन्द जी आर्य समाज के सुप्रसिद्ध महात्मा, उच्चकोटि के विद्वान एव शास्त्रार्थ महारथी थे। आपका जन्म माघ कृष्ण दशमी सवत् १९१८ विक्रमी मे पजाब के जिला लुधियाना के जगराव ग्राम मे श्री रामप्रताप के घर मे हुआ था। तब आपका नाम कृपाराम रखा गया। बाल्यावस्था मे आप उर्दू और फारसी पढते रहे। तत्पश्चात आपने हिन्दी और सस्कृत पढी और 'अमरकोष' तथा 'सिद्धात कौमुदी' आदि ग्रन्थ पढे। आपके पूज्य पिताजी ने काशी मे एक छात्रावास खोला था जहा निर्धन छात्रो को प्रतिदिन भोजन मिला करता था। वह निरन्तर चालीस वर्षो तक चलता रहा। काशी मे आपने पडित परमेश्वरी दत्त एव आचार्य हरिनाथ शास्त्री से व्याकरण तथा षटशास्त्रो का अध्ययन किया था।

सन १९०१ ई० मे बसन्त पचमी के दिन आपने श्री स्वामी अनभवानन्द जी से सन्यास की दीक्षा ली थी। दर्शनो के विद्वान होने के कारण आपका नाम दर्शनानन्द रखा गया। आपने विधर्मियो से सहस्रो शास्त्रार्थ किये थे जिनमे से काशी मे पडित शिवकुमार जी शास्त्री, दिल्ली मे पडित रामचन्द्र जी वेदान्ती, अजमेर मे जैनी पण्डित गोपाल दास जी और देवरिया (उत्तर-प्रदेश) मे मौलवी सना उल्ला अमृतसरी से किये गये शास्त्रार्थ उल्लेखनीय हैं। आर्य समाज के विरोधी आपके पुष्ट प्रमाणो एव अकाट्य युक्तियो का कोई भी सतोषज क उत्तर नही दे सकते थे। आर्य समाज ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों को अनादि और अनन्त मानता है, किन्तु मुसलमान और ईसाई जीव और प्रकृति को अनादि नही मानते, अपितु उन्हे ईश्वर द्वारा उत्पन्न किया हुआ बतलाते हैं। इस सम्बन्ध मे आर्य समाज का निश्चित मत है कि जो वस्तु उत्पन्न होती है, वह कुछ समय पश्चात नष्ट भी हो जाया करती है। दूसरे शब्दो मे जिसका आदि है उसका अन्त भी अवश्य होगा। किन्तु जिसका आदि नही उसका कदापि अन्त नहीं होता। इस सन्दर्भ मे एक बार पादरी ने यह कहा था कि सख्या एक से प्रारम्भ होती है किन्तु समाप्त नही होती। इसका आदि तो है किन्तु अन्त नही है। इस बात का स्वामी जी ने यह उत्तर दिया था कि 'सख्या भी अनादि है आप एक मे से उसके हिस्से ½, ⅓, ¼ आदि क्रम से बाटते जाइये कही आदि नही मिलेगा। इसी प्रकार जगत प्रवाह से अनादि और अनन्त है।" स्वामी जी का यह उत्तर सुनकर श्रोतागण आश्चर्य चकित हो गये और उनका गुणगान करने लगे।

स्वामी जी ने अपने जीवन काल मे ढाई सौ से अधिक ट्रैक्ट लिखे। आप ने २५०००) रुपये व्यय करके काशी मे एक प्रेस खोला था और वहा से "तिमिरनाशक" नाम का साप्ताहिक पत्र भी प्रकाशित किया था। इस प्रकार आपने रावलपिंडी और दिल्ली में भी प्रेस खोले थे जहां से वैदिक साहित्य प्रकाशित होता रहा। आप ने महर्षि कृत अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' का मूल्य केवल ४ आने रखा था। आपने सन १८९८ ई० में सर्वप्रथम सिकन्दराबाद (यू० पी०) मे गुरुकुल की स्थापना की थी। तत्पश्चात आप ने ज्वालापुर (हरिद्वार) बदायू, वाराणसी और पोठोहार (पजाब) मे भी गुरुकुल खोले।

५६ वर्ष की आयु मे आप ७ अप्रैल सन १९१३ की रात्रि को हाथरस मे स्वर्ग सिधार गये। अपने देहावसान से कुछ दिन पूर्व आप ने आर्यसज्जनो

स्वास्थ्य सुधा—

भर पेट खाइये-मोटापा मधुमेह पर नियन्त्रण पाइये

—डा० सत्यदेव आय, ऐच. बी. १६१ बापू नगर जयपुर

मोटापा सामान्यतया शरीर में अधिक चर्बी वसा कोशिकाओ के जमाव से होता है। पुरुषों व महिलाओ मे औसतन ये कोसिकाए क्रमश १५ व २५ प्रतिशत होती है। इस परिमाण मे वह हितकर सिद्ध होती है। उपयुक्त ऊर्जा उत्पादित करती हैं, शारीरिक ऊष्मा ताप युक्ततम बनाए रखती हैं तथा महत्वपूर्ण आन्तरिक अवयवों के चारों ओर परिधि-परत बनाकर उनको सुरक्षित रखती हैं। लेकिन औसत से अधिक की वृद्धि जहा स्थूलता पैदा करती है वहा शारीरिक वजन मे वृद्धि, शारीरिक क्षमता एवं चुस्ती मे कमी हृदय यकृत गुर्दों एव रक्त परि-सचरण तन्त्र के कार्य भार मे वृद्धि, रक्त-चाप एव रक्त कोलेस्टराल मे वृद्धि जिससे रक्त धमनियो की क्रमश क्षति और कालान्तर मे 'हार्ट एटेक' व स्ट्रोक' पक्षाघात जैसी घटनाओ की सभावना मे वृद्धि करती हैं। स्थूलकाय शरीर निश्चय ही कुरूप एव बेढगा हो जाता है और यथोचित स्फूर्ति के अभाव मे आकस्मिक दुर्घटनाओ का शिकार भी यदा कदा हो ही जाता है।

साधारणतया मोटापा यदि किसी रोग विशेष के कारण न हो, तो उसका निराकरण आहारीय सुव्यवस्था और उपयुक्त व्यायाम से सफलता पूर्वक किया जा सकता है। यही उपाय मधुमेह की स्थिति को भी यदि अधिक बढाव लिए हुए न हो तो, नियन्त्रित करने मे पूर्णतया सफल सिद्ध होते हैं।

आहारीय व्यवस्था—औसतन एक साधारण कामकाजी पुरुष एव महिला को क्रमश २४०० व १९०० कैलोरीज की दैनिक आवश्यकता होती है। मोटापा कम करने के लिए इनमे अपेक्षित कमी करनीहोती है। एक ग्राम चर्बी कम करने के लिए लगभग ९कैलोरीज की कमी करनी होतीहै। यदि एकमाह मे २ कि ग्रा = २००० ग्राम वजन की कमी करनी हो तो दैनिक खुराक मे हमे ६०० कैलोरीज की कमी करनी होगी यथा ६००—९×३०=१९१८ या २००० ग्राम। यह कमी किसी भी प्रकार से कोई असुविधा जनक नही होगी। २४०० कैलोरीज प्रतिदिन की प्राप्ति के लिए अनाज ४०० ग्राम, दालें ७० ग्राम, हरे पत्ते वाली सब्जिया १०० ग्राम, जडवाली तथा अन्य सब्जिया क्रमश ७५ ग्राम, दूध दही २५० ग्राम, मौसमी फल ३० ग्राम, घी मक्खन तेल आदि ३५ ग्राम और शक्कर गुड आदि ३० ग्राम की आवश्यकता होगी। ६०० कैलोरीज कम करने के लिए हमे अनाज ५० ग्राम, जडवाली व अन्य सब्जिया क्रमश ४५ व २५ ग्राम, मक्खन घी तेल आदि २० ग्राम और शक्कर गुड २० ग्राम की कमी करनी होगी। दालो, हरे पत्ते वाली सब्जियों व फलो मे कोई कमी नही करनी होगी। वसायुक्त पदार्थो मे केवल शुद्ध वनस्पति तेल ही का प्रयोग लगभग १५ग्राम के करना श्रेयस्कर होगा। कितना वजन कम करना है इसका अनुमान प्रमाणित 'कद वजन सारणी से लगाकर जितने समय मे इसे कम करना है उसी के हिसाब से हमे उपर्युक्त भोजनीय व्यवस्था करनी होगी।

उपर्युक्त दैनिक खुराक मे हमे ऐसे पदार्थों को सम्मिलित करना होगा जो स्वत में तो पाचित व अवशोषित होकर कैलोरी न बढा पाये लेकिन खुराक की मात्रा मे यथोचित वृद्धि करके क्षुधातृप्ति मे अवश्य सहायक हो सके तथा अन्यथा भी कई महत्वपूर्ण चयापचयी प्रक्रियाओ मे हितकर सिद्ध हो सके। यह पदार्थ हैं-चापड या चोकर(Bran)और सेल्यूलोज (Cellulose) रेशेदार तत्व जिसे हम आज की तथाकथित सभ्यता के दिखावे मे आकर व्यर्थ मे फेंक देते हैं। ये पदार्थ वसा व कार्बोहाइड्रेट के पचित अशो को देर तक अपने साथ आतो मे रोके रखते हैं जिससे इनका अवशोषण विलम्ब से हो पाता है और इस कारण यह रक्त कोलेस्टराल व रक्त शर्करा की मात्रा को नियन्त्रित रखने मे अत्यन्त सहायक सिद्ध होते हैं। हाल ही मे केनट की विश्वविद्यालय यू एस. ए के डा० जेम्स एन्डसन व साथियो ने तथा टोरेन्टो विश्वविद्यालय केनेडा के डा० रुथ, एम काई ने अपने प्रयोगो मे यह सिद्ध किया है कि उपयुक्त परिमाण मे चापड व सेल्यूलोज के साथ कार्बोहाइड्रेट प्रधान खुराक जिसमे कुल कैलोरीज का ७० प्रतिशत भाग कार्बोहाइड्रेट से प्राप्त होता हो मोटापा निवारण तथा मधुमेह नियन्त्रण मे-अति ही हितकर होती है। इससे रक्त कोलेस्टराल मे २५ प्रतिशत का कमी और रक्त शर्करा मे इतनी कमी हो जाती है कि ३० से ४५ युनिटस दैनिक इन्सुलिन की जगह कालान्तर मे केवल ½ या ⅓ मात्रा की ही आवश्यकता रह जाती है। मधुमेह की स्थिति यदि अधिक बढाव लिए हुए न हो तो इन्सुलिन या अन्य खाने की दवाइयो की आवश्यकता ही न रहे। हा, नियमित व्यायाम अवश्य करते रहना होगा। भारत मे भी पोषणीय सस्थानो मे यह प्रयोग हाल ही किए गए हैं जिनमे यह सिद्ध हो गया है कि चापड व सेल्यूलोज युक्त कार्बोहाइड्रेट प्रधान खुराक न केवल मोटापे तथा मधुमेह को नियन्त्रित करती हैं बल्कि हृदय एव रक्त परि-सचरण तन्त्र को समुचित पुष्ट करती है। कोष्टबद्धता को भी वह दूर करती है।

चापड के लिए हाथ का पिसा गेहू, जौ ज्वार, बाजरा आदि का अनछना आटा या चक्की का मोटा अनछना आटा उत्तम होता है। ऐसे मिश्रित आटे की रोटी जिसमे कुछ बेसन भी मिला हो अति उत्तम होती है। हाथ का कुटा चावल या उसना (Parboıbd) चावल उत्तम रहता है। मधुमेह मे इन दिनो कार्बोहाइड्रेट प्रधान खुराक मे चावल व आलू (छिलके सहित) के प्रयोग मे उदारता बरती जाने लगी है। दलिया, सत्तू व अकूर निकले अनाज भी चोकर की अच्छी प्राप्ति कराते हैं। अकुर निकले अनाज मे विटामिन "बी वर्ग" व 'सी' पर्याप्त मात्रा में प्राप्त हो जाते हैं जो मोटापा निवारण और मधुमेह नियन्त्रण मे काफी हितकर होते है। छिलके सहित दालें-विशेष मिश्रित दालें चोकर तथा सभी आवश्यक एमाइनो एमिडस प्रचुर मात्रा मे प्राप्त करा देती है। सेल्यूलोज की पर्याप्त प्राप्ति, हरे बाली सब्जियो तथा मटर, सेम, लोकी, तोरु, कठहल, जिमिकन्द, लोभिया, ग्वारफली प्याज, टमाटर, मूली, गाजर, ककडी, सलाद आदि से हो जाती है जहा तक हो इन्हे छिलके सहित ही और खाने योग्य कच्ची ही काम मे लाना हितकर होता है। फलो मे सेल्यूलोज सेब (छिलके सहित) सतरा नाशपाती जामुन, अलुबुखारा, तरबूज, रेशेयुक्त आम आदि मे बहुतायत से प्राप्त होता है। मोटापा निवारण मे नीबू व आवले का प्रचुर प्रयोग अत्यन्त ही हितकर होता है।

मोटापा कम करने तथा मधुमेह को नियन्त्रित रखने मे घी मक्खन, मलाई, आइसक्रीम, केक पेस्ट्री, चाकलेट तथा ससाधित सील बन्द डिब्बो मे तैयार की गई खाद्य सामग्री का प्रयोग नही करना चाहिए। शक्कर, गुड, शहद, गन्ने का रस व अन्य मिष्ट पेय पदार्थों का प्रयोग भी यथा साध्य वर्जित ही रखना होगा। शर्कराओ की अपेक्षित मात्रा कार्बोहाइड्रेट खाद्य पदार्थों से नैसर्गिक रूप मे उपर्युक्त खुराक मे स्वत ही मिल जाती है।

व्यायाम—मोटापा निवारण हेतु प्रतिदिन ४-५ किलोमीटर का चुस्त भ्रमण या दौड, साइकिल या घुडसवारी लगभग आध घण्टे की तैराकी या यथासम्भव स्किपिंग तथा नियोजित आसन अवश्य करने चाहिए मधुमेह नियन्त्रण हेतु प्रात एक घण्टे का चुस्त भ्रमण तथा नियोजित सूक्ष्म व्यायाम व आसन करना समुचित होगा।

को यह आदेश दिया कि 'समस्त विधर्मियो को सूचित कर दो कि जिस किसी को भी आर्य सिद्धात पर सदेह हो, वह अब ही शास्त्रार्थ कर जावे, मेरे पश्चात सम्भवत उसका उत्तर मिले या न मिले।" मृत्यु से केवल ६ घन्टे पूर्व आपने आर्य समाज हाथरस के उत्सव मे एक बडा ही प्रभावशाली व्याख्यान भी दिया था।

श्री स्वामी जी बडे ही शान्त स्वभाव के महात्मा थे। व्याख्यान देने अथवा शास्त्रार्थ करने के समय वह प्रत्येक बात बडे प्रेम से करते थे जिसके कारण लोग उन पर मुग्ध हो जाते थे। (क्रमश)

सम्पादक के नाम पत्र

रेड्डी जी ! हिन्दी तो अन्तरिक्ष में भी पहुंच गई !

हमारे पूर्व राष्ट्रपति श्री नोलम संजीव रेड्डी ने दक्षिण भारत के मुख्य मन्त्रियों से आग्रह किया है कि वे गैर हिन्दी भाषी क्षेत्रों पर हिन्दी लाने का विरोध करे। उनके मतानुसार त्रिभाषा फामूले के नाम पर हिन्दी को प्रकारान्तर से उन पर थोपा जा रहा है। यहबात श्री रेड्डी ने तेलूगू विज्ञान पीठम्' का उद्घाटन करते हुए कहो। उन्होंने कहा कि जिस खतरनाक ढग से हिन्दो को 'पीछे के दरवाजे' से लाया जा रहा है, उससे देश विभाजित हो सकता है।

बहुत अफसोस हुआ अपने पूर्व राष्ट्रपति के विचारों को जानकर। हिन्दी को हथियार बना कर वे अपने आपको पुन: राजनीति में लाने का असफल प्रयास कर रहे हैं। जिस व्यक्ति को सम्पूर्ण राष्ट्र ने अपने सिर आखों पर बिठाया वहीं ऐसी बातें कहे, बडी लज्जा की बात है। उनके राष्ट्रपति बनने पर तो किसी हिन्दी भाषी ने यह नही कहा कि हिन्दी न जानने वाले व्यक्ति को राष्ट्रपति बनाकर अग्रेजी को लाया जा रहा है।

रेड्डी जी ! आप तो भारत की धरती पर हिन्दी लादने का रोना रो रहे है, अब तो हिन्दी अन्तरिक्ष में भी जा चुकी है। हमारे अन्तरिक्ष यात्री श्री राकेश शर्मा ने अन्तरिक्ष में रहकर अपनी मातृभाषा हिन्दी का जो गौरव बढ़ाया है उसके लिए वे निस्सदेह बधाई के पात्र है। मैं समस्त हिन्दी प्रेमी जगत की ओर से उनका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं। इस सम्बन्ध में रूस के नेता तथा अन्य लोग भी हार्दिक बधाई के पात्र हैं जिन्होंने विदेशी होतेहुए भी हिन्दी कोपर्याप्त सम्मान दिया। यह एक दीगर बात है कि रूस में भारतीय पत्रकारों व प्रतिनिधियों ने बहुधा अंग्रेजी बोलकर अपनी अज्ञानता व मातृ भाषा के प्रति तिरस्कारपूर्ण भावना का इजहार किया। इसके लिए सरकार उन्हें कुछ सजा दे या न देकर उनकी अपनी आत्मा व हिन्दी प्रेमियों की आहे उन्हे हमेशा कलपायेंगी।

मैं रेड्डी जी से अनुरोध करूंगा कि वे सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के लिए भाषा के नाम पर जनता में फूट के बीज न बोएं। भारत तो पहले ही समस्याओं से घिरा हुआ है, एक और आफत पैदा करना बुद्धिमानी न होगी ? —इन्द्रसिंह धिमान

गांधी आश्रम, किंग्जवे कैम्प, दिल्ली

पंजाब समस्या का समाधान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान जी ने अपने प्रेस वक्तव्य मे, देश की अखण्डता और प्रभु सत्ता पर आये वर्त्तमान सकट के प्रति आर्य जगत् तथा देश की विवेकशील जनता का जो आह्वान किया है, उस पर गम्भीरता से ध्यान देना चाहिये। इस वक्तव्य में पजाब समस्या का जो तथ्यपरक विश्लेषण किया गया है वह देश मे अपने ढग का एकमात्र वक्तव्य है। इसमे सुझाये गये समाधान ही देश को खण्डित होने से बचा सकते हैं। आर्यसमाज के सर्वोच्च नेता ने उन तथ्यों को सार्वजनिक रूप से कहने का साहस किया है, जिन्हें राजनैतिक स्वार्थपरता के वशीभूत और मयादोहन से आक्रान्त राजनेतिक दल कहने में असमर्थ हैं। उनका साहस और आत्म बल अनुकरणीय हैं। आज सम्पूर्ण राष्ट्र की दृष्टि आर्य समाज पर केन्द्रित है। मैं "सार्वदेशिक" पत्र के माध्यम से निम्नलिखित विचार प्रस्तुत करना चाहता हूं:—

(१) राष्ट्र पर आये वर्तमान खतरे से मोर्चा लेने के लिए आर्य समाज को एकजुट होकर कार्य करना होगा। जो लोग आर्यसमाज की शक्ति को खण्डित कर रहे हैं, उनसे सावधान रहना चाहिये। "विश्व आर्य समाज" अथवा इस प्रकार के किसी भी संगठन की प्रस्तावना, आर्यसमाज ही नहीं अपितु देश के भविष्य के लिये घातक है। शिरोमणि सभा, सार्वदेशिक सभा के नेतृत्व में पूर्ण आस्था रखना, अनिवार्य आवश्यकता है।

(२) पंजाब में शांति स्थापना के उपायों को बहुत कम सफलता मिली है। आतकवादियों की हिंसक घटनाये जारी हैं। सुरक्षा और कानून व्यवस्था की स्थिति दयनीय है। पाकिस्तान विघटनकारी तत्वों को सहायता देकर बगला देश के रूप में हुई अपनी पराजय का अब बदला लेना चाहता है। अत: इस भयंकर स्थिति से निपटने के लिये कठोर कदम उठाना अपरिहार्य है। अतएव पंजाब को तुरन्त सेना के हवाले किया जाये, पूजा स्थलों को देशद्रोहियों तथा आतकवादियों से खाली कराया जाये और देश के प्रति षड्यन्त्रकारियों को कठोर दण्ड की व्यवस्था की जाये।

(३) आर्यसमाज के नेतृत्व मे स्थान-स्थान पर "राष्ट्रीय एकता एवं शान्ति सम्मेलन" आयोजित किये जाये। इन सम्मेलनों में राष्ट्रवादी सिखों सहित सभी समुदायों का सहयोग लिया जाये। इससे सौहार्द का वातावरण बनेगा। इन सम्मेलनों के द्वारा "धार्मिक स्वतन्त्रता" का सही स्वरूप प्रतिपादित किया जाना चाहिये।

(४) अभी तक केन्द्र सरकार ने अकालियों की मांगों के सम्बन्ध मे जो समझौता वार्त्ताएं की है, उनसे कोई स्पष्ट समाधान प्रकट नही हुआ है। इसका एक कारण यह भी था कि अनेक राजनैनिक दल, अकालियों के प्रति कोई स्पष्ट मत नही बना सके थे। लम्बी निरर्थक वार्त्ता से अनेक भ्रम उत्पन्न होते रहे। अब केन्द्रीय सरकार को अपना पक्ष स्पष्ट करने और स्पष्ट सीमा रेखा निर्धारित करने के उपरान्त ही वार्त्ता का प्रस्ताव स्वीकार करना चाहिये।

—आनन्द प्रकाश

सदस्य, तदर्थ समिति

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

सन्तोषी माता

आपके साप्ताहिक दिनांक ४-२-८४ में छपे एक पत्र में प्रश्न विद्वानों से पूछा गया है कि 'सन्तोषी माता' का पौराणिक तथा शास्त्र सम्मन आधार क्या है ? उत्तर में एक विद्वान् का निम्नलिखित निवेदन है कि संस्कृत व्याकरणानुसार 'सन्तोषी' शब्द पुल्लिग है, अत. 'माता' के साथ उसका प्रयोग संस्कृत साहित्य में मिलना कठिन है—वैसे माता के अनेक नाम नये भी रखे ही जा सकते हैं—भविष्य के साहित्य में इसे स्थान प्राप्त हो सकता है।

बाबूराव आर्य

आगपुरा हैदराबाद

अकाली आन्दोलन : हकीकत क्या है ?

—डा० सुरेन्द्र सिंह कादियान

वर्तमान अकाली आन्दोलन एक ऐसा रूप धारण कर चुका है कि उसका समाधान अब न तो साम्प्रदायिक और न दलगत राजनीति के आधार पर ही किया जा सकता है। समय की प्रबल मांग है कि इस ज्वलंत समस्या को विशुद्ध राष्ट्रीय दृष्टि से देखा-परखा जाए और साम्प्रदायिक आग्रह एवं संकीर्ण दलीय स्वार्थों से ऊपर उठकर इससे निपटा जाए।

राष्ट्र के प्रबुद्ध नागरिक और जागरूक राजनीतिज्ञ या तो यह समझ ही नहीं सके हैं कि अकाली आन्दोलन का मूल उद्देश्य क्या हैं या फिर जानते समझते वे राष्ट्र हित में सच्चाई को प्रकट करने में संकोच कर रहे हैं। लेकिन यह आन्दोलन अब ऐसे चरण में आ पहुंचा है कि यदि ईमानदारी से उसका लेखा जोखा प्रस्तुत नहीं किया गया और उसे समाप्त करने का दृढ़ संकल्प नहीं लिया गया तो सन १९४७ का इतिहास एक बार फिर अपने को दोहरा सकता है।

हमें यह भूलना नहीं चाहिए कि सन ४७ का विभाजन स्थानीय राजनीति का नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का घिनौना खेल था और यह खेल आज भी अनवरत रूप से जारी है। यूरोपीय एवं अरब देशों से जो विपुल राशि भारत आ रही है वह एक सोचे समझे अन्तर्राष्ट्रीय षडयन्त्र का भाग है। बंगला देश के उदय से पाकिस्तान का जो अपमान व हानि हुई है उसे वह सहज में भुला देगा ऐसे भ्रम में यदि भारत पड़ जाता है तो उसके दूरगामी दुष्परिणाम हमें भुगतने पड़ सकते हैं। अकाली आन्दोलन अन्तर्राष्ट्रीय गन्दी राजनीति का ही एक अभिन्न अंग है और उसका अन्तिम उद्देश्य है ग्लोब पर खालिस्तान को लाना। तथ्यों से अनभिज्ञ कोई भी व्यक्ति इसे कल्पना प्रसूत निष्कर्ष कह सकता है और इस भुलावे में आकर अपने राष्ट्रीय दायित्व से मुनकिर भी हो सकता है। इस निष्कर्ष की सिद्धि में कुछ तथ्य यहां रखे जा रहे हैं आशा है सम्राट के सुधीजन पाठक सावधानी से उनका अध्ययन कर अपने राष्ट्रीय दायित्व को समझने का प्रयास करेंगे।

अंग्रेजों की कुटिल नीति

सन १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में सिखों ने अंग्रेजों को जो भरपूर सहायता दी उससे भारत की आजादी सौ वर्ष के लिए टल गई थी। सिख इतिहासकारों ने इतिहास के इस कलंकित पृष्ठ पर लीपा पोती करने का जो असफल प्रयास किया है उसके विस्तार में जाना यहां अभीष्ट नहीं है। इस विषय का उल्लेख मात्र इसलिए किया गया है कि अंग्रेजों को यह सहायता चाहे जिस भी कारण से दी गई हो उसका परिणाम यह निकला कि भविष्य में सिख अंग्रेज के विश्वास पात्र समझे जाने लगे और इस स्थिति का लाभ सिखों ने पर्याप्त रूप में उठाया। सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री अरुण शौरी के कथनानुसार इस सहायता से अंग्रेजों का यह अनुमान बना कि सिख भारत में अंग्रेजी राज के सक्षम साधन हैं। किंतु चालाक अंग्रेज समझ नहीं पा रहे थे कि परम्परा से जो सिख हिन्दुओं का ही अभिन्न अंग है उसे मूल अंग से पृथक करके फूट डालो राज करो की नीति को कैसे सफल बनाया जाए। शीघ्र ही एक घटना ने अंग्रेज को असमंजस की इस स्थिति से उबार लिया।

वह घटना थी सन १८७३ (सम्वत नानकशाही ४०४ असौज सुदी दस) में अमृतसर में 'श्री गुरुसिंह सभा' की स्थापना। यद्यपि सिंह सभा का उद्देश्य यह था कि सिखों को शुद्ध सिख धर्म से परिचित कराया जाए सिख समुदाय को संगठित किया जाए पतित सिखों को शुद्ध किया जाए साहित्य व पत्र पत्रिकाओं द्वारा पंजाबी भाषा और सिख धर्म का प्रचार किया जाए। सिंह सभा का उद्देश्य यह भी था कि गुरुद्वारों को सन्तों महन्तों से मुक्त कराया जाए, श्री अमृतसर, अकाल तख्त व तरनतारन के प्रसिद्ध गुरुद्वारों से अंग्रेजों का नियन्त्रण हटवाया जाए, और गुरुभक्त कहलाने वाले सोढ़ियों-बेदियों को जो कि हिन्दू रीति रिवाजों में उलझ गए हैं शुद्ध कराया जाय और हिंदूनुमा सिख रीतियों जैसे मूर्ति की पूजा, जोती जगाना, गुरुद्वारों में ठाकुर पूजा (विशेषत श्री दरबार साहब परिसर में) को बन्द कराया जाए। सिख धर्म में सुधार की इस लहर के प्रति कुछ लोग इतने सम्मोहित हो उठे कि वे श्री गुरुसिंह सभा की कार्यपद्धति से सन्तुष्ट नहीं हो सके और उन्होंने मिलकर १८८६ में अलग खालसा दीवान लाहौर बना लिया। वास्तव में यह उग्रवादियों का दल था। भाई दित्त सिंह ज्ञानी प्रो० गुरमुख सिंह भाई काहनसिंह नाभा और भाई मोहन सिंह वैद्य सरीखे उग्रवादी चिंतक इसी दल से सम्बन्धित थे। इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं है कि १९वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में सिख पुनर्जागरण के लिए जो कार्य निरंकारी और नामधारी नहीं कर सके वह कार्य सभा और खालसा दीवान ने किया है। इन दोनों के ही तप एवं त्याग से गुरुमुखी का व्यापक प्रचार हुआ सिख धर्म व इतिहास सम्बन्धी विपुल साहित्य प्रकाशित हुआ खालसा स्कूलों की स्थापना हुई अनाथालय खोले गए और धर्म प्रचार की व्यवस्थित परम्परा विकसित की गई। (क्रमश)

(सम्राट अप्रैल ८४)

अपनी संतान को आर्य बनावें

यदि आप अपने बच्चों को आर्य बनाना चाहते हैं तो निम्न साहित्य अवश्य पढ़ावें —

१—धर्म-चिन्तन	१५)
२—वैदिक धर्म	१०)
३—आस्तिक नास्तिक संवाद	२)

मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन नई दिल्ली २

विविध समाचार

अन्धविश्वास की बेड़ियां

जादू सीखने के लिए सन्तान की बलि

उदयपुर ८ मई। उदयपुर जिले में कोटडा तहसील के आदिवासी इलाको में जादू सीखने की एक शर्त है। आदिवासी पुरुष या महिला को जादू सीखने के लिए अपनी पहली सन्तान की बलि चढ़ानी होती है। ऐसे बहुत से आदिवासी हैं जो बलि चढ़ा भी देते हैं।

इस तहसील में आदिवासियों की आबादी अधिक है और सदियों से चली आ रही यह परम्परा आज भी यहां बरकरार है।

यह बलि श्मशान में पूरी रात जागकर अनुष्ठान के जरिए दी जाती है। अनुष्ठान में विघ्न हो जाने पर जादू सीखने वाले को पीढ़ी दर पीढ़ी नुक्सान भी उठाना पड़ सकता है।

सबसे बडी आफत तो उन आदमियों की होती है, जिनकी औरतें जादू-टोना सीख लेती है। ये जादू-टोने की ताकत से न केवल अपने पतियो को काबू में रखती हैं, बल्कि किसी दूसरी औरत से सम्बन्ध होने पर उसकी जान भी लेती हैं।

कोटडा के सरपच बाबूलाल ने बताया कि जिस व्यक्ति पर जादू किया जाता है, उसे मौत का शिकार होना ही पड़ता है। वह व्यक्ति इस शक्ति की काट करा ले तो बच जाता है। (जनसत्ता २-५-८४)

'गोमांस का मतलब गाय का मांस नहीं होता'

नई दिल्ली ४ मई। पर्यटन नागरिक उडयन मन्त्री खुर्शीद आलम खान ने आज लोकसभा में बताया कि पांच सितारा होटलों के मीनू में हालांकि गाय का गोश्त दर्ज है लेकिन परोसा जाता भैसे का गोश्त।

इस बारे में मुख्य सवाल नवल किशोर शर्मा व रामविलास पासवान ने पूछा था। श्री खान ने कहा कि दिल्ली के किसी भी होटल में गोमांस नहीं परोसा जाता। पूरक सवालो के जवाब में उन्होंने कहा कि गौमांस का मतलब कई अन्य किस्मों के गोश्त से होता है, जरूरी नही कि यह गाय का गोश्त होता हो।

श्री खान ने कहा कि जांच से मालूम हुआ है कि कई होटलों के मीनू में गोमांस का जिक्र है लेकिन असलियत यह है कि वहां गोमांस परोसा नही जाता। उन्होंने कहा कि होटलों को अपने मीनू से गोमांस शब्द हटाने की हिदायत दे दी गई थी।

इस पर डा० कर्णसिंह ने श्रीखान को पांच सितारा होटल चलने का प्रस्ताव रखा और कहा—आप खुद ही देख लीजिए कि वहां के मीनू में गोमांस लिखा है या नही।

श्री खान ने कहा—'मुझे नहीं मालूम लेकिन होटलों को हिदायत दे दी गई थी कि वे गोमांस नाम का इस्तेमाल न करे।

(जनसत्ता ५-५-८४)

डा० स्वामी के तीन सूत्र

नई दिल्ली, ६ मई। जनता पार्टी सांसद डा० सुब्रह्मण्यम स्वामी ने पंजाब की गुत्थी सुलझाने के लिए तीन-सूत्री मसौदे का सुझाव दिया है।

पहला सूत्र है—अकाली नेताओं की रिहाई के साथ-साथ उन्हें वार्ता के लिए आमन्त्रित किया जाए।

दूसरा—अकालियों की चार बुनियादी मांगों को मंजूर कर लिया जाए। ये बुनियादी मागे हैं—चंडीगढ़ को पंजाब में मिला दिया जाए। नदी पानी विवाद उच्चतम न्यायालय को सौंप दिया जाए। सूबे की सरहद के फिर से निर्धारण के लिए एक आयोग बनाया जाए तथा सभी धार्मिक मांगें तुरन्त मान ली जायें।

तीसरा—तस्करों, अपराधियों तथा असामाजिक तत्वों के साथ सख्ती से निपटा जाए।

ये सिफारिशें डा० स्वामी ने आज यहां जारी अपने एक बयान में की। (नवभारत ६-५-८४)

अश्वेत छात्र गोरी लड़कियों से तीन फुट दूर रहें

मोटावा, ८ मई। हाल ही में वेंकोवर में प्रिंसपल और वाइस प्रिंसपल के एक सम्मेलन में बताया गया कि एक स्थानीय सेकेंडरी स्कूल में अश्वेत छात्रों को गोरी लड़कियों से हमेशा दूर रहने को कहा जाता है।

इस समिति के प्रधान जान एलेन ने बताया कि इसे बनाने की जरूरत इसलिए पड़ी क्योंकि शहर में कूलक्स क्लान का जाति घृणा साहित्य काफी मात्रा में बांटा गया था।

उन्होंने बताया कि वेंकोवर में १९८२ में २४,५४२ छात्रों के लिए अंग्रेजी दूसरी भाषा थी। इसमें ४४ प्रतिशत चीनी और ८ प्रतिशत पूर्वी भारतीय नस्ल के छात्र है।

शिक्षा जगत से ही सम्बन्धित एक भारतीय अविनाश सिंह के मुताबिक यहां के भारतीय माता-पिताओं का कहना है कि स्कूल की व्यवस्था ठीक-ठाक न समझ पाने के कारण उनके बच्चे अच्छा नहीं कर पाते।

शिक्षक उनके बच्चों की भाषा नही समझते।

छठी वैज्ञानिक और तकनीकि हिन्दी लेख प्रतियोगिता

भारतवर्ष के समस्त विद्वतजनों को सूचित किया जाता है कि केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् (एक्स- वाई-६८, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-११००२३), वैज्ञानिक तकनीकी इंजीनियरी आदि विषयों में अपनी छठी अखिल भारतीय हिन्दी लेख प्रतियोगिता का आयोजन पिछले वर्षों की तरह इस वर्ष भी कर रही है। इस प्रतियोगिता में १ अप्रैल १९८४ से ३० सितम्बर १९८४ तक की अवधि में वैज्ञानिक विषयों पर मौलिक रूप से लिखे गए और अप्रकाशित लेखों पर यह प्रतियोगिता आधारित रहेगी। इस प्रतियोगिता में ५००) रुपए का प्रथम और अन्य ९ पुरस्कार दिए जायेंगे। विभिन्न विषयों पर लिखे गए इन मौलिक लेखों के परिषद् कार्यालय में पहुंचने की अन्तिम तारीख ३० अक्तूबर १९८४ रखी गई है। विस्तृत नियम परिषद् कार्यालय से मंगवाए जा सकते है। विद्वतजन इस प्रतियोगिता में भाग लेकर वैज्ञानिक क्षेत्र में राष्ट्र भाषा हिन्दी को बढ़ावा देने में सहयोग प्रदान करे।

डा० महेशचन्द्र गुप्त
प्रतियोगिता-मन्त्री

पं० देवव्रत धर्मेन्दु 'आर्योपदेश' की अपील

आर्य युवक परिषद् (रजि०) दिल्ली के प्रधान श्री प० देवव्रत जी धर्मेन्दु ने समस्त आर्य जगत् से अपील की हैं कि आर्य युवक परिषद् (रजि०) नई दिल्ली द्वारा सचालित सत्यार्थ प्रकाश की चारों परीक्षायें इस वर्ष भी सदैव की भांति सारे भारत वर्ष में दो सौ से अधिक परीक्षा केन्द्रों में सितम्बर १९८४ में सम्पन्न होंगी। समस्त केन्द्र व्यवस्थापक एवं नये केन्द्र स्थापित करने के इच्छुक सज्जन व परीक्षाओं में भाग लेने के लिये भाई बहिन शीघ्र ही परीक्षा पाठ विधि, आवेदन पत्र व परीक्षा सम्बन्धी सभी जानकारी निःशुल्क प्राप्त करने हेतु परीक्षामन्त्री ला० चमनलाल एम० ए० एच-६४ अशोक विहार, दिल्ली-५२ से सम्पर्क स्थापित करे।

—कमल किशोर आर्य
प्रचार मन्त्री
आर्ययुवक परिषद (रजि०) दिल्ली

शराब, तम्बाकू और मांस की दुकानें हटाई गई

अमृतसर की म्यूनिसिपल कार्पोरेशन के कमिश्नर श्री गुरबचन सिंह के अनुसार स्वर्ण मन्दिर और दुर्ग्याना मन्दिर के २०० मीटर के घेरे में अवस्थित शराब, तम्बाकू और मांस की दूकानें हटाई जाकर और अन्य स्थानों पर ले जाई गई है।

(ट्रिब्यून ७-५-८४)

आर्य समाज की गतिविधियां

ईसाई मत से वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) में वापसी एवं वैदिक विवाह

हिन्दू धर्म के सोनी समाज मे श्री इन्द्रचन्द सोनी बैतूल वाले अपने परिवार के सम्बन्ध करने सामाजिक सम्पर्क साधने पश्चात हिन्दू धर्म के सोनी समाज से तिरस्कार करने की प्रवृत्ति को बढावा देने के पक्ष स्वरूप इस प्रकार की प्रवृत्ति से कुमारी ज्योति को उसके माता-पिता द्वारा ईसाई धर्म मे परिवर्तन करवाया। कुछ समय पश्चात पढी लिखी कुमारी ज्योति को अपने हिन्दू धर्म मे रहते हुए व उसमे आस्था रखते हुए ईसाई मत मे परिवर्तन होने का विचार सम्रत बात नही है ऐसा समझते हुए कुमारी ज्योति अपने सनातन वैदिक धर्म (हिन्दू) मे अपनी आस्था रखते हुए स्वेच्छा से हिन्दू धर्म मे वापस हो हिन्दू धर्म स्वीकार किया।

दिनाक २९-३-८४ को कुमारी ज्योति पु० इन्द्रचन्द सोनी निवासी बैतूल का शुद्धिकरण सस्कार कर वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) मे लिया गया। उपरान्त श्री सुरेश ब० सहदेव पवार निवासी बैतूल के साथ वैदिक रीति से उनका विवाह सस्कार श्री विजय कुमार आर्य के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ।

—विजय कुमार आर्य स्नेही
मन्त्री
जिला आर्य समाज बैतूल (म० प्र०)

वनशाला योग शिविर

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि आपकी प्रिय सस्था गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम जो कि हिमालय की गोद मे स्थित एकान्त, शान्त, सुरम्य, प्राकृतिक सौन्दर्य के भण्डार मालिनी नदी के किनारे भरत की जन्म स्थली, महाकवि कालिदास की काव्य स्थली, शकुन्तला की शिक्षा स्थली मे स्थित है। ग्रीष्मावकाश १५ जून से २२ जून वनशाला योग शिविर का आयोजन किया है। जिसमे निम्नलिखित कार्यक्रम होगे।

१—वनो मे पाये जाने वाले हिंसक व अहिंसक, स्वच्छन्द विचरने वाले जीव जन्तुओ का मचान बनाकर अवलोकन कराना जैसे-शेर, हाथी, बाघ, भालू, सुअर, हिरण, चित्तल, काकड, साभर आदि।

२—वन्य प्राणियो के विषय मे लाभकारी अध्ययन कराना।

३—वनो मे पाई जाने वाली जडी-बूटियो का ज्ञान तथा सकलन।

४—योग पर चर्चा योग की समस्त क्रियाओ का अभ्यास।

५—स्थानीय धार्मिक ऐतिहासिक एव प्राकृतिक सौन्दर्य के भण्डार वाले स्थानो को दिखाना।

६—समस्त गुरुकुलो के एकीकरण पर विचार तथा गुरुकुलो के लिए नया कार्यक्रम व योजना।

७—आर्य जाति व हिन्दू जाति पर बढते प्रहार को देखते हुए मजबूत युवको के सगठन पर विचार।

इन सभी विचारो मे आस्था रखने वाले सज्जनो से निवेदन है कि आप यदि ग्रीष्मावकाश का सदुपयोग करना चाहते हैं तो गुरुकुल कण्वाश्रम जो कि प्राकृतिक सौन्दर्य का भण्डार है एकान्त, शान्त सुरम्य शिविर मे भाग अवश्य ही लें।

अत शिविर में भाग लेने वाले समस्त सदस्यो से निवेदन है कि आप अपने आने की सूचना तथा आवश्यक जानकारी के लिए निम्न लिखित पते पर सम्पर्क करें। अपने आने की सूचना कृपया ५ जून तक अवश्य भेजे।

प्रबन्धक वनशाला योग शिविर
गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम
पोस्ट—कलाल घाटी, पौडी गढवाल
पिन—२४६१६२

नोट—शिविर में केवल १०० (एक सौ) सदस्यो की व्यवस्था है। अत आने के इच्छुक सदस्यो से प्रार्थना है कि शीघ्र ही अपना स्थान सुरक्षित करायें ५ जून तक आने की सूचना अवश्य ही मिल जानी चाहिए अन्यथा व्यवस्था में कठिनाई होगी।

श्री हंस जी को एक के बाद एक दु:खद शोक

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री बाल दिवाकर हस के बहनोई श्री हुकमचन्द शास्त्री का गत १० मई को अचानक हृदय गति रुक जाने से देहावसान होगया। श्री शास्त्री जो दिल्ली के प्रसिद्ध जामियामिलिया विश्वविद्यालय में सस्कृत विभाग के अध्यक्ष थे। श्री हुकमचन्द जी के बाद परिवार मे विधवा पत्नी सरोज कुमारी तीन पुत्र व दो कन्याये हैं।

श्री हस जी अभी श्री शास्त्री जी के दु खद परिवार से लौकिक क्रियादि सपन्न न कर पाये थे कि उनके युवा भतीजे श्री देव शर्मा की पत्नी शशि का १६ मई को देहावसान हो गया, यह अभी केवल २१ वर्ष की थी और १॥ वर्ष की कन्या गोद मे थी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सभी अधिकारी कर्मचारी श्री बाल दिवाकर हस क शोक मे समवेदना प्रकट करते हैं, साथ ही दोनो दिवगत आत्माओ की सद्गति की प्रार्थना प्रभु से करते हैं। —सपादक

उत्सव

—आर्य समाज फिरोजाबाद का वार्षिक उत्सव २६ से २९ मई तक मनाया जायगा। —ओकार दत्त, मन्त्री

आर्य समाज जामनगर

आर्य समाज जामनगर ने एक सार्वजनिक सभा मे जो श्री धर्मवीर खन्ना की अध्यक्षता मे हुई पजाब मे हो रही हिंसा, चोरी, डकैती, सम्पत्ति विनाश की कार्यवाहियो की निन्दा करते हुए अपराधियो को गिरफ्तार तथा दडित करके, तुरन्त सामान्य स्थिति कायम करने की सरकार से माग की गई।

सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है

आर्य समाज जयपुर हाउस आगरा-१० को एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है जो सस्कार कराने मे निपुण हो थोडा सगीत ज्ञान हो तो उचित है। विवाहित को प्राथमिकता दी जाएगी। दक्षिणा योग्यता अनुसार जल बिजली आवास आर्य समाज की ओर से नि शुल्क।

निम्न पते पर सम्पर्क करें— —कुलदीप कृष्ण, महाजन
मन्त्री आर्य समाज जयपुर हाउस
आगरा-१० (उ० प्र०)

मोपाल वाला आर्य हायर सैकण्डरी स्कूल श्री गंगानगर (राजस्थान)

प्रिन्सीपल की आवश्यकता है। न्यूनतम योग्यता स्नातकोत्तर एव बी० एड० डिग्री सहित ५ वर्ष का हायर सैकण्डरी कक्षाओ को पढाने का अनुभव। आर्य समाजी विचारो वाला योग्य व्यक्ति अधिक अनुकूल रहेगा। वेतनमान १३००-२१७५ एव महगाई भत्ता राजकीय नियमानुसार। व्यक्तिगत विवरण एव शैक्षिक एव अनुभव प्रमाण पत्रो की प्रतियो सहित दिनाक २७ मई १९८४ तक प्रबन्धक के नाम आवेदन पत्र भेज।

रजि० न० डी० (डी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक '२७ ५ १९८४) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस न० ९३
Licensed to post without prep. No, 93 Post in N.D.P S.O on 24 5-84

(पृष्ठ १ का शेष)

प्रशासन न अपने व्यय से आर्यसमाज मन्दिर का पुन निर्माण भी कराया था। आज वह वहीं अपने पुराने स्थान पर स्थित है जि कोई भी जाकर देख सकता है।

आपात काल वह समय था जब कि लोग अपने सगे सम्बन्धियो को भी अपनाने के लिए उद्यत न होते थे। गाधीनगर दिल्ली मे तिलकराज नरुला के निधन पर एक बडी शोक सभा आयोजित की गई थी। श्री नरुला महानगर परिषद् के एक जनसघी सदस्य थे जिनकी आपात काल मे जेल मे मृत्यु हुई थी।

इस सभा मे मैंने डके की चोट यह कहा था कि "श्री नरुला ने देश पर अपनी बलि दी है। वे शहीद है और जब इस अत्याचार का अन्त होगा उनका नाम स्वर्णाक्षरो मे लिखा जायेगा। श्री नरुला के परिवार वालो से तथा मीटिंग मे भाग लेने वालो से इस तथ्य की सत्यता की सम्पुष्टि कराई जा सकती है।

मेरे प्रयत्नो के फलस्वरूप डी०ए०वी० स्कूलो के ६०से अधिक अध्यापको की तथा अन्य अनेको की जो आपात स्थिति मे बर्खास्त कर दिए गए थे पुनर्नियुक्तिया हुई थीं। दिसम्बर १९७५ मे सार्वदेशिक सभा ने दिल्ली मे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह का आयोजन किया था। इस अवसर पर निकाले गए जलूस मे देश-देशान्तर के १० लाख के लगभग लोगो ने भाग लिया था। प्रशासन की आपत्तियों के बावजूद भी महाराणा प्रताप और शिवाजी महाराज के चित्र भी प्रदर्शित किए गए थे।

ये मात्र हल्की झलकिया है उस कार्य की जो उस काल मे आर्य समाज तथा मेरे द्वारा होता रहा था। मैं उस समय उन लोगो की सहायता कर रहा था जिन्हें वास्तविक रूप मे सहायता की जरूरत थी। उस समय भी मैंने अपने सिद्धान्तों के साथ कोई समझौता नही किया था।

अन्त मे मैं यही कहूगा कि समः बावजूद भी श्री कार्लेकर ने मेरे मूल सवाल का जवाब नहीं दिया और वह है क्या पंजाब के उग्रवादियो के दमन के लिए कठोरतम कार्यवाही के सिवा कोई दूसरा उपाय है ?

इस सच्चाई को भी मानना जरूरी है कि प्रेस की, न्यायपालिका की अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता को जिनका लोकतन्त्र मे बडा महत्व होता है अकालियों और उग्रवादियों ने पूर्व से ही कुचला हुआ है। उनकी पुनर्स्थापना में एक मात्र आपात कालीन स्थिति ही कारगर हो सकती है। अकेले समाचार पत्रो के शब्दों और सार्वजनिक भावनों से गोलियां कभी भी रोकी नहीं जा सकती।

—रामगोपाल शालवाले
प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

उत्सव

आर्य समाज सभल का ९१ वा वार्षिकोत्सव १९, २०, २१, २२ मई १९८४ को समारोह मनाया गया। —नरेन्द्र प्रकाश पोद्दार, मन्त्री

महर्षि फिल्म निर्माण का विरोध

आर्य समाज सभल (उ० प्र०) ने १५-५ ८४ को अपनी साप्ताहिक सभा में महर्षि दयानन्द सरस्वती पर फिल्म निर्माण का घोर विरोध किया।

—जगदीश शरण आर्य

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली-२ में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ... नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८५ वर्ष ११ अङ्क २६

ज्येष्ठ शु० ४ सं० २०४१ रविवार ३ जून १९८४

दयानन्दाब्द १६० दूरभाष : २७४७७१

वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति ४० पैसे

अजीज रमेश की अन्तिम यात्रा

रमेश मर नहीं सकता, वह हमारे दिलों में रहेगा

"आज रमेश अपने घर से रवाना हो रहा है सदा के लिए, वह फिर यहा कभी लौट कर नही आयेगा। सोचता हू कि पहले लाला जगत नारायण स्वय शहीद हो गये, फिर उनका बेटा शहीद हो गया। किस कदर अश्रुपूर्ण है आज का दिन। एक ही सप्ताह मे दुनिया बदल गई, किसी का सुहाग लुट गया, कोई अनाथ हो गया, भाई भाई को ढूढ रहा है, बहिन प्रतीक्षा मे बैठी है कि वह कब आयेगा। लेकिन वह नही आयेगा। आज वह अपनी अन्तिम यात्रा पर निकल रहा है।

पजाब आज एक बहुत बड़ी कत्लगाह बन गया है—विशेषकर उन लोगो के लिए जिन्होने जनता की सेवा अपना उद्देश्य बना रखा है। वह अब इस प्रदेश में रहते तो है यह समझ कर कि उन्होंने अपनी शेष आयु उधार ले रखी है। पता नही कौन किस समय वह छीन कर ले जाए। रमेश की शहादत ने यह कहने पर मजबूर कर दिया है कि—

'यह मिसरा काश नक्श, हर दरोदीवार हो जाए।
जिसे जीना हो मरने के लिये तैयार हो जाए।।

रमेश जितनी देर जिया मरने के लिए तैयार होकर जिया, मरा भी तो अमर हो गया। जिन परिस्थितियो मे हम आज पजाब मे जिन्दा रह रहे है यहा किसी की भी जिन्दगी का कोई भरोसा नही है और यह सब कुछ उस पजाब मे हो रहा है, जहा हरमन्दिर साहब, आनन्दपुर साहब, तरनतारन और मुक्तसर जैसे तीर्थ है। इनमे बड़े-बड़े गुरुद्वारे हैं। इन गुरुद्वारो से गुरुग्रन्थ साहब की पवित्र वाणी सुनाई देती है। जिन्होने यह वाणी सुनी है, वह हैरान होते हैं कि इसमे तो कही भी नही लिखा है कि इन्सान इन्सान का खून पी जाए। ग्रन्थ साहब मे तो सिवाए अध्यात्म, ईश्वर भक्ति, प्यार, मुहब्बत और सद्भावना के और कुछ भी नही लिखा है। यह जो लोग गुरु का नाम लेकर अपनी कार्य पद्धति से गुरुवाणी की अवमानता कर रहे हैं, ये कौन हैं? ये गुरु के सिह नही हो सकते, ये गुरु नानकदेव के अनुयायी व गुरु गोविन्दसिह के पुजारी नही हो सकते। गुरु साहबान ने तो हमे कुछ और ही सिखाया था। यह पजाब मे क्या हो रहा है?

रमेश भी गुरु साहबान का पुजारी था। अपने पिता जी की पुण्य तिथि पर उसने ग्रन्थ साहब का पाठ कराया था। अन्तत वह उनके हाथो ही शहीद हो गया, जो स्वय को गुरु साहबान का अनुयायी कहते हैं।

लेकिन आज इस बहस मे पडने का कोई फायदा नही। आज तो हमने अपने अजीज को विदाई देनी है, जो सदा के लिए हमे छोड कर जा रहा है।

हम उसकी शक्ल अब पुन कभी नही देख सकेंगे, लेकिन उसकी आवाज हमारे कानो मे गूजती रहेगी। उसके लेख हमे उसकी याद दिलाते रहेगे। रमेश मर नही सकता, वह यहीं रहेगा, हमारे दिलो मे रहेगा, वह जा रहा है फिर भी पास ही रहेगा। इन्सान चला जाता है, उसकी याद रह जाती है। रमेश जा रहा है उसकी याद सदा यही रहेगी।

—वीरेन्द्र

(वीर प्रताप जालन्धर)

श्रीयुत रमेशचन्द्र जी का बलिदान

हिन्द समाचार प्रकाशन समूह (जालन्धर) के मुख्य सम्पादक श्री रमेश चन्द्र (चोपडा) की १२।५।८४ की शाम को कुछेक अज्ञात युवको ने नाम देव चौक पर गोली मारकर हत्या कर दी। वे ५८ वर्ष के थे। इस हत्या की जिम्मेवारी, दशमेश रेजीमेन्ट ने ली है। श्री रमेश सुप्रसिद्ध पत्रकार और हिन्दू नेता श्री ला० जगतनारायण जी के ज्येष्ठ पुत्र थे जिनकी उग्रवादियो ने सितम्बर १९८१ मे हत्या करके उन्हे शहादत प्राप्त कराई थी। श्री रमेश जी की शहादत से मुख्यत पजाब और साधारणत देश एक उच्च कोटि के पत्रकार, देशभक्त और हिन्दूहित रक्षक से वचित हो गया है। उनके लिए पत्रकारिता एक मिशन था। वे सिद्धहस्त लेखक थे। उनके बलिदान ने एक बार पुन यह स्पष्ट कर दिया है कि एकमात्र मौत से नही वरन् ध्येय से ही शहादत मिला करती है। उनका ध्येय देश-धर्म और समाज की उदात्त सेवा ही था।

हत्यारो को यह पता नही था कि वे क्या कर रहे है और देश एव सिख इतिहास को कितनी बड़ी क्षति पहुचा रहे हैं? हत्यारे, मानव-न्याय से भले ही बच जाये परन्तु प्रभु के न्याय से बच न पायेगे। कोई समय ऐसा आ सकता है जब कि उन्हे देश, पन्थ और मानवता के प्रति अपराध करने की आत्म-ग्लानि हो और पश्चात्ताप हो। उन्हे यह भी अनुभूति हुए बिना न रहेगी कि आत्मा भले ही कुछ समय के लिए सोती नजर आए वह कभी मरती नही है। सत्य दमन और हिसा से विनष्ट नही किया जा सकता है।

संक्षिप्त जीवन परिचय

श्री रमेश चन्द्र का जन्म २४ दिसम्बर १९२६ मे हुआ था। उन्होने डी० ए० वी० कालेज लाहौर से बी० एस० सी० तक शिक्षा

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—ओमप्रकाश पुरुषार्थी

सहसम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

महर्षि दयानन्द पर फिल्म—

ऋषि की मान्यताओं पर कुठाराघात

श्री भगवान् देव ससद् सदस्य महर्षि दयानन्द पर फिल्म बनाने जा रहे हैं। इस समाचार से देश भर के आर्य समाजो तथा आर्य पुरुषो मे रोष की लहर फैल गई है। इस समस्या पर विचार करने के लिए महर्षि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा की एक बैठक दिल्ली मे ६ मई को हुई। बैठक मे श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती, स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती महात्मा आर्य भिक्षु जो, डाक्टर भवानीलाल जी भारतीय, प्रोफसर रत्नसिंह जी श्री क्षितीश वेदालकार, राय साहब चौ० प्रतापसिंह जी तथा श्री रामनाथ सहगल आदि प्रमुख नेता तथा विद्वान उपस्थित थे। विचारानन्तर निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार हुआ —

रामलीला के सन्दर्भ मे राव कर्णसिंह की भर्त्सना करतेहुए महर्षि दयानन्द ने कहा था—

आपके सम्मुख आपके पूज्य पुरुषो के रूप भर कर मलिन मनुष्य आते हैं और आप लोग बैठ-बैठ देखा करते हैं। उस समय आपको लज्जा नही आती। किसी साधारण पुरुष के माता-पिता का रूप भर के कोई नचावे तो उसे कितना बुरा लगता है। परन्तु आप कुलीन लोग अपने मान्य महापुरुषो के स्वाग भरते हैं और प्रसन्न होते हैं।

पुन रामलीला के सन्दर्भ मे लखनऊ के सेठ ब्रजलाल के एक प्रश्न का उत्तर देते हुए स्वामी जी ने कहा था—

'रामलीला देखना हजार हत्याओ के समान पाप है।'

लाला कालीचरण के नाम १६ अक्तूबर १८८२ को लिखे अपने पत्र मे स्वामी जी ने लिखा था— तुम आर्य समाज के पत्र मे नाटक मत छापो। यह आर्य समाज है भडुआ समाज नही जो तुम नाटक छापते हो। यह भडुआपन की बात है। इसलिए ऐसा करना उचित नही।

महर्षि दयानन्द के उक्त वचनो के होते हुए स्वय महर्षि दयानन्द पर फिल्म बनाये जाने और किसी के द्वारा उनका रूप भरे जाने को आर्य समाज सहन नही कर सकता। ऐसा करना महर्षि दयानन्द जैसे देव पुरुष का घोर अपमान करना होगा जो अन्तत आर्य समाज के लिए घातक सिद्ध होगा। अत यह सभा निश्चय करती है कि महर्षि दयानन्द पर फिल्म निर्माण को रोकने के लिए हर सम्भव उपाय से प्रयत्न किया जाए।

यह सभा यह भी निश्चय करती है कि इस सम्बन्ध म आन्दोलन को व्यापक रूप देने और आवश्यक कार्यवाही करने का अधिकार स्वामी विद्यानन्द सरस्वती को दिया जाए।

महर्षि दयानन्द की वसीयत के अनुसार उनकी उत्तराधिकारिणी सभा के आदेश को ध्यान मे रखते हुए आर्यसमाज के समस्त विद्वानो, नेताओ और महर्षि के नाम लेवा सभी आर्यजनो का यह परम कर्तव्य है कि वे अपने महान गुरु के मान की रक्षा के लिए कटिबद्ध हो जाए और अपने अपने स्तर पर अपने-अपने ढगसे फिल्म निर्माणकी योजना को विफल करने का भरसक प्रयास करें और फिल्म बन जाने की अवस्था म उसके प्रदर्शन को रोकने के लिए हर सम्भव उपाय अपनाए।

इस आशय का प्रस्ताव पारित कर सूचना तथा प्रसारण मन्त्री, प्रधानमन्त्री राष्ट्रपति तथा फिल्म सेंसर बोर्ड को भेजे और अपनी कार्यवाही की सूचना मुझ डी-१४-१६, माडल टाऊन दिल्ली के पते पर देते रह।

—स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती

वार्षिक उत्सव

—आर्यसमाज नागदा का वार्षिक उत्सव १ से ३ जून तक (१९८४) को बडे समारोह पूवक मनाया जायगा। इस अवसर पर यजुर्वेद महायज्ञ का भी आयोजन किया जा रहा है।

—लक्ष्मी नारायण आर्य
अधिष्ठाता आर्य वीर दल, नागदा म प्र०

पंजाब को सेना के हवाले करो

—मधोक

जालन्धर २७ मई। भारतीय जनसघ के प्रधान श्री बलराज मधोक ने पजाब को सेना के हवाले किये जाने की माग की है। आज यहा एक पत्रकार सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए उन्होने कहा कि पजाब के हालात इतने खराब हो चुके है, इस पर काबू करने मे राज्य के [illegible] हैं और वह [illegible] की स्थिति पर काबू नही पा सके। इसलिए पंजाब को सेना के हवाले कर देना चाहिए।

श्री मधोक ने प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी पर आरोप लगाया कि वह पजाब समस्या को लटकाए रखना चाहती हैं और हालत यह हो गई कि लोगो मे भारी दहशत फैल गई है। दिन-दहाडे एक समुदाय के लोगों को मारा जा रहा है और हत्याओं की घटनाओ मे वृद्धि होती जा रही है। लेकिन प्रधानमन्त्री ने अभी तक इस समस्या की ओर कोई अधिक [illegible] नहीं दिखाई है।

(प० केसरी २८-५ ८४)

सच्चा सिख खालिस्तान का समर्थक नहीं

—रियाड

अजमेर २७ मई। अजमेर के पत्रकारो, बुद्धिजीवियों और विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं ने पंजाब मे आतकवादियों द्वारा पत्रकारो एवं निरीह नागरिको की हत्याओं की तीव्र भर्त्सना की है। इन सभी वर्गों ने सरकार से हिंसात्मक गतिविधियां सख्ती से दबाने की माग की है।

राजस्थान सिख प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष गुरुचरणसिह रियाड ने पजाब केसरी के सम्पादक रमेशचन्द्र को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि सिख और हिन्दू एक ही पेड की दो शाखाए हैं। इसलिए सच्चा सिख कभी 'खालिस्तान" जैसी माग का समर्थन नहीं करेगा।

(पजाब केसरी २८-५-८४)

(पृष्ठ १ का शेष)

प्राप्त की। छोटी आयु मे ही वे स्वतन्त्रता आन्दोलन मे सम्मिलित हो गए थे।

भारत छोडो आन्दोलन के दौरान उन्हे १९४२ मे गिरफ्तार कर लाहौर जेल में रखा गया था।

श्री रमेश चन्द्र कट्टर गाधी वादी थे। उन्होने १९६५ मे पजाब केसरी तथा १९७२ मे हिन्द समाचार प्रकाशन समूह के सम्पादक का दायित्व सम्भाला। वे विभिन्न सास्कृतिक, राजनीतिक व सामाजिक सगठनो से भी सम्बद्ध रहे।

१९७७ मे जनता पार्टी के टिकिट पर पजाब विधान सभा के लिए चुने गए तथा कई वर्षों तक जालन्धर नगर पालिका के सदस्य रहे।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस जिला (अलीगढ़) उ० प्र०

सम्पादकीय

पंजाब की भयावह स्थिति पर चिन्ता

स्थिति को तुरन्त ठीक करने की प्रशासन से जोरदार मांग और प्रभावी उपायों का सुझाव

सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले ने पंजाब की विषम स्थिति पर चिन्ता व्यक्त करते हुए प्रशासन को आह्वान किया है कि इस स्थिति को तुरन्त समाप्त किया जाय। राष्ट्र के आगे बटवारे को रोका जाय और राजद्रोहात्मक कार्यवाहियों को कड़े हाथों से समाप्त किया जाय। उन्होंने इस कार्य के लिए सैनिक शासन, आपातकालीन स्थिति की घोषणा और राष्ट्रपति शासन प्रणाली जैसे कारगर उपायों का स्वागत किया है। पूरा वक्तव्य निम्न प्रकार है:—

—सम्पादक

"पंजाब में अभी हाल में घटित घटनाओं और इस समस्या के हिंसक रूप लेने का कारण यही है कि इसे अत्यधिक समय तक लटकाए रखा गया है। पंजाब की वर्तमान स्थिति विभाजन से पूर्व के दिनों की याद दिला रही है।

इस स्थिति के लिए गवर्नमेन्ट और समस्त विरोधी दल समान रूप से जिम्मेवार बताए जा रहे हैं। कहा जा रहा है कि दोनों की दृष्टि मात्र वोटों पर है। जहां विरोधी पक्ष ने आग में ईंधन डाला है वहां गवर्नमेन्ट की ढुलमुल रीति-नीति और टाल-मटोल ने उग्रवादियों के समक्ष बार-बार आत्मसात के साथ ही अकालियों की असंगत मांगों ने उग्रवादियों के हौंसले बढ़ाए हैं।

सिखों के लिए पृथक विवाह कानून और संविधान की धारा २५ के संशोधन की मांग से अकालियों की मांगों की असंगतता सुस्पष्ट है। इनका लक्ष्य सिखों के पृथक वर्ग का निर्माण है जो उग्रवादियों के अन्तिम ध्येय अर्थात् खालिस्तान की प्राप्ति की दिशा में एक पग ही उचित रीति से कहा और समझा जा रहा है। वह दिन दूर नही जब अकाली खालिस्तान की मांग का खुले तौर पर समर्थन करेंगे।

अभी हाल में बैंकों का लूटा जाना पुलिस अफसरों तथा अन्य व्यक्तियों का सफाया किया जाना, सविधान का जलाया जाना, सम्पत्ति का नष्ट किया जाना, खालिस्तान की मांग किया जाना राष्ट्र एवं देश की अखण्डता तथा प्रभुसत्ता को खुली चुनौती है। यह स्थिति बड़ी भयावह है और यदि इससे ठीक ढंग से निपटा नहीं गया तो यह देश का बटवारा कराके रहेगी।

वे कौन से विविध उपाय हैं जिनसे उन प्रगतियों को समाप्त किया जा सकता है जिन्होंने राजद्रोह का रूप लिया हुआ है? सैनिक शासन, आपात्कालीन स्थिति की घोषणा वा राष्ट्रपति शासन प्रणाली? ये सुझाव स्वागत योग्य है।"

पंजाब में कोई शासन नहीं है

"ऐसा देख पड़ रहा है कि पंजाब में प्रशासन नाम की कोई चीज नहीं है सिवा उनके शासन के जिन्हें उग्रवादियों की संज्ञा दी गई है। वे मनमाने ढंग से बिना पकड़े जाने के भय से हत्याएं करते हैं। उनके छिपने के मुख्य स्थानों का प्रायः सभी को पता है—वे हैं तथा-कथित पूजा के स्थान। उन स्थानों में वस्तुतः कोई पूजा उपासना नहीं हो रही है। वहां तो हत्याओं का क्रम जारी रखने का प्रशिक्षण और योजनाओं का निर्माण होता देख पड़ता है परन्तु गवर्नमेन्ट जहां क्रियात्मक रूप से कोई गवर्नमेन्ट नहीं है इन हत्यारों को सार्वजनिक रूप से यह विश्वास देकर कि सुरक्षा दल पूजा स्थानों में प्रवेश नहीं करेंगे, उन्हें सुरक्षा की पूर्ण गारंटी देना जारी रख रही है।

भारत के हिन्दुओं का यही एक अपराध है कि वे बहुसंख्यक है। एक मात्र अल्पसंख्यक ही रक्षण की मांग करने के अधिकारी हैं, जब हिन्दू रक्षा की आवाज उठाते है तो कह दिया जाता है कि ये साम्प्रदायिक है।

यह शिकायत श्री जयकपूर (जालन्धर) ने हिन्दू (मद्रास) के २३-५-८४ के अंक में प्रकाशित अपने पत्र में की है।

वाहे गुरु उन्हें जरूर सख्त सजा देगा

लुधियाना २६ मई, अकाली दल के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व मन्त्री जत्थेदार श्री जीवन सिंह उमरानंगल ने गत दो दिनों में अनेक निर्दोष लोगों की हत्याओं पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए कहा कि इस तरह का काम करने वाले बुजदिल और कायर है उन्हें वाहे गुरु अवश्य सख्त सजा देगा। वे जनता की नजरों से तो बच सकते हैं लेकिन वाहे गुरु की नजरों से कभी नही बच सकते।

उन्होंने केन्द्र को चेतावनी दी और कहा इस समय पंजाब में स्थिति इतनी खराब है कि अगर इसका जल्दी समाधान न हुआ तो पंजाब का वातावरण और दूषित हो जायेगा और इसकी जिम्मेवारी से प्रधान मन्त्री बच न सकेगी।

(पंजाब केसरी २७-५-८४)

बर्नार्डशा द्वारा वैदिकधर्म का गुणगान

एक ईसाई भिक्षुणी (नन) लारेंशिया के साथ बर्नार्डशा की बड़ी घनिष्ठता थी। उसके साथ उनका बराबर पत्र व्यवहार होता रहता था। जब उनकी एक पुस्तक जिसका नाम है 'ब्लैक गर्ल इन सर्च आफ गाड'(काली लड़की ईश्वर की खोज में) प्रकाशित हुई तो बहिन लारेंशिया बहुत बिगड़ी और उन्होंने 'शा' को पत्र लिखना बन्द कर दिया। इस पर उन्होंने उस पुस्तक के प्रूफ का पन्ना फाड़कर लारेंशिया के पास भेज दिया, जिस पर लिखा था स्टैंण्ड ब्रुक मठ में रहने वाली भिक्षुणियों की विशेषतः बहिन लारेंशिया की प्रार्थनाओं से मुझे इसकी प्रेरणा मिली। तुम मेरे लिए प्रार्थना करती रहो। उनकी दूसरी पुस्तक निकली जिसमें यह वाक्य था 'ईश्वर मेरे माता और पिता दोनों है।' इस पर भी बहिन लारेंशिया बहुत बिगड़ी क्योंकि ईसाइयत में ईश्वर को पुरुष के रूप में ही मान्यता है। एक बार उन्होंने लिखा था कि 'भारतीयों के तो असली चेहरे है और हमारे केवल नकली।' एक दूसरे स्थान पर उनका कहना है कि एक मात्र वैदिक धर्म ही ऐसा धर्म है जिसमें एक ही ईश्वर की अभिव्यक्ति मानी जाती है।"

भारत से लौटने पर १९३३ में उन्होंने अपने एक पादरी मित्र वाल्टर्स को पत्र मे लिखा था कि—वैदिक धर्म का मन्तव्य है कि सबके ऊपर कोई ऐसा ईश्वर अवश्य है जिसका व्यक्तित्व व्यक्त नही किया जा सकता (अर्थात् वह निराकार है—सम्पादक) इसलिए संसार भर में वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) सबसे अधिक सहिष्णु है। यह हिन्दू धर्म इतना लचकीला और सूक्ष्म है कि उसमें मूर्ति में विश्वास न रखने वाले और कट्टर मूर्तिपूजक दोनों के लिए स्थान है। इसी पत्र में उन्होंने इस्लाम की भी चर्चा की है। यदि इस मत का मानने वाला किसी काफिर की गर्दन काट दे तो ऐसा करने से वह काफिर

सामयिक चर्चा—

फूट डालो और राज्य करो

श्री स्वामी वेदमुनि लिखते है—

'नवभारत टाइम्स'' के ११ मई के अङ्क मे प्रथम पृष्ठ के आठवे स्तम्भ मे 'अल्पसख्यक आयोग की सिफारिश नामजूर'' शीर्षक से सूचना प्रकाशित हुई है कि 'अल्पसख्यक आयोग की इस सिफारिश को सरकार ने नामजूर कर दिया है कि एक राष्ट्रीय एकात्मता व मानव अधिकार आयोग की स्थापना की जाय। आयोग का मत था कि इस तरह का आयोग राष्ट्रीय एकता व धर्म निरपेक्ष परम्पराओ को बढावा देगा और अल्पसख्यको सहित देश के सभी वर्गों के लोगो के मानवीय अधिकारो की रक्षा करेगा। यह रिपोर्ट लोकसभा के पिछले अधिवेशन मे पेश की गयी थी।'

भारत के नेताओ को अपने राजनीतिक गुरु अग्रेजो से विरासत मे 'फोडो और राज्य करो'' की शिक्षा प्राप्त हुई है। जिस दिन से भारत स्वाधीन हुआ है ऐसा एक भी उदाहरण नही दिया जा सकता, जब अभागे भारत के स्वार्थी नेताओ ने फूट डालने के सूत्र का उपयोग न किया हो। चाहे वह जातिवादी प्रश्न हो, भाषायी प्रश्न हो अथवा धार्मिक प्रश्न हो।

ऐसे स्वार्थी नेताओ से यह आशा करना नितान्त मूर्खता है कि वह राष्ट्रीय एकात्मता और मानव अधिकार सम्बन्धी किसी विचार को सहन कर लगे। जो आयोग बनाया ही गया था फूट डालने तथा धार्मिक आधार पर पडी फूट की खाई को और चौडा करने के लिए उसके द्वारा दिया गया राष्ट्रीय एकात्मता तथा मानव अधिकार आयोग का सुझाव उस आयोग के सदस्यो की सदाशयता, उच्चाशयता तथा नितान्त राष्ट्रवादी मनोवृत्ति का परिचायक है, साथ ही सरकार द्वारा उसका अस्वीकृत किया जाना दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी स्थिति में भारत-राष्ट्र मे कभी राष्ट्रीय दृष्टिकोण का विकास होगा और राष्ट्रीय एकता स्थापित होगी यह आशा करना दुराशा मात्र है।

मानव अधिकारो की बात यदि भारत मे चल निकले तो भारत के राष्ट्रीय स्तर के नेताओ मे कोई बिरला ही होगा जो बचेगा अन्यथा सभी दण्ड के भागी होगे। 'मत्त्वा कर्माणि सीव्यति इति मनुष्य के अनुसार विचार कर कार्य करने वाले को मानव मनुष्य) कहते है। जिस दिन भारत के मतदाता मे विचार कर कार्य करने की योग्यता आयेगी उसी दिन भारत के सुख सौभाग्य का उदय होगा। वास्तविक राष्ट्रीय मनोवृत्ति उज्जवल होकर सामने आयेगी और ठीक अर्थों मे भारत 'स्व तन्त्र होगा। कारण कि तब स्वकीयो अपनो के तन्त्र म होगा, अभी तो जन्म के भारतीय किन्तु मनोवृत्ति के परायो परकीयो के तन्त्र मे फसा होने से 'परतन्त्र'' है।''

को नर्क मे भेजेगा और स्वय स्वर्ग जायेगा।

ईसाई मत को भी उन्होने नही छोडा। वह लिखते है कि— ''कैथोलिक और प्रोटस्टैंट दोनो शक्ति के हाथ मे आ जाने पर एक दूसरे के विनाश पर तुल जाते है। पर वैदिक धर्म ऐसा नही करता। सभी मतो मे सकीर्णता है केवल वैदिक धर्म ही उदार है। सभी को अपने मे लेने की उसमे क्षमता है। इस क्षमता के कारण ही युगो के थपेडे सहते हुए भी वह आज तक जीवितहै जब कि ससार के प्राचीन प्रागैतिहासिक मतो एव सस्कृतियो का आज निशान तक नही।''

ईसाईयो को महायुद्धो मे रत देखकर उन्होने लिखा था कि 'जो दया के ईश्वर' की पूजा करते और शान्ति के राजपुत्र के अनुयायी होने का दावा करते है उन्होने क्या किया ? अपने अतिरिक्त उन्होने किसी के प्रति दया नही दिखलाई। जहा जहा शान्ति के राजकुमार के अनुयायियो के पग पहुचे वहा से वह दूर भागती गई।'' (टाईम्स आफ शिकागो के २०-८-५६ के अक मे प्रकाशित शाके पत्रो के अश।

तुलसी की महिमा

यह बडे हर्ष और गौरव का विषय है कि भारत की तुलसी (विदेशी बेसिल) को अन्तर्राष्ट्रीय महत्व प्राप्त हुआ है।

श्री वेवरली रूट ने अपने 'ग्रन्थ' 'भोजन' मे घोषणा की है कि इस बूटी के आनन्द दायक स्वाद का स्थान अन्य कोई बूटी नहीं ले सकती। यदि जडी-बूटियो के पूरे उद्यान (बाग) से मुझे एक बूटी चुननी पडे तो मैं अकेली तुलसी की बूटी से सन्तुष्ट हो जाऊगा।

तुलसी भारत की देन है। कई शताब्दिया हुई जबकि यह पौधा भारत से बाहर ले जाया गया था। श्रीयुत रूट के अनुसार जिसका उद्धरण हैरेल्ड ट्रिब्यून मे दिया गया है मिश्र (इजिप्ट) के प्राचीन अधिवासी इसमे सुगन्धित पदार्थ मिलाकर इसे देवताओ के अर्पण किया करते थे,साथ ही सम्राटो को ही इसे सोने के उपकरण से काटने का अधिकार प्राप्त रहता था। यूनान और रोम के निवासियो ने प्रेम और मृत्यु के साथ इसका साहचर्य माना हुआ था।

अग्रेजी कवि कीट्स ने अपनी एक कविता मे कहा है कि ''इसोवेलाने अपने प्रेमी का शिर तुलसी के बर्तन मे सुरक्षित रखा था।''

भारत मे तुलसी का दवाई के रूप मे बडे पैमाने पर प्रयोग होता था। साप और बिच्छू के दश को ठीक करने मे यह प्रयुक्त होती है। सब प्रकार के विषो के शमन के लिए यह लाभदायक मानी गई है। प्लीनी नामक चिकित्सक अपस्मार (मृगी) के रोग के निवारण के लिए इसका प्रयोग किया करता था। एक प्राचीन वनस्पति शास्त्रवेत्ता का कथन श्री रूट ने उद्धत किया है जिसमे कहा गया है कि प्रसव के समय कोई भी एक हाथ मे तुलसी के पत्तेरखे और दूसरे मे तितली जैसे पक्षी के पर रखे तो बिना कष्ट के प्रसव होगा।

कहा जाता है जब बम्बई नगर का निर्माण कार्य चालू था तब अनेक क्षेत्रो मे पानी के गड्ढो के कारण मलेरिया फैल गया। औषधोपचार से जब इस पर काबू न पाया जा सका तो एक भारतीय की सलाह पर तुलसी के पौधो का जाल बिछाकर अल्प समय मे ही इस पर काबू पा लिया गया था।

नग्न पूजा के जोर से पुलिस परेशान

बेंगलूर, १ मई। शिमोगा जिले के चन्द्रगुट्टी गाँव के रेणुकला मन्दिर मे नग्न पूजा की प्रथा ने पुलिस को चक्कर मे डाल रखा हैं।

अलग थलग पडे इस गाव मे यह प्रथा सदियो से चली आ रही है और अब इसने जोर पकडना शुरू कर दिया है।

कुछ समय पहले यह मामला राज्य विधान सभा मे उठा था और सदस्यो ने इस अशोभनीय प्रथा को बन्द कराने की सरकार से माग की थी।

पुलिस ने इस मामले मे काफी मेहनत की और उसे केवल इतना ही मालूम हो सका कि धार्मिक विश्वासो को आसानी से नही मिटाया जा सकता।

नग्न पूजा करने वालो मे बडी सख्या मे युवक और युवतिया होते हैं, जिनमे से कुछ उच्च शिक्षा प्राप्त होते हैं। वे लोग ढोल बजाते और भक्तिगीत गाते हुए तडके मन्दिर पर एकत्र होते हैं।

वहा नदी मे नहाने के बाद भक्त लोग मन्दिर के सामने बने चबूतरे पर पहुचते हैं तथा वहा एकत्र लोगो की परवाह किए बिना अपने सभी कपडे उतार कर कुछ पूजा-पाठ करते हैं और फिर ठण्डे पानी मे नहा कर अपने कपडे पहन लेते हैं। इसके बाद मन्दिर के अन्दर जाकर पुन पूजा करते हैं।

भक्तो को नग्न पूजा करते हुए देखने के लिए मन्दिर के सामने काफी भीड रहती है और ऐसा होना स्वाभाविक ही है।

लोगों मे धारणा है कि नग्न पूजा करने से देवी प्रसन्न होकर भक्त को वरदान देती है।

यह प्रश्न मात्र पूजा उपासना का नहीं, अपितु सार्वजनिक नैतिकता एव शिष्टता की रक्षा का है। अन्ध विश्वासो पर आधारित इस प्रकार की नग्नता की ओर उसके प्रदर्शन की समाज आज्ञा नही दे सकता।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

महर्षि दयानन्द का वार्त्तालाप और उपदेश

(१)

बाईबिल, कुरान और वेद में क्या अन्तर है ?

एक दिन केशवचन्द्र सेन जी ने स्वामी जी से पूछा—"इस समय हमारे सामने बाईबिल, कुरान और वेद इन पुस्तकों के आधार पर ३ बड़े धर्म हैं। सभी अपने को सच्चा कहते हैं। हमें कैसे ज्ञात हो कि इनमें से वास्तव में कौन सा सच्चा है।"

स्वामी जी ने उत्तर में बाइबिल और कुरान में दोष दिखाकर कहा—पक्षपात और इतिहासादि दोषों से विवर्जित केवल वेद ही है। वह केवल उपदेश ही करता है,इसलिए वैदिक धर्म ही सच्चा धर्म है।

(२)

मुक्ति क्या है ?

एक जिज्ञासु ने महाराज से पूछा 'मुक्ति का क्या अभिप्राय है और वह कैसे प्राप्त होती है ? महाराज ने उत्तर दिया, 'मुक्ति छूट जाने का नाम है। जितने भी दुःख हैं उनसे छूटकर सच्चिदानन्द परमात्मा की प्राप्ति से सदा आनन्द में रहना मुक्ति है।

मुक्ति का पहला साधन सत्याचरण है। दूसरा वेद विद्या का ठीक रीति से लाभ करना और सत्य का पालन करना है । तीसरा सत्पुरुषों और ज्ञानी सन्तों का सत्संग करना। चौथा योगाभ्यास द्वारा अपनी इन्द्रियों और आत्मा को असत्य से निकालकर सत्य में स्थापन करना। पांचवा ईश्वर की स्तुति करना उसकी कृपा का यश वर्णन करना और परमात्म कथा को मन लगाकर सुनना। छठा साधन हैं प्रार्थना। प्रार्थना इस प्रकार करनी चाहिये 'हे जगदीश्वर कृपा निधे ? हमारे पिता ! मुझे असत् से निकाल कर सत् में स्थिर करो। अविद्यान्धकार और अधर्माचरण से पृथक् करके ज्ञान और धर्माचरण में सदा के लिये स्थापना करो। जन्म-मरण रूप संसार से मुक्त कर अपनी अपार दया से मोक्ष प्रदान करो।" प्रार्थना का फल यह है कि जब कोई जन अपने सच्चे मन से, अपनी आत्मा से, अपने प्राण से अपने सारे सामर्थ्य से परमेश्वर का भजन करता है तब, वह कृपामय परमेश्वर उसको अपने आनन्द में निमग्न कर देता है।"

(३)

क्या ईसाई आर्य हैं ?

चांदापुर के मेले की समाप्ति पर एक पादरी ने मनोरंजन की रीति से स्वामी जी से कहा—पंडितजी ? हम भी आर्य हैं। "स्वामी जी ने मुस्करा कर उत्तर दिया—"महाशय ! आप सभ्य तो अवश्य हैं, परन्तु आर्य नहीं हैं" कारण पूछने पर कहा—"आर्य कहते हैं श्रेष्ठ धर्मात्मा को आपकी मान्य पुस्तकें आपको श्रेष्ठ धर्मात्मा नहीं बताती। एक बार ईसा के शिष्यों ने उनसे पूछा था कि आप अन्धों और कोढ़ियों को अच्छा कर देते हैं परन्तु हमको क्यों नहीं कर सकते? उत्तर में ईसा ने कहा कि 'तुम में राई जितना भी विश्वास नहीं है।' जब गुरु के सामने हो शिष्यों में राई जितना विश्वास न था तो आज आप में कैसे हो सकता है ? हमने बाइबिल का आद्योपान्त पाठ किया है। उसमें ईसा ने कहीं भी नही कहा कि यदि मुझ पर विश्वास लाओगे तो तुम्हारी मुक्ति होगी। यह केवल पादरियों की ही कल्पना है।

(४)

अश्वमेध और गोमेध यज्ञों का सच्चा अर्थ ?

लाहौर में एक दिन स्वामी जी के पास पादरी हूपर महाशय आए और पूछने लगे कि "वेद में जो अश्वमेध और गोमेध यज्ञ का वर्णन है आप उसका क्या समाधान करते हैं।" स्वामी जी ने उत्तर दिया, "वेदों में पशु बलि का वर्णन कहीं भी नही है। अश्वमेध का अर्थ न्याय पूर्वक प्रजा पालन है और गोमेध का अर्थ है अन्न का उपार्जन करना, इन्द्रियों को पवित्र बनाना, भूमि को शुद्ध रखना और मृतक का दाह कर्म करना।

—सं० कर्त्ता रघुनाथप्रसाद पाठक

वेद सुधा

जितेन्द्रिय गृहस्थ धनियों का धनी

ओ३म् । उशिक् पावको वसुर्मानुषेषु वरेण्यो होताधायि विक्षु।
दमूना गृहपतिर्दम आं अग्निर्भुवद्रयिपती रयीणाम् ॥
ऋ० १।६०।४

इस वेद मन्त्र में वे ही व्यक्ति गृहस्थ मे प्रवेश और उसका उपभोग करने के योग्य बताए गए हैं जो श्रेष्ठ हों और जिनका अपनी इन्द्रियों पर अधिकार हो।

गृहस्थ को कामनाओं वाला होना चाहिए क्योंकि कामनाओं की प्रेरणा के बिना कोई भी प्रवृति वा गति सम्भव नहीं होती। संसार की समस्त लीला इच्छाओं वा कामनाओं की कीली पर घूमती है।

गृहस्थ को पवित्र भी होना चाहिए। मन्दे चरित्र का व्यक्ति इस आश्रम में प्रवेश करने का अधिकारी नहीं है मनु महाराज ने भी कहा है:—

"अधार्यो दुर्बलेन्द्रियैः." दुर्बल इन्द्रियों वाला गृहस्थ के योग्य नही होता। अविप्लुत ब्रह्मचर्यो गृह—आश्रम मा विशेषतः जिस व्यक्ति ने अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन किया हो उसी को इस आश्रम में प्रवेश करना चाहिए। साथ ही उसे दानशील होना चाहिए और दूसरों को आश्रय देने के लिए सन्नद्ध रहना चाहिए।

गृहस्थाश्रम अन्य तीन आश्रमों में बड़ा माना गया है। क्योंकि यह इन तीनो को दान, भोजन और वस्त्र देकर उनका पालन करता है।

बहुत से व्यक्ति इस भ्रम में ग्रस्त हैं कि विवाह से उन्हें यौन प्रक्रिया का लाइसेंस मिल जाता है। इस प्रकार के लोगों में यह विश्वास उत्पन्न किए जाने की आवश्यकता है कि दुर्बल इन्द्रियों वाला व्यक्ति गृहस्थ जीवन के दायित्व को सम्यकतया वहन करने मे असमर्थ रहता है। इसीलिए मनु महाराज ने कहा है कि गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने के इच्छुक व्यक्तियो को बड़ा सावधान रहना और उद्योगी बनना होता है। कमजोर और शिथिल इन्द्रियों वाला व्यक्ति इसका निर्वाह उत्तमता से नहीं कर पाता।

यह आश्रम अपने मे एक छोटा संसार होता है। इसके संचालन के लिए बड़ी शक्ति अपेक्षित होती है। जो ब्रह्मचर्य एवं इन्द्रियों पर काबू रखने से प्राप्त होती है।

मनु महाराज ने यह भी कहा है कि जो गृहस्थ ऋतुगामी हो और अन्य स्त्रियों के साथ यौन सम्बन्ध न रखता हो वह गृहस्थ होकर भी ब्रह्मचारी बना रहता है। इस प्रकार ब्रह्मचारी धनवान से धनवान व्यक्तियो का भी शिरोमणि होता है और संसार को यह दिखाता है ब्रह्मचर्य ही सबसे बड़ी सम्पदा होती है।

सुप्रसिद्ध अंग्रेजी लेखक जेम्स हैमिल्टन ने सुखी गृहस्थ जीवन के लिए ६ चीजें आवश्यक ठहराई हैं। ईमानदारी, स्वच्छता, सुघड़ता, स्नेह, प्रफुल्लता, परिश्रम। उनकी अपनी आलंकारिक भाषा इस प्रकार है:—

"पारस्परिक विश्वास गृहस्थ के भवन का निर्माता और सुघड़ता एवं स्वच्छता उसके बिछावन, चारपाई और परदे आदि होने चाहिए। इसमें प्रेम की गरमाई होनी चाहिए। यह प्रफुल्लता की रोशनी से आलोकित होना चाहिए। परिश्रम शीलता इसकी खिड़की होनी चाहिए जिससे कि वातावरण में नूतनता आती रहे और दिन प्रतिदिन ताजगी का संचार होता रहे। सबसे बढ़कर उस पर प्रभु की कृपा और दया की छत्रच्छाया होनी चाहिए।

व्याख्या

(उशिक) कामनाओं वाला (पावकः) पवित्र (वसुः) वास देने वाला (मानवेसुः वरेण्यः) मनुष्यों से श्रेष्ठः (होता) दाता (विक्षुः) प्रजाओं में (अधायि) लाया गया है। ऐसा (दमूनाः) दान्त, जितेन्द्रिय (गृहपति) गृहस्थ (दमे) घर में, अथवा दमन के कारण (रयीणां+रयिपति) सब धनियों का धनी तथा (अग्निः) नेता, श्रेष्ठ (आ+भुवत) सब प्रकार से होता है।

हमारे शास्त्रार्थ महारथी

–श्री देवीदास आर्य, मेरठ छावनी

(४)

श्री पंडित गणपति शर्मा

श्री पडित गणपति जी शर्मा आर्य समाज के सुप्रसिद्ध वक्ता, धुरन्धर विद्वान एव शास्त्रार्थ महारथी थे। आपका जन्म राजस्थान के चूरू बाजार (बीकानेर) मे हुआ था। एक वह भी समय था जब जम्मू और काश्मीर मे न तो आर्य समाज का कोई प्रचारक जा सकता था और न ही वहा आर्य समाज की स्थापना हो सकती थी। उन दिनो ईसाई पादरी वहा जाकर ईसाइयत का प्रचार किया करते थे और कश्मीरी पडितो को शास्त्रार्थो की चुनोती भी दिया करते थे। उनमे से एक पादरी सस्कृत का विद्वान था जिसके साथ कोई भी कश्मीरी पडित शास्त्रार्थ करने का साहस नही करता था। अत उसने एक दिन महाराजा से यह कहा कि वह उसे 'विजय पत्र" प्रदान कर। महाराजा ने कुछ दिनो के पश्चात 'विजय-पत्र' देना स्वीकार कर लिया। दैवयोग से उन दिनो पडित गणपति भी काश्मीर गए हुए थे। आर्य समाज के प्रचारक के रूप मे नही, अपितु एक दर्शक के रूप मे। जब पडित जी ने अपने ब्राह्मण भाईयो की यह दयनीय दशा देखी तो उन्होने उन पडितो से कहा कि आप मुझे उस पादरी के साथ शास्त्रार्थ करने के लिए अपना प्रतिनिधि चुन ले। जब यह बात सबने सहर्ष स्वीकार कर ली तो महाराजा की अध्यक्षता मे पडित जी के उस पादरी के साथ शास्त्रार्थ होने लगे। वह पादरी उनकी अकाट्य युक्तियो एव पुष्ट प्रमाणो का कोई भी यथार्थ उत्तर न दे सका और लज्जा के मारे काश्मीर छोडकर बाहर चला गया। तब महाराजा पडित जी की योग्यता एव विद्वत्ता से बडे प्रभावित हुए और उन्हे उनकी विजय के कारण पुरस्कृत करने की इच्छा व्यक्त की इस पर आर्य समाज के उस त्यागी एव तपस्वी महात्मा ने उन्हे यह कहा कि "यदि आप मुझे कुछ देना ही चाहते हैं तो कृपया आर्य समाज पर लगाया गया प्रतिबन्ध हटा दें।" तब महाराजा ने तथास्तु कहकर वह प्रतिबन्ध हटा दिया। तत्पश्चात श्रीनगर मे एव अन्य नगरो मे आर्य समाज की स्थापना हो गई और आर्य समाज के अन्य विद्वान प्रचारार्थ जम्मू और काश्मीर मे जाने लग पडे।

श्री पडित जी के सम्बन्ध मे यह बात प्रसिद्ध है कि जब श्रोतागण अन्य वक्ताओ के व्याख्यानो से उकता कर अपने घरो को वापिस जाने के लिए उठकर खडे हो जाते थे तो आर्य समाज के अधिकारी श्री पडित जी को व्याख्यान देने के लिए वेदी पर बिठला दिया करते थे। तब सब भाई बहिन पुन वहा बैठ जाते थे और जितनी देर तक पडित जी व्याख्यान देते रहते थे कोई भी व्यक्ति उठने का नाम नही लेता था।

श्री पडित जी वृक्षो मे जीव मानते थे और अकाल मृत्यु' मे विश्वास रखते थ। इन दोनों विषयो पर उनका स्वामी दर्शनानन्द जी से विचार भेद था जिसके कारण महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) मे इन दोनो चोटी के विद्वानो क शास्त्रार्थ भी हुए थे। इस सम्बन्ध म एक दिन आर्य समाज सदर मेरठ के भूतपूर्व प्रधान एव मेरठ के सुप्रसिद्ध सरकारी वकील स्वर्गीय राय-बहादुर मोतीलाल जी ने मुझे यह बतलाया था कि "अकाल मृत्यु' पर हुए शास्त्रार्थ के दिन वह ज्वालापुर मे विराजमान थे। उन्होने मुझे यह भी कहा था कि उस दिन के शास्त्रार्थ मे पडित जी का पलडा भारी रहा। इसी एक घटना से ही पाठक-गण यह अनुमान लगा सकते हैं कि श्री पडित गणपति भी कोई साधारण उपदेशक नही अपितु उच्च कोटि के विद्वान थे।

श्री पंडित रामचन्द्र जी देहलवी

श्री पडित रामचन्द्र जी देहलवी आर्य समाज के महोपदेशक, अद्वितीय विद्वान एव शास्त्रार्थ महारथी थे। आपका जन्म सन १८८१ ई० की राम-नवमी के दिन नीमच (मध्य प्रदेश) मे मुन्शी छोटे लाल जी (जो अग्रेज अफसरो को उर्दू और फारसी पढाया करते थे) के गृह मे हुआ था। आपके पूज्य पितामह दिल्ली के ही निवासी थे, किन्तु १८५७ ई० के विद्रोह से कुछ दिन पूर्व दिल्ली से प्रस्थान करके नीमच चले गये थे। श्री पडित जी ने अज-मेर के डी० ए० वी० स्कूल से मिडिल और इन्दौर के एक स्कूल से एन्ट्रेन्स (Entrance) की परीक्षाएं पास की थी। आप दोनों परीक्षाओ मे प्रथम श्रेणी मे ही उत्तीर्ण हुए थे। आप हिन्दी, सस्कृत उर्दू, फारसी, अरबी और अग्रेजी के विद्वान थे। दिल्ली, आकर आप "रैली ब्रदर्स" नामक एक अग्रेजी फर्म में लग गये। एक दिन रविवार आप ने छुट्टी मना ली जिसके कारण फर्म का स्वामी आप से अप्रसन्न हो गया। जब उसने आपसे रविवार न आने का कारण पूछा तो आपने यह उत्तर दिया 'Even God rested on the 7th day' अर्थात खुदा ने भी सातवें दिन विश्राम किया था।' यह बात कहकर स्वाभिमानी पडित जी ने सर्विस से त्यागपत्र दे दिया जो स्वीकार कर लिया गया। स्मरण रहे कि ईसाइयो एव मुसलमानो का यह विश्वास है कि खुदा ने छ दिनो मे इस ब्रह्माण्ड की रचना की थी और सातवें दिन विश्राम किया था।

श्री पडित जी एक लूले हाफिज से पूरे दो महीने "कुरान शरीफ" पढते रहे। पढने के समय वह हाफिज जी को उठाकर अपने घर मे ले आया करते थे और उनसे पढने के पश्चात उन्हे पुन उठाकर उनके घर पहुचा देते थे। हाफिज जी पडित जी के आयतें पढने पर अत्यन्त प्रसन्न हुआ करते थे। वे कहा करते थे कि मुझे बडे शिष्य मिले, किन्तु तुम जैसा सच्चा व शुद्ध उच्चारण करने वाला नहीं मिला।" एक बार आर्य समाज फिरोजपुर (पजाब) के वार्षिक उत्सव पर आप का किसी मौलवी से शास्त्रार्थ हुआ था। तब एक पठान नवयुवती (जो अलीगढ विश्वविद्यालय की छात्रा थी) ने आपकी शिक्षा एव योग्यता से प्रभावित होकर आपकी सेवा मे १० रुपये का एक नोट पुरस्कार के रूप मे भेंट किया था। पडित जी 'कुरान शरीफ" की आयतें ऐसे अच्छे व सही ढग से पढते थे कि बडे-बडे हाफिज व मौलवी भी दातो तले अगुली दबाते थे।

आप ने बाईबिल का अध्ययन स्वय किया था। आपके पुस्तकालय मे हिन्दी और अग्रेजी में प्रकाशित बाइबिल की कई प्रतिया थी। बाडा हिन्दू राव, दिल्ली मे एक मौलवी से आपका पहिला शास्त्रार्थ हुआ था। आपको "कुरान शरीफ पढाने वाले हाफिज जी भी उस दिन सभा मडप मे उपस्थित थे। जब आपने अपने प्रतिद्वन्द्वी को पछाड दिया तो आर्य हिन्दू भाई बहुत प्रसन्न हुए और आपकी सराहना करने लगे। आप बडे ही स्वाध्यायशील थे जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि एक बार निरन्तर छ महीने आपकी आखें दुखती रही। उन पर पट्टी बन्धी रहने के कारण आप स्वय तो नही पढ सकते थे, किन्तु अपने धर्म भ्राता। (पत्नी के भाई) से पुस्तकें पढवा कर सुना करते थे। दिल्ली के फव्वारे पर सप्ताह मे दो दिन मौलवियो के, दो दिन पादरियो के और दो दिन आपके व्याख्यान हुआ करते थे। सातवें दिन अवकाश हुआ करता था। यह क्रम सन् १९१० से सन १९२५ तक निरन्तर १५ वर्षो तक चलता रहा। इस दीर्घकाल मे आपने एक दिन का भी नागा नही किया। सबसे अधिक आश्चर्य की बात यह है कि आपके इकलौते पुत्र एव धर्म पत्नी आपके व्याख्यान के दिनो मे ही स्वर्गवासी हुए थे। घर मे तो हाहाकार मचा हुआ था, किन्तु पडित जी ने कर्त्तव्य पालन की दृष्टि से उन दोनो दिनो मे व्याख्यान देने से सकोच नहीं किया।

एक बार मुजफ्फरपुर (बिहार) मे आपका एक मौलवी से शास्त्रार्थ हुआ था 'विपक्षियो की ओर से यह प्रस्ताव आया कि एक जज इस शास्त्रार्थ की हारजीत के फैसले के लिये निश्चित किया जाना चाहिए। पडित जी ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया तथा जज चुनने का काम भी विरोधियों को ही सोप दिया। वे अगले दिन अपने एक रेवरेण्ड जुडाह को जज बनाकर ले आये।' उस शास्त्रार्थ में श्री पडित जी विजयी हुए और जुडाह साहब ने अपना निर्णय यू दिया —

'मैंने शास्त्रार्थ सुना। मेरे आर्य पडित ने जिस उत्तमता से अपना पक्ष प्रस्तुत किया, क्या अच्छा था वह। आयतो की उसमे भरमार थी। बडी अच्छी रीति से उन्होने उत्तर दिये। मेरे मुसलमान भाई तो उदाहरण के रूप मे भी एक आयत न पढ सके। मैं निर्णय देता हू, आर्य विजयी हुए व मुसल-मान पराजित हुए।" उस शास्त्रार्थ से प्रसन्न होकर एक श्रमिक ने पडित जी की सेवा मे सोने का पदक भी भेंट किया था। एक बार आयत पढने मे कहीं जेरजबर के ऊपर विवाद खडा हो गया। पडित जी ने विवाद की समाप्ति के लिए कुरान शरीफ खोलकर दिखला दिया। मौलाना ने अपनी भूल स्वीकार की और भरी सभा मे अपने कान पकडे।" (क्रमश)

अकाली आन्दोलन : हकीकत क्या है ?

—डा० सुरेन्द्र सिंह कादियान

[गताक से आगे]

निश्चय ही असन्तुष्ट या उग्रवादी दस्ते से किसी संस्था को बल मिलता है, गति मिलती है और यह भी सच है कि जब ये दस्ते संस्था पर हावी हो जाते है तो उनके निष्कर्ष कभी पूर्ण या अन्तिम नही हुआ करते। यही बात 'सिंह सभा' और 'खालसा दीवान' के सन्दर्भ मे घटी। उग्रवाद के कारण कुछ ऐसे निर्णय लिए गए जिससे हिन्दू सिख एकता मे दरारें पडने लगी। सिखो को हिन्दुओ से पृथक करने के लिए विशेष साहित्य कतिपय सिख लेखको ने तैयार किया, आनन्द मैरिज एक्ट के द्वारा परम्परागत विवाह पद्धति को (जिसमें वेद मन्त्र पढ़े जाते थे) अन्तिम विदाई दी गई जिन गुरुद्वारो मे मूर्तिपूजा होती थी वहा से बल पूर्वक मूर्तिया बाहर फेंक दी गई, वेदो के प्रति सिखो मे सन्देह एव उदासीनता जाग्रत करने का प्रयास किया गया और अन्त में यह नारा दिया गया कि सिख हिन्दू नही है। इस नारे को प्रभावशाली बनाने के लिए ही डा० गडासिंह 'केवल' ने अपनी तथा कथित शोध रचनाए लिखी, भाई काहनसिंह ने हम हिन्दू नही, ज्ञानीदित्त सिंह ने 'दम्भ निवारण और भाई ओधसिंह ने 'गुरु साहिब अते वेद' आदि पुस्तकें लिखी। टरम्प के यह लिखने पर कि हिन्दू शास्त्रो और वेदो के प्रभावस्वरूप निरमले भी हिन्दुत्व के प्रभाव मे बहते जा रहे हैं तो निरमलो (संस्कृत के विद्वान सिख जिन्होने सिख धर्म पर हिन्दू धर्म का प्रभाव स्वीकार किया) के विरुद्ध सिख सगत मे घृणा एव आक्रोश भडका और १९२५ ३५ के गुरुद्वारा आन्दोलन मे उनको दूध की मक्खी की तरह निकाल बाहर किया।

इस समूचे परिवतन को चालाक और मक्कार अंग्रेज बडी बारीकी से देख रहा था। बारुद का ढेर अनायास इकट्ठा हो चुका था और उसमे केवल आग लगाना बाकी था। किन्तु यह कार्य भी वह इतनी सावधानी से करना चाहता था कि उसकी गध स्वय सिखो को भी न मिल सके उन्होने यह कार्य दो समानांतर चरणों में शुरू किया। एक चरण मे उन्होने सिखो के लिए सुविधाए जुटाकर उन्हे अपना अहसानमन्द बनाया और दूसरे चरण में हिन्दुओ के प्रति सन्देह एव वैमनस्य उत्पन्न कर उन्हे पृथक करने का प्रयास किया। सरकारी स्तर पर ऐसा साहित्य प्रकाशित किया गया कि सिखों को अहसास हो कि वे हिन्दुओ से अलग कौम है। उदाहरण स्वरूप १८०३ मे गवर्नमैंट प्रिंटिंग आफिस, शिमला द्वारा प्रकाशित लैफ्ट० गवर्नर एम० मैकालिफ की पुस्तिका— सिख धर्म और राज्य को उससे लाभ'—को देखा जा सकता है। इसका एक अश है—'पिछली बार जो जनगणना हुई उसमे देहात म सिखो ने अज्ञानवश प्राय अपने आप को हिन्दू लिखवाया, वास्तव मे वे हिन्दू ही हैं। परन्तु समय के साथ हिन्दुओ और सिखो के बीच एक गहरी खाई पैदा हो गई है।' यह प्रयास प्रथम स्वतन्त्रता सग्राम (१८५७) से पूर्व शुरू जबकि सिखो को सुविधाए देने का तांता नही लगा था। मैकालिफ ने छह भागों में 'दी सिख रिलीजन' नामक ग्रथ लिखा जिसे आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ने प्रकाशित किया। सुशिक्षित सिखो में यह ग्रथ बहुचर्चित रहा है, आज भी है और अनेक सिख नेताओं ने ग्रन्थ साहब से भी अधिक इस पर विश्वास करके इससे प्रेरणा लेकर अकालीवाद का परचम उठाया है। इस ग्रंथ के कुछ अंश इस प्रकार हैं।

'हिन्दुत्व ने सिख मत को अपनी चपेट मे ले लिया है, तुलनात्मक नया सिख मत अपनी सुरक्षा के लिए भारी जोर लगा रहा है, परन्तु यदि सरकार इसे सहायता न दे तो इसका सर्वनाश सुनिश्चित है।' (भूमिका० पृ० ५७)

जैसे सरकारी सहायता के अभाव मे बौद्ध धर्म भारत मे पूर्णतया नष्ट हो गया, वैसे ही यदि सरकार सहायता न करे तो सिख धर्म के भी भारत के मत-मतान्तरों के झमेले मे लुप्त हो जाने की आशका है।'

(भूमिका, पृ० ५७)

"वास्तव में हिन्दू धर्म की ताकत और जीवनशक्ति अद्भुत है इसी भांति अनेक शताब्दी पूर्व हिन्दू धर्म ने अपने देश मे बुद्ध धर्म को समाप्त किया इसी ढग से हिन्दू धर्म ने उत्तरी भारत के सीथियन आक्रमणकारियो के धर्म को ग्रसित किया, इसी प्रकार इसने अशिक्षित मुसलमानो के दीन को नीम-बुतपरस्त सम्प्रदाय मे परिवर्तित कर दिया और इस विधि से यह बाबा नानक द्वारा सशोधित और आशाजनक धर्म को निगल रहा है। मुझे निराशा नही है कि जब रोशन दिमाग शासक सिख धर्म के गुणो से परिचित हो जायेंगे तो वे इसे हिन्दू धर्म रूपी खाई मे, जिसने पहले अनेक धर्मो को निगल लिया है, खुशी से नष्ट नही होने देंगे। (भूमिका पृ० ५८)

यद्यपि इस काल खण्ड मे टरम्प तथा मैकनिकाल ऐसे लेखक भी हुए जिन्होने अपनी पुस्तको मे लिखा कि गुरु गोविन्द सिंह जी सिख धर्म के केन्द्र मे हिन्दू रहन सहन, आचार व्यवहार तथा निश्चयो को लाए और सिखो को हिन्दुओ से जा मिलाया किन्तु उग्रवाद की लहर मे बहते सिखो ने इस ओर ध्यान न देकर मैल्किम, कनिंघम और मैकालिफ आदि को विशेष रुचि से पढा। इसी का फलितार्थ है कि डा० शेरसिंह एक पढे हुए तोते की तरह इस प्रकार बोलते हैं।

हिन्दू धर्म जैसा कि ऐतिहासिक घटनाओ से ज्ञात होता है, बडी शालीनता तथा धीमी रुचि वाला दूरदर्शी सगठन है। किसी नए धर्म अथवा मत को पहले तो सहन किया जायगा और फिर यदि नए धर्म वाले बहुत सावधान न रहे तो उस मत को अपनाया भी जाएगा तथा अन्त मे वह मत हिन्दू धर्म रूप महान सागर मे लुप्त हो जाएगा। डाक्टर बैटी रायमन के कथनानुसार यह हिन्दू धर्म की समाविष्ट करने वाली शक्ति है, हिन्दू धर्म का यह महान गुण है। सैकडो मत उत्पन्न हुए, पर्याप्त प्रयत्न करने पर भी अन्त म वे लुप्त हो गए। प्राचीन भारतवासियो के विश्वास और निश्चय अलग अथवा शुद्ध रूप मे कही भी देखने मे नही आते।'

भारत मे बुद्ध मत के साथ भी धीरे धीरे ऐसा हो रहा है और तो और, वे धर्म तथा मत जो भारत से बाहर उत्पन्न हुए तथा फले-फूले जब भारत मे आए तो हिन्दू धर्म के रग मे रगे जाने से बच न पाए। क्या पता समय पाकर वे भी हिन्दू धर्म की शाखाए बन जाए। भारतीय इस्लाम भारतीय ईसाई धर्म भारतीय पारसियो के विश्वास, एव रहन सहन देखें तो यह आश्चर्य पूर्ण विलीनता तथा प्रभावशाली शक्ति स्पष्ट हो जाएगी। सिखो पर हिन्दुत्व का प्रभाव दशमेश जी के पश्चात शीघ्र ही पडना आरम्भ हो गया था। उस समय से लेकर अब तक सिख अपने जीवन सग्राम मे ही जूझ रहे हैं। इसका स्वाभाविक प्रभाव यह पडा कि वे सैद्धांतिक पक्ष को भली प्रकार से अलग नही कर पाए और अपने सिखी जीवन का दार्शनिक आधार पाने मे असमर्थ रहे हैं।' (गुरमत दर्शन' पृ० २१ २३)

महाराजा रणजीत सिंह जिस पर कोई भी सिख गौरव कर सकता है, आज पृथकतावादी सिख लेखको की आलोचना का शिकार बन चुके हैं। डा शेरसिंह लिखते हैं—'महाराजा रणजीत सिंह और अन्य सिख राजाओ तथा सरदारो का जीवन बहुधा हिन्दू साचे मे ही ढला हुआ था। वे अपने कार्य व्यवहार के समय ऐसे सस्कार तथा रीति-रिवाज अपनाते थे जो या तो वास्तव मे हिन्दू थे और बाद मे उन्हे सिख धर्म का जामा पहनाया गया अथवा रूप दिया गया था वे प्रारम्भ मे शुद्ध रूप मे सिख थे तथा समय पाकर अब हिन्दू रग मे रगे गए थे। गुरुद्वारो के लिए जागीरें, जमीनें सगमरमर तथा राजसी शामियाने आदि जुटाना या प्रबन्ध करना उनके विचारो मे सिख धर्म के प्रचार का मुख्य साधन था। उन्हे धार्मिक क्षेत्र मे न सिखो का अशोक और न ही मुसलमानो का औरगजेब कहकर स्मरण किया जायेगा।"

(गुरमत-दर्शन पृ० २१ से २८ तक)

डा० शेरसिंह सर ए० सी० लायल की पुस्तक एशियाटिक स्टडीज के पृष्ठ १४४ पर प्रकाशित इन शब्दों को उद्धृत करते हैं— सिख जैसे-जैसे राजनैतिक तथा व्यावहारिक जीवन में आगे बढ रहे हैं वैसे वैसे वे अपने आपको हिन्दुओ से अलग करने के लिए कम प्रयत्न करते हैं।' (गुरमत दर्शन पृ० २२) और इन पर अपनी व्यथा प्रकट करते हुए सिखो का आह्वान करते हैं कि वे अपने को हिन्दुओ से पृथक् समझे। (क्रमश)

आर्य समाजों की गतिविधियां

स्वामी गुरुकुलानन्द कन्दाहारी का वेद प्रचार

इलाहाबाद । १३ अप्रैल को "भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा केन्द्र-भसारी' का उदघाटन करते हुए स्वामी गुरुकुलानन्द कन्दाहारी ने शिष्यकुल (स्कूल) और गुरुकुल प्रणाली का अन्तर समझाया । १६ अप्रैल १९८४ को 'गुरुकुल सिराथू" मे स्वामी जी ने कहा कि यदि पूरे देश मे गुरुकुल प्रणाली सरकार द्वारा लागू कर दी जाय तो राष्ट्रीय चरित्र में स्थायित्व आ सकता है । वास्तव मे ब्रह्मचर्य आश्रम का आधार तो गुरुकुल प्रणाली है । उसी दिन साय श्री जगमोहन भसारी के पौत्र सत्यदेव के चूड़ाकर्म संस्कार मे सोलह संस्कारो की व्याख्या स्वामी जी द्वारा की गई ।

—त्रिलोक रावत, मन्त्री

शोध ग्रन्थ

निम्न हस्ताक्षर कर्ता को राजस्थान विश्वविद्यालय की ओर से पी. एच. डी. के अनुसधान के लिए स्वामी दयानन्द चरित मूलक हिन्दी प्रबन्ध काव्य विषय अनुमोदित किया गया है । अत. जिन सज्जनों के पास उपरोक्त विषय से सम्बन्धित सामग्री हो या स्वामी दयानन्द के सम्बन्ध में कोई प्रबन्ध काव्य उपलब्ध हो या जिनकी दृष्टि से गुजरा हो तो कृपया निम्न पते पर सूचित करने का कष्ट करें ।

—ओम शरण 'विजय'
२९० विजय सदन, हनुमान जी का रास्ता
जयपुर-३ (राजस्थान)

निर्वाचन

आर्य समाज अफजलगढ (बिजनौर) का निर्वाचन २९-४-८४ को हुआ । प्रधान श्री विजयपालसिंह, मन्त्री श्री सतीश कुमार और कोषाध्यक्ष श्री चौ० चरणसिंह जी निर्वाचित हुए ।

आर्य समाज बिजनौर

६-५-८४ को समाज का निर्वाचन हुआ । प्रधान श्री विधु शेखर मन्त्री, श्री गजेन्द्रपालसिंह, तथा कोषाध्यक्ष श्री हेमराज कान्त दुबे निर्वाचित हुए ।

रमेशचन्द्र जी का बलिदान

विश्व वेद परिषद् चण्डीगढ़ द्वारा शोक प्रस्ताव

पजाब के हक परस्त दैनिक समाचार पत्र हिन्द समाचार समूह के मुख्य सम्पादक मानवता के प्रतीक श्री रमेशचन्द्र की दिन दिहाड़े सरे बाजार निर्मम हत्या पर विश्व वेद परिषद् चण्डीगढ़ अत्यन्त शोक और दुःख प्रगट करती हुई प्रान्त की और देश की सरकार से इस घिनौनी हत्या के अपराधियों को तुरन्त गिरफ्तार करके कड़ा दण्ड देने की प्रबल मांग करती है जिसके प्रभाव में पंजाब और समूचे देश में बढ़ने हुये प्रतिदिन कत्ल व भारत से चारों ओर अशान्ति बेचैनी और अत्यन्त भय का वातावरण बढ़ता जा रहा है ।

—आसुराम आर्य

ऋतु अनुकूल हवन सामग्री

हमने आर्य यज्ञ प्रेमियों के आग्रह पर संस्कार विधि के अनुसार हवन सामग्री का निर्माण हिमाचल की ताजी जड़ी बूटियों से प्रारम्भ कर दिया है, जो कि उत्तम, कीटाणु नाशक, सुगन्धित एवं पौष्टिक तत्वों से युक्त है यह आदर्श हवन सामग्री अत्यन्त अल्प मूल्य पर प्राप्त है। थोक मूल्य ४) प्रति किलो ।

जो यज्ञ प्रेमी हवन सामग्री का निर्माण करना चाहें वह सब ताजी हिमालय की वनस्पतियां हमसे प्राप्त कर सकते है, वे चाहें तो कुटवा भी सकते हैं यह सब सेवा मात्र है ।

योगी फार्मेसी, सकसर रोड
डाकघर गुरुकुल कांगड़ी २४९४०४, हरिद्वार (उ० प्र०)

सम्पादक के नाम पत्र

महोदय,

ईश्वर, खुदा या गॉड ने मनुष्य को सुन्दर और शक्तिशाली शरीर इस लिए दिया है कि वह अपनी महान, छुपी हुई शक्तियों को पहचान कर जीवन को सफल बनाए एवं इस संसार को भी सुन्दर सदुद्देश्य पूर्ण बनाने का प्रयास करें ।

यह मनुष्य दुनिया में व्यर्थ नही आया, उसका जीवन व्यर्थ मे गंवाने के लिए नही है ।

कुछ व्यक्ति जीवन के महान् आदर्श को भूल जाते हैं, किसी भी दिशा की ओर चल पड़ते हैं, भटक जाते हैं, लक्ष्य से ।

अपनी स्वार्थपरक अभिलाषाओं की पूर्ति के लिए वे किसी को भी हानि पहुंचा देते हैं तथा दूसरों के दुःखों का कारण बन जाते हैं ।

ऐसे लोग अपनी इच्छाओं के लिए दूसरों का गला काटने का ही प्रयास करते हैं ।

आगे बढने का यह तरीका, किसी भी मजहबी ग्रन्थ मे क्यों न हो, गलत है, त्याज्य है । आगे बढ़िये, खूब बढ़िये, दौड़िए—किन्तु अपने विश्वास व शक्ति के बल पर । दूसरो को धक्का देकर चोट पहुंचा कर, या गिरा कर आगे बढने का प्रयास यह चरित्र-स्तर की गिरावट है, कभी मत कीजिये ।

—आनन्द मुसाफिर, सा० सा० विभाग
इन्टर नेशनल पायनियर्स क्लब, पूरनपुर (उ० प्र०)

जिला सभा बिजनौर गढ़वाल

वार्षिक निर्वाचन २२-४-८४ को श्रीपाल शास्त्री की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ ।

प्रधान श्री जगदीशसिंह आर्य मन्त्री, श्री जयनारायण अरुण कोषाध्यक्ष, श्री प्रयाग दत्त शर्मा प्रचार अधिष्ठाता, श्री आनन्द प्रकाश शर्मा निर्वाचित हुए ।

विविध समाचार

आर्यवीर दल हरियाणा द्वारा शिविरों का कार्यक्रम

प्रान्तीय आर्य वीर दल की आवश्यक बैठक जो दिनांक २२ अप्रैल १९८४ को प्रो० उत्तमचन्द जी शरर की अध्यक्षता मे हुई उसमे ग्रीष्मावकाश मे निम्नलिखित शिविर विभिन्न स्थानो पर लगाये जाने का निर्णय लिया गया।

१६ मई से २० तक ग्राम किशनपुरा माजरा (यमुनानगर) २७ मई से ३ जून तक आर्य समाज नरवाणा, ८ जून से १० जून तक आर्यसमाज कम्बोपुरा (करनाल), ११ जून से १७ जून तक आर्य समाज न्यू कालोनी पलवल, १५ जून से १७ जून तक आर्य समाज दादूपुर करनाल, २४ जून से १ जुलाई तक आर्य समाज माडल टाउन करनाल।

आर्य वीरांगना दल के शिविर

२८ मई से ३ जून तक आर्य समाज कुंजपुरा करनाल, ४ जून से १० जून तक रोहतक।

अगला आठवा प्रान्तीय आर्य वीर महासम्मेलन १३, १४ अक्टूबर को पानीपत मे होगा, जिसकी तैयारियां अभी से आरम्भ कर दी हैं। यह सम्मेलन आर्य समाज बड़ा बाजार पानीपत के शताब्दी समारोह के साथ मनाया जायेगा। वेदप्रकाश आर्य

मन्त्री सार्वदेशिक आर्य वीरदल हरियाणा

आर्य वीरदल उदयपुर के सदस्य आबू पर्वत जायेंगे

राजस्थान एवं गुजरात की आर्य समाजो की तरफ से आबू पर्वत पर आर्य वीर दल का दिनाक १५ मई ८४ से १५ जून ८४ तक एक शिविर आयोजित किया जा रहा है जिसमे ५०० आर्य वीरो के भाग लेने की सम्भावना है। शिविर मे भाग लेने हेतु उदयपुर आर्यवीर दल के छ सदस्य १५-५ ८४को आबू पर्वत पहुच गए हैं।

शिविर के आयोजन का उद्देश्य चरित्रवान बलवान निष्ठावान, आर्यवीरों का निर्माण कर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु सच्चे मिशनरी तैयार करना है। साथ ही शिविर मे आर्य वीरो को विद्वान आचार्यों द्वारा बौद्धिक शिक्षा, अस्त्र-शस्त्र के विशेषज्ञों द्वारा लाठी, तलवार, भाला, बन्दूक आदि की शिक्षा एवं शारीरिक उन्नति के लिए व्यायामाचार्यों द्वारा व्यायाम की शिक्षा दी जायेगी, जिससे नौजवान अपना व देश धर्म का पूर्ण भला करने मे समर्थ हो सके।

—ज्ञानप्रकाश, प्रचार मन्त्री, उदयपुर

आर्य समाज कलकत्ता पुरस्कार वितरण

आर्य समाज कलकत्ता ने बसन्तोत्सव के अवसर पर अपने रघुनाथ आर्य विद्यालय के माध्यमिक परीक्षा में प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण ८ छात्रो तथा आर्य कन्या महाविद्यालय माध्यमिक विभाग की ६ उच्चतर माध्यमिक विभाग की ९ प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण छात्राओं को पुरस्कृत किया।

शुद्धि संस्कार (वैदिक धर्म प्रवेश)

दिनाक ४-३ ८४ को कुमारी शाबिया कैसर ने प० प्रियदर्शन सिद्धात भूषण के पौरोहित्य मे इस्लाम धर्म त्याग कर वैदिक धर्म मे प्रवेश किया। इनका नाम निर्मला आर्य (मलानी) रखा गया।

दिनाक १७ ४-८४ को श्री मौरिस हेल्डट ने प० प्रियदर्शन सिद्धातभूषण के पौरोहित्य में ईसाई धर्म त्यागकर वैदिक धर्म मे प्रवेश किया। इनका नया नाम महेश अग्रवाल रखा गया।

दिनाक १७-४ ८४ को श्री नूरुल्ला ने प० प्रियदर्शन सिद्धात भूषण के पौरोहित्य मे इस्लाम धर्म त्याग कर वैदिक धर्म मे प्रवेश किया। इनका नया नाम ओमप्रकाश रखा गया।

दिनाक २२-४-८४ को श्री कृष्टो फान्सिस ने प० शिवनन्दन प्रसाद वैदिक के पौरोहित्य मे ईसाई धर्म त्यागकर वैदिक धर्म मे प्रवेश किया। इनके साथ इनकी पत्नी और तीन बच्चो ने भी वैदिक धर्म मे प्रवेश किया। इनका नया नाम श्री कृष्ण स्वामी रखा गया।

—राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल, मन्त्री

आर्य नेताओं को धमकियां दिए जाने पर रोष क्षोभ

आर्य समाज, जवाहर नगर (लालकुर्ती) मेरठ की साधारण सभा दि० १३-४-८४ मे आर्य जगत की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले एव मन्त्री श्री ओम्प्रकाश पुरुषार्थी को उग्रवादियो द्वारा जान से मारने की धमकी दिए जाने पर गहन चिन्ता व क्षोभ व्यक्त किया गया। सभा मे एक स्वर से केन्द्रीय सरकार से यह माग की गई कि वह इन दोनो नेताओ की अविलम्ब रक्षा व्यवस्था करे तथा उग्रवादियो की गतिविधियो पर प्रभावशाली ढग से अकुश लगाए। सभा मे अन्त मे यह चेतावनी भी दी गई कि यदि किसी भी आर्य नेता या कार्यकर्ता को कुछ हुआ तो उसके गम्भीर परिणाम होगे।

—देवप्रकाश, मन्त्री

डा० शशि का सम्मान

भारत सरकार के प्रकाशन विभाग मे नवनियुक्त निदेशक डा० श्यामसिंह शशि के सम्मान मे भारतीय विद्याभवन मे लेखको शिक्षको एव पत्रकारो की संक्षिप्त गोष्ठी हुई। श्री शशि जाने माने समाज शास्त्र विज्ञानी लेखक एव साहित्यकार हैं। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल मे हुई थी एव वे एक रचनात्मक आर्य समाज के कार्यकर्त्ता हैं। इन दिनो एक आर्य विश्व कोष के संकलन मे लगे हुए हैं। अन्य वक्ताओ के अतिरिक्त इस अवसर पर पद्मश्री आचार्य क्षेमचन्द सुमन ने कहा कि शशि दयानन्द की भावना के मानव हैं जो बराबर समाज को देने मे विश्वास रखकर साहित्य द्वारा निरन्तर साधना मे लगे रहे हैं। उन्होने उनके श्रेष्ठतम दीर्घजीवन की कामना की। श्री यशपाल जैन, डा० मानदा असद आदि साहित्यकारो ने उनके सहृदय मानव एव कर्त्तव्य परायण रूप की जहा चर्चा की, वहा नन्दन के सम्पादक श्री जयप्रकाश भारती ने उन्हे श्रेष्ठ बाल साहित्यकार की कोटि मे रखा। डा० शशि ने अपने भाषण मे ऋषि दयानन्द के जीवन को अपना प्रेरणास्रोत बताया। इस अवसर पर श्री ब्रह्मदत्त स्नातक एव प० क्षितीश वेदालकार भी पहुचे थे। सभा प्रधान श्री लाला रामगोपाल शालवाले ने डा० शशि को बधाई भेजी है। —सम्वाददाता

निर्वाचन

—आर्य समाज बाजार सीताराम दिल्ली १३ ५ ८४ प्रधान श्री लाला प्यादर मल, मन्त्री श्री बाबूराम आर्य, कोषाध्यक्ष श्री राजीव।

बम्बई

दिनांक १३-४-८४ को प्रातः ९ बजे

महानगर पालिका बम्बई द्वारा जुहू लाइन्स उद्यान मे आयोजित बिट्ठल भाई पटेल रोड (लिंकिन रोड) और पुलिस स्टेशन सान्ताक्रुज (प०) के समीप जुहू मार्ग के सगम पर स्थित चौक को "आर्य समाज चौक" घोषित कर उसका नामकरण समारोह सम्पन्न किया। समारोह का निमन्त्रण श्रीमती कुन्दा कदम महानगर पालिका उप आयुक्त (परिमण्डल ४) की ओर से भेजा गया। समारोह की अध्यक्षता आर्य नेता सेठ प्रतापसिंह शूरजी बल्लभदास जी ने की। "आर्य समाज चौक" का उद्घाटन राज्य सभा सदस्य श्री जगेश देसाई ने किया।

इस अवसर पर महानगर पालिका के भूतपूर्व महापौर सर्वश्री मनमोहन सिंह वेदी एव प्रभाकर पाई के अतिरिक्त भूतपूर्व नगरनिगम पार्षद श्री प्राणनाथ सहगल, प्रभाकर वैद्य, डा० एस, मजूमदार एव वार्ड आफीसर श्री ए० एस० दुबे भी उपस्थित थे।

आर्य समाज के प्रधान श्री प्रकाशचन्द जी मूना ने उपस्थित मेहमानो का पुष्पहार से स्वागत किया एवं आपने अपने भाषण मे आर्य समाज सान्ताक्रुज की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। भाजपा नेता श्री प्राणनाथ सहगल ने कहा मुझे आर्य समाजी परिवार में पैदा होंने का गर्व है। 'आर्य समाज चौक" बनाने की मेरी प्रार्थना को समस्त नगर पार्षदों ने सर्वसम्मति से स्वीकार किया, अतः मैं उनका आभारी हू।

आर्य समाज के भूतपूर्व महामन्त्री कैप्टिन देवरत्न आर्य ने उपस्थित महानगर पार्षदों एवं श्री बल्देव सत्री का हृदय से धन्यवाद किया, जिनकी शुभकामनाओं और मेहनत के फलस्वरूप इस चौक का नाम "आर्य समाज चौक" रखा गया। उन्होंने उप आयुक्त श्रीमती कुन्दा कदम से प्रार्थना की कि वे इस चौक पर अशोक वृक्ष एवं संगमरमर पर आर्य समाज के नियम लिखकर लगाने की अनुमति प्रदान करें। श्रीमती कुन्दा कदम ने तालियों की गड़गड़ाहट के मध्य कहा कि इस आशय का प्रार्थना-पत्र भेज दें मैं आपको स्वीकृति देनेका आश्वासन देती हूं। अपने अध्यक्षीय भाषण मे सेठ प्रताप भाई ने आर्य समाज द्वारा स्वाधीनता संग्राम में दिये योगदान का विस्तृत विवरण दिया। उद्घाटन भाषण में श्री जगेश देसाई ने कहा आर्य समाज हिन्दू जाति का प्रहरी बनकर रहा है और भविष्य में भी राष्ट्रीय संकटों पर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा ऐसी आशा है।

उपर्युक्त मेहमानोंके अतिरिक्त श्री जगदीशचन्द्र मल्होत्रा श्री प्रकाशचन्द जी मूना के भाषण भी हुए। आर्य समाज के महामन्त्री डा० प्रेमचन्द विवान ने धन्यवाद दिया। आर्य विद्या मन्दिर की बालिकाओं ने समारोह के प्रारम्भ मे ईश प्रार्थना गाई व अन्त मे राष्ट्रीय गीत के साथ समारोह की समाप्ति हुई।

—प्रकाशचन्द्र मूना, प्रधान

गुरुकुल होशंगाबाद में प्रवेश प्रारम्भ

आर्य प्रतिनिधि सभा म० प्र० व विदर्भ के द्वारा सुसंचालित आम्र कुंजों के मध्य नर्मदा के पावन तट पर गुरुकुल होशंगाबाद मे ५ वी कक्षा उत्तीर्ण छात्रों के लिए १५ जुलाई तक प्रवेश प्रारम्भ है। श्रीमद्दयानन्दार्ष विद्यापीठ गुरुकुल झज्जर के पाठ्यक्रमानुसार आचार्य तक पढाई होती है। बौद्धिक उन्नति के साथ ही शारीरिक व आत्मिक उन्नति परविशेष ध्यान दिया जाता है। इस वर्ष मात्र २७ विद्यार्थियों ही को प्रवेश दिया जा सकेगा अत. प्रवेश कराने के इच्छुक पालक शीघ्र ही सम्पर्क स्थापित करें।

—अमृतलाल शर्मा, विद्या वाचस्पति

उत्सव सम्पन्न

—आर्य समाज छपरा [बिहार] का वार्षिकोत्सव २४ से २७ मई तक मनाया गया।

—आर्य कुमार सभा किंग्जवे कैम्प दिल्ली का वार्षिकोत्सव १९ मई को श्री सरदारी लाल प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की अध्यक्षता मे सम्पन्नहुआ।

—आर्य समाज बाह सैयद राजा देवरिया का उत्सव १, २, ३ जून १९८४ को होगा।

—यजुर्वेद पारायण महायज्ञ २७ से ३० मई तक आर्य समाज धौलपुर मे धूमधाम से हुआ।

स्वर्गीय श्री धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड की धर्मपत्नी श्रीमती विद्यावती जी का देहावसान

दिनांक १५ मई बुद्ध पूर्णिमा के दिन प्रातः ७ बजे आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान श्री धर्मदेव विद्यामार्तण्ड की धर्मपत्नी श्रीमती विद्यावती का हृदय गति रुक जाने से निधन हो गया। वे ७९ वर्ष की थी। उनका निधन समाचार सुनकर समूचे आर्य जगत में शोक की लहर दौड गई। उनका अन्त्येष्टि सस्कार निगम बोध घाट पर महात्मा प्रभु आश्रित जी के सुपुत्र श्री लखपत शास्त्री ने वैदिक रीति से सम्पन्न कराया। अन्तिम दर्शन करने वालो में विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया जिनमें प्रमुख रूप मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले सभा संयुक्त मन्त्री श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री प्रमुख रहे। चिता को अग्नि उनके छोटे सुपुत्र श्री भारत भूषण (न्यूज एडिटर पी० टी० आई दिल्ली) ने दी। श्रीमती विद्यावती माननीय धर्मदेव विद्यामार्तण्ड की विदुषी तथा समाज सेविका धर्मपत्नी थी। स्वामी श्रद्धानन्द जी के आदेश पर जब पण्डित जी दक्षिण भारत मे हिन्दी तथा वैदिक धर्म के प्रचार के लिए गये तो उनकी धर्म पत्नी ने भी वहा स्त्रियों मे कन्नड़ भाषा सीख कर प्रचार किया। वे संगीत की मर्मज्ञ थी। उसी को माध्यम बनाकर उन्होने प्रचार मे सफलता प्राप्त की। उन्होंने सोम सुधा तथा अन्य पुस्तकों की रचना की। उनकी धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा थी श्रीमती विद्यावती प्रेम तपस्या, सादगी दान दया की प्रति मूर्ति थी। उनके निधनसमाचार सुनकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर आर्य समाज डी. ए. वी. हरिद्वार आर्य समाज लाजपत नगर आर्य समाज अशोक नगर आर्य कन्या गुरुकुल न्यू राजेन्द्र नगर दिल्ली ने उनके संस्मरण सहित शोक प्रस्ताव भेजे है दक्षिण भारत की उनकी बहुत सी शिष्याओं ने भी संवेदना व्यक्त की हैं। दिवंगत आत्मा की सद्गति की परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

ब्र० नन्द किशोर एम. ए विद्यावाचस्पति
सार्वदेशिक आनन्द सन्यास आश्रम अध्यक्ष
गीता आश्रम ज्वालापुर।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज चैनपुर (पटना) ने अपनी एक विशेष बैठक में भवन की मरम्मत कराने और वार्षिकोत्सव करने का निश्चय किया। धन संग्रह के लिए एक समिति भी नियुक्त की। यह बैठक समाज के प्रधान श्री नगीना सिंह की अध्यक्षता में हुई।

इसी बैठक मे आर्य समाज के कर्मठ सदस्य श्री सियाशरण सिंह के सुपुत्र श्री नागेन्द्र कुमार की आकस्मिक मृत्यु पर शोक प्रस्ताव पारित किया गया। मृत्यु ट्रेक्टर की दुर्घटना से हुई।

—पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी का त्रयोदश वार्षिकोत्सव १, २, ३ जून ८४ को सम्पन्न होगा। कार्यक्रम प्रभावशाली और आकर्षक रहेगा।

—प्रज्ञादेवी आचार्या, मोती झील के पीछे

शिक्षा आवास तथा भोजन की निःशुल्क व्यवस्था वाले
गुरुकुल आर्य नगर हिसार (हरयाणा) में

नवीन छात्रों का प्रवेश

गुरुकुल आर्य नगर हिसार मे नवीन छात्रो का प्रवेश आरम्भ हो चुका है। प्रवेशार्थी की आयु १० वर्ष से कम नहीं होनी चाहिए। पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी का है। अन्तिम परीक्षा विद्याधिकारी मैट्रिक तथा विशारद के समकक्ष मान्यता प्राप्त है। इसके अतिरिक्त प्राज्ञ विशारद एव शास्त्री कक्षाओ हेतु विशेष प्रबन्ध है। शिक्षा आवास तथा भोजन सर्वथा नि शुल्क है। प्रवेश की अन्तिम तिथि ३० जून १९८४ है। शीघ्रता करे क्योकि स्थान सीमित है। जलवायु उत्तम तथा स्वास्थ्यवर्धक है। गुरुकुल हिसार शहर से ३ मील की दूरी पर बालसमन्द मार्ग के समीप नहर के किनारे एक ऊंचे स्थान पर स्थित है। नियम पत्र निम्न पते पर नि शुल्क प्राप्त करे।

उपाचार्य गुरुकुल आर्यनगर, पो० कुरडी
जि० हिसार (हरयाणा)

सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है

आर्य समाज जयपुर हाउस आगरा-१० को एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है जो सस्कार कराने मे निपुण हो थोड़ा सगीत ज्ञान हो तो उचित है। विवाहित को प्राथमिकता दी जाएगी। दक्षिणा योग्यता अनुसार जल विद्युत आवास आर्य समाज की ओर से नि शुल्क।

निम्न पते पर सम्पर्क करें— —कुलदीप कृष्ण, महाजन
मन्त्री आर्य समाज जयपुर हाउस
आगरा-१० (उ० प्र०)

१०१५०—पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार
जि०—सहारनपुर उ०

नई दिल्ली, २६ मई। पश्चिमी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान राजाराम आर्य ने घोषणा की है कि यदि तीन जुलाई तक पजाब मे कत्लेआम बन्द न हुआ और अपराधी उग्रवादियो को गिरफ्तार न किया गया तो आर्यसमाज दिल्ली मे आन्दोलन शुरु कर देगा। (पजाब केसरी २७-५ ८४)

विवाह सम्पन्न

बेंकोक (थाईलैण्ड) आर्यसमाज के उपप्रधान श्री डा० विजय बहादुरसिंह के पुत्र गोपालसिंह का विवाह बेंकोक निवासी श्री नरेन्द्रसाहू की पुत्री रत्ना के साथ पूर्ण वैदिक रीति से प० शिवराज शर्मा के पौरोहित्य मे गोरखपुर मे २७-४-८४ को सम्पन्न हुआ। वरपक्ष की ओर से कन्यापक्ष से कोई दहेज की माग नहीं की गई, जो एक आदर्श था।

बेंकोक आर्यसमाज के मन्त्री श्री प्रसिद्ध नारायण तिवारी की पुत्री माला का विवाह श्री सुरेन्द्र के पुत्र अखिलेश के साथ बाल भीटी में ४-१-८-८४ को सादगी से सम्पन्न हुआ।

दोनों ही विवाहो में आर्योपदेशक दम्पति श्री ओरामरसिंह तथा प्रभावती देवी ने वरवधू को आशीर्वाद दिया साथ अपने प्रवचनों में वैदिक विवाह पद्धति पर प्रकाश डाला। —प्रसिद्ध नारायण तिवारी
मन्त्री आर्य समाज बेंकोक (थाईलैण्ड)

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली-२ में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८५] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दयानन्दाब्द १६० दूरभाष : २७४७७१
वर्ष १९ अङ्क २७] ज्येष्ठ शु० १२ स० २०४१ रविवार १० जून १९८४ वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति ४० पैसे

पंजाब को सेना के हवाले कर दिए जाने का सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा स्वागत

सभा की अन्तरंग का प्रस्ताव

दिल्ली, ३ जून १९८४।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (रामलीला मैदान, नई दिल्ली) की अन्तरग की एक विशेष बैठक आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल चादनी चौक, दिल्ली मे प्रात १० बजे से सभा प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले की अध्यक्षता मे हुई। इस बैठक मे आन्ध्र प्रदेश, बगाल, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान, पजाब, हरियाणा, हिमाचल, जम्मू काश्मीर, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के सदस्यो तथा वरिष्ठ आर्य नेताओ ने भाग लिया।

इस बैठक मे अन्य महत्वपूर्ण विषयो पर निर्णयो के अतिरिक्त पजाब की स्थिति के सन्दर्भ मे निम्न प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ —

प्रस्ताव

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब मे आतकवादियो को कार्यवाहियो से निपटने के लिए सेना के सुपुर्द किए जाने सम्बन्धी भारत सरकार के निर्णय का हार्दिक स्वागत करती है। इस बात पर विशेष प्रसन्नता प्रकट करती है कि तत्काल सेना की टुकडियो के सुपुर्द यह काम सौप दिया गया है।

सरकार की इस कार्यवाही के प्रति अपनी सहमति प्रकट करते हुए, यद्यपि यह कारवाही देर से हुई है, हम सिक्खो की मागो के नाम पर और प्रशासन द्वारा विगत २-२॥ वर्षो से अपनाई जा रही ढुलमुल नीति के कारण हुई हानियो का स्मरण न कराते हुए सरकार को सावधान करते हैं कि सेना के सुपुर्द जो कार्य किया गया है, उसके सुचारु रूप से सचालन के लिए भी यह जरूरी है कि उसके उत्तरदायित्व के निर्वाह मे कभी भी किसी का हस्तक्षेप न हो मुख्यत अब जब कि पजाब की गम्भीर स्थिति के परिपेक्ष्य मे सरकार द्वारा अन्तिम निर्णय ले लिया गया है।

इस परिस्थिति मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा राष्ट्रीय हित मे सरकार के ध्यान मे यह बात लाना भी आवश्यक समझती है कि कुछेक शक्तिया, मुस्लिम पुनरुत्थान वादियो, पजाब के उग्रवादियो, आतकवादियो और विदेशी तत्वो के साथ मिल-जुलकर दक्षिण भारत मे भी पजाब जैसे आदोलन की विकट भूमिका की योजना बना रहे हैं। यह भी ध्यान मे लाया गया है कि प्रमुख राष्ट्रवादियो, कर्त्तव्य निष्ठ विशिष्ट सरकारी प्रतिनिधियो को भी राष्ट्र विरोधी तत्वो का पर्दाफाश करने पर गम्भीर परिणाम भुगतने की धमकिया दी जा रही है। विघटनकारी शक्तियो द्वारा उत्तर प्रदेश मे भी एक मुस्लिम बहुल राज्य की स्थापना का निर्णय चितनीय है।

हम भारत सरकार से प्रार्थना करते है कि वह इस धमकी को भी उसके वास्तविक स्वरूप मे देखे और स्थिति के हाथ से निकल जाने से पूर्व ही दृढ कदम उठाकर समुचित कार्यवाही करे।

शोक प्रस्ताव

इस बैठक मे कई आर्य श्रेष्ठियो के निधन तथा श्री ओम्प्रकाश जी बग्गा एव श्री रमेशचन्द्र जी के बलिदान पर शोक प्रकट किया गया।

पंजाब में आपात् स्थिति सम्भावित

नई दिल्ली, ३ जून। पजाब मे आपात् स्थिति भी लागू किए जाने की सम्भावना है लेकिन यह पग वहा तैनात सेना की कार्यगुजारी के परिणामो पर निर्भर करेगा ताकि राज्य मे सेना व सुरक्षा बलो को उग्रवादियो से निपटने के लिए और अधिक शक्तिशाली बनाया जा सके। वैसे राज्य की पुलिस और अर्द्ध सैनिक बलो को पहले ही विशेषाधिकारो से शक्तिशाली बनाया गया है और पजाब तथा चण्डीगढ को उपद्रवग्रस्त क्षेत्र घोषित किया गया है ताकि उग्रवादियो की हिसक गतिविधियो पर नियन्त्रण किया जा सके।

जानकार सूत्रो के अनुसार राज्य मे आपात्काल घोषित किया जाना अन्तिम पग होगा जो वहा चलाए जा रहे वर्तमान सैन्य अभियान के परिणामो पर निर्भर करेगा।

सूत्रो से ही ज्ञात हुआ है कि केन्द्र सरकार पजाब मे आपात्काल घोषित किए जाने पर काफी समय से विचार कर रही है और इस बारे मे कानूनी सलाह ली जा रही है। कानूनी सलाहो के अनुसार सरकार देश के किसी एक भाग या राज्य मे आपात् स्थिति घोषित कर सकती है। दूसरी ओर राजधानी के सभी राजनीतिक दलो के नेताओ व अन्य सगठनो द्वारा पजाब में उग्रवादियो से निपटने के लिए सेना बुलाई जाने सम्बन्धी सरकारी निर्णय का स्वागत किया है।

जानकार सूत्रो का कहना है कि पजाब एव चडीगढ मे ३६ घण्टे का कर्फ्यू लगाए जाने तथा सभी प्रकार के परिवहन पर पाबन्दी लगाए जाने के कारण लोगो के आवागमन को रोक कर उग्रवादियो के आश्रय स्थलो मे धावा बोलकर उन्हे गिरफ्तार करना है। यदि उग्रवादी किसी पूजास्थल मे भी छुपे हुए हो तो सेना वहा भी प्रवेश कर उन्हे पकडेगी। (शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—ओम्प्रकाश पुरुषार्थी सहसम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

भिवंडी के उपद्रव

शिव सेना के प्रमुख बाल ठाकरे ने कुछ भी क्यों न कहा हो जो मुसलमानो के कथनानुसार पैगम्बर साहब के प्रति अपमान जनक था परन्तु यह एक सच्चाई है कि भिवन्डी के उपद्रव के साथ इसका कोई सम्बन्ध न था। ये उपद्रव तो दो स्थानीय घटनाओं के कारण भड़के थे जिनमे मुस्लिम सम्प्रदाय के कुछेक राष्ट्र और समाज विरोधी तत्वो का बड़ा चढ़ा हाथ था।

शब्बेरात की रात को उपद्रव हुआ था जबकि मुसलमान अपने मुर्दों की कब्रो पर रोशनी करते हैं। इस वर्ष स्थानीय मुसलमानो ने तमाम शहर को हरी झडियो से ढाप देने का निश्चय किया। प्रशासन और हिन्दू समुदाय जिनकी सख्या ३० प्रतिशत है (मुसलमान ७० प्रतिशत है) इस कार्य से जो पहले कभी नही हुआ था चकित रह गए। शबरात के दिन मुसलमानो द्वारा झडिया लगाने का कार्य देश मे अन्यत्र कहीं भी नही होता।

यह सोचा गया था कि यह कार्य मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं को अपनी शक्ति का दिग्दर्शन कराने के लिए किया गया था जिन्होंने ३ मई के दिन शिवजयन्ती समारोह के अवसर पर नगर मे भगवा पताकाए लगाई थी और एक बहुत बड़ा शान्त जलूस निकाला था। हिन्दुओ के लिए हरी झडियो का लगाया जाना कौतूहल वर्द्धक था इसलिये भी कि मुसलमानो द्वारा यह कार्य उनकी नकल मे किया गया था।

झगडा तब शुरू हुआ जब कि मुसलमानो के एक गिरोह ने शिव सेना के कार्यालय पर हरा झडा लगाने की कोशिश की। इसके बाद इसी गिरोह ने रामेश्वर मन्दिर से सटे हुए एक पेड पर हरा झडा लगाने का उपक्रम किया। पेड पर चढने के प्रयास मे उनमे से कुछ मुसलमान मन्दिर पर चढे जिस पर कुछेक हिन्दुओ ने आपत्ति की। जब मुसलमान मन्दिर से नही उतरे तो हिन्दुओ के एक गिरोह ने उन्हे जबर्दस्ती वहा से हटा दिया। इस पर हाथापाई हुई परन्तु जब मुसलमानो ने हिन्दुओ से कम अपनी सख्या देखी तो भाग खडे हुए।

रात को ३००-४०० मुसलमान एक जलूस की शक्ल मे वहा गए और उस समय जो हिन्दू मन्दिर के आस पास एकत्र थे उन्हे मारना पीटना शुरू कर दिया। इस सघर्ष मे कुछेक हिन्दू जख्मी हो गए और भीड छट गई। दूसरे दिन प्रात ५ बजे के लगभग समाज विरोधी तत्वो ने उपद्रव किया। और तभी से ये बढते गए। हिंसा के पहले दौर मे हिन्दुओ की सम्पत्ति को आग लगाई गई। दूकान लूटी गई और उन्हे कत्ल किया गया। इस पर अल्पसख्यक हिन्दुओ को दुख और आश्चर्य होना स्वाभाविक था।

जब पुलिस ने हस्तक्षेप करने का यत्न किया तो उस पर गोलिया चलाई गई हिन्दुओ द्वारा बार बार लगाए गए इस आरोप को सत्य सिद्ध करते हुए कि मुसलमानो के कब्जे मे बिना लाइसेंस के बडी सख्या मे हथियार और बहुमात्रा मे गोला बारूद की सामग्री है। कहा जाता है हिन्दुओ पर हुआ प्रथम प्रहार इतना भयकर था कि वे जान बचाकर भाग जाने के सिवा और कुछ न कर सके। जब कुछेक पीडित और दूसरे शरणार्थी थाने और अन्य बम्बई के क्षेत्रो मे पहुँचे तो वहा अनायास ही बदला लेने की हिंसक प्रतिक्रिया व्याप्त हो गई और लूट मार के काडों मे निमग्न हो गए। कहा जाता है कि इसके बाद हिन्दुओ ने भिवडी मे भी बदला लिया।

इस प्रक्रिया मे भिवडी मे हिन्दू अधिक मारे गए जबकि थाने और बम्बई मे हताहत मुसलमानो की सख्या अपेक्षाकृत अधिक बताई और मानी गई है। भिवडी और दूसरी जगहो पर [illegible] हुआ है। इस समय तक (३१ मई) [illegible] मे २१४ व्यक्तियों के मारे जाने की रिपोर्ट मिली है।

इस समस्त काड की जिम्मेवारी मुस्लिम प्रेस और मुस्लिम नेताओ ने बाल ठाकरे पर डाली है।

उपद्रवों के शुरु होने पर बालठाकरे और शिव सैनिको की भूमिका कुछ भी क्यो न रही हो, यह कहे बिना नही रहा जा सकता कि भिवडी मे किसी भी बध का शिव सेना ने आह्वान नही किया था और कुछेक समाचार पत्रों मे छपी यह खबर असत्य थी। बध मात्र मराठवाडा क्षेत्र तक सीमित था जो शिवसेना का गढ समझा जाता है। भिवडी मराठवाडा मे नही है और जिस दिन उपद्रव भडका था उस दिन हाथकरघे के इस बड़े केन्द्र भिवडी में शिवसेना ने कोई भी बध आयोजित नही किया था। ११ मई को वर्ली मे बालठाकरे के स्टेच्यु पर चप्पलो की माला चढाये के बाद ही शिवसेना के बध का आह्वान किया गया था। बम्बई की पालहिल स्थित नर्गिस रोड के नाम पट पर हरा रग लगाने पर बाल ठाकरे ने आपत्ति व्यक्त की थी इस आधार पर कि अन्य सभी नाम पटो पर नीले रग का प्रयोग होता है।

कहा गया है कि ३ मई का शिव जयन्ती जलूस उपद्रव का कारण था। परन्तु भिवडी के जानकार सूत्रो ने इसका खण्डन किया हैं उनका कहना है कि यह जलूस अत्यन्त शात था और उपद्रव शिवजयन्ती के लगभग दो सप्ताह बाद हुए थे।

मुसलमानो का यह भी आरोप है कि बाल ठाकरे ने टीपू सुल्तान को हमलावर (आक्रान्ता) कहकर उनका अपमान किया था। एक मुस्लिम समाचार पत्र ने तो यह भी कहा है कि महाराष्ट्र की इका गवर्नमेंट ने मालेगाव की म्यूनिसिपल कोसिल को भग कर दिया है इसीलिए कि उसने टीपू सुल्तान की स्टेच्यू लगाने का निश्चय किया था। बाल ठाकरे ने इस प्रकार के स्टेच्यू की स्थापना पर आपत्ति की थी। बाल ठाकरे ने इस प्रकार के स्टेच्यू का विरोध किया था परन्तु केवल इसी कारण कोसिल भग नही की गई थी। सत्य तो यह है कि महाराष्ट्र म सभी म्यूनिसिपल कोसिले भग की हुई हैं। देखने वालो का यह भी कहना है कि तब मालेगाव मे कोई उपद्रव नही हुआ था जो भिवडी से लगभग ३०० किलोमीटर दूर है।

तथ्य यह है कि १९७० के भयकर उपद्रव के समय से लेकर अब तक भिवडी के हिन्दुओ और मुसलमानो के पारस्परिक सम्बन्ध सौहार्द पूर्ण नही रहे हैं। इस वर्ष मे हिन्दू मुस्लिम तनाव बना रहा और वह बढता रहा है। एक यान्त्रिक पशु कत्लगाह बनाए जाने के अभी हाल के निर्णय का हिन्दुओं ने विरोध किया था और विरोध मे जलूस निकाला था। इस जलूस पर पुलिस ने नहीं वरन मुसलमानो ने गोलिया चलाई थी।

हिन्दुओं ने मुस्लिम घरो की अस्त्र शस्त्र की छान बीन के लिए, प्रशासन से कई बार माग की थी परन्तु प्रशासन ने इस पर कोई ध्यान नही दिया और हिन्दुओ की इस शिकायत के निवारण के लिये कोई कार्यवाही नही की।

शिवजयन्ती जलूस के निकाले जाने पर जो १३ वर्ष तक स्थगित रखा गया था, मुसलमानो की अप्रसन्नता और हिन्दुओ के आग्रह ने इस तनाव को बढाया था। (ऑर्गनाइजर ३ ६ १९८४)

(पृष्ठ १ का शेष)

पजाब के राज्यपाल के सलाहकार श्री एस एस सिद्ध जिन्हे आज केन्द्र मे स्थानान्तरित किया गया है के स्थान पर गृहमन्त्रालय मे पजाब के मामलो के इन्चार्ज श्री प्रेम कुमार को भेजे जाने की चर्चा है।

ज्ञात हुआ है कि सरकार पजाब को सेना के हवाले करने पर काफी समय से विचार कर रही थी। सरकार को ऐसी शिकायत भी मिली थी कि उग्रवादियो को सीमापार प्रशिक्षण और हथियार देकर भारत भेजा जा रहा है और पाक सरकार उग्रवादियो की गतिविधियो से गहराई के साथ जुडी है।

सरकार के विचार मे अकाली दलका वर्तमान नेतृत्व उग्रवादियो के कारण वार्ता के जरिए समझौता करने मे कतरा रहा है।

ज्ञात हुआ है कि सरकार ने उग्रवादियो से सख्ती से निपटने का निर्णय मई महीने ही कर लिया था। इसका सकेत राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिह द्वारा अपनी उत्तर-पूर्वी भारत की दस दिन की यात्रा को सक्षिप्त कर दो दिन मे राजधानी लौटने तथा उनकी वापसी के बाद ३० मई को प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी द्वारा लम्बी बातचीत किए जाने से मिलता है। (पजाब केसरी ४ ६-८४)

श्रीनगर (काश्मीर) मे—

दयानन्द बलिदान शताब्दी

जोलाई ८४ की २७ से २९ तारीखोतक आर्यसमाज श्रीनगर कश्मीर की राजधानी मे महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी धूमधाम से मनाई जा रही है सभी आर्य जन सादर आमन्त्रित हैं विस्तृत जानकारी अगले अक मे—

—सम्पादक

सम्पादकीय

आर्यसमाज का प्रतिनिधि मण्डल प्रधान मन्त्री श्रीमती गांधी से मिला

दिल्ली ३० मई।

आर्यसमाज का एक प्रभावशाली प्रतिनिधिमंडल सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व में प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी से आज प्रातः मिला। प्रतिनिधि मंडलमें श्री प्रो०शेरसिंह भू.पू. मन्त्री भारत सरकार श्री ओम्प्रकाश त्यागी सभा मन्त्री एवं भू०पू० सांसद, पं० शिवकुमार शास्त्री भू०पू० सांसद, श्री सोमनाथ मरवाह सीनियर एडवोकेट एवं० प्रो० वेदव्यास सीनियर एडवोकेट (दिल्ली) श्री बटकृष्ण वर्मन एडवोकेट बंगाल के अतिरिक्त कई अन्य मुख्य आर्य नेता भी सम्मिलित थे।

प्रतिनिधि मण्डल ने उनसे प्रार्थना की कि पंजाब की समस्या ने खतरनाक शक्ल अख्तियार कर ली है जिससे देश की सार्वभौम सत्ता व एकता खतरे में पड़ गई है। अत. इसको हल करने के लिए ज्यादा प्रभावशाली कदम उठाने चाहिएं।

प्रतिनिधि मण्डल ने जोर देकर कहा कि आतंकवादी और उनके समर्थक पंजाब में सरकार की सत्ता को खुले तौर पर चैलेन्ज कर रहे हैं और कानून पालन करने वाले नागरिकों का विश्वास सरकार के ऊपर से उठ चुका है कि वह उनके जानमाल की रक्षा कर भी सकेगी? वस्तुतः नरम दलीय व उग्रवादियों दोनों का लक्ष्य खालिस्तान का निर्माण है और इसके लिए वे सब प्रकार के तरीकों को काम में लाने के लिए दृढ़ हैं। देश की सार्वभौम सत्ता की रक्षा और कानून तथा व्यवस्था को बनाए रखने की अन्तिम जिम्मेदारी सरकार की है।

प्रतिनिधि मण्डल का निश्चित मत है कि आतंकवादियों से निपटने के लिए हल्के तरीके अब नहीं अपनाने चाहिएं। इन लोगों ने पंजाब में आतंक का राज फैला रखा है। इस सम्बन्ध में यदि दृढ़ता से काम नहीं लिया गया तो सारा देश आतंकवाद के चपेट में आ जायेगा।

प्रतिनिधि मण्डल ने यह मांग की कि—

१—पंजाब को या तो सेना के सुपुर्द कर दिया जाय अथवा देश के संघीय प्रजातान्त्रिक ढांचे को बचाने के लिए तुरन्त आपात स्थिति घोषित की जाये।

२—पंजाब के प्रशासन में आमूलचूल परिवर्तन कर दिया जाना चाहिए जिससे कि स्थिति से अच्छी तरह निपटा जा सके।

३—यदि श्रीमती गांधी और ज्ञानी जैलसिंह दोनों पंजाब में जा सके तो अच्छा होगा इससे प्रशासन और आम जनता दोनों का विश्वास फिर से जम जायेगा।

४—३ जून के बाद आर्य समाज के एक प्रतिनिधि मण्डल को पंजाब में दौरा करने की अनुमति दी जाय।

ज्ञापन

निवेदन है कि अकाली आन्दोलन की आड़ में विगत अढ़ाई वर्षों से पंजाब में अलगाववादी तत्व विदेशी षड़यन्त्रों द्वारा जन-जीवन का विनाश करने के सभी हिंसक उपाय कर रहे हैं। बैंकों में दिन दहाड़े लूट, व्यापारियों के कत्ल, पत्रकारों की हत्या, एक ही दिन में ३७ रेलवे स्टेशनों को जलाना, रेल पटरियों का उखाड़ना, अमृतसर में अनेक व्यापारियों को दरबार साहिब में बुलाकर भिंडरवाले द्वारा धमकी से धन की वसूली, लारेंस रोड अमृतसर में तीन कोठियों में खुली लूट तथा दरबार साहब में भिण्डरवाले और जालन्धर में सन्त हरियावेला वाले का देशद्रोहपूर्ण आतंकवाद देश की प्रभुसत्ता एवं अखण्डता को खुली चुनौतीहै। इस सारी स्थिति से आप परिचित हैं।

ऐसी अवस्था में सरकार का कर्त्तव्य है कि जैसे विदेशी आक्रमण की अवस्था में सैनिक कार्यवाही से देश की रक्षा की जाती है, उसी प्रकार से इस आतरिक आक्रमण को रोकने के उपाय करें।

आपकी सेवा में स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि अकाली दल असहयोग तथा अन्य आंदोलनकारी योजनाओं की धमकी एव खुनी हिंसा के सहारे खालिस्थान की स्थापना के लिए कृतसकल्प है। सरकार ने पंजाबी सूबा बनाकर जो गलती की थी, आज की स्थिति उसी का परिणाम है। यदि आज पजाब का सर्वनाश हो जाने पर भी सरकार ने इस विदेशी आन्दोलन को सख्ती से न दबाया तो पंजाब ही नहीं, देश के अन्य भागों में भी पाकिस्तान समर्थक शक्तियां सिर उठायेंगी और देश मे भयानक अराजकता फैल जायेगी। यह भी सम्भावना है कि १५०० तीर्थ यात्री सिक्खों का जत्था पाकिस्तान से हथियार लेकर एवं आतंकवाद के नए तरीके सीखकर आ सकता है।

सरकार की कमजोर नीति के कारण देशभक्त जनता का मनोबल गिरता जा रहा है। पंजाब के व्यापारी ,अपना कारोबार अन्य प्रान्तों में ले जाने के लिए मजबूर होते जा रहे है। उनके धैर्य का बांध टूट रहा है।

अतः हमारा निवेदन है कि सरकार को अपनी प्रतिष्ठा बहाल करने तथा देश की अखण्डता की रक्षा के लिए निम्न उपायों पर विचार करना चाहिए :—

१—पंजाब पुलिस खुले आम उग्रवादियो से मिली हुई है। अन' इस पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए तथा पजाब को सेना के हवाले किया जाये अथवा आपात स्थिति की घोषणा करनी चाहिए। विरोधी प्रचार पर कड़ा प्रतिबन्ध लगाकर समाचार पत्रों पर सेंसर लगाना भी उचित होगा।

३—पजाब के राज्यपाल पद पर किसी सुदृढ व्यक्ति की नियुक्ति करनी चाहिए।

४—सरकार को दृढ इच्छा शक्ति का परिचय देते हुए आतंकवाद से सख्ती से निबटना चाहिए क्योंकि इस समय अर्ध सैनिक सगठन भी सरकारी कमजोरी का शिकार हो रहे है।

५—जनता का मनोबल पुनः स्थिर रखने के लिए राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी तथा आपको पंजाब का दौरा करना चाहिए। इससे शासन मे स्थिरता तथा जनता की आस्था सरकार के प्रति बनेगी।

आर्य समाज का एक शिष्टमण्डल ३ जून के पश्चात् सारे पजाब का दौरा करेगा। कृपया इसकी अनुमति देकर अनुगृहीत करे।

भवदीय
रामगोपाल शालवाले
प्रधान

एक बड़ी फलश्रुति

प्रसन्नताहै इस ज्ञापन की एक फलश्रुति पजाब को सेना के हवाले करने के रूप में प्रतिबिम्बित हुई है। —सम्पादक ३-६-८४

सामयिक चर्चा—

काश ! आज महात्मा गांधी, सरदार पटेल और पंडित नेहरु हमारे मध्य होते !

सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधि मडल के उपर्युक्त ज्ञापन मे उच्चतम प्रशासकीय एव राजनीतिक नेतृत्व को कर्तव्य पालन एव शान्ति स्थापनार्थ पजाब के दौरे का जो सकेत किया गया है उसकी प्रासगिकता एक राष्ट्रवादी के निम्नाकित उदगारो से सहज ही सुस्पष्ट हो जाती है —

यदि महात्मा गाधी, सरदार पटेल और पडित जवाहरलाल नेहरु जैसे उच्च कोटि के नैतिक अधिकार सम्पन्न, देश भक्त, ईमानदार और सशक्त नेता और प्रशासक आज हमारे मध्य होते तो पजाब मे खून की होली न खेलने देते या कडे हाथो से उसका शमन कर दिया गया होता।

महात्मा गांधी

महात्मा गाधी की प्रतिक्रिया तथा कार्यवाही की सहज ही कल्पना की जा सकती है, बहुत सभवत गाधी जी विभाजन से पूर्व की नोआ खाली जैसी अमृतसर की पदयात्रा पर रवाना हो जाते और पजाब मे सदबुद्धि के पुनर्रावर्तन की अपील करके स्वर्ण मन्दिर मे बैठ जाते।

यदि यह सरल और क्रियात्मक उपाय कारगर न होता तो वह निश्चय ही आमरण अनशन पर बैठ जाते। मारकाट का घृणित कार्य कठिन हो गया होता और वे ध्येय की सिद्धि तक उसे जारी रखते या स्वय को समाप्त कर देते।

सरदार पटेल

सरदार बल्लभ भाई पटेल की एक भिन्नप्रकार की प्रतिक्रिया का आभास मिलता, वे दिल्ली से अमृतसर की हवाई जहाज से यात्रा करते और सशक्त हाथो या परामर्श के माध्यम से रक्तपात और लूटपाट करने वालो के होश ठिकाने लगा देते और इनकी इतिश्री कर देते।

पंडित जवाहर लाल नेहरु

श्री प० नेहरु इस स्थिति के परिपेक्ष्य मे क्या करते ? वे दिल्ली से अमृतसर या जालधर की पदयात्रा मे हफ्ते बरबाद न करते। वे मुख्य मुख्य राज्याधिकारियो को एक साथ बिठाकर उन्हे कडा आदेश देते कि हर कीमत पर तुरन्त शाति स्थापित की जाय। नेहरु जी उपद्रव ग्रस्त क्षेत्र मे कूद पडते और अपराध कर्मियो को मुक्का तान कर वर्जते। वे महात्मा गाधी और सरदार पटेल की तरह तुरन्त प्रभावी कार्य करते।

यदि महात्मा जी हमारे मध्य होते और उनके इर्द गिर्द सरदार पटेल और नेहरु जी विद्यमान होते तो हम देशवासी मुख्यत उनके नैतिक अधिकार से प जाब की भयावह स्थिति से बचे होते। निश्चय हो वे प जाब की आज जैसी स्थिति पैदा न होने देते।

श्री हंसजी के प्रति हार्दिक समवेदना

(दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली)

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री बाल दिवाकर हस के बडे बहनोई श्री हुकमचन्द जी शास्त्री के निधन का समाचार अकित करते हुए बडा दु ख होता है। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सदगति तथा परिजनो को इस महान वियोग को धैर्य पूर्वक सहन करने की क्षमता प्रदान करे।

उल्लेखनीय है कि श्री हस जी के छोटे बहनोई श्री प० प्रकाशवीर जी शास्त्री थे जिनकी रेल दुर्घटना मे अकस्मात मृत्यु हुई और आर्य समाज की एक महती क्षति हुई थी।

श्री हस जी इस दु खद वियोग से सभल ही न पाए थे कि उनके भतीजे और सार्वदेशिक पत्र क एक सुयोग्य कार्यकर्मी श्री देव शर्मा की २१ वर्षीया पत्नी का देहान्त हो गया। उनके प्रति भी हम सब हृदिक समवेदना प्रकट करते हुए दिवगत आत्मा की सदगति के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

नींद लाने की गोलियां हानिप्रद होती हैं

"यदि निद्रा न आने की शिकायत हो तो सबसे पहला काम यह करो कि नींद लाने वाली गोलियो को फेंक दो। इसके बदले घूमने के लिए निकल जाओ और कम से कम दो मील घूमो।'

इ ग्लैंड के एक डाक्टर का यह सुझाव है जो 'निद्रा' विषय के विशेषज्ञ हैं। उन्होने अभी हाल मे चेतावनी दी है कि नीद लाने की गोलियो के निरन्तर सेवन से बडे हानिकर परिणाम होते हैं।

उनका कहना है कि गोलियो के सेवन से शरीर स्वप्नों से परिपूर्ण निद्रा से वचित हो जाता है और प्रात काल उठने पर चेहरे पर उदासी छाई होती है।

एक डाक्टर का नाम ओस्वाल्ड है। इन्होने निद्रा के विषय पर एक ट्रैक्ट लिखा है जिसे ब्रिटिश मेडीकल सस्थान ने छापा है। इस ट्रैक्ट मे नींद के विषय में कई आवश्यक तथ्य प्रकट किए और सुझाव दिए गये हैं जिनमे से कुछ इस प्रकार हैं —

१—नीद लाने की कोई भी गोली आदर्श रूप लिए नही होती।

२—ठोरने का कोई इलाज नही है।

३—आधी रात से पहले १ घण्टा सो लेना बाद के २ घण्टों की नीद के बराबर होता है इस बात मे कोई तथ्य नही है।

४—यह बताना असम्भव है कि एक व्यक्ति को कितनी नींद की आवश्यकता होती है।

५—प्रत्येक व्यक्ति भिन्न होता है और आवश्यक होने पर मानवीय शरीर और दिमाग को बहुत काम करना होता है।

६—मानसिक परेशानियो मे ग्रस्त व्यक्तियो को ही प्राय अनिद्रा की शिकायत होती है।

७—स्त्रियो को पुरुषो की अपेक्षा नीद न आने की कठिनाई का सामना करना पडता है।

८—यदि सोने मे अत्यधिक कठिनाई हो तब भी नीद लाने वाली गोलियो एव नशे की वस्तु खाने या पीने पर विश्वास नही करना चाहिए।

९—नशे की चीजो का सेवन करने पर जो नींद आती है वह स्वाभाविक नीद से भिन्न होती है और अधिक हानिकर होती हैं।

१०—जिस व्यक्ति की प्रात काल जल्दी नींद टूट जाती हैं और वह चारपाई छोड बैठता है उसे जरा भी चिन्ता नही करनी चाहिए।

११—जल्दी सोना और जल्दी उठना स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद होता है।

१२—जब व्यक्ति सोना चाहे तब उसे सोच-विचार की बात छोड देनी चाहिए।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

महर्षि दयानन्द का वार्तालाप और उपदेश

(१)

पहले धर्म के आकाश से विपत्ति के बादलों को हटाइए

एक दिन उदयपुर में दो साधु स्वामी जी से मिलने आए। दोनों महात्मा महाराज के साथ बड़ी देर तक धर्म चर्चा करते रहे। जब वे चलने लगे तो बोले, भगवन् ! आप अधिकारी जन को ही उपदेश दिया करें। जो लोग आपके सत्संगों में आते हैं वे सब ही अधिकारी नहीं होते। आपके खण्डन विषयक व्याख्यानों के तो विरले जन ही अधिकारी होते होंगे।"

स्वामी जी ने कहा—"धर्मोपदेश में अधिकारानधिकार का प्रश्न उठाना व्यर्थ है। उसका अधिकारी मनुष्य मात्र है। कोई भी बालक औषध स्वयंही नहीं खाता किन्तु उसके बन्धु उसे विवश करके खिलाते हैं। हमारा कुरीति खण्डन भी एक कड़ुवा क्वाथ है। साधारण जन धर्माधर्म के बीच सत्यासत्य के विवेक से विवर्जित (शून्य)है। उनको तो यह कटु क्वाथ जबर्दस्ती पिलाना पड़ेगा।

महात्मा जी, आपके धर्मबन्धु और जाति के अङ्ग आए दिन सौ-सौ और सहस्रों की संख्या मे ईसाई और मुसलमान होते जाते हैं और आप हमें अधिकार अनधिकार की पट्टी पढ़ाने लगे हैं। यह समय तो कार्य करने का है धर्म को नौका को चट्टान के साथ टकराने से बचाने और भंवर से निकालने का है। पहले धर्म के आकाश से विपत्ति के बादलों को दूर कीजिये अधिकारों के विचार तो पीछे होते रहेंगे।"

(२)

मैं कटु कर्त्तव्य कोई अपने स्वार्थ के लिए पालन नहीं कर रहा हूं

एक दिन उदयपुर में पांड्या मोहनलाल, विष्णुलाल ने महाराज से प्रार्थना की कि जब आपका उद्देश्य और आदर्श एकता सम्पादन करना है तो आप मत-मतान्तरों का कठोर खण्डन क्यों करते हैं ? इससे तो उल्टा वैर-विरोध और वैमनस्य बढ़ता है ?

महाराज ने उत्तर दिया—"एक तो मेरा धार्मिक लक्ष्य सार्वजनिक है उसे संकुचित नहीं किया जा सकता। दूसरे भारतवासी लम्बी तानकर ऐसी गहरी नींद में सो रहे हैं कि मीठे शब्दों से तो आंख तक खोलने को समुद्यत नहीं होते। सुधार का तो वे नाम तक नहीं लेते। कुरीतियों और कुनीतियों के खण्डनरूप कोड़ों की तड़ातड़ आवाज से भी यदि वे जग जायें तो ईश्वर का कोटि-कोटि धन्यवाद करूंगा।"

पण्ड्या जी ! कोई देश जन-शून्य नहीं हो जाया करता। लोग तो बने ही रहा करते हैं। परन्तु धर्म गुरुओं और सामाजिक नेताओं की असावधानी, प्रमाद और आलस्य से भावना, भाव और भाषा आदि एकता के चिह्न बदल जाते हैं। जाति के आचार-विचार बदल जाते हैं। रहन-सहन के ढंग में भेद आ जाता है। ठीक ऐसा ही समय अब देश पर उपस्थित है। यदि सम्भाला न गया तो आर्य जाति परिवर्तन के चंचल चक्र पर चढ़कर अति उतावली में अपने पूर्व पवित्र शरीर को बदल डालेगी। इसके पिछले प्रमाद के कारण करोड़ों मनुष्य मुसलमान बन गए। अब प्रतिदिन सैकड़ों ईसाई बनते चले जा रहेहैं। ऐसे समय में तो अपने सधर्म बन्धुओं को कड़े हाथ से उनकी चोटियां पकड़कर भी जगाना होगा। भाई ! यह कटु कर्त्तव्य मैं कोई अपने स्वार्थ के लिए तो पालन नहीं कर रहा हूं। मुझे तो इसके कारण अवहेलना, निन्दा, कुवचन, ईट-पत्थर और विष ही स्थान-स्थान पर मिलताहै परन्तु बन्धु प्रेम की भावना मुझे विपत्तियों के विकट और जटिल जाल में भी समाज सुधार के लिए प्रोत्साहित कर रही है।"

"पंड्या जी ने प्रणाम करके श्री वचनों का हार्दिक अनुमोदन करते हुए कहा—"महाराज ! यदि दो-चार धर्माचार्य भी आपके विचार के हो जायें तो थोड़े समय में ही आर्य जाति का बेड़ा पार हो सकता है।"

(३)

जब महाराणा को फटकार लगाई

एक दिन महाराज अकेले बैठे हुए थे। उस समय उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह जी पधारे और गुरुदेव से विनीत विनय करने लगे—

"भगवन् ! आप मूर्ति पूजा का खण्डन छोड़ दे। यह राजनीति के सर्व संग्रह सिद्धान्त के प्रतिकूल है। यदि आप ऊपर की बातें स्वीकार कर ले तो एक लिंग महादेव के महन्त की गद्दी आपकी है। वैसे तो यह राज्य भी उसी मन्दिर के समर्पित है परन्तु मन्दिर के नाम जो राज्य का भाग लगा हुआ है, उसकी लाखों की आय है। इतना भारी ऐश्वर्य आपका हो जायेगा। सारे राज्य के आप गुरु माने जायेंगे।"

महाराणा की प्रार्थना सुनते ही स्वामी जी झुंझलाकर बोले—"आप मुझे तुच्छ प्रलोभन दिखाकर परमात्म देव से विमुख करना चाहते हैं। उसकी आज्ञा भंग कराना चाहते हैं। राणा जी, आपके इस छोटे से राज्य और मन्दिर से मैं एक दौड़ लगाकर बाहर जा सकता हूं। वह मुझे ईश्वर की आज्ञा भंग करने के लिए विवश नहीं कर सकता। परमात्मा के परम प्रेम के सामने इस मरुभूमि की मायाविनी मरीचिका अति तुच्छ है। मुझे ऐसे शब्द कहने का फिर कभी साहस न करें। मेरी धर्म ध्रुव धारणा को पृथ्वी और आकाश की कोई भी वस्तु डगमगा नही सकती।"

आश्चर्य चकित महाराणा हाथ जोड़ कर बोले—"मैंने आपके निश्चय की दृढ़ता देखने के लिए ही ऐसा कहा था। इस धृष्टता को क्षमा कर दीजिए। अब मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि संसार की कोई वस्तु आपकी दृढ़ता को डांवाडोल नही कर सकती। आपका निश्चय कभी हिल नही सकता है।"

—सं० कर्त्ता रघुनाथप्रसाद पाठक

नीति के दो पाट

बड़ों का अपमान करना उनकी हत्या के समान अपने मुंह अपनी बड़ाई करना आत्म हत्या के समान

अर्जुन को अपने गाडीव धनुष पर बडा गर्व था। महाभारत के युद्ध मे उसके धनुष की धाक थी। उसके तीर उडने वाले विषैले साप की तरह निकलते थे। जिधर को वह तीरो की झडी लगाता शत्रु सेना के दल कट जाते। आपा धापी मच जाती। व्यूह छिन्न भिन्न हो जाते। लाशों के अम्बार लग जाते। खून की नदिया बह निकलती। गाडीव की टकार मात्र से बडे बडे योद्धाओ का पित्ता पानी पानी हो जाता। इसलिए अर्जुन को अपना धनुष बहुत प्यारा था। धनुष क्या मानो उसके हाथ मे विजय की कुजी थी। उसने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि उसके धनुष की जो कोई निन्दा करेगा उसे वह जान से मार डालेगा।

जब युधिष्ठिर अपराधी हो गए थे

दुर्भाग्य की बात है कि युद्ध के दिनो मे अर्जुन के बडे भाई युधिष्ठिर के मुह से गाडीव की निन्दा के शब्द निकल गए। फिर क्या था? अर्जुन के सिर पर खून सवार हो गया। क्रोध से चेहरा तमतमा उठा। आंखो से आग बरसने लगी। वह तलवार खींचकर युधिष्ठिर पर टूट पडा युधिष्ठिर की आखो मे मौत का नक्शा खिच गया एकाएक महाराज कृष्ण दोनो के मध्य आ खडे हुए और बोले—

'अर्जुन! यह क्या? किस पर हमला कर रहे हो? अपने सच्चे हितैषी बडे भाई पर। अरे इतना अनर्थ? होश मे तो हो न?

'होश मे हू भगवन! अर्जुन ने क्रोध मे भरकर कहा। मेरे गाडीव की निन्दा करने वाला जो भी हो बच नहीं सकता। यह मेरी प्रतिज्ञा है।"

महाराज कृष्ण फिर प्रेम भरी वाणी मे बोले 'अर्जुन, क्रोध मे अधे मत बन जाओ। धर्म मर्यादा पर ध्यान दो। सदा हित चाहने वाले भाई के खून स हाथ रगना कितना बडा पाप है। कितनी बदनामी है?

परन्तु क्षत्रिय की प्रतिज्ञा भी अटल होती है न। भगवन! अर्जुन ने उत्तर दिया।

ठीक है। तुम्हे यदि अपनी प्रतिज्ञा का इतना ध्यान है तो बडे भाई को बुरा भला कहकर गुस्सा थूक डालो क्योकि बडो क मुह पर उन्हे बुरा भला कहना उनका अपमान करना उन्हे मार डालने के बराबर है। तुम इस तरह अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर सकते हो।

अपराधी को दण्ड देने और प्रायश्चित करने का अनूठा ढग

अर्जुन ने युधिष्ठिर को खूब खरी खोटी सुनाई। युधिष्ठिर चुप चाप सुनते रहे। इतने मे अर्जुन का क्रोध शान्त हुआ, होश ठिकाने आए। अब उसे अपने किए पर बडी लज्जा आने लगी। मन म इतना दुख पैदा हुआ कि यदि भूमि जगह देती तो उसमे समा जाता। उसकी अन्तरात्मा उसे कचोट रही थी कि पूजनीय बडो का अपमान करने से मर जाना अच्छा है। फिर क्या था? अर्जुन अपना गला काटने के लिए तय्यार हो गया।

फिर ठीक समय पर नीति के अवतार श्री कृष्ण आ गए। उन्होने लपक कर अर्जुन का हाथ पकड लिया और बोले, ओह! सखे अर्जुन? फिर भ्रमों से भटक गए हो। यह आत्म-हत्या की चेष्टा किस लिए?

अर्जुन फिर लज्जा से जमीन मे गड गया। विनय पूर्वक बोला 'भगवन! मैंने क्रोध मे आकर पूज्य भाई धर्म के अवतार का बडा अपमान किया है। आपने भी देखा और सुना है। शास्त्रों की आज्ञा है और मेरी अन्तरात्मा भी जोर से कह रहा है बडो की निन्दा करने वाले अपमान करने वाले को जीने का अधिकार नही है। मैं मैं अब जीवित रहना नहीं चाहता। इसलिए मेरा हाथ छोड दीजिए भगवन! मुझे प्रायश्चित करने दीजिए। अर्जुन का शरीर कापने लगा। आसू बह निकले।

भगवान कृष्ण ने झट उसे अपने गले से लगा लिया। प्यार करके उसे समझाने लगे 'प्यारे सखा! यदि तुम्हें बडे भाई के अपमान का इतना खेद है तो अपने मुह से अपनी ही बडाई करो क्योंकि अपने मुह से अपनी ही बडाई करना आत्म हत्या के समान है। वह व्यक्ति मरा ही समझा जाता है।"

अर्जुन ने ऐसा ही किया। इसके बाद अर्जुन और युधिष्ठिर के दिलों से एक पर्दा सा उठ गया और उनमे वही पहली सी प्रेम की गगा बहने लगी।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

बीबी अमरकौर : एक सच्ची देशभक्त

—चमन लाल

बीबी अमरकौर के निधन से एक सच्चे देशभक्त की ही नहीं, एक युग की समाप्ति हो गई है। "वीर जी" (शहीद भगतसिंह) की तीन साल छोटी यह बहन १९३१ से लेकर अन्त तक "वीर जी" की परम्परा को बनाए रखने के लिए ही जी। १९३१ मे जब भगतसिंह को ब्रिटिश उपनिवेशवादियो ने फासी पर चढाया था तो बीस साल की बीबी अमरकौर जल्लो की तरह हुसैना वाला की ओर दौड पडी थी और "वीर जी" के शरीर से गिरी छोटी से छोटी चीज को सजो लाई थी।

भगतसिंह की शहादत के बाद से अमरकौर ने "वीर जी" के उद्देश्यो को आगे बढाने का प्रण ले लिया था। देश के स्वाधीनता आन्दोलन मे वे जेल गई, अपने बच्चो को बचपन से ही देशभक्ति की 'घुट्टी' पिलायी। १९४७ के बाद उन्हें लगा कि आजाद देश भगतसिंह और अन्य देशभक्तो के सपनो का भारत नहीं है और बीबी जी ने तब से लेकर अब तक कांग्रेस शासन की निर्ममता से आलोचना की। कुछ समय के लिए वे जनसघ के राष्ट्र प्रेम के भ्रम मे उस पार्टी मे रहीं लेकिन उसकी नीतियो ने उन्हे जल्द ही निराश कर दिया।

देश मे जहा कहीं भी नौजवानो ने भगतसिंह के उद्देश्यो को आगे बढाने के लिए सगठन बनाए, बीबी जी उन्हे आशीर्वाद देने पहुची।

१९७८ मे पजाब मे जनवादी अधिकार सगठन ए एफ डी आर बनने पर बीबी जी ने उसे सक्रिय सहयोग दिया। बीबी जी के बेटे प्रो० जगमोहनसिंह जी भी अपने मामा शहीद भगतसिंह की परम्परा को जिलाए रखने के लिए सक्रिय है।

पिछले कई वर्षो से बीबी जी का स्वास्थ्य ठीक नही था। उन्हे दमे की असाध्य बीमारी थी। उन्हे स्लिप डिस्क की तकलीफ होने से कमर मे पट्ठा भी रखना पडता था। अपनी बडी उम्र और शारीरिक तकलीफो के बावजूद बीबी अमरकौर जनवादी अधिकारो और नौजवानो की किसी भी मीटिंग मे पहुचने से गुरेज नही करती थी। जनवादी अधिकार सभा ने उन्हे अनेक तथ्य खोज टीमो मे रखा और बीबी जी ने पजाब के गाओ-गावो मे घूम कर पुलिस दमन के खिलाफ प्रचार किया।

८ अप्रैल १९८३ को बीबी अमरकौर ने ससद मे 'एसमा' और 'मीसा' के खिलाफ पर्चे फककर ५४ वर्ष पहले ८ अप्रैल १९२९ को केन्द्रीय ऐसम्बली मे भगतसिंह व बटकेश्वरदत्त द्वारा ब्रिटिश उपनिवेशवादियो द्वारा काले कानूनो के खिलाफ किए बम विस्फोट की याद दिलायी। लोकसभा अध्यक्ष श्रीजाखड के यह कहने पर कि आप बजाय पर्चा फकने के यह बात प्रधानमन्त्री श्रीमती गाधी से कह देती तो बीबी जी का उत्तर था—'वे किसी की सुनती हैं क्या!"

पजाब में साम्प्रदायिक तनाव की स्थिति से बीबी जी बेहद दुखी थी। अनेक मीटिंगो मे उन्होने उग्रवाद की निन्दा की और पारस्परिक हिन्दू सिख साझी संस्कृति की रक्षा पर जोर दिया इस पूरी स्थिति

हमारे शास्त्रार्थ महारथी

—श्री देवीदास आर्य, मेरठ छावनी

(गताक से आगे)

जनवरी १९१५ ई० मे आर्य समाज (बावडी बाजार), दिल्ली का अर्द्ध शताब्दी महोत्सव था। श्री पडित जी के दर्शन करने और उस उत्सव में सम्मिलित होने के लिये मैं क्वेटा से दिल्ली गया था। उत्सव के दिनों में वहा १२ शास्त्रार्थ हुए थे। छ मुसलमानों से, तीन पौराणिको से, दो जैनियो से और एक ईसाइयों से। पहला शास्त्रार्थ "मास भक्षण" पर हुआ था। आर्य समाज की ओर से श्री पडित जी और अहमदियो के लाहौरी दल की ओर से मौलवी ऊमरुद्दीन नियुक्त हुए थे। मैं उन शास्त्रार्थों से बहुत प्रभावित हुआ था। अत वापसी पर मैंने एक लेख "आर्य समाज, दिल्ली के महोत्सव पर मैंने क्या देखा ?" शीर्षक से १६ फरवरी सन १९३५ ई० के "आर्य वीर, लाहौर" मे प्रकाशित कराया था जिसमे आर्य समाज के सभी विद्वानों (विशेषकर श्री पडित जी) की विद्वता एव योग्यता की सराहना की थी। इसी प्रकार अप्रैल १९३७ ई० मे आर्य समाज (कालिज विभाग), कराची का वार्षिक उत्सव मनाया गया था। उन दिनो मैं कराची मे ही था। वहा कादियान के एक प्रचारक मौलवी अलादित्ता जालन्धरी से पडित जी के दो शास्त्रार्थ हुए थे। पहिले दिन के शास्त्रार्थ का विषय "पुनर्जन्म" था और दूसरे दिन का "जीव और प्रकृति का अनादित्व" दोनो दिन श्री पडित जी ही विजयी हुए थे। उन दोनो शास्त्रार्थों के सम्बन्ध मे भी मैंने एक बहुत बडा लेख २५-४ १९३७ के "आर्य गजट-लाहौर" मे प्रकाशित कराया था। ये दोनो लेख श्री पडित जी को भी पढकर सुनाए गए थे जिनसे वे बहुत प्रसन्न हुए थे।

श्री पडित जी का मुझ से विशेष प्रेम था। मैं भी उन्हे आदर, सम्मान एव सत्कार की दृष्टि से देखा करता था और सदा उनके चरण स्पर्श करके उनका अभिवादन किया करता था। सदर मेरठ आर्य समाज के सत्सगो मे मुझे कई बार उनकी उपस्थिति मे बोलने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ था। वे जब कभी मेरे लेख पढते या भाषण सुनते तो सदा मुझे आशीर्वाद दिया करते थे और मेरा उत्साह बढाया करते थे। श्री पडित जी "अकाल मृत्यु" में विश्वास नहीं रखते थे। इस विषय पर स्वर्गीय श्री रामचन्द्र जी मित्थल की कोठी पर आठ दस भाइयो की उपस्थिति मे लगभग १ घन्टा मेरे साथ विचार विमर्श हुआ था जो हम सबके लिए मनोरजक सिद्ध हुआ।

श्री पडित जी ने अपने जीवनकाल मे मुसलमान और ईसाइयो के साथ हजारो शास्त्रार्थ किये और सदा विजयी हुए। जिस प्रकार नैपोलियन के कोष मे "असभव' शब्द नही था, इसी प्रकार श्री पडित जी के कोष मे भी "पराजय" शब्द का भी अभाव था। आप सात बार दक्षिण हैदराबाद गये थे वहा आपने १२५ व्याख्यान दिये थे। एक बार निजाम हैदराबाद ने आपको बन्दीगृह मे डाल दिया था। हिन्दी रक्षा आन्दोलन के दिनो मे आपने पजाब मे सत्याग्रह किया था जिसके कारण पजाब सरकार ने आपको बन्दी बना लिया था। श्री पडित जी का जीवन प्रत्येक दृष्टि से सराहनीय एव अनुकरणीय है। जब आपकी आयु ३६ वर्षों की थी तो आपकी धर्म पत्नी (श्रीमती कमला देवी जी) स्वर्ग सिधार गई थी। उस समय आपने उनके शव पर हाथ रखकर यह कहा था 'देवी जिस दृष्टि से मैंने तुम्हे देखा है अब वह दृष्टि और किसी शरीर पर नही पडेगी। यह सम्बन्ध अब ससार मे तुम्हारे शरीर के साथ समाप्त हो गया। अब तो केवल माता, बहिन और पुत्री के सम्बन्ध ही मेरे लिए ससार मे होगे।"

आप जब पहिले धर्म प्रचार के लिए कही जाते थे तो आर्य समाजो से मार्ग व्यय नही लेते थे, किन्तु कई सन्यासी महात्माओ के कहने पर आप मार्ग व्यय लेने लगे। आप चाय, पान, बीडी सिगरेट और प्याज आदि का प्रयोग नही करते थे। आपका भोजन सादा सात्विक हुआ करता था। आप अपने वस्त्र सदा स्वय धोया करते थे। आपने कभी सिनेमा नही देखा था। आप बडे ही मधुर भाषी थे। शास्त्रार्थ करते समय आप कभी आवेश मे नही आते थे और सदा मुस्कराते रहते थे।

आप लगभग पाच वर्ष रोगग्रस्त रहे। अक्टूबर १९६३ ई० मे आपको पहिले "दीवान नर्सिंग होम" मे, कुछ दिनो के पश्चात "इरविन अस्पताल दिल्ली मे प्रविष्ट कराया गया, किन्तु आपका स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन बिगडता ही गया जिसके कारण २ फरवरी सन १९६८ ई० 'बसन्त पचमी' की रात्रि के ठीक ९॥ बजे आप स्वर्ग सिधार गये। आपके वियोग से करोडो भारत वासी (विशेषकर आर्य नर नारी) बहुत दुखी हुए। सबसे अधिक खेद की बात यह है कि आज तक आपके रिक्त स्थान की पूर्ति नही हो सकी और न ही निकट भविष्य मे होने की आशा है।

श्री पडित धर्म भिक्षु जी

आप आर्य प्रतिनिधि सभा, पजाब के महोपदेशक एव शास्त्रार्थ महारथी थे। मुझे नवम्बर १९२१ ई० मे प्रथम और अन्तिम बार लाहौर मे आपके दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उन दिनो आर्य समाज बच्छोवाली और अनारकली के वार्षिक उत्सव थे। अत मैं उन उत्सवो मे सम्मिलित होने के लिए अपने एक मित्र, सहपाठी एव नगर निवासी श्री विशम्बर-दास जी (जिनकी कृपा से मैं आर्य समाज की शरण मे आया) के साथ क्वेटा से लाहोर गया था वहा एक अहमदी प्रचारक मौलवी अब्दुल रहमान मिस्त्री के साथ आपके दो शास्त्रार्थ हुए थे। पहिले दिन के शास्त्रार्थ का विषय था "सार्वभौम धर्म वैदिक धर्म है या इस्लाम।' और दूसरे दिन के शास्त्रार्थ का विषय "जीव और प्रकृति का अनादित्व।' दोनो दिन आप ही विजयी हुए थे। आपमे सबसे बडा गुण यह था कि आप थोडे से समय मे बहुत सी बाते कह जाया करते थे। जहा अपने प्रतिद्वन्द्वी के सब प्रश्नो का यथार्थ एव सतोष जनक उत्तर देते थे। वहा उस पर अपने प्रश्नो की भी भरमार कर देते थे। आपको अपने जिन प्रश्नो का उत्तर नही मिलता था, आप अन्त समय तक उन्हे पूछते रहते थे जिसके कारण जहा आपका प्रतिद्वन्द्वी लज्जित होता था वहा श्रोतागण के मन पर आपकी योग्यता की छाप लग जाती थी। आपने मुसलमानो और ईसाइयो से सैकडो शास्त्रार्थ किए। आप उर्दू फारसी और अरबी के उच्चकोटि के विद्वान थे। जब आप कुरान शरीफ और हदीसो के पुष्ट प्रमाण देते थे और उनका शुद्ध उच्चारण करते थे तो मुसलमान आश्चर्य चकित हो जाया करते थे।

आप शास्त्रार्थ करते समय किसी का दिल दुखाना पाप समझते थे। यदि कोई असभ्य प्रचारक आपको जली कटी सुनाने की कुचेष्टा करता था तो आप उसे यथार्थ उत्तर देना भी भली भाति जानते थे। उदाहरण के लिए कई बार किसी मुह फट प्रचारक के साथ आपका पुनर्जन्म पर शास्त्रार्थ हुआ था। उसने उठते ही आप से प्रश्न किया यदि पुनर्जन्म होता है तो आप ही बतलायें कि आप पिछले जन्म मे कौन थे। पशु, पक्षी अथवा कुछ और, आपने बडे शान्तभाव से उत्तर दिया कि मैं इनमे से कुछ नही मै आपका पिता था इस उत्तर से इस प्रश्न का ऐसा सन्तोष जनक उत्तर दिया जिसे सुनकर श्रोतागण आश्चर्य चकित हो गए।

एक बार हैदराबाद (सिन्ध) मे आपके अहमदी प्रचारको के साथ कई शास्त्रार्थ हुए थे। तब मौलवी सनाउल्ला अमृतसरी ने अपने पत्र अहिले हदीस अमृतसर में लिखा था कि अहमदी प्रचारक पडित धर्मभिक्षु की किसी भी बात का यथार्थ उत्तर नही दे सके। देवयोग से कुछ दिना के पश्चात अमृतसर मे श्री पडित जी के मौलवी सनाउल्ला से शास्त्रार्थ हुए। उस

के लिए वे इंदिरा और अकाली दल दोनो को दोषी ठहराती थी।

२३ मार्च को वे हुसैनीवाला व खटकड़कला मे 'वीर जी" को श्रद्धाञ्जलि देने गई।

उनके खराब स्वास्थ्य के बावजूद अभी भी उनकी जिजीविषा इतनी प्रबल थी कि उनके देहान्त की खबर पर सहसा यकीन नही हुआ। उन्हे सबसे अच्छी श्रद्धाञ्जलि यही है कि उनके "वीर जी" शहीद भगतसिंह के विचारों को याद किया जाय और पजाब के मौजूदा सकट मे उन विचारो की रोशनी में सक्रिय हुआ जाए।

(अनूप सन्देश २०-५-८४)

सम्पादक के नाम पत्र

देश की हानि धर्म की हानि।
हिन्दू फूट की यही कहानी ॥

हिन्दू (आर्य वैदिक) धर्म ही एक मात्र मानव धर्म है। केवल यही एक धर्म है अन्य मत पंथ, मजहब इत्यादि ही कहे जा सकते हैं। व्यक्ति की भावनाओं का महत्त्व स्वीकार करना एवं मानव के स्वतन्त्र विचारों का आदर करना वैदिक धर्म की सदैव विशेषता रही है। इसी लिए धर्म को व्यक्ति विशेष के साथ बांधने अथवा किसी व्यक्ति की सिफारिश के साथ मुक्ति प्राप्ति के विचार को हिन्दू धर्म में कभी कोई स्थान नहीं मिला।

इस तथ्य के साथ यह भी मानना पड़ेगा कि हमारे स्वार्थी लोगों ने इस स्वाधीनता का अनुचित लाभ उठाया और अपने कुटिल कुकर्मों से हिन्दू समाज को अलग २ समूहों में बांट दिया। समय बीतने के साथ विद्या लोप होती गयी और साधारण लोग धर्म के सत्यार्थों को भूल गये और आडम्बरों को ही धर्म मानने लगे और इस प्रकार महान आर्य जाति छोटे २ समूहों में बट गई जिनके अन्दर भावात्मक एकता समाप्त हो गई। हमारे अन्दर किसी प्रकार का संगठन न रहा और आर्य वर्त में इस परस्पर फूट के कारण धर्म की हानि होने लगी।

इस फूट का प्रथम दुर्भाग्यपूर्ण दृश्य महाभारत के विश्व युद्ध के रूप मे उपस्थित हुआ। यह युद्ध संसार भर की समस्त हिन्दू समाज की विश्व विख्यात सेनाओं में हुआ जिसने हिन्दू समाज को शक्तिहीन एवं जरजर कर दिया। लाखों योद्धा और विश्व विख्यात विद्वान काम आए। इस महान आर्य जाति का पतन आरम्भ हुआ। शक्तिहीन फूट का शिकार और दिशा हीन समाज में कुरीतियां उभर आईं। व्यक्तिगत स्वार्थ का बोल बाला होने लगा। वेदों एवं शास्त्रों के मनमाने अर्थ निकाले जाने लगे। देश में कोई केन्द्रीय शक्ति न रही। छोटे छोटे राज्य बने जिनमें आपस में युद्ध जैसी स्थिति रहने लगी। धर्म के नाम पर लूट खसोट का बाजार गर्म था। समाज भ्रष्ट हो गया। बाह्य आक्रमणकारियों को इस सोने की चिड़िया को पकड़ने का साहस हुआ। पतन की चौमुखी आंधी इतनी तीव्रता से चली कि इसने समस्त राष्ट्र को अन्धकारमय कर दिया आपसी फूट ने धर्म और देश की हानि का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

—चूनीलालप्रधान
आर्य समाज माडल बस्ती दिल्ली

दूरदर्शन-आकाशवाणी में आर्यसमाज के कार्यक्रमों की उपेक्षा अनुचित

महोदय,

हम आपके सम्मानित पत्र के माध्यम से दूरदर्शन आकाशवाणी के अधिकारियों का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहते हैं कि इन संचार साधनों द्वारा आर्य समाज के बड़े पैमाने पर आयोजित कार्यक्रमों की भी उपेक्षा की जा रही है। जब कि अन्य मतावलम्बियों के कार्यक्रम के समाचारों, रिपोर्ट आदि के अतिरिक्त विशेष प्रोग्राम भी दिखाये जाते हैं।

गत २२ अप्रैल को तालकटोरा स्टेडियम में दिल्ली की आर्य समाजों ने महात्मा हंसराज" दिवस मनाया। जिसमें उनके देश-धर्म को समर्पित त्याग-पूर्ण जीवन पर नाटक, समूहगान, नेताओं के भाषण हुए। देश के स्वतन्त्रता आन्दोलन को नेतृत्व देने वाले, लाला लाजपतराय, सरदार भगतसिंह, भाई परमानन्द, महात्मा हंसराज जी द्वारा स्थापित डी. ए. वी. कालेजों में तैयार हुए थे। इस विशाल कार्यक्रम के आयोजित (सम्पन्न) होने की दूरदर्शन समाचारों में सूचना तक नहीं दी गई। २१ फरवरी को महर्षि दयानन्द के बोध दिवस की भी उपेक्षा रही, आर्य समाज के देशभक्तिपूर्ण कार्यक्रमों की उपेक्षा क्यों ? अधिकारी ध्यान दें।

—हरिकृष्ण चौहान, चन्द्रमोहन आर्य
१०३५१ विक्रान्त नगर, दिल्ली-७

सार्वदेशिक सभा के अंग्रेजी के नए प्रकाशन

ATHARVAVEDA TRANSLATED BY Acharya Vaidya nath Shastri 1st PART	AN INTRODUCTION To THE VEDAS BY Maharshi Dayanand Saraswati New Edition
Price/ Rs. 65	Price/- 30/-

समय अहमदियों ने अपने समाचार पत्रों द्वारा पंडित धर्मभिक्षु की विजय और मौलवी सनाउल्ला की पराजय की घोषणा कर दी। इस पर स्वर्गीय महाशय कृष्ण जी ने अपने साप्ताहिक पत्र 'प्रकाश-लाहौर' में हैदराबाद (सिन्ध) और अमृतसर में हुए शास्त्रार्थों का विवरण प्रकाशित कर दिया जो श्री पंडित जी के यश एवं कीर्ति में वृद्धि का साधन सिद्ध हुआ।

कई विशेष कारणों से श्री पंडित जी आर्य प्रतिनिधि सभा से त्याग पत्र देकर लखनऊ चले गए। दुर्भाग्यवश आपको विशूचिका हो गया जिसके कारण आप युवावस्था मे ही स्वर्ग सिधार गए। सबसे अधिक दुःख की बात यह है कि आज आर्य समाज में आप जैसा निर्भीक वक्ता, सुप्रसिद्ध विद्वान तथा मुस्लिम साहित्य का जानने वाला कोई अन्य प्रचारक दृष्टिगोचर नहीं होता।

(क्रमशः)

अकाली आन्दोलन : हकीकत क्या है ?

—डा० सुरेन्द्र सिंह कादियाण

[गतांक से आगे]

सच्चाई यह है कि हिन्दू और सिख का चोली-दामन का साथ है, नाखून और मांस का रिश्ता है। यदि आज सिख की परिभाषा गैर-हिन्दू के रूप में की जाती है तो हिन्दू-मन्दिरों में गाय के सिर फेंकने वाले सिखों को यह अहसास होना चाहिए कि वे अपनी ऐसी घिनौनी हरकतों से भले ही अपनेको सिख समझें किन्तु उनके दशों गुरुओं के शिष्य कदाचित नहीं कहलायेंगे क्योंकि उन्होने तो अपनी पवित्र वाणी में वेद, ब्राह्मण और गाय का यशोगान किया है। गुरु गोविन्द सिंह ने अमृत छकने वाले सिखो को पांच ककार देने की जो विधि अपनाई वह उनकी मौलिक देन नही थी बल्कि नल-चम्पू में एक स्थान पर राजा नल के ससुर भीम के सैनिकों को ये पांच ककार देने का उल्लेख है। श्री गुरु साहब संस्कृत भी जानते थे, सम्भवतः यह विचार उन्होने इसी ग्रन्थ से लिया हो और यदि न भी लिया हो तो भी ये चिन्ह हैं तो हिन्दुओं के ही। हिन्दुत्व से आखिर वे कहां तक बचेंगे ? उनकी शिराओं में बहने वाला रक्त आखिर किसका है ? उनकी नामावली किसकी नकल है ? स्वर्ण मन्दिर को स्वर्ण गुरुद्वारा नाम क्यों नहीं मिल सका ? सिखों को हिन्दुओं से अलग मानने वाले सिरफिरे क्या बतला सकते हैं कि अफगानिस्तान के दोस्त मुहम्मद के सामने रखी महाराजा रणजीत सिंह की तीन शर्तों मे से ये दो शर्तें क्यों थी कि अफगानिस्तान में गो हत्या बिल्कुल न होगी और महमूद गजनवी द्वारा लूटा सोमनाथ मन्दिर का चन्दन-द्वार वापिस कर दिया जायेगा ? जब महाराजा मृत्यु शय्या पर थे तो प्रतिदिन गायों के सींगों पर सोना मढ़कर गोदान क्यों करते थे भारत के हिन्दू मन्दिरों को वे नियमित रूप से उपहार क्यों भेजते थे और गंगाजल से स्नान क्यों करते थे ? कोहनूर हीरा पुरी के जगन्नाथ मन्दिर को दान देने का आदेश उन्होंने क्यों दिया था ? महाराजा रणजीत सिंह पूर्ण रूपेण कभी सिख नही रहे और न ही उग्रवादियों की परिभाषा के अन्तर्गत वे आते हैं तो सिख किस आधार पर अपने को परम्परा के आधार पर पृथक राजनैतिक शक्ति मानते समझते हैं ? वस्तुतः यह भ्रामक समीकरण चतुर अंग्रेज की देन है जिसे उग्रवादी सिख ढोते चले आ रहे हैं।

अंग्रेजों ने दूसरे चरण में जैसा कि पूर्व पंक्तियों में लिखा जा चुका है, सिखों को विशेष सुविधाएं देकर उन्हे हिन्दुओं से उच्च मानने का भ्रम पैदा किया। सन १८९१ की पंजाब की जनगणना रिपोर्ट मे स्पष्टतः सरकारी सेवाओं के कई विभागों में सिखों को विशेष रियायत देने की बात कही गई है। भारत की कुल जनसंख्या में सिखों का अनुपात दो प्रतिशत से भी कम है किन्तु ब्रिटिश सेना में उन्हें एक तिहाई प्रतिनिधित्व दिया गया। अविभाजित पंजाब मे सिख तेरह प्रतिशत थे किन्तु मोटेंग्यू-चैम्सफोर्ड सुधारों में और सन १९३२ के साम्प्रदायिक निर्णय के अन्तर्गत उन्हें विधान-मण्डलों में १९ प्रतिशत स्थान दिए गये अर्थात जनसंख्या के अनुपात से ४२ प्रतिशत अधिक और ये स्थान उनके लिए सुरक्षित कर दिए गये। यह सिलसिला इस कारण जारी रहा कि पटियाला जीन्द नाभा तथा कपूरथला के सिख राजाओं ने १८५७ के गदर को दबाने के लिए चौंतीस हजार सैनिक ही नहीं भेजे बल्कि लाखों रुपए की सहायता भी अंग्रेजों को दी थी। इस अंग्रेज भक्ति के कारण ही गदर के पश्चात महाराजा पटियाला को नारनौल डिवीजन, नाभा नरेश को झज्झर क्षेत्र का एक भाग और जीन्द के राजा को दादरी का क्षेत्र उपहार स्वरुप प्राप्त हुआ। इसी प्रकार कपूरथला के राजा को भी पुरस्कृत किया गया। सिख राजाओं को ही नहीं अपितु अन्य छोटे बड़े सिख सरदारों को भी अंग्रेज भक्ति के कारण जागीरें पेंशन तथा अन्य बहुत सुविधाएं मिली।

देखिए भाई जोधसिंह अभिनन्दन ग्रंथ मे पृ० ३८ व ३१ पर प्रकाशित सरदार कृपालसिंह नारंग का लेख पंजाब १८४९-१९००।

इस राजभक्ति के कारण ही पंजाब को १८५९ में पूर्ण प्रांत का दर्जा देकर चीफ कमिश्नर को ले० गवर्नर बना दिया गया। १८५९ में ही अमृतसर-मुल्तान रेल लाइन का उद्घाटन हुआ। सड़कें, नहरें, स्कूल, अस्पताल आदि बनाए गये और हरियाणा को राजद्रोह का फल यह मिला कि जहां वह इन सुविधाओं से वंचित रहा वहां दिल्ली और हिसार डिवीजन उत्तर प्रदेश से छीनकर पंजाब में मिला दिये गए। राजभक्ति के कारण असीम सुविधाओं का आस्वादन लेने वाले सिखों में एक ऐसे दृष्टिकोण ने जन्म लिया जिसे देखकर आज हंसी भी आती है और दुःख भी होता है। इसके एक-दो उदाहरण प्रस्तुत करना अप्रासंगिक न होंगे। सर गोकलचन्द नारंग लिखते हैं—

"मुझे याद है कि जब साम्राज्ञी विक्टोरिया का देहान्त हुआ तो दोआबे के एक प्रसिद्ध नगर के एक सिख सरदार ने एक बड़ा ढोल कुंए मे डालते हुए सभी सिखों को महारानी के शोक में अपने केश धोने के लिये आमन्त्रित किया था। महारानी की मृत्यु को उसने अपनी ही नहीं बल्कि समूचे खालसा की मां की मौत के रूप में माना था।"

(ट्रांसफोरमेशन आफ सिखिज्म, पृ० ३३७)

सरदार खुशवन्त सिंह अपनी पुस्तक 'द सिख' में एक स्थान पर लिखते हैं कि लार्ड डलहौजी ने अपनी रिपोर्ट में लिखा था कि—सिख सत्ता का सम्पूर्ण विनाश मेरा ध्येय है। मुझे सिख वंश को समाप्त करके सारी जाति को अपने आधीन लाना है। यह कार्य मुझे शीघ्र करना है सम्पूर्ण रूप से करना है, और इस तरह करना है कि इस सम्बन्ध मे आगे करने को कुछ भी न रह जाए। डलहौजी ने जैसा सोचा था ठीक वैसा ही किया। फिर भी जब वह अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर को देखने गया तो जूते नहीं उतारे। पवित्र स्थान में वह जूते पहने हुए घूमता रहा और हजारों सिख यह तमाशा देखते रहे। देखते क्यों नहीं ? डलहौजी के स्वागत में तो उस रोज मन्दिर में दीपावली मनाई गई थी।"

(दिनकर : संस्कृति के चार अध्याय पृ० ३२८ पर उद्धृत अंश)

आज कथन विचित्र लगेगा कि अंग्रेजों के प्रति सिखों का विश्वास इतना बढ़ गया था कि महीनों तक दरबार साहब (स्वर्ण मन्दिर अमृतसर) सरकारी नियन्त्रण में रहा। अमृतसर सुप्रसिद्ध खालसा कालेज की कौंसल के प्रेजीडेंट थे लाहौर के कमिश्नर, निदेशक थे अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर, और प्रिंसिपल थे वहां के पोलिटिकल एजेंट। यह बहुत कम लोगों को ज्ञात होगा कि १९१९ के जलियांवाला बाग के हत्या काण्ड के प्रमुख डायर को स्वर्ण मन्दिर में तात्कालिक प्रबन्धक द्वारा सरोपा भेंट किया गया था यद्यपि इसमे मरने वालों में सिख ही अधिक थे। इन सभी बातों से ऐसा लग सकता है कि अंग्रेज सिखों को अपना विश्वास भाजन समझते थे और सिख अंग्रेज भक्ति का पर्याय मान बैठे थे। किन्तु बात ऐसी नही थी। वस्तु स्थिति यह थी कि चतुर अंग्रेज सिखों को अपने मोहरे के रूप में प्रयुक्त करते रहे। इस नीति को सफल बनाने के लिये अंग्रेज ने दमन और सहानुभूति का खेल सिखों के साथ खेला अर्थात वह सिखों के सामने एक समस्या खड़ी कर देते थे, सिख और उत्तेजित होते थे और अन्त मे उनके दुःखों पर हमदर्दी का फोहा रखकर उन्हें यह अहसास कराते थे कि अंग्रेज की उनके जीवन में एक अनिवार्य भूमिका है जिसे उपेक्षित नहीं किया जा सकता। डलहौजी का उल्लेख ऊपर आया है, सिखों के प्रति उसके विरोधी दृष्टिकोण की बात सही हो सकती है पर यह भी सत्य है कि पंजाब के हैनरी लारेंस और जान लारेंस सरीखे उदार शासकों को नियुक्त किया गया था जिन्होने अपने कुशल राजप्रबन्ध से सिखों को प्रसन्न ही नही रखा अपितु सिख धर्म को काफी रियायतें भी दी थीं। उक्त नाटक के अन्तर्गत कई क्षण ऐसे आए जब उत्तेजित सिख अंग्रेजों के विरोध में आ खड़े हुए और हर क्षण के अन्त में अंग्रेजों ने सहानुभूति जताकर आम सिख को अपनी ओर फोड़ लिया। इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है:— (क्रमश)

वैदिक विवाह

भेलवारा निवासी सहदेव प्रसाद आर्य के सुपुत्र श्री प्रेमचन्द कुमार आर्य का वैदिक विवाह वहपुरा निवासी श्री वासुदेव साहू की सब से छोटी सुपुत्री देवी कुमारी के साथ हुआ। पं० सुभाष शास्त्री के द्वारा पाणिग्रहण संस्कार २२-४-८४ दिन रविवारको सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य-समाज चैनपुर के सभी सदस्य गण पधारे हुए थे जिन्होने नवपरिणित वर-वधु को आशीर्वाद दिया।

देशान्तर प्रचार

वैदिक मिशन कावेन्ट्री का चुनाव

कावेन्ट्री (Coventry) स्थित वैदिक मिशन का साधारण वार्षिक अधिवेशन ८ जनवरी ८४ को हुआ जिसमे सर्वसम्मति से आगामी वर्ष के लिये निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये। प्रधान श्री यशपाल राय, उपप्रधान श्रीमती शान्ति देवी अग्रवाल महामन्त्री श्री जगदीश चन्द्र लेखी, उपमन्त्री श्री रूपकृष्ण तथा कोषाध्यक्ष श्री के० के० बसल।

शोक समाचार

हमारे वरिष्ठ सदस्य श्री सोहनलाल भण्डारी के भतीजे दीपक (सुपुत्र श्री राम बहादुर भण्डारी) का ११ २ ८४ को नैरोबी (Nairobi, Kenya) मे देहान्त हो गया है। स्वर्गीय दीपक ३२ वर्ष के थे तथा अपने पीछे पत्नी तथा पुत्र छोड गए हैं। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सदगति प्रदान करे तथा भण्डारी परिवार को धैर्य प्रदान करे।

विविध

हमारे उपमन्त्री श्री महेन्द्र कुमार चाठली द्वारा निम्नलिखित हवन करवाये गये —

(१) श्री एस० के० उप्पल (Alperton) की विवाह की २५ वीं वर्षगाठ पर यज्ञ, दान ११=००

(२) श्री भाटिया (Ruislip) के घर पर यज्ञ ११=००

श्री हरबसलाल मुदगिल ने श्रीमती आर० एन० शर्मा (Thvonion Heath) के घर यज्ञ कराया। दान प्राप्त ११=००

विवाह सलाहकार सेवा—आर्य समाज द्वारा सचालित विवाह सम्बन्धी सलाह तथा सेवाओ के लिये प्रधान प्रो० सुरेन्द्रनाथ जी भारद्वाज प्रत्येक बुधवार साय ६ ३० से ८ बजे तक कार्यालय मे बैठते हैं। उनसे बुधवार को नियत समय पर १० ९९१ १७३२ पर सम्पर्क किया जा सकता है।

हिन्दी कक्षायें—हिन्दी भाषा की कक्षायें प्रत्येक रविवार को दोपहर २½ बजे से होती है। प्रवेश तथा पाठयक्रम के लिये श्रीमती चावला से मिलें।

विशेष नोट

हमारे उप प्रधान श्री कपिल देव प्रिंजा ने अपने कार्यालय का विस्तार किया है। उनका नया पता 170 New Bond Street London W-1 है। इस मास से सूचना पत्र (News Letter) के पोस्टेज का आधा व्यय श्री प्रिंजा जी ने दिया है।

आर्य समाज लन्दन का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

प्रो० सुरेन्द्र नाथ भारद्वाज निर्विरोध प्रधान निर्वाचित

लन्दन ४ मई १९८४, आर्य समाज लन्दन का वार्षिक अधिवेशन २१ अप्रैल १९८४ को वन्देमातरम भवन मे सौहार्द पूर्वक सम्पन्न हुआ। महामन्त्री श्री जगदीश द्वारा विगत वर्ष की उपलब्धियो का लेखा जोखा पढा गया जो कि उपस्थित सदस्यो द्वारा मुक्त कठ से सराहा गया।

कोषाध्यक्ष श्री प्रियव्रत चोपडा ने आय व्यय का विवरण पढा जिसे सभी ने सन्तोष जनक पाया तथा सर्वसम्मति से पारित किया। तत्पश्चात वार्षिक चुनाव हुआ। श्री सुरेन्द्र नाथ भारद्वाज सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित हुए। अन्य अधिकारियो के नाम इस प्रकार हैं —

उपप्रधान—सर्वश्री धर्मवीर पुरी, कपिल देव प्रिंजा

महामन्त्री—राजेन्द्र ग्रोवराय

उपमन्त्री—प्रम राय पाल व रमेश सेठी

कोषाध्यक्ष—प्रियव्रत चोपडा

पुस्तकाध्यक्ष—श्रीमती शकुन्तला कोछड

सदस्य कार्यकारिणी—सर्वश्री फकीरचन्द सुमरा, धर्मपाल भसीन, त्रिलोक कावरी, महेन्द्र कुमार चाठली, श्रीमती लाज चावला, श्रीमती सावित्री छाबडा, जगदीश शर्मा, एच० डी० मायर,

जन सम्पर्क अधिकारी—श्री अमर नाथ गिरधर।

सभी सदस्यों ने निष्ठा पूर्वक आर्य समाज का कार्य सुचारु रूप से करने का सकल्प किया। धन्यवाद तथा शान्तिपाठ के साथ सभा समाप्त हुई।

प्रेषक—गिरीश चन्द्र खोसला

दार-ए-सलाम में पुरोहित की आवश्यकता

अफ्रीका महाद्वीप के तजानिया देश की आर्य प्रतिनिधि सभा की प्रमुख दार-ए-सलाम आर्य समाज को एक पुरोहित (धार्मिक शिक्षक) की आवश्यकता है। प्रार्थी हिन्दी और सस्कृत के साथ ग्रेजुएट हो। सगीत अतिरिक्त योग्यता मानी जायेगी और यदि आर्य सस्था या गुरुकुल से पढकर निकला हो तो वरीयता मिलेगी नियुक्ति ३ मास के लिए ३५०० तजानिया शिलिंग पर होगी और सम्पुष्टि होने के बाद ४००० शि० वेतन होगा।

प्रारम्भ मे २ वर्ष के लिए अनुबन्ध होगा जो दोनो पक्षो की सहमति से बाद मे बढाया जा सकेगा। आवास, बिजली, पानी नि शुल्क होगा। बम्बई से दार-ए-सलाम का विमान किराया चयन किए उम्मीदवार को दिया जायेगा। प्रोवेशन की अवधि समाप्त होने पर पत्नी और १८ वर्ष से कम आयु के एक बच्चे को भी यह सुविधा प्राप्तहोगी। चिकित्सा सुविधा मुफ्त होगी और एक साल कार्य करने के बाद एक मास का वैतनिक अवकाश मिलेगा। ३ माह का लिखित नौटिस देकर या बदले मे १ मास का वेतन देने पर दोनो पक्ष अनुबन्ध से मुक्त हो जायेंगे। यदि समाज ने कार्यमुक्त किया तो पूरा किराया लौटने का समाज देगी परन्तु यदि पुरोहित स्वय कार्यमुक्त होना चाहेगे तो उन्हे भारत लौटने का २ वर्ष का अनुबन्ध का आनुपातिक किराया हीदिया जायेगा। प्रार्थी की आयु ३५-४०वर्ष से ऊपर होनी चाहिए। समाज के मन्त्री, प्रधान के आदेश पर समाज के लिए वेद प्रचार और धर्म-शिक्षक का काम भी करना होगा। वहा के बैंक के नियमानुसार अपने वेतन का एक तिहाई भारत को भेजने की अनुमतिहोगी। इसके लिए आव्रजन की शर्ते एव यहा के प्रिंसिपल इमीग्रेशन अफसर द्वारा जारी किया वर्क परमिट आवश्यक है।

प्रार्थी अपने तीन पासपोर्ट साइज के हाल के फोटो के साथ अपने प्रमाण पत्रो की प्रतिलिपि भेजते हुए उल्लेख करें कि वे सम्प्रति कहा काम कर रहे हैं ? और चुने जाने पर वे कब तक यहा आ सकेंगे ?

प्रेमनाथ सेठी

अवै० मन्त्री आर्यसमाज दार-ए-सलाम

आर्य समाजों की गतिविधियां

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी पर चल चित्र (फिल्म) निर्माण रोकने हेतु दिनांक २०-५-८४ को सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव की प्रतिलिपि

"आर्य समाज भिलाई नगर मे आयोजित जन सभा, सासद श्री भगवान देव जी द्वारा महर्षि दयानन्द जी पर बनाए जाने वाले चल चित्र (फिल्म) का घोर विरोध करती है। महर्षि दयानन्द जी पर चल चित्र बनाना महर्षि की भावना एव उनके उपदेशके विपरीत है। इस समाचार से समस्त आर्यजनो को दुःख पहुचा है। यह सभा सासद आचार्य भगवानदेव जी से अनुरोध करती है कि वे आर्यजनो की भावना एव महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तो पर ध्यान रखकर अपने इस प्रयास को अविलम्ब रोक दें।

साथ ही यह सभा "भारत सरकार", सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, परोपकारिणी सभा अजमेर, फिल्म सेंसर बोर्ड, से अनुरोध करती है कि वे श्री भगवानदेव, सासद द्वारा बनाई जा रही फिल्म के निर्माण पर तुरन्त रोक लगावें तथा इसका प्रदर्शन न होने दें।" —वीरेन्द्र कुमारसिंह, मन्त्री आर्य समाज भिलाई नगर

प्रति:

(१) माननीय राष्ट्रपति जी भारत सरकार, नई दिल्ली।
(२) माननीया प्रधान मन्त्री जी भारत सरकार नई दिल्ली।
(३) श्री मन्त्री, सूचना एव प्रसारण विभाग भारत सरकार, नई दिल्ली।
(४) सासद श्री भगवानदेव जी, दिल्ली।
(५) अध्यक्ष, परोपकारिणी सभा, अजमेर।
(६) अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली।
(७) श्रीमती प्रधाना, आर्य प्रतिनिधि सभा म० प्र० व विदर्भ, नागपुर।
(८) अध्यक्ष, फिल्म सेंसर बोर्ड, दिल्ली।
(९) स्वामी विद्यानन्द जी १४/१६ माडल टाउन, दिल्ली।
(१०) प्रकाशनार्थ समाचार पत्रो में।

डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल आर० के० पुरम् से०-९ नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित स्मारिका का विमोचन एवं पुरस्कार वितरण समारोह

नई दिल्ली १२ मई।

डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल आर.के. पुरम् सै ९ द्वारा प्रकाशित स्मारिका का विमोचन आज आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता एव आर्य समाज सफदरजग इन्कलेव नई दिल्ली के प्रधान श्री हरवशसिंह खेर द्वारा हुआ और समारोह की अध्यक्षता भी इन्होने ही की। इस अवसर पर आर्य समाज के समस्त अधिकारी एव अभिभावक उपस्थित थे। वार्षिकोत्सव पर स्कूल के कर्मचारी वर्ग ने स्कूल हेतु राशि एकत्र की, इसके लिए उन्हे भी पुरस्कार वितरित किए गए। ये पुरस्कार प्रसिद्ध आर्य समाज सेवी, आर्य समाज ग्रेटर कैलाश के प्रधान श्री शान्ति प्रकाश बहल द्वारा वितरित किए गए। समारोह मे स्कूल के बच्चो द्वारा सास्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया, जो आकर्षक था। समारोह मे आर्य समाज के मन्त्री श्री ओम्प्रकाश, श्री जसवन्तसिंह वर्मा आदि उपस्थित थे। उत्सव के पश्चात् स्कूलकी ओर से जलपान कराया गया। पिछले दो वर्षो मे इस स्कूल ने जितनी उन्नति की है, इसका श्रेय स्कूल की प्रिंसिपल श्रीमती विजय अरोड़ा को जाता है, उन्होने दिन रात अथक परिश्रम करके स्कूल की उन्नति मे अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। - रामनाथ सहगल, मैनेजर

धमकियों की निन्दा

जयपुर, २७ मई। आर्य समाज मोती कटला की साधारण सभा का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ। अधिवेशन मे पजाब के आतंकवादियो द्वारा सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी को दिये गये धमकी भरे पत्र तथा वहा की जा रही निर्दोष व्यक्तियो की हत्याओ की घोर निन्दा की। समाज मे निःशुल्क चिकित्सालय तथा योग प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित करने का निर्णय लिया।

आगामी वर्ष के लिए निम्न पदाधिकारी सर्व सम्मति से निर्वाचित हुए। प्रधान श्री केशवदेव वर्मा, उपप्रधान श्री सहदेव वर्मा आर्य, मन्त्री श्री अशोक कुमार शर्मा, उपमन्त्री श्री कानसिंह राठोड, कोषाध्यक्ष श्री लाभसिंह भाटी। —मन्त्री

संस्कृत कक्षाओं का समापन

महात्मा आनन्द स्वामी स्मारक आर्य विद्या मन्दिर (हिबिल रोड) बान्द्रा बम्बई मे १५ अप्रैल रविवार को निःशुल्क संस्कृत कक्षाओ का समापन समारोह श्री भाई शकर पुरोहित प्राचार्य मुम्बादेवी संस्कृत महाविद्यालय बम्बई की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

आर्य विद्या मन्दिर सान्ताक्रुज और बान्द्रा मे १ वर्ष से निःशुल्क संस्कृत कक्षाए चल रही हैं जिसमे ६७ विद्यार्थी भारतीय विद्या भवन की परीक्षा मे बैठे और सभी उत्तीर्ण हुए। श्री प्रकाशचन्द्र जी त्यागी ने विद्यालय की गतिविधियो पर प्रकाश डाला।

आचार्य सोमदेव शास्त्री ने इन कक्षाओ का सचालन तथा नये रूप से वेद की कक्षाओ को प्रारम्भ करने की घोषणा की। आर्य विद्या मन्दिर सोसाइटी के मन्त्री श्री जगदीशचन्द्र ने संस्कृत एव वेदादि शास्त्रो के अध्ययन का केन्द्र आर्य विद्या मन्दिर मे बनाने की घोषणा की।

श्री देवेन्द्र ने बम्बई मे संस्कृत कक्षाओ की प्रगति पर प्रकाश डाला तथा अपने ग्रन्थ श्री भाई शकर जी पुरोहित को भेंट किये। श्री जगदीशचन्द्र बहल प्रधान आर्य विद्या मन्दिर सोसाइटी ने आगन्तुको का स्वागत किया।

नये आर्य समाज की स्थापना

प्रतिपदा के अवसर पर उज्जैन नगर मे चन्द्रशेखर आजाद मार्ग पर आर्य समाज की स्थापना की गई। कार्यक्रम का प्रारम्भ महात्मा आत्मदेवजी वानप्रस्थी के कर कमलो से सम्पन्न हुआ।

स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी एव वयोवृद्ध आर्य समाजी नेता डा० कमलसिंह जी ने इस समाज को सभी प्रकार का सहयोग देने का आश्वासन दिया।

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ पदाधिकारी श्रीमान त्रिवेणी सहाय जी वानप्रस्थी ने समारोह की अध्यक्षता की एव समाज के पदाधिकारियो की घोषणा की। प्रधान श्री नन्दलाल जी आर्य मन्त्री श्री यादव कुमार कोषाध्यक्ष श्री गोपाल जी नियुक्त किए गए।

पुस्तक संग्रह अभियान

प्रति वर्ष की भाति इस वर्ष भी केन्द्रीय आर्ययुवक परिषद दिल्ली प्रदेश द्वारा निर्धन व सहायता योग्य विद्यार्थियो के लिए 'पुस्तक सग्रह अभियान" चलाया जारहा है जिसके तहत परिषद के कार्यकर्ता घर-घर जाकर पाठ्यक्रम व अन्य उपयोगी साहित्य सग्रह करेंगे। पाठ्यक्रम मे १२वीं कक्षा तककी पुस्तकें जरूरतमन्द छात्रो को बाट दी जाएगी, कालेज स्तर व अन्य वैदिक, प्रेरणाप्रद साहित्य केन्द्रीय आर्य युवक परिषद द्वारा प्रकाशित साहित्य, लघु ट्रैक्टो मे प्रयुक्त होता है। शोध कार्यों के लिए एकत्रित साहित्यिक कोष (ग्रन्थ आदि) परिषद की एक उपलब्धि है।

सम्पर्क सूत्र —चन्द्र मोहन आर्य
कार्यालय मन्त्री केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश
आर्य समाज कबीर, बस्ती दिल्ली-७
दूरभाष ५११६२४७

पुस्तक-समीक्षा

लेखक—श्री अमर स्वामी पूर्वनाम ठा० अमरसिंह

२०×३०/१६, प्रकाशक-सार्वदेशिक दयानन्द सन्यासी वानप्रस्थ मण्डल, गीता आश्रम, ज्वालापुर (हरिद्वार) पृष्ठ सख्या ७६ मूल्य केवल आठ रुपये।

आर्य समाज के प्रचार और प्रसार और वैदिक सिद्धान्त के प्रसार के लिए लगभग ७० वर्ष पूर्व आगरा (उ० प्र०) मे आर्य मुसाफिर विद्यालय खोला गया था, आज उस विद्यालय की स्मृति अमर स्वामी जी के रूप मे शेष रह गयी है, पुस्तक के आन्तरिक आवरण पृष्ठ ने 'अब और तब' शीर्षक से अमर स्वामी जो के ठा० अमरसिंह के शौर्य और प्रतिभा को भी एक बार फिर से स्मरण करा दिया है। अपनी युवा और प्रौढावस्था मे अखण्ड भारत अर्थात पजाब, सिन्ध, बिलोचिस्तान, कश्मीर के साथ साथ समस्त भारत मे वैदिक धर्म का नाद ठा० अमरसिंह जी ने बडी तल्लीनता, कर्मठता से बजाया था।

आज ठा० अमरसिंह जी के साथियो मे से अन्य कोई स्मृति पटल पर दृश्यमान नही हो रहा है ठाकुर साहबने सन्यास लेकर अपनी लेखनी द्वारा स्मारक उद्धरणो को उचित रूप देकर पुस्तक के रूप मे जन साधारण को सौंपा है, जो व्यक्ति उनके व्यक्तित्व से परिचित है, जिन्होने उनक शास्त्रार्थ और प्रवचन, भाषण सुने हैं वे इस पुस्तक के महत्व को भली भाति समझेंगे।

प्रकाशक महोदय ने श्री अमर स्वामी जी के स्वभाव के साथ न्याय नही किया है। स्वामी जी शुद्धता पवित्रता के धनी हैं, पुस्तक मे सशोधन की त्रुटिया खटकती हैं, विषय के अनुसार पुस्तक ग्राह्य एव सुपाठ्य है।

—पाठक

रजि० न० डी० (सी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (१० ६ १९८४) बिना टिकट भेजने का लाइसेंस नं० ९३
Licensed to post without pr-payment License No, 93 Post in N D.P S.O on 7 6-84

सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र के बढ़ते हुए आजीवन सदस्यों की सूची

ग्राहक स०

९६१—सर्वश्री मन्त्री आर्य समाज रमेश नगर नई दिल्ली-१५
८४८—शिव कुमार लाल एकाउन्ट मास्टर डी० ए० वी० इन्टर कालेज नवाबगंज गोंडा (उ० प्र०)
९६२०—एस० एन० डींमरा देहरादून (उ० प्र०)
८६१६—मन्त्री आर्य समाज लूखी जिला महेन्द्रगढ (हरि०)
१०६३८—आर्य प्रहलाद गिरि शिव मन्दिर निगा बर्दवान प० बंगाल
७६८०—मन्त्री आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग अलवर (राज०)
६१०२—ओंकारनाथ जी बान्द्रा बम्बई
११५४०—शिवराज रायजादा पौत्र विश्म्भर सहाय एम० ए० एल० एल० बी० बुलन्दशहर
१११०—जयन्त वी० कोटेचा पोरबन्दर (गुजरात)
११५७७—देवीदास जी नामदार गंज अमरावती (महा०)
६५९२—मन्त्री आर्य समाज पोरबन्दर (गुज०)
११५९८—सुश्री शन्नोदेवी शर्मा भू० पू० एम० एल० ए० सुजानगढ जिला चुरु (राज०)
११५९९—लाहोटी इन्डस्ट्रीज २१ नजफगढ रोड नई दिल्ली १५
११६००—लाहोटी एन्ड सन्स महात्मा गांधी रोड कलकत्ता ७
११६०१—माहेश्वरी एजेन्सीज ७ नवीन बाजार फर्स्ट फ्लोर रायपुर (म० प्र०)
११६०२—एजेन्सीज कारपोरेशन स्पेक्ट कमर्शियल सेंटर न० १ सासापाज रोड अहमदाबाद (गुज०)
११६१०—कुन्दनलाल जी डी १८ सी० सी० कालोनी दिल्ली ७
११६११
११६१२—सत्य
११६१३—मगलदास जी बाला जी कटरा दिल्ली ७
११६१४—नयना बेन वेद ४१ अम्बिका निकेतन कम्पाउड रोड अटवा लाइन सूरत
११६२९—सुरेश कुमार सर्वना १/१६७ मौडल टाउन सोनीपत (हरि०)
११६३०—सुरेश प्रकाश मेहता ७/२७ ला० पटेल नगर नई दिल्ली
११६३१—सुरेश कुमार सी० १४८ न्यू मोती नगर नई दिल्ली
११६३२—जी० के० सचदेवा चौरंगी टरिस कलकत्ता
११६३३—राजेन्द्र कुमार खोसला ६ बाबर रोड नई दिल्ली
२२९९—मन्त्री आर्य समाज सूरत (गुज०)

वैदिक संस्कारों के लिए विशेष सुविधाएं

आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई दिल्ली १ में विवाह आदि संस्कारो के लिए विशेष सुविधाएं उपलब्ध हैं। जो व्यक्ति सरल विवाह, बिना दान दहेज के जाति बन्धन तोडकर करना चाहते हैं उनको आर्य-समाज मे स्थान भी दिया जाता है।

कार्यालय का समय—प्रात ६ बजे से रात्रि ६ बजे तक

—रामनाथ सहगल मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली-२ में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसादपाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा रामलीला मैदान नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८५] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दयानन्दाब्द १६० दूरभाष २७४७७१
वर्ष ११ अंक २८] आषाढ़ कृ० ४ सं० २०४१ रविवार १७ जून १९८४ वार्षिक मूल्य १९) एक प्रति ४० पैसे

स्वर्ण मन्दिर आतंकवादियों से मुक्त

हरमन्दिर साहब में छिपे उग्रवादियों का आत्म समर्पण

कार्यवाही में २६४ उग्रवादी और ५९ जवान मारे गए

भिंडरावाला का शव स्वर्णमन्दिर के एक भवन में मिला

अमरीकसिंह व शुबेगसिंह भी मरे, उग्रवादियों को पकड़ने का दूसरा दौर तेजी पर

उग्रवादी नेता सन्त भिंडरांवाले और उनके दो निकट सहयोगियों प्रतिबन्धित आल इण्डिया सिख स्टूडेंट फेडरेशन के अध्यक्ष भाई अमरीकसिंह और रिटायर्ड मेजर जनरल शुबेगसिंह के शव गुरुवार (७ जून) की सुबह अकाल तख्त के तहखाने में बरामद कर लिएगए। इसके साथ ही स्वर्ण मन्दिर को उग्रवादियों के शिकंजे से मुक्त करा लिया गया।

दिल्ली में सरकारी प्रवक्ता ने बताया अब सेना की कार्रवाई का दूसरा चरण शुरु हो गया है। इसमे गांव-गिराव और दूसरे ठिकानों में छिपे उग्रवादियों व उनके हथियारों की व्यापक तलाश की जा रही है। दूसरी ओर उग्रवादियों की हिंसात्मक गतिविधियां पूरे पंजाब में जारी रही। बुधवार की रात से ७ जून की रात तक उग्रवादियों ने १३ लोगों की हत्याएं, कई जगह लूटपाट और आगजनी की। चंडीगढ में गोली चलने की घटना हुई। अधिकांश जगहों पर कर्फ्यू की अवधि बढ़ा दी गई है।

वैसे अभी तक यह पता नहीं चल पाया है कि भिंडरांवाले की मौत सेना की गोली से हुई या उन्होंने आत्महत्या कर ली थी। स्वर्ण मन्दिर में कई और शव बरामद हुए हैं, जिनकी शिनाख्त की जा रही है।

अब सेना का मुख्य काम केवल आतंकवादियों की गिरफ्तारी नहीं होगा, बल्कि उनके ऐसे ठिकानों का भी पता लगाना होगा, जहां भारी मात्रा में हथियार जमा हैं। खबर मिली है कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक दल अध्यक्ष गुरचरणसिंह तोहड़ा अकाली दल अध्यक्ष सन्त हरचन्दसिंह लोंगोवाल को जोधपुर ले जाया गया है। बीबी अमरजीत कौर अभी सेना की हिरासत में हैं। बब्बर खालसा के अध्यक्ष सुखदेवसिंह का कोई पता-ठिकाना नहीं है।

गृहमन्त्रालय के प्रवक्ता ने गुरुवार को बताया कि स्वर्णमन्दिर से उग्रवादियों को निकालने का काम सफलतापूर्वक पूरा कर लिया गया है। प्रवक्ता ने संकेत दिया कि उन पर शीघ्र मुकदमें चलाए जायेंगे।

प्रवक्ता ने कहा कि सैनिक कार्रवाई मे मारे गए व्यक्तियों के शवों की पहचान कल तक कर ली जाएगी। उन्होंने कहा कि प्रत्येक मामले में यह निश्चित किया जायेगा कि मृतक को किस तरह चोट आई हैं। प्रवक्ता ने बताया कि एक अधिकारी व दस जवान भी लापता है।

उन्होंने कहा कि कार्रवाई का दूसरा दौर बहुत व्यापक होगा।

सुरक्षा बल के जवान हथियारों की खोज निकालने के लिए सभी जगह छानबीन करेंगे। उन्होंने कहा कि कुछ जगह हथियारों को धार्मिक स्थलों के निकट तालाबों व अनाज के बोरों मे छिपा कर रखे जाने की खबर है।

प्रवक्ता ने कहा कि पंजाब के गुरुद्वारों व धार्मिक स्थलों की तलाशी का काम पूरा हो गया है जहां आतंकवादियों के छिपे होने तथा हथियार जमा होने की निश्चित सूचना थी। उन्होंने कहा कि बड़ी मात्रा में विभिन्न प्रकार के हथियार जब्त किए गए हैं।

उन्होंने कहा कि इस बात की पूरी जाच की जाएगी कि ये हथियार कहा के बने हैं और किस तरह आतंकवादियों को मिले।

उन्होंने कहा कि हमें विश्वास है कि अभी भी गुप्त स्थानों पर हथियार छिपाकर रखे गए हैं, जिन्हे ढूढ़ निकालने का कार्य सुरक्षा बल के जवान अपनी दूसरे दौर की कार्रवाई के दौरान करेंगे।

प्रवक्ता ने बताया कि अकालियों के साथ शिमला या कहीं और समझौता वार्ता करने की फिलहाल सरकार की कोई योजना नही है। उन्होंने इन अफवाहों का खण्डन किया कि अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर परिसर मे सेना की कार्रवाई के दौरान अकाली दल के अध्यक्ष हरचन्दसिंह लोंगोवाल और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के अध्यक्ष गुरचरणसिंह टोहरा घायल हो गए थे।

उन्होने बताया कि सुरक्षा बलों की अपील के बाद श्री लोगोंवाल और श्री टोहरा दोनों स्वयं ही परिसर के तेजासिंह समुन्दरी हाल से बाहर आ गए थे। उन्हे सुरक्षित स्थान पर ले जाया गया है।"

(८-६-८४)

(सेना पंजाब में सामान्य स्थिति और शान्ति पुनः स्थापित करने के कार्य मे भी संलग्न है।—सम्पादक)

सम्पादक—ओमप्रकाश पुरुषार्थी सहसम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

पंजाब में सैनिक कार्यवाही और विदेशी पत्र

उदारवादी अकाली दो घोड़ों पर सवारी की कोशिश कर रहे थे

सन्डे टाइम्स लन्दन

गत दो वर्षों में सिखों के साथ कोई राजनीतिक समझौता हो सकता था। उदारवादियों को कुछ और अधिक प्रयास करके सन्तुष्ट और उग्रवादियों को अलग थलग किया जा सकता था। परन्तु यह प्रक्रिया भीतर से आसान नही थी जितनी कि समीक्षकों को ऊपर से दिखाई पड़ती है।

सिख उदार वादियो ने एक कान श्रीमती इन्दिरा गांधी की ओर तो दूसरा अपने बन्दूक धारी उग्रवादी भाईयों की ओर लगा रखा था। जब भी केन्द्रीय सरकार ने कोई रिआयत दी उसके सामने एक नई मांग रख दी गई और प्रत्येक नई मांगके साथ उग्रवादी नेता जरनैलसिंह भिंडरावाला की ताकत बढ़ती गई।

इस त्रासदी के पीछे कई और अवांछनीय तत्व क्रियारत थे। इनमें से एक था—जवाहरलाल नेहरू के सपनों का भारत बनाने मे असफलता। दूसरा सपना था कि भारत सच्चे अर्थ में एक धर्मनिरपेक्ष देश बने जहां के नागरिक पहले खुद को भारतीय माने और बाद मे ब्राह्मण या बंगाली और मुस्लिम या मराठा। दूसरा शरारती तत्व भारतीय राजनीतिक संस्कृति की दुखद अवस्था है, भारत में राजनीतिक भ्रष्ट और अवांछित होकर रह गए हैं और उनमे नैतिक अधिकार भावना नहीं रह गई है।"

प्रमुख पाकिस्तानी पत्रों की प्रतिक्रिया

पाकिस्तान टाइम्स (इस्लामाबाद)

सुरक्षा सेवाओं द्वारा स्वर्ण मन्दिर में की गई कार्यवाही पूर्णतः अप्रत्याशित नही थी।

निःसन्देह भारत सरकार सिख सशस्त्र प्रतिरोध को दबाकर अल्पावधि ध्येय प्राप्त करने मे सफल हुई।

डान (कराची)

यह कहना बहुत जल्दी होगी कि भारत सरकार ने सफलता पूर्वक सैन्य कार्यवाही करके वास्तविक मामला सुलझा लिया है।

पंजाब संकट का खेद जनक पहलू यह है कि शान्ति पूर्ण बातचीत को सफल होने का पर्याप्त अवसर नहीं दिया गया। निःसन्देह ऐसा करने में हुई असफलता ने पंजाब मे आतंकवाद को बढ़ावा दिया अकाली दल की भी संकट को बढाने के लिए जिम्मेदारी है। जब वह सत्ता में लगभग तीन वर्ष रहा तब उसने इन मांगो पर जोर नही दिया। अकाली दल राजनीतिक मामलों पर पंजाबी हिन्दुओ का समर्थन प्राप्त करके हिंसा के समर्थकों को अलग-थलग कर सकता था।

पंजाब संकट के वार्ता द्वारा हल में अभी कुछेक और अड़चनें संभव—इन्दिरा

बलिदानी वीर सैनिकों को श्रद्धांजलि

लन्दन, ८ जून। 'गत कुछ दिनों में सिख उग्रवादियों के कड़ाई से दमन के बावजूद पंजाब की समस्या के बातचीत द्वारा राजनीतिक हल में अभी अड़चनें आ सकती हैं। प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरागांधी ने कल नई दिल्ली में 'न्यूयार्क टाइम्स' के साथ भेंटवार्ता के दौरान यह विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि सिख 'पृथकता वादियों' के उदारवादी धड़े के नेता आतंकवादी गतिविधियों को काबू नहीं कर पाए। इतना ही नहीं वे बहुत निकट से उसे फलते-फूलते भी देखते रहे।

प्रधानमन्त्री ने कहा कि सिख उग्रवादियों के खिलाफ की गई कार्रवाई को देश ने अधिकांशतः [illegible]

उन्होंने कहा—"हमने सोचा था कि [illegible] हम भरसक प्रयास भी कर रहे थे लेकिन भयानक हत्याओं की बाढ़ ही आ गई।"

श्रीमती गांधी ने कहा—"मैंने उदारवादी धड़े के लोगों से एक बार कहा था कि इस प्रकार का आन्दोलन कोई भी शुरू करे उसका फायदा कोई और ही उठाता है। जो लोग आन्दोलन शुरू करते हैं वे उदारवादी कहलाते हैं, बाद में उन्हें एक ओर धकेलकर कोई और आगे आ जाता है जो समझौता वस्तुतः असंभव बना देता है।

श्रीमती गांधी ने कहा कि उग्रवादियों ने कुछ धार्मिक स्थानों को छावनियों मे बदल दिया था और गांवों में फैल-फैल कर बिना कारण लोगों की हत्याएं कर रहे थे।

श्रीमती गांधी ने कहा कि स्वर्ण मन्दिर में उग्रवादियों ने ऐसे-ऐसे आधुनिकतम हथियार इकट्ठे कर रखे थे कि सरकार को यकीन ही नहीं था कि वे उन्हें प्राप्त भी कर सकते हैं। उन्होने कहा कि सरकार धर्म स्थानों की पवित्रता बनाये रखने के लिये चिंतित थी जबकि दूसरी ओर आतंकवादी उन्हें हत्या करके या छिपने के स्थानों के रूप में प्रयोग कर रहे थे। उन्होंने पूछा—क्या इस तरह निर्दोष लोगों की हत्याएं देखी जा सकती हैं?

श्रीमती गांधी ने स्वयं ही इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा—'कोई भी सरकार आतंकवादियो के हाथों निर्दोष लोगो का संहार सहन नहीं कर सकती।

उन्होंने भारतीय सेना के जवानो और अधिकारियों की प्रशंसा की, जिन्होंने अत्यधिक संयम और साहस के साथ उग्रवादियों की गोलियों का सामना किया उन्होने केन्द्रीय आरक्षी पुलिस बल के जवानों की भी प्रशंसा की तथा कहा कि इस बल ने पंजाब मे कार्रवाई के दौरान जनता का दिल जीतने की कोशिश की है।

श्रीमती गांधी ने कहा कि देश की सुरक्षा तभी हो सकती है जबकि जनता एकताबद्ध और अनुशासनबद्ध हो। भारतीय समाज मे संकट के समय पूर्ण एकता की भावना के बावजूद कुछ कमजोरियां विद्यमान हैं और कुछ विध्वंसक ताकतों ने उनका फायदा उठा कर गड़बड़ी पैदा करने की कोशिशें की हैं।

आर्य नेताओं को धमकी दिए जाने पर रोष

ग्वालियर को आर्य समाजों की एक विशाल सभा दिनांक २७ मई १९८४ को श्री बाबूलाल गुप्त (भूतपूर्व शिक्षा संचालक) की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई जिसमे पंजाब में प्रतिदिन हो रही निर्दोष व्यक्तियों को हत्या तथा आतंकवादियों द्वारा आर्य समाज के दो शीर्षस्थ नेताओं श्री रामगोपाल शालवाले, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली व महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी को दिए गए धमकी भरे पत्र पर तीव्र रोष प्रकट किया गया। आतंकवादियों को दुष्प्रवृत्ति की तीव्र भर्त्सना की गई।—किशोरीलाल गौतम

कश्मीर में अकालियों द्वारा आर्यसमाज मंदिर और कन्याविद्यालय जलाए जाने पर रोष

सार्वदेशिक सभाप्रधान श्री रामगोपाल शालवाले, महामंत्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरागांधी तथा गृहमंत्री से भेंट तथा रोषपूर्ण प्रतिक्रिया व्यक्त

क्षतिपूर्ति व उपद्रवियों को नियन्त्रित करने की मांग, शिष्टमंडल भेजे जाने का निश्चय

प्रेस वक्तव्य

दिल्ली ८ जून।

पंजाब में सैनिक कारंवाई के पश्चात काश्मीर के अकालियों ने तोड़-फोड़ आगजनी, और लूटपाट के साथ आर्य समाज मन्दिर हजूरी बाग, आर्य कन्या विद्यालय, हनुमान मन्दिर तथा निरकारी भवन मे आग लगाकर लाखो रुपयों की सम्पत्ति को भस्मसात कर दिया। यह समाचार भी मिले हैं कि इस कार्यवाही में सिखों के साथ पाकिस्तानी एजेण्ट और जमायते इस्लाम के कार्यकर्ता भी क्रियारत थे।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले तथा महामन्त्री श्री ओमप्रकाश त्यागी ने प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरागांधी तथा गृहमन्त्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी से मिलकर इस भयानक काण्ड पर गहरा दुःख व्यक्त किया और जम्मू काश्मीर सरकार की लापरवाही से आर्य समाज की लाखो रुपयों की सम्पत्ति को जलाए जाने की क्षतिपूर्ति की मांग करते हुए जम्मू काश्मीर में कानून और व्यवस्था को धूमिल करने वाले देश द्रोही उग्रवादियों को कड़ा दण्ड देने की जोरदार मांग की। आर्य नेताओ ने स्पष्ट किया कि इस घटना देशभर के हिन्दू-सिख सम्बन्धों मे कटुता फैलने की संभावना है।

उन्होने आर्य समाज सनातन धर्म तथा निरंकारी भाईयो से इस राष्ट्र-विरोधी घटना पर धैर्य और सयम रखने की अपील करते हुए, फारूक सरकार से इस जघन्य काड की अदालती जाच और काश्मीर घाटी मे अल्प-संख्यक हिन्दुओं की सुरक्षा व्यवस्था की मांग की।

उन्होंने यह भी बताया कि आर्य समाज का एक शिष्ट मण्डल जल्दी ही इस काण्ड की जांच के लिए श्रीनगर जा रहा है।

सच्चिदानन्द शास्त्री
संयुक्त सभा मन्त्री

प्रतिशोध का देवता

जरनैल सिह भिंडरावाला का वीभत्स एवं खेदजनक अन्त प्रतिशोध के उस देवता का प्रतीकात्मक है जिस पर मतान्धता असहिष्णुता और हिंसा की शक्तियां छाई हुई थी। एक प्रकार से युवावस्था मे उनके जीवन का अवसान दुःख जनक हैं। (आयु ३८ वर्ष)। उनमें साहस और दृढ़ता के गुण थे। यदि वह बुद्धिमत्ता से इनका उपयोग करते तो निश्चय ही उनसे न केवल उनका समुदाय ही अपितु समाज भी लाभान्वित हुआ होता। परन्तु उनमे निहित उग्रवादिता ने उन्हें लगभग ३ साल के दौरान एक खतरा बनाए रखा। उन्होंने एक घिनौने इतिहास का निर्माण किया। उन्होंने समझदारी की आवाज सुनने से इन्कार किया नाही यह अनुभव किया कि उनकी योजनाए कितनी प्रक्रियात्मक एवं भयावह थी।

यह बात रहस्यपूर्ण है कि वह बहुसंख्यक व्यक्तियों विशेषत: नवयुवकों को अपनाअनुयायी बनाने और उन्हें गलत दिशामे धकेलने में क्योंकर सफल हुए। वह न केवल हिंसा का प्रचार ही करते अपितु उसे क्रियात्मक रूप भी देते थे। उनके आदेश पर आतंकवादियों ने अनेक निर्दोषों की हत्या की, और लूटमार एवं आगजनी में भी लिप्त रहे। उन्होंने न केवल हिन्दुओं के प्रति ही अपितु अपने धर्म के उन लोगों के प्रति भी जिन्होने उनकी रीति नीति का समर्थन करने से इन्कार किया था, घृणा का प्रचार किया। उन्होंने कभी भी सच्चे धर्म गुरु जैसा आचरण नहीं किया। उन्होंने सिख गुरुओं की उच्च शिक्षाओं को सुनने जानने समझने की परवाह न की, उन्हें अमल में लाने की तो बात ही क्या? धर्म ने उन्हे एक उन्मत्त के रूप में परिणत कर दिया।

भिंडरावाला अब नही रहे। परन्तु भिंडरावाला जैसा चमत्कार क्योंकर उभरकर सामने आया इस प्रश्न का उत्तर पाना बाकी है? उन्हें महत्ता किस प्रकार प्राप्त हुई इसविषय मे अनेक थ्यूरिया प्रस्तुतकी जा रही हैं। उन्हेंकिसने बनाकर खड़ा किया और शुरु मे ही बुराई को क्यों नही कुचला गया? अब चू कि कहानी खत्म हो चुकी है अत: यह कहना सरल है कि उन्हे और उनके अनेक अनुयायियों को कुछ महीने या एक वर्ष पूर्व ही स्वर्ण मन्दिर से बाहर निकाल दिया जाना चाहिए था। परन्तु इसमें कोई सन्देह नही है कि उन्होने राज्य की दलीय राजनीति का पूरा पूरा लाभ उठाया। सत्ता के इस खेल के दौरान उनकी ताकत बढती गई।

आशा है न सिर्फ राजनेताओं ने अपितु सर्व साधारण नागरिकों ने पंजाब के कांडों से कोई पाठ ग्रहण किया होगा।

हमारे धर्म निरपेक्षता के भवन को कमजोर करना खतरनाक है। परन्तु धर्मनिरपेक्षता के नाम पर उपद्रवियों को दबाने के लिए तात्कालिक कार्यवाही का न किया जाना इससेभी ज्यादा खतरनाक है। आतकवादियों एवं मतान्धों को किसी भी धर्म स्थल को किला बनाने की अनुमति नही होनी चाहिए। जिस क्षण कोई मन्दिर, मस्जिद, गिरिजाघर या गुरुद्वारा हथियारो के रखने रखाने के लिए प्रयुक्त हो उसी क्षण उन स्थानो के प्रबन्धको के विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जानी चाहिए। यदि स्वर्ण मन्दिर के परिसर मे नए २ किस्म के विपुल अस्त्र शस्त्रों का जमाव न होने दिया जाता तो भिंडरावाला और उसके गिरोह को अनेक व्यक्तियों को बलात अपने कब्जे मे रखने की हिम्मत न होती। राजनेताओं को भी अल्पकालिक लाभ के लिए साम्प्रदायिक शक्तियों से गठबन्धन करने के खतरे को अनुभव करना चाहिए।

अब यत: बड़े चुनाव दूर नही है अत: राजनीतिक दल साम्प्रदायिक नेताओं पर डोरे डालने का प्रयास करेंगे परन्तु उन्हे राष्ट्रहित मे प्रलोभनो पर पार पाना चाहिए। किसी भी व्यक्ति या वर्ग का इस प्रलोभन को प्रोत्साहित करना अराष्ट्रीय कार्य होगा।

इस बात को सुनिश्चित किए जाने की परमावश्यकता है कि देश अन्य कोई भिंडरावाला पैदा न कर पाए।

ये विचार सहयोगी हिन्दुस्तान टाइम्स ने ८-६-८४ के अंक मे व्यक्त किए हैं जो पठनीय एवं मननीय हैं। —रघुनाथप्रसाद पाठक

अब मरहम लगाने के दिन

प्रभाष जोशी

एकता के सेनापति लेफ्टिनेंट जनरल रणजीतसिंह दयाल को पूरे देश का सत, श्री अकाल। गुरु गोविन्दसिंह के इस सच्चे सिख ने आज फिर साबित कर दिया कि खालसा पन्थ देश को तोडने और निहत्थे बेकसूर लोगो को मारने वालो को बर्दाश्त नही करेगा।

बुधवार ६ जून १९८४ के दिन का इतिहासकार चाहे जो करे पर भारतीय सेना ने इस दिन इस्पात के अक्षरो से भारत की धरती पर लिख दिया है कि इस राष्ट्र को धर्म और कौम के नाम पर तोडा नही जा सकता। सन्त भिंडरावाले को कितनी घातक गलतफहमी थी कि कोई सिख उनके और उनके मरजीवडो के खिलाफ नही लडेगा और टोपी वाले लालाओ से वे चुटकी मे निपट लेगे। स्वर्ण मन्दिर और दूसरे कई गुरुद्वारो को हत्यारो, लुटेरो, स्मगलरो और देशद्रोहियो के अड्डे बनने देकर उनकी पवित्रता भग करने वाले अकालियो को भरोसा था कि कोई सिख उनके खिलाफ कार्रवाई मे भाग नही लेगा। इन सब सिरफिरो को सेनापति दयाल ने फिर बता दिया है कि सिख भारत की रक्षक भुजा है और रहेगे।

आज का दिन मौजूदा और भविष्य मे पैदा होने वाले सन्त भिंडरावालो, खुमैनियो और गोडसो के लिए सबक है कि धर्म के नाम पर नफरत और आतक फैला कर इस देश की धर्म निरपेक्ष और मानवीय परम्पराओ को बन्धक नही बनाया जा सकता। राजनीति के लिए धर्म का कवच काम नही करेगा। सेनापति दयाल की जिस सेना ने सिख धार्मिक आतकवादियो के घुटने टिकाए उसके छह मे से चार कमाडर सिख थे और जिस बटालियन को पूरा जिम्मा सौपा गया था, उसकी कमान एक मुसलमान अफसर के हाथ मे थी। कोई है पाकिस्तान, ब्रिटेन और अमेरिका मे सुननेवाला ? दोस्तो अब इस देश मे कई राष्ट्रो का सिद्धात नही चलेगा।

घाव हुए है। सैकडो बेकसूर लोगो की हत्या के अलावा कई उग्रवादी, पुलिसवाले और सेना के जवान मारे गए है। बैंक लुटे है और देश की दौलत-जायदाद नष्ट हुई है। लेकिन इससे भी बडा घाव यह हुआ है कि स्वर्ण मन्दिर जैसे पवित्र तीर्थ मे सेना को घुसना पडा। पश्चिमी कमान के सेनापति जनरल सुन्दर जी ने सच कहा है—"हम वहा गुस्से मे नही गए। हमारे दिलो मे बहुत उदासी और आदर था। हमने पूरी कोशिश की कि धार्मिक स्थानो की पवित्रता बनी रहे। हरमन्दिर साहिब और दूसरे भवनो का कोई नुकसान न हो।' फिर भी इससे सिखो की भावनाओ को चोट पहुची है और इसका दु ख पूरे देश को है। लेकिन ढाई साल से उग्रवादियो ने स्वर्ण मन्दिर की पवित्रता और उसके लिए सरकार और देश के मन मे सम्मान का बेजा फायदा उठाया है। स्वर्ण मन्दिर और दूसरे गुरुद्वारा को उन्होने हत्या, लूट, बलात्कार, आगजनी और देशद्रोह के किलो मे बदल दिया था। गुरुद्वारो के प्रबन्धको और अकाली नेताओ मे हिम्मत नही थी कि इन आतकवादियो, अपराधियो और देशद्रोहियो को निकाल कर बाहर करे। वे उनकी बन्दूक से डर कर उन्हे धार्मिक राजनीतिक सरक्षण दिए हुए थे। स्वर्ण मन्दिर सिख और हिन्दुओ के सबसे पवित्र तीर्थ से ज्यादा राज्य के भीतर एक स्वतन्त्र राज्य और राष्ट्रद्रोह और दुनिया भर के अपराधो का द्वीप हो गया था जहा सिर्फ बन्दूक का कानून चलता था।

कोई भी राष्ट्र खासकर एक बहुधर्मी धर्म निरपेक्ष राष्ट्र एक धार्मिक तीर्थ को स्वतन्त्र राष्ट्र नही बनने दे सकता। स्वर्ण मन्दिर की देखादेखी काशी विश्वनाथ या तिरुपति का मन्दिर या दिल्ली की जामा मस्जिद आज नही तो कल ऐसे किले बन जाते। फिर एक हिन्दू देश होता, एक मुसलमान, एक सिख, एक ईसाई, एक जैन, एक पारसी, एक यहूदी और एक बौद्ध देश होता। भारत नही होता। अन्ध धार्मिकता और साम्प्रदायिकता के कालिया नाग को नथने के लिए यह जरूरी था कि एक बार साफ-साफ साबित हो जाए कि धार्मिक स्थानो से देश के वटवृक्ष की जडो पर कुल्हाडे नही मारे जा सकते। स्वर्ण मन्दिर मे सेना का घुसना कितना ही दु खदाई हो पर अनिवार्य था क्योकि स्थापित होना था कि राष्ट्र के खिलाफ काम करने वाला कोई भी मन्दिर राष्ट्र से उपर नही है। हमे गर्व करना चाहिए कि इसे एक सिख सेनापति ने स्थापित किया।

सन्त भिंडरावाले और उनके चेलो के साथ हुए व्यवहार से भी कुछ सिखो के मन मे कसक हुई है। पर वे देखें कि ये कैसे पन्थ के सेवक थे, जिन्होने बेकसूर और निहत्थे लोगो को कायरो की तरह मारा। जब पुलिस कार्रवाई की माग हुई तो अकाल तख्त मे आकर छुपे। उस पवित्र स्थान को हथियारो का जखीरा और अपराधियों का अड्डा बना दिया और जब सेना उनसे निपटने आई तो हरमन्दिर साहिब और अकाल तख्त मे घुसकर अपनी जान बचाने लगे। हारने पर उनका इरादा तो स्वर्णमन्दिर और अकाल तख्त को बारूद से उडाने का था ताकि पाप सेना और सरकार पर आए और सारे सिख विद्रोह करके खालिस्तान बना डालें। क्या धार्मिक नेताओ के ऐसे काम होते है ? गुरु नानक से लेकर गुरु गोविन्दसिंह तक ने भाईचारे, प्रेम और मानवता की साखी दी। नफरत और विभाजन की आग उगलने वाले उनके धर्म के प्रचारक नही हो सकते। निरकारियो से बदला लेने का पागलपन पूरे देश को निगलने लगा था। अकाल तख्त के मुख्य ग्रन्थी तक को वे धमकी दे रहे थे। यह धार्मिक उग्रवाद सिखखी के सिद्धान्तो के खिलाफ था। धार्मिक आतकवादी हिसा को सेना की डाक्टर के आपरेशन वाली काटपीट ही ठीक कर सकती थी। ज्यादातर सिखो को यह काड पसन्द नही था।

देश को सन्तोष करना चाहिए कि उसकी सेना सविधान और राष्ट्र की अखण्डता के सामने धर्म और इलाके को बडा नही मानती। लेकिन उसकी क्षमता, चरित्र और विश्वसनीयता को राजनेता बारबार कसौटी पर क्यो चढाना चाहते है ? क्यो वे साम्प्रदायिकता की कढाई मे लोगो की भावनाओ के घी को उबाल कर सत्ता की पूरियाँ तलना चाहते है ? पजाब मे अकालियो और इ काइयो ने लगभग एक साथ और होड करते हुए धार्मिक उग्रवाद और आतकवाद के भस्मासुरो को वरदान दिए ताकि सत्ता हथियाई जा सके। भस्मासुर हमेशा वरदान देने वालो के हाथ से निकल जाते है और फिर उन्ही के सिर पर हाथ रखना चाहते है। इन्ही भस्मासुरो ने गुरुद्वारो को अपराधो और देशद्रोह के किलो मे बदल दिया था। सदियो पुराने हिन्दू-सिख भाइचारे और प्रेम की रस्सियो के बट उधेड दिए थे। कुछ धागे टूट चुके हैं। देश के सबसे सम्पन्न, उद्यमी और खुश मिजाज सिखो के मन मे अन्याय के शिकार होने का भूत भर दिया है। जिस ग्रन्थ साहिब मे हिन्दू और मुसलमान सन्तो की बानी इकट्ठी होकर गुरु बन गई उसके सामने मत्था टेकने वाले सकीर्ण हो गए। जिन हिन्दुओ को सिख हमेशा अपने खून के खून और दूध के दूध लगे और जो गुरुद्वारो मे मन्दिर की तरह मत्थे टेकते रहे वे सिखो के आक्रामक उग्रवाद से खौफ खा कर बदले की भावना से उबलने लगे। देश का सबसे समृद्ध राज्य पजाब अराजकता के अधेरे मे कगाल होने लगा। और यह सब इसलिए कि अकालियो को सत्ता चाहिए और इ का को भी। और ये पार्टिया चुनाव मे लोगो के फैसले से उलट अपनी होड चलाना चाहती हैं। इन्दिरा गाधी ने देर आयद दुरुस्त आयद कार्रवाई की।

प्रधानमन्त्री को अकालियो के साथ एक मेज पर बैठकर पजाब की समस्याओ के सर्वसम्मत हल निकालने हैं। सैनिक कार्रवाई आपरेशन था राजनीतिक हल से पजाब की सेहत बनेगी।

(जनसत्ता ७-६-८४)

वेद और अहिंसा

—मनोहर विद्यालंकार

अहिंसा के महत्व का कारण

हमारे देश के तीन महापुरुषों—महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, तथा महात्मा गांधी ने अहिंसा को परम धर्म कहा है, इससे पूर्व महर्षि पतंजलि ने योग साधना के आठ अंगों में प्रथम यमों में सबसे पहले अहिंसा को रखा है, और इसी प्रकार उससे भी पूर्व योगेश्वर कृष्ण ने गीता के १०-५ में "अहिंसा समता तुष्टि:" तथा १६-२ में "अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्" अहिंसा का प्रतिपादन किया है।

इन महापुरुषों के महत्व के कारण अहिंसा पर बल दिया जाने लगा, अहिंसा का प्रचार हुआ और हमारा देश बाहय शत्रुओं के द्वारा पराजित होकर अपने गौरव को गंवा बैठा।

इस प्रसंग में महर्षि पतंजलि को दोष नहीं दिया जा सकता क्योंकि उसने अहिंसा को केवल योग साधकों के लिए आवश्यक बताया है और वहां भी सोलह साधन बताए हैं, जिनमें से एक अहिंसा है।

योगेश्वर कृष्ण ने भी दैवी सम्पत्ति युक्त मनुष्य में २६ गुणों मे से एक अहिंसा को बताया है, इसके अतिरिक्त सबसे अधिक ध्यान देने योग्य बात यह है कि—श्री कृष्ण अपने युग के सबसे बड़े युद्ध के सूत्रधार और प्रवर्त्तक थे, और उनका अर्जुन को स्पष्ट आदेश था कि—"निराशीनिर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः" गीता ३-३० हैं अर्जुन--ममता, दया, और आवेश को छोड़कर युद्ध कर। इस आदेश को पूरा करने की स्वीकृति गीता के अन्त में १८-७३ में- "नष्टो मोहः स्मृतिलब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत। स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव" कहकर उसने स्वीकार किया है कि उसे मोह हो गया था, श्री कृष्ण की कृपा से उसे पुनः विवेक प्राप्त हुआ है, इसलिए वह उनके आदेश को मानकर निर्मम होकर युद्ध करेगा, इसलिए योगेश्वर कृष्ण अहिंसा के प्रवर्तन या प्रचार में कारण थे, ऐसा मानना किसी भी तरह उचित नहीं।

आदर्श सामान्यतया विध्यात्मक होते हैं—यथा सत्य बोलो, यज्ञ करो, सदाचारी बनो, इत्यादि, वेद में इस प्रकार सहस्त्रों आदेश दिए गए हैं, ये आदेश जीवन के भिन्न भिन्न क्षेत्रों और परिस्थितियों के अनुसार आदर्श माने जा सकते हैं, किन्तु वर्तमान प्रसंग में मुख्य आदर्श निम्न हैं—

हम सब भाई भाई हैं

त्वं पितासि नस्त्वं मातासि वयम्, ऋक० १-३१-१०

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः ॥ अथर्व० १२-१-१२

हम सब परमेश्वर की सन्तान हैं और वह हमारा पिता है, भूमि मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूं, इसलिए हम सब भाई भाई हैं, हम सब (मनुष्यमात्र) को भाइयों की तरह मिलजुल कर रहते हुए सबकी सौभाग्य-वृद्धि के लिए सदा प्रयत्नशील रहना चाहिए।

"सभ्रातरो वावृधुः सौभगाय" ऋक् ५-६०-५

यदि हम नाना धर्मों और विविध भाषाओं के कारण अपने को भाई-भाई न मान सकें तो भी पड़ोसी तो बन ही सकते हैं।

"जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।"

अथर्व १२-१-४५

पड़ोसी का कर्तव्य है कि वह परस्पर रक्षा और आदान प्रदान, कष्टों और अभावों में एक दूसरे की सहायता द्वारा परस्पर की उन्नति में सहायक बनें, इसी तथ्य को वेद निम्न शब्दों में कहता है—पुमान पुमांसं परिपातु विश्वतः ऋक् ६-७५-४ "न स सखा यो न ददाति सख्ये सचाभुवे सचमानाय पित्वः।

अपास्मात्प्रेयान्न तदोको अस्ति पृणन्तमन्यमरणं चिदिच्छेत्।

ऋक्० १०-११७-४

जो साथ रहने वाले पड़ोसी को आवश्यकता पड़ने पर अन्न नहीं देता है वह सखा बनाने योग्य नहीं है, उसे छोड़कर चले जाना चाहिए और किसी दूसरे मानवीय गुणों से युक्त समय पर सहायता करने वाले के पास चला जाना चाहिए।

हम सबको मित्रों की तरह रहना चाहिए

दृते दृंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्,

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे, मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।

यजु० ३६-१८

इस मन्त्र में ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि हे परमेश्वर तू मुझे पत्थर और लोहे के समान दृढ बना जिससे जगत के सब प्राणी मुझे मित्र दृष्टि से देखें और मैं सबको मित्र दृष्टि से देखूं, इस प्रकार हम सब मनुष्य मात्र मित्र भाव से रहें शान्ति स्थापित करने का एक मात्र यही उपाय है। इसी उपाय को बरत कर परस्पर मित्रभाव बना रह सकता है। वर्तमान युग में रूस और अमेरिका वेद के इसी आदर्श का अनुसरण कर रहे हैं।

इस प्रसंग में यजुर्वेद के ३६ वें अध्याय के १७ से २२ तक के ६ मन्त्र मननीय हैं, इनको मिलाकर देखने से शान्ति और मैत्री के वैदिक आदर्श का चित्र स्पष्ट होता है।

वैदिक आदर्श

(१७ वा मन्त्र—द्यौ शान्तिः पृथिवी शान्तिः" इत्यादि प्रसिद्ध शान्तिमन्त्र है, इस मन्त्र में सब देवों से यहां तक कि शान्ति देव से भी तीनों लोकों की तथा औषधि वनस्पतियों से सब प्रकार की शान्ति की कामना की गई है। १८ वें और १९ वें मन्त्र में अपने को दृढ बनाने की प्रार्थना की है जिससे मुझे सब मित्र भाव से देखें और मैं सबको मित्र भाव से देखूं। इस प्रकार दीर्घ जीवन पाएं और हम सब परस्पर मित्र बने रहें। २० वें व २१ वें मन्त्र में सेनापति के अग्निसम दीप्त शोचिष्णु और क्रुद्ध रूप को नमस्कार करके उससे प्रार्थना की है कि तू हमारे शत्रुओं को संतप्त कर, हमारे लिए कल्याणकारी हो।

नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे

अन्यास्तेऽस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यं शिवो भव नः ॥ यजु० ३६-२०

२२ वे मन्त्र मे सर्वत्र अभय तथा प्रजा और पशुओं के लिए शान्ति की कामना की है, इस क्रम से स्पष्ट है कि जब तक हम निर्भय और हमारी सेना और उनके हथियार शत्रुओं को सन्तप्त करने में समर्थ नहीं होंगे तब तक हम निर्भय और हमारी प्रजा शान्ति से नहीं रह सकते।

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयंकुरु, शन्नः कुरु प्रजाभ्यो अभयंनः पशुभ्यः ॥ यजु० ३६-२२

उपर्युक्त धारणा का ही अथर्ववेद के काण्ड १९ के १५ वें सूक्त में समर्थन हुआ है, ये सभी मन्त्र बहुत सरल और महत्वपूर्ण हैं उनमें से कुछ अंश नीचे दिए जा रहे हैं—

यतो इन्द्र भयामहे ततो नो अभयंकृधि, विद्विषो विमृधो जहि।१।

इन्द्रस्त्रातोत वृत्रहा, स रक्षिताचरमतः स मध्यतः स पश्चात्स पुरस्तान्नोऽस्तु ।२।

उग्रा त इन्द्र स्थविरस्य बाहू उपक्षयेम शरणाबृहन्ता ।४।

अभयमित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं पुरोय।

अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ।५।

अभयं न. करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावा पृथिवी उभे इमे ।६।

इस प्रकरण मे सारी दुनिया को मित्र बनाने की बात कही है, यजुर्वेद के मन्त्रों का देवता अग्नि है, जो संकेत करता है कि जब तक सेना और उसके हथियार अग्नि के समान भयंकर नहीं होगे तब तक शान्ति स्थापित नहीं हो सकती, अथर्ववेद के मन्त्रों का देवता इन्द्र है जो संकेत करता है कि जब तक राष्ट्र ऐश्वर्य संपन्न नहीं होगा तब तक उचित हथियारों और सेना के अभाव में सेनापति भी शत्रुओं को दबा नहीं सकते। और उन्हें संतप्त किए बिना विश्व मैत्री स्थापित नहीं हो सकती"।

हमारे शास्त्रार्थ महारथी

—श्री देवीदास आर्य, मेरठ छावनी

[गताक से आगे]

श्री पंडित मनसाराम जी 'वैदिक तोप'

कोई समय था जब श्री पडित मनसाराम जी गुरुकल कागडी (हरिद्वार) मे एक कर्मचारी के रूप मे सेवा किया करते थे। उन दिनो कई पौराणिक पडित (विशेषकर पडित अखिलानन्द, पडित कालूराम, पडित रल्याराम और पण्डित माधवाचार्य आदि) आर्य समाज के विरुद्ध विष वमन करना और आर्य समाज के पूज्य प्रवर्तक महर्षि श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज पर कई प्रकार के मिथ्या एव लज्जाजनक आरोप लगाना अपना परम कर्त्तव्य समझते थे। उस समय श्री पडित जी ने यह अनुभव किया कि यदि मैं सस्कृत का भली भाति अध्ययन कर लू तो इन पण्डितो से शास्त्रार्थ करके इन्हे पराजित कर सकूगा। अत अपने इस पवित्र उद्देश्य की पूर्ति के लिए आप गुरुकुल मे रहकर सस्कृत का अध्ययन करने लगे किन्तु एक ही समय मे दो कार्य करना कठिन था। ऐसी अवस्था मे आप गुरुकुल से त्यागपत्र देकर काशी चले गए और वहा एक छात्रावास मे रहकर सस्कृत का अध्ययन करने लगे। कुछ वर्षो के पश्चात जब आप सस्कृत विद्या मे निपुण हो गए तो आप पजाब मे आकर आर्य समाज के पुरोहित के रूप मे सेवा करने लगे। अनायास एक दिन आप की श्री स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी से भेंट हो गयी। वह आपकी विद्वता एव योग्यता, लेख शैली एव वक्त व्यशक्ति से बहुत प्रभावित हुए। अत वे आपको लाहौर ले आए और आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के एक उपदेशक के रूप मे आपकी नियुक्ति करा दी। जब आपको आर्यसमाजो के वार्षिक उत्सवो मे प्रचारार्थ सम्मिलित होने और पौराणिक पडितो के साथ शास्त्रार्थ करने के सुअवसर मिले तो आर्य जगत मे आपके गुणो की सराहना होने लगी और दिन प्रतिदिन आपकी ख्याति बढती गई। जिस प्रकार अधिकतर मौलवी एव पादरी महर्षि श्री स्वामी दयानन्द पडित लेखराम, श्री स्वामी दर्शनानन्द, श्री पडित रामचन्द्र देहलवी और पडित धर्मभिक्षु जैसे उच्चकोटि के विद्वानो के साथ शास्त्रार्थ करने मे सकोच करते थे इसी प्रकार पौराणिक पण्डित भी श्री मन्साराम जी से शास्त्रार्थ करने से घबराते थे। श्री पण्डित जी व्याख्यान और शास्त्रार्थ करने के समय अकाट्य युक्तिया और पुष्ट प्रमाण देते थे जिनका विरोधी कोई भी सतोषजनक उत्तर नही दे सकते थे। आप केवल अच्छे वक्ता ही नही अपितु सुप्रसिद्ध लेखक भी थे। जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण आपकी प्रकाशित पुस्तक हैं।

सन १९३५ ई० मे स्वर्गीय महात्मा हसराज जी आर्य समाज लोहगढ, अमृतसर के वार्षिक उत्सव मे पधारे थे। जब वह व्याख्यान देने के लिये खडे हुए तो पौराणिक भाईयो ने शास्त्रार्थ की चनौती दे दी जो तत्काल स्वीकार कर ली गई। उन दिनो पण्डित मन्साराम जी काश्मीर गये हुए थे। अत आपको रातो रात वायुयान द्वारा लाकर अमृतसर मे पौराणिक पडितो के साथ आपका शास्त्रार्थ कराया गया जिसमे आर्य समाज की विजय हुई। इसी प्रकार यहा मेरठ मे मुझे एक दिन स्वर्गीय मास्टर लेखराम जी ने बतलाया था कि जिन दिनो आप टाक (सीमाप्रात पाकिस्तान) मे एक अध्यापक के रूप मे कार्य करते थे तो वहा एक बार आर्य समाज के वार्षिक उत्सव पर श्री पडित जी पधारे थे। वहा उनके पौराणिक पडितो के व्याख्यानो के उत्तर मे कई व्याख्यान हुए जिनसे प्रभावित होकर अधिकतर भाई सनातन धर्म सभा से त्यागपत्र देकर आर्य समाज टाक के सदस्य बन गये।

यह स्मरण रहे कि महात्मा हसराज की प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान थे। उनकी अपनी सभा मे भी कई विद्वान ऐसे थे जो यदा कदा पौराणिकों से शास्त्रार्थ भी किया करते थे किन्तु लोहगढ आर्य समाज के उत्सव पर श्री महात्मा जी का श्री पण्डित मन्साराम जी को जो प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नही अपितु पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक थे वायुयान द्वारा काश्मीर से लाना ही सिद्ध करता है कि श्री पडित जी एक महान वक्ता एव शास्त्रार्थ महारथी थे। हमे इस बात का दुख है कि ऐसे सुप्रसिद्ध प्रचारक एव लेखक इस ससार से शीघ्र ही चल बसे। अब तो हमारे मन एव मस्तिष्क मे केवल उनकी विद्वत्ता एव योग्यता की याद ही शेष रह गई है।

अन्य महारथियों के सम्बन्ध में

यू तो विगत ९८ वर्षो मे बीसियो विद्वानो एव महारथियो ने अपने लेखो, व्याख्यानो एव शास्त्रार्थों द्वारा आर्यसमाज की बडी सेवा की, किन्तु विस्तार भय से उन सबके कार्य का विवरण न देकर केवल उनके नामो का ही उल्लेख किया जा रहा है। उन महारथियो के नाम हैं —

दिवंगत महारथी

श्री स्वामी समर्पणानन्द जी, (श्री पडित बुद्धदेव जी विद्यालकार)

सर्वश्री पडित बुद्ध देव जी मीरपुरी, पडित तुलसी राम जी स्वामी, पडित छुट्टन लाल जी स्वामी, पडित योगेन्द्रपाल जी, पडित शिवशकर जी शर्मा काव्यतीर्थ, मास्टर आत्माराम जी अमृतसरी, पडित भोजदत्त जी, पडित मुरारीलाल जी शर्मा व उनके सुपुत्र पडित देवेन्द्र नाथ जी शास्त्री, पडित शिवशर्मा जी, पडित इन्द्र जी विद्यावाचस्पति, पडित भगवद् दत्त जी, स्वामी कर्मानन्द जी, पडित चरजी लाल जी प्रेम, पडित बस्तीराम जी, स्वामी अच्युतानन्द जी,पडित कालीचरणजी मौलवी आलम, महेशप्रसाद फाजल,पडित व्यासदेव जी शास्त्री, पडित लोकनाथ जी तर्कवाचस्पति, स्वामी भास्करानन्द जी, पडित शातिस्वरूप जी (मौलवी मुहम्मदअली कुरेशी) स्वामी विवेकानन्द जी मास्टर लक्ष्मण जो रामनगरी श्री स्वामी विज्ञान भिक्षु जी पडित धर्म देव जी विद्यामार्तण्ड, प० देवप्रकाश जी अमृतसरी।

इस समय के महारथियो के नाम ये हैं —सर्व श्री अमर स्वामी जी (ठाकुर अमरसिंह जी) पडित शातिप्रकाश जी प० बिहारी लाल जी शास्त्री, प० ओम्प्रकाश जी शास्त्री (खतौली वाले) पडित सुरेन्द्र जी शर्मा विद्याभूषण, काव्यतीर्थ पण्डित सत्यमित्र जी, शास्त्री (वेद तीर्थ तथा व्याकरणाचार्य) इत्यादि-२।

हमारा कर्त्तव्य

अब आवश्यकता इस बात की है कि हमे आर्य समाज मे फिर से शास्त्रार्थों का युग लाना चाहिए। शास्त्रार्थ महारथी स्वर्गीय स्वामी दर्शनानन्द जी तथा पडित रामचन्द्र जी देहलवी की शैली पर होने चाहिए। हमारे विरोधी भले ही हमारी आलोचना करें और हमे बुरा भला कहे किन्तु हमारे विद्वान शान्त रहे और कभी आवेश मे न आवें। वे शास्त्रार्थ करते समय सदा मुस्कराते रहे। हमारे प्रमाण पुष्ट हो और युक्तिया अति प्रबल एव अकाट्य, किन्तु शब्द अति मधुर हो।

निसन्देह वह दिन आर्यसमाज के इतिहास मे दुर्भाग्य का दिन था जबकि हमारे नेताओ ने कांग्रेस के प्रभाव मे आकर शास्त्रार्थ बन्द कर दिये जिसके परिणाम स्वरूप अधिकतर भाई बहिनो मे स्वाध्याय की प्रवृति समाप्त हो गई।

मित्रो! यह कितने दुख एव आश्चर्य की बात है कि जिन शास्त्रार्थो के कारण करोडो भारतवासियो ने सत्य सनातन वैदिक धर्म की सत्यता को स्वीकार करते हुए महर्षि श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज के चरणो मे सिर झुका दिया उन शास्त्रार्थो को बन्द करके हमने विधर्मियो को पाप एव पाखन्ड का खुला प्रचार करने के लिए छुट्टी दे दी। अब भी समय है कि हमारे नेता अपनी भूल स्वीकार करे और आर्य समाज मे फिर से शास्त्रार्थों का युग लायें जिससे कि करोडो भाई बहिनो को सत्य असत्य का निर्णय करने का सुअवसर मिल सके। (समाप्त)

आर्य समाज का भावी कार्य-क्रम

—श्री ओम्प्रकाश त्यागी

संसार के मानवों के कल्याणार्थ महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का समूचा कार्यक्रम सुचारु रूप में अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश तथा आर्य समाज के दस नियमों में रख दिया था। अपने जन्म काल से अब तक सौ वर्षों में आर्य समाज ने बड़े धैर्य, गम्भीरता तथा दृढ़ताके साथ कार्य किया इसका प्रभाव अपने सनातन धर्मी भाइयों, ईसाई तथा मुसलमानों पर विभिन्न रूपों में पड़ा है। मूर्तिपूजा को छोड़ सनातन धर्मियों ने समाज की सभी बातों को स्वीकार कर लिया है। अब आर्यसमाज को अपने भावी कार्यक्रम की रूप रेखा तैयार करनी चाहिये। मेरी दृष्टि में नीचे लिखी कुछ बाते हैं जिन पर आर्य जगत् को गति दी जा सकती है—

१—यज्ञ वैदिक धर्म की प्रतियां हैं, यह धार्मिक स्वास्थ जनार्दन की सेवा विश्व प्रेम आदि अनेकों मानवीय गुणों व प्रतिभा का द्योतक है और समूची आर्य जाति का स्वीकृत पूजा-स्थल है। इसी को आर्य जन अपनी सुविधानुसार समय व स्थान को देखते हुए करे। बाहर के देशों में अग्नि जलाने की सुविधा नही होती है, परन्तु मन्त्रोच्चारण आदि हो सकता है। इसलिये यज्ञ हमारी गतिविधियों का आधार बन सकता है।

२—यज्ञ पर वेद प्रवचन, पाठ तथा वैदिक धर्म सम्बन्धी बातों की चर्चा होनी चाहिये मानव जीवन के प्रत्येक पहलू पर वेद का उपदेश समयानुकूल होना चाहिये। परन्तु इस बात का ध्यान रहे कि यज्ञ में भाग लेने वाले व्यक्ति प्रवचन को सुनकर सन्तोष अनुभव करे।

३—योग वैदिक धर्म की विशेष उपज है। इसके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति सुख, शान्ति, ईश्वर-चिन्तन कर सकता है। इससे प्रत्येक व्यक्ति को आनन्द आता है। मानव की स्थिति सत्, रज तम का ध्यान करते हुये ज्ञान-योग-कर्म योग, भक्ति योग आदि का प्रशिक्षण दिया जा सकता है। राज योग का प्रशिक्षण प्रमुख रूप से दिया जाना चाहिये। इसके द्वारा विश्व भर को आर्य समाज अपनी ओर आकर्षित कर सकता है।

४—औषधालय—जनता की सेवार्थ अपने औषधालय होने चाहिये। औषधालय अच्छे भवन में भली प्रकार जन सेवा करे अच्छा है। परन्तु अपनी शक्ति के अनुसार हम आर्य समाज मे एक वैद्य आदि रख सकते हैं और नित्य बीमारों के घर जाकर बीमारों के प्रति सहानुभूति प्रकट करें तो जन सेवा धर्म प्रचार का उत्तम साधन होता है।

५—शिक्षण संस्थाओं को महर्षि दयानन्द द्वारा बतलाये मार्ग के द्वारा अपने धर्म संस्कृति के साथ समस्त ज्ञानों का प्रशिक्षण देना चाहिये। चरित्र निर्माण तथा धार्मिकता प्रमुख रूप से हो ताकि वह व्यक्ति प्रत्येक क्षेत्र में सफल सिद्ध हो सके। किसी शिक्षण संस्था की यही पहिचान है कि उसने कितने नवयुवक अपने विचारों के बनाये यदि ऐसा नहीं है तो वह निर्मूल है।

६—युवक-युवतियों को आर्य समाज का भविष्य सामने रखकर आर्य समाज की ओर आकर्षित करना चाहिये। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली ने आर्य वीर दल इसी के लिये बनाया है। आर्य वीर दल ही आर्य समाज की भावी आशा है। देश, काल परिस्थिति को देखते हुये समयानुकूल कार्यक्रम कुछ भी बनाये जा सकते हैं, परन्तु उनके बौद्धिक में विशेष आर्यों का जीवन सन्ध्या हवन तथा सत्यार्थ प्रकाश का पाठ रहना चाहिये' इससे आर्य समाज सदैव सजग रहेगा।

अकाली आन्दोलन : हकीकत क्या है ?

—डा० सुरेन्द्र सिंह कादियाण

[गतांक से आगे]

१. गुरुद्वारा रकाब गंज (नई दिल्ली) की एक दीवार को सड़क बनाने के लिए प्रशासन ने जब तोड़ा इसके विरुद्ध रोष प्रकट करते हुए सिखो ने आन्दोलन चलाया। अन्त में अंग्रेजो ने सिखों की मांग मान ली।

२. ७ नवम्बर १९२१ को अमृतसर के जिला मजिस्ट्रेट ने स्वर्ण मन्दिर के तोशा-खान की चाबी अपने अधिकार में ले ली जिनके विरुद्ध सिखों ने 'कुञ्जी आन्दोलन' चलाया। अन्त में सरकार ने चाबियां लौटा दी।

३. सरकार ने निर्णय लिया सिख पूरे आकार की कृपाण के स्थान पर प्रतीक रूप मे छोटे आकार की तलवार रखें जिसके विरुद्ध सिखों ने आन्दोलन किया। बाद में सरकार ने सिखों की माग स्वीकार कर ली।

४. गुरु के बाग को महन्त के अधिकार से मुक्त करने के लिये शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी ने आन्दोलन शुरू किया। अन्त मे सर गंगाराम के हस्तक्षेप से सरकार और महन्त ने यह बाग अकालियो को सोप दिया।

५. अकाली आन्दोलन को सहायता पहुंचाने वाले नाभा नरेश रिपुदमन सिंह को जब अंग्रेजो ने अपदस्थ कर दिया तो सिखों ने उसके विरोध मे आंदोलन शुरू किया। यहां भी सरकार को झुकना पड़ा।

६. सिखों का सेना मे १९.२ प्रतिशत का कोटा निर्धारित था किन्तु सन १९३० मे घटकर १३.५८ कर दिया गया। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय महाराजा पटियाला के नेतृत्व मे 'खालसा डीफेंस लीग' बनी जिसका उद्देश्य अधिकाधिक सिखो को सेना में भर्ती करना था। अंग्रेजो ने इस प्रमाण का स्वागत किया और सिखो को खुश करने के लिये लाहौर हाईकोर्ट बेंच में एक सीट सिखों को दे दी तथा एक सीट वायसराय की प्रबन्धक समिति में दे दी।

इसी प्रकार अन्य छोटे मोटे आन्दोलन सिखो ने अंग्रेजो के विरुद्ध चलाये। इन आन्दोलनों में सिखो ने जो बलिदान दिये, जो वीरता दिखाई उसका स्वागत किया जा सकता है किन्तु अफसोस यही रहा कि इनके परिप्रेक्ष्य मे अंग्रेज जो खेल खेल रहा था उसे पूरी तरह से समझा नही गया और उसके नतीजे आज वर्तमान अकाली आन्दोलन के रूप मे राष्ट्र को भुगतने पड़ रहे हैं। अकाली कहते हैं सिख हिन्दू नही है, अलग कौम माना जाए, उन्हें खालिस्तान दिया जाए। ऐसा वह इस कारण मांग रहे हैं कि उनकी दृष्टि मे उनका धर्म, उनका इतिहास, उनकी परम्परा इन मागो को सशक्त आधार दे रही है। किन्तु ऐसा सोचना सही नही है। हकीकत यह है कि सिख जब राजनैतिक रूप में अपने चरमोत्कर्ष पर थे तब भी कही खालिस्तान अपने अस्तित्व मे नही आया था और जब उनका धर्म अपने चरमोत्कर्ष पर था तब भी वह अपने को हिन्दुत्व से पृथक नही रख सकता था। सामाजिक परम्परा की दृष्टि से तो सिख आज भी हिन्दुओं से पृथक नहीं है क्योंकि हिन्दुओ की तरह ही उनमें भी जातिया हैं, गोत्र है और परस्पर वैवाहिक सम्बन्ध हैं। हिन्दुओं की तरह सिखों मे भी अस्पृश्यता है। इसीलिए अकाली नेता ज्ञानी करतार सिंह ने सरदार पटेल से प्रार्थना की थी कि (१) रामदासी सिख (२) मजहबी सिख (३) कबीरपंथी सिख (४) और सिकलीगर सिख, पंजाब और पेप्सू की परिगणित जातियों की सूची मे शामिल किए जाएं। यह प्रार्थना मास्टर तारासिंह की सहमति से की गई थी। वर्तमान अकाली आन्दोलन की जड़ में अंग्रेजो की फूट के सिवाय कोई दूसरा तत्व कार्य नही कर रहा है। इसकी कुछ झलक ऊपर मिल जाती है।

(क्रमशः)—सम्राट

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज खंडवा जिला पूर्व निमाड़ (म० प्र०) में दिनाक ११-४-८४ को सायंकाल ७ बजे श्री मौनजी भाई आसारिया की अध्यक्षता मे एक शोक सभा का आयोजन किया जिसमें माननीय श्री रामकृष्ण जी पालीवाल के आकस्मिक निधन पर शोक श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

सुखराम आर्य सि० शास्त्री पुरोहित आ. स खंडवा

उन्हें बेहतर जिंदगी के नाम पर मुसलमान बनाया जा रहा है

समस्तीपुर ३१ मई। बिहार मे बेरोजगार हिन्दू युवको को खाडी के देशो मे लुभावने वेतन और सुख सुविधाओ का लालच देकर मुस्लिम धर्म में परिवर्तित किया जा रहा है। इस काम मे कई विदेशी गिरोह सक्रिय हैं।

पता चला है कि ऐसे गिरोहो के लोग यहा के मुस्लिम गावो मे अपना पडाव डालकर अपना धधा चला रहे है। अब तक इन गिरोहो के लोगो ने गरीबी और बेरोजगारी से ऊबे हुए सैकडो हिदू युवको का धर्म परिवर्तन कराया है और उन्हे बेहतर जिदगी जीने के नाम पर अरब देशो मे भेज दिया है।

बताया जाता है कि इन युवको का हिदू नाम बदल कर मुस्लिम नाम रख दिया जाता है। फिर कडी जाच पडताल के बाद इन्हे कलकत्ता के रास्ते अरब देशो मे भेजा जाता है।

हालाकि विदेशी गिरोह इस काम मे काफी दिनो से लगे हुए हैं लेकिन बिहार सरकार कोई कारवाई नही कर रही है।

धर्म परिवर्तन के इस धधे का रहस्योदघाटन बेगूसराय जिले के फुलवडिया थाने की पुलिस ने सबसे पहले किया।

फुलवडिया पुलिस को बरौनी और तेघडा के आर्य सामाजिको ने खबर दी थी कि पास के बारो गाव मे अब्दुल अजीज के यहा एक युवक कैद है। इस सूचना के बाद पुलिस ने अब्दुल अजीज के घर पर छापा मारा और वहा कैद भूषण कुमार सिंह उर्फ मोहम्मद अली अकबर खा को मुक्त किया।

भूषण उर्फ अकबर ने पुलिस को अपने बयान मे जो बातें बताई वे काफी चौकाने वाली थी। उसने कहा कि वह उत्तर बिहार के दरभगा जिले के बारो थानान्तगत जोगियारा गाव के मजरा टोला का निवासी है। उसे इसी वर्ष २८ फरवरी को कुछ व्यक्ति अरब देश मे नौकरी दिलाने का लालच देकर पूर्णिया जिले के अटरिया नामक जगह पर ले गये। यहा हाल ही मे विश्व मुस्लिम सम्मेलन का आयोजन किया गया था।

अटरिया मे ही भूषण सिंह को इस्लाम धर्म कबूल कराया गया और उनका नाम मोहम्मद अली अकबर खा रखा गया। धर्म परिवर्तन के बाद भूषणसिंह को एक महीना तक जमायते तब्लीग मे रखा गया। इसके बाद उसे कर्नाटक राज्य के दल के लोगो के साथ इस्लाम धर्म के प्रचार के लिए कटिहार जिले के विभिन्न इलाको मे भेजा गया। इसके बाद उसे ३४ दिनो तक बेगूसराय के जमायते इस्लाम बारो मे रखा गया। यहा उस पर घर से बाहर निकलने और घूमने फिरने पर पाबन्दी लगा दी गई। एक तरह से उसे यहा कैदी की जिंदगी गुजारनी पड रही थी।

मैट्रिक पास २५ वर्षीय भूषण सिंह उर्फ अकबर हट्टा कट्टा नौजवान है। उसने पुलिस को यह भी जानकारी दी कि उसे १२ मई को बरौनी से कलकत्ता भेजा जा रहा था। वहा से उसे अरब देश भेज दिया जाता।

कलकत्ता मे इस गिरोह के कई अड्डे हैं जहा देश के विभिन्न राज्यो से बेरोजगार हिदु युवको को धर्म परिवर्तन कराके भेजा जाता है। अरब भेजने का काम कलकत्ता का यही गिरोह करता है।

भूषण सिंह उर्फ अकबर के पास से एक पत्र भी बरामद हुआ है जिसे अब्दुल अजीज ने अरब देश के अपने एक मित्र को लिखा था। उर्दू मे लिखे इस पत्र का हिदी रुपान्तर इस प्रकार है—

बिरादर मोहतरम जनाब अस्लाम वालेकुम

खुदा करे खैरियत से हू। एक साहब मो० अली अकबर खा को आपकी खिदमत मे रवाना कर रहा हू। यह हजरत दरभगा (अब) के करीब के नव मुसलमान हैं। तफसील इनसे मालूम हो जायेगी। इन्हें वहा किसी मुनासिब काम पर लगा दें। नवाजिश होगी। ह० अब्दुल अजीज बारो बेगूसराय।

बहरहाल भूषण सिंह धर्म परिवर्तन के बाद भी अरब देश नहीं जा सका। क्योंकि स्थानीय आर्य समाजियो को जब इसकी भनक मिली तो उन्होंने अजीज के घर से भूषण को जो जाति का राजपूत है मुक्त करा लिया। फिर उसे हिन्दू धर्म में दीक्षित कर फुलवड़िया पुलिस के सरक्षण मे उसके घर पहुचा दिया गया।

(जनसत्ता १ ६ ८४)

आर्य समाज बेगुसराय की जागरुकता और सक्रियता अनुकरणीय व प्रशसनीय है। अन्य आर्य बन्धुओ एव समाजो को इसे विफल बनाने के लिए आगे आना चाहिए।

—सम्पादक



मानवता सस्कार प्रशिक्षण शिविर मे सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री बालदिवाकर हस एव श्री हरिश्चन्द्रजी शास्त्री सूर्यवशी की उपस्थिति मे आर्यवीर सामूहिक यज्ञोपवीत धारण कर रहे हैं।

सम्पादक के नाम पत्र

धर्म और राष्ट्र-रक्षा : सर्वोपरि कर्त्तव्य

हमारे देश,धर्म और संस्कृति पर समय समय पर अनेक आपत्तियां आई और इन्हे मिटाने के लिये विदेशियो तथा विधर्मियो ने भरसक प्रयत्न किये, किन्तु हमारा धर्म और हम न मिट सके। परन्तु आज की परिस्थिति सर्वथा पृथक् व अत्यन्त विकट है। जिस धर्म व संस्कृति को औरगजेब जैसे अत्याचारी शासको की तलवार न मिटा सकी उसे आज बडे सुनियोजित ढग पर षडयन्त्रो द्वारा समाप्त करने के लिये अथक प्रयत्न किये जा रहे है। एक ओर जहा देश को पुन खण्डित कर ईसाईस्तान और दूसरे पाकिस्तान के निर्माण के स्वप्न सजोये जा रहे हैं वहा दूसरी ओर भोले भाले, अपढ आदिवासियो और गरीब हरिजनो को करोडो रुपये खर्च करके पैसो के बल पर जबरदस्ती ईसाई व मुसलमान बनाया जा रहा है। मीनाक्षीपुरम् की घटना इसका ज्वलत उदाहरण है। अस्तु आज आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दू समाज के समस्त घटक मिलकर देश मे बढ रही विघटन की लहर और हमारे धर्म व संस्कृति पर हो रहे आक्रमणो के विरुद्ध प्रचड आदोलन करे। किन्तु अधिकाश इतर हिन्दू तो अभी तक कुम्भकर्णी नीद मे सोये पडे है। अत आज की विषम परिस्थिति मे आर्य समाज को ही सगठित एव और अधिक सक्रिय होकर काम करना होगा। परन्तु खेद है कि कुछ अपने ही भाई आर्य समाज के सगठन को ही कमजोर बनाने पर तुले है और अनुशासन रहित होकर पृथक सगठन बना रहे हैं जो कि सर्वथा अनुचित है।

हमारे अधिकाश आर्य बन्धु भी कर्त्तव्य परायण कम, किन्तु भावुक अधिक हैं। उदाहरणार्थ अजमेर मे आयोजित महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी को ही लीजिये। यदि सच पूछा जाय तो किसी भी महापुरुष के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि व आदर सम्मान उसके उपदेशो एव शिक्षाओ का पालन कर तदनुकूल आचरण करना व चलना है। बडे-बडे स्मारक और भवन खडे करने या बनाने की अपेक्षा मानव को सच्चे अर्थ मे मनुष्य बनाने की महती आवश्यकता है। आर्यसमाज मन्दिर या यज्ञशाला का निर्माण आवश्यक होते हुये भी भवनो का निर्माण कार्य ही सब कुछ नही है। परन्तु लोगो ने भावुकता मे यज्ञशाला और स्मारक-निर्माण तथा वेद भाष्यादि के नाम पर लाखो रुपये दान मे दिये। इनके अतिरिक्त चार, पाच लाख व्यक्तियो के आने-जाने मे (रेल-भाडादि मे) कई करोड रुपये खर्च हो गये। किन्तु करोडो रुपये खर्च करने के बाद भी एकत्रित हुई आर्य जनता का मार्ग दर्शन कुछ भी न हुआ और आर्य समाज के भावी प्रचार व प्रसार एव अन्य रचनात्मक कार्यो की रूपरेखा कुछ भी तैयार न हुई। इस तरह निर्वाण शताब्दी समारोह से आर्यो के शारीरिक जोश और शक्ति का तो पता चला लेकिन समय की माग के अनुसार आज के महान् कार्य आर्य (हिन्दू) जाति की, भारतीय संस्कृति, सभ्यता, धर्म और राष्ट्र की रक्षा के लिये कुछ भी न किया गया जिसके लिये हमारे शिरोमणि सगठन सार्वदेशिक सभा के आदरणीय प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले सतत् प्रयत्नशील है।

कुछ दिनो पूर्व श्री प्रधान जी ने धर्मरक्षा अभियान हेतु ५ करोड रुपयो का एक स्थायी फड स्थापित करने की घोषणा व अपील 'सार्वदेशिक' मे प्रकाशित की थी। हमारा कर्त्तव्य है ठीक हम उक्त कार्य के लिये अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग देकर अपनी कर्त्तव्य-परायणता का परिचय द क्योकि वर्तमान मे धर्म और राष्ट्र-रक्षा सर्वोपरि कर्त्तव्य है अन्यथा जब देश विखण्डित हो जायेगा और हमारी संस्कृति मिट जायेगी तो मन्दिर, यज्ञशालाय और वेद भाष्य किम काम आयेंगे ? सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी से भी निवेदन है कि अपने लक्ष्य के पूत्यर्थ उक्त फडकी सूचना व उसके लिये अपील 'सार्वदेशिक' मे निरन्तर प्रकाशित करते रह जा आर्य समाज व दानी महानुभाव इस महान् पुण्य कार्य मे आर्थिक सहयोग द उनके नाम भी 'सार्वदेशिक' मे प्रकाशित होते रहे।

—काशीनाथ शास्त्री गोदिया

दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह सम्पन्न

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ७२ वें वार्षिकोत्सव पर गुरुकुल एव वेद प्रचार मडल जिला कुरुक्षेत्र के तत्वावधान मे आयोजित क्षत्रीय दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह उस समय समाप्त हो गया जब गावो से आए हजारो आर्य ट्रैक्टरो, मोटर साईकिलो पर आर्य समाज के भविष्य के प्रति आश्वस्त होकर लौट गए।

समारोह का आरम्भ कुरुक्षेत्र के उपायुक्त श्री के सी शर्मा जी ने ध्वजारोहण कर किया तथा अपने उदबोधन मे युवको द्वारा राष्ट्र निर्माण कार्य पर बल देते हुए वीर युवक तैयार करने के लिए गुरुकुलो का उत्तम बताया। उन्होने गुरुकुल की सहायतार्थ १०००० का अनुदान देने की घोषणा भी की।

दोपहर बाद विशाल कुश्ती दगल मे प्रदेश भर के पहलवानो ने भाग लिया खेल मन्त्री चौ० चन्दा सिंह जी ने ५००० रुपए का अनुदान देने की घोषणा करते हुए ऋषि दयानन्द के उपकारो से भारत को ऋणी बताया तथा उनके आदर्शों पर चलने का आह्वान किया। गुरुकुल कुरुक्षेत्र के आचार्य देवव्रत जी ने गुरुकुल द्वारा तैयार राज्य स्तरीय खिलाडियो के लिए सरकारी सहायता की प्रार्थना भी की जिस पर मन्त्री महोदय ने विचारना स्वीकार किया।

इस अवसर पर राष्ट्र रक्षा सम्मेलन मे बोलते हुए भू० पू० केन्द्रीय मन्त्री प्रो० शेरसिंह जी ने सरकार को राष्ट्र रक्षा के लिए तैयार रहने की चेतावनी दी। देश की अखण्डता विरोधी तत्वो से सख्ती से निपटने की बात कही।

इस अवसर पर आयोजित शहीद सम्मेलन मे लोग उस समय अत्यधिक भाव विभोर हो गए जब अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल की ९५वर्षीय बहन शास्त्री देवी जी पण्डाल मे पहुची। देश पर बलिदान होने वाले परिवार की दशा देखकर लोग दुखी हो उठे इस अवसर पर पारित प्रस्ताव मे माग की गई कि शहर से गुरुकुल मार्ग का नाम स्वामी श्रद्धानन्द मार्ग रखा जाए। लोगो ने शास्त्री देवी जी के सामने हरियाणा मे रहने का भी प्रस्ताव रखा। गौ रक्षा सम्मेलन तथा समाज सुधार सम्मेलन शिक्षा सम्मेलन मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले, म० भरतसिंह जी, चौ० बिशनसिंह जी एडवोकेट, प्रो० भागसिंह जी आर्य जगत के तपस्वी सन्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती तथा स्वामी रुद्रवेश जी व डा० देवव्रत जी ने भी समारोह को सम्बोधित किया। इस अवसर पर समारोह के सयोजक श्री धर्मदेव विद्यार्थी द्वारा लिखित पुस्तक उन्नत गोपालन का विमोचन भी किया गया।

अन्तिम दिन व्यायाम प्रदर्शन समारोह हुआ। समारोह के अध्यक्ष भू पू पुलिस अधीक्षक चौ० सत्यदेव सिंह तथा सयोजक श्री धर्मदेव विद्यार्थी और गुरुकुल के आचार्य श्री देवव्रत जी ने सयुक्त वक्तव्य मे बताया कि शीघ्र देहात भर मे नई आर्य समाजों की स्थापना की जायेगी और नए युवको को आर्य समाज मे दीक्षित करने के हेतु जून माह मे एक विशाल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जायगा।

कुरुक्षेत्र जिला भर मे इस समारोह से समाज सुधार की भारी आशा प्रकट की जा रही है।

प्रार्य समाजों की गतिविधियां

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश द्वारा आयोजित महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह सानन्द सम्पन्न

कागडा। दिनाक १ से ३ जून तक कागडा में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह सानन्द सम्पन्न हुआ। दिनाक २ ६ ८४ को विशाल शोभा यात्रा नगर मे निकाली गई इसमे जम्मू शिमला, जालधर अमृतसर एव हिमाचल से पधारे हुए सैकडों नर नारियो एव स्कूल छात्र छात्राओ ने अत्यन्त ही उत्साह पूर्वक भाग लिया। नगर के नागरिको ने स्थान स्थान पर शीतल पेय की व्यवस्था की थी। इस सम्मेलन में आध्यात्मिक सम्मेलन, वर्णव्यवस्था सम्मेलन, नवयुवक सम्मेलन महिला सम्मेलन एव सगीत सम्मेलन का आयोजन किया गया।

ध्वजारोहण श्री पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती दीनानगर वालो ने तथा स्मारिका का विमोचन किया।

समारोह की सफलतार्थ पधारे थे सर्वश्री ब्रह्मचारी आर्य नरेश, श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, सत्यपाल जी पथिक, कुवर जोरावर सिह जी, ब्रह्मचारी जयन्त, श्रीमती विमला जी जालन्धर, श्रीमती चावराणी जी विलासपुर आदि।

दि० २८ ५ ८४ से ३ ६-८४ तक यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन आर्य जगत के सुप्रसिद्ध कर्मकाण्डी वैदिक विद्वान श्री प० राजगुरु जी शर्मा के ब्रह्मत्व मे सानन्द सम्पन्न हुआ एव वेद पाठ दयानन्द मठ चम्बा के ऋत्विजो द्वारा किया गया पूर्णाहुति मे सैकडों नर-नारियों ने अत्यन्त ही श्रद्धापूर्वक आहुति प्रदान की। यज्ञ के यजमानों मे हिमाचल के उपमुख्य मन्त्री श्री सतपाल जी महाजन दम्पत्ति की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। इस सम्मेलन की सम्पूर्ण व्यवस्था श्री पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल के निर्देशन मे डी ए वी कालेज कागडा के प्राचार्य श्री जीवन जी ने की। यह सम्मेलन प्रतिनिधि सभा एव प्रादेशिक सभा के सहयोग से सानन्द सम्पन हुआ।

विशेष—पूर्णाहुति के दिन चम्बा दयानन्द मठ के श्री प० देवशर्मा ने १ लाख रुपयो के दान की घोषणा की। जिसके ब्याज से हिमाचल मे वेदप्रचार व्यवस्था की जावेगी तथा किसी योग्य विद्यार्थी को वेद विषय की शोध करने पर छात्रवृत्ति भी दी जा सकेगी। श्री प० राजगुरु जी शर्मा की अपील पर जन-सहयोग से यह राशि एक लाख ११ हजार एक सौ ग्यारह तत्काल लोगो के दान से पूर्ण हुई तथा यह राशि और बढने की सभावना है।

आर्य समाज जमानिया

आर्य समाज जमानिया के वार्षिकोत्सव के अवसर पर राष्ट्ररक्षा सम्मेलन राष्ट्रीय सौमनस्य सम्मेलन और महिला सम्मेलन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुए। राष्ट्ररक्षा सम्मेलन मे माग की गई कि हमारा राष्ट्र आर्य राष्ट्र घोषित किया जाय। पजाब मे उग्रवादियों का दमन किया जाय और खालिस्तान की माग करने वालो को राजद्रोही घोषित किया जाय। गोरक्षा सम्मेलन मे गोहत्याबन्दी की माग किए जाने के साथ-२ गऊ को 'राष्ट्रीय प्राणि' उदघोषित करने की भी माग की गई।

—नारायण प्रसाद, मन्त्री

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल

—मण्डल का वार्षिक अधिवेशन व चुनाव २० ५-८४ को श्री एच० एस० सैर की अध्यक्षता मे आर्य समाज लोधी रोड (जोरबाग) मे हुआ जिसमे मडल के १९८४ ८५ के लिये निर्मलिखित पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गये—

प्रधान सर्वश्री हरबसलाल कोहली, उपप्रधान (वरिष्ठ) कृष्णलाल सूरी, उपप्रधान (कनिष्ठ) श्रीमती सरला पाल, महामन्त्री रामसरन दास आर्य, मन्त्री ओम्प्रकाश भावल, मन्त्री आर्य मित्र बजाज, कोषाध्यक्ष, सालिग राम गौतम, लेखानिरीक्षक देशराज जुनेजा।

—रामसरनदास आर्य, महामन्त्री

उत्सव

आर्य समाज फीरोजाबाद (आगरा) का वार्षिक उत्सव २६ से २९ मई तक सफलता पूर्वक मनाया गया। सर्वश्री प० केशवदेव जी शास्त्री, प्रणव शास्त्री, स्वामी विद्यानन्द जी तथा स्वामी प्रेमानन्द जी के प्रभावशाली व्याख्यान व प्रवचन हुए कुवर हरिसिंह जी आर्य श्री चन्द्र जी शर्मा के सुमधुर भजन हुए।　—ओकार दत्त आर्य, मन्त्री

आर्य समाज शाहजहापुर का वार्षिक उत्सव २१ से २४ जून १९८४ तक मनाया जायगा।　—मन्त्री, विद्याधर

निर्वाचन

आर्य केन्द्रीय सभा करनाल का निर्वाचन १३-५ ८४ को हुआ। श्री वेद-प्रकाश गुप्त प्रधान श्री ईश्वर चन्द्र मन्त्री तथा आत्मदेव कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

४२२ ईसाई नरनारी शुद्ध हुए

आर्य समाज पटनागढ जिला बलागीर उडीसा मे स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती के पौरोहित्य मे शुद्धि समारोह तथा बृहदयज्ञ दिनाक २९-५-८४ को किया गया जिसमें बनवासी क्षेत्र के १११ ईसाई परिवारों के ४४२ ईसाई नरनारियों को शुद्ध किया गया सबको महर्षि लगर मे सामूहिक भोज के साथ साथ वस्त्र दान किया गया। स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती ने सार्वदेशिक आ० प्र० सभा के प्रधान श्रीयुत रामगोपाल वानप्रस्थ जी का आशीर्वाद सदेश प्रदान करते हुए उन्हें आर्य जाति मे मिला लिया। इस शुद्धि समारोह मे बहु गण्य मान्य व्यक्ति भाग लिए थे। आर्य समाज बलागीर के मन्त्री एडवोकेट प्रफुल कुमार बलियार आर्य समाज पटनागढ के कार्यकर्ता तथा उत्साही बनवासी नेता हलधर कुमार जी का सहयोग अत्यन्त सराहनीय है।　—स्वामी ब्रह्मानन्द (उडीसा वाले)



आर्य समाज पटनागढ (बलागीर) उडीसा मे शुद्ध हुये १११ ईसाई परिवारों के ४४२ नरनारी दि० २९ ५ ८४

अकाली आन्दोलन वापस लें

—इन्दिराजी

नई दिल्ली, २ जून। प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने आज पंजाब के अकाली नेताओं से अपील की कि वह कल से प्रस्तावित अपना असहयोग आंदोलन वापस ले लें और पंजाब समस्या के शान्तिपूर्ण हल के लिए केन्द्र सरकार ने जो पेशकश की है, उसे वे स्वीकार कर लें।

आकाशवाणी से राष्ट्र और विशेषकर अकाली नेताओं के नाम आज रात एक विशेष सन्देश प्रसारित करते हुए श्रीमती गांधी ने कहा कि ऐसे समय में जब काफी खून बह चुका है और हिंसा के बदले हिंसा हो रही है, एक और आंदोलन छेड़ने से कोई हल नहीं निकलेगा, बल्कि उससे राष्ट्र विरोधी तत्वों को ही मजबूती मिलेगी।

प्रधानमन्त्री ने कहा कि मैं यह गलत धारणा दूर करना चाहती हू कि सरकार ने इस समस्या का हल निकालने के लिए कुछ नहीं किया, अकाली दल के पिछले दिनों के आंदोलनों से जो असलियत उभरी है, वह यह नहीं कि अकाली दल की विभिन्न मांगों पर सरकार ने जो सुझाव रखे, वे काफी है या नहीं। सच्चाई तो यह है कि यह आंदोलन अब उन चन्द लोगों के हाथ मे है जिन्हें हमारे देश की एकता और अखण्डता का कोई आदर नही है, जिन्हें साम्प्रदायिक शांति और सद्भाव या पंजाब की आर्थिक उन्नति से कोई सरोकार नहीं है।

श्रीमती गांधी ने कहा कि हर तीसरे या चौथे महीने एक नया मोर्चा शुरू किया जाता है और पंजाब मे दु:ख और झगड़ों का वातावरण छा जाता है। आतंकवादी और राष्ट्रविरोधी तत्व इसका लाभ उठाते हैं, पंजाब में दु:ख, अशांति और भय फैलाते हैं। मासूम लोग, हिन्दू और सिख, दोनों ही मारे जा रहे हैं। आगजनी, लूट और तोड़फोड़ की घटनाएं हो रही है। पवित्र स्थान अपराधियों और हत्यारो के छिपने की जगह बन गए हैं। इन पूजा के स्थानों की पवित्रता अपमानित की गई है। हिन्दुओं और सिखों के बीच जानबूझकर कटुता फैलाई जा रही हैं। सबसे बुरा यह है जो चन्द लोग इन पवित्र स्थानो मे छिपे हैं वे खुले रूप से देश की एकता और अखण्डता को चुनौती दे रहे हैं।

इन्दिरा जी ने कहा कि इस दूषित वातावरण के बावजूद समझौते की उम्मीद मे हमने अकाली नेताओं के साथ बातचीत जारी रखी। लेकिन हमें बड़ी निराशा हुई कि बातचीत के दौरान कोई फैसला नही हो सका। जब भी समाधान करीब लगता था या तो कोई नई मांग पेश की जाती थी या उन मामलों पर भी जिन पर पहले सहमति हो चुकी थी, उनका रवैया सख्त हो जाता था। ऐसा लगता है कि जिन नेताओ ने यह आंदोलन शुरू किया था उनमें इसके परिणामों पर काबू करने की न क्षमता और शायद न इच्छा है।

प्रधानमन्त्री ने कहा दो बात मैं साफ करना चाहूंगी। पहले तो यह कि पिछले दो वर्षों में अकाली नेताओ के साथ बातचीत मे तमाम निराशाओं के बावजूद मैं अब भी उनसे यही अनुरोध करती हू कि इसके समाधान का हमने जो ढांचा बनाया उसे वे स्वीकार करें। अगर किसी मामले के बारे में कोई गलत फहमी या शंका रह जाए, तो उसे भी हम बातचीत से तय कर सकते हैं। लोकतन्त्र मे किसी भी समस्या को सुलझाने का सही और एकमात्र तरीका यही होता है कि उसे बातचीत के द्वारा तय किया जाए।

दूसरी बात यह है कि सरकार सभी समस्याओं को बातचीत के माध्यम से सुलझाने के लिए प्रतिबद्ध अवश्य है लेकिन, यह स्पष्ट होना चाहिए कि कोई भी सरकार हिंसा और आतंकवाद को समाधान का तरीका नहीं मान सकती। जो ऐसे समाज विरोधी और राष्ट्र विरोधी कार्य करते हैं, उन्हें इस बात को अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए।

श्रीमती गांधी ने कहा कि पंजाब समस्या के हल के लिए हमने विरोधी पार्टियों को भी विश्वास में लिया और बातचीत में शामिल किया ताकि कोई ऐसा हल निकल आए जो ज्यादा से ज्यादा लोगों को स्वीकार हो। इस बातचीत में हमारा रवैया बराबर यही रहा कि मुनासिब मांगों को स्वीकार किया जाए। पंजाब में अशान्ति और हिंसा से किसी का भी फायदा नहीं है, सिवाय उनका जो भारत की एकता और अखण्डता को नुकसान पहुंचाना चाहते हैं। राष्ट्र के इन्हीं व्यापक हितों को मद्दे नजर रखते हुए हम दावों और प्रतिदावो पर एक आम राय बनाने की कोशिश करते रहे।

संविधान के अनुच्छेद (२५) में संशोधन की मांग पहले नहीं थी लेकिन इस मामले को हमने कानूनी निगाह से नहीं देखा। जब इस मांग को पेश किया, हालांकि साथ ही संविधान की प्रतियां जलाने का निन्दनीय आंदोलन किया गया, तब भी सरकार ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी तथा सिख समुदाय के दूसरे प्रतिनिधियों से और कानून के विशेषज्ञों से परामर्श करने की तथा अनुच्छेद २५ (२) (बी) में संशोधन करके ऐसे कानून बनाने की पेशकश की जो इस सम्बन्ध मे गलतफहमी दूर करने के लिए जरूरी हो।

वैदिक विवाह

निम्नलिखित पौराणिक सनातनी परिवारों मे वैदिक विवाह सम्पन्न हुए हैं। ये ग्राम झौवारी, पूर्णियां बिहार के निवासी हैं।

(१) मुखी लाल यादव की पुत्री उर्मिला कुमारी की शादी वैदिक रीत्यानुसार ६-३-८४ को हुई।

(२) ९-३-८४ को बिन्दी यादव के पुत्र दिलीप यादव का विवाह वैदिक रीत्यानुसार हुआ ये ग्राम झौवारी, पूर्णिया के निवासी हैं।

(३) झौवारी निवासी शिवना० यादव की पुत्री मंजुला का वैदिक रीत्यानुसार दिनाक १९-३-८४ को हुआ। अरुण यादव ग्राम इटाहुवा (बिहार) की शादी दिनाक १९-३-८४ को वैदिक रीत्यानुसार हुई।

(४) झौवारीग्राम (बिहार) के निवासी श्री छोटकन यादव की कनिष्ठ पुत्री रेखा की शादी मठाई मधेपुरा (बिहार) के निवासी महेन्द्र की पुत्र रामेश्वर यादव के साथ वैदिक रीत्यानुसार दिनाक ९-५-८४ को हुई।

(५) ग्राम झौवारी (बिहार) के निवासी श्री रघुनी यादव की पुत्री कारी की शादी वैदिक रीत्यानुसार हुई। श्री लखन यादव की कनिष्ठ पुत्री नीलम की शादी वैदिक रीत्यानुसार हुई।

—राजेश्वर प्र० आर्य
—आर्य समाज बरदेला (बिहार)

ग्रामीण वैदिक यज्ञ प्रचार समिति का गठन

नागदा। जक्शन। निकटस्थ ग्राम बड़ा चिरोला में दिनाक ७ मई ८४ को सम्पन्न यजुर्वेद महायज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर "ग्रामीण वैदिक यज्ञ प्रचार समिति" का गठन किया गया। समिति के संयोजक श्री सेवाराम जो आर्य वरिष्ठ उपप्रधान आर्य समाज नागदा ने बताया कि आर्य समाज को अपने प्रचार के लिये अब शहर से गांवों की ओर बढ़ना चाहिये। समाज मे व्याप्त अन्धविश्वास रूढ़िवाद तथा जात-पांत और ऊंच-नीच की भावना को समाप्त कर वैदिक समाजवाद का रास्ता आर्य समाज ही दिखा सकता है। गांवों की धर्म प्राण जनता को धोखे बाज धूर्त लोग धर्म के नाम पर छल कपट और तरह-तरह के डर भय, दिखाकर लूट रहे हैं। देश की समस्त आर्य समाजों को चाहिये कि अपने आस-पास के गावों में जाकर वेद प्रचार करें। शहरों में बड़े बड़े उत्सव और जलसे करने के बजाय आर्य समाज को अपना प्रचार कार्य गांवों में मिशन की भावना से करना होगा तभी महर्षि दयानन्द का दिव्य स्वप्न साकार होगा। ज्ञातव्य है कि समिति संयोजक श्री सेवाराम जी आर्य गांवों में वेद प्रचार का कार्य पिछले काफी वर्षों से कर रहे हैं। उन्ही की प्रेरणा से दिनाक ५ मई से ७ मई तक चिरोली में, ८ से ९ मई खरसोद खुर्द में, १० से १२ मई को बेरछा में, १३ से १५ मई आक्या में १७ से १९ मई धिनोदा में २१ से २३ मई मौलाना में २४ से २६ मई चिकली में तथा २८ मई से ३० मई उन्हेल में यजुर्वेद महायज्ञ का आयोजन किया गया है। इनसे प्रेरणा लेकर आर्य जनों को तथा आर्यसमाजों को गांवों में वैदिक यज्ञ का आयोजन कर वेद प्रचार करना चाहिये। —जोधसिंह राठौर

तपोवन में सांस्कृतिक शिक्षा-शिविर १५ मई से

देहरादून, ११ मई। वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून मे योगाचार्य स्वामी सत्यपति जी के निर्देशन मे १५ मई से ३० जून तक नि शुल्क सास्कृतिक शिक्षण शिविर चल रहा है जिसमे न्यायदर्शन पढ़ाया जाता और सस्कृत भाषा का काम चलाऊ ज्ञान कराने का प्रयास किया जाता है।

आश्रम की विज्ञप्ति मे बताया गया है कि प्रशिक्षार्थियो के लिए आवास सुविधा नि शुल्क उपलब्ध की जायेगी परन्तु उन्हे अपना भोजन-व्यय स्वय वहन करना होगा।

चूं कि आश्रम रमणीक आरण्यक पर्यावरण मे स्थित है अत आशा की जा रही है कि प्रशिक्षार्थियो की सख्या पर्याप्त रहेगी।

—मन्त्री
वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी, तपोवन

शुद्धि

बत २६ ४-८४ को शुद्धि समारोह सम्पन्न हुआ जिसमे एक मुस्लिम युवती को वैदिक धर्म मे प्रवेश कराया गया।

२१ वर्षीय मुस्लिम युवती मुमताज बानु को उसकी इच्छानुसार शुद्ध करके वैदिक धर्म मे प्रवेश कराकर मणिका क्षेत्री के नाम मे सुशोभित किया गया। उत्सव मे नगर के उत्साही महिलाए एव पुरुषो ने प्रसन्नता पूर्वक भाग लिया। उपस्थित जन समूह के समक्ष श्री टीकाप्रसाद राई जी ने शुद्धि विषय मे सारगर्भित भाषण दिया। अन्त मे मणिका क्षेत्री द्वारा मिष्ठान्न वितरण के पश्चात शान्ति पाठ के साथ शुद्धि समारोह सम्पन्न हुआ।

—बिरल तुलाधार
मन्त्री, आर्य समाज दार्जीलिंग

१०१५०—पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार
जि०—सहारनपुर उ० प्र०

अपने बल:

१—इन्द्रियो को बलवान बनाने के साथ-साथ यशवान् भी बनाओ।
२—हाथ कितने ही अच्छे और ताकतवर क्यो न हों यदि वे गरीबों और कमजोरो की रक्षा तथा गिरे हुओ को ऊपर उठाने मे काम नही आते हैं तो उनका सुडौल और बलवान होना बेकार है।
३—हमारे कान यदि बुरी और निन्दा की बातो को सुनने से इन्कार नही करते तो उनके सुडौल होने से क्या लाभ ?
४—हमारी आखे यदि पराई बहू बेटियो को बुरी दृष्टि से देखती हैं और दूसरो की सुख समृद्धि को नही देख सकती तो उनका बड़ा और खूबसूरत होना बेकार है।
५—हमारी जीभ से यदि शुद्ध और मधुर वचन नही निकलते है तो उसका होना न होना बराबर है।
६—हमारे पैर यदि दूसरो के दु.खो को दूर करने और अन्याय अत्याचार से बचाने के लिए नही दौड़ते हैं तो उनका बलवान् होना व्यर्थ है।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली-२ में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसादपाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा रामलीला भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८५]
वर्ष १९ अंक २१]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
आषाढ कृ० १० सं० २०४१ रविवार २४ जून १९८४

दयानन्दाब्द १६० दूरभाष २७४७७१
वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति ४० पैसे

पंजाब की घटनाओं के लिए गुरुद्वारा प्रबन्धक भी जिम्मेदार

राष्ट्रपति के भाषण का मूल पाठ

नई दिल्ली १७ जून।

मेरे प्यारे देशवासियो !

आपको सम्बोधित करते समय मेरा दिल दुख और व्यथा से भरा हुआ है। पिछले कुछ समय से पजाब की कुछ घटनाओ की खबरे आ रही थी। गुरद्वारे, जो कि आध्यात्मिक शांति और इनसानी भाईचारे के केन्द्र हैं, सभी के लिए हैं। दुर्भाग्य से हाल ही मे पथ से हटने के कुछ मामले हुए।

गुरद्वारे उग्रवादियो के कब्जे में आ गए तथा गुरद्वारो के प्रबन्ध के लिए जिम्मेदार पदाधिकारी भी उग्रवादियो के सामने बेबस हो गए। पवित्र स्थान उग्रवादियो तथा गुमराह तत्वो के शरण स्थल बन गए।

फलस्वरूप, उग्रवादियो ने हत्या लूट और आगजनी शुरु कर दीं। उन्होंने पंजाब पर आफत् ढा दी। हिन्दू और सिख, दोनों इसका शिकार हुए। इनमे प्रमुख पत्रकार, धर्मोपदेशक, विद्वान, राजनीतिक नेता तथा किसान और मजदूर भी शामिल हैं।

उग्रवादियों ने श्री अकाल तख्त साहिब के भूतपूर्व जत्थेदार सिंह साहिब ज्ञानी प्रतापसिंह के भी प्राण ले लिए। ज्ञानी प्रताप सिंह बीसवी सदी के प्रसिद्ध व्यक्ति थे। वह विख्यात लेखक, चिंतक तथा गुरु साहेबान के सदेश के प्रचारक भी थे। उनके प्राण सिर्फ इसलिए ले लिए गए क्योंकि उनके विचार उग्रवादियो के विचारों से मेल नहीं खाते थे।

पजाब मे जिन लोगो पर गुरद्वारो के प्रशासन की जिम्मेदारी है उन्हें भी इस मामले मे जवाबदेही से सर्वथा मुक्त नही समझा जा सकता। सरकार को बहुत ही अनिच्छा से सुरक्षा बल भेजने पडे। पावन स्थानों की पवित्रता बनाए रखने के लिए दो धार्मिक तथा राजनीतिक नेताओ ने सुरक्षा बलो के साथ आत्म समर्पण कर दिया।

यदि उग्रवादियो ने भी आत्म समर्पण किया होता तो धार्मिक स्थलो की पवित्रता भग न हुई होती और इसके बाद हुई घटनाओ से बचा जा सकता था।

मैं खिन्न से व्यथा के साथ यह बात कहता हू कि इन दु खद घटनाओ को देखते हुए हमे सही मार्ग पर चलना चाहिए। कभी-कभी किसी राष्ट्र को ऐसी परिस्थितियो का सामना करना पडता है जब उसके धैर्य, राजनीतिक सूझ बूझ और साहस की परीक्षा होती है।

मैं न केवल सिखो बल्कि अपने सभी देशवासियो से अपील करता हू कि वे इन दु खद घटनाओ पर विचार कर और देखें कि भविष्य मे कभी भी गुरद्वारो मे ऐसे गैर-कानूनी हथियार या अन्य चीजे प्रवेश नही करने पाए जिन्हें सिख परम्परा मे स्वीकृति नही मिली है। मेरे लिए सन्तोष की बात है कि हरमन्दिर साहिब की इमारत तथा उसकी पवित्रता अक्षुण्ण है।

अधिकारियो तथा सुरक्षा बलो के लोगो ने मुझ बताया कि उन्होने मौत सामने होते हुए भी श्री हरमन्दिर साहिब की ओर गोली नही चलाने की प्रतिज्ञा कर रखी थी कार्रवाई मे कुछ लोग मारे गए जिनमे सुरक्षा बलो के अधिकारी तथा जवान भी शामिल हैं। समय की माग है कि धैर्य तथा दूरदर्शिता से काम लिया जाए। हमे यह भी सुनिश्चित करना है कि ऐसी दुखद स्थिति दोबारा कभी नही बने।

हमे देश की एकता व अखडता को बनाए रखना है। हमे अपने लोगो के बीच मैत्रीपूर्ण तथा सद्-भावपूर्ण सम्बन्ध कायम करने की कोशिश भी करनी है। मेरा दु ख और भी अधिक है क्योकि मैं सम्पूर्ण राष्ट्र का प्रतिनिधि हू। मैं अपने सभी देशवासियो का इस बात के लिए आभारी हू कि उन्होने मुझ पर यह विश्वास सौपा। यह मेरा कर्त्तव्य है कि मैं देश के सभी राज्यो तथा केन्द्र शासित क्षेत्रो का ख्याल करू और जहा कही ऐसी घटनाए होती हैं वहा मैं भी दु ख मे सहभागी बनू।

मैं विशेषरूप से पजाबियो को याद दिलाना चाहता हू कि उनकी परम्पराए विरासत तथा इतिहास साझा है। वे लोग एक सा भोजन ग्रहण करते रहे हैं, एक ही हवा मे सास लेते रहे हैं और उनके सुख-दुख भी साझे हैं। हमे मनमुटाव को दूर करना है और साथ साथ आगे बढना है। हमे सम्पूर्ण देश तथा राष्ट्र के हितो की रक्षा करनी होगी।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेना को बधाई

सभा प्रधान श्रीयुत रामगोपाल जी शालवाले और महामन्त्री श्रीयुत ओमप्रकाश जी त्यागी ने एक सयुक्त वक्तव्य मे पजाब के सफल सैनिक आपरेशन के लिए जो स्वर्ण मन्दिर अमृतसर आदि गुरुद्वारों तथा नगरो एव देहातो से उग्रवादियो, आतंकवादियो को बाहर निकालने तथा उनकी जघन्य कार्यवाहियो को कु ठित करने के लिए अभिप्रेत था, सेना को बधाई देते हुए उसकी कर्त्तव्य परायणता, देशभक्ति और सेना की निष्पक्षता की विशिष्टतम मर्यादा को बनाए रखने के लिए भूरि-भूरि प्रशसा की।

आर्य नेताओ ने इस अभियान मे वीरगति को प्राप्त हुए बलिदानी सैनिको को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि उन्होंने देश की अखण्डता, एकता और सुरक्षा को बरकरार रखने के हेतु ही भीषण परिस्थितियो मे से गुजरते हुए, पूजा स्थानों को क्षति से बचाते हुए अपने प्राणो का उत्सर्ग किया है उनका बलिदान सदैव प्रेरणा देता रहेगा।

दोनो नेताओ ने देशप्रेमी जनता, राजनेताओ और प्रशासनो को सावधान किया है कि इन वीरों का बलिदान व्यर्थ न जाने पाए।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सयुक्त सभा-मन्त्री

[illegible]—ओमप्रकाश पुरुषार्थी

सहसम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

ऑपरेशन अमृतसर !

उस दिन प्रधानमन्त्री कार्यालय, साऊथ ब्लाक में भिवंडी के दंगे और पंजाब समस्या पर उच्च स्तरीय विचार विमर्श हुआ। यह १८ मई का दिन था। इसी दिन रात आठ बजे गृहराज्य मन्त्री श्री वेंकट सुब्बैया और रक्षा राज्य मन्त्री श्री के पी सिंह देव को प्रधान मन्त्री कार्यालय से सन्देश मिला। सुबह ही पंजाब जाकर स्थिति और जन भावना का जायजा लेकर उसी दिन श्रीमती इन्दिरा गांधी को रिपोर्ट दें।

१९ मई को दोनो मन्त्री पंजाब के दौरे पर गए। उन्होंने वहां हिन्दू और सिख नेताओ से बात चीत की। खुफिया रिपोर्टों का अध्ययन किया और दिल्ली लौट आये। उन दोनो ने अलग अलग मिलकर प्रधान मन्त्री को रिपोर्ट दी।

यहीं से शुरू होता है 'आप्रेशन अमृतसर'। इसी दिन गृहमन्त्री प्रकाश चन्द्र सेठी को भिवंडी मे दंगाग्रस्त क्षेत्रों का दौरा करने भेजा गया।

२० मई को गृह मन्त्रालय से पंजाब का मामला प्रधान मन्त्री कार्यालय शिफ्ट कर दिया गया। गृह मन्त्रालय के एक सचिव श्री प्रेम कुमार को 'डेली रिपोर्ट' देने की जिम्मेदारी सौंप दी गई।

इससे एक दिन पहले जब श्री सुब्बैया और श्री सिंह पंजाब दौरे पर थे तो चण्डीगढ़ मे उन्होंने 'आप्रेशन अमृतसर' का संकेत दिया था। उन्होंने स्थानीय नेताओ को आश्वस्त किया था कि पंजाब दो सप्ताह में सामान्य हो जाएगा।

चूं कि इन दिनों भिवंडी में दंगा भड़क उठा था इसलिये पंजाब पर तत्काल किसी ठोस कार्रवाई का निर्णय नहीं लिया जा सका। प्रधान मन्त्री ने खुद दंगाग्रस्त इलाकों का दौरा किया।

फिर पुंछ में पाकिस्तानी सैनिकों की गतिविधियां तेज हो गईं, जिसके कारण भी निर्णय लेने मे विलम्ब हुआ। प्रधान मन्त्री ने स्वयं कश्मीर और पंजाब मे जुड़े पाक सीमा क्षेत्रो की स्थितियो का ब्यौरा मांगा। ३० मई को श्रीनगर मे सेना अलंकरण दिवस था। थल सेना अध्यक्ष जनरल वैद्य वहां गए हुए थे। उन्हे प्रधान मन्त्री का बुलावा मिला। आगे कार्यक्रम स्थगित कर वह दिल्ली के लिए रवाना हो गये।

इसी दिन प्रधान मन्त्री ने राष्ट्रपति से पंजाब समस्या पर लम्बी बात चीत की। इतनी लम्बी बातचीत राष्ट्रपति चुने जाने के बाद पहली बार थी। दोनो मे लगभग पौने दो घण्टे तक बात चीत हुई। स्पष्ट है कि राष्ट्रपति और प्रधानमन्त्री ने एक दूसरे के दृष्टिकोण को जानने और समझने का प्रयास किया। फिर प्रधानमन्त्री ने एक विशेष संदेश भेजकर अकालियों को वार्ता के लिये राजी करने और असामान्य स्थिति को टालने की कोशिश की परन्तु फल कुछ न निकला।

१ जून और २ जून को कांग्रेस (इ) के ब्लाक अध्यक्षों का एशियाड खेलगांव मे अधिवेशन था। १ जून को अधिवेशन का उद्घाटन भाषण प्रधान मन्त्री श्रीमती गांधी को देना था और इसी दिन दोपहर मे टाप लेवल बैठक थी। प्रधान मन्त्री ने इंका अधिवेशन में जल्दी जल्दी मे भाषण दिया और सीधे अपने कार्यालय लौट गई। उस दिन 'टाप लेवल' बैठक में महत्वपूर्ण निर्णय लिया जाना था।

बैठक मे प्रधान मन्त्री के अलावा सेनाध्यक्ष जनरल वैद्य, प्रधान मन्त्री के सुरक्षा सलाहकार और 'रा' के प्रमुख श्री रामनाथ काव, केबिनेट सचिव कृष्ण राव गृह सचिव प्रेम कुमार तथा पी सी अलैग्जेंडर ने भाग लिया। इसी बैठक मे 'आप्रेशन अमृतसर एण्ड एक्शन' को अन्तिम रूप दिया गया।

परन्तु १ जून की बैठक में यह निर्णय नहीं लिया जा सका कि पंजाब की कमान किसे सौंपी जाए। २ जून को इंका अध्यक्षों की बैठक का समापन दिन था। समापन भाषण प्रधान मन्त्री को ही देना था। वे अधिवेशन स्थल पर समय से एक घंटा देर से पहुंची। समापन भाषण के बाद भी वे वहीं सभागार के पीछे एक कमरे मे बैठी रहीं। जाहिर है कि अधिवेशन स्थल, खेल गांव आने से पहले वे बुरी तरह व्यस्त थीं। पंजाब को सेना के हवाले करना और उससे उपजने वाली संभावित स्थितियों पर वह हर तरह से विचार करना चाहती थीं। वे बराबर पंजाब प्रशासन से सम्पर्क बनाए हुई थीं।

उग्रवादियों और पाक तत्वों द्वारा मंदिर जला दिया गया : अपराधियों को कड़ा दण्ड और क्षतिपूर्ति की मांग

नई दिल्ली, १९ जून १९८४।

श्रीनगर काश्मीर मे सिख प्रदर्शनकारियों और पाकिस्तान समर्थक मुसलमानों ने आर्य समाज मन्दिर हजूरीबाग और देवकी आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं हनुमान मन्दिर को आग लगाकर ५० लाख रुपये की इमारत को जलाकर ध्वस्त कर दिया। यह सब उस समय हुआ जिन दिनों अमृतसर में सैनिक कार्यवाही चल रही थी और समाचार पत्रों का ध्यान इस ओर पूरी तरह नहीं पहुंचा।

इस घटना का पूरा विवरण अब सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को प्राप्त हो गया है और इस आग लगाने की घटना से सम्पूर्ण आर्यजगत में रोष की लहर छा गई है। इस सम्बन्ध मे सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने कल प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से भेंट की और इस घटना की विस्तृत जांच के लिये सभा मन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी पूर्व संसद सदस्य के साथ आज काश्मीर जा रहे हैं। वे वहां जाकर घटना स्थल का निरीक्षण करेंगे तथा कार्यकर्ताओ से मिलेंगे और उसके बाद वहां के मुख्य मन्त्री डा० फारुख अब्दुल्ला एवं राज्यपाल जगमोहन को भी स्थिति से अवगत करायेंगे। इसके साथ ही वे इसके लिये राज्य सरकार द्वारा क्षतिपूर्ति की मांग और अपराधियों को कड़े दण्ड की मांग करेंगे जिससे कि आर्य हिन्दुओ के असन्तोष को दूर किया जा सके।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
संयुक्त सभा मन्त्री

भूल सुधार

२० मई के सार्वदेशिक के अंक मे ओमानन्द योग साधना पुस्तक की कीमत (११५१) छप गई है।

ओमानन्द योग साधना पुस्तक के तीनो खण्डों की कुल कीमत सिर्फ १०१) एक सौ एक रुपए है, पोस्टेज भी फ्री है।

—स्वामी ओमानन्द सरस्वती

खेल गांव मे ही थोड़ी देर बाद श्री रामनाथ काव ने प्रधानमन्त्री से मुलाकात की। श्रीमती गांधी श्री काव से सम्भावित कार्रवाई के सम्बन्ध में खुफिया रिपोर्ट चाहती थीं। श्री काव आध घण्टे बाद वापस लौट गए।

थोड़ी ही देर बाद वहां पी सी एलेग्जेंडर और एच वाई. शारदा प्रसाद आए। श्री एलैग्जेंडर पांच मिनट बाद ही लौट आए। श्री शारदा प्रसाद ने वहीं रेडियो प्रसारण के लिये तैयार भाषण श्रीमती गांधी को दिया। उस दिन प्रधान मन्त्री कार्यालय और सेना भवन मे खास गहमा गहमी थी। पंजाब को सेना के हवाले करने का फैसला ले लिया गया था, लेकिन एक मामला अभी तक अटका हुआ था कि पंजाब की कमान किसे सौंपी जाए। रक्षा मन्त्रालय के सूत्रों का कहना है कि इतनी जल्द बाजी में किसी का नाम सुझाना आसान नहीं था क्योंकि इसके लिये संभावित लोगो की सूची तैयार करना उनके कन्फ्डिन्शियल रिपोर्ट का जायजा लेना आदि काफी महत्वपूर्ण और जटिल होता है।

सेना भवन मे टाप लेवल बैठक बुलाई गई। यह सब होते-होते शाम के ७ बज गए। ७.३० पर प्रधान मन्त्री को जानकारी दी गई तथा पश्चिमी कमान के सेनाध्यक्ष जनरल रणजीत सिंह दयाल का नाम बताया गया। उसी दिन प्रधान मन्त्री को रेडियो पर भाषण देना था। लेकिन तब तक काफी समय निकल चुका था। प्रधान मन्त्री का राष्ट्र के नाम सन्देश रेडियो प्रसारण के बाद टेप नहीं हो पाया था। यही कारण था कि भाषण १५ मिनट देर से प्रसारित किया गया।

रात में फिर पी० एम० हाउस मे 'टाप लेवल' बैठक हुई और अन्त में पंजाब को सेना के हवाले सौंप देने की घोषणा कर दी गई।

(पंजाब केसरी १४-६-८४)

सम्पादकीय

श्रीमती इन्दिरागांधी द्वारा पंजाब में सफल सैनिक कार्यवाही अमेरिकन प्रेजीडेन्ट अब्राहमलिंकन द्वारा जीते ऐतिहासिक गृहयुद्ध का स्मरण कराती है

किसी भी राष्ट्र के जीवन में कभी कभी ऐसा कठिन समय आता है जब विघटन का खतरा मुंह बाए खड़ा होता है। क्षेत्रवाद, राष्ट्रवाद की छाती पर तांडव करने लगता है और राष्ट्र की एकता भारी धुन्ध में विलीन हो जाती है।

लिंकन ने अभी अपना पद संभाला नहीं था कि दक्षिण कैरोलाइन्स के बाद मिसिसिपी, फ्लोरिडा अलबामा, जार्जिया, लुसियाना, और टैक्सास राज्यों ने पृथकतावादियों के दबाव से अमेरिकन राज्य संघ से अलग होने की घोषणा करदी। लिंकन के पूर्ववर्ती बुकानन अपने अंधेरे कमरे में आंसू बहाया करते थे लेकिन लिंकन अपने को एक अनिवार्य गृहयुद्ध लड़ने के लिए तैयार कर रहे थे। उन्होंने सकल्प किया कि परिणाम चाहे कुछ भी हो लेकिन संघ को बचाना है और अमेरिका के टुकड़े टुकड़े नहीं होने देना है। इन्होंने इन विद्रोही राज्यों से जिनमें ६-७ राज्य और शामिल हो गये थे ४ वर्ष तक युद्ध लड़ा इसमें करीब दस लाख लोग मारे गये और करोड़ों डालर का नुकसान हुआ। परन्तु अन्ततः लिंकन का संकल्प पूरा हुआ। इस युद्ध का एक कारण दास प्रथा का मिटा देना भी था जिसकी पूर्व घोषणा लिंकन ने अपने चुनाव के दौरान की थी और जो दक्षिण के राज्यों को मान्य न थी।

गैटिस्वर्ग का इतिहास प्रसिद्ध भाषण

गैटिस्वर्ग में भयंकर लड़ाई हुई। दोनों ओर के बहुत से जवान मारे गए। मोर्चा लिंकन के जवानों के हाथ लगा। यहीं शहीदों की अन्त्येष्टि के समय राष्ट्रपति लिंकन ने अपना इतिहास प्रसिद्ध भाषण दिया था जिसमें शहीदों को निम्नांकित श्रद्धांजलि भी दी गई थी :--

श्रद्धांजलि

"हम एक गृह युद्ध में लगे हुए हैं जिसमें यह तय होगा कि हम एक राष्ट्र के रूप में जीवित रह सकते हैं या नहीं। हम इस युद्ध में एक बड़े मोर्चे पर एकत्रित हैं। इस युद्ध में बहुसंख्यक लोग हमेशा के लिए सो गए हैं जिन्होंने राष्ट्र को जीवित रखने के लिए अपने जीवन दे दिए हैं।

हम लोग प्रतिज्ञा करते हैं कि जिन लोगों ने अपना जीवन दिया है उनका बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा और ईश्वर की कृपा से यह राष्ट्र एक नया जन्म लेगा जहां जनता का, जनता के द्वारा और जनता के लिए शासन होगा और यह राष्ट्र कभी नष्ट न होगा।"

संयम और विवेक की आवश्यकता है।

पंजाब की घटनाओं से सिखों के एक वर्ग को जो रोष और क्षोभ हुआ है वह अनेक लोगों की समझ में आने वाली बात बताई जा रही है साथ ही क्रोध के आवेश में अविचार पूर्ण अन्धाधुन्ध कार्यवाही की देश के सिख और राष्ट्र प्रेमी व्यक्तियों के द्वारा उनकी निन्दा भी की जा रही है। उदाहरणार्थ नई दिल्ली के गुरुद्वारा बंगला साहब के बाहर ९ जून १९८४ के दिन कुछेक नवयुवकों द्वारा राष्ट्रीय झण्डे के जलाए जाने से राष्ट्र प्रेमियों के हृदयों को बड़ी ठेस लगी है। देश के विभिन्न भागों में हुई विरोध सभाएं भी कड़वाहट के साथ की गई है। अमरिन्दर सिंह आदि सांसदों का त्याग पत्र देना तथा श्री खुशवन्त सिंह का पद्मभूषण अलंकार वापस करना किसी भी दृष्टि से प्रशंसनीय नहीं है। राष्ट्रपति श्रीयुत ज्ञानी जैलसिंह तथा श्री बूटासिंह जी से त्याग पत्रों की मांग भी ठीक रूप में बेहूदा बताई जा रही है। सबसे बुरी बात यह है कि बचे खुचे आतंकवादी निर्दोष व्यक्तियों की हत्या जारी रखकर अपने ध्येय की सिद्धि का स्वप्न लेते देख पड़ते हैं।

यह समय संयम से काम लेने का है न कि लोगों की भावनाओं को उत्तेजित करने का। धर्म खतरे में हैं ऐसी आवाज लगाना सिवा शरारत के और क्या हो सकती है?

सिखों का एक बहुत बड़ा वर्ग इस बात को मानता और महसूस (अनुभव) करता है कि सेना स्वर्ण मन्दिर में अनिवार्य होने पर ही घुसी थी और सेना के जवानों ने उग्रवादियों एवं आतंकवादियों के विरुद्ध कार्यवाही करने में अत्यन्त संयम से काम लिया। शायद वे लोग इस तथ्य को भूलते या नजर अन्दाज करते प्रतीत होते हैं कि स्वर्ण मन्दिर आदि गुरुद्वारों में समय-समय पर पुलिस प्रवेश करती रही है। संकट की उस स्थिति से निपटने के लिए सेना को भेजने के सिवा क्या गवर्नमेंट के समक्ष कोई और विकल्प रह गया था? यह ठीक है कि सेना और आतंकवादियों के मध्य हुई मुठभेड़ों में अनेक जानें गई हैं। परन्तु इन महीनों में आतंकवादियों ने जितनी हत्याएं की थी वे तुलनात्मक दृष्टि से संख्या में कहीं अधिक थी। विरोध करने वाले जिस प्रश्न को जान बूझकर टाल रहे हैं वह यह है कि क्या स्वर्णमन्दिर मे हथियारों का ढेर लगाने का कोई औचित्य था? सत्य तो यह है कि वे आतंकवादी ही थे जिन्होंने मन्दिर को भ्रष्ट किया था, नए नए प्रकार के अस्त्र शस्त्रों के संग्रह से, और निर्दोष व्यक्तियों वा सैनिकों के विरुद्ध उनके प्रयोग से जिन्होंने आतंक वादियों और हथियारों आदि का सफाया करके मन्दिर की सफाई की है।

धर्म प्राण सिखों को मन्दिर की पवित्रता बहाल करने के लिए गवर्नमेंट का कृतज्ञ होना चाहिए, उन्हें सेना का भी कृतज्ञ होना चाहिए कि उन्होंने हरमन्दिर वा स्वर्ण मन्दिर को कोई क्षति न पहुंचने के लिए स्वयं अपने सीने पर गोलियां खाई हैं।

समय की मांग है कि बहुसंख्यक शांत लोगों को जो हिंसा और राष्ट्र विरोधी कार्यवाहियों के विरुद्ध है मैदान में आकर उपद्रवियों के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ना चाहिए। बुद्धिजीवियों, कलाकारों तथा सिख समुदाय में गिनती रखने वालों को उचित है कि वे अशान्त तत्वों को जो पथभ्रष्ट देख पड़ते हैं सन्मार्ग पर आने सुविचार पूर्ण एवं शिष्ट कार्यों को करने का आह्वान करें। हिंसा के मार्ग का अवलम्बन करते रहने से अकालियों के पल्ले कुछ भी नहीं पड़ेगा। नाही खालिस्तान की आवाज या राष्ट्र विरोधी अन्य किसी कार्य से उन्हें कोई मदद मिलेगी। उनके लिए सही रास्ता यही है कि वे राष्ट्र के शत्रुओं से पथभ्रष्ट हुए बिना राष्ट्रीय जीवन की मुख्यधारा में ही बने रहे।

सिख बन्धु उचित ही रीत्या, अपनी वीरता, देशभक्ति, शारीरिक बल, परिश्रमशीलता और धार्मिक परम्पराओं पर गर्व अनुभव कर सकते हैं राष्ट्रीय उन्नति में उनका योग अन्य वर्गों द्वारा सराहा गया है। जब कभी देश पर बाहर से आपत्ति आई तब देशकी रक्षार्थ किए गए उनके बलिदान, वीरता की बिरुदावली का एक बड़ा अंग रहा है, सिख, हिन्दू समाज के रक्षक और हिन्दू सिखों के संरक्षक के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं। इतिहास के इन सुनहरे पृष्ठों को न मिटाना चाहिए और नाही गन्दा करना चाहिए।

यह बड़े दुःख की बात है कि यह देश तथा हिन्दू हितैषी वीर समुदाय अनिश्चितता, दुःख, काल्पनिक भय के दौर में से गुजर रहा है। यदि परेशान सिख बुद्धि विवेक, न्याय और औचित्य की आवाज को सुनेगे या सुनना गवारा करेंगे तो वे स्वय न केवल भय और निराधार चिन्ताओंसे ही अपनेको मुक्त करेंगे अपितु अपने को राष्ट्रीय जीवन की मुख्य धारा में बनाए रखकर सुखी और सन्तुष्ट रहेंगे।

राजनेताओं को उचित है कि वे जलती आग में हाथ सेकने से बाज आएं और अपने तथा पार्टी से देश को और उसके हित को ऊपर रखें। साथ ही प्रशासन को समय रहते ही विदेशी कुचक्रों के शमन तथा शान्ति और व्यवस्था कायम रखने के अपने दायित्व का निर्वाह करना और प्रभावी पग उठाने चाहिए।

सामयिक चर्चा—

स्वर्ण मन्दिर के दुरुपयोग से सभी विवेकशील लोगों को आघात

—राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह

राष्ट्रपति जैलसिंह ने आज (१४ जून ८४) अपने गृह राज्य (पजाब) की स्थिति पर प्रथम सार्वजनिक वक्तव्य मे दु ख प्रकट करते हुए कहा कि स्वर्ण मन्दिर परिसर विशेषत श्री अकाल तख्त के दुरुपयोग से सभी विवेक शील लोगो को आघात पहुँचा है और ऐसी स्थिति दोबारा पैदा नही होने देनी चाहिए।

पजाब की घटनाओ को अत्यन्त दुर्भाग्य पूर्ण करार देते हुए राष्ट्रपति महोदय ने कहा ये घटनाए भारत की शत्रु कुछेक विदेशी शक्तिया और देश के भीतर राष्ट्रविरोधी तत्वो के बीच गहरी साजिश का नतीजा है।

सिटिजन्स वैल्फेयर ऑर्गेनाइजेशन के तत्वावधान मे सभी वर्गों के लोगो के एक शिष्ट मडल को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रपति ने सभी देशवासियो विशेषत युवा पीढी से हर समय सतर्क रहने और गुमराह न होने की अपील की।

श्री जैलसिंह ने कहा कि देश की एकता और अखण्डता को सुदृढ बनाना और साम्प्रदायिक सौहार्द को बनाए रखना समय की सबसे बडी माग है।

राष्ट्रपति ने कहा—हमे सभी धर्म स्थानो की पवित्रता को बनाए रखना है और अवाछनीय तत्वों द्वारा उनके दुरुपयोग को रोकना है।

चौ० चरणसिंह की सेना को बधाई

नई दिल्ली ८ जून। लोकदल के अध्यक्ष श्री चरणसिंह ने सुझाव दिया है कि सरकार पजाब पर निगरानी मे कोई ढील न दे जिससे कि स्थिति बिगडे नही और जल्द से जल्द सामान्य हो जाए।

यहा आज एक वक्तव्य मे श्री चरणसिंह ने अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर परिसर मे स्थिति को काबू मे लाने के लिये सेना को बधाई दी।

श्री चरणसिंह ने मत व्यक्त किया है कि पजाब पुलिस और जिन लोगो को पाकिस्तान से लगी हमारी सीमा की चौकसी की जिम्मेदारी सौंपी गई, वे उग्रवादियो द्वारा की गई तैयारी एव उनके द्वारा आधुनिक हथियारो से सेना के प्रतिरोध के जिम्मेदार हैं।

उन्होने कहा है कि स्थिति का एक और चिन्तनीय पहलू है जिसे ध्यान मे रखा जाना चाहिए। देशभर मे सिख बुद्धिजीवियो और नेताओ ने कुछ अपवादो को छोडकर न केवल मौन साध रखा है बल्कि उग्रवादियों की गतिविधियो को अपना समर्थन भी दिया है। इसकी उन्हे चिन्ता नही है कि देश के लिये इसका क्या परिणाम होगा ?

साहस के साथ बैंक डकैती विफल की

दिल्ली पुलिस के सब इन्सपेक्टर जसवन्त सिंह एव उसके साथियो ने कर्त्तव्य परायणता का (४ ६-१९८४) शानदार परिचय देते हुए न्यू रोहतक रोड स्थित एक बैंक मे दिन-दहाडे पडी लगभग ४ लाख रुपये की डकैती को असफल कर दिया। लेकिन डकैतो की गोली से जसवन्त सिंह शहीद हो गया और उसका साथी मलकियत सिंह बुरी तरह घायल हो गया।

डकैत लूटी गई सारी राशि को बैंक मे ही छोडकर जान बचाते हुए भागने में सफल हो गये।

डकैतो और जसवन्तसिंह के साथियो के बीच तीन मिनट तक गोलिया चलीं। डकैतो ने एक साथ अपनी रिवाल्वरो से दनादन गोलिया चलाईं। गोलियो से जसवन्त का मुह छलनी हो गया। मलकियत सिंह की टागो और बाजुओ मे गोलिया लगी। सहायक सब-इन्सपेक्टर चरणसिंह ने डकैतों की गोलिया का जवाब दिया। बताया जाता है कि चरणसिंह की गोली से एक डकैत घायल भी हुआ। दो डकैत तो फिएट कार (नम्बर डी० एच० पी० ३७६४) मे भाग गए जबकि तीन अन्य इलाके की तग गलियों का फायदा उठाते हुए भागने मे सफल हो गए।

प्रत्यक्षदर्शियो के अनुसार जसवन्त सिंह तीन गोली लगने के बाद भी डकैतों को दबोचने के लिये उनके पीछे लगभग १५ गज तक भागा, लेकिन खून के छूटते फव्वारो ने उसका साथ नहीं दिया। जसवन्त सिंह बैंक के बाहर सडक पर ही दम तोड गया।

नैतिक शक्ति की विजय

यह घटना १९४६ की है। महात्मा गाधी ने बगाल के तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री शहीद सोहराब वर्दी से निराश होकर जिनका नोआखाली के हत्याकाड मे बडा हाथ रहा बताया गया था साम्प्रदायिक सद्भाव एव एकता का सन्देश जनता में प्रचारित करने के लिए नोआखाली की पदयात्रा की थी। इस सम्बन्ध मे यह बात बडी मनोरजक है कि उन्ही सुहरावर्दी ने १९४६ मे कलकत्ता मे महात्मा गाधी से मिलकर दगो को दबाने और शान्ति स्थापित करने के कार्य मे महात्मा जी से सहायता की याचना की थी। महात्मा जी बेलिया घाट स्थित श्री सुहरावर्दी के मकान पर गए और उनके यहा आवास ने जादू का कार्य किया। उन्होने वहा आ मरण अनशन की घोषणा की। इस घोषणा के प्रचारित होते ही गु डो ने अपने अस्त्र शस्त्र महात्मा जी के हवाले कर दिए और कलकत्ता मे शान्ति स्थापित हो गई। महात्मा गाधी की चर्चा करते हुए लार्ड माउन्टबेटन ने उन्हे एक व्यक्ति की सीमा सुरक्षा सेना की सज्ञा दी थी जिसने अकेले पूर्वी मोर्चे पर वह कर दिखाया जो पजाब के पश्चिमी मोर्चे पर सेना की अनेक टुकडिया न कर पाई थी।

आर्य समाज और स्त्री आर्य समाज

श्री नारायण प्रसाद जमानिया (गाजीपुर) लिखते हैं—

'आपके ८ अप्रैल १९८४ के अ क मे सम्पादक के नाम लिखा श्री मथुरा लाल जी शर्मा, आर्य प्रेमी, बरखाली बांसवाडा (राज०) का पत्र पढा, जिसमे विशेष आर्यसमाज "स्त्री आर्य समाज" के प्रति उनकी विचार धारणा के प्रति मेरा निम्न निवेदन है —

श्री शर्मा जी 'स्त्री आर्य समाज' को कोई अलग समाज समझते हैं शायद इसीलिये किसी वन्दनीय एव ऐतिहासिक नारी के चरित्र को माध्यम बनाकर समिति का निर्माण करने का निर्देश दिया है।

जिस प्रकार से किसी एक ही नगर मे एक से अधिक आर्य समाजो का होना अपनी वैदिक सस्कृति के प्रचार और प्रसार मे लाभप्रद है उसी प्रकार स्त्री आर्यसमाजें भी अपनी भूमिका निभाने मे कार्यरत हैं।

शर्मा जी ! आप विचार करें। ऐसा क्यो हो रहा है ? आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री जी ने भी आपकी बातों का समर्थन किया है। मैं पूज्य आचार्य जी को बतलाना चाहूगा कि जहा जहा भी स्त्रियो की समाज अलग से स्थापित हैं वहा की स्त्रियों में जागरुकता आ रही है। घरों की चारदीवारी से पाखण्ड धीरे धीरे हटता चला जा रहा है। वैदिक सस्कृति की छाप उन पर पड रही है। स्त्रिया, स्त्रियो के बीच जाना पसन्द करती हैं अपने विचारों को उनके अन्दर पहुचाने मे पुरुषों से ज्यादा सक्षम सिद्ध होता है।"

श्री आचार्य जी के एक सवैधानिक स्पष्टी करण किया था जो उपयुक्त था। इस प्रश्न को इसी परिपेक्ष्य मे देखना चाहिए।

नए सशोधित उपनियमों में पृथक आर्य स्त्री समाज की स्थापना की व्यवस्था है फिर इसकी स्थापना के लिए लम्बे चौडे हेतुओ के विश्लेषण की जरूरत ही क्या है ?

आदर्श यह होना चाहिए कि महिलाए अधिकाधिक आर्यसमाज की ओर आकृष्ट हों और समाज के माध्यम से सगठित रूप से आर्यत्व का परिचय दें प्रचार करें और सम्मिलित समाजों की अधिकाधिक सदस्यता ग्रहण करें और ऐसा करने में समर्थ हो।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

महर्षि दयानन्द का वार्तालाप और उपदेश

(१)

अधर्म युक्त कथन को कभी नहीं मानना चाहिए

एक दिन उदयपुर में महाराणा सज्जनसिंह जी को मनुस्मृति का पाठ पढ़ाते हुए महाराज ने कहा 'यदि कोई अधिकारी धार्मिक आज्ञा दे तब ही उसका पालन करना चाहिए। अधर्म युक्त कथन को कभी नहीं मानना चाहिए।' इस पर सरदार गढ़ के ठाकुर मोहनसिंह जी ने निवेदन किया—भगवन ! ये राणा जी हमारे भूपाल हैं। यदि हमें ये कोई आज्ञा दें और हम उसे अधर्म युक्त समझकर न मानें तो हमारा छोटा राज्य ही छिन जाय।"

महाराज ने कहा "कोई चिन्ता नहीं। धर्म के लिए धन और ठकुराई भले ही चली जाय। धर्म हीन हो जाने से और अधर्म काम करके अन्न खाने से तो भीख मांगकर पेट की पालना करना बहुत अच्छा है।"

(२)

जब स्वामी जी ने राजकार्य में हस्तक्षेप करने से इन्कार किया था

महाराणा सज्जन सिंह स्वामी जी के वचनों को स्वीकार करने के लिए सदा समुद्यत रहते थे परन्तु महाराज धार्मिक कार्यों के अतिरिक्त राज्य के अन्य किसी भी कार्य में हस्तक्षेप नहीं करते थे।

एक दिन राणा जी स्वामी जी के दर्शन करके जब राज भवन को लौटे तो उसी समय स्वामी जी के पास पचास पटेल आ गए और अभियोग (मुकदमा) की बात चीत करने लगे। राणा जी ने उन भूमिहारों को स्वामी जी के पास जाता देख लिया था इसलिए उन्होंने अबदुर्रहमान को कहा 'आइए और पता लीजिए कि इन लोगों ने स्वामी जी को क्या कहा है।" अबदुर्रहमान ने उन लोगों से पूछकर महाराणा को बताया कि "इन लोगों ने अपने अभियोग की बात चलाई थी इस पर स्वामी जी ने उन्हें कहा 'कि हम साधु हैं, किसी सांसारिक झंझट झमेले से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है। उस समय महाराणा ने अबदुर्रहमान को कहा 'मौलवी साहब ! देखा मैं कहता न था कि स्वामी जी राज काज के कार्यों में कदापि हस्तक्षेप नहीं करते। जगत के रगड़े-झगड़े से स्वतन्त्र, भला ऐसा कोई दूसरा मनुष्य कभी आपने देखा है ?"

(३)

वाल्मीकि रामायण में मूर्ति पूजा का विधान नहीं है

एक दिन स्वामी जी महाराज शाहपुरा में मूर्ति पूजन का खण्डन कर रहे थे। उस समय एक पंडित ने कहा कि वाल्मीकि रामायण में लिखा है कि श्री राम ने महादेव का पूजन किया। स्वामी जी ने उत्तर में कहा—

"इसमें तो प्रतिमा पूजन का लेश भी नहीं है। अत्र पूर्वं महादेवः प्रसादमकरोद्विभुः' का स्पष्ट अर्थ यह है कि यहां परमेश्वर ने मुझपर कृपा की।

(४)

संन्यास धर्म का महत्व

स्वामी जी महाराज ने सन्यास धर्म का महत्व इस प्रकार दर्शाया :

"प्रशान्त चित्त, जितेन्द्रिय और ज्ञानी जन को ही सन्यास का अधिकारी बताया। साम्प्रदायिक संन्यास देने की विधि के वे भारी विरोधी थे। उन्होंने संन्यास लेकर भिक्षा का ग्रहण करना उन्हीं के लिए बताया जो जन जनता के हितार्थ अपना जीवन उत्सर्ग कर देते हैं, लोक कल्याण के लिए रात दिन यत्नशील रहते हैं। सत्योपदेश और परोपकार कर्म में परायण पाए जाते हैं और जो आठों पहर प्रभु-प्रेम का परम पवित्र पाठ पढ़ते रहते हैं। जो मनुष्य मानव हित शून्य होकर अराहिओं की तरह गली गली में भटकते फिरते हैं, जन-जन के आगे हाथ पसारते हैं और घर-घर में टुकड़ों के चटोरे बन जाते हैं वे आश्रम की मान मर्यादा और महत्व को मूल से मिटाने वाले हैं।

बाहरी जितने कर्म हैं उनको त्याग कर योगाभ्यास आदि भीतरी कर्मों को यथावत करें। अन्तःकरण की सारी मलिनता और रागद्वेष आदि को छोड़कर निश्चिन्त होकर सदा वेद का अभ्यास करें। अपने पुत्रों से अन्न-वस्त्र शरीर के लिए लेवें यदि वे समीप हों तथा एकान्त में वास करें। प्रतिदिन ओदन आच्छादन भर से लेकर अपनी मुक्ति के साधन में तत्पर रहें।

वेद सुधा—

तू धन के कुटिलता रहित मार्गों से ले जाता है

ओ३म् नू नो अग्नेऽवृकेभिः स्वस्ति वेषि रायः पथिभिः पर्ष्यंहः।
ता सूरिभ्यो गृणते रासि सुम्नं मदेम शतहिमाः सुवीराः॥

ऋ० ६।४।८

हे (अग्ने) आगे ले जाने वाले (नू) निस्सन्देह तू (अवृकेभिः) कुटिलता रहित (पथिभि) मार्गों से (नः) हमें (स्वस्ति) सुखपूर्वक (रायः) धनों को (वेषि) प्राप्त कराता है और (अहः) हमारी कुगति, त्रुटि को (पर्षि) पूरा करता है। तू (सूरिभ्यः) विद्वानों से (ता) उन धनों तथा (सुम्नम्) सुख को (गृणते) स्तोता को (रासि) देता है। हम (सुवीराः) उत्तम, वीर, श्रेष्ठ वीरों वाले (शतहिमाः) सैंकड़ों वर्ष (मदेम) आनन्द मनाएं।

वेद सर्वांगपूर्ण धर्मग्रन्थ है। समूचे मानव समाज को व्यवस्थित रूप से चलाने के लिए जिन-जिन पदार्थों की आवश्यकता है उन सभी पदार्थों की प्राप्ति के साधनों का वर्णन वेद में है। वेद का मुख्य उद्देश्य मानव जीवन को उत्कर्ष की चरम काष्ठा तक पहुंचाकर मुक्ति दिलाना है। अतः निर्दोष साधनों का ही प्रतिपादन वेद में है। सदैव छल, कपटयुक्त साधनों से वेद दूर रहने का उपदेश करता है।

समाज का व्यवहार चलाने के लिए धन चाहिए। अतः धन कमाने का वेद में उपदेश है—

शतहस्त समाहर (अ० ३।२४।४) सैंकड़ों हाथों से कमा।

सैकड़ों हाथों का यह मतलब नहीं कि मनुष्य अन्याय, अनीति से धन कमाए वरन धन कमाने में धर्म को हाथ से नहीं जाने देना चाहिए। इसी भाव से धनाभिलाषी कहता है।

नू नो अग्ने—

हे अग्ने ! सचमुच तू हमें अकुटिल मार्गों से सुख पूर्वक धन प्राप्त कराता है और हमारी त्रुटि पूरी करता है।

इसमें अवृकेभिः पथिभिः (कुटिलता रहित मार्गों से) पद बहुत ध्यान देने योग्य है। धन चाहिए किन्तु कुटिल उपायों से नहीं।

आज संसार धन की तृष्णा से पागल हो उठा है। धनार्जन में युक्त, अयुक्त का कोई विचार आज निस्सार कहा जाता है। इसी से समस्त जगत परितप्त है। इसी परिताप को शान्त करने के लिए आज वेदों के आदेशों पर चलने की अत्यधिक आवश्यकता है। आज धन के लोभ के कारण संसार की जातियां भूखे भेड़ियों की भांति एक दूसरे को खाने को दौड़ रही हैं। वेद कहता है भेड़ियों के मार्ग से मत चलो। तुम मनुष्य हो, इसे मत भूलो।

भेड़िये दल बांधकर शिकार के लिए चलते हैं, उनमें से मार्ग में कोई मर जावे तो पहले उसे खा लेते हैं फिर आगे चलते हैं। आज का समाज भी जीवन संग्राम में चलते दुर्बल साथियों, दुर्बल जातियों और निर्बलदेशों को हड़प कर रहा है। वेद कहता है—दुर्बल को खा नहीं वरन उसकी त्रुटि दूर कर। कितनी उदात्त है वेद की शिक्षा और इसके विपरीत चलने से कितना क्लेश क्लिष्ट है। आज का जगत धन हो और मन शान्त न हो, तो वह धनी निधन (मृत्यु) भासने लगता है। वेद ने इसलिए कहा कि तू धन और सुम्न=मन की उत्तम अवस्था=सुख भी देता है।

धन और सुख दोनों मिलें तो सम्पूर्ण आयु मस्ती से बीतेगी। मदेम शत हिमाः।

सं० क०—रघुनाथ प्रसाद पाठक

उत्तर भारत की ग्रामीण आंचल की संस्था—

कन्या गुरुकुल खानपुर कलां

जिला सोनीपत, हरियाणा

आज के स्वतन्त्र भारत मे प्राय. सभी व्यक्ति जो शिक्षित, प्रबुद्ध एव जागरुक है, इस विशाल एव महान् सस्था से परिचित हैं। स्त्री शिक्षा एव राष्ट्र जागृति मे इस सस्था ने जो भूमिका निभाई है वह प्रशसनीय है। इसका अपना ही एक इतिहास है। उत्तर प्रान्त (यू. पी) हरियाणा, पजाब, हिमाचल, राजस्थान एव कुछ दक्षिण भारत की भी छात्राए यहा शिक्षा प्राप्त कर रही है। कन्या गुरुकुल एक विशाल वट वृक्ष के तने के बराबर है जिसकी शाखाए विभिन्न विभागो के रूप मे विकसित हो चुकी है, कुछ अभी विकास की ओर उन्मुख हैं। महाविद्यालय विभाग, प्रशिक्षण विभाग, महिला आयुर्वेदिक डिग्री विभाग, हाईस्कूल विभाग इत्यादि। सभी विभागो की प्रबन्ध व्यवस्था अलग-अलग है। हर विभाग के प्राचार्या अलग-अलग है। हर विभाग की भोजन व्यवस्था छात्रावास व्यवस्था और अध्ययन विभाग हैं इस समय २५०० के लगभग छात्राए छात्रावास मे रहती है।

आर्य समाज ने जिन उच्च लक्ष्यो को लेकर ये गुरुकुल खोले ये उन्ही की कडी मे इसका प्रमुख स्थान है। समय की बदलती परिस्थितियो के अनुरुप इनके मूल्यो मे भी परिवर्तन हुआ है। फिर भी दोनो समय सन्ध्या हवन के मन्त्रो की गु जार के साथ वातावरण मे हवन सुरभि की स्थापना इसकी प्रमुख विशेषता है। भारतीय सस्कृति के गौरव को यहा की छात्राए भली प्रकार जानती हैं। जैसे प्राचीन ऋषियो ने भी शिक्षा का उद्देश्य बताया था—"सा विद्या या विमुक्तए"।

गुरुकुल खानपुर के संस्थापक

महात्मा भक्तफूलसिह जी ने अपने जीवन मे भी महान् परिवर्तन किया था। पटवार छोडकर महात्मा बने। रिश्वत को पैतृक जमीन बेचकर लौटाना आज के युग के कुछ अविश्वसनीय पहलू नजर आते है। आजादी की लडाई मे १९४२ के भारत छोडो आदोलन मे यहा के प्रमुख कार्य कर्त्ताओ की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसकी स्थापना १९३६ मे हुई थी। उस समय नारी शिक्षा की तेज किरण (विशेष रूप से उत्तरभारत मे) नजर नही आती थी। उन्होने सूर्य बनकर इस समाज को आलोकित किया। मोठ गाव मे २१ दिन का उपवास हरिजनो का कुआ खुदवाने मे, 'समालखा' के गऊ हत्ये को बन्द कराना। नारी जाति को उपर उठाना उनका प्रमुख कार्य था। उनका स्वय का अपना एक अनुकरणीय इतिहास है कई बार इतिहास को पढकर रोमाचित हो जाना पडता है और हृदय श्रद्धा से झुक जाता है।

१४ अगस्त १९४२ को किन्ही क्रूर हाथो से गोलियो के शिकार बनकर वह महान् आत्मा परमात्मा मे विलीन हो गई परन्तु उनकी महात्मा ने उनकी पुत्री द्रपरिवनी सुभाषिणी के जीवन के हर पहलू में साथ दिया। साधु की बेटी महान् उद्देश्य को पूरा करने के लिए गाव गाव अलख जगाती रही भिक्षा मांगती रही और एक-एक ईट को बहुमूल्य हीरा समझकर इसकी नीव मे रखती गई। जो सस्था ४-५ बालिकाओ से आरम्भ हुई थी वह आज राष्ट्र के लिये गौरवपूर्ण हैं। यहा की स्नातिकाए कई सहस्त्र परिवारो की शोभा बढा रही हैं। जिस भी परिवार मे ये छात्राए गई हैं उस परिवार मे विशेष परिवर्तन देखा गया है जिस भी सस्थाओ मे वे कार्यरत हैं उनमे उनका विशेष स्थान हैं। कुछ छात्राए विश्वविद्यालयो की परीक्षा सूचि मे सर्वोच्च स्थान प्राप्त करती रही। प्रशासकीय विभागो मे भी उनका पदार्पण हुआ है।

शिक्षा ग्रहण करते हुए यहा की छात्राए समाज सेवा मे विशेष नाम कमाती रही हैं। स्वय आचार्या श्रीमती सुभाषिणी जी को सन् १९३२ मे गाधी के साबरमति आश्रम मे इसी उद्देश्य हेतू रखा गया था। भारत विभाजन के समय जब साम्प्रदायिक दगो की आग से देश झुलस रहा था तब 'गाधी सर्वोदय समाज" की ओर से लाहौर मे लगने वाले कैम्प मे यहा की सुमित्रा, सावित्री और बीरमती आदि छात्राओ ने, महत्वपूर्व भूमिका निभाई। आधुनिक समय मे भी नशाबन्दी गोरक्षा अभियान मे यहा की उच्चविद्यालय और डिग्री कालेज की छात्राओ ने कु० शकुन्तला जी, कु० ज्ञानवती जी, श्रीमती सुमन जी और कु० साहबो जी के सरक्षण में १९७६ मे रोहतक गोरक्षा, नशाबन्दी अभियान मे भाग लिया। गत वर्ष २० अगस्त १९८३ को श्रीमती सुभाषिणी जी तथा कु० साहबो देवी जी की अध्यक्षता मे महिला आयुर्वैदिक कालेज की छात्राये कु० प्रतिभा और कु० सरिता त्यागी आदि छात्राओ ने ससद् भवन के सम्मुख गोहत्या उन्मूलन का प्रदर्शन करते हुये गिरफ्तारिया दी। आर्यसमाज के माध्यम से भी सामाजिक क्रान्ति लाने की गतिविधियो का आयोजन होता है—उनमे हमारी सस्था अग्रगण्य रहती है। दिसम्बर १९७९ जनवरी १९८० म विनोबा जी के पवनार आश्रम मे हुए 'विश्व-महिला सम्मेलन' म भी हमारी प्रमुख स्नातिकाओ (कु० शकुन्तला, श्रीमती प्रियवदा एव० कु० ज्ञानवती ने भाग लिया जो अब भी सस्था मे विभिन्न उच्च पदो पर सेवारत है।

राष्ट्र सेवा के कार्य मे भी यह सस्था पीछे नही रही है।

हमारे महाविद्यालय भी राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से लगने वाले कैम्पो मे भाग लेते हैं। छात्राए औपचारिकता मात्र पूरी न करके आत्मनिष्ठा, सेवाधर्म एव राष्ट्रीयता की भावनाओ से कार्य करती हैं।

यद्यपि यह सस्था उत्तर भारत के अनेक प्रान्तो का सगम स्थल, हमारा गौरव एव आलोक स्तम्भ है तथापि इसे और अधिक समृद्ध एव विकसित बनाने मे राष्ट्र के नागरिको, नेताओ एव सरकारो का सहयोग अपेक्षित है ताकि अमर बलिदाता भक्तफूलसिह जी द्वारा रोपित यह वाटिका राष्ट्र के विशाल प्रांगण का अधिक सुरभित कर सके।

(सम्वाददाता द्वारा)

हिमा सुवीरा=सैकडो वर्ष मस्त रहे।

वेद की इस शिक्षा के अनुसार व्यक्ति को वैयक्तिक सम्पत्ति रखने का न केवल अधिकार ही प्राप्त है अपितु उसके विकास के लिए और पारिवारिक जीवन के लिए यह आवश्यक भी है।

अग्रेजी के सुप्रसिद्ध लेखक बेकन ने भी इस अधिकार को मान्यता दी है परन्तु जैसा कि वेद ने कहा है कि धन अनुचित उपायों से कदापि नहीं कमाना चाहिए उन्होने भी इसकी पुष्टि की है। वह लिखते हैं कि—

'अनुचित साधनो से प्राप्त होने वाले धन की इच्छा मत करो। परन्तु ऐसे धन की इच्छा करो जिसे तुम न्यायपूर्ण तरीको से प्राप्त कर सको, जिसका सयम पूर्वक उपयोग कर सको, जिसे खुशी से वितरित कर सको और जिसे शान्तिपूर्वक छोड सको हा इसके प्रति साधु सन्तो जैसी घृणा नही होनी चाहिए।'

(स्वाध्याय सन्दोह)

बन्दूक के साए में धर्म का झण्डा फहराने वाले सन्त

जरनैलसिंह भिंडरावाला एक सीधे सादे सन्त कहलाते यदि वह बन्दूक के साए मे धर्म का मर्म न समझाते।

उनका नाम छह-सात साल पहले कौन जानता था? १३ अप्रैल १९७८ को बैसाखी के दिन अमृतसर मे अकाली और निरकारियों मे जमकर सघर्ष हुआ। भिंडरावाला निरकारियो के सख्त खिलाफ थे। निरकारी अमृतसर मे अपना जलूस निकाल रहे थे। इसके विरोध की घोषणा भिंडरावाला ने की। उन्होने निरकारी विरोधी अकाली जत्थे का नेतृत्व किया। निरकारियो से जमकर खूनी सघर्ष हुआ जिसमे १८ व्यक्ति मारे गए। तब चडीगढ मे अकाली दल की सरकार प्रकाशसिंह बादल के नेतृत्व मे काम कर रही थी। बादल सरकार ने इस सघर्ष के बाद निरकारी गुरु बाबा गुरबचन के पजाब प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा दिया, मगर निरकारियो के खिलाफ भिंडरावाला का अभियान जारी रहा। भिंडरावाला को यही घटना प्रकाश मे लाई और वह अखबार की सूर्खियो मे आ गए।

इसके लगभग दो वर्ष बाद २४ अप्रैल १९८० को निरकारी प्रमुख बाबा गुरुबचनसिंह की दिल्ली मे हत्या कर दी गई। इसमे भिंडरावाला का नाम जमकर उछला। अकाली जनता सरकार की हिम्मत भिंडरावाला को गिरफ्तार करने की नही हुई। बाबा गुरुबचनसिंह हत्याकाड के सिलसिले मे दिल्ली के उपराज्यपाल ने पजाब के मुख्य-मन्त्री के नाम गुप्त सन्देश भेजा कि इस हत्याकाड मे जितने भी लोगो के नाम नोटिस या वारट जारी किए गए हैं वे सभी भिंडरावाला के जत्थे के लोग हैं तथा उनके सरक्षण मे है। कहा गया कि ये लोग स्वर्ण मन्दिर मे छिप गए। पर पूरी जद्दो जहद के बाद भी सरकार इन लोगो को नही पकड सकी। बादल को डर था कि पकडेंगे तो पन्थ-विरोधी कहे जायेगे।

काग्रेस (इ) ने भिंडरावाला की इस स्थिति का लाभ उठाया और अपना राजनैनिक पासा अकाली दल को कमजोर करने के लिए फेका। सिख राजनीति पर अकाली एकाधिकार समाप्त करने का उसे एक हथियार मिला। जब जून १९८० मे विधानसभा के चुनाव हुए तो भिंडरावाला ने अकालियो का समर्थन नही किया और न ही काग्रेस का विरोध किया। काग्रस के लिए यह हरी झडी थी। मगर बाद मे यह चाल सिरदर्द बनती गई, जो बाद मे नासूर साबित हुई।

इसके बाद एक और हादसा हुआ। ९ सितम्बर १९८१ को हिन्द समाचार समूह के सम्पादक लाला जगतनारायण की हत्या कर दी गई। लाला जगतनारायण बाबा गुरुबचनसिह हत्याकाड के मुकदमे मे ऐसे बयान देने वाले थे जिससे भिंडरावाला के अनुयाइयो को अपनी कलई खुलने का खौफ पैदा हो गया था। जब लाला जगत-नारायण मारे गए तो भिंडरावाला के खिलाफ वारट जारी हुए। वह अपने मुख्यालय मेहता चौक (अमृतसर) से हरियाणा के गाव चद्दू कला पहुचे। जब पुलिस उन्हें वहा पकडने पहुची तो वह गायब हो गए। २० सितम्बर को भिंडरावाला ने मेहता चौक मे गिरफ्तारी दी। जब जमानत की बारी आई तो उन्होने जमानत कराने से इंकार कर दिया। गिरफ्तारी के समय भी पुलिस से उनके चेलो ने जमकर सघर्ष किया। गोलिया चली। १७ लोग मरे। पंजाब के कुछ दूसरे कस्बों मे भी हिंसा भडकी। भिंडरावाला को लुधियाना के एक रेस्ट हाउस मे नजरबन्द कर दिया गया।

पजाब आन्दोलन तब सीढिया चढ रहा था। भिंडरावाला अब राजनीतिक भाषण भी देने लगे। वह चडीगढ पजाब को देने की माग करने लगे और अमृतसर को पवित्र नगर घोषित करने की आवाज लगाने लगे। रावी-व्यास जल बटवारे से भी उनका सम्बन्ध हो गया। उधर चडीगढ मे दरबारासिंह का मन्त्रिमण्डल था। अकालियो ने अपने आदोलन तेज करने शुरु कर दिए। भिंडरावाला की गिरफ्तारी के बाद श्रीमती इन्दिरा गाधी ने अकालियो को वार्ता के लिए दिल्ली बुलाया। उन्होने शर्त रखी कि पहले भिंडरावाला को रिहा किया जाए। अकालियो के दिल्ली पहुचने के बाद वार्त्ता एक दिन देर से शुरु हुई। इस बीच भिंडरावाला को रिहा कर दिया गया। अकाली आन्दोलन को इस घटना से नई कुलाच मिली और भिंडरावाला को राजनैतिक जीवन।

जुलाई १९८२ मे गुरुद्वारा गुरुदर्शन प्रकाश काड के सिलसिले मे अखिल भारतीय सिख छात्र फेडरेशन के अध्यक्ष अमरीकसिंह तथा भिंडरावाला के सिपाही थारासिंह को गिरफ्तार किया। यह काड नवम्बर १९८१ मे हुआ था जिसमे गरुद्वारे के लगर मे बम फट गया था और तीन व्यक्ति मारे गए थे। भिंडरावाला ने इन्हे रिहा करने की माग की। गुरुद्वारा गुरुदर्शन प्रकाश भिंडरावाला का अभी तक मुख्यालय था। चौक मेहता स्थित अमृतसर से कुछ दूरी पर बना यह गुरुद्वारा आतकवादियो का अड्डा बनता चला गया। सरकार कार्रवाई करने मे झिझकती रही और निरकारी मारे जाते रहे।

इधर दल खालसा का नाम पूरे जोर शोर से प्रचारित होने लगा। दरबारा सरकार के लिए दल खालसा गले का काटा बन गया। पजाब के शहरो मे उत्तेजना फैलने लगी। मन्दिरो मे मरी गाय या गुरुद्वारो मे गुरु ग्रन्थ साहब के पन्ने फाडने की घटनाओ से हिंसा भडक उठती। इसमे भी भिंडरावाला का नाम लिया जाने लगा। दरबारासिंह सरकार परेशान होकर दल खालसा पर प्रति-बन्ध की माग करने लगी। प्रतिबन्ध भी लग गया मगर भिंडरावाला को सरकार नही पकड सकी। मई १९८२ मे भिंडरावाला बम्बई चले गए। वहा वह कोलीवाडा के एक गुरुद्वारे मे बीस दिन रहे। जैसे ही उन्हे अपनी गिरफ्तारी की आशका हुई वे वापस अमृतसर आ गए।

१९ जुलाई १९८२ का दिन अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर के इति-हास मे बडा अजीबोगरीब माना जायेगा। इस दिन भिंडरावाला ने मेहता चौक के गुरुद्वारा गुरदर्शन प्रकाश को छोडकर इसमे प्रवेश किया। अब भिंडरावाला का मुख्यालय स्वर्ण मन्दिर का गुरुनानक निवास हो गया। यही से वे अपनी सारी कार्रवाई की बागडोर खीचे रहे।

तब से लेकर अन्त तक भिंडरावाला यही जमे रहे। इस दौरान अकाली दल का सतलुज लिंक नहर विरोधी आदोलन पिटने लगा। अकालियो ने भी अपना मुख्यालय स्वर्ण मन्दिर बनालिया। ४ अगस्त ८२ को अकाली आदोलन भी स्वर्ण मन्दिर मे आ गया।

इसके बाद की राजनीति भिंडरावाला को हीरो बनाने वाली साबित हुई। दरबारा सरकार ने उन्हे स्वर्ण मन्दिर से बाहर आने की चुनौती दी। इसे हाथ मे तीर और दो कृपाणे रखने वाले भिंडरा-वाला ने स्वीकार करने से इनकार कर दिया। वे अकाली आदोलन के सर्वेसर्वा बन गए और अकाली दल के अध्यक्ष हरचन्दसिंह लोगो-वाल एक मूकदर्शक। भिंडरावाला ने अपनी धार्मिक माग लोगोवाल के गले से उतरवाई जिन्हे प्रधानमन्त्री ने मान लिया। जब इन पर अमल का मौका आया तो भिंडरावाला के आदमी रास्ते का रोडा बन गए।

मोगा के पास रोडा गाव के रहने वाले भिंडरावाला केवल पाचवी जमात पास थे। पाच-छह वर्ष की आयु मे ही वह टकसाल' गए जहा निहग सिखो को दीक्षा दी जाती है। बाद मे सिखो का यही दीक्षा केन्द्र मेहता चौक आया और भिंडरावाला इसकी गद्दी के मुखिया बने और सन्त कहलाने लगे।

देश की आजादी वाले साल १९४७ मे भिंडरावाला का जन्म एक

आट (आर) परिवार मे हुआ मगर आर्टों को गुरु गोविन्दसिंह ने अपने प्रसिद्ध पत्र सफरनामा' मे अपनी कौम कहा है। यह पत्र उन्होने मुगल शहशाह औरगजेब को लिखा था। भिडरावाला स्वय को गुरु गाविन्दसिह के जनरल बाबा दानसिह का वशज मानते थे।

पाच वष की आयु मे भिडरावाला टक्साल चले गए जहा निहग सिख बनाए जाते हैं। भिडरावाला वैसे तो आर थे मगर वह लिखते भिडरावाला थे। १९०६ मे टक्साल को गद्दी पर सन्त बाबासिह थे। वह मोगा से १६ कि० मी० दूर भिडरावाला गाव के थे। जरनैलसिह ने उन्ही के गाव को अपनी जाति की जगह जोडा।

सन्त बाबा सिह की मृत्यु के बाद टक्साल की गद्दी पर १९३४ मे सन्त गुरवचनसिह बैठ। १९७१ मे जब इस सन्त की मृत्यु हुई तो तत्कालीन मुख्यमन्त्री गुरुनामसिह ने उनकी अन्तिम क्रिया राजकीय सम्मान से कराई। उनके बाद सन्त करतारमिह टक्साल की गद्दी पर बैठ। उन्ही के समय मे टक्साल भिडरावाला गाव से (अमृतसर से ४० कि० मी० दूर) मेहता चौक आ गई। सन्त करतारसिह अखिल भारतीय सिख छात्र फडरेशन के अध्यक्ष अमरीकसिह के पिता थे। उन्होने अपनी मृ यु से तान वर्ष पूर्व १९७७ मे जरनैलसिह भिडरा-को गददी का मुखिया बनाया।

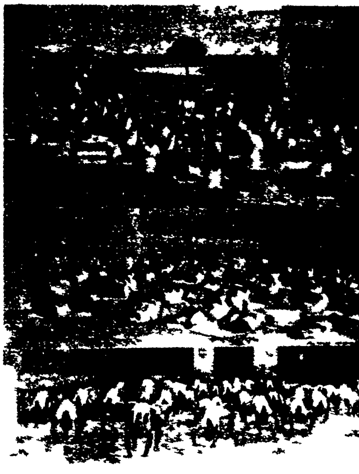
भिडरावाला के दो बेटे हैं और उनकी पत्नी है। वह अपने सात भाइयो मे से सबसे छोटे थे उनका परिवार गाव मे ही रहता था, क्योकि टक्सान मे विवाहिन जीवन जीने का अधिकार नही है।

स्वर्ण मन्दिर मे आन्दोलन दो गुटो मे बट गया। एक नरमपथी और दूसरा उग्रपन्थी। पहले से ही दो भागो मे बटे अकाली दल मे एकता स्थापित कराने की कोशिश भी भिडरावाला करने लगे।

बीबी अमरजीत कौर ने एक नया उग्रपथियो का गुट तैयार किया। इसे बब्बर खालसा कहा गया। बीबी अमरजीत कौर के पति १३ अप्रल १९७८ के अकाली निरकारी सघर्ष के शहीदो मे थे तभी से बीबी स्वण मन्दिर मे रह रही थी। बीबी का यह गुट भिडरा-वाला से टक्कर लेने लगा। बब्बर खालसा का आतक भिडरावाला पर भी पडा। नवम्बर १९८३ मे स्वण मन्दिर मे आतकवादियो के दो गुटो मे जमकर सघष हुआ। भिडरावाला अकाल तख्त की ओर चले गए और तब से मृत्यु नक वही रहे।

भिडरावाला की मृ यु के साथ एक ऐसे आतकवादी दौर की समाप्नि हुई है जिसने पजाब और भारत की जड हिला दी थी।

(नवभारत] दिल्ली ८ ६ ८४)



मानवता सस्कार प्रशिक्षण शिविर औराद (शहाजहानी) महाराष्ट्र आर्य वीर विभिन्न व्यायाम मुद्राओ का अभ्यास करते हुए। श्री वेंकटेश्वर सचालक आर्य वीर दल आन्ध्र प्रदेश प्रशिक्षण दे रहे हैं।

विविध समाचार

पंजाब में आतंकवाद का सफाया—आर्य समाज के नेतृत्व की भारी विजय

पजाब मे कठोर सैनिक कार्यवाही को त्वरित सफलता मिली और आतकवाद का खात्मा हो गया। उग्रवादियो के सरगना भिडरवाला, प्रतिबन्धित अखिल भारतीय सिख छात्र सघ के अध्यक्ष भाई अमरीक सिंह तथा आतकवादियो के मुख्य प्रशिक्षक, सेना के अवकाश प्राप्त मेजर जनरल सुबेग सिह सहित सैकडो आतकवादी मौत के घाट उतारे गये अथवा उन्होने आत्महत्या कर ली। अकाली दल के अध्यक्ष हरचन्द सिह लोगोवाल और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के अध्यक्ष गुरुचरण सिह तोहडा को स्वर्ण मन्दिर परिसर से पकड कर राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के अन्तर्गत नजरबन्द कर दिया गया। अमृतसर मे गुरुद्वारो तथा अन्य स्थानो से सेना ने जो अस्त्र-शस्त्र का विशाल सग्रह बरामद किया, उसमे टैंकरोधी राकेट, क्षेप्यास्त्र, मोटारें, स्टेनगनें आदि अत्याधुनिक हथियार, भारी सख्या मे कारतूस और युद्ध-सामग्री शामिल है, जो गृह युद्ध की पूरी तैयारी को प्रदर्शित करते हैं। यदि पजाब मे इस समय आतकवाद को कुचला न जाता तो ३ जून से प्रारम्भ तथा कथित सीधी कार्यवाही के नाम पर पूरे प्रान्त मे भयानक परिस्थिति उत्पन्न हो जाती। पजाब समस्या पर सफल सैनिक कार्यवाही द्वारा काबू पाने से, आर्यसमाज के नेतृत्व को भी भारी नैतिक विजय प्राप्त हुई है। ज्ञातव्य है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल वानप्रस्थ के नेतृत्व मे एक शिष्टमण्डल 'मे मैं भी उसमे सम्मिलित था' ३० मई को प्रधान मन्त्री माननीया इन्दिरा गाधी से मिला था। इस शिष्ट मण्डल ने प्रधानमन्त्री जी को जनमत से अवगत कराते हुए, सैनिक कार्यवाही की माग की थी। सन्तोष का विषय है कि इसके तत्काल बाद ही सैनिक कार्यवाही की प्रक्रिया आरम्भ हुई और उसका परिणाम हमारे सामने हैं।

इस सैनिक कार्यवाही के द्वारा प्रधान मन्त्री ने अपनी अद्वितीय नेतृत्व शक्ति, अदम्य साहस और रण-कौशल का परिचय दिया है। पाकिस्तान से युद्ध मे विजय और बग्लादेश के निर्माण के उपरान्त, इन्दिरा जी ने यह तीसरी विजय प्राप्त की है, जिसमे विघटनकारी राष्ट्रघाती शक्तियो की पराजय हुई है। केन्द्रीय सरकार ने यह सिद्ध कर दिया है कि देश की प्रभु सत्ता और अखण्डता के मामले मे वह कोई समझोता नही करेगी। पंजाब मे पृथक्तावादी तत्वो की पराजय से देश मे एक नये आत्मविश्वास का सचार हुआ है।

सैनिक सफलता के प्रथम व द्वितीय चरण के उपरान्त अब पजाब के आतकवादियो ने अन्य प्रान्तो मे जो छोटे-छोटे अड्डे बनाये है, उनका सफाया जरूरी है। आश्चर्य की बात है कि पजाब पुलिस तथा सीमा सुरक्षा दल के होते हुये, इतने व्यापक पैमाने पर युद्ध का साजो सामान गुरुद्वारो मे कैसे पहुच गया? भविष्य मे पुलिस और सुरक्षा दल मे भारी फेर-बदल की जरूरत है। किसी भी धार्मिक स्थल को गैर-कानूनी और उग्रवादी तत्वो का अड्डा न बनने दिया जाये। राष्ट्रीय हित की अपेक्षा, अपने राजनैतिक हित को वरीयता देने वाले राजनैतिक दलों और राजनेताओ को 'राष्ट्रीय अखण्डता एव प्रभुसत्ता" के साथ खिलवाड करने का मौका न दिया जाये।

—डा० आनन्द प्रकाश सदस्य तदर्थ समिति
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

गुरुकुल वृन्दावन में प्रवेश

१ जुलाई ८४ से प्रारम्भ बी०ए० स्तर की नि शुल्क शिक्षा, सादा भोजन, नियमित दिनचर्या, उत्तम देखभाल के लिए प्रारम्भिक भोजन शुल्क ८५)। ६ से १० वर्ष तक के बालकों का प्रवेश गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन मे दिलावे। —योगेन्द्रसिंह स्नातक एडवोकेट मुख्याधिष्ठाता

गुरुकुल घटकेश्वर में प्रवश आरम्भ

गुरुकुल घटकेश्वर, जिला रगारेड्डी (हैदराबाद) मे सन् १९८४-८५ के लिये १ जून १९८४ से प्रवेश आरम्भ हो गया है। यहा आन्ध्र प्रदेश सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त पाठ्यक्रम प्रथम कक्षा से दसवी कक्षा तक हिन्दी और तेलुगु माध्यमो से पढाया जाता है। इस सस्था मे गुरुकुल पद्धति पर छात्रावास की सुविधा उपलब्ध है। छात्रो मे समुचित अनुशासन सीधा-सादा एक सा रहन सहन, उत्तम परीक्षा-परिणाम, सन्ध्या-हवन, स्वास्थ्यप्रद जलवायु आदि इस गुरुकुल की अपनी विशेषताए हैं। गुरुकुल आश्रम मे अपने बालको को प्रवेशार्थ इच्छुक अभिभावकगण शीघ्रमेव श्री मुख्याधिष्ठाता जी से सम्पर्क स्थापित कर विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते है।

—प्राचार्य गुरुकुल घटकेश्वर
जिला रगारेड्डी, (हैदरावाद)

गुरुकुल चित्तौड़गढ़ का प्रवेश आरम्भ

यहा पहली से आठवी तक सस्कृत विषय के साथ अर्वाचीन सभी विषय पाठ्यक्रम मे है, सस्कृत विश्व विद्यालय वाराणसी आर्ष पद्धति पर आधारित प्राचीन व्याकरण व वेद निरुक्त प्रक्रिया से मध्यमा शास्त्री व आचार्य तक की परीक्षा का समावेश है। गतवर्ष का परीक्षा परिणाम ९३ प्रतिशत रहा, मध्यमा शास्त्री व आचार्य कक्षा के छात्रो के लिए छात्रवृत्ति का प्रावधान।

पढाई १ जुलाई से आरम्भ होती है। बालको का प्रवेश १५ जून से आरम्भ होना शुरु हो जाता है, प्रवेश सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए मुख्याधिष्ठाता श्री गुरुकुल चित्तौडगढ राजस्थान ३१२००१ से पत्र व्यवहार व सम्पर्क कीजिए।

श्री गुरुकुल चित्तौडगढ, राजस्थान

इस्लाम की एक और ईंट खिसकी

बम्बई, मौहम्मद अली ४८ वर्ष जो स्टर्लिंग एक्सपोर्ट इण्डिया, लोअर पटेल, बम्बई के मालिक गोवर्धनदास दुसीजा के छोटे भाई हैं और लगभग १५ वर्ष पूर्व मुसलमान हो गये थे और तबलीग जमात के साथ काम कर रहे थे अब गोबिन्दराम दुसीजा हो गये हैं।

दिनाक ५-६-८४ को काकडवाडी आर्यसमाज की ऋषि वेदी पर समाज के अधिकारियो ने उन्हे वैदिकधर्म की दीक्षा देकर शुद्ध किया। इस अवसर पर आचार्य डा० मित्र जीवन ने गोविन्दराम जी के प्रति सद्भाव व्यक्त करते हुए कहा—"ससार मे विज्ञान सम्मत धर्म ही टिकेगा, साम्प्रदायिकता अमानवीय और अवैज्ञानिक है जिसे छोड देने मे मानव का हित है।

गोविन्दराम जी एक सुशिक्षित व्यक्ति हैं जिन्हे आर्य उच्च सस्कारो के प्रशिक्षण हेतु तपोवन आश्रम देहरादून भेज दिया गयाहै।

पुस्तक विमोचन

सार्वभौम आर्य महासम्मेलन, लण्डन के प्रधान पण्डित सत्यदेव भारद्वाज विद्यालकार शनिवार १० जून १९८४ को सायकाल ५ बजे आर्य समाज (अनारकली, मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली मे आर्य समाज का इतिहास (सम्पादक डा० सत्यकेतु विद्यालकार) के अब तक प्रकाशित हुए तीनो भागों को औपचारिक रूप से विश्व की आर्य जनता की सेवा में समर्पित करेंगे। साथ ही, देश के अनेक मान्य विद्वान, सन्यासी एव आर्य नेता आर्य समाज का विस्तृत इतिहास सम्पादित करने की इस महत्वपूर्ण योजना की सफलता के लिए आशीर्वाद प्रदान करेंगे। सानुरोध प्रार्थना है कि आप इष्ट मित्रो के साथ इस समारोह मे सम्मिलित होने की कृपा करें। — रामनाथ सहगल

शोक प्रस्ताव

विश्व वेद परिषद चण्डीगढ ने होशियारपुर के प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता एव पूर्व पजाब विधान सभा सदस्य प्रि० ओम्प्रकाश बग्गा के उग्रवादियो द्वारा बलिदान (२-६-८४) पर शोक प्रस्ताव पारित किया और प्रशासन से अपराधियो को गिरफ्तार करके कड़ी सजा देने की माग की।

—आसुराम आर्य मन्त्री

आर्य समाजों की गतिविधियां

१८वां ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर

(दिनांक २५ जून सोमवार से १ जुलाई रविवार १९८८) आत्मशुद्धि आश्रम मे हर वर्ष की भांति २५ जून सोमवार से १ जुलाई रविवार तक ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर का आयोजन और इस वर्ष विशेष शान्ति महायज्ञ, मानव धर्म सम्मेलन, चरित्र निर्माण सम्मेलन, नशाबन्दी सम्मेलन हिन्दू आर्य जागरण सम्मेलन बहादुरगढ नगर मे शोभा यात्रा आदि की व्यवस्था अत्यन्त उत्साह के साथ की जा रही है। इस शुभावसर पर अनेको व्यायामाचार्यों, वक्ता, साधु-सन्त-सन्यासियो, नेताओं गायकों को आमन्त्रित किया गया है।

शिविर मे पूर्ण रूप से भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी, युवक ऋतु अनुसार बिस्तर थाली, लोटा, कटोरी, चम्मच, कापी पेंसिल, कदानुसार लाठी, दो लगोट तौलिया, खाकी नेकर, सफेद बनियान, कपडे के जूते अवश्य साथ लेकर आयें। भोजन तथा स्थान का प्रबन्ध आश्रम की ओर से होगा। शिविर शुल्क २१) रु० और अपना पूरा पता आश्रम के पते पर २० जून तक भेज देवें। —स्वामी धर्ममुनि 'मुख्याधिष्ठाता'

आत्मशुद्धि आश्रम (रजि० ट्रस्ट) बहादुरगढ (हरियाणा)

आर्य समाज खामगाव

दिनांक १ जुलाई १९८४ से वामन नगर खामगाव मे आर्य समाज द्वारा श्रीमती मुक्तादेवी लक्ष्मणदेव विद्या मन्दिर शुरू हो रहा है। जिसमे शासन के पाठ्यक्रमो की शिक्षा, नैतिक शिक्षा, वैदिक सस्कार बालको पर किए जावेंगे।

इस विद्या मन्दिर के लिए श्रीमती शालिनीदेवी वानप्रस्थी ने अपना निजी बगला आर्य समाज खामगाव को दान दिया है। परमपिता परमात्मा उनके स्व० पिताजी श्री लक्ष्मणदेवजी वानप्रस्थी इनकी इच्छा पूरी करे। इस बगले का मूल्य दो लाख रुपया है।

—सूर्यवंशी आर्य, मन्त्री

वेद मन्दिर की स्थापना

ब्रह्मकुटी-वेद मन्दिर (विश्व वेद प्रचारक केन्द्र) ब्रजघाट जिला गाजियाबाद का स्थापना समारोह ५ ६ व ७ जून को हर्षोल्लास के वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत के अनेको विद्वान, सन्यासी, एव भजनोपदेशको ने वेदानुकूल विचार व्यक्त किए। प्रतिदिन हजारो की सख्या मे श्रोताओ ने वेद-प्रवचन श्रवण किए।

इस वेद-मन्दिर से वैदिक विद्वान, वेदपाठी सुयोग्य पुरोहित एव याज्ञिक कर्मकाण्डी प्राप्त करने के लिए सम्पर्क कीजिए।

ब्रह्मकुटी वेद मन्दिर (विश्व वेद प्रचार केन्द्र)

ब्रजघाट जि० गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

आर्य समाज सरदार पटेल मार्ग, सहारनपुर

आर्य समाज का वार्षिकोत्सव यजुर्वेद पारायण यज्ञ सहित श्री विद्यारत्न जी आचार्य (सेवा निवृत शिक्षा उपनिदेशक उत्तर प्रदेश सरकार) के पौरोहित्य मे दिनांक १६ मई से २२ मई १९८४ तक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

—बाबूराम आर्य, मन्त्री

सभा प्रधान श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले को पत्र

विनम्र सूचना देते हुये निवेदन है कि एक देवप्रकाश वानप्रस्थी जी यहा शकरगढ और बरगढ क्षेत्र मे घूमते हुये पधारे आर्यसमाज विषयक प्रचार करते थे। अपने को प्रो० डी० एन० शर्मा नाम से बताते थे कि मैं एव मेरे पिता डी०ए०वी०कालेज लाहौर के आजीवन सदस्य थे। डी० ए० वी० एजुकेशन बोर्ड का अध्यक्ष बतलाते थे।

बरगढ एव शकरगढ के ८ व्यक्तियो को सगठित कर उन्होंने बरगढ तहसील मऊ (बादा) मे आर्यसमाज की स्थापना की तथा डी० ए० वी० महर्षि दयानन्द शिक्षा बोर्ड की तरफ से एक केन्द्रीय विद्यालय एव हास्पिटल और आदिवासी और जन जाति व पिछडे हुये वर्ग के लिये अन्तर्राष्ट्रीय आर्यसमाज की आज्ञानुसार नई कमेटी का गठन २४-३-८४ को किया।

यहा के स्थानीय ७ व्यक्तियो से १०१) रुपये चन्दा वसूल किया। रसीद आर्यसमाज एजुकेशन बोर्ड, श्रद्धानन्द भवन, दिल्ली, छोटा नागपुर ट्राइवल एरिया। डी० ए० वी० मैंनेजिंग कमेटी राची बिहार ३६८ एव अन्य सभी सभासदो को दी। लोगो से एक प्रोनोट टाइप कराकर डीड बनवा कर मऊ तहसील के माध्यम से तस्दीक कराकर वे तीन महीने की अवधि देकर गये हैं। परन्तु तीन महीने पूरे होने को आये, उनका कोई पत्र एव सूचना अभी तक नही मिली।

लोग शका कर रहे है। आर्यसमाज एव आर्यसमाज के कार्यकर्ता के प्रति घृणा उत्पन्न होने की स्थिति हो गई है।

मैं अकेला यहा आर्यसमाजी हू। बडे प्रयत्नसे आर्यसमाज के प्रति सहानुभूति कुछ बना पाया। इस कार्य से मुझे स्वय जीवन एव अन्य हानि उठाने की आशका है।

आप शीघ्रातिशीघ्र श्री देव प्रकाश वानप्रस्थी (प्रो० डी० एन० शर्मा) की सही स्थिति का ज्ञान करावे जिससे ऋषि दयानन्द आर्यसमाज तथा मैं बदनाम न हो पाये।

—श्याम किशोर आर्य सिद्धान्त शास्त्री

सदस्य आर्यसमाज चौक प्रयाग

स्टेशन मास्टर मझियारी (म० रे०बादा

नोट —इस व्यक्ति का सार्वदेशिक सभा से कोई सम्बन्ध नही है।

—सभा मन्त्री

उत्सव सम्पन्न

—आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न हुआ प्रधान श्री राममूर्ति मन्त्री श्री खैरायतीलाल कोषाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य वीर दल मा० हृदयराम आदि निर्वाचित हुए।

—आर्ष गुरुकुल ऐसा कटरा (इटावा) का तृतीय वार्षिक उत्सव आचार्य लक्ष्मणानन्द जी की अध्यक्षता मे दिनांक २८, २९, ३० मई को सम्पन्न हुआ।

—दयानन्द स्मारक कर्णवास जिला बुलन्दशहर का उत्सव ७-६-८४ को आर्य वीर सम्मेलन के साथ सम्पन्न हुआ जिसमे पजाब की स्थिति की विशेष चर्चा हुई।

—आर्य समाज मुगल सराय का ६६वा वार्षिकोत्सव दिनांक १८ मई से २१ मई तक आर्य भिक्षु की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ अनेक आर्य नेताओ ने भाग लिया।

—जिला आर्य सभा सीवान के अन्तर्गत हसनपुरा आर्यसमाज मे १३, १४, १५ मई को वेद प्रचार एव सत्सग का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

चुनाव सम्पन्न

उदयपुर। १९ ५ ८४ आर्य समाज, उदयपुर के वर्ष १९८४ के चुनाव प्रोफेसर उमरावसिंह जी भूतपूर्व प्रधान की अध्यक्षता मे निम्न प्रकार सर्व-सम्मति से सम्पन्न हुए —

प्रधान श्री वर्यासिंह मन्त्री श्री शकरलाल कोषाध्यक्ष श्री अमरलाल चुने गए।

— ज्ञानप्रकाश, प्रचार मन्त्री

आर्य समाज, उदयपुर

चौहान के बयान पर ब्रिटेन द्वारा खेद व्यक्त

लन्दन १५ जून। तथाकथित खालिस्तान के स्वयं बने नेता डा जगजीत सिंह चौहान ने बी बी सी की एक भेंट मे प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी के खिलाफ हिंसा की धमकी भरा जो बयान दिया था उसपर ब्रिटिश सरकार ने खेद व्यक्त किया है।

विदेश कार्यालय के एक प्रवक्ता के अनुसार विदेश राज्यमन्त्री श्रीमती बेरोनेस यग ने कल इस सिलसिले मे उनसे मिलने आए भारत के कार्यवाहक उच्चायुक्त श्री पुष्कर जाहिरी के सामने खेद व्यक्त किया। प्रवक्ता के अनुसार ब्रिटेन आशा करता है कि दोनों देशो के बीच परम्परा से कायम अच्छे सम्बन्धो को ऐसे बयानो से प्रभावित नहीं होने दिया जाएगा।

समझा जाता है श्रीमती यग ने कहा है कि डा. चौहान का बयान इसके कानूनी पहलुओ की जांच के लिए सबद्ध विभाग को भेजा गया है।

उत्सव सम्पन्न

स्थानीय आर्य समाज मसेना मिर्जापुर (रामनगर) फैजाबाद का ४६वां वार्षिकोत्सव ८-९-१० अप्रैल सन ८४ को श्री हनुमान प्रसाद आर्य की अध्यक्षता में आर्य समाज मन्दिर के प्रागण मे सम्पन्न हुआ जिसमे आर्य-समाज के सुप्रसिद्ध उपदेशक एव भूतपूर्व पेश इमाम सैयद खुरशीद आलम जिनका वर्तमान नाम प० जयप्रकाश आर्य हिसार (हरियाणा) एव शास्त्रार्थ महारथी प० सत्यमित्र जी शास्त्री (बकहल गज), श्री जय प्रकाश आर्य भजनोपदेशक रामपुर, एव श्री सत्य प्रकाश आर्य भजनोपदेशक बिहार (पटना) आदि विद्वानो के अच्छे प्रवचन हुए।

—हनुमान प्रसाद आर्य, प्रधान

१०१५०—पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार
जि०—सहारनपुर उ० प्र०

(पृष्ठ १ का शेष)

मुझे विश्वास है कि हम सभी सरकार व जनता इस दिशा में ईमानदारी से प्रयास करेंगे। हमे ऐसी परिस्थितिया पुन पैदा होने नहीं देना है जिनसे हमारे बीच फूट पडे। हमे अपने लोगो की एकता को मजबूत करना है।

पवित्र ग्रन्थ, गुरुग्रन्थ साहिब दया, सेवा, त्याग तथा विश्व बन्धुत्व का उपदेश देता है। हमे आपस मे प्यार व स्नेह पैदा करना है। न केवल सिख अन्य धर्मो का पालन करने वाले लोगो को भी गुरुवाणी पर आस्था है। सिख गुरुओं ने सम्पूर्ण देश का विचार किया था। उन्होंने देश के प्रत्येक भाग की यात्रा की थी। देश का चप्पा-चप्पा हम सभी का है चाहे हम सिख, ईसाई, मुसलमान, जैन बौद्ध हिन्दू या अन्य कुछ भी हों। हमें घाव भरने हैं और सभी धार्मिक स्थलो की पवित्रता बनाए रखना है। हमे गुरुगोविन्दसिंह के इस उपदेश को याद रखना चाहिए कि जो मानव जाति से प्यार करता है वह ईश्वर से प्यार करता है।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली-२ में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

दूरभाष १२७२१४१०८५] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
वर्ष ११ अंक ३१। आषाढ शु० १० सं० २०४१ रविवार ८ जौलाई १९८४
दयानन्दाब्द १६० दूरभाष : २७४७७१
वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति ४० पैसे

जम्मू काश्मीर के मुख्यमन्त्री फारूक अब्दुल्ला बर्खास्त

आर्य समाज की मांग के अनुसार कार्यवाई करने पर भारी प्रसन्नता

श्रीनगर काश्मीर में राजनीति ने एक नया मोड लिया। नेशनल कान्फ्रेंस के १२ विधायकों ने फारूक अब्दुल्ला सरकार से अपना समर्थन वापस लेकर ७७ सदस्यों की विधान सभा मे सत्तारूढ दल की कमर तोडकर उसे अल्पमत में कर दिया। अब विधान सभा में नेशनल कान्फ्रेंस की सदस्य संख्या केवल ३४ रह गई है।

उधर राज्यपाल श्री जगमोहन ने श्री शाह को मुख्यमन्त्री पद की शपथ दिलाकर राज्य मे नए मन्त्री मण्डल का गठन कर दिया है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने कामना की कि राज्य मे उग्रवाद आतंकवाद और हिंसात्मक घटनाओं का जोर कम होगा और वहा के निवासी राष्ट्रीय विचार धारा के प्रति निष्ठावान होकर राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की रक्षा के लिए वफादार होंगे।

विदित हो कि गत ७ जून १९८४ को श्रीनगर में उग्रवादी अकालियों ने पाक समर्थक मुसलमानों के साथ मिलकर आर्य समाज मन्दिर कन्या विद्यालय को आग लगाकर लगभग ५५ लाख रुपए की सम्पत्ति नष्ट कर दी। इसके अतिरिक्त वहा हिन्दुओं के मंदिरों को भी तोडा और आग लगाई। मूर्तियों को दरिया में फेंका। आर्य समाज के पुरोहित के परिवार व समाज मन्त्री को प्राण रक्षार्थ भवन से कूदकर अपनी जान बचानी पडी। मंदिरों के पुजारियों को उग्रवादियों द्वारा पीटा गया।

इन घटनाओं की सूचना पाकर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले और महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी १६ जून को श्रीनगर गए और लगभग ५ दिन तक उन्होंने क्षतिग्रस्त क्षेत्रों का निरीक्षण किया।

आर्य नेताओं ने वहा फारूक अब्दुल्ला से भेंट की। किन्तु फारूक अब्दुल्ला का व्यवहार आर्य नेताओं को कतई पसन्द नहीं आया। फारूक ने आर्य समाज मन्दिर और अन्य हिन्दू धार्मिक स्थलों की तोड फोड के लिए खेद प्रकट करने के बजाय आर्य नेताओं को कहा कि राज्य मे अब आर्य स्कूल और मंदिर नहीं बनाया जाना चाहिए क्योंकि लोग इसको पसन्द नहीं करते। उन्होंने यह भी कहा कि राज्य मे जिन आतंकवादियों को गिरफ्तार किया गया है उन्हें भी रिहा कर दिया जायगा।

विदित हो कि पंजाब मे सैनिक कार्रवाई के उपरान्त उग्रवादी अकालियों ने श्रीनगर के गुरुद्वारा से पाक समर्थक तत्वों की मदद से आगजनी लूटपाट और हिंसात्मक वारदातें की थीं। लगभग दो घण्टे तक यह लूटपाट और आगजनी का खेल जारी रहा किन्तु पुलिस देखते हुए भी कुछ नहीं कर सकी। अन्त मे राज्यपाल श्री जगमोहन के आदेश पर मुख्यमन्त्री ने पुलिस कार्रवाई का आदेश दिया।

यह बात भी स्मरणीय है कि पाकिस्तान समर्थक तत्वों का केन्द्र श्रीनगर और पाक अधिकृत काश्मीर रहा है। वहा इन लोगों की गुप्त मीटिंग होती है, योजनाए बनती हैं। खालिस्तान समर्थक उग्रवादी नेता भिण्डरावाला को फारूक अब्दुल्ला का खुला समर्थन और संरक्षण था ऐसी पूरी संभावना है।

आर्य समाज के शिष्टमण्डल ने जम्मू काश्मीर की घटनाओं के सम्बन्ध मे जो गोपनीय रिपोर्ट तैयार की थी उसमे ऐसे अनेक व्यक्तियों को संदिग्ध माना गया है जो राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के विरुद्ध काम कर रहे हैं।

सार्वदेशिक सभा के शिष्टमण्डल ने यह गोपनीय रिपोर्ट दिल्ली आकर प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को देते हुए मांग की थी कि—

१—हमारे पास इस बात के विश्वस्त प्रमाण हैं कि वर्तमान समय मे जम्मू काश्मीर मे व्याप्त परिस्थितियों के कारण फारूक सरकार को हटाना अथवा राष्ट्रपति शासन लागू करने के अलावा कोई दूसरा उपाय नहीं है। इसमे देर करने के भयंकर परिणाम होंगे।

२—जिस प्रकार पिछले कुछ वर्षों से पंजाब पाक तथा अमेरिका समर्थक खालिस्तान बनाने के इच्छुक आतंकवादियों का केन्द्र बन गया था उसी प्रकार जम्मू काश्मीर राज्य डा० फारूक के नेतृत्व मे देश के लिए एक और सिर दर्द बन रहा है।

३—जिस प्रकार सरकार ने शरारती तत्वों द्वारा नष्ट किए गए चर्च को पुनः बनवाया था उसी प्रकार आर्य समाज मन्दिर तथा कन्या पाठशाला का पुनर्निर्माण कराया जाय।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले और महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने कहा कि सरकार ने हमारी गोपनीय रिपोर्ट का जायजा लेकर राष्ट्रीय हित मे पंजाब की सैनिक कार्रवाई के पश्चात् एक दूसरा साहसिक कदम श्री फारूक अब्दुल्ला को बर्खास्त करके उठाया है।

काश्मीर कांड की जांच के लिए गए सार्वदेशिक सभा के अधिकारी श्रीनगर में



चित्र में बीच मे सभा प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले तथा उनकी दाईं ओर महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी खडे है।
चित्र मे आर्य समाज के मन्त्री श्री राजेन्द्र गुप्त और श्री प० नेत्रपालजी शास्त्री भी दिखाई दे रहे हैं।

काश्मीर के वर्तमान दंगों के सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा की जांच रिपोर्ट जो २८-६-८४ को प्रेस सम्मेलन में प्रचारित हुई और प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को प्रस्तुत की गई

दिल्ली २८ जून १९८४। श्री नगर के आर्य समाज मन्दिर हजूरीबाग की भारी क्षति के समाचार मिलने पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले तथा महासचिव श्री ओम्प्रकाश त्यागी दिनांक १९ जून १९८४ को श्रीनगर तथा जम्मू काश्मीर के अन्य भागो के दौरे पर गए। वे दंगाग्रस्त क्षत्रों मे गए तथा वहा के स्थानीय निवासियो से बातचीत करने और तथ्यो का गहन अध्ययन करने के पश्चात वे निम्नलिखित निष्कर्षों पर पहुचे —

(१) जरनैल सिंह भिण्डरावाला की मृत्यु का समाचार मिलने पर श्रीनगर के अकालियो ने उनकी मृत्यु पर दुख एव रोष प्रकट करने के लिए पुलिस निरीक्षक से जलूस की आज्ञा मागी। राज्य मे तथा राज्य से बाहर की परिस्थितियो को देखते हुए पुलिस निरीक्षक ने जलूस की आज्ञा नही दी। इस पर अकालियो ने डिप्टी कमिश्नर से आज्ञा मागी जिन्होने इसकी अनुमति दे दी तथा ७ जून १९८४ को एक जलूस निकाला गया।

(२) इस जलूस मे निम्नलिखित व्यक्ति सम्मिलित थे—

(क) पाकिस्तान समर्थक मुसलमान जिन्होने पाक समर्थक नारे लगाए।

(ख) अकाली

(ग) सिखो के वेष मे पाकिस्तानी तत्व।

ये पाक समर्थक तत्व राज्य मे बहुत लम्बे समय से है तथा सिखो को राज्य मे आयोजित विभिन्न शिविरो मे प्रशिक्षण दे रहे हैं। ये राज्य के विभिन्न भागो से पूरी तरह परिचित थे।

(३) जलूस मे भाग लेने वाले व्यक्तियो ने लूट-पाट एव आगजनी की घटनाओ मे भाग लिया तथा खालिस्तान जिन्दाबाद पाकिस्तान जिन्दाबाद एव इन्दिरागाधी मुर्दाबाद आदि नारे लगाये।

(४) इन घटनाओ के समय पुलिस मूक दर्शक बनी देखती रही।

(५) आर्य समाज मन्दिर हिन्दू दुकानें मन्दिर तथा हिन्दू बहुल आवासीय क्षत्र इन अत्याचारो के मुख्य लक्ष्य थे।

(६) दर्जनो मन्दिर नष्ट कर दिए गए तथा मूर्तियों को तोडकर नदी मे फेंक दिया गया। आर्य समाज हजूरी बाग तथा देवकी कन्या पाठशाला जिनका मूल्य ५१ लाख रुपए से अधिक था इस हमले के लक्ष्य थे तथा इन्हें बिल्कुल नष्ट कर दिया गया। आर्य समाज के पुरोहित श्री० नेमपाल शास्त्री तथा उनका परिवार श्री राजेन्द्र गुप्त की मदद से सुरक्षित निकलने में सफल हो गए।

हजूरीबाग गुरुजीबाग जवाहरनगर तथा वजीर बाग के हिन्दू मन्दिर तथा आबादियों पर हमले का मुख्य उद्देश्य हिन्दुओं को आतंकित कर राज्य छोडने पर मजबूर करना तथा हिन्दू एव सिखों के बीच खाई को और चौडा करना है।

लूट एव आगजनी की घटनाए दिन दहाडे पुलिस की उपस्थिति में की गई तथा पुलिस मूक दर्शक बनकर तमाशा देखती रही।

श्री रामगोपाल शालवाले तथा श्री ओम्प्रकाश त्यागी राज्य के मुख्यमन्त्री डा० फारूक अब्दुल्ला से मिले थे। बातचीत के दौरान उनका व्यवहार तथा रूख काश्मीर राज्य के मुख्यमन्त्री के रूप मे अत्यन्त शोचनीय था। अन्य बातो के साथ उन्होने यहा तक कहा कि—

(क) अच्छा तो यह है कि आप राज्य में दोबारा समाज मन्दिर न बनाये।

(ख) क्योंकि लोगों को मन्दिर पसन्द नहीं था, अत उन्होंने इसे नष्ट कर दिया।

(ग) हिन्दुओ ने सन्त भिंडरावाले की मृत्यु पर मिठाइया बाटी। लूटपाट तथा आगजनी की घटनाए उसी का नतीजा है।

(घ) आजकल अकालियो ने लूटपाट तथा आगजनी की है कल को मुसलमान भी कर सकते हैं।

(च) भिण्डरावाले की मृत्यु का समाचार गुप्त नहीं दिया गया था।

भारत सरकार से हमारा अनुरोध

कृपया उपरोक्त कथनो पर निम्नलिखित तथ्यो के साथ विचार किया जावे—

१—जलूस की आज्ञा सम्बन्धित अधिकारी के इन्कार करने के पश्चात भी दी गई।

२—जलूस मे शामिल घुसपैठियो तथा लुटेरों द्वारा दो घण्टे की लूटपाट तथा आगजनी के बाद ही पुलिस ने कार्यवाही की।

३—राज्य के राज्यपाल के निर्देश के बाद ही मुख्यमन्त्री ने पुलिस भेजने का फैसला किया।

४—पुलिस गोली वर्षा मे मारे गए अधिकांश व्यक्ति सिखों के वेष में पाकिस्तानी थे। इसीलिए उनकी शव परीक्षा नहीं की गई। तथा उनकी कोई सूची भी नहीं बनाई गई।

५—वास्तव मे यह बात समझ मे नहीं आती है कि श्री भिण्डरावाले की स्मृति मे निकाले गए जलूस मे मुसलमानो ने भाग क्यों लिया?

(शेष पृष्ठ १२ पर)

शालवाले प्रधानमन्त्री से मिले

दिल्ली २९ जून।

श्रीनगर काश्मीर मे ७ जून को आर्य समाज मन्दिर हजूरी बाग तथा अनेक हिन्दू पूजा स्थलो को जलाए जाने के सम्बन्ध मे आज प्रात श्री रामगोपाल शालवाले ने प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरागाधी से भेंट की। उनके साथ सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् श्री पृथ्वीसिंह आजाद तथा सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी भी थे।

आर्य नेताओ ने अपने ५ दिवसीय काश्मीर दौरे के अन्तर्गत की गई जाच से प्रधानमन्त्री को अवगत किया।

श्री शालवाले ने आरोप लगाया कि जम्मू काश्मीर के मुख्यमन्त्री श्री फारूक अ दुल्ला को आर्य समाज मन्दिर तथा हिन्दू पूजा स्थलो को जलाए जाने का कोई अफसोस तक नही है। श्री शालवाले ने यह भी आरोप लगाया कि रियासत मे उग्रवादी सिक्खो के साथ पाकिस्तानी एजेण्ट सिक्ख वेषभूषा मे हिन्दुओ को आतंकित कर रहे है।

उन्होने प्रधानमन्त्री को बताया कि लूटपाट और आगजनी की घटनाओ पर सरकार मूक दर्शक बनकर ऐसे कृत्यो को प्रोत्साहन दे रही है। यदि केन्द्र सरकार ने जल्दी ही नियन्त्रण न किया तो जम्मू काश्मीर की स्थिति भी पजाब जसी हो सकती है।

आर्य नेताओ ने प्रधानमन्त्री से आर्यसमाज मन्दिर की क्षतिपूर्ति और जम्मू काश्मीर रियासत मे राष्ट्रपति शासन की माग की।

पृथ्वीराज शास्त्री
कार्यालय सचिव
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

सम्पादकीय

श्रीनगर (काश्मीर) कांड

आर्य समाज हजूरीबाग तथा देवकी आर्य कन्या विद्यालय श्रीनगर (काश्मीर भवनो को उपद्रवियो द्वारा भस्मसात किए जाने ६०लाखकी सम्पत्ति नष्ट करने और आर्योंकी भावनाओं को ठेस पहुचाने के कुकृत्यों विषयक सभा-प्रधान श्रीयुत रामगोपाल जी शालवाले तथा महामन्त्री ओम्प्रकाश त्यागी जी की संयुक्त निरीक्षण रिपोर्ट पाठक अन्यत्र पढेगे।

इस काड से आर्य जगत मे रोष और क्षोभ का व्याप्त होना स्वाभाविक है यह रिपोर्ट प्रेस सम्वाददाता सम्मेलन मे तथा प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी को प्रस्तुत की जाकर प्रचारित भी हो चुकी है।

इस जघन्य काड मे काश्मीर मे शरण पाए उग्रवादी अकाली सिखो, सिख वेषधारी मुस्लिम गु डो मुख्यत जमाते तुल्बा इस्लामी के नौजवानो का हाथ होना और काश्मीर के मुख्यमन्त्री श्री डा० फारुख अब्दुल्ला व काश्मीर प्रशासन की उपेक्षा, या मिली भगत का होना सुस्पष्ट हुआ है।

काश्मीर के मुख्यमन्त्री पर पजाब के उग्रवादियो आतकवादियो और जमाते इस्लामी के पृष्ठ पोषको को शह, वा शरण देकर वा उपेक्षा करके अपनी गद्दी को सुरक्षित रखने की जोड तोड का आरोप लगाया जा रहा है। इस प्रकार के आरोपो मे कहा तक सत्यता है इसका ठीक निणय राजनीतिक परिपेक्ष्य मे ही हो सकता है परन्तु उनके तथा उनकी सरकार के रवैए से और आर्य नेताओं गैर जिम्मेदारान को दिए गए उत्तर से यदि उन आरोपो की सत्यता का पीडितो एव आर्य समाज के नेताओ को कुछ आभास मिले तो इसमे आश्चर्य की कोई बात न होगी विशेषत उनके पिता श्रीयुत स्व० शेखअब्दुल्ला द्वारा कायम की गई भव्य परम्पराओ के अतिक्रमण पूवक।

श्री शेख अब्दुल्ला आर्य समाज के प्रति आदर और सहानुभूति पूण रूख रखने के लिए प्रख्यात थे। उन्होने हैदराबाद सत्याग्रह के समय आर्य समाज की मागो का समर्थन करके आर्य समाज के प्रति आदर भावना का परिचय दिया था। उन्होने काश्मीर स्टेट में आर्य समाज क स्कूलो, कालेजो आदि को असाम्प्रदायिक होने का प्रमाण पत्र दिया और उनकी शिक्षा एव कार्य-प्रणाली की प्रशसा की थी। उन्ही के पुत्र श्री डा० फारूख का इस काड के प्रति रुख कितना निराशाजनक एवं आपत्ति जनक है और कहा तक पक्षपात पूर्ण और अन्याय पूर्ण है इसका विज्ञ पाठक सहज ही अनुमान लगा सकते हैं।

उनके द्वारा हिन्दू एव आर्य मन्दिरो भवनो के नष्ट भ्रष्ट किए जाने की जिम्मेवारी का हिन्दुओं पर डाला जाना और अपने को तथा अपने प्रशासन को इनकी जिम्मेदारी से बचने बचाने का प्रयास किया जाना हमे पजाब के पूर्व मुख्यमन्त्री श्रीयुत गुरनाम सिह के बयान की याद ताजा करा देता है जो उन्होने अबोहर काड की जिम्मेदारी से बचने के लिए यह कहकर दिया था कि 'यज्ञशाला के अपमान का कोई प्रत्यक्षदर्शी नही है। इस गडबड मे हरि-याणा का हाथ हो सकता है।'

११-१२-१९६९ के दिन पजाब बन्द के दौरान २०० छात्र गुण्डो ने जिनमें अकाली छात्रों की सख्या अत्यधिक थी डी० ए० वी० कालेज पर आक्रमण किया यज्ञ वेदी पर पेशाब फिर कर उसे भ्रष्ट किया।

इस मामले को सार्वदेशिक सभा ने अपने हाथ मे लेकर अपराधियो को दडित कराया उनसे डी० ए० वी० कालेज के परिसर में आयोजित एक विशाल सार्वजनिक सभा में लिखित माफी मगवाई और उन्हे कालेज से निकाल दिया गया था।

इस सम्बन्ध में श्रीमती इन्दिरा गाधी प्रधान मन्त्री, केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री यशवन्त राव चौहान से काफी पत्राचार हुआ। सभा के कई शिष्ट मडल उनसे तथा अन्य उच्च राज्याधिकारियो से मिले थे। उनके सामने वस्तु स्थिति रखी। उच्च स्तरीय जाच की तथा अपराधियो को सजा देने की माग की गई। फलत पजाब प्रशासन ने एक जाच समिति नियुक्त की। उसी के निर्णयानुसार अपराधियों को सजा दी गई थी। इस राजकीय समिति ने यह भी निर्णय किया था कि यदि वे माफी न मागें तो उन पर अदालत में केस चलाया जाय।

उस समय सभा के मन्त्री श्री लाला रामगोपाल शालवाले और उनके सहयोगी उपमन्त्री श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी ही थे। श्री शालवाले के सुझाव और प्रयास के फलस्वरूप ही भारत सरकार के आदेश पर पजाब सरकार इस मामले को हाथ मे लेने के लिए विवश हुई थी, पार्लियामेंट में भी इसकी ३, ४ बार चर्चा हुई थी।

आर्य समाज ग्रीन पार्क दिल्ली का मामला तो एक प्रकार से ताजा ही है। प्रशासन द्वारा उस मन्दिर के गिराए जाने और उसी के व्यय पर श्री शालवाले के अथक प्रयास से उसका पुनर्निर्माण किया जाना सर्वविदित ही है।

ब्रिटिश काल मे 'एक फौजी कर्नल ने ईसाई मिशन के प्रच्छन्न इशारे पर बहादुराबाद के समाज मन्दिर के कुछ भाग को क्षति पहुँचाई, मन्दिर की वेदि को अपवित्र किया और समाज के मन्त्री को बुरी तरह पीटा। सार्व-देशिक सभा ने अपने प्रधान श्री महात्मा नारायण स्वामी जी के माध्यम से इस काड के अपराधी को दण्डित कराया। उससे मुख्यमन्त्री महोदय ने अपने सचिवालय मे माफी मगवाई और गवर्नमेंट ने अपने व्यय पर ओ३म् ध्वज उक्त मन्दिर पर लगाने के लिए महात्मा नारायण स्वामी जी को भेंट किया। उल्लेखनीय है कि यह विषय कई बार लैजिस्लेटिव असेम्बली मे उठाया गया था और रक्षा मन्त्री ने असेम्बली मे इस घटना का खण्डन किया था।

हैद्राबाद राज्य मे मुस्लिम उपद्रवियो द्वारा कई स्थानो पर आर्यो, आर्य नेताओ पर घोर अत्याचार किए गए आर्य समाज मन्दिरो को क्षति पहुचाई गई। निजाम गवर्नमेन्ट ने नए मन्दिरो का निर्माण और पुरानो की मरम्मत निषिद्ध ठहराई। निजाम गवर्नमेन्ट ने मुख्यत नैतिक दबाव से विवश होकर अपने व्यय पर उनकी मरम्मत कराई वा नए सिरे से उन्हे बनवाया।

उपसंहार

आशा है केन्द्रीय और राज्य प्रशासन अपने कर्त्तव्य एव उत्तरदायित्व को अनुभव करते हुए आर्य हिन्दू मन्दिरो तथा देवकी कन्या विद्यालय भवन की क्षतिपूर्ति करेगी और अपराधियो को कठोर दण्ड देगी।

काश्मीर प्रशासन से निवेदन है कि वह इस काड को सही परिपेक्ष्य मे देखे और सही कदम उठाए।'

हम विदित हुआ कि काश्मीर प्रशासन ने अपने व्यय पर कई क्षतिग्रस्त घरों को पुन बनवाया है।

परमात्मा लौकिक पिता माता नहीं है

परमात्मा पुरुष है या स्त्री इस प्रश्न को उठाने वाले परमात्मा के विषय मे एक प्रकार से अपनी अज्ञानता का ही परिचय देते है। परमात्मा न पुरुष हैं और न स्त्री क्योंकि वह निराकार है, अविनाशी है जब कि पुरुष वा स्त्री नाशवान स्थूल देहधारी होते हैं। पुरुष वा स्त्री सान्त है जब कि परमात्मा अनन्त है, असीम है।

परमात्मा माता पिता के सदृश हमारा पालन पोषण, रक्षण, शिक्षण और मार्ग दर्शन करता है उस समय भी जब कि हम माता पिता, मित्र, सखा आदि से भी वंचित हो जाते हैं और उनका भी जिनके लौकिक माता-पिता नही हैं।

वेद के एक मन्त्र और उसकी व्याख्या से यह तथ्य भली प्रकार सुस्पष्ट हो जाता है। देखें —ऋग्वेद १०।७।३

इसका भावार्थ इस प्रकार है —

"मैं सर्वाग्रणी, सबकी उन्नति करने वाले, सबसे पूर्व विद्यमान भगवान को पिता मानता हू। अन्य सम्बन्धी मा भी अग्नि को मानता हू भाई भी अग्नि को और सदा ही सखा, मित्र रहने वाला अग्नि=सबको आगे ले जाने वाले भगवान को मानताहू। उस महान् अग्नि=परमात्मा का जीवनदायी तेज पूजा के योग्य है तथा मस्तिष्क मे वह आत्मरूप सूर्य का शोधक बल और सगत करने योग्य है।

उपनिषद् ने कहा है —

'तू ही माता है, पिता है, तू ही भाई, तू ही सखा (मित्र, सहायक)

सामायिक चर्चा—

श्री खुशवन्त सिंह का अवांछनीय पग

श्री खुशवन्त सिंह की जो एक बड़े सुप्रसिद्ध पत्रकार है परेशानी को हम बड़ी हद तक स्वीकार करते हैं। बड़े की नीति मे वे घोर आस्था रखने वालो मे से हैं।

उन्होने अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर मे सेना के प्रवेश को 'मूर्खता पूर्ण' कहकर उसका घोर विरोध करते हुए पद्मभूषण अलकार वापिस कर दिया है। शायद उन्हे गद्दाफी के लीबिया से लौटते ही यह पग मूर्खतापूर्ण जचा है जिसका केस बड़ी सीमा तक तर्क सगत नही है।

यदि खुशवन्त सिंह को यह आक्रमण करना ही था तो इसके लिए यह समय उपयुक्त नही था। यह तो कई महीने पूर्व ही किया जाना चाहिए था जबकि डिपुटी इन्सपेक्टर जनरल को स्वर्ण मन्दिर से निकलते समय गोली से उड़ाया गया था। दूसरे शब्दो मे किसी पुलिस अफसर पर गोली चलाई जाय तो सेना स्वर्ण मन्दिर मे जा सकती है परन्तु जब स्थिति निकृष्टतम हो गई हो और राज्य का प्रशासन त्रियात्मक रूप से स्वर्ण मन्दिर के भीतर के आदेशो के अनुसार सचालित हो रहा हो तब आक्रमण असामयिक वा अनुपयुक्त हो जाता है।

खुशवन्त सिंह का दावा है कि उन्होने भिंडरावाला और उसके गिरोह का कभी भी समर्थन नही किया है। इसे हम स्वीकार करते हैं। समाचार पत्रो (हिन्दुस्तान टाइम्स) आदि मे उन्होने भिंडरावाले पर घृणा और हिंसा भड़काने का आरोप लगाया था। परन्तु उनके इस तर्क से कि 'चूहे को मारने के लिए तुम तमाम मकान को नही ढाते हो सहमत होना हमारे लिए अधिक कठिन है।

पजाब मे आतकवाद मामूली चूहा नही था। यह तो सन्त कथाओ मे वर्णित महाभयकर, आग उगलने वाले पागलो की तरह लोगो की जानो से खेलने वाले, साधन सम्पन्न दानवो मे से एक दानव की वास्तविक जीवन लीला थी। इसका तो विध्वस किया जाना ही था। यदि ऐसा करते हुए तमाम मकान नहीं ढहता और उसका कुछ भाग ढहता हैं तो हमारी दृष्टि मे यह बहुत छोटी कीमत है।

इस सबके अलावा कुछेक सन्देह और आशकाए हमारे मन को उद्वेलित करती है। यदि सेना के स्वर्ण मन्दिर मे प्रवेश से खुशवन्त सिंह को इतना बड़ा धक्का लगा है तो उन्होने इसी समय पदमभूषण अलकार को क्यो लौटाया? जो उन्हे अभी हाल मे दिया गया था? और राज्य सभा की सीट से त्यागपत्र क्यो नही दिया जिस पर उसी पार्टी ने उन्हे अभी मनोनीत किया था जिसकी गवर्नमेंट के विरुद्ध अब वे खड़े हो गए हैं।

दूसरी बात यह है कि खुशवन्त सिंह अपने को नास्तिक बताते हैं जिनकी ईश्वर और धर्म मे कतई श्रद्धा नही है। फिर पूजा स्थल पर सेना के प्रवेश पर वे क्यो बड़े परेशान हो रहे हैं? और क्या वे सेना के किसी मन्दिर और मस्जिद मे प्रवेश पर इतने ही व्यथित होते और पद्मभूषण वा परित्याग कर देते? आत्मसापन्य के प्रति उनका नया प्रेम एक ढोंग ही बताया जा रहा है। जौन कनेडी के शब्दो मे 'सत्य का सबसे बड़ा शत्रु प्राय असत्य नहीं होता अपितु सत्य का ढोंग और उसको निरन्तर प्र रचावादी अवास्तविक रट लगाना ही होता है।"

पजाब की तात्कालिक आवश्यकता ढोंग प्रपच नहीं अपितु घावों को ठीक करने की है, असामान्य स्थिति की नही सामान्य स्थिति की है। व्यक्तिगत ऊलजलूल मनतरगो और गुब्बार के प्रकाश की नही।

उपयुक्त सुझाव

श्री प० आसुराम जी आर्य मन्त्री विश्ववेद परिषद १२१४/७ सी चण्डीगढ़ के अनुसार हरियाणा के प्रसिद्ध आर्य चौधरी प्रियव्रत जी (१/१६० राजोरी गार्डन नई दिल्ली) ने यह सुझाव दिया है कि दिल्ली और चण्डीगढ़ के बड़े बड़े होटलो मे अंग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश की ११ प्रति अवश्य रखी जाय। दिल्ली के लिए उन्होने १०००) देने की घोषणा की है।" उनका सुझाव है कि सार्वदेशिक और प्रादेशिक सभा तथा आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली इसके लिए एक सयुक्त समिति बनाकर इसकी व्यवस्था करें। आवश्यकता होने पर वह और भी इसके लिए सहायता प्रदान करेंगे परन्तु उनका आग्रह है कि उक्त तीनो सभाए भी इसमे अपना २ भाग जरूर दें।"

सुझाव वरेण्य है।

यह कार्य आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली राज्य को अपने हाथ मे लेकर करना अधिक उपयुक्त होगा। सार्वदेशिक सभा देश देशान्तर के विशिष्ट व्यक्तियो को भेंट करने एव लाइब्रेरियो इत्यादि मे रखने का बड़े पैमाने पर आयोजन करती है।

आदि शंकराचार्य फिल्म

डा० भीष्मदत्त शर्मा, मन्त्री धर्म सघ, मेरठ (हिन्दु० १९-६-८४) लिखते हैं —

"विवादास्पद सस्कृत फिल्म आदि शकराचार्य को भारत सरकार द्वारा वर्ष १९८३ की सर्वश्रेष्ठ फिल्म के रूप मे सम्मानित एव पुरस्कृत करने के समाचार से हिन्दुओ की धार्मिक भावनाओ पर कुठाराघात हुआ है। अत धार्मिक जगत मे सरकार की इस कार्यवाही पर गहरा क्षोभ एव चिन्ता व्यक्त करना स्वाभाविक है।

करोडो हिन्दुओ के श्रद्धा केन्द्र आचार्य शकर के परम पावन स्वरूप को तिरस्कृत करने वाली और उनके मान्य जीवन चरित को तोड मरोड कर चित्रित करने वाली इस दुर्भाग्यपूर्ण फिल्म का शकराचार्यो विद्वानो, धार्मिक नेताओ, धर्माचार्यो तथा अनेक धर्म सगठनो द्वारा विरोध किए जाने पर भी इसमे बिना समुचित सशोधन के भारत सरकार का इसे पुरस्कृत एव सम्मानित करना सचमुच मे कितना विडम्बना पूर्ण आपत्तिजनक है? सम्भवत सरकार को इसका आभास नही है।

ऐसी स्थिति मे भारत सरकार से पुन निवेदन है कि इस फिल्म के आपत्तिजनक अशो के हटाये जाने पर ही इसके प्रदर्शन की अनुमति दी जाये।"

—रघुनाथप्रसाद पाठक

है, तू ही ज्ञान तथा तू ही धन है, हे देवो के देव! मेरे लिए सभी कुछ तू ही है।

मनुष्य यदि सारे सम्बन्ध भगवान् से स्थापित कर सके तब फिर उसे कुछ भी प्राप्त करने को न रहे।

भगवान् महान् है, उसका तेज भी महान् है, वह पापनाशक है, अत पूजनीय है, उसके तेज को अन्यत्र मत देखो। अपने शरीर के मस्तिष्क मे देखो वह तुम्हारे सभी मलो को विकारो को दूर कर रहा है। वह तुम मे मिला हुआ है।

परमात्मा सभी प्राणियो को आगे बढ़ाते हैं, आगे बढ़ने की सामग्री देते हैं।

ब्रह्मा, विष्णु महेश, पार्वती आदि शरीर धारी मानवो को परमात्मा मानना निरी कपोल कल्पना और अन्ध विश्वास है। यह भी ध्यान मे रखना चाहिए कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि गुणपरक परमात्मा के ही नाम है।

अध्यात्म सुधा

भारतीय (आर्य) संस्कृति को अपनाने से ही देश और विश्व का कल्याण हो सकता है ?

लेखक—सर्वपल्ली डा. राधाकृष्णन

प्रस्तुतकर्ता—रघुनाथ प्रसाद पाठक

आज हम जिस युग में रह रहे हैं वह युग, युद्ध की जबरदस्त तैयारियों और उसके राजनीतिक तथा आर्थिक दुष्परिणामो का युग है। हम बुलन्द आवाज में नारों को दुहराते हैं और समझते हैं कि हम सोच रहे हैं। प्रचार की (प्रोपेगैन्डा) कला चारों ओर से हमारे दिमागों पर असर डालती रहती है। हम सिनेमा पर पलते हैं और रेडियो की खिला पाते हैं। दूसरे व्यक्ति हमारे लिए सोचते हैं और हम सोच विचार की परेशानी से बच जाते हैं। हमारा जीवन बिल्कुल मशीनों की तरह हो गया है। यदि कोई व्यक्ति राजनैतिक दलों द्वारा निश्चित की हुई नीति से सहमत नहीं होता और राजनीति की अपेक्षा दूसरे व्यापक सिद्धान्तो पर अधिक विश्वास रखता है तो उसे आफत समझ कर जड़ से उखाड़ देने की जरूरत समझी जाती है। यदि हम यह कहें कि हमारे व्यक्तित्व को ही चकनाचूर किया जा रहा है तो हम गलती पर नहीं होंगे।

व्यक्ति जीवन की अन्तिम इकाई है। समाज का उद्देश्य व्यक्तिको उन्नत बनाना है। व्यक्ति के ज्ञान, सदाचार उसके स्वभाव की उदारता और दया से ही उसकी उन्नति का अन्दाजा लगाया जायगा।

जीवन व्यक्तित्व के साथही शुरूहोता है और बड़ी सीमा तक व्यक्तित्व के साथ ही समाप्त होता है।

कला पूर्ण जीवन और मशीन जैसे जीवन मे एक बड़ा अन्तर है। राजनीति और अर्थ शास्त्र चाहे वे समस्त सुविधाए एकत्र कर दें जो जीवन के लिए आवश्यक है परन्तु हम अच्छी तरह जीवित रहना चाहते हैं। एक विशेष उद्देश्य के लिए जीवित रहने में ही जीवन का सच्चा सुख है। क्या हम यह समझे कि शिक्षक, कलाकार और तत्ववेत्ता हमें जीवन की कला सिखाने और जीवन को गतिविधि देने के सम्बन्ध में राजनेताओ से भी अधिक उत्तम हमारे पथ प्रदर्शक हैं और इस सम्बन्ध मे हमे उनसे अधिक मदद मिलती है ?

इस देश भारत का सन्देश राजनीति या अर्थनीति मे नही वरन धर्म और दर्शन मे है। हमारे देश क इतिहास की विशेषताए राजा सम्राट, लड़ाइया, (युद्ध) नही है अपितु ऋषि और वेद दि पवित्र धर्म ग्रन्थ है। सदासे ही भारतने सैनिको और राजनीतिज्ञो या व्यापारियो व्यवसायिको अथवा कवि और दार्शनिको की जिन्होने अपने शब्दो से दुनिया को प्रभावित किया है उतनी कद्र नही की जितनी उन तपस्वी आत्माओ की जिनकी महत्ता इस बात में नहीं है कि वे क्या कहते थे बल्कि इसमे कि वे स्वय क्या थे, ऐसे व्यक्ति जिन्होने हमारे देश के विचारो और जीवन पर असीमता की छाप लगाई और जिन्होंने दुनिया मे भलाई के अप्रकाश्य गुणोको बढाया। उन्होंने ऐसी दुनिया को जो सत्ता और भोगवाद का पुजारी है, पारलौकिक सत्य और आत्मा के रहस्य के दर्शन कराए। बावजूद अपने पतन और निर्धनता अपनी दासता के काल में भी भारत ने अपने आत्मिक सौन्दर्य और बल के भव्य दर्शन कराए हैं।

जरा इतिहास के पन्नों को उलटिये और फिर बताइए कि आपको उनमें क्या दिखाई देता है ? यही न कि कौमें और सभ्यताए अनन्त और अनश्वर नही होती। वे फलती हैं फूलती हैं गिरती हैं और नष्ट हो जाती है। महान यूनानी सभ्यता का जीवन काल केवल ८०० वर्ष था रोम की सभ्यता केवल ९०० वर्ष तक ही कायम रह सकी और पूर्वीय रोमन सभ्यता मुश्किल से हजार वर्ष जिन्दा रही है। इस सभ्यता के बाद वर्तमान सभ्यता का नाश सन्निकट ही है। इस सबका क्या अर्थ है ? इसका अर्थ है कि ऐसी सभ्यताए जो सांस्कृतिक और धार्मिक सिद्धान्तो को अधिक महत्त्व देती हैं वे अधिक काल तक जीवित रहती है और जो महज सत्ता, शक्ति तक और भौतिक उन्नति पर ही जोर देती हैं वे अधिक काल तक जीवित नही रहती।

शहरो और राष्ट्रो से भी अधिक अन्य बातो का मूल्य होता है। हमारे देश ने सामयिक वस्तुओ को कभी महत्त्व नही दिया। अनन्त की भावना को ही उसने सदा अपना लक्ष्य बनाया है। यह हमारी विशेषता है और कीर्ति का विषय है कि प्रत्येक युग मे और देश के हर भाग मे ऐसी महान आत्माए पैदा हुई हैं जिन्होने इस उच्च आदर्श को अपने जीवन में चरितार्थ किया है जिन्होने इस बात का प्रचार किया है कि हिंसा की राजनीति से

वेद-सुधा

अपनत्व का आनन्द

मित्रस्याहम् चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे,
मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्,
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

अर्थ—मैं समस्त प्राणियोको मित्र समझू समस्त प्राणी मुझे अपना मित्र समझे। हम सब परस्पर मित्रता का आनन्द पाये।

किसी वस्तु को पाना, अपना अनुभव करना, अतीव प्रसन्नतादायक है। किसी वस्तु के अपने पास न होने पर, तथा दूसरे के पास होने की अनुभूति होने पर, ईर्ष्या-द्वेष उत्पन्न होता है। शारीरिक कष्ट न होने पर भी, मानसिक सन्ताप होता है।

सर्वात्मभाव का अनुभव करने वाले सन्त, सबको अपना बना लेते हैं। किसी को अपना कहने मे परम सुख है। अपने—पराये का भेद समाप्त करना, उच्चकोटि की साधना है। सन्त कबीर की मृत्यु पर, हिन्दू उन्हे अपना मानते थे, उनके शव को जलाना चाहते थे। मुसलमान उन्हे अपना मानते थे और उन्हे दफनाना चाहते थे। ये लोग अपनत्व के आनन्द का अनुभव कर रहे थे।

सन्त सबको अपना समझता है। सबके हित में प्रयत्नशील होता है। सबको अपना मानता है, अपना बना लेता है। आम जनता भी उसे अपना परम हितैषी समझती है। यह उस सन्त की साधना है। आज के युग मे यह उदार दृष्टिकोण नही रहा। आज एक सम्प्रदाय के अनुयायी, अपने सन्त को, मात्र अपना ही हितचिन्तक मानते हैं। यह सकुचित दृष्टिकोण विघटनकारी है।

भारत ऋषियो-मुनियो, सन्तो-महन्तो एव सन्नारियो की जन्मभूमि, कर्मभूमि है। राम, कृष्ण, शकराचार्य, मात्र हिन्दुओ के हितचिन्तक नही थे। गुरुगोविन्दसिंह, मात्र सिक्खो के गुरु नही थे। महर्षि दयानन्द मात्र आर्यों के हितैषी नही थे। महात्मा गाधी, मात्र काग्रेस के नेता नही थे। उन्होने मानव मात्र के कल्याण का कार्य किया। यह दृष्टिकोण उदार है, व्यापक है, परस्पर मित्रता, (अपनत्व) बढाने वाला है। समाज और राष्ट्र की एकता को दृढ करने वाला है।

किसी (महात्मा) को अपना मान लेना, आत्मीयता के सुख की आनन्दमयी अनुभूति है। इसके साथ ही, यह भी मान लेना कि वह महात्मा समस्त प्राणिमात्र का हितैषी था उनका भी भला चाहता था उत्कृष्ट अनुभूति है, सात्विक आनन्द प्रदान करती है। इस अनुभूति का परिणाम है सबका हित चाहने की प्रवृत्ति का विकास सबके साथ अपनत्व जोडने का आनन्द। हम इस आनन्द को घटायें नही, अपितु उत्तरोत्तर बढाए। अपने पडोसियो को भी इसी प्रकार प्ररणा द। वे भी इस अपनत्व के आनन्द से आनन्दित हो सक।

—मन्त्री हिन्दू जागरण मच, पीलीभीत

संसार का उद्धार तभी होगा जब हम अनन्त परमात्मा पर विश्वास रखें और घृणा की जगह प्रेम के सिद्धात को अपनाए।

इस प्रकार के व्यक्ति अभी भी मौजूद हैं जो कहते फिरते हैं कि धर्म हमारे लिए अभिशाप रहा है। इसने समाज की उन्नति को रोक दिया है और जितना शीघ्र हम इस धर्म से छुटकारा पाए हमारे लिए उतना ही कल्याण कर है। वे लोग कहते हैं स्टैलिन लेनिन आदि की सफलता को देखकर हम इस धर्म पर कैसे विश्वास करें? वे प्रश्न करते हैं कि क्या ईश्वर कही है? धार्मिक होने मे कोई लाभ है? क्या यह उचित है कि असख्य व्यक्ति अपना आत्म विश्वास खोकर धर्म का सहारा लेकर रीढ की हड्डी तुडवाले? उनके ये विचार मत मतान्तरो के आधार पर और धर्म के नाम पर अधर्म करने उनका प्रचार करने और उनमे निहित मौलिक धार्मिक सत्यो को छुपाने उनसे अनभिज्ञ होने से ही बने हैं। परन्तु वास्तविक अर्थ मे धर्म जीवन से भिन्न वस्तु नही है। देश ने उसी धर्म को मान्यता दी है जो हृदय मस्तिष्क और आत्मा को सन्तुष्ट कर सके वा रख सके। वह धर्म वैदिक धर्म इगित किया जाता है जो अध्यात्म को सदा दैनिक जीवन मे उतारने मे समर्थ बनाता है।

हम जीवन के अमर सिद्धातो की उपेक्षा नही कर सकते। राजनीतिक परिस्थितियो और आर्थिक तकाजो से उनका कही विरोध नही होता। कल्पना करो हमारा आर्थिक जीवन सगठित हो जाय और म्यूनिसिपैल्टिया हमारे लिए अच्छी सडकें, मुफ्त पानी, बिजली रेडियो सैटो का पूर्ण प्रबन्ध कर दे तो क्या हम पूर्णत सुखी और सतुष्ट हो सकेंगे? क्या ससार के समृद्ध और धनी मनुष्य आज सबसे ज्यादा दु खी नही है? अमेरिका आदि मे आत्महत्या करने वालो का बहुमत धनी धोरी व्यक्तियो का होता है। धन जीवन की जिन सुविधाओ और आशाइशों को खरीद सकता है उन्हें प्राप्त करते ही क्या हमारे अन्दर से ईर्ष्या, मूर्खता अभिमान, घृणा, वैर भावना का अन्त हो सकता है? उस समय भी व्यक्तिगत जीवन की शुद्धता को अज्ञान, विपरीत ज्ञान मूर्खता और स्वार्थ नष्ट कर देंगे। जीवन मे आर्थिक सिद्धान्तो के अलावा दूसरे सिद्धान्त है। भौतिक वस्तुओ की बहुतायत ही सुख की कु जी नही है यदि यह बात ठीक होती तो पशु मनुष्य से ज्यादा सुखी होता क्योकि उसका सुख इन्द्रिय जन्य होता है। प्रत्यक्ष वस्तुओं के अतिरिक्त मनुष्य का जीवन कही अधिक ऊ ची बातो के लिए है। सत्य की खोज आन्तरिक सौन्दर्य के सृजन और आत्म ज्ञान के लिए मनुष्य भूख और प्यास सहता है शरीर को कष्ट देता है। हम इसे उसका क्षणिक सनकीपन कहकर नही टाल सकते। लोगो के आराम और सुखी जीवन को ध्यान मे रखते हुए जब हम दुनिया का सगठन करें तो हमे इस बात को भी ध्यान मे रखना चाहिए कि हम उनके हृदयो मे प्रेम की भावना भरें और जीवन के अमर सिद्धान्तो मे उनकी आस्था पैदा कर।

हमारा यह विश्वास है कि जीवन के लिए भारतीय (आर्य) सास्कृति का यह श्रेष्ठ सन्देश न केवल बाहरी दुनिया के लिए उपयोगी है वरन हमारे देश मे भी इसके दुहराए जाने की जरूरत है।

पंजाब की स्थिति पर प्रो० शेरसिंह का वक्तव्य

हरियाणा रक्षा वाहिनी तो सितम्बर १९८२ से यह माग करती आई है कि स्वर्ण मन्दिर मे पुलिस, अर्द्धसैनिक बल या सेना प्रवेश करे और और सब अपराधियो आतकवादियों और उग्रवादियों को निकालना चाहिये और जो भी जीवित हाथ लगे उन पर मुकद्दमे चलाकर या राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के नीचे नजर बन्द करके जेलों मे भेजना चाहिये। हरियाणा रक्षा वाहिनी तो आरम्भ से ही यह कहती रही है कि अकाली आन्दोलन भारत के अन्दर साम्प्रदायिक शक्तियो और बाहर भारत-विरोधी शक्तियो के मिले जुले षडयन्त्र की देन है। इस आन्दोलन को शक्ति के द्वारा कुचले बिना राष्ट्र की एकता को बनाये रखना सम्भव नही हो सकेगा।

आज जिस प्रकार से खुला विद्रोह देखने को मिल रहा है, वह हमारी धारणाओ की पूर्ण रूप से पुष्टि कर रहा है। अकालियो के द्वारा उठाई गई मागो का भण्डा-फोड हमने ही किया था, और यह भी हम स्पष्ट रूप से कहते आये है कि ये सब मांगे तो केवल भुलावे मे डालने के लिए दिखावा मात्र है षडयन्त्र तो भारत को तोडने का हैं और इसमे बाहर की शक्तिया हथियार और धन खुलकर दे रहीं हैं तथा उग्रवादियो को हथियारो के इस्तेमाल के लिए प्रशिक्षण भी। अब ये सभी बाते साबित (प्रमाणित) हो गई हैं।

भारत सरकार ने पजाब को सेना के हवाले करके राष्ट्र को विघटन से बचा लिया है। देर से ही सही, परन्तु यह सही कदम उठाया गया है, दूसरा और कोई विकल्प भी नही था। सभी राष्ट्र-प्रेमियो ने इस कदम का स्वागत और समर्थन किया है।

दु ख की बात तो यह है कि खुला विद्रोह किये जाने के बाद भी चन्द्रशेखर, मोहन-धारिया, शाहबुद्दीन और फरनान्डिस जैसे लोग इस कदम का विरोध कर रहे हैं। क्या जनता पार्टी के इन नेताओं के इस कदम के पीछे बीजुपटनायक और फरनाण्डिस की पिछले दिनों पाकिस्तान की यात्रा तो नही है, यह बात स्वाभाविक रूप से सामने आ जाती है। श्री मोरार जी भाई देसाई का वक्तव्य बहुत मार्मिक है और चौ० चरणसिंह जी का चिन्तन आरम्भ से ही बहुत सराहनीय है। अपराधियो, देश द्रोहियो का अड्डा और हथियारो का गोदाम बनने के बाद क्या स्वर्ण मन्दिर मन्दिर या धर्मस्थान रह गया है, अपराधियो, देशद्रोहियो और विदेशी शक्तियो द्वारा या चुराए हुए हथियारो को पकडना, मारना और प्राप्त करना, धर्म और धर्मस्थान का अपमान कहा जावेगा ?

भारत सरकार का यह कदम जहा राष्ट्र की एकता बनाये रखने के लिए जरूरी था, वहा स्वर्ण मन्दिर जैसे महान् गुरुओ द्वारा बनवाये गये धर्म स्थान की पवित्रता को बहाल करने के लिए भी जरूरी था। जिन भावनाओ और आकाक्षाओ को लेकर राष्ट्र को लेकर राष्ट्र को अत्याचारो और दासता से मुक्त कराने के लिये महान गुरुओं ने बलिदान किये थे, उनकी भावनाओ और आकाक्षाओ की पूर्ति के लिए यह कदम जरूरी था। गुरुओ के सभी सिखो को हृदय से समर्थन करना चाहिये और उनके साथ सभी राष्ट्र-प्रेमियों को भी देश की एकता को बचाने के लिए पूरी शक्ति लगानी चाहिए।

हरियाणा रक्षा वाहिनी यह माग करती है कि तुरन्त सभी सम्प्रदायों के धर्म स्थानो (मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारो और गिरजाघरों) आदि की तलाशी लेकर हथियार बरामद करने चाहियें। साथ ही सभी सम्प्रदायवादी राजनीतिक दलो पर प्रतिबन्ध लगें।

—केदारसिंह आर्य
हरियाणा रक्षा वाहिनी
दयानन्द मठ, रोहतक।

यज्ञ कुंड की बनावट

—धर्मजित 'जिज्ञासु'

आर्य वैदिक विद्वानों व वैज्ञानिकों के समक्ष मेरा एक निवेदन है और वह यह कि पश्चिम जगत में यज्ञ करते समय हमारे सामने दो समस्यायें रहती हैं एक तो यह कि वहा सब मकानों मे अधिकतर अग्नि सूचक घटी Fire Alarm) लगी रहती है। यज्ञाग्नि थोड़ा अधिक और विशेषकर धु आ होने पर वह घटी बजने लगती है और अक्सर उन घटियो का सम्बन्ध म्युनिसिपैलिटियों के अग्नि बुझाने वाले दफ्तरो से होता है तो घटी बजने पर अग्नि बुझाने वाली गाड़िया यज्ञ स्थान पर आ खड़ी हो सकती है। खैर, इस समस्या के लिए समाधान भी है वह यह कि अग्नि सूचक घण्टी की बैटरी यज्ञ होने तक की अवधि के लिए निकाल ली जाय।

यज्ञ की दूसरी समस्या थोड़ी दुर्लभ है उसी के समाधान की खोज के लिए यह लेख लिखा गया है यज्ञाग्नि से जो थोड़ा बहुत धु आ निकलता है उससे वायु दूषित होती है ऐसी वहा मान्यता है तथा मकान के काले होने का भय रहता है। यह समस्या यहा तक है कि दो हिन्दू मन्दिरो तक मे हमें यज्ञ की आज्ञा नही दी गई जबकि उनकी छतें बहुत ही ऊची थी और यज्ञ स्थान बहुत विशाल थे।

इस समस्या के दो समाधान हो सकते हैं एक तो यह कि कुछ स्थानो मे वहा घरो को गर्म रखने के लिए अग्नि स्थान (Fire Places) होते हैं जिनमे लकड़िया तक जलाई जा सकती हैं और अग्नि का धु आ मकान मे तनिक भी न रहकर सीधा आकाश की ओर जाने के लिए अग्नि स्थान से लेकर मकान की चोटी से भी ऊपर तक धु आकश या चिमनी बनी होती है, लेकिन ऐसे अग्नि स्थान सब मकानों मे नहीं होते और दूसरे ये स्थान एक दीवाल से सटे होते हैं। इस स्थान पे एक ही ओर यज्ञकर्ता बैठ सकते हैं चारो ओर नही बैठ सकते।

उक्त समस्या का दूसरा समाधान यह है कि यज्ञ कु ड की बनावट कुछ ऐसी बनाई जाय जिससे धु आ निकलने के अवसर कम हो जाय। इस बनावट की बात को आगे बढ़ाने से पहले मैं एक बात कह दू कि मै धु आ कम करने की अन्य विधियों से अवगत हू।

(१) समिधाओ का प्रकार व अवस्था—समिधायें सूखी हो कुछ पेड़ो की समिधायें इस दृष्टि से अन्य पेड़ो से अच्छी होती हैं सस्कार विधि मे उत्तम प्रकार की समिधाओं का वर्णन है ही यह ठीक है कि महर्षि की कही हुई समिधायें पश्चिम में नही मिलती। इसके लिए तो स्थानीय प्रकार की समिधाओं मे से ही चयन होना चाहिए।

(२) समिधाओ के यज्ञ कुण्ड मे रखने की प्रणाली

(३) सामग्री व घी डालने की मात्रा व प्रकार

इस सबके अलावा मेरी धारणा यह है कि यदि यज्ञ कु ड मे ऊचाई लम्बाई व चौड़ाई तीनो दृष्टिकोणों से हवा आर पार जाने का साधन हो सके तो उससे यज्ञ करते समय जो राख इकट्ठा होती रहती है वह यज्ञ होने के काल मे तली मे गिरकर इकट्ठी होती रहेगी मेरी समझ मे यज्ञ कु ड अग्नि भाग में हवा का चारो ओर से आवागमन नही होता और वही पर राख भी जमा रहती है इससे धु आ उत्पन्न होने की सुविधा हो जाती है। इसके लिए विद्वज्जनों के विचारार्थ मैं निम्न विचार निवेदन करता हू —

(१) यज्ञकु ड का ऊपर का आधा भाग व नीचे का चौथाई भाग वर्तमान प्रणाली में ही टिके रहें।

(२) उपरोक्त दोनों स्थायी भागो के बीच में जो चौथाई भाग है उसमे चारों ओर से हवा आर पार जाने के लिए छिद्र हो छिद्रो की माप विशेषज्ञ अनुभव के आधार पर स्थिर कर सकते हैं। इससे लम्बाई व चौड़ाई के दृष्टिकोणों से हवा आर पार जाने का प्रश्न हल हो जायगा।

(३) ऊपर के स्थायी आधे भाग की तली की सतह पर एक चलनी जैसी स्थापित की जाय जिससे ऊपर से नीचे व नीचे से ऊपर हवा का आवागमन रह सके व उन छिद्रो में से होकर राख ऊपरी स्थायी आधे भाग से गिर कर नीचे के स्थायी चौथाई भाग में जमा हो सके। सावधानी यह रखनी है कि चलनी के छिद्रो का माप ऐसा हो कि उनमे से राख तो गिरे परन्तु सामग्री न गिरे, इसके लिए सामग्री बहुत बारीक पिसी न होनी चाहिए तथा जो थोड़ी बहुत बारीक सामग्री नीचे तली मे गिरेगी भी वह नीचे की गरम राख में स्वाहा होकर सुगन्धि ही उत्पन्न करेगी।

उपरोक्त निवेदनों के विषय मे विद्वन्मण्डली के आदेशो का मैं निम्न पते पर स्वागत करूगा। धर्मजित जिज्ञासु मन्त्री आर्य समाज न्यूयार्क ४३ ४१ स्माट स्ट्रीट, फ्लाशिंग, न्यूयार्क, न्यू या ११३५५ (यू. एस ए)।

टिप्पणि

प्रस्तुत लेख मे लेखक ने जो विचार प्रकट किए हैं वे केवल सिगरी या चूल्हा बनाने के विषय के नहीं है। ये हैं हवन कुण्ड के विषय मे जो शास्त्रीय प्रक्रिया पर आधारित है। कुण्डो के कई प्रकार हैं परन्तु वे कोई भी लेखक के अनुकूल पड़े ऐसा प्रतीत नहीं होता। ये विचार नीति सम्बन्धी नियमों पर आधारित है। इन पर कोई विचार करते समय किसी वैयक्तिक स्थानीय परिस्थिति के वश होकर विचार नहीं किया जा सकता है। नैतिक मूल्य के सिद्धातो पर विचार करते समय महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित स्वमतव्या मन्तव्य प्रकाश के प्रारम्भ मे दिए गए दो श्लोको को विचार मे रखकर करना चाहिए। नीति नियम मे केवल सुविधा और वैयक्तिक स्थानीय परिस्थिति को आधारभूत नहीं माना जा सकता है। आपद्धर्म भी बताए गए हैं परन्तु वे और भी कठिन पड़ जावगे। तवे पर आग रखकर १६ आहुतिया दे लेवें (सत्यार्थ प्रकाश) कुछ विकल्प तो लेखक ने स्वय लिख दिए हैं।

देशान्तर मे अफ्रीका आदि अन्य भी स्थान हैं जहा आर्य समाजें अधिक हैं परन्तु ऐसी कोई कठिनाई नहीं है। केवल न्यूयार्क के विषय को लेकर सार्वभौम सिद्धान्त परिवर्तित नहीं किया जा सकता है। जो आदमी अपना घर बनावेगा वह यज्ञ आदि की भी सुविधा रख सकता है। यह एक धार्मिक अधिकार है जिस पर कोई भी हस्तक्षेप नहीं कर सकता और न्याय का आश्रय भी लिया जा सकता है।

यदि कोई ऐसा गृह है जहां यह सब चीजें नही की जा सकती हैं तो धुवें को बाहर निकाल फेंकने के लिए Smoke Sucking Machine लगाई जा सकती है जो सारे धुवें को बाहर आकाश मे फेंक देती है। डरबन मे वेदमन्दिर की यज्ञशाला में धुवा फैल जाता था उस समय यही साधन बता गया और अब भी चलता है।

समिधाए नही मिलती है अत दूसरी समिधाय चुनी जाय यह भी बेमानी है। आम पीपल बड़ बेल ढाक उदुम्बर और शमी—मे से कोई न कोई समिधा सारे ससार मे पैदा होती है। इसके अतिरिक्त जो सामग्री लिखी है वह भी सब जगह नही मिलती है। मगाई जाती है। इसी प्रकार सामग्री के साथ लकड़ी भी मगाई जा सकती है। आवश्यकता की वस्तु दूसरे देशो से मगाई जाती ही है।

यज्ञ से निकले हुए धुए से वायु दूषित होता है यह विचार यज्ञ मे कोई मूल्य नही रखता। इसका तो तार्किक परिणाम यह होगा कि फिर यज्ञ करना ही नही चाहिए। यज्ञ की प्रक्रिया का आधार ही है कि उससे वायु शुद्ध होता है। इसको आधार मानकर यज्ञ का सामग्री आदि निर्धारित है। परन्तु लेखक चू कि न्यूयार्क की चाकचक्य मे बैठ लिख रहे है अत अपने मूल सिद्धात के ही विपरीत बोल रहे है। हवन यज्ञ से वायु शुद्ध होता है दूषित नही। यही तो हमारा प्रश्न है। कोई भी वैज्ञानिक और समझदार व्यक्ति ऐसा नहीं मान सकता कि यज्ञ धूम से वायु अशुद्ध होता है। यदि कोई मानता है तो उसे ही तो आपने समझाना है।

सभी परिवर्तनो की योजना बना डाली परन्तु हवन मे जो भी सामग्री के साथ डाला जाता है उसको ध्यान में बिना रखे राख आदि गिरने की सारी बातें कर डाली।

हमारे आर्य और आर्य सामाजिक ससार में सर्वत्र है परन्तु आज तक इस प्रकार की समस्या कहीं भी नहीं उठी। सर्वत्र यज्ञ हो रहे हैं और कुण्ड भी वही हैं। दक्षिण अमेरिका में भी जो हमारी सभायें और समाज हैं उनके सामने यह समस्या कभी आई नहीं। किसी विद्युत की फर्नेस से भोजन बनता हो दीवाल तो काली होती हैं। क्या इसको बन्द कर दिया जावे?

केवल लम्बी कल्पनाओं में पड़ने और प्रकट करने के पूर्व सभी बातो का विचार करके ही करना ठीक है।

यह विषय भी ऐसा है कि जिसका अधिकार केवल सार्वदेशिक सभा को प्राप्त है। वाद विवाद का यह विषय नही बनाया जा सकता है नही तो पश्चिम का दूसरा पश्चिम भी खड़ा किया जा सकता है।

— (आचार्य) वैद्यनाथ शास्त्री

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा तात्याटोपे नगर भोपाल

प्रेस-वक्तव्य

भारत वर्ष की राष्ट्रीय अखण्डता, विश्व बन्धुत्व की पवित्र भावना तथा अनेक सम्प्रदाय व एक राष्ट्र के अदभुत समन्वय को, विगत दो वर्षों से पंजाब के कुछ तथाकथित सिखों नेजो उग्रवादियों केनाम से जाने जाते हैं, समूल नष्ट करने का बीड़ा उठाया हुआ था, जिसे प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से अकाली दल का समर्थन व शुभार्शीवाद प्राप्त था। परिणामत: कुख्यात जनरैल सिंह भिंडरवाले के नेतृत्व में कुछ भारत विरोधी, विदेशी शक्तियों के सहयोग से भारत वर्ष के विभिन्न प्रान्तों में विशेषकर संपूर्ण पंजाब, हरियाणा व जम्मू काश्मीर में उग्रवादी सिखों ने निर्दोष हिन्दुओं का कत्लेआम करना तथा हिन्दू मन्दिरों की पवित्रता को नष्ट करना, महन्तों व पुजारियों की हत्या करने का सुनियोजित कार्यक्रम बनाया व कार्य प्रारम्भ कर दिया। देश के बुद्धि-जीवियों व पत्रकारों तथा जिन राष्ट्रीय सिखों ने इनके विरोध में आवाज उठाई तब उन्हें भी मौत के घाट उतारना प्रारम्भ किया। इसमें प्रथम आहुति राष्ट्रवादी वयोवृद्ध पत्रकार श्री लाला जगतनारायण जी को देनी पड़ी व बाद में इसे भिंडरवाले की हिट लिस्ट के नाम से पुकारा जाने लगा। पंजाब में सैंकड़ों लोगों की निर्मम हत्या की जाने लगी, बैंक लूटे गए, पंजाब का समूचा उद्योग समूह व व्यापार ठप्प हो गया, गरीब लोग भूखों मरने लगे, पंजाब के गांवों से हिन्दू अपनी जान बचाने के लिए पंजाब में ही या पंजाब के बाहर सुरक्षित स्थानों पर भागने लगे। सारे देश में हाहाकार होने लगा, कानून व व्यवस्था दम तोड़ने लगी, ऐसे राष्ट्रीय संकट में भी दुर्भाग्य से भारत के अकाली संगठन ने इस नर-संहार को बन्द करने हेतु कोई कठोर कार्यवाही नहीं की, तथा देश के राष्ट्रीय सिखों ने भी कोई जोरदार आन्दोलन नहीं किया जिसका भयंकर परिणाम यह हुआ कि, भारत राष्ट्रविरोधी शक्तियों एवं भारत के उग्रवादी सिखों ने स्वर्ण मन्दिर को "हरमिंदर साहब" व "अकाल तख्त" को एक फौजी छावनी व सुदृढ़ किले के रूप में बनाकर उसमें बंकर खोदे —रेत की बोरियों के अम्बार लगाए—टनों गोला बारूद इकटठा किया, स्टेनगनों, स्वचालित मशीन गनों, ग्रेनेडों, हथगोलों, मोटार तोपों, रायफलों, किले उड़ाने की बारुदी सुरंगों, मिसाईलों, लायरा आदि का इतना बड़ा जखीरा इकट्ठा किया व ऐसी मोर्चाबन्दी की थी कि, बिना सेना की सहायता के इनपर काबू पाना सर्वथा असम्भव था। दूसरी ओर यदि इन पर काबू नहीं किया जाता तो, इनकी सहायता से उग्रवादी देश के सैंकड़ों हजारो नही अपितु धीरे-धीरे लाखों लोगों की निर्मम हत्या कर सकते थे। इन शस्त्रों पर पाकिस्तान व चायना की मोहर होना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि, भारत विरोधी शक्तियां इनकी मददगार हैं एव यह बात बिल्कुल साफ हो गई है कि, यदि देश की प्रधानमन्त्री अपनी सूझ-बूझ से पंजाब को सेना के हवाले नहीं करती तो देश तबाह व बर्बाद हो जाता। अत: सारे देश ने प्रधान मन्त्री के इस कार्य की मुक्त कण्ठ से प्रशसा की है। विरोधी दलो ने सराहा है, तथा देश के लोगों की राष्ट्रीय भावना मे नवीन जागृति आई है। चूंकि पंजाब मे आर्य समाज की अपनी विशेष स्थिति १०० वर्षों से उत्तरोत्तर बढती जा रही है जो कि महान राष्ट्रीय व धार्मिक सगठन है इस फौजी कार्यवाही हेतु बार बार भारत के महामहिम राष्ट्रपति व प्रधान मन्त्री को पत्रो द्वारा एव व्यक्तिगत रूप से मिलकर आर्य समाज के सर्वोच्च नेता श्री रामगोपाल जी शालवाले ने आग्रह किया था। आज सारा राष्ट्रीय जगत इस कार्य हेतु देवी इन्दिरा गांधी को कोटिश: धन्यवाद दे रहा है, उन्होने इस कार्यवाही द्वारा देश के लाखों निर्दोष व्यक्तियों की जान-माल की रक्षा की है।

मैं इस परीक्षा की घडी मे देश के समस्त सिख समुदाय से अपील करता हू कि, वे सिख पथ की पवित्रता की रक्षा के लिए अपने पवित्र गुरुद्वारों को राजनीति के उपयोग का स्थान नही बनने देवें। मन्दिरो को मन्दिर रहने देवें कारण इस फौजी कार्यवाही मे भी फौज ने जो कार्य किया उसमें ४ सिख व एक मुसलमान व एक हिन्दू सेनानियों के नेतृत्व मे फौज ने पवित्र हरमिन्दर साहिब का सम्मान कर एक भी गोली हरमिन्दर साहिब पर नहीं चलाई है, एवं इसकी कीमत पचासों सेना के जवानों व अधिकारियों ने अपनी जान देकर दी है। यह संसार की पहली घटना इस देश में घटी है। इसका ध्यान रखकर यह नहीं कहे कि, फौज ने गुरुद्वारे में प्रवेश क्यों किया? बल्कि उन लोगों की भर्त्सना करें, जिन्होंने सिक्ख पंथ को बदनाम किया व हजारों निर्दोष लोगों की हत्या की व राष्ट्र विरोधी शक्तियों से हाथ मिलाकर भारत की अखण्डता को नष्ट करने का घृणित कार्य किया है। इस भूमि पर जब तक गुरु ग्रन्थ साहिब में लिखित दसों गुरुओं की वाणी व अन्य सम्प्रदाय के सन्तों की वाणी लिखी है उसमें सैंकडों बार राम व कृष्ण की आराधना की है, तथा अन्य सम्प्रदाय की भी समीक्षा की गई है इसके रहते विश्व के सिखों को हिन्दू कौम से अलग नहीं किया जा सकता। नया गुरु कोई हो नहीं सकता। पवित्र ग्रन्थ साहिब ही गुरु हैं। इसे हृदय से स्वीकार कर गुरुओं के आदेशों का पालन करें। गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज ने इसी हिन्दू कौम पर अपने साहिब जादों को बलिदान किया था, वे हिन्दू कौम के ही रक्षक थे। महान आश्चर्य है आज गुरु साहिब के तथाकथित अनुयायी इस हिन्दू कौम के भक्षक बन रहे हैं? अत: राष्ट्रीय व धार्मिक सिख भाईयों को ऐसे लोगों का बहिष्कार व तिरस्कार करना चाहिए।

मैं भारत सरकार व देशवासियों से अपील करूंगा कि वे भारत राष्ट्र की चिता बनाकर उस पर अपनी राजनैतिक रोटी सेकने वाले कुख्यात सुब्रह्मण्यम स्वामी जैसे तथा राष्ट्रीयता का ढोंग करने वाले चन्द्रशेखर सरीखे अराष्ट्रीय बयान देकर भ्रमित करने वाले लोगों से भी सावधान रहे जिन्होंने पिछले दिनों गला फाड़ कर कहा था कि, स्वर्ण मन्दिर में तो एक भी हथियार नहीं है, तथा भारत सरकार को सेना नहीं भेजनी चाहिए। चूंकि अब कोई प्रमाण इनके पक्ष में शेष नहीं है अत: सरकार को इन पर राष्ट्रद्रोह का अभियोग चलाना चाहिए तथा इनका पास पोर्ट जप्त करना चाहिए।

—राजगुरु शर्मा
उपमन्त्री, सार्व. आ. प्र. सभा देहली
प्रधान-मध्य भारतीय आ. प्र. सभा महू (म. प्र.)

पवित्रता किस ने कायम रखी ?

—अश्विनी

बी.बी.सी. द्वारा प्राप्त समाचारों के अनुसार भारतीय सेना द्वारा स्वर्ण मन्दिर में घुसकर आतंकवादियों का नाश करने पर भारत के सैनिकों, राजनीतिज्ञों और प्रशासकों में कुछ सरकार विरोधी प्रतिक्रियायें हुई हैं। खबरों के अनुसार अब तक देश में आठ स्थानों पर सिख फौजी जवानों ने, जिनकी संख्या बी.बी.सी. के अनुसार एक हजार के लगभग है, भारत सरकार के विरुद्ध विद्रोह कर दिया है। यहां से प्राप्त समाचारों के अनुसार इनमें से ज्यादा संख्या में विद्रोही फौजियों को पकड़ लिया गया है। कुछ भगौड़े फौजी जवान अभी तक फरार हैं। ऐसा होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। पिछले दिनों दूरदर्शन पर लेफ्टी. जनरल के. एस बराड़ ने अपने एक साक्षात्कार में यह रहस्योद्‌घाटन किया था कि स्वर्ण मन्दिर परिसर में उन्होंने दो निहंगों के भेष में पाकिस्तानियों को मार गिराया। पंजाब में उग्रवाद और आतंकवाद को जिस कदर भारी संख्या में पाकिस्तान ने मदद की है, वह अब कोई छिपी बात नहीं। भारी संख्या में पाकिस्तानी एजेंट एक लम्बे समय से पंजाब पुलिस और यहां तक कि भारतीय फौज में जाली पहचान-पत्रों की मदद से जा घुसे थे। स्वर्ण मन्दिर में छिपे बैठे उग्रवादियों के साथ तो यह शुरू से ही मिले हुये थे। निहंग वेश में यह पाकिस्तानी एजेन्ट न केवल पंजाब में हिंसा, आतंक और हत्याओं में भिंडरावाले के उग्रवादी साथियों की मदद करते थे, बल्कि पाकिस्तान से भारी मात्रा में असला बारूद और अत्याधुनिक हथियार भी स्वर्ण मन्दिर मे इन्ही एजेन्टों की मदद से पहुचता रहा।

गहराई से देखा जाए तो पंजाब समस्या भारत के दुश्मन देश पकिस्तान और उसके साथी अमरीका की सोची-समझी और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की एक साजिश थी। इस साजिश के तहत भारत के सीमांत प्रदेश पंजाब में आतंक फैलाकर देश की सीमाओं को कमजोर करना था।

पाकिस्तान और अमरीका की यह चाल, जिसमे किसी हद तक चीन भी शामिल हो सकता है, भारत की अखण्डता को नष्ट करने की थी। १९७२ में जब बगला देश की स्थापना हुई और पाकिस्तान के दो टुकड़े हो गए, उसी समय से पाकिस्तान इसी ताक में बैठा था कि कब वह भारत से अपनी इस अपमानजनक हार का बदला ले सके। दूसरी तरफ जब से रूस ने अफगानिस्तान पर अपना कब्जा जमाया, अमरीका को हिन्द महासागर क्षेत्र में अपनी और फौजी ठिकानों की 'फिक्र सताने लगी। इसी सम्बन्ध मे अमरीका ने पाकिस्तान को भारी मात्रा मे आधुनिक हथियारों से लैस करना शुरू कर दिया। इस दौरान जगजीतसिंह चौहान ने पाकिस्तान और अमरीका की शह पर सिखों के लिए अलग देश यानि 'खालिस्तान' का शोशा छेड़ा। खालिस्तान समर्थक जगजीतसिह और गंगासिह ढिल्लों के अमरीकी गुप्तचर एजैन्सी सी. आई. ए. और पाकिस्तानी राष्ट्रपति जनरल जिया से मुलाकातें और आपसी घनिष्ठ सम्बन्ध किसी से छिपे हुये नहीं हैं। उस वक्त भारत सरकार ने जगजीतसिंह चौहान के 'खालिस्तान' को मात्र एक पब्लिसिटी प्राप्त करने का स्टंट समझ कर उसकी तरफ ज्यादा ध्यान नहीं दिया। फिर शिरोमणि अकाली दल ने सरकार के विरुद्ध अपनी धार्मिक और राजनीतिक मांगों को मनवाने के लिए मोर्चे का सिलसिला शुरू कर दिया। इस मोर्चे की शुरुआत तो सन्त लौंगोवाल और उनके नरमपंथी साथियों ने पंजाब में राजनीतिक तौर पर शक्ति प्राप्त करने के लिए की। जहां अकाली दल का एक मोर्चा तो भारत सरकार के विरुद्ध चल रहा था, वहां दूसरी तरफ उनकी अन्दरूनी राजनीति में एक-दूसरे से ज्यादा शक्तिशाली होने का दूसरा मोर्चा भी शुरु हो चुका था। इस दूसरे मोर्चे की शुरुआत जरनैलसिंह भिंडरांवाले और उनके उग्रपन्थी समर्थकों ने शुरू की थी। भिंडरांवाला और उनके सहयोगियों को पूर्ण रूप से पाकिस्तान से सहायता मिल रही थी। इसका नतीजा यह निकला कि धीरे-धीरे भिंडरांवाला आम सिख संगतों की नजर में ज्यादा प्रभावशाली होते चले गए। शुरू-शुरू में तो भिंडरांवाला चौक मेहता से बैठकर अपना काम करते रहे, लेकिन तीन साल पहले उन्होंने अपना मुख्यालय चौक मेहता से बदल कर स्वर्ण मन्दिर परिसर स्थित गुरु नानक निवास में स्थापित कर लिया। अपने अन्तिम दिनों में तो वह सिखों के सर्वोच्च एवं पवित्र स्थान अकाल तख्त पर कब्जा जमाये बैठे रहे। पूरे तीन साल पंजाब में निर्दोष व्यक्तियों के मौत के वारंट भिंडरांवाले अकाल तख्त से बैठकर जारी करते रहे। यह भी एक तथ्य है कि पाकिस्तानी एजेन्ट, लुटेरे, हत्यारे, डकैत, तस्कर और आतकवाद में विश्वास रखने वाले सभी अक्सर भिंडरांवाले के इर्द-गिर्द जमा हुये।

पंजाब में रोजाना विभिन्न स्थानों पर हत्याएं, डकैतियां, आगजनी और लूटमार की वारदातें होती और अपराध करने वाले सभी अपराधी बड़े आराम से स्वर्ण मन्दिर परिसर मे भिंडरांवाले की छत्रछाया तले जा बैठते। पंजाब सरकार, प्रशासन और पुलिस निष्क्रिय होकर रह गई और पूरे पंजाब में जगल का राज लागू हो गया। भिंडरांवाले के समर्थकों ने इस दौरान अपने विरोधियों की हत्याएं भी स्वर्ण मन्दिर परिसर के अन्दर करनी शुरू कर दी। जब स्वर्ण मन्दिर परिसर के अन्दर हत्याएं होती थी, हत्यारे, लुटेरे और डकैत खुले आम आधुनिक हथियारों से लैस होकर पवित्र परिसर में घूमते थे, तो क्या उस वक्त स्वर्ण मन्दिर परिसर की पवित्रता नष्ट नही हो रही थी।

इस तरह पिछले कुछ अर्से से अकाली दल का मोर्चा नरमपथियों के हाथों से निकल कर उग्रवादियो के हाथों मे जा पहुचा और सिखों की धार्मिक एव राजनीतिक मागो की आड मे एक अलग राष्ट्र 'खालिस्तान' की स्थापना के सपने उग्रवादियो ने भी लेने शुरू कर दिये। यही कुछ तो हमारी दुश्मन विदेशी शक्तिया चाहती थी।

सुविज्ञ सूत्रो से यह ज्ञात हुआ है कि अगर श्रीमती गाधी उग्रवादियों को खत्म करने में कुछ देर और कर देती तो शायद अनर्थ हो जाता। पता चला है कि भिडरांवाले ने पाकिस्तान और अमरीकी गुप्तचर एजैन्सी की सांठगांट से एक योजना बनाई थी, जिसके अनुसार कुछ ही दिनों के अन्दर भिडरावाले और उनकी उग्रवादी फौज पाकिस्तानी एजेन्टो की मदद से बाघा सीमा से लेकर व्यास नदी तक पूर्ण रूप से कब्जा करने जा रही थी। इस तरह से व्यास नदी और पाकिस्तान सीमा के बीच का सारा इलाका जिसमें अमृतसर भी शामिल था, पूरे भारत से काट दिया जाता और इस क्षेत्र को 'खालिस्तान' घोषित कर दिया जाता। बाद में अगर जरूरत पड़ती तो भारतीय फौजों का मुकाबला करने के लिए पाकिस्तानी फौज भी उग्रवादियो की मदद पर आ पहुंचती। अगर भिंडरांवाला के दिमाग में 'खालिस्तान' स्थापित करने का ऐसा ही कोई प्लान था तो पाठक खुद ही अन्दाजा लगा सकते हैं कि देश की अखण्डता को किस कदर खौफनाक खतरा था।

जहां तक स्वर्ण मन्दिर परिसर की पवित्रता नष्ट होने का प्रश्न है, कल रात को दूरदर्शन पर अपने इन्टरव्यू मे सेवानिवृत्त लैफ्टीनेट जनरल राजेन्द्रसिंह स्पैरो ने बताया कि "स्वर्ण मन्दिर परिसर की

[शेष पृष्ठ १० पर]

साहित्य समीक्षा और प्राप्ति स्वीकार

(१) वेदामृतम् (२) सुखी गृहस्थ
लेखक - डा० कपिलदेव द्विवेदी
२ × ३०=१६ पृष्ठ सख्या १६२
मूल्य ८) विशेष कलेवर २०) रुपये

प्राप्ति स्थान—विश्वभारती बुक एजेन्सी, ज्ञानपुर, (वाराणसी) उ०प्र०

डा० कपिलदेव द्विवेदी ने "वेदामृतम्" ग्रन्थमाला का प्रकाशन प्रारम्भ कर न केवल प्रशंसनीय कार्य किया है, अपितु अपने गहन अध्ययन और अनुभव के द्वारा जनसाधारण को वैदिक साहित्य की ओर आकृष्ट किया है। १६२ पृष्ठ के द्वितीय अक में वेदों के ऐसे सौ मन्त्रों का सकलन किया है, जिनके द्वारा आज के अभिशप्त और दुखी गृहस्थ को एक आश्रय मिलेगा।

इस द्वितीय अंक की भूमिका को प्रश्नवाचक चिह्न देकर लेखक ने अपने आप से प्रश्न "दाम्पत्य जीवन कैसे सुखी हों?" करके उसका समाधान बड़े सरल और सुलभ शब्दों में वैदिक परम्परा के अनुरूप किया है। गृहस्थ में पति व पत्नी तथा दम्पत्ति के कर्त्तव्य पृथक् पृथक् निर्दिष्ट कर उनकी उपयोगिता सिद्ध की है। स्वयं डा० द्विवेदी अपने अनुशासनात्मक जीवन के धनी हैं और यह धन उन्हें सुलभ हो सका है, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) के कुलपति एव आचार्य शुद्धबोध तीर्थ और आचार्य नरदेव शास्त्री से। श्री कपिलदेव की लेखनी ने साहित्यिक और वैयाकरण अनुशीलन के अनन्तर उ०प्र० राजकीय शिक्षा सेवा से निवृत्त होकर वैदिक वाङ्मय को सरल, सुबोध बनाकर जनसाधारण के लिए प्रस्तुत किया है हिन्दी भाषा न जानने वालो के लिए इसी रचना में अंग्रेजी भाषा में रूपान्तरित कर स्तुत्य प्रयास किया है।

—रमेश एम० ए०

दहेज का दानव (ट्रैक्ट)
हिन्दी छन्दोबद्ध
रचयिता—टीकाराम सरोज
प्रकाशिका—सुमन देवी
मिलने का पता—टीकारामसरोज 'चित्रकार'
सरोजकला भवन, प्रेम नगर, बुलन्दशहर (उ० प्र०)

प्रवेश सूचना

भारतीय सस्कृति का एक निःशुल्क शिक्षा केन्द्र आर्ष गुरुकुल सस्कृत महाविद्यालय टटेसर जौन्ती में प्राचीन एवं आधुनिक शिक्षा प्रणाली का अद्भुत सगम। इस संस्था में संस्कृत भाषा के अतिरिक्त अन्य आधुनिक विषयों के अध्ययन के साथ-साथ चरित्र निर्माण एव शारीरिक विकास के लिए खेलादि की समुचित व्यवस्था है। गुरुकुल कांगडी विश्व-विद्यालय से सम्बद्ध है। अत. यहां से विद्या-अधिकारी (मैट्रिक) पास छात्र को जी० एम० एस० में एवं शास्त्री आदि कोर्सों मे सीधे प्रवेश मिलता है, छात्रों के विकास के लिए सुयोग्य अध्यापकों की व्यवस्था है। अतः अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए उन्हे शीघ्र गुरुकुल में प्रविष्ट करवाये। स्थान सीमित हैं अत शीघ्रता करें। प्रवेश १० जुलाई तक ही सम्भव है।

—प्रधानाचार्य

वर चाहिए

२२ वर्षीया कन्या हेतु आर्य वर चाहिए। कद पांच फुट एम० ए० कक्षा में शिक्षारत पचास हजार की सम्पत्ति की मालिक, सुशील स्वस्थ व्यवहार, कुशल हेतु सुयोग्य बारोजगार एवं गुरुकुल के स्नातक को प्राथमिकता दी जायेगी। पत्र-व्यवहार निम्न पते पर करे।

—जगदीश दयाल वैद्य
ग्रा० पो० सैदपुर
जि० बदायूं (उ० प्र०)

पवित्र मक्का मस्जिद को सशस्त्र उग्रवादियों से मुक्त कराने के लिए भी सैनिक कार्रवाई की गई थी

नई दिल्ली, १२ जून। केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण उपमन्त्री गुलामनबी आजाद ने स्वर्ण मन्दिर परिसर में सैनिक कार्रवाई को १९८१ में मक्का मस्जिद को उग्रवादियों के कब्जे से मुक्त कराने के लिए सऊदी अरब द्वारा की गई सैनिक कार्रवाई के समान बताया है।

श्री आजाद ने कहा कि सऊदी अरब के सैनिकों ने कट्टरपंथियों को मारकर मक्का मस्जिद को मुक्त कराया था और विश्व के तमाम मुसलमानों ने सऊदी कार्रवाई का समर्थन किया था। उस समय सऊदी अरब के सैनिकों को मुख्य स्थान तक पहुंचकर सशस्त्र कट्टरपंथियों को मारना पड़ा था।

उन्होंने कहा कि अपने यहा पजाब मे अमृतसर और अन्य स्थानों पर गुरुद्वारों मे छिपे आतंकवादियो को सेना ने बाहर निकाला है। सरकार ने यह कार्रवाई न केवल हिंसा के लिये बल्कि स्वर्ण मन्दिर की पवित्रता को कायम रखने के लिए भी की है।

देश के युवकों को सारी स्थिति पर धैर्यपूर्वक विचार करके सरकार के कदम की सराहना करनी चाहिए। मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे ईश्वर की पूजा के लिए होते हैं राजनीति अथवा हत्यारों और डकैतों को शरण देने के लिए नहीं।

(पृष्ठ ९ का शेष)

पवित्रता तो उसी दिन नष्ट हो गई थी, जिस दिन भारी संख्या में हत्यारों, लुटेरों, स्मगलरों, पेशेवर मुजरिमों और आतंकवादियों ने इस पवित्र स्थान को अपने रहने और छिपने का स्थान बना लिया था।" दाद तो देनी चाहिए हमारे फौजी जवानों को, जिन्होंने अपनी कीमती जाने देकर भी अपवित्र हो रहे महान् धर्म स्थान स्वर्ण मन्दिर की पवित्रता को दोबारा कायम किया और एक भी गोली पवित्र मन्दिर पर न चलाई, जब कि उसी पवित्र मन्दिर की छत के ऊपर से उग्रवादियों ने न जाने हमारे कितने ही बहादुर जवानों की छातियों को छलनी कर दिया।

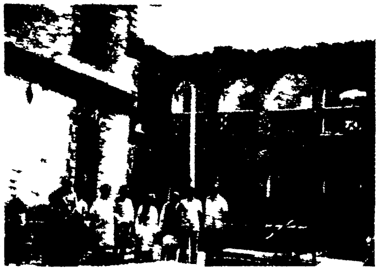
इससे बढ़कर बहादुरी की और क्या मिसाल हो सकती है कि जो गोलियां उग्रवादी अकाल तख्त पर से बैठकर स्वर्ण मन्दिर की तरफ चला रहे थे, उन गोलियों से भी स्वर्ण मन्दिर की पवित्रता कायम रखने की खातिर हमारे फौजी जवानो ने अपनी छातियों से रोका और भारतीय फौज की इस बात की प्रशंसा करता हूं कि उन्होंने देश की अखण्डता के लिए अपना सब कुछ दाव पर लगा कर भी इसकी रक्षा की।

वहां दूसरी तरफ भारतीय फौज के धैर्य, शौर्य और बहादुरी के लिए भी मैं उनका अति धन्यवादी हूं कि उन्होंने इस संकट की घड़ी में भी विवेक से काम लेते हुए स्वर्ण मन्दिर की पवित्रता की आंच तक नहीं आने दी। भारतीय फौज के धैर्य और बहादुरी की यह मिसाल भारतीय सेना के इतिहास मे स्वर्ण अक्षरों में लिखी जाएगी

(पं०के० १५-६-८४)

काशमीर में आर्यसमाज की लाखों की सम्पत्ति का महाविनाश









आर्यसमाज मन्दिर हजूरी बाग तथा दयानन्द आर्य कन्या विद्यालय हजूरी बाग श्रीनगर काश्मीर के शानदार भवनो को ७ जून को आग लगा भस्म कर दिया गया।
उग्रवादी सिखो के वेष मे पाकिस्तान समर्थक मुसलमानो द्वारा श्रीनगर मे दर्जनो हिन्दू मन्दिरो की तोड़-फोड आगजनी लूटमार के हृदय विदारक दृश्य।

गुरुकुल मनकामना तीर्थ

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व विद्यालय से मान्यता प्राप्त मनुकामना तीर्थ मे कमल सरोवर के पावन तट पर स्थित विद्यार्य सभा वेदाग विद्यालय गुरुकुल मनुकामना जहानाबाद, पीलीभीत (उ०प्र०) मे एक जुलाई से प्रवेश प्रारम्भ हो रहा है। छात्र का कक्षा ५ उत्तीर्ण होना आवश्यक है। भोजन शुल्क ५०) मासिक वस्त्र ऋतु अनुकूल सादे, शिक्षण शुल्क नही लिया जाता है। पठन पाठन के अतिरिक्त नियमित रूप से योगासन बाण विद्या आदि का भी प्रशिक्षण दिया जाता है। विशेष जानकारी हेतु प्रधानाचार्य से सम्पर्क करे।

—प्रधानाचार्य

अध्यापक की आवश्यकता

महर्षि दयानन्द पूर्व माध्यमिक रेणुकूट मिर्जापुर (उ० प्र०) के लिए स्नातक प्रशिक्षित अनुभवी आर्य समाज की विचार धाराओ से ओत-प्रोत एव सुयोग्य प्रधानाचार्य की आवश्यकता है। इच्छुक व्यक्ति २० जुलाई १९८४ तक अपना आवेदन पत्र कार्यालय में भेजदें।

प्रबन्धक, महर्षि दयानन्द पूर्व माध्यमिक विद्यालय
रेणुकूट, मिर्जापुर (उ० प्र०)

शोक समाचार

आर्य समाज वैस्ट मिडलैंडस (बरमिंघम) इग्लैंड के उत्साही निष्काम एव सेवाभावी मन्त्री श्री अविन्दरलाल जी ठाकुर (सेवा निवृत्त ड्राइंग मास्टर) का स्वर्गवास ७० वर्ष की आयु मे बरमिंघम मे हो गया। वे अपनी धर्मपत्नी सहित जब १२ मई को अमेरिका से लदन लौटे तो उनका स्वास्थ्य कुछ बिगड गया। १४ मई को उन्हें हस्पताल मे प्रविष्ट करवाया उन्हे 'लिवर' का कष्ट था जो पर्याप्त गम्भीर था। यथोचित उपचार और सेवा शुश्रूषा से भी उन्हे कुछ लाभ न हुआ और १६ मई को उनका देहान्त हो गया। स्व० ठाकुर जी पिछले तीन वर्षों से लगातार आर्य समाज के मन्त्री का कार्य अत्यन्त लगन व सफलता से कर रहे थे। सच कहा जाय तो यह सेवा जब उन्हे सौंपी गई तो उन्होने सच्चे आर्य सेवक की भाति पूरी शक्ति से अपना कर्तव्य निभाया। वे कलाकार थे—उन्होने सुन्दर सुडौल एव शुद्ध अक्षरो मे आठों प्रार्थना मन्त्र लिखकर फोटो के रूप मे तय्यार किये और आर्य-समाज को अर्पण कर दिये जो सदा उनकी याद दिलाते रहेगे।

श्री ठाकुर जी के निधन से उनके परिवार को ही नही अपितु आर्य समाज की जो भारी क्षति हुई है उसका पूरा होना असभव नही कठिन तो अवश्य है।

प्रभु से हम उनकी दिवगत आत्मा की सद्गति की प्रार्थना करते हैं। परमपिता परमात्मा उनके शोक-सन्तप्त परिवार को इस असह्य दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करे।

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी का आयोजन

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू (काशमीर) के तत्वावधान मे श्रीनगर मे २७,२८ २९ जुलाई को महर्षि निर्वाण शताब्दी ससमारोह मनाने का आयोजन किया गया है। काशमीर राज्य एव बाहर की आर्य जनता से इसमे सम्मिलित होने इसकी सफलता मे अधिकाधिक योग देने तथा सभा के प्रधान श्री डा० योगेन्द्रकुमार मन्त्री श्री राजकुमार (आर्यसमाज पुरानी मडी जम्मू) से सम्पर्क करने की भी प्रेरणा की गई है।

कृष्णलाल सयोजक प्रभुशूर आर्य कार्यालयाध्यक्ष

शोक प्रस्ताव

शाहजहापुर आर्यसमाज के प्रधान जी का निधन श्री चन्दरसिह जी सूबेदार साहब प्रधान आर्य समाज शाहजहापुर (अलवर)। वे १२ माह से अस्वस्थ थे दिनाक १ ४ ८४ को बोलते बोलते ही प्राणान्त हो गया। इनकी आयु अनुमानन ६० वर्ष की थी। प्रधान जी ने अनेको ही जनहित व कार्य मे निस्वार्थ भाव से सहयोग दिया जो कि ईश अनुकम्पा से सफल हुए। प्रधान जी को धर्मनिष्ठा दृढ निश्चय और अनुशासन कार्य अत्यन्त प्रिय था। प्रधान जी के निधन पर यहा आर्य समाज मन्दिर म शोक सभा की गई जिसमे रेवाडी आर्य समाज से बुलाए गये श्री लीलाधर जी वानप्रस्थी द्वारा कार्य किया गया इसमे आर्य बन्धुओ के अतिरिक्त गाव के प्रतिष्ठित व्यक्ति उपस्थित थे। विधि पूर्वक यज्ञ किया गया तत्पश्चात जीवात्मा और शरीर के विषय मे वेदोक्त बातें बताई और भी जीवनोपयोगी अनेको बातें बताई गई तत्पश्चात दिवगत आत्मा की सदगति के लिए प्रार्थना की गई। इनके परिजनो को असह्य दुःख को सहन करने की शक्ति दें। आर्य समाज से उपस्थित जन समूह प्रधान जी के मकान पर पहुँचे और परिजनों को साहस और धैर्य रखने के लिये निवेदन किया गया।

—मदनमोहन उप प्रधान आर्य समाज शाहजहापुर
जिला अलवर (राज०)

(पृष्ठ २ का शेष)

हमारी मांग है—

(१) कि जिस प्रकार सरकार ने शरारती तत्वों द्वारा नष्ट किए गए चर्च को पुन बनवाया था उसी प्रकार आर्य समाज मन्दिर का पुनर्निर्माण किया जावे। अत्यन्त दुःख की बात है कि वेद तथा समाज मन्दिर पुस्तकालय के अन्य हिन्दू ग्रन्थो को जलाया एव नष्ट किया गया है।

(२) जिस प्रकार पिछले कुछ वर्षों से पजाब पाक तथा अमेरिका समर्थक आतंकवादियों के केन्द्र बन गया था, उसी प्रकार जम्मू काश्मीर राज्य डा० फारूक के नेतृत्व मे देश के लिए एक और सिर दर्द बन रहा है।

(३) हमारे पास इस बात के विश्वस्त प्रमाण है कि वर्तमान समय मे जम्मू काश्मीर में व्याप्त परिस्थितियों के कारण राष्ट्रपति शासन लागू करने के अलावा कोई दूसरा उपाय नहीं है। इसमें देर करने के भयकर परिणाम हो सकते हैं।

—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की ओर से जारी

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली-२ में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसादपाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८५] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दयानन्दाब्द १६० दूरभाष : ९७४७७१

वर्ष ११ अंक ३६] भाद्रपद कृ० १ सं० २०४१ रविवार १२ अगस्त १९८४ वार्षिक मूल्य १६) एक प्रति ४० पैसे

शकूरबस्ती रेलवे स्टेशन पर गोभक्तों का धरना

श्री रामगोपाल शालवाले प्रधानमन्त्री से मिले

नई दिल्ली २ अगस्त १९८४

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शाल वाले ने आज प्रात प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरागांधी से भेंट कर माग की कि जिन राज्यो ने गौ-हत्या पर प्रतिबन्ध लगा रखा है उन राज्यो से गऊ लदान बन्द करने के लिए आदेश तुरन्त जारी किए जाय तथा जिन राज्योने गौ-हत्या पर अभी तक प्रतिबन्ध नही लगाया है उन राज्यो के लिए गऊओ का लदान न किया जाए। ये राज्य हैं बम्बई केरल तथा बगाल। श्री शालवाले ने प्रधानमन्त्री से माग की है कि शकूरबस्ती दिल्ली रेलवे स्टेशन पर कलकत्त के लिए जो गाडिया गऊओ से लदी हुई खडी हैं उन्हे तुरन्त रोका जाए।

प्रधानमन्त्री ने गोरक्षा मे गहन रुचि लेते हुए आश्वासन दिया कि शकूरबस्ती रेलवे स्टेशन से कलकत्त जाने वाली गायो को रोकने के आदेश यथाशीघ्र दिये जायेंगे।

विदित हो कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री शालवाले ने सैकडो गोभक्तो के अनुरोध पर शकूरबस्ती रेलवे स्टेशन पर गऊओ से लदी बेगनो का निरीक्षण किया और गोभक्तो को आश्वासन दिया कि वे प्रधानमन्त्री तक इस मामल को उठायगे।

पृथ्वीराज शास्त्री
कार्यालय सचिव
सार्वदेशिक सभा



श्री ला० रामगोपाल शालवाले गोभक्तो के साथ कलकत्ता के बूचड खानों को भेजी जा रही गऊओ का लदान रोका गया। चित्र में श्री शालवाले स्टेशन मास्टर शकूरबस्ती दिल्ली को प्रेरणा कर रहे हैं। उनके साथ श्री पृथ्वीराज शास्त्री तथा श्री राजेन्द्र गुप्त मन्त्री आर्य समाज श्रीनगर (कश्मीर) खड़े हैं।



श्री ला० रामगोपाल शालवाले शकूरबस्ती रेल्वे स्टेशन पर गोरक्षा आन्दोलन के नेताओ के साथ

बच्चों के पाठ्य क्रम में अनर्गल पाठ न दिए जायें

माननीय श्री कृष्णचन्द्र जी भारतीय
कार्यकारी आर्य (शिक्षा)
महानगर-परिषद दिल्ली

सादर नमस्ते !

विषय- इतिहास और नागरिक शास्त्र विषयो पर छठी कक्षा के लिए निर्धारित पाठ्य पुस्तक लेखिका रोमिला थापर प्रकाशक राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद श्री अरविन्द मार्ग दिल्ली में हिन्दू धर्म के विरुद्ध आपत्तिजनक और असत्य उल्लेख

महोदय आपसे विशेष प्रार्थना है कि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा प्रकाशित इतिहास और नागरिक शास्त्र के विषय के अन्तर्गत छठी कक्षा के लिए नियत पाठ्य पुस्तक मे लेखिका रोमिला थापर द्वारा अध्याय तीन वैदिक युग का जीवन (क) प्रथम जातियां शीर्षक लेख के अन्तर्गत पृष्ठ ४० पर उल्लिखित असत्य एव आपत्तिजनक अशो की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हू। वे इस प्रकार हैं

वास्तव मे विशेष अतिथियो के लिए गोमास का परोसा जाना सम्मान

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—सच्चिदानन्द शास्त्री सहसम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

प्रशंसनीय सहयोग

श्री प्रहलाद सिंह परमार और श्री माखन सिंह ग्राम पोस्ट खाटपुर जिला शाजापुर ने क्रमश २०००,और १०००) की स्थिर निधिया सार्व सभा मे वेद प्रचारार्थ सहायता आदि कार्यों के निमित्त स्थापित की है।

श्रावणी से जन्माष्टमी तक

काशी आर्य समाज मन्दिर बुलानाला के सत्सग भवन में वेद प्रचार सप्ताह १२ अगस्त दिन रविवार से १९ अगस्त रविवार तक मनाया जायगा। नित्य प्रात काल ७ बजे से यजुर्वेद पाठ श्री चन्द्रपाल शास्त्री के पौरोहित्य मे हवन यज्ञ होगा। अन्तिम दिन १९ अगस्त रविवार को विशेष कार्यक्रम होंगे। —मन्त्री

आर्य समाज बड़ा बाजार पानीपत का शताब्दी समारोह ९से १४ अक्टोबर तक विशाल पैमाने पर मनाया जायगा स्थान—आर्य कालेज पानीपत

इस शताब्दी समारोह के अन्तर्गत निम्न योजनाओ का क्रियान्वयन निर्धारित किया गया है।

१—सस्कृत पाठशाला की स्थापना।

२—पुरोहित कक्षाए।

३—वैदिक विद्वानो का सम्मान।

४—विद्वत सम्मेलन।

५—अन्य मतावलम्बियो से सैद्धान्तिक विचार विमर्श।

६—ब्रेल लिपि मे वैदिक साहित्य प्रकाशन।

७—ग्राम प्रचार।

८—आर्य समाज पानीपत का इतिहास व स्मारिका।

९—अग्रेजी मे मैगजीन का प्रकाशन।

सयोजको ने इन कार्यो मे आर्य जनता से धन के सहयोग की अपील की है। —रामानन्द सिंघल सयोजक



शकूरबस्ती दिल्ली रेलवे स्टेशन पर कसाई खाने को जाने वाली गऊओ के सब।

आर्य समाज विनय नगर नई दिल्ली

१५ ७ ८४ को वार्षिक निर्वाचन मे प्रधान श्री सत्यदेव गुप्त, मन्त्री-श्री रोशन लाल गुप्त कोषाध्यक्ष श्री राममूर्ति शर्मा चुने गए।

—८ जौलाई ८४ से ११ जौलाई तक गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) में वैदिक यज्ञ सम्पन्न हुआ ब्रह्मचारिणियो के वेदारम्भ सस्कार के साथ साथ नवीन छात्रों का प्रवेश पूर्ण हो गया। —आचार्य

(पृष्ठ १ का शेष)

सूचक माना जाता था (यद्यपि बाद की शताब्दियो मे ब्राह्मणो के लिए इसका सेवन वर्जित हो गया)। मनुष्यो का जीवन सौ गायो के मूल्य के बराबर समझा जाता था। यदि एक मनुष्य दूसरे की हत्या कर डालता तो उसे मृतक के कुटम्बियो को दण्ड के रूप म सौ गायें देनी पडती थी।

आपसे मेरा निवेदन है कि जहा किसी शब्द विशेष अथवा वाक्य विशेष से किसी जाति विशेष अथवा धर्म विशेष के विरुद्ध अनर्गल और मिथ्या प्रचार किया गया हो ऐसे अशो को पुस्तको मे नहीं रखा जाना चाहिए। गोमास परोसने और गाय के मूल्य की जो बात लिखी गई है यह घोर आपत्ति जनक है। हिन्दू लोग गाय को अपनी मा के समान समझते और पूजते हैं इसलिए इसके मूल्य की बात सर्वथा गलत हैं और निन्दनीय है। इस प्रकार के प्रसगो को जब छोटे छोटे बच्चे स्कूल मे पढते हैं तो उनकी कोमल भावनाओ को कष्ट पहुचता है और उन्हे स्वय अपने धर्म और जाति पर नफरत पैदा हो जाती है। लेखिका का यह प्रयास हिन्दू जाति और वैदिक धर्मकी सभ्यता पर गहरा कुठाराघात है। लेखिका का यह प्रयास गैरहिन्दुओं को प्रसन्न करने का प्रयत्न है। क्या यह लेखिका किसी हिन्दुतर मजहब के लिए लिखने और पाठ्य पुस्तक बनाकर उसी मजहब के छात्रो को पढ़ाने का दुस्साहस कर सकती है? कभी नही कर सकती है।

यह सभा बल पूर्वक आपसे माग करती है कि उक्त पुस्तक से इस अश को तुरन्त निकाला जाय और इस विषय मे की गई कार्रवाई से सभा को अवगत कराया जावे। बीसवीं सदी के इस विकासशील युग मे इस प्रकार के प्रसगो को पाठय पुस्तकों मे लगाकर छोटे छोटे बच्चो के दिल दुखाना और उनमे धार्मिक नफरत पैदा कराना यह राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान प्रशिक्षण परिषद का कर्तव्य नहीं है। बल्कि उसे तो यह देखकर ही पुस्तक प्रकाशित करनी चाहिए कि उसमे किसी धर्म विशेष अथवा जाति विशेष का अपमान न किया गया हो।

अत पुन प्रार्थना है कि तुरन्त इस पुस्तक से उक्त प्रसग निकाला जाय अथवा इसे जब्त कर लिया जाय। आर्य समाज इसका कड़ा विरोध करेगा।

शुभकामनाओ सहित। भवदीय

रामगोपाल शालवाले

प्रधान

सार्वदेशिक आ प्र सभा

सम्पादकीय

दैवी सम्पद् को अपनाएं आसुरी सम्पद् से बचें

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ४ आवश्यक पदार्थ माने गए हैं।

हमारा जीवन धर्म से प्रारम्भ होता है और मोक्ष इसकी अन्तिम श्रेणी है। दूसरे शब्दो मे जिस वृक्ष का मूल धर्म है उसका फल मोक्ष है। धर्म से ही अर्थ की प्राप्ति होती वा अर्थ वही वरदान होता है जो धर्म पूर्वक कमाया जाय। अर्थ की धर्म पूर्वक प्राप्ति पर धर्म पूर्वक काम का उपयोग किया जाना चाहिए।

आज हमारे जीवन मे ४ पदार्थों के स्थान मे २ पदार्थ रह गए हैं अर्थात् अर्थ और काम। सुख की सामग्री जुटाओ धर्म से या अधर्म से और मौज बिहार करो। यही आजकल की रीति नीति बनी हुई है। शास्त्रो मे इसी को आसुरी सम्पद् कहा है। इसका फल बन्धन है मोक्ष नही। मोक्ष के लिए दैवी सम्पद चाहिए। इसी सम्पद् का दूसरा नाम धर्म है।

व्यक्तिगत जीवन मे सामाजिक जीवन मे नागरिक जीवन मे, राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय जीवन मे सबमें दैवी सम्पद् की कमी है। परिणामत एक बन्धन को तोडते हैं तो दस नए पैदा हो जाते हैं।

सर्वत्र पाखण्ड, दर्प अभिमान और अज्ञान का साम्राज्य है जिसे हम धार्मिक जीवन कहते हैं उसका पाखण्ड सीमा का अतिक्रमण करता देख पडता है। क्या पाखण्डी दूकानदार अर्थ की वास्तविक उपलब्धि कर सकता है क्या पाखण्डी राजा राज्य का समुचित रीति से सचालन कर सकता है क्या पाखण्डी ब्राह्मण आत्मिक उन्नति कर सकता है? क्या हमारे सुधारक और प्रचारक आसुरी सपद् मे वृद्धि नही करते?

प्रश्न उठता है कि दैवी सम्पद क्या है? अभय, अन्त करण की शुद्धि, ज्ञान, योग, दान, दम यज्ञ स्वाध्याय, तप, ऋजुता, अहिंसा सत्य, अक्रोध, त्याग, शान्ति, चुगली न करना, जीव दया, लालुपता का अभाव, कोमलता, चपलता का अभाव, तेज, क्षमा, धृति, शौच अद्रोह और निरभिमानता, यह है शास्त्रोक्त दैवी सम्पद (गीता १६। १०३) इसमे मनु जी के धर्म के दश लक्षणो का समावेश है। विना इस दैवी सम्पद् के हम धर्म के किसी भी विभाग मे उन्नति नही कर सकते।

हमे उचित है कि हम दैवी सम्पद् को धारण करे और आसुरी सम्पद से बचे रहें।

अपने को यज्ञमय बनाओ

हमारी भूल कहा पर है? केवल एक शब्द को भली भाति समझ लें तो सब पता लग जायेगा।

देखे! एक शब्द 'यज्ञ' आता है। यहा पर यह परमात्मा का वाचक है। दूसरे स्थल पर पुरुष के साथ मिले हुए आत्मा का नाम यज्ञ है। तीसरे स्थान पर 'यज्ञ' शब्द शुभ कर्मों का वाचक है। एक और वेदमन्त्र मे 'यज्ञ' शब्द आया है जहा पुरुष के सुधार का वाचक है। किन्तु पितृ यज्ञ, देव यज्ञ मे कर्म का वाचक कहा है।

प्रेम किन मे होता है जिनके गुण और स्वभाव समान हो। यदि आप अपने को यज्ञ बना लें तो आत्मिक बल बढ जाता है।

बलवान आत्मा बलवान शरीर को चाहता है। आप अपने को यज्ञ बनाने का यत्न करो फिर आप उस यज्ञ स्वरूप परमात्मा से मिल जाओगे।

आख को यज्ञ बनाओ। दूसरे की निन्दा करने से मु ह मे दोष आ जाता है। नेत्र परस्त्री पर कुदृष्टि डालने से दूषित हो जाता है। चित्त दूसरे की हानि सोचने से दूषित होता है। इन सबके दूषित होने से मार्ग बिगड जाता है और मनुष्य यज्ञमय नहीं बन पाताहै। फलत परमात्मा से भेंट नही हो सकती।

आख से देखकर कैसे दोष उत्पन्न होते है? एक जन्तु आपके सामने से जाता है एक मनुष्य उसे देखकर सोचता है परमात्मा की सृष्टि मे कैसे सुन्दर पशु हैं, दूसरा सोचता है कि इसका मास बडा स्वादिष्ट है। भाव दोनो के भिन्न है और इसी से कार्यों मे भूल हो जाती है। मनु जी कहते हैं कि जब मनुष्य का भाव अच्छा नही तो चाहे वेद पढ लो यज्ञ कर लो, सब दूषित हैं। यदि भाव मे सच्चाई है तो सब ठीक है इसीलिए कहा है मन को यज्ञ बनाओ।

फिर कहा है कि यज्ञ को यज्ञ रूप बनाओ अर्थात् अच्छे कर्मों को भी यज्ञ बनाओ। एक सरकारी कर्मचारी रिश्वत लेता था। उसने आर्यसमाज का सदस्य बनने पर रिश्वत लेना छोड दिया परन्तु उसने क्या किया? कि काम करने वालो से बोलता ही नही। उसके अन्दर अभिमान आ गया कि मैं रिश्वत नही लेता। उचित तो यह था कि बोलता और रिश्वत न लेने वालो की तरह रिश्वत न लेता। इस प्रकार करता तो अच्छा आदर्श उपस्थित करता। इसलिए भले कामो से जो प्रशसा होती है उसे भी निष्काम और ईश्वर के अर्पण कर दो।

अपने आपको 'यज्ञ' बनाने के लिए ही सध्या करने का समय रखा हुआ था। कई कहते हैं कि प्रात काल पूर्व और सायकाल को पश्चिम की ओर मुख क्यो करे? ये दोनो काल विचार के लिए रखे हुए थे। सूर्य की ओर क्यो बैठे? सकेत से बताया गया है कि हे मनुष्यो तुम विद्या और प्रकाश की ओर खडे रहो। यदि प्रकाश की ओर पीठ दे दो तो छाया सामने होगी। तुम्हारे सामने प्रकाश नही वरन् अन्धकार होगा। शाम और सुबह समानता की श्रेणी के समय है। किसी के स्वत्व का हनन न करना समानता है। ससार से वैर विरोध हट जायेगे यदि आपके मन मे समानता का भाव आ जायेगा।

उपनिषद् मे लिखा है कि मनुष्य के शरीर मे दो शक्तिया हैं रयि और प्राण। दिन के समय प्राण की शक्ति बढती है। रात्रि को रयि बढती है। जैसे रयि की शक्ति रात्रि को बढती है और प्रातः काल रयि और प्राण की शक्ति सम हो जाती है वैसे ही सायकाल को दोनो शक्तिया सम हो जाती है, ये ही समय विचार के लिए उपयुक्त होते है। चित्त की वृत्ति कम्पास की सुई जैसी होती है। वह किधर ठहरे? जो स्थिर स्वभाव वाला परमात्मा है जब मन की सुई उधर जायेगी तब ठहर जायेगी। जगत् के पदार्थ तो चलायमान है। वहा उतर नही सकती चित्त के स्थिर और समान न रहने से भारी अनर्थ होते है इसीलिए कणाद ऋषि ने नियम बतलाया है कि अविद्या मनुष्य मे सब प्रकार के पाप करवाती है और वह इन्द्रियो के मार्ग मे सगदोष से आती है।

इन्द्रियो को वश मे करना कठिन है। एक सेनापति युद्ध मे जीतकर आया और एक कन्या के रूप को देखकर उस पर मोहित हो गया। वह कन्या गुणवती थी। कहती है सेनापति! वह तेरी तलवार का बल जिससे तू सैकडो को काटता था, वह तेरा ओजस्वी पन मेरे एक कटाक्ष मे नष्ट हो गया। तनिक सोच तो सही एक मनुष्य हाथी के दात को उखाडने मे शेर को मारने मे सापो को हाथो से कुचलने मे समर्थ है परन्तु इन्द्रियो को वश मे करने मे असमर्थ होता है। तू कहता है कि तूने लाखो को जीता है और मैं कहती हू कि मैंने तुझे जीता है।' सेनापति की बुद्धि ठिकाने आ गई।

उल्टा समझ लेने से जीवन उलट गया। ऐसे ही यज्ञ शब्द को ठीक न समझ सकने से हम बिगड गए। पितृ यज्ञ के अनर्थ से आपाधापी मच गई। प्रमाद न करो, दु ख उठाओगे। यदि यज्ञ शब्द को सोचना और बनाना चाहते हो तो इन्द्रियो से प्रत्येक मार्ग को ठीक करके उन्हे वश मे लाओ।

सामायिक चर्चा—

स्वेतलाना वैदिक फिलासफी से प्रभावित

स्व० स्टैलिन (रूस के सुविख्यात अधिनायक की पुत्री) स्वेतलाना ने जब १९६७ मे सोवियत रुस छोडने का निर्णय किया था तब वे महात्मा गाधी, भारतीय दर्शन और वैदिक धर्म के मुक्तिदायक प्रभाव से प्रभावित थी।

इस रहस्य का उदघाटन उन्होने अभी हाल मे प्रकाशित 'सुदूर का सगीत (The far away Music) नामक अपनी आत्म-कथा मे किया है। रुस से भाग निकलने के बाद वे भारत मे बसना चाहती थी परन्तु उनके लेखानुसार भारतीय गवर्नमेंट ने उन्हे कई बार कहा था कि भारत मे बसने की अनुमति देकर वह सोवियत रूस के साथ कोई झगडा मोल लेने के लिए तैयार नही हैं। फलत वे अमेरिका मे शरण लेने की अनुमति के लिए नई दिल्ली स्थित अमेरिकन दूतावास मे गई थी।

लगभग २५ वर्ष पूर्व श्री ब्रजेन्द्रसिह(काला काकर राज्य से सम्बद्ध,जिनके साथ स्वेतलाना ने शादी की थी) से भेंट करने से पूर्व उन्होने भारतीय इतिहास और दर्शन का अध्ययन कर लिया था। किसी विदेशी से मिलना सोवियत रुस मे घातक पाप था। परन्तु उनके शब्दो मे कोई चीज थी जिसने मुझे ब्रजेन्द्र सिह से भेंट तथा वार्तालाप करने के लिए विवश किया था। वह मेरा साहसिक कार्य था जिस पर सहज ही विश्वास नही किया जा सकता। इस भेंट के बाद ही आन्तरिक क्रान्ति पैदा हुई।

इस पर प्रकाश डालते हुए वे लिखती हैं—'मेरा मस्तिष्क, आत्मविश्वास आत्म-चेतना सभी शीत से सुन्न हुएथे। भारत के गर्म श्वास से वेसभी पिघल गए और मैं तुरन्त ही मजबूत हो गई। १९६७ मे गगा के रेतीले तटो पर घूमते हुए, मैं गाधी जी के शब्दो पर विचार करती थी कि 'अपनी इज्जत, अपने धर्म और अपनी आत्मा के रक्षण के लिए समूचे अन्यायी साम्राज्य को चुनौती देना उसके पतन वासुपुनर्निर्माण की नीव डालना किसी भी एक व्यक्ति के लिए सभव हो सकता है।'

"भारत, गाधी जी तथा अन्यान्य दार्शनिको के सिवा अन्य किसी से भी मैं अपने से तथा अपने विगत से अधिकत मुक्त नही हो पाई थी। अचानक तमाम दुनिया के लिए मुझे दरवाजा खुला मिल गया जिसके जरिए मैं बाहर जा सकती थी वा रूस मे ही ठहर सकती थी। मैंने बाहर निकलना पसन्द किया। मुझे तमाम जीवन मे एकमात्र यही अवसर प्राप्त हुआ था। मैंने इस पर कभी भी दुख नही मनाया।'

स्वेतलाना इस समय इग्लैड मे हैं। आज १७ वर्ष के बाद वे बड़े आदर और कोमल भावनाओ के साथ भारत की ओर देख रही हैं। भारत माता मेरी प्रिय मार्गदर्शिका माता है। अपने ऊपर पडे धार्मिक प्रभाव की चर्चा करते हुए वे लिखती हैं—

'वैदिक धर्म ने मेरे मस्तिष्क को मुक्त किया और मेरे विचार क्षितिज को चौडा किया है।'

स्वेतलाना ने अपनी माता के सम्बन्ध मे बडे भावावेशका परिचय दिया है और लिखा है कि अपनी युवा पत्नी के आत्म-हत्या कर लेने पर पिता स्टैलिन की मन अवस्था बडी विकृत हो गई थी।" इस घटना के बाद उनकी प्रतिशोध की भावना बेकाबू हो गई थी। पत्नी से वचित हो जाने पर वे उनके सुप्रभाव से वचित हो गए थे।

१९३२ का वर्ष जबकि उनकी पत्नी (स्वेतलाना की माता) ने पिस्तौल से आत्म हत्या की थी पिता स्टैलिन के जीवन का भीषण तम वर्ष माना जाना चाहिए। इतिहास कारो ने इन तथ्यो को जानने की परवाह नहीं की। वरन उन्होने अपने ही स्रोतो से काम लिया।"

उल्लेखनीय है कि यह स्वेतलाना की तीसरी आत्मकथा हैं। इससे पूर्व २ आत्म कथाए प्रकाशित हो चुकीहैं। प्रथम आत्म कथा 'केवल एक वर्ष' के कुछेक सन्दर्भ सार्वदेशिक मे १९७१ ७२ मे धारावाहिक रूप मे छपे थे।

श्रीमती स्वेतलाना जब कालाकाकर (प्रतापगढ, यू० पी०) मे कुछ दिन ठहरी थी तब उन्होने आर्य समाज मन्दिर अपने पति श्री ब्रजेश सिह की स्मृति मे हस्पताल स्कूल आदि के खोलने वा उनकी सुव्यवस्था के लिए रायल्टीसे प्राप्त ५लाख रुपया दान किया था। श्री ब्रजेशसिह स्व०राजा अवधेश सिह (श्री दिनेश सिह जी के पिता) के कनिष्ठ भ्राता थे जो रूस चले गए थे। स्व० श्री राजा अवधेश सिह जी ने आर्य समाज के उत्थान और प्रचार के लिए बडा मूल्यवान कार्य किया था।

अमेठी की तरह यह घराना भी आर्य समाज का घराना ही समझा जाता रहा है स्व० श्री धुरेन्द्र शास्त्री (स्वा. ध्रुवानन्द जी) राजगुरु के रूप में कई वर्ष तक इस घरानेसे सम्बद्धरहे और जब वे सार्वदेशिक सभा के प्रधान थे उनका रूस स्थित श्री ब्रजेश सिह जी के साथ पत्राचार होता रहता था।

फारूक को हटाने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था—राव

गृहमन्त्री श्री नरसिह राव ने फारूक मन्त्रिमण्डल को बर्खास्त करने की राज्यपाल की कार्रवाई को सवैधानिक और सही बताया। उन्होने कहा कि वहा की स्थिति को देखते हुए राज्यपाल के सामने और कोई विकल्प नही था।

गृहमन्त्री 'जम्मू कश्मीर की हाल की घटनाओ' के बारे मे दो दिन की बहस का (३१-७ ८४) लोकसभा मे जवाब दे रहे थे।

उन्होने कहा कि राज्यपाल ने फारूक-सरकार को यह विश्वास होने के बाद ही बर्खास्त किया कि उसका बहुमत नही रह गया है और स्वय डा० अब्दुल्ला भी जानते थे कि उन्होने बहुमत खो दिया है।

विपक्ष की इस दलील के जवाब मे कि बहुमत का फैसला विधान सभा मे होना चाहिए था, श्री नरसिह राव ने कहा—पिछले तीन दशको मे इस तरह का एक भी उदाहरण नही है कि बहुमत खोने पर किसी मुख्य मन्त्री ने विधान सभा का सामना करने की पेशकश की हो। इस सन्दर्भ मे उन्होंने कहा कि केन्द्र मे भी दो बार ऐसी स्थिति आने पर तत्कालीन प्रधानमन्त्रियों ने ससद का सामना करने की बजाय त्यागपत्र देना उचित समझा।

उन्होंने स्पष्ट किया कि बहुमत खोना एक बात है और राष्ट्रविरोधी ताकतो को प्रोत्साहन दना दूसरी बात है। यदि डा० फारूक बहुमत न खोते तो यह जरूरी नही कि दूसरे कारणों के आधार पर कार्रवाई न की जाती।

आर्य समाज हजूरी बाग (काश्मीर)

के पुनर्निर्माणार्थ अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देने में शीघ्रता की जाय।

हजूरी बाग (काशमीर) के ध्वस्त आर्य समाज मन्दिर एव देवकी कन्या विद्यालय भवन के पुनर्निर्माणार्थ सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले द्वारा प्रचारित धन की अपील पाठक अन्यत्र पढ़ेगे जिसका मे श्री मघोक जी ने अपने लेख मे भी भाव विभोरता पूर्ण समर्थन किया है।

उपद्रवियो द्वारा आर्य समाज की लाखो की सम्पत्ति का विनाश जहा दु खद एव निन्दनीय है वहा समष्टिगत आर्य समाज के लिए भी एक गम्भीर चेतावनी है। उल्लेखनीय है कि आर्य समाज सदैव ही इस प्रकार की चेतावनियो का सामना करता आ रहा है जिसमें उसकी सगठन शक्ति, जीवन शक्ति, प्रभाव, आत्मावलम्बन एव कर्तव्य निष्ठा की भव्य झाकियो का दिग्दर्शन भी होता रहा है।

श्रीनगर मे दी गई यह चेतावनी एक प्रकार से उसके अस्तित्व को ही दी गई चेतावनी देख पडी है जिसकी एक क्षण के लिए भी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

अत. आर्य समाजो, आर्य जनता, आर्य समाज के प्रेमी, हितैषी; धनी मानी, उदार इतर बन्धुओ को इस मन्दिर के शीघ्र से शीघ्र पुनर्निर्माणार्थ अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग देकर अपने एक बड़े कर्तव्य का पालन करना चाहिए और इस प्रकार आर्य समाज की परम्पराओं की न केवल रक्षा ही करनी चाहिए अपितु उनमे एक और भव्य कड़ी जोड़ने का यश और श्रेय प्राप्त करना चाहिए।

पुनर्निर्माण का यह कार्य सार्वदेशिक सभा के निरीक्षण, सहयोग और सहायता से ही सम्पन्न होना है। —रघुनाथ प्रसाद पाठक

श्रावणी पर्व

(आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री)

आर्यों के सामाजिक और वैयक्तिक जीवन मे पर्वों का सदा से स्थान रहा है। धरा पर सभी मानव जातिया किसी न किसी प्रकार का पर्व मनाती ही हैं। पर्व शब्द का अर्थ पूरक भी है और ग्रन्थि भी है। यह जहा आनन्द से पूरित करता है वहा ग्रन्थि होने से धारक भी है। ईख के रस को ईख की ग्रन्थि सुरक्षित रखती है और बास आदि की दृढता को उनकी गाठे स्थिर रखती हैं। इसी प्रकार शरीर की स्थिति स्थापकता शरीर की ग्रन्थियो द्वारा सुरक्षित हैं।

श्रावणी आर्यों के प्रसिद्ध पर्वो मे से एक महान् पर्व है। यह पर्व वैदिक पर्व है। इसका सीधा सम्बन्ध वेद के अध्यापन और अध्ययन करने वालो से है। गृह्यसूत्रोके अनुसार इस पर्वका सीधा सम्बन्ध वेद और वैदिको से दिखलाया गया है। यह पर्व जहा पर्व है वहा यह एक गृह कर्म भीहै। गृह्यसूत्रो के अनुसार श्रावण,कर्म भी इसी अवसर पर होताहै और उपाकर्म-वेदाध्ययन का प्रारम्भ होना है। चार मास वर्षा के होते है। इनमे बराबर वेदाध्ययन चलता रहना था और पौष मे जाकर उत्सर्ग किया जाताहै। इसी आधारको लेकर आर्यसमाजने वेद सप्ताह का इस अवसर पर आयोजन कियाहै। वेद के अध्ययन के मार्ग को आचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रशस्त किया। अत उनके द्वारा स्थापित वेदप्रचारक आर्यसमाज का यह कर्त्तव्य ही है कि वह वेद के प्रचार को बढावे। श्रावणी नाम इस पर्व का क्यो है? इसका उत्तर यह है कि श्रवण नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा को यह पव होता है अत यह श्रावणी है। इसी श्रावणी पूर्णिमा के आधार पर ही इस मास का नाम भी श्रावणमास है। इस श्रावणी की भी विधि है और वह गृह्यसूत्रो और हमारी पर्व पद्धति मे लिखी है—जो प्रत्येक आर्य और आर्यसमाज को करनी चाहिए।

यह सब होने पर भी कुप्रथाओ और सुप्रथाओ के बीच मे चलने वाले आर्यो मे भी श्रावणी के वास्तविक स्वरूप के विषय मे कही-कही पर अनभिज्ञता ही दिखाई पडती है। हमारे पत्र-पत्रिकाओ मे भी ऐसी बाते कभी-कभी निकल जाती है। दीपावली के विषय मे राम की लका विजय के बाद की दीपावली कारण बताई जाती है और होली के विषय मे प्रह्लाद का सम्बन्ध जोडा जाता है। ये दोनो ही कल्पनाये भ्रात और गलत है। वस्तुत ये दोनो ही गृह्य कर्म हैं इसी प्रकार रक्षा बाधने की प्रथा को लेकर श्रावणी को रक्षा बन्धन पर्व के अतिरिक्त और कुछ नही समझा जाता है। राखी बाधने की प्रथा बीच मे किसी समय प्रारम्भ हुई। परन्तु श्रावणी तो वैदिक गृह्य कर्म है। वह बहुत पहले भी था और अब भी है।

एक दिन एक आर्य सज्जन कहने लगे कि श्रावणी के दिन ही चारो वेदो का ज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ मे मिला था इसलिए यह श्रावणी पर्व मनाया जाता है। मुझे बडा ही आश्चर्य हुआ। क्योकि जहा तक मेरा ज्ञान है मैंने ऐसी बातें कही नही पढी हैं। यह सम्भव भी नही। ऐसी-ऐसी अनेक कल्पनाये लोग बना लेते हैं। मेरे कहने का तात्पर्य यही है कि श्रावणी के विषय मे ऐसी कल्पनाओ को आधार नही बनाना चाहिए। उसके शुद्ध स्वरूप को समझना चाहिए। रक्षा बन्धन का लौकिक और सामाजिक कृत्य भी इसी दिन पडता है—यह ठीक है। परन्तु यह प्रथा इस पर्व का कारण नही।

श्रावणी और स्वाध्याय

जैसा ऊपर कहा गया है वेदाध्ययन का इस पर्व से सीधा सम्बन्ध है। श्रावणी मनाने का एक उत्तम तरीका यह है कि वेदादि सच्छास्त्रो का स्वाध्याय जीवन का अग होना चाहिए। परन्तु ऐसे पर्वो के अवसरो से प्रेरणा लेकर ही यदि हम इस प्रवृत्ति को बढावे तो अच्छा हो। आर्यो के जीवन का स्वाध्याय एक अग है। स्वाध्याय में प्रमाद का हमारे शास्त्रों मे निषेध है। स्वाध्याय (Self Study) का ज्ञान के परिवर्धन मे बहुत बडा महत्व है। शतपथ ब्राह्मण ११।५।७।१ में स्वाध्याय की प्रशसा करते हुए लिखा गया है कि स्वाध्याय करने वाला सुख की नीद सोता है, युक्तमना होता है, अपना परम चिकित्सक होता है, उसमे इन्द्रियो का सयम और एकारामता आती है और प्रज्ञा की अभिवृद्धि होती है। यहा पर ब्राह्मण ग्रन्थ का प्रत्येक शब्द महत्व से भरा हुआ है। पुन उसी ब्राह्मण मे ११।५।७।१० मे कहा गया है कि स्वाध्याय न करने वाला अब्राह्मण हो जाता है अत प्रतिदिन स्वाध्याय करना चाहिए और ऋक्, यजु, साम, अथर्व आदि को पढना चाहिए जिससे व्रत का भग न होवे। ब्राह्मण ग्रन्थ स्वाध्याय को अन्य व्रतो की भाति एक व्रत बतला रहा है। शतपथ ११।५।६।२ मे इस स्वाध्याय को ब्राह्मण कहा गया है और आगे चलकर बताया गया है कि इस यज्ञ की वाणी जुहू है, मन उपभृत है, चक्षु ध्रुवा है और मेधा स्रुवा है और सत्य इसका अवभृथ है। इस प्रकार स्वाध्याय की शास्त्रो मे महती महिमा गाई गई है। ऋग्वेद मे स्वय इस का सुन्दर वर्णन है। वर्षा काल मे मेढक बोलते है। एक की बोली को दूसरा दुहराता है। यह उपमा ऋग्वेद मे वेदपाठी ब्राह्मणो को दी गई है। क्योकि इस चातुर्मास्य के समय मे वेद को पढते है। वस्तुतः वेद का मण्डूक शब्द और यह उपमा निदर्शन का महत्व लिए है। इससे सुन्दर सम्मिश्रण वेदवाणी, मण्डूक की वाणी और मानसून-मेघस्थ वाणी का और कब हो सकना है। इस वर्षा की ऋतु मे वेदज्ञ के मुख से निकली वेदवाणी, मानसून की गडगडाहट से निकली मध्यमा वाणी और मेढकोकी अनिरुक्त अव्यक्त वाणी—परा पश्यन्ती मध्यमा, और वैखरी के अनिरुक्त रूप की प्रतीक है और इस वर्षा की ऋतु मे इन सबका समन्वय हो जाता है। अत स्वाध्याय की प्रवृत्ति को प्रत्येक आर्य को बढाना चाहिए—यही यहा पर मेरा निवेदन है।

यज्ञोपवीत और श्रावणी

श्रावणी के साथ नये यज्ञोपवीत के धारण और पुराने के छोडने की भी प्रथा जुडी हुई है। इसका भी एक प्रधान कारण है। गृह्यसूत्रो मे विभिन्न कर्मों के समय विभिन्न प्रकार से यज्ञोपवीत के धारण करने का विधान है। निवीति, उपवीति, प्राचीनावीति आदि सज्ञाय इसी आधार पर हैं। यह भी एक गृह्यसूत्रो के आधार पर परिपाटी है कि प्रत्येक प्रधान उत्तम यज्ञ याग आदि कर्मो के समय नया यज्ञोपवीत धारण किया जावे। उसी आधार की पोषिका यह श्रावणी पर यज्ञोपवीत बदलने की प्रथा भी है। यज्ञोपवीत का आर्यों के सस्कार और कर्मकाण्ड मे बडा ही महत्त्व है। यज्ञोपवीत के तीन धागे गले मे पडते ही वह पितृऋण, देवऋण और ऋषि ऋण आदि कर्त्तव्यो से अपने को बधा हुआ समझने लगता है। यहा उपनयन, यज्ञोपवीत, व्रत आदि पद इस सम्बन्ध मे विशेष महत्व के हैं। आचार्य कुल मे विद्यार्थी लाया जाता है—इस कर्म पूर्वक अत यह उपनयन है। यज्ञ आदि उत्तम कर्मों के लिए विद्यार्थी इससे प्रतिज्ञात और अधिकृत होना है अत यज्ञोपवीत है। इससे अनुशासन और व्रतो मे पालन की प्रतिज्ञा मे बद्ध होता है अत यह व्रतबन्ध है। वेदो मे भी इस यज्ञोपवीत धारण का वर्णन है। उसी को लेकर अन्यत्र शास्त्रो मे इसका पल्लवन किया गयाहै। ऋग्वेद १०।५७।२ मन्त्र मे कहा गयाहै कि "जो तन्तु यज्ञोपवीत-तन्तु यज्ञो का प्रसाधक है और विद्वानो मे आतत है उसको हम धारण करे। यद्यपि इस मन्त्र मे बहुत से तथ्य छिपे हैं परन्तु विस्तार भय से यहा पर उनका वर्णन नही किया जा रहा है।

अखिल विश्व को आर्य कैसे बनायें

—डा० एम एस. निवालकर देहलवी

आर्य समाज ही एक धार्मिक योग्य संस्था है जो वेदो के आधार पर अखिल विश्व मे वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार कर मानव का कल्याण कर वदिक धर्म की स्थापना कर सकता है क्योकि वैदिक धर्म ही विज्ञान और आध्यात्मिकता की कसौटी पर पूर्ण रूप से खरा उतरा है, उसका प्रचार कर सकल विश्व को आर्य बनाना वेदो के आदेशानुसार अत्यन्त आवश्यक है अन्यथा अणुस्पर्धा के युग मे अणुरूपी बारूद पर बैठी हुई दुनिया का किसी भी समय विस्फोट होकर राख होने में देर न लगेगी कृण्वन्तो विश्वमार्यम"इस वेदवाक्य को पूर्ण किए बगैर दुनिया को नाश से बचाना असभव है।

(१) आर्य जन सच्चे आर्य बनें

इस समय आर्य समाजी तो ऋषि दयानन्द के काल से अधिक सख्या मे हैं जिसका हमे गर्व है लेकिन खेद इस बात का है कि यदि विश्लेषण कर देखा जाय तो ऋषि के समय से आर्य (श्रेष्ठ) की सख्या इस समय बहुत ही कम है कैसे ? देखिए प्रारम्भ काल मे किसी एकाध ग्राम मे या शहर मे एकाध आर्य समाजी होता था तो वह अपने निष्कलक आचरण से बहु-परिचित होता था और एक आर्य ही पूरे ग्राम या शहर को आर्य बनाने में सफल होता था, पहले थोडे आर्यजन थे लेकिन वे पूर्ण रूप से चरित्र के सच्चे आर्य हुआ करते थे वे अपने पूर्ण जीवन को आर्य समाज के लिए समर्पित कर शहीद होते थे, उदाहरणार्थ—प० लेखराम सिर्फ उर्दू फारसी पढे पुलिस कर्मचारी थे,ऋषि के सत्सग व उदबोधन से उनके जीवनका पूर्ण कायापलट हो गया वे अपने पूर्ण जीवन को आर्य समाज के शुद्धि कार्य व शास्त्रार्थ व उर्दू साहित्य निर्माण के लिए समर्पित कर शहीद हो गए, उन्होने तन, मन, धन तथा प्राणो की आहुति देकर अनेक मुसलमानों को शुद्धकर बहुसख्य आर्यों को पैदा कर आर्यसमाज रूपी वृक्ष को अपना रक्त सिंचित कर पल्लवित किया।

'एक आर्य शिक्षक की अदालत मे गवाही थी। गवाही देने के पश्चात जज साहब ने पूछा आप आर्य हैं शिक्षक के हा कहने पर जजसाहब ने आर्य शिक्षक के साक्षिनुसार निर्णय दे दिया। यह थी प्रारम्भ काल के एकआर्य की साख। जहा कहीं भी एक आर्य होता, उसके सच्चे आचरण से ख्याति पाकर सर्वविदित होता था। जजसाहब ने अपने फैसले मे लिखा था 'आर्य कभी झूठ नही बोलते इसीलिए एक गवाही ही पर्याप्त है, लेकिन आज के आर्य समाजी तो बहुत हैं लेकिन कमी है सच्चे आर्यों की।

भारत सरकार द्वारा—

अग्नि-होत्र (यज्ञ) पर अनुसंधान

प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने विज्ञान प्रौद्योगिकी नई दिल्ली को यज्ञ पर अनुसधान करने का आदेश दिया। पर्यावरण प्रदूषण के दूर करने में यज्ञ का महत्व असंग ही है। हैदराबाद के अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान के अधिष्ठाता श्री प० वेदभूषण १ अगस्त को मारीशस जा रहे हैं जहां वैदिक धर्म के प्रचार एव प्रसार मे योगदान करेंगे।

आर्य समाज हजूरी बाग, श्रीनगर (काशमीर)

कुछ जगती यादें

–श्री बलराज मधोक

६, ७ जून को देशद्रोही और अलगाव वादी तत्वो ने कश्मीर घाटी में हिन्दुओ के अनेक मन्दिरो तथा धार्मिक स्थानो पर हमले किए, उन्हे लूटा और जलाया और उन्हे अपवित्र किया। उनमे हजूरी बाग श्रीनगर का आर्य समाज और उसके द्वारा चलाए जाने वाले देवकी आर्य कन्या पाठशाला और आर्य समाज के पुरोहित श्री नेत्रपाल जी शास्त्री के निवास को पूरी तरह जलाया जाना विशेष रूप से उल्लेखनीय है। मेरा और मेरे परिवार का इस आर्य समाज मन्दिर के साथ गहरा सम्बन्ध रहा है और इस आर्य समाज की गतिविधियो का मेरे जीवन पर भी विशेष प्रभाव पडा है। इस कारण इस आर्य समाज मन्दिर को जलाए जाने के समाचार से मेरे मन मे अनेक बीती यादें जाग उठी हैं।

हजूरी बाग और वजीर बाग श्रीनगर के मीराकदल क्षेत्र मे जिसमे महाराजा के महल और सरकारी कार्यालय स्थित थे, के दो बडे आवास क्षेत्र थे, जिनमें प्रमुख रूप में पजाबी और डोगरा हिन्दुओ के मकान थे। उन्होंने यहा दो आर्य समाज मन्दिर बनवाए थे। वजीर बाग का आर्य समाज आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित था और हजूरी बाग का आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ। दोनो समाजो का कार्यकलाप तालमेल से चलता था। हजूरी बाग के आर्य समाज के पास स्थान काफी था परन्तु समाज मन्दिर का हाल बहुत छोटा था। इसलिए उसके साथ एक बडा हाल बनाने की योजना बनी। यही १९३० के आस पास का समय था। उस समय श्री चिरजीत लाल मधोक जी वानप्रस्थी हजूरी बाग आर्य समाज के प्रधान थे और मेरे पूज्य पिता श्री जगन्नाथ जी मधोक उसके मन्त्री थे। इन्होने तथा समाज के अन्य सदस्यों ने घर घर जाकर मन्दिर की नई इमारत के लिए धन इकट्ठा किया और इस नए भवन का निर्माण किया। इस भवन का हाल उस समय श्रीनगर का लगभग सबसे बडा हाल था। जिसकी दीवारो पर लकडी के पैनल लगे थे और छत पर लकडी की मीनाकारी थी। मैंने हिंदुस्तान मे कम ही ऐसे आर्यसमाज मन्दिर देखे हैं जिनका हाल इतना भव्य और दिलकश हो। इसके साथ ही एक छोटी सी यज्ञशाला थी और आर्य समाज के पुरोहित के निवास के लिए अलग मकान था। पुराने भवन को अतिथिगृह मे परिवर्तित कर दिया गया था।

इस आर्य समाज के वार्षिक उत्सव निकटवर्ती हजूरीबाग मे हुआ करते थे। वहा चीनारो के पेडो के बीचो बीच एक विशाल शामियाना लगाया जाता था और तीन दिन तक उसमे श्रीनगर के सभी आर्य जन परिवारो सहित उमड पडते थे। लाहौर के प्रमुख आर्य नेता और विद्वान इन उत्सवो मे भाग लिया करते थे। मैंने पहले पहल १९२८ मे पजाब केसरी लाला लाजपत राय का भाषण इसी आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव के अवसर पर सुना था। गर्मियो के दिनो में, रावलपिण्डी और जम्मू से अनेक हिन्दू परिवार श्रीनगर आ जाया करते थे। इस कारण गर्मियों मे इसके उत्सवो मे विशेष रौनक रहती थी। हम सभी भाई बहन इसके उत्सवों मे नियमित रूप में भाग लिया करते थे। इसमें नियमित रूप से भाग लेने वाले अन्य लोगो में फिल्म अभिनेता बलराज साहनी के पिता श्री हरबस लाल साहनी भी होते थे। मधोक परिवार के सहयोग से इस आर्य समाज के साथ एक कन्या पाठशाला भी चलती थी जो प्रगति करते करते श्रीनगर की बेहतरीन शिक्षा संस्था बन गई। बाद में डी ए वी कालेज श्रीनगर के उपाचार्य के रूप मे मुझे भी इसमें विशेष रुचि लेने का अवसर मिला।

इतने बडे और भव्य भवन समूह को पुलिस की मौजूदगी मे जलाकर राख कर देना इस बात का प्रमाण है कि कश्मीर मे ६ और ७ जून को जो कुछ हुआ वह एक गहरे षडयन्त्र का परिणाम था जिसमे कश्मीर की तत्कालीन फारूख अब्दुल्ला सरकार का भी हाथ था। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल वानप्रस्थी श्री ओम्प्रकाश त्यागी तथा अन्य आर्य नेताओ के शिष्ट मडल को फारूख अब्दुल्ला द्वारा दिए गए उत्तर से भी यही बात झलकती है। शेख फारूख का श्री रामगोपाल जी को यह कहना कि आप आर्यसमाज मन्दिर का पुनर्निर्माण न करें क्योंकि लोग इसे नही चाहते "और इसे कोई फिर जला देगा इस बात का सकेत देना है कि फारूख नही चाहता कि कश्मीर घाटी मे कोई हिन्दू मन्दिर या आर्य समाज कायम रहे।

कश्मीर घाटी वैदिक हिन्दू सस्कृति का अतिप्राचीन काल से केन्द्र रहा है। घाटी के बीचो बीच वितस्ता (झेलम) नदी के तीर पर पहाडी पर स्थित शंकराचार्य का मन्दिर और सारी घाटी मे फैले हुए मार्तण्ड मन्दिर जैसे धर्म स्थानो के अवशेष इसी बात के प्रतीक हैं। वर्तमान काल मे कश्मीर घाटी मे जो हिन्दू मन्दिर बने उनमे हजूरीबाग आर्यसमाज का एक प्रमुख स्थान रहा है। इसका पुनर्निर्माण होना ही च हिए और सारे आर्य जगत को इसमे अपना योगदान देना चाहिए।

आर्यसमाज मन्दिर, हजूरी बाग श्रीनगर (कश्मीर) के पुनः निर्माण हेतु सभी आर्य समाजों तथा आर्य जनता से अपील

७ जून ८४ के उपद्रव मे खालिस्तान समर्थक सिखो तथा मुसलमानो ने आर्य समाज मन्दिर श्रीनगर तथा देवकी आर्य पुत्री पाठशाला को जलाकर राख कर दिया। समाज के पुरोहित नेत्रपाल शास्त्री का घर इस अग्नि काण्ड मे भस्म हो गया। उनके पास कोई कपडा तथा बर्तन भी नही बचे। आर्यसमाज का अग्निकाण्ड मे ५६ लाख का नुकसान हुआ।

श्रीनगर मे रहने वाले अल्पसख्यक हिन्दुओ का मनोबल बनाये रखने के लिए इस समाज मन्दिर के पुन निर्माण का कार्य शुरु कर दिया गया है।

सभी आर्य समाजो तथा आर्य जनता से अपील है कि इस पुण्य यज्ञ मे अधिक से अधिक दान देने की कृपा कर। दान दाताओ के नाम सार्वदेशिक मे प्रकाशित किये जायगे। मावंदेशिक सभा ने इस कार्य के लिए अलग फण्ड की स्थापना की है।

रामगोपाल शालवाले
सभा-प्रधान

जब परमाणु संयंत्र ठप्प हो जायेंगे

न्यूयार्क ८ जुलाई। शताब्दी के अन्त तक दुनिया के सभी परमाणु ऊर्जा केन्द्र शायद ठप्प हो जायेंगे और उनकी अहमियत मिस्र के निष्क्रिय पिरामिडो से अधिक कुछ नही रह जायेगी।

कई अमेरिकी वैज्ञानिको तथा अर्थ शास्त्रियो का मत है कि शायद आणविक ऊर्जा हासिल करने की इच्छा का गला इसके पूरी तरह विकसित होने से पहले ही घोट देना पडेगा।

उनका कहना है कि आणविक ऊर्जा अन्य स्रोतों से प्राप्त ऊर्जा से महगी होने के साथ ही खतरनाक भी है। रेडियोधर्मी विकिरण से इसमे काम करने वालो पर स्थाई असर पडता है, जिसका इलाज सम्भव नही है।

अर्थशास्त्री श्री चार्ल्स कोमेनाफ का कहना है कि इन ऊर्जा केन्द्रो ने आर्थिक कारणो से दम तोडना शुरु कर दिया है। उन्होने यह भी कहा है कि एक तरफ से विश्व आणविक ऊर्जा के शिखर पर पहुच चुका है और अब इसमे विकास मुमकिन नही है।

एक अन्य अर्थशास्त्री श्री जे० गोल्ड ने कहा है कि १९५० मे आइजन हावर प्रशासन द्वारा आणविक ऊर्जा की वकालत करना और इन सबके लिए एक उपहार' को सजा देना बिल्कुल गलत साबित हो गया है। दरअसल इस क्षेत्र मे हम आगे बढकर भी आगे नही बढे हैं।

आइजन हावर के समय से १९७०तक इस क्षेत्रमे बहुत खर्च किया गया ताकि अमेरिका गैर साशलिस्ट देशो पर प्रभुत्व बना रहे।

अर्थशास्त्रियों का मत है कि आणविक ऊर्जा केन्द्र के निर्माण पर आने वाले खर्च से कही अधिक खर्च सुरक्षा प्रबन्धो और उसके रख-रखाव पर आता है। यह सब मिलाकर इन केन्द्रों मे तैयार बिजली की कीमत अन्य स्रोतो से मिलने वाली बिजली से कई गुना ज्यादा हो जाती है।

कुछ वैज्ञानिको का कहना है कि आणविक ऊर्जा केन्द्रो मे अगले दस वर्ष मे किसी दुर्घटना की पचास प्रतिशत आशका है। ऐसी किसी दुर्घटना की स्थिति मे कम से कम अमेरिका के सभी परमाणु सयन्त्र तुरन्त बन्द कर दिए जायगे। इससे लगभग सात अरब डालर के घाटे का अनुमान है।

अमेरिका मे इस समय १५ सयत्र (रिएक्टर) निर्माणाधीन हैं और आज के हालात को देखते हुए प्रेक्षको को नही लगता कि इनमे से अधिकतर मे कभी उत्पादन शुरु हो सकेगा।

वैज्ञानिको का अनुमान है कि किसी सयन्त्र (रिएक्टर) को उसकी जिन्दगी पूरी होने के बाद भी तोडना सम्भव नही होगा। विकिरण के खतरे को देखते हुए इसके लिए दस से तीस साल तक इन्तजार करना पड सकता है।

उनका कहना है कि इन सयन्त्रो की मरम्मत भारी खर्च की वजह से नही की जा सकती है और सदी के अन्त तक ये सभी दुनिया के आधुनिक पिरामिड हो जायगे।

मारविन रेजनिकाफ ने अपनी हाल मे प्रकाशित पुस्तक मे लिखा है कि इस समय लगभग सौ स्थानो पर तीन लाख साठ हजार टन कचरा इकट्ठा हो गया है, जिसको तत्काल कही दूर ले जाकर जमीन मे दबाने की जरूरत है। नवभारत ९-७-८४

निःशुल्क अन्तर्जातीय विवाहों के लिए सम्पर्क करें

वेदपाल शास्त्री सयोजक
अन्तर्जातीय विवाह विभाग
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन
रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२ फोन २७४७७१-२६०९८२

पुस्तक-समीक्षा

महाभारत सूक्ति सुधा
लेखक—प० चन्द्रभानु, सिद्धांत भूषण
साईज २०×३०=१६ पेजी
प्रकाशक—गोविन्द राम हासानन्द, नई सडक दिल्ली-६
मूल्य ४०/- रुपए

दिल्ली के आर्य जगत मे प० चन्द्रभानु जी गत ५० वर्षों तक पौरोहित्य के क्षेत्र मे प्रसिद्ध रहे आप इस क्षेत्र में उस समय आए जब आर्य समाज का पुरोहित केवल पुरोहित न होकर उपदेश शास्त्रार्थ करने मे सक्षम और वैदिक सिद्धांतों के प्रतिपादन मे पूर्ण एव समर्थ होता था यही कारण है कि पण्डित जी अपने कर्मकाण्ड के साथ साथ सस्कृत साहित्य के क्षेत्र में भी अपनी लेखनी के साथ उतरे। श्री चन्द्रभानु जी के प्रस्तुत ग्रन्थ में महाभारत के विशालकाय महाग्रन्थ से एक एक विषय पर अनेक श्लोको का सग्रह कर उनकी सक्षिप्त व्याख्या की गई है। जहा तक सूक्ति सुधा' शब्द का प्रयोग है वह अवश्य पाठक को अपनी ओर आकृष्ट करता है परन्तु अध्ययन करने पर उसे सूक्ति को ढूढने पर मरीचिका ही मिलती है, पुस्तक का आकार और प्रकार पाठक को अवश्य आकृष्ट करता है, परन्तु मूल्य क्रय करने से पूर्व विचारने को विवश कर देता है।

सत्यार्थ प्रकाश में उद्धृत वैदिक मन्त्र

सम्पादक—श्री डा० भूपेशचन्द्र सक्सेना, मेरठ कालेज, मेरठ
साईज २३×३६=१६
प्रकाशक आर्य समाज, सदर, मेरठ
मूल्य—सात रुपये पचास पैसे मात्र

प्रस्तुत १८२ पृष्ठ के ग्रन्थ मे सम्पादक डा० भूपेश ने उन सभी मन्त्रो को एकत्र किया है जो सत्यार्थ प्रकाश के निर्माण मे विषयो के अनुसार महर्षि दयानन्द ने वेदो से उद्धृत किए हैं। प्रत्येक समुल्लास का नाम देकर उसके अन्तर्गत सुलभ मन्त्रो को अर्थ सहित प्रस्तुत करने के साथ साथ अपनी टिप्पणी से पुस्तक में आकर्षण उत्पन्न कर दिया है। टिप्पणी सजोने मे सम्पादक के परामर्श दाता डा० निरूपण का योगदान रहा है जो सैद्धान्तिक सीमा की रक्षा करने मे समर्थ है।

प्रास्ताविकम मे डा० निरूपण ने स्वय स्वीकारा है कि महर्षि दयानन्द ने ग्रन्थो मे जो विचारमणि प्रदान किए हैं उन्हे इस ग्रन्थमे एक सूत्र मे पिरोने का प्रयास डा० भूपेश ने किया है और मार्गदर्शन डा० निरूपण ने।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

प्राप्ति स्वीकार

वैदिक भागवद गीता (दोहों में)

लेखक—डा० वेद प्रकाश
साइज—२०×३०—१६ पेजी
मूल्य ३ रुपये ५० पैसे
पृष्ठ सख्या-७२

गुरुद्वारों की पवित्रता बनाए रखने का सवाल

—दीवान वीरेन्द्र नाथ

पंजाब की दुखद घटनाओं की जड़ अगर पूरी तरह नहीं तो भी बहुत हद तक यह है कि गुरुद्वारों के अहातों और विशाल धन राशि का गलत इस्तेमाल किया गया। यह धन राशि हर साल करोड़ों रुपए की होती है और इसका दुरुपयोग वे राजनीतिक नेता करते हैं जो सिख समुदाय के ही नहीं बल्कि सारे पंजाब की जनता के कल्याण में वास्तव में कोई दिलचस्पी नहीं रखते।

श्रद्धालु लोग गुरुद्वारों में जो धन चढ़ाते है उसका इस्तेमाल बिना किसी झिझक के राजनीतिक कार्यों में किया जाता रहा है जिसका उद्देश्य अलगाव वादी गतिविधियों को बढ़ाकर राज्य को हथियाना होता है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी पर नियन्त्रण और अकाली पार्टी के नेताओं के बीच जो सम्बन्ध बना हुआ है, उसकी वजह से ही पंजाब की राजनीति में साम्प्रदायिकता आई है। यहां इन बातों को दुबारा बताना बेकार है कि किस तरह गुरुद्वारों के इलाके का इस्तेमाल हथियार जमा करने, अपराधियों और स्मगलिंग करने वालों आदि को आश्रय देने के लिए किया जाता रहा है।

अगर अब फिर से यही व्यवस्था कायम हो गई तो पुराना और खतरनाक रवैया जारी रहेगा। अकाली राजनीति और गुरुद्वारों पर कब्जा करने की नीति एक दूसरे पर इतनी अधिक निर्भर हो गई है कि इन पवित्र धार्मिक स्थानों को अगर फिर उन लोगों के हाथों में सौंप दिया गया जिन्होंने भिंडरा वाले को स्वर्ण मन्दिर की पवित्रता नष्ट करने की खुली छूट दी हुई थी तो यह स्थान फिर से अपराधियों के अड्डे बन जायेंगे।

अब सवाल यह है कि गुरुद्वारों के साथ जो भी दुखदायी बातें हुई हैं वे फिर से न हो सकें। इसके लिए क्या करना जरूरी है? इस सवाल का जवाब सिखों को स्वयं देना होगा। सिख बुद्धिजीवियों, खासतौर से उन लोगों को जिन्होंने प्रमुख नागरिक के रूप में भारत के राष्ट्रीय जीवन में अपना विशेष स्थान बना लिया है, ऐसी कार्य योजना पेश करनी होगी जिससे तर्क संगत आधार पर गुरुद्वारों के प्रबन्ध को फिर से संगठित किया जा सके। अगर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के सदस्यों की सूची पर ध्यान दें तो साफ पता चलेगा कि सिख समाज के जिन लोगों ने विशिष्ट सेवाएं की हैं और भारी नाम कमाया है, वास्तव में उनके प्रतिनिधि उस कमेटी में नहीं हैं। कमेटी के ज्यादातर लोग अनपढ़ राजनीतिक नेता हैं जो अपने अपने गांवों में राजनीति के स्तर पर कई तरह के सम्पर्क बनाकर कमेटी के सदस्य चुन लिए जाते हैं।

गुरुद्वारा कानून पुराना पड़ गया है

हमारे देश के लिए जरूरी है कि सिख समुदाय ऐसी व्यवस्था करे कि सिख समाज के, जिसमें पंजाब के बाहर के सिख और विदेशों में रहने वाले भारतीय सिख नागरिक भी शामिल हैं, महत्वपूर्ण सदस्यों को गुरुद्वारे के नियन्त्रण और प्रबन्ध के काम में शामिल किया जा सके। इस तरह यह बहुत जरूरी हो गया है कि जो गुरुद्वारा कानून बहुत पुराना पड़ चुका है उसको पूरी तरह नया रूप दिया जाय। क्योंकि सिखों के उन धार्मिक स्थानों का प्रबन्ध इस कानून के अन्तर्गत ही होता है और इस कानून में परिवर्तन लाकर ही सिख समाज के वास्तविक नेताओं के हाथों में प्रभावशाली रूप से गुरुद्वारों का प्रबन्ध सौंपा जा सकता है। प्रबन्ध के उस काम में बहुत सम्मानित सिख धार्मिक विद्वानों के अलावा विज्ञान टैकनोलोजी, उद्योग कारोबार, कानून, साहित्य पत्रकारिता, कला और चिकित्सा जैसे व्यवसायों में विशेष काम करने वाले सिखों तथा रिटायर्ड असैनिक व सैनिक अफसरों को शामिल किया जाए।

सैनिक सबसे आगे

एक उदाहरण से ही काम चल जाएगा। वह यह कि अन्य समुदाय के मुकाबले सिखों में प्रति व्यक्ति के हिसाब से सबसे ज्यादा संख्या में विशिष्ट भूतपूर्व सैनिक हैं। उनमें रिटायर्ड लैफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा और रिटायर्ड एयर चीफ मार्शल अर्जुन सिंह जैसे राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त लोग शामिल हैं। इसलिए क्यों न गुरुद्वारों के प्रबन्ध का ऐसा नया तरीका निकाला जाय जिससे ऐसे लोगों को अधिक संख्या में शामिल किया जाय जिनका सम्मान सिख भी करते हैं और अन्य भारतीय लोग भी करते हैं।

एक ऐसा तरीका निकाला जा सकता है जिसमें कमेटी के सदस्यों की नामजदगी हो, जो सरकार न करे बल्कि प्रमुख सिख लोगों के एक मण्डल के जरिये हो जिससे गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटियों में सम्मानित व रिटायर्ड प्रशासकों, न्यायाधीशों और विद्वानों को रखा जा सके। प्रमुख सिखों के इस मण्डल में उच्च अधिकारियों, राजदूतों, हाई कोर्ट व सुप्रीम कोर्ट के जजों और भूतपूर्व जजों को शामिल किया जाय। साथ ही कारोबार और उद्योगों के प्रतिनिधियों और प्रमुख सिख नागरिकों को शामिल किया जाय। इस मण्डल के द्वारा ही कमेटियों के सदस्यों को नामजद किया जा सकता है। अगर सिख समुदाय ऐसा करेगा तो उससे पवित्र गुरुद्वारों के प्रबन्ध के काम को ऊंचा उठाया जा सकता है।

एक नम्र सहजधारी सिख होने के नाते मैं यह कहना चाहूंगा कि सिख बुद्धिजीवियों को सबसे बड़ा काम यह करना है कि वे इस मामले पर गम्भीरता से विचार करके कोई ऐसा तरीका निकालें कि गुरुद्वारों की धनराशि का इस्तेमाल पवित्र गुरुओं के उपदेशों के प्रचार सिख समाज के लिए आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक, आर्थिक कल्याण तथा इन गुरुद्वारों के समुचित रख-रखाव पर किया जा सके।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के सदस्य ऐसे होने चाहिए कि जिन सिखों ने सिख समुदाय के ही नहीं, देश के भीतर व बाहर सारे भारत के लिए गौरव का काम किया हो, उनके प्रतिनिधि उसमें हों। गुरुद्वारों के आधे अनपढ़ राजनीतिक नेताओं को मैनेजर और प्रशासक के पदों से हटा कर उनके स्थान पर विशिष्ट योग्यता वाले सिखों को रखा जाय चाहे वे कोई भी हों, कहीं भी हों गुरुद्वारों के चुनाव के मौजूदा तरीके के अन्तर्गत ऐसे प्रमुख लोगों को चुनाव में जीतना असम्भव होगा इसलिए बुद्धिमान और राजनीतिक सिख नेताओं की रहनुमाई में सिख समाज को नई व्यवस्था निकालनी होगी।

सिख बुद्धि जीवियों को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी का नया संविधान तैयार करने में कठिनाई नहीं होनी चाहिए जिससे पेशेवर राजनीतिक नेताओं और सभी राजनैतिक पार्टियों के सदस्यों को इस कमेटी के चुनाव में खड़े होने के अयोग्य माना जाय। इसके लिए ऐसी योग्यताएं निश्चित की जाएं कि सिख समाज की विशिष्ट सेवा करने वाले लोग ही चुनाव लड़ सकें। चुनाव में वे ही लोग उम्मीदवार बन सकते हैं जिनकी विशेष योग्यताएं व सफलताएं रही हों। पंजाब से बाहर रहने वाले सिखों और विदेशों में रहने वाले भारतीय सिख नागरिकों को भी इस कमेटी में पर्याप्त प्रतिनिधित्व पाने की व्यवस्था होनी चाहिए।

शुरू में नामजद

शुरू में कमेटी के सदस्यों को नामजद किया जा सकता है। लेकिन यह काम सरकार को नहीं करना चाहिए सम्मानित सिखों का एक चुनाव मण्डल बनाया जाय जो सदस्यों को नामजद करें। इस चुनाव मण्डल में सम्मानित सन्त हो सकते हैं। इस समय सभी जगह सम्मानित ऐसे २२ सन्त हैं। उनके अलावा विद्वानों, सिख शिक्षा शास्त्रियों, रिटायर्ड चीफ जस्टिस, रिटायर्ड राजदूतों और सेनाओं के प्रमुख अफसरों को शामिल किया जा सकता है।

प्रमुख सिखों की यह समिति गुरुद्वारों के प्रबन्ध के लिए चुनाव के तरीके को नये सिरे से संगठित करने की कोशिश करे। गुरुद्वारों के नियन्त्रण का काम ऐसे सिखों को सौंपा जाए जो राजनीतिक फायदों के लिए गुरुद्वारों का प्रबन्ध न करें बल्कि ऐसी व्यवस्था करें कि गुरुद्वारों के अहातों और धनराशि का इस्तेमाल विवेकहीन राजनीतिक नेता न कर सकें।

मांग मान ली है

जहां तक सरकार का सवाल है, उसके लिए यह ऐसा अवसर आ गया है कि वह देश के सभी ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण सिख गुरुद्वारों को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के नियन्त्रण में लाने की मांग को सिद्धांत रूप

(शेष पृष्ठ ११ पर)

(पृष्ठ ९ का शेष)

में भाग लें। लेकिन इस कमेटी के ढांचे मे पूरी तरह तबदीली करनी होगी ताकि कारोबार, उद्योग, विज्ञान, टैक्नोलोजी, कला, संस्कृति व सामाजिक सेवा के क्षेत्रों में जिन सिखों ने महाराष्ट्र, तमिलनाडु, गुजरात, मध्यप्रदेश, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, बिहार और मणिपुर तथा नागालैंड मे भी नाम कमाया हो उनको प्रतिनिधि बनाया जा सके।

मैं केशधारी सिख तो नहीं हूं लेकिन महान गुरुओ के उपदेशों पर चलने वाला पंजाबी जरूर हूं और मैं गुरुद्वारों के प्रबन्ध को फिर से संगठित करने के लिए नए संविधान की रूपरेखा के बारे मे कोई सुझाव तो नही दूंगा लेकिन यह आशा करता हू कि सम्मानित सिख पुरुष व महिलाए, जिन्होने सिख समाज की सेवा की है, इस बात को अच्छी तरह समझेंगे कि गुरुद्वारो का प्रबन्ध का काम पहले जैसे नहीं चल सकता। राष्ट्रीय जीवन के इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में लेफ्टीनैंट जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा, राजदूत गुरबचन सिंह, कवियित्री अमृता प्रीतम और प्रेमजीत कौर जस्टिस सरकारिया वाईस चांसलर गुरबक्स सिंह जैसे प्रमुख सिख नेताओ को आगे आकर इस दिशा में काम करना चाहिए।

(प्रेस एशिया इंटरनेशनल)

(१८-७-८४)

श्रावणी उपाकर्म के उपलक्ष्य में

१००) रुपये का साहित्य ७५) रुपये में उपलब्ध करें।

१. सत्यार्थ प्रकाश दर्पण २)
२. वेद और विज्ञान)७०
३. धर्म और उसकी आवश्यकता १)
४ हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि)५०
५. आर्य मैनीफेस्टो)६०
६ दौलत की मार)२५
७. यज्ञ और पूर्वसंध्या १)
८ वेद सन्देश)७५
९ वैदिक काल की सच्चाई १)५०
१०. राष्ट्र रक्षा के वैदिक साधन १)
११ सत्यार्थ प्रकाश आन्दोलन का इतिहास १)
१२. आर्य समाजों की सूचि १)२५
१३. स्वराज्य दर्शन १)
१४. आर्य महासम्मेलनों के प्रस्ताव)६०
१५. सार्वदेशिक सभा की उपलब्धियां)५०
१६. आर्य समाज क्या है उसने क्या किया)५०
१७. सार्वदेशिक सभा का संक्षिप्त इतिहास)७५
१८. आर्य समाज का परिचय १)
१९. हमारा राष्ट्र)२५
२०. बृहद विमान शास्त्र १०)
२१. दयानन्द सिद्धान्त दर्शन २५)
२२. सत्य की खोज १०)
२३. ऐतिहासिक चुनौती ५)
२४ वर्णव्यवस्था का वैदिक स्वरूप १)२५
२५. एशिया का वेनिस)७५
२६ आर्य समाज मौरिशस का इतिहास ५)
२७ ब्रह्ममुनि का जीवन चरित्र २)
२८ आर्य स्तोत्र)५०
२९ साम संगीत)५०
३० उत्तरा खण्ड के वन पर्वतो मे)६०
३१ न्याय दर्शन १)७५
३२ वैशेषिक दर्शनम् ३)
३३ भारत का एक ऋषि)१०
३४ पूजा किसकी)५०
३५ आर्य समाज)१५
३६ स्वतन्त्र विधेयक क्यो १)
३७ सत्यार्थ प्रकाश दो समुल्लास १)५०
३८. सार्वदेशिक सभा के निर्णय भाग १)४५
३९ सार्वदेशिक सभा के निर्णय भाग २ १)५०
४०. वेद और आर्य शास्त्रों में नारी १)
४१. राज धर्म)५०
४२ निज जीवन वृत वनिका)७५
४३. गोकरुणानिधि)२०

रुपये १००

कृपया आर्डर भिजवाते समय २५ प्रतिशत अग्रिम राशि भिजवाने का कष्ट करें ताकि पुस्तकें आपकी सेवा मे शीघ्र भिजवायी जा सकें।

ओमप्रकाश त्यागी मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन,
रामलीला मैदान, नई दिल्ली

पंजाब और काश्मीर के घटना-चक्र में आर्य समाज की भूमिका के सन्दर्भ पर अमृतसर में

सभा प्रधान का भव्य स्वागत

अमृतसर २९ जुलाई।

आर्य समाज शक्ति नगर द्वारा आयोजित जन सभा मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले का स्वागत करते हुए समाज के मन्त्री श्री रामरखा मल ने कहा कि पिछले ढाई वर्षों में उग्रवादियो की चपेटमे घिरे हुए पंजाब तथा मारपीट की विध्वंस लीलासे मुक्त कराने मे जो शानदार भूमिका आपने निभाई है पंजाब और काश्मीर की जनता सदैव आभारी रहेगी। इस अवसर पर शक्तिनगर आर्य समाज के प्रधान लाला जगदीश राज जी तथा अन्य सम्भ्रान्त आर्य जनो ने प्रधान जी का फूल मालाओ से स्वागत किया।

इस अवसर पर श्री रामगोपाल जी ने अपने डेढ घन्टे के विस्तृत भाषण मे देश की वर्तमान स्थिति मे आर्य समाज द्वारा की गई सेवाओ का विस्तार से वर्णन किया। उन्होंने कहा कि देश भर मे आर्यसमाज ही एक ऐसा संगठन है जो सही तरीको से भारतवासियो का मार्गदर्शन कर सकता है।

गौर वर्ण कन्या चाहिए

पुत्र – शशि भूषण गोयल, शिक्षा—बी. ए करके दिल्ली विद्या पीठ से पाच वर्ष का रेगुलर कोर्स करके आयुर्वेदाचार्य, आगे पटना गवर्नमेंट आयुर्वेदिक कालेज मे बी ए एम. एस कर रहा है साथ मेडिकल प्रेक्टिशनर। कद आयु वगैरा ५'-१०" स्वस्थ, २८ वर्ष रंग सांवला, कट्स बहुत अच्छे।

सुयोग्य वर की आवश्यकता

पुत्री सुनीता कुमारी, शिक्षा बी ए करके बी एड कर रही है ला मे भी दाखिला लिया हुआ है। कद आयु वगैरा ५ ४।।" इकहरा बदन रंग गोरा, कट्स बहुत अच्छे। घर के कार्यो मे बहुत निपुण।

पता— डा० भारत भूषण गोयल
पोस्ट – रेहला, जिला—पलामू (बिहार)
स्टेशन गढवा रोड जकशन ८२२१२४

बांग्लादेश के हिंदुओ को कई रियायतें मिलीं

ढाका १ अगस्त। बाग्लादेश राष्ट्रपति हुसैन मुहम्मद एरशाद ने शत्रु सम्पत्ति कानून मे व्यापक सशोधन का आश्वासन दिया है।

बांग्लादेश के हिन्दुओ के पहले राष्ट्रीय सम्मेलन के उदघाटन भाषण में राष्ट्रपति इरशाद ने डेढ़ करोड़ से ज्यादा हिन्दुओ के लिए कई रियायतो की घोषणा की।

राष्ट्रपति एरशाद ने कहा कि शत्रु सपत्ति कानून को लचर बनाया जायगा और इसमे अदालती हस्ताक्षेप की गुंजाइश बढ़ाई जायगी। इसके अलावा हिन्दुओं की जब्त सपत्ति पर गैरकानूनी कब्जे खत्म करायेगे और तीर्थयात्रा के लिए भारत जाने वालो को ज्यादा विदेशी मुद्रा मुहैया कराई जाएगी। साथ ही हिन्दुओ के तमाम श्मशान घाट भी वापस किए जायेंगे। सरकार ने सभी परम्परागत श्मशान घाट अधिगृहीत कर लिए थे।

राष्ट्रपति एरशाद ने घोषणा की कि सरकार शीघ्र ही एक संस्कृत विश्व विद्यालय स्थापित करेगी। ढाका के जगन्नाथ (हिन्दू)कालेज के दूसरे होस्टल के लिए जमीन और पैसा देगी और कालेज के अन्दर सभागार बनाएगी।

राष्ट्रपति ने कहा कि हिन्दुओ से मुझ काफी स्नेह और प्यार मिला। उनके प्यार से मैं अभिभूत हू और इससे ही मुझ सोनार बाग्ला के मजबूत बनाने की प्रेरणा मिलती है।

उन्होंने कहा अभी कई बोलने वालों ने पिछली सरकारो द्वारा हिन्दुओ पर जोर जुल्म की शिकायतें की। मुझे दुख हुआ। यह मेरे लिए भी शर्म की बात होगी कि, बाग्लादेश राष्ट्रपति के रूप मे मैं अपने देश के अल्प सख्यकों को आम नागरिक अधिकार न दिला सकू। मैं सोच भी नही सकता कि बांग्लादेश का कोई नागरिक डर और असुरक्षा में जी रहा है। मैं अल्प सख्यको बहुसख्यको मे भाई चारे की कोशिश करता रहूगा। साथ-साथ रहने की हमारी परम्परा रही है और आजादी की लडाई में हिन्दुओं ने कन्धा से कन्धा मिलाकर इसमें भाग लिया है।

सम्मेलन बाग्लादेश हिन्दू कल्याण ट्रस्ट बोर्ड ने बुलाया था। शुरू में इसके अध्यक्ष सुनील गुप्त ने सरकार से ऐसे उपाय करने की मांग की ताकि हिन्दुओ के मन में बैठा डर खत्म हो और वे भी बहुसंख्यको की तरह आजादी का लाभ उठा सकें।

अश्लील पोस्टरों

नई दिल्ली ३० जुलाई। दिल्ली प्रदेश भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा के सदस्यों ने दिल्ली में अश्लीलता विरोधी अभियान के अन्तर्गत कई सिनेमाघरो के बाहर अश्लील चित्रों पर कालिख पोती।

इस अभियान मे श्रीमती शकुन्तला आर्य, श्रीमती मोहिनी गर्ग, श्रीमती कमला मल्होत्रा श्रीमती लक्ष्मीकान्ता सरीन एवं श्रीमती इन्दिरा पसरीचा ने भाग लिया।

महिला मोर्चा के सदस्यो ने कनाट प्लेस चाणक्यपुरी एव कमला मार्किट स्थित सिनेमा गृहों पर प्रदर्शित अश्लील चित्रों पर कालिख पोती। श्रीमती शकुन्तला आर्य ने कहा कि ऐसे चित्रों से युवा वर्ग पर खराब प्रभाव पड़ता है।

सार्वदेशिक प्रेस पटौदी हाउस दरियागंज नई दिल्ली-२ में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सृष्टिसम्वत् [१९७२९४९०८५] वर्ष ११ अंक ३७]
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
भाद्रपद कृ० ७ स० २०४१ रविवार १९ अगस्त १९८४
दयानन्दाब्द १६० दूरभाष : २७४७७१
वार्षिक मूल्य (१५) एक प्रति ४० पैसे

अजमेर में वेद वेदांग विद्यालय की स्थापना विषयक प्रस्ताव के क्रियान्वयन पर सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले का परोपकारिणी सभा के प्रधान श्री स्वामी ओमानन्दजी सरस्वती से पत्राचार

दिल्ली ८ जुलाई १९८४

सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले ने श्री स्वामी ओमानन्द जी को एक पत्र भेजकर पूछा है कि इस विद्यालय की स्थापना के सन्दर्भ मे परोपकारिणी सभा द्वारा क्या कार्यवाही हुई है ? वा क्या कार्यवाही की जाने वाली है ?

उल्लेखनीय है कि महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर के अवसर पर सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री शालवाले ने महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी की यादगार को सदैव बनाए रखने के लिए इस अवसर पर निर्मित विशाल यज्ञशाला की सार्थकता प्रतिपादित करने के लिए इसके साथ एक वेद वेदांग विद्यालय की स्थापना का प्रस्ताव किया था जिसमे लगभग १० विद्यार्थी वेद वेदाग महाभाष्य और व्याकरण का अध्ययन कर और इस प्रकार प्रचारार्थ वैदिक विद्वान तैयार किए जाय । प्रस्ताव मे यह भी व्यवस्था करने का प्रावधान किया गया था कि इस कार्य के लिए २ विद्वान पडितो की सेवाए प्राप्त की जाये जिससे कि अध्यापन के साथ साथ नित्यप्रति यज्ञशाला मे हवन-यज्ञ की व्यवस्था नियमित रूप से चलती रहे ।

इस पत्र की लिपि श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी तथा श्री श्रीकरण जी शारदा को भी भेजी गई है ।

पृथ्वीराज शास्त्री
कार्यालय-सचिव
सार्वदेशिक सभा

पाक द्वारा मरे हुए भिंडरां को जिन्दा बताना शरारतपूर्ण

भिंडरा दोबारा जिन्दा हो सकता है तो मृत पाकिस्तानी भी जिन्दा हो सकते है : इन्दिरा

अकाली नेताओं की बहिष्कार अपील की कड़ी निन्दा

नई दिल्ली, ९ अगस्त प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने आज लोकसभा मे स्पष्ट किया कि जरनैलसिंह भिंडरावाला मर चुका है और उसके शव की शिनाख्त हो चुकी है । श्रीमती गाधी पाकिस्तान टेलीविजन द्वारा अभी तक भिंडरावाले की फिल्मे दिखाये जाने से सम्बन्धित एक प्रश्न के उत्तर मे हस्तक्षेप कर रही थी ।

प्रधानमन्त्री ने कटाक्ष किया कि यदि भिंडरावाला पुनजीवित हो सकता है तो पाकिस्तान के भी कुछ मृत लोग दोबारा जिन्दा हो सकते हैं ।

इससे पहले काग्रेस (इ) की श्रीमती ममना सुल्तान ने पाकिस्तान टेलीविजन के भड़काने वाले प्रसारणो की तरफ सरकार का ध्यान आकृष्ट किया था ।

श्रीमती गाधी ने बताया कि पाकिस्तान टेलीविजन पर पजाब की घटनाओ को तोड-मरोड कर शरारतपूर्ण तरीके से और उत्तेजक ढंग से दिखाया गया । श्रीमती गाधी ने एक लिखित उत्तर मे बताया दिल्ली के एक गुरुद्वारे की १० जून और १७ जून की घटनाओ के कुछ चुने हुए दृश्य पाकिस्तान टेलीविजन पर क्रमश १२ जून और १८ जून को दिखाये गये थे । प्रधानमन्त्री ने बताया कि इस तरह का कोई मामला जानकारी मे नही आया है कि दिल्ली मे कुछ जासूस पाकिस्तान के लिये टेलीविजन चित्र लेकर वहा भेज देते हैं ।

गृहमन्त्री पी० वी० नरसिंह राव ने बताया कि अखिल भारतीय सिख छात्र सघ के सचिव हरमन्दिरसिंह सन्धु उग्रवादियो के खिलाफ मुखबिर नही बने हैं ।

श्री राव ने एक प्रश्न के उत्तर मे बताया कि स्वर्ण मन्दिर मे सैनिक कारंवाई के बाद से अब तक सुरक्षा बलो और उग्रवादियो के बीच अधिनियम के अन्तर्गत ३१८ व्यक्तियो की पजाब मे १४ मुठभेड हो चुकी हैं ।

गृहराज्यमन्त्री श्री पी० वेकट सु बैया ने एक अन्य प्रश्न के उत्तर मे बताया कि पजाब मे पिछले तीन माह मे सशोधित राष्ट्रीय सुरक्षा नजरबन्द कानून लागू किया गया था । इनमे से ३३५ व्यक्ति ३१ जुलाई को नजरबन्द थे । उनके मामलो की समीक्षा करने का राज्य सरकार का इस समय कोई विचार नही है ।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सम्पादक—ओमप्रकाश पुरुषार्थी
सहसम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

हे गोमाता क्षमा करो

हे गोमाता क्षमा करो, ये सब लज्जा से नीचा है।
वो ही तुझको नोच रहे, जिनको तूने सींचा है॥
ये दिलीप नहीं, न कृष्ण कोई,
जो तेरे हित को प्राण तजें।
तू कामधेनु, ये कामी हैं,
निःस्वार्थ भाव से कौन भजे॥
सब तोड़ रहे स्वार्थ के फल,अब उजड़ा हुआ बगीचा है।
हे गोमाता क्षमा करो, ये सर लज्जा से नीचा है॥
नरो मे न अब और कोई,
जो तेरी रक्षा कर देंगे।
तुझे मान बिसाती मोहरा ये,
जहा चाहे वहा धर देंगे॥
हैं राजनीति की चालें सब,जिसमे मा तुझको खीचा हैं।
हे गोमाता क्षमा करो, ये सर लज्जा से नीचा है॥
है शासन कौरव जैसा अब,
और धर्म हो चुका पाडवो-सा।
तू द्रौपदी ज्यो चित्कार रही,
है गदा धनुष मृत गाडीव-सा॥
तेरी खाल खेचता दुःशासन, सर आज कृष्ण का नीचा है।
हे, गोमाता क्षमा करो, ये सर लज्जा से नीचा है॥

—प्रो० पी० शर्मा
गो ग्राम ११-७-८४

सात वर्षीय अखिल भारत गोरक्षा-गोपालन प्रचारपद-यात्रा

१९८१ से ८७ तक

कृषि प्रधान भारत मे गोरक्षा-गोपालन प्रचार करने के लिए भूदान दिवस १८ अप्रैल १९८१ को देहरादून से सातवर्षीय पदयात्रा पर उत्तर प्रदेश के श्री प्रकाशचन्द्र जोशी तथा कर्नाटक के श्री सिद्धराम गुरु जी निकले हैं। सन्त विनोबा जी की प्रेरणा, श्री योगिराज जी देवराहाबाबा जी का आशीर्वाद तथा अखिल भारत कृषि गो-सेवा सघ का सहयोग है। अब तक उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, केरल, तामिलनाडू, पाडीचेरी, दिल्ली, हरियाणा प्रदेशो की १७७०० कि० मी० पदयात्रा हुई। हम सबके लिए सौभाग्य की बात है कि २८ मई १९८४ को काला-आम्ब से पदयात्रियो ने हिमाचल मे प्रवेश किया है। प्रात ४ बजकर ३० मिनट से चलते है। ७ से ८ बजे तक पडाव पर पहुचते हैं, स्कूल, कालेज मे सभा,शाम को जनसभा करते हैं सभी से प्रार्थना है इस पुनीत कार्य मे सहभागी बनकर हर तरह से सहयोग प्रदान करेंगे, पदयात्रा जनाधारित चल रही हैं। सारे भारत मे पदयात्रा चलेगी।

गोरक्षा सत्याग्रह देवनार-बम्बई

सन्त विनोबा जी के आदेशानुसार ११ जनवरी १९८२ से एशिया प्रसिद्ध कत्लखाना देवनार-बम्बई मे श्री अच्युत देश पाडे जी के सयोजन मे गाय-बैल बचाओ सत्याग्रह चल रहा है। अभी तक डेढ लाख देश विदेश के भाई बहनो ने इस सत्याग्रह मे भाग लिया है। सत्याग्रह अखण्ड रूप मे चलते हुए सारे देश की किसान जनता तथा सरकार का ध्यान गाय बैल की हत्या बन्द करने पर दिला रहा है। प्रत्यक्ष सत्याग्रह मे भाग ले सकते हैं।

—संयोजक, गोरक्षा सत्याग्रह
सर्वोदय हास्पिटल घाट कोपर पश्चिम
बम्बई-

सार्वदेशिक पत्र के बढ़ते हुए आजीवन सदस्यों की सूची

६४१८ श्रीमती कौशल्या देवी बाटला बी १ ग्रीन पार्क नई दिल्ली-१६
११६५१—श्रीमती कुसुम मित्तल पत्नी श्री अजय कुमार गुप्त
४१, चन्द्रपुरी गाजियाबाद
११६५३—श्री रवीन्द्र बहल ६/२७ पुरानी डबल स्टोरी लाजपतनगर दिल्ली
११६५४— „ मजुंनदेव बबबा, ई १७५ १७६ अमर कालोनी „ „
११६५५—श्री ओमप्रकाश मनचन्दा
९/३०२ अमृतपुरी (गढी) लाजपत नगर, दिल्ली
११६५६—डा० तीर्थराम गुप्त, ई १४-१५अमर कालोनी लाजपतनगर दिल्ली
११६५७—श्री नरेश जुनेजा, ११ नेशनल पार्क लाजपत नगर दिल्ली २४
११६७६—श्री मन्त्री आर्य समाज आबूरोड आबू (राज)
६१४६— , होशियार सिह बगला न० १० छावनी कानपुर (उ० प्र०)
७५७९— „ बन्शीलाल खन्ना १३/१५९ स्वरुप नगर कानपुर (उ० प्र०)
११७०६— „ मन्त्री जी आर्य समाज एम १३३ ग्रेटर कैलाश II नई दिल्ली
८४६०— „ बोधराज श्री सी० के० कम्पनी लाहोरी गेट अमृतसर
११७११—श्रीमती हरबन्स देवी द्वारा श्री परसराम कौशल जालन्धर
११६९८—श्री कृष्णपाल व चन्द्रपाल ग्रा पो हाजीपुर बुलन्दशहर (उ. प्र.)
११७०९— „ महेशकुमार दामानी द्वारा जी० डी० डागा
१७६, अमर पार्क रिसरा, वेस्ट बगाल
११६५९—श्री हरि आत्मराम सामतानी कारनक रोड बम्बई
८४८१— „ श्री मोहनलाल अरोडा चेरिटेबिल ट्रस्ट अमृतसर
११७४६— „ मन्त्री जी आर्य समाज मन्दिर कलेक्टर कालोनी बम्बई
११७६१— „ परसराम डी धमेजा ६३०/६ कैलाश कुटीर बम्बई
११७६४— , विशनदास सन्याल आनन्द सागर बम्बई
११७६३— „ उत्तमचन्द कुकरेजा गोपी भनाया सोसायटी बम्बई
११७६४- , माखन सिह वामुकी पटेल ग्वाटसूर शाजापुर (म प्र)
११७६७— „ आर्यसमाज दयानन्द चौक जुमेराती भोपाल
११७६८—आर्य समाज बी० एच० ई० एल० भोपाल
८७८२—श्री गिरधारी लाल आर्य ग्राम चौरी चौरा गोरखपुर (उ०प्र०)
(क्रमश)

वेद सप्ताह

आर्य समाज दरिया गज दिनाक ११ से १८ ८ ८४ तक समाज मन्दिर में वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन कर रहा है। दिनाक १९ ८ ८४ को 'श्री कृष्ण जन्माष्टमी" का पर्व भी वैदिक परम्पराओ के अनुकूल मनाया जायेगा जिसमे गीता विषयक अनेको विवरण सुनने को मिलेंगे।

-बी० बी० सिक्का
प्रधान आर्य समाज दरियागज नई दिल्ली

श्रावणी पर्व पर ऋग्वेद भाष्य खण्ड अंग्रेजी में प्रकाशित

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत ऋग्वेद भाष्य के स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी कृत अंग्रेजी अनुवाद का तृतीय खण्ड टिप्पणी सहित (सम्पादक पण्डित ब्रह्मदत्त स्नातक एम. ए.) श्रावणी पर प्रकाशित हो गया है इसके पहले २ खण्डप्रकाशित हो चुके हैं।

सजिल्द ८१६ पृष्ठों की इस पुस्तक का मूल्य मात्र ६५ रुपए। प्रथम एव द्वितीय खण्डों का मूल्य ८०) मात्र।

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री कृत अथर्व सहिता का अंग्रेजी अनुवाद दो खण्डों में ११०) में हाल में प्रकाशित हो चुका है।

श्रावणी के उपलक्ष में वेद प्रेमियों एव संस्थाओं को रियायत

पता— सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, दिल्ली-२

सम्पादकीय

श्री कृष्ण के जीवन से शिक्षा

पाच हजार वर्ष से कुछ अधिक समय हुआ जब भारत का नेतृत्व श्रीकृष्ण जी के हाथ में था। उन्होंने देश का नेता होते हुए देश वासियो की सभी श्रेणियों के साथ वह व्यवहार किया जो आज के संसार के लिए अनुकरणीय है।

उनके क्रियात्मक जीवन पर हम तीन तरह से दृष्टिपात कर सकते हैं—

१ शारीरिक तौर पर वे इतने बलवान थे कि उनकी शक्ति का लोहा भीष्म पितामह जैसे ब्रह्मचारी भी मानते थे। शिशुपाल ने जब पाडवो की सभा मे उनका अपमान करना चाहा और इसी उद्देश्य से मुकाबले के लिए ललकारा तो उन्होने बिना कोई अगर मगर किए शिशुपाल का प्राणान्त कर दिया।

२—आध्यात्मिक रूप से वे इतना ऊचा स्थान रखते थे कि आज भी दुनिया की तमाम सभ्य जातिया गीता में दी हुई शिक्षा के सम्मुख नतमस्तक है। नैपोलियन व नैलसन बनने की इच्छा कहीं नहीं देखी जाती परन्तु कृष्ण बनने की इच्छा प्राय सभी मनुष्यो मे पाई जाती है।

३—सामाजिक उन्नति का उन्होंने इतना अच्छा उपदेश दिया है कि यदि हम उसे अपनाए तो हमारा भविष्य बहुत उज्ज्वल हो सकता है। उनके विचार मे सामाजिक उन्नति के लिए हरेक व्यक्ति का अच्छा होना आवश्यक था इसलिए उनका विश्वास था कि माता पिता का कर्त्तव्य है कि तैयारी करके सन्तान पैदा करें। इसकी उन्होने क्रियात्मक शिक्षा दी और वह यह थी कि रुक्मिणी से विवाह करने के अनन्तर जब दोनो मे सन्तान उत्पन्न करने की इच्छा उत्पन्न हुई तो दोनो ने सन्तान पैदा करने की तैयारी की और १०, १२ वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन किया और तब एक पुत्र उत्पन्न किया। वह पुत्र प्रद्युम्न ऐसा पैदा किया कि माता-पिता दोनों को उस पर गर्व था।

व्यक्ति में भी निर्धन व्यक्ति से उनके जैसा व्यवहार करना चाहिए।

उनकी वह शिक्षा वह समय था जो उन्होने सुदामा जैसे निर्धन के साथ किया। यदि आज दुनिया के धनवान अपना ऐसा व्यवहार बनालें तो Labour and Capital का झगड़ा समाप्त हो सकता है। सामाजिक उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि मनुष्य समाज के स्वार्थ के सामने अपने स्वार्थ को हेय समझे।

कृष्ण ने जब तय कर लिया कि उन्हें इस देश मे चक्रवर्ती राज्य स्थापित करना चाहिए तो उन्होंने इसके लिए विचार भी नही किया कि राज्य का राजा मुझे बनना चाहिए। यदि वे ऐसा करते तो वे इसके लिए उपयुक्त थे। परन्तु इसके जो उदाहरण वह प्रस्तुत करना चाहते थे वह प्रस्तुत नही हो सकता था। इसलिए उन्होंने जो किया उसका उदाहरण इतिहास मे नहीं मिलता।

गृह कलह से देश की शक्ति नष्ट नहीं करनी चाहिए इसके लिए भी जीवन शिक्षाप्रद हैं, उन्होंने जरा सन्ध से युद्ध नही किया। उन्हे मथुरा छोड़कर द्वारिका जाना पड़ा, इसे उन्होंने स्वीकार किया। परन्तु गृह कलह में नहीं उलझे। जरासंध के राज्य को देश के चक्रवती राज्य के अधीन होना चाहिए इसके लिए उन्होने इतनी बुद्धिमत्ता से काम लिया कि सिवा जरासंध के एक आदमी की जान की हानि नहीं हुई और उसका राज्य अधीनता मे आ गया।

अत्याचार और धीगा धीगी सहना पाप है। कृष्ण के जीवन का यह चित्र था। उन्होने कस का वध इसी पाप से बचने के लिए किया।

केवल शारीरिक बल और शिक्षा पर जो रणपटुता निर्भर है वह सामान्य सैनिक मे भी हो सकती है। सेनापतित्व ही योद्धा का वास्तविक गुण है। महाभारत आदि म एक भी अच्छे सेनापति का पता नही लगता। भीष्म या अर्जुन अच्छे सेनापनि न थे। श्रीकृष्ण के सेनापतित्व का कुछ विशेष परिचय जरासंध युद्ध से मिलता है। उन्होने अपनी मुट्ठी भर यादव सेना लेकर जरासंध की अगणित सेना को मथुरा से मार भगाया था।

कृष्ण की ज्ञानाजनी वृत्तिया सब ही विकास की पराकाष्ठा को पहुची हुई थी। वे अद्वितीय वेदज्ञ थे। भीष्म ने उन्हे अर्घ्य प्रदान करने का एक कारण यह भी बताया था। शिशुपाल ने इसका कुछ उत्तर नही दिया था केवल इतना ही कहा था कि वेद व्यास के रहते कृष्ण की पूजा क्यो ?

श्री कृष्ण मन से श्रेष्ठ और माननीय राजनीतिज्ञ थे। इसी से युधिष्ठिर ने वेदव्यास के कहने पर भी श्रीकृष्ण के परामर्श बिना राजसूय यज्ञ मे हाथ नही लगाया। स्वेच्छाचारी यादव और कृष्ण की आज्ञा मे चलने वाले पाडव दोनो ही उनसे पूछे बिना कुछ नही करते थे। जरासंध को मारकर उसकी कैद से राजाओ को छुड़ाना उन्नत राजनीति का अति सुन्दर उदाहरण है। धर्म राज्य स्थापन के बाद उसके शासन के हेतु भीष्म से राज्य व्यवस्था ठीक कराना राजनीतिज्ञता का दूसरा बड़ा प्रशंसनीय उदाहरण है।

कृष्ण की सब कार्यकारिणि वृत्तिया चरम सीमा तक विकसित हुई थी। उनका साहस उनकी फुर्ती और तत्परता अलौकिक थी। स्थान स्थान पर उनके शौर्य दयालुता और प्रीति का वर्णन मिलता है वे शांति के लिए दृढ़ता के साथ प्रयत्न करते थे और इसके लिए वे दृढ़ प्रतिज्ञ थे। महाभारत को टालने के लिए उन्होने जो यत्न किया वह जगदविख्यात है। वे सबके हितैषी थे। केवल मनुष्यो पर ही नही गो वत्सादि जीव जन्तुओ पर भी वह दया करते थे।

वह स्वजन प्रिय थे। पर लोकहित के लिए दुष्टाचारी स्वजनो का विनाश करने मे कुण्ठित न होते थे। कस उनका मामा था। उनके जैसे पाडव थे वैसे शिशुपाल भी था। दोनों ही उनकी फूफियो के बेटे थे। उन्होने मामा या भाई का लिहाज न कर दोनो को ही सजा दी। जब यादव शराबी हो उद्दण्ड हो गए तो उन्होंने उनको भी अछूता न छोड़ा।

श्रीकृष्ण आदर्श मानव थे। मानव का आदर्श प्रचारित करने के लिए उनका प्रादुर्भाव हुआ था। वे अपराजय अपराजित विशुद्ध पुण्यमय प्रेम और दयामय दृढ़ कर्मी धर्मात्मा वेदज्ञ नीतिज्ञ धर्मज्ञ लोक हितैषी न्यायशील क्षमाशील निरहकार योगी व तपस्वी थे। वह मानुषी शक्ति से काम करते थे परन्तु उनमें देवत्व अधिक था।

कृष्ण ने वेद प्रतिपादित उन्नत सर्वलोकहितकारी सब लोगो के आचरण योग्य धर्म का प्रचार किया। गीता कृष्ण की अनुपम देन है।

राष्ट्रीय धर्म: अन्तर्जातीय विवाह

जन्मगत जात-पात से देश और समाज का विनाश

दिल्ली ९ अगस्त।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने एक वक्तव्य मे कहा है कि भारत मे प्रचलित जन्मगत जाति व्यवस्था भारतवासियो के अन्दर छूत छात ऊच नीच और भेद भाव आदि अनेक सामाजिक कुरीतियो को जन्म देकर अतीत से विनाश का कारण बनी है। वर्तमान समय मे भी इसने देश के प्रजातान्त्रिक ढाचे को जर्जरित कर दिया है और इसके रहते देश की उन्नति होना सभव नही है। श्री शालवाले जी ने जोर देकर कहा कि समय आ गया है कि अब जन्मगत जाति पाति व्यवस्था का उन्मूलन कर देश भक्त और धर्म प्रेमी जनता राष्ट्रीय उत्थान के इस महत्वपूर्ण कार्य मे बढचढ कर भाग ले।

उन्होंने कहा कि आर्य समाज प्रारम्भ से ही जन्मगत जात पात की कुप्रथा के विरुद्ध सघर्ष करता रहा है और वैदिक वर्ण व्यवस्था के कर्म पर आधारित सिद्धात को ही सही मानता है। आर्य समाज की दृष्टि में जन्मगत जाति पाति व्यवस्था वैदिक धर्म का अग नही है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए इसने अपने नेता श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त के द्वारा केन्द्रीय असेम्बली मे अन्तर्जातीय विवाह नामक विधेयक प्रस्तुत कराकर उसे पारित कराया था।

श्री शालवाले ने बताया कि अन्तर्जातीय विवाहो के माध्यम से ही छुआ छूत और ऊच नीच की भावना समाप्त की जा सकती है। इसलिए आर्य समाजो की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने धर्म रक्षा महाभियान के अन्तगत विवाहो को एक आन्दोलनात्मक रूप देने का निश्चय किया है।

उन्होने समस्त राष्ट्रप्रेमी युवक और युवतियो से अपील की है कि वे अन्तर्जातीय विवाह करने का सकल्प करें और इस सम्बन्ध मे सहयोग हेतु सयोजक अन्तर्जातीय विवाह विभाग सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, रामलीला मैदान, नई दिल्ली से सम्पर्क करें।

पृथ्वीराज शास्त्री
कार्यालय सचिव, सार्व. सभा

सामायिक चर्चा–

मनुस्मृति वेदादि शास्त्र और वैदिक धर्म भारत की ही विश्व को देन है

जब इग्लैंड के लोग सत्रह वी शती मे भारत मे व्यापार करने आए तभी पादरी लोग भी भारत मे बाइबिल के प्रचारार्थ आए परन्तु जब उन लोगो को अनुभव हुआ कि भारत ज्ञान का भडार है तो पादरी लोगो ने सस्कृत पढनी शुरु की। सबसे पहले पादरी डल कन्सन ने भागवत का अनुवाद किया और अग्रेजो ने उसे पढा तो वहा के पादरियो मे दो दल बन गए।

एक दल कहता था कि यह ज्ञान भारत वर्ष का ही है और दूसरा दल कहता था कि भारत के ब्राह्मणो ने यूनानी पुस्तक 'जवर' तथा इजील के उन विचारो को चुरा कर एकत्र कर लिया है यहा तक कि डग्लस स्टुअर्ट ने 'ब्राह्मणो की जाल साजियाँ' नामक पुस्तक भी लिख डाली।

उस समय भारत मे ईस्ट इडिया कम्पनी का राज भारत मे कायम हो चुका था। इसलिए उसके डाइरेक्टरो ने लार्ड वारन हेस्टिंग्स को जो भारत का गवर्नर जनरल था पत्र लिखा कि भारत मे खोज करे कि क्या वास्तव मे भारत ज्ञान का भडार है ? इस पर हेस्टिंग्स ने जो पत्र कम्पनी को लिखा उसमे मनुस्मृति और वेदादि शास्त्रो को भारत की विश्व को देन अकित किया। पत्र का सम्बद्ध सदर्भ निम्न प्रकार है—

"भारत ज्ञान का भडार है। यहा की सभ्यता और धर्म अत्यन्त प्राचीन है। मनुस्मृति युरोपीय नीति और जस्टी नीति से भी पहले की है किन्तु हमारा कानून जो रोम न कानून पर आधारित है ये सब कानून मनुस्मृति से ही लिए गए प्रतीत होते हैं। मुझे तो ऐसा जान पडता है कि आरम्भ का धर्म शास्त्र (Code of laws) मनुस्मृति ही है। इत्यादि इत्यादि।

इसके परिणाम स्वरूप ईस्ट इण्डिया कम्पनी की ओर से हावल कमीशन हावल साहब की अध्यक्षता मे भारत के ज्ञान-विज्ञान शास्त्रो की खोज के लिए भारत भेजा गया। उसने जाच के बाद एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार की जिसका एक अवतरण इस प्रकार है—

"वैदिक धर्म (वेद) परमात्मा के दिये हुये सबसे प्रारम्भ का अत्यन्त पवित्र ज्ञान कोष है। वेदो मे अमूल्य उपदेश और ईश्वरीय ज्ञान भरा पड़ा है जिसको परमात्मा ने ब्रह्मा के मुख से मनुष्यो को प्रदान कर मोक्ष का मार्ग बताया है।"

इस रिपोर्ट को पाकर कम्पनी ने 'रायल एशियाटिक सोसाइटी' नामक सस्था स्थापित की जिसका मुख्य काम सस्कृत साहित्य तथा वेदादि ज्ञान की पुस्तको का आग्ल भाषा मे अनुवाद करना है।

(सार्व० दिसम्बर १९३३)

सुधारवादी इस्लाम और एक मुकदमा

'उच्चतम न्यायालय ने एक मुकदमे के सिलसिलेमे केन्द्र सरकार को नोटिस दिया है कि समूचे मुस्लिम पर्सनल ला को सविधान के खिलाफ मान कर रद्द क्यो नही कर दिया जाए। तलाक, शादी, जमीन-जायदाद की विरासत और गोद गए बच्चे के अधिकार— इन सब मामलो मे मुस्लिम कानून को एक पक्षकार ने चुनौती दी है और अदालत जानना चाहती है कि सरकार को इस विषय मे क्या कहना है ? जाहिर है कि यह एक ऐतिहासिक मुकदमा होगा। भारत के सारे नागरिको पर एक जैसा व्यक्तिगत कानून लागू हो यह बात भारतीय सविधान के नेक सलाहो वाले अध्याय मे १९५० से आज तक अकितहै। लेकिन नेक सलाहो पर अमल करने की कोई कानूनी मजबूरी क्योकि नही है और अल्पसख्यक समाजो के कट्टरपन्थी नेता क्योकि अपने दकियानूसी तौर तरीको से चिपके रहना चाहते हैं, और सवाल क्योकि वोट का है, इसलिए सरकार ने अखिल भारतीय व्यक्तिगत कानून बनाने मे कोई खास दिलचस्पी कभी नहीं दिखलाई है। पर अब उच्चतम न्यायालय ने जो सवाल पूछा है वह यह है कि अगर किसी समाज का व्यक्तिगत कानून भारतीय सविधान के मूल अधिकारो का उल्लघन करता हो तो क्या किया जाए ?

याचिका पुणे की एक सुन्नी मुस्लिम महिला श्रीमती सईद ने दायर की है, जो हमीद दलवई के सुधारवादी मुसलमानो का शहर है। उसमे लिखा है कि मैंने और मेरे पति ने शादी के बीस साल बाद छ महीने के एक बच्चे को १९७६ मे गोद लिया था। अब अगर उस पर मुस्लिम व्यक्तिगत कानून लागू किया गया तो बच्चे का भविष्य अनिश्चित हो जायेगा क्योकि उसकी हस्ती को मुस्लिम कानून स्वीकार ही नही करता। तलाक बहुविवाह आदि के सिलसिले मे मुसलमानो का जो कानून है वह निस्सन्तान बीवी को बहुत मुश्किल मे डालने वाला है। फिर जो सरकार सिर्फ महिलाओ को ज्यादा आजादी और ज्यादा बराबरी देने वाले कानून बनाती है, वह मुस्लिम महिलाओ के साथ नाइसाफी कर रही है। क्या यह उचित है कि मुसलमान होने की एक कीमत हमे यह चुकानी पडे कि हम भारतीय सविधान के हको से वचित हो जायें ?

सरकार का दृष्टिकोण अब तक यह रहा है कि जब मुस्लिम समाज खुद सुधार की माग करेगा, तभी हम कानून बनायेगे। एक अलिखित परम्परा यह बन गई है कि मुसलमानो के बीच कोई सुधारवादी आन्दोलन अगर चले तो हमदर्दी होते हुए भी प्रगतिशील हिन्दू उसे मदद न दे क्योकि इससे मुसलमानो को गलतफहमी होगी कि उनकी पहचान खत्म की जा रही है। इसलिए मुसलमानों के अन्दर से ही जब प्रगतिशील तूफान पैदा होगा और वह सारे समाज पर छा जाएगा, तब भारत सरकार जागेगी और मुस्लिम कानून को सुधारने वाला विधेयक वह ससद मे लाएगी। लेकिन सिखो का ताजा अनुभव बताता है कि जब आप किसी भी अल्पसख्यक समाज को अपने हाल पर छोड देते हैं, तो उसके प्रगतिशील ताजा-ख्याल, वैज्ञानिक-पसन्द लोग एक किनारे रह जाते हैं और सबसे प्रतिगामी लोग समाज के नेता बन जात है। इसलिए यह बात तो हमे किसी मौके पर स्वीकारनी होगी कि पूरे भारतीय समाज को बीसवी सदी मे लाने का जिम्मा पूरे भारत का है। इस जिम्मेवारी का ठेका अलग अलग समाजो के कठमुल्ला चौधरियो को नही दिया जा सकता। अगर हिन्दू समाज अपने सनातन महन्तो को इस मामले मे वीटो का अधिकार दे देता तो क्या हिन्दू विवाह और उत्तराधिकार कानून जवाहरलाल नेहरू के जमाने मे पास हो सकते थे ?

कुछ आवाजे पुणे की मुस्लिम महिला के हक मे उठी भी हैं। मार्क्सवादी पार्टी के ई एम एस. नम्बूदरिपाद ने पुणे-दम्पती को साहस के लिए बधाई दी है और कहा है कि मुस्लिम-समाज मे सुधार की चिनगारी सुलग चुकी है। लेकिन साथ-साथ आरोप लगा दिया है कि इन्दिरा काग्रेस प्रगतिशील इस्लाम को कभी बढावा नही देगी। शायद वे सही हैं। लेकिन ऐसे आन्दोलन की शुरुआत नम्बूदरीपाद केरल से ही क्यो नही करते जो भारत का सबसे जागृत राज्य है ? केरल की कोई न कोई मुस्लिम लीग हमेशा मार्क्सवाद से गठबन्धन करती रही है। क्या कारण है कि मार्क्स से इतने लम्बे सम्पर्क के बावजूद मुस्लिम-सुधार की लहर केरल मे भी प्रबल नहीं हो पारही?

ये विचार है जो सहयोगी नवभारत टाइम्स ने ११-७-८४के अंकमें व्यक्त किए हैं। एक विचार यहहै कि जब तक मुस्लिम समाज समान विधि सहिता से प्रशासित होना स्वीकार नही करता तब तक अन्य मामलो एव अपराधो पर मुस्लिम शरीयत के कानून ही मुस्लिम समाज पर लागू किए जाये।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

घर परिवारों में पारायण करने योग्य—

सामवेद आग्नेय काण्ड दोहा चौपाई में

भाष्यः-पं० विश्वनाथ आर्यविद्यामार्तण्ड एवं
पं० हरिशरण सिद्धान्तालंकार
[पद्यानुवादक—ओमदत्त भारद्वाज, एम ए (द्वय) सा० रत्न, बी एड]
४६, पूर्णानन्द भवन, जूना ब्यावरा, ब्यावरा (म प्र.) ४६५६७४

यह पद्यानुवाद मुख्यत वेद के उन श्रद्धालु परिवारो के लाभार्थ निर्मित किया गया है जो अपने घरो मे वेद भगवान की प्रतिष्ठा कर चुकने के बाद भी कुछ समझ न आ पाने के कारण वेद का नित्य स्वाध्याय आरम्भ नही कर पा रहे हैं। इस पद्यानुवाद का नियमित श्रद्धापूर्वक पारायण करने से वेदमन्त्रों का आशय समझ में आने लगेगा, इसके संगीत के माध्यम से आध्यात्मिक आनन्द प्राप्त होगा तथा इसकी सरल सुबोध व्याख्या शैली की सहायता से एक एक वेदमन्त्र के साथ पाठक या श्रोता का आत्मिक सम्बन्ध विकसित और घनिष्ठ होता चला जाएगा। इस प्रकार वेद का स्वाध्याय पूरे परिवार की दिनचर्या का स्थायी अंग बन सकता है।

विशेषताएं:—(१) इसमे साम मन्त्रो का शुद्ध आध्यात्मिक और भक्ति परक अर्थ मूल भाष्यो से ज्यो का त्यो पद्य रूप मे गायन के लिए उपलब्ध है।

(२) सामवेद के दो पृथक् पृथक भाष्य प्रत्येक मन्त्रके साथ पाए जाएगे। जिससे पाठको को एक मन्त्र के विषय मे दो विद्वान प्रख्यात भाष्यकारो की प्रतिभा—सामर्थ्य देखने और उनसे लाभान्वित होने का अवसर सहज ही प्राप्त हो सके। आधुनिक मुहावरे मे इस लाभ को 'टू इन वन' कहा जा सकता है।

(३) सामवेद आग्नेय काण्ड में कुल ११४ मन्त्रो का पद्यानुवाद कोई १००० पंक्तियो मे पूर्ण हुआ है। मन्त्रार्थ को सरल बनाए रखने हेतु इस आकार मे कमी करना कठिन होता।

(२) (i) मंगलाचरण के रूपमें सर्वप्रथम हरिगीतिका छन्द मे २८ पंक्तियो की एक ईश्वर प्रार्थना प्रस्तुत की गई है जो वेदानुकूल तथा प्रभावोत्पादक है। इसका मूल स्वरूप प० अमरकुमार शास्त्री द्वारा सपादित आर्य सत्सग गुटका' मे छपा था।

(ii) इसके बाद हर पृष्ठ के निचले भाग मे आकर्षक शीर्षक के साथ मन्त्र दिए गए हैं और ऊपरी भाग मे कोष्ठको के बीच छन्द' शीर्षक के साथ उसी मन्त्र की सख्या दर्शायी गई है। इस बहुप्रचलित भुजंग छन्द मे उस मन्त्र का प० विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड कृत भाष्य अनूदित किया गया है। ११४ मन्त्रो का यह भाष्य उक्त छन्द की २८८ पंक्तियो मे समाया हुआ है।

(iii) तदुपरान्त दोहा/चौपाई छन्द मे प० हरिशरण जी सिद्धान्तालकार द्वारा विरचित सरस सुबोध भाष्य को स्थान दिया गया है जिसके अत मे प्रत्येक मन्त्र का भावार्थ सरस दोहों में अकित है। ११४ मन्त्रो पर इस भाष्य का पद्यानुवाद चौपाई छन्द की १७६० पंक्तियो मे, दोहा छन्द की २६४ पंक्तियों में तथा सोरठा छन्द की २६ पंक्तियों मे निबद्ध है।

५. मन्त्र प्रत्येक पृष्ठ के निचले भाग मे देने से गायन के दौरान पाठक यदि मन्त्र-पाठ भी करना चाहें तो वैसा सुगमता से कर सकते हैं और यदि मन्त्र नही पढ़ें तो पद्यानुवाद का गायन लय तारतम्य अटूट रखकर कर सकें।

६. नीचे मन्त्रो के साथ प्रत्येक दशति के आरम्भ मे मन्त्र देवता ऋषि छन्द एव स्वर का उल्लेख किया गया है।

७ प्रत्येक मन्त्र का केन्द्रीभूत आशय सूचित करने वाले शीर्षक प० हरिशरण जी कृत भाष्य के अनुसार प्रत्येक मन्त्र पर अकित हैं।

८. सम्बन्धित भाष्यकार के भावों को यथावत रखने के लिए यथासम्भव भाष्य की शब्दावली ही प्रयुक्त की गई है। जहां कहीं पद्य की मांग के अनुरूप अनुवादक द्वारा स्वतन्त्रता बरती है वहां भी मूल आशय से दूर न जाने का उद्देश्य सर्वोपरि रहा है।

९ ग्रन्थ-विस्तार के भय से फिलहाल व्याकरण सम्बन्धी पाद टिप्पणियों को स्थान नही दिया जा सकता है।

१० श्री प० हरिशरण जी द्वारा रचित भाष्य के आधार पर उसमे प्रयुक्त प्राय सभी प्रसंगगत उदाहरणो, उद्धरणों, प्रमाणों और विशेष नामों को पद्यानुवाद मे यथास्थान आने दिया गया है जैसे—सिंहवाहिनी दुर्गा देव और कम्पाण्डर, देवासुर सग्राम, कृषक कामदेव, गुरुशिष्य, माता एव पुत्र इत्यादि सदर्भों के अलावा हरिश्चन्द्र, श्रीराम, युधिष्ठिर, धृष्टद्युम्न, द्रोण, द्रुपद, द्रोपदी, अश्वत्थामा, आद्य शकराचार्य, विदुर, मनु, दयानन्द, गांधी, विनोबा और यहां तक कि शेक्सपीयर और पारसी लोगो का उल्लेख भी चौपाइयों मे विद्यमान है। गीता ही और उपनिषद सम्बन्धी उल्लेख तो भाष्य मे पदे पदे उपलब्ध होगे।

११. रामचरित मानस का पारायण या तो सम्पूर्ण अथवा आंशिक किसी काण्ड विशेष का ही सम्भव है जबकि इस पद्यानुवाद का पारायण सुविधानुसार निम्नलिखित पांच प्रकारों में से किसी के भी रूप मे करने पर भी पारायण ज्ञानवर्द्धक और आनन्ददायक अनुभूति प्रदान करने मे सक्षम है—

(i) सबसे लघु पारायण—केवल ११४ मन्त्रों का शीर्षक-सहित
या (ii) केवल भावार्थ वाले दोहों का पाठ (३०० पंक्तियां)
या (iii) छन्द शीर्षक वाली २२८ पंक्तियो का गायन
या (iv) चौपाई-दोहा छन्द वाला विस्तार युक्त भाग
या (v) सपूर्ण आग्नेय काड के पद्य भाष्य का पारायण) अर्थात १००० पंक्तियो का ३३० मिनिटो में समाप्य पारायण।

१२ सबसे अतिम किन्तु महत्वपूर्ण विशेषता यह कि यह एक ऐसी रचना है जिसे शिक्षित या अर्द्ध शिक्षित स्त्री या पुरुष प्रौढ या बालक हिन्दू या गैरहिन्दू जो भी चाहे पढकर या सुनकर भी वेदार्थ का ज्ञान न्यूनाधिक मात्रा मे अवश्यमेव प्राप्त कर सकेगा। गुरुकुलो और विद्यालयों के छात्रो के लिए यह धार्मिक शिक्षा की आदर्श पाठ्यपुस्तक हो सकती है और इसके अनेक अर्थगर्भित दोहे तथा चौपाइयां लोकप्रिय होने की क्षमता रखती हैं, बशर्ते इस पद्यानुवाद को आम जनता तक पहुंचाया जा सके।

इस प्रकार उपर्युक्त १२ विशेषताओं से सज्जित यह पद्यानुवाद प्रभु की कृपा से तैयार है। प्रभु कृपा के ही प्रभाव से अब तक आचार्यवर प० विश्वनाथ जी आर्यमार्तण्ड सार्वदेशिक सभा प्रधान मान्यवर श्री रामगोपाल जी शालवाले एव सुविख्यात वैदिक विद्वान प० वीरसेन जी वेदश्रमी की ओर से इस विनम्र प्रयास को शुभाशीर्वाद प्राप्त हो चुके हैं। मुझे पूर्ण आशा है कि इसका प्रकाशन भी आर्य जगत के किसी न किसी सहृदय प्रकाशन सस्थान या समर्थ प्रकाशक द्वारा अवश्य होगा और यदि किसी कारण ऐसा नही भी हुआ तो भी पद्यानुवादक को इस बात का सन्तोष ही पर्याप्त मूल्यवान उपलब्धि रहेगा कि सर्वथा अपात्र होते हुए भी वह वेद सेवा का यत्किंचित प्रयास तो कर सका।

आर्यप्रवर ! आपसे केवल यही प्रार्थना है कि यह पद्यानुवाद आपको पसन्द आया हो तो कृपया इसके प्रकाशन या प्रचार प्रसार की दिशा में अपना भरसक सहयोग प्रदान करें और यदि इसे सतोषप्रद न पाए तो कृपया वेद को आज की आम जनता की रुचि के अनुरूप कैसे अधिकाधिक सरल बनाया जावे इसके लिए किसी अन्य उपयुक्त विधि की खोज करने में अपना सक्रिय योगदान देना न भूलें।

मंगलाचरण

[प्रभु स्तुति प्रार्थना उपासना गीत (छन्द हरिगीतिका)]

हे सच्चिदानन्द स्वरूप परमपिता परमात्मन,
अपनी महत्सामर्थ्य से हो सृष्टि करते तुम सृजन।
प्रत्येक प्राणी के प्रभो हो कर्म-फल-दाता परम,
तुम सर्वव्यापक सर्वशक्ति निधान करुणा-अर्णवम।
तुम अज, अनादि, अनन्त, शुद्ध, प्रबुद्ध, मुक्त महेश हो,
शुचि सकल सुख आनन्द सत्तावान तुम परमेश हो।
ऐश्वर्य नानाविधि हमे देते तुम्हीं जगदीश हो,
गुरु वास्तविक मातापिता हो बन्धु तुम्ही अधीश हो।

(क्रमश)

सम्पादक के नाम पत्र

श्रीमती गांधी को मन्दिर में क्यों नहीं जाने दें ?

श्री जगन्नाथ मन्दिर (पुरी) मे श्रीमती इन्दिरा गाधी को प्रवेश करने दिया जाए या नही इस विषय पर विवाद छिड़ा हुआहै। सत्तारूढ दल के राजनीतिज्ञ श्रीमती गाधी को मन्दिर की यात्रा करवाना चाहते है जब कि मन्दिर के पुजारी इसके घोर विरोधी है। मन्दिर के पुजारियो का कहना है कि श्रीमती इन्दिरा गाधी हिन्दू नही है और किसी गैर हिन्दू को मन्दिर मे प्रवेश की अनुमति नही दी जा सकती। श्रीमती इन्दिरा गाधी की यात्रा का विरोध इतने व्यापक स्तर पर होना सचमुच एक आश्चर्यजनक बात है।

हमारे हिन्दू धर्म के ठकेदार कितने कट्टरवादी हैं बताने की जरुरत नही। कोई पूछे इनसे कि कौन सा धर्म इस बात की मनाही करता है कि इन्सान को परमात्मा के घर (मन्दिर, मस्जिद या गुरुद्वारो) मे मत आने दो। जो कायदे कानून मानव ने इन स्थानो पर जाने के लिए बना रखे हैं हद से हद उनका पालन होना चाहिए (जैसे गुरुद्वारो या मस्जिद मे नगे सिर जाना उचित नही)। श्रीमती गाधी की यात्रा का विरोध केवल इस आधार पर किया जा रहा है कि वे पारसी है। हालाकि मेनका गाधी द्वारा दायर एक मुकदमे मे अदालत ने निर्णय दे दिया है कि श्रीमती गाधी हिन्दू है इसके बावजूद हमारे मठाधीश जो धर्म के ठेकेदार बन बैठे हैं ऐसी उल्टी-सीधी बाते करके धर्म को हानि ही पहुचा रहे हैं। अभी पिछले दिनो अखबारो मे छपी खबरो के मुताबिक एक बाल्मीकि हरिजन महिला को [उ० प्र० मे] एक मन्दिर मे जाने नही दिया गया केवल इसलिए कि वह हरिजन थी। क्या ये धर्म के ठकेदार ऐसे नीच कर्म कर पुण्य कमा रहे है अथवा पाप ? मन्दिर तो एक ऐसा पावन स्थल है जहा लोगो का हसकर स्वागत किया जाना चाहिए, धर्म के इन अन्धे ठेकेदारो ने हिन्दू धर्म को विकलाग बना कर रख दिया है। ऐसे विधर्मी लोगो को मन्दिरो की प्रबन्ध समिति से तुरन्त हटाया जाना चाहिए तथा जन आन्दोलन चलाया जाना चाहिए ताकि ऐसे भ्रष्ट तथाकथित धार्मिक नेताओ से त्रस्त जनता राहत की सास ले सके। [नवभारत १६-४ ८४]

—इन्द्रसिंह विमान

गाधी आश्रम, किंग्जवे कैम्प, दिल्ली

रजनीश ने भूल मानी

वात्स्यायन ऋषि के काम सूत्र के बीसवी शताब्दी मे प्रतीक आचार्य रजनीश ने भगवत् प्राप्ति का सूत्र काम बनाया है। यो पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति मे धर्म और अर्थ के बाद काम की देहरी बिना लाघे मोक्ष की प्राप्ति नही होती। ऐसा प्राचीन आचार्यों का भी मत रहा है। चार्वाक सम्प्रदाय के प्रवर्तक बृहस्पति ने मद्य, मास, मछली, मुद्रा और मैथुन को जीवन की इतिश्री घोषित किया था। पुरुषार्थ चतुष्टय का काम आर्यों के मत से कामनाओ और वासनाओ की तृप्ति से था। 'भोगान् भुङ्क्ष्व' उसी का वाक्यसूत्र था, परन्तु भगवान रजनीश की परिभाषा मे काम इन्द्रिय निग्रह का विलोम है और इन्द्रिय निग्रह अनेक स्नायविक तनावो एव मानसिक एव शारीरिक विकारो का मूल है। उनका उपदेश यही था कि वासनाओ को क्षीण करने के लिए उनकी तृप्ति प्रथम और अन्तिम शर्त है। यद्यपि शास्त्रकारो ने इसके विपरीत यही कहा था—

न जातु काम कामानामुपभोगेन शाम्यत्ति।

अर्थात् —कामोपभोग से काम स्वत एव स्थायी रूप से शान्त नहीहोता। आचार्य रजनीश के उपदेश सग्रह-काम से राम-मे चार्वाक सम्प्रदाय की सम्पुष्टि की गई थी। देश और विदेश के सहस्रो नर और नारी उनके इस मोहक मुक्तिमार्ग को पाने के लिए उनके सान्निध्य मे पूना स्थित उनके आश्रम मे आते जाते और रहकर इसी सरणी पर आगे बढते थे।

सरकारी कोप एव स्थानीय व्यक्तियो के आक्रोश के कारण आचार्य रजनीश ने अमेरिका मे रजनीशपुरम् नाम से पिछले दिनो अपने सिद्धान्तो के बिना रोक-टोक प्रचार के लिए एक सस्था [फाउण्डेशन] विशाल पैमाने पर खोली थी। हाल मे उसकी बम्बई शाखा से जारी एक प्रेस विज्ञप्ति मे आचार्य रजनीश ने लगता है कि काम से राम की अपनी गत मान्यता मे आमूलचूल परिवर्तन कर दिया है। विज्ञप्ति के अनुसार उन्होने इस शताब्दी की सबसे दर्दनाक बीमारी एड्स [ए०आई०डी एस०] के निराकरण के लिए यौनाचार को पूर्णत त्याग देने की सलाह अपने अनुयायियों को दी है। उनके अनुसार फास के नोस्त्रदाम की १३वी शताब्दी मे की गई भविष्यवाणी के अनुसार लगभग असाध्य इस एड्स रोग मे मानव की रोग प्रतिरोधक शक्ति भयकर रूप से समाप्त हो जाती है। इसका एकमात्र इलाज यौनाचार से पूर्ण विरति है। वैसे वैकल्पिक रूप मे उन्होने गर्भ निरोधक उपकरणो एव औषधियो का प्रयोग करने की सलाह अपने अनुयायियो को दी है। इस काम के लिए रजनीश मैडिकल कारपोरेशन कण्डोम से नि शुल्क वितरण की व्यवस्था भी की गई है।

त्यागवाद और भोगवाद का कैसा समन्वय आचार्य प्रवर ने बैठाया है ?

—ब्रह्मदत्त स्नातक

आज देश को कृष्ण जैसे महान् नेता की आवश्यकता है

—चमनलाल आर्य, दिल्ली

भू मण्डल की इस ऋषि मुनियों की जन्म भूमि भारत खण्ड में सहस्रो और लाखो वर्ष पहले ऐसे दो विलक्षण चमत्कारी शरीर धारी विभूतियो का प्रादुर्भाव हुआ, जिनके उज्ज्वल सुचरित्र, लोक हितकारी सुनीतियों व्यवहारिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक मर्यादाओ ने ससार मे कुछ ऐसी क्रान्ति पैदा करने में सिद्ध हुई जिसका उदाहरण विश्व के किसी भी अन्य देश के इतिहास में खोजने पर भी नहीं मिलेगा। ये ही दो महान आत्माए संसार की सभ्यता और सस्कृति के धारक और अग्रदूत हैं। गत पाच सहस्र वर्षों में विश्व मे पाच बड़ी-बड़ी सभ्यताए फैली मिस्र, चीन, यूनान, बेबिलोनिया, और भारत—परन्तु सिवा भारत के अन्य सभी सभ्यताए लोप प्राय सी हो चुकी हैं। इसीलिए तो इकबाल को यह कहना पड़ा—कुछ बात है कि अब तक हस्ती मिटी नहीं हमारी, चीन, मिस्र, यूनान मिट गए जहा से। और इसका एकमात्र कारण इन दो महान विभूतियो का चरित्र हमारी सभ्यता को ठहराए हुए है जबकि शेष के पीछे ऐसे सस्कारी आप्त पुरुषो का व्यक्तित्व नहीं दीखता।

ये प्रात स्मरणीय दो महान आत्माए त्रेता मे मर्यादा पुरुषोत्तम राम जिनके जीवन का सुचरित्र आदि कवि महर्षि वालमीकि जी ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ रामायण में किया है और दूसरे महापुरुष योगिराज श्री कृष्ण जी जो पाच सहस्र वर्ष पूर्व द्वापर में हुए जिनका भव्य चित्रण महर्षि वेदव्यास ने महाभारत ग्रन्थ मे किया है। यही दो प्राचीन ग्रन्थ हैं जिन्हे महाकाव्य कहते हैं और हमारे प्राचीन साहित्य के आधार स्तम्भ भी हैं।

परन्तु दुख है कि आज कुछ पढे-लिखे लोग पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित और विशेषकर पुरातत्ववेत्ता अपनी न जाने किन खोजो के आधार पर इनके ऐतिहासिक अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते और इनको काल्पनिक मात्र कहकर रह जाते हैं जिस कारण करोडो भक्त जनो के हृदयों पर एक भारी आघात होता है और हमारी सन्तानो पर बडा कुप्रभाव भी पडता है।

इनमें योगिराज कृष्ण हमारे सामने दो रूपो मे आते हैं एक भागवतका रासलीलाओ गोपियो का कृष्ण और दूसरा महाभारत का शूरवीर योग सिद्ध कृष्ण। १९वीं शताब्दी के भारतीय पुनर्जागरण के प्रमुख उदगाता महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के ११वे समुल्लास में कृष्ण के पवित्र चरित्र पर लगाए गए मिथ्या आरोपोंके सम्बन्धमे इस प्रकार लिखा है 'इस भागवत् वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाए हैं। दूध,दही, मक्खन आदि की चोरी और कुब्जादासी से समागम, पर स्त्रियो से रास मण्डल क्रीडा आदि मिथ्या आरोप श्रीकृष्ण जी पर लगाए हैं। इनको पढ पढाकर, सुनसुना के अन्यमत वाले श्रीकृष्ण जी की बहुत निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्री कृष्ण जी के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्योकर होती।" अत साधारणतः लोग कृष्ण को बचपन मे दूध, दही, मक्खन के चोर युवावस्था में व्यभिचारी, प्रौढावस्था में वंचक और शठ के रूप मे जानते हैं। देव दयानन्द ने सहस्रों वर्षो से विकृत श्रीकृष्ण के ओज तेज, क्षमा आदि अनेको दिव्य गुणो से भरपूर चरित्र को जनता के सन्मुख रखने का सफल प्रयत्न किया। उन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे ही इन लोकोत्तर आदर्शों के प्रतिष्ठापक महापुरुष योगीराज श्रीकृष्ण जी के सम्बन्ध मे यू लिखा है "देखो ! श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषो के सदृश हैं जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त, बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नहीं।"

ऐसे महाप्रतापी युग पुरुष का जन्म पाच सहस्र वर्ष पूर्व द्वापर और कलि की सन्धि वेला मे दुराचारी कस के बन्दीगृह मे भादो की कृष्ण पक्ष की अष्टमी की घोर अन्धेरी रात्रि में देवकी के गर्भ मे हुआ था। उस समय देश में भ्रष्टाचार की अन्धेरी तमिस्रा अपनी निगूढ कालिमा के साथ छाई हुई थी। यद्यपि उस समय देश में बल, धन, शक्ति, साहस क्या कुछ नहीं था, पर एक अकर्मण्यता भी साथ-साथ व्याप्त रही थी, जिससे सब कुछ अभिभूत मोहाच्छन्न और तमसावृत था। अराजकता अनाचार और भ्रष्टाचार का बोलबाला था। चक्रवर्ती राज्य का कुछ भी महत्व शेष नही रहा था। सारा देश छोटे छोटे स्वतन्त्र किन्तु निरकुश राज्यों मे विभक्त हो चुका था। एक शक्ति शाली चक्रवर्ती सम्राट के न होने के कारण विभिन्न माण्डलिक राज्य नितान्त स्वेच्छाचारी तथा प्रजा पीडक हो गए थे। प्रत्येक अपने को तीस मारखा समझता था। मथुरा के कस ने अपने पिता उग्रसेन को बन्दी किया हुआ था। मगध के दुष्टाचारी राजा जरासन्ध न ८७ निरपराध राजाओ को बन्दी बना रखा था और एक सौ होने पर रुद्र नरबलि करने का कुसकल्प किए हुए था। चाद देश का शिशुपाल तथा हस्तिनापर का दुर्योधन सभी विलासी और दुराचारी थे। कौरवों ने अन्याय पूर्वक पाण्डवो का राज्य हस्तगत कर लिया था। और एक सूई की नोक के समान भूमि बिना युद्ध के लौटाने को तैयार नही था। प्राग ज्योतिषपुरके अत्याचारी राजा नरकासुर ने सोलह सहस्र राजकुमारियो को अपने अन्तपुर मे बन्दी कर रखा था। शराब जुए का प्रचलन राजगृहो तक ही सीमित नही था। बडे बडे आचार्य धर्म भ्रष्ट और कर्तव्य भ्रष्ट हो चुके थे। स्त्रियों का सतीत्व भी सुरक्षित नही था। चहु ओर त्राहि त्राहि मची थी। ऐसी विकट परिस्थितियो मे श्री कृष्ण का मन बडा द्रवित हो उठा था। अत उन्होने दुराचार अनाचार, भ्रष्टाचार, अन्याय, रूढियो और असहाय एव दीन दुखियो के दुखो को दूर करने का दृढ सकल्प किया और सारा जीवन इन अत्याचारो के रोकने मे लगे रहे और सचमुच गीता में कहे गये वह इन सबके लिए काल थे—'कालो अह अस्मि'। कृष्ण युद्ध के घोर विरोधी थे और रक्त पात के कदाचित हामी नहीं थे। उन्होने बिना कुछ रक्त बहाए पैशाचिक वृत्ति वाले दुष्ट जरासन्ध का भीम द्वारा वध कराकर ८७ निर्दोष राजाओ को मुक्त कराया और अपनी नीतिज्ञता, रणचातुरी, व्यवहार कुशलता तथा कूट नीति से पाण्डवों को उनका राज्य दिलाने मे सफलता पाई। यही नही उन्होने दैत्य नरकासुर की कैद से सोलह सहस्र राज कन्याओ को मुक्त कराकर अर्जुन के पास हस्तिनापुर बसाने के वास्ते भेजा था। (क्रमश)



सत्यवती सूद आर्य कन्या उ०मा०विद्यालय मे आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर मे सत्यदेव जी भारद्वाज विद्यालकार (नेरोबी) आर्य वीरो को उदबोधन कर रहे हैं पास मे सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री बाल दिवाकर हस विराजे हुए है। आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा और आर्य वीर दल अधिष्ठाता दिल्ली प्रदेश प्रियतमदास रसवन्त दिखाई दे रहेहै।

सरकार ने मांगें मान ली थीं अकाली ही नहीं बढ़े :

—गोपाल सिंह

न्यूयार्क, २४ जुलाई (प्रैट्र) अल्पसंख्यक आयोग के भूतपूर्व अध्यक्ष डा० गोपाल सिंह ने कहा है कि अकालियों की प्राय सभी आर्थिक और धार्मिक मागो को भारत सरकार ने स्वीकार कर लिया था लेकिन अकाली दल उग्रवादियो की बढ रही हिंसा के दबाव में समस्या को सुलझा नही सका।

डा० सिंह ने यह बात गत रविवार को वाशिंगटन के मेरीलेण्ड गुरुद्वारे मे सिख सगत को सम्बोधित करते हुए कही। डा० सिंह ने इन आरोपो को गलत बताया कि श्रीमती इन्दिरा गाधी की सरकार सिखो के प्रति विद्वेष रखती है और उन्हें 'कुचलना' चाहती है। उन्हे लगभग सौ सिख महिलाओ तथा पुरुष श्रोताओ के कुछ तीखे सवालो का भी सामना करना पडा।

डा० सिंह ने कहा अगर विद्वेष रखने का आरोप सही है तो भारतीय सेनाओ मे १५ प्रतिशत और नागरिक सेवा मे ८ प्रतिशत तथा देश के कुछ सर्वोच्च स्थानों पर सिख न बैठे होते।

उन्होने कहा कि अमृतसर में जो हुआ खासकर पवित्र अकाल तख्त साहिब को क्षति पहुची, उससे न केवल सिखो, बल्कि प्रत्येक देशभक्त भारतीय को आघात पहुचा है। प्रधानमन्त्री ने अपनी पीडा व्यक्त की थी और उन्होंने एक श्रद्धालु के रूप में स्वर्ण मन्दिर जाकर अरदास भी की थी।

उन्होने कहा कि अब जो स्थिति पैदा हुई, उसके दृष्टिगत सिखों को [illegible] और भटकते हुए नेतृत्व से बचना होगा ताकि सिख अपने उत्थान, कल्याण और भारतीय राष्ट्र की अखण्डता के लिए अपनी ऐतिहासिक भूमिका फिर से निभा सकें।

डा० सिंह ने कहा कि एक लोकतान्त्रिक व्यवस्था में सत्याग्रह की तो अनुमति दी जा सकती है, लेकिन निर्दोष लोगो की हत्याओं की कतई नही। अकाली सिर्फ क्षेत्रीय व जल समस्याओ के लिए ही नही लड रहे बल्कि उनकी लडाई राजनतिक उद्देश्यो की प्राप्ति के लिए भी है। अगर ऐसा नहीं तो क्या वजह थी कि जब केवल पांच वर्ष पहले वह सत्ता मे थे, वह इन मागो के लिये आगे नहीं आये।

उन्होंने कहा कि कोई भी सच्चा सिख भारत से अलग होना नहीं चाहता। जो लोग 'खालिस्तान-खालिस्तान' चिल्लाते हैं, वह कुछ रास्ते से भटके लोग ही हैं।

'सार्वदेशिक' पत्र के आजीवन सदस्य बनिये

किसी साप्ताहिक पत्र के ग्राहक बनने पर पत्र की ओर से चन्दे की बार बार मांग बार-बार मनिआर्डर भेजना आदि कठिनाइयां प्राय सामने आती रहती हैं—इन कठिनाइयों से बचने के लिए पत्र का आजीवन सदस्य बनना ही श्रेयस्कर होता है। १०० रुपये देकर सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र आजीवन सदस्य बन जाइये।

—[illegible]

परिपत्र

सार्वदेशिक आर्य वीर दल समिति

दयानन्द भवन, रामलीला मैदान
नई दिल्ली-११०००२

प्रिय बन्धु,

सार्वदेशिक आर्य वीर दल प्रभु की कृपा से प्रगति पथ पर अग्रसर है किन्तु अभी कार्य पद्धति के व्यवहारिक पहलू को अपनाकर कार्य करना और फलितार्थो का सही-सही आकलन करना शेष है। अस्तु।

१—समस्त प्रान्तीय अधिकारियों से अनुरोध है कि वह अपने क्षेत्र की प्रत्येक शाखा से सम्पर्क स्थापित करें और नगर-नायकों को आदेश दें कि वह प्रति मास की प्रगति रिपोर्ट में निम्न बातों का उल्लेख करते हुए प्रान्तीय कार्यालय को प्रतिवेदन भेजें। संचालक जी प्रान्तीय कार्यालय से कुल शाखाओ की संख्या को दर्शाते हुए आर्य वीरो की संख्या से केन्द्र को सूचित करे।

शाखा का पूरा पता..

नगर नायक का नाम..

आर्य वीरों की सख्या.....................दीक्षित.....................

व्रती.....................साधारण.....................बाल आर्य वीर

.....................कुल योग.....................दिनाक.....................

विशेष विवरण:—समाज सेवा, दिनचर्या, नई शाखा, दहेज प्रथा का उन्मूलन अतिथि सेवा, मातृ-पितृ सेवा, विशेष योग्यता आन्दोलन सहयोग का उल्लेख किया जा सकता है।

हस्ताक्षर	हस्ताक्षर	हस्ताक्षर
अधिष्ठाता	नगर नायक	शाखा नायक

२—आपके क्षेत्र मे ८३-८४ मे यदि आर्य वीर दल द्वारा कोई महत्व पूर्ण कार्य सम्पन्न हुआ हो तो उसकी प्रान्त की रिपोर्ट भेजे। प्रान्तीय अधिकारी मह वपूर्ण सूचना केन्द्रीय कार्यालय को भेजे। प्रतिवर्ष महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के सम्पन्न होने पर (प्रतियोगिता के आधार पर आकलन किया जाकर) चल विजयोपहार (शील्ड) भेंट की जाया करेगी।

३—आज देश मे शराब, जुआ, अण्डा, मासाहार-अमर्यादित रतिचर्या की ट्रेनिंग नग्न चित्रों टेलीविजन एव भद्दे हल्के उपन्यासों की भरमार से दिन प्रतिदिन भ्रष्टाचार बढता जा रहाहै। आप की दृष्टिमें इसके रोकने के क्या व्यावहारिक उपाय सम्भव हो सकते हैं? अवश्य लिखिये।

४—नारी जाति पर अनेक रूपोंमें अत्याचार हो रहेहैं। दहेजकी माग उनमें सबसे अधिक घातक सिद्ध हो रही है। आप स्थानीय आधार पर गोष्ठियां बुलाकर युवकों से दहेज माग रहित विवाह करने की प्रतिज्ञा कराईये और उनके चित्र भेजिये—जो जन्म-जाति के व्यामोह से ऊपर उठकर राष्ट्रीय जीवन मे स्वात्म प्रेरणा या सत्संगति से नियुक्त होने को तैयार होकर गुण-कर्म-स्वभावानुसार विवाह करने को तैयार हों।

५—योग्यता की उपेक्षाकर अपूज्यान्म पूज्यन्ते पूज्यानाम् च अतिक्रम के आधार पर सुयोग्य युवक भटकते फिर रहे हैं। उन्हें सान्त्वना देकर उनका मार्ग दर्शन करके शासन की दृष्टि में इस तथ्य को उभारना सच्ची राष्ट्रीयता है। इस दिशामें कार्य होना चाहिये। विशेष अवस्था में आप केन्द्र को वस्तुस्थिति से सूचित करे। केन्द्र भी इस दिशा मे यथासम्भव (मार्ग दर्शन) सहायता करेगा।

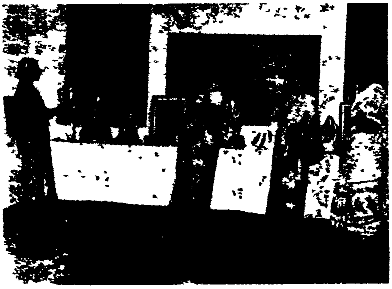
६—योगासनों भारतीय शारीरिक व्यायाम खेलादि के प्रचार-प्रसार हेतु क्या आप खेलादि कोई लाभकारी योजना रखते हैं यदि हां तो लिख भेजिये।

७—आर्य वीर दल के इतिहास लेखन सन्दर्भ मे केवल मुरादाबाद से कुछ सामान्य सूचनाएं प्राप्त हुई। इस दिशा में शीघ्र सूचनाएं एकत्रित करके आपको जल्द केन्द्रीय कार्यालय को भेजनी चाहिये।

८—स्वतन्त्रता दिवस समारोह पन्द्रह अगस्त आदि को आप शाखा स्थलपर सामूहिक प्रतिज्ञा कराएं कि हम अपने देश सस्कृतिभाषा का अधिकाधिक प्रसार प्रचार करेगे और राष्ट्रहित मे अपने आचरण को शुद्ध रखते हुए राष्ट्रो थान हेतु ही कार्य करे इस दिन खेल-कूद प्रदर्शन भी किये जावे।

कृपया आप इस विज्ञप्ति के अनुसार सभी सार सूचनाए १५ सितम्बर तक हमे देगे आपने इस दिशा मे क्या-क्या पग उठाये।

—बालदिवाकर,हंस, (प्रधान-सचालक)
सार्वदेशिक आर्य वीर दल, दयानन्द भवन, नई दिल्ली



वीरागना प्रशिक्षण शिविर मे शिक्षार्थिनी वीरागनाओ ने हस्तकला मे भी प्रशिक्षण प्राप्तकर अपने द्वारा बनाई वस्तुओ की प्रदर्शनी लगाकर प्रदर्शन किया। अनेक सम्भ्रात महिलाओ को प्रशिक्षिका श्रीमती कृष्णाजी प्रदर्शनी दिखाते हुए, दिखाई दे रहीहै।

आर्य समाजों की गतिविधियां

दयानन्द अकादमी के लिए सवा करोड़ रुपए अनुदान

हरियाणा सरकार द्वारा २०० एकड़ भूमि देने का निर्णय

डी०ए०वी० कालेज कमेटी का महत्वपूर्ण अभियान

हरियाणा सरकार ने राज्य मे दयानन्द अकादमी स्थापित करने और इसे उदारता पूर्वक सुविधाए देने का निर्णय किया है। यह अकादमी न केवल शैक्षणिक क्षेत्र मे, बल्कि खेल कूद सास्कृतिक और अन्य क्षेत्रो मे भी कार्यरत एक उच्चस्तरीय पब्लिक स्कूल के रूप मे चलाई जायेगी जिससे कि यहा पढने वाले छात्रो का सर्वांगीण विकास और उन्नति हो सके। शिक्षा के अलावा खेल कूद, सास्कृतिक तथा अन्य छात्रोचित गतिविधियों की व्यवस्था इस ढग से की जायेगी कि छात्रो के व्यक्तित्व का सुचारु रूप से विकास हो सके। विदेशो मे रहने वाले भारतीयो के और भारतीय सस्कृति मे रुचि रखने वाले विदेशियो के छात्र भी इस अकादमी मे शिक्षा ग्रहण करने आयगे। अकादमी का ग्रामीण रूप होते हुए भी यह सैनिको के आश्रितो को पब्लिक स्कूल की शिक्षा प्रदान करेगी।

इस कार्य के लिए राज्य सरकार अकादमी को रोहतक-हिसार राजमार्ग पर २०० एकड भूमि और १ करोड से लेकर १.२५ करोड रुपये तक अनुदान देगी जिसमे से लगभग ५० लाख रुपए इस वर्ष दिये जायगे।

हरियाणा सरकार के उक्त निर्णय का जनता ने गर्म जोशी से स्वागत किया है और डी०ए०वी० प्रबन्धको के लिए तो मानो यह एक बडी चुनौती ही है।

विदित हो कि डी०ए०वी० कालेज ट्रस्ट और प्रबन्ध समिति अब तक लगभग ७५ पब्लिक स्कूल स्थापित कर चुकी है और उन्हें सफलता पूर्वक चला रही हैं। इन स्कूलो मे से कुछ उल्लेखनीय नाम है—कुलाची हसराज माडल स्कूल, अशोक विहार, दिल्ली जिसमे ५६०० छात्र और २५० अध्यापक हैं हसराज माडल स्कूल पजाबी बाग (जिसमे ३५०० छात्र और १५० अध्यापक हैं) डी०ए०वी०पब्लिक स्कूल बोकारो डी०ए०वी० जवाहर मन्दिर राची,डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल भुवनेश्वर उडीसा, दयानन्द माडल स्कूल जालन्धर और महाराजा हरीसिह एग्रीकल्चरल का लिजिएट स्कूल नागवनी जम्मू ये सब देश के अग्रणी पब्लिक स्कूलो मे शुमार किए जाते हैं।

दयानन्द अकादमी एक बडा और महत्वपूर्ण अभियान है। आशा करनी चाहिए कि पब्लिक स्कूल शिक्षा के क्षेत्र मे उत्कृष्टता का उच्चस्तर स्थापित करेगी। —रामनाथ सहगल, मन्त्री

आर्य प्रादेशिक सभा मन्दिर मार्ग नई दिल्ली

आर्य पुरोहित पं० चन्द्रभानु शर्मा दिवंगत

लगभग ४५ वर्षों तक आर्य समाज मन्दिर हनुमान रोड, नई दिल्ली में वैदिक पुरोहित के रूप मे कुशलता पूर्वक कार्य करते हुए श्री प० चन्द्रभानुजी ने अप्रतिम ख्याति अर्जित की थी गत शनिवार (२८ जोलाई) को एक दुर्घटना ग्रस्त होने पर सज्ञाहीन हो गए और सदा सदा के लिए इस ससार से विदा हो गए।

२९ जोलाई को आपके अन्तिम सस्कार में दिल्ली के समस्त आर्यसमाजों के सगठनो के पदाधिकारी और मान्य व्यक्ति हजारो की सख्या मे दयानन्द घाट निजामुद्दीन नई दिल्ली म उपस्थित थे। ३१ जुलाई को आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड नई दिल्ली मे एक विशाल शोक सभा सम्पन्न हुई जिसमे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले सयुक्त मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री श्री दरबारीलाल, श्री सरदारीलाल, श्री रामनाथ सहगल श्री सोमनाथ मरवाह आदि आर्य नेताओं ने पण्डित जी के प्रति भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

तपोवन आश्रम का प्रचार यज्ञ

वाल्मीकि मन्दिर में महात्मा दयानन्द जी की कथा

देहरादून। वैदिक साधना आश्रम तपोवन (नाला पानी) आर्य सस्कृति के प्रचार प्रसार का प्रमुख केन्द्र हैं।

आश्रम के सचालक पूज्य महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थ वृद्धावस्था मे भी प्रचार के कार्य को दिनो दिन प्रगति पर ले जा रहे हैं। गत अप्रैल मास मे तपोवन का वार्षिक यज्ञ ऋग्वेद के आठवें व नौवे मण्डलो की पवित्र ऋचाओं के माध्यम से हजारों नर नारियों के सम्मुख समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। १६ मई से ३० जून तक लगभग चालीस आर्यों ने पूज्य स्वामी सत्यपति जी की अध्यक्षता मे योग दर्शन व तुलनात्मक शिविर मे शिक्षा ग्रहण की। शिविरमे योग दर्शन न्याय दर्शन के पाठ के साथ-साथ वेद, कुरआन व बाईबिल के तुलनात्मक पाठ की भी शिक्षा दी गई। शिविर सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

सम्प्रति पूज्य महात्मा जी देहरादून जन पद मे हरिजन बस्तियो मे प्रचार कार्य बढा रहे हैं। नगर मे वाल्मीकि मन्दिर, सीमेंट रोड मे प्रतिदिन पवित्र वाल्मीकि रामायण की कथा पूज्य महात्मा जी के मुख से बहुत से नर नारी सुनते है। तपोवन आश्रम का यह प्रचार यज्ञ निरन्तर चलता रहेगा ऐसा हमारा सकल्प है।

वर्तमान आश्रम मे एक आदर्श गोशाला का निर्माण कार्य आरम्भ कर रहे हैं। —देवदत्त बाली

निर्वाचन

—आर्य समाज मानसा (भटिण्डा) का निर्वाचन २९-७-८४ रविवार को श्री निरजनलाल जी के निवास स्थान पर श्री शिवचन्द जी की अध्यक्षता में हुआ। प्रधान श्री रोशनलाल आर्य मन्त्री श्री वेदप्रकाश आर्य, कोषाध्यक्ष श्री हसराज आर्य निर्वाचित हुए।

—आर्य उपप्रतिनिधि सभा शाहजहापुर का वार्षिक निर्वाचन २३ ६ ८४ को सम्पन्न हुआ। प्रधान श्री ठा० शान्तिदेव जी मन्त्री श्री श्यामसुन्दरलाल जी तथा कोषाध्यक्ष श्री जयदयालसिह जी निर्वाचित हुए।

आर्य समाज अमरोहा का वार्षिक निर्वाचन १० ७-८४ को सम्पन्न हुआ। प्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य मन्त्री श्री सीताराम शर्मा बन्धु कोषाध्यक्ष श्री अवनीश कुमार छाबडा निर्वाचित हुए।

—आर्य समाज चबूतरों डा० चौली जि० अम्बाला का निर्वाचन श्री डा० वेद प्रकाश वानप्रस्थ की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। प्रधान श्री रामचन्द्र आर्य, मन्त्री स्वेणसिंह आर्य तथा कोषाध्यक्ष श्री अशोक कुमार आर्य निर्वाचित हुए। —सपादक

आनन्दपुर प्रस्ताव के पीछे सुरजीत का हाथ ?

नई दिल्ली, २२ जुलाई (आर्ग) १६-१७ अक्तूबर १६७३ मे आनन्दपुर साहिब प्रस्ताव को अकालियो ने बिना पढे ही पास कर दिया था। लोगोवाल ने बताया था कि प्रस्ताव कपूरसिंह ने तैयार किया था, इसलिए अकाली नेताओ ने इसे ठीक तरह से पढने की जरूरत नहीं समझी। कपूर सिंह एक आई सी. एस आफिसर थे। जब वह होशियारपुर के उपायुक्त थे तब तत्कालीन, पजाब के शिक्षामन्त्री लाला जगत नारायण ने उनके खिलाफ शिकायतो को सही पाकर उन्हें बर्खास्त कर दिया था। तब से ही कपूर सिंह पृथक सिख सिद्धान्त की खोज कर रहा था। लाला जी हिन्द समाचार पत्र समूह के सस्थापक सम्पादक थे जिनकी ६ सितम्बर १६८१ को हत्या कर दी गई थी। आनन्दपुर साहिब प्रस्ताव के पीछे सी पी एम नेता हरकिशन सिंह सुरजीत का भी बडा हाथ रहा है जो टोहरा के मित्र हैं। टोहरा भी मार्क्सी प्रवृत्ति के है। टोहरा ने लुधियाना मे १६७७ मे भाषण दिया था, वह हरकिशन सिंह सुरजीत ने ही तैयार किया था। प्रस्ताव मे कम्युनिस्ट सिद्धान्त की पूरी झलक है जिसमे पजाब को सोवियत गणराज्यो जैसा दर्जा दिलाने की माग है। कम्युनिस्टो ने ही मुस्लिम लीग को आत्म निर्णय व पृथक् राष्ट्र के सिद्धान्त का सुझाव दिया था। (प० के० २३-७ ८४)

श्रावणी उपाकर्म के उपलक्ष्य में

१००) रुपये का साहित्य ७५) रुपये में उपलब्ध करें।

१	सत्यार्थ प्रकाश दर्पण	२)	२४	वर्णव्यवस्था का वैदिक स्वरूप	१)२५
२	वेद और विज्ञान	)७०	२५	एशिया का वेनिस	)७५
३	धर्म और उसकी आवश्यकता	१)	२६	आर्य समाज मौरिशस का इतिहास	५)
४	हमारी राष्ट्र भाषा और लिपि	)५०	२७	ब्रह्ममुनि का जीवन चरित्र	२)
५	आर्य मैनोफेस्टो	)६०	२८	ब्रह्म स्तोत्र	)५०
६	दौलत की मार	)२५	२६	साम सगीत	)५०
७	यज्ञ और पूर्वलया	१)	३०	उत्तरा खण्ड के वन पर्वता मे	,६०
८	वेद सन्देश	)७५	३१	न्याय दर्शन	१)७५
६	वैदिक काल की सच्चाई	१)५०	३२	वैशेषिक दर्शनम	३)
१०	राष्ट्र रक्षा के वैदिक साधन	१)	३३	भारत का एक ऋषि	)१०
११	सत्यार्थ प्रकाश आन्दोलन का इतिहास	१)	३४	पूजा किसकी	)५०
१२	आर्य समाजो की सूचि	१)२५	३५	आर्य समाज	)३५
१३	स्वराज्य दर्शन	१)	३६	स्वतन्त्र विधेयक क्यो	१)
१४	आर्य महासम्मेलनों के प्रस्ताव	)६०	३७	सत्यार्थ प्रकाश दो समुल्लास	१)५०
१५	सार्वदेशिक सभा की उपलब्धिया	)५०	३८	सार्वदेशिक सभा के निर्णय भाग १	)४५
१६	आर्य समाज क्या है उसने क्या किया	)५०	३६	सार्वदेशिक सभा के निर्णय भाग २	१)५०
१७	सार्वदेशिक सभा का सक्षिप्त इतिहास	)७५	४०	वेद और आर्य शास्त्रो मे नारी	१)
१८	आर्य समाज का परिचय	१)	४१	राज धर्म	)५०
१६	हमारा राष्ट्र	)२५	४२	निज जीवन वृत वनिका	)७५
२०	बृहद विमान शास्त्र	२०)	४३	गोकरुणानिधि	)२०
२१	दयानन्द दिव्य दर्शन	२५)			
२२	सत्य की खोज	१०)			
२३	ऐतिहासिक चुनौती	२)			
				रुपये	१००

कृपया आर्डर भिजवाते समय २५ प्रतिशत अग्रिम राशि भिजवाने का कष्ट करें ताकि पुस्तकें आपकी सेवा में शीघ्र भिजवायी जा सकें।

ओम्प्रकाश त्यागी मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन,
रामलीला मैदान, नई दिल्ली

देशान्तर प्रचार

फीजी आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव

हाल मे ही प्राप्त समाचारो के अनुसार आर्य प्रतिनिधि सभा फीजी की वार्षिक जनरल मीटिंग डी ए वी बोइज कालेज सामाबूला मे रविवार २४ जून को हुई जिसमे निम्न सज्जनो को पदाधिकारी चुना गया।

प्रधान—श्री आर परमेश्वर एम बी. ई जे. पी आर्य रत्न। उपप्रधान श्री सुरेन्द्र प्रसाद (एम एम बी) श्री हरिप्रसाद और श्री कालू करनसिंह। जनरल सैक्रेट्री श्री भवनदत्ता सचिव फीजी सरकार उपमन्त्री श्री शशिकान्त लेखन (एम ए) श्री जितेन्दरसिंह और श्री हीराप्रसाद। कोष ध्यक्ष श्री जयनारायण जोखन सहायक डाक्टर वी आई सिंह। पुस्तकाध्यक्ष श्री शान्ति सरोज और श्री शारदानन्द। —ब्रह्मदत्त स्नातक

आर्यसमाज भीलवाडा (राजस्थान) मे वेद कथा एव प्रशिक्षण कार्यक्रम

आयसमाज, भीलवाडा मे १६ से २२ जुलाई १६८४ तक एक सप्ताह का वेद कथा एव पुरोहित प्रशिक्षण का कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। प्रशिक्षण श्री भूदेव शास्त्री मन्त्री महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास अजमेर द्वारा दिया गया। इसमे १० आर्य जनो ने भाग लिया। वेद कथा भी श्री शास्त्री जी ने ही प्रत्येक रात्रि को कही जिसका नगर के प्रबुद्ध जनो ने लाभ उठाया। आर्यसमाज भीलवाडा ने न्यास के लिये ५०० रुपये की राशि सादर भेट की। —अम्बाप्रसाद शर्मा सयुक्तमन्त्री



ग्राम विकास वीरागना प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह मे वीरागनाए प्रशिक्षण प्रमाण पत्र एव पुरस्कार श्री प०बालदिवाकर जी हस प्रधान सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल से प्राप्त कर रही हैं श्री हस के पीछे शिविर सयोजिका श्रीमती विनीता जी खडी हुई है।

नया प्रकाशन

१—धर्म चिन्तन	१५) रुपये
२ वैदिक धर्म	१० रुपये
३—आस्तिक नास्तिक सम्वाद	२) रुपये

(लेखक—श्री ओमप्रकाश त्यागी)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

(पृष्ठ १ का शेष)

३८ विदेशी राष्ट्रिक

श्री वेंकट सुब्बैया ने बताया कि अभी तक गिरफ्तार किये गये ३८ व्यक्तियो की विदेशी राष्ट्रिक के रूप मे शिनाख्त की गई है।

गृहराज्यमन्त्री रामदुलारी सिन्हा ने बताया कि सभी गुरुद्वारो का विशेष रूप से हरमन्दिर साहिब का प्रशासन भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ सिख अधिकारियो को सौपे जाने का कोई प्रस्ताव सरकार के विचाराधीन नही है।

दस्तावेज़ बरामद

श्रीमती सिन्हा ने बताया कि स्वर्ण मन्दिर परिसर से कुछ दस्तावेज बरामद हुए हैं। इनकी जाँच की जा रही है और इस अवस्था मे कोई ब्यौरे नही दिये जा सकते।

४५६ मरे

श्री वकट सुब्बैया न बताया कि १९८१ से १९८४ क दौरान पजाब मे हिसक घटनाओ म ४५६ व्यक्ति मारे गये थे।

उन्होने बताया कि सेना द्वारा की गई कारवाई के बाद पजाब मे कानन और व्यवस्था की स्थिति मे सुधार हुआ है। स्वर्ण मन्दिर काम्प्लैक्स मे सेना हटा दिये जाने का निश्चित समय बताना सम्भव नही हैं।

मृतकों के परिवारों को मदद

श्री राव ने बताया कि एक अगस्त १९८१ से १४ जुलाई १९८४ के दौरान मारे गए १११ व्यक्तियो के परिवारो को १० २८ लाख रुपए की सहायता दी गई है। इस अवधि के दौरान हिंसक घटनाओ मे गम्भीर रूप से घायल हुए १८३ व्यक्तियो को सहायता के रूप मे ३ ७९ ५०० रुपए दिए गए हैं [illegible] कार्रवाई के दौरान जो व्यक्ति मारे गए [illegible] हजार रुपए की राशि दी गई।

उन्होने बताया कि उपर्युक्त राशि मे पुलिस कर्मचारियों के लिए लागू विशिष्ट योजनाओ के अधीन उनके परिवारोंको की गई अदायगिया शामिल नही है।

श्री राव ने बताया कि इसी अवधि के दौरान सम्पत्ति की हानि के १२२ मामलो मे मुआवजे के ९ ७६ लाख रुपए से अधिक दिए गए हैं। सुरक्षा बलो द्वारा की गई कारवाई के दौरान जिन २८८ परिवारो की सम्पत्ति को नुकसान हो गया था उनको १४ ४० लाख रुपए दिए गए हैं।

राष्ट्रपति और सेना के सिख अधिकारियो के सामाजिक बहिष्कार के अकाली नेताओ के निर्णय की आज लोकसभा मे कड़ी निन्दा की गई। अध्यक्ष बलराम जाखड़ ने कहा कि वे इस मामले पर बहस कराने के सम्बन्ध मे विचार करेंगे। उन्होने कहा कि सामाजिक बहिष्कार के इस फैसले को के बाद मुझे भरोसा नहीं होता कि हम लोग बीसवीं सदी में हैं। लगता है कि अभी भी हम सोलहवी सदी मे हैं।

लोकदल के श्री मनीराम बागड़ी ने इस मसले पर काम रोको प्रस्ताव की अनुमति मांगी लेकिन अध्यक्ष ने यह मांग नामंजूर कर दी।

(पंजाब केसरी १० ८ ८४)

[illegible] में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८५] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दयानन्दाब्द १६० दूरभाष : ३७४७७१
वर्ष १९ अंक ३८] भाद्रपद कृ० १५ सं० २०४१ रविवार २६ अगस्त १९८४ वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति ४० पैसे

दिसम्बर १९८५ में राजधानी दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी का समापन समारोह

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के समापन समारोह के सम्बन्ध मे निश्चय कर रही है कि आगामी दिसम्बर १९८५ मे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दिल्ली मे मनाया जाय। इस सम्बन्ध मे विदेशो से भी सम्पर्क किया जा रहा है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले, वरिष्ठ उपप्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् और सभामन्त्री शीघ्र ही मौरिशस, पश्चिम जर्मनी और अन्य देशो के दौरे पर जाने वाले हैं। श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी इन दिनो इगलैण्ड मे है वे वहीं से सीध जर्मनी जायगे और सभा के वरिष्ठ नेताओ से मिलगे।

इस समारोह पर आय समाज के १०० वर्षों के कार्य-कलाप का दिग्दर्शन और आगामी १०० वर्ष के लिए नए कार्यक्रमो की योजना पर भी विचार किया जायेगा।

देश विदेश के प्रमुख आर्य नेता, विद्वान एव सन्यासियो स निवेदन है कि वे इस सम्बन्ध मे अपने सुझाव सार्वदेशिक सभा को लिखकर भेज ताकि इसकी रूपरेखा के निर्माण मे उनके सुझाव उपयोगी सिद्ध हो सके।

सभा इस समारोह मे नेपाल नरेश को सम्मान पूवक आमन्त्रित करने का भी विचार कर रही है।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सयुक्त-मन्त्री सार्वदेशिक सभा

आर्थिक आजादी की लड़ाई जारी

स्वाधीनता दिवस पर श्रीमती इन्दिरा गांधी का भाषण

स्वाधीनता दिवस पर लालकिले से श्रीमती इन्दिरा गाधी का भाषण कुछ बातो के लिए उल्लेखनीय बन गया। १५ अगस्त १९४७ को जब प० जवाहरलाल नेहरू ने पहली बार लालकिले पर झण्डा फहराते हुए राष्ट्र को सम्बोधित किया था तब से लेकर आज तक जितने भाषण लालकिले से हुए, आज का भाषण उन सबमें सबसे लम्बा था।

प्रधान मन्त्री ५० मिनट से कुछ अधिक बोली। उन्होंने पजाब साम्प्रदायिक दगों, २० सूत्री कार्यक्रम, देश की सुरक्षा का खतरा श्रीलका और पाकिस्तान का उल्लेख किया। उनका समूचा भाषण बड़ा सयत था। एक बार भी वे भावावेश मे नही आई अपने विरोधियो पर भी उन्होने तीखे प्रहार नही किये बलिक अपनी सरकार की उपलब्धिया गिनाते हुए कमियो का जिक्र भी किया।

टी० वी० रिले सेंटरों का तेजी से विस्तार होने के कारण आज प्रधान मन्त्री का भाषण दूर दराज के करोडो लोगो ने दूर दर्शन पर देखा सुना।

कई दिनों के बाद आज सुबह बारिश हुई थी। प्रधानमन्त्री के भाषण के दौरान वर्षा बन्द रही लेकिन जैसे ही उन्होने भाषण खत्म किया बारिश शुरू हो गई।

श्रीमती गाधी ने अपने भाषण के शुरू मे कहा—हम हर १५ अगस्त को यहा एकत्रित होते हैं। यह कोई उत्सव नही है।

जब हम आजादी के लिए लड रहे थे तो केवल राजनीतिक आजादी नही सामाजिक न्याय के लिए बराबरी के लिये आर्थिक न्याय के लिये भी। एक पड़ाव पूरा हुआ दूसरा अभी चल रहा है और दु मन जैसे पहले साफ सामने दिखाई देते थे आज भी छुपे हुए दुश्मन हैं।

श्रीमती गांधी ने स्वतन्त्रता आन्दोलन मे भाग लने वाले महापुरुषो का स्मरण किया और कहा कि राजनीतिक आजादी मिलने के बाद आर्थिक आजादी और सामाजिक न्याय के लिए हमारी लडाई जारी है। उन्होंने कहा कि आजादी की लडाई में सभी धर्मों भाषाओ और प्रान्तो के लोगो ने एक ध्येय के लिये काम किया। यही भावना हमे आज भी कायम रखनी है और हमे हर तरह की रुकावट का मुकाबला करना है तभी देश आगे बढ पाएगा।

देश की एकता को खतरे मे डालने वाली ताकत पुन सिर उठा रही है। धर्म और कौम के नाम पर जहर फैलाया जा रहा है। धम के न म पर दगे भारत के म थे पर कलक हैं। सभी का कत्तव्य है कि इस बुराई को जड से उखाड दिया जाए।

प्रधान मन्त्री ने देश की आजादी की रक्षा के लिए और एकता को मजबूत करके विकास करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होने कहा कि लोकतन्त्र मे आपसी मतभेद होते रहते हैं लेकिन देश को मजबूत रखने के मसले पर राजनैतिक और पार्टीगत मतभेदो से हमे ऊपर उठना होगा। अगर देश गिरेगा तो हम सब गिर जाएगे कोई नही बचेगा।

प्रधानमन्त्री ने पजाब का जिक्र करते हुए कहा कि इस बारे मे गलत प्रचार हो रहा है। हमारी नीति लोगो की मागो को बातचीत और समझौते से हल करने की रही हैं। पजाब के मसले पर लम्बी बातचीत हुई। हर माग को पूरा करने की हमने यथाशक्ति कोशिश की है लकिन हमारे साधन सीमित है। हमे ध्यान रखना होता है कि कुछ मागो को पूरा करने से दूसरे लोग क्षुब्ध हो सकते हैं और अन्य राज्यो मे गडबडी फैल सकती है। माग करने वालो को भी देखना चाहिये कि इनसे दूसरो को कष्ट तो नही होगा और देश पर आर्थिक बोझ तो नही बढेगा।

उन्होने कहा कि किसी भी विचार को लेकर आन्दोलन शुरू किए जाए इनमे दूसरे लोग घुस आते हैं और अपने ढग से आदोलन को मोड देते हैं। हिंसा और आमजनी की बुराइया आ जाती हैं और आन्दोलन उन लोगो के

(शेष पृष्ठ १९ पर)

सम्पादक—ओमप्रकाश पुरुषार्थी सहसम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

धर्म रक्षा महाभियान

सुश्री जतिन्सा शोभादेवी बनी

बेतिया ६-८-८४ को सुश्री शोभा जतिन्सा, बी० ए० ने स्वेच्छापूर्वक ईसाई धर्म छोड़कर वैदिक धर्म स्वीकार कर लिया। आर्य समाज मन्दिर, बेतिया, प० चम्पारण, बिहार में दो बजे दिन में श्री रामचन्द्र प्रसाद आर्य के पौरोहित्य में उसे शुद्ध कर उसका 'शोभादेवी' नामकरण किया गया एवं स्थानीय श्री भगवत प्रसाद, ग्रा०+पो० शहादतपुर, बेतिया के सुपुत्र श्री अवधेश प्रसाद, बी०ए० के साथ उसका शुभ पाणिग्रहण संस्कार किया गया। इस अवसर पर उपस्थित सैकड़ों नर-नारियों में प्रसन्नता देखी गई। श्री अवधेशप्रसाद के माता-पिता एवं अन्यान्य सम्बन्धियों ने अपनी कुलवधु को हार्दिक आशीर्वाद दिए।

—सत्यनारायण प्रसाद प्रधान
आर्यसमाज, बेतिया

दो मुस्लिम परिवारों द्वारा पुनः हिन्दू धर्म ग्रहण

कानपुर, महानगर से ६५ कि० मी० दूर स्थित झींझक में आर्य समाज गोविन्द नगर के तत्वावधान में एक विशाल शुद्धि समारोह केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर के प्रधान तथा प्रख्यात आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ जिसमें दो मुस्लिम परिवारों ने पुनः हिन्दू धर्म ग्रहण किया। इनमें असलम छोटे खाँ का परिवार दो पीढी पूर्व मुसलमान बना था तथा दूसरा मैकू खा के परिवार ने गत वर्ष इस्लाम मत ग्रहण किया था। ये दोनों परिवार आपस में विवाह के बन्धन में बन्धकर समधी हो गए।

आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने शुद्ध हुए दोनों परिवारों के स्त्री पुरुषों को यज्ञोपवीत (जनेऊ) पहना कर गायत्री मन्त्र का उच्चारण कराकर नाम परिवर्तित कर दिए। उनके नए नाम छोटेलाल, अशोक, मैकूलाल, गीता, शान्ति आदि रखे गए।

समारोह मे झींझक के अनेक संगठनों ने भाग लिया। सबने शुद्ध हुए भाई बहिन का हार्दिक स्वागत करते हुए उनसे प्रसाद ग्रहण किया।

—मन्त्री, आर्य समाज कानपुर

गोवध निषेध को समवर्ती सूची में लाना आसान नहीं—राव

नई दिल्ली ६ अगस्त। कृषि मन्त्री राव बीरेन्द्रसिंह ने आज लोक सभा में बताया कि गौ सरक्षण विषय को राज्यों की सूची से हटाकर सीमावर्ती सूची मे शामिल करने के लिये सशोधन करना आसान काम नही है। लेकिन गोवध बन्द कराने की दिशा मे केन्द्र सरकार निरन्तर प्रयत्न करती रहती है, स्वयं प्रधान मन्त्री ने इस बारे मे अनेक बार मुख्य मन्त्रियों को पत्र लिखे हैं।

भाजपा के श्री सत्यनारायण जटिया और कुछ अन्य सदस्यों के प्रश्नों के उत्तर देते हुए श्री राव ने बताया कि कुछ राज्य सरकारों ने जिनमें जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश का उल्लेख विशेष रूप से किया जा सकता है, गोवध रोकने के लिये सख्त कानून बना रखे हैं। गोवध रोकने के लिये कानून प्राय: प्रत्येक राज्य मे हैं लेकिन बूढे बैलों के वध की अनुमति तथा कुछ अन्य खामियो के कारण चोरी छिपे गोवध भी होता रहता है।

श्री राव ने यह भी बताया कि देश से गोमास के निर्यात पर पूर्ण पाबन्दी है। जनता शासन के समय गोसंरक्षण को समवर्ती सूची पर लाने के लिये एक सविधान सशोधन विधेयक संसद में पेश किया गया था, लेकिन उस पर कोई कार्रवाई नही हो सकी।

ईसाई राज्य की योजना !

कलकत्ता ६ अगस्त। त्रिपुरा के मुख्यमन्त्री श्री नृपेन चक्रवर्ती ने यहां कहा कि उत्तर पूर्वी क्षेत्र मे सक्रिय अलगाववादी तत्व 'एक स्वतन्त्र ईसाई राज्य' बनाने की योजना बना रहे हैं।

उन्होंने नई दिल्ली रवाना होने से पूर्व कलकत्ता हवाई अड्डे पर सवाददाताओ को बताया कि उग्रवादी नेता जो कि अधिकांश ईसाई है अन्य उग्रवादी सगठनो से सम्पर्क बनाने की कोशिश में लगे हुए हैं।

राजस्थान के वनवासियों एवं भीलों आदि पिछड़े वर्गों में आर्य समाज का कार्य प्रगति पर

कुशल गढ़ में अनाज बैंक स्थापित कर अनाज वितरण का कार्य जैसा कि कुशलगढ़ आर्य समाज के प्रधान श्री एम० एम० सिंह जी एडवोकेट के द्वारा समाचार आपको प्राप्त हो चुका है और सार्वदेशिक' पत्र में प्रकाशित भी हो चुका है, पूरा हो चुका है। कुशलगढ़ से पूर्व, पश्चिम और दक्षिण की दिशाओं के १० गांवों के २६० परिवारों को १८०४ किलो अनाज व्यापारियों से खरीद कर वितरण किया गया जिसमें कुल तीन हजार रुपये खर्च किए जा चुके हैं।

नये सत्र में कुशलगढ़ और बांसवाड़ा में छात्रावास आरम्भ हो गये हैं। कुशलगढ़ में छठी कक्षा से ११वी कक्षाओं तक के २१ वनवासी छात्र प्रविष्ट किये गए हैं जिनमें से एक छात्र वह है जो अभी तक ईसाई छात्रावास में रहता था किन्तु इस वर्ष आठवीं कक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाने के कारण वहां से पृथक् कर दिया गया है। दूसरा एक छात्र वह भी है जिसका पिता ईसाई चर्च में जाता था किन्तु उसकी मृत्यु हो चुकी है और इस वर्ष वह छात्र अपनी जालमपुरी की पाठशाला से पांचवीं उत्तीर्ण होकर आया है।

कुशलगढ़ से पूर्व की तरफ १२-१४ किलो मीटर दूर मोहकमपुरा में ईसाई चर्च के अन्दर एक स्कूल भवन एक लाख रुपए से अधिक मूल्य का इस वर्ष बन कर खड़ा हो गया है। उस मोहकमपुरा से ३ किलो मीटर दूर पर राजापुरा नामक वनवासियों के गांव में हमारी पाठशाला अभी गत मई माह से आरम्भ हुई है। मोहकमपुरा के ईसाई स्कूल में पहली से पांचवी तक के भील बालक और बालिकायें पड़ोस के भील गांवों के आकर चर्च छात्रावास में रहते हैं और उन्हें भोजन वही मिलता है।

अब मोहकमपुरा से दूसरी दिशा में तीन-चार किलो मीटर की दूरी पर एक नयी पाठशाला १५ अगस्त के आस-पास खोलने जा रहे हैं, क्योंकि वहां की जनता की मांग है।

बांसवाड़ा छात्रावास में कालेज कक्षाओं के २० छात्र प्रविष्ट हुए हैं और अपनी पुरानी पाठशाला जालमपुरी में यथावत् चल रही है।

—स्वतन्त्रानन्द
दयानन्द सेवाश्रम, बांसवाड़ा

पंजाब में नागरिकों को क्षति का मुआवजा मिलेगा —राव

नई दिल्ली ६ अगस्त। गृहमन्त्री श्री पी. वी. नरसिंह राव ने आज राज्यसभा मे प्रश्नोत्तर काल मे बताया कि पंजाब मे आतकवादियों के कारण १९८१ के बाद नागरिको को जान और माल की जो हानि हुई है सरकार उसकी क्षति पूर्ति करेगी। जो हानि हुई है उसका अनुमान लगाया जा रहा है।

श्री राव ने कहा कि अमृतसर मे स्वर्ण मन्दिर के निकट जो दुकान और मकान नष्ट हो गए हैं उनके निवासियों को अन्यत्र बसाया जायगा और उसके लिये एक योजना बनाई जा रही है।

उन्होने बताया कि ४२१ परिवारों को पांच पांच हजार रुपये की तदर्थ सहायता दी गई है। (हिन्दु १०-८-८४)

सराहनीय प्रयास

श्री रामकृष्ण मित्तल एम०ए०, योगधाम, गम्भीर मार्ग, ज्वालापुर हरिद्वार ने शिमला मेडीकल कालेज में ईश्वर और विज्ञान पर भाषण दिया। समस्त विद्यार्थियों व प्रिंसिपल साहब ने प्रशसा की।

निर्वाचन

आर्य समाज कांचरा पाडा का चुनाव २२-७-८४ को सम्पन्न हुआ। श्री राजकुमार सिंह आर्य प्रधान, श्री आत्मानन्द आर्य मन्त्री चुने गये।

सम्पादकीय

चेतावनी पर ध्यान देने का समय

आज की विषम स्थिति मे जबकि देश की आत्मा लुप्त हुई देख पडती हो, जीवन के हर क्षेत्र मे भ्रष्टाचार उच्छृखलता, वैर विरोध, स्पर्धा, हिंसा देशद्रोहिता व्याप्त हो, जबकि न केवल देश की अखण्डता एकता यहा तक कि स्वाधीनता से वचित हो जाने का खतरा मुह बाए खडा हो, स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय हमारे राष्ट्र नायकों ने जो आशाए लगाई थी उनका स्मरण कर लेना आवश्यक है। महात्मा गाधी ने कहा था कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद यदि एक लडकी बाजार मे सोना उछालते हुए भी निकलेगी तो उसका कोई बाल बाका न होगा। दूसरे शब्दो मे नैतिक सम्पदा से परिपूर्ण होगे विपरीत इसके नेहरू जी मात्र भौतिक सम्पदा से परिपूर्ण करने की आशा सजोए हुए थे। इसके साथ ही देश को पश्चिम के भौतिक वादी उन्नत राष्ट्रो की कोटि मे रखने के लिए उत्सुक थे जबकि वे स्वय इससे तग आ चुके थे और जिनका सदाचार वा नैतिकता का पैमाना विविध त्रुटियो व अभिशापो से सयुक्त उपयोगितावाद था।

इस सबके साथ ही देश के सविधान की मिट्टी पलीद होते देख कर सहसा ही हमे सविधान निर्माता डा० अम्बेदकर तथा सविधान निर्मातृ असेम्बली के अध्यक्ष श्री डा० राजेन्द्र प्रसाद जी के अन्तिम ऐतिहासिक भाषणो का स्मरण हो आता है।

उन्होने प्रश्न किया था 'क्या भारत अपने ही देशवासियो की देशद्रोहिता, छल-कपट और धोखे-धडी से दोबारा स्वतन्त्रता से वचित हो जायगा ? क्या देशवासी देश को अपने मजहब वा मन से या मजहब को देश से ऊपर रखेंगे ? इसके लोक तान्त्रिक सविधान का क्या बनेगा ? क्या यह 'देश' इसको कायम रखेगा या फिर इसे गवा देगा'?

उन्होने यह भी कहा कि "भारत प्रजातन्त्र मे नौसिखिया नही है। कोई समय था जबकि भारत गणतन्त्रो के भीतर गणतन्त्रो से छाया हुआ था और साथ ही एकतन्त्र राज्यो से भी वे घिरे हुए थे जो निर्वाचित थे वा मनोनीत थे। परन्तु निरकुश न थे।"

भारत ससदो से भी अपरिचित न था। राज परिषदें थी, सघ थे। ससद मे बैठने की, व्यवस्था रखने तथा प्रस्तावो निश्चयो, कोरमह्विप, वोटो की गिनती, पर्चियो द्वारा वोट देने, निंदा, प्रस्ताव पेश करने आदि के उनके अपने नियम बने हुए थे।

इस पर भी भारत को लोकतान्त्रिक पद्धति से वचित हो जाना पडा था। डाक्टर महोदय ने यह कहते हुए पूछा "क्या देश दूसरी बार इससे वचित हो जायेगा ?" इसका उत्तर स्वय देते हुए कहा "यह मैं नही जानता। परन्तु भारत जैसे देश मे जहा इसके लम्बे दुरुपयोग से जनता इसे कोई नयी चीज मानने लगेगी यह बहुत कुछ सम्भव हो सकता है। प्रजातन्त्र का स्थान अधिनायकवाद द्वारा लिए जाने का खतरा है भले ही इसका ढाचा बना रहे। किसी उथल-पुथल की अवस्था मे दूसरी सम्भावना के वास्तविकता मे परिणत होने का सबसे बडा खतरा होगा।

इसके आगे उन्होने पूछा "यदि हम ढाचे के रूप मे नही अपितु वास्तविक रूप मे प्रजातन्त्र को बनाए रखना चाहते हैं तो हमे क्या करना चाहिए ?" (क्रमश)

धारा ३७०

श्री के. पी १० राजेन्द्र प्रसाद रोड नई दिल्ली लिखते है (देखें इण्डियन एक्सप्रेस (५-८-८४) "एन डी ए. ने सविधान की धारा ३७० को रद्द किए जाने की माग की है। इस पर आपके सम्पादकीय (१०-८-८४) को पढकर मुझे दुख और आश्चर्य हुआ। इसमे इस धारा के बनाए रखने का औचित्य प्रतिपादित करने और यह दिखाने का यत्न किया गया है कि जम्मू काश्मीर राज्य को जो दर्जा दिया गया है उसमे तथा अन्य राज्यो के दर्जे मे नाम मात्र का ही फर्क है ऐसा कहना स्वय अपनी काट करना है। इससे जनता मे भ्रम भी फैल सकता है।

जम्मू काश्मीर राज्य का अपना पृथक सविधान है जिसमे दोहरी नागरिकता को व्यवस्था की हुई है और यह भारतीय राष्ट्रीयता की मौलिक भावना की विरोधी है। जम्मू और काशमीर राज्य एक प्रकारसे एक गणतन्त्र के भीतर दूसरा गणतन्त्र है। जम्मू काशमीर के सविधान म सन्निहित विशेष प्रावधान के कारण ही पुनर्वास कानुन बनाया गया था जिसका विरोध केन्द्रीय सरकार तकको करना पड गया था। इस प्रकार यह धारा इलहिदगी (पृथकत्व) पर जोर देने के लिए एक साधन का काम करती है। साथ ही यह जम्मू काशमीरके राजनेताओ के लिए उन चीजो की प्राप्ति सुगम बनाती है जिनका अन्य उपायो से प्राप्त करना सभव नही हो सकता।

सविधान निर्मातृ असेम्बली मे हुई बहस से यह सुस्पष्ट हो जाता है कि उस समय की स्थिति से निपटने के लिए यह धारा एक विशुद्ध अस्थायी वा अल्पकालिक उपाय के रूप मे सोची और सविधान मे जोडी गई थी। सविधानके २१वें परिच्छेद मे "अस्थायी क्षणिक स्पेशल अल्पकालिक" शीर्षक के अन्तर्गत यह धारा अकित है। इस धारा के शब्द इस प्रकार हैं — "जम्मू और काश्मीर, स्टेट सम्बन्धी विशेष प्रावधान। अपने जीवन काल मे श्री प० जवाहरलाल नेहरू ने बार बार यह आश्वासन दिया था कि यह शीघ्र ही समाप्त की जायगी, और यह अस्थायी व्यवस्था है। अत इस धारा को बनाए रखना सविधान निर्माताओ की इच्छाओ और देश वासियो को बार बार दिए गए आश्वासनो के विरुद्ध है।'

देश द्रोही और पाक समर्थक तत्त्व इस धारा का सहारा लेने का प्रयास करते हैं यह दावा करते हुए कि विलय की कार्यवाही आपत्ति जनक है और इसका ठीक किया जाना बाकी है। यह बात भी सर्व विदित है कि देश के अन्य भागो की राष्ट्र विरोधी उपद्रवी एव षडयन्त्रकारी शक्तिया भी अपने-राज्यो को विशेष दर्जा देने की माग करके इस धारा का दुरुपयोग करने के लिए सन्नद्ध हो सकती है।

धारा ३७० की धारा ३७१ तथा ३७१ अ के साथ समानता प्रतिपादित करना भी गलत है। इनमे केवल यही समानता है कि ये एक ही अध्याय के अन्तगत उल्लिखित है। उल्लेखनीय है कि राष्ट्रपति भी ३७० धारा को रद्द नही कर सकते।

लेखक महोदय की जानकारी के लिए यह लिखना भी आवश्यक है कि राष्ट्र हितैषियो का जिनमे आर्य समाज और उसके वरिष्ठ नेता शामिल हैं इस धारणा के सम्बन्ध मे उन जैसा ही दृष्टिकोण है और जो समूचे देश के हित मे इस धारा का रद्द किया जाना समय की माग इगित करते हैं।

संसदीय चातुरी

इग्लैंड के प्रधानमन्त्री श्री लायड जार्ज उच्चकोटि के वक्ता और सासद् थे।

एक बार वे पार्लियामेन्ट मे किसी विषय पर बोल रहे थे। विरोधी दल के एक सदस्य ने आवेश मे आकर व्यग करते हुए कह दिया "मि० जार्ज ! आपको ज्ञात होना चाहिए कि आपके बुजुर्ग गधे चराया करते थे।" इस गलत और निन्दनीय आरोप को सुनकर लायड जार्ज जरा भी विचलित न हुए। उन्होने बडी शान्त मुद्रा मे कहा —

"माननीय सदस्य का आरोप सही है। मेरे बुजुर्ग गधे ही चराया करते थे। परन्तु हमारा एक गधा अर्से से गायब था। मुझे खुशी है कि वह गधा आज इस हाउस मे हमे मिल गया है।"

यह सुनकर तमाम हाउस खिल-खिलाकर हस पडा और आक्षेप कर्ता मारे शर्म के मुह नीचा करके बैठ गए।

सामायिक चर्चा–

प्रेरक संस्मरण

सुप्रसिद्ध आर्य कवि एव नाटककार स्व० श्री नारायण प्रसाद जी बेताब श्री पुत्री ऋचा का विवाह एटा के एक जाने-माने वकील के पुत्र के साथ हुआ था। बेताब जी ने वर पक्ष पर दहेज मे कोई भारी रकम वा प्रदर्शन का कोई सामान न देने की बात स्पष्ट कर दी थी।

जब ऋचा घर से विदा होने लगी तो बेताब जी ने ५०००) का एक चैक लडके के पिता के नाम लिखकर चुपके से ऋचा को दे दिया और कह दिया कि अपनी सास के पैर पडते समय यह उन्हे भेट कर देना।

जब ऋचा ससुराल मे पहुची और दान दहेज का कोई सामान न देखा तो लडके की माता तथा अन्य रिश्तेदार सगे सम्बन्धी आग बबूला होकर शिकायते और तानाकशी करने लगे। ऋचा चुपचाप सुनती रही। लडके के पिता भी समझाते रहे कि यह आर्य समाजी घराने की लडकी है जिससे भारी दान दहेज की तथा उसके प्रदर्शन की आशा नही की जा सकती थी और इसके पिता ने रिश्ता तय करते समय यह बात मुझ पर स्पष्ट कर दी थी, जो मैंने खुशी से स्वीकार कर ली थी।" परन्तु इस पर भी उन लोगो का बुरा भला कहना जारी रहा।

अगले दिन प्रात काल जब पैर छुआई की रस्म होने लगी तो ऋचा ने वह चैक अपनी सास के हाथो मे पकडा दिया। चैक को देखकर माता का क्रोध पुन भडक उठा और उसने यह कहकर कि मै इस कागज को लेकर क्या करूगी उसे फेक दिया। पास मे ही लडके के पिता खडे थे उन्होने उस चैक को उठाकर पढा और उस जमाने के ५०००) की राशि का अ कन देखकर अवाक् रह गए और जब उनकी पत्नी को यह बात बताईगई तो उसे तथा अन्य रिश्तेदारो को हर्ष मिश्रित आश्चर्य हुआ वे अपनी भूल पर पश्चात्ताप करने लगे साथ ही लडके के पिता शिर ऊ चा करके मन ही मन बेताब जी की सूझ-बूझ के लिए दाद देने लगे।

उल्लेखनीय है कि उन दिनो बेताब जी दरीबाकला के निकट एक प्रेस चलाते थे जहा सार्वदेशिक सभा की छपाई का भी कार्य हुआ करना था। सभा का कार्यालय परेड ग्राउन्ड स्थित अपने सार्वदेशिक भवन मे स्थित था। श्री प० रामचन्द्र जी देहलवी के साथ श्री बेताब जी की बडी घनिष्ठता थी और वे प्राय प्रेम मे आया करते थे। श्री बेताब जी भी स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज से भेट करने समय-समय पर कार्यालय मे आया करते थे।

सरबत खालसा की मुख्यतम फलश्रुति

'सरबत खालसा' से जो अमृतसर मे आयोजित किया गया था सिख वर्ग के गौरव पूर्ण इतिहास मे एक ज्वलन्त पृष्ठ जुडने का आभास होता है। सिख पन्थ को राजनीति से पृथक् करने का यह बहुत बडा प्रयास था। यदि इससे कोई बात स्पष्ट हुई है तो वह यह है कि सिख पन्थ के बहुसख्यक अनुयायी जो अकाली दल के लीडरो के हथकण्डो के मूक दर्शक बने हुए थे, अपने अस्तित्व की अनुभूति करने मे समर्थ हुए हैं। (सर्च लाइट, पटना)

शरीयत कानून

हमारे भारतीय मुस्लिम बन्धु शरीअत कानून को अपरिवर्तनीय मानते और बताते हैं। उनके समक्ष स्वय मुस्लिम बन्धु यह तथ्य रखते हैं कि पाकिस्तान ने जो 'इस्लाम का एक परम भक्त देश है, शरीयत के विव ह विषयक प्रावधान में परिवर्तन कर दिया है। अब वहा पुरुष एक ही पत्नी रख सकता है। इससे मुस्लिम महिलाओ को सुरक्षा प्राप्त हुई है। उत्तराधिकार विषयक नियम मे भी संशोधन कर दिया गया है। पौत्र को पिता के मर जाने की अवस्था में, दादा की सम्पत्ति उत्तराधिकारमे नही मिल सकती थी, अब पौत्र दादा की सम्पत्ति उत्तराधिकार मे पाने का हकदार है। टयूनेशिया ने दत्तक कानून पास कर दिया है।

प्रत्येक समाज समय-समय पर स्थिति के तकाजे पर परिवर्तन करता रहा है और करता रहता है।

प्रश्न यह है कि भारतीय मुस्लिम नेताओ तथा विद्वानो की व्याख्याए सही मानी जाये या भारत से बाहर के मुस्लिम नेताओं और विद्वानो की। हमारे भारतीय मुस्लिम विद्वानो का कहना है कि शरीअत कानून की जो व्याख्या हम करते हैं वही सही है उसमें कोई परिवर्तन या सशोधन नही हो सकता। परन्तु उनके दावे को अन्य मुस्लिम विद्वान् अनेक मुस्लिम बन्धु एव देश आवश्यक परिवर्तन करके वा परिवर्तनो का पक्ष लेकर ठुकरा रहे हैं। क्या उनकी दृष्टि मे वे लोग इस्लाम के सच्चे व्याख्याकार नही हैं? और क्या वे इस्लाम की असेवा करने के सच्चे अर्थ मे अपराधी हो सकते हैं? इसका उत्तर उन्हे देना होगा।

एक बुद्धिवादी धर्माचार्य ने एक बार कहा था कि सामाजिक रीति-रिवाजे वा प्रथाए वा परम्पराए सामाजिक नियमो एव सग- ठन से सम्बद्ध होती हुई वे मात्र धार्मिक मर्यादाए नही होती उनमे बुद्धि एव नैतिकता से सम्बद्ध परिवर्तन होते रहते हैं और होने चाहिए यह है ठीक धार्मिक मार्ग-दर्शन।

अभिवादन का ढंग

श्री वी० एस० नटराजन (महाराजा नगर तमिलनाडू) लिखते हैं (देखे हिन्दू मद्रास २०-७-८४)

"भारत मे प्रायश लोग हाथ जोडकर 'नमस्ते' के अभिवादन का प्रयोग करते है जब कि पश्चिम मे हाथ मिलाने का अभिवादन प्रचलित है।

क्राइस्ट ईसा मसीह के काल मे भी अभिवादन का यह प्रकार प्रचलित था। गीता मे दानो हथेलियो को जोडकर परमात्मा का अभिवादन करने का विधान है। मानव के भीतर हृदय मे परमात्मा का निवास होने से उनके द्वारा एक दूसरे को नमस्ते करने का अर्थ परमात्मा को नमस्ते करना भी है।"

उल्लेखनीय फैसला

दिल्ली के अतिरिक्त डिस्ट्रिक्ट और सेशन जज श्री एस०एम० अग्रवाल ने बलात्कार के एक अपराधी को १२ वर्ष के सश्रम कारा- वास और ५०००) जुर्माने की सजा दी है।

अपराधी केन्द्रीय कृषि विभाग का एक गजटेड आफीसर है जिसकी आयु ३२ वर्ष की है और ३ बच्चो का पिता है। बलात्कार की शिकार एक १४ वर्षीया अल्प वयस्क लडकी है। न्यायाधीश महोदय ने इस प्रकार के अपराधो के लिए अपराध कर्मी को बधिया बनाने की भी कानून मे व्यवस्था करने का सुझाव दिया है।

समाज हितैषियो की दृष्टि मे जहा यह निर्णय स्वागत योग्य है वहा उनकी मान्यता है जो ठीक है कि इस प्रकार के जघन्य अपराधों की रोक-थाम के लिए कठोर से कठोर दण्ड का दिया जाना आवश्यक है। परन्तु कानून के भय के साथ-साथ समाज का भय भी अनिवार्य होता है जो उन्मुक्तता की ओर जाते हुए हमारे समाज मे प्रायश. निकल गया है। अत सबसे बडी आवश्यकता इस समय यह है कि समाज स्वस्थ और सदाचारी बने और इस प्रकार अपराधो के प्रति भय उत्पन्न करे वा बनाए रखे।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

सुखी समाज का निर्माण कैसे हो सकता है

—रघुनाथप्रसाद पाठक

वैदिक ऋषियों ने समाज निर्माण की जो पद्धति निर्धारित की उसी में उसके स्थायित्व के रक्षण की क्षमता है और यही व्यक्ति समष्टि के लिए कल्याणप्रद होती हुई अद्यावधि किसी न किसी रूप में प्रचलित है। इस पद्धति में न तो व्यक्ति की उपेक्षा की गई और न समाज की। इसकी धुरी पर व्यक्ति प्रतिष्ठित रहा और उसे ही श्रेष्ठ बनाने की प्रक्रिया पर बल दिया जाता रहा। व्यक्ति श्रेष्ठ बन जाये तो समाज स्वतः ही श्रेष्ठ बन जाता है। इसमें व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर ध्यान रखा गया। न तो उसके पशुत्व की अवहेलना की गई और न देवत्व की। दोनों के समन्वयपूर्वक विकास की स्थितियां उत्पन्न की गई।

इसी लिये उसका पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इंगित किया गया। अर्थ और काम मोक्ष के मार्ग में बाधक न बनें, व्यक्ति और समष्टि के लिये अभिशाप न बने, धर्म द्वारा नियन्त्रित एवं मर्यादित बनें रहें; इसके लिए उन्होंने वर्णाश्रम धर्म की योजना प्रस्तुत की जिसका एक मात्र लक्ष्य धर्म और नैतिकता का झण्डा बुलन्द रखना और मानव को इन्द्रियामुख बनाने से रोककर उसे मोक्ष की सिद्धि में समर्थ बनाना था। इसमें व्यक्तित्व के विकास एवं सामाजिक कर्त्तव्यों एवं अधिकारो के अनुष्ठान एव उपयोग का ऐसा सुन्दर विधान है कि जिससे व्यक्ति सुखी, समृद्ध, स्थिर एवं सुरक्षित समाज का निर्माण और विकास करने में समर्थ हो सकते हैं। साथ ही यह योजना सभी देशो मे और सभी कालो मे व्यवहृत होने योग्य है। इन आदर्शों और ध्येय पर अवलम्बित सामाजिक व्यवस्था कायम रह चुकी है जिसने भारत को चरित्र और सांसारिक वैभव में सब देशों का सिरमौर बनाया था। इस समाज व्यवस्था से समाज को चरित्रवान व्यक्ति मिल सकते हैं और प्रशासन का कार्य कम से कम और अधिक उन्नत मिल सकता है। भीतर से नियन्त्रित व्यक्तियों को बाहर के नियन्त्रण की नाम मात्र को आवश्यकता रह जाया करती है। सर्वोत्तम प्रशासन वही होता है जो उच्च चरित्र उच्च मस्तिष्क एव विशिष्ट गुणों से युक्त व्यक्तियों को प्रशासन का कर्णधार बनने के लिए प्रोत्साहित करता और चरित्रहीन संकीर्णमना एवं स्वार्थपरायण व्यक्तियों को सत्ता में आने से रोकता है। प्रशासन का एकमात्र उद्देश्य जैसा कि हर्बर्ट स्पेन्सर ने भी कहा है "राष्ट्र रक्षा, व्यक्तियों वा वर्गों की एक दूसरे से रक्षा करना और वर्णों को अपने-अपने कार्यों में सुविधापूर्वक प्रवृत्त रखना होता है। राजनीतिक अधिकार कितने ही उन्नत और जोरदार क्यों न हो, वे वैयक्तिक रूप से गिरे हुए लोगों को ऊपर नहीं उठा सकते। यदि किसी राष्ट्र के व्यक्तियो का दैनिक जीवन उच्च नैतिक भावनाओं से ओत-प्रोत रहता हो, तो उसका प्रशासन सत्ता संघर्षों और पारस्परिक कटुताओं से मुक्त रहता है। आध्यात्मिक उन्नति सांसारिक उन्नति में सहायक बन सकती है और वही राष्ट्र की सुख, समृद्धि एवं शान्ति का स्रोत होती हैं। राजनीति धर्म का अंग होती है जिसका कार्य उसे ऊंचा रखना होता है। तभी यह माना गया है कि जो बात नैतिक दृष्टि से गलत होती है वह राजनैतिक दृष्टि से भी गलत होतीहै यह साधन होती है साध्य नहीं। राज प्रथा का अस्तित्व भी समाज निर्माण के बाद अस्तित्व में आया जिसका ढांचा ऋषियों ने वैदिक समाज व्यवस्था के आधार पर पूर्व से ही बनाया हुआ था।

प्रत्येक व्यक्ति शरीर, मन और आत्मा का सघात होता है। प्रत्येक की अपनी-अपनी आवश्यकता होती है। शरीर को संरक्षण और पोषण चाहिये मन स्वतन्त्रता और ज्ञान चाहता है। आत्मा, शक्ति आनन्द और एकता चाहती है। जीने की प्रभुत्व की ज्ञान-विज्ञान की ओर सुखोपभोग की स्वाभाविक इच्छाए मानी गयी हैं। प्रत्येक व्यक्ति इन्हें अधिकाधिक मात्रा में उपलब्ध करने की ओर प्रेरित रहता है। इसी कारण इच्छाओं में संघर्ष उत्पन्न होता है। जब यह भीतरी संघर्ष व्यक्ति को समाज को और राष्ट्र को अपने में लपेट लेता है तब ही समाज और राष्ट्रों की एकता का शीराजा बिखर जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि भोजन, सरक्षण सत्ता संघर्ष शिक्षा और धर्म आदि की सम्मिलित प्रारम्भिक समस्याएं आत्म-संरक्षण, आत्म अधिकार और आत्म-सन्तोष की समस्याएं हैं। यदि इन भावनाओं को मनमानी करने दिया जाता है तो अनेक जटिल समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। इसीलिए सदाचार पर बल दिया जाताहै और इसके बाद आजीविका की समस्या सामने आती है जो पवित्र साधनों से उपार्जित किये जाने योग्य होतीहै। इन इच्छाओं वा भावनाओं को नियन्त्रित करने का प्रारम्भिक उपाय यह बताया गया है कि इन्द्रियां मन के, मन बुद्धि के बुद्धि आत्मा के वशवर्तीरहे। सामाजिक एवं आत्मिक सौष्ठव के निमित्त आदेश दिया गयाहै कि कुल के निमित्त अपने स्वार्थ को छोड़ देना चाहिये ग्राम हेतु कुल का त्याग कर देना उचित है, देश के अर्थ ग्राम और आत्मा के लिये पृथ्वी का परित्याग करना ठीक है। वैयक्तिक और सामाजिक हितों और कर्त्तव्यों के सुसंरक्षण एवं सुपरिपालन के लिए ही धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चार पुरुषार्थ और ब्रह्मचर्य, गृहस्थ वानप्रस्थ और संन्यास चार आश्रमो की योजना प्रस्तुत को गयी है और गृहस्थ आश्रम को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र की मर्यादाओं से परिवेष्टित किया गया है जो श्रम एवं गुण कर्म और स्वभाव के स्वाभाविक और सुन्दर विभाजन पर आश्रित है।

इन योजनाओ और मर्यादाओं के प्रकाश में जिनकी व्यवहारिकता असदिग्ध है यदि हम व्यक्ति और समाज का निर्माण करे तो निश्चय ही वह निर्माण चिरस्थायी हो सकता है।

राष्ट्र के पुनर्निर्माण कार्य में लगे हुए व्यक्तियों को अपने कार्यों को इस प्रकार करना चाहिये जिससे कि आधुनिकता की भावना और उन कार्यों में समुचित सामंजस्य बना रहे। दूरदर्शिता एव बुद्धिमत्ता से उपर्युक्त सुनहरी मर्यादाओं पर चलते हुए जिनका प्रतिपादन हमारे आप्त पुरुषों ने किया है हम यह आशा कर सकते हैं कि हमारे राजनेता अपत्तिजनक साधनो का आश्रय लेने की बात तक मन मे न लायेंगे, हमारे धन एव सत्ता सम्पन्न व्यक्ति करोड़ो निर्धनों की कीमत पर अधिक सम्पन्न बनने का यत्न न करेंगे, हमारे सामाजिक कार्यकर्त्ता निष्काम भाव से सेवारत रहेंगे, हमारे विज्ञानवेत्ता पारिवारिक विनाश के स्थान में अपनी प्रतिभा और प्रयास को समाजहित पर केन्द्रित रखेंगे। हमारे शिक्षाशास्त्री पाठ्य एव परीक्षा प्रणालियों की अपेक्षा उनके तत्व पर ध्यान देते हुए व्यक्ति के विकास को शिक्षा का लक्ष्य बनायेंगे हमारे कलाकार एकमात्र विकारोत्पादक कला की उपासना करना छोडकर सौन्दर्य के दिव्य पहलू के चित्रण और उसका दिग्दर्शन कराने मे संलग्न रहेंगे। हमारे कवि अश्लीलता से बचकर अध्यात्म एव राष्ट्र कवियों का उच्च पद ग्रहण करेंगे और जन साधारण अपने अधिकारों के साथ कर्त्तव्यों पर भी ध्यान रखकर अपने अभिलषित ध्येय को ईमानदारी से सिद्ध करेंगे।

यह स्मरण रखना चाहिये कि मनुष्य प्रकृति में उत्पन्न होता और प्रकृति (संसार) में से गुजर कर ही ईश्वर के साक्षात्कार के मार्ग की ओर बढ़ता है। अतः भौतिक उन्नति और आध्यात्मिक उन्नति एक दूसरे की सहायक बनें इस बात पर ध्यान रखना होता है। इस मार्ग पर बढ़ते हुए यत्न यह होना चाहिये कि लक्ष्य ओझल न हो पाये। धीरे धीरे सांसारिकता तिरोहित होती जाय और भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति में समाज जरा भी उपेक्षित न रहे।

आज देश को कृष्ण जैसे महान् नेता की आवश्यकता है

—चमनलाल आर्य, दिल्ली

(गतांक से आगे)

कृष्ण एक महान आत्मा थे। उन्होने शारीरिक मानसिक तथा आत्मिक शक्तियो के समविकास का उच्चादर्श जनता के सम्मुख रखा और अपनी ज्ञानार्जनी कार्यकारिणी तथा लोक रचना इन तीनो प्रकार की प्रवृत्तियो को विकास की सीमा तक पहुचाया हुआ था। वेदव्यास मुनि कृत महाभारत के अन्तर्गत सभा पर्व मे भीष्म पितामह ने जब कृष्ण की अग्रपूजा का प्रस्ताव रखा था तो इसके समर्थन मे उनके अदभुत गुणो का विवरण इस प्रकार था

नृणा लोके हि कोऽन्योऽस्ति विशिष्ट केशवादते।
दान दाक्ष्य श्रुते शौय ह्री कीर्ति बुद्धिरुत्तमा।
सन्नति श्रीर्धृतिस्तुष्टि पुष्टिश्च नियताच्युते ॥

अर्थात इस समय मनुष्य लोक मे श्रीकृष्ण से बढ़कर कौन है? दान दक्षता वेदादि शास्त्रों का श्रवण शूरवीरता बुरे कार्य करने मे लज्जा कीर्ति, सदबुद्धि नम्रता शोभा ऐश्वर्य धैर्य सन्तोष सब प्रकार की शारीरिक मानसिक आत्मिक पुष्टि व शक्ति का विकास ये सब गुण अच्युत अथवा कर्तव्य मार्ग से कभी न विचलित होने वाले श्रीकृष्ण मे नियत रूप से विद्यमान थे। इसके अलावा वह वेद वेदाग शास्त्रो के भी विद्वान थे। श्रीकृष्ण की महानता का एक और भी प्रमाण है। अठारह दिन के युद्ध समाप्ति पर जब भीष्म पितामह शरशय्या पर पड़े प्राण त्यागने के लिए उत्तरायण की प्रतीक्षा कर रहे थे तो कृष्ण जी ने युधिष्ठिर को भीष्म जी के पास जाकर राज धर्मादि अनेको विषयो पर उनसे उपदेश लेने का प्रस्ताव किया। तदथ भीष्म जी के पास जाकर जब श्रीकृष्ण ने उनसे युधिष्ठिर जी को राज धर्मादि विषयो पर उपदेश देने की प्रार्थना की तो पितामह ने भयकर शारीरिक कष्टो से पीडित होने के कारण उपदेश देने मे अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए श्री कृष्ण को कहा कि आप जैसे सर्व विद्यानिधान महापुरुष की उपस्थिति मे मेरा कुछ कहना भी तो अविनय के तुल्य ही है। अत आप स्वय ही युधिष्ठिर को उपदेश करो। मद्यपान, जुआ, आदि अनेको सामाजिक कुरीतिया भी उनको असह्य थी जब मद्यपान का प्रचलन अधिक हो गया तो कृष्ण ने मदिरा पान करने वालो को कडी सजा देने के आदेश जारी किए थे।

'अद्य प्रभृति सर्वेषु वृष्ण्यन्धक कुलोष्वेह सुरासवो न कर्त्तव्य सव नगर वासिभि। यश्चनोऽविदित कुर्यात् पेय कश्चिन्नर क्वचित्। जीवन स शूल मारो हेत् स्वय कृत्वा सबान्धव'

श्रीकृष्ण सच्चे आर्य थे और सन्ध्योपासना तथा अग्नि होत्र आदि दैनिक कर्त्तव्यकर्म के करने मे कदापित प्रमाद न करते था घर मेंहो या युद्ध में, प्रवास मे हो या किसी मित्र के घर, वह इन नित्य कर्मों को करते हुए दीख पडते हैं। महाभारत मे स्थान स्थान पर इस प्रकार के उल्लेख मिलते हैं।

प्रातरुत्थाय कृष्णास्तु कृतवान् सर्वमाह्नि कम। ब्राह्मणैरभ्यनुज्ञात प्रययौ नगरं प्रति ॥ इत्यादि

कृष्ण सयम का जीवन व्यतीत करने वाले एक विशिष्ट व्यक्ति थे। वह ऋतुगामी थे और गृहस्थी होते हुए भी सदा ब्रह्मचारी बने रहे। एक पत्नीव्रत का पालन करते हुए उन्होने अपत्नी बारह वर्ष तक ऋषि आश्रम में रहकर ब्रह्मचर्य का व्रत धारण करके उनके प्रद्युम्न नाम का पिता समान गुणशील अनुपम पुत्र उत्पन्न हुआ। कृष्ण वर्णाश्रम व्यवस्था के प्रबल पोषक थे और सदा दलित पीडित साधन हीन तथा शोषित वर्ग का साथ देते हुए देखे गए। कृष्ण चरित्र की सर्वोपरि विशेषता उनकी राजनीतिक विलक्षणता और नीतिज्ञता थी। उनका राष्ट्रवाद लोक कल्याण, जनहित सब प्रकार की अराजकता, अन्याय तथा शोषण की प्रवृत्ति को समाप्त कर धर्म राज्य की स्थापना के लक्ष्य को लिए हुए था। वह युद्ध के हामी नहीं थे और न ही रक्त बहाने के हक मे थे। परन्तु सर्वदा न्याय और सत्य का पक्ष लेकर कार्यरत होते थे। उन्होने अपनी कुशल नीति, व्यवहार चातुर्य से और अदभुत सूझ बूझ और कूटनीति से पाण्डवों को उनका राज्य वापिस दिलाने मे अनुपम सफलता प्राप्त की थी और भारत के खण्ड खण्ड को एक सूत्र मे पिरोकर अपनी कुशल नीति से एक सुदृढ़ शासक चक्रवर्ती राज्य की स्थापना करके धर्मराज युधिष्ठिर को सम्राट पद पर सुशोभित किया। वह चक्रवर्ती राज्य कृष्ण के पश्चात भी छत्तीसों वर्ष चलता रहा।

सक्षेप मे कृष्ण के सम्बन्ध में केवल इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि वह अपने युग के महान नेता, राजनीतिवेत्ता, समाज सुधारक, योगी सार्वभौमिक आर्य मर्यादाओं के कट्टर समर्थक आर्य साम्राज्य स्रष्टा, विश्व के हृदय सम्राट, ससार रूपी जल में रहकर भी कमल की भांति निर्लेप, महात्मा, स्थित प्रज्ञ मुनि थे।

आज देश की स्थिति कृष्ण के समय से भी कही विकट और भयकर है। राष्ट्रविरोधी तत्व बडी तीव्रता से सिर उठाए अग्रसर हो रहे हैं। महाभारत काल की तरह केन्द्रीय, सुदृढ परिपक्व नेता की नितान्त आवश्यकता है। अत इस विकट समय मे कृष्ण जैसे ऋषि कोटि के तपस्वी दीक्षावान, कुशल नीतिज्ञ निस्स्वार्थ व्यक्ति की नितान्त आवश्यकता है। प्रभु देश को जल्दी कोई ऐसा नेता दें जिससे देश की अखण्डता बनी रहे। इति

आदर्श की राह पर

सुख की कीमत

स्वामी रामतीर्थ उन दिनों अमेरिका की यात्रा पर थे। मनुष्यता और धर्म के बारे में उनके कई प्रवचन अमेरिकी शहरों में रखे गए। उनकी सीधी सच्ची बातें सुनकर वहां की गोरी जनता बड़ी प्रभावित हुई। स्वामी रामतीर्थ को सुख का मसीहा कहा जाने लगा। सबकी एक ही राय बन गई कि जिसे कहीं भी सुख न मिला हो, उसे स्वामी जी के चरणो मे सुख मिल सकता है।

एक बार एक गोरी महिला स्वामी जी से मिलने आई और चरण छूकर बोली "क्या मेरा दुख आप दूर कर सकते हैं ?'

स्वामी रामतीर्थ ने कहा, मैं केवल उपाय सुझा सकता हू। उस उपाय को अपनाना या न अपनाना आपका काम है। दुख से छुटकारा तभी मिलता है, जब छुटकारे के लिए कोशिश की जाए।

महिला बोली, मेरा दुख इतना बड़ा है कि उससे छुटकारे के लिए मैं कोई भी कोशिश करने को तैयार हू। आप जो उपाय सुझायेंगे, उसे मैं जरूर अपनाऊंगी।'

'फिर तो अच्छा है। अब बताइये कि आपका दुख क्या है ?' स्वामी जी ने पूछा।

गोरी महिला आखो मे आसू भर कर कहने लगी, मेरा एक नन्हा सा बेटा था। बहुत ही प्यारा! बहुत ही चतुर! अचानक वह बीमार पड़ा और चल बसा। उसके मरने के सदमे से मैं पागल हुई जा रही हू। दुख का इतना बड़ा बोझ मेरे कन्धो पर आ गया है कि मैं जी नहीं सकूंगी। बताइए, स्वामी जी! इस दुख से मैं कैसे छुटकारा पाऊ ?'

स्वामी रामतीर्थ दो पल सोचने के बाद बोले, क्यो नही, लेकिन सुख की भी एक कीमत होती है।'

'मैं बड़ी से बड़ी कीमत अदा करने को तैयार हू। बताइए, कितने डालर लगेंगे ?'

स्वामी जी मुस्करा दिये और बोले, 'कीमत क्या लगेगी, यह मैं कल बताऊंगा। कल इसी वक्त यहां आइए।'

अगले दिन गोरी महिला ठीक समय पर आ पहुची। आते ही उसने पर्स से चैक-बुक निकाली और पूछने लगी कितने डालर का चैक काट कर दू ?

'सुख की कीमत डालरो से अदा नही की जाती।' स्वा रामतीर्थ ने गम्भीरता से कहा, 'सुख तो तभी मिलता है, जब आप कभी किसी मनुष्य के साथ भेदभाव का बरताव न करें। क्या आप सभी मनुष्यो को एक जैसा मानने को तैयार है ?'

'क्यों नहीं!' गोरी महिला तपाक से बोली, 'मनुष्य तो सभी एक जसे होते ही हैं।'

'फिर आप एक काम कीजिए। आपके देश मे काले नीग्रो लोगों की कोई [illegible] है। इन काले लोगों पर गोरे लोग बड़ा अत्याचार करते हैं। [illegible] के कुचले से दुखी हैं, यदि सचमुच आप इस [illegible] किसी नन्हे से, प्यारे से, काले, नीग्रो बच्चे को गोद ले लीजिये।'

गोरी महिला सिर से पैर तक कांप गई और कहने लगी, 'नहीं, नहीं! मैं किसी नीग्रो बच्चे को गोद कैसे ले सकती हू ?'

'क्यों ? मनुष्य तो सभी एक जैसे होते हैं न ? जैसा गोरा बच्चा, वैसा ही काला बच्चा!'

'नहीं, नहीं, मैं काले बच्चे को गोद नहीं ले सकती।'

'लेकिन यही है वह कीमत, जो आपको सुखी होने के लिए अदा करनी है।' स्वामी रामतीर्थ ने कहा, 'जो मनुष्य मनुष्यो के साथ भेदभाव बरतता है, उसे सुखी होने का कोई अधिकार नहीं है।'

'नहीं, स्वामी जी! आप कुछ भी कहिए, लेकिन…लेकिन मैं काले बच्चे को गोद नहीं ले सकती।'

फिर आप कभी सुखी भी नहीं होंगी।'

गोरी महिला बिलखती हुई चली गई। वह अपने दुख से कभी छुटकारा न पा सकी।

—मनहर चौहान

(नवभारत १५-४-८४)

एक ईमानदार मजदूर—बाज खां उर्फ वासुदेव

एक बार बाजखां काफी बीमार पड़ गए। उनको किसी डाक्टर ने उन्हें सलाह दी थी कि उसे रोजाना एक कबूतर का गोश्त खाना चाहिए। पर उसने यह कहकर इनकार कर दिया— मैं नही चाहता कि मेरी जान बचाने के लिए कई जाने ली जाए।"

जिन दिनो वह फीरोजाबाद की पुरानी मंडी मुहल्ले के एक सेठ जी के यहा नौकर था उनकी पत्नी को खून की जरूरत पड़ी। दूसरा कोई खून देने को तैयार नही था तो बाज खा ने अपना खून दे दिया पर सेठजी अत्यन्त ही कृतघ्न निकले।

अपनी ईमानदारी और वचन के लिए वह अत्यन्त सजग हैं। अभी उसे १५ रुपये रोज पर काम मिला हुआ है। कल ही एक दूसरे व्यक्ति ने उसे १७ रुपये रोज पर मजदूर रखना चाहा पर उसने यह कहकर साफ मना कर दिया कि—"मैं एक आदमी को वचन दे चुका हू। २ रुपये के लोभ के लिए झूठा नही बनना चाहता।'

बाज खा वहा कहीं भी रहता है, स्वच्छता का पूरा ध्यान रखता है वह बिना किसी के कहे घर के हर कमरे को झाडू लगाकर पानी से साफ करता है। वह कहता है—'आपकी बहिन मुझसे यह कह गई थी कि मेरे भाई साहब तथा बच्चो को कभी धोखा न देना।' बाजखा का अपनी जबान पर काबू है। रूखा-सूखा जो भी मिल जाता है उसी पर वह सन्तोष कर लेता है।

देश के विभाजन के समय बाज खा उर्फ वासुदेव जैसे सहस्रो ही निरपराध हिन्दू और मुसलमान युवक मारे गये। यदि एक मेहतरानी और एक पंडित जी ने बाज खा की रक्षा न की होती तो वह भी आज संसार में न होता।

बाज खा ५१ ५२ वर्ष का हो चुका है। वह नित्य प्रति १० घंटे मजदूरी करके अपना जीवन निर्वाह कर रहा है।

बाज खा के निकट सम्पर्क मे आने के बाद में इस परिणाम पर पहुंचा हू कि सुसंस्कृति के लिये साक्षरता की कोई जरूरत नही है। बिना पढ़ा लिखा होने पर भी वह सुसंस्कृत तथा सदाचारी व्यक्ति है। उसका आचरण सुशिक्षितों के लिये अनुकरणीय है। वह दरअसल एक निष्ठावान श्रमजीवी और मेरे जैसा श्रमजीवी पत्रकार उसके सामने नत मस्तक है।

बनारसी दास चतुर्वेद

हरियाणा में संस्कृत अध्यापक उपेक्षित क्यों?

हरियाणा मे अंग्रेजो के समय के चले आ रहे काले कानूनों की छाया में शिक्षा विभाग मे भी खूब भेदभाव बढ़ता जा रहा है। विभाग मे दो शब्द चल रहे हैं एक मास्टर और एक टीचर शब्द तो ठीक हैं शब्दों का कोई दोष नही लेकिन हरियाणा शिक्षा विभाग शब्दों का भी शोषण करते हुए इन शब्दों के अर्थ का अनर्थ करके इनका गलत अर्थ में प्रयोग करता है। मान्य कोषों के अनुसार मास्टर शब्द का अर्थ विशेषज्ञ या निष्णात' है। लेकिन इस सही अर्थ की जगह मास्टर शब्द का अशुद्ध प्रयोग उन अध्यापको के लिए किया गया है जो कि किसी विषय के विशेषज्ञ नही अपितु कई विषयों का स्पर्शमात्र ज्ञान होने किया है। लेकिन दूसरी ओर वे अध्यापक जो विषय विशेषज्ञ हैं जैसे संस्कृत हिन्दी, कला पजाबी आदि के शिक्षक। लेकिन इन शिक्षको को मास्टर न कहकर टीचर कहा जाता है जब कि ये अलग से विषय की विशेषता प्राप्त करते हैं। मास्टर कहे जाने वाले अध्यापक पदोन्नत होते-होते हेडमास्टर लैक्चरार डी० ई० ओ० डी० इ० ओ० तक के पदो तक पहुच जाते हैं। जब कि टीचर कहे जाने वाले अध्यापक के भाग्य मे यह लिख दिया गया है कि उसकी किसी प्रकार की पदोन्नति पूरी सेवा अवधि के दौरान नही होगी। फलत वह अध्यापक जिस पद पर नियुक्त हुआ था उसी पद से ज्यो का त्यो सेवामुक्त कर दिया जाता है। ये टीचर अपने विषय के विशेषज्ञ हैं और जीवन भर अपने विषय पढ़ाते हैं। उन विषयो की उत्तर पुस्तिका जाचते हैं लेकिन उन्हें अपने विषय का मुख्य परीक्षक तक भी बनने का अवसर नही दिया जाता। ये अध्यापक भले ही एम० ए० कर लें पी० एच० डी० कर लें लेकिन जाने क्यो इन्हे पदोन्नति के योग्य नही समझा जाता? यह समझ से बाहर है। जब कि मास्टर यदि कामचलाऊ अंग्रेजी में एम० ए० कर लेते हैं तो उन्हें लैक्चरार की पदोन्नति का अवसर मिल जाता है।

इनमें संस्कृत अध्यापक में एक विशेषता है कि वह हिन्दी को पूर्ण रूप से पढ़ा सकता है जब कि शिक्षक अपने विषय के अतिरिक्त संस्कृत या अन्य विषय पूर्ण रूप मे नहीं पढ़ा सकते। संस्कृत एक पुरानी समृद्ध ज्ञान विज्ञान व मानव सभ्यता की आधारपूर्ण भाषा है तथा विशेष श्रम साध्य है। इसकी शिक्षा का विशेष प्रबन्ध कम है जहां पूर्णतया इसमें गति प्राप्त हो सकती हो। एक योग्य शास्त्री प्रभाकर एम० ए० व पी० एच० डी० तक को पढ़ा सकता है लेकिन एक प्रभाकर या हिन्दी संस्कृत का प्रथम श्रेणी प्राप्त एम० ए० व्यक्ति भी जिसने शास्त्री न की हो शास्त्री को नहीं पढ़ा सकता। संस्कृत को पूर्ण रूप से जानने के लिए आज भी तपस्या करनी पड़ती है। इसी को देखते हुए हरियाणा सरकार ने शास्त्री ओ०टी० अध्यापकों को मास्टर के समान वेतनमान दिया हुआ है। लेकिन वेतन देकर भी उसे सम्मान नहीं दिया गया है। वह पूरे जीवनभर पदोन्नत नहीं किया जाता भले ही वह बी० ए० एम० ए० पी० एच० डी० की योग्यता प्राप्त कर ले। वह जिस विषय का विशेषज्ञ है जिन्दगी भर उसे पढ़ाता है लेकिन उसका मुख्य परीक्षक नहीं बन पाता। आजादी के बाद संस्कृतका जो स्थान पाठ्यक्रमों में होना चाहिए था वह नही है तथा संस्कृत अध्यापकों को जो सुविधा व सम्मान देना चाहिए था वह नहीं मिला।

उच्च न्यायालयो ने भी अनेक बार शास्त्री ओ० टी० अध्यापक ट्रेंड ग्रेजुएट के समान माना है। हाल ही के पजाब हरियाणा उच्च न्यायालय को सिवील रिट पैटीशन स० ४१३ आफ १९८३ के निर्णय मे शास्त्री को ट्रेंड ग्रेजुएट माना है। योग्यता होते हुए भी एक वर्ग को पदोन्नति न देना सरासर अन्याय है।

निवेदक —

सस्कृत विकास परिषद, हरियाणा

आज का समाजवाद

(श्रीमती सरला कपिला)
ए-११ ग्रीन पार्क, नई दिल्ली

हमारे धर्म ग्रन्थों ने तथा हमारे पूर्वजों ने मनुष्य जातिको आदेश दिया है कि उसे सदैव मनसा, वाचा, कर्मणा का प्रयोग करना चाहिये अर्थात् जो भाव मन में हो वैसा ही वचन और कर्म में व्यवहार होना अति आवश्यक है जिससे समाज में सुख तथा शान्ति बनी रहे। इस लक्ष्य को अपना कर लोक तथा परलोक दोनो सुधर जाते हैं। वैसे यह मार्ग कठिन है, किन्तु इसका अनुसरण करने से आत्मा शान्त रहती है, किन्तु आज कल समाज इसके विपरीत चल रहा है यहा तक कि भाई-भाई से भी अपने हृदय के भाव प्रगट करने मे कठिनाई का अनुभव करता है। उसे भाई पर विश्वास नही सच्चे प्रेम का अन्त हो गया है। कभी-कभी तो ऐसा देखा जाता है, कि वे एक-दूसरे से घृणा करनें लग जाते है।

सत्यमेव जयते का लोप हो रहा है। वैसे सरकारी प्रमाण पत्रो मे विश्व विद्यालय के प्रमाण पत्रो मे इन्ही शब्दो का सर्वप्रथम प्रयोग होता है। आज यदि व्यक्ति अपने अफसर की हा मे हा न मिलाये तो वह जीवन मे उन्नति नही कर सकता। यदि अफसर दिन को रात कहे तो आकाश पर तारे गिना दे। कडाके की धूप निकल रही हो या मूसलाधार वर्षा हो रही हो, कहे,हा सरकार तो अफसर प्रसन्न है यदि उसकी बात से सहमत नही हुए तो नौकरी से अलग कर दिये जाओगे। मनसा, वाचा, कर्मणा का लोप हो गया। हम अपनी सस्कृति को तिलाजलि दे रहे हैं। केवल धन को ही अपना सर्वस्व मान कर अपना अनमोल जन्म नष्ट कर रहे हैं। जिस मनुष्य देह की इच्छा देवता भी करते हैं उसे चन्द सोने चान्दी के टुकडो के बदले गवा रहे हैं।

वास्तविक मित्रता समाप्त हो रही है। मन मे कुछ जिह्वा पर कुछ,किसी भी व्यक्ति के अस्तित्वका पता लगाना कठिन हो गया है। आज देश की स्थिति इतनी बिगड गई है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिये बडे से बडा पाप करने से भी नही डरता। विदेशी शक्तिया धन का लोभ देकर व्यक्तियो को देशद्रोही बनाकर अपना उल्लू सीधा कर रही हैं। धर्म और जाति के नाम पर निहत्थे व्यक्तियों की हत्या कर रहे है। नित्य समाचार पत्रो मे यही पढने को मिलता है, आज उस बैंक मे डकैती हुई जोहरी की दुकान पर डाका पडा दो चार घरो मे चोरी हुई। दो चार व्यक्तियो से हथि यार पकडे गये। यदि ध्यान से सोचे कि इन अपराधो का कारण क्या है? मेरे विचार मे आज कल सब यही चाहते हैं कि ठाठ बाट से रहें। बिना परिश्रम के धन प्राप्त हो जावे। साधन न होने पर चोरी डकैती पर उतारू हो जाते हैं। धार्मिक शिक्षा का अन्त हो गया है।

जहा भी जायें, धन का बोलबाला है। किसी मन्दिर मे जाओ वहां पर भी पैसा प्रधान है। धनी का आदर है। घूस देकर बडे से बडा अपराध करने पर उतारू हो जाते हैं। धन के लालच से भोली भाली पुत्र-वधु को अग्नि मे आहुति देने से भी नही चूकते। नेतागण जिनको जनता अपना प्रतिनिधि बनाकर लोक सभा तथा विधान सभा में भेजती है वे भी धन एकत्रित करने से नही चूकते, उनकी भी यही इच्छा है कि पहले तो आने वाले चुनाव के लिये धन इकट्ठा करें, फिर कम से कम आने वाली तीन-चार पीढ़ियो के लिये धन अवश्य होना चाहिये।

उद्योगपति भी इसी चिन्ता में रहते हैं। यहा तक कि प्रत्येक वस्तु मे मिलावट की जाती है। विदेशो से गो की चर्बी मगाकर वनस्पति घी में तथा साबुन मे मिलाई जा रही है। किसी का कोई धर्म नहीं रहा। केवल पैसा ही भाई-बन्धु है। जिसकी आर्थिक अवस्था कमजोर है उसका समाज मे कोई स्थान नही है, चाहे वह कितना भी योग्य क्यों न हो। [illegible] तास खेलना (यानी जुआ खेलना) शान समझी जाती है।

अपनी भाषा का प्रयोग करना शान के विरुद्ध समझते हैं। अग्रजी में बात करना सभ्यता समझी जाती है। जो व्यक्ति अग्रजी नही बोलता उसका नए समाज मे कोई अस्तित्व नही है। परिवार के सदस्यो से तथा बच्चो से विदेशी भाषा मे बात चीत करना श्रेष्ठ समझा जाता है। यदि उनसे प्रश्न करो कि अपनी भाषा का प्रयोग क्यो नही करते तो उत्तर मिलता है कि अग्रेजी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है, इसको बच्चो को सिखाना अत्यन्त आवश्यक है।

जीवन विलासिता को अपना रहा है। पूज्य बापूजी ने स्वराज्य प्राप्त करने पर कहा था कि सब भारतीयो को साधारण जीवन व्यतीत करना चाहिये तथा अपने को देश का सेवक समझना चाहिये तभी हम वास्तविक स्वतन्त्रता प्राप्त कर सकगे। हम उस आदर्श से बहुत पिछड गये हैं। आज तो भोग विलास का चोरी घूस खोरी का बोलबाला है। देश और जाति का किसी के मन मे ध्यान तक नही। चारो ओर से युद्ध के बादल छाये हुए है। इस समय प्रत्येक भारतवासी का कर्त्तव्य है कि वह वही भाव जो स्वतन्त्रता के आन्दोलन के समय म थे अपनाये तभी भारत स्वतन्त्र रह सकेगा वरना फिर परतन्त्रता की जजीरो मे जकडे जावगे।

इस स्वतन्त्रता का सूर्य देखने के लिए सहस्रो देश भक्तोने सर्वस्व निछावर कर दिया। अनेको यातनाय सही, फासी के फन्दे को हसते-हसते पाया क्या हम उन महान आत्माओ के ऋण से उऋण होने की सोचते हैं? भगवान दया करके सबको सदबुद्धि प्रदान करे ताकि भारत फिर बलिदानो की भूमि बन।



आर्य वीर दल राजस्थान मे शिवरार्थी समूह मे दिखाई दे रह है मध्य मे श्री प० बाल दिवाकर हस जी।

वर की आवश्यकता

आवश्यकता है एक सुयोग्य सम्पन्न स्वस्थ आय वर की। कन्या ५ फीट ६ इच हिन्दी भाषी स्वस्थ, सुन्दर, आकर्षक एव दिल्ली से एम ए (प्रथम वर्ष)। माता पिता गुरुकुलो के स्नातक पिता पूर्व ससद सदस्य एव उच्च पदासीन रहे हैं एव आर्य समाज मे ख्याति प्राप्त जाति और प्रान्त की बाधा नहीं। विवरण के साथ पत्र व्यवहार करें—ब्रह्मदत्त स्नातक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा रामलीला मैदान दिल्ली २

आर्य समाजों की गतिविधियां

प्रान्तीय सभाओं के निर्वाचन

पंजाब

आर्य प्रतिनिधि सभा (गुरुदत्त भवन किशनपुरा चौक जालन्धर) पंजाब प्रधान श्री वीरेन्द्र जी, मन्त्री श्रीमती कमला आर्या, कोषाध्यक्ष श्री ब्रह्मदत्त शर्मा निर्वाचित हुए।

अधिकारियों के अतिरिक्त सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने प्रदत्त अधिकार से १३ अन्तरंग सदस्य और १५ सार्वदेशिक सभा के लिए प्रतिनिधि सदस्य मनोनीत किए।

अधिवेशन २२-७-८४ को जालन्धर मे हुआ।

बंगाल

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल, ४२ शङ्कर घोषलेन कलकत्ता-६ प्रधान श्री वटकृष्ण वर्मन मन्त्री श्री जगदीश प्रसाद शुक्ल, कोषाध्यक्ष श्री आनन्द देव आर्य। अधिकारियों के अतिरिक्त १७ अन्तरंग सदस्य निर्वाचित हुए।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली

समस्त आर्य समाजो के अधिकारियों को यह सूचित किया जाता है कि श्री दरबारीलाल जी संगठन सचिव डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति दिल्ली एवं कार्यवाहक प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा दिनांक २३-९-८४ को हो रहे पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ के लिए Graduates Constituancy सेनेट के चुनाव के लिए डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री सभा के आफिसल उम्मीदवार के नाते चुनाव लड रहे हैं। इस चुनाव मे वही वोट दे सकता है जो पंजाब विश्वविद्यालय का स्नातक हो और उसका नाम इसके लिए रजिस्टर हो। सब सज्जनो से प्रार्थना है कि वे अपना वोट श्री दरबारी लाल जी के लिए सुरक्षित रखें और अपने समस्त मित्रो से भी इसके लिए प्रार्थना करें।

श्री दरबारीलाल आर्य समाज के अथक कार्यकर्ता हैं और उनका सारा जीवन डी० ए० वी० की सेवाओं पर अर्पित है। उनका पंजाब विश्व विद्यालय से सेनेटर चुना जाना अत्यन्त लाभप्रद होगा। कृपया उनके लिए Ist Preference Vote सुरक्षित रखें।

—रामनाथ सहगल
सभा मन्त्री

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का वार्षिक अधिवेशन

नई दिल्ली, १० अगस्त (शुक्रवार) केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की साधारण सभा का वार्षिक अधिवेशन, रविवार १९ अगस्त दोपहर २ बजे अखिल भारतीय केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के नेता ब्रह्मचारी आर्य नरेश की अध्यक्षता मे आर्य समाज करोल बाग में आयोजित हुआ।

—चन्द्र मोहन आर्य, प्रेस सचिव

मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी

डी० ४५/१२९ नई बस्ती रामापुरा वाराणसी

मातृ मन्दिर ने ग्रामीण अंचल में स्थित अपनी भूमि पर विशाल वेद-मन्दिर बनाने का निर्णय किया है जो दो एकड भूमि खण्ड पर बनेगा। इसमें अष्टाध्यायी कक्ष, प्रायोगिक यज्ञशाला, प्रचार कक्ष, वेद अध्ययन कक्ष, आर्य महापुरुष कक्ष समवेत होंगे। संगमरमर की शिलाओं पर चारों वेदों के मन्त्र भी अंकित किए जायेंगे। इसका मुख्यतम लक्ष्य ग्राम प्रचार और अन्तराष्ट्रीय प्रचार निरोध होगा।

दानी महानुभावो का क्रियात्मक सहयोग अपेक्षित है।

—डा० पुष्पावती, अध्यक्ष
मधुराम आर्य, सयुक्त मन्त्री

वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज कोटद्वार (गढवाल) ११ अगस्त से २० अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह धूमधाम से मना रहा है। इस अवसर पर कई आर्य विद्वान, नेता महोपदेशक और संगीताचार्य अपने प्रवचनो एवं भजनो से लाभान्वित करेंगे।

—कृष्णचन्द्र, मन्त्री

पंजाब

आर्य समाज शान्ताक्रुज के तत्त्वावधान में बम्बई महानगरी की समस्त आर्य समाजों ने सामूहिक रूप में निम्न प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया—

(१) समस्त आर्य समाजो की यह सार्वजनिक सभा भारत सरकार तथा प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा उठाए गए पंजाब मे सैनिक कार्यवाही का पूर्ण रूपेण समर्थन करती है। ठीक समय पर की गई इस कार्यवाही से देश को बहुत बड़े खतरे से बचाकर उन्होंने राष्ट्र की सच्ची सेवा की है। अत यह सभा सरकार का धन्यवाद करती है।

(२) इस सभा का यह भी दृढ मत है कि पंजाब से सेना तब तक न हटाई जाय जब तक वहां पूर्ण आतंकवादियो का सफाया न हो जाए और जब तक पंजाब मे पूर्ण शांति स्थापित न हो जाए। यदि सेना को हटाया गया तो उग्रवादियों की प्रतिक्रिया पुन आरम्भ होने की सम्भावनाए हैं जो देश की अखण्डता के लिए खतरा बन सकती है।

(३) यह प्रस्ताव भी पारित किया गया कि देश के सभी पूजा स्थलों की तलाशी भी ली जाए। राष्ट्र विरोधी तत्त्व अन्य पूजा स्थलों पर भी सक्रिय हो सकते हैं। इस सभा का आग्रह है कि तलाशी के अन्तर्गत जिन स्थानों में कानून एवं राष्ट्र विरोधी तत्त्व सक्रिय पाए जाए उन संस्थाओं की कार्यकारिणी समिति को उत्तरदायी ठहराकर उनके विरुद्ध उचित कार्यवाही की जाए। भारत सरकार इस सम्बन्ध मे आवश्यक अध्यादेश जारी कर उसको कानूनी स्वरूप भी प्रदान करे।

(४) आर्य समाज मन्दिर को श्रीनगर मे जलाकर नष्ट कर देने पर यह सभा खेद पूर्वक रोष प्रकट करती है। इस घृणित काण्ड से समस्त आर्य जनों की धार्मिक भावनाओ को जानबूझकर आघात पहुँचाया गया है। इस कार्यवाही से सारे देश के आर्यों मे आक्रोश पैदा हो गया है। भारत सरकार से हमारा आग्रह है कि श्रीनगर (जम्मू काश्मीर) आर्य समाज मन्दिर के पुनर्निर्माण हेतु आर्थिक मुआवजा दे ताकि आर्य समाज के नष्ट हुए भवन का निर्माण किया जा सके। उन उग्रवादियो के विरुद्ध कडी कार्यवाही की जाए जिन्होने यह घृणित कृत्य करके आर्यजनों की भावनाओ से खिलवाड किया है।

(५) पंजाब में सैनिक कार्यवाही के अन्तर्गत हरमन्दिर साहब की पवित्रता को बनाए रखने मे जिन बहादुर सैनिको का बलिदान हुआ वे इस देश के सच्चे सपूत हैं सरकार उनके पारिवारिक जनो के कल्याणार्थ पूरी सहायता करें।

(६) आर्य समाजो की यह सभा शहीद हुए सैनिको के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करती है और परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्माओं को शान्ति एवं सद्गति प्रदान करे।

—कैप्टिन देवरत्न आर्य, महामन्त्री

सागर विश्व विद्यालय में महर्षि दयानन्द चेयर स्थापित की जायेगी।

विगत दिनों नागपुर मे म० प्र० एव विदर्भ को प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग बैठक प्रधाना श्रीमती कौशल्या देवी की अध्यक्षता मे हुई। निर्णय लिया गया कि सागर विश्व विद्यालय मे महर्षि दयानन्द की चेयर स्थापित की जाय। कार्य हेतु प्रा त य आर्य प्र०सभा ५० हजार रु० एव अन्य समाजो से ५० हजार रु० एकत्र कर एक लाख रु० का कोष स्थापित किया जायेगा। इस कार्यहेतु समिति का गठन हुआ इसमे—

सयोजक—श्री रमेश चन्द्र श्रीवास्तव

सदस्य—डा० लक्ष्मी नारायण दुबे, सागर, श्री कैलाश चन्द्र पालीवाल खण्डवा मनोनीत हुए।

सोनाली मे दयानन्द आश्रम खोला जायेगा।

विगत दिनो म०प्र०विदर्भ प्रान्तीय आर्य प्र०सभा की अन्तरग की बैठक कौशल्या देवी की अध्यक्षता मे हुई। इसमे सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि आदिवासी ग्राम सोनाली मे आदिवासियो का पेट्रो डालर पर अन्धाधुन्ध धर्म परिवर्तन कराया जा रहा है। साथ ही आस-पास,के ग्रामीण आचलो मे भय का वातावरण व्याप्त होता जा रहा है, इन राष्ट्र विरोधी गतिविधियो को रोकने हेतु दयानन्द सेवा आश्रम खोला जायेगा।

श्री क्षेमचन्द सुमन का स्वागत

आर्यसमाज मुजफ्फरपुर के भवन मे ४ अगस्त को आर्यसमाज की ओर से सुमन जी का स्वागत अभिनन्दन किया गया तथा जाने माने उत्तर बिहार के साहित्कारों की एक गोष्ठी हुई जिसकी अध्यक्षता श्री जानकी बल्लभ शास्त्री ने की जिसमे मुख्यत श्री सुरेन्द्रनाथ दीक्षित श्री राजेन्द्रसिंह, श्रीकन्हैयाशरणजी श्री रमेशचन्द्र झा तथा श्री सत्यनारायण श्रीवास्तव के भाषण हुए। साथ ही ५ अगस्त को भी साप्ताहिक अधिवेशन के अवसर पर श्री सुमन जी का अत्यन्त ही मार्मिक भाषण हुआ। अन्त मे श्री ओम्प्रकाश ब्रह्मचारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

पन्नालाल आर्य	रामाज्ञा बैरागी
प्रधान	सचालक
आर्य समाज मुजफरपुर	आर्य वीर दल बिहार

श्रावणी उपाकर्म

आर्य सेवा समिति नन्दवल (बहराइच) में श्रावणी पर्व निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

दिन ११-८-८४ ई० को (१) प्रात सामान्य हवन के पश्चात पर्वपद्धति से हवन विशेष ११ गायत्री आहुतियां दी गई। (२) पर्व सम्बन्धी, ऋषि सूक्त, एव भजन गीत, (३) यजुर्वेद शतक से सूक्त का अर्थ सहित पाठ, पर्व मनाने पर प्रकाश डाला गया, (४) शान्ति पाठ, धन्यवाद के पश्चात कार्यवाही समाप्त की गई। —डा० कन्हैय्यालाल आर्य

कार्यवाहक अध्यक्ष

श्रावणी उपाकर्म एवं कर्मवीर पं० जियालाल जन्म जयन्ती समारोह सम्पन्न

रविवार दिनांक १२-८-८४ को आर्य समाज भवन मे श्रावणी उपाकर्म पर्व एव कर्मवीर प० जियालाल जन्म जयन्ती समारोह श्री डा० प्रेमसिंहजी की अध्यक्षता मे धूमधाम से मनाया गया। प्रारम्भ मे श्री आचार्य गोविन्दसिंह जी के सयोजकत्व में वृहद यज्ञ सम्पन्न हुआ तथा नये यज्ञोपवीत धारण कराए गए। तदनन्तर प्रो० बुद्धि प्रकाशजी आर्य, डा० देव शर्माजी, डा० बद्रीप्रसाद जी पचौली, श्री दत्तात्रेय जी आर्य आदि विद्वानों के प्रेरणादायी प्रवचन हुए। अन्त में अध्यक्ष महोदय द्वारा धर्म परीक्षाओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पाने वाले बालक-बालिकाओ को पुरस्कार वितरण कर प्रोत्साहित किया गया। सभा की कार्यवाही का सयोजन आर्य समाज के उपमन्त्री श्री आचार्य गोविन्दसिंह जी ने किया। —रामसिंह, मन्त्री

साहित्य समीक्षा तथा प्राप्ति स्वीकार

दयानन्द गौरव गान

लेखक—श्री शान्ति प्रकाश प्रभाकर

ग्राम—कुनजोली, सावली

सावली बैजरी (गढवाल)

२०×३०/१६ मूल्य ॥=)

श्री दयानन्द भारतीय गढवाल के सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी और आर्य-समाज के एक स्तम्भ थे। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व बड़ा प्रेरणाप्रद एव त्याग और बलिदान के अनेक कीर्तिमानो से अलकृत है। प्रस्तुत पुस्तक मे श्री प्रेम जी ने उनकी सक्षिप्त जीवन गाथा को मनोहारिणी कविता मे प्रस्तुत किया है।

दिल्ली विश्वविद्यालय

उच्च शिक्षा क्षेत्र मे महर्षि दयानन्द के मन्तव्यो के प्रचार एव प्रसार की दृष्टि से 'युवा सस्कार अभियान' सक्रिय किया जा रहा है। इस हेतु एक उपसमिति का गठन व उसकी बैठक दिनाक २० ८ ८४ सोमवार को आर्य-समाज मन्दिर दीवानहाल मे दोपहर १-३० बजे हुई। वहां पूर्व आयोजन श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समारोह व इस बैठक के अन्तराल मे आगन्तुको का स्वागत एव विचार विनिमय हुआ।

दि० वि० के विभागो, कालेजो के वर्तमान व पूर्व अधिकारियो, छात्र-छात्राओ एव आर्य कार्यकर्त्ताओ को सक्रिय योगदान हेतु निमन्त्रित किया गया।

नोट—यु० स० अभियान राजनीति व चुनावो मे भाग न लेगा।

— आर्य बन्धु जयप्रकाश

न्यू मार्केट कमला नगर दिल्ली-७

एक ज्योति बुझ गई

आर्य समाज के राकत के सस्थापक स्वर्गीय जगदम्बा प्रसाद मुख्तार के अन्यतम सहयोगी महाशय मोतीचन्द आर्य भी हमारे बीच नहीं रहे। आप आजीवन सघर्षरत रहे यहा तक कि मृत्यु को भी उनके सघर्ष से जूझना पडा। आपका सम्पूर्ण जीवन आर्य साहित्य आर्य सिद्धान्तो एव आर्य समाज के प्रचार प्रसार हेतु समर्पित था। यह मेरा सौभाग्य था कि ऐसे कर्मठ, धर्म परायण एव लगनशील व्यक्ति के सानिध्य मे रह कर वर्षों तक काम करने का अवसर मिला। उनकी सेवाए समाज का दीर्घकाल तक मार्ग दर्शन करेंगी। ईश्वर प्रदत्त सभी भौतिक उपलब्धिया उनको आर्य समाज के प्रति निष्ठा में कभी भी अवरोध नही बन सकी। जब कि आज का व्यक्ति उसके शतांश की प्राप्ति पर आसमान छूने लगता है। यह आपकी एक विशिष्ट एवं प्रशसनीय विशेषता थी। ईश्वर उनके परिवार को उनके वियोग को सहन करने की क्षमता क साथ उस अमर आत्मा को सदगति प्रदान करे।

—गणेश आर्य, केराकत

श्री कृष्णदेव कपिल का स्वर्गवास

पूर्वी अफ्रीका एव इग्लैण्ड मे ६० साल से ज्यादा समय तक भारतीयों एव विदेशी नागरिको के बीच निष्ठा से वैदिक धर्म एव आर्य समाज का प्रचार करने वाले श्री कृष्णदेव कपिल का देहावसान ९० वर्ष की आयु मे लन्दन मे ३१ जुलाई को हो गया। इस सम्बन्ध मे महाशय कृष्ण द्वारा दिल्ली मे हुई एक शोक सभा मे उनको भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की गई उनकी आत्मा की सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई और उनकी पुत्री श्रीमती कपिल हिगोरानी एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट और उनके परिवार के प्रति समवेदना प्रकट की गई। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल वानप्रस्थ ने सभा की अध्यक्षता की। श्री नवनीतलाल एडवोकेट मन्त्री अद्ध मन्द सेवा सघ, प० जैमिनी शास्त्री एव पत्रकार प० क्षितीश वेदालकार ने इस अवसर पर उनके सस्मरणों को सुनाया और अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की। वे एक योग्य लेखक, वक्ता एव समाज सुधारक थे। इस अवसर पर श्री रामनाथ सहगल और रामलाल मलिक भी उपस्थित थे।

—हरपाल आर्य, महासचिव

(पृष्ठ १ का शेष)

हाथ से बाहर निकल जाता है जो इसे शुरू करते हैं।

प्रधान मन्त्री ने आन्ध्र प्रदेश महाराष्ट्र, कर्नाटक और उत्तर प्रदेश के दंगों पर दुख प्रकट करते हुए कहा कि इनके राजनैतिक और धार्मिक कारण भी हो सकते हैं। दंगों मे मासूम लोग मारे जाते हैं। इनसे मन का छोटापन और कमीनापन ही साबित होता है।

उन्होंने इस आरोप का खण्डन किया कि मैं लोगों का ध्यान बटाने के लिए आजादी और एकता के खतरे की बात करती हू। इससे बडी गलत फहमी दूसरी नहीं हो सकती। अगर देश की बुराइयों की तरफ ध्यान नही दिया जायगा तो हम मजबूत कैसे रह सकते हैं?

श्रीमती गांधी ने कहा कि आध्यात्मिक चेतना और नैतिक मूल्यो के बिना तकनीकि बिना आर्थिक तरक्की के बावजूद भारत महान देश नही बन सकता समय के साथ हमारा समाज भी आधुनिकता की ओर बढ रहा है। इसके साथ कुछ बुराइयों का आना भी स्वाभाविक है। हमें चाहिए कि हम भारत की आध्यात्मिकता नैतिक और धार्मिक परम्पराओ के साथ सन्तुलन रख कर चलें। सभी को अपने धर्मों का यथाशक्ति पालन करना चाहिए तभी हम अच्छे नागरिक बन सकते हैं। किसी भी धर्म मे हिंसा द्वेष अथवा घृणा का सबक नहीं है। सभी धर्म भाई चारे दया और सद्भाव को सर्वोपरि मानते हैं। हम धर्म और उसकी परम्परा पर आंच नही आने देना चाहते। सभी लोग अपने धर्म का पालन करें लेकिन सभी धर्मावलम्बियो को नदियो की तरह भारतीयता के सागर मे एक हो जाना चाहिए।

श्रीमती गांधी ने श्रीलंका की घटनाओ का उल्लेख करते हुए तमिलो की हत्या पर दुख प्रकट किया। उन्होने कहा कि एक कौम के लोगों पर कई वर्षो से लगातार हमले किए जा रहे हैं जिससे हमारे पडोसी देश की स्थिति निरन्तर बिगडती आ रही है।

उन्होने श्री लंका के ... रोध किया कि वे बातचीत द्वारा इस समस्या ... का प्रयास करे उन्होंने आशा प्रकट की कि ... से न केवल श्रीलंका मे शान्ति स्थापित होगी बल्कि ... ४० हजार तमिल शरणार्थियो के पुनर्वास की समस्या से राहत ... गी। इतनी भारी संख्या मे शरणार्थियों का पुनर्वास हमारे लिए एक भारी समस्या है। खुली सीमाओ के कारण उन्हें रोक पाना भी सम्भव नहीं है। इन शरणार्थियों में अनेक जासूस भी हो सकते हैं। हमने घुसपैठियों को रोकने के लिए सीमाओ पर गश्त और बढा दी है।

प्रधान मन्त्री ने हिन्द महासागर की ओर से भारत की सुरक्षा को खतरे का उल्लेख करते हुए कहा कि पाकिस्तान की आधुनिक शस्त्रों की सप्लाई से देश की सुरक्षा को और खतरा बढ गया है। उन्होंने पुन कहा कि देश पर खतरो की बात का बार बार उल्लेख कर देश की अन्दरूनी समस्याओं की ओर से मैं जनता का ध्यान नही बटाना चाहती। मैं देश की आन्तरिक समस्याओ को सुलझाने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रही हू ताकि देश मजबूत बने और किसी भी बाहरी खतरे का एकता और मजबूती से सामना कर सके।

(नवभा १९-८-८४)

सार्वदेशिक प्रेस ... नई दिल्ली-१ में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८५ | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र | दयानन्दाब्द १६० दूरभाष : २७४७७१
वर्ष १९ अंक ३९ | भाद्रपद शु० ८ सं० २०४१ रविवार २ सितम्बर १९८४ | वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति ४० पैसे

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार के नेतृत्व में इन्डोनेशिया सांस्कृतिक यात्रा

२१-६-८४ से ५-१०-१९८४ तक

सार्वदेशिक सभा प्रधान मान्य रामगोपाल जी शालवाले ने एक प्रेस विज्ञप्ति द्वारा इस आयोजन का स्वागत करते हुए इसे सामयिक बताया विशेषत ऐसे समय जब कि जावा वाली सुमात्रा आदि के लाखो धर्म बन्धुओ के धर्म और संस्कृति के रक्षण का प्रश्न ज्वलन्त रूप में समुपस्थित हो और भारतीय आर्यों और हिन्दुओ द्वारा मार्ग दर्शन अनिवार्य देख पड़ता हो।

सभा प्रधान ने आशा व्यक्त की कि यात्रियो के नित्य कर्मकाड भेट वार्त्ताओ, गोष्ठियो सभाओ और साहित्य प्रचार के माध्यम से वैदिक धर्म और वैदिक संस्कृति के सम्बन्ध मे मार्ग दर्शन और हिन्दूतर भाइयों मे भी इनके प्रति आकर्षण पैदा किया जायेगा साथ ही आर्य समाज के प्रचार और संगठन काय के लिए भूमि तैयार करने की भी चेष्टा की जायेगी।

उल्लेखनीय है कि लगभग ५० वर्ष के बाद आर्य जनो की यह मडली जावा, सुमात्रा बाली आदि के पर्यटन एव प्रचार कार्य के लिए जाने वाली है।

इसका सयोजन सुप्रसिद्ध इतिहास एव साहित्यकार श्री डा० सत्यकेतु विद्यालंकार की देख-रेख मे हो रहा है यह तथ्य भी अपने मे बड़ा महत्त्वपूर्ण है। डा० महोदय ने अपने फ्रास प्रवास के काल मे सत्यार्थप्रकाश का फ्रेंच भाषा मे अनुवाद कराके उसे प्रकाशित कराने का श्रेय प्राप्त किया था। इस समय आय समाज के बृहद इतिहास के प्रणयन और प्रकाशन का कार्य उन्होने अपने हाथ मे लिया हुआ है यह तथ्य सर्व विदित ही है।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सयुक्त मन्त्री सावदेशिक सभा

अकालियों ने कार सेवा के बजाए शहीदी जत्थे भेजने का फैसला किया--बूटासिंह

नई दिल्ली, २३ अगस्त केन्द्रीय आवास व निर्माण मन्त्री श्री बूटासिंह ने लोकसभा में अकाली नेताओ व शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के कुछ पदाधिकारियो पर आरोप लगाया कि उन्होने स्वर्ण मन्दिर मे कार सेवा के लिए जत्थे भेजने के बजाय बाबा सन्तासिंह द्वारा सचालित कार सेवा मे बाधा पहुचाने के लिए शहीदी जत्थे भेजने का निर्णय लिया था।

पजाब मे राष्ट्रपति शासन की अवधि बढाने के लिए सविधान सशोधन विधेयक पर चर्चा के दौरान बूटासिंह ने इस आरोप को बिल्कुल बेबुनियाद बताया कि स्वर्ण मन्दिर मे बाबा सन्तासिंह की कार सेवा कोई सरकार सेवा है। उन्होंने कहा कि यह कोई थोपी गई कार सेवा भी नहीं है।

कम्युनिस्ट पार्टी के श्री इन्द्रजीत गुप्त द्वारा बाबा सन्तासिंह की कार सेवा की आलोचना का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि सरकार सेना द्वारा अकाल तख्त और अन्य क्षतिग्रस्त भवनों की मरम्मत करा सकती थी, परन्तु उसने सिख समुदाय की भावनाओं का सम्मान करते हुए यह कार सेवा द्वारा ही सम्पन्न कराने का निर्णय लिया।

श्री बूटासिंह ने घोषणा की कि अगर बाबा खड़गसिंह कार सेवा के लिए आगे आते तो उनका भी हम स्वागत करते और अगर वह भविष्य में भी इसके लिये आने को तैयार हो तो उनका स्वागत होगा।

उन्होने रहस्योद्घाटन किया कि एक अन्य बाबा मगलसिंह भी कार सेवा के लिए आए थे परन्तु दुर्भाग्यवश उन्हे डराया धमकाया गया, जिससे वह पीछे हट गए। उन्होने इस आरोप को भी सरासर निराधार बताया कि जनरलों के साथ अकाली तथा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के नेताओ द्वारा किए गए समझौते को सरकार ने रद्द किया। उन्होने कहा कि जनरलो ने दो शर्ते रखी थी, परन्तु ये नेता पहले तो मौखिक रूप से रजामद हो गए परन्तु बाद मे मुकर गए। उन्होने स्पष्ट किया कि यह समझौता विपक्षी नेताओ की प्रेरणा से तय पाया था और इससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं था।

श्री बूटासिंह ने यह रहस्योद्घाटन किया कि एक बार बाबा खड्गसिंह कार सेवा के लिये तैयार हो गये थे। उन्होने इसके लिये शर्त रखी थी। वह शर्त यह थी कि वह बूढ़े हैं और चल फिर नही सकते, अत दरबार साहिब तक एक सीधी सडक बनाई जाये जिस पर से वह अपनी कार को वहा ले जा सके। हमने उनकी बात मान ली और रास्ते मे पड़ने वाले भवनो को गिरा कर सडक तैयार कर दी, परन्तु तब अकाली नेताओ ने ही उन्हे रोका और उनकी कार को नही जाने दिया। उन्होने कहा कि कार सेवा कोई हाल ही की

(शेष पृष्ठ १९ पर)

सम्पादक—[illegible]
सहसम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

दक्षिण-पूर्वी एशिया की सांस्कृतिक यात्रा

दक्षिण पूर्वी एशिया मे इन्डोनेशिया नाम का जो राज्य है, वह बहुत से छोटे बडे द्वीपो से मिलकर बना है। इन द्वीपों में जावा, सुमात्रा, बोर्नियो (कलिमन्थन), बाली और लम्बक विशेष महत्व के हैं। सोलहवीं सदी के प्रारम्भ तक इन द्वीपो के निवासी हिन्दू (आर्य) धर्म के अनुयायी थे, और वहा के राजा भी हिन्दू थे। जावा के राजा मजपहित (विल्वतिक्त) वश के थे, और उनके नाम विक्रमवर्धन, गिरीन्द्रवर्धन आदि थे। इन राजाओं के बहुत से शिलालेख सस्कृत भाषा में उपलब्ध है।

सोलहवी सदी के पूर्वार्द्ध मे इन्डोनेसिया के विविध द्वीपो मे इस्लाम का प्रवेश प्रारम्भ हुआ और कुछ ही समय में वहा के बहुसख्यक निवासी इस्लाम के अनुयायी बन गये। पर हिन्दू धर्म का वहा से सर्वथा लोप नहीं हो पाया। आज भी इन्डोनीसिया के नब्बे लाख के लगभग निवासी हिन्दू धर्म के अनुयायी हैं। बालीद्वीप की कुल जनसख्या तीस लाख है, जिनमे पच्चीस लाख हिन्दू हैं। जावा में पैंतीस लाख के लगभग हिन्दुओ का निवास है, और लम्बक में दस लाख का। शेष २० लाख हिन्दू सुमात्रा, कलिमन्थन आदि द्वीपो मे रह रहे हैं। दक्षिण पूर्वी एशिया के द्वीपो के साथ भारत का सम्बन्ध बहुत पुराना है। अत्यन्त प्राचीन काल में भारत के व्यापारी वहां व्यापार के लिए जाया करते थे। वहा से वे प्रचुर धन कमाते थे और इन द्वीपों को 'सुवर्णद्वीप' कहा करते थे। बाद मे साहसी भारतीयों ने वहां जाकर अपने उपनिवेश बसाये, और वहा के निवासियों को अपने धर्म मे दीक्षित कर आर्य

इण्डोनेशिया में कुल हिन्दू ९० लाख

विवरण (डिटेल में)

(१)	बाली द्वीप मे	२५ लाख
(२)	जावा	३५ लाख
(३)	पश्चिम लम्बाक	१० लाख
(४	सुमात्रा आदि अन्य द्वीप	२० लाख

बाली द्वीप मे ४१०५ हिन्दू मन्दिर हैं किन्तु उनमे मूर्तिया नही हैं। पूजा स्थल और यज्ञवेदिया हैं।

सस्कृति के रग मे रग दिया। हजारो वर्षो तक भारत का यह सास्कृतिक साम्राज्य दक्षिण-पूर्वी एशिया मे कायम रहा, और उसका प्रभाव अब तक भी वहा की भाषा, रीतिरिवाज, कला तथा सस्कृति पर विद्यमान है। इन्डोनीसिया की भाषा मे सस्कृत के शब्दो की प्रचुरता है। प्रेस स्टाफ को वहां 'विस्मवार्ता' (वेश्म वार्ता) कहा जाता है, और जीवन बीमा निगम को 'जीवाश्रम'। रामायण महाभारत, शाकुन्तलम आदि का वहा अब भी पठन-पाठन होता है। वहां बहुत से विशाल प्राचीन हिन्दू मन्दिर विद्यमान हैं, और जिन प्रदेशो मे हिन्दू धर्म अब भी जीवित दशा मे है, वहा सर्वत्र हिन्दू पूजा स्थलो की सत्ता है। अकेले बाली द्वीप मे ही ४१०५ हिन्दू पूजा स्थल विद्यमान हैं जिनमे प्राचीन पद्धति के अनुसार पूजा-पाठ की परम्परा है।

फीजी, मारीशस, केनिया, सुरीनाम आदि के हिन्दुओं के समान जावा और बाली के हिन्दू वहा नए जाकर नहीं बसे हैं। वे कम से कम दो हजार साल से वहा बसे हुए हैं, और भारतीय हिन्दुओं के समान सत्य सनातन आर्य धर्म के पालन मे तत्पर हैं।

यह आश्चर्य व खेद की बात है कि जावा और बाली के लाखों हिन्दुओं के साथ भारतीय हिन्दुओ का कोई भी सम्पर्क इस समय नहीं है। न भारतीय हिन्दू इन द्वीपों के प्राचीन मन्दिरों (यथा प्रम्बनन का विशाल शिव मन्दिर) और तीर्थ स्थानो के दर्शन के लिए जाते हैं और न ही वहा के हिन्दू तीर्थ यात्रा के लिए भारत आते हैं। इन्डोनीसिया (सुवर्णद्वीप) के साथ भारत का सास्कृतिक सम्बन्ध अब प्राय नष्ट हो गया है। आवश्यकता इस बात की है कि बाली और जावा के हिन्दुओ के साथ भी भारतीय हिन्दू अपना सम्बन्ध स्थापित करे और हिन्दू धर्म मेलजोल का प्रचार करने का जो प्रयत्न गत सदी मे महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा स्वामी विवेकानन्द आदि द्वारा किए गए हैं बाली और जावा के हिन्दुओं को उनसे परिचित कराया जाए। इस सम्बन्ध मे अब तक जो थोडा बहुत कार्य हुआ है, वह रामकृष्ण मिशन द्वारा ही किया गया है। स्वामी विवेकानन्द के कुछ ग्रन्थो का अनुवाद इन्डोनीसिया की भाषा में हो चुका है, और वहा उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। पर महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओं से वहा के लोग अभी तक सर्वथा अपरिचित हैं। भारत मे हिन्दू धर्म मे जो महान जागृति हुई है और आर्य समाज द्वारा जो अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य इस सम्बन्ध में किया गया है उससे इन्डोनीसिया के हिन्दुओ का परिचय होना ही चाहिए। विश्वभर के हिन्दुओ मे एकसूत्रता की भावना का प्रादुर्भाव करने और उन्हें एक सूत्र मे बाधने के जो प्रयत्न पिछले वर्षों में प्रारम्भ हुए हैं, वे अधूरे ही रह जायेंगे यदि बाली, जावा और लम्बक के हिन्दुओं को इससे पृथक रखा गया। इन्डोनीसिया के बहुसख्यक निवासी यद्यपि अब इस्लाम को अपना चुके हैं, पर भारत का सास्कृतिक प्रभाव उन पर अब भी पूर्ण रूप से विद्यमान है। वहा के मुसलमानों की कला, नृत्य आदि सब रामायण और महाभारत से प्रभावित हैं, और उनके अपने नामो के लिए सस्कृत शब्दो को प्रयुक्त किया जाता है। वहा की मुस्लिम महिलाओं के नाम आज भी सरस्वती, रत्ना सदृश होते हैं। यही बात पुरुषो के सम्बन्ध मे भी है। इन्डोनीसिया के साथ हमारा जो यह सास्कृतिक सम्बन्ध है, वह अत्यन्त महत्व का है। यद्यपि वहा के बहुसख्यक निवासी अब हिन्दू धर्म का परित्याग कर चुके हैं, पर उन्होंने अपनी उस भाषा, कला और परम्पराओ को नही छोडा है जिन पर भारतीय सस्कृति का पूरा पूरा प्रभाव है। सास्कृतिक दृष्टि से वे अब भी भारतीयों से अधिक भिन्न नहीं हैं। अत. यह भी आवश्यक है, कि इन्डोनीसिया के मुसलमानो से भी सम्पर्क को बढाया जाए।

दक्षिण पूर्वी एशिया के जावा, बाली आदि के हिन्दुओं तथा उस क्षेत्र के अन्य निवासियो के साथ निकट सम्पर्क स्थापित करने के प्रयोजन से एक यात्रा का आयोजन किया गया है, जो २१ सितम्बर, १९८४ को दिल्ली से प्रारम्भ होगी। यात्रा केवल १५ दिन की होगी। आर्य समाज के अनेक मूर्धन्य सन्यासी, विद्वान तथा कर्मठ कार्यकर्ता इस यात्रा में सम्मिलित हो रहे हैं। बाली आदि मे हिन्दुओ की जो पूजा पद्धति है, उनके जो रीति-रिवाज व पर्व हैं उनकी जो समाज व्यवस्था है, और उनमें जिन धार्मिक ग्रन्थो को लोकप्रियता प्राप्त है—इन सब बातो का अध्ययन करने के साथ-साथ वहा के निवासियों को आर्यसमाज के मन्तव्यो, महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओं तथा वैदिक पूजा पद्धति से भी परिचित कराने का प्रयत्न किया जायगा। यह धार्मिक व सास्कृतिक आदान प्रदान कितने महत्व का होगा, यह लिखने की आवश्यकता नहीं है। इस यात्रा के विषय में अधिक जानकारी निम्नलिखित पते पर प्राप्त करे —

—श्री अशोक मित्रा

ट्रैवल ट्रस्ट, बी०-१४ निजामुद्दीन ईस्ट,

फोन नं० ६९८०५१ नई दिल्ली-१३

(डा० सत्यकेतु विद्यालंकार द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार)

—सम्पादक

वेद प्रचार हेतु सम्पर्क करें !

श्री अमरसिंह जी आर्य भजनोपदेशक ने, अपने सतत् प्रयास से तीन ग्राहक सार्वदेशिक साप्ताहिक के बनाये हैं। आप बडे उत्साही और ओजस्वी गायक हैं। धर्मोपदेश के लिये द्वारा नृप, मुरली विभिन्न सार्वजनिक गेट, जयपुर-१ से सम्पर्क करें।

—सम्पादक

नेत्र शिविर

आर्य समाज मेरठ शहर की ओर से एक विशाल निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर दिनांक ३१ अक्तूबर १-२-३-४ नवम्बर १९८४ को कुर्मी स्मारक मैदान में आयोजित किया जाएगा जिसमें आंख, नाक, गला, कान के आपरेशन होंगे। जनता जनार्दन से प्रार्थना है कि तन, मन, धन से सहयोग देकर कृतार्थ करें। कृपया धन राशि व चेक मनीआर्डर द्वारा मन्त्री आर्य समाज मेरठ शहर के पते पर भेजने की कृपा करें।

—मन्त्री

सम्पादकीय

चेतावनी पर ध्यान देने का समय

(२)

उन्होंने (डा० अम्बेडकर) कहा कि सामाजिक और आर्थिक ध्येयो की पूर्ति के लिए सबसे पहला काम है सवैधानिक तरीको का अपनाया जाना। इसका अर्थ है हमे सविनय अवज्ञा असहयोग और सत्याग्रह के तरीको का परित्याग करना चाहिए। जहा सवैधानिक तरीके खुले हुए हैं वहा असवैधानिक तरीकों का कोई औचित्य नही है। ये तरीके अराजकता के व्याकरण के अतिरिक्त और कुछ नही है।"

"डा० महोदय ने यह भी कहा—दूसरा काम जो हमें करना चाहिए वह है उस चेतावनी पर उन सबको ध्यान देना जिनकी लोकतन्त्र की रक्षा करने में रुचि है, अर्थात महान से महान व्यक्ति के चरणो पर अपनी स्वतन्त्रता न्योछावर कर देना जो उनकी सस्थाओं को अपने अधीन करने मे उसे समर्थ बनाएगा। किसी महान पुरुष का आभारी होना गलत नही है परन्तु आयरलैन्ड के देशभक्त के शब्दों मे 'अपनी इज्जत की कीमत पर कोई भी पुरुष आभारी नही हो सकता। कोई भी महिला अपने सतीत्व की कीमत पर कृतज्ञ नहीं हो सकती हैं और कोई भी राष्ट्र अपनी आजादी की कीमत पर आभारी नही हो सकता।'

यह सावधानता अन्य देशो की अपेक्षा भारत के सम्बन्ध मे सबसे अधिक महत्व की है क्योंकि भारत मे अन्ध भक्ति, पतन और अन्त में अधिनायकवाद (डिक्टेटर शिप) की दिशा मे अग्रसर करने का मार्ग है। तीसरा काम जो हमे अवश्य करना चाहिए वह है अपने राजनीतिक लोकतन्त्र को सामाजिक लोकतन्त्र का भी रूप देना। राजनीतिक प्रजातन्त्र सामाजिक प्रजातन्त्र पर आधारित हुए बिना चल नही सकता। सामाजिक प्रजातन्त्र का अर्थ है जीवन के सिद्धान्तो के रूप मे स्वतन्त्रता समानता और भ्रातृ भाव को मान्यता देना। इन तीनो में से किसी एक को एक दूसरे से अलग किए जाने का अभिप्राय है प्रजातन्त्र के मूल उद्देश्य पर कुठाराघात करना।"

आवश्यकताएं

सविधान निर्मातृ असेम्बली के अध्यक्ष ने जो कुछ कहा था उसका भी डा० साहब के कथन के सदृश बड़ा मूल्य था। उन्होने कहा था—

"हमने लोक तान्त्रिक सविधान का निर्माण किया है परन्तु प्रजातान्त्रिक व्यवस्थाओं के सफल सचालन के लिए उनमे जो इनका सचालन वा नियोजन करेंगे दूसरो के दृष्टिकोण का आदर करने की तत्परता, इच्छा, और सुलह समझौते की योग्यता का होना जरूरी है।"

बहुत सी चीजें जो किसी सविधान मे नहीं लिखी जा सकती वे परम्पराओ के माध्यम से की जाती है। वोटों और मत विभाजन का आश्रय लिए बिना जिस ढग से हम इस सविधान को बनाने मे समर्थ हुए हैं उससे उस आशा को बल मिलता है। सविधान मे चाहे कुछ लिखा गया हो या न लिखा गया हो, देश का कल्याण प्रशासन के ढग पर ही अवलम्बित होगा और यह बात उन मनुष्यो पर निर्भर होगी जिनके हाथ मे देश का शासन होगा। यदि चुने गए व्यक्ति योग्य ईमानदार और कार्यकुशल हुए तो वे त्रुटिपूर्ण सविधान से भी अधिक से अधिक लाभ उठाने मे समर्थ होगे। यदि उनमे इन का अभाव हुआ तो सविधान देश की सहायता नही कर सकेगा।"

(क्रमश)

परमाणु महाभारत

अपने चौंकाने वाले तर्कों से ताजमहल को हिन्दू राजमहल और कुतुबमीनार को विष्णुध्वज सिद्ध करने वाले इतिहासकार पी. एन ओक ने अब कहा है कि महाभारत एक परमाणु-युद्ध था। हाल ही में एक अमेरिकी फौजी अफसर रिचर्ड बेंपर ने परमाणु युद्ध के बाद के काल का खाका खीचते हुए बताया था कि धरती पर सभी प्रकार का जीवन जड हो जाता है। इस बिन्दु से अपनी बात शुरू करते हुए पी एन ओक कहते हैं कि महाभारत के युद्ध के बाद भी ऐसा ही हुआ था। चारों तरफ एक तिमिरयुक्त निर्वात बन गया था और वातावरण मे धूम छितर आई थी। नदियो ने अपना प्रवाह बदल दिया था। घना कोहरा था और धरती पर धूल बरसती थी। सूरज की किरणें धूल और कोहरे को बीध नहीं पाती थी और हर सुबह सूरज को बडे बडे काले धब्बे घेर लेते थे। चाद और सूरज बडे असहाय से लगते थे और काले-सलेटी और लाल बुदबुदे उन्हें चापे रहते थे। चिडिया उडना भूल गई थी और छटपटाती थी और उड-उड कर गिरती थी। श्री ओक ने महाभारत का हवाला देते हुए कहा है परमाणु युद्ध होने के करीब २५ वर्षों बाद यह तकलीफ-देह तिमिर छटा और सूरज की किरणें अपने सहज रूप मे धरती को छू सकी। महाभारत का युद्ध आज से कोई पाच हजार साल पहले लडा गया था और श्री ओक के अनुसार महाभारत मे ब्रह्मास्त्र नारायणास्त्र तथा आग्नेयास्त्र नामक जिन हथियारो का जिक्र आया है वे परमाणु प्रक्षेपास्त्र थे।

यह जानना सुखद है कि भारत के पास वह सारा विज्ञान था, जो आज १९८४ मे उपलब्ध है। लेकिन पी एन ओक यह भी बता दें कि हमारे पास और क्या क्या था? आखिर २०८६ या २५८४ ईस्वी का विज्ञान आज से कही आगे बढा हुआ होगा। अत दावा ही करना हो तो यह क्यो नही किया जाए कि दुनिया हजार साल बाद जो काम करेगी वह हम महाभारत के दिनो मे कर चुके थे। हमे चाहिए कि हम ब्रह्मास्त्रो के टूटे हिस्से अपनी जमीन पर खोजना शुरू कर दें, ताकि दुनिया का सबसे मारक अस्त्र हमारे ही पास हो। इस बार के महाभारत मे हम पिछडे क्यो?

(नवभारत २७ ३-८४)

श्री ओक की खोज अविश्वसनीय एव अप्रामाणिक देख पडती है।—सम्पादक

आकाशवाणी की हिन्दी सरल संस्कृत निष्ठ शब्दों की ही रहनी चाहिए

एक बार लोकसभा मे हिन्दी भाषा को पूर्णत राजभाषा बनाए जाने के विषय पर बहस हो रही थी और तमिलनाडू के कतिपय सदस्य इसका घोर विरोध कर रहे थे। इस बहस के दौरान स्व० प० प्रकाशवीर शास्त्री जी का सस्कृत निष्ठ हिन्दी भाषा मे बडा ओजस्वी भाषण हुआ था।

तमिलनाडू के एक सासद ने हिन्दी भाषा को समझने की कठिनाई का भी एक तर्क प्रस्तुत करते हुए कहा था कि 'हम प्रकाशवीर शास्त्री की हिन्दी को भली भाति समझ लेते हैं परन्तु चादनी चौक की हिन्दी को नही समझ पाते।"

इस प्रसग मे १७-८ १९८४ के हिन्दुस्तान टाइम्स मे 'आकाशवाणी की हिन्दी' उपशीर्षक से प्रकाशित एक पत्र हमारी दृष्टि से गुजरा है जिसके लेखक हैं श्रीबाला सुब्रह्मयन (देहली) जिनके विचारो से उपर्युक्त मद्रासी सासद के विचारो की भली भाति पुष्टि होती है।

'जोगिन्दर सिंह के पत्र (ए०आई०आर० हिन्दी, हिन्दु टा ९ ८ ८४) के सम्बन्ध मे मेरा विनम्र निवेदन यह है कि मैं तमिलनाडू का निवासी हू, आकाशवाणी पर प्रचारित विविध प्रोग्रामो को समझने मे मुझे कोई कठिनाई नही होती। सत्य तो यह है कि अग्रेजी प्रोग्रामो को विशेषत समाचारो को समझने मे कठिनाई होती है जिसका कारण है समाचार पढने वाले के उच्चारणो से अपरिचिति।

तथाकथित विशिष्ट और सस्कृत निष्ठ हिन्दी उन दाक्षिणात्यो (दक्षिण वालो) को ग्राह्य होती है जिनका उर्दू के साथ नाम मात्र का सम्पर्क होता है और जिनका सस्कृत के साथ करोडो वर्षों पूर्व से सम्पर्क चला आ रहा है।

दक्षिण की मलयालम आदि भाषाओ मे सस्कृत के ५० प्रतिशतक से अधिक शब्द है।

हिन्दी भाषा भाषी लोगो को हिन्दुस्तानी ग्राह्य हो सकती है परन्तु

सामायिक चर्चा–

वहा हिन्दू वोट है

एरशाद ने विपक्ष को मात करने के लिए एक नई चाल खेली है। अचानक वे हिन्दुओ के प्रति उदार हो गये हैं। विदेशियों की सम्पत्ति या भारत गये हिन्दुओ की जमीन जायदाद को हडपने के कानून को सख्त बनाते अचानक उन्होने असली वारिस को सम्पत्ति की तुरन्त सुपुर्दगी कराने की व्यवस्था सम्बन्धी कदम उठाने की घोषणा की है। अल्पसंख्यक हिन्दुओ के प्रति यकायक यह दया क्यो? दिसम्बर मे ससदीय चुनाव होने वाले हैं और इस घोषणा के मार्फत वे अल्पसख्यको के वोट प्राप्त करना चाहते हैं। उनके इस कदम से साफ है कि विपक्ष ने कैसा दबाव बनाया हुआ है और उसकी बढती लोकप्रियता से एरशाद किस तरह चिंतित हैं। बाग्लादेश की कुल आबादी मे हिन्दू बारह प्रतिशत हैं। आम चुनाव की स्थिति मे ये निर्णायक इसलिए होगे कि एरशाद के जनदल व दोनोविपक्षी गठबधनो मे सीधीटक्कर होने की सभावना है। त्रिकोणात्मक सघर्ष हो तो भी जनदल का जीत पाना आसान नही है। इसीलिए एरशाद समर्थन के वास्ते काफी हाथ पाव मार रहे हैं। पहले विपक्ष मे फूट डलवा कर बेगम जिया को फोडने, फिर दूसरे छोटे दलो को साथ मे लेने की कोशिश की। इनमे नाकामयाबी के बाद अब आबादी के बारह प्रतिशत अल्पसख्यक हिस्से मे अपनी छाप लगाने के लिए उन्होने यह कदम उठाया है।

हिन्दू इससे निश्चित ही खुश होगे और अपने को ज्यादा सुरक्षित महसूस करेगे। हो सकता है कि जनदल के लिए तालियां भी पीटने लगे। पर क्या यह उचित होगा? सैनिक सरकार के साथ इनका जुडना खतरे से खाली नही। एकदम एरशाद के साथ जुड जाने से राजनैतिक दल इस्लाम के नाम पर बहुसख्यक आबादी को भडका सकते हैं। यो भी कभी किसी राजनैतिक दल की हिन्दुओ से सहानुभूति नही रही है। अब अगर इन्हे लगा कि ये सैनिक शासन के साथ हो रहे हैं तो अल्पसख्यको के और विरोधी हो जायेंगे। एरशाद के गुणगान या विपक्ष क समर्थन दोनो से ही हिन्दू अपने हित नही साध सकते। फिर यह साफ है कि हिन्दू वोट ध्यान मे रखकर एरशाद ने टुकडे फेके हैं। नही तो एरशाद ही थे जिन्होने 'दुश्मनो की सपत्ति' वाले कानूनो को ज्यादा पेचीदा बनवाया।

एरशाद पर भरोसा नही किया जा सकता हालाकि उन्होने चुनाव से पहले कानून मे सुधार करवा करके हिन्दुओ का सम्पत्ति लौटाने का काम शुरू कराने के सकेत दिये हैं। बावजूद इसके उनकी गम्भीरता छलावा ही लगती है लेकिन हिन्दुओ के साथ ऐसी दिखावटी सहानुभूति पहले ढाका के किसी भी शासक ने नही दिखाई इसलिए हिन्दू उनकी वाहवाह करेंगे ही। पर कितने दिन?

ये विचार जनसत्ता ने अपने १७-८-८४ के अक मे व्यक्त किये हैं।

सौन्दर्य प्रतियोगिताएं

आर्य समाज प्रारम्भ से ही सौन्दर्य प्रतियोगिताओं का विरोधी रहा है इतना ही नही भारत मे इनके आयोजन को निरस्त कराने में अग्रसर रहा है इसलिए कि ये जहा भारतीय धार्मिक और सामाजिक विश्वद परम्पराओ का अतिक्रमण करती हैं वहा हमारी लडकियो की लज्जा, शील और वैयक्तिक मान-मर्यादा के साथ घिनौना खेल खेलने की अवस्थाए भी पैदा करती है। इसके विपरीत लाखो करोडो सुन्दरियो मे से किन्ही १२ को तरजीह दिया जाना चुनाव की विश्वसनीयता को सन्देहास्पद बनाती है।

अभी हाल मे इस प्रकार के कटु अनुभवो के प्रकाश में अन्तर्राष्ट्रीयप्रतियोगिताओ के विरुद्ध आवाज उठी है और हिन्दुओ, मुसलमानों और बौद्ध देशों की लडकियों को इन प्रतियोगिताओ मे भाग लेने के लिए विवश करने तथा भेजने का वर्जन करने की माग उठी है।

इस माग को बलवती बनाने के लिए कहा गया है कि पश्चिम के उन्मुक्त समाज मे भेजे जाने पर उन्हें मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताडित किए जाने के साथ साथ वे दुराचार की शिकार बनाई जाती है।

गत वर्ष श्रीलका के राज्य मन्त्री ने लका मे नैतिक और आध्यात्मिक आधार पर इस प्रतियोगिता के किए जाने से स फ इ कार कर दिया था।

१९८३ मे लका की सौन्दर्य रानी ने प्रतियोगिता समाप्त होने पर माडल होने से साफ इन्कार कर दिया और अपने देश श्रीलका को लौट आई थी। माडलिंग का आम अर्थ है धनी असामियो की काम-पिपासा की तृप्ति के लिए उपलब्ध होना।

४ जुलाई १९८४ को श्रीलका की एक दूसरी तथाकथित सौन्दर्य की रानी अमेरिका के स्वतन्त्रता समारोह मे अपने प्रदर्शन से और दुराचारियो के दुराचार एव अत्याचारो से बचने के लिए अमेरिका छोडकर लका स्थित अपने माता-पिता भाई-बहनो एव रिश्तेदारों के पास लौट आई थी। उसके इस निश्चय से यह स्पष्ट हो गया था कि ये प्रतियोगिताए लडकियो के दोहन शोषण के माध्यम से पैसा बटोरने तथा कामवासना की तृप्ति के लिए ही आयोजित की जाती है।

फारुक और रामाराव की बर्खास्तगी को एक ही कोटि में रखना असंगत है

श्री रामाराव को जिस ढग से मुख्यमन्त्री (आन्ध्र) के पद से हटाया गया है उसकी असवैधानिकता और अनौचित्य के सम्बन्ध मे बहुत कुछ लिखा और कहा जा रहा है और इसे लोकतन्त्र की उचित रीति से हत्या इगित की जा रही है और की गई है। परन्तु श्री रामाराव और श्री फारुक के अपदस्थ करण को एक ही कोटि मे रखना वा रखा जाना ठीक नही है जैसा कि एक बडे पत्रकार के निम्नलिखित उद्गारो से स्पष्ट है —

"जब राज्यपाल श्री जगमोहन ने जम्मू काश्मीर मे डा० फारुक को हटाकर वहा शाह सरकार कायम करवाई थी तो हमने उसका समर्थन किया था क्योकि हम फारुक को देश-विरोधी शक्तियो के समर्थक समझते हैं। देश की अखण्डता को कायम रखने के लिए डा० फारुक की बर्खास्तगी जरूरी थी। लेकिन आध्र मे तो कोई देश विरोधी गतिविधि नही थी और नही श्री रामाराव देश विरोधी तत्त्वो को प्रोत्साहित ही कर रहे थे।"

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

निःशुल्क अन्तर्जातीय विवाहों के लिए सम्पर्क करें

वेदपाल शास्त्री संयोजक

अन्तर्जातीय विवाह विभाग

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन

रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२

फोन : ३२७७७१-३२०९८५

शब्दो को तो यह यूनानी भाषा जैसी है।

विपरीत इसके सस्कृतमय सरल हिन्दी से लम्बे अर्से से परिचित होने के कारण सभी इसे सहज ही समझ लेते हैं।

उदाहरणार्थ जल, पुस्तक स्त्री, आकाश आदि सस्कृत मूल के शब्दो से प्राय सभी परिचित होत हैं जबकि उनके समानार्थक, पानी, किताब औरत आसमान आदि से विशेषत दक्षिण वासी अपरिचित होते हैं।

महर्षि दयानन्द का वार्त्तालाप और उपदेश

(१)

शपथ खाना अवैदिक

स्वामी जी महाराज विद्यार्थियों को उपदेश दिया करते थे। उन्हें मालकगनी का सेवन करने की प्रेरणा करते थे। उनका परस्पर वाद कराते थे। उन्हें व्यायाम की शिक्षा देते और समय समय पर उनकी परीक्षा भी लिया करते थे।

स्वामी जी कसम खाने के बहुत विरुद्ध थे। एक बार उनकी अनुपस्थिति में कासगंज की उनकी संस्कृत पाठशाला के सब अध्यापकों ने आपस में परामर्श करके विद्यार्थियों को कहा तुम सबको सत्य प्रचार और आर्ष ग्रन्थों के ही पढ़ने पढ़ाने के लिए शपथ करनी चाहिए। रामप्रसाद को छोड़कर शेष सब विद्यार्थियों ने वेद उठाकर सौगन्ध खाई और कहा हम जीवन भर आर्ष ग्रन्थ ही पढ़ें-पढ़ायेंगे। रामप्रसाद सौगन्ध न खाने के अपराध में पाठशाला से निकाल दिया गया। इस बार की यात्रा में जब स्वामी जी को यह समाचार मिला तो उन्होंने सबकी भर्त्सना की और कहा कि कितना ही यत्न क्यों न किया जाय तुम लोग पोप लीला करने से नहीं रुकते। हमारी आज्ञा के बिना तुमने ऐसा क्यों किया? इस प्रकार अध्यापकों को डाट-डपटकर उन्होंने रामप्रसाद को पाठशाला में सम्मिलित कर लिया।

(२)

मैं ऐसे तुच्छ भेदभाव को अच्छा नहीं समझता

एक दिन स्वामी जी कलकत्ता में अपने स्थान पर विराजमान थे। उनके पास अनेक जिज्ञासु बैठे सन्देह मिटा रहे थे। उस समय एक मुसलमान सज्जन वहां आ गए। वे सत्संग में तो आना चाहते थे परन्तु मकान के भीतर प्रवेश करने में झिझकते थे। स्वामी जी ने उन्हें आदर से कहा' बिना संकोच भीतर चले आइए। मैं ऐसे तुच्छ भेद-भाव अच्छे नहीं समझता' उन सज्जन को स्वामी जी के सत्संग से बड़ी प्रसन्नता हुई।

(३)

गोरक्षा का गहरा भाव

एक बार महाराज की संयुक्त प्रान्त (उत्तर प्रदेश) के छोटे लाट म्योर महोदय से और इसी प्रांत के शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर से भेंट हुई। महाराज के हृदय में गोरक्षा का गहरा भाव था इसलिए वार्त्तालाप में उन्होंने लाट महोदय को कहा 'अब आप स्वदेश यात्रा करने वाले हैं। वहां जाकर आप भारत सचिव की कौंसिल में सम्मिलित होंगे। उस समय भारत के हित का ध्यान अवश्य रखें। गोहत्या बन्द कराने का यत्न करें।"

लाट महोदय ने स्वामी जी के कथन को दत्तचित्त होकर सुना और वचन दिया कि वे आपके कथनानुसार प्रयत्न अवश्य करेंगे।'

(४)

सन्मार्ग पर आरूढ़ क्यों नहीं?

एक दिन हेमचन्द्र ने स्वामी जी से पूछा 'भगवन्! बड़े-बड़े धुरन्धर पंडित आपके साथ शास्त्रार्थ करने आते हैं क्या वे सभी भूल पर है? स्वामी जी ने हंसकर कहा "सत्यासत्य का विवेक तो बहुत से विद्वानों को प्राप्त है परन्तु आजीविका के प्रलोभन में पड़कर सन्मार्ग पर आरूढ़ नहीं होते।"

(५)

पुजारी शब्द का अर्थ

एक दिन फिरोजपुर छावनी के बड़े मन्दिर का पुजारी रघुनाथ, स्वामी जी के निकट गया। स्वामी जी ने उससे कहा कि प्रश्न पीछे कीजिएगा पहले यह तो बताइए कि पुजारी शब्द का अर्थ क्या है? रघुनाथ इस पर अवाक् बना रह गया। तब श्री स्वामी जी ने बताया कि पुजारी पद का अर्थ है पूजा का शत्रु! आप लोग पण्डित होकर ऐसे नाम क्यों रख लेते हो?

(६)

कौन सुखी और कौन दुःखी है?

सहारनपुर में स्वामी जी महाराज व्याख्यान दे रहे थे। उन्होंने कौन सुखी और कौन दुःखी है इस पर एक दृष्टान्त सुनाया।

"किसी नगर मे एक धनाढ्य मनुष्य रहता था। उस पर किसी अपराध में अभियोग चलाया गया। अदालत ने उसके अभियोग के निर्णय की जो तारीख नियत की हुई थी उसके कई दिन पहले ही वह चिन्ता सागर मे डूब गया।

जब कि उसके सारे नौकर चाकर बड़ी प्रसन्नता से खाते-पीते और काम करते थे।

अभियोग (मुकदमे) की तारीख आने पर उनको अदालत में पहुंचाने के लिए एक पालकी लाई गई। उसमे बड़ा कोमल वस्त्र बिछा हुआ था और खस की टट्टियां लगी हुई थी। उस पर सवार होकर वह धनी न्यायालय को गया परन्तु उसके चित मे चिन्ता की चिता प्रचण्ड हो रही थी। उसके मन मे सुख का नाम तक न था। उसके नौकर उस समय भी प्रसन्नतासे पालकी उठाएलिए जारहे थे।"

महाराज ने इसका सार यह समझाया कि ऊपर के ठाट बाट और ऋद्धि समृद्धि में सुख नहीं है। सुख तो मन की सम अवस्थाओं मे रहता है।

—सं० कर्ता रघुनाथप्रसाद पाठक

अथ सामवेद संहिता

पूर्वार्चिकः। आग्नेयकाण्डम्। प्रथमो प्रपाठकस्य
पूर्वार्द्धः। प्रथमोऽध्याय प्रथमा दशति।

(छं० १) विश्वसुनेता प्रभो! भेंट तब चरणों में यह आमन्त्रण।
प्रकटो मुझमें सबमें स्वामी! तुम बिन सूने हृदयासन।
परम गुरो! हम आर्तजनों के जीवन हो द्युतिमान।
कण-कण में वास तुम्हारा देता नवजीवन का दान।
सारे दुर्गुण, पाप भस्म हो जिस विधि वह दो हमको ज्ञान।
दान भोग हो सिद्ध, विनय यह सुनो सुदाता दयानिधान।
हमें बुलाते अति दूरी से, क्यों न निकट आते भगवन्?
हृदय सदन आसीन सदा रहा करो नाथ! हियतृषा शमन।

(सो०) ओ३म् सच्चिदानन्द, हे अग्ने! नायक परम।
हे अनन्त द्युतिकंद, महा प्रभो! ये स्तुति वचन।
श्रुति बहुश्रुत तव नाम, 'अग्नि' महापावन विशद।
दर्शाता चिर धाम, मोक्ष रूप अक्षय सुखद।
थामो दुर्बल हाथ, चला सुपथ पर दो हमें।
यात्रा भर तब साथ, हमें सर्वदा हो सुलभ।
महातमोमय दीन, हृदय वृत्र-आधीन सब।
हम आकुल ज्यों मीन, करो कृपा अशरण-शरण।
इधर, यहां, इस ओर, द्रुत करुणा प्रभु कीजिए।
हरो अविद्या घोर, करो वास हिय में अचल।
जहां बसे हों आप, अन्धकार किसविधि रहे?
कामादिक अघ-ताप, सकल भस्म स्वयमेव हो।
सदा श्रेय उपदेश, दाता तुम से सुन सके।
कर्मपाश परमेश, करो भक्तजन के शिथिल।
मन मन्दिर मलहीन, दिव्य बने आवास तब।
तब दर्शन सुखलीन, 'भरद्वाज' पद पा सके।

—ओमदत्त भारद्वाज व्यावरा

प्रकाश या अन्धकार-नाश

॥१॥ ऋषिः १, २, ४, ७, ९ भरद्वाजः, ३ मेधातिथिः छन्दः गायत्री। स्वरः षड्ज.॥

१. अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्य दातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि॥

विश्व शाकाहारी कांग्रेस

हर वर्ष का तरह इस वर्ष भी विश्व शाकाहारी कांग्रेस का आयोजन १९ जुलाई से ६ अगस्त तक हुआ। इस बार शाकाहारियो की २७ वीं कांग्रेस यूनीवर्सिटी आफ मेरीलैंड अमरीका मे आयोजित की गई। हम पिछले कई वर्षों से शाकाहारियो की हर साल होने वाली इस कांग्रेस मे सम्मिलित होने की बात सोचते रहे हैं मगर जब भी यह कांग्रेस होती है तभी कोई न कोई अड़चन पड़ जाती है और हम इसमे सम्मिलित होने से वंचित रह जाते हैं। स्व० रमेश जी की भी इस सम्मेलन मे भाग लेने की बडी इच्छा थी मगर उनकी यह इच्छा भी पूरी न हो सकी।

जहा तक हमारे परिवार का सम्बन्ध है, हमारी दादी जी एक आर्य समाजी परिवार की बेटी होने के कारण प्रारम्भ से ही मासाहार के विरुद्ध थी परन्तु हमारे दादा जी क्योंकि कुछ समय बीकानेर मे थानेदार रहे और इसलिए मास और मदिरा उनके मुह लग गए थे। बीकानेर छोडकर जब वे लायलपुर मे आ गए तो एक बार एक देवी को आर्य समाज मे मास और मदिरा के विरुद्ध भाषण देते हुए उन्होने सुना। उससे वे अत्यन्त प्रभावित हुए और वही पर खडे होकर इन दोनो चीजो को आजीवन हाथ न लगाने का सकल्प उन्होने कर लिया। उस दिन से आज तक अण्डा भी किसी ने हमारे परिवार मे नही छुआ है।

मासाहार मनुष्य के लिए कितना घातक है इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि शाकाहार का सबसे ज्यादा प्रचार आज उन्ही पश्चिमी देशो मे हो रहा है जो मासाहार मे सबसे आगे हैं। हृदय रोगो पर अनुसधान कर रहे विशेषज्ञों का कहना है कि हृदय रोग के रोगी के लिए अण्डा सर्वाधिक हानिकारक है। अण्डा खाने वाले लोगो की धमनियो मे रक्त के प्रवाह मे प्राय बाधा उत्पन्न हो जाती है। अण्डे मे केलैस्ट्रोल की मात्रा बहुत अधिक होती है। अण्डे के अतिरिक्त कई अन्य मास भी केलैस्ट्रोल को बढाते हैं।

मुझे याद है कि जिन दिनो मै अमरीका म गया हुआ था तो वहा शिकागो मे एक दिन मोस कम्पनी क एक अधिकारी श्री बनर शायर ने मुझसे कहा कल आप नाश्ता मेरे और मेरी धर्मपत्नी के साथ लेगे। अगले दिन जब नाश्ते पर वे मुझे ले जाने लगे तो बोले हम बार मे चल रहे हैं।' उनकी बात सुनकर मैं चोका, मैंने कहा, 'आप तो जानते हैं कि मैं शराब नही पीता। श्री बर्नर बोले जानता हू मैंने तो चुटकी ली थी। दरअसल हम सलाद बार मे जा रहे हैं।'

जब हम सलाद बार मे पहुचे तो वहा तरह तरह के फलो और सब्जियो का सलाद उन्होने तैयार किया हुआ था। सलाद का यह नाश्ता बहुत ही हल्का भी रहा और बहुत आनन्ददायी भी। सलाद का नाश्ता करने वालो की इस बार मे जबरदस्त भीड थी मुझे बताया गया कि यहा सीट लेने के के लिए बुकिग एक रात पहले करानी पडती है।

यहा यह लिखना भी अनुपयुक्त न होगा कि ये दावे अब निराधार सिद्ध होते जा रहे है कि अण्डे और मास मे पौष्टिक तत्व सब्जी और फलो की तुलना मे अधिक होते हैं। इसके विपरीत यह बात सर्वविदित और सर्वमान्य है कि अण्डे और मास मे ऐसे विषाक्त तत्व आम पाए जाते हैं जो कई बीमारियो को जन्म देने वाले सिद्ध होते हैं।

यह बात भी अब वैज्ञानिक आधार पर सिद्ध हो चुकी है कि कच्ची और उबली हुई सब्जिया तथा फलो का सेवन मनुष्य को स्वस्थ रखने के लिये सर्वाधिक उपयुक्त है। ब्रिटेन के फ्रेश फ्रूट एण्ड वेजीटेबल इन्फारमेशन ब्यूरो ने अपनी हाल ही की एक रिपोर्ट मे कहा है कि गाजर, मूली, खरबूजा और आम मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए बहुत ही उपयोगी भोजन है। आलू और केला विटामिन से भरपूर होते हैं। केले के प्रयोग से मानसिक दबाव कम होता है। पौरुष बढता है और दाम्पत्य जीवन अधिक आनन्दमय बन जाता है।

इसमे कोई सन्देह नही कि पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव के कारण भारत मे भी मासाहार बढता चला जा रहा है मगर आज भी पश्चिमी देश ही मासाहार की सर्वाधिक जकड में हैं। हालाकि शाकाहार का बड़े ही व्यापक स्तर पर और वैज्ञानिक अनुसधानो के हवालो के साथ प्रचार पश्चिमी देशों मे हो रहा है। मासाहार के विरुद्ध जो प्रचार आज तक किया जाता रहा है, वास्तव मे उसका कोई प्रभाव इसलिये नहीं पडा क्योंकि जो बात कही गई वह वैज्ञानिक आधार से हटकर और धम से जोड कर कही गई जबकि आज के युग मे मनुष्य के मन को वही बात छू पाती है जो तर्क के आधार पर वैज्ञानिक ढग से कही गई हो। वैसे ज्यो-ज्यो शाकाहार के प्रचार का आधार वैज्ञानिक होता जा रहा है पश्चिम के लोग उससे प्रभावित होते जा रहे हैं।

जहा तक भारत का सम्बन्ध है, यह धर्म प्राण देश होने के कारण सदा शाकाहार का ही पक्षधर रहा है। अहिंसा के सिद्धात को सदा ही इस देश के सतो और महात्माओ ने सबसे ऊपर माना है और तो और इस धरती पर जन्म लेने वाले मुस्लिम सन्तो और विद्वानो ने भी मासाहार का बडे ही प्रबल शब्दो मे विरोध किया है। महात्मा कबीर ने कहा है —

दिन भर रोजा रखत है साझ हनत है गाय।
यहा खून वहा बन्दगी कैसे खुशी खुदाय॥

अर्थात् सारा दिन भजन के नाम पर रोजा अर्थात व्रत रखकर जब शाम को उसी के नाम पर गोवध कर दिया जाता है तो वह कभी भी उससे प्रसन्न नही हो सकता क्योंकि खून और बन्दगी' कभी भी साथ साथ नही चल सकते।

इसी तरह रहीम खानखाना ने भी मासाहार को त्याज्य बताते हुए लिखा है —

बकरी पाती खात है ताकी काढी खाल।
जो नर बकरी खात हैं, उसका कौन हवाल।

और फिर धार्मिक दृष्टि से ही यदि देखा जाय तो कोई भी धर्म मासाहार की अनुमति नही देता क्योंकि प्रत्येक धर्म का मुख्य आधार प्राणी मात्र पर दया ही है जबकि मासाहार और दया दो अलग अलग चीज हैं। जहा ईसा मसीह पग पग पर दया को जीवन में उतारने का उपदेश हमे देते हैं वहा कुरान शरीफ का फरमान है आसमान वाले की दया अगर चाहते हो तो जमीन वालो पर दया करो।'

विश्व के इतिहास को यदि हम उठा कर देखें तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि विश्व की बडी बडी विभूतिया शाकाहारी थी। भारत की तो बात ही छोडिये भारत से बाहर भी महात्मा सुकरात, कार्ल मार्क्स और जार्ज बर्नार्ड शा जैसे सत विचारक और विद्वान शाकाहारी ही थे। जहा तक मनुष्य की शरीर रचना का सम्बन्ध है, उसके दातो को यदि हम देखें तो वे मास हारी जीवो की तरह नुकीले नही हैं जिसका मतलब स्पष्टत यह है कि मनुष्य एक शाकाहारी प्राणी है।

मासाहार के प्रचारक प्राय यह कहते हैं कि मासाहार मे बलवर्धन की शक्ति अधिक है। मगर कोई ठोस आधार अब तक इस बात के पक्ष में नहीं मिल सका है। हरियाणा के विश्व प्रसिद्ध पहलवान मास्टर चन्दगीराम विशुद्ध शाकाहारी हैं, इसके अतिरिक्त लास एजेल्स में ओलम्पिक खेलों में भाग ले रही ब्रिटिश टीम के तीन एथलीट डेली थाम्पसन ब्राइट बर्ड और स्टीव क्रैम भी अधिकाशत शाकाहारी भोजन ही लेते हैं। कम पके फलों और कच्ची सब्जियो मे उनकी खास रुचि है क्योंकि विटामिन उनमे भरपूर मात्रा मे होते हैं। डैकाथलन के चैम्पियन कच्ची गाजरें खाने के शौकीन हैं। खेल विशेषज्ञो का कहना है कि एथलीट को अण्डे, मास, मछली आदि से प्राप्त होने वाले प्रोटीन की आवश्यकता नही है। जडवाली सब्जियों, अनाज, फलों आदि से प्राप्त होने वाले कार्बोहाईड्रेट्स की अधिक आवश्यकता होती है।

इसी सदर्भ में एक विचारणीय बात यह भी है कि हम जैसा अन्न खाते हैं अर्थात जैसा भोजन करते हैं वैसा ही हमारा मन हो जाता है। हमे तो कभी-कभी ऐसा लगता है कि आज ससार मे क्रूर और हिंसा का जो वातावरण बना हुआ है और आदमी आदमी के खून का प्यासा हो रहा है उसके मूल मे भी मासाहार ही काम कर रहा है। दयाभाव की जगह क्रूरता और बर्बरता आदमी की प्रवृत्ति मे घर करती जा रही है। अमरीका मे सम्पन्न हो रही इस विश्व शाकाहारी कांग्रेस मे भारत के भी २० प्रतिनिधि भाग

आर्य युवकों ! आओ ! हम संकल्प करें !

डा० प्रशान्त वेदालंकार, ७/२ रूपनगर, दिल्ली-७

प्रिय आर्य युवको और युवतियो !

"आज विश्व एक महान् संकट मे से गुजर रहा है। नास्तिकता और भौतिकवाद के अन्धड़ ने उसको पागल और अन्धा बना दिया है। वह किंकर्तव्य-विमूढ़ हो गया है। सब प्रकार की विलासिता और ऐश्वर्य का उपभोग करने के उपरान्त भी वह व्यथित है, उसका चित्त अशान्त है। कोरी भौतिक-वैज्ञानिक प्रगति से वह अपने किसी उद्देश्य को पूर्ण नहीं कर पा रहा। उसकी दृष्टि बारम्बार भारत की ओर आती है। वह किसी ऐसे दर्शन की, ऐसी विचारधारा की खोज कर रहा है, जो उसे भौतिक उन्नति करने से भी न रोके और साथ ही उसको मानसिक शान्ति भी प्रदान करे। वह ऐश्वर्यों का उपभोग भी करे और साथ ही उसे आन्तरिक शान्ति भी मिले। भारत की संस्कृति यही शिक्षा देती है। महर्षि दयानन्द ने जिस वैदिक संस्कृति के प्रसार की आवश्यकता अनुभव की थी वह सचमुच एक संतुलित संस्कृति थी। महर्षि का निश्चित मत था कि कोरा भौतिकवाद मनुष्य को अन्धा कर देता है और कोरा अध्यात्मवाद मनुष्यो के लिए अस्वाभाविक और अप्राकृतिक है। इन दोनों का समन्वय ही मनुष्यमात्र को सुख और शान्ति प्रदान कर सकता है। यदि महर्षि का निर्वाण महोत्सव इसी सन्तुलित संस्कृति का प्रचार और प्रसार कर सके तो इससे केवल हमारा देश ही नही वरन् सम्पूर्ण मनुष्य समाज लाभान्वित होगा, इसमे थोड़ा भी सन्देह नही है।

यह भ्रान्त धारणा उत्पन्न की जाती है कि भारत मे आधुनिकता का आविर्भाव यूरोप के प्रभाव से हुआ है। यहा वैज्ञानिकता यूरोप से आयी है। किन्तु जिन लोगो ने महर्षि दयानन्द के ग्रन्थो का अध्ययन किया है उनके जीवन को पढ़ा और समझा है, वे जानते हैं कि वैज्ञानिक और आधुनिक विचारधारा का केवल सिद्धान्त और दर्शन के स्तर पर नही वरन् व्यवहार और समाज मे कार्य की दृष्टि से सर्वप्रथम महर्षि ने ही प्रचार और प्रसार किया था। उस युगमे छुआछूत का विरोध, धार्मिक अन्धविश्वासों का खण्डन, धर्म की सामाजिक व वैज्ञानिक व्याख्या, स्त्री शिक्षा और स्त्री को पुरुष के समकक्ष मान्यता, दहेज, बाल व अनमेल विवाह का विरोध तथा विधवा विवाह का समर्थन आदि ऐसे उनके कार्य थे जिनसे हमारा यह देश संसार के दूसरे देशो से पिछड़ा हुआ नहीं रहा। दूसरी ओर उनके सिद्धान्तों और कार्यों मे भौतिकता और आध्यात्मिकता का समन्वय, संकीर्णता व साम्प्रदायिकता को कुचलकर मनुष्यमात्र की उन्नति के लिए उनके प्रयत्न ऐसी बातें हैं जो संसार भर के मनुष्यो के लिए पथप्रदर्शक रही हैं। आज संसार के किसी भी देश का कोई दर्शन व विचारधारा ऐसी नही है जो मनुष्य को सन्तुलित जीवन यापन की शिक्षा दे सके। महर्षि किसी भी देश की आधुनिकता और वैज्ञानिकता से पीछे नही थे, साथ ही वे आधुनिकता और अतिवैज्ञानिकता के दोषो और कमियो से भी परिचित थे।

आज सभी युवक व युवतिया सचमुच सौभाग्यशाली हैं कि उनका महर्षि दयानन्द के नाम से उनके कार्यों से और उनके सन्देशो से परिचय हैं। मैं आपसे यह आशा तो कर ही सकता हू कि आपका जीवन अन्यो के लिए एक आदर्श और अनुकरणीय उदाहरण बनेगा। आपकी दिनचर्या, आपका रहन-सहन, आपका खानपान, आपकी बातचीत करने की पद्धति, सभी पर एक ऐसा प्रभाव स्थापित करे कि उन्हें महर्षिके सिद्धान्तो का क्रियात्मक दर्शन हो जाए। याद रखिये, आप महर्षि दयानन्द के शिष्य व अनुयायी हैं, आपका कोई भी कार्य महर्षि की महिमा को कम करने वाला न हो। आपके सामने एक महान् उद्देश्य है। आपको अपने कार्यों से यह गलत धारणा भी समाप्त करनी है कि आज का युवक व युवती अवज्ञाकारी, उच्छृंखल व अनुशासनहीन होता है। यह मैं आपको कोई उपदेश नही दे रहा क्योंकि आप सभी संस्कारी व प्रबुद्ध आर्य युवक व युवती हैं, आपका चरित्र उज्ज्वल है, आपमे एक महान् संकल्प हिलोरें ले रहा है, मैं केवल आपके उसी संकल्प, इच्छा व प्रेरणा को अपने शब्दो मे व्यक्त कर रहा हू। मुझे विश्वास है कि आप अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक रहकर अन्य युवको का मार्ग भी प्रशस्त करेंगे। याद रखिए, आपका जीवन सम्पूर्ण हिन्दू जातिको एक अनुशासन बद्ध जीवन जीनेकी प्रेरणा देगा। आपका जीवन मनुष्य मात्र की सेवा के लिए है व एक वैज्ञानिक तथा सन्तुलित विचारधारा के प्रचार व प्रसार के लिए है। आपके ये उद्देश्य आपके क्रियात्मक जीवन से ही प्रकट होंगे।

आज समाज में यज्ञ की भावना समाप्त हो रही है। यज्ञ एक ओर वायुप्रदूषण को नष्ट करता है वहा दूसरी ओर मनुष्य को परोपकार का पाठ भी पढ़ाता है। आज समाज मे अशान्ति है। सन्ध्या द्वारा मानसिक शान्ति उत्पन्न कर आज व्याप्त कोलाहल-प्रदूषण को समाप्त किया जा सकता है। आज के वैज्ञानिक विविध प्रदूषणों की रोकथाम का स्थायी हल नही ढूढ पा रहे। हम उक्त वैदिक पद्धति से उसी उपाय का क्रियात्मक प्रचार करेंगे। हम बता देंगे कि हमारा धर्म, हमारे कर्मकाण्ड केवल धार्मिक क्रियाए नही हैं, इनमे मनुष्यमात्र की उन्नति के उपाय हैं।

आज आर्य जगत् आर्य समाजो मे युवा वर्ग को एक शक्ति के रूप मे देखना चाहता है। केवल मेरी नही, केवल दिल्ली वासियो की नही वरन् सम्पूर्ण देश की नही नही– पूरे विश्व की शुभकामनाए तुम्हारे साथ हैं, उनके आशीर्वाद हमारे साथ हैं।

आज राष्ट्रविघातक पृथकतावादी शक्तिया न केवल हमारे देश को दुर्बल बना रही हैं, वरन् विश्व मे व्याप्त नास्तिकता और अनास्था की दुष्प्रवृत्तिया संसार को ही नष्ट करने पर तुली हैं। सारे समाज का, पूरे राष्ट्र व विश्व की दृष्टि आर्यों आर्य युवको व युवतियो पर है।

महर्षि निर्वाण शताब्दी हमारे समाज, राष्ट्र व विश्व की आशाओ को पूर्ण करने वाली बने। हम पारस्परिक छोटे मोटे मतभेदो को भुलाकर, उदारता का पाठ पढ़े और पढ़ाए। हम एक उदार संस्कृति के पुत्र हैं हम इसी का परिचय दें।

रहे हैं। इस कांग्रेस मे वहा शाकाहार के लिये सर्वाधिक काम करने के लिए भारत की रुक्मणि अरुन्डेल को पुरस्कृत किया गया वहा शाकाहार पर शोध का काम करनेके लिए मार्कस फंड से धनराशि देने का निर्णय किया गया। इसके साथ ही यह भी तय किया कि २८ वीं और २९ वीं शाकाहारी कांग्रेस १९८६ और १९८८ में क्रमश: युगोस्लाविया और मैक्सिको में आयोजित की जाएगी।

हम समझते हैं कि अब जबकि स्वयं विदेशी भी शाकाहार की ओर आकर्षित हो रहे हैं, भारतीय जनता को शाकाहार, धार्मिक तथा नैतिक पक्ष और वैज्ञानिक शोध पर आधारित परिणामो के दृष्टिगत मांसाहार का परित्याग करके शुद्ध शाकाहार के मार्ग पर प्रवृत्त होने का संकल्प करना चाहिए।

—श्री विजय (पंजाब केसरी)

सरबत खालसा से डर क्यों?

अकाली दल तथा उसके प्रभाव में आए पाच प्रमुख ग्रन्थियों ने स्वर्ण मन्दिर परिसर के ऐतिहासिक भवन अकाल तख्त की मरम्मत के लिए निहृग बाबा सन्तासिंह द्वारा आरम्भ की गई कार सेवा का विरोध करना नहीं छोड़ा है और न अपना वह हुक्मनामा' ही वापस लिया है जिसके द्वारा उन्होने बाबा सन्तासिंह को सिख समाज से निष्कासित करने की हिमाकत की है। सभी धर्म परायण सिख चाहते हैं कि अकाल तख्त का पुनरुद्धार शीघ्र पूरा हो। अत वे बड़ी सख्या मे कारसेवा में सम्मिलित हो रहे हैं। मन्दिर मे कारसेवा को रुकवाने मे विफल होने के बाद अब वे सिखो के धर्म सम्मेलन का, जिसे वे सरबत खालसा के नाम से पुकारते हैं, विरोध कर रहे हैं। इसमे कोई सन्देह नहीं रह गया है कि अकाली दल तथा पाचों प्रमुख ग्रन्थियो ने अपनी मनमानी करने तथा सरकार मे टकराव का मार्ग अभी नही छोड़ा है। लगता है कि उन्होने गत जून मास की अमृतसर की घटनाओ से कोई सबक नही सीखा है। वे अपना दल जोड़कर केवल अपनी जीत और पराजय का ही डका पीट रहे हैं। वे अब सरबत खालसा के आयोजन का विरोध इसलिए कर रहे हैं कि सिख समाज से उनका अलगाव सम्मेलन के निर्णयो के बाद पूरा हो जाएगा। सिख समाज मे फिर उनकी कौन सुनेगा?

निहृग सन्त बाबा सन्तासिंह द्वारा आरम्भ कारसेवा को रुकवाने मे तो वे असफल रहे ही हैं, सरबत खालसा धर्म सम्मेलन मे बाधा डालने की जुर्रत भी वे नही कर सकते। जोर-जबर्दस्ती तथा हिंसा का डर दिखाकर ही उग्र पन्थियो के गुरु जरनैलसिंह भिडरावाले अपनी बात मनवाते रहे। लेकिन अब राष्ट्रवादी, वास्तव मे धार्मिक प्रवृत्ति वाले सिख और सिख बुद्धिजीवी सामने आ गए हैं। अब उन्हे चलिपट्टी में नहीं लिया जा सकता। अत सरबत खालसा सम्मेलन विधिवत होकर रहेगा। उसके निर्णय क्या होंगे, इसका अनुमान लगाना मुश्किल नहीं है। वह बाबा सन्तासिंह के सगठन द्वारा की जा रही कारसेवा को धर्म-सम्मत तो घोषित करेगा ही, कारसेवा न करने के अकालियो तथा ग्रन्थियों के निर्देश को भी पन्थ विरोधी तथा अनधिकृत घोषित करेगा। वैसे तो सिख पन्थ की परम्पराओ के अनुसार अकाल तख्त के बाहर से जारी 'हुक्मनामा' वास्तविक हुक्मनामा नहीं माना जा सकता, फिर उसके अनौचित्य पर सरबत खालसा की मुहर लगने से वह उल्लेख योग्य भी नही रह जाएगा। सरबत खालसा पवित्र स्वर्ण मन्दिर का दुरुपयोग होने देने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी तथा अकाली दल दोनों की भर्त्सना भी कर सकता है।

देश मे अब किसी से छिपा नही है कि अकाली दल की हिंसावादियो, उग्रपन्थियो और पृथकतावादियो से पूरी साठगाठ थी। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी तथा पाचो प्रमुख ग्रन्थियो ने उग्रपन्थियों के सामने घुटने टेक दिए थे। वे उनके विरुद्ध जुबान खोलने से भी डरते थे। तब पाचो ग्रन्थियो का हुक्मनामा जारी करके दोषी व्यक्तियों को दण्डित करने का अधिकार कहा चला गया था? खैर, ये अतीत की बातें हैं। यथार्थ यह है कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी तथा उसके वेतनभोगी प्रमुख ग्रन्थी राजनीतिक लाभ उठाने के लिए अब भी हाथ पैर मार रहे हैं। यदि वे ऐसा न करते तो अब तक पजाब से सेना हटा ली गई होती तथा पजाब की स्थिति सामान्य हो गई होती। क्या उन्होंने बाबा खड़गसिंह को पवित्र सरोवर की सफाई के लिए तथा अकाल तख्त की मरम्मत के वास्ते कारसेवा हाथ मे लेने से नहीं रोका था? वे स्वयं बिना शर्त कारसेवा आरम्भ करने के लिए क्यो तैयार नहीं हुए थे?

पजाब की वर्तमान मुसीबतों के लिए जिम्मेदार इन लोगों के पैरों तले से जब तक जमीन नहीं खिसकेगी, वे पूरे सिख समाज के प्रवक्ता होने का ढोंग करते ही रहेंगे। राजनीतिक सगठन होने के कारण अकाली दल के धार्मिक मामलों में कोई दलील भी नहीं सुनी जानी चाहिए।

(हिन्दुस्तान ११ ८-८४)

श्रावणी पर्व

आकोट आर्य समाज मन्दिर में 'श्रावणी पर्व' अति उत्साह के साथ धूम-धाम से मनाया गया। पर्व के उपलक्ष मे प्रथम झडा वादन, सन्ध्या प्रार्थना एव बृहदयज्ञ तथा यज्ञोपवीत सस्कार का कार्यक्रम हुआ। 'श्रावणी पर्व' एव यज्ञोपवीत के महत्व पर श्री नामदेव राव शास्त्री आर्योपदेशक श्री मनोहर राव भावे वकील इनके भाषण हुये। इस कार्यक्रम में आर्य-समाज के पदाधिकारी श्री मोहन भाई चावड़ा, श्री हरिश्चन्द्र जी डेम्ला, श्री विनेश कुमार जी, श्री तुलसीराम जी तेलगोटे एव आर्य प्रेमी सज्जन बहुसख्या मे उपस्थित थे। इसके पश्चात् आरती, प्रसाद वितरण शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। —नामदेव शास्त्री, मन्त्री



सम्पादक के नाम पत्र

अल्पमतों को विश्वास में कैसे लेवें ?

दैनिक पंजाब केसरी दिनाक १९ अगस्त के अ क में मित्रवर पूर्व सहयोगी श्री कुलदीप नायर की डायरी पढी। उनका यह कथन सर्वथा प्रासगिक एव सत्य है कि हिन्दुओं ने कभी किसी साम्प्रदायिक पार्टी को सत्ता नही सौंपी, परन्तु उनका यह कहना कि हिन्दू कभी उतने अ-हिन्दू नही थे जितने अब हैं, यह सर्वथा अवास्तविक है।

श्री नैयर का अभिप्राय यदि मुस्लिमों एवं सिक्खों से है, तो यह स्पष्ट दिखलाई देगा कि इन दोनो वर्गों के लोग अ ग्रेजो के आगमन से पूर्व भारत के पजाब एव अन्य भागो मे प्रबल शासक होने के कारण अपने विशेषाधिकारो एव विशिष्ट स्थिति को बनाए रखने के लिए कृत सकल्प रहे और इन दोनो वर्गों के नेताओ को अपनी कूटनीति के द्वारा अ ग्रेजो ने अपनी ओर करके मुल्लाओ और [illegible] के माध्यम से जमीदारो और मार्शल रेस के नाम पर आनुपातिक प्रतिनिधित्व के स्थान पर विशेष रियायतें दी। खिलाफत और गुरुद्वारा आन्दोलन से इन वर्गों की कट्टरता को और बल मिला।

कांग्रेस ने बहुमत के उचित पक्ष का समर्थन कभी नही किया, यद्यपि फिर भी उसे सदैव हिन्दू प्रतिनिधियो का स्थान स्वाधीनता पूर्व काल में मिला। कांग्रेस या वर्तमान शासन के पक्षपात का इससे बडा क्या उदाहरण हो सकता है कि स्वाधीनता पूर्वकाल या विलय से पूर्व देसी रियासतो मे यथा जम्मू-काश्मीर रियासत मे मुस्लिम कान्फ्रेन्स द्वारा चलाए गए उत्तरदायी शासन की माग को और गुरुद्वारा सुधार आन्दोलन एव नाभा रियासत आदि मे आबपाशी जैसे आन्दोलनो मे भाग लेने वालो को स्वाधीनता सेनानी सम्मान दिया गया है परन्तु उसी प्रकार का आदोलन जिसमे कोई साम्प्रदायिक विशेषाधिकार की माग नही थी, आर्य समाज द्वारा १९३९-४० मे चलाने पर गृह मन्त्रालय ने उसे साम्प्रदायिक करार दिया है। और तो और मोपलाओ ने जिस प्रकार से हिन्दुओ का धर्मान्तरण, कत्ल, लूट और बलात्कार, नारी अपहरण, आदि किया उसको भी स्वाधीनता सग्राम का अ ग स्वीकार कर आज सम्मानित किया जा रहा है।

रूस, चीन आदि अन्य देशो में मुस्लिमो को राष्ट्रीयता की धारा मे मिलाया गया है। उसका विरोध भारत के मुस्लिम मौलवी और नेता दोनो करते हैं। धर्म निरपेक्षता के नाम पर भारतीय मुसलमान जिया और जिन्ना के फोटो और पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे और पाकिस्तानी झण्डा फहराना अपना मौलिक नागरिक अधिकार समझते हैं। अब उनकी देखादेखी खालिस्तान और पृथक् राष्ट्रीयता की गुहार हो रही है। उसमे यदि हिन्दू अपनी राष्ट्रीय एकता की भावना का प्रदर्शन करता है, तो इसे सकीर्णता कहा जाना सर्वथा एकागी है।

ब्रह्मदत्त स्नातक
अर्व०प्रेस एव जनसम्पर्क सलाहकार

चित्र का अनावरण अवैदिक

श्री विश्वम्भरनाथ आर्य १३/४७ किनारी बाजार,आगरा लिखते हैं—

मैंने सार्वदेशिक साप्ताहिक १-७-८४ मे पढा कि आर्यसमाज हाथरस के ७१ वे वार्षिकोत्सव में स्वर्गीय श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री के चित्र का अनावरण किया गया। वह किया गया आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान द्वारा। मुझे यह बात कुछ अनुचित तथा आर्य सिद्धान्त के प्रतिकूल लगी। अपने भ्रम निवारण हेतु तथा जिज्ञासु भावना से पूछना चाहता हू कि यह बात वेद के अनुकूल है या प्रतिकूल।"

"फोटो का रखा या,लगाया जाना ठीक है। परन्तु अनावरण आदि विधि का आडम्बर ठीक नही है।"— —रघुनाथप्रसाद पाठक

अनैतिक विरोधी

समाचार-पत्रो मे विरोधियो के अनैतिक विरोधो को पढकर हृदय मे अकुलाहट पैदा होती रहती है।

साप्ताहिक सार्वदेशिक मे प्रकाशित हुआ कि कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री रामगोपाल जी शालवाले को डा० फारुख साहब ने उत्तर दिया कि आप लोगो को यहा (काश्मीर मे) आर्यसमाज मन्दिर व पाठशाला नही बनाना चाहिये क्योकि यहा के लोग इसे पसन्द नही करेंगे। यदि आप बनायेंगे भी तो मेरा विश्वास है कि पहिले तो उग्रवादियों ने जलाया अब मुसलमान जला देंगे। ये शब्द है मुख्यमन्त्री डाक्टर अब्दुल्ला साहब के। उत्तर से प्रतीत होता है कि आप काश्मीर को इस्लामी राज्य बनाना चाहते है। डाक्टर साहब के विरोध मे कई महीनो से तथ्य पूर्ण समाचार निकलते रहते हैं डाक्टर साहब वैधानिक रीति से बहुमत खोने के कारण पदच्युत हुए हैं,परन्तु विरोधी पार्टियो ने जो हो हल्ला मचाया क्या उसे नैतिक कहा जा सकता है फिर आर्य समाज मन्दिर व पाठशाला को जलाने पर जो उत्तर डाक्टर साहब ने दिया उस पर देश की किसी भी विरोधी पार्टी ने कुछ भी ध्यान नही देकर डा० साहब को अपना सहयोग दे रही है इससे प्रगट होता है कि किसी भी विरोधी पार्टी को आर्य समाज मन्दिर और विद्यालय को जलाने का दु ख नही है। जो पदो के लोभ से ग्रसित होकर पदो पर चिपकना चाहते है ऐसे व्यक्तियो से नई-नई पार्टियो का जन्म होता रहता है। इस समय देश मे मार्क्सवादी, लोकदल, भारतीय जनता पार्टी, द्रमुक, कम्युनिस्ट, कांग्रेस ज, फारवर्ड ब्लाक, क्रान्तिकारी समाजवादी, जनवादी, तेलगु देशम, राष्ट्रीय सजय मच, राष्ट्रीय कांग्रेस, मुस्लिम लीग, नेशनल कान्फ्रेंस, कांग्रेस ई पार्टिया है जरा जरा से मतभेदो पर नित नई पार्टिया बनती रहती है। अब एक नई स्वामी पार्टी बनने जा रही है। पार्टी बाजी मे मतभेद पैदा होते रहने के कारण देश हित गौण हो जाता है। देश हित तब ही हो सकता है जब सब मिलकर एक समिति बनाकर बैठे और इसी एक पार्टी मे से एक समालोचक सभा बनाई जाय जो कार्य देशहित मे नही हो उन्हे सभा मे रखा जाय तब ही देशहित हो सकता है, दल बन्दी से कदापि नही। जैसा कि वेद मे लिखा है—

समानी व आकूति समाना हृदयानि व ।
समानमस्तु वो मनोमया व सुमहासनि ।।

भावार्थ—सबका हृदय, मन, ध्येय व्यवहार समान होना चाहिये। आज भी देश मे जयचन्दो का अभाव नही है जिनमे सचेत रहना प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है।

मैं सन् १९२० से कुछ देश सेवा करता आया हू। फासी से भी बचा हू इसलिये अनैतिक विरोध को देखकर मन क्षुब्ध हो जाया करता है। —क्रान्तिकारी डा० कमलसिंह

मंगल कामना

स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर हार्दिक मगल कामनाओ सहित निवेदन है कि मैं गत ४ वर्ष से सार्वदेशिक का ग्राहक हू। मेरी समझ मे पत्र की गुणवत्ता निरन्तर प्रगति पर है। यह अब मेरे लिए एक आवश्यकता बन गया है।

आप पहले से ही दैनिक पत्रोके उद्धरण देकर महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। उसके अलावा यदि एक नया स्तम्भ खोलकर (नाम झरोखा) या झलक आदि कुछ भी रख लें प्रान्तीय सभाओ के मुख पत्रो के सम्पादकीय अ शो का जो सामाजिक एव सैद्धान्तिक महत्व के हो प्रकाशित कराव तो यह भी आर्य जनो के लिए ज्ञान वर्द्धक एव महत्त्वपूर्ण होगा।

८ अप्रल के अ क मे जो चिन्गारी शीर्षक से सस्मरण छपा है वह बडा मार्मिक एव प्रभावोत्पादक रहा है। हार्दिक इच्छा है कि ऐसी चिन्गारिया तो आप हर अ क मे देते रह ताकि आय जनता विशेषत युवा पीढी के लिये प्रेरणा स्रोत हो। —नवप्रसाद शर्मा,
डेयरी आडीटर, १२० धाकी कोलोनी

आर्य समाजों की गतिविधियां

ग्राम केहरवाला त० टीबी जिला श्री गंगानगर (राज०) में श्रावणी पर्व पर वैदिक यज्ञ और सत्संग का आयोजन

आज दिनांक ११ ८ ८४ को प्रातःकाल ग्राम केहरवाला त० टीबी श्री गंगानगर (राज०) मे श्रावणी पर्व पर वैदिक यज्ञ और सत्संग समारोह श्री रामचन्द्र आर्य विद्यावाचस्पति के निवास स्थान पर आयोजित किया गया।

श्री सीताराम शर्मा वैद्य राजकीय औषधालय केहरावाला को यज्ञ का पुरोहित तथा सत्संग का अध्यक्ष नियुक्त किया तथा संयोजक श्री रामचन्द्र आर्य विद्यावाचस्पति की देख रेख मे समारोह मनाया गया।

यज्ञ और सत्संग मे ग्रामीण पुरुषों और युवक छात्रो ने भाग लिया।

यज्ञ की आहुति के बाद श्री वैद्य सीताराम शर्मा ने 'श्रावणी पर्व' पर अपना प्रवचन दिया।

इसके बाद श्री रामचन्द्र आर्य विद्यावाचस्पति' ने यज्ञ महिमा पर गीत गाकर सुनाया। उसके बाद श्री नन्दरूपसिंह आर्य शिक्षक राजकीय प्राथमिक पाठशाला केहरवाला ने शिक्षा प्रसार तथा अन्ध विश्वास की भावनाओं से दूर रहे आदि २ पर अपने विचार प्रकट किये। उसके तुरन्त बाद सत्संग मे श्री सन्त नागर भट्ट ने प्रभु भक्ति के भजन सुनाये तथा उन्होंने स्वय के व्रत लेने की बाबत जानकारी दी कि मैं दिनांक १२-८ ८ ८४ से २० ८ ८४ तक उपवास पर बैठूगा और इस अवधि मे प्रात सायं दोनों समय हवन करूगा। कोई भी धर्म मे विश्वास रखने वाला हवन मे घी आदि का दान कर सकता है, उसमे भाग भी ले सकता है उन्होंने बताया कि मैं यह उपवास इन्द्रिय निग्रह और आत्म शुद्धि के लिए कर रहा हू।

यज्ञ और सत्संग समारोह की समाप्ति पर श्री रामचन्द्र आर्य विद्यावाचस्पति ने यज्ञ करने की महत्ता पर प्रकाश डाला तथा वैदिक धर्म को अपने जीवन मे उतारिये आदि २ पर अपने विचार प्रकट किये। श्रावणी पर्व के आयोजन मे श्री ओ३म प्रकाश अहलावत श्री छात्र राजेन्द्र कुमार अहलावत श्री भगवन्त कुमार, श्री राम कुमार शर्मा, छात्रा सरोज सागवान व शान्ति आर्या ने कार्य में सहयोग दिया तथा भविष्य मे होने वाले यज्ञो व सत्संगों मे भाग लेने का व्रत लिया।

समारोह समाप्ति पर जलपान का भी आयोजन किया गया और शान्ति पाठ के साथ समारोह का विसर्जन किया गया।

—रामचन्द्र आर्य, केहरवाला
पो० आ० पाऊवाली जे ३६३२ वाया रावतसर
जि० श्री गंगानगर (राज०)

सोनाला जि० बुलढाना में श्रावणी पर्व

आदिवासी क्षत्र सोनाला जि० बुलढाना मे श्रावणी पर्व बड़े धूमधाम से उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस पर्व के उपलक्ष मे प्रथम ध्वजा वादन सन्ध्या यज्ञोपवीत संस्कार का कार्यक्रम हुआ। श्रावणी पर्व एवं यज्ञोपवीत के प्रावना एवं बृहद यज्ञ के महत्व पर श्री नामदेव शास्त्री आर्योपदेशक आकोट पुण्डलीक राव शास्त्री हिवरखेड श्री धर्मदेवसिंहजी आदि के भाषण हुए। महिलाओं तथा पुरुषो ने बहुसंख्या मे आ कर इस कार्यक्रममे उत्साह पूर्वक भाग लिया। प्रसाद वितरण एवं शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। आर्य समाज आकोट मे भी यह पर्व उत्साह पूर्वक मनाया गया।

मन्त्री आर्य समाज आकोट
नामदेव शास्त्री आर्योपदेशक

आर्य समाज टंकारा में महात्मा आर्य भिक्षु जी का उपदेश

आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार) के प्रधान व आर्यजगत् के प्रखर वक्ता माननीय महात्मा आर्य भिक्षु जी महाराज दिनांक ३ व ४ अगस्त टंकारा मे विराजे। दोनो दिवस रात्रि मे आर्यसमाज मन्दिर टंकारा में उनका प्रवचन लाभ हुआ। म० द० स्मा० महालय मे प्रात उनके उपदेश का कार्यक्रम रखा गया। मोर्वी के पटेल कन्या छात्रालय में भी उनके प्रवचन का विशेष आयोजन किया गया। जनता ने भारी संख्या में उनके प्रवचन का लाभ लिया।

आर्य समाज टंकारा द्वारा चल रहे बाल मन्दिर का चौथा वार्षिकोत्सव दिनांक २७ ७ ८४ को महिला सम्मेलन के रूप में श्रीमती सविता बहन पोरबन्दर की अध्यक्षतामें मनाया गया। बच्चो ने अपना कार्यक्रम पेश किया। महिलाओं ने दहेज अस्पृश्यता बालको के संस्कार आदि विषयों पर चर्चाएं कीं। आर्य समाज टंकारा का महिला सम्मेलन का यह पहला सफल प्रयत्न था।

परमार
उपमन्त्री

एशियाड ग्राम (आनन्द लोक) नई दिल्ली के एडिटोरियम में प्रो० वेद व्यास जी का ८२ वां जन्म दिवस समारोह

नई दिल्ली।

समस्त आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान प्रो० वेद व्यास जी जो एक सितम्बर उन्नीस सौ चौरासी को ८२ वर्ष पूर्ण करने जा रहे हैं, का जन्म दिवस समारोह २ सितम्बर को प्रात ९-३० बजे से दोपहर १२ ०० बजे तक नई दिल्ली के एशियाड ग्राम में स्थित एडिटोरियम मे धूमधाम से मनाया जायेगा। इस अवसर पर प्रो० वेद व्यास जी को १०लाख रुपए की एक थैली डी०ए०वी०संस्थाओं एवं अन्य आर्य संस्थाओं की ओर से भेंट की जायेगी। इस अवसर पर ही प्रादेशिक सभा एवं डी०ए०वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी के पास विभिन्न आर्य समाजों/संस्थाओं की ओर से जो राशि मिल्ट्री फण्ड की आई है यह राशि उत्सव के मुख्य अतिथि को भेंट की जायेगी। उत्सव की अध्यक्षता के लिए माननीय श्री बलराम जाखड़ एवं माननीय डी० वी० पी० नरसिंहा राव (गृह मन्त्री) जी से प्रार्थना की जा रही है।

दिल्ली की समस्त आर्य समाजो/आर्य संस्थाओं, स्त्री समाजों से अनुरोध है कि वे उत्सव की तिथि को अपना रविवारीय साप्ताहिक सत्संग स्थगित कर इस उत्सव में यथा समय समस्त सदस्यों सहित अवश्य पधारें। उत्सव स्थल पर पहुचने के लिए आप अपनी अपनी समाजों से अभी से बसें बुक करवा लें। ताकि आने जाने में असुविधा न हों। अगर आपको इस सम्बन्ध मे कोई कठिनाई हो तो आप सभा कार्यालय से भी सम्पर्क कर सकते हैं।

—रामनाथ सहगल
सभा मन्त्री

सभा प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले की बम्बई की उल्लेखनीय प्रचार यात्रा

दिल्ली २१-८-८४ [illegible]

सभा प्रधान जी अभी हाल मे (१७ से १९ अगस्त) बम्बई की प्रचार यात्रा पर गए थे। उन्होने वहा (१९- -८४) आर्य समाज सान्ताक्रुज एव काकडवाडी में आयोजित दो विशाल सार्वजनिक सभाओ को सम्बोधित किया और देश एव समाज की वर्तमान स्थिति मे देश की अखण्डता, एकता, हिन्दुओ की व हिन्दू हितो की रक्षा की दिशा में आर्य समाज तथा आर्य जनो के कर्त्तव्यो पर प्रकाश डालते हुए उनके परिपालन का आह्वान किया।

पजाब की सैनिक कार्यवाही और काश्मीर मे सत्ता परिवर्तन के सम्बन्ध मे उनकी, सभा मन्त्री श्री ओमप्रकाश जी त्यागी तथा आर्य समाज की उपस्थित जो भूमिका रही उस पर भी विस्तार से प्रकाश डाला।

सभा प्रधान ने श्री भगवती प्रसाद जी, श्री ओकारनाथ जी, श्री [illegible] देवरत्न जी प्रभृति बम्बई के सुप्रसिद्ध आर्य अग्रणियो के परामर्श से आर्य समाज के कार्य को बढाने और उसे प्रभावोत्पादक बनाने की कई योजनाए बनाई।

१८-८-८४ को उन्होने बम्बई मे आयोजित हिन्दू कन्वेंशन मे भी भाग लिया।

प्रधान जी १७-८-८४ को वायुयान द्वारा बम्बई गए थे और २० को वायुयान द्वारा दिल्ली लौटे थे और उसी दिन प्रात श्री कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में आर्यसमाज दीवान हाल मे आयोजित एक विशाल सभा को सम्बोधित किया था।

—पृथ्वी राज शास्त्री
कार्यालय सचिव
सार्व० सभा, दिल्ली

वेद प्रचार सप्ताह

—गुरु पूर्णिमा (व्यास पूजा) चण्डीगढ दिनांक १३-७-८४ को विश्ववेद परिषद के तत्त्वावधान में पौर्णमासेष्टि यज्ञ के उपरान्त डा० भवानीलाल भारतीय ने गुरु पूर्णिमा का वर्णन करते हुए गुरु वशिष्ठ, विश्व मित्र, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, समर्थ गुरु रामदास, दण्डी गुरु विरजानन्द गुरुवर दयानन्द जी के आदर्शों पर प्रकाश डालते हुए तदानुकूल आचरण की प्रेरणा दी।

—आर्य समाज रतलाम मे श्रावणी उपाकर्म एव वेद प्रचार सप्ताह श्री [illegible] की विजय भजनोपदेशक आ० प्र० सभा मध्य प्रदेश के प्रतीत एव मनोहारी वेदोपदेश के द्वारा ११ से १८ अगस्त तक मनाया गया। १० ८-१९८४ को प्रातः श्री स्वामी धर्मानन्द जी का ओजस्वी व्याख्यान हुआ।

—आर्यसमाज, वेस्टन रोड, कानपुर में वेद प्रचार सप्ताह समारोहपूर्वक श्रावणी उपाकर्म पर्व रक्षाबन्धन शनिवार, ११ अगस्त से श्री कृष्ण जन्माष्टमी [illegible] में बलिदानियों के प्रति श्रद्धांजलि सोमवार २० अगस्त १९८४ तक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री [illegible] जी, श्री जयदेव जी गुप्त एम० ए०, श्री [illegible] डा० कान्ति किशोर भरतिया एम ए०, प्रो० [illegible] एम. ए, प्रो० जीवन चरण जी एम. ए, डा० भगवान् सहाय [illegible] एम. ए, डा० बालमुकुन्द जी एम. ए., डा० विजयपाल शास्त्री एम. ए, डा० मुन्शीराम जी शर्मा एम ए. द्वारा प्रवचन हुए। इस वर्ष विशेषता रही कि वेदप्रचार सप्ताह के अतिरिक्त [illegible] प्रात काल दैनिक [illegible] प्रो० सत्यवीर जी शर्मा एम ए द्वारा [illegible] पर प्रवचन होता रहा तथा श्रावणी पर्व पर डा० देवेन्द्र [illegible] पत्रिका का विमोचन भी हुआ, यह पत्र पाक्षिक [illegible]। [illegible] आवश्यक था कि आर्य पत्रिका प्रकाशित की जाय।

—विजयपाल शास्त्री, मन्त्री

नमन उन्हें है मेरा

नव्य उषा की नवल रश्मि-
के सदृश विहसते आते।
दूर क्षितिज से भूमण्डल पर-
नव आभा बिखराते॥
कोटि-कोटि जन के मानस का-
हरते गहन अन्धेरा।
नमन उन्हे है मेरा॥
प्रभा प्रमण्डित प्रखर किरण-
रवि ज्यों देती आलोक।
मुग्ध धरणि हो जाती-
त्यों, जिनके कर्त्तव्यविलोक॥
गूढ तिमिर जग, छिन्न-भिन्न कर-
लाते नया सवेरा।
नमन उन्हे है मेरा॥
मानवता उत्थान हेतु ही,
जिनका जीवन अर्पित।
दीन दलित की सेवा मे-
जिनका सर्वस्व समर्पित।
जिनके पद तल पर ही लगा-
हुआ है सद्गुण डेरा।
नमन उन्हें है मेरा॥

—राधे श्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिर खाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

श्री देव शर्मा को पितृ शोक

सार्वदेशिक के श्री देव शर्मा के पिता जी (श्री बाल दिवाकर हस जी की धर्मपत्नी के अग्रज) के निधनके समाचार से बड़ा दु ख हुआ। इस महान् वियोग मे हम सब देव जी तथा परिजनो के प्रति समवेदना प्रकट करते हुए प्रभु से दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करते हैं।

यह कैसी विडम्बना है कि अभी कुछ समय पूर्व धर्मपत्नी के निधन से उन पर घोर आघात हुआ था। नियति के समक्ष सभीको झुकना ही पडता है।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

शोक प्रस्ताव

—सार्वजनिक आयोजन मे विश्ववेद परिषद के उपाध्यक्ष वयोवृद्ध आर्य समाजी कार्यकर्ता चौ० रूपचन्द एडवोकेट की पुत्री श्रीमती सुषमा के आकस्मिक निधन पर अत्यन्त दु ख प्रकट करते हुए दोनो परिवारो से सहानुभूति और दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई।

—माधुराम आर्य
मन्त्री परिषद, १५१४/७ सी चण्डीगढ

—दिनांक १३-७ ८४ को विश्ववेद परिषद के सार्वजनिक आयोजन पूर्णिमा के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के महामन्त्री अनुपम कर्मठ कार्यकर्ता और विकटर हाई स्कूल जालन्धर छावनीके भूतपूर्व प्रिंसिपल वैदिक धर्म उर्दू (हिन्दी) के सम्पादक श्री रामचन्द्र जावेद के देहान्त पर अत्यन्त दु ख शोक प्रकट करते हुए उनकी आर्य समाज प्रतिनिधि सभा, पजाब और देश तथा व्यापक वैदिक धर्म सम्बन्धी शानदार सेवाओं पर प्रकाश डालते हुए परिवार से सहानुभूति तथा दिवंगत आत्मा के लिए सदगति ही प्रार्थना की गई।

—माधुराम आर्य
मन्त्री परिषद १५१४/७ सी चण्डीगढ

—आर्य समाज के भूतपूर्व प्रधान श्री शरद भगत का निधन दिनांक २८-६ ८४ को हो गया। आर्य समाज में शोक प्रस्ताव पारित किया गया।

—मन्त्री
आर्य समाज मधुपुर (देवघर)

(पृष्ठ १ का शेष)

बात नही है। यह तो स्वर्ण मन्दिर के निर्माण के दिन से किसी न किसी रूप मे निरन्तर चलती आ रही प्रक्रिया है।

श्री बूटासिंह ने बाबा सन्तासिंह द्वारा प्रारम्भ की जाने वाली कार सेवा की भूमिका पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालते हुये कहा कि ७ जून को जब सैनिक कार्रवाई समाप्त हो गई तो बाबा खडगसिंह ने एक सन्देश भेजकर मुझे बुलवाया। मुलाकात मे उनके स्वास्थ्य आदि की भी चर्चा हुई और उन्होने सभी ग्रन्थियो को एकत्र करने और उनसे कार सेवा के लिए हुक्मनामा लेने का सुझाव दिया। बाबा काफी वृद्ध है। चल फिर नही सकते। मै उनसे मिलने के बाद अमृतसर गया। वहा स्वर्ण मन्दिर के हैडग्रन्थी से मिला। उस दिन या अगले दिन हैडग्रन्थी ने मुझे कहा कि मैं अपनी सद्भावना का उपयोग कर हैडग्रथियो को एकत्र करू। उनके कहने पर मैं फिर बाबा खडगसिंह से मिला। उन्होने सुझाव दिया कि शिरोमणि गुरु द्वारा प्रबन्धक कमेटी के कुछ पदाधिकारी रिहा कराए जाए जो प्रतिदिन की पूजा अर्चना का सचालन करें तथा कार सेवा शुरु कराए। फिर मैं गाव-गाव गया और उन्हे इकट्ठा किया। उन्होने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के कार्यकारी अध्यक्ष लाने का सुझाव दिया। मैंने यह भी किया। उन्होने ५ ग्रन्थियो का अधिकार पत्र भेजा।

श्री बूटासिह ने कहा जब अकाली नेताओ व शिरोमणि कमेटी के अधिकारियो ने स्वर्ण मन्दिर मे शहीदी जत्थे भेजने का फैसला किया उस समय बाबा सन्तासिंह भटिण्डा मे थे। आप उनसे सहमत हो या न हो, परन्तु उनका बुड्ढा दल दसव गुरु गोविन्द सिंह के समय से है और वह उसके अध्यक्ष है उन्होने कार सेवा करने की घोषणा की। उसी दिन शहीदी जत्थे के नाम पर अकाली आन्दोलन को नया रूप दिया गया था, लेकिन पहला जत्था स्वर्ण मन्दिर मे कार सेवा के लिए नही था, बल्कि उसने एक सभा कर उन लोगो को श्रद्धाजलि अर्पित की जो स्वर्ण मन्दिर मे सैनिक कार्रवाई से मारे गए थे। उन्होने प्रश्न किया कि यह राजनीति नही थी, तो क्या थी?

(पजाब केसरी २४-८-८४)

ग्राम बिच्छपडी मे ... २ सितम्बर १९८४ को प्रात १० बजे।

एक लडकी मायवन्ती सुपुत्री श्री नोबीराम ग्राम मोठा त० हासी जिला हिसार खाप सातकोस की को ग्राम बिच्छपडी त० व जिला हिसार (खाप म्याण) के बदलू पुत्र प्रताप के साथ बिवाही थी निर्मम हत्या २८-४ ८४ को कर दी थी।

म्याण खाप ने दोषीको ३१००) रु० की तथा सामाजिक जाति बहिष्कार का १३ ५ ८४ को दण्ड दिया था। दण्ड न देने पर म्याण खाप तथा सातरौल खाप ने पूरा मामला सर्वखाप पचायत को उचित निर्णय के लिए भेज दिया।

इस काड के लिए सर्वखाप पचायत २ सितम्बर को ग्राम बिच्छपडी मे होगी जिसमे सभी खापो, जातों, मजदूरों व इलाकों के प्रतिनिधि सरपच आदि सम्मिलित होवे।

—स्वामी कर्मपाल प्रधान
बलिदान स्मारक गुरुकुल जीन्द (हरियाणा)

सार्वदेशिक प्रैस ... नई दिल्ली-१ में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ... भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८५] वर्ष १९ अंक ४०,

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र
भाद्रपद शु० १४ सं० २०४१ रविवार ९ सितम्बर १९८४

दयानन्दाब्द १६० दूरभाष । २७४७७१
वार्षिक मूल्य १५) एक प्रति ४० पैसे

स्व० श्री वैद्य रामगोपाल शास्त्री स्मारक समिति के तत्वावधान में दिल्ली विश्व-विद्यालय के हिन्दू कालिज में वेद-गोष्ठी

आचार्य पं० वैद्यनाथ जी शास्त्री का भाषण

दिल्ली २५ अगस्त १९८४

स्व० श्री प० रामगोपाल जी शास्त्री वैद्य स्मारक समिति की ओर से सस्कृत परिषद हिन्दू-कालिज दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित वेद-गोष्ठी मे—

वेद-सख्या वेद कितने और कौन से विषय पर आचार्य श्री प० वैद्यनाथ जी शास्त्री द्वारा भाषण दिया गया।



आचार्य श्री वैद्यनाथ जी शास्त्री

सभा की अध्यक्षता वैदिक विद्वान श्री प० शिवकुमार जी शास्त्री ने की। डा० जियालाल जी कम्बोज अध्यक्ष सस्कृत विभाग ने व्यवस्था की। यह तेरहवी भाषण माला का आयोजन था।

गोष्ठी मे सार्वदेशिक सभा के मान्य प्रधान श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले और स्वामी विद्यानन्द जी की उपस्थिति उल्लेखनीय है। विषय प्रतिपादन से श्रोताओ एव विद्यार्थी वर्ग पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

भाषण के उपरान्त आचार्य जी ने प्रश्नो के समुचित उत्तर देकर श्रोताओ एव विद्यार्थी वर्ग को लाभान्वित किया।

इस प्रकार के आयोजन विश्वविद्यालय अथवा परिसर मे भविष्य मे होते रहेगे इसके लिये सस्कृत विभाग का धन्यवाद किया गया।

श्री आचाय जी का निबन्ध भाषण माला के अन्तगत प्रकाशित किया जायेगा।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सयुक्त मन्त्री सार्व० सभा

मलेशिया गवर्नमेन्ट उग्रवादी मुसलमानों की गतिविधियों पर अंकुश लगाने वाली है

सिंगापुर १५-८-८४

मलेशिया की गवर्नमेंट उत्तर पूर्वी केलनतान, टेन्गनू केदाह और परलिस राज्यों में व्याप्त इस्लामिक उग्रवादियों की गतिविधियो पर अंकुश लगाने की कार्यवाही कर रही है।

इन राज्यों मे राजनीतिक सभाओ पर पिछले सप्ताह प्रतिबन्ध लगाया गया है।

सरकारी प्रवक्ता के अनुसार विरोधी इस्लामिक पार्टी (Pas) को इन राज्यों मे उनका अच्छा खासा समर्थन प्राप्त है। कुछेक स्थानो पर विरोधी दल द्वारा आयोजित सार्वजनिक सभाओ मे ईरानी क्रान्ति के समर्थक विचारो का प्रचार किया गया था।

अभी हाल मे विरोधी पार्टी के तीन युवा नेताओं को जिनमे राज्य की विधान सभा का एक सदस्य भी शामिल है उग्रवादीय गतिविधियो के कारण गिरफ्तार किया गया है।

गवर्नमेन्ट शीघ्र ही लोकसभा मे एक विधयक प्रस्तुत करने वाली है जिसके तहत तमाम केसेटो की जिनमे कुरान की आयत सन्निहित होगी गृहमन्त्रालय द्वारा इस बात की आच कराना जरूरी होगा कि उनका अनुवाद और व्याख्या ठीक ठीक हुई है या नही। विरोधी दल के उपप्रधान ने दल के सदस्यों द्वारा उग्रवादीय प्रवृत्तियो के प्रचार के आरोप का खण्डन किया है। उन्होने यह भी कहा है कि मीटिगो पर प्रतिबन्ध राजनीति से प्रेरित है।

पूर्व प्रधान मन्त्री श्री टुन्कू अब्दुल रहमान ने कहा यहा के लोग खुमानी जैसी खून खराबी की इस्लामिक सैनिक क्रान्ति के प्रवाह मे नही बहेगे।

(शेष पृष्ठ २ पर)

सम्पादक—ओमप्रकाश पुरुषार्थी

सहसम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

शकूरबस्ती रेलवे स्टेशन से भगाए गोवंश को रोकने के सम्बन्ध में तुरन्त एक्शन होगा केन्द्रीय कानून बनाने के सम्बन्ध में आपका नोट पढ़ूंगा

गृहमंत्री नरसिम्हाराव का अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधि मंडल को आश्वासन

नई दिल्ली। शकूरबस्ती से दौड़ाई गई गोवंश की बोगियां उत्तर प्रदेश की सीमा पर रोकी जाएंगी। मैं अभी कार्यालय जाकर तुरन्त संयुक्त सचिव गोस्वामी को बुलवाता हूं। तुरन्त एक्शन लिया जाएगा। मैंने अपने प्राइवेट सेक्रटरी को कह रखा है कि वह इस मामले के पीछे लगे रहें। गोवंश हत्या निरोध केन्द्रीय कानून बनाने के सम्बन्ध में भी आपका नोट पढ़कर विचार करूंगा। उक्त आश्वासन आज प्रातः १० बजे ९, मोतीलाल नेहरू मार्ग पर केन्द्रीय गृह मन्त्री श्री नरसिम्हाराव ने अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधि मंडल को दिया। उक्त प्र० नि० मं० अखिल भारतीय गो संरक्षण परिषद के अध्यक्ष पू० पू० महामण्डलेश्वर स्वामी श्री गोवेश्वर विदेही हरि जी महाराज के नेतृत्व में मन्त्री महोदय को मिला था।

प्र० नि० मंडल ने श्री राव को एक स्मरण पत्र दिया जिसमें अनुरोध था —

(१) उक्त गोवंश की सभी बोगियों को मुगलसराय तथा हावड़ा तक के मध्य रेलवे स्टेशनों से वायरलैस मैसेज द्वारा अविलम्ब रोका जाए। नहीं तो षड्यन्त्रकारी शकूर बस्ती एवं गाजियाबाद की भांति मुगलसराय एवं अन्य स्टेशनों से भी रात्रि के अन्धेरे में बोगियों को भगवाकर कूचड़खाने में ले जाएंगे।

(२) श्री सेठी जी के रेल मन्त्री काल में स्टेशन-मास्टर एवं बुकिंग क्लर्क को कारागार में भेजा जा सकता है तो अब सभी दोषी रेलवे अधिकारी एवं अन्य अधिकारी जेल में क्यों नहीं भेजे जा सकते? यह मामला अति गम्भीर है। इस कांड की जांच सी०बी०आई० द्वारा मामला दर्ज कराया जावे।

(३) संलग्न टिप्पणी के अनुसार गोवंश हत्या निरोध के सम्बन्ध में कानून बनाने का पूर्ण अधिकार केन्द्र को है। संसद उसमें पूर्णतः सक्षम है। अतएव इसे उलझन से निकालकर केन्द्रीय अध्यादेश अविलम्ब निकलवाया जाए। अथवा तुरन्त विधेयक प्रस्तुत कराया जाए। इसके बिना गोवंश एवं देश को बचाना असंभव है।

(४) सभी राज्य सरकारों विशेषतः पंजाब हरियाणा दिल्ली उत्तर एवं मध्य प्रदेश आदि को आदेश दिए जाएं कि वह असत्य शपथ पत्र ले देकर परमिट देने एवं लेने वाले षड्यन्त्र कारियों के विरुद्ध धारा ४२० एवं १९५ हिन्द दण्डावली आदि तथा गोवंश हत्या कराने में सहायक होने के मामले दर्ज कर बरनाला पंजाब के स्टेशन मास्टर एवं गुड्स क्लर्क की भांति उन्हें जेल में भिजवाएं।

(५) केन्द्र एवं राज्य सरकारें इस भीषण षड्यन्त्र को रोकने के लिए विशेष उड़न दस्ते स्पेशल स्टाफ नियुक्त करें।

(६) सरकार की ओर से उक्त आदेशों की प्रतिलिपियां अविलम्ब हमें दिलवाई जाएं ताकि सरकार की अपील के अनुसार विभिन्न संस्थाएं भी सरकार का सहयोग कर सकें।

(पृष्ठ १ का शेष)

मलेशिया और ईरान के मध्य सम्बन्ध उचित स्तर पर रखे जा रहे हैं।

गृहमन्त्री एवं उपप्रधानमन्त्री दातुक मूसा हितम ने एक लिखित बयान में कहा है कि मलेशिया का पूर्णतः इस्लामीकरण असम्भव है क्योंकि यहां बौद्ध हिन्दू और ईसाई लोग शताब्दियों से रह रहे हैं। मलेशिया का प्रशासन उन थोड़े से जनूनी मुस्लिम वर्गों को नियन्त्रण में रखेगा जो मलेशिया को इस्लामिक स्टेट (राज्य) बनाना चाहते हैं।

(हिन्दू मद्रास ११-८-१९८४)

सभा प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले की रोषपूर्ण प्रतिक्रिया

ऐतिहासिक तथ्यों पर पाठ्य पुस्तकों द्वारा परदा डालने का कुप्रयास

चूंकि समाचार पत्रों (देखें हिन्दुस्तान टाइम्स) में प्रकाशित इस समाचार पर कि पश्चिमी बंगाल के सरकारी तथा मान्यता प्राप्त स्कूलों और कालेजों की पाठ्य पुस्तकों में देश के पूज्य नेताओं तथा महापुरुषों, श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज और पंजाब केसरी श्री लाला लाजपतराय जी के सम्बन्ध में निन्दा परक, असभ्य और आपत्ति जनक पाठ सम्मिलित हैं अपनी रोष पूर्ण प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए सार्वदेशिक सभा प्रधान शालवाले ने आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल तथा आर्य समाज कलकत्ता को समाचार की सत्यता और निर्दिष्ट पाठ्य पुस्तकों की जांच पड़ताल करने और यदि उनमें आक्षेप योग्य सामग्री हो तो उन पुस्तकों को निरस्त या उनमें अपेक्षित सुधार कराने का आह्वान किया है।

सभा प्रधान ने प्रेस विज्ञप्ति में यह भी कहा है कि विशिष्ट जीवन पद्धति के अन्धानुकरण पूर्वक प्रचार और राजनीतिक स्वार्थों की पूर्त्यर्थ तुष्टिकरण की घातक नीति के तहत देश की संस्कृति सभ्य परम्पराओं आदर्शों इतिहास और बच्चों के भावी जीवन के साथ खिलवाड़ करने की अनुमति नहीं दी जा सकती।

सभा प्रधान ने पश्चिमी बंगाल की कम्यूनिस्ट सरकार के देश संस्कृति और इतिहास विरोधी रवैये पर एक बार पुनः क्षोभ प्रकट करते हुए जिसकी दु:खद झलकियां मुख्यतः राष्ट्र प्रेमी बुद्धि जीवियों के बयानों से भी मिलती रही है और मिलती रहती है उसके परित्याग का एवं दूरदर्शिता से काम लेने का पश्चिमी बंगाल सरकार को आह्वान किया है।

उल्लेखनीय है कि सभा प्रधान ने इस प्रकार की कई पुस्तकों को विविध राज्य प्रशासनों को प्रेरणा करके पाठ्यक्रमों से हटवाने का सफल प्रयास किया है।

इस समय दिल्ली प्रशासन के शिक्षणालयों की उन पाठ्य पुस्तकों या इतिहासों को हटवाने का प्रयास जारी है जिनमें ऐतिहासिक तथ्यों के विरुद्ध उन्हें जानबूझकर तोड़ मरोड़ कर प्राचीन आर्यों को गोमांस भक्षी मद्यपी आदि दिखाने के पाठ सम्मिलित हैं। सबसे बड़ा दुःख इस बात का है कि इस प्रकार के अनर्गल आक्षेपों का बड़े २ निष्पक्ष इतिहासकारों विद्वानों समाज शास्त्रियों एवं शोध कर्त्ताओं के द्वारा प्रबल खंडन हो जाने पर भी इन्हें दूषित मनोवृत्ति वश प्रश्रय दिया जा रहा है।

ध्यान रहे शकूरबस्ती रेलवे स्टेशन पर रोकी हुई गोवंश की आठ बोगियां ३ अगस्त की रात्रि को इंजन लगाकर रात्रि को भगाई गई थी। इनमें ६० दुधारू गाएं एवं ६० बढ़िया वंश के बछड़े-बछड़ियां थीं। गाजियाबाद से विशेष इंजन लगाकर इन्हें मुगल सराय के लिए दौड़ाया गया। इसे हत्या के लिए हावड़ा 'बंगाल' में ले जाया जा रहा है। उक्त बोगियां प्रधान मन्त्री एवं गृहमन्त्री के आश्वासनों के बाद दौड़ाई गई हैं।

इस प्रतिनिधि मंडल ने गृहमन्त्री के ध्यान में लाया कि राष्ट्रीय ऊर्जा समाप्त करने के लिए गोवंश को विदेशी धन एवं अर्थ सहायता से मारा जा रहा है। ऐसा लगता है कि इसमें बहुत बड़ी रकम रिश्वत में अनेक अधिकारियों को दी गई है।

इस प्रतिनिधि मंडल में विश्व हिन्दू परिषद के श्री बी० एल० शर्मा 'प्रेम' आर्य समाज के अध्यक्ष श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी, श्री वेदव्रत चावला जी उपाध्यक्ष अ० पु० माता-पूज्य श्रीमती लक्ष्मी देवी श्रीमती शान्ति देवी की महिला समाज आदि भी सम्मिलित थे।

—राधेश्याम ब्रह्मचारी

अ० भा० गो संरक्षण परिषद, सरस्वती साहित्य मन्दिर, डी/७२-डी, शिवाजी पार्क, रोहतक रोड, नई दिल्ली ११००२६

सम्पादकीय

चेतावनी पर ध्यान देने का समय

(२)

आज भारत को ऐसे ईमानदार व्यक्तियो की जरूरत है जो अपने से ऊपर देशहित को रखें।

महात्मा गांधी ने हमे पुन चरित्रवान बनाने का घोर सघर्ष किया था जो कुछ हमने प्राप्त किया था उसे हम खो चुके थे। सार्वजनिक नैतिकता का घोर पतन हो गया है। चारों ओर आदर्श हीनता व्याप्त है। दिखावा एक बार पुन प्रतिष्ठित किया जा रहा है। ढोंग और पाखण्ड अपना रग दिखा रहे हैं। अपराध करते हुए आत्मा पर चोट नही लगती। अपराध का भाडा फोड हो जाने पर भी लज्जा की अनुभूति नही होती। सफेद झूठ बोला जा रहा है और प्रजातन्त्र के महान तम मन्दिर मे वह सत्य प्रतिपादित किया जा रहा है। जिसकी लाठी उसकी भैस वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। एक ही पीढी मे हम ईमानदार सोसाइटी के स्थान मे बेईमान सोसाइटी के रूप में पतित हो गए हैं।

समाज में स्थान चरित्र, योग्यता और सभ्यता के आधार पर नहीं अपितु धन के आधार पर दिया जाता है चाहे वह आपत्तिजनक साधनो से ही प्राप्त किया गया हो। धन सग्रह ही आज व्यक्ति का एक मात्र ध्येय बन गया है। भौतिक उन्नति की दौड मे व्यक्ति की आत्मा खोई देख पडती है।'

पुराना आवश्यक रूप से स्वर्ण नही होता। खेल के पुराने नियमो पर चिपके रहने की हमें जरूरत नही है। साथ ही जगल के कानून के लादे जाने की हम अनुमति नही दे सकते हैं। हमे नई सस्कृति पर विराम लगाना होगा।"

(समाप्त)

राष्ट्रपति शासन प्रणाली का औचित्य

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने अपने एक वक्तव्य मे श्रीबसन्त साठे तथा २१सासदो द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रपति शासन प्रणाली की माग का स्वागत करते हुए कहा है कि यह माग आर्यसमाज ने कई वर्ष पूर्व व्यक्त कर दी थी।

श्री शालवाले ने देश में व्याप्त नैतिक, सामाजिक और राजनैतिक भ्रष्टाचार, नैतिक मूल्यो के अवमूल्यन, प्रशासनिक अस्थिरता, ढील, अकुशलता की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए यह भी कहा कि

वोटों की खातिर तुष्टीकरण की नीति से साम्प्रदायिक और अलगाववादी तत्वों के हौंसले बढे हुए हैं।

इसी के फलस्वरूप उपद्रवो एव कुचक्रो के रचने की हिम्मत बढ रही है। इसके अतिरिक्त निजी स्वार्थ (देशहित के लिए नही) की सिद्धि और सत्ता प्राप्ति के लिए नाम मात्र के अनेक राजनैतिक दलो का विस्तार हो रहा है। इसी के एक दुष्परिणाम स्वरूप बहुसख्य हिन्दुओ के हितो की बलि चढाई जा रही है।

विदेश नीति की विकृति से विदेशी कुचक्र देश में पनप रहे हैं।

जिनसे देश की अखण्डता, एकता को ही नही अपितु देश की आजादी को भी खतरा पैदा हो गया है। इस सबके परिपेक्ष्य मे इस प्रणाली के अपनाए जाने का औचित्य सहज ही प्रतिपादित हो जाता है।

श्री शालवाले ने यह भी कहा कि वोटो की राजनीति के कारण अत्याचारियो को धनपतियो एव सम्प्रदायवादियो के तलुवे सहलाने पडते हैं जिसके कारण देश का दूरगामी अहित होता रहा है और जनता के साथ अन्याय भी होता है।

राष्ट्रपति शासन प्रणाली के अन्तर्गत एक राष्ट्राध्यक्ष चुना जाता है। वेदों मे स्थल-स्थल पर उसे इन्द्र की सज्ञा देकर राष्ट्राध्यक्ष के साथ सर्वोच्च सेनाध्यक्ष भी वर्णित किया गया है। ऐसे राष्ट्राध्यक्ष को राजद्रोह का अपराध प्रमाणित होने के सिवा उसे अवधि के भीतर नही हटाया जा सकता है। वह देश के योग्य व्यक्तियों के मन्त्री मण्डल का गठन करने में स्वतन्त्र होता है और उसे लोक सभा के सदस्यो की ओर मु ह ताकने की जरूरत नही होती।

अन्त मे सभा प्रधान ने कहा कि कोई भी सविधान अपने मे अच्छा बुरा नही होता, यह तो उसके कार्यान्वयन करने वालो की योग्यता, ईमानदारी, देशभक्ति और सचालन कुशलता पर निर्भर होता है और इसी से यह अच्छा बुरा बनता है। अत अधिनायकवाद की आशका करना समुचित नही है। आवश्यकता इस बात की है कि चरित्रवान्, राष्ट्रहितैषियो एव योग्य व्यक्तियो के हाथ मे ही देश का शासन सूत्र रहे तभी प्रगति एव स्थिरता देश मे आ सकेगी और देश की स्वतन्त्रता चिरस्थायी रह सकेगी।

मानव की आदि लिपि नागरी और भाषा संस्कृत ही थी

प्रो० मैक्समूलर अपने वेद भाष्य की भूमिका मे लिखते हैं कि ऋग्वेद से पुराना ग्रन्थ मानवी पुस्तकालय मे नही हैं। अत आदि मानव की आदि लिपि और आदिम भाषा ऋग्वेदी या नागरी लिपि और सस्कृत भाषा थी।

आक्स फोर्ड यूनिवर्सिटी के सुप्रसिद्ध सस्कृत प्रोफेसर श्रीयुत श्याम जी कृष्ण वर्मा अपने भाषणों मे कहा करते थे जो कि एशियाटिक रिसर्चेज से भी प्रमाणित है कि 'एशिया, युरोप तथा अमेरिका के सब ही बडे बडे देशों तथा सागरो के नाम सस्कृत जन्य हैं जो यह बतलाते हैं कि आदि काल में सस्कृत भाषा भाषी आर्य भूलोक के सब देशो के आदिकाल मे आबाद करने वाले तथा नाम धरने वाले थे।—यथा

(१) मेडी टेरियन	—	सस्कृत की मध्य धारा का अपभ्रश
(२) फ्रास	—	प्राचका
(३) इग्लेंड	—	अगल लडका
(४) आयरलैंड	—	आर्य लडका
(५) स्काटलेंड	—	शक्ति लडका
(६) लन्दन	—	नन्दका
(७) ग्रीस	—	गिरीश का
(८) इटली	—	अतुल देशका
(९) स्विटजरलैंड	—	पवित्र लडका
(१०) रोम	—	रोमक
(११) रशिया	—	आर्षिया
(१२) डेन्मार्क	—	धेनुमार्ग
(१३) नार्वे	—	नारावज
(१४) स्वेडन	—	सुयोधन
(१५) कास्पियन सी	—	काश्यप स्थान
(१६) हगरी	—	हुनगढ़
(१७) जर्मनी	—	शर्मन देश
(१८) आस्ट्रिया	—	राष्ट्रीय
(१८) इजिप्ट	—	गुप्त देश
(१९) टर्की	—	तर्क स्थान
(१२) अरब या अर्बिस्तान	—	अब स्थान (घोडो का देश)
(१२) पैलेस्टिन	—	पाली स्थान
(१३) अदन	—	उद्यान
(१४) बलूचिस्तान	—	बलि उचित स्थान
(१५) अफगानिस्तान	—	अश्वगाहन स्थान

समान विधिसंहिता (सिविल कानून) तानाशाही नहीं

श्री जयकुमार मित्तल (मेरठ) लिखते हैं—

'शरीअत मे सशोधन और सुधार के प्रयास मुस्लिम देशो मे हुए हैं। तुर्की ने तो कई दशक पहले ही शरीअत को त्यागकर एक समान सिविल कोड देश मे लागू कर दिया था।

अल्जीरिया, टयूनेशिया, मोरक्को, सीरिया जार्डन सूडान और कई

सामायिक चर्चा—

वेदों ने क्राइस्ट (ईसा) के प्रादुर्भाव की भविष्यवाणी नहीं की थी

वेदो मे व्यक्ति वाचक कोई नाम नही है। वर्तमान मे प्रचलित अनेक ऐतिहासिक व भौगोलिक नाम आध्यात्मिक और यौगिक अर्थों के द्योतन के लिए प्रयुक्त हुए हैं। यथा अयोध्या (अजेय) राम (जो घूमता हो) कृष्ण, अर्जुन (काला व सफेद) इसके लिए महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्य और कम से कम मैक्स मूलर कृत हिस्ट्री आफ संस्कृत लिटरेचर देख।

आई० सी० डोगरे ने एक अंग्रेजी पत्र में प्रकट किया है कि वेदो न ईसा के जन्म की भविष्यवाणी की थी जो कपोल कल्पना है और अज्ञान अन्ध विश्वास, अन्ध श्रद्धा, व कुत्सित भावना पर आश्रित देख पडती है।

आध्यात्मिक भविष्यवाणियां

क्राइस्ट के जन्म को वेदो द्वारा प्रतिपादित दिखाने का प्रयत्न किया जाता है जो लचर ही कहा जा सकता है। ऐसा प्रयत्न करने वाले रावट नोविल के शिष्य जान पडते है जिन्होने इसी ध्येय की सिद्धि के लिए पाचव वेद की रचना की थी। इस बात को सही सिद्ध करने के लिये कि वेदो ने ईसाके जन्मकी भविष्यवाणी की थी जिसका कोई प्रमाण नही है, उन्होने भविष्यपुराण के प्रमाण दिये हैं। वेदो मे क्राइस्ट का तो क्या जेसस का भी कही उल्लेख नही है। इसके अलावा यह बात भी स्पष्टत समझ लेनी चाहिये कि जेसस क्राइस्ट नही है। जेसस एक व्यक्ति का नाम है जो २००० वर्ष पूर्व यहूदियो मे बहुप्रचलित था। क्राइस्ट उपाधि है जो केवल उनके द्वारा दी जाती है जिनकी बाइबिल मे वर्णित कथा के आधार पर क्वारी से जन्म लेने और मरकर जीने आदि के चमत्कारो की प्रामाणिकता मे आस्था होती है। इसके अतिरिक्त आज तक किसी को भी यह पता नही लग सका कि जेसस की वास्तविक जन्म तिथि क्या थी? अत उनके प्रथम जन्म दिन को प्रथम क्रिस्मस के रूप मे मनाये जाने का प्रश्न ही उपस्थित नही होता।

यत वेद क्वारी से जन्म लेने की बात को मान्यता नही देना है अत वेदो मे ईसा के आविर्भाव की भविष्यवाणी मिलने की सम्भावना लेखको की अन्ध विश्वास जनित कपोल कल्पना ही मानी जा सकती है। विज्ञजनो का जिनमे ईसाई और गैर ईसाई शामिल हैं इस प्रकार के गपोडो मे कोई विश्वास नहीं है।

(२)

प्रो० डी०डी० कोशाम्बी ने भविष्य पुराण को एक 'घोखे' की संज्ञा दी है। यह बहुत सम्भवत किसी स्वधर्म त्यागी पाखण्डी पंडित द्वारा लिखा गयाहै जिसे मलाबार तट के ईसाइयो से पैसा मिला था।

मुण्डकोपनिषद् का हवाला दिया जाना आपत्तिजनक है इसलिए कि उपनिषद के अर्थ का अनर्थ किया गया है और जिसका प्रयोग असगत है। भगवद् गीता के श्लोको का अभिप्राय परमात्मा द्वारा शरीर धारण करना नही अपितु धर्म की रक्षाथ महापुरुषो का ससार मे अवतरित होना है।

अफ्रीकी देशो मे मुस्लिम पर्सनला मे पर्याप्त सुधार हुए हैं। कई ने बहुपत्नी प्रथा समाप्त कर दी है या बहु विवाह कठिन बना दिया है।

पति द्वारा तलाक के असीमित अधिकार पर अंकुश लगाए गए हैं और पत्नी को भी विवाह विच्छेद के हक दिए गए हैं।

कई देशो मे शादी की न्यूनतम आयु ऊंची तय की गई है। अनेक देशों में पैतृक सम्पत्ति के बटवारे के कुरआनी नियमो को अधिक तर्क सगत बनाया गया है।

पाकिस्तान मे भी मुस्लिम फैमिली लाज आर्डिनेन्स १९६१ तथा चाइल्ड मैरिज रैस्ट्रेन्ट एक्ट १९२९ द्वारा पर्सनलला को काफी सुधारा गया है।

भारत के रूढ़िवादी मुस्लिम अडे हुए हैं। श्री अरशद ने तो यहा तक लिख दिया है (देखें नवभारत १९ ८ ८४) कि कामन सिविल कोड मौलिक अधिकारो का हनन कर देश मे ताना शाही ला देगा।

ब्रिटेन मे समान सिविल कानून लागू हैं पर वहा तानाशाही कतई नहीं पनपी। भारत के मुसलमानो पर भी कई इस्लामी कानून लागू नहीं हैं जैसे गवाही का कानून, बिक्री और इकरार नामे का कानून, तथा कुरआनी दड सहिता जिसमे चोरी के लिए हाथ काटने जैसी सजाओं का प्रावधान है। पर इससे उनकी मजहबी आजादी खतरे मे नही पडी। फिर शरीअत एप्लीकेशन ऐक्ट १९३७ समाप्त कर समान निजी कानून लागू कर देने से वह क्यो खतरे मे पड जायगी।

सविधान के अनुच्छेद ४४ की तलवार यदि गिरती है तो घबराने की जरूरत नहीं। इससे असमानता और शोषण से जकडी मुस्लिम नारी के बधन ही कटेंगे।

प्रेरक संस्मरण

(१)

वह लुधियाना के एक सम्भ्रान्त परिवार का नवयुवक था। १८ १९ वर्ष की आयु मे आर्यसमाज के प्रचार, कुरीति निवारण, सेवा सहायता रक्षा पाखण्ड खण्डन कार्यो के और आर्यसमाज स्थ स्त्री-पुरुषो के उच्च वैयक्तिक और सामाजिक जीवन से प्रभावित होकर आर्य समाज की ओर आकृष्ट हो गया था। साथ ही आर्यसमाज के कार्यों मे भाग लेने लगा था। पौराणिक वर्ग विशेषत ब्राह्मण वर्ग के लोग उससे चिढते और उसके पिता से शिकायत किया करते थे। एक दिन पास पडौस की स्त्रियो के उकसाने और व्यग करने पर उसकी माता ने आखे लाल पीली करके उसे कहा— बेटा! क्या अनर्थ किया जो तू आर्या हो गया।

नवयुवक ने बडी शान्त मुद्रा मे कहा "माता जी ' हम सभी आर्य है। मैं भी उनमे से एक हू। अलग तो नही हुआ।" यह सुनकर माता अवाक् रह गई।

इस युवक का नाम था चिरंजीलाल जो आगे चलकर आर्यसमाज के एक वरिष्ठ वक्ता, शास्त्रार्थ प्रवर और साहित्यकार के रूप मे प्रसिद्ध हुआ जिसके लेख सद्धर्म प्रचारक आदि पत्रो मे छपते थे और जिसने दर्जनो ट्रैक्ट आर्यसमाज के मडन और मत-मतान्तरो के खण्डन मे लिखकर प्रकाशित और प्रचारित किये थे।

(२)

महाशय चिरजी लाल जी ने श्राद्ध के दिनो मे एक ब्राह्मण को अपने घर पर भोजन का निमन्त्रण दिया जो उन्होने बडी प्रसन्नता से स्वीकार किया। जब वह ब्राह्मण देवता खाना खाने के लिए बैठे तो चिरजीलाल जी ने अफीम की एक डली यह कहते हुए पेश की कि खाइए महाराज! मेरे स्वर्गीय पिताजी अफीम खाते थे। वे इसके लिए तडप रहे होंगे शीघ्र पहुचा दीजिए बाद मे मिठाइया भी दूंगा।"

ब्राह्मण देवता 'दुष्ट! दुष्ट!!' कहता हुआ वहा से भाग निकला।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

दिल्ली में श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती

दिल्ली हमारे देश की पुरानी राजधानी है। श्री स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के कार्यकाल (सन् १८६३ ई० १८८३ ई० में इस नगर पर अंग्रेजो का पूर्ण अधिकार ही था किन्तु अंग्रेजों ने इसको अपने राज्य की राजधानी नहीं बनाया था। इस पर भी इसकी महत्ता उस काल मे कुछ कम न थी। यही कारण है कि श्री स्वामी जी महाराज ने अनेक बार इस नगर को गौरवान्वित किया।

पौष कृष्ण १३ सवत् १९३३ वि० अर्थात् पहली जनवरी सन् १८७७ ई को अ ग्रेजी राज्य की ओर से एक बड़ा भारी दरबार दिल्ली में हुआ था। उस अवसर पर भारत के बड़े २ विद्वान व राजे-महाराजे दिल्ली मे पधारे थे। ऐसे अवसर पर श्री स्वामीजी ने दिल्ली पधारना अधिक उपयोगी समझा और सम्भवत उक्त तिथि तथा तारीख से कुछ समय पहले ही अलीगढ से दिल्ली आए। अजमेरी दरवाजा से पश्चिम व दक्षिण की ओर श्री शेरमलजी के अनार बाग मे उनके ठहरने का प्रबन्ध किया गया अर्थात् अजमेरी दरवाजे से जो सड़क कुतुब तथा गुड़गावा को गई है उसी सड़क के समीप प्रबन्ध था। इस प्रबन्ध मे छलेसर जिला अलीगढ़ के ठाकुर श्री मुकन्दसिंह जी तथा कर्णवास जिला बुलन्द शहर के ठाकुरो व कुछ अन्य प्रेमियो का हाथ अधिक था। ये ही लोग उनकी सेवा मे विशेष रूप से उपस्थित थे।

श्री स्वामी जी को कार्य क्षेत्र मे उतरे हुए उस समय तक लगभग १२ वर्ष हो चुके थे। उन्होने काफी अनुभव प्राप्त कर लिया था। इसी कारण दिल्ली दरबार के अवसर को उन्होने अपने उद्देश्य की पूर्ति का एक अच्छा साधन समझा था। उनकी इच्छा थी कि दिल्ली मे बहुत से राजे महाराजे एकत्र हैं, यदि वे सब एकत्र होकर एक बार मेरा व्याख्यान सुन लें तो बड़ी सुगमता से काय हो सकता है। परन्तु यह बात न हो सकी। उनका दूसरा प्रयत्न यह हुआ था कि भारत के अनेक सुधारको को उन्होंने अपने स्थान पर निमन्त्रित किया था और उन्होंने यह इच्छा प्रकट की थी कि सब लोग एक मत होकर एक ही रीति से देश का सुधार करें, परन्तु समस्त सुधारक इस बात पर सहमत न हुए निदान अपने उद्देश्य की पूर्ति मे श्री स्वामी जी महाराज पूर्ण रूप से दिल्ली मे सफल न हुए। परन्तु उनके विचारो की धूम से दिल्ली तथा दरबार मे सम्मिलित होने वालो के कान वचित न रह सके थे। अनेक लोग उनकी सेवा मे प्रतिदिन पहुंचा करते थे और इस प्रकार नाना प्रकार के लोगों ने उनकी शिक्षा से लाभ उठाया था।

उक्त अवसर पर दो सप्ताह से कुछ अधिक ही दिल्ली मे ठहरे थे क्योकि १६ जनवरी सन् १८७७ ई० को वह दिल्ली से मेरठ मे जा विराजे थे। इसके पश्चात् स० १९३५ वि० आश्विन शुक्ल ८ अर्थात् ३ अक्टूबर सन् १८७८ को मेरठ से दिल्ली में पदार्पण किया था। ऐसी बात मुझे एक ऐसे अप्रकाशित पत्र से मालूम हुई है जो कि श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा जी के नाम है। यह पत्र ७ अक्टूबर सन् १८७८ ई० को लिखा हुआ है उसमें दिल्ली आने के विषय मे शब्द ये है—

"हम ३ अक्टूबर को दिल्ली आये हैं।" श्री स्वामी जी महाराज के जीवन चरित्रों से ऐसा प्रतीत होता है उन्होंने १ अक्टूबर को सुशोभित किया था किन्तु मुझे इस पत्र के शब्द अधिक ठीक प्रतीत होते हैं। इसके सिवा श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा के नाम के एक अप्रकाशित पत्र लिखित १० अक्टूबर सन् १८७८ ई० से दिल्ली में आर्य समाज के स्थापित होने का पता इस प्रकार चलता है, "कल यहा भी आर्य समाज के लिए प्रधानादि नियत हो गए हैं और ३ नवम्बर रविवार को समाज का प्रारम्भ हो जायगा।"

१० अक्टूबर सन् १८७८ (कार्तिक शुक्ल ५ स० १९३५ विक्र को बुधवार था। इसके पश्चात् रविवार ३ नवम्बर (कार्तिक शुक्ल ९) को पड़ा था। निदान दिल्ली में आर्य समाज का नियमित पहला सत्सग उक्त तिथि को हुआ था।

इस बार श्री स्वामी जी महाराज ने ६ नवम्बर को दिल्ली छोड़ा और जयपुर व अजमेर होकर पुष्कर मे जा विराजे थे। इस बार दिल्ली मे उनका ठहरना मोहल्ला सब्जीमण्डी मे लाला बालमुकन्द केसरीचन्द (या किशोरीचन्द) के मोती बाग मे हुआ था। कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को पुष्कर मे बड़ा भारी मेला हुआ करता है। इस मेले मे प्रचार के पश्चात् कई स्थानो मे होते हुए ९ जनवरी सन् १८७९ ई० (माघ कृष्णा प्रतिपदा स० १९३५ वि०) को अर्थात् दो मास के पश्चात् फिर दिल्ली मे रिवाड़ी से पधारना हुआ। उक्त सन् मे हरिद्वार में कुम्भ का बड़ा भारी मेला था। उसमे औरों के साथ प्रचार करना आवश्यक था, इसी कारण केवल एक सप्ताह दिल्ली मे रहे। इस बार भी सब्जी मण्डी मे ही ठहरना हुआ था जहा कि इससे पूर्व पधार कर ठहरे थे।

उनके एक जीवन चरित्र से पता चलता है कि दिल्ली से १५ जनवरी को मेरठ चले गए थे किन्तु श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा के नाम के एक अप्रकाशित पत्र लिखित १७ जनवरी के शब्द यह हैं —

'हम कल दिल्ली से मेरठ आ गये हैं।"

निदान तीन बार श्री महाराज जी ने दिल्ली को गौरवान्वित किया था। आशा है कि दिल्ली में पधारने व दिल्ली से प्रस्थान करने से सम्बन्ध रखने वाली जो तिथिया हैं लोग उन्हें जीवन चरित्रो मे ठीक कर लगे।

(स्व० प्रो० महेश प्रसाद आलिम फाजिल
हिन्दू यूनिवर्सिटी बनारस की
डायरी से १९४२)

अथ सामवेद संहिता

(दो०) प्रभुद्युति से अन्त सदन, होव जब निष्पाप।
कर्म-पाश से छूटते, भक्त आप ही आप।
हृदय वासना-विरहित, हो प्रभु प्रवचन धाम।
आज्ञा मे प्रभु की चले, करे उसी का काम।
(छ० २) तुम जगनायक! सत्कर्मों के प्रेरक बने प्रतिष्ठित हो।
सवहेतु! जन्मे जन जन मे दिव्य गुणो से धारित हो।
(दो०) जहा जहा श्री, ऊर्ज है, औ विभूति का साज।
तीनो मे प्रभु तेज ही जानो रहा विराज।
हैं प्रभु ही जीवन रथ चालक, वही यज्ञ कर्मों के नायक।
प्रभु बल के कर्मों सग जुडते, अशुभ कर्म क्यो कर हो सकते?
कम श्रेष्ठतम यज्ञ कहाये, बिन प्रभु बल न यज्ञ चल पाये।
ग्राहक जीव, ईश बल-दाता, जीव अल्प प्रभु पूर्ण सुज्ञाता।
प्रभु बल सत्प्रयोग नहि जाना, इस विधि अशुभ कर्म हो नाना।
करे वैद्य ज्यो रोग-निदाना, दे सेवक को औषध पाना।
सेवक यदि दे सही दवाई, निश्चित कीर्ति वैद्य ही पाई।
यदि सेवक प्रमाद दर्शाए, बिगडे रोग, दोष खुद पाए।
इस विधि परमवैद्य प्रभु जानो, अकुशल कुशल जीव चर मानो।
रोग मिटे प्रभु आज्ञा माने विधिवत् औषध पत्र प्रमाणे।
रोग मात्र सब विधि प्रभु हरते, रहे रोग, प्रभु दोष न पाते।
रोग मूल अज्ञान जीव का, ज्ञानी यो प्रिय भक्त ईश का।
प्रभु गुण भरद्वाज है गाता, प्रभु को विनय भट यो करता—
हे उन्नति पथ के सुनियता, शुभ कर्मों के सम्पादयिता।
मननशीलता रूप मनुजनता, जिस जीवन मे पाए सत्ता।
वहा सुदिव्य गुणो के द्वारा, सदा प्रतिष्ठित तब उजियारा।
नित्य एक तुम घट-घट वासी, जड जगम जगती तब दासी।
जिसविधि नयन दरस तब पाए, ज्यो हम भरद्वाज कहलाए।
मननशील सर्वोपरि बनकर, दिव्य गुणो से भरले अन्तर।
शक्ति उपासक भरद्वाज बन इस विधि करे, तब दर्शन।

—ओमदत्त भारद्वाज व्यावरा

सामवेद सुबोध पद्यानुवाद

पूर्वार्चिक। आग्नेय काण्डम्। प्रथम अध्याय। प्रथमादशति।
५ उशना ६ सुदीति पुरु मोढो तर्योर्वा यतर, ८ वत्स
करने वाला वह प्रभु १० वामदेव ॥ देवता अग्नि।
२ त्वमग्ने यज्ञाना होता विश्वेषा हित। देवेभिर्मानुषे जने॥

श्रीयुत स्व० वैद्य रामगोपाल जी शास्त्री का

संक्षिप्त जीवन परिचय

सुविख्यात वैदिक रिसर्च-स्कालर पीयूषपाणि स्वर्गीय श्री वैद्य रामगोपाल जी शास्त्री उन गण्यमान्य व्यक्तियो मे से थे,जिनका सारा जीवन वेद और महर्षि दयानन्द-कृत ग्रन्थो के अध्ययन, अनुशीलन तथा आर्यसमाज की सेवा के लिये समर्पित रहा है। भारत विभाजन के समय आप लाहौर से दिल्ली आ गये थे।

शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् ही आपने कई एक आर्य सस्थाओ मे कार्य किया। कुछ दिन श्री प० भगवद्दत्त जी के साथ वैदिक शोध-विभाग मे कार्य करने के पश्चात् आप दयानन्द ब्राह्म-महा-विद्यालय के उपाचार्य नियुक्त हुये।

वेद-वाङ्मय के अध्ययन मे आपकी विशेष रुचि थी। सामयिक राजनीति मे भी आपने बढ चढकर भाग लिया। अत स्वाभिमान और स्वातन्त्र्य प्रवृत्ति के कारण आपने विद्यालय से त्यागपत्र दे दिया। सभ्रान्त मित्रो के परामर्श से आपने आयुर्वेद चिकित्साशास्त्र का गहन अध्ययन किया कि थोडे ही समय मे इस विज्ञान मे भी आपने प्रसिद्धि प्राप्त कर ली। कुछ दिन आप तत्कालीन भारत प्रसिद्ध वैद्यराज श्री योगेश्वर जी कनखल वालो के शिष्य रहे और उदर रोग-विशेषज्ञ के रूप मे लाहौर मे ही कार्य प्रारम्भ कर दिया। अपना स्वतन्त्र व्यवसाय करते हुए भी वैदिक अनुसन्धान और अनुशीलन का कार्य भी निरन्तर चलता रहा।

देश-विभाजन के पश्चात् दिल्ली मे करौलबाग मे अपना औषधालय बना लिया। यहा भी आपकी थोडे समय मे ही प्रसिद्ध वैद्यो मे गणना होने लगी। 'वेदो मे आयुर्वेद' पुस्तक लिखकर आपने विद्वानो को चकित कर दिया। उ०प्र० सरकार द्वारा आपको पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

वेदगोष्ठी का सूत्रपात

१९७० की बात है श्री डा० वेदमित्र जी ने श्री शास्त्री जी के पास आकर सूचित किया कि दिल्ली विश्वविद्यालय के एक व्याख्याता ने वेदो पर अनर्गल आक्षेप किये हैं। उनका आर्यसमाज की ओर से उत्तर अति-आवश्यक है। उसी समय श्री विश्वम्भरदास (आर्यसमाज के मन्त्री) श्री शास्त्री जी के पास ही बैठे थे। उनके आग्रह से श्री शास्त्री जी ने आर्यसमाज के तत्त्वावधान मे 'वेदगोष्ठी' की स्थापना कर दी। 'वेदगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य "विदेशीय तथा स्वदेशीय तथा-कथित विद्वानो द्वारा वेद सम्बन्धी किये गये भ्रान्त, अनर्गल और निराधार आक्षेपो और भ्रान्तियो का युक्तियुक्त सप्रमाण समाधान करना" रखा गया।

श्री शास्त्री जी के मार्ग दर्शन, प्रेरणा, कतिपय विद्वानो के सहयोग और आर्यसमाज करौलबाग के अन्तर्गत, उन्ही की सहायता से २५ अक्टूबर १९७० को पहिली वेदगोष्ठी का आयोजन हुआ। पहिला व्याख्यान भी श्री शास्त्री जी का हुआ। विषय था—'आर्य दस्यु'। आर्यसमाज के अनेक मूर्धन्य विद्वानो के सम्मिलित होने से 'वेदगोष्ठी' को आर्य जगत मे महत्वपूर्ण प्रतिष्ठा मिली।

श्री शास्त्री जी के जीवन काल मे सात (७) वेद गोष्ठियो का सफलता पूर्वक आयोजन होता रहा। श्री शास्त्री जी के कर्मयोगी और यशस्वी जीवन का अकस्मात अन्त (८ जून १९७४) हो गया।

श्री वैद्य रामगोपाल शास्त्री स्मारक समिति

पुण्यश्लोक श्री वैद्य जी की स्मृति को अक्षुण्ण और चिरस्थायी बनाने तथा उनके वेदसम्बन्धी स्वप्नोको मूर्तरूप देनेके लिये आर्यसमाज करौलबाग के अन्तर्गत श्री वैद्य रामगोपाल शास्त्री स्मारक समिति' का गठन किया गया। 'समिति' निरन्तर "गोष्ठियो" की श्रृखला द्वारा श्री शास्त्री जी के मिशन का पूर्णतया पालन कररही है।

आज तक की गोष्ठियो का विवरण इस प्रकार है—

श्री शास्त्री जी के जीवन काल मे—

(१) २५ अक्टूबर १९७०—
अध्यक्ष—प० उदयवीर जी शास्त्री, गाजियाबाद
विषय—क्या आर्य भारत मे बाहर से आये ? आर्य और दस्यु
व्याख्याता—श्री वैद्य रामगोपाल जी शास्त्री

(२) २० दिसम्बर १९७०—
अध्यक्ष—श्री उदयवीर जी शास्त्री
विषय—वेदो मे गगादि नदिया क्या ऐतिहासिक हैं ?

(३) २४ अप्रैल १९७१—
अध्यक्ष—श्री वैद्य गुरुदत्त जी एम०एस०सी०
विषय—भारत मे आर्य सभ्यता से पूर्व कोई सभ्यता नही थी।

(४) २१ नवम्बर १९७१—
अध्यक्ष—आचार्य जगदीशचन्द्र जी एम०ए०
विषय—पिता की चल-अचल सम्पत्ति का अधिकार किसको ? सन्तान को या राष्ट्र को!

(५) २९ अप्रैल १९७२—
अध्यक्ष—श्री युधिष्ठिर जी मीमासक, सोनीपत
विषय—वेद मे आख्यानो के यथार्थ स्वरूप

(६) २ जनवरी १९७३—
अध्यक्ष—आचार्य उदयवीर जी शास्त्री
विषय—वेद मे अग्नि, वायु, इन्द्र आदि देवता चेतन वा अचेतन?' गोष्ठी दो बार हुई।

(७) २८ अप्रैल १९७३—
अध्यक्ष—श्री उदयवीर जी शास्त्री
विषय—वेद मे देवता चेतन अथवा अचेतन ?

"स्मारक समिति" की ओर से निम्न गोष्ठिया हुई —

(८) ११ सितम्बर १९७१
अध्यक्ष—श्री वैद्य गुरुदत्त जी एम०एस०सी०
विषय—वेदो मे त्रैतवाद
निबन्ध वाचन—श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती, ज्वालापुर

(९) २७ अक्टूबर १९७८—
अध्यक्ष—डा० सत्यव्रत जी, भू०पू० उपकुलपति गुरुकुल कागडी
विषय—वेदार्थ की विभिन्न प्रक्रियाएं तथा उनके सन्दर्भ मे, महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य का महत्त्व।
व्याख्याता—श्री डा० रामनाथ जी वेदालकार, चण्डीगढ

(१०) २८ सितम्बर १९८०
अध्यक्ष—आचार्य श्री वैद्य ब्रह्मदत्त जी शर्मा
विषय—आधुनिक सायन्स और वेद
व्याख्याता—वैद्य गुरुदत्त जी एम०एस०सी०

(११) ८ अगस्त १९८२
अध्यक्ष—श्री प्रो० वेदव्यास जी एम० ए०, एल० एल० बी० सीनियर एडवोकेट
सान्निध्य—न्यायमूर्ति श्री हसराज जी खन्ना
विषय—वेदो की प्रामाणिकता और ऋषि दयानन्द
व्याख्याता—श्री डा० श्री निवास जी शास्त्री, कुरुक्षेत्र

"श्री वैद्य रामगोपाल जी शास्त्री स्मारक समिति" की ओर से इन वेद-गोष्ठियों का कार्यक्रम अत्यन्त सुचारु रूप से सफलता के साथ सम्पन्न होता रहा है। आर्य समाज के संरक्षण में प्रत्येक व्याख्याता विद्वान् महोदय की सेवा मे 'समिति' की ओर से १००) की साधारण सी राशि, नारियल और दोशाला दक्षिणारूप में समर्पित किये जाते हैं। 'समिति' आर्यसमाज करौलबाग की विशेष ऋणी है। प्राय. व्यय-वहन आर्य समाज की ओर से ही होता है।

इस अवसर पर अनेक विद्वानो का सक्रिय सहयोग और प्रबन्धक समाज के अधिकारियो का साहाय्य भी समिति को मिलता रहा है।

विश्वम्भर दास
संयोजक
श्री वैद्य रामगोपाल शास्त्री स्मारक समिति

अवैध शराब के ठेकेदारों पर जनता स्वयं अपना ताला लगा दे

श्री रूप नारायण जी

अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद के कार्यालय मे प्राय सभी प्रदेशों के नशाबन्दी कार्यकर्ताओं के पत्र आते रहते हैं जिनमे शिकायत होती है कि विभिन्न प्रदेशों की राज्य सरकारें खुद अपने द्वारा निर्मित आबकारी कानूनो का निर्दयता पूर्वक उल्लघन कर रही है। विभिन्न प्रदेशोंमे आबकारी नियमो के अन्तर्गत शराबकी दुकानें धार्मिक स्थलों शिक्षण सस्थाओ, अस्पतालों राज्य मार्गों, रेलवे स्टेशनो, हरिजन तथा पिछड़े वर्गों की बस्तियो व बस अड्डों के समीप खोलनी सर्वथा वर्जित घोषित की गई है। निर्धारित दूरी का उलघन न कर शराब के ठेकों को इन स्थानो के निकट खोलना सरकारी आबकारी नियमों की अवहेलना है। शराब के ठको के खुलने तथा बन्द होने के लिये भी समय निर्धारित किया गया है किन्तु प्राय समय की पाबन्दी नहीं है। निर्धारित समय से पूर्व ही शराब के ठेके खुल जाते हैं और बन्द होने के लिए निर्धारित समय के पश्चात् भी देर रात तक ये ठेके खुले रहते हैं। आम जनता की भावनाओं का अनादर करते हुए भी ऐसे स्थानों पर शराब के ठेके खोले जा रहे हैं जहा पहले कभी ऐसे ठेके नही थे। नशाबन्दी कार्यकर्ताओं की ओर से जब सम्बन्धित अधिकारियो का ध्यान आबकारी नियमो की अवहेलनाओ की ओर आकर्षित किया जाता है तो सम्बन्धित अधिकारियों से प्राय किसी प्रकार का कोई उत्तर प्राप्त नहीं होता और यदा कदा कभी प्राप्त हुआ भी तो वह भी अधूरा कि इस मामले की जाच की जायगी किन्तु किसी प्रकार की जाच इत्यादि नहीं की जाती है और शराब के ठेके यथावत पूर्व स्थानों पर ही कायम रहते हैं।

लगभग एक वर्ष पूर्व हिमाचल प्रदेश के कुछ नशाबन्दी तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं ने सरकार द्वारा आबकारी नियमो की अवहेलना पर हिमाचल प्रदेश उच्चन्यायालय मे एक याचिका दायर की। इस याचिका की सुनवाई के परिणामस्वरूप अवैध रूप से खोले गये शराब के ठेको को उच्चन्यायालय द्वारा तुरन्त बन्द किए जाने के आदेश दिए गए। याचिका सुनवाई के दौरान यह भी तथ्य सामने आया कि ८० प्रतिशत से अधिक शराब के ठेके आबकारी नियमों का उलघन कर खोले गए थे। ऐसे समस्त ठेके एक सप्ताह तक बन्द रहे किन्तु हिमाचल प्रदेश की सरकार ने एक अध्यादेश द्वारा ऐसे सभी ठेकों को पुन. मान्यता दे दी और इस प्रकार हिमाचल प्रदेश उच्चन्यायालय के आदेशों का निरादर किया गया।

अन्य प्रदेशो में भी प्राय ऐसा ही हो रहा है और वहा भी सम्बन्धित उच्च न्यायालय मे याचिकाए दायर की गई है। सर्वोच्च न्यायालय में भी दो याचिकाए दायर है जिन पर अभी सुनवाई प्रारम्भ नहीं हुई है। हमारा ऐसा मानना है कि यदि राज्य सरकारें स्वय निर्मित आबकारी कानूनों का ईमानदारी और कठोरता से पालन करें तो ५० प्रतिशत नशाबन्दी तो स्वयं ही हो जाती है और शेष ५० प्रतिशत नशाबन्दी के लिए कोई रास्ता निकाला जा सकता है।

नशाबन्दी कार्यकर्ताओं के अनुरोध इन पत्रों के उत्तर में परिषद के कार्यालय से उनको यही लिखा जाता है कि वे इन अनियमतताओं की ओर सम्बन्धित अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करें कि जिससे आबकारी नियमों की अवहेलना को रोका जा सके और फिर भी यदि ऐसे गैर कानूनी अवैध शराब के ठके सरकारी द्वारा बन्द न किए जाय तो उन्हें बन्द कराने के लिए स्थानीय जनता के सहयोग से शान्ति पूर्ण प्रदर्शन तथा पिकेटिंग इत्यादि का कार्यक्रम आयोजित किया जाय जिससे सरकार को ऐसे गैर कानूनी ठेकों को बन्द करने के लिए बाध्य किया जा सके। जहा कहीं भी इस प्रकार का शान्तिपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किया गया है वहा भी प्राय कोई सफलता नहीं मिली है और पिकेटिंग इत्यादि का काम भी कुछ समय के पश्चात बेअसर होकर रह जाता है।

उपरोक्त परिस्थिति मे जब कि पिकेटिंग इत्यादि कार्यक्रम का कोई नतीजा न निकले तो नशाबन्दी कार्यकर्ता क्या करे यह प्रश्न हमारे सामने सदैव बना रहता है। अभी मध्य प्रदेश के कार्यकर्ताओं की ओर से ऐसे पत्र हमारे पास में आये हैं कि एक दो महीने तक पिकेटिंग का जब कोई नतीजा नही निकला तो अन्तत विवश होकर इस कायक्रम को छोडना पडा। ऐसे ही पत्र हिमाचल प्रदेश के कार्यकर्ताओ से भी प्राप्त हुए हैं। ऐसे अवैध शराब के ठको के विरुद्ध स्थानीय महिलाए तथा कार्यकर्ताओ द्वारा अनशन का कार्यक्रम भी आयोजित किया गया किन्तु वह भी निष्फल ही रहा। इन सब कार्यक्रमों को आयोजित करने के पश्चात हमारी राय मे अब केवल एक ही रास्ता बाकी रह जाता है कि जिस पर अमल किया जा सकता है और वह रास्ता यह है कि जिन क्षेत्रों मे अवैध शराब के ठेके खुले हुए हैं वहा की जनता के सहयोग के आधार पर पूर्णत शान्त रहते हुए ऐसे अवैध शराब के ठेंको पर जनता स्वय अपना ताला लगाकर उन्हे बन्द कर दे और यदि ऐसा करने पर सरकारी अधिकारी अपने अधिकार का दुरुपयोग करते हुए जनता पर किसी प्रकार का अत्याचार करते हैं तो उसे भी शान्ति पूर्वक स्वीकार करना होगा। इस कार्यक्रम मे भाग लेने वालो को हर प्रकार से शान्ति पूवक रह कर इस कार्यक्रम को आयोजित करना होगा और उनका यह कतव्य होगा कि वे देखे कि इस कार्यक्रम के सचालन मे किसी प्रकार की हिंसा नही होनी चाहिए।

यह भी आवश्यक है कि उपरोक्त कार्यक्रम प्रारम्भ करने से पूव सभी सम्बन्धित अधिकारियो को सूचना भी देनी जरूरी है कि अमुक दिन और अमुक समय तक यदि अवैध शराब का ठेका सरकार द्वारा बन्द नही किया गया तो स्वय जनता इन अवैध शराब के ठेके पर ताला बन्दी का कार्यक्रम प्रारम्भ करने के लिए बाध्य होगी। जब सरकार स्वय ही निहित स्वार्थों के रक्षार्थ अपने द्वारा निर्मित कानूनों की रक्षा न कर सके तो फिर जनता को स्वय ही आगे बढ कर उस कानून की रक्षा करनी होगी। ताला बन्दी कायक्रम मे उन्ही व्यक्तियों को भाग लना होगा जो हर परिस्थिति मे अहिंसक रहने के लिए कटिबद्ध हो।

अन्त मे नशाबन्दी कार्यकर्ताओं को उपरोक्त सुझाए हुए कायक्रम का जहा कही भी सम्भव हो कार्यान्वित करने के लिए आवश्यक तैयारी करनी होगी। आशा करनी चाहिए कि इस कार्यक्रम से विभिन्न प्रदेशो की सरकारो को आबकारी नियमो का पालन करने के लिए प्रेरणा मिलेगी।

— मन्त्री

अ०भा० नशाबन्दी परिषद तीस जनवरी मार्ग नई दिल्ली

स्वास्थ्य सुधा—

अच्छे स्वास्थ्य के लिए पैदल चलें

—श्री प्रमोद तिवारी

न्यूनाधिक दस मे से नौ आदमी यदि दौड़ने की कसरत शुरू करें, तो एक साल के अन्दर-अन्दर हिम्मत हार बैठते हैं। बहुत से ऐसे होते हैं, जिनकी वजन को कम करने या चुस्तदुरुस्त रहने की इच्छा भी पूरी नहीं होती। इसी प्रकार रक्तचाप को सामान्य बनाने वालों को भी कई बार निराशा ही हाथ लगती है। ऐसे सभी लोगों को यह जानकर हर्ष होगा कि प्रकृति ने उनके लिए एक वैकल्पिक तरीका भी बना रखा है और वह है पैदल चलना। यदि आप कई मास तक दौड़ लगाने के बावजूद भी सफल नहीं हो सके, तो परेशान न हो। आज से पैदल चलने का अभ्यास डालें।

दुनिया का तकरीबन हर व्यक्ति पैदल चलने से अपने स्वास्थ्य को ईर्ष्या योग्य बना सकता है। इसमें स्त्री पुरुष मे कोई अन्तर नहीं। हृदय रोगियो और प्रसव से उठने वाली महिलाओं को सबसे पहला व्यायाम पैदल चलना ही बताया जाता है। हल्की और तेज दौड़ लगाने के लोगों के बारे मे डाक्टरो और विशेषज्ञो मे मतभेद है लेकिन पैदल चलने के लाभों पर सभी में मतैक्य है।

पैदल चलने के अच्छे प्रभाव छ से आठ सप्ताहों के अन्दर महसूस किए जा सकते हैं। तेज गति से पैदल चलने का पहला प्रभाव वजन में कमी के रूप मे प्रकट होता है। समस्त शरीर के स्नायुओं मे नई शक्ति और स्फूर्ति का संचार होता है। खून का दबाव कम हो जाता है आराम का आनन्द आता है और समस्त जीवन में ताजगी पैदा हो जाती है। इसमे कोई सन्देह नही कि पैदल चलना दिल दिमाग और आत्मा सबके लिए लाभकारी है।

जूतों का चयन

पैदल चलने के लिए ऐसे सही तरह के जूतों का चयन करना चाहिए, जो तेज चलने में रुकावट न बनें। सूती कपड़े के बने जिनके तलवे रबड़ या नाइलोन के हो लाभकारी हैं। एड़ी ज्यादा ऊंची नहीं होनी चाहिए। आम-तौर पर दाया पांव बाए पांव से जरा बड़ा होता है। कोशिश करनी चाहिए कि दोनो जूते एक समान हों। चमड़े या नाइलोन के नर्म नर्म जूते जिनमें हवा के लिए छिद्र हो, अच्छे सिद्ध होते हैं। बिल्कुल मुलायम तलवे वाले जूते भी अच्छे नहीं होते। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जूता एड़ी के ऊपर वाले पट्ठे पर दबाव न डाले।

जूते सही नाप के लें। आधा नम्बर बड़ा हो तो कोई हर्ज नहीं। आम-तौर पर खिलाड़ियों के लिए बनाए गए जूते आरामदेह, समुचित चौड़ाई के होते हैं। जूता पहन कर सीधे खड़े हों तो पांव की सबसे लम्बी उंगली और जूते की नोक के बीच अंगूठे के नाखून जितनी दूरी होनी चाहिए।

लिबास मौसम के अनुकूल होना चाहिये। ठंडे और खराब मौसम में तहदार कपड़े पहनें, त्वचा के साथ [illegible] या ऊन का होना चाहिए। पैर के लिए आम तौर पर टी-शर्ट और जीन का प्रयोग होना चाहिए लेकिन [illegible]

बहुत से चलने वालों का [illegible] सन्तुलित नहीं होता। उनके कदम एक दूसरे से बहुत दूरी पर और टेढ़े पड़ते हैं। सही तरीका यह है कि आपके कदम एक सीध मे पड़ें, और यह महसूस हो जैसे पांव का पंजा आदमी को आगे धकेल रहा है। इस किस्म की चाल अपनाने के लिए खेल के मैदान में खींची लकीरो पर चलकर अभ्यास किया जा सकता है। ओलिम्पिक खेलों में चलने की प्रतियोगिता मे भाग लेने वाले इसी प्रकार चलते हैं।

चलते समय बाजू कदमों के अनुपात से हरकत करने चाहिए। बाजू ऊपर की ओर जाए तो कंधों के साथ ९० डिग्री कोण बनाएं। बाजुओं की सही हरकत सेहत प्राप्त करने की एक बुनियादी कुंजी है।

यदि आपने अब तक आराम की जिन्दगी गुजारी है, तो कोई भी व्यायाम करने से पहले डाक्टर की सलाह लें। फिर जब एक बार चलने का कार्यक्रम बनायें तो एक समय में दिल की धड़कन को उसकी ज्यादा से ज्यादा रफ्तार ७५ प्रतिशत तक ले जाए। यह क्रिया बीस से [illegible] जारी रहनी चाहिए। फिर इसे सप्ताह में कई बार दोहराया जाए। आप देखेंगे कि शरीर मे जमा हो गई चर्बी घटनी शुरू हो गई है और दिल और फेफड़ों की कारगुजारी में आश्चर्यजनक रूप से बेहतरी हुई है।

दिल की प्रति मिनट धड़कन कितनी होनी चाहिये? शरीर संरचना के विशेषज्ञो का कहना है कि धड़कन का सम्बन्ध उम्र से है। चलने की गति कितनी होनी चाहिये, इसका सम्बन्ध शारीरिक शक्ति और सहन शक्ति से है। शुरू मे बहुत से चलने वाले ३० मिनट मे केवल एक मील चल सकते हैं, किन्तु कुछ मास के अभ्यास के बाद गति चार मील प्रति घंटा तक पहुंच सकती है। फिर भी इसका अधिकतर सम्बन्ध हर चलने वाले की अपनी सामर्थ्य से है। केवल देखना यह है कि वह किस प्रकार नीचे दिये गये साप्ताहिक व्यायाम से लाभ उठाता है।

पैदल चलने के दो कार्यक्रम

पहला कार्यक्रम सप्ताह मे तीन बार

पहला सप्ताह २० मिनट प्रतिदिन, दूसरा सप्ताह २५ मिनट प्रतिदिन, तीसरा सप्ताह ३० मि प्र दि, चौथा सप्ताह ३५ मि प्रतिदिन पांचवा सप्ताह ४० मिनट प्रतिदिन, छठा सप्ताह ४५ मि प्रतिदिन।

दूसरा कार्यक्रम सप्ताह में ५ बार—

पहला सप्ताह १५ मिनट प्रतिदिन, दूसरा सप्ताह १८ मि प्र दि, तीसरा सप्ताह २२ मि प्र दि, चौथा सप्ताह २५ मि प्र दि., पांचवा सप्ताह २८ मि प्र दि, छठा सप्ताह ३० मिनट प्रतिदिन।

सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज मेस्टन रोड कानपुर मे एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है जो समस्त कर्मकाण्ड कराने में दक्ष एवं व्यवहार कुशल हो जीवन सादा सरल तथा चरित्रवान हो। संस्कार कराने के अतिरिक्त कार्यालय मे बैठकर पत्र-व्यवहार भी कर सके।

वेतन योग्यतानुसार। —डा० विजयपाल शास्त्री मन्त्री

आर्यसमाज मेस्टन रोड, कानपुर (उ०प्र०)

स्वर्गीय श्री सुरेश चन्द्र नरुला एवं शकुन्तला नरुला वनवासी उपकार स्थिर निधि

महिला आर्य समाज नगर गाजियाबाद की प्रसिद्ध कार्यकर्त्री श्रीमती शकुन्तला नरुला ने अपने स्वर्गीय पतिदेव श्री सुरेश चन्द्र नरुला की पावन स्मृति मे ५०००) रुपये के सात्विक दान से वनवासी युवक-युवतियो के कल्याणार्थ स्थिर निधि की स्थापना सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा मे कराई है जिसकी स्वीकृति सार्वदेशिक सभा की अन्तरग ने ३ जून १९८४ को दी है।

स्वर्गीय श्री सुरेश चन्द्र गाजियाबाद नगर के श्रेष्ठ औषधि विक्रेताओ मे एक थे और उनकी समाजसेवी मनोवृति उनकी लोकप्रियता का प्रमुख कारण रही। उनकी सहधर्मिणी श्रीमती शकुन्तला नरुला आज भी अपने समाज सेवा के व्रत का पूर्णत पालन करती है। अभी पिछले दिनो उन्होने कन्याओ के समाज सेवा प्रशिक्षण शिविर मे, स्वय सरक्षिका के रूप मे सम्मिलित रहकर अपनी सेवावृत्तिका सहज परिचय दिया। महिला आर्य समाज गाजियाबाद की वह प्रमुख कार्यकर्त्री है।

स्थिर निधि की शर्तो के अनुरूप स्वर्गीय श्री सुरेश चन्द्र नरुला की पुण्य जन्म तिथि पर प्रति वर्ष चित्र सहित स्थिर निधि के नियम आदि का सार्वदेशिक साप्ताहिक मे प्रकाशन होता रहेगा।



स्वर्गीय श्री सुरेश चन्द्र नरुला गाजियाबाद   श्रीमती शकुन्तला नरुला गाजियाबाद

—बालदिवाकर हस
प्रधान सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल

दक्षिण हैदराबाद सत्याग्रह संग्राम के प्रबुद्ध सत्याग्रही

पं० भूदत्त शर्मा, होडल दिवंगत हो गये

होडल (हरियाणा)



श्री प० भूदत्त शर्मा सुपुत्र महाशय बल खण्डी लाल आर्य, होडल गत १५ अगस्त १९८४ को प्रात साढे चार बजे ब्रह्ममुहूर्त मे हृदय गति बन्द हो जाने से दिवगत हो गये। वे ६५ वर्ष के थे।

श्री भूदत्त शर्मा युवावस्था मे ही वैदिक धर्म के दीवाने थे यह प्रतिभा उन्हे अपने पूज्य पिता से विरासत मे मिली थी। वह महाशय बुद्धि प्रकाश सहित सन् ३९ मे हैदराबाद सत्याग्रह सग्राम मे एक सत्याग्रही के रूप मे सम्मिलित हुए इनके साथी सर्वश्री आत्माराम रमाशकर टुडा जाट इस तरह ये पाच साथियो को स्वामी अभेदानन्द जी सरस्वती (प० वेद व्रत जी) बिहार के जत्थे मे सम्मिलित किया गया था।

श्री शर्मा जन्म-जातिवाद के विरोधी थे। हसनपुर क्षत्र मे आपने हरिजन बन्धुओ के घर जाकर अनेक बार यज्ञानुष्ठान सम्पन्न कराये और उनके घर सहज भाव से भोजनादि भी किया।

सत्य निष्ठा मिलन सारी, मिष्ठ भाषण कला उनकी पूजी थी। वे अपने क्षत्र मे बहुत लोक प्रिय थे। होडल काग्रस कमेटी के वे वर्षो मन्त्री रहे। व्यवसाय के रूप मे कोल्हू वाले कहलाते थे। श्री शर्मा अपने पीछे पत्नी तीन पुत्रिया छ पोतिया और दो पुत्र छोड गये है। छोटा पुत्र देव शर्मा शास्त्री सार्वदेशिक साप्ताहिक म व्यवस्थापक पद पर सेवारत है।

आपकी एकमात्र बहिन श्री प० बालदिवाकर हस प्रधान सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल को विवाही हैं। सक्षप म वे आर्य परिवार के श्रेष्ठतम् व्यक्तित्व थे। सारा क्षेत्र उनके दिवगत होने के समाचार से विह्वल हो उठा। उनके घर पर सवेदना प्रकट करने वालो का ताता लगा हुआ है।

—सवाददाता

आवश्यक सूचना

१—सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र के सभी सदस्यो से निवेदन है। कि वे मनिआर्डर भेजते समय मनिआर्डर कूपन पर अपना पता साफ स फ लिखें तथा ग्राहक सख्या भी अवश्य लिखें।

२—चैक मनीआर्डर अथवा ड्राफ्ट 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम से ही भेजे।

३—जिन सदस्यो ने वार्षिक शुल्क नही भेजा है व पत्र व्यवहार के बाद कोई जवाब भी नही दिया है वे सभी शीघ्र शुल्क भेजने का कष्ट करें। शुल्क प्राप्त न होने पर विवश होकर पत्र भेजना बन्द करना पड़ेगा।

—प्रबन्धक

आर्य समाजों की गतिविधियां

पुस्तकालय की स्थापना

पुस्तकालय का नाम आर्य पुस्तकालय, चिगड़ी, (हरयाणा)

चिगडी। दिनाक २२ ६ १९८४ ई० को श्री रामसखा यादव आर्य बी ए प्रचार मन्त्री आर्य समाज रोपड़ा की अध्यक्षता में एक बैठक हुई। ग्रामीणों के बीच सर्वसम्मति से एक पुस्तकालय की स्थापना की गई एव इस पुस्तकालय के निम्न पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुन लिए गए।

कार्यकारी पदाधिकारी

अध्यक्ष—श्री घनश्याम जी यादव

सचिव—श्री राजकिशोर राठी-बी ए

कोषाध्यक्ष—श्री शुभम नारायण जी

पुस्तकाध्यक्ष—श्री उदयचन्द्र चौपाल

इसमे छात्रो एव ग्रामीण बुद्धिजीवियों का सहयोग सराहनीय रहा।

—रा० स० आर्य

यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज श्री भवानगर और आर्य स्त्री समाज श्री गगानगर के सयुक्त तत्व वधान मे १५ अगस्त १९८४ से प्रारम्भ यजुर्वेद पारायण यज्ञ का समापन सफलता से जन्माष्टमी पर्व पर २० अगस्त १९८४ को पूर्णाहुति एवम ऋषि लगर द्वारा हुआ।

१५ अगस्त १९८४ को प्रात आदर्श नगर पार्क मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ के प्रारम्भ की बैठक के उपरान्त ही आकाश मे बादल छाने लगे तथा गर्मी से तडपते एवम वर्षा के लिए तरसते भवानगर के निवासियो को राहत मिली। प्रतिदिन रात्रि को आदर्श नगर पार्क के सामने आचार्य सत्यप्रिय शास्त्री आचाय ब्रह्म वैदिक महाविद्यालय हिसार के प्रवचन होते थे।

२० अगस्त को प्रात १ बजे आर्य समाज मन्दिर मे यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। जन्माष्टमी का पर्व मनाया गया तथा विशाल ऋषि लगर का आयोजन हुआ जिसमे लगभग १००० नर नारियों ने भोजन किया। — सयुक्त मन्त्री

निर्वाचन

दिनाक १५ ७-८४ को केन्द्रीय आर्य समिति मेरठ का वार्षिक निर्वाचन आय समाज मन्दिर बापू नगर मेरठ शहर मे दोपहर २ बजे श्रीमती शकुन्तला जी गोयल उपप्रधान की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ जिसमे नगर की १९ आर्य समाजो ने भाग लिया। निर्वाचन सर्वसम्मति से इस प्रकार सम्पन्न हुआ।—

श्री मानसिंह जी वर्मा प्रधान, श्री इन्द्रराज जी मन्त्री, श्री शान्ति प्रकाश जी मित्तल।

—इन्द्रराज मन्त्री

डा० आनन्दप्रकाश को मातृ शोक

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राध्यापक और आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्त्ता डा० आनन्दप्रकाश की माता जी का निधन २१ अगस्त को हो गया। परमात्मा दिवगत आत्मा को सद्गति और परिवारिक जनो को इस वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान कर।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा (रजि०) दिल्ली

८११२/८११८ आर्य नगर, पहाड़ गज, नई दिल्ली ५५

आर्य विदेश यात्रा

७ सितम्बर ८४ शुक्रवार शाम ४ बजे

आर्यसमाज करोल बाग में यज्ञ एवं सभा

दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान उत्तर प्रदेश बिहार इत्यादि से जो भाई एव बहनें ८ सितम्बर १९८४ प्रात ४ ४५ बजे पालम दिल्ली से बकाक, पटईया, पिनाग मनिला, टोकियो (जापान) ओसाका हागकाग, कुआलालम्पुर, सिगापुर, दिल्ली पालम वापिस २७ सितम्बर को यात्री जा रहे हैं उनको शुभ कामनाए अर्पण करने के लिए सविता बहन जी की अध्यक्षता में यज्ञ एव सभा का आयोजन किया जा रहा है। इस समारोह में आदरणीय स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती, श्री लाला रामगोपाल शालवाले, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा श्री जैमिनी जी शास्त्री, श्री महपाल सुधांशु पुरोहित आर्यसमाज विधान हाल पडित हरिदत्त जी शास्त्री पुरोहित आर्यसमाज, करोल बाग यात्रियो को आशीर्वाद देंगे।

नोट —कुछ भाई व बहनें पासपोर्ट न होने के कारण अपनी सीट बुक नहीं करवा सके। यदि आपके पास पासपोर्ट है या मिल गया है या आप ३० ८ ८४ तक आई० सी० आई० को दे सके हो तो आप कष्ट करके आर्य० समाज करोल बाग, नई दिल्ली ५ फोन न० ५६७४५८ पर सीट बुक करवा सकते हैं।

यदि कोई और जानकारी प्राप्त करनी हो तो आप श्री रामलाल मलिक ५२/७८, रामजस रोड नई दिल्ली ५ से प्राप्त कर सकते हैं।

फोन न० ५६२५१० ५६५२४१

स्वामी श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा की आय का कोई और साधन नहीं है जो भी आप अधिक-से अधिक दान देवें सभा आपकी आभारी होगी।

भवदीय

अजय कुमार भल्ला	बलराम राणा	रामलाल मलिक	ओमप्रकाश सुनेजा
प्रधान	मन्त्री	प्रधान	मन्त्री
शकुन्तला सागर	सभा	सभा	कृष्णा बहेरा
प्रधाना			मन्त्रिणी

आर्य समाज करोल बाग, नई दिल्ली-५

"खालिस्तानी" नेताओं के समर्थकों का मोह भंग

नई दिल्ली, ३० अगस्त। अमेरिका और ब्रिटेन मे बसे कई स्वयंभू खालिस्तानी नेताओ के एकाएक बदले रग-ढग ने उनके समर्थकों का 'मोहभग' कर दिया है और उनमें से अनेक ने 'आर्थिक सहायता' देनी बन्द कर दी है।

यहा प्राप्त जानकारी के अनुसार इन नेताओ पर अमृतसर मे सैनिक कार्रवाई के दौरान मारे गये लोगो के परिवारो की सहायता के नाम पर भारी मात्रा मे एकत्र हुए फड का गलत उपयोग करने का आरोप लगाया जा रहा है। आर्थिक सहायता देने वाले अब इन नेताओं से हिसाब किताब को माग रहे हैं।

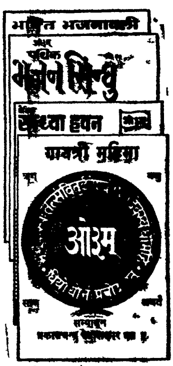
इन स्वयभू नेताओ को हाल ही मे ऐसे धन देने वालो का गुस्सा उस समय देखने मे आया जब उन्होने एक टी० वी० स्टेशन और एक समाचार पत्र शुरु करने के नाम पर धन मागा और लोगो ने मना कर दिया।

अभी हाल तक पश्चिम जर्मनी मे नजर बन्द एक सिख उग्रवादी की पत्नी द्वारा उसकी हिरासत के दौरान एक महल बना लेने पर भी उगली उठाई जा रही है। आरोप लगाया जा रहा है कि उग्रवादी नेता के बचाव के लिए एकत्र धन का दुरुपयोग किया गया है।

लन्दन मे एक अन्य उग्रवादी नेता भी एकाएक अमीर बन गये हैं। इस नेता ने जो हाल तक सार्वजनिक परिवहन मे सफर करते थे अब एक कीमती कार खरीद ली है।

आर्य का सन्देश घर घर पहुँचाए

वैदिक मन्त्रो और भजनो के कैसेट मगायें



मधुर सगीतमय उच्च भावनाओ से भरपूर ईश्वर भक्ति आर्यसमाज और महर्षि से सम्बन्धित भजनों के कैसेट मगवाकर आर्य समाज का प्रचार गली गली कूचे कूचे मे करें और अपने इष्ट मित्रो व सम्बन्धियो को विवाह जन्म दिन आदि शुभ अवसरो पर भेंट देकर यश के भागी बनें।

१ भक्ति भजनावली

शास्त्रीय सगीत के आधार पर ईश्वरभक्ति के भजन गायक गन्धर्व विद्यालकार व वन्दना वाजपेयी।

२ पथिक भजन सिन्धु

गीतकार व गायक आर्यसमाज के ओजस्वी भजनोपदेशक श्री सत्यपाल पथिक।

३ वैदिक सन्ध्या हवन

स्वस्ति वाचन शान्तिकरण बृहद यज्ञ एव पूर्णाहुति प्रार्थना सहित।

४ गायत्री महिमा

गायत्री महामन्त्र की विशद व्याख्या, पिता-पुत्र के रोचक सरस, मनोहर व प्रामाणिक सवाद में।

मूल्य-प्रति कैसेट ३०) रु० डाक-व्यय अलग।

विशेष—चारो कैसेटों का आदेश भेजने पर डाक-व्यय माफ।

अन्य बहुत से कैसेटों का विवरण निःशुल्क मंगवाइये।

प्राप्ति स्थान—आर्य सिन्धु प्रकाशन

१५१, मधुबन कालोनी, बम्बई-४०००८२

श्री शालवाले के निवास स्थान पर आतंकवादियों के चक्कर

दिल्ली ४ सितम्बर।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की एक प्रेस विज्ञप्ति में यह बताया गया है कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के कृष्ण नगर स्थित निवास स्थान पर कुछ सिख आतंकवादियो ने २ सितम्बर को मध्यान्ह दो तीन चक्कर लगाए और मकान का ऊपर से नीचे तक निरीक्षण किया। आतंकवादी एक कार मे बैठ हुए थे उनकी सख्या ६ थी। श्री शालवाले की सुरक्षा हेतु तैनात पुलिस गारद के जवानो ने उन्हे रोकने और पूछने का प्रयत्न किया पर वे भाग गए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त मन्त्री प० सच्चिदानन्द शास्त्री ने इस घटना की सूचना प्रधान मन्त्री और गृहमन्त्री को देते हुए आशका प्रकट की है कि बाहर के उग्रवादी लगता है अब दिल्ली मे पहुचकर आतंकवाद से अव्यवस्था पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होने इसके लिए सरकार से सुरक्षा की कडी व्यवस्था करने का अनुरोध किया है और ऐसी दशा मे पजाब तथा अन्य स्थानों पर सुरक्षा की कार्रवाइयों मे ढील न देने की ओर भी सरकार का ध्यान खींचा है।

आर्यसमाज अजमेर

आर्य समाज अजमेर का १०३ वा वार्षिक अधिवेशन एव निर्वाचन रविवार दिनाक १९-८-८४ को आर्यसमाज भवन मे श्री दत्तात्रय जी आर्य की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ जिसमे श्री दत्तात्रयजी आर्य प्रधान श्री ठा० अमरसिह जी व श्री कृष्णराव बाल्ले क्रमश उपप्रधान, श्री रासासिह जी मन्त्री श्री आचार्य गोविन्द सिंह तथा शिवचन्दसिह जी उपमन्त्री श्री किशनलाल शर्मा कोषाध्यक्ष श्री कृष्णपालसिहजी पुस्तकाध्यक्ष सवसम्मति से चुने गये। इनके अतिरिक्त डा० रामपाल सिंह जी श्री वेदरत्न जी आर्य श्री सत्यदेवसिंह जी श्री देवदत्त जी एडवोकेट श्री जी० एल० जोशी श्री बुद्धि प्रकाश जी आर्य, श्री पी० एन० मेहरा प्रतिष्ठित सदस्य चुने गए।

बाई प्रतिनिधियो मे सवश्री सत्यपाल पिलानिया श्री लाखन चन्द जी शर्मा श्री हरिश्चन्द्र शर्मा श्री सत्यदेव सारस्वत, श्रीजगदीश प्रसाद भारद्वाज श्रीमती मनोरमा चाद श्री लाल किशन वर्मा सव सम्मति से निर्वाचित हुए। —रासासिह मन्त्री आर्यसमाज अजमेर

आवश्यकता

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट को सत्यार्थ प्रकाश वाहन के लिये एक प्रचारक, एव उपदेशक तथा एक कैशियर की आवश्यकता है।

उपदेशक प्रचारक पद हेतु सत्यार्थ प्रकाश आदि ऋषि प्रणीत ग्रन्थो पर बोलने का अनुभव रखने वालो को वरीयता दी जायेगी।

कैशियर—आर्य समाज की विचारधारा वाले एव हिन्दी का ज्ञान रखने वाले प्रत्याशी को वरीयता दी जायेगी। सम्पूर्ण विवरण सहित तुरन्त सम्पर्क करें।

जिन व्यक्तियो को साक्षात्कार के लिये बुलाया जायेगा उन्हे आने जाने का सामान्य रेल मार्ग व्यय दिया जायेगा। मन्त्री

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट

४५५ खारी बावली, दिल्ली ६

वधू की आवश्यकता

आर्यसमाज पाली जिला हरदोई उ० प्र० द्वारा इस्लाम से वैदिक धर्म में दीक्षित युवक वेदपाल सिंह आयु २२ वर्ष सुन्दर एव स्वस्थ पचास बीघे जमीन और बाग के मालिक के लिये योग्य वधु की आवश्यकता है। शीघ्र सम्पर्क करे।

—परमानन्द कटियार

ग्रा० पो०—पाली

जिला—हरदोई, उ० प्र०

समालोचना

वेदोद्धारिणी त्रैमासिक पत्रिका का वर्षा प्रवेशाक देखने को मि के नाम एव अवसर पर त्रय मासिक पत्रिका निकालना एक स्वस्थ कल्पना है। इस पत्रिका की प्रकाशक सस्था वेदोद्धारिणी सभाकी का इसमे उल्लेख है परन्तु उदघाटनके अध्यक्ष डा० कर्णसिहके जी के अतिरिक्त अ क में नही मिला। वेदो के अध्ययन पर सम्पादक विश्लेषण परक वस्तु स्थिति का चित्रण है, यद्यपि उसमे मतभेद की गु जाइश है। शावर साध्य विरोध एक विचारपूर्ण लेख है। इन्दिरा स्तोत्रम् ऐसी गम्भीर पत्रिका मे न जाता तो अच्छा होता। व्यक्तिगत विचार ऐसा कवि का है, यही मानना उचित होगा। इस त्रैमासिक पत्रिका मे ३ या ६ महत्व लेख ही इसकी अनूठी शान है। पुरोहित अथवा व्यवसाय की दृष्टि दोनो प्रकार से वैवाहिक विज्ञापन पत्रिका का महत्वपूर्ण अ ग है।

वैदिक कर्मकाण्ड एव सिद्धान्त विवेचन की दृष्टि से यह अपने ढग की अनूठी पत्रिका बढती जायगी, यह हमे आशा है। धर्मप्रेमी इसको पढकर वेद के क्षेत्र मे शनै शनै प्रवेश करते ही जाए गे इस दृष्टिसे यह पत्रिका ग्राह्य है।

पत्रिका के सम्पादक प० अभिविनय भारती एव सहसम्पादक दोनो इस प्रयत्न के लिए साधुवाद के पात्र हैं। आशा है विचार मथन के लिए यह पत्रिका मार्ग प्रशस्त करेगी।

प्रकाशक का पता —वेदोद्धारिणी सभा, X ११ पश्चिमी पटेल नगर, दिल्ली ८ है और वार्षिक चन्दा २४ रु० है। --ब्रह्मदत्त स्नातक

समीक्षा

वेद रहस्य—लेखक, प्रकाशक श्री रामसिह, मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा, आगरा, पृष्ठ सख्या १७०, २०×३०/१६ मूल्य १५ रु०।

लेखक श्री रामसिह जी ने उक्त पुस्तक को दो भागो मे पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध के रूप मे विभाजित किया है, जिसमे पूर्वार्द्ध मे चार अध्याय और उन अध्यायों में क्रमश १९ २६, ६४ और ६२ विषयों पर शका समाधान पद्धति से वैदिक विचारो को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है, और उत्तरार्द्ध मे १२९ मन्त्रो का पदार्थ और भावार्थ दिया गया है। लेखक ने एक स्थान पर पुस्तक के उद्देश्यको स्पष्ट करते हुए लिखा है, भारतीय ज्ञान विज्ञान सर्वाङ्गी है उसके प्रति जन मानस उन्मुख हो।

यह कृति जन मानस को कितनी प्रेरक सिद्ध होगी लेखक के उद्देश्य के प्रति यह तो पाठक पुस्तक क्रय करने के अनन्तर ही जान सकेगा।

...दिक धर्म ग्रहण

... समाज मन्दिर गोविन्द नगर मे जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कानपुर के अध्यक्ष श्री देवीदास आर्य ने एक शुद्धि समारोह मे जोजफ जान के चार सदस्यो वाले ईसाई परिवार को उनकी इच्छानुसार वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) की दीक्षा दी।

शुद्ध होने वालो के नाम जोजफ-जान से जितेन्द्र उनकी पत्नी जैनेट जान से श्रीमती ज्योति पुत्र एडवर्ड जानसे सुनील कुमार तथा पुत्री कु० लेरी जान से कु० सुशीला रखे गये।

शुद्धि समारोह मे आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य, सन्तरामसिंह सेंगर, प्रभुदयाल तिवारी जगन्नाथ शास्त्री, श्रीमती दरनिकिपूर आदि वक्ताओं ने जहा शुद्ध हुए परिवार का स्वागत किया वहां वैदिक धर्म को सबसे पुराना व ईश्वरीय धर्म बताया तथा उसकी अनेक विशेषतायें बतायी। समारोह के अन्त मे शुद्ध होने वालो द्वारा प्रसाद का वितरण हुआ।

—मन्त्री

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसादपाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा रामलीला भवन नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सृष्टिसम्वत १९७२९४९०८५] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र | दयानन्दाब्द १६० दूरभाष : २७४७७१
वर्ष १९ अंक ४२] | प्रवर्ति कृ० १३ सं० २०४१ रविवार २३ सितम्बर १९८४ | वार्षिक मूल्य १६) एक प्रति ४० पैसे

सार्वदेशिक सभा प्रधान का पश्चिमी जर्मनी को प्रचार यात्रा पर प्रस्थान

सार्वदेशिक सभा कार्यालय में अभिनन्दन समारोह

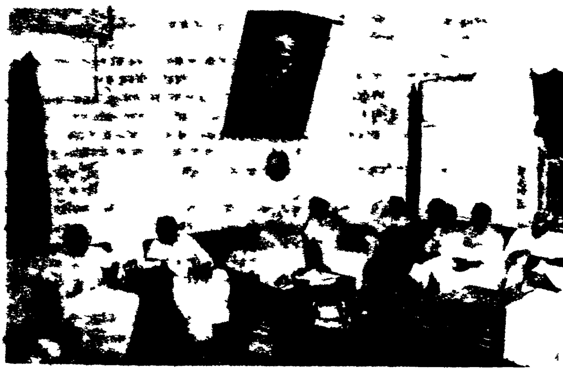
दिल्ली १३ सितम्बर ८४।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय की ओर से सभा प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले को प्रथम विदेश यात्रा हेरिफोर्ड (प० जर्मनी) जाते समय भावभीनी विदाई दी गई। सार्वदेशिक पत्र के सह सम्पादक एवं वयोवृद्ध श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक ने पुष्पहार पहनाकर माननीय लाला जी हैदराबाद के साथ श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम हैदराबाद के पूर्व मेयर श्री बी० किशनलाल और गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के हिन्दी प्राध्यापक श्री राकेश का अभिनन्दन किया। द०भा० आर्यवीर दल के प्रधान संचालक श्री बाल दिवाकर हंस, दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामन्त्री तथा सभा कार्यालय सचिव श्री पृथ्वीराज शास्त्री तथा उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकर्ता प्रधान एवं सभा के संयुक्त मन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने विदेश यात्रा की सफलता की कामना करते हुए आर्य समाज के मूर्धन्य नेताओं की इस यात्रा को देश धर्म और सामाजिक उन्नति में कारगर बताया।

मैं आर्य समाज का एक छोटा सा सेवक हूं देश में रहकर जितना मुझसे बन पड़ता है आर्य समाज के लोगों की सेवा करने का प्रयास करता हूं यद्यपि मेरी लालसा कभी यह नहीं रही कि मैं विदेश जाऊं घूमूं और वहां के लोगों को स्थानों को देखूं परन्तु अब एक आर्य पुत्र ने जर्मनी में धार्मिक एकता सम्मेलन का आयोजन कर मुझे याद किया और आग्रह किया कि जब सभी धर्मों के प्रख्यात विद्वान धर्मगुरु पहुंच रहे हैं तो वैदिक धर्म के सच्चे स्वरूप को मैं एक बार पुनः प्रस्तुत करूं।

मैं अपने आपको न विद्वान अनुभव करता हूं और न ही इतना समर्थ पाता हूं कि वैदिक धर्म के सिद्धांतों को साधिकार प्रस्तुत कर सकूं तथापि स्वा० दिव्यानन्द के स्नेहपूर्ण आग्रह ने मुझे विवश कर दिया इस विदेश यात्रा में अपने साथ जा रहे श्री वन्देमातरम तथा श्री बी० किशनलाल जी का बड़ा सहारा मिलेगा श्री राकेश की विद्वता एवं प्रतिभा मेरे लिए उपयोगी सिद्ध होगी मैं अपने साथियों के साथ विदेश में महर्षि दयानन्द के संदेश को फैलाने के साथ-साथ जर्मनवासी भारतीय तथा जर्मन लोगों से वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के सम्बन्ध में विचार करूंगा और उसे कार्यान्वित करने का प्रयत्न करूंगा यह मेरा परम कर्त्तव्य है। ये उद्गार अपने अभिनन्दन के उत्तर में श्री प्रधान जी ने व्यक्त किए।

—रमेशचन्द्र शास्त्री



सभा प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले भाषण देते हुए—बायें से दायें श्री राकेश श्री बी० किशनलाल श्री वन्देमातरम

सम्पादक—[illegible]

सहसम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

धार्मिक एकता सम्मेलन

हेरिच्रीद (Herrischried) पश्चिम जर्मनी

रामगोपाल शालवाले का

भाषण

१५-९-१९८४

ओ३म् स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्ता पावमानी द्विजा-नाम्। आयु प्राण प्रजा पशून् कीर्ति द्रविण ब्रह्मवर्चस मह्य दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् ॥ अथर्व १९।७१।१

ऊर्ध्वबाहु विरौम्येष न च कश्चित् शृणोति मे
धर्मादर्थश्च कामश्च स धर्मः किन्न सेव्यते ॥

विश्व के सभी धार्मिक जन भले ही किसी प्रकार से प्रभु मे विश्वास और किसी भी धर्म ग्रन्थ मे श्रद्धा रखते हो, फिर भी वेद और गीता के नाम से अवश्य ही परिचित हैं। जिस मनीषी विद्वान ने महाभारत [illegible] वृहद ग्रन्थ लिखा था उसका नाम महर्षि वेद व्यास है। वही गीता जैसे महान सर्वप्रिय ग्रन्थ के रचयिता हैं। महाभारत के भीष्म पर्व के ही अध्याय २३ से ४० तक का भाग गीता है और ऊपर जो श्लोक मैंने आपके सम्मुख बोला है, इसमे भी उस कृष्ण द्वैपायन महर्षि वेदव्यास की ही वेदना है। जब उन्होने महाभारत काल मे धर्म का निरन्तर पतन होते देखा तो उन्हे बडा दुख हुआ। अपनी दोनो बाहु उठाकर वेदनापूर्ण स्वर मे वे बोले—क्या यह ससार बहरा है? जो मेरी बात नही सुनता है? मैं बार बार कह रहा हू कि धर्म ही के पालन से अर्थ और काम की सिद्धि जब हो सकती है तो फिर सब लोग धर्म के मार्ग पर क्यो नही चलते?

आज भी भौतिकता के प्रमाद से मदोन्मत्त यह विश्व, विशेषकर पश्चिम का भाग इसी स्थिति म प्रतीत होता है। कल्याणी वेदवाणी अथवा उसकी छाया में लिखे आर्ष ग्रन्थ धर्म की महिमा का खूब बखान करते हैं बताते हैं। किन्तु भौतिक विकास की बटोर मे लगा यह ससार तनिक भी ध्यान नही देता। जब लोगो ने [illegible] को जाना ही नहीं, समझा ही नही, तो उसके अनुकूल चलने का तो प्रश्न ही नही होता।

गीता के दूसरे अध्याय के ५४ वें श्लोक मे अपने क्षात्र धर्म से विमुख होकर अर्जुन ने अपने परम सखा श्री कृष्ण से प्रश्न किया था कि 'हे कृष्ण! आप कर्म परायणा स्थिर बुद्धि की जो चर्चा कर रहे है, जिसके प्रभाव से आपकी दृष्टि मे सफलता अवश्यभावी है, कृपा करके मुझे यह तो बताइए—

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत् व्रजेत किम् ॥गी. २।५४।

अर्थात्—स्थितप्रज्ञ व्यक्ति जिसकी बुद्धि निश्चल हो जाती है, स्थिर रहती है, उसका बोलना, उसका विचरना, बैठना, उठना, चलना, ठहरना कैसा होता है? भगवान कृष्ण अर्जुन के इस प्रश्न का उत्तर गीता के अध्याय २ के ५४ से ७२ तक के श्लोको में देते हैं। मुझे वह कहना यहा अभीष्ट नही। यदि इसी प्रकार से आप विचार करे तो वेदनिष्ठ मनु जो कि मानव-मात्र को प्रथम विधान देने वाले मनीषी शासक थे, मानो उनसे भी प्रश्न किया गया हो।

धर्मात्मनः पुरुषस्य का भाषा किमासीत् व्रजेत किम्?

अर्थात्—धर्मात्मा पुरुष की परिभाषा क्या है? उसका बोलना, उठना बैठना जीवन का व्यवहार कैसा होता है? तो महाराज मनु ने जिज्ञासुओं को उसका उत्तर दिया है कि धर्मात्मा व्यक्ति के १० लक्षण होते हैं और उन्ही से उनको परखा जाता है। यह सर्वप्रथम जान लेना चाहिए कि धर्म का अर्थ धारण किया हुआ मूल स्वभाव है जो इहलोक और परलोक दोनों मे साथ रहता है। धर्म का सीधा सम्बन्ध मन, बुद्धि और आत्मा से होने से ये तीनो प्रभावित होते हैं। बुद्धि उसके सत्यासत्य का निश्चय करती है। मन उसका मनन करता है। शरीर तो क्रियाओ से तो धर्म केवलमात्र अभिव्यक्त होता है। शरीर अथवा देह तो शरीरी-देही अर्थात् आत्मा के भावो की अभिव्यक्ति का साधन है। धर्म वह नहीं जो केवल मात्र शरीर के साथ तिलक, माला, मन्त्रपाठ अथवा स्तुतिपाठों से ही जुडा हो। यदि इन सब शरीर से प्रकट होने वाले कार्यों के पीछे विवेकशील आत्मा नहीं बैठा जो ज्ञान पूर्वक, छलहीन होकर अपने भावो को शरीर द्वारा प्रकट करता है, तो यह सब धर्म कहलाने वाला तत्व धर्म नहीं धर्माभास है जिससे हमारी आत्मा का कल्याण कुछ भी सम्भव नहीं।

महाराज मनु कहते हैं कि धर्म के १० लक्षण निम्न प्रकार से हैं —

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेय शौचमिन्द्रियनिग्रह.।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥

१—धृति का अर्थ है धैर्य अर्थात् अनुकूल अथवा प्रतिकूल सभी स्थितियों मे बुद्धि सतुलन, यही है गीताकार की स्थित प्रज्ञता और यही है साधना मन, बुद्धि और आत्मा की, न कि शरीर और इन्द्रियों की।

२—धर्म का दूसरा लक्षण है—क्षमा, सहनशीलता। सारा विश्व हमारे अनुकूल नही हो सकता! सभी परिस्थितियो मे लोगों का व्यवहार सर्वथा ही हमे भला लगने वाला नही हो सकता। उसे धैर्य पूर्वक सहन करना, विक्षुब्ध न होना यही क्षमा शीलता है।

३—धर्म का तीसरा लक्षण है इन्द्रियो का दमन। इच्छाओ पर सयम अन्यथा जीवन का यह देवरथ कभी भी प्रतिकूल स्थितियों में स्वच्छन्द घूमने का अभ्यासी होने से टकराकर चूर चूर हो सकता है। अत इन्द्रिय दमन की साधना इसके लिए आवश्यक है।

४ धर्म का चतुर्थ लक्षण है अस्तेय—मनसा वाचा कर्मणा लोभ और मोह से प्रभावित होकर बिना श्रम के किसी की कोई वस्तु हथियाने का प्रयत्न न करना ही अस्तेय है।

५—धर्म का पाचवा लक्षण है शौच—शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक शुचिता। जीवन के सभी अन्त बाह्य क्षेत्रो मे किसी भी रूप मे तनिक भी मैला न होना।

६—धर्म का छठा लक्षण इन्द्रिय-निग्रह है कि आत्मा, मन और बुद्धि, इन्द्रियाधीन न हो। इन्द्रियों द्वारा जो भी कर्म हो, विवेक, मनन और आत्मोत्थान के ही अनुकूल हो, जिससे न तो इन्द्रिय बल नष्ट हो और न ही आत्मा का पतन हो।

७—धी बुद्धि मे धारणा शक्ति द्वारा ही ज्ञानार्जन सभव है। यदि बुद्धि का ऐसा अभ्यास नहीं तो उसमे प्रकाश, प्रज्ञास्थिति अथवा मेधा का रूप नही आता। बुद्धि विभ्रम हो जाता है जिससे सन्तुलन बिगडता है।

८ विद्या—ऐसा ज्ञान जो आत्मा को प्रकाशित करे, जीवन यात्रा में उसे अज्ञान, अधकार से दूर रखता हुआ सफलता की ओर ले जाए अर्थात जो ज्ञान आत्मा की बधन मुक्ति का कारण नही बनता वह अविद्या है। विद्या ही से आतरिक प्रकाश और आत्म कल्याण होना सभव है। "सा विद्या या विमुक्तये"। बन्धनो का नाश ही विद्या का फल है।

९—धर्म का नवा लक्षण सत्यम्। अर्थात विवेक की कसौटी पर जीवन की प्रत्येक स्थिति को खरा उतारना। वेद के आदेशानुसार सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करने मे निरन्तर उद्यत रहना सत्यप्रिय होना ही सत्य की साधना है।

१०—महाराज मनु के अनुसार धर्म का दसवा लक्षण है 'अक्रोध'। क्रोध जब ही आता है बुद्धि का दिवाला निकल चुका होता है। स्मृति का नाश हो जाता है। यदि धर्म के उपरोक्त कहे हुए लक्षण जीवन में साध लिए जावें तो क्रोध के न आने के लिए विशेष अभ्यास की आवश्यकता नहीं रहती। इस प्रकार महाराज मनु की दृष्टि में धर्मात्मा मनुष्य की पहचान है जिसकी बुद्धि सतुलित हो, जो स्वभाव से क्षमाशील हो, लोभरहित और चोरी की भावना से विमुख हो, इन्द्रिय दमन और इन्द्रिय निग्रह का अभ्यासी हो, स्वेच्छा विहारी न हो, जीवन म भीतर बाहर स छलहीन और पवित्र हो, बुद्धि पूर्वक विद्या का लाभ लेने वाला हो। सत्यप्रिय होते हुए क्रोधविजयी हो, क्रोधी न हो। ये हैं लक्षण उन मनुष्य के जिसके आत्मा में धर्म ने डेरा डाल रखा है।

यों तो मनु की भाति अन्य महर्षियों ने भी धर्म का लक्षण करते हुए अनेक में वाक्य कहे हैं परन्तु ये सभी वाक्य मनु की दी हुई परिभाषा में ही आ जाते हैं। जैसे—

यतोऽभ्युदय. निश्रेयससिद्धिः स धर्मः

जिस विचारधारा एवं जीवन को अपनाकर लौकिक और आध्यात्मिक

(शेष पृष्ठ १० पर)

सम्पादकीय

विविध देशों में मिलन और अभिवादन की प्रथा

एक सज्जन ने नमस्ते के अभिवादन की सर्वोपरिता इंगित करते हुए वर्तमान शताब्दी के तीसरे दशक मे विविध देशो मे प्रचलित अभिवादन के प्रकारों पर बड़ा सुन्दर प्रकाश डाला था। उनका लेख सार्वदेशिक के पाठको की जानकारी के लिए नीचे उद्धृत किया जाता है। —सम्पादक

एक ही देश और एक ही सम्प्रदाय मे दो विभिन्न व्यक्तियो मे उम्र के लिहाज से विभिन्नता आ जाती है। हिन्दू धर्म मे जब किसी वयोवृद्ध से मिलना होता है तो उसे प्रणाम या चरण स्पर्श करना पड़ता है और छोटो से भेंट होने पर उसे आशीर्वाद देना होता है। भारत के पश्चिमी भाग मे लोग जय गोपाल राम राम और प्रायः नमस्ते का व्यवहार करते हैं। नमस्कार का भी कहीं कहीं प्रयोग होता है।

मुसलमान लोग सलाम अलेकुम आदाब अर्ज कहकर मिलते हैं।

अंग्रेज लोग शेक हैण्ड (हस्त कम्पन) करते हैं। मिलने वाले परस्पर गुड मौर्निंग, गुड डे, गुड इवनिंग और गुड नाइट कहते हुए मिलते और गुडबाई का उच्चारण करते हुए पृथक होते हैं। इसी शेक हैंड के द्वारा वे पारस्परिक सौहार्द तथा सद्भाव प्रकट करते हैं। यदि विशेष आदर की जगह है तो अपनी टोपी उतार लेते हैं। कोई कोई तो विशेष आदर प्रदर्शन के लिए उलट भी लेते हैं।

स्पेन के कृषको की अभिवादन प्रथा बड़ी विचित्र है। सब अपने पास रोटी के एक एक टुकड़े रखे होते हैं। मिलने के अवसर पर वे उन्हीं टुकड़ो को दिखला कर मिलते हैं। पर उन टुकड़ो को लोग लेते नहीं।

मलाया लैपलैंड जस्मानिया (तथा अन्य कई द्वीपो) मे लोग क्रमशः चुम्बन आघ्राण और नाक से नाक रगड़ कर मिलते हैं। फिलीपाइन मे दो व्यक्ति मिलते समय दोनो कानो पर दोनो हाथ रखते हुए एक पैर उठाकर प्रेमाभिवादन करते हैं।

रैड इण्डियन लोग मिलते समय अपना सिगरेट अदल बदल करते हैं। इसी प्रथा से वे अपने प्रेम का विनिमय किया करते हैं। ब्रह्मा (बर्मा देश के लोग मित्रो का मुलाकात पर चुम्बन किया करते हैं। अफ्रीका की क्रूर जातियो मे अभिवादन प्रथा बड़ी रोचक भयंकर और अद्भुत है। किसी के मिलने पर लोग झट घोड़े पर चढ़कर भगाते हैं और उनकी ओर लक्ष्य करके पिस्तौल की खाली आवाज करते हैं।

कोई अजनबी आदमी इस प्रणाली से डर कर भाग जाता है। जब उसे इसकी वास्तविकता का ज्ञान होता है तो उसे हंसी आए बिना नहीं रहती।

अफ्रीका के कई प्रान्तो मे कंध का वस्त्र हटाकर प्रायः वहा के निवासी प्रेमाभिवादन किया करते हैं। मिश्र देश मे लोग यह कहकर कि आज धूप कैसी है? मिला करते हैं।

फ्रांस और बेल्जियम मे लोग टोपी उतार कर गाढ़ आलिंगन करते हैं। वे दिल खोल कर मिला करते हैं। एक लार्ड मजदूर को भी देखकर टोपी उतार लेता है और साथ ही गले मिलता है।

चीन देश की मिलने-जुलने की कई निराली प्रथाएं हैं। वर्ष के प्रथम दिन भेंट होने पर लोग हाथ जोड़ते हैं और कुछेक सिर नीचा कर लेते हैं। अन्य अवसरों पर टोपी से टोपी मिलाते हैं। पर उसे सिर से उतारते नहीं। रास्ता चलते समय सब लोग सिर पर टोपी पहना करते हैं। यदि घर पर कोई आगन्तुक आवे और घर वाले के सिर पर टोपी न हो तो वह झट टोपी पहन लेता है—बाद मे अतिथि से मिलता है। वहा कुशल क्षेम पूछने की यह रीति है कि "आपने भात खाया है। आपका पाचाशय तो ठीक है?"

जापान में घुटने टेक कर मिलने की रीति है। सुना जाता है कि तिब्बत में जीभ निकाल कर और एक पैर जमीन से उठाकर लोग अभिवादन किया करते हैं। शायद एक हाथ की अंगुली भी मिलाते हैं।

चुम्बन और शेक हैंड (हाथ मिलाना) से बीमारी के लग जाने का खतरा बताया जाकर इन्हे निरुत्साहित किया जा रहा है। जब वाशिंगटन विजय के बाद एक जलूस मे प्रथानुसार अपनी माता का चुम्बन करने के लिए आगे बढ़े तो माता ने ऐसा करने से वर्जित करके चुम्बन के लिए अपना हाथ बढ़ा दिया था। रामायण काल मे माताएं अपने बच्चो के माथे को चूमकर अपने अपने वात्सल्य की अभिव्यक्ति करती थी। नमस्कार का प्रयोग देवो की आराधना स्तुति के लिए प्रायः होता था। नमस्ते का ही प्रयोग आम था जो देश विदेश मे मुख्यतः सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रो मे लोकप्रिय हो रहा है।

जावा में हिन्दू कला

जावा के सबसे बड़े ज्वालामुखी पर्वत के दक्षिण की ओर फैला हुआ एक प्राम्बनम नाम का मैदान है। इस मैदान में बहुत से मन्दिर हैं और वहा के निवासी इन मन्दिरो को बड़ी पूज्य दृष्टि से देखते हैं। वहां चांदी लारो और जोंगराग नामक हिन्दू मन्दिरो का समूह एक प्रसिद्ध यादगार है और बोरो बुदूर से बहुत कुछ मिलता जुलता है। चांदी स्यू लोरो पर एक कुलीन स्त्री या राजकुमारी का चित्र बना हुआ है राजकुमारी लारो जोंगरांग का नाम जावा में बहुत प्रसिद्ध है।

कहा जाता है कि प्रम्बनम के इर्द गिर्द किसी प्रेमी ने राजकुमारी का पाणिग्रहण करने के लिए चान्दी स्यू वा १००० मन्दिर एक रात में बनवाए थे। परन्तु भोर होने के कारण प्रेमी का काम अधूरा रह गया था।

इस समूह में ८ मन्दिर हैं और दीवारो से घिरे हुए एक वर्गाकार चबूतरे के बीच में बने हैं। इन मन्दिरो के बाहर दो परकोटे हैं और इन परकोटो की दीवारो पर ३ कतारो पर १५६ छोटे छोटे मन्दिर बने हैं। मन्दिरो पर रामायण और गीता के अवतरणो की नक्काशी की गई है।

बोरो बुदूर के समान ही ये अवतरण दिये गये हैं। मन्दिरो की बनावट और सजावट बड़ी सुन्दर है। कहा जाता है कि यह मन्दिर समूह मन्दिर और राजकीय समाधि स्थल के काम में प्रयुक्त होता था। प्राम्बनम बोरो बुदूर की याद दिलाता है क्योंकि ये दोनो ही जावा में हिन्दू कला के रूपान्तरित वृक्ष के जुड़वा फूल हैं और ये दोनो ही आर्य संस्कृति के उज्ज्वल प्रकाश में बनाए गए थे। जुड़वा के रूप में दोनो में समानता है तो भी हरेक की विशेषताएं पृथक् पृथक् हैं और ये दोनो उस भेद के जन्मदाता हैं जिस पर हमारा ध्यान स्थिर होता है।

श्री डा० एस० के० चटर्जी ने प्राम्बनम कला का इस प्रकार चित्रण किया है—

बोरो बुदूर की कला की दिव्य प्रशान्ति का समान परिमाण प्राम्बनम् के मुक्ति सम्बन्धी अत्यन्त उन्नत अवतरणो से हो जाता है।

सामायिक चर्चा—

नृशंस हत्याकांड

बटाला मे उग्रवादियो द्वारा ८ निर्दोष हिन्दुओं के नृशंस हत्याकांड की जितनी निन्दा की जाय उतनी ही कम है। पथ-भ्रष्ट हत्यारों को यह अनुभूति हुई प्रतीत नही होती कि इस प्रकार के जघन्य कुकृत्यों से वे न केवल अपने पन्थ के ही अपितु विशाल हिन्दू धर्म के जिसके वे अभिन्न अंग हैं देश और मानवता के प्रति भी घोर अपराध कर रहे और उनके हितों को क्षति पहुंचाने वालो का मुहरा बन रहे हैं। प्रशासन का कर्त्तव्य है कि उन्हें शीघ्र से शीघ्र गिरफ्तार करके और उन्हें कठोर से कठोर सजा देकर इस प्रकार की कार्य वाहियो को भले ही वे छूट पुट देख पडती है दुहराए न जाने दे। भले ही एक सुझाव के अनुसार कुछ समय तक पजाब मे अन्य प्रान्तो की पुलीस लगानी पडे।

इस अत्यन्त दुखद काड से दुख से भरे हृदय को इस बात से थोडी राहत पहुँची है कि सिख पथ के प्रमुख व्यक्तियों देश मुख्यत पजाब के हिन्दू सिख आदि बुद्धि जीवी वर्ग ने भर्त्सना करते हुए पथ, उसकी शिक्षाओ परम्पराओं और देश विरोधी रवैए पर पूर्ण विराम देने का प्रशासन द्वारा दिलाए जाने की अपील की है। उन्होने अपनी अपील मे आमसिखो की भावनाओ का प्रतिनिधित्व करते हुए जिसके कारण २ साल से अधिक समय से चलता हुआ यह आतकवादी आन्दोलन क्रान्ति का रूप न ले सका पथ को सत्ता की राजनीति उसके कुत्सित, हथकडो, एव देश के बाहर रचे गए और पोषित कुचक्रो से सावधान रहने और उनसे पृथक रहने की भी प्रेरणा की है जिसकी एक उपज ये नादान एव भ्रमित उग्रवादी भी है और जिनका गलत मार्ग दर्शन तथा कथित खालिस्तान वादियों तथा पाकिस्तान आदि विदेशी ताकतो का गठबधन करता है। उग्रवादियो को, उनके पृष्ठपोषको को पजाब से हिन्दुओ का सफाया करने की घातक योजना की असफलता का अहसास इस तथ्य से होना चाहिए कि मार काट लूट पाट के बावजूद शहरों और ग्रामो के ग्राम हिन्दुओ और सिखो के सम्बन्ध पूर्ववत आत्मीयता और भाई चारे के बने हुए हैं।

जब सिख नेताओं ने १९४८ मे देश के मूर्धन्य नेताओ से पृथक सिख राज्य की माग की थी तब सरदार पटेल ने यह कहकर इसकी अव्यवहारिकता उन पर स्पष्ट की थी कि यदि पजाब के हिन्दुओं को बाहर निकालकर देश भर मे फैले सिखो को वहा से हटाकर प्रस्तावित सिख राज्य मे बसाने के लिए वे तय्यार हो तो इस माग की स्वीकृति पर सहानुभूति पूर्वक विचार किया जा सकता है।

परन्तु चूकि उस समय का सिख नेतृत्व उन गुणो और योग्यता से युक्त व्यक्तियो के हाथ मे था जिनका आज के स्वयभू सिख नेताओ मे पूरी तरह अभाव है, अत उन्होने समझदारी के साथ इस माग पर बल देना त्याग दिया था। उन्होने घोषणा की थी कि सिख हिन्दुओं के रक्षक और हिन्दू सिखो के सरक्षक रहे हैं।

देश का उच्चतम नेतृत्व देश की सीमा पर ऐसे स्वतन्त्र राज्य के निर्माण की आज्ञा नहीं दे सकता जो देश की बाह्य सुरक्षा के लिए खतरा हो या कभी खतरा बन जाय। पजाब का सिख बुद्धिजीवी वर्ग ऐसे छोटे राज्य का निर्माण कभी पसन्द न करेगा जिस पर उनकी जगह पुनरुत्थानवादी हावी होंगे और जिसका सूत्र सचालन एक प्रकार से विदेशी शक्तियों के हाथ मे रहेगा जिनके इशारे से और जिनके सहयोग सहायता से वह अस्तित्व मे आयगा।

उग्रवादियों और उनके पृष्ठ पोषको को यह भी स्मरण रखना चाहिए कि पाकिस्तान के निर्माण के बाद मुस्लिम शासकों ने हिन्दुओं के साथ साथ सिखो को भी बलात मारपीट, कत्ल लूटपाट आदि के साथ बाहर निकाला था। साथ ही १९३१ मे काश्मीर के तत्कालीन हिन्दू राज्य से मुक्त होने के लिए चलाए गए मुसलमानों द्वारा स्वतन्त्रता आंदोलन के दौरान वहा हिन्दुओं और सिखों को मार, पीट, हत्या, लूट पाट आदि का शिकार बनाया गया था वहा अनेक हिन्दुओं और सिखों को बलात मुसलमान भी बनाया गया था। तथा कथित खालिस्तानी नेताओ को यह भी सुझाव दिया गया है कि वे पाकिस्तानी प्रशासको से 'ननकाना साहिब' को वेटिकन स्टेट बनाए जाने की माग करे और स्वीकृत कराए जिस पर एकमात्र सिखो का प्रभुत्व रहे। यह माग धार्मिक दृष्टि से बडी महत्व पूर्ण है और पाकिस्तान की उदारता की आज की अनुपम कसौटी है।

जमाते तुल्बा पर प्रतिबन्ध लगाया जा सकता है

श्रीनगर (काश्मीर) से १ सितम्बर को प्रसारित समाचार मे कहा गया है कि राज्य सरकार और भारत सरकार 'राष्ट्र विरोधी और पृथकतावादी गतिविधियो के कानून के अन्तर्गत काश्मीर की जमाते इस्लामी उसकी शाखा जमाते तुल्बा तथा पाकिस्तानी सगठनो की समर्थक अन्य सस्थाओ को प्रतिबधित करने पर विचार कर रही है।

यहा के सूत्रो के अनुसार जमाते तुल्बाने काशमीर को भारत से मुक्त कराने के लिए ईरानी टाइप की क्रांति का आह्वान किया है जिसके परिपेक्ष्य मे इन सगठनो पर प्रतिबन्ध लगाया जाना आवश्यक हो गया है।

दूसरा महत्त्वपूर्ण कारण आने वाले लोक सभा के चुनावो से राज्य के प्रति इनकी सदिग्ध निष्ठा को देखते हुए इन्हे वचित करना भी है।

इन सूत्रो का यह भी कथन है कि एक ओर जमाते इस्लामी भारत के प्रति अपनी निष्ठा की शेखी बघार रही है और दूसरी ओर पाकिस्तान या इस्लाम के नाम पर वोट प्राप्त करने की भी चेष्टा कर रही है। यह लोगो को यह विश्वास दिलाने की भी कोशिश कर रही है कि यदि उसके पक्ष मे वोट देकर उसे सत्तारूढ किया गया तो वह काश्मीर का मामला तय कर देगी।

(स्टेटसमैन दिल्ली १-८-८४)

एक प्रेरक संस्मरण

रोटी की खातिर अपनी आत्मा और आर्यसमाज को धोखा न दूंगा

लक्ष्मणराव शर्मा इन्दौर राज्य के पुलीस इन्सपेक्टर जनरल के कार्यालय मे हैड एकाउन्टेट थे। उन्होने आर्यसमाज के प्रधान की हैसियत से आर्य समाज के नगर कीर्तन के लिए मजिस्ट्रेट से आज्ञा ली। उत्सव २२ और २३ जून १९०७ को मनाया गया था। यह वही साल था जब श्री लाला लाजपतराय जी का देश निर्वासिन हुआ था और १८५७ की क्रान्ति की आधी शती व्यतीत हो रही थी फलत सरकारी क्षेत्रो मे आतक व्याप्त था।

जब पुलीस इन्सपेक्टर जनरल को लक्ष्मणराव जी के आर्य समाजी ही नही उसके सक्रिय कार्यकर्त्ता होने का पता लगा तो वह बडा क्रुद्ध और भयभीत हो उठा। उसने लक्ष्मणराव को अपने कमरे मे बुलाकर उनसे वस्तु स्थिति ज्ञात की और लक्ष्मणराव की स्वीकारोक्ति पर उनसे आर्य समाज से पृथक् हो जाने की मांग की साथ ही ऐसा न करने पर सर्विस से पृथक् करने की धमकी भी दी।

लक्ष्मणराव जी ने यह पूछने पर कि क्या उन्हें आर्य समाज के सम्बन्ध मे कोई शिकायत प्राप्त हुई है आफीसर ने कहा 'नहीं आजकल युरोपियन अफसरो को मारने का कुचक्र चल रहा है। तुम्हारे सम्बन्ध में मेरी सम्मति बहुत अच्छी है और तुम्हारे खिलाफ कोई शिकायत नही। आर्य समाज जैसी राजद्रोहात्मक सोसाइटी में भाग लेने से हम तुम से बहुत नाराज हैं।" यह कहकर आफीसर ने पायोनियर के एक लेख का अश पढा जिसमें लिखा था कि पंजाब सरकार आर्य समाज को राजद्रोही समाज मानती है। अन्त में जनरल महोदय ने लक्ष्मणराव का अन्तिम निर्णय जानना।

लक्ष्मणराव ने उत्तर मे कहा "मेरी आत्मा यह नहीं कहती और जहा तक मेरा ज्ञान है उससे भी यही स्पष्ट है कि आर्य समाज राजनीतिक संस्था नहीं है। मैं इसे विशुद्ध धार्मिक संस्था मानता हूं। आर्य समाज का प्रधान होते हुए इस समय आर्य समाज से पृथक् हो जाना मेरे लिए ही नही आर्य समाज के लिए भी अपमान जनक होगा। अत मुझे इस समय भाग लेने की अनुमति दीजिए।"

(शेष पृष्ठ १२ पर)

जीवन का उद्देश्य

—स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

जीवन के उद्देश्य की खोज करते हुए कुछ महात्माओं ने यह कहा कि अहिंसा और प्रेम ही मानव जीवन का परमलक्ष्य है और आधुनिक में सब को जोड़ तक कह दिया। परन्तु शौच, ज्ञान, इन्द्रिय-दमन और उपासना के अभाव में केवल प्रेम जीवन के सम्पूर्ण विकास और सारी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त न होगा।

कुछेक महात्माओं ने तप और श्रम जीवन विकास के सिद्धांत निरूपित किए। आधुनिक विद्वानों ने तो कठोर श्रम करना ही उपासना है का आदर्श जन समाज के समक्ष प्रस्तुत किया। इसकी भावना तो अच्छी थी परन्तु जीवन के समविकास के लिए कुछेक अन्य गुणों की आवश्यकता होती है जैसे कि श्रम और तप के साथ विवेकशीलता, निष्कामता अनासक्ति और उपासनादि गुण मिल जावें तो ये जीवन को देवत्व के विकास की प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हैं।

युरोप और अमेरिका के सन्तों और विद्वानों के मन में विज्ञान की पराकाष्ठा तक उन्नति करने पर भी अब जीना किस लिए है?' यह शंका बनी रही तो बड़े बड़े विद्वत्सम्मेलनों में इसका समाधान करते हुए पहले तो यह निश्चय किया गया कि ज्ञान वृद्धि के लिए जीना चाहिए। परन्तु इससे संतोष न होने पर कालान्तर में यह निश्चय किया गया कि प्रकृति के ज्ञान के लिए जीना चाहिए। इससे भी सन्तोष न होने पर यह निश्चय किया गया कि प्रकृति से लेकर प्रभु पर्यन्त ज्ञान की प्राप्ति ही जीवन का अन्तिम लक्ष्य है।

यह समाधान यद्यपि अच्छा था परन्तु प्रकृति से परमेश्वर तक ज्ञान की प्राप्ति का यत्न करते हुए इन प्रकृति वादियों ने पृथक आत्म तत्त्व की सर्वथा उपेक्षा की और आत्मा के विषय में यही कहते रहे कि प्रकृति चेतन ही पाँचो भूतों के अनुपात विशेष के मिलने पर अवस्था विशेष में रासायनिक परिणाम चेतनता के रूप में होती है। इसलिए वे पृथक आत्म तत्त्व के कल्याण के लिए ठीक मार्ग न ढूंढ सके। अपने देश के चार्वाक भी यही कहा करते थे कि देहातिरिक्त आत्मा की सत्ता का कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं।

जीवन के उद्देश्यों पर विचार करके वैदिक ऋषियों ने धर्म, अर्थ काम मोक्ष की सिद्धि ही जीवन का वास्तविक ध्येय निरूपित किया था जो वस्तुत वास्तविक है।

इन्हीं से व्यष्टि व समष्टि का शारीरिक, आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक रूप में लौकिक व पारलौकिक कल्याण हो सकता है। दूसरे शब्दों में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक उन्नति के परिचायक है।

मानव का सर्व प्रथम लक्ष्य मन वचन कर्म से धर्माचरण करना होता है। भारत के महाविद्वान राजनीति के प्रकार पंडित आचार्य चाणक्य ने भी अपने सूत्रों में अनुमोदन करते हुए कहा कि सुखस्य मूलं धर्मं धर्मस्य मूलम् अर्थ सुख का मूल धर्म है तथा धर्म का मूल धन है अर्थात शरीर और अन्न उसका साधन है।

वैदिक धर्म कोई पन्थ या सम्प्रदाय नहीं है। यह सार्वभौम सत्य है। वैशेषिक दर्शन के कर्ता महर्षि कणाद ने इसकी व्याख्या इन शब्दों में की है 'यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः' जिसमें ऐहिकलौकिक, तथा पारलौकिक सर्वतोमुखी उन्नति या उत्कर्ष हो और जो सांसारिक दुःखों से छुड़ाने वाला भी हो: इस धर्म के दिखाने सुन्दर लक्षण महर्षि मनु ने इन शब्दों में दिए हैं धृति, क्षमा, दमोऽस्तेय, शौचमिन्द्रिय निग्रह धीर्विद्या सत्यम क्रोधो दशकं धर्म लक्षणम् इसमें मानव जीवन के सर्वांगीण उत्कर्ष के साधन रूप सभी गुणों का समावेश हो जाता है। महाराज मनु ने इन दस लक्षणों के द्वारा मानव मात्र के कल्याण का मार्ग प्रस्तुत कर दिया है। सार्वभौम सत्य के रूप में सर्वोत्तम मार्ग बताने वाले ग्रन्थ है। इसी प्रकार यह धर्म चतुष्टय जहाँ जीवन के शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक और आध्यात्मिक सर्वांगीण स्थिति का विकास साधक है वहीं जीवन का अन्तिम ध्येय और लक्ष्य भी वही है।

आर्य समाज के दस नियमों में उदात्त लक्ष्य समाहित

आधुनिक काल की महापुरुष में आर्य समाज के दस नियमों द्वारा ही

प्रभु सामवेद संहिता

(दो०) अग्नि रूप प्रभु को वरें, वरें प्रेम पर श्रेय,
तप द्वारा कांचन बने, समझें उसे न हेय।
प्रभु उपतापक दूत हैं तो प्रभु ही 'होतार'
दुख प्रसर इस पार है, निश्चित सुख उस पार।
(सो०) सदा ईश को मान, स्वामी विश्ववेदस' परम;
यह प्रभु सुक्रतु महान, जीवन यज्ञ वितान का।
(छ०-४) ईश अवम्नायक धन बल की दानाहुति करके स्वीकार,
आत्मा के कामादि दोष करते विनष्ट हैं बारम्बार,
आत्म समर्पण हवि द्वारा होती जब भक्ति विशेष अचल,
होता है सुप्रदीप्त उपासक में परमात्म प्रकाश विमल।
चाहे मनुज बहुत पर इकपल, मिटा सके न काम क्रोधानल,
प्रबल वासना की सेनाएं पल में बुद्धि शिकार बनाए,
बैरी काम नित्य ज्ञानी का, सकल ज्ञान को कर दे फीका,
एक मात्र प्रभु काम विनाशी, क्षणभर में मेरे अघराशी,
किन्तु काम प्रभु तभी हरेंगे, हम से पूर्ण समर्पण लेंगे,
'प्रविणस्यु' को द्रविण लौटाए, जिसका धन उसको समझाएं,
केवल प्रभु हो या धन प्यारा, सब विधि धन धनेश से हारा
एकान्तिकी प्रीति प्रभु जांचे, यह विशिष्ट स्तुति जन की बांचें
प्रभु को सब विधि अर्पित जीवन, करता कामवृत्र अपवारण,
चाहे प्रभु को यदि हम पाना उर में प्रभु की ज्योति बसाना,
प्रथम ज्ञान फिर गमन सहारे, हो सकते हम प्रभु के प्यारे,
निरखें जग सौन्दर्य व्यवस्था है यह पहली ज्ञान अवस्था,
प्रभु के प्रति फिर चलते चलते, प्रभु की प्राप्ति अनंत करते,
चरण शरण उसकी मिल जाए, हमको प्रभु यों सबल बनावें,
मन का अज्ञान मिटा दें बन कर भरद्वाज' दिखलावें,
भरी शक्ति हो प्रभु की जिसमें मन्त्र अर्थ चमके जिस मन में

—ओमदत्त भारद्वाज व्यावर

काम संहार

४. अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया।
समिद्धः शुक्र आहुतः॥

जीवन के उदात्त लक्ष्यों का अत्यन्त सुन्दर रीति से प्रतिपादन कर दिया है। गम्भीरता से विचारा जाय तो देव दयानन्द द्वारा निर्धारित नियमों के पालन से धर्म, अर्थ काम और मोक्ष की प्राप्ति सुगम हो जाती है।

धर्म और धर्मानुकूल अर्थ के द्वारा, धर्मानुकूल कामनाओं की पूर्ति में सफल होकर जब लौकिक मान प्रतिष्ठा, वैभव को प्राप्त कर लेता है तो उस समय कोई धन ऐश्वर्य व प्रशंसा उसके पतन का कारण बनने लगती है। इसीलिए वैदिक ऋषियों ने धर्म, अर्थ और काम के पश्चात मोक्ष अथवा अनासक्ति निर्लेपता को अनिवार्य बताया है।

वस्तुतः मानव जीवन का उद्धार इस धर्म चतुष्टय की प्राप्ति से ही हो सकता है और वही इसके जीवन का पावन लक्ष्य है।

वृद्धावस्था की व्याधियां-मोतियाबिन्दु (Cataract)

(लेखक—डा० सत्यदेव आर्य ऐ०बी. १६१ बापू-नगर-जयपुर)

मोतियाबिन्द का सीधा सा अर्थ है आख की पारदर्शी लेन्स (Lens) का अपारदर्शी होना जिसमे होकर प्रकाश की किरणो का दृष्टिपटल (Retina) तक न पहुच पाना और फलस्वरूप दृष्टिहीनता की स्थिति बन जाना।

ढलती उम्र मे यह व्याधि ६० वर्ष की आयु के आसपास उभरने लगती है। कभी २ बचपन या युवावस्था मे भी उभर आती है—आख मे कोई सक्रमण (infection) होने, चोट लगने, या कतिपय दैहिक रोग होने के कारण। दैहिक रोगो मे जन्मजात उपदश (Congenital Syphilis) पेशीतान दुष्पोषण (Myotonic Dystrophy), पेराथाइरोइड ग्रन्थी की कार्यक्षमता मे कमी बार २ प्रवाहिका (Diarrhoea) के उग्र आक्रमण, विशेष प्रकार के त्वचारोग, मधुमेह आदि। कभी २ तो यह नवजात शिशु मे भी उभर आती है— यदि गर्भावस्था मे माताको गर्भके प्रथम तीन माह मे रुबेला (Rubella) एक प्रकार का खसरा रोग हुआ हो।

उपयुक्त उपचार के अभाव मे मोतियाबिन्दु अन्धता का प्रमुख कारण बनता है। भारत मे इस समय ६० लाख अन्धे लोगों मे ५५ प्रतिशत मोतियाबिन्दु के मरीज है (Who) ग्रामीण क्षेत्रो मे इसका आवटन शहरो की अपेक्षा लगभग दुगना है और वहा यह ६० वर्ष की आयु से काफी कुछ पहले ही उभर आती है।

वृद्धावस्था मे मोतियाबिन्दु क्यो बनता है इस पर अभी भी गहरा अध्ययन व अन्वेषण जारी है, लेकिन अब तक के अध्ययन के आधार पर मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि लेन्स के विनेय प्रोटीन तत्व ढलती उम्र मे अविलेय (insoluble) की स्थिति मे परिवर्तित होने लगते हैं जिनका सम्भावित कारण है व्यक्ति का अपर्याप्त पोषण। भारतकी नेशनल इन्स्टीटयूट आफ न्यूट्रीशन ने हाल ही मे जो अन्वेषण किये हैं उनसे ज्ञात होता है कि मोतिया के बनने मे लेन्स के प्रोटीन तत्वो मे जो परिवर्तन होते हैं वह उत्तम प्रोटीन की कमी, विटामिन बी' २ राइबोफ्लेविन तथा विटामिन 'सी' 'ए' व ई' की कमी और कुछ खनिज पदार्थ कैलशियम, कौपर, जिंक, फास्फोरस आदि की कमी के कारण होते हैं। अपर्याप्त पोषण वाले व्यक्तियो की आखो से निकाले गए मोतिया लेन्स मे अविलेय प्रोटीन तत्वो की मात्रा अधिक पाई गई बनिस्बत हम उम्र के समुचित पोषण वाले व्यक्तियो की मोतिया लेन्स के। लेन्स का पोषण सीधा रक्त से न होकर आख गोलक के भीतरी भित्ति मे स्थित सघन रक्त कोशिकाओ (Capillaries) से निसरे द्रवीय पदार्थ नेत्रोद (Aqneaus Humour) से होता है, जिसमे सभी आवश्यक पोषणीय तत्व घुलनशील स्थिति मे निस्तरित होते रहते हैं—कोलाइड (Colloid) तत्व नही निसर पाते अन्य था प्रकाश किरणो के अभिसरण में यह बाधक बनते। हमारे शरीर मे आख का लेन्स व कार्निया ही एक मात्र ऐसे उत्तक हैं जिनके पोषण के लिए प्रभु ने रक्त की आवश्यकता नहीं रखी, यदि रखते तो इनका पारदर्शी गुण समाप्त हो जाता और हमे दिखाई देना सम्भव नही हो पाता। प्रभु की यह कितनी विलक्षण विशिष्टता है।

अपर्याप्त पोषण के अनन्तर मोतियाबिन्दु के बनने मे निम्न कारण सहायक होते हैं —

(१) सूर्य की तेज रोशनी अल्ट्रावायलेट किरणें बिना सरक्षी उपकरण के सूर्य ग्रहण देखने या अन्यथा भी सूर्य की ओर देखने से।

(२) एक्सरे, गामारे, न्यूट्रोनरे आदि के प्रभाव से।

(३) अधिक चमक व उष्मा के वातावरण में लम्बे समय तक काम करते रहने से जैसे काच इस्पात सस्थानो मे इन्फ्रारेड किरणो के प्रभाव से यदि संरक्षी साधनो का प्रयोग न किया जाय।

(४) रेडियम धर्मी धूल के प्रभाव से आणविक विस्फोट आदि जैसा कि हिरोशिया व नागासाकी मे हुआ।

(५) मानसिक तनाव-खिचाव तथा

(६) कुछ ऐसी औषधियो का लम्बे समय तक प्रयोग जैसे आयर्ट, कोर्टीकोस्टीरोइड, प्रेडनीसोन आदि।

इन सभी कारणो के निराकरण से समुचित पोषण व सरक्षी साधनो के उपयोग से निश्चय ही मोतियाबिन्दु के उभरनेको काफी समय तक विलम्बित किया जा सकता है तथा निकट भविष्य मे लेन्स के पोषण सम्बन्धी अधिकाधिक अध्ययन अन्वेषण के आधार पर हो सकता है। इसके निवारण की दिशा मे भी हमारा यथेष्ट मार्ग दर्शन हो सके।

पोषण की दृष्टि से उपर्युक्त पोषणीय पदार्थों की प्राप्ति हेतु उत्तम प्रोटीन जिसमे सभी आवश्यक एमाइनो एसिड्स प्राप्त हो सकें, हमे मिश्रित अनाज व दालो से तथा दूध, दही, मट्ठा छेना, सोयाबीन, बादाम, मूंगफली आदि से प्राप्त करने होते हैं। विटामिन 'बी' राइबोफ्लेविन के लिये हरे पत्ते वाली सब्जियां, अंकुर निकले अनाज, आदि। मौसमी फल आम पपीता आदि, विटामिन 'सी' के लिए आवला, नीबू, सतरा, टमाटर, अकुर निकले अनाज आदि, विटामिन ए' के लिए दूध, मक्खन, घी, मलाई, आम, गाजर, चौलाई हरा धनिया, पोदीना, पालक, गाजर आदि तथा विटामिन 'ई' के लिये गेहू के अकुर व उससे निकला तेल व सोयाबीन, सफोला आदि का का तेल श्रेयस्कर होता है।

मोतियाबिन्दु के परिपक्व होने पर नेत्र विशेषज्ञ की सलाह से यथाशक्य आपरेशन करवा ही लेना चाहिये। इसका यही एक मात्र उपचार है। अन्य कोई भी औषध आख मे लगाने, डालने या खाने से कोई लाभ नही होता। आपरेशन विशेषज्ञो द्वारा अस्पतालो ही मे होना चाहिये। ग्रामीण क्षेत्रो के मरीजों को राजकीय भ्रमणशील अस्पतालो का सम्यक लाभ उठाना चाहिए। राजस्थान के ५०० सस्थाओ के प्रमुख भ्रमणशील अस्पताल तथा अन्य छोटे-मोटे कतिपय मेडिकल कालेजो से सम्बन्धित भ्रमणकारी अस्पतालों के समय-समय पर गावो मे लगाए जाने वाले शिविरों मे आपरेशन बडी ही सुविधा से निःशुल्क करवाये जासकते हैं। अप्रशिक्षित अनधिकृत, अनाडी व्यक्तियो से आपरेशन करवाना ठीक नही परिणाम दुखद ही होते हैं, जैसा कि अभी हाल ही मे पूर्वी राजस्थान के कई क्षेत्रो मे हुआ। आपरेशन मे आजकल कोई विशेष असुविधा नही होती। २४ घण्टे मे मरीज को बैठा दिया जाता है और ४ ६ दिन मे घर जाने की छुट्टी दे दी जाती है। ४-६ सप्ताह के बाद उपयुक्त नम्बर का चश्मा नियोजित कर दिया जाता है। इस अवधि मे और इसके बाद भी मरीज को धूल, धुआ, धक्का, खास (खासी) छीक आदि से बचे रहने की सावधानी रखनी होगी। धूम्रपान न करना ही श्रेयस्कर होगा। चश्मे का नम्बर मिलने पर कुशल आप्टीशियन द्वारा चश्मे की लेन्स का सही केन्द्रण किए जाने पर दृष्टि का पुनरावर्तन अत्यन्त ही सन्तोषप्रद हो जाता है। दिक्कत केवल यही होती है कि शुरु २ मे दृष्टव्य पदार्थ लगभग ३० प्रतिशत बडे दिखाई देते हैं और कुछ नजदीक भी। आजू बाजू देखने में गर्दन घुमानी पडती है। लेकिन धीरे २ अभ्यास के साथ इस स्थिति से समझौता हो ही जाता है।

चश्मे की जगह आजकल कोन्टेक्ट लेन्स (Contact lens) व आख के भीतर मोतिया लेन्स की जगह उपयुक्त शक्ति का प्लास्टिक लेन्स भी लगाया जाने लगा है। कोन्टेक्ट लेन्स पलको के भीतर कार्निया पर लगाया जाता है। इससे दृष्टि लाभ तो अपेक्षाकृत अच्छा होता है दृष्टव्य पदार्थ भी १० प्रतिशत से अधिक बडे नही दिखाई देते, आजू बाजू देखने में भी बडी सुविधा रहती है, पर यह लेन्स होता बडा नाजुक है। प्रतिदिन निकालने धोने, साफ करने व पुन लगाने में बडी सावधानी रखनी होती है, टूटनेका भी डर रहता है। कभी कभी २ कार्निया पर रगड लगते रहने से जख्म भी पड जाते हैं जो बडे कष्टदायी होजाते हैं। धूल भरे वातावरण में यह सुविधा जनक नहीं रहता। ग्रामीण क्षेत्रो के लिए तो और भी अधिक असुविधाजनक हो सकता है। ग्रामीणों का अधिकांश मेहनत मजदूरीका काम धन्धा धूलिमय वातावरण मे ही होता है जिससे धूल आदि के कण आंखो में गिरते तथा लेन्स के ऊपर या अन्दर की ओर पहुच जाने से आख में चुभन होने लगती है और इसे तुरन्त निकाल कर साफ करना होता है। ग्रामीण भाई अनपढ़ है इसके रख

कुमारी से ईसा के जन्म की बात पर ईसाई विद्वानों में अविश्वास बढ़ा

(एंजेला तिलबी)

ईसाई धर्म के सिद्धान्तों के बारे में लिखे गए सभी लेखों में यदि किसी एक बात पर सर्वाधिक अविश्वास किया जाता है तो वह ईसा का मरियम से बिना किसी पिता की सहायता से उत्पन्न होना है। यह कहा जाता है कि सूर्य देवता ने मानव मां का मांस का एक भाग लेकर ईसा को उत्पन्न कर दिया। आधुनिक ईसाई विचारक इस बात को बहुत बेहूदा और अविश्वसनीय समझते हैं।

धार्मिक सैद्धान्तिक लोग इस बात को इस आधार पर निपटाने के आदी हो गए है कि इस बारे में बाईबिल के प्रमाण जिनके अनुसार उक्त बात कही जाती है बहुत ही अस्पष्ट है। इनका कहना है कि केवल ल्यूक की दिव्य वार्ता (गोस्पल) मे ही कुमारी के गर्भधारण की बात कही गई है। ल्यूक और मैथ्यू दोनों ने ईसा के जन्म का उल्लेख किया है और जौन के ईसाई की दैवीय उत्पत्ति का उल्लेख किया है। परन्तु जौन ने भी कुमारी द्वारा गर्भ धारण या जन्म की बात नहीं कही है।

मार्क की दिव्य वार्ता में कुमारी से जन्म की बात के विरुद्ध कुछ प्रमाण हैं। इसके साथ ही न्यू टेस्टामेंट के भी शेष भाग में इसके बारे में कोई वास्तविक समर्थन प्रदान नही किया गया है। आलोचकों का यह दावा है कि जहा तक ओल्ड टेस्टामेट की भविष्यवाणी जिसमें कुमारी से जन्म होने की बात पूरी होने को कहा गया है— "देखो एक कुमारी गर्भ धारण करेगी और एक पुत्र को जन्म देगी (इसाइह ७:१४) इसका अनुवाद गलत हुआ है और गलत लागू किया गया है।

कुमारी से जन्म के बारे में सैद्धान्तिकों के विरोध में जो प्रखरता है उसके पीछे बाईबिल के वर्तमान आलोचना से भी अधिक कोई और बात छिपी है। कई प्रकार से कुमारी से जन्म की कहानिया वैसी है जैसे बाकी कब्रों की। इनका विरोध न तो निर्बल है, न ही तारतम्य हीन है। कुमारी से जन्म इतना ही अविश्वसनीय है जितना ईसा का कब्र से निकल कर पुन: जीवित हो जाना।

जहां गम्भीर ईसाई धर्म के विद्वान ईसा के कब्र से निकलने की बात को जैसे-तैसे मान भी लेते हैं वहा यद्यपि २०वी शताब्दी में धार्मिक विश्वास की जैसी स्थिति है उसमें इस बात में भी अनेक बाधाये हैं, कुमारी से जन्म की बात को एकदम ही बट्टेखाते में डाल दिया गया है तथा उस पर विश्वास नही किया जाता है। इसे न केवल असम्भव समझा जाता है अपितु इसका उल्लेख करना भी अनावश्यक समझा जाता है। इसका यही प्रभाव पडता है कि कुमारी से जन्म की बात को न केवल इसलिये ठुकरा दिया गया है कि इस पर विश्वास करना कठिन है अपितु इसलिए भी यह अपराध पूर्ण भी है।

धार्मिक सिद्धान्तवादियों का कुमारी से जन्म की बात के विरोध का कारण क्या है? पश्चिमी देशों में सिद्धान्त शास्त्र विश्लेषण और व्याख्या का विज्ञान है। सिद्धान्त शास्त्री यह समझते है कि उनका कार्य चर्च के विश्वास को सुचारु रूप देना, तथा यह बताना है कि यह बुद्धिगम्य, नैतिक दृष्टि से शुद्ध है तथा किसी भी प्रकार के अन्धविश्वास और अयुक्ति संगत बातों से मुक्त है।

कुमारी से जन्म की बात पर भी विश्वास न करने के तीन कारण हैं प्रथम बहुत ही बेहूदा और जादुई है। यह एक परियों की कथा के समान हैं। इसे प्रतिवर्ष मोमबत्तियों के प्रकाश में कैरोल पूजा के समय दुहराया जाता है। क्रिसमस के अवसर पर टेलिविजन के दर्शकों के लिए यह एक मजाक की बात होती है।

दूसरा कारण यह है कि सिद्धान्त शास्त्रियो के हित मे यह बात है कि ईसा के बारे में विश्वासों में युक्ति संगति हो। इस दृष्टि से कुमारी से जन्म की बात न केवल जुगुप्सा पूर्ण है अपितु परस्पर विरोधाभासपूर्ण है। इस कथा मे जहा ईसा को एकदम मानवीय बताया गया है साथ ही उसके जन्म की बात को अमानवीय बनाया गयाहै। यह कहना कि ईसा बिना रक्त के, बिना मनुष्य के, बिना काम वासना के ईश्वर से हुआ है तथा ईश्वर से ईसा के जन्म का आधार मानव की मुक्ति के लिए है, यह बात भी सिद्धान्त शास्त्रियो के गले से नही उतरती। इससे अनेक समस्यायें ही खडी हो जाती है।

तीसरा कारण यह है कि सिद्धान्त शास्त्री यह चाहते है कि ईसा को मानवीय संस्कृति और इतिहास का एक पात्र सिद्ध किया जाय। इस बात के व्यापक प्रयत्न किये जा रहे है कि ईसा के ऐतिहासिक स्वरूप को व्यक्तरूप में प्रस्तुत किया जाय। यदि ईसा का कुमारी से जन्म माना जाता है तो यह मानवीय आनुवांशिक परम्परा, उत्तराधिकार और संस्कृति आदि सभी का घोर उल्लंघन होता है।

(टाइम्स लन्दन से साभार)

स्वाव के प्रति अधिक सजग न रह पायें अतः उनके लिये सामान्य चश्मा ही चोबस्कर रहता है।

आंख के अन्दर लगाया जाने वाला कृत्रिम लेन्स अधिक सुविधाजनक एवं सन्तोषप्रद हो सकता है यदि आंख इसे पूर्णतया अंगीकृत कर ले। कभी २ आंख इसे समजित कर नहीं पाती और इसके विस्थापित होने की भी आशंका हो सकती है। यदि सब कुछ ठीक हो तो यह उपकरण अति ही उत्तम है। इसके [illegible] केवल १ प्रतिशत ही बड़े दिखाई देते हैं जो वस्तुतः नगण्य है। आपरेशन के समय या बाद में भी यह लेन्स फिट कर दिया जाता है। लेन्स [illegible] के तुरन्त बाद ही मरीज को दिखाई देने लग जाता है और २ सप्ताह में तो वह पूर्ववत् अपने काम धन्धे मे लग जाता है। चूंकि यह लेन्स कृत्रिम है अतः इसमें स्वसमजन (Accommodation) की नैसर्गिक क्षमता नहीं होती, इसलिये नजदीकी दृष्टि के लिये अतिरिक्त चश्मे की आवश्यकता हो सकती है। इसी स्थिति को लेकर लेन्स के साथ भी हो सकती है [illegible] कि [illegible] फोकल (Bi-Focal) न बनाया जाय। अस्तु। कृत्रिम लेन्स लगाने की शल्यविधि भारत में अभी केवल कुछ ही इने गिने विशिष्ट नेत्र चिकित्सालयों में प्रारम्भ की गई है। इसपर और अधिक प्रयोगात्मक अनुभव एवं [illegible] की आवश्यकता को नकारा नहीं जा सकता।

दयानन्द सेवाश्रमों के माध्यम से नैतिक मूल्यो को प्रतिस्थापित किया जा रहा है

—रमेशचन्द्र श्रीवास्तव

गत २९जुलाई को गणेश गंज आर्यसमाज सडवा मन्दिरमे स्वामी विरजानन्द बालमन्दिर के शुभारम्भ के अवसर पर मध्यप्रदेश एव विदर्भ की आ प्र. सभा के मन्त्री श्री रमेश चन्द्र श्रीवास्तव ने कहा कि प्रान्तीय सभा ने सभी समाजों को निर्देशित किया है कि वे कम से कम बालमन्दिर प्रारम्भ करे ताकि बच्चो मे बचपन से आर्यत्व के सस्कार डाले जाऐ साथ ही आदिवासी, हरिजन बहुल क्षेत्रो मे दयानन्द सेवा आश्रम स्थापित कर उन्हें न केवल शिक्षित किया जावे वरन सस्कारित कर पाँवो पर खडा करना हमारा लक्ष्य है और मेछत्तीसगढ, विदर्भ मे स्थापित किए जा रहे हैं। मैं च हुमा सडवा आर्यसमाज चू कि प्रदेश की अग्रसर आर्य समाजो में एक है इसे क्षेत्रीय दर्जा देकर यहा से अकोला, अमरावती, होशगाबाद, सतना, जबलपुर तक दयानन्द की रीति नीतियो को पहुचाया जाए। मैं यहा के कार्यक्रमो को देखकर इतना प्रभावित हुआ हू कि आपने जो १० हजार रुपए के ऋण को अनुदान में परिवर्तित करने की माग की है तो मैं ५ हजार रुपए के ऋण को अनुदान मे परिवर्तित करने की माग की स्वीकृति प्रदान करता हू।

जिला पुलिस अधीक्षक श्री नन्दन दुबे ने पुरस्कार वितरण करते हुए कहा कि—इन छोटे छोटे छात्र छात्राओं मे ही सस्कार डाले जा सकते हैं। वृक्ष की डगाल जब टहनी होती है उसे जिधर चाहो उधर मुड जाती है। परन्तु जब वह मोटी डगाल बन जाती है मोडी नहीं जा सकती। टूट अवश्य जाती है। शिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य श्री तेजबली दुबे ने कहा कि—जब हम छोटे से वृक्ष को पनपाने के लिए खाद देते हैं दवाई छिडकते हैं देख भाल करते हैं ताकि वृक्ष बडा हो जावे पथिको को छाया दे और फल दे तभी देश को भावी पीढी के निर्माण में भी हम उदासीन रहेंगे तो आने वाला समय हमें कभी माफ नही करेगा। मुझे प्रसन्नता है उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा पजाब के समान सडवा मे भी आर्य समाज की शिक्षण संस्था है जो भावी पीढी के निर्माण मे लगी हुई है। पडित शारदा प्रसाद शुक्ल ने इस अवसर पर छटवी कक्षा के छात्र छात्राओ को बैठने के लिए बीस डैस्क देने की घोषणा की है। श्री रामचन्द्र चौबे ने, श्री कैलाश चन्द्र जी कश्यप, आचार्य डी पी जायस्वाल, राजेन्द्र पोद्दार, श्री मथाप्रसाद तिवारी ने भी आर्यशिक्षण सस्थाओ की शिक्षण व्यवस्था की भूरि भूरि प्रशसा की।

पडित जगमोहन जी मिश्र (विधायक) ने कहा कि—आर्य समाज के कार्यक्रमो को मैं विगत ५० वर्षो से देख रहा हू, परन्तु ८-१० सालों में जो बहुमुखी प्रगति हुई है वह प्रशसनीय है इसके लिए धन्यवाद के पात्र यहा के समर्पित कार्यकर्ता हैं इस अवसर पर पाचवी की प्रवेशीय सूची में आये छात्र गिरीशलाहू, मनीष गुप्त सतीश गुहा अखिलेश सोनी, शिक्षिका कु० हेमलता शर्मा को सहायक जिला शाला निरीक्षक श्री आर० डी० अग्रवाल, आर्किटेक्ट श्री गोकुल खण्डेलवाल, कमल बोरवाडकर, रुक्मणी सोनी, बसन्ती शातले, सरोज वर्मा को भी पुरस्कृत किया गया। अतिथियों का स्वागत श्री छगनलाल चौधरी, कृष्णलाल आर्य, लक्ष्मीनारायण भार्गव, लक्ष्मी नारायण चौबे, रामप्रताप श्रीमाली ने किया। आभार प्रदर्शन श्री माधवी भाई भानुशाली ने किया। कार्यक्रम का सचालन श्री कैलाशचन्द्र पालीवाल ने किया। शांति पाठ के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ।

राष्ट्रपति को तनखैय्या घोषित करने की भर्त्सना

नई दिल्ली। भारतीय प्रेस परिषद के सदस्य व सिख प्रेस एसोसियेशन के महासचिव श्री धर्मराज सिंह गोधी ने विश्व सिख सम्मेलन मे राष्ट्रपति जैलसिंह को तनखैय्या घोषित करने वाले पारित किये गए प्रस्ताव की भर्त्सना की है।

उन्होने मुख्य ग्रन्थियो से इस निर्णय पर पुनर्विचार करने का अनुरोध करते हुए कहा है कि भारत के राष्ट्रपति जैसे उच्च पद को इस विवाद में नही घसीटना चाहिए। उन्होंने ग्रन्थियो से आप्रेशन ब्लूस्टार पर पुनर्विचार करने और पजाब समस्या के समाधान के लिये सरकार से बातचीत करने की भी अपील की है।

गायत्री महामन्त्र (गुरुमन्त्र)

१ गायत्री वेदों का सार है। तीन मात्रा वाले ओंकार पूर्वक तीन महा व्याहृति और तीन पाद वाली सावित्री गायत्री को ब्रह्मा का मुखद्वार समझना चाहिए (मनु)
२ गायत्री से त्रिलोकी विजय होती है (उपनिषद)
३. गायत्री वर देने वाली पवित्र करने वाली है (अथर्ववेद)
४ गायत्री और ब्रह्म में भिन्नता नहीं है (व्यास मुनि)
५ गायत्री मोक्ष का मूल कारण है (शृगि ऋषि)
६ गायत्री आवागमन से छुडाने वाली है (विश्वामित्र)
७ गायत्री पाप को नाश करने वाली है (याज्ञवल्क्य)
८ गायत्री ब्रह्म का साक्षात्कार कराती है (भारद्वाज)
९ गायत्री उपासना से दीर्घ जीवी होता है (चरक)
१० गायत्री से कुमार्गी भी पवित्र हो जाता है (वशिष्ठ)
११ गायत्री तप है—योग है साधना है
१२ गायत्री वेदमाता है—ससार की भी माता है
१३ गायत्री छन्द मैं ही हू (योगीराज कृष्ण)
१४ गायत्री से ब्रह्म की प्राप्ति होती है (शकराचार्य)
१५ गायत्री सर्वश्रेष्ठ महामन्त्र तथा गुरुमन्त्र है—इसका जाप सब करते आए हैं (महर्षि दयानन्द)
१६ गायत्री से बडी शक्ति मिलती है (रामकृष्ण परमहंस)
१७ गायत्री सदबुद्धि का मन्त्र है (विवेकानन्द)
१८ गायत्री चारों ओर शक्ति लाती है (रविन्द्र ठाकुर)
१९ गायत्री आत्मा को प्रकाश देती है (तिलक)
२ गायत्री भौतिक अभाव दूर करती है (मालवीय)
२१ गायत्री आत्मोन्नति मे उपयोगी है (म० गाधी)

—वामदेव दिल्ली

धर्म रक्षा महाभियान

आर्यसमाज दीवानहाल में महत्वपूर्ण शुद्धि समारोह

हाफिज मुहम्मद मुस्तकीम स्वेच्छा से श्री ज्ञानेश्वर भारती बने

हाफिज मुहम्मद मुस्तकीम ने अपने परिवार के चार सदस्यो सहित इस्लाम मजहब को अलविदा कहकर अपना प्राचीन धर्म वैदिक धर्म स्वीकार कर लिया। आपका नाम श्री ज्ञानेश्वर भारती रखागया। आपके लडके का नाम सुनेश्वर भारती, अब्दुल रहमान का नाम उदय प्रताप, उनकी धर्मपत्नि नजमा खातून का नाम नीलम रखा गया। इस अवसर पर हाफिज मुहम्मद मुस्तकीम ने आभार प्रकट करते हुए अपने रहनुमा श्री जयप्रकाश आर्य (भू० पू० इमाम बेतिया चम्पारण बिहार) का शुक्रिया अदा करते हुए कहा कि उनकी महरबानी से मैं अपने पवित्र धर्म वैदिक धर्म मे प्रवेश कर रहा हू। इसका मुझे गर्व है। मैंने निश्चय किया कि मेरे पूर्वजो के कारण जो मुझे इस्लाम मे रखकर गुमराह रखा गया उसका प्रायश्चित मैं आजीवन पवित्र वैदिक धर्म की सेवा करके करूगा। वे यमुनानगर गुरुकुल मे सस्कृत शिक्षा पाने के लिये जायेंगे।

इस अवसर पर श्री जयप्रकाश आर्य, श्री सूर्यदेव जी प्रधान आर्य समाज दीवानहाल, मन्त्री आर्य समाज ने भी अपने विचार प्रकट करते हुए श्री ज्ञानेश्वर भारती का स्वागत किया तथा उन्हे हर प्रकार से अपना आत्मीय सहयोग देने का वचन दिया।

मुस्लिम युवती वैदिक धर्म में दीक्षित

नगर आर्यसमाज साहबगज एव आर्य युवक परिषद के सयुक्त तत्वावधान में वेद प्रचार के अन्तिम दिवस पर श्री कृष्ण जन्माष्टमी समारोह का आयोजन किया गया जिस पर योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन पर श्री प० द्विजराज शर्मा पुरोहित अध्यक्ष जिला आर्य सभा गोरखपुर ने प्रकाश डाला। इस अवसर पर एक मुस्लिम युवती जिसका नाम सलमा पुत्री शौकत कौम (शेख) निवासी रेलवे कालोनी गोरखपुर को वैदिक धर्म मे दीक्षित करते हुए आर्य जाति मे प्रवेश कराया गया। युवती का नाम शुद्धि के पश्चात 'सविता' देवी रखा गया। तत्पश्चात रेलवे कालोनी गोरखपुर निवासी श्री चन्द्रशेखर के साथ विवाह भी सम्पन्न हुआ। शुद्धि एव विवाह सस्कार श्री प० द्विजराज शर्मा पुरोहित (अध्यक्ष) जिला आर्य सभा गोरखपुर ने सम्पन्न कराया तथा कार्यक्रम का सचालन रमेशप्रसाद गुप्त (मन्त्री) नगर आर्य समाज गोरखपुर ने किया।

इस अवसर पर सर्वश्री देवीलाल आर्य, धनश्यामदास आर्य, [illegible] तेजप्रतापसिह, अशोककुमार कोहिया, पवन कुमार [illegible], श्रीमती विद्यावती आर्या, मनोरमा देवी, मालती देवी, [illegible] देवी आदि ने नवदम्पति को आशीर्वाद दिया। नव-दम्पति ने गोरखनाथ मन्दिर जाकर पूज्य महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के आशीर्वाद प्राप्त किया।

रमेशप्रसाद गुप्त
मन्त्री

दो मुस्लिम वैदिक धर्म में दीक्षित

अल्मोड़ा। आर्य समाज-मन्दिर ताडीखेत मे ३० अगस्त १९८४ को (ब्रह्मचारी) मुहम्मद अतीक (पुत्र श्री अब्दुल अजीज, बरेली) और (कुमारी) शाहिदा (पुत्री श्री मुहम्मद यामीन, हल्द्वानी) ने स्वामी गुरुकुलानन्द [illegible] से वैदिक धर्म की दीक्षा लेकर क्रमश महेन्द्र व [illegible] नाम ग्रहण कर आर्य बने। दोनो का विवाह संस्कार प० रामदत्त पाण्डेय साहित्य रत्न के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ।

—त्रिलोकरावत, मन्त्री

सार्वदेशिक सभा के प्रधान माननीय श्री रामगोपाल शालवाले के निर्देशन में

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का चुनाव सम्पन्न

लखनऊ ५ अगस्त।

डी० ए० वी० कालेज लखनऊ के सभागार मे उपस्थित लगभग ७०० प्रतिनिधियो ने आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के आगामी निर्वाचन के सम्बन्ध मे सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास करके सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री शालवाले को निर्वाचन का अधिकार दिया। इस प्रस्ताव का सम्पूर्ण सदन ने करतल ध्वनि से स्वागत किया।

श्री रामगोपाल जी शालवाले ने निम्न प्रकार पदाधिकारियो की घोषणा की —

श्री इन्द्रराज जी	प्रधान
प० सच्चिदानन्द शास्त्री	कार्यकर्ता प्रधान
श्रीमती सन्तोष कुमारी कपूर	उप प्रधान
श्री प्रेमचन्द शर्मा	उप प्रधान
श्री धर्मेन्द्रसिंह आर्य	उप प्रधान
श्री मनमोहन तिवारी	मन्त्री
श्री जयनारायण अरुण	उप मन्त्री
श्री वीरेन्द्रपाल शर्मा	उप मन्त्री
श्री लाल बहादुर शर्मा	उप मन्त्री
श्री मंगलदत्त जी शर्मा	उप मन्त्री
श्री चन्द्रकिरण शर्मा	कोषाध्यक्ष
श्री वीरेन्द्र कुमार	स० कोषाध्यक्ष
डा० आनन्द प्रकाश	पुस्तकाध्यक्ष
श्री विजयपाल शास्त्री	सह पुस्तकाध्यक्ष

अधिकारियो के अतिरिक्त ३६ अन्तरग सदस्यो की घोषणा की गई।

प्रचार विभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

श्री शालवाले वैदिक धर्म प्रचारार्थ पश्चिम जर्मनी की यात्रा पर

लाला रामगोपाल शालवाले प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व मे "धार्मिक एकता सम्मेलन हेरिवृद पश्चिम जर्मनी" मे भाग लेने के लिए शिष्ट मण्डल को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे, आर्यसमाज हनुमान रोड नई दिल्ली मे आयोजित एक भव्य समारोह मे भावभीनी विदाई दी गयी।

लाला जी ने बताया कि वे पश्चिम जर्मनी मे वैदिक धर्म के प्रचारार्थ तथा भारत की उज्ज्वल छवि को ससार के सम्मुख रखने हेतु यहा की यात्रा का मार्ग दर्शन करेंगे। पश्चिम जर्मनी वेदवेत्ता श्री मोक्षमूलर जी का कार्यक्षेत्र है। वहा वेद और वैदिक धर्म का पहले से ही पर्याप्त प्रचार प्रसार है। वे सही परिप्रेक्ष्य मे आर्य सिद्धान्तो और धर्म ग्रन्थो का अध्ययन अनुसधान करने के लिए उन्हे प्रेरित करेंगे।

इस शिष्ट मण्डल मे लाला जी के साथ श्री ओम्प्रकाश पुरुषार्थी, श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम् अध्यक्ष विश्व तमिल सघ और श्री वी० किशनलाल पूर्व महापौर हैदराबाद जा रहे हैं।

(पृष्ठ २ का शेष)

दोनो लाभ प्राप्त हो वही धर्म है। यह दोनों लाभ मनु द्वारा वर्णित लक्षणों में ही आ जाते हैं।

आज का भौतिक विकास संपन्न विश्व बाह्य सुखों का अनन्त संग्रह करके भी आज शांति और धर्म की खोज के लिए व्याकुल है। आपके पश्चिम देशों से आए हुए भारत मे (मथुरा वृन्दावन) घूमते पीत वस्त्रधारी, शिखाधारी जिज्ञासु इसके प्रमाण हैं जो मथुरा और वृन्दावन मे कृष्ण कीर्तन करते हुए झूम रहे हैं, मस्त हो रहे हैं उनको कितना और क्या लाभ हो रहा है मैं इस विषय मे कुछ नही कहूंगा परन्तु इतना सत्य है कि उनको भौतिकता के प्रति कुछ वैराग्य हो रहा है। उनके मन और आत्मा किसी भी तरह शान्ति चाहते हैं ऐसी शक्ति जो नित्य हो, शाश्वत हो।

कोई व्यक्ति किसी के यहा सदभावना प्रदर्शन हेतु यदि जाय तो कुछ सौगात लेकर ही जाना हमारे कृष्ण और सुदामा और दयानन्द के देश भारत की पुरातन प्रथा है। मैंने भी आपके आमन्त्रण पर यहा आने से पूर्व विचार किया कि क्या सौगात आपके लिए ले जाऊं? जिसे आज का विश्व सौगात रूप मे देता लेता है, वे सभी तो केवल भौतिक पदार्थ हैं जिन्हें सोने और चादी के सिक्को मे तोला जाता है परन्तु मैं तो सुदामा की भांति अपनी कोख मे छिपी हुई प्रेम तन्दुल की एक भेंट लाया हू जो सम्भव है आप स्वीकार करें। मेरी यह भेंट केवल आप ही के लिए नहीं विश्व के मानव मात्र के लिए है। कल्याणी वेद माता द्वारा दिया हुआ कल्याण कारी उपहार है। वेद के माध्यम से भगवान उपदेश देते हैं कि मानव को जो संस्कृति अर्थात शिक्षा और सुशिक्षा से परिमार्जित नियमों पर आधारित विचारधारा पालन करनी चाहिए उसमे बाह्य और आतरिक दोनो जीवनो का लाभ हो, जीवन का एकागी विकास मानव को जीवन लक्ष्य प्राप्त नहीं करा सकता। यजुर्वेद के अध्याय ७ के १४ वें मन्त्र मे कहा है—

अच्छिन्नस्य ते देवसोम सुवीर्यस्य
रायस्पोषस्य ददितारः स्याम।
सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा
स प्रथमो वरुणो मित्रोऽग्नि ॥ यजु १।१४

इसमे चार सिद्धांत बताए हैं जिनको साध लेने पर विश्व का मानव-मात्र निश्चय ही धर्मात्मा हो जायगा। सभी लोग भौतिक और अध्यात्म लाभ के धनी होगे।

(१) सर्वप्रथम सभी का प्रभु में अटूट विश्वास होना चाहिए। यह संसार उसी का निर्माण है, उसी की रचना है उसी की देन है। निर्माण रूप मे प्राणी मात्र को जो कल्याणकारी सुखो की धारा उस परम सोम से मिल रही है उसमे केवल मात्र स्वामित्व उसी का है उसी का है। हमारा कुछ नहीं। हम साधन हैं, दाता वही है ऐसी आस्तिक बुद्धि के बिना ससार का झूठा अभिमान जिसके कारण से देशो मे, जातियों में, मनुष्यो मे लूट मार छीना-झपटी, ईर्ष्या द्वेष का भाव उभर कर विनाश का साधन हो रहा है समाप्त न होगा। ऐसी स्थिति मे धर्म की स्थापना भी नहीं हो सकती। धर्म का मूल आधार है उस जगन्नियता ईश्वर मे पूर्ण आस्था और विश्वास।

हमे यह भी ध्यान रहे कि हमारे हाथो के माध्यम से जो किसी अन्य को कुछ दिया जाता है वह उसी ऐश्वर्यदाता के दिए मे से ही दिया जा रहा है, हमारा नहीं। सब कुछ उसी का जानकर किसी को देते समय अत्यन्त नम्रता का स्वभाव स्वयं के प्रति दाता न होने का भाव यही धर्म है। इसी से विश्व मे, देशो मे, जातियो मे, प्राणिमात्र मे स्नेह बरस सकता है।

जीवन के सभी क्षेत्रों मे अग्नि अर्थात ज्ञान की अग्नि से प्रकाशित जनो का ही सब स्थानो मे श्रेष्ठ और प्रथम स्थान होना चाहिए। क्योंकि बिना ज्ञान साधकों के और वेदनिष्ठ ज्ञानियों के हमारा मार्गदर्शक कौन हो सकता है? प्रत्येक स्थिति में वही श्रेष्ठ सच्चे मित्र होते हैं। जिस विश्व मे त्यागी, दानी, सच्चे ज्ञानी, तपस्वी ब्राह्मणों का आदर नहीं होता वहा न तो धर्म होता है और न शांति और सतोष।

ऊपर कही विचारधारा से जब तक हमारी बुद्धि-मन और आत्मा प्रभावित नहीं होंगे, तब तक हमारे जीवनो मे वैदिक संस्कृति की स्थापना नहीं हो सकती। आदिकालीन विचारधारा जो विश्वमात्र के वरण करने योग्य है और प्रभु ने हमें वेदोपदेश द्वारा दी है, उसके बिना धर्म का मूल आधार ही स्थापित नहीं हो सकता। यही मन्त्र है मेरी प्यारी प्रभु प्रदत्त कल्याणी वेदमाता जी का विश्व के मानव मात्र के प्रति अनुपम उपहार। हम सभी मानव यदि सभी संस्कृतियों को उसी की देन और उसी को प्रेरक मानें और उसके ज्ञान और ज्ञान देने वालों को सच्चा मित्र जानकर जीवन, चलाने की दिशा से परिमार्जित विचारधारा को स्वीकार कर लें, तो निश्चय ही सारा विश्व विश्व परिवार सुखी हो जाय। आज से लगभग साढे पाच हजार वर्ष पूर्व दोनों हाथ उठाकर वेदना पूर्ण स्वर में जो घोषणा महर्षि वेदव्यास ने की थी उसी को ही आज मुझे कहना है। हे विश्व के लोगो—'धर्मादर्थश्च कामश्च स धर्म किम्न सेव्यते?'

जब धर्म ही के मार्ग पर चलकर अर्थ और काम की प्राप्ति हो सकती है जीवन सुखी हो सकता है तो हम लोग उसका सेवन क्यों नहीं करते? व्यास की चेतावनी से हम उपेक्षा की नींद छोड़ने को तत्पर क्यो नहीं होते? हमारा कल्याण इसी में है कि हम महर्षि वेद व्यास की चेतावनी को समझें, विनाश की तन्द्रा को दूर करें और वेद माता के उपहार रूप में दिए हुए विश्वमात्र के वरण करने योग्य वैदिक संस्कृति के सूत्र को जानें। तभी मानव ही नहीं प्राणिमात्र सुखी, निर्भय और स्वाधीन होकर धर्मानुकूल जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

जो विचार मैंने प्रस्तुत किए हैं उनका मूलाधार वेद है जिस की सम्पूर्ण वैज्ञानिकता आज के बौद्धिक युग मे आर्य समाज के प्रवर्तक देव दयानन्द ने उपस्थित की है और वह स्वीकार भी की जा चुकी है।

ओ समानो मन्त्रः समितिः समानी
समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः
समानेन वो हविषा जुहोमि ॥ ऋ० १०।१९१।३

ऋग्वेद की इस ऋचा ने विश्व मे एक ऐसे परिवार की स्थापना चाही है कि जिससे पवतो मे, भूमि के सभी भागो मे, मानव मानव-मात्र पशु-पक्षी, कीट पतग नदी, नद, वन, पर्वत सर्वत्र ही पूर्णतया निर्भय और शांत जीवन जी सकें।



विदेश यात्रा पर जाने के समय सभा कार्यालय मे अभिनन्दन समारोह—बाये से दाय —श्री पृथ्वीराज शास्त्री श्री रावेश श्री बी०किशनलाल (हैदराबाद), श्री रामगोपाल शालवाले (प्रधान सभा) श्री रामचन्द्र वन्देमातरम डा० धमरेश श्री दानसिंह श्री रमेशचन्द्र शास्त्री।

अमेरिका में आर्य प्रतिनिधि सभा की नियमित स्थापना

सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी की प्रचार यात्रा की भव्य उपलब्धि

लाजऐंजिल्स से ९ ९-८४ को सभा प्रधान श्री लाला रामगोपाल जी के नाम भेजे पत्र मे श्री त्यागी जी ने यह सूचना देते हुए लिखा है कि वहा ७ आर्य समाजो ने अपनी प्रतिनिधि सभा बना ली है।

लाजऐंजिल्स मे आर्यसमाज का भवन बहुत ही अच्छा है।

श्री त्यागी जी की देख-रेख और मार्गदर्शन मे विधान का निर्माण हुआ है।

श्री त्यागी जी १२ ९ ८४ को न्यूयार्क जायेंगे और वहां से १५ सितम्बर को टोरन्टो (कनाडा) वहा १ सप्ताह रहना है। वहा से २४-९-८४ को न्यूयार्क लौटकर शीघ्र ही दिल्ली लौटने का आयोजन करेंगे।

रघुनाथप्रसाद पाठक

जोधपुर की माता प्रेमवती देवी आर्या का देहावसान

वह अदम्य साहस, कर्मठ कृतित्व और सौम्यतापूर्ण मृदुत्व से परिपूर्ण महिला थीं

जोधपुर। महिला आर्यसमाज सरदारपुरा जोधपुर की सदस्य और महान कर्मठ व्यक्तित्व से परिपूर्ण माता प्रेमवती देवी आर्या को कौन नहीं जानता? माता जी जन्म जाति की कट्टर विरोधी थी आपने अपनी तीनों लड़कियों का ब्राह्मण जाट और वैश्य कुलोत्पन्न नवयुवकों से गुण कर्म स्वभावानुसार पाणिग्रहण संस्कार किया वानप्रस्थ जीवन व्यतीत करती हुई महर्षि दयानन्द स्मृति भवन जोधपुर में रह रही थीं। महर्षि दयानन्द सरस्वती के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों में उनका अटूट विश्वास था। भावुक, सहज प्रकृति से परिपूर्ण स्नेह दृष्टि से उन्होंने जिस युवक अथवा युवती को अपना आशीर्वाद दिया वह जीवन भर उनसे अपने को विलग न कर सका। गत २४ ७ ८४ को लकवे से आक्रान्त होकर उन्होंने इस नश्वर शरीर को त्याग दिया। आप अपने पीछे मात्र तीन लड़कियां और पौत्र पौत्री छोड़ गई हैं। जोधपुर आर्य समाजों तथा सम्भ्रान्त व्यक्तियों ने उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए प्रभु से प्रार्थना की कि, वह उनके वियोग को सहन करने की क्षमता प्रदान करें तथा उनका अनुकरणीय जीवन हमारे लिए मार्ग दर्शन करने वाला सिद्ध हो।

—जोधपुर

साहित्य समीक्षा और प्राप्ति स्वीकार

विश्व को आर्य कैसे बनायें सम्पादक श्री हरिदत्त विद्याप्रभाकर, प्रकाशक मन्त्री आर्य युवक परिषद दिल्ली पृष्ठ संख्या २०० मूल्य ८) रु०।

पुस्तक का शीर्षक एक निबन्ध प्रतियोगिता का शीर्षक है जिसे आर्य युवक परिषद दिल्ली ने १९८३ मे आयोजित किया था, और देश भर के लेखकों से इस अनूठी प्रतियोगिता में भाग लेने को आमन्त्रित किया था। इस घोषणा के साथ कि प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान पाने वाले निबन्ध पर लेखक को ५०१) रु० द्वितीय स्थान पाने वाले को ३००) रु० और तृतीय स्थान पाने वाले निबन्ध के लेखक को २००, रु० की राशि प्रदान कर सम्मानित किया जायगा। उक्त प्रतियोगिता मे ५० से अधिक लेख प्राप्त हुए और उनमे से मुरादाबाद के श्री यशपाल आर्यबन्धु सोनीपत (हरियाणा) के श्री कृष्ण देव शास्त्री तथा सार्वदेशिक साप्ताहिक के सहसम्पादक श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक को क्रमश प्रथम द्वितीय और तृतीय दिल्ली की आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा आयोजित ऋषि बोधोत्सव पर सम्मानित किया गया। आर्य युवक परिषद के प्रधान श्री देवव्रत धर्मेन्दु ने यह आवश्यक समझा कि समस्त निबन्धो को एक पुस्तक रूप मे प्रकाशित कर दिया जाय और उनकी मनोभावनाओ को साकार रूप दिया सम्पादक श्री हरिदत्त विद्या प्रभाकर ने। अपनी सम्पादन कुशलता द्वारा पुस्तक के उपसहार मे समस्त लेखो की विशेषताओ को क्रमबद्ध करके सग्रहीत करने का श्रेय अर्जित किया है। प्रयास सराहनीय है।

—रमेशचन्द्र शास्त्री

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक करतारपुर

गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत महाविद्यालय करतारपुर का १४वा वार्षिक उत्सव २३ से ३० सितम्बर तक सम्पन्न होगा।

—चतुर्भुज मन्त्री

महाशय बनवारीलाल गाजियाबाद के द्वितीय बड़े पुत्र श्री हर्ष वर्धन का देहावसान

गाजियाबाद।

हर्ष वर्धन गुप्त महाशय बनवारीलाल आर्य के बड़े सुपुत्र थे। कुछ दिन पूर्व इनके छोटे पुत्र का देहावसान हो गया था। अब श्री हर्षवर्धन भी १० अगस्त को चल बसे। आप गुरुकुल वृन्दावन में वर्षों अध्यापन का कार्य सम्पादन करते रहे। श्री डा हरिदत्तजी ने आपको शिक्षार्थ बनारस यूनीवर्सिटी भेज दिया वहां आपने गोल्डन मैडिल प्राप्त किया। आप एम० बी० बी० एस० डाक्टर थे। अपने पीछे एक लड़का, चार लड़कियां और पत्नि छोड़ गये हैं। महाशय बनवारीलाल जी को लगे इस आघात से हम सभी सवेदना प्रकट करते हुए प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि उन्हें इस अप्रत्याशित आघात को सहन करने की क्षमता प्रदान करें और समस्त परिवार को भी उचित धर्य धारण करावे।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

वैदिक आदर्श विवाह

विदित हो पिछले १७ जून १९८४ को एक आदर्श वैदिक [illegible] चि० आचार्य राजकुमार एम ए आयु० सावित्री शास्त्री के [illegible] सम्पन्न हुआ। परिचय चि० आचार्य राजकुमार एम० ए० गांव सुनारिया (रोहतक) चौ० मामनसिंह के सुपुत्र तथा महाशय बलवन्तसिंह आर्य मकड़ोली कलां (रोहतक) के भतीजे हैं। आप गुरुकुल झज्जर के स्नातक तथा गुरुकुल कांगड़ी से एम० ए० पास हैं। अब पी. एच डी कर रहे हैं। तथा महम राजकीय कन्या हाई स्कूल में सेवा रत है। आयु० सावित्री



शास्त्री आर्य मुनि योगाचार्य नामल (सोनीपत) की सुपुत्री है। ये कन्या गुरुकुल लोवाकलां की स्नातिका है। बनारस से शास्त्री पास है। आचार्य का प्रथम वर्ष किया है तथा बी० टी० कर रही है। इस विवाह की विशेषता यह रही इसमे दहेज के नाम पर कोई खर्च नहीं हुआ। एक रुपया वाग्दान (सगाई) तथा एक रुपया विदा दान का ही खर्च हुआ। पाच मनुष्य बारात मे शामिल हुये। सोनीपत जिला हरयाणा प्रान्त मे नामल कलां गांव मे यह पहला विवाह है जो पूर्ण वैदिक पद्धति से बिना दहेज के सम्पन्न हुआ। पहले पाच दिन यजुर्वेद पारायण यज्ञ कन्या गुरुकुल लोवा कलां की ब्रह्मचारिणियो द्वारा सम्पन्न हुआ। विवाह संस्कार प्रो० आचार्य सुदर्शनदेव द्वारा सम्पन्न हुआ। चौ० राममेहर वकील दयानन्द युनिवर्सिटी रोहतक का भाषण हुआ जिसमें आजकल विवाह के नाम पर हो रहे पाखण्ड अन्ध विश्वास, अत्याचार तथा अवैदिक मान्यताओं का जोर दार खण्डन किया। इस अवसर पर आर्य मुनि द्वारा २५ संस्थाओ को १००) सौ० रुपये दान दिया गया। जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा सार्वदेशिक आर्य वीर दल भी सम्मिलित हैं। सभी आर्यों को इस विवाह से शिक्षा लेनी चाहिये तथा अपने पुत्र पुत्रियों का विवाह दहेज रहित करना चाहिये।

मन्त्री—आर्य समाज नामल कलां
जिला सोनीपत (हरियाणा)

आर्य युवक परिषद् [illegible] लित

सब आर्य सत्यार्थ [illegible] रविवार २३ सितम्बर १९८४ को [illegible] सब जगह भेज दी गई है। जहा [illegible] तुरन्त मगा ले।

[illegible] संरक्षक प्रधान
१६५४ कूचा [illegible] ज, दिल्ली-२

(पृष्ठ ४ का शेष)

गोरे साहब ने प्रार्थना स्वीकार न की और कहा तुम आर्य समाज मे भाग नही ले सकते। यदि तुमने भाग लिया तो नौकरी से अलग कर दिये जाओगे। लक्ष्मणराव ने कोई विकल्प न देखकर कहा—

"मैं हर कीमत और खतरे पर [illegible] में भाग लूंगा। आर्य समाज की सेवा करता रहूंगा। रोटी की खातिर अपनी आत्मा को और आर्य समाज को धोखा न दूंगा।"

फलत लक्ष्मणराव नौकरी से पृथक् कर दिये गये।

— रघुनाथप्रसाद पाठक

सार्वदेशिक [illegible] दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक ने लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा [illegible] भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
75 साप्ताहिक

सृष्टिसम्वत १९७२९४९०८५] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दयानन्दाब्द १६० दूरभाष २७४७७१
वर्ष ११ अंक ४५ अश्विन कृ० ४ सं० २०४१ रविवार १४ अक्तूबर १९८४ वार्षिक मूल्य १६) एक प्रति ४० पैसे

केरल के मन्दिर कानून से कम्युनिस्ट परेशान

हिन्दू विधायकों के लिए बोर्ड के ट्रस्टियों को चुनने के लिए परमात्मा के नाम में शपथ लेना अनिवार्य

केरल गवर्नमेंट ने एक अध्यादेश जारी करके ट्रावन्कोर, कोचीन हिन्दू रिलीजस इन्स्टीट्यूशन ऐक्ट (हिन्दू धर्म संस्थान कानून) मे संशोधन करने का निश्चय किया है जिसके अनुसार उन हिन्दू विधायकों को (जो प्रत्येक ३ सदस्यीय देवा स्वम बोर्डों के लिए अपना सदस्य चुनते हैं) वोट देने या चुनाव लड़ने के लिए ईश्वर के नाम मे शपथ लेना अनिवार्य करार दिया जायगा। उल्लेखनीय है कि ये बोर्ड राज्य के मुख्य-२ मन्दिरो की प्रबन्ध व्यवस्था करते है।

इस समयातीत परन्तु स्वागत योग्य पग से राज्य मे एक राजनीतिक विवाद उठ खड़ा हुआ है और कम्यूनिस्ट पार्टियो को बड़ी असमंजस की स्थिति मे धकेल दिया है। बोर्ड के शेष २ सदस्यों मे से एक को हिन्दू मन्त्री नामज़द करते हैं और दूसरे एक को गवर्नर (राज्यपाल)।

राज्य के हिन्दू सस्थान देर से गवर्नमेंट से यह माग करते रहे थे कि मन्दिरो का प्रशासन आस्तिको के एक स्वतन्त्र प्रतिनिधि सस्थान को सौंप दिया जाय। परन्तु एक के बाद दूसरे प्रशासन ने मुख्यत राजनीतिक कारणो से इसे स्वीकार नही किया था।

१९८२ मे यू० डी० एफ० ने जो कम्यूनिस्ट विरोधी और 'हिन्दू समर्थक' भारी बहुमत से शासनारूढ हुआ था राज्य मे मन्दिरो के प्रशासन के सम्बन्ध मे जाच करने और भावी प्रबन्ध व्यवस्था की सिफारिश करने के लिए १ सदस्ययी कमीशन नियुक्त किया था। इस कमीशन ने अभी २ महीने हुए अपनी रिपोर्ट गवर्नमेंट को दी थी।

कमीशन की अन्यान्य सिफारिशो मे तीन सिफारिश मुख्य थी अर्थात्—

१—मन्दिरो का प्रशासन राजनीति से सर्वथा पृथक् रखा जाय।

२—मन्दिरो का प्रशासन आस्तिक स्वायत्त प्रशासी प्रतिनिधि सस्थान क हाथ मे रहे।

४—समस्त राज्य के लिए एक ही सुगठित देवास्वम बोर्ड रहे।

चौ० माड़ूसिंह जी का असामयिक निधन

दिल्ली ७ अक्तूबर। हरियाणा के भू पू शिक्षा मन्त्री चौधरी माड़ूसिंह जी का अचानक निधन हो जाने से आर्यजगत मे शोक व्याप्त हो गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले और महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी ने सार्वदेशिक सभा के कार्यालय मे शोक सभा में स्वर्गीय चौधरी साहब को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि चौ० माड़ूसिंह जी आर्य समाज के अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्त्ता थे। राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन के वे सिपाही थे। अनेक सस्थाओं के सस्थापक और शिक्षण सस्थाओं के स्तम्भ थे। वे एक सच्चे व ईमानदार देशभक्त थे। कई वर्षों से वे सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान थे। उनके निधन से जहा राष्ट्रीय क्षति हुई है, वहा आर्य समाज की भी महती क्षति हुई है विशेषत हरियाणा मे आर्य समाज का एक स्थिर स्तम्भ गिर गया है।

शोक सभा में शोक प्रस्ताव पारित करते हुए दिवगत आत्मा की सदगति के लिए प्रार्थना की गई और शोक कुल परिवार के प्रति हार्दिक सवेदना प्रकट की गई।

सच्चिदानन्द शास्त्री
सयुक्त मन्त्री

खालिस्तान प्रश्न पर सिखों के दो ग्रुपों में भिड़ंत : ९ घायल

लन्दन ७ अक्तूबर। गत रात यहा से ६० किलोमीटर दूर ब्रेवसेंड स्थित एक गुरुद्वारे के बाहर खालिस्तान समर्थक सिखो और इस पृथकतावादी माग का विरोध करने वाले सिखो के बीच हिंसक सघर्ष मे ९ लोग घायल हो गए। झगड़े के सिलसिले मे १९ लोगों को बन्दी बनाया गया।

प्राप्त विवरण के अनुसार दो पक्षो के सैकड़ो सिख गुरुद्वारे के बाहर इकट्ठे हो गये। खालिस्तान' समर्थकों ने भारत राष्ट्रपति जैलसिंह तथा प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के खिलाफ नारे लगाए दूसरी ओर राष्ट्र वादी सिखो ने भारत और उसके नेताओ के पक्ष मे नारे लगाये। इसके बाद दोनो ओर से एक दूसरे पर ईंटो पत्थरो व अन्य फेंककर मारी जाने वाली चीजो की बौछार शुरू हो गई। पुलिस ने काफी जद्दो जहद के बाद दोनो लड़ाकू पक्षो को अलग करके तितर-बितर किया। पथराव मे दो पुलिस अधिकारियो समेत ९ लोग घायल हो गए। दोनो पक्षो के १२ लोगो को विभिन्न आरोपो मे बन्दी बनाया गया।

खालिस्तान-समर्थक सिखों के अनुसार बर्मिघम मे स्थित भारत समर्थक सिखो के एक गुट ने हाल ही मे घोषणा की थी कि यदि ब्रिटेन मे कोई व्यक्ति तिरंगा झंडा जलाने का दुःसाहस करेगा तो यह गुट उसका मुकाबला करेगा। पृथक्तावादियों ने इस चुनौती को स्वीकार करते हुए स्थानीय अखबारो के माध्यमो से कहा कि वह ६ अक्तूबर की रात को ग्रेवसेंड गुरुद्वारे के बाहर भारत का राष्ट्रीय ध्वज जलायेंगे। इस पर राष्ट्रवादी सिख बर्मिघम से ग्रेवसेंड पहुच गए। स्थानीय राष्ट्रवादी सिख भी उनके साथ मिलकर गुरुद्वारे के सामने जा डटे। जैसे ही 'खालिस्तान समर्थको ने झंडा जलाने की कोशिश की तो झगड़ा शुरू हो गया।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

क्या हम प्रगति कर रहे हैं ?

श्री ओम्प्रकाश त्यागी महामन्त्री सा० आ० प्र० सभा

हमारी प्रगति का झण्डा लहरा रहा है :—

आज मानव की प्रगति का झण्डा सर्वत्र लहरा रहा है। समाज का कोई क्षेत्र नही है जहा मानव ने प्रगति न की हो। आज मानव अपनी वैज्ञानिक खोज के सहारे पानी मे मछलियो की भांति घूम ही नहीं रहा अपितु समुद्र तल की खोज कर रहा है स्थल पर इसके आने जाने के अद्वितीय साधन है और आकाश मे पतग की तरह उड ही नहीं रहा अपितु विभिन्न तारों की खोज कर रहा है और आकाश मे इसके विभिन्न प्रकार के विमान आखो से दूर विभिन्न कार्यो मे चक्कर लगा रहे हैं। विनाश करने के लिये इसने एटम बम आदि साधन बना लिये हैं कि दो तीन मिनिट मे ही दुनिया को अपना जीवन सभालना मुश्किल पड जायेगा। इसी लिए दुनिया अगले विश्व युद्ध को करने को उद्यत नही है।

कहने का तात्पर्य यह है कि समाज के आर्थिक सामाजिक वैज्ञानिक आदि सभी क्षेत्रो मे मानव की बुद्धि का चमत्कार दिखलाई दे रहा है। पाश्चात्य जगत् मे आप जाय तो आपको अचम्भा हो जायेगा कि वहां का मानवीय जीवन। प्रायश मशीनमय बन गया है। उनके दफ्तर में जाने के लिये आप पैदल नहीं जा सकते हैं अपितु आपको दो या तीन फिस्ट का सहारा लेना पडेगा।

भौतिक उन्नति हो रही है :—

मानव आत्मा और बुद्धि का मेल है। ससार में मानव की उपर्युक्त समस्त प्रगति को भौतिक उन्नति कहा जा सकता है। बुद्धि ने विज्ञान के सहारे जिस क्षेत्र को पकडा वहीं चमत्कार कर दिया है। भौतिक उन्नति मे जहा मानव की सुख सुविधा का प्रश्न आया तो मानव ने ऐसा चमत्कार कर दिखाया कि इसका जीवन ही मशीनो पर निभर हो गया है। महिलाओ को रसोई घर से छुट्टी हो गयी है और वह मानव के समान ही काय कर रही है। पुरुष और स्त्रिया समाज के प्रत्येक क्षेत्र मे अच्छा कार्य कर रही हैं। परन्तु मानव के सम्मुख शत्रु के विनाश का प्रश्न आया तो इसको अपनी बुद्धि के सहारे ऐसे शस्त्र बना डाले हैं कि युद्ध छिडते ही शत्रु ही नही अपितु दुनिया ही विनाश के कगार पर पहुच जायेगी। कहने का तात्पर्य यह है कि समूची भौतिक उन्नति एक विशेष खतरे पर खडी हो गयी है। कब क्या हो जाय इसको कोई दार्शनिक नही कह सकता है।

आत्मिक उन्नति की अवस्था :—

हमारी शिक्षण सस्थायें विद्यार्थियों के शरीर और बुद्धि को बढा रही है परन्तु उनकी आत्मा की ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा है। अब एक नया नारा लगाया जा रहा है कि धर्म का राजनीति से कोई ताल्लुक नहीं है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि भविष्य में आत्मिक उन्नति को बिल्कुल रोक दिया गया है। धर्मो से उनका तात्पर्य वर्तमान मजहबो से है धर्म का मजहबों से कोई ताल्लुक नही है परन्तु क्या सरकार धर्म द्वारा स्वीकृत दस सिद्धान्तो को मानकर उन्ही का प्रचार सर्वत्र करेगी। सरकारो को इस दिशामें सोचना ही होगा। जब आत्मा के अभाव में समूचा ससार दानव बन जायेगा तो सरकार क्या करेगी रूस जैसे देशो ने हो ऐसा किया है परन्तु उन्होंने धर्म की बातों को लेकर उनका प्रचार शुरू कर दिया है।

आत्मा की उपेक्षा से पाश्चात्य जगतमें जो होरहा है उसे देखकर व्यक्ति दग रह जाता है। वहा पर मनुष्य और स्त्रियों के विवाह केवल दोनों के शारीरिक सौन्दय पर निभरकर रहे हैं। उसके बाद विवाहों को स्थिर रखना मुश्किल हो जाता है। वहा के विवाह एक आर्थिक व्यापार बन गए हैं। उन पर स्त्री पुरुष किसी का विश्वास नहीं। सभी अपने भविष्य को देखते हैं। बुढापे मे लगभग सबको अकेले जीवन व्यतीत करना पडता है। सरकार ने उनके लिये मकान बनाये हुए हैं। विवाहों से पूर्व भी बच्चे पैदा होते हैं। उन्हे सरकार ले लेती है। उन्हे पता ही नहीं कि उनका बाप कौन है विवाह के बाद बच्चे पैदा होते हैं। भेड बकरियो की भांति माता पिता उनका पालन करते हैं परन्तु उनके बडे हो जाने पर उनका कोई सम्बन्ध नही रहता है। समाज मे ऐसा सम्मिलित परिवार नही है जहां गरीब बच्चे या विधवा आराम से जीवन व्यतीत करते हो, स्त्री पुरुष का पैसा अलग २ बैंकों में जमा होता है क्यों कि दोनों को एक दूसरे पर विश्वास नहीं है। विवाह कब समाप्त होकर दोनों को अलग से जीवन न बिताना पड़े।

पाश्चात्य जगत् के इस भौतिकीय जीवन का वर्णन करते हुए एक लेखक ने बडी किताबें लिखी हैं। वह इग्लैण्ड का निवासी था परन्तु वहां से भागकर उसने अमेरिकामे अपनी किताबें छपवायीं। उसने तब जाकर लिखा है कि समाज में अपनी मा और महारानी विक्टोरिया को छोड कर ऐसी कोई लडकी नहींहै जो अपने को साफ प्रकट कर सके उसकी बात सही थी।—

एक अध्यापक ने अच्छा उदाहरण दिया :—

पाश्चात्य जगत् की भौतिक उन्नति को देखकर एक अध्यापक ने अपने विद्यार्थियों के सम्मुख योरोप का एक नक्शा रखा और सबको कहा कि कुछ समय पश्चात् वह उसे फाड देगा और आपको उसे बनाना है। थोडी देर पश्चात् नक्शा अध्यापक ने फाड दिया और लडकोको उसे फिर बनानेको कहा एक लडका आया और उसने उसे बनाने का प्रयत्न किया परन्तु असफल रहा कुछ देर पश्चात् उसकी मेज पर हवा आई और कागजों को जमीन पर फेंक दिया। उसने उन्हें उठाने का प्रयत्न किया तो टुकडा उल्टा पडा था और उस पर व्यक्ति के एक हिस्से की शक्ल बनी थी। उसने समस्त टुकडों को उल्टा कर लिया उनपर व्यक्तिका ढांचा बना था व्यक्तिकी शक्ल वह जानता था इसलिए उसने अपने समस्त टुकडों को जमा कर लिया, परन्तु उसे यह विश्वास नही था कि नक्शा बने या न बने।

अध्यापक ने तब आकर विद्यार्थी को नक्शा लाने को बोला। वह तब आकर टुकडो को उल्टा करके ले गया। अध्यापक ने उसे देखकर कहा कि नक्शा ठीक है। लडका चुप था। जब उससे पूछा तो उसने समस्त कहानी बतलायी। अध्यापक दग रह गया। उसने लडकों को कहा कि भौतिक उन्नति ने आज मानव समाज और दुनिया को तोड डाला है। इसे आज बनाने का सवाल है। इसका एक मात्र हल यही है कि मानव की आत्मा और बुद्धि दोनों का विकास कर उसे सही रूप मे मानव बना दिया जाय। ऐसा करने पर ससार मे सुख शान्ति दोनों आ जायेगी। वेद ने इसी उपदेश को इस प्रकार कहा है कि —

'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।'

अर्थात् हे मनुष्यो तुम स्वय मनुष्य बनो और दूसरों को मनुष्य बनाओ।

भारत पश्चिम की ओर जा रहा है :—

खेद इस बात का है कि आज भारत अपने अस्तित्व को खो रहा है और पश्चिम की ओर भाग रहा है। पश्चिमकी अच्छी बातें लेने में कोई आपत्ति नहीं है। परन्तु उनके भौतिक जीवन की नकल करना अपने परिवार व समाज को खतरे मे डालना है। चीन जापान आदि के बच्चो ने यहां आकर यही कहा—परन्तु भारतीय नवयुवकों ने उस ओर ध्यान नहीं दिया है। इसे भारत का दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है।

उन्नति का सही मार्ग :—

वैदिक धर्म ने भौतिक तथा आत्मिक उन्नति का अध्ययन कर उन्नति का सही मार्ग बतलाया है कि भौतिक उन्नति अच्छी परन्तु इस पर नियन्त्रण करने के लिए आत्मिक उन्नति अवश्य होनी चाहिये।

मानव का स्वरूप क्या हो :—

१—अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न होकर सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझो।

२—सत्य को ग्रहण करे और असत्य का विरोध करे।

३—संसार का उपकार करें अर्थात् सबकी शारीरिक आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति।

४—सब के साथ प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथा योग्य व्यवहार करें।

धार्मिक सिद्धांत हिन्दी की परीक्षाएं

धर्म के मर्म और धार्मिक सिद्धान्तों को समझने, धर्म और धार्मिक सिद्धान्तों के विषय में भ्रान्तियों से बचने तथा अपनी प्रिय सन्तानों को बचाने व वर्तमान भ्रष्ट वातावरण में नैतिक मूल्यों की रक्षा के लिए भारतीय सिद्धांत परिषद नजीबाबाद(बिजनौर) द्वारा संचालित सिद्धांत प्रवेश, सिद्धांत कोविद, सिद्धांत शास्त्री तथा सिद्धांत वाचस्पति परीक्षाओं के केन्द्र स्थापित कीजिए तथा निम्न पते पर नियमावली मगाइये।

—शिवचरण शर्मा, मन्त्री

भारतीय सिद्धान्त परिषद नजीबाबाद (बिजनौर) उ० प्र०

सम्पादकीय

हैदराबाद किधर ?

श्री विंग कमाण्डर ऐम. सादुल्ला (रिटायर्ड) लिखते हैं—

"बचपन की स्मृतियां धुंधली हो सकती हैं परन्तु धार्मिक जलूसों और साम्प्रदायिक उपद्रवों की चर्चा के समय मुझे कुछेक जलूसों, उनमें तथा उनके कुछ देर बाद हुए उपद्रवों की याद ताजा हो जाती है।

शियाओं द्वारा मुहर्रमों के जलूस निकाले जाया करते थे जिनका अन्त शियाओं और सुन्नियों के मध्य छोटे मोटे झगड़ों में हुआ करता था। मुझे यह भी याद है कि धार्मिक त्यौहारों के अवसर पर हिन्दुओं के जलूस निकलते थे। जहां तक मेरी स्मृति काम देती है दशहरा के अवसर पर सबसे बड़ा जलूस निकाला जाया करता था। परन्तु मुझे किसी ऐसे साम्प्रदायिक दंगे की याद नहीं है जो इन त्यौहारों एवं जलूसों के दौरान या बाद में हुआ हो। कभी कभी हम हिन्दुओं और मुसलमानों के मध्य हुई मामूली झड़पों के विषय में सुना करते थे जो शीघ्र ही भुला दी जाती थी।

हिन्दू मुस्लिम छात्र सौहार्द

मुझे स्कूल के दिनों की याद है जबकि साम्प्रदायिक सौमनस्य व्याप्त था। उन दिनों साम्प्रदायिक दंगा अपवाद था नियम न था। यदि कोई साम्प्रदायिक दंगा हो भी जाता था तो जान माल की क्षति प्रायशः नहीं होती थी।

रजाकार आन्दोलन के उभरने तक (पुलिस कार्यवाही १९४८ से कुछ समय पूर्व) जबकि वातावरण कुछ खराब हो गया था हम छात्रों में अलगाव की कोई भावना न थी। विद्यार्थी काल की मेरी स्मृतियों का अन्त उस समय हो गया था जबकि १९५२ में मैं वायु सेना में चला गया और हैदराबाद छोड़ गया था। रिटायर होने पर १९७६ में मैं हैदराबाद लौटा था।

लौटने पर मुझे ज्ञात हुआ कि मुसलमानों ने पंखा नाम से एक नया जलूस निकालना शुरू कर दिया है और जिसने मुहर्रम जैसे जलूस की तरह विशाल रूप ग्रहण कर लिया है। गणेश पूजा के जलूस ने बहुत मामूली होने के कारण मेरी स्मृति पर कोई विशेष प्रभाव नहीं डाला। आज इस जलूस ने बड़े से बड़े जलूस का रूप धारण किया हुआ है। यह पर्व इतनी धूमधाम से मनाया जाता है कि हर मुहल्ला और सड़क देवी की मूर्ति से सजाया जाता और एक हफ्ते तक लाउड स्पीकरों पर कानों को फोड़ देने वाले भजनों और गीतों के साथ पूजार्चन किया जाता है।

जलूस को प्रतीकों वा मूर्तियों से सजाना इस्लाम के विरुद्ध है

यह ठीक है कि मूर्ति पूजा और धार्मिक जलूस हिन्दू धर्म के अंग हैं। मूर्तियों वा प्रतीकों से आवृत जलूस की व्यवस्था करने वा निकालने की मुसलमानों को इस्लाम की इजाजत नहीं है।

ऐसा करना इस्लाम के मौलिक सिद्धांतों के विरुद्ध है। ऐसा प्रतीत होता है कि हिन्दुओं और उनके त्यौहारों की प्रतियोगिता में मुसलमान अपने मज़हब को भूल गए हैं। और झण्डे वा प्रतीकों से चिन्हित जलूस को इस्लाम में कोई स्थान नहीं है। तथाकथित पंखे वा इस प्रकार के जलूस की मुसलमानों द्वारा व्यवस्था किया जाना इस्लाम के सिद्धांत की अवहेलना करना है।

बहुसंख्य हिन्दुओं को महत्व मिलना ही चाहिए

आजकल कानों में यह सिद्धांत प्रतिध्वनित हो रहा है—बहुसंख्य वर्ग होने के नाते हिन्दू अपने धर्म और अनुष्ठानों के लिए क्यों दूसरों की मनौती करते फिरें। वे रक्षात्मक स्थिति में क्यों रहें ? और भारत हिन्दू राज्य क्यों नहीं रहे ? उनकी मांग और प्रतिक्रिया ठीक ही देख पड़ती है। देश के वर्तमान नक्शे के दृष्टिगत अल्पसंख्यकों की स्थिति में इससे कोई अन्तर पड़ने वाला नहीं है विपरीत इसके बहुसंख्यक वर्ग और उनके धर्म को समुचित महत्व दिए जाने से परिमित संख्या के पुनरुत्थान वादियों की जिन्हें महत्व प्राप्त है कटुता की भावनाओं को यदि कोई होगी, राहत मिलेगी और इसके परिणाम स्वरूप पारस्परिक सद्भाव और सहिष्णुता का मार्ग प्रशस्त होगा। हम यह भी आशा कर सकते हैं कि भविष्य में भयंकर साम्प्रदायिक टक्करों से भी बच सकेंगे। साथ ही समस्त वर्गों के लिए साम्प्रदायिक एकता, शांति व सद्भाव का पुनरावर्तन संभव हो सकेगा। हमें उत्तेजना का परिहार करना सहिष्णुता से काम लेना व प्रतिशोध (बदला लेना) आदि के लिए बल प्रयोग से बचना और एक दूसरे के जान-माल की रक्षा करना सीखना चाहिए मुसलमान घरों में या मस्जिदों में इबादत करें और जलूसों के लिए वे सड़कों का आश्रय न लें। उन्हें दूसरों की हानि न करनी चाहिए और नाही असुविधा पैदा करनी चाहिए। हिन्दुओं को जहां वे चाहें पूजा उपासना करने देनी चाहिए और जलूस भी निकालने देने चाहिएं। उन्हें दूसरों की सम्पत्ति का विनाश और मानसिक शांति भंग नहीं करने देनी चाहिए।

मुसलमानों को निषिद्ध धार्मिक अनुष्ठानों से बचना चाहिए

जबकि तमाम दुनिया के मुसलमान इस्लामिक पुनर्जागरण की चर्चा कर सकते हैं तो हिन्दू लोग भारत में अपने धर्म के सन्दर्भ में ऐसी चर्चा क्यों नहीं कर सकते ? जबकि हिन्दू लोग अपनी धार्मिक आवश्यकताओं के अनुसार धार्मिक पूजा अनुष्ठान और समारोह कर रहे हों मुसलमानों को उचित है कि वे पुनर्जागरण का चमत्कार पैदा करने के प्रयास में उसकी विश्वसनीयता सिद्ध करें। इसके लिए जहां तक संभव हो मस्जिदों में ही नियमित प्रार्थना अदा करें और अपने धार्मिक पर्व कुरान में वर्णित विधि से इस्लाम की सच्ची भावना से ही मनाएं उन्हें जलूस निकालने और वर्जित अनुष्ठानों के करने में संलग्न नहीं होना चाहिए। ऐसा होने से मुसलमानों को न केवल इस समय और बाद में भी अच्छी स्थिति प्राप्त होगी, वरन बहुसंख्यक वर्ग के साथ होने वाली मुठभेड़ों और तनाव में भी कमी आ जायगी जिससे वातावरण भी शांत हो जायगा।

नेताओं की उत्तरदायिता

साम्प्रदायिक एकता पैदा करने और उसको बनाए रखने की राजनेताओं तथा धार्मिक नेताओं की भी बहुत बड़ी जिम्मेवारी है। प्रजा के योगक्षेम की रक्षार्थ उनके द्वारा सही मार्ग दर्शन होना चाहिए। उन्हें यह भी उचित है कि वे गंदी राजनीति का सहारा लिए वा निजी स्वार्थों की पूर्त्यर्थ उनका गलत मार्ग दर्शन किए बिना जनता का सही मार्ग दर्शन करें और उनकी सुरक्षा कल्याण और उन्नति की अवस्थाएं पैदा करें। अल्पसंख्यक वर्ग से सम्बद्ध राजनेताओं और उनके मजहबी नेताओं की इस दिशा में विशेष जिम्मेवारी है।

मजलिस सब मुसलमानों का प्रतिनिधित्व नहीं करती

इस विषय से सम्बद्ध समाचारों के अपर्याप्त प्रकाशन एवं प्रचार के कारण आम लोगों की यह गलत धारणा है कि ऐम. आई एम. (मजलिस) राज्य (आन्ध्र) के सभी मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करती है वस्तुतः यह मजलिस प्राचीन हैदराबाद काल के कुछेक बचे खुचे पथभ्रष्टों का ही प्रतिनिधित्व करती है जो पुराने शहर तक ही सीमित हैं और जो संकुचित दृष्टिकोण को अपनाए हुए अपनी छोटी सी दुनिया में रहते हैं। राज्य के बाकी सभी मुसलमान मजहबी भेदभाव के बिना किसी भी ज्ञानवान और शिष्ट व्यक्ति की भांति सत्य, न्याय और शिष्ट व्यवहार के सिद्धांतों को ऊंचा रखते हैं।

(हिन्दू. मदरास २९-९-८४)

टिप्पणी

लेखक महोदय ने जो विश्लेषण किया है वह निष्पक्ष और सही है। उन्होंने समस्या के समाधान के लिए जो सुझाव प्रस्तुत किए हैं वे जहां उपयोगी एवं प्रशंसनीय हैं वहां उनकी सद्भावना के भी द्योतक हैं। इस लेख के सम्बन्ध में जो प्रतिक्रिया आम जनता तथा बुद्धिजीवियों की प्रकाश में आयेगी वह इन स्तम्भों में प्रकाशित की जायगी।—सम्पादक)

सामयिक चर्चा—

संविधान का बदला जाना अनिवार्य

आजकल देश मे राष्ट्रपति शासन पद्धति अपनाए जाने के पक्ष और विपक्ष मे बहुत कुछ कहा जा रहा है। अनेको की दृष्टि मे ऐसा होने से देश मे तानाशाही की जड जमने का भय है। कुछेक को ऐसा होने से सत्ता से वचित रहने वा हो जाने का भय सता रहा है जब कि सविधान विदो को कई प्रदेशो के साथ अन्याय की स्थिति पैदा हो जाने की आशका है। इस सम्बन्ध मे श्रीयुत डा०हिदायतुल्ला (पूर्व उपराष्ट्रपति)के उद्गार एव सम्मति दृष्टव्य है—

'कुछेक व्यक्तियो ने उन कतिपय देशो के हवाले से जहा यह पद्धति प्रचलित है भारत मे भी राष्ट्रपति शासन पद्धति अपनाने की बहस शुरु की है।

अमेरिका के सविधान मे सीनेट मे समस्त राज्यो को समान प्रतिनिधित्व का प्रावधान किया गया है। चूकि अमेरिका के प्रेसीडेन्ट पर सीनेट का अकुश रहता है अत उसे प्रत्येक निर्णय के लिए सीनेट को अपने साथ रखना होता है।

सीनेट मे प्रतिनिधित्व आबादी पर आधारित नही होता अत देश के समस्त राज्यो को समान प्रतिनिधित्व दिया जाना कठिन होगा। उत्तर प्रदेश जैसे बडे प्रदेश सिक्किम जैसे छोटे राज्य को समान अधिकार नही देने देंगे। विपरीत इसके छोटे राज्यो को समान प्रतिनिधित्व नही दिया गया तो वे आपत्ति करेंगे।

यदि अपर हाउस (राज्य सभा) मेआबादी पर आधारित वर्तमान पद्धति जारी रहती है तो कोई भी प्रेसीडेन्ट (राष्ट्रपति) मात्र हिन्दी भाषी राज्यो की सहायता से देश पर शासन कर सकता है अत इस प्रकार की पद्धति का दक्षिण के राज्य विरोध करेंगे।

फ्रास की राष्ट्रपति शासन प्रणाली मे राष्ट्रपति को बडे निर्णयो के करने मे निचले हाउस (लोक सभा) के स्पीकर (अध्यक्ष) और सीनट के प्रेसीडेन्ट का समर्थन प्राप्त रहता है। भारत मे इस प्रकार की प्रणाली को गम्भीर खतरे का सामना करना पड सकता है और वह यह है कि यदि इनमे से एक भी सहमत न हो तो बडे निर्णय नही किये जा सकते।

यदि राष्ट्रपति शासन पद्धति अपनानी पडेगी तो सविधान के मौलिक ढाचे मे परिवर्तन करना होगा। ऐसा करनेके लिए लोकसभा को भग करके जनमत सग्रह करना होगा। वर्तमान सविधान बढिया है। दुर्भाग्य से हमारे नेताओ ने शुरु से ही इसमे रद्दोबदल करना शुरु कर दिया था। यह प्रवृत्ति जड जमाती गई यहा तक कि प्रशासन अदालतो के फैसलो की अवहेलना करते हुए भी इसमे आसानी से रद्दो बदल कर देते हैं।" (भारतीय वकील परिषद् ट्रस्ट दिल्ली द्वारा आयोजित गोष्ठी मे २-१०-८४ को दिए भाषण से)

'हमारी सम्मति मे सविधान के क्रियान्वयन से सम्बद्ध व्यक्ति क्रियान्वयन विधि से अनभिज्ञ है। इसके क्रियान्वयन को उज्ज्वल रूप देने के लिए इसमे कुछेक सशोधन करने होंगे।"

अनेक देशभक्त एव समाज हितैषी जन ससदीय प्रणाली के बदले जाने की आवश्यकता इसलिए अनुभव कर रहे हैं कि इसकी आजमाइश (परीक्षण) से देश को स्वच्छ निष्पक्ष, कुशल और स्थिर प्रशासन नही मिल सका और आमजनता को स्वतन्त्रता से हरक्षेत्र मे जो सुख और शान्ति मिलनी थी वह न केवल मिली ही नही अपितु इससे पूर्व की कई विशिष्ट निधियो से भी हम वचित हो गए वा वचित होते जा रहे हैं। अत उनकी कामना है कि भारतीय समाज निर्माण तथा प्रशासन की ऐसी व्यवस्था की जाय जिससे लोगो को भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति और योगक्षेम की सुविधाए प्राप्त हो, अपराध प्रवृत्ति और नफे खोरी पर अकुश लगे समाज तथा राष्ट्र विरोधी तत्त्वो से निर्भय एव सुरक्षित रहे।

जिस किसी भी शासन प्रणाली को अपनाने से इस अभीष्ट की सिद्धि हो चाहे वह ससदीयहो राष्ट्रपतिय हो वा अन्य कोई अपनाने मे आगा पीछा नही देखना चाहिए। समय और स्थिति की यही माग है।

प्रशासन देशभक्त, चरित्र के धनी अपने विषय मे निष्णात, कुशल दृढव्रती और कर्मठ लोगो के हाथो मे रहना चाहिए चाहे वे चुने गए हो वा अपनी योग्यता व विशिष्टताओ के कारण बिना चुनाव के प्रशासनतन्त्र मे मनोनीत हुए हो।

देश का भाग्य सूत्र स्वयभू वा पेशेवर स्वार्थी राज नेताओ के हाथो मे नही रहना चाहिए जो पार्टी के बजाय स्व को देश के बजाय पार्टी को और अगली पीढी के बजाय अगले चुनावो को वरीयता देते हो।

तुम्हारी बीबियां तुम्हारे लिए खेतियां है

कुरान शरीफ की तद विषयक आयत और उसकी समीक्षा नीचे अकित की जाती है—

३६

"प्रश्न करते हैं तुमसे रजस्वला को वह भी अपवित्र है, पृथक रहो ऋतु समय में, उनके समीप मत जाओ जब तक कि वे पवित्र न हो। जब नहा लेवे उनके पास उस स्थान से जाओ, खुदा ने आज्ञा दी।

'तुम्हारी बीबिया तुम्हारे लिए खेतिया हैं। बस जाओ जिस तरह चाहो अपने खेत में "तुमको अल्ला लग्व (बेकार व्यर्थ) शपथ मे नहीं पकड़ता।

म० १। सि २। सू. २। आ २२२, २२३, २२५

समीक्षक—जो यह रजस्वला का स्पर्श सग न करना लिखा है वह अच्छी बात है। परन्तु जो स्त्रियो को खेती के तुल्य लिखा और जैसा जिस तरह से चाहो, जाओ, यह मनुष्यों को विषयी करने का कारण है—

(सत्यार्थ प्रकाश १४ वा समुल्लास पृ ८१६, ८४६)

रामलाल कपूर ट्रस्ट बहालगढ़, सोनीपत द्वारा

प्रकाशित सस्करण सन १९७२

श्री गुमानसिंह दिवंगत

श्री गुमानसिहजी पनगढिया (बनेडा, राजस्थान) के निधन का समाचार (१५ ८-१९८४) अकित करते हुए बडा दुख होता है। वह आर्य समाज के बडे प्रेमी और उत्साही कार्यकर्ता थे। अजमेर, आबू और दिल्ली आदि मे उन्होने आर्य समाज की बडी लगन और निष्ठा से सेवा की।

रूबी जनरल बीमा कम्पनी दरियागज दिल्लीके वे वर्षो पर्यन्त एकाउन्टेंट और आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के लेखा निरीक्षक रहे थे।

उन्होंने सार्वदेशिक सभामे अपने अग्रज श्री मनोहरसिहपनगढिआके नामसे ५०००) की स्थिरनिधि कायम की थी जिसका ब्याज सुपात्र छात्रो, दीन, हीन, असहाय अबलाओ एव विधवाओ की सहायता मे खर्च होता है।

परमात्मा दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

प्रेरक संस्मरण

पं० इन्द्रजीत

पडित जी शाहजहापुर की किसी कचहरी में काम करते थे। बडे परिश्रमी और कर्तव्य परायण थे। रिश्वत को हाथ न लगाते थे। आर्य समाज का कार्य बडे उत्साह से करते थे।

उन्होंने बीमार होने के कारण छुट्टी ली। उनके अफसर ने उन्हें बुलाकर कहा 'तुम आर्य समाज के काम मे सर गर्म हिस्सा लेते हो जो एक बड़ा अपराध है। या तो आर्य समाज की सेवा करो या सरकार की। दोनो सेवाओं मे से कौन सी चुनते हो ?

प० इन्द्रजीत ने बडे शान्ति के साथ कहा—"मैं दोनों में से आर्य समाज की सेवा को चुनता हू।" फलत वह सर्विस से निकाल दिए गए।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

महर्षि दयानन्द का वार्त्तालाप और उपदेश

(१)

ब्रह्मचर्य और योगाभ्यास से ही घोर शीत से रक्षा

माघ का महीना था। प्रातःकाल का समय था। श्रोताओं के जाड़े से दांत कटकटा रहे थे और शरीर कांप रहे थे। परन्तु महाराज नंगे शरीर प्रवचन में निमग्न थे। उस समय ठाकुर गोपाल सिंह (कर्णवास) ने हाथ जोड़कर पूछा "भगवन! घोर शीत के कारण हम सबके शरीर सिकुड़ रहे हैं। दांतों से दांत बज रहे हैं :— परन्तु महाराज पर इस घोर शीत का जरा भी प्रभाव दिखाई नहीं देता इसका क्या कारण है?"

स्वामी जी ने मुस्कराकर कहा "ब्रह्मचर्य और योगाभ्यास ही इसका कारण है।" गोपालसिंह ने कहा "तो हम कैसे जानें?' उस समय स्वामी जी ने अपने हाथों के अंगूठे घुटनों पर रखकर ऐसे दबाए कि तत्काल ही उनके माथे पर ओस के कणों की भांति पसीने के बिन्दु चमकने लगे। तन पर रमाई हुई सारी मिट्टी भीग गई, बगलों में से पसीना टपकने लगा' दर्शकों के लिए यह एक कल्पनातीत दृश्य था।

(२)

मैं गंगा को जलमय मानता हूँ

स्वामी जी से एक दर्शक ने पूछा "आप गंगा को क्या मानते हैं? महाराज ने कहा कि "जो कुछ दीखती है।" उसने पूछा 'आपको क्या दीखती है?' स्वामी जी ने उत्तर दिया "जो आपको दीखती है परन्तु कहना सचसच।" वह बोला "मुझे तो जल दीखता है।" स्वामी जी ने कहा—तो मैं भी यही मानता हू।

(३)

जब एक युरोपियन को लज्जित किया

जाड़े की ऋतु में महाराज एक दिन कर्णवास के निकटवर्ती एक ग्राम में प्रचारार्थ गए। लौटते हुए रात्रि हो जाने पर गंगा के तट पर रेतो में योगारूढ़ हो गए।

उसी समय बदायूं के कलक्टर अपने किसी युरोपीय मित्र के साथ शिकार के लिए गंगा के तट पर घूम रहे थे। अचानक उनकी दृष्टि उस स्थान पर जा पड़ी जहां स्वामी जी योगास्थ आसीन थे। वे अपने साथी सहित स्वामी जी के पास पहुचे।

चांदी की विशाल शिला पर जैसे गर्म स्वर्ण की प्रतिमा विराजमान हो उसी प्रकार चमकती हुई स्वामी जी की देह को उन्होंने रेत पर विराजते देखा। बड़ी देर तक वे आश्चर्य पूर्ण आंखों से संन्यासी के सुन्दररूप को, समाधिस्थ निमग्नता को, तपश्चर्या को देखते रहे। अन्त में जब महाराज ने आंखें खोलीं तो शिष्टाचार की प्रक्रिया में प्रवृत्त हुए।

चलते समय कलक्टर महाशय ने विनयपूर्वक पूछा "हमें बड़ा आश्चर्य है कि इतना जाड़ा पड़ रहा है, नदी का किनारा है, रात का वक्त है आप बर्फ तुल्य ठंडी रेती पर लंगोट मात्र लगाए नग्न बैठे हैं। क्या आपको जाड़ा (शीत) नहीं लगता?'

स्वामी जी उत्तर देने ही लगे थे कि कलक्टर महाशय का साथी बीच में ही बोल उठा 'हृष्ट-पुष्ट मनुष्य है, खाने को अच्छे माल मिलते होंगे, इसे पाला क्यों लगे?'

स्वामी जी ने हंसकर कहा 'हम दाल रोटी के खाने वाले क्या माल खायेंगे? बहुत बल लगाया तो दूध पी लिया। परन्तु आप मांस-अंडे आदि पौष्टिक समझे जाने वाले पदार्थ खाते हैं और समय पड़ने पर बराण्डी पीने में भी कोई अड़चन न होती होगी। इसलिए यदि माल खाकर शीत सहा जाता है तो कपड़े उतार कर आइए और थोड़ी देर मेरे साथ बैठिए।" इस पर वह लज्जित हो गया और विषय बदलकर कहने लगा 'अच्छा तो बताइए आपको जाड़ा, क्यों नही लगता?"

उत्तर में महाराज ने कहा "इसका सहज में समझ में आने योग्य एक कारण तो अभ्यास है, आपका मुख सदा नंगा रहना है, इसलिए इसे ढापने की आवश्यकता इस समय भी प्रतीत नही होती।"

कलक्टर महाशय ने सकेत करके साथी को बहुत बोलने से रोक दिया और वे स्वामी जी को नमस्ते करके चले गए।

कहते हैं कलक्टर का यह साथी कोई पादरी था और कारणवश उनके साथ आया था।

अथ सामवेद संहिता

(दो०) उस प्रभु का करना स्तवन, ऋषि उशना पथ मान।
उसके ही गुणगान को, परम श्रेय पथ जान॥
(सो०) कान्तिमान भगवान, जीव मित्र उन्नति प्रद।
हैं वे सुरथ समान, जीवन यात्रा में सफल॥
(छं० ६) भक्ति सुपथनायक! अनन्त बलधाम! सर्वरक्षक भगवन्!
अमित आपके बल से पोषित रहे सदा हम सब तव जन,
सबविधि कुटिल अदानवृत्ति से मुक्त करो सबका जीवन।
सहज शत्रु जो मर्त्य जनों का हरो द्वेष वह द्रुत भगवन्॥
ज्यों अनिवार्य मीन को पानी, सहज मनुज सामाजिक प्राणी।
ऐसे जीवन मध्य उभरते, बड़े दोष दो, उसको छलते॥
वृत्ति अदान समाज विरोधिनि, दूजी द्वेष वृत्ति गतिरोधिनि।
दानवृत्ति यदि करे न सिंचन, जानो मृत सामाजिक उपवन॥
दान सकल गुण गण में उत्तम, हीन अदान कथित अधमाधम।
दुर्गति-नरक तलक ले जाती, वह वैतरणी नदी कहाती॥
वितरण रूप दान के द्वारा, तिरे नदी धन देने हारा।
यज्ञ दान में ही सुप्रतिष्ठित, दान मध्य पांचों मख गुम्फित॥
देकर एक देव कहलाए, मौज मजे निज असुर सुहाए।
देववास यों स्वर्ग कहाया, महिमावन्त उच्चपद पाया॥
असुर गए पाताल कहाए, फल कार्पण्यय दोष के पाए।
इसी भांति अति कुटिल दूसरी द्वेष वृत्ति जीवन की गहरी॥
है यह दोष प्रगति में बाधक, सदा परायों का अपघातक।
अन्यों से नहिं प्रीति कराता, सबसे वैर सदा उपजाता॥
युद्ध-ज्वाल पल में भड़कादे, सकल समाज भस्म करवा दे॥

—श्रोमदत्त भारद्वाज ब्यावरा

दो चीजों से दूर

६—त्वम् नो अग्ने महोभि. पाहि विश्वस्या अराते।
उत द्विषो मर्त्यस्य॥

दयानन्द वचनामृत

महर्षि की दीक्षा

'आर्य धर्म की उन्नति के लिए मुझ जैसे बहुत से उपदेशक आपके देश में होने चाहिए'। ऐसा काम अकेला आदमी भली प्रकार नही कर सकता। फिर भी यह दृढ़ निश्चय कर लिया है कि अपनी बुद्धि और शक्ति के अनुसार जो कुछ दीक्षा ली है उसे चलाऊंगा।"

(महर्षि का स्वयं कथित जीवन चरित्र पूना व्या०)

परोपकार करना ही महर्षि का परम पुरुषार्थ था

"हम स्वयं भी इन सब ओर घूमे हुए हैं। जिस पहाड़ पर कि अलकापुरी थी उस पर भी मैं इस विचार से गया था कि एक बार ही अपना शरीर बर्फ में गला कर संसार के धन्धों से निवृत्त हो जाऊं परन्तु वहां पहुंचकर विचार में आया कि इस जगह पर मर जाना तो कोई पुरुषार्थ नहीं है। हां ज्ञान प्राप्त करके परोपकार करना पुरुषार्थ जरूरी है। इस विश्वास के बदलने पर मैं लौट आया था। अब तो विदित होता है कि जीवात्मा की मृत्यु ही नही है।"

(पूना का व्या० १०, इतिहास विषय)

—संकर्ता रघुनाथप्रसाद पाठक

साम्यवाद और आर्यसमाज

श्री स्वामी मन्तोषानन्द

यद्यपि आर्यसमाज को महर्षि दयानन्द ने हजारों वर्ष पूर्व के महर्षियों के निश्चित सिद्धान्तों पर अवलम्बित किया है तथापि यह स्पष्ट है कि मध्यकाल में आर्य जाति में आई विकृति को दूर करने के लिए प्राचीन वेदानुकूल युक्तियुक्त सिद्धान्तों को नई परिस्थितियों के अनुसार एक नए क्रम में आर्यसमाज द्वारा पेश किया गया है। दूसरे शब्दों में आर्यसमाज मानव के स्वार्थमय स्वभाव के अत्याचार के विरुद्ध एक सफल प्रभावशाली विद्रोही, यद्यपि यह विद्रोह शान्त, तथा विधायक है अन्य इसी प्रकार के विद्रोहों के समान प्रतीकार के क्रोध से क्षुब्ध तथा उच्छृंखल नहीं है।

इस समस्त बुद्धिमत्ता तथा दूरदर्शिता का कारण इसके संस्थापक का अत्यन्त स्वार्थ त्याग, शान्त तथा क्षमाशील हृदय, अत्यन्त उच्च आचार तथा पूर्ण विद्वत्ता है। खुश किस्मत है आर्यसमाज जिसे एक ऐसा पूर्ण संस्थापक मिला जैसा संसार के किसी अन्य आन्दोलन को नही मिला।

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द की परोपकार की बलि वेदी पर कुर्बानी अद्वितीय है, कौन ऐसा सुधारक है जिसे लगभग ११ बार विषपान कराया गया हो। बीसियों बार पत्थरों की वर्षा हुई हो और अनेकों वार घातक आक्रमण हुए हों किन्तु जिसने कभी इन बातोंकी परवाह न की हो जिसका स्वर्ग आरोहण भी जीवनसे अधिक शानदार रहा हो और जीवन मृत्यु से भी अधिक शानदार। विष के प्यालों को दूधके घूट करके पी जाने वाले गुरुके चेले अनुयायी कैसे हो सकते है, इसका अनुमान करने की जरूरत नहीं है। आर्यसमाज का इतिहास इसका साक्षी है।

भारत मे सुधार के लिए जो-जो कुर्बानियां आर्यसमाज ने दी हैं बच्चे-२ को ज्ञात है। जाति-बहिष्कार, मारपीट ही नही सहा गया, अपितु दर्जनों जीवन मातृभूमि और धर्म की भेंट चढ़ाए गए। यदि भारत दुलारों और ऋषि के प्यारों के इतने कार्य से भारत बेदार न होता तो अचम्भा ही था। किन्तु आर्यसमाज ने अपने काम मे अद्वितीय सफलता प्राप्त की है और इसकी सब क्षेत्रों में नकल की जा रही है। आर्यसमाज आज देश का पथ-प्रदीप है।

महर्षि दयानन्द और उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज और आर्य समाज की वृत्ति पर चलने वाले अन्य समाजों द्वारा हिन्दू समाज में जो परिवर्तन हुआ है उसकी तुलना संसार के अन्य सुधारक क्रान्तिकारी परिवर्तनों के साथ सहज ही की जा सकती है।

अन्य आन्दोलन

आर्यसमाज के आन्दोलन के अलावा दो और प्रमुख आन्दोलन इस समय संसार के समक्ष विद्यमान है। एक महात्मा लूथर का प्रोटैस्टेट तथा दूसरा साम्यवाद जिसके मुख्य कर्णधारों में कार्लमार्क्स तथा श्री लेनिन शेष सूची को प्रारम्भ करते हैं।

प्रोटैस्टेन्ट आन्दोलन अपने समय में धर्म गुरुओं (पोपों तथा उनके प्राचीन पादरियों) के धार्मिक अत्याचारों के विरुद्ध (प्रोटैस्ट) विरोध के रूप में था। अधिक समय बीतने पर आन्दोलन भी विविध मत-मतान्तरों से आक्रान्त हो जर्जरित हो गया। इसी का सींचा हुआ और इसी के तय्यार किए हुए क्षेत्र में साम्यवाद का उदय हुआ।

प्रोटैस्टेट आन्दोलन वास्तव में एक धार्मिक आन्दोलन था जिसने विविध परिस्थितियों मे पड़कर राजनैतिक रूप भी ग्रहण किया। युरोप की सामाजिक उन्नति में इस आन्दोलन का बड़ा हाथ है।

साम्यवाद शुरुमें प्रोटैस्टेन्ट आन्दोलन के एक अंकुर के रूप में था किन्तु समय पाकर इसने स्वतन्त्र सत्ता ग्रहण कर ली।

यद्यपि साम्यवाद प्रोटैस्टेन्ट धर्म के फैलाए हुए विचार स्वातन्त्र्य का ही परिणाम था किन्तु प्रोटैस्टेन्ट जहां मूल में धार्मिक थे वहां साम्यवादी मूल में राजनैतिक थे।

प्रारम्भ में साम्यवाद पूंजीपतियों तथा स्वतन्त्र राज सत्ता के अत्याचारों के प्रतिरोध के रूप में उठा था। किन्तु चूंकि पूंजीपतियों तथा राजाओं के संरक्षण में धार्मिक पादरी भी थे और उनके साथ मिलकर काम करते थे या यों कहें कि चर्च (धर्म) को पूंजी पतियों तथा राज सत्तावादियों ने अपना उल्लू सीधा करने का साधन बना रखा था इसलिए साम्यवादी चर्च के भी शत्रु बन गए।

जहां-जहां साम्यवाद का प्रचार हुआ है वहां-वहां धर्म संस्था का भी पूर्ण नाश करने का प्रयत्न किया गया है। आर्यसमाज के समान यह धर्म विरोध कोई सुधारक और विधायक विरोध न था अपितु प्रतिकारात्मक उच्छृंखल युद्ध घोषणा थी जिसका उद्देश्य धर्म संस्था को ही समूल नष्ट करना था।

युरोप के श्रमिकों और कृषकों की हीन दशा के कारण यह रोष पैदा हुआ था। इस रोष का प्रभाव इतना था कि इसने कार्लमार्क्स जैसे त्यागी महात्मा को अपने घेरे में ले लिया। टालस्टाय जैसे सज्जन और शान्त प्रकृति के महात्मा के दिल को भी हिला दिया और लेनिन जैसे निर्भीक को भी लगभग आयु भर दर-दर के धक्के खिलाए।

साम्यवाद के कार्य को भौतिक दृष्टि से चाहे पसन्द किया जाय किन्तु यह निश्चित रूप से तय है कि उसने अपने अनुयायियों के आत्मोद्धार तथा अध्यात्म विकास का कोई प्रबन्ध नहीं किया अपितु उन्हें इस कार्य से अत्यन्त दूर ले गया है।

भारत में आर्यसमाज एक ऐसा सजीव तथ्य है जिसने भारतीय समाज को नितान्त अधोगति से अत्यन्त उन्नति के शिखर पर पहुचा दिया है। (शेष पृष्ठ १० पर)

वैदिक शिष्टाचार-पारिवारिक परिधि में

—डा० सत्यदेव आर्य, जयपुर

शिष्टाचार का सीधा सा अर्थ है अच्छा आचार, अच्छा व्यवहार। सुशीलता व शालीनता का व्यवहार ऐसा व्यवहार जिसमें कोई कटुता न हो। मनमुटाव न हो। विद्वेष व वैमनस्य न हो तथा व्यक्ति एक दूसरे की ओर आकर्षित होता हो।

परिवार व समाज के सदस्यो का ऐसा व्यवहार उस परिवार व समाज को शिष्टता का श्रेय प्राप्त कराता है। परिवार मे ऐसा व्यवहार जहा पारिवारिक परम्पराओ एव स्वस्थ मान्यताओ पर आधारित होता है, वहा समाज मे समय- २ पर निर्धारित व्यवस्थाओ पर भी ऐसी व्यवस्थाए शिष्टाचार की पृष्ठभूमि बनाती हैं। उदाहरणार्थ सामाजिक व्यवस्था मे विवाहित युवक युवती, पति-पत्नी के रूप मे साथ २ कही भी आयें जायें कोई उगली नहीं उठाता, लेकिन वही युगल यदि अविवाहित स्थिति मे साथ २ घूमें फिरें तो समाज उनके इस व्यवहार को अशिष्टता की ही सज्ञा देगा।

हो सकता है सामाजिक व्यवस्थाए, जो समय २ पर निर्धारित की जाती हैं, वैदिक मान्यताओं पर आधारित न हो, जैसे किसी समय नारी को 'नरकस्य द्वार' बताया गया व शूद्र तथा नारी को वेदाध्ययन के अधिकारो से वंचित रखा गया 'स्त्री शूद्रो ना धीयतामिति श्रुते'। अगमना बात पात के बन्धनों मे 'नौ घर दस चूल्हे' की भ्रामिक प्रथाओं से पारिवारिक व सामाजिक एकता का विघटन किया गया। छूआ छूत की पराकाष्ठा मे शूद्र को गले में घण्टी बाधने को बाध्य किया गया। बाल विवाह, अनमेल-विवाह विधवा विवाह निषेध, औसर मोसर, श्राद्ध तर्पण तथा यज्ञ याग जैसे धार्मिक अनुष्ठानो मे पशुबलि और नरबलि तक की सामाजिक व्यवस्थाए निश्चय अवैदिक रही हैं। खेद है कि आज भी कुछ वर्ग के लोग इनमें से कतिपय व्यवस्थाओं पर अमल करते हैं जो अवाछनीय है अहितकर हैं। अत शिष्टाचार पर परिकल्पित विचार करते समय हमे वैदिक मान्यताओ पर ही विशेष ध्यान देना होगा।

पारिवारिक परिधि में शिष्टाचार की शिक्षा दीक्षा बालकपन ही में प्रमुखता से माता-पिता व घर के बड़े बुजुर्ग, पितर जन द्वारा दी जाती है। तदन्तर गुरु, आचार्य, व आप्तजनो द्वारा। चूंकि बच्चे स्वभावत बडो के आचरण का अनुसरण करते हैं अत यह आवश्यक है कि इनका आचरण सर्वथ अनुकरणीय हो। पारिवारिक सदस्यो का आपसी सम्बन्ध विविध रिश्तों मे जुडा होता है। पति-पत्नी, माता पिता, पुत्र-पुत्री, भाई-बहिन, सास-बहू, देवर-भाभी आदि सभी सम्बन्ध आपस मे बडी घनिष्ठता के हैं, और अपने अपने दायरे में अत्यन्त स्नेह सम्मान शालीनता एव सदभावना के व्यवहार की अपेक्षा रखते हैं। सबको एक दूसरे के साथ इन्हीं दायरो मे यथा योग्य शिष्ट व्यवहार करना होता है। यही शिष्ट व्यवहार बालको किशोरो व युवकों के लिए अनुकरणीय बनता है।

हमारे पितरजन एव आप्त महानुभावो ने समय समय पर वैदिक मान्यताओं पर आधारित आचार व्यवहार के जो नीति-नियम निर्धारित किये हैं वे सार्वभौम हैं, सर्वकालिक हैं। जाति देश काल और समय की सीमा से रहित सब अवस्थाओं मे अनुशीलन योग्य महाव्रत हैं पाच यम और पाच नियम। यम हैं—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। नियम हैं—शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान। (यो० द० २-३०, ३२) यम प्रमुखता से समाज में अन्यों के साथ व्यवहार की नीति निर्धारित करते हैं जबकि नियम अपने ही व्यक्तित्व को निखारने मे साधक सिद्ध होते हैं। पूर्ण निष्ठा के साथ इनका परिवार व समाज मे अनुष्ठान होते रहने से बालको किशोरों व युवकों को शिष्टाचार की समुचित सीख-मिल पाती हैं। वेद का आदेश है कि—

> अनुव्रतः पितु पुत्रो माता भवतु संमना।
> जाया पत्ये मधुमती वाच वदतु शन्तिवाम्॥ अथर्व. ३-३०-२

(अनुव्रत पितुः पुत्रो) पुत्र-बालक-पिता का अनुव्रती बने, पिता के अनुकूल आचरण वाला आज्ञाकारी होवे (माता भवतु संमना) माता का समान मन वाला हो (जाया पत्ये मधुमतीम) पत्नी पति के साथ प्रीतिपूर्वक माधुर्यमय व्यवहार करे (वाच वदतु शन्तिवाम्) तथा मीठी वाणी ही बोलें ताकि घर में सदा शान्ति का वातावरण बना रहे।

पुत्र पिता का अनुव्रती बने इसके लिए यह आवश्यक है कि पिता सदा उत्कृष्ट अनुसरणीय आचरण ही प्रस्तुत करे। लेकिन कभी जाने अनजाने मे कोई गलती हो ही जाती है जैसे कोई सज्जन मिलने आए और कदाचित पिता उससे मिलना न चाहे तब यदि वह पुत्र को यह आदेश दे कि "कह दो घर पर नहीं हू" तो स्पष्ट है पिता ने बालक को झूठ बोलने का आदेश दिया। बालक के मानस पर इसका प्रतिकूल प्रभाव अवश्य ही पडेगा और सम्भव है वह भी कालान्तर मे झूठ बोलने का आदी हो जाय।

माता के साथ बालक को समना होने का वेद आदेश दे रहा है। समना अर्थात् माता के मन का सा, माता का मन और उसका मन एक हो, मा की इच्छा ही उसकी इच्छा हो, उसकी इच्छा के विरुद्ध वह कोई काम न करे। लेकिन यदि विवाह योग्य होने पर मा उसे बाध्य करे कि उसके पसन्द की अमुक लडकी से उसका विवाह तभी हो सकता है जब लडकी वाले अमुक राशि का दहेज दें, तो निश्चय है कि लडके के मन मे मा के इस आदेश के प्रति अवज्ञा ही उत्पन्न होगी और वह इस आदेश की अवहेलना करे। उस स्थिति मे वह मा का समना हो नहीं पाएगा। स्पष्ट है बालक माता-पिता के अनुकूल आचरण व आदेश का ही अनुसरण करें—प्रतिकूल का नही।

माता पिता पति-पत्नी के रूप मे कैसा व्यवहार करते हैं कैसा आपसी सम्बन्ध बनाए रखते हैं यह पारिवारिक शिष्टाचार का अच्छा मापदण्ड बनता है और इसका सन्तान पर भारी प्रभाव पडता है। माता पिता पति पत्नी के रूप मे कितना घनिष्ठ एव स्वस्थ्य सम्बन्ध बनाए रक्खें इस बारे मे वेद कैसी विलक्षण व्यवस्था कर रहा है कि—

> समञ्जन्तु विश्वे देवा समापो हृदयानि नौ।
> स मातरिश्वा सधाता समुदेष्ट्री दधातु नौ॥ ऋ० १०-८५ ४७

समञ्जन्तु विश्वे देवा —विवाह के समय विवाह मण्डप मे पति पत्नी घोषणा करते हैं कि ऐ! समस्त उपस्थित विद्वतजन आप यह अच्छी तरह जान लें कि-

समापो हृदयानि नौ—हम दोनो के हृदय जल के समान एक हुए हैं, घुल मिल कर एक-रूप तथा एक रस हुए हैं और एक रूप व एक रस ही बने रहेगे। दो अलग अलग जल जब मिलते हैं तो एक रूप हो जाते हैं। इन्हे फिर अलग नही किया जा सकता। मिलने पर वह अपने २ गुण दोष एक-दूसरे को देकर एक रस हो जाते हैं, जैसे ठण्डा व गर्म जल मिलने पर गुनगुना तथा मिष्ट व क्षारीय जल मध्यम स्वाद का हो जाता है उसी प्रकार हमारे हृदय मन एक रूप एक रस व जल ही के समान शात शीतल व गभीर बने रहेगे जल के अनन्तर वेद मन्त्र अन्य उदाहरणो से घोषणा करवाता है कि—

समातरिश्वा—दो वायु जिस प्रकार मिलकर एक हो जाते हैं इसी प्रकार हम दोनो के प्राण भी एक हो गए हैं। दो शरीर एक प्राण हो गए हैं। प्राण शारीरिक शक्ति का सचार करते हैं। जीवन के प्रमुख आधार बनते हैं। प्राणोकी क्षणिक रुकावट या अव्यवस्था जीवन समाप्ति की घण्टी लगती है अत प्राण सर्वाधिक प्रिय होते हैं। पति पत्नी के एक प्राण हो जाने पर प्राणसम प्रिय होने और एक दूसरे को शक्ति सचरण के साधक बनने की यह सर्वोत्तम घोषणा है।

सधाता—जिस प्रकार सृष्टि का सृजन करके उसे भली प्रकार धारण करता है और नियमबद्ध सचालित करता है उसी प्रकार हम भी एक दूसरे को धारण करते हैं और नियमबद्ध रहकर गृहस्थ की गाडी चलाते रहने की घोषणा करते हैं।

समुदेष्ट्री दधातु नौ—जैसे उपदेशक श्रोताओ के प्रति अत्यन्त प्रीति और आत्मीयता का भाव दर्शाते हुए उन्हे कल्याणकारी उपदेश देता है और श्रोता पूर्ण तन्मयता से उसे सुनते हैं, उसकी शिक्षाओ को ग्रहण करते हैं और उसके अनुसार आचरण करके कृत कृत्य होते हैं उसी प्रकार हम पति पत्नी भी एक

दूसरे के कथन को सम्बद्ध व मीकृत करने और उसके अनुसार आचरण करते रहने की घोषणा करते हैं।

कितनी उत्कृष्ट वैदिक व्यवस्था है यह पति पत्नी के पारस्परिक सम्बन्धो की ! ऐसे आदर्श सम्बन्ध निश्चय ही परिवार व समाज के लिए सुखद तो होते ही है उत्कृष्ट शिष्टाचार का भी परिचय देते है तथा सन्तान के लिए अनुकरणीय होते हैं। लेकिन विपरीत इसके आजकल अधिकाश पति पत्नी में मतभेद, मनमुटाव तनाव, बात बात में विवाद और लडाई झगडे होते देखे जाते हैं। कारण है ना समझी, शिष्टाचारी शिक्षा की कमी, अहम्भाव, मिथ्याभिमान, स्वार्थ अविश्वास व एक दूसरे पर अपने व्यक्तित्व का प्रभुत्व जताने का भाव तथा अपने अधिकारो की माग का आग्रह। वस्तुत आदर्श दाम्पत्य सम्बन्ध मे यह सब व्यर्थ के विकल्प हैं। न कोई बडा न छोटा। दोनो ही के समान स्तर व अधिकार होते हैं। अपने अधिकारो की माग के स्थान पर उनके त्याग व प्रदान की भावना ही हितकर होती है। मान सम्मान व अधिकार स्वत ही खिचे आते हैं।

आज की विषम आर्थिक परिस्थितियों मे पति पत्नी दोनो को ही अर्थोपार्जन मे लगना पडता है लेकिन कुछ अर्थों तक यह जायज है। लेकिन यह भी सच हैं कि उस स्थिति मे घर की देख भाल ठीक से हो नही पाती। घर नौकरो, पास पडोसियो या सयुक्त परिवार मे बडे बुजुर्गों के भरोसे छोडना पडता है। बडे बुजुर्ग अधिकाश शारीरिक लाचारी के कारण अपने स्वत की देखभाल भी ठीक से कर नही पाते। घर की देखभाल क्या कर सकते हैं माता पिता का अधिकांश समय घर से बाहर व्यतीत होने से सन्तान को जो वाछित मातृ स्नेह, सरक्षण लालन पालन एव विकास का सुयोग मिलना चाहिए वह मिल नही पाता। माता का अन्यतम दायित्व सन्तान की शिक्षा दीक्षा का है-माता ही सन्तान की यथार्थ निर्माता होती है। लेकिन घर के बाहर की व्यस्तता मे वह इस दायित्व को ठीक से निभा नही पाती। परिणाम दुखद होता है। समाज मे अशिष्टता अनैतिकता व अन्याय का वातावरण बढता है। अत माता के रूप मे 'गृहपत्नी का कार्य क्षेत्र घर ही है घर से बाहर नही। बाहर क्षेत्र मे निकलने पर गृहपत्निया समानाधिकार की भी माग करती है। लेकिन कैसे समानाधिकार? पगार पद पदोन्नति प्रतिष्ठा आदि के या समाज सभा सोसायटी मे स्वतन्त्रता, स्वछन्दता एव स्वेच्छाचारिता के! वैदिक सभ्यता मे तो महिलाओ को समानाधिकार ही नही उनसे भी कही अधिक वरीयता के अधिकार दिये गये हैं। स्वयवर से स्वत अपने जीवन साथी को चुनने, अर्धांगिनी के रूप मे पति की अपूर्णता को पूर्ण करने, गृहस्वामिनी के रूप मे घर की सम्राज्ञी बनने तथा गृहस्थ रूपी यज्ञस्थली मे ब्रह्मापद सुशोभित करने के अधिकार दिये गए हैं स्त्री हि ब्रह्माबभूविथ (ऋ० ८ ३३ १९) अर्थात् स्त्री गृहस्वामिनी ही गृहस्थ रूपी यज्ञ की ब्रह्मा होती है। गृहयज्ञ की ब्रह्मा होने से वह समाज और राष्ट्र रूपी यज्ञ की भी ब्रह्मा बनती है। इससे अधिक और क्या अधिकार चाहिए।"

गृह स्वामिनी को स्वत ही सूझ बूझ के साथ गृहस्थ की आवश्यकताओ को यथा साध्य कम करके अर्थोपार्जन के निमित्त घर से बाहर न रहकर घर ही के क्षेत्र को सभालना श्रेयस्कर होता है। वेद इस दिशा मे आदेश देता है कि—

प्रबुध्यस्व सुबुधा बुध्यमाना दीर्घायुत्वाय शतशारदाय।
गृहान गच्छ गृहपत्नी यथासो दीर्घं त आयु सविता कृणोतु॥

॥अथर्व० १४ २ ७५

अर्थात् (शतशारदाय दीर्घायुत्वाय) सौ वर्ष तक की दीर्घायु जीने के लिए (सुबुधा बुध्यमाना) उत्तम बुद्धियुक्त सज्ञान होकर हे गृहपत्नी (प्रबुध्यस्व) तू श्रेष्ठ ज्ञान प्राप्त कर और उत्तम व्यवहार को यथावत् जान तथा गृहान गच्छ) तू घरो को जा, घरों को प्राप्त हो, घर गृहस्थी की सम्यक देखभाल कर (यथा सो दीर्घं त आयु सविता कृणोतु) इसी मे प्रभु तेरे दीर्घ आयु की कामना को पूर्ण करे तथा गृहस्थ तेरे देख रेख मे सुख समृद्धि से सदा आनन्दित रहे।

गृहस्थ की देखभाल मे गृहपत्नी को परिवार के छोटे बडे सभी सदस्यो का पूरा २ ध्यान रखना होता है तथा यथा योग्य ममता, स्नेह प्रेम प्रीति और आदर सम्मान का व्यवहार करना होता है। इसके लिए भी वेद निर्देश दे रहा है कि—

स्योना भव श्वसुरेभ्य स्योना पत्ये गृहेभ्य।
स्योनास्यै सर्वस्यै विशे स्योना पुष्टायैषा भव॥ अथर्व १४-२-२७

अर्थात् हे गृहपत्नी! तू घर के बडे बुजुर्ग सास श्वसुरादि को सुख देने वाली हो। पति को सुख देने वाली हो। घर के अन्य पारिवारिक सदस्यों को सुख देने वाली हो। (सर्वस्यै विशे स्योना) घर के सभी प्रजाजन सन्तान भृत्यादि के लिए सुखदायिनी हो तथा इन सबकी यथेष्ट पुष्टि करने वाली हो। बहुत बडे अधिकार व दायित्व दिये गए हैं गृहपत्नी को, लेकिन इसके लिए यह भी अत्यावश्यक है कि परिवार के सभी सदस्य गृहपत्नी को इतना स्नेह सम्मान दे कि वह गृह सम्राज्ञी ही बनी रहे।

परिवार मे बच्चे भी होते ही हैं चाहे वह बाल्यावस्था के हों या किशोरावस्था के। इनमे पारस्परिक व्यवहार जितना प्रेम प्रीति, सदभाव व सहयोग का होगा उतना ही उक्त परिवार सुसस्कृत एव शिष्टाचारी होने का प्रमाण प्रस्तुत करेगा तथा प्रतिष्ठा अर्जित करेगा। वेद इस दिशा मे आदेश देता है कि—

मा भ्राता भ्रातर द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यञ्च सव्रता भूत्वा वाच वदत भद्रया॥ अथर्व ३ ३० ३

अर्थात भाई भाई से द्वेष न करे, बहन बहन से द्वेष न करे, बहन भाई से या भाई बहिन से द्वेष न करे। सभी एकमत वाले सहृदयी होकर अपने नियम अनुशासन व अनुष्ठान के व्रती होकर सदा मीठी हितकर वाणी बोलें।

बच्चो में छोटी २ बातो पर लडाई झगडे होते ही रहते हैं। घर ही के बच्चो मे नही आस पडौस के बच्चों से भी। उसमे कभी कभी माता-पिता भी उलझ जाते हैं। परिणाम दुखद ही होता है। ऐसे झगडे बहुधा अनुदार वृत्ति के कारण होते हैं—जैसे घर मे कोई नया खिलौना लाया गया या मिठाई का पैकेट। सभी बच्चे यदि उसे हथियाने की पहल करे तो निश्चय ही झगडा होगा, लेकिन सभी पहले दूसरे को देने की उदारता बर्तें तो झगडा होगा ही नही। ऐसी 'इद न मम' की उदार भावना बच्चों में प्रारम्भ से ही पनपानी चाहिए।

इस प्रकार पारिवारिक परिधि मे वैदिक शिष्टाचार के इस महत्व को समझते हुए सभी सन्दर्भित महानुभाव यदि आचरण करे तो निश्चय ही पारिवारिक वातावरण सदा स्वस्थ्य, शालीन, सुखद एव सराहनीय बना रहे जो अन्यों के लिए यथार्थ मे अनुकरणीय हो। परिवार से ही समुदाय बनता है। पारिवारिक शिष्टता का प्रभाव समाज पर स्वाभाविकतया पडता ही है।

सामाजिक परिधि मे वैदिक शिष्टाचार का कैसा विधान है इस पर परिकल्पित विचार अगले लेख में प्रस्तुत किए जायेंगे।

जापान की यात्रा

(१)

प्रथम इसके कि पाठकों की सेवा मे आर्य विदेशयात्रा जो ८-९-८४ से आरम होकर बैंकाक, पटेया, हांगकांग, ताईवान, ओसाका, टोकियो, मनीला, कालालामपुर, पिनांग, सिंगापुर, वापस देहली २७-९-८४ की यात्रा के कुछ विवरण आपके सामने रखू परमपिता परमात्मा की अपार कृपा जो हम पर हुई वह यह कि १९६५ से लेकर १९८४ तक जितने भी हम भाई-बहिनें भारतवर्ष से मोरिशस मे, केनिया नैरोबी मे यूरोप के ११ मुल्कों और लन्दन में और अब जापान की यात्रा में गये, सब सकुशल वापस लौटे।

आपको ज्ञात ही है कि किसी यात्रा मे जाने से पहले यज्ञ और आशीर्वाद सभा होती रही है। इस बार भी उस परम्परा को कायम रखते हुए ७-९-८४ को शाम को ४ बजे यज्ञ एव आशीर्वाद सभाका आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता सविता बहन भू पू सासद ने की जिसमें स्वामी सत्यप्रकाश, प्रो वेदव्यास श्री लाला रामगोपाल शालवाले, क्षितीश कुमार वेदालंकार सम्पादक आर्य जगत्, प० हरिदत्त जी ने इस यात्रा को सफल बनाने के लिए अपने विचार एव आशीर्वाद दिये। स्वामी श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभाके स्कूलो के लडके-लडकियो ने बहुत सुन्दर गीत गाये। इस सभा का सचालन आर्यसमाज के अनथक कार्यकर्ता प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभाके मन्त्री रामनाथ सहगलने किया। श्री दयालचन्द मन्त्री आर्य समाज करोलबाग एव सब कार्यकर्त्ताओं ने इस यात्रा को सफल बनाने में जो सहयोग दिया, सब धन्यवाद के पात्र हैं।

जो कुछ ऊपर लिखे मुल्को मे हम ९१ यात्रियो ने देखा उसका विवरण देने से पहले यह भी आपको बता देना अपना कर्तव्य समझता हू कि जो अच्छे कार्यक्रम रहन सहन सफाई बसो मे आना जाना हमने देखा इनमे से कुछ कार्य श्री सजय गाधी हमारे भारतवर्ष मे भी करना चाहते थे मकान सफाई, ट्रैफिक कन्ट्रोल दीवारो पर इश्तिहार न लगाना इत्यादि कार्यको सजय गांधी ने नियमित प्रारम्भ कर दिया था। बहुत छोटी उम्र मे इस ससार मे जितना कुछ अपनी आयु मे हो सका किया। बाद में उनके किसी साथीने भी इन कार्यों को ठीक नही लगाया। उदाहरण के लिए बसो पर यात्रा करने के लिए लाईन बनाना बारी बारी चलना ये सब सुधार के कार्य अधूरे रह गए। आप यह न समझे कि मैं किसी पार्टी के लिए कुछ लिख रहा हू मैं अपनी सारी आयु में किसी राजनीतिक पार्टी का सदस्य नही बना न बनूगा। मैं केवल एक आर्य समाज का छोटा सा सदस्य हू। परन्तु सजय गाधी ने जो सुधार के कार्य अपने हाथ मे लिए उनकी प्रशसा किये बगैर भी नहीं रह सकता। परमात्मा से प्रार्थना करता हू कि कोई और संजय गाधी आवे, इन सच्चे अधूरे कार्यों को पूरा कर सके जैसा कि जिन मुल्को मे हम गए उनमें जो कुछ देखा।

मैंने आर्य जगत साप्ताहिक (२-९-८४) मे लिखा था, रेलो से विमान तक टकारा से जापान तक, (टकारा महर्षि दयानन्द की जन्म भूमि की यात्रा कर जो सकल्प जापान की यात्रा का किया था और जिसका अप्रैल १९८४ मे वैदिक साधन आश्रम तपोवन की यात्रा मे विवरण दिया था) प्रभु की अपार कृपा से यह यात्रा ८ सितम्बर से आरम्भ होकर २७ सितम्बर को समाप्त हुई।

मुझे बहुत ही दुःख हो रहा है कि इस यात्रा के प्रेरणा देने वाले पजाब के यात्रियों के पत्र आये और प्रेरणा भी मिली मगर पजाब का एक भी यात्री इस यात्रा में न जा सका। इसके लिए विवरण क्या लिखू आप सब लोग जानते हैं कि पजाब में क्या हो रहा है पजाब से पत्र आये कि मलिक जी हम जापान की यात्रा मे जाना तो चाहते हैं परन्तु पजाब की स्थिति को देखते हुए हम घर कैसे छोड सकते हैं।

जितने मुल्कों मे भी हम गए, अमर राज करने वालों की सख्या ६५ प्रतिशत है तो ३५ प्रतिशत वाले भी मिल जुलकर अपने अपने मुल्कों को



श्रीमती सविता बहिन भूतपूर्व ससदसदस्य प्रा० वेदव्यास, श्री लाला रामगोपाल जी सभा प्रधान स्वामी सत्यप्रकाश जी, श्री रामनाथ सहगल, श्री रामलाल मलिक आदि।

ऊचा उठाने मे लगे हुए हैं। आर्यों का चक्रवर्ती राज था, खो बैठे। एक भारत रह गया था दोनो तरफ से कट गया। केवल मोरिशस मे हिन्दू ५३ प्रतिशत हैं। ४७ प्रतिशत वाले मिल जुलकर रह रहे हैं हम भारत मे ८० प्रतिशत होते हुए भी सगठन न होने के कारण दुःखी हैं। यदि ८० प्रतिशत हम एक हो जायें तो भारत मे भी कोई समस्या नहीं होगी। १० प्रतिशत सोचेंगे कि हमने ८० से प्रतिशत से बिगाडकर क्या लेना है।

१९६५ से लेकर १९८० तक जितनी भी यात्राए हुई सब यात्राओ मे पजाब का पहला स्थान होता था। इस यात्रा मे किसी पजाब के यात्री की लिस्ट न देखकर मन भर आता है।

आशीर्वाद की सभा के पश्चात हम ९१ यात्री पालम एयरपोट चले गये। इन यात्रियो मे दिल्ली हरियाणा राजस्थान मध्य प्रदेश बिहार इत्यादि के यात्री थे, जैसा कि मैंने ऊपर लिखा पजाब का एक भी यात्री नही था। ८-९-८४ की प्रात को एयर इण्डिया एव जापान एयर लाईन के जहाजो मे हम १० बजे थाईलैंड की राजधानी बैंकाक पहुचे। आगे का विवरण मै अगले लेख मे लिखूगा। —रामलाल मलिक

(पृष्ठ ९ का शेष)

अकेले महर्षि दयानन्द के इस महान् कार्य के साथ युरोप के सैंकड़ों नेताओं के अविरल परिश्रमके फल की तुलना करना एक बड़ा रोचक विषय है। कहां केवल एक हस्ती का १५ वा २० वर्ष का काम और कहां सैंकड़ों वर्षों में सैंकड़ों व्यक्तियों के कार्य। किन्तु तुलना में तोलने से लोहे का छोटे से छोटा टुकड़ा रुई के पहाड़ के बराबर निकलता है।

निम्नांकित पंक्तियों में हम आर्य समाज का युरोप के साम्यवाद के साथ मुकाबला करेंगे। हमारा यह मुकाबलापूर्ण नहीं है। अधिक विचार से और अधिक समताओं और भेदों का ज्ञान हो सकता है।

तुलना

१—आर्यसमाज ने अपना उद्देश्य कुर्बानी और शान्त प्रचार से पूर्ण करने का यत्न किया है। बलात्कार और विरोध करने वालों के प्रतिकार का भाव नही रखा, अपितु प्रेम का ही भाव रखा है।

साम्यवाद

साम्यवाद ने अपना उद्देश्य, कुर्बानी, गुप्त प्रचार तथा हिंसा के द्वारा पूर्ण करने का यत्न किया है। प्रतिशोध इसका मुख्य साधन रहा है।

आर्यसमाज ईश्वर पर विश्वास रखता है।

साम्यवाद—ईश्वर पर विश्वास नहीं रखता।

३—आर्य समाज वेदों को मानता है।

साम्यवाद—किसी धर्म पुस्तक को नही मानता।

४—आ० स० सब—काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करने करना चाहिए।

साम्य—सब काम सासारिक उपयोगिता की दृष्टि से देख कर करते है।

५—आर्य—स० ससार का उपकार करना मुख्य उद्देश्य है।

साम्य—समार भर के श्रमजीवियों का उपकार करना मुख्य उद्देश्य है। शारीरिक और सामाजिक उन्नति करते है परन्तु आत्मिक उन्नति के लिए कोई स्थान नही।

६—आ० स०—व्यक्ति के लिए प्रथम दर्जे पर आत्मोन्नति के लिए आत्म स्वातन्त्र्य है और दूसरे दर्जे पर सामाजिक उन्नति के लिए सामाजिक पारतन्त्र्य आवश्यक है।

साम्य—व्यक्ति प्रथम दर्जे पर समाज के प्रति परतन्त्र है और गौण रीत्या स्वतन्त्र है।

७—आर्यसमाज सामाजिक उन्नति के द्वारा राजनीतिक उन्नति के भाव पैदा करता है।

साम्य—राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के पश्चात सामाजिक उन्नति आरम्भ करता है।

८—आर्य स०—गुण कर्मानुसार समाज का विभाग करके व्यष्टि रूपेण सब मनुष्यों की समानता क्रियात्मक रूप में स्वीकार करता है।

साम्य—श्रम विभागानुसार समाज का बटवारा करके सामान्यत: सबकी समानता स्वीकार करता है।

९—आर्य स० — वास्तविक प्रजातन्त्र के सिद्धान्तों को क्रिया रूप में लाने वाली सोसाइटी है।

साम्य—प्रजातन्त्र के सिद्धान्तों को स्वीकार करते हुए भी डिक्टेटरशिप के रूप मे एक तन्त्र शासन में विश्वास रखताहै।

१०—आर्यसमाज—परमत सहिष्णु है।

साम्यवाद—नही।

आर्य स०—मांस भक्षण का विरोधी है।

साम्य०—मास भक्षण गन्दा समझा जाता है परन्तु १०० प्रतिशत मनुष्य खाते हैं।

१२—आर्य स०—समाजके सब अंगों की समानरूपेण उन्नति चाहताहै

साम्य—केवल श्रम जीवियों की उन्नति चाहता है। दूसरों की क्रियात्मक रूप में तबाही।

१३ आर्य स०—सिद्धान्त परिवर्तनशील नही।

साम्य—सिद्धान्त परिवर्तित होते रहते हैं।

ऊपर की पंक्तियों से भेद स्पष्ट हो जाता है। साम्यवाद में जो गुण है वे अशेष आर्य समाज में विद्यमान हैं, किन्तु आर्यसमाज साम्यवाद के दोषों से रहित हे। आर्यसमाज के सिद्धान्तों का कोई भी सफल खण्डन नहीं कर सका। वास्तव में आर्यसमाज के सिद्धान्तों का संसार की किसी भी सोसाइटी के सिद्धान्त अतिक्रमण नहीं कर सकते।

आर्य समाज के सिद्धान्त वेद प्रतिपादित एवं सर्वश्रेष्ठ है आवश्यकता केवल अमल करने की है।

आतंकवादी बेबस लड़कियों के जिस्मों से भूख मिटाने के बाद हत्याओं पर निकलते थे

यह सब कुकर्म स्वर्ण मन्दिर परिसर में होता था

अज्ञात कारणों की वजह से सरकार ने स्वर्ण मन्दिर में सैनिक कार्रवाई से पहले चलगतिविधियों के एक बेहद और घिनौने पहलू पर रहस्य का पर्दा डाल दिया है। अकाल तख्त के भीतर और बाहर मजबूती से जमे आतंकवादियों का सफाया करने के बाद ५ जून को सुरक्षा बलों ने तहखाने और विभिन्न स्थानों से हथियारों को निकालने और मोर्चाबन्दी के लिहाज से छिपाकर गोलाबारी कर रहे आतंकवादियों की खोज का अभियान चलाया। सेनाधिकारी इस दृश्य को देखकर दंग रह गए जब मन्दिर परिसर के तहखाने में इधर-उधर कोनों में मादरजात नंगी लड़कियां छिपी पाई गईं। शुरु-शुरु में गलती से सैनिकों को उन्होंने आत्मघाती जत्थे का अंग समझा लेकिन चेतावनी देने पर हाथ ऊपर उठाए वह सामने आ गई।

एक विश्वस्त सूत्र ने बताया कि स्वर्ण मन्दिर परिसर से मिली बिलकुल नंगी लड़कियों की संख्या ६४ थी। सेनाधिकारियों को इन लड़कियों को तत्काल किसी दूसरी जगह भेजना पड़ा। इन अभागी लड़कियों के लिये सेना को साड़ियां व अन्य वस्त्र भी खरीदने पड़े। इस समय ये लड़कियां एक अज्ञात अस्पताल में ठहराई गई है। ये उन महिलाओं और बच्चो से अलग हैं जो दो जून को सैनिक कार्रवाई के कारण स्वर्ण मन्दिर मे फंसे रह गये थे।

ये लड़किया स्वर्ण मन्दिर में कैसे लाई गईं और उनके ठौर-ठिकानों का पता लगाने के लिए सेना ने नर्सिंग विभाग की कुछ महिला अधिकारियों को नियुक्त किया। मगर यह पूरा ब्यौरा सामने आ जाये तो कोई भी इज्जतदार आदमी शर्म से गर्दन झुका लेगा। इस ब्यौरे को सामने लाने मे सरकार के हिचकने का एक कारण शायद यह डर है कि सारी बात का खुलासा हो जाने से इन अभागी लड़कियों के लिए नए सिरे से जिन्दगी जीना मुश्किल हो जायगा और सिख समुदाय को मर्मान्तक आघात पहुचेगा।

इनमें कुछ लड़कियां गर्भवती हैं। ज्यादातर २० वर्ष के आसपास की है और प्रत्येक की अपनी दिल चीरने वाली दर्दनाक घटना हैं। एक ने बताया कि वह जनवरी में अपने मां-पाप के साथ स्वर्णमन्दिर में अरदास के लिए गई थी। जब वह मां-बाप के साथ घर लौट रही थी तो भिंडरांवाला के आतंकवादी उसे गुरु नानक निवास में दबोच ले गए। उसके माता-पिता ने हरचन्दसिंह लोंगोवाल और भिंडरां-

(शेष पृष्ठ १२ पर)

महात्मा [illegible] फूलसिह जन्म शताब्दी समारोह

जन्म—२४ २-१८८४, बलिदान १४-८-१९४२

हरियाणा के यशस्वी आर्य नेता, समाज सुधारक, शिक्षाविद अनेक आर्य समाजो के तथा लडके-लडकियो के स्कूलो एव गुरुकुलो के सस्थापक और दलितोद्धार के कार्य पर अपने प्राणो की बलि चढाने वाले श्री स्वर्गीय भक्त फूलसिह का जन्म शताब्दी समारोह २४ २ ११८५ को कन्या गुरुकुल खानपुर कला (सोनीपत) मे ससमारोह मनाया जायगा।

इस अवसर पर बृहत, आकर्षक और अत्यन्त उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण एक स्मारिका निकालने की भी योजना बनाई गई है और इसमे छपाने के लिए विज्ञापन देने की भी जनता को प्रेरणा की गई है।

आयोजको ने इस अवसर पर भी भक्त जी द्वारा सस्थापित स्कूलो, कालेजो, एव गुरुकुलों के विभिन्न विभागो को विस्तार देने की बहुव्यय साध्य कई योजनाओ की पूर्त्यर्थ २५ लाख रुपया सग्रह करने का आयोजन किया है।

नैपाल प्रचार

भारत की आजादी मे जिस तरह से आर्य वीरो का नाम उल्लेखनीय है उसी प्रकार नेपाल मे भी राणा शासन से मुक्ति दिलाने एव प्रजातन्त्र करने की मुख्य भूमिका आर्य वीरो की ही है। आपने आर्यवीर प० शुक्रराज शास्त्री स्व श्री दशरथ चन्द, स्व श्री धर्मभक्त आदि का नाम सुना होगा, उन्होने आजादी के लिए अपने को बलिदान कर दिया। उन्ही की आत्मा आज नेपाल में घूम रही थी, जिसे शरण यहा के आर्य समाजियो ने दिया है और कहा है कि हम भी उन आर्य वीरो की तरह वीर गति पायेंगे। यहा के आर्य लोगो का दृढ निश्चय है। गतवर्ष यहा यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न हुआ।

अपार हर्ष हो रहा है कि गत महीने मे २६ अगस्त के दिन आर्य समाज बेदिहारी ने एक और आर्य समाज की स्थापना की जिसका नाम आर्यसमाज सखवरवकरी के नाम से है जिसमे वैद प्रचारक नेपाल निवासी श्री रामचन्द्र सिह क्रान्तिकारी भजनीक श्री अमरदेव जी आर्य चनपटीया (प० चम्पारण) एव यहा के आर्य वीर दल के सदस्यों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

फिर दूसरा पुन इस आर्य समाज ने ६ सितम्बर १९८४ को पानी खाद से सीचकर तैयार किया जिसका नाम आर्यसमाज बिनबसीया बारा नेपाल रखा जो बारा जिला बिनबसीया ग्राम मे स्थित है। यह कार्यक्रम भी इन्ही विद्वानों के द्वारा सुव्यवस्थित ढग से हुआ। इसमें विशेष रुचि यहा के आर्य वीर दल के प्रधान सचालक श्री [illegible]भूषण आर्य (स्नातक) ने ली और यज्ञ सम्पन्न अच्छे तरीका से करा[illegible]

—मन्त्री नबुनीप्रसाद आर्य

(पृष्ठ १ का शेष)

पुलिस के अनुसार 'खालिस्तान समर्थक' सिख युवको ने पंजाब मे सैनिक कार्रवाई के विरोध में भारतीय राष्ट्रध्वज जलाने की अपनी योजना को खूब प्रचारित किया था अत नियत दिन गुरुद्वारे के बाहर दोनों पक्षो के बहुत से आदमी इकट्ठे हो गए थे।

पुलिस के अनुसार तथाकथित खालिस्तान की माग के समर्थको और विरोधियों के बीच ब्रिटेन में यह पहली तगडी भिडत थी। इससे पहले साउथ हाल क्षेत्र मे राष्ट्रवादी सिखो ने एक रेस्तरा के बाहर कहा सुनी के बाद 'खालिस्तान-समर्थको' का पीछा किया था। इस मामले के बाद ४ पृथकतावादियों को पकड़ा गया था।

आवश्यकता

गुरुकुल आर्य नगर (हिसार) मे एक अध्यापक की आवश्यकता है। अध्यापक की योग्यता—बी० एस० सी० उत्तीर्ण, जो नवमी तथा दसवीं कक्षाओं को सामान्य-विज्ञान तथा गणित पढा सके। इसके अतिरिक्त एक पाचक की भी आवश्यकता है जो भोजन बनाने मे निपुण हो। वेतन योग्यतानुसार दिया जायेगा। गुरुकुल हिसार शहर से ३॥ मील की दूरी पर बाल समन्द रोड के निकट स्थित है। गुरुकुल मे आने के लिए लोकल बस द्वारा बडी नहर के पुल पर उतरें। प्रार्थी महानुभाव निम्नलिखित पते पर पत्र व्यवहार करें अथवा मिलें।

—आचार्य गुरुकुल आर्य नगर
पोस्ट—आर्य नगर, जिला—हिसार (हरियाणा)

प्रस्ताव

दैनिक प्रभात एव आर्य मित्र मे प्रकाशित समाचारो से ज्ञात हुआ कि आर्य प्रतिनिधि सभा के ५, मीरा बाई मार्ग, लखनऊ स्थित कार्यालय पर गुरुकुल वृन्दावन से निष्कासित श्री योगेन्द्र सिह एव एक अन्य अपराधी व्यक्ति ने आर्य समाज से निष्कासित व्यक्तियो के षडयन्त्र से सभा के मन्त्री श्री मन मोहन तिवारी पर बन्दूक से प्राणघातक हमला किया, उस समय कार्यालय मे उपस्थित सभा अध्यक्ष श्री इन्द्रराज जी व अन्य अधिकारी ईश्वर की कृपा से बाल-बाल बच सके। यह समाज इस निन्दनीय घटना पर क्षोभ व्यक्त करते हुए शासन से अनुरोध करती है कि दोषी व्यक्ति को शीघ्र कठोर दड दिलाया जाए एव परमपिता परमात्मा से अपने अधिका-कारियो की दीर्घायु की कामना करती है।

सदस्य गण आर्यसमाज लाल कुर्ती, मेरठ कैन्ट

प्रतिलिपि निम्नलिखित की सेवा मे इस निवेदन के साथ कि कृपया इस घटना से सम्बन्धित दोषी व्यक्तियो के विरुद्ध शीघ्र कठोर कार्यवाही की जाये ताकि ऐसे काड की पुनरावृत्ति न हो सके।

१—प्रधान मन्त्री, भारत सरकार।
२—मुख्य मन्त्री, उ० प्र० सरकार।
३—गृह मन्त्री, उ० प्र० सरकार।
४—आई० जी „ „
५—डी० आई० जी, उत्तर प्र० सरकार।
६—सम्पादक, सार्वदेशिक, रामलीला ग्राउड, देहली।
७—सम्पादक, आर्य मित्र, आर्य प्रतिनिधि सभा, ५, मीरा बाई मार्ग, लखनऊ।
८—दैनिक प्रभात, मेरठ।

—देव प्रकाश, मन्त्री

सार्वदेशिक सभा पुस्तक भंडार के महत्वपूर्ण ट्रैक्ट

पुस्तक का नाम	लेखक	रु० पै०
(१) पूजा किसकी	डा० रामगोपाल वानप्रस्थ	)३५
(२) धर्म के नाम पर राजनैतिक षडयन्त्र	„	)३०
(३) ब्रह्माकुमारी की डोल की पोल	„	)६०
(४) आर्य समाज	„	)१३
(५) आस्तिक नास्तिक सम्वाद	ओम प्रकाश त्यागी	२ ००
(६) ईसाई पादरी भाग क्या	„	)३०
(७) विदेशी देन अस्पृश्यता	„	)४०
(८) आर्य समाज व अस्पृश्यता	„	)५०
(९) जन्मगत जातपात वेद विरुद्ध	„	१)००
(१०) पाठशाला के हीरे	रघुनाथ प्रसाद पाठक	१)००
(११) सघर्ष ही जीवन है	श्री ओमप्रकाश त्यागी	२,३०
(१२) वेद और आर्य शास्त्रों में नारी	डा० सत्यकाम भारद्वाज	१)००
(१३) मांसाहार घोर पाप	श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक	१)५०
(१५) भारत का एक ऋषि	„	)५०
(१६) होनहार बच्चे	„	४)००
(१७) देश भक्त बच्चे	„	३)३०
(१८) हमारे बढ़िया कारनामे	„	३,५०
(१९) वीर हो तो ऐसे	„	४,००
(२०) नैतिक जीवन	„	५)००
(२१) अग्रम विकास	„	५)००
(२२) आर्यसमाज के दस नियमों की व्याख्या	„	)५०
(२३) आर्यसमाज का सन्देश	„	)३०
(२४) वैदिक सूक्ति सुधा	श्री देवव्रत धर्मेन्दु	१)००
(२५) वेद सन्देश	„	)७५

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

३/५ महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान, नई दिल्ली १

देशान्तर प्रचार

इंग्लैण्ड में आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना

भारतीय सस्कृति एव वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करने की दृष्टि से इग्लैण्ड के प्रसिद्ध नगर नोटिघम मे आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना की गई है।

आर्य प्रतिनिधि सभा के त्रिदिवसीय सम्मेलन मे दस हजार से अधिक प्रवासी भारतीयो ने भाग लिया।

इस अवसर पर आर्य नेता एव हिन्दू सन्देश साप्ताहिक के सम्पादक श्री अशोक कुमार भारद्वाज सर्वसम्मति से अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

श्री भारद्वाज ने प्रवासी भारतीयो को आह्वान करते हुए कहा कि अपने महान् देश भारतवर्ष की अखण्डता को अक्षुण्य बनाये रखने के लिये प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी के हाथ मजबूत कर।

—कैलाश चन्द कपिला
मन्त्री

पुस्तक-परिचय

"प्रीतम भजनावली", सग्रहकर्त्री स्व० श्रीमती प्रीतम तलवाड, प्रकाशक श्री राधाकृष्ण तलवाड सी-१३७ अशोक बिहार, दिल्ली-५२, २०×३०=१६ मूल्य—केवल पाच बार गायत्री मन्त्र का जाप।

भजनो का सग्रह, उनकी प्राचीनता तथा आर्यसमाज की गतिविधि और कार्य-कलाप का परिचायक है, जो भी सज्जन इस पुस्तक को मगवाना चाहे प्रकाशक को ५० पैसे का टिकट भेज कर प्राप्त कर सकते है।

—सच्चिदा नन्द शास्त्री

(पृष्ठ ५ का शेष)

... वाला से अपनी बेटी लौटाने की बहुत ... कुछ नहीं निकला।

अब पता चला है कि लोगोवाल ने इस मामले मे ... मे अपनी असमर्थता जता दी थी। ऐसी ही घटनाओ के कारण मार्च के बाद स्वर्ण मन्दिर मे आने वाले श्रद्धालुओ की सख्या लगातार घटती रही।

यह अब पता चला है कि हथियार चलाने और विस्फोटकों का इस्तेमाल सिखाने के लिये कुछ दुर्दान्त आतकवादियो को १५ दिन के लिए स्वर्ण मन्दिर मे ठहराया जाता था। यहा उन्हे वासना का खेल खुलकर खेलने और लड़किया पकडकर लाने की छूट होती थी। इन आतकवादियो की पाशविक भूख को निरीह लडकियों के जिस्म से शान्त करने के बाद भिडरावाला उन्हे हत्या के जघन्य वारदातो के मिशन पर भेज देता था।

भिडरावाला और उसके चेले पतन के कुए मे नीचे तक पहुच गए थे। सिख धर्म की मर्यादा को बचाने के दावेदारो ने खुद स्वर्ण मन्दिर की पवित्रता से बलात्कार किया। अकाली नेता कुकृत्य के भागीदार है जिन्होने जान-बूझकर ऐसी घिनौनी हरकते होने दी।

(अजमेर केसरी १७-९-८४)

सार्वदेशिक प्रैस हरिदास वर्मा नई दिल्ली-१ में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसादपाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

ओ३म्

सार्वदेशिक

७५ स्वामी दयानन्द

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८५] सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र दयानन्दाब्द १६० दूरभाष २७४७७१

वर्ष ११ अंक ४६] आश्विन कृ० ११ स० २०४१ रविवार २१ अक्तूबर १९८४ वार्षिक मूल्य १६) एक प्रति ४० पैसे

दिव्य दयानन्द



वेदो का प्रकाश कर, धर्म का बताया मर्म ।
पल मे नसाई घटा, छाई छल छन्द की ।।
झाड मे शिकार सब फासना ही भूल गए ।
काटी जब डोरिया, अधर्मियो के फदे की ।।
पतित अनाथ हित, तूने ही बढाए हाथ ।
थोथे अभिमानियो की, मनमानी बन्द की ।।
देश की स्वतन्त्रता का, फूक गया गुरुमन्त्र ।
'विकल' थी दिव्य ज्योति दिव्य दयानन्द की ।।

रामचन्द्र 'विकल', एम पी

ऋषि दयानन्द आयेंगे

वाम मार्ग मत की प्रचण्डता के मध्य मे
जानता था कौन मुनि गौतमबुद्ध आयेगे ?
बुद्ध जी के ज्ञान की प्रभावती नदी के तुल्य ।
शकर आ यहा ब्रह्म ज्ञान सरसायेगे ।।
शकर के ज्ञान की बढेगी फिर बेल ऐसी,
जितने हैं जीव सभी ब्रह्म बन जायेंगे ।
बन के वे ब्रह्म सभी सोचते कौन कभी ।
त्रैतवादी स्वामी दयानन्द ऋषि आयेंगे ।।

—शिव

श्रद्धा के सुमन

यो तो जगती मे, लाखो मानव जीते मरते है ।
पर बिरले ही मरकर निज नाम अमर करते है ।।
कुछ पूर्व जन्म के प्राणी, सस्कार साथ लाते है ।
वे बीज योग पाकर ही, बर तरुवर बन जाते है ।।
जातियो और देशो मे, जो पुरुष महान् हुए है ।
वे त्यागी और सुधारक, ज्ञानी गुणवान हुए है ।।
ससृति के सर्व सुधारक, ससृति ने देखे भाले ।
पर दयानन्द ऋषि जन्मे, उन सब मे एक निराले ।।
तन, धर्म समाज सुदृढ का, दे ज्ञान राजनीति का ।
'सत्यार्थप्रकाश' किया फिर, तम हटा कुटिल रीति का ।।
उस जगत सुगुरु के गुणनित गोपाल कथन करता है ।
श्रद्धा के सुमन चढाकर नित चरणो मे धरता है ।।

—कविरत्न सिद्धगोपाल

सभा प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले का राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिह से वार्त्तालाप

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपाल शालवाले देश की विशेषत पजाब की स्थिति पर महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिह से भट करने गत सप्ताह (३ अक्तूबर) राष्ट्रपति भवन पहुचे । स्मरण रहे कि उसी दिन अमृतसर स्वर्णमन्दिर मे दर्शनी ड्योढी पर खालिस्तानी झडा फहराया गया था और पृथकतावादियो ने आपत्तिजनक नारे लगाए और राष्ट्रविरोधी साम्प्रदायिक विद्वेष-पूर्ण प्रस्ताव पास किए थे । सभा के अवैतनिक प्रम एव लोकसपर्क सलाहकार पण्डित ब्रह्मदत्त स्नातक भारतीय सूचना सेवा (रिटा०) भी उनके साथ थे ।

प्रारम्भिक शिष्टाचार के बाद श्री रामगोपाल शालवाले ने स्वर्ण मन्दिर से सरकार द्वारा सेना हटाने का स्वागत किया । परन्तु राज्य की अशान्त स्थिति को देखते हुए वहा से सेना पूर्णत हटाने के विचार पर असहमति प्रकट की ।

राष्ट्रपति जी ने सभा-प्रधान के विचारो का स्वागत किया और कहा कि आपकी ओर से साम्प्रदायिक सद्भावना बनाए रखने मे हमे सदैव सहयोग मिलता रहा है । धर्म के मामलेमे राजनीति को घसीटे जाने पर राष्ट्रपति जी ने अपना विरोध प्रकट किया और कहा कि उन्होने पजाब सरकार से कहा है कि वे आर्यसमाज तथा अन्य धर्मावलम्बियो के मुखियाओ को फीरोजपुर, अबोहर फाजिलका, गुरुदासपुर आदि सीमावर्ती इलाको मे साम्प्रदायिक एकता का प्रचार करने के लिए आमन्त्रित कर । उन्होने स्वर्णमन्दिर मे हुई उस दिन की दुर्घटनाओ पर बडी मार्मिक पीडा व्यक्त की और कहा कि हम सब को इस विदेशी षडयन्त्र को नेस्तनाबूद करने मे जुट जाना चाहिए ।

—सच्चिदानन्द शास्त्री
सयुक्त सभा-मन्त्री

सम्पादक—ओमप्रकाश पुरुषार्थी

सहसम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

मेरी विदेश-प्रचार यात्रा

—ओमप्रकाश त्यागी

मेरा लडका प्रिय अशोक कुमार त्यागी जनता ट्रैविल एजैन्सी मे कार्य करता है। इस एजेन्सी के पास एयर इण्डिया की एजेन्सी है। इसलिए वर्ष मे एक बार उसे अपने तथा अपने परिवार का एक टिकिट मिलता है। उसके द्वारा वह एयर इण्डिया मे कही भी जा सकता है। पहिले कर्मचारी के माता पिता को भी टिकिट मिलता था, परन्तु अब बन्द हो गया है। मेरे लडके ने सोचा कि यदि वह मेरा टिकिट बनवा देगा तो मैं अपनी बीमारी को बर्मिघम मे दिखा सकता हू। उसने प्रयास किया और टिकिट एयर इडिया ने मेरे नाम बना दिया। टिकिट बन जाने पर मैंने आर्य समाज का प्रचार करने का विचार बना लिया।

इंगलैंड प्रचार

मै टिकिट बनते ही इगलैण्ड गया, और अपने भाई के पास बर्मिघम पहुच गया। श्री डा० एस. पी. सिंह ने मेरी जाच की और मुझे ठीक बतलाया, परन्तु उनके अमरीका दौरे के पश्चात् मुझे उन्हे दिखलाना था। मैं बर्मिघम से अपने लडके प्रिय विजय कुमार के पास न्यूकैसिल पहुच गया। वहा से मैंने आर्य समाज लन्दन के प्रधान श्री ऐ एन भारद्वाज जी को फोन किया ज्ञात हुआ। कि वह रूस की यात्रा पर चले गए हैं। उनके बिना लन्दन जाना बेकार था। इतने दिनो मैंने अपना प्रचार चालू रखा। न्यूकैसिल मे अच्छे भारतीय रहते हैं। उन भारतीयो के अन्दर वैदिक धर्म का प्रचार चालू रखा।

अमरीका प्रचार

एक दिन अमरीका श्री धर्मजित जिज्ञासु को फोन किया। फोन करते ही उन्होने मुझे न्यूयार्क आने का निमन्त्रण दिया। मैंने उनका निमन्त्रण स्वीकार कर वहा जाने का प्रोग्राम बनाया। इगलैंड मे २५ दिन रहने के बाद मैं २१ अगस्त ८४ को न्यूयार्क चला गया। वहा जाते ही आर्य समाजो के साप्ताहिक सत्सगो, यज्ञो तथा ग्राम समाजो मे मेरा प्रवचन शुरू हो गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा बनाई गई

न्यूयार्क मे आर्य समाजो की सख्या पाच थी तो मैंने समस्त आर्य समाजो की बैठक बुलाई, और उन्हे आर्य प्रतिनिधि सभा बनाने की राय दी। इस विचार को सुनकर सभी आर्य बन्धु खुश हुए विशेषकर श्री धर्मजित जी जिज्ञासु बहुत ही प्रसन्न हुए। वास्तव में उन्होने ही न्यूयार्क मे आर्य समाज बनवाया और लगातार इसका प्रयास करते रहते हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा बनाने के लिए कई बैठकें बुलानी पडी। अन्त मे सभा बनाने का निर्णय हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफरीका का विधान श्री जिज्ञासु जी के पास था। निर्णय हुआ कि श्री जिज्ञासु जी के नेतृत्व मे कमेटी बनाई जाय। श्री जिज्ञासु जी ने दक्षिण अफरीका के विधानानुसार एक छोटा सा विधान बना डाला। वह पास हो गया है। इसका समाचार मैंने सार्वदेशिक सभा को भी दे दिया।

भवन खरीदा

जब तक न्यूयार्क मे आर्य समाज या आर्य प्रतिनिधि सभा के पास भवन न हो तो ऐसी सभा डावाडोल ही रहेगी। इसलिए भवन खरीदने की समस्या सामने आई। आर्य समाज न्यूयार्क के पास केवल पैंतीस हजार डालर थे। इतने मे भवन खरीदना कठिन काम था। श्री जिज्ञासु जी ने बतलाया कि पुराना 'गीता मन्दिर" के स्थान पर बडा मन्दिर बन गया है, और पुराना मन्दिर किसी को बेच दिया गया है। यह सुनकर दुख हुआ।

हम दोनो गीता मन्दिर' के स्वामी श्री जगदीश्वरानन्द जी के पास मिलने गये। वहा पहुचते ही मेरे मन मे विचार आया कि श्री स्वामी जी को बोला जाय, वह गुजरात प्रात के आर्य बन्धु हैं और मैं उन्हे पहले से ही जानता था। मैंने श्री स्वामी जी महाराज से प्रार्थना की कि मैं उनसे अकेले मे बात करना चाहता हू। श्री स्वामी जी महाराज ने मेरी प्रार्थना मान ली। हम दोनो कमरे में चले गये। मैंने उन्हें कहा कि आर्य समाजी होते हुए पुराना मन्दिर हमे मिलना चाहिए। स्वामी जी ने कुछ सोचकर तीन दिन का अवसर मागा। मन्दिर साउथ कोरियन को बेचने की बात चल रही थी। तीन दिन में वह मन्दिर उसी कीमत पर अर्थात एक लाख पैंसठ हजार डालर अर्थात बीस लाख रुपए मे हमें मिल जायगा। श्री स्वामी जी के अथक प्रयास से वह मन्दिर हमे मिला। वास्तव मे उसका श्रेय उन्हीं को जाता है।

न्यूकैसिल जाना

न्यूयार्क पहुँचने का समाचार केनाडा और न्यूकैसिल के आर्य बन्धुओं को ज्ञात हुआ। दोनो ने अपने टिकिट पर मुझे वहा बुलाया। मैं ५ सितबर को न्यूकैसिल चला गया। पूर्वी अफरीका के श्री बालकृष्ण जी शर्मा वहा थे। उनके प्रयास से ही वहा आर्य समाज मन्दिर खरीदा गया। वहां पहुँचते ही वैदिक धर्म का प्रचार शुरू हुआ। प्रचार मे ज्ञात हुआ कि वहां पर दस आर्य समाजें हैं।

श्री शर्मा जी के घर पर ही मैं ठहरा था। उन्होने श्री प० सत्यपाल जी शर्मा के साथ मेरी बहुत ही सहायता की। वास्तव मे श्री सत्यपाल जी शर्मा के प्रयास से मैं वहा गया। श्री शर्मा जी मेरे परिचित थे ही। निर्णय होते ही दस आर्य समाजो की बैठक बुलाई गई। आर्य प्रतिनिधि सभा का नाम सुनते ही सब मे जागृति आ गई। आर्य समाज साउथ एलिंग की प्रार्थना पर तीन आर्य समाजें छोड दी गई हैं। शेष सात आर्य समाजों पर सभा बनादी गई।

श्री सत्यपाल जी बडे ही विद्वान हैं। उन्हीं के प्रयास द्वारा वह सभा अभी हैं और वही इनको सहारा देकर खडा करेंगे। मुझे उन्हीं के द्वारा यह जान कर हर्ष हुआ कि वह सन १९८६मे अपने यहा महर्षि निर्वाण शताब्दी मनाने का प्रयास करे गे। साहित्य नियम, झण्डे, हवनकुण्ड की याचना मुझसे की है।

१० हजार रुपये का दान

श्री शर्मा जी भारत मे पडे अपने रुपए को कहीं देना चाहते थे। भारत मे दयानन्द सेवाश्रम सघ के कार्य को सुनकर उन्होने इसी को अपना दान दे दिया है। उन्हे इस कार्य से बडी शान्ति व धैर्य मिला।

न्यूयार्क पहुंचा

मैं १२ सितम्बर को न्यूयार्क पहुँचा। मैंने टोरण्टो जाने का प्रयास किया, परन्तु वीजा मिलने मे समय लगने को था, परन्तु जिज्ञासु जी ने आग्रह किया कि मैं स्वामी जगदीश्वरानन्द जी के वचनानुसार धन जमा कराऊ। मैंने उनकी बात मान ली, और दस दिन इसी कार्य पर लगा दिया। एक लाख पैंसठ हजार डालर की आधी पूजी पिछत्तर हजार डालर हमने जमा कर लिया।

श्री स्वामी जी से पहली अक्तूबर को भेंट हुई। उनसे मैंने धन में कमी करने की भी प्रार्थना की है। उन्होंने उसके लिए प्रयास करने का आश्वासन दिया है।

लन्दन रुका

मुझे न्यूयार्क से दिल्ली का टिकिट न मिला। मैं लन्दन आया। सौभाग्य से वहा आर्य समाज लन्दन के प्रधान थे। मैंने एक दिन उनको दिया। मेरी योजना को सुनकर उन्होंने आश्वासन दिया है कि बहुत शीघ्र ही वह अपने यहा आर्य प्रतिनिधि सभा बनावेंगे। इगलैण्ड मे पूर्व अफ्रीका के व्यक्ति आए हैं। सभी आर्य बन्धु है। इसलिए लन्दन मे सभा बहुत ही अच्छी बनेगी।

कैनाडा जाने का विचार बदलना पडा। परन्तु मेरा विश्वास है कि वहां भी प्रयास करने पर सभा बनाई जा सकेगी। उन्हें जब यह ज्ञात हुआ कि अमरीका के पूर्व भाग की न्यूयार्क तथा पश्चिमी भाग की लाजएंजिल में सभा बन गई है तो उनके हृदय मे भी सभा बनाने का विचार आया है। ईश्वर उनके प्रयास को सफलता दें।

जर्मनी न जा सका

जर्मन न जाने का मुझे दुख है परन्तु वहा चला जाता तो आर्य समाज का वह कार्य न हो पाता। मैं श्री स्वामी विश्वानन्द जी से हृदय से क्षमा प्रार्थी हू। परन्तु हर्ष इस बात का है कि माननीय लाला रामगोपाल जी प्रधान, श्री वन्देमातरम् जी रामचन्द्र राव उपप्रधान तथा श्री शिवचन्द्र जी वहा थे ही। इस प्रकार सार्वदेशिक सभा का विदेश प्रचार चलता ही रहा है।

सम्पादकीय

महर्षि दयानन्द की पुण्य स्मृति में

महर्षि दयानन्द को चौदह वर्ष की आयु मे शिवरात्रि को शिव-मन्दिर मे जागरण और पूजा करते समय एक घटना से बोध हुआ था। महर्षि का जन्म काठियावाड़ के अन्तर्गत मोरवी राज्य के ग्राम टंकारा मे हुआ था और ३० अक्टोबर १८८३ को हलाहल विष दिए जाने से अजमेर में राजा भिनाय की कोठी में उनका ५९ वर्ष की आयु मे निर्वाण हुआ।

महर्षि के अन्दर चूहे की घटनासे ईश्वर के स्वरूपको समझने और उसके विषय मे सच्ची जानकारी प्राप्त करने के लिए एक प्रबल जिज्ञासा उत्पन्न हुई।

यह घटना एक साधारण घटना है परन्तु संस्कारी बालको एव बुद्धिजीवी विचारकों को ऐसी ही साधारण घटनाओ से बड़ा बोध और प्रकाश प्राप्त होता है। उसके आधार पर बड़े-बड़े आविष्कार होते हैं और ससार के ज्ञान और विज्ञान की वृद्धि होती है। स्टीवेंसन ने एक बर्तन मे पानी को उबलते देखा और उस उबलते हुए पानी से जो बर्तन पर ढकना रखा हुआ था उसमे गति दिखाई दी। इस पर विचार के पश्चात स्टीम एंजिन का आविष्कार किया जिसका चमत्कार आज सारे विश्व मे भली भांति प्रकट हो रहा है। इसी प्रकार न्यूटन ने वृक्ष से सेब को ऊपर न जाकर पृथ्वी पर गिरते देखकर आकर्षण शक्ति के आविष्कार का प्रतिपादन किया। महर्षि दयानन्द ने जब उनको सच्चे ईश्वर को जानने की इच्छा हुई तो अपनी जिज्ञासा को पूर्ण करने के लिए उन्होने पर्वतो पर नदियो के तटो पर विचरण किया। अन्त मे गुरु विरजानन्द के चरणो मे बैठकर शिक्षा-दीक्षा प्राप्त की और उन्हे वेदो से सच्चे ईश्वर की अनुभूति हुई।

आदर्श धर्म प्रचारक और समाज सुधारक

महर्षि आदर्श धर्म प्रचारक और समाज सुधारक थे। उनकी दृष्टि मे सब से आवश्यक लक्ष्य व्यक्ति का निर्माण था। उन्होने १८७५ मे आर्यसमाज की स्थापना की थी और उसके छठे नियम में ससार का उपकार करना मुख्य उद्देश्य निर्धारित किया है। आर्य समाज के दश नियमो को दृष्टि में रखकर यह विदित होता है कि महर्षि का उद्देश्य यह था कि ईश्वर का स्वरूप सब की समझ मे आए। उन्होंने ईश्वर को पहले नियम मे सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि मूल बताया है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है और वेदों को पढने पढाने, सुनने-सुनाने को परम धर्म बताया है। आदि मूल ईश्वर के स्वरूप के समझने और उसके ज्ञान वेदो के प्रचार से व्यक्ति का निर्माण हो सकता है और इसीलिए ससार का उपकार करने का मुख्य उद्देश्य बताया है। आदि मूल और परमधर्म से मुख्य उद्देश्य की पूर्ति का होना सम्भव है। महर्षि ने छठे नियम मे ससार के उपकार के लिए यह बताया है कि शारीरिक, सामाजिक और आत्मिक उन्नति से व्यक्तियों का पूर्ण रूप से निर्माण हो जाय तो उनके उद्योग से संसार का उपकार होता है।

उन्नति के लिए स्वतन्त्रता परमावश्यक है

महर्षि की दृष्टि में व्यक्तियों की उन्नति के लिए सब से अधिक आवश्यक तत्व स्वाधीनता और स्वतन्त्रता है। वे यह जानते थे कि पराधीनता मे न सुख है और न शान्ति। स्वतन्त्रता के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति हर प्रकार की पराधीनता और दासता से मुक्त रहे। जब महर्षि ने कार्य आरम्भ किया उस समय कई प्रकार की दासता और पराधीनता प्रचलित थी। सर्वाधिक दुःखदायी राजनीतिक दासता थी। उसके साथ-साथ मानसिक दासता भी बड़ी कष्ट दायक और हानिकारक थी। रूढ़िवाद, वंश परम्परा और होती आई है के नाम पर जो दासता थी उसके कारण व्यक्ति की प्रज्ञा कुण्ठित थी। कई प्रकार के बन्धनो मे जकड़ी हुई प्रजा को मानसिक दासता के साथ-साथ दुर्व्यसनो की दासता भी कम भयकर न थी। अर्थ और काम प्रधान जगत में अनेक प्रकार के दुर्व्यसनों का बोल बाला था। इसलिए महर्षि ने तीनों प्रकार को दासताओ से मुक्त कराने के लिए पूर्ण प्रयत्न किया। भ्रष्टाचार मिथ्याचार इत्यादि से सुरक्षित रखने के लिए उन्होने ओ३म् की पताका के साथ-साथ पाखण्ड खण्डिनी पताका भी हरिद्वार मे कुम्भ के अवसर पर फहराई थी। उनकी धारणा थी कि बिना अन्धविश्वासों और पाखण्डो के निराकरण के सत्य धर्म का प्रकाश और प्रचार नही हो सकता। उन्होने सत्यार्थ प्रकाश के साथ व्यवहार-भानु नाम की पुस्तक भी प्रकाशित की। उस पुस्तक मे व्यवहार और व्यवसाय को मर्यादित करने के लिए बड़ी सुन्दर शिक्षाए है।

मानसिक दासता के निवारण के उपाय

इसी प्रकार मानसिक दासता से मुक्त करने के लिए धर्म मे श्रद्धा के साथ-साथ तर्क का पूर्ण समावेश किया। सत्यार्थ प्रकाश एक ऐसा धर्म ग्रन्थ है जो प्रश्नोत्तर के रूप मे ही मुख्यतया लिखा गया है। ऋषि ने आर्य समाज के नियमो में सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने मे सर्वदा उद्यत रहना बताया है। हम ऋषि की प्रणाली को इस प्रकार समझ सकते हैं कि ऋषि धर्म के सब से प्राचीन और पवित्रतम स्वरूप को पुन प्रचलित करना चाहते थे। चारो वेदो को ही वे स्वत प्रमाण मानते थे। प्राचीनता के नाम पर कभी कभी असत्य बातों का भी समावेश होने लगता है। इसलिए इसकी जाच के लिए तर्क आवश्यक है।

परन्तु प्राचीन धर्म को केवल तर्क से समझ लेना ही पर्याप्त नही है। तर्क से संशोधित प्राचीन धर्म जीवन का क्रियात्मक आधार होना चाहिए और जब तक धर्म जीवन का क्रियात्मक आधार न हो तब तक धर्म का केवल जानना पर्याप्त नही। महर्षि ने जब पूर्ण रूप से प्राचीन वैदिक धर्म को तर्क के आधार पर क्रियात्मक जीवन का आधार सिद्ध कर दिया और धर्म के सुनिश्चित सिद्धान्त प्रतिपादित कर दिए जिसे ना समझो ने हिन्दू धर्म को सकुचित करने का अनर्गल आक्षेप भी उन पर किया तब उन्होने देश की दशा सुधारने का बीड़ा उठाया।

राजनीतिक दासता की बेड़ियां काटने का राजमार्ग बनाया

जब महर्षि ने कार्य प्रारम्भ किया था तब सारा भारत राजनीतिक दासता की बेड़ियो मे जकड़ा हुआ था। महर्षि को यह देखकर बड़ी वेदना होती थी और उन्होने राजनीतिक दासता के निराकरण और स्वाधीनता प्राप्ति के लिए प्रबल रूप से प्रचार किया। महर्षि ने स्वराज्य शब्द का प्रयोग सब से पहले सत्यार्थ प्रकाश मे किया है। उन्होने यह भी स्पष्ट किया कि स्वराज्य प्रत्येक व्यक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार है। ऋषि की यह भी धारणा थी कि विदेशियो का राज्य कितना ही अच्छा हो वह अपने राज्य से अच्छा नही हो सकता।

स्वाधीनता के लिए उन्होने यह भी आवश्यक समझा कि स्वाधीनता की इच्छा पूर्ति के साथ साथ व्यक्तियो मे पूर्ण रूप से आत्म सयम हो। उन्होने लिखा है कि जिनके अन्दर मानसिक जगत मे इन्द्रिय रूपी प्रजाओ पर अंकुश नही वे स्वराज्य के अधिकारी नहीं। मनु के आधार पर यह शब्द स्वतन्त्रता की सुरक्षा के लिए अत्यन्त विचारणीय और अनुकरणीय है।

यदि स्वराज्य और स्वाधीनता के साथ साथ वा दूसरे शब्दो मे शासन के अधिकारो के साथ साथ अनुशासन की भावना भी मर्यादित हो तो स्वराज्य की सुरक्षा हो सकती है। महर्षि ने यह भी लिखा कि महाभारत के समय तक सारा ससार भारतीयो आर्यो के शासन मे था। उन्होने लिखा कि चक्रवर्ती राज्य भारत का अब नही रहा। परस्पर की फूट के कारण हमारे देश मे भी हमारा राज्य नही है।

उन्होने सत्यार्थ प्रकाश मे लिखा है कि महाभारत के समय जो राजसूय यज्ञ हुआ था उसमे बहुतसे देशो के राजा सम्मिलित हुए थे। चीनका भगदत्त, अमेरिका का बब्रुवाहन, युरोप का विडालाक्ष अर्थात मार्जार (बिल्ली) के सदृश आंख वाले, यवन जिनको यूनान कहा जाता था आए और ईरान का शल्य आदि सब अधीनस्थ राजा यज्ञ और महाभारत युद्ध मे आज्ञानुसार शामिल हुए। इससे स्पष्ट है कि सारे ससार मे आर्यो का राज्य था।

(शेष पृष्ठ १० पर)

सामायिक चर्चा—

जीवन मृत्यु की समस्या

(२१, २२ सितम्बर १९८४ को)

अभी हाल मे फ्रास के निसी शहर में इन्टरनेशनल कांग्रेस का अधिवेशन हुआ है जिसमे लगभग ७०० डाक्टरो, न्यायविदो, समाज शास्त्रियो और शान के साथ मरने का अधिकार 'दातृ' नामक सस्था के सदस्यो ने भाग लिया।

मृत्यु का इजेक्शन कौन दे इस प्रश्न पर बड़ा मतभेद उभर कर आया। दक्षिण अफ्रीका के हृदय रोग विशेषज्ञ डा० क्रिश्चियन कमार्ड का सुझाव था कि एक मात्र डाक्टर ही इसका निश्चय करने के लिए उपयुक्त है जिसे अन्य सब उपायो के कारगर न होने की अवस्था मे रोगी को शान्ति पूर्वक मरने मे सहायता देनी चाहिए।

इस सुझाव का अन्य डाक्टरो द्वारा जिनमे फ्रासके कैंसर रोग के विशेषज्ञ प्रो० ल्यॅन भी शामिल थे, घोर विरोध किया गया। डा० ब्वानजेन वर्ग ने इस बात पर बल दिया कि किसी को भी दूसरे के जीवन और मृत्यु पर निर्णय करने का अधिकार नहीं है।

मौत का इजक्शन देने के सम्बन्ध मे विभिन्न देशो की न्याय प्रणालिया भिन्न २ है। ग्रेट ब्रिटेन प्रभृति कुछेक देशो मे आत्महत्या करने मे सहयोग देने वाले पर स्वत मुकदमा चलाया जाता है। इटली, फिनलैंड डेनमार्क, आस्ट्रिया और स्विटजरलैंड मे मुकदमा चलाने या न चलाने का निर्णय करने के लिए तुरन्त कार्यवाही किए जाने का विधान है।

यह बात कई बार स्पष्ट की जा चुकी है कि मानव का अपने शरीर पर कोई स्वत्व नहीं होता यह समाज की धरोहर होती है।

अत इसे स्वय नष्ट करने की या दूसरो से नष्ट कराने की अनुमति नहीं दी जा सकती इसीलिए ऐसा करना कराना पाप और अपराध होता है—

अन्तर्जातीय विवाह की उपयोगिता

एक बड़े राजनेता और विधायक ने अन्तर्जातीय विवाहो की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा 'कि इस प्रकार के विवाहो के बच्चे बड़े योग्य और कुशाग्र बुद्धि वाले होते हैं।

वस्तुत इन महाशय ने यह कहकर एक बहुत बड़ी सच्चाई को प्रकट किया है। वैज्ञानिको की यह स्थापना है कि एक ही जाति या उपजाति मे यदि दीर्घकाल तक विवाह होते रहे तो एक ही रक्त के दौर से सन्तानो के शरीर और मस्तिष्क का विकास स्थिर हो जाता है। उसमे नए रक्त के न आने से नूतनता नहीं आती और कालान्तर मे समाज के विकास के स्रोत कुंठित होकर उसका ह्रास हो जाता है।

रक्त सम्बन्ध के विवाह तो और भी अधिक हानिकर होते हैं। उनकी सन्तान भद्दी और प्रतिभा शून्य होती है। खाने पीने और सोने मे तो वे चतुर परन्तु बौद्धिक एव आत्मिक कार्यो के अयोग्य होते हैं। साथ ही अधिक स्वार्थी होते हैं।

समाज शास्त्रियो की यह मान्यता है कि यदि रक्त सम्बन्ध के विवाहो की प्रथा बन्द न हुई तो मानव जाति का विनाश अवश्यम्भावी है। ससार मे आज अधिक विषय वासना पाई जाती है। इसके लिए रक्त सम्बन्ध सबसे अधिक जिम्मेवार है। रक्त सम्बन्ध के विवाहों की सन्तान अधिक विषयी होती है। अमेरिका इत्यादि देशो मे कई बार यह शोर मच चुका है कि इस प्रकार के विवाहो को सरकार को त्याज्य और दडनीय ठहराना चाहिए जिससे अयोग्य सन्तान पैदा न हो।

इस प्रकार की मान्यताओ से अन्तर्जातीय विवाहो की उपयोगिता स्पष्ट हो जाती है। इसे उन लोगो को विशेष रूप से नोट करना चाहिए जो यह कहते हैं कि जब अपनी ही जन्मना जाति मे योग्य जोड़े मिल जाते हैं तो अन्य जातियो मे विवाह क्यो किए जाए। ईसाइयो मुसलमानो तथा सगोत्र विवाहो के पक्षपाती हिन्दुओ को निकट व रक्त सम्बन्ध के विवाहो की हानियों को अनुभव करके उन्हें निरुत्साहित करना चाहिए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गुण कर्मानुसार विवाहों का प्रतिपादन करते हुए माता के कुल की ६ पीढ़ियो और पिता के गोत्र की कन्या से विवाह वर्जित किया है। इस वर्जन मे भी रक्त या निकट सम्बन्ध के विवाहो की हानियां प्रतिलक्षित होती हैं। इस तथ्य को स्वामी जी ने इस प्रकार सुस्पष्ट किया है—

जैसे पानी मे पानी मिलने से विलक्षण गुण नहीं होता वैसे ही एक गोत्र पितृ वा मातृकुल मे विवाह होने से धातुओं के अदल बदल न होने से उन्नति नहीं होती।

अध्यात्म की कम्पनियां

भारत के उद्योगपति चाहे बहुराष्ट्रीय कम्पनियां चला पाए या नहीं हमारे धार्मिक गुरुओ ने बता दिया है कि अध्यात्म की कम्पनिया चलाने मे उनका कोई मुकाबला नहीं है। किसी ऋषि ने न्यूयार्क का होटल खरीद लिया है तो किसी भगवान ने पूरा गाव का गाव हथिया लिया है। किसी महाराज ने स्विटजरलैंड मे पूरा का पूरा पर्वत घर लिया है। इन पवित्र-स्थलो मे अपने मुख्यालय खड़े करके ये आध्यात्मिक उद्योगपति सारी दुनिया को अपना बाजार बनाने पर तुले हुए हैं। फिलीपीन्स के राष्ट्रपति मारकोस और सयुक्तराष्ट्र के महासचिव भी उनके विश्व माल की बिक्री मे मदद दे रहे हैं। माल की बिक्री के लिए उन्होने तरह-तरह के पोज देकर फोटो खिचवाए हैं अपनी आवाज कसेटो मे भरवाई है और सभी सभव मुद्राओ मे उन्होने रगीन फिल्मे तैयार करवाई हैं। इनके खरीददारो की कमी नहीं। पैसा पानी की तरह बरस रहा है। चेले अध्यात्म की धूप सेकते हैं और गुरुजन ससार का रस भोगते हैं। गुरुजन की लीला-भूमि मुख्य रूप से योरोप देश ही है क्योकि पैसे वाले पापी वहीं ज्यादा है। भारत जैसे पवित्र देश मे उनके लिए करने-धरने को कुछ नहीं है। यहा तो हर आदमी देवता है। वह बिना सीढ़ी के ही स्वर्ग पहुचने का अधिकारी है। (न. भा. ११ १०-८४)

मनुस्मृति ही आदि धर्म एवं नीति शास्त्र है

भारत ज्ञान का भडार है। यहा की सभ्यता और धर्म अत्यन्त प्राचीन है।

मनुस्मृति युरोपीय नीति तथा अरस्तू नीति से भी पहले की है परन्तु हमारा कानून भी रोमन कानून पर आधारित है। ये सब कानून मनुस्मृति से ही लिए गए प्रतीत होते हैं। मुझे तो ऐसा जान पड़ता है कि प्रारम्भ का नीति शास्त्र मनुस्मृति ही है। (लार्डवारन होस्टिंग्स गवर्नर जनरल भारत के ईस्ट इडिया कम्पनी को लन्दन भेजे पत्र का अश)

मुसलमान आर्य समाजी

एक फौजी अग्रेज कैप्टिन की एक मुसलमान जमादार से किसी विषय पर बहस हुई और वह अग्रेज हार गया।

उस अग्रेज ने अपने बड़े अफसर से उसकी उद्दण्डता की शिकायत की। एक गोरे अग्रेज अफसर का एक काले हिन्दुस्तानी के द्वारा अपमानित होना क्या छोटी बात थी? बहस मे अग्रेज अफसर का हार जाना ब्रिटिश वर्चस्व पर क्या छोटा आघात था?

बड़े अफसर ने जमादार को बुलाया और कहा 'बदमाश आर्य समाजी! तुम अपने अफसर से गुस्ताखी से पेश क्यो आया है?

जमादार ने कहा 'जनाब, मैं मुसलमान हू' साहब ने अपनी दृष्टि मे अपने को ठीक करते हुए कहा—

"तब तुम मुसलमान आर्य समाजी हो।"

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

विश्व को विविध प्रकार से संस्कारित करने में संस्कार विधि का महत्व

ले०—श्री पं० वीरसेन जी वेदश्रमी, इन्दौर

(१) संस्कार विधि का महत्व

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्मित संस्कार विधि अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। प्रत्यक्ष रूप से तो यही ज्ञात होता है कि इसमें मनुष्य के लिए १६ संस्कारों का वर्णन है जो शरीर और आत्मा को संस्कृत करके धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्ति में सहायक होते हैं। परन्तु परोक्ष रूप से अन्य भी अनेक महत्वपूर्ण ज्ञान एवं कर्मों का भी उससे दिग्दर्शन होता है।

(२) सोलह संस्कारों से षोडश कलावान् बनें

प्रश्नोपनिषद के छठे प्रश्न में सुकेशा भारद्वाज ने भगवान पिप्पलाद ऋषि से पूछा—षोडशकलं पुरुषंपृच्छामि—मैं सोलह कलायुक्त पुरुष को जानना चाहता हूं। यह जिज्ञासा सदा ही होनी चाहिये। जिस प्रकार प्रत्येक में सोलह कलावान् परमात्मा विद्यमान है उसी प्रकार इस देह और अन्तरात्मा को भी षोडश कलावान् बनाने के सोलह संस्कारों से सुशोभित करना चाहिये।

(३) संस्कारों का स्थायी प्रभाव होता है

मनुष्यों को संस्कार विधि में बताये सोलह संस्कारों से सोलह कलावान् बनकर पूर्ण सुसंस्कृत होना चाहिए। इन सोलह संस्कारों का प्रभाव शरीर और आत्मा पर होता है जिससे इस जन्म और परजन्मों पर उत्तम संस्कारों का उद्बोधन होता है। संस्कारहीन शरीर और आत्मा पशुवत् है। अतः सोलह संस्कार परम आवश्यक हैं।

(४) कुसंस्कारों का व्यापक प्रसार

वर्तमान समय में शरीर और आत्मा को कुसंस्कृत करनेके प्रयत्न अहर्निश कार्यरत हैं। उनके सैकड़ों व सहस्त्रों आकर्षक मनोहारी पाश क्रियाशील हैं। उनमें मानव जाति फंसती जा रही है। यदि कुसंस्कारों के पर्यावरण रूपी महासमुद्र में डूबती मानवता के बचाने के लिए सोलह संस्कारों की यज्ञमय पर्यावरण की नौका को निर्मित न किया गया तो अत्यधिक कर्म प्रदूषित पर्यावरण से स्वास्थ्य तथा शरीर का अस्तित्व उत्तरोत्तर क्षीण होता जायगा तथा कुसंस्कारों के कुचक्रों के प्रभाव से मन और आत्मा कुसंस्कृत होकर पाप कर्मों में प्रवृत्त होकर जन्म जन्मान्तर तक विविध नीच योनियों को प्राप्त होकर दुःख भोगती रहेगी।

(५) गर्भ एवं बाल्यावस्था में संस्कारों से लाभ

बीजानुसार जिस प्रकार वृक्ष, पुष्प, रूप रस, गन्ध व फल की उत्पत्ति होती है तथा उसी को संस्कारित कर देने से उसके गुणों में विशेष वृद्धि हो जाती है उसी प्रकार गर्भावस्था से ही मनुष्यों के लिए संस्कारों का ऋषियों ने विधान किया। सोलह संस्कारों में तीन संस्कार गर्भावस्था में होते हैं और पांच संस्कार पांच वर्ष तक की अवस्था में होते हैं। अर्थात् सोलह संस्कारों में आठ संस्कार अत्यन्त अबोध अवस्था में ही होते हैं। इनका प्रभाव शरीर और आत्मा दोनों पर महत्वपूर्ण होता है यह निश्चित है।

(६) संस्कारों से सदाचार की वृद्धि

सोलह संस्कारों के प्रचार तथा उनके अनुष्ठान से आचार की प्रतिष्ठा होगी। अनेक सुसंस्कृतों में सुसंस्कार युक्त कर्मों की वृद्धि होगी तथा कुसंस्कार जन्य कुकर्मों की निन्दनीय श्रेणी में गणना होने से उनकी ओर सर्वसामान्य की प्रवृत्ति का ह्रास ही होगा। सोलह संस्कारों का अधिकाधिक प्रचार अत्यन्त आवश्यक है। अतः संस्कार विधि में प्रधान रूप से सोलह संस्कारों का प्रतिपादन किया गया है।

(७) विश्व को संस्कारित करने के लिये बड़े यज्ञ हों

जिस प्रकार मनुष्यों पर सोलह संस्कारों से श्रेष्ठताका विश्व में पर्यावरण निर्मित होता है उसी प्रकार सृष्टि या परिदृश्यमान रचना को भी संस्कारित करने के उद्देश्य से महर्षि ने संस्कार विधि में—सामान्य प्रकरणम्—शीर्षक में यज्ञदेश, यज्ञशाला, यज्ञकुण्ड का परिमाण लिखा है। इसमें कम से कम सवा हाथ का चौड़ा, गहरा समचौरस छह हाथ परिमाण के कुण्ड का महर्षि ने विधान किया और दो लक्ष आहुति का उल्लेख किया। वह न तो संस्कार यज्ञ कर्मों से सम्बन्धित है और न दैनिक अग्निहोत्र तथा श्रौत यज्ञों से ही सम्बन्धित है। श्रौतयज्ञों के कुण्ड और वेदी अन्य ही प्रकार की होती है। अतः ज्ञात होता है कि यह विधान किन्हीं बड़े यज्ञोंसे ही सम्बन्धित है जिनमें कम से कम। हजार से २ लाख आहुतियां होती हैं।

(८) बड़े-बड़े यज्ञों से विशेष लाभ होते हैं

संस्कार यज्ञ संस्कार कर्मों से सम्बन्धित हैं। श्रौत यज्ञ श्रौतकर्मकाण्ड प्रधानहैं। उनमें आहुतियां बहुत थोड़ी होती है। कर्मकाण्ड ही अधिक है। इन बड़े कुण्डों के यज्ञ में आहुतियां ही प्रधान हैं। इस प्रकार के बड़े यज्ञों से विश्व के समस्त पर्यावरण पर प्रभाव पड़ता है। यज्ञ के घृत तथा हवि आदि पदार्थों से पर्यावरण पूर्ण होकर शुद्ध तथा पुष्ट होता है एवं आरोग्यप्रद बनता है। समष्टि मन में भी शान्ति उत्पन्न होती है। समष्टि मन में शान्ति के भाव उत्पन्न होने से क्रूर भावों का स्वभावतः नाश होता है और सात्विकता की वृद्धि होती है। कृषि, वृक्षों, वनस्पतियों की उत्पत्ति में वृद्धि, फलों की उत्पादकता, पौष्टिकता तथा आरोग्यता में वृद्धि होती है। इस प्रकार के यज्ञों से सुवृष्टि भी होती है। बाढ़, आंधी, तूफान आदि उत्पातों की शान्ति भी होती है।

(९) सत्यार्थ प्रकाश में बड़े यज्ञों के लाभ का उल्लेख

सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास मे महर्षि ने लिखा है कि "इसलिये आर्यवर शिरोमणि महाशय ऋषि, महर्षि, राजे, महाराजे लोग बहुतमा होम करते और कराते थे। जब तक इस होम करने का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था। अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाय।" इस प्रकार महर्षि ने बड़े बड़े यज्ञों का विधान संस्कार विधि मे पर्यावरण को सुसंस्कृत करने के लिए किया है।

(१०) बड़े यज्ञ काम्य यज्ञों की श्रेणी में है

वेद भाष्य में भी अनेक स्थलों पर बड़े-बड़े यज्ञों का आयोजन, वृष्टिजल की शुद्धि, रोगादि निवारण के लिये महर्षि ने किया है। ये यज्ञ काम्य यज्ञों की श्रेणी के हैं। काम्य यज्ञों में अधिक आहुतियां होती हैं। अतः महर्षि ने बड़े कुण्ड और लक्षाहुति आदि का विधान काम्य यज्ञों की दृष्टि से किया है। इस प्रकार के काम्य यज्ञों से समय-समय पर बड़े बड़े यज्ञों का आयोजन महर्षि को अभीष्ट था—अतः इसका संकेत संस्कार विधि में किया। इसी प्रकार उदयपुर महाराणा को निरामय महोत्सव में दस हजार रुपयों से, अधिक वृष्टि के लिये वर्षा ऋतु मे यज्ञ कराने को महर्षि ने लिखा था। अर्थात् ऋतु अनुकूलता स्थापित करने के लिए, प्राकृतिक, प्रकोपो के शमन के लिये बड़े बड़े यज्ञों से विश्व के पदार्थों पृथिवी, जल, वायु, विद्युत, सूर्यरश्मि, वृक्ष, वनस्पति, पर्वत मेघ, वन, अन्तरिक्ष आदि को प्रभावित, शुद्ध एवं पुष्ट यज्ञ से करते रहना चाहिये।

(११) संस्कार विधि में श्रौतपात्रों के चित्रों का प्रयोजन

संस्कार विधि के अथ सामान्य प्रकरणम्—में आगे महर्षि ने यज्ञ पात्रों का उल्लेख किया है और उनके चित्र भी दिये हैं। यज्ञपात्र दैनिक यज्ञों के नहीं है, न उनकी उपयोगिता कुछ को छोड़कर बड़े यज्ञों मे होती है। वे श्रौत यज्ञों के पात्र हैं। इससे ज्ञात होता है कि महर्षि श्रौत यज्ञों का प्रचलन भी चाहते थे और अनेक स्थलों पर उन्होंने अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त यज्ञोंके करने का उल्लेख किया है। जिस प्रकार सोलह संस्कारों से मानव देह को और आत्मा को संस्कारित करने का महर्षि का उद्देश्य था, उसी प्रकार विश्व के पर्यावरण को श्रौत यज्ञों के माध्यम से भी सुसंस्कारित करना भी महर्षि का उद्देश्य था, जो कि वेद का प्रधान वैज्ञानिक कर्म है।

(१२) कतिपय श्रौतयज्ञ कालसन्धियों में होते हैं

सोलह संस्कार कर्म जीवन के काल चक्र से सम्बन्धित यज्ञ हैं। ये प्रति व्यक्ति के जीवन की अवस्था की सन्धियों से सम्बन्धित हैं। समष्टि से इनका एक ही काल में सम्बन्ध नहीं है समष्टि जगत में एवं सृष्टि में जो काल

महर्षि की इच्छा पूर्ण करने का व्रत लो

—आर्या मीरायति, ज्वालापुर

हमारे वैदिक धर्म मे त्योहारो का बहुत महत्व है। हम इनको पर्व भी कहते है। पर्व शब्द पृ-पूरने धातु से बना होने के कारण इसका अर्थ उल्लास पूर्वक मनाने का है। अर्थात् जिस दिन कोई भी पर्व हम मनाते हैं उस दिन हमारे मन के भीतर अत्यधिक उल्लास होता है। पर्व मनाने से हमारी संस्कृति की रक्षा होती है। ये पर्व प्रतिवर्ष आते हैं और हमे नई नई उमगे नये नये मार्ग निदेश करते हैं। हम इनको मनाते हुए अपने प्राचीन गौरव को अनुभव करते हैं और हमारे नवयुवको तथा नवयुवतियो को प्राचीन इतिहास की झलक मिलती हैं जिससे वे प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

जिस दिन कोई भी पर्व हो हमारे सबके मन उमग से भर जाते हैं। सब एक दूसरे से मिलते हुए प्रसन्नता प्रगट करते हैं इसी कारण दफ्तरो मे बैंको मे तथा पोस्ट आफिस मे छुट्टी कर दी जाती है ताकि सब लोग अपने-अपने परिवार में अपने बाल बच्चो मे बैठकर मिलकर आमोद-प्रमोद से प्रत्येक पर्व को मना सके। इसलिए हमारे भारतवर्ष मे क्या विदेशो मे भी जो भारतीय रहते हैं वह सब पर्वों को मनाते हैं।

परन्तु प्रत्येक मानवो का पर्व मनाने का ढग कुछ अलग अलग होता है। वे पुरातन काल की कथाओ के अनुसार जो उनके पिता पितामह से चली आ रही है मनाते हैं चाहे वह प्रथा अच्छी हो या बुरी, चाहे लाभप्रद हो अथवा हानिकर परन्तु उसी बेढगी चाल से मनाते चले आ रहे हैं। मैंने कई स्थानो पर स्वय देखा है कई लोग छोटे छोटे त्योहार मनाते हैं जैसे नाग पूजा, दुर्गापूजा, होई माता का पूजन लक्ष्मी पूजन तथा करवा-चौथ का व्रत इत्यादि २।

हमारे मुसलमान भाई ताजिये तथा ईद बकरीद मनाते हैं जिसमे रोते पीटते तथा बकरे काटते है। एक ओर तो जीव हिंसा करते हैं दूसरी ओर खुशिया मनाते हैं यह कोई पर्व नही त्योहार भी नही है जिससे परमात्मा की बनाई हुई सृष्टि की आत्म हत्या हो ऐसा जघन्य पाप और क्या होगा फिर यह पर्व भी कैसा उसे तो कुछ और ही कहना चाहिए।

परन्तु वैदिक पर्व कितने ऊचे हैं जिनमे सबसे प्रथम यह किया जाता हैं जो परोपकार के लिए होता है उसमें अपना कोई भी स्वार्थ नहीं होता बस एक ही विचारधारा होती है वह यह कि अच्छी सुगन्धि सबको मिलनी चाहिए। फिर देखो हमारी आर्य पर्व पद्धति में प्रत्येक पर्व पर विशेष मन्त्रों द्वारा आहुतिया दी जाती हैं जो उस पर्व के लिए आवश्यक होती हैं।

हमारे पर्व कितने अच्छे कितने शिक्षा प्रद हैं जैसे मकर सक्रान्ति, बसन्त पचमी, विजयादशमी, कृष्णाष्टमी रामनवमी, दीपावलि, रक्षा बन्धन, इत्यादि। हम आर्य लोग इन सब पर्वों को मनाते हुए यज्ञ करते हैं। दान देते हैं। चाहे आर्य समाज मे मनाये या अपने-अपने घरो मे परन्तु ये यज्ञ दान, मिष्ठान बाटना आवश्यक समझते हैं। प्रत्येक पर्व हमे नया नया सदेश देता है।

आज जिस पर्व को हम मना रहे हैं उसके दो पहलू है। एक तो प्रत्येक स्थानपर दीपक जलाये जा रहे हैं दूसरे स्वामी दयानन्द जी का निर्वाण दिवस मनाया जा रहा है। आज के दिन बहुत सारे लोग लक्ष्मी पूजन करते हैं। ऐसे लोगों की यह विचार धारा है कि इस दिन यदि लक्ष्मी की पूजा की जावे तो घरमे बहुत धन आ जाता है। एक मनुष्य नेऐसा किया कि रात्रि कोलक्ष्मी पूजन करके घर का दरवाजा खुला रख दिया। लक्ष्मी तो न आई कोई चोर आकर चोरी करके ले गया।

हम आर्य लोग ऐसी बातो पर विश्वास नही करते, हम कहते हैं लक्ष्मी पूजा करने से नहीं आती लक्ष्मी तो पुरुषार्थ करने से आती है इसलिए पुरु-षार्थ करके लक्ष्मी को प्राप्तकरें। दूसरे पूजा शब्द जोहै वह पुज धातु से बना है जिसका अर्थ सत्कार करना लक्ष्मी का सत्कार अर्थात पूजा करके उसका आदर करना चाहिए। जो लोग लक्ष्मी का पूजन करते हैं वही लोग रात्रि को बैठकर जुआ खेलते हैं जिससे किसी की जीत तो किसी की हार भी हो जाती है। तब जीतने वाले तो हसते हैं और जिनकी हार होती है वह रोते पीटते हैं। इन लोगो के समक्ष लक्ष्मी पूजा का फल आ जाता है फिर भी यह पुरानी परम्परा को नही छोड़ते।

पाठक वृन्द ऐसी लक्ष्मी पूजा से क्या लाभ है? हम आर्य लोग असली अर्थों में लक्ष्मी की पूजा करना जानते हैं हम लोग दीपावलि मे निर्धन लोगो मे मिठाई बाटते है। इसी प्रकार मकर सक्रान्ति की तिल के लड्डू और कम्बल वगैरा दिए जाते है जिससे हमे बहुत ही प्रसन्नता होती है।

दूसरा इसके साथ आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी महाराज का निर्वाण दिवस मनाते है इसी दिन महर्षि जी ने अपनी इहलीला पूर्ण की। उनका जीवन उस दीपक की भांति था जो अपनी बत्ती और तेल जलाकर दूसरो को प्रकाश दिया करते हैं। युगो की प्रतीक्षा के बाद ऐसी आत्मा का धरा पर प्रादुर्भाव हुआ करता है वे चले जाते हैं, किन्तु अगर बत्ती की भांति अपनी सुगन्ध लोक मे छोड़ जाया करते हैं।

स्वामी जी महाराज की सुगन्धि देश विदेश में फैल रही है। जो जो काम उन्होने अपने जीवन मे किये उसकी प्रशसा आज विरोधी लोग भी कर रहे है। महर्षि जी ने जीवन मे वह कार्य किए जो कोई बिरला व्यक्ति ही कर सकता है उन्होने अधकार मे गिरे लोगो को निकाल कर वेद ज्ञान का प्रकाश दिया। उस समय लोग कहा करते थे स्त्री और शूद्र को वेद नही पढने चाहिए परन्तु दयानन्द पृथ्वी पर प्रथम महर्षि थे जिन्होने यह उदघोष किया था कि जिस प्रकार सूर्य की धूप लेने का सबको पूर्ण अधिकार है चन्द्रमा की चादनी से सब लाभ उठा सकते हैं गगा की निर्मल धारा मे सब स्नान कर सकते हैं वस्त्र धो सकते हैं अपनी प्यास जल से बुझा सकते हैं। उसी प्रकार वेद जो प्रभु की पवित्र वाणी है उसे सब पढ सकते हैं। महर्षि जी सदियों से चली आ रही पुरानी गली सडी कुरीतियों को दूर करने मे लगे रहे। अन्तत विजय श्री उनके चरण कमलों मे लोटने लगी वह प्रत्येक क्षेत्र मे सफलता प्राप्त करने के उपरान्त प्रभु द्वारा भेजी हुई मृत्यु को हंस हंस कर गले लगाते हुए आज के दीपावली के दिन यह शब्द उच्चारण करने लगे। प्रभु तूने अच्छी लीला की प्रभुवर तेरी इच्छा पूर्ण हो?

अब हमारा सबका क्या कर्त्तव्य है हम उस देव दयानन्द की इच्छा पूर्ण करने मे लगे रहे। उन्होने अपनी मूक भाषा में कहा था आर्यो सबके लिए दरवाजे खुले रखना और शिक्षा बुद्धि तथा शास्त्रार्थ द्वारा मेरे बताये हुए वेद मार्ग की ओर ६०० लोगों को भी लगाने के लिए प्रयत्न शील रहना। तो आओ आर्यो! हम सब आज दीपावली के इस शुभ अवसर पर मिलकर प्रतिज्ञा करें कि महर्षि ने तो प्रभु की इच्छा पूर्ण की थी हम उनकी इच्छा पूर्ण करेंगे।

सन्धिया होती हैं उन सन्धियो से श्रोत यज्ञो का सम्बन्ध है। समष्टि जगत मे प्रात साय की काल सन्धिया, शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष की सन्धिया चातुर्मास्य सन्धियो उत्तरायण दक्षिणायन सन्धिया एव सावत्सरिक सन्धिया होती हैं। अत इन सन्धिकालो मे यज्ञो द्वारा प्राकृतिक शक्तियो को सुपुष्ट करने के लिए श्रोत यज्ञ भी आवश्यक हैं।

(१३) संस्कार विधि में कतिपय श्रोत यज्ञों की विधियां

इन श्रोत यज्ञो के नाम अग्निहोत्र, दर्श पौर्णमास्येष्टि, चातुर्मास्येष्टि अपनयाग सवत्सरेष्टि हैं। महर्षि ने संस्कार विधि मे अमावस्या और पूर्णिमा के पर्व यागो का, नवान्नेष्टि, सावत्सरिक यज्ञो के मन्त्रो का उल्लेख किया है। उनका जो आहुति भाग है उसको करने को लिखा और उनके कर्मकाण्ड का जो भाग है उसको छोड़ दिया है। अत ज्ञात होता है आहुति भाग प्रधान एव आवश्यक है और कर्मकाड भाग गौण है। इसी प्रकार अन्य श्रोत यज्ञो के बारे मे सुगम पद्धतिया ग्रहण करनी चाहिए—जटिलता सामान्य रूप से त्यागी जा सकती है तभी उनका भी प्रचार हो सकता है।

(१४) कतिपय श्रोत यज्ञ व्यक्ति एवं राष्ट्र निर्माण के लिए है

श्रोत यज्ञों मे काल सन्धियो के यज्ञो के ही साथ सोम याग भी है। इसका यद्यपि काल से सम्बन्ध है परन्तु समष्टि से कम सम्बन्ध है व्यष्टि से ही सम्बन्ध विशेष है तथा ऋतु से सम्बद्ध होने पर भी अनुष्ठान ऐच्छिक है। इसके पश्चात भी जो श्रोत यज्ञ वाजेपय, राजसूय, सौत्रामणि, अश्वमेधादि हैं उनका सम्बन्ध व्यक्ति और राष्ट्र के निर्माण से है। यह राष्ट्र की व्यवस्थाओ से सम्बन्धित है और राष्ट्र को समुन्नत करने के लिए है। इस प्रकार संस्कार विधि मे सोलह संस्कारों के साथ राष्ट्र मानव समाज एव समस्त प्राकृतिक पर्यावरण तथा विश्व को शुद्ध एव सुसंस्कारित करने का महर्षि ने मार्ग प्रदर्शित किया है।

स्वामी ध्रुवानन्द जी के संस्मरण

—स्व० मुंशीलाल शर्मा, आगरा



नैष्ठिक ब्रह्मचारी स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती इस जगत की शोभा थे। उनका व्यक्तित्व अखिल भारतीय था, आर्य संसार उन्हें भुला न सकेगा। सार्वदेशिक सभा के प्रधान भी थे। सन्यास से पूर्व वे प० धुरेन्द्र शास्त्री के नाम से प्रसिद्ध थे। उनके कुछेक संस्मरण प्रकाशित कर रहा हूं।

जन्मस्थान—प० धुरेन्द्र जी का जन्मस्थान वृन्दावन गुरुकुल के समीपस्थ पानी गांव (जिला मथुरा) था जहां वे सनाढ्य ब्राह्मण कुल मे उत्पन्न हुए थे। शैशव समाप्त हुआ, किशोर अवस्था का समय आया परन्तु पिता के देहान्त के कारण इनके पढने की व्यवस्था नहीं हो सकी। ये कुमार-अवस्था तक भी पशु चराना, कुश्ती तथा व्यायाम करना इत्यादि कार्यों मे लगे रहे। इनके हृदय मे पढने की लालसा थी और घर वाले विवाह के लिए शीघ्रता कर रहे थे। परिणाम स्वरूप एक दिन ये अपने घर से भाग निकले, घूमते फिरते स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज के आश्रम मे मथुरा पहुच गए। यहा ये विद्यार्थी रूप मे नहीं आये थे, बस ऐसे ही आ निकले थे। इन्हें पता लगा कि आश्रम का पाचक (रसोइया) घर चला गया है और आश्रम मे पाचक की आवश्यकता है। ये आश्रम व्यवस्थापक के पास पहुचे और व्यवस्थापक ने इन्हें पाचक के रूप मे नियुक्त कर लिया। ये भोजन बनाते और लघु कौमुदी का अध्ययन करते थे। उस समय श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज आश्रम मे न थे, कही प्रचार मे बाहर गए थे। कई दिनो के पश्चात् स्वामी सर्वदानन्द जी आये और आश्रम के नए पाचक को देखा। इधर नए पाचक जी भोजन पूरा देने के पश्चात् अध्ययन मे लग जाते। स्वामी सर्वदानन्द जी ने ताड लिया कि यह ब्रह्मचारी प्रतिभा सम्पन्न है। उन्होंने कुछ प्रयोगादि पूछे। सन्तोषजनक उत्तर पाकर उन्होंने पाचक के कार्य से हटाकर विद्यार्थी बनाया और नियमित रूप से संस्कृत के अध्ययन का क्रम चलने लगा। श्री स्वामी सर्वदानन्द जी को जब पता चला कि यह ब्रह्मचारी घर से भाग कर आया है तो उन्हें लेकर वे उनके घर गए और उनकी माता से इस आश्वासन पर ले आए कि स्वामी जी उन्हें पढ़ायेंगे। तब इनको माता जी ने स्वामी जी से प्रार्थना की कि इसे साधु न बनाना। इस प्रकार स्वामी सर्वदानन्द जी के चरणो मे अखिल भारतीय स्तर के इस आर्य नेता की शिक्षा दीक्षा हुई। स्मरणीय है कि प० धुरेन्द्र नाम स्वामी सर्वदानन्द जी का ही दिया हुआ था। इनका घर का नाम धूरिया था। (स्वामी विद्यानन्द विदेह ने अपने एक लेख मे आर्य समाज के इस वीत राग सन्यासी के लिए कुतूहलजनक शब्दो का प्रयोग करते हुए लिखा था कि 'धूरिया—धुरेन्द्र और ध्रुवानन्द' तीनो को मैं जानता हू।'

स्वामी सर्वदानन्द जी के पास रहकर शिक्षा समाप्त करने के पश्चात मुलतान तथा काशी आदि में आपने अध्ययन किया और शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की। न्यायादि शास्त्रों का भी अध्ययन किया और स्वामी सर्वदानन्द जी से ही आर्य समाज के प्रचार की दीक्षा ली। आप स्वामी जी के प्रमुख शिष्यों में माने जाते थे।

मेरी गायत्री लौटा दो

जिस समय परिजनों और अन्य सम्बन्धित व्यक्तियो को विदित हुआ कि धुरेन्द्र आर्य समाजी हो गया है तो उनमें क्षोभ होना स्वाभाविक ही था। एक बार जब वे अपने घर पहुचे तो इनके कुल पुरोहित द्वार पर बैठे मिले। इन्होंने 'नमस्ते' कहकर पुरोहित जी का अभिवादन किया। पुरोहित जी नमस्ते सुनकर बहुत अप्रसन्न हुए। इतने अप्रसन्न कि बोल उठे—मेरी गायत्री लौटा दो। यज्ञोपवीत के अवसर पर इन पुरोहित जी ने ही धुरेन्द्र जी को गायत्री मन्त्र सुनाया था। जब पुरोहित ने गायत्री लौटाने की बात कही तो विद्यार्थी धुरेन्द्र ने कहा—आपकी गायत्री आपको लौटा देंगे पर बिल्कुल उसी तरह जिस तरह लिया था।

पुरोहित ने पूछा—कैसे लौटाओगे ?

विद्यार्थी धुरेन्द्र ने उत्तर दिया—तीन दिन व्रत करो। जितनी सामग्री तुम्हें दक्षिणा रूप मे यज्ञोपवीत के समय मिली थी वह सब लौटाओ और उतने ही लोगो को आमन्त्रित करो तो हम सबके सामने तुम्हारे कान मे तुम्हारी गायत्री लौटा देंगे। यह सुनकर पुरोहित चकरा गया। उसके बाद उसने कभी उनसे छेड़छाड़ नहीं की।

गुरु भक्ति

विद्यार्थी धुरेन्द्र जी राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री बन गये थे। हिन्दू महा सभा का उत्सव था। भारत के कई राजा महाराजा आये थे। राजाओ के उत्सव मे राजगुरु जी प्राय जाया ही करते थे। इस बार कई राजाओ की इच्छा हुई कि राजगुरु जी के गुरु वीतराग स्वामी सर्वदानन्द जी को भी आमन्त्रित किया जाय। स्वामी जी भी आ गए। राजगुरु प० धुरेन्द्र शास्त्री का नियम था कि नित्य शयन से पूर्व गुरुजी के पैर दबाया करते थे। थोडी रात बीतनेपर राजगुरु जी ने स्वामी के चरण दबाना आरम्भ कर दिया। इसी समय काशी नरेश अन्य कई नरेशो के साथ आते जान पड़े। उन लोगो के पदचाप साफ सुनाई पडने लगे। तब भी स्वामी सर्वदानन्द जी ने कहा तुम इन राजाओं के गुरु हो। ये तुम्हें मेरे पैर दबाते देखकर क्या कहेंगे ? शिष्य ने कहा—महाराज, मैं जो कुछ भी हू सब आपकी कृपा का फल है। इन चरणो की सेवा के लिए मैं ऐसे कितने ही राजाओ को त्याग सकता हू।' ये लोग राजा होंगे अपने राज्य के, मैं तो आपका चरण सेवक हू। इतने मे राजा लोग आ गए। एक पाव तो राज गुरु दबा रहे थे दूसरे को दबाने के लिए कई राजो के नरेश लग गए। अब स्वामी सर्वदानन्द जी ने कहा धुरेन्द्र रहने दो। ये राजासाहब भी लग गये इससे अब बन्द करो।' इस पर राजाओ ने राजगुरु जी से प्रश्न किया—'शास्त्री जी, आप हम लोगो के गुरु हैं पूज्य हैं आप स्वामी के चरणो को क्यो दबाते हैं। यहा ऐसे २ सेवक हैं कि वे यदि चरण दबायें तो शरीर की पीडा भाग जाय, नींद आ जाए आप उनको न बुलाकर स्वयक्यो दबाते हैं। इस पर राज गुरु जी ने कहा—स्वामी जी मेरे गुरु हैं।' मै जो कुछ हू इन्ही की कृपा से हू। इनकी चरण सेवा मे मैं अपना सौभाग्य समझता हू। नौकर द्वारा चरण दबाने से मेरे कर्तव्य की पूर्ति नहीं होगी। तब राजा ने कहा कि 'क्या नौकरो से सेवा नहीं करानी चाहिए ?' गुरुजी ने उत्तर दिया-नौकरो से सेवा कराओ, पर तुम्हें भी कुछ करना चाहिए। यदि माता, पिता एवं गुरु की सेवा न की तो फिर श्राद्ध कैसा ? उसी समय किसी राजस्थानी नरेश ने कहा "मेरे पिता जी तो अब दिवगत हो गए है पर माता जी है। आज से नित्य उनके चरण दबाकर शासन किया करूगा।"

ऐसे गुरुभक्त थे प० धुरेन्द्र शास्त्री।

[उपर्युक्त लेख के लेखक आगरा निवासी श्री मुन्शीलाल शर्मा आर्यसमाज के साहित्य प्रकाशक थे। आगरा से वे आर्य प्रकाश पुस्तकालय के नाम से उत्तम कोटि का प्रकाशन कार्य करते थे। आर्य समाजो के उत्सवो पर आर्य साहित्य बिक्रयार्थ भी ले जाते थे। मेरी प्रथम कृति 'महर्षि दयानन्द और राजा राम मोहनराय का प्रकाशन १९५० मे उन्होंने ही किया था। इनके पुत्र कृष्णचन्द्र शर्मा दिल्ली मे आर्य साहित्य के विक्रेता और प्रकाशक हैं।

—भवानीलाल भारतीय

विविध समाचार

ईसाइयों द्वारा जिया के विरुद्ध जिहाद

नई दिल्ली। १६ सितम्बर, पाकिस्तान के ईसाइयो ने राष्ट्रपति जिया-उलहक की सरकार के खिलाफ एक जिहाद शुरू किया है। उनका कहना है कि राष्ट्रपति जिया-उलहक द्वारा देश का इस्लामीकरण किए जाने के चक्कर मे अल्पसख्यको के साथ भेदभाव बरता जा रहा है।

लाहौर मे हाल ही मे आयोजित पजाबी ईसाइयों की एक बैठक में इनके नेता जैसेलिक ने माग की कि अल्पमतदाता क्षेत्र प्रणाली को समाप्त किया जाए क्योकि यह गैर मुसलमानो मे यह भावना पैदा करती है कि उनकी उपेक्षा की जा रही है। (प० के० ११ ९ ८४)

कनाडा सरकार की उग्रवादी सिखों को कड़ी चेतावनी

ओटावा, २१ सितम्बर। कनाडा की सरकार वहा बसे अल्पसख्यक विदेशियो की इस हरकत से बडी परेशान है कि वे अपने मूल देशो की सरकारों से मतभेदो के प्रति कनाडा मे हिंसक एव तोड़फोड के रूप मे प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।

इस सन्दर्भ मे कनाडा के उप प्रधानमन्त्री व विदेशमन्त्री जीन क्रेटीन ने चिन्ता व्यक्त करते हुए १५ अगस्त की उस घटना का हवाला दिया जिसमे कुछ सिख नवयुवको ने नारे लगाते हुए वैनकूवर मे भारतीय काउसल जनरल के निवास पर हमला किया और ध्वजारोहण समारोह में विघ्न डालने का कुत्सित प्रयास किया।

सख्त शब्दो मे इस घटना की आलोचना करते हुए उन्होने दुःख व्यक्त किया एव कनाडा मे बसे विदेशियो को चेतावनी दी कि कनाडा सरकार किसी भी सूरत मे इस प्रकार की गैर कानूनी गतिविधिया सहन न करेगी। इसी के साथ उन्होने कनाडा मे बसे राजनयिको एव उनके विशेषाधिकारो के खिलाफ किए गए गैर कानूनी कृत्यो की भर्त्सना की। इन गतिविधियो मे कुछ ऐसे लोगो का हाथ बताया जो कि दूसरे देशो म कुछ राजनीतिक हितो की प्राप्ति के लिए इस प्रकार की कार्रवाई करते हैं।

एक सरकारी प्रवक्ता के अनुसार कनाडा सरकार न केवल प्रतिक्रियावादी सिखो से रुष्ट है बल्कि इस प्रकार की कुछ अन्य घटनाए भी हाल ही मे घटी हैं जिन पर सरकार चिन्तित है।

हाल ही मे ओटावा मे एक तुर्की के राजनयिक की हत्या कर दी गई और एक घायल हो गया। इस हिंसक घटना मे एक अन्तर्राष्ट्रीय सगठन आर्मिनियम सीक्रेट आर्मी फार दी लिबरेशन आफ अर्मेनिया के चार सदस्य लिप्त पाए गए।

विनिपेग मे चार सिख युवको को कार्यवाहक भारतीय उच्चायुक्त पर हुए हमले का आरोपी पाया गया।

टोरनटो मे दो सिख युवको पर स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर एक अतिथि एव एक पुलिस अधिकारी पर हमला करने का आरोप लगाया गया। दो सिखो पर वैनकूवर मे एक दुकानदार पर हमला करने का आरोप है।

श्री क्रेटीन ने कहा कि इस प्रकार की घटनाओ के बावजूद कनाडा में बसे विदेशियो के कुछ गठन बड़े ही गैर जिम्मेदाराना बयान जारी करते रहते हैं। फैडरेशन आफ सिक। (प० के० २२ ९-८४)

सिगरेट, बीड़ी से फेफड़े का रोग महामारी का रूप लेगा

वाशिंगटन, २४ अगस्त। भारत और चीन के सिगरेटों में टार तत्व औद्योगिक देशों मे बेचे जाने वाले कम टार के सिगरेटों की अपेक्षा ६६गुना अधिक होता है। विश्व स्वास्थ्य सगठन की एक समीक्षा के अनुसार एशिया मे कैंसर से सब से अधिक मौतें होती हैं। अगर दक्षिण एशिया मे सिगरेट पीने वालो की बढती सख्या पर अकुश नही लगा तो वहां फेफडे का कैंसर महामारी के रूप मे फैल जाएगा। सिगरेट, बीडी पीने को बढावा देने के धुआधार प्रचार के कारण फेफडो के कैंसर से बराबर अधिक लोगो के शिकार होते जाने की आशका है। इसे रोकने के लिए विकासशील देशो की सरकारो को सिगरेट, बीडी पीने के विरोध में जवाबी अभियान चलाने होगे।

समीक्षा के अनुसार चीन और भारत मे चौथे हिस्से से लेकर तीसरे हिस्से तक पुरुष वर्ग तम्बाकू पीने का व्यसनी है और यह तम्बाकू ही फेफडे के कैंसर का मुख्य कारण होता है।

मुसलमानों को भारत में किसी भी अन्य गैर-मुस्लिम देश की अपेक्षा अधिक सुविधायें

ए एन बिस्मिल, डी सी आई, जामिया मिलिया यूनिवर्सिटी नई दिल्ली

१—हम किसी सरकारी विद्यालय, कार्यालय मे अपने धर्म के अनुसार जुम्मे की तरह छुट्टी कर सकते हैं।

२—भारत मे हम मुस्लिम विश्वविद्यालय खोल सकते हैं और अपने धर्म का प्रचार स्वतन्त्र रूप से कर सकते हैं।

३—हम अपने धार्मिक प्रोग्रामो को रेडियो टी वी पर सुन देख सकते हैं।

४—हम अल्पसख्यक के नाम पर किसी स्कूल या कालेज में सीट ले सकते हैं।

५—हम मुसलमानो की तरह हिन्दुओ को किसी मुस्लिम देश मे राष्ट्रपति चुनाव तो दूर हिन्दू चुनाव तक नहीं लड सकते।

६—हम भारत मे मीनाक्षीपुरम की तरह खुले ग्राम मुसलमान बना सकते हैं।

७—हम यहा अपना धार्मिक साहित्य बेच सकते हैं किन्तु किसी मुस्लिम देश मे हिन्दू ऐसा नही कर सकते।

८—हम यहा अपना व्यापार स्वतन्त्र रूप से कर सकते हैं किसी हिन्दू को मुस्लिम देशो मे ऐसी स्वतन्त्रता नही है।

९—हम भारत के राष्ट्रपति भवन मे नमाज पढ सकते हैं।

१०—हम भारतके प्रमुख विभाग सेना, पुलिसमे नौकरी करते हैं मुस्लिम देशो मे हिन्दू साधारण कार्यालय तक मे नौकरी नही कर सकता।

आर्य समाजों की गतिविधियां

उत्सव

आर्यसमाज निर्माण विहार नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव १८ से २१ अक्तूबर तक सेन्ट्रल पार्क निर्माण बिहार में मनाया जायगा। २१ अक्तूबर को राष्ट्र रक्षा सम्मेलन सा० सभा प्रधान श्रीरामगोपाल जी शालवाले की अध्यक्षता में होगा।

—वी० एन० शर्मा
प्रधान

आर्य समाज दरियागंज नई दिल्ली में सार्व० सभा प्रधान तथा प्रतिनिधि सभा-प्रधान का स्वागत

दिनांक ७-१०-८४ दिन रविवार को पश्चिम जर्मनी से वेद गोष्ठी में भाग लेकर प्रति निवृत्त होने पर सार्व० सभा के प्रधान माननीय लाला रामगोपाल जी शालवाले का सादर अभिनन्दन किया गया। आदरणीय सभा-प्रधान ने जर्मन-निवासियों के हृदय मे वेद एवं वैदिक संस्कृति के प्रति आस्था एवं विश्वास का विशुद्ध विवेचन अपने भाषण में किया, जिसका समाज पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

साथ में आर्यप्रति० सभा, हनुमान रोड, नई दिल्ली के प्रधान चुने जाने पर श्रीयुत सूर्य देव जी का भी स्वागत माल्यार्पण द्वारा किया गया। —मन्त्री, आर्य समाज, दरियागंज

—दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल, समीप अनुपम टाकीज डी० ब्लाक मार्ग-७ के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द निर्वाण उत्सव श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले (वानप्रस्थी) की अध्यक्षता में मनाया जायेगा—दिनांक ११ अक्तूबर ८४, प्रात. ८ ॥। बजे तक कार्यक्रम चलेगा।

२—महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी के उपलक्ष में आर्यसमाज बिसावर का वार्षिकोत्सव एवं तहसील सादाबाद का 'आर्य सम्मेलन' जूनियर हाई स्कूल के प्रांगण में आयोजित होना निश्चित हुआ है।

—वैदिक पुस्तकालय का शिलान्यास श्री योगेन्द्र पाण्डे (मुखिया) राज्य पुर (लौरियां) के पवित्र दान से उन्ही के व्याख्यानों द्वारा आचार्य पं० रामानन्द शास्त्री महोपदेशक की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

—दि० १६-९-८४ को आर्यसमाज शक्ति नगर (मिर्जापुर) का कार्यभार सर्वसम्मत अधिकारीगण को सौंपा गया। अध्यक्ष—अखिलेश चन्द्र गुप्त, उपाध्यक्ष-शरद कबानी, मन्त्री-शिवकुमार दुबे, कोषाध्यक्ष-राजेन्द्र सिंह। उपमन्त्री-रमेश चन्द्र राय। स्मरणीय है कि यही आर्य समाज इसके पूर्व प्रचारिणी समिति के रूप में सक्रिय था।

—आर्यसमाज थापर नगर मेरठ का वार्षिकोत्सव दि० १० से १२ नवम्बर तक मनाया जायगा, जिसमें उ० प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के नव निर्वाचित प्रधान-श्री इन्द्रराज जी तथा वैदिक विद्वान् पं० श्री शिवकुमार जी शास्त्री के अतिरिक्त आर्य जगत् के सुविज्ञ वक्तागण पधारेंगे।

—मसूरी आर्य समाज का जलसा २३ से २८-९-८४ तक मनाया गया।

(सुरेश चन्द्र आर्य)
मन्त्री-आर्य समाज, बिसावर)

'सार्वदेशिक' पत्र के आजीवन सदस्य बनिये

किसी साप्ताहिक पत्र के ग्राहक बनने पर पत्र की ओर से चन्दे की बार बार याद बार-बार मनिआर्डर भेजना आदि कठिनाइयां प्राय: सामने आती रहती हैं—इन कठिनाइयों से बचने के लिए पत्र का आजीवन सदस्य बन जाना ही श्रेयस्कर होता है। १०० रुपये देकर सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र का आजीवन सदस्य बन जाइये। —व्यवस्थापक'।

गायों का ह्रास-बोलते आंकड़े

ग्रामीण अंचल में

१९७६ में (१) ५ करोड़ ३१ लाख ८१ हजार जवान गायें थीं।
(२) ४ करोड़ ५५ लाख ८७ हजार दूध देने वाली गायें थी।
(३) जवान गायों की संख्या ४ करोड़ २६ लाख ४७ हजार है।
यानी २६ प्रतिशत की कमी हुई।
दूध देने वाली गायों में १५ प्रतिशत की कमी हुई।

शहरी अंचल

दूध देने वाली गाय २० लाख ४० हजार।
घटकर १९७६ मे १६ लाख ४० हजार।

२० प्रतिशत ह्रास

७६ के बाद अत्यधिक संख्या में गायों का ह्रास हुआ क्यों कि मांस का निर्यात ८३ में ८ गुना बढ़ा है।
चमड़े का निर्यात चार गुना बढ़ा है।

ऋतु अनुकूल हवन सामग्री

(पृष्ठ १ का शेष)

इतिहास की सबसे बड़ी देन

महर्षि ने इस देश का नाम आर्यावर्त्त लिखा है, उन्होंने यह सिद्ध किया है कि तिब्बत में सबसे पहले मानव सृष्टि हुई और वहां से आर्यों ने आकर इस देश को आबाद किया और इस देश का नाम आर्यावर्त्त पड़ा। उन्होंने यह भी सिद्ध किया कि आर्यों से पूर्व इस देश में कोई आबादी नहीं थी और न देश का कोई नाम था। यदि महर्षि के इस कथन का प्रचार हो तो आदिवासी और द्रविड़ आदि के भ्रमजनक आन्दोलनों, नस्ल, वर्ण और रंग के अत्याचारों एवं विविध अभिप्रायों से समाविष्ट भेदभावों का शमन शीघ्र ही हो जाय।

राष्ट्र के संगठन में इस समय ४ वाद आड़े आ रहे हैं अर्थात् जातिवाद सम्प्रदायवाद, प्रान्तवाद और भाषावाद।

महर्षि दयानन्द ने राष्ट्रीय एकता की सुरक्षा के लिए जन्मना जात-पात का प्रबल खण्डन किया। सम्प्रदायवाद के उन्मूलन के लिए या उन्हें मर्यादित करने के लिए उन्होंने सब मतों का मूल वैदिक धर्म सिद्ध किया है। उनके मत मतान्तरों की समीक्षा राष्ट्र की सुरक्षा और विश्व बन्धुत्व की ओर प्रेरित थी। उस समीक्षा को केवल खण्डन के रूप में समझकर उसका महत्व दृष्टि से ओझल हो जाता है।

प्रान्तवाद के लिए भी उन्होंने पूर्ण रूप से उस समय ही चेतावनी दे दी थी और इस दृष्टि से उन्होंने सारे संसार के उपकार को आर्य समाज का लक्ष्य बताया। प्रान्तवाद ही नहीं सम्प्रति तो नेशनैलिटी (जातीयता) भी कलह और अशांति का कारण बनी हुई है।

सच्चा देशभक्त वह है जो अपने देश का ही शुभ चिन्तक नहीं वरन सारे संसार के हित को ध्यान में रखता है।

भाषावाद के लिए भी उसी समय महर्षि ने पूर्ण व्यवस्था कर दी थी। गुजराती उनकी मातृभाषा थी और संस्कृत के वे धुरन्धर विद्वान थे फिर भी उन्होंने देवनागरी में लिखित हिन्दी भाषा में अपना पूर्ण साहित्य प्रकाशित किया और इसी कारण हिन्दी को राष्ट्रभाषा का स्थान देश के संविधान में प्राप्त हुआ है।

महर्षि ने शास्त्र और शस्त्र, शांति और शक्ति दोनों पर भी बल दिया है।

महर्षि के आदेशानुसार यदि हम सब मिलकर कार्य करें तो राष्ट्र का ही नहीं समस्त विश्व का हर प्रकार का योगक्षेम, शांति और सौन्दर्य सुरक्षित रह सकते हैं।

जीवन का पटाक्षेप

३० अक्टोबर १८८३ को सायंकाल ५ बजे अजमेर में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने प्राणों का परित्याग किया था। वह दिन दीपावली का पुण्य पर्व था। उसी दिन यह प्रचण्ड ज्योति हमारे पार्थिव नेत्रों से ओझल हुई थी जिसका प्रकाश जन मानस के हृदयों पर युग युगान्तर तक व्याप्त रहेगा। वह दिन शीघ्र ही आयेगा जब महर्षि की भावना उनके सदुद्देश्यों एवं कार्य कलाप का ठीक-ठीक व्यापक रूप में मूल्यांकन होगा और भारत के ही नहीं विश्व के कोने कोने में उनके नाम की पूजा होगी।

ईश्वरार्पण

महर्षि दयानन्द मृत्यु शय्या पर लेटे हुए थे। उनका जीवनोद्देश्य वेदों का प्रचार और आस्तिकता का विस्तार करना था। उनका जीवन इन्हीं पर अर्पित रहा।

पं० गुरुदत्त और अनेक सज्जन उनके अन्तिम दर्शन के लिए विद्यमान थे। उन्होंने पलंग पर बैठकर कुछ प्राणायाम किया और इसके पश्चात् कुछ वेदमन्त्रों का उच्चारण करते करते उनके चेहरे पर मुस्कराहट आई और इसी ने गुरुदत्त जैसे नास्तिक को आस्तिक बना दिया।

महर्षि ने उसी मुस्कराहट की अवस्था में अपने अन्तिम शब्द उच्चारण किए—

"प्रभो! अच्छी लीला की। आपकी इच्छा पूर्ण हो।"

इस अन्तिम कामना में महर्षि का ईश्वर प्रेम मूर्तरूप धारण करके हमारे सामने आ जाता है।

सच्चे ईश्वर की खोज के लिए ही उन्होंने घर का परित्याग किया था। उसकी सेवा में उन्होंने अपने को मिटा दिया। वस्तुतः वे ईश्वर के आज्ञा पालक पुत्र थे।

मराठा ऐम्पायर की हिस्ट्री (मराठा साम्राज्य का इतिहास) के प्रणेता और स्वामी दयानन्द जी के परम प्रशंसक जस्टिस महादेव गोविन्द रानाडे के शब्दों में उनमें धार्मिक उत्साह भरा हुआ था, उनमें वीरोचित कर्मण्यता की भावना विद्यमान थी जिसकी उत्पत्ति इस विश्वास में हुई थी कि कोई उच्चतम सत्ता मेरे कार्य का संरक्षण कर रही है।

अपने को ईश्वरार्पण रखनेसे वे यह कहने में समर्थ हुए प्रतीत होते थे कि "जीवितावस्था में प्रभु मेरे साथ है मृतावस्था में मैं प्रभु के साथ हुआ।"

एक दूसरे इतिहास वेत्ता के शब्दों में "ऋषि के जीवन की इस अन्तिम झांकी से जो सबसे बड़ा भाव हमारे मन पर अंकित होता है वह यह है कि वे हंसते-हंसते इस जगत से विदा हुए थे। हंसते हुए वे ही मनुष्य जाते हैं जो जीवन का अपना लक्ष्य पूरा कर लेते हैं और उनका यह लक्ष्य ऊंचा होता है। कहा भी गया है कि प्रत्येक मनुष्य को संसार के हर्ष समुदाय में योग देकर यहां से विदा होना चाहिए। ऋषि दयानन्द ने संसार के हर्ष समुदाय में बेजोड़ योगदान किया है।

हम सबका ध्येय जीवन की उपर्युक्त प्रकार की गति को प्राप्त करने का होना चाहिए अर्थात् संसार में अपने आचरण और व्यवहार से प्रसन्नता में वृद्धि ही करनी चाहिए और अपने जीवन का उच्चतम लक्ष्य स्थिर करके उसकी पूर्ति में लगकर अन्त में रोते हुए नहीं वरन हंसते हुए यहां से विदा होना चाहिए।

महर्षि की इस भावना और बलिदान ने विश्व देश धर्म और मुख्यतः आर्य समाज के लिए सोने में सुगन्ध का कार्य किया है।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

प्रस्ताव

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री इन्द्रराज जी व मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी के ऊपर दिनांक ६ सितम्बर १९८४ को सभा भवन ५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ में बन्दूकधारी योगेन्द्रसिंह यादव तथा उसके एक अन्य सशस्त्र बदमाश सहयोगी के प्राणघातक हमले से सारे उत्तर प्रदेश की समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं में रोष व्याप्त है। यह भी ज्ञात हुआ है कि इस षड्यन्त्र में आर्य समाज से निष्कासित कुछ व्यक्ति भी सम्मिलित हैं जो अपने स्वार्थ और महत्वाकांक्षी भावनाओं के वश में ऐसे जघन्य अपराध करने पर आमादा हो गए हैं। उनका यह कार्य घोर निन्दनीय है।

आर्य समाज शास्त्री नगर मेरठ ने अपने दिनांक ३० सितम्बर १९८४ के रविवारीय अधिवेशन में उपरोक्त निन्दा प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया है। आर्य समाज जैसी पवित्र व सर्वोच्च संस्था में पदलोलुपता के लोभी व्यक्तियों के ऐसे नीच इरादों को देख आज सचमुच महर्षि दयानन्द की आत्मा भी रो उठी होगी। प्रभु से समस्त आर्य जगत की यह कामना है कि ऐसे निम्न स्तर के कार्य करने वालों को सूझबूझ एवं सद्बुद्धि प्रदान करें तथा हमारे लोकप्रिय नेताओं को दीर्घ आयु प्रदान करें।

वैवाहिक सूचना

ब्राह्मण, स्वर्णकार और कायस्थ वर्ण (वर्ग) के सम्मानित आर्य परिवारों की सुशिक्षित, सुन्दर और गृह कार्यों में दक्ष इत्यादि विवाह योग्य विभिन्न आयु की कन्याओं के लिये योग्य आर्य वरों की शीघ्र आवश्यकता है। पूर्ण विवरण सहित सम्पर्क करें जातिबन्धन नहीं। —मन्त्री

आर्य समाज, गोंदिया (महाराष्ट्र)

आर्य समाजी नेता का निधन

(सम्वाददाता द्वारा)

मुरादाबाद, १४-१० ८४

श्री प० ब्रह्मदत्त पाठक तर्क रत्न का १३ १० १९८४ की रात्रि को मु० गज स्थित अपने निवास गृह में देहावसान हो गया। उनकी आयु ९१ वर्ष की थी। १४ १० ८४ को उनका अन्त्येष्टि सस्कार वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ। चिता मे उनके एक मात्र पुत्र श्री हरिश्चन्द्र जी ने अग्नि प्रज्वलित की।

श्री पाठक ग्राम महमूदपुर (बिजनौर) के एक कुलीन आर्य परिवार से सम्बद्ध थे। उन्होने स्वामी श्रद्धानन्दजी तथा महात्मा नारायण स्वामी प्रभृ न वरिष्ठ आर्य नेताओ के निर्देशन मे काफी समय तक आर्य समाज का प्रचार तथा शुद्धि कार्य किया था। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश एव गुरुकुल वृन्दावन के अधीन किए गए कार्य का रिकार्ड भी बहुत लम्बा रहा।

सार्वदेशिक एव आर्य मित्र आदि आर्य पत्रो मे उनके अनेक लेख छपे थे।

गुरुकुल कण्वाश्रम की भव्य यज्ञशाला हेतु

दान दाताओं से अपील

यज्ञो भुवनस्य नाभिः यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्मः

महर्षि कण्व की पवित्र तपोस्थली शकुन्तला की जन्मस्थली चक्रवर्ती सम्राट वीर भारत की क्रीडा स्थली हिमालय की सुन्दरतम् उपत्यकाओ मे महाकवि कालिदास की काव्यस्थली मालिन नदी के तट पर स्थित कण्वाश्रम मे आज से बारह वष पूव आधुनिक भीम ब्रह्मचारी विश्वपाल जयन्त ने गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम की स्थापना की जहा पर आज भी हिसक अहिसक हिरण सिह हाथी आदि प्राणी स्वच्छन्द रूप से विचरण करते हुए दिखाई देते है। इस रमणीय तीर्थ स्थल मे छोटे-छोटे ब्रह्मचारी वदिक शिक्षा के साथ शारीरिक शिक्षा भी प्राप्त कर रहे है। इस महाविद्यालय को शास्त्री (बी० ए०) तक की मान्यता प्राप्त हो चुकी है।

उत्तर प्रदेश सरकार ने ५ एकड़ भूमि गुरुकुल को कृपा पूवक दी है। भवना मे ब्रह्मचारियो का आश्रम ही बन पाया है। बाकी सब झोपडिया हैं। हम एक विशाल यज्ञशाला एव विद्यालय भवन का निर्माण करना चाहते हैं।

इस पर एक लाख पचास हजार रुपये व्यय होगे। यह गुरुकुल का परम सौभाग्य है कि यज्ञशाला के निर्माण हेतु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय श्री ला० रामगोपाल जी वानप्रस्थ ने अपना शुभ आशीर्वाद प्रदान कर दस हजार रुपये दिये हैं।

आप दानी महानुभावो की सेवा मे विनम्र प्रार्थना है कि इस सुन्दर स्थली मे गुरुकुल की शोभा बढाने के लिए यज्ञशाला के निर्माण मे अपना पवित्र योगदान प्रदान करने की कृपा कर। यहा यह उल्लेखनीय है कि कण्वाश्रम को दिया गया दान धारा सी० स० ५८/५० तकनीकी (मु०) ८१-८२ भारत सरकार के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

प्रत्येक पाच हजार रुपये अथवा अधिक दान देने वाले महानुभावो के नाम का सगमरमर का पत्थर यज्ञशाला मे लगवाया जायेगा। इससे कमवालो का नाम वहा लगायी जाने वाली सामूहिक सूची मे लिखा जावेगा।

अत आप महानुभावो की सेवा मे विनम्र प्रार्थना है कि महान आदर्शों को लेकर स्थापित इस महान् सस्था को आप सहयोग भरा आशीर्वाद प्रदान करने की कृपा करे।

निवेदक

मधुर शास्त्री	चन्द्रसिंह रावत	सुरेश कुमार अग्रवाल
प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम, पोस्ट कलालघाटी, कोटद्वार (उ०प्र०)



बाय से महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिह सभा प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले सभा के अवैतनिक सलाहकार प० ब्रह्मदत्त स्नातक दायी ओर बैठ हैं।

नेत्र चिकित्सा शिविर सम्पन्न

गाजियाबाद ३० सितम्बर, स्थानीय वदिक सन्यास आश्रम दयानन्द नगर गाजियाबाद म चल रहे नेत्र चिकित्सा शिविर मे अब तक १६० रोगियो को देखा गया जिनमे से ३४ रोगियो के आपरेशन किये गये जो सभी सफल रहे।

इस शिविर का उदघाटन गाजियाबाद विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष श्री जी० डा० मिश्र तथा समापन जिलाधिकारी श्री चन्द्र पाल ने किया।

महर्षि दयानन्द फिल्म निर्माण

श्री भगवानदेव संसद सदस्य महर्षि दयानन्द पर फिल्म बना रहे हैं। इस समाचार से देश भर के आर्य समाजो तथा आर्य पुरुषो नारियों मे रोष की लहर दौड़ गई है।

आज २ ९ ८४ को यज्ञ हवन करने के पश्चात आर्य समाज गांधी चौक रोपड़ की सभा में हुई बैठक मे प्रस्तुत हुआ। आर्य समाज रोपड़ ने सर्व सम्मति से निश्चय किया है कि महर्षि दयानन्द पर फिल्म बनाये जाने पर और किसी के द्वारा उनका स्वांग भर जाने की किसी भी अवस्था मे सहन नही किया जायेगा तथा महर्षि दयान द पर फिल्म निर्माण के विरुद्ध प्रस्ताव पास करती है।

यह भी पास हुआ कि इस विरोध प्रस्ताव की प्रतिलिपि प्रधान मन्त्री राष्ट्रपति सूचना तथा प्रसारण मन्त्री तथा समाचार पत्रों पत्रिकाओ मे प्रकाशनार्थ भेजी जावे व एक प्रतिलिपि फिल्म निर्माण विरोधी अभियान समिति के कार्यालय मे भेजी जावे। स्वीकृति दी जाती है।

—म त्री आय समाज
गांधी चौक रोपड़ (पंजाब)

रामनाथपुरम में शुद्धि

मदुराई ६ अक्टूबर डा० अमरेश आर्य सम्व ददाता आय समाज मदुराई ने आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश के सहयोग से रामनाथपुरम के सयालूर एव कूरीयू और मेलामडी आदि स्थानो मे ४० मुस्लिम परिवारो की शुद्धि सस्कार महात्मा नारायण स्वामी के पौरोहित्य मे सम्पन्न कराया गया। इन लोगो ने एक साल पूर्व इस्लाम धर्म की दीक्षा ली थी।

इस्लामिक मिशनरियो के साथ आर्य समाज के कमठ कार्यकर्ताओ ने कई विषयो पर चर्चा के पश्चात इस परिणाम पर पहुच कर शुद्धि की गई।

समाज ... निषद्
प्राता...

आत्म विकास सस्थान का सत् प्रयास

गाजियाबाद ३० सितम्बर नगर आर्य समाज गाजियाबाद मे आत्म विकास सस्थान की आचार्या बहन विनीता जी के प्रयास से प्रथमबार ईशोपनिषद् प्रतियोगिता का सफल आयोजन आचार्य डा० मित्र जीवन की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। निर्णायक श्री सोनेराव आचार्य एम० ए० रिसर्च स्कालर श्री सामव्रत विद्याभास्कर श्री बालदिवाकर हंस (प्रधान सचालक सार्वदेशिक आ य वीर दल) थे। प्रथम पुरस्कार पचास रुपये मूल्य की पुस्तकें कु० प्रतिमा नौ वर्षीया तथा पचम को प्राप्त हुआ। द्वितीय पुरस्कार कु० वन्दना और तृतीय कु० मीनाक्षी को प्राप्त हुआ। अपने अध्यक्षीय भाषण मे इस प्रतियोगिता के आयोजन को साधुवाद दिया गया और अगला प्रयास इससे भी व्यापक स्तर पर किया जावे इसकी आकांक्षा व्यक्त की गई। सामाजिक उत्थान की इस डगर के चौड़ा होने की कामना करते हुए अपना आशीर्वाद दिया।

— सवाददाता

विशेष — इस प्रतियोगिता मे सर्वप्रथम आनेवाली बालिका कु० प्रतिभा लालबहादुर सैनिक स्कूल की छात्रा है।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली-२ में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित।

सार्वदेशिक

साप्ताहिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८५] वर्ष १९ अंक ४७]

कार्तिक शु० ५ सं० २०४१ रविवार २८ अक्तूबर १९८४

दयानन्दाब्द १६० दूरभाष । २७४७७१

वार्षिक मूल्य १६) एक प्रति ४० पैसे

महर्षि निर्वाणदिवस (२४-१०-८४) दीपावलि पर प्रचारित सार्वदेशिक सभा प्रधान का संदेश

महर्षि आजीवन मानव की दासता की बेडिया काटते रहे चाहे वे शारीरिक रही हों, मानसिक रही हों अथवा धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक वा सांसारिक रही हो।

उन्होंने मानव समाज को असत्य से सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाने का महान् प्रशस्त कार्य किया। उन्होंने हमे मरना और जीना दोनो हीसिखाए। उनका प्रत्येक कार्य सत्य और प्रभु के अर्पण रहा। सत्य के लिए ही वे जिए और सत्य के लिए ही मरे।

आर्यसमाज मानस पुत्र

आर्य समाज उनका मानस-पुत्र और उत्तराधिकारी है। प्रत्येक आर्य को इस पुण्य अवसर पर आत्म-निरीक्षण करके जहा अपनी वैयक्तिक त्रुटियो को दूर करते रहने का व्रत लेना है, वहा यह भी देखना है कि आर्यसमाज के कार्य विस्तार, उसकी यश वृद्धि और संगठन की दृढ़ता के प्रति हमारा जो कर्त्तव्य है उसका कहा तक पालन किया है और उसे इस दिशा मे क्या क्या करना है? साथ ही जाने वा अनजाने कोई भूल हुई हो तो उस पर पश्चात्ताप करके भविष्य मे उसकी पुनरावृत्ति न करने का भी व्रत लेना है।

कुछ अन्धकार कुछ प्रकाश

महर्षि ने अन्तिम समय कहा था 'कुछ प्रकाश' इसका अभिप्राय यह भी हो सकता है कि उन्होंने अन्धकार को मिटाने का जो महान् व्रत लिया था वह बीच मे ही अनपेक्षित रूप मे ही उनके बलिदान के कारण पूर्ण न हो सका और प्रकाश के पूर्ण सूर्य का दर्शन न हो सका।

अज्ञान एवं अविद्यान्धकार का विनाश हो, मानव की बेडिया कटें और सर्वत्र ज्ञान शान्ति और सौहार्द का प्रकाश हो, यही दीपावलि का पुण्य सन्देश है।

—रामगोपाल शालवाले
प्रधान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का अधिवेशन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का साधारण बृहदाधिवेशन दिनांक १५,१६-१२-८४ को दिल्ली न होना निश्चय हुआ है।

अतः आर्य प्रतिनिधि सभायें और समस्त आर्य समाजे अपने-उत्सव व विशेष समारोह उपरोक्त तिथियो मे रखकर ५ ६ दिन का समय देकर रखें। —सच्चिदानन्द शास्त्री संयुक्त मन्त्री-सभा

दिल्ली के महापौर के नाम सार्वदेशिक सभा प्रधान का पत्र

घण्टाघर चौक का नाम बदलकर श्रद्धानन्द चौक रखा जाय

माननीय श्री महेन्द्रसिंह जी साथी
महापौर-दिल्ली नगर निगम
दिल्ली-११०००६

सादर नमस्ते।

निवेदन है कि घन्टाघर पर श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का स्टेच्यू दिल्ली नगर निगम की ओर से लगाया गया था। दिल्ली की आम जनता आज यह माग कर रही है कि घण्टाघर चौक का नाम श्रद्धानन्द चौक रखा जाय। उनके बारे म कुछ विशेष ज्ञातव्य बातें —

१—१९२१ मे श्रद्धानन्दजी महाराज ने अंग्रेज सरकार के खिलाफ निकाले गये जलूस का नेतृत्व किया था जो घण्टाघर पर समाप्त हुआ। वहा अंग्रेज सैनिको को जलूस मे शामिल होने वालो पर गोली चलाने का आदेश हुआ तो स्वामी श्रद्धानन्द ने अपनी छाती के बटन खोलते हुए अंग्रेज सैनिको की ओर अपना सीना तानकर कहा पहले गोली मेरी छाती पर चलेगी। अंग्रेजो की बन्दूक झुक गई।

२—भारत के इतिहास मे यह पहला ही उदाहरण है कि किसी मस्जिद मे किसी गैर मुस्लिम को मिम्बर से उपदेश करने का गौरव प्राप्त हुआ हो। लेकिन स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को दिल्ली की शाही जामा मस्जिद मे बुलाया गया और उन्होने खडे होकर मिम्बर से उपदेश दिया।

३—अमृतसर के जलियावाले बाग मे जर्नल डायर द्वारा गोली काड मे निरपराध लोगो के हत्याकाण्ड से सब डरे हुए थे। तब श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज ने वहा अखिल भारतीय कांग्रस का अधिवेशन बुलाया। इस अधिवेशन के अध्यक्ष मोतीलाल नेहरू चुने गए और स्वामी जी महाराज स्वागताध्यक्ष बने।

मेरा कहने का तात्पर्य यही है कि उपरोक्त नाम परिवर्तन करना सर्वथा उचित है। इतिहास मे ऐसे महापुरुषो को पूर्ण सम्मान और स्थान मिलना ही चाहिए। अतः घण्टाघर चौक का नाम—स्वामी श्रद्धानन्द चौक—के नाम पर दिल्ली नगर निगम द्वारा परिवर्तित किया जावे।

भवदीय
रामगोपाल शालवाले
सभा-प्रधान

सम्पादक—ओमप्रकाश पुरुषार्थी

सहसम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

बुखारी मुस्लिम देशों से धन जुटा रहे हैं

आलोक मेहता

नई दिल्ली, १३ अक्तूबर। पता चला है कि जामा मस्जिद के शाही इमाम सैयद अब्दुल्ला बुखारी अगले चुनाव में करीब चालीस स्थानों से कट्टर मुस्लिम प्रत्याशियों को खड़ा करने के लिए चुपचुप तैयारियां कर रहे हैं। इस राजनैतिक उद्देश्य और मुस्लिम हितों की रक्षा के नाम पर शाही इमाम कट्टरपंथी मुस्लिम देशों से सहायता भी जुटा रहे हैं।

मुस्लिम देशों की सहायता पाने के इसी अभियान के अन्तर्गत शाही इमाम आज सुबह कुवैत एयरवेज के विमान से कुवैत और सऊदी अरब की दस दिवसीय यात्रा पर रवाना हो गए। अभी दो महीने पहले ही वह लीबिया और सऊदी अरब की यात्रा करके आए थे। कुवैत और सऊदी अरब से वापस आने के दो-तीन दिन बाद शाही इमाम ईरान और ईराक की यात्रा पर चले जायेंगे।

इन यात्राओं के दौरान शाही इमाम के साहबजादे युवा इमाम भी साथ रहते हैं। यही नहीं परिवार के साथ उनका खादिम (नौकर) भी विमान की पहली श्रेणी में यात्रा करता है। शाही इमाम उन देशों में पहुंचकर भारतीय मुस्लिमों की 'दयनीय स्थिति' का दुखड़ा सुनाते हैं। वहीं भारतीय मुस्लिमो की 'दुर्दशा' पर संयुक्त राष्ट्र संघ को भेजे गए १६ पृष्ठीय ज्ञापन की छपी हुई प्रति भी खाड़ी देशों के नेताओं को देते हैं। इस ज्ञापन में 'भारत के १५ करोड़ मुसलमानों के साथ अन्याय और अत्याचार होने के गम्भीर आरोप लगाते हुए मानव अधिकारों की रक्षा के नाम पर हस्तक्षेप का आग्रह किया गया है। मुसलमानो पर जुल्म के लिए प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को सबसे बड़ा जिम्मेदार ठहराया गया है।

कुवैत रवाना होने से पहले कल १२ अक्तूबर को शाही इमाम श्री बुखारी ने जामा मस्जिद में इस सम्वाददाता से हुई बातचीत के दौरान भी कहा—'मैं' किसी भी कीमत पर अगले चुनाव में श्रीमती गांधी के साथ जाने वाला नहीं हूं। उन्होंने मौखिक या लिखित जितने भी वायदे किए, उन्हें कभी पूरा नहीं किया है। अपनी चुनावी रणनीति की घोषणा मैं अपनी ईरान-इराक यात्रा से वापस आने के बाद नवम्बर मे ही करूंगा।'

शाही इमाम की गतिविधियों का पता लगाने और इनसे भेंट के लिए इस सम्वाददाता ने जामा मस्जिद में बने उनके कार्यालय के बाहर कुछ दिनों तक कई घण्टे बिताए हैं। इस दौरान राजनैतिक सहायता या पुलिस से सिफारिश कराने वाले लोग वहां मिले। यही नहीं, जिस समय मैं शाही इमाम से बातचीत कर रहा था, असम से आए एक सज्जन ने अपनी संक्षिप्त मुलाकात के दौरान शाही इमाम से कहा—'मेरे बेटे दुबई और इण्डिया के बीच बिजनेस कर रहे हैं, इन्हें दोनों तरफ की पुलिस तंग कर रही है। आपकी इनायत हो जाए, तो बहुत शुक्रगुजार रहूंगा। दूसरे मैं अगले चुनाव के लिए तैयारी कर रहा हूं, उसके लिए भी आपकी दुआ चाहिए।

शाही इमाम ने एक बार मेरी तरफ देखा और फिर केवल 'दुआ' देकर उन्हें जाने का संकेत कर दिया। यों इन सज्जन के साथ इमाम साहब के घनिष्ठ सम्बन्धों का आभास उनके जाने से पहले कारिन्दे द्वारा दिए गए इस सन्देश से हो गया था कि 'असम में आप जिस सज्जन के घर पर ठहरे थे वही मिलने के लिए आए हैं।"

बहरहाल इस सज्जन के जाने के बाद हुई बातचीत में शाही इमाम ने अपनी राजनैतिक योजना के बारे में अधिक कुछ नहीं बताया। लेकिन इतना अवश्य कहा—'इस समय मुस्लिम जनता इन्दिरा गांधी की सरकार से बहुत खफा है। कश्मीर में तो लोगों ने नोटों पर भारत-विरोधी नारे लिखकर देना शुरू कर दिया है। इसलिए हम किसी भी तरह इस सरकार को हटाने की कोशिश करेंगे।

एक अन्य प्रश्न के उत्तर में शाही इमाम ने आरोप लगाया—'इस देश मे जम्हूरियत (प्रजातन्त्र) है ही नहीं देश मे अपराध बढ़ते ही गए हैं। मुस्लिमों के हितो की तरफ कोई ध्यान ही नहीं दिया जाता। फसादात कराकर उन्हें डराया जाता है। सरकार अपनी कमजोरियों को छिपाने के लिए पाकिस्तान[illegible] का डर भी दिखाती है।'

शाही इमाम ने असम मे चल रहे आन्दोलन को भी कांग्रेस (इ) का षड़यन्त्र बताया और कहा कि इस तरह मुसलमानों को हिन्दुओं के बीच बदनाम किया जा रहा है।

अपनी विदेश यात्राओं के सन्दर्भ मे शाही इमाम ने कहा—'लीबिया, कुवैत, ईरान-ईराक सरकारों के निमंत्रण पर ही ये यात्राएं हो रही हैं।'

उधर सरकारी सूत्रों ने इस बात की पुष्टि की है कि भारत सरकार को शाही इमाम के विदेशी सम्पर्कों सम्बन्धों की जानकारी है और राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए इन गतिविधियों पर नजर भी रखी जाती है।

राजनैतिक क्षेत्रों में चर्चा करने पर यह भी पता चला कि लीबिया और कुछ अन्य मुस्लिम देश पहले भी भारत में मुस्लिम हितों के नाम पर चुनाव से पहले आर्थिक सहायता देते रहे हैं और इस बार भी वे सहायता देने को उत्सुक हैं। (नव भारत १४-१०-८४)

देशान्तर प्रचार

श्री बाल कृष्ण शर्मा का जीवन परिचय

श्री बालकृष्ण शर्मा, जो आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका (वेस्ट कोस्ट) के कार्यवाहक अध्यक्ष हैं तथा इस सभा को सगठित कर रहे हैं, लास एंजिलिस आर्य समाज के प्राण हैं। सेवा परायण, उदारचेता, परिश्रमी तथा सच्चे आर्य श्री शर्मा जी पंजाब के होशियारपुर जिले में सन १९१८ में जन्मे थे।

इनके पिता श्री आत्माराम जी शर्मा १९०६ से १९१३ तक अमेरिका मे रहे, बाद में भारत आकर १९२० मे टांगानीका मे ब्रिटिश रेलवेज में नियुक्त हुए। जब १९४५ मे वे रिटायर हुए तो १९६१ में फिर भारत चले गए और १९६७ में उनका स्वर्गवास हो गया।

श्री बालकृष्ण शर्मा १९२५ से १९७१ तक टांगानीका (तन्जानिया) में रहे और फिर अमेरिका चले आए। यहां रेलवे और लेखा-विभाग में काम करते रहे। १९७९ में सेवा-निवृत्त हो गए। श्री शर्मा जी (१) आर्य समाज सदर्न कैलिफोर्निया के संस्थापक और प्रधान हैं। (२) इस्कान के आजीवन सदस्य और रिपब्लिकन सेनेटोरियल क्लब के सदस्य हैं। टांगानीका में ये हिन्दू मण्डल, आर्य समाज, इण्डियन एसोसिएशन, कर्मचारी संघ, इण्डियन पब्लिक स्कूल और अन्य संस्थाओं के अधिकारी रह चुके हैं।

इनकी धर्मपत्नी कमलारानी—एक प्रतिष्ठित आर्य परिवार से हैं। इनका विवाह १९४३ में दार-एस्सलाम में हुआ। इनके एक सुपुत्री है—चन्द्रकान्ता तथा चार सुपुत्र हैं—राम, श्याम, अशोक और राजेन्द्र।

इनकी दो बहनें सुमित्रा एम. के. अभी न (बम्बई फोर्ट समाज वाले) और शकुन्तला वीरेन्द्र वर्मा, (नैरोबी वाले) आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा की स्नातिका हैं।

विशेष सूचना

समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं को निर्देश दिया जाता है कि वे अपने प्रतिनिधि सदस्यों के नाम शीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें। साथ ही अपनी सभा का शेष पंचमांश भी शीघ्र भेजें जिससे कि आगे की कार्यवाही की जाय।

सच्चिदानन्द शास्त्री
संयुक्तमन्त्री सार्व० सभा

सम्पादकीय

"गउओं बैलों की हत्या से भारतीयों की भावना को ठेस लगती है"

—राव वीरेन्द्र सिंह, केन्द्रीय कृषि मन्त्री

केन्द्रीय खाद्य एवं कृषि मन्त्री श्री राव वीरेन्द्र सिंह ने ७ १० ८४ को कृषि एवं पशु उत्पादन प्रायोग के सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा कि गऊ और भैंस को भारत मे धार्मिक मान्यता प्राप्त है और मांस के लिए उनकी हत्या किए जाने से अधिकांश भारतीयों की भावनाओं को ठेस लगती है। उन्होंने एक और बात बड़े मार्के की कही कि देश को न केवल दुधारु पशुओं की ही अपितु कृषि एवं भार वहन के लिए पशुओं की भी आवश्यकता है। भारत के कृषि फार्मों मे काम में आने वाले ९ करोड पशुओं से प्रधानतः बैलों से ऊर्जा की प्राप्ति होती है जो ३॥ करोड़ हार्स पावर के समतुल्य होती हैं।

भारत सरकार बढ़िया नस्ल के गउओं और भैंसों के उत्पादन पर जोर दे रही है और इस समय बढिया नस्ल के लगभग २५ करोड़ गउएं भैंसे आदि पशु हैं। आंकड़ों अनुमान बड़े २ कसाई खानों के विस्तार के आधार पर भारतीय जनता की जिनमें गो हितैषियो, जीव दया धारियों की संख्या अधिक है यह धारणा बनी हुई है कि विदेशी मुद्रा अर्जन के लिए मांस का निर्यात किया जाता है, खाने के लिए नहीं।

गऊ आदि उपयोगी पशुओं की हत्या बेतहाशा की जा रही है और यह भी प्रशासनों की नाको के नीचे, उनके प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष इशारे पर हो रही है और कायदे कानूनों, जनता की भावनाओ और जनता के लिए अभीष्ट पोषक तत्वों की आवश्यकताओं और कृषिहित के बलिदान पर।

यदि माननीय कृषि मन्त्री प्रामाणिक आंकड़ों आदि के आधार पर इस भ्रम, आशंका वा धारणा का निवारण कर देते तो बहुत अच्छा होता। परन्तु उन्होने ऐसा नहीं किया अतः उन्हें सप्रमाण समाधान कर देना चाहिए।

जिन लोगो की देश के निष्पक्ष तथा सुयोग्य अर्थ शास्त्रियों की धारणाओं और प्रकटीकरण के विरुद्ध धारणा यह थी कि निकम्मे एवं सूखे गाय बैलों की हत्या करदी जानी चाहिए उनके तर्कों का निराकरण तो उसी समय हो गया था जबकि गोबर गैस प्लांटों का प्रचलन शुरू हुआ था और यह स्पष्ट हुआ था कि उनसे प्राप्त गोबर एवं ऊर्जा से उन पर खर्च होने वाले पैसे से कहीं अधिक आय होती है।

कुछेक बुद्धि जीवियों और पत्रकारों ने श्री कृषि मन्त्री महोदय के उपर्युक्त उद्गारों के परिपेक्ष्य में मांसाहार की कमी को दूर करने के लिए मछलियों एवं अंडों के उत्पादन पर जोर दिया है। जीव दया धारियों की दृष्टि में जो लोग खाने के लिए पशुपक्षियों की हत्या को त्याज्य समझते हैं, पाप है, चिकित्सकों की दृष्टि में उनका भक्षण मांस तुल्य होने से स्वास्थ्य के लिए हानिकर है, अर्थ शास्त्रियों की दृष्टि मे कृषि योग्य भूमि के बड़े भागों का उनके चारे दाने के उत्पादन मे प्रयुक्त होनेसे कृषि उत्पादन मे बहुत कमी आ जाती है।

क्या ही अच्छा हो इंगलैंड के प्रशासक बमकांड से कोई शिक्षा ग्रहण करें ?

इंग्लैंड की प्रधान मन्त्री श्रीमती थैचर और उनके मन्त्री मण्डल के सभी सदस्यों के बमकांड से बाल बाल बचने पर शुभकामनाओं की अभिव्यक्ति तथा इसकी भर्त्सना का किया जाना ठीक एव प्रासंगिक है। हम भी अपनी शुभ कामनाएं व्यक्त करते हैं। भारत के कुछेक सच्चे राष्ट्रवादियों के द्वारा इस कांड से शिक्षा ग्रहण करते हुए इंग्लैंड स्थित उग्रवादी तत्वों को भारत विरोधी प्रचार की अनुमति साथ ही प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूप से प्रशासकीय प्रोत्साहन देने वा उदासीन रूख न अपनाने की मांग का किया जाना भी ठीक और प्रासगिक है।

उल्लेखनीय है कि वे अपने मन्त्री मंडल के सभी सदस्यों के साथ लंदनसे १०० किलोमीटर दूर ब्राइटन के ग्रांड होटल में ४ दिवसीय एक सम्मेलन मे भाग लेने के प्रसग में ठहरी हुई थी, जो ब्राइटन मे ब्रिटेन के सत्ताधारी अनुदार दल द्वारा आयोजित किया गया था। इस होटल मे २५ पौंड भारी बम का धमाका हुआ था जिससे होटल की बिल्डिंग को भारी क्षति पहुँची है। इस बमकांड की जिम्मेवारी ब्रिटन द्वारा प्रतिबंधित सस्था आयरिश (आयरलैंड) रिपब्लिकन पार्टी ने अपने ऊपर खुले तौर पर ली है।

यह भी उल्लेखनीय है कि ब्राइटन, आयरलैंड के उत्तर पूर्व मे स्थित है और ब्रिटिश साम्राज्य का एक अंग है जिस पर आयरलैंड के देश भक्त लोग क्षुब्ध है और स्वतन्त्रता के लिए जद्दोजहद करते रहते हैं। ये प्रयास प्रायश हिंसात्मक रूप भी लेते रहे हैं।

श्री बाला साहब के भाषण की समीक्षा

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर संचालक श्री बाला साहेब देवरस ने विजय दशमी के अवसर पर नागपुर में जो भाषण दिया था उस पर दिल्ली के दो प्रमुख अंग्रेजी दैनिक पत्रों ने अपने सम्पादकीय लेखों मे जो समीक्षात्मक विचार प्रकट किए हैं वे द्रष्टव्य है।

हिन्दुस्तान टाइम्स (६-१०-८४) आर० एस० एस० (राष्ट्रीय स्वयं सेवक सघ) और 'हिन्दू' शीर्षक से लिखता है ·

'राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख के भाषण में विश्वास वा आस्था की एक नई झलक देख पड़ती है शायद इस धारणा के कारण कि राजनीतिक दलों द्वारा अल्पसख्यकों को सन्तुष्ट करने की होड़ से बहुसंख्यक वर्ग हिन्दू तंग आ रहा है।" मीनाक्षीपुरम हिन्दू जाति के लिए एक कटु अनुभव था। ऐसा भी इस पत्र का कहना है।

बाला साहेब के इस आह्वान के सन्दर्भ में कि जो व्यक्ति हिन्दू हितों के विरुद्ध हो उसे हिन्दू लोग अपना वोट न दें यह पत्र लिखता है कि "इस प्रकार के कथन को हल्के रूप में नहीं लिया जा सकता क्योंकि इस प्रकार की अफवाहें फैल रही है कि सत्ताधारी दल राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के साथ संघ के अनुशासन बद्ध कार्य कर्त्ताओं को भारतीय जनता पार्टी के लिए काम करने से रोकने के एक मात्र उद्देश्य से समझौता करने के विरुद्ध न होगा।

हिन्दुस्तान टाइम्स के इस सम्पादकीय के अन्त मे कहा गया है कि बाला साहब के तर्क का केन्द्र बिन्दु यह है कि 'इस देश का भाग्य देश के हिन्दुओं के साथ अविच्छिन्न रूप से ग्रथित है।" इस पर भी इसका कहना है कि "समस्या यह है कि 'राष्ट्रीय स्वयं सेवक सघ हिन्दू धर्म के जिस स्वरूप वा कोटि का प्रचार करता है उसकी सगति वर्तमान वैज्ञानिक दृष्टिकोण और विविध मतों वाले राज्य की भावना के साथ किस सीमा तक बैठती है ?"

(इण्डियन एक्सप्रेस ६।१०।८४)

"बाला साहब का प्रस्ताव वा मन्तव्य यह है कि "देश का हित अकाट्य रूप से हिन्दू हितों के साथ ग्रथित है।" यह बात 'विशुद्ध संख्या की दृष्टि से सही है, यदि 'हिन्दू' की परिभाषा एक विशेष मत या धर्म के अनुयायियों की वर्तमान परिभाषा के स्थान में देश के निवासी की प्राचीन भावना के रूप मे की जाय तो उस अवस्था मे भी उनके कथन मे वजन है।

इसके आगे श्री बाला साहब कहते हैं "सांस्कृतिक परिभाषा के अनुसार हिन्दू भारतीय भी स्वीकार किया जा सकता है। यह बात खेद जनक है कि भारत मे धर्म निरपेक्षता की वहन और प्रचार धर्म और संस्कृति में भेद करने में असफल रहे हैं जो निश्चय ही एक दूसरे के साथ ग्रथित रहते हुए भी पृथक पहचान के रहे हैं।"

इसके आगे यह पत्र लिखता है "श्री देवरस की इस अपील में कि बाकी

सामायिक चर्चा–

हैदराबाद किधर ?

आखें खोल देने वाले पत्र के लिए (देखें हिन्दू २७ सितम्बर) श्री ऐम० सादुल्ला (रिटायर्ड) धन्यवाद के पात्र हैं।

मैंने १९७० मे हैदराबाद छोडा था। उस समय तक वहा 'पखे' जैसा कोई जुलूस नही निकला था। इसका प्रचलन किसी व्यक्ति ने गणेश पूजा के जलूस की प्रतियोगिता मे ही अभी हाल मे शुरु किया है।

उन सन्तो के अपमान वा अवज्ञा की कोई भावना न रखते हुए जिनके सम्मान मे पखो के ये जलूस निकाले जाते हैं, मैं यह कह सकता हू कि इस प्रकार के जलूस स्वय मे गलत है। अवाछनीय विश्वास वा प्रथा पर अवलम्बित हैं और इस्लाम के स्रोतों मे इनका कही भी नामोनिशान नही पाया जाता है जैसा कि श्री सादुल्ला साहबने सकेत दिया है। नकल करने और गन्दी प्रतियोगिता से इन्हे और भी अधिक इस्लाम विरुद्ध बनाया जाता है।

इस्लाम प्रेम सहिष्णुता और अन्य मजहबो के प्रति आदर भाव की शिक्षा देता है इस प्रकार की धर्मान्धता की नही।

समय का तकाजा है कि मुसलमान इस प्रकार की वर्जित और अधार्मिक प्रथाओ को बन्द कर दे।

इस प्रकार की वर्जित कार्यवाहियो मे लिप्त होने के बजाय कुरान शरीफ मे निहित सिद्धान्तो और शिक्षाओ को पढ और समझ कर उन्हे क्रियान्वित कर। मुस्लिम जाति और राष्ट्र के लिए अपने को उपयोगी बनाने का यही तरीका है। इस दिशा मे जिहाद की जरूरत है।

—क्यू० ऐम०ए० रब्बानी
विजयवाडा

कुरान का रचयिता कोई पुरुष है

श्रीमती प्रेमिला शर्मा साउथ एवेन्यू नई दिल्ली-११ लिखती है — (देखे नव भा० १५-१० ८४)।

मुस्लिम पर्सनल कानून से सम्बन्धित विवाद से प्रेरित होकर मैंने स्वय कुरान शरीफ का अध्ययन किया ताकि यह जान सकू कि सच्चाई क्या है। मुस्लिम औरत के बुलन्द मकाम के बारे मे कुरान का फरमान है। (सुरा २ अलबकरा पारा नम्बर २) अल्लाह को वे लोग प्रिय है जो बुराई से बाज रहे और सफाई को अपनाए। तुम्हारी स्त्रिया तुम्हारी खेती हैं। तुम्हे अधिकार है जिस तरह चाहो अपनी खेती मे जाओ। तलाक के बारे मे कुरान कहता है कि (सुरा २ अलबकरा पारा २) स्त्रियो के लिए सामान्य नियम के अनुसार वैसे ही अधिकार हैं जैसे पुरुषो के अलबत्ता पुरुषो को उन पर एक दर्जा अधिक प्राप्त है। इसी में आगे लिखा है 'तलाक दो बार है फिर या तो सीधी तरह स्त्री को रोक लिया जाए या भले तरीके से उसको विदा कर दिया जाए। इसी पैरे मे आगे लिखा है फिर यदि दो तलाक देने के बाद पति ने पत्नी को तीसरी बार तलाक दे दी तो वह स्त्री उसके लिए फिर वैध न होगी।'

हमारी सरकार ने ही मुस्लिम लोगो के वोट प्राप्त करने के लिए मुस्लिम पर्सनल ला बनाया और उन्हे सिविल कानून से बचा कर रखा है ताकि उनकी गद्दी बनी रहे अन्यथा सरकार यदि कल चाहे तो सब पर सिविल कानून लागू कर सकती है, तब ऐसी स्थिति मे मुस्लिम पर्सनल कानून धरा रह जायेगा। ब्रिटेन मे आज भी सब पर सिविल कानून समान रूपसे लागू है वहा कोई भी मुसलमान चार बीबिया नही रख सकता। अन्य देशो मे भी ऐसा ही है।

आज दकियानूसी का जमाना नही है। आज तो सबको बराबर हकूक है। उन्हे जहानारा की तरह ही मुस्लिम औरतो मे जागृति पैदा कर उन्हे अपने हकूक दिलाने के लिए प्रयास करना चाहिए। यदि मैं पुछू कि क्या कोई मुस्लिम पुरुष अपनी बीवी को चार पुरुषो के साथ हम बिस्तर होते देखना बर्दाश्त कर सकता है। कदापि नही। किन्तु मुस्लिम औरत यह सब कुछ अपनी आखो के सामने ही देखती है कि उसका खाविद उसके सामने ही चार औरतो के साथ हम-बिस्तर होता है और मुस्लिम औरत उसे बर्दाश्त करती है। मुझे तो ऐसा लगता है कि कुरान का रचयिता कोई पुरुष ही है यदि इस की रचयिता कोई स्त्री होती तो ऐसा कानून नही बनता जिसमे औरत को गुलामी की जिन्दगी गुजारनी पडती है।

विश्व संस्कृत सम्मेलन

बीस देशो से आए हुए तीन सौ विद्वान सप्ताह भर चलने वाले विश्व संस्कृत सम्मेलन म आजकल फिलोडेल्फिया (अमेरिका) मे एकत्रित हैं। सम्मेलन का उदघाटन करते हुए डा० आर० एन० दाडेकर ने कहा कि यह कहना गलत है कि सस्कृत मे शोध की अब कोई गु जाइश नही रही।

जो साहित्य हमारे पास है,वह सिर्फ आइसवर्गका ऊपरी छोर है। आइसवर्ग पाण्डुलिपियो के महासागर के नीचे छिपा हुआ है। सस्कृत के विद्वान इन पाण्डुलिपियो की निरन्तर खोज कर रहे हैं। अभी अभी उडीसा मे ताडपत्र पर ५०० सस्कृत श्लोक प्राप्त हुए हैं, जो अनूठी घटना है। कश्मीर मे कई स्रोत अभी अनछुए लगते हैं।

विश्व सस्कृत सम्मेलन पेनसिलवानिया विश्वविद्यालय मे हो रहा है। ८० वर्षीय डा० मरे इमेनो इसमे भाग ले रहे हैं, जिन्होंने नील-गिरी के आदिवासियों की टोडा और कोटा नामक भाषाओं पर शोध की है।

भारत के प्रतिनिधि मण्डल के नेता प्रो० जयमन्त मिश्र ने कहा है कि हमे यह देख खुशी है कि सस्कृत का अध्ययन दुनिया भर में हो रहा है। डा० एस० एस० जानकी (मद्रास) डा० टी० एस० रुक्मिणी (मिराडा कालेज, दिल्ली) सुन्दरी कादम्बिनी (इन्द्रप्रस्थ कालेज दिल्ली) और कौशल्या वली (जम्मू) भी फिलोडेल्फिया मे है।

— रघुनाथ प्रसाद पाठक

वाले चुनावो मे हिन्दुओ को हिन्दुओ के रूप मे राष्ट्रहित के रक्षको के रूप मे वोट देना चाहिए साम्प्रदायिकता की गध आती है जिसका प्रतिवाद होना जरूरी है। यह मान्यता कि हिन्दू धर्म भारतीय राष्ट्रीयता की आधार शिला है और यह सुझाव कि हिन्दुओं की पुनर्एकता के लिए किए गए प्रयासों को हिन्दू एकता के रथ को विजय पथ पर आगे बढाते रहना चाहिए। भ्रामक सूत्र हैं।'

(ओर्गेनाइजर १४ १० ८४)

टिप्पणि—श्री बाला साहब का अभिप्राय हिन्दू धर्म एव हिन्दू संस्कृति से प्राचीन आर्य धर्म एव आर्य सस्कृति से प्रतीत होता है जो बहुलाश में विकृत रूप धारण किए हुए हैं। हिन्दू' शब्द से वही अभिप्राय लिया जाना चाहिए जो देश के कानूनों मे सन्निहित है वैसे भौगोलिक परिवेश में हिन्दुस्तान मे रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति हिन्दू है चाहे वह किसी भी मजहब का हो और चाहे किसी भी सस्कृति की उपज हो।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश की समीक्षा मे हिन्दू धर्म और हिन्दुस्तान वा भारत का अभिप्राय आर्यावर्त एव आर्यावर्तीय मत मतान्तरों से लिया है और यह तथ्य उत्कृष्टतम मार्गदर्शक का कार्य कर सकता है।

महर्षि दयानन्द की महत्ता

श्री ओम्प्रकाश त्यागी सभा मन्त्री

१८८३ ई० के ३० अक्तूबर के दिन सायकाल ५ बजे अजमेर में महर्षि ने अपने प्राणों का परित्याग किया था। वह दिन दीपावली का पुण्य पर्व था। उसी दिन वह प्रचण्ड ज्योति हमारे पार्थिव नेत्रों से ओझल हुई थी जिसका प्रकाश जन-मानस के हृदयों पर युग-युगान्तर तक व्याप्त रहेगा। कृतघ्न देशवासी मुख्यतया हमारे राजनीतिक नेता अज्ञान और ईर्ष्यावश उस ज्योति को विस्मृति के बादलो मे छुपाने का दुष्प्रयत्न करते हुए भी छुपा न पायेंगे। वह दिन शीघ्रही आयेगा जब महर्षि की भावना और उनके सदुद्देश्यो का ठीक-ठीक मूल्याकन होगा और भारत के घर-घर ही नही विश्व के कोने-कोने मे उनके नाम की पूजा होगी।

महर्षि ने प्राणो का परित्याग करते समय कहा था—'प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो।" इस अन्तिम कामना मे महर्षि का ईश्वर-प्रेम मूर्त रूप धारण करके हमारे सामने आ जाता है। ईश्वर की खोज के लिए ही उन्होने घर का परित्याग किया था। उसी की सेवा मे उन्होंने अपने को मिटाया। वस्तुत वे ईश्वर के आज्ञापालक पुत्र थे। वे सच्ची आस्तिकताका प्रचार करने के लिए ही आविर्भूत हुए थे। अगाध-ज्ञान उग्र तप, अनुपम सदाचरण और जन-हितैषिता से ही उनमें अपनी इच्छा को परमात्मा को इच्छा के अर्पण रखने की योग्यता आई थी जो आध्यात्मिकता की चरम सीमा और अनूठी व्यावहारिकता होती है। अपनी इच्छा को परमात्मा के चरणो मे आत्म-सात् कर देने से उन्होने बीहड वन को नन्दन-कानन मे परिवर्तित कर दिया था। उन्हें परमात्मा की सहायता प्राप्त थी। इसी के बल पर उनका बोझ हल्का और प्रत्येक कर्तव्य का अनुष्ठान आनन्द का स्रोत बना।

उनका लक्ष्य था कि मानव, मानव बनकर परिवार और समाज का श्रेष्ठ अग बने। उनकी दिव्य दृष्टि ने देखा कि देशवासी धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक दासता में बुरी तरह जकडे हुए हैं। उनकी जीवन की गर्हित भावना और यत्न उन्हे पतन की ओर ले जा रहे हैं। उन्होने लौकिक और पारलौकिक उन्नति को धर्म बनाकर देशवासियो के हृदय से मायावाद, प्रारब्धवाद, नैष्कर्म्यवाद, शून्यवाद, जगत् मिथ्यावाद के भूत को मार भगाया और उद्योगवाद का पाठ पढ़ाया। मूर्तिपूजा, अद्वैतवाद, अवतारवाद, पापो की क्षमा योगविहीन भक्ति, काल्पनिक स्वर्ग, नरक और झूठे तीर्थ, फलित ज्योतिष आदि-आदि का प्रबल खण्डन करके वेदानुकूल शुभ ज्ञान और शुभ कर्म के द्वारा मोक्षप्राप्ति का मार्ग सुझाया। लौकिक उन्नति पारलौकिक उन्नति मे बाधक न हो इसके लिये त्यागवाद की अमोघ प्रणाली पर बल देते हुए वर्णाश्रम व्यवस्था का पुनरुद्धार किया। झूठे और सच्चे ब्रह्मचारियो, साधुओ, गुरुओ, आचार्यों और ब्राह्मणो की पहचान बताकर धर्मके नाम पर होने वाली ठगी और सजी हुई दुकानो को उठाने की प्रक्रिया आरम्भ कराई। वैदिक वर्ण व्यवस्था का उज्ज्वल स्वरूप प्रस्तुत करके जन्मना जात पात की विविध अभिशापों के साथ नीव हिलाई। जन्म और धन-सम्पदा की तुलना मे गुणों और योग्यता को सम्मान का मापदण्ड नियत किया। इससे जन्माभिमान और धनाभिमान दूर होकर अयोग्यो को योग्य बनने और तथाकथित गिरे हुओं को ऊंचा उठने को प्रेरणा मिली और आशा हुई। स्त्री और शूद्र को वेदाध्ययन का अधिकार दिलाया। नारी जाति की प्रतिष्ठा की पुन स्थापना की। शिक्षा और विवाह का आदर्श ऊंचा किया। विवाह और गृहस्थाश्रम की उच्चता और पवित्रता दर्शाई। शिक्षा की आधार शिला ब्रह्मचर्य पर रख कर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को प्रोत्साहित किया। परिवार को समाज की इकाई ठहराकर और उसे श्रेष्ठ बनाकर समाज को स्वस्थ एव बलशाली अच्छे नागरिक देना आवश्यक ठहराया। विवाह मे आयु योग्यता और क्षमता की समानता और रुचि अनुराग निर्धारित कर धर्मपूर्वक अर्थ और काम का उपभोग करते हुए गृहस्थ तथा समाज को सुखधाम बनाने का उपाय बताया। कन्या के विवाह की कम से आयु १६ और लडके की आयु २४ पूर्व निश्चित की गई। इस प्रकार बाल विवाहो, अनमेल-विवाहो, वृद्ध-विवाहो की कुप्रथा से छुटकारा कराया। जो भाई-बहन अपनी या समाज की भूलो के कारण हिन्दू-समाज से पृथक होकर विधर्मी बन गए थे उनके लिए शुद्धि द्वारा हिन्दू समाज में आने के लिए दरवाजे उनके लिए हिन्दू समाज का बन्द द्वार खुलवाया। विधवाओ, अनाथो और पतितो की सुधि ली। विदेशी शासन को किसी भी देश के लिए अभिशाप सिद्ध करके भारतीय राजनैतिक परतन्त्रता को धार्मिक एव सामाजिक बुराइयो का अभिशाप बताकर समाज-सुधार का महत्व प्रतिपादित किया। विविध मतो का खण्डन करके सामाजिक त्रुटियों पर प्रबल प्रहार करके राजनैतिक जुए को उतार फेंकने की प्रेरणा देकर हिन्दू जाति को ही नहीं अपितु विश्व के प्राणियो को एकता के सूत्र मे बाधने का प्रयत्न किया और इसका उपाय एक भाषा, एक धर्म और एक जैसी स्वस्थ विचारधारा और सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य बताकर कल्याणकारी मार्ग पर चलने का आह्वान किया। इस प्रकार महर्षि दयानन्द ने धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक उत्थान के युग का सूत्र-पात किया और वे स्वय युग-पुरुष बन गये।

राजनैतिक स्वतन्त्रता की प्राप्ति के पश्चात् भारत अपने इतिहास मे एक उज्ज्वल अध्याय जोडने में समर्थ हुआ है परन्तु जनता के चारित्रिक पतन, शासन मे व्याप्त भ्रष्टाचार और जीवन यापन की कठिनाइयो को देखते हुए इस अध्याय के लिखे जाने के आसार नहीं देख पडते। कभी-कभी ऐसा लगने लगता है कि स्यात् यह अध्याय लिखा ही न जा सके। इसका सबसे बडा उत्तरदायित्व हमारे नेतृत्व पर है भले ही उसके इरादे पवित्र हों। राज्य का जितना ध्यान और प्रयास देशवासियों की भौतिक समृद्धि पर केन्द्रित है उतना नैतिक समृद्धि पर नहीं है। नैतिक समृद्धि भौतिक समृद्धि के मार्ग में रोडा बनती जा रही है। सर्वप्रथम शिक्षा प्रणाली के आमूल चूल परिवर्तन की आवश्यकता है जो पूर्वजो का सम्मान करना सिखाये, विद्यार्थियों को उत्तम नागरिक और आजीविका कमाने मे समर्थ बनाए। समाज को इस प्रकार परिष्कृत रखा जाय जिससे अपराधो के करने की व छोड

वेद सुधा

बल महिमा

सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते।
त्वामभि प्रणोनुमो जेतारम पराजितम् ॥
ऋ० १। ११। २

(१) अर्थात हे इन्द्र(ऐश्वर्यवान) वाजिन (शक्तिमान) शवसस्पति (बलो के स्वामी) और हे (जेतारम अपराजितम) सबका विजयता और किसी से भी पराजित न होने वाले प्रभो! हम आपका सख्य-मित्रता प्राप्त करके निर्भीक हो जावे। इसी उद्देश्य से हम आपको नमस्कार करते हैं।

(२) ससार मे नास्तिकता सदैव से चली आती है और अनेक बार वह बलवती भी हुई परन्तु आस्तिकता को नष्ट न कर सकी। हमारी पृथ्वी लगभग २ अरब वर्ष से है और सदैव मनुष्यो से आबाद रही है परन्तु आस्तिकता आज भी उस पर फल फूल रही है। उसका कोई बाल बाका नहीं कर सका।

कारण स्पष्ट है कि जगत रचयिता सबका विजयता है किसी से पराजित नही हो सकता।

हम उसके सखा कब बन सकते हैं? जब हम भी बलवान हो, क्योकि निर्बल और बलवान की मित्रता नहीं हो सकती। इसलिए इस देश मे सदैव बल का मान रहा और स्त्री पुरुष सभी अपने को बलवान बनाते रहे। इस सम्बन्ध मे कुछ बातें मनन करने के लिए यहा अकित की जाती हैं।

(क) महाभारत मे देवी विदुला की शिक्षाए जो उसने अपने पुत्र सजय को दी थी प्रसिद्ध हैं। उसमे एक जगह उसने पुत्र को कहा था "थोडी देर के लिए ही क्यो न हो, चिरकाल तक धुआ देने वाली की अपेक्षा धधक कर जलने वाली अग्नि श्रेयस्कर समझी जाती है। भाव इसका यह है कि कायरता के साथ चिरकाल तक जीने की अपेक्षा वीरता के साथ थोडे दिन भी जीना श्रेयस्कर है।

(ख) एक उपनिषद मे कहा गया हैं

'नायमात्मा बल हीने नलभ्य। मुण्डक ३। २। ४

अर्थात आत्मबल हीन पुरुष परमात्मा को प्राप्त नही कर सकते। फिर एक जगह कहा गया है 'तत्सत्य बले प्रतिष्ठिम' वह सत्य बल मे प्रतिष्ठित है अर्थात बल ही से सत्य की रक्षा की जा सकती है। इस प्रकार बल की महिमा-गान से वैदिक साहित्य ओत प्रोत है।

(महात्मा नारायण स्वामी जी का एक प्रवचन)

आर्य समाज और हरिजन

—श्री पृथ्वीसिंह आजाद

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने आर्य समाज रूपी, जो पवित्र अग्नि प्रज्वलित की थी उसमें जात पात ऊंच नीच, छूत-अछूत और समाज में फैली हुई छोटे और बडेकी सकीर्ण विचारधारा को जलाकर भस्म करना था, ताकि भारत वर्ष मे फिर से उस वैदिक समाज की स्थापना हो सके जिसमे मानव मात्र के लिए धार्मिक सामाजिक आर्थिक एव राजनीतिक समानता हो। आर्य समाज ने अपने आरम्भ काल मे गुरुवर दयानन्द के सपनो को पूरा करने के लिए जो प्रयास किया वह इतिहास का एक सुनहरी अध्याय है। इस पवित्र अग्नि को प्रज्वलित रखने के लिए आर्य समाज ने अनेको बलिदान दिए जिनके लिए समाज मे कोई स्थान नही था उनको आर्यसमाज ने अपने पाव पर ही खडा नही किया अपितु आदि शकराचार्य के इस कथन को कि 'स्त्रीशूद्रौनाधीयेताम" गलत सिद्ध करके दिखा दिया और जिनके लिए आदि शकराचार्य ने अपने वेदान्त सूत्र के भाष्य मे यहा तक कहा था कि यदि शूद्र वेद मन्त्र का उच्चारण सुनले तो उसके कान मे सीसा पिघला कर डाला जाय, वेद मन्त्र का उच्चारण करले तो जीभ काट दी जाय, पवित्र वेद को छू भरले तो हाथ काट दिये जाय और शरीर से लगाले तो शरीर को छेद दिया जाय।

'इतश्च न शूद्रस्याधिकार। यदस्य स्मृते श्रवणाध्ययनार्थ प्रतिषेधो भवति। वेद प्रतिषेधो वेदाध्ययन प्रतिषेधस्तदर्थज्ञानानुष्ठानयोश्च प्रतिषेध शूद्रस्य स्मर्यते। श्रवण प्रतिषेध स्तावत् "अथास्या वेदमुपशृण्वतस्त्रपु जतुभ्या श्रोत्रपरिपूरणमिति। पद्यु ह वा एतत् श्मशान यत् शूद्र तस्मात् शूद्रसमीये नाध्येतव्यम्' इति च। अतएवाध्ययन प्रतिषेध। यस्य हि समीपेऽपि नाध्येतव्य भवति स कथम श्रुतमधतीमीत भवति च वेदोच्चारणे जिह्वाच्छेदो धारणे शरीरभेद इति। अत एव चार्थादर्थ ज्ञानानुष्ठानयो प्रतिषेधो भवति न शूद्रायमति दद्यात्। इति। (ब्रह्मसूत्र शाकर भाष्य)।

श्री शकराचार्य ने यह आदेश इसलिए दिया था कि वाराणसी पहुचने पर एक शूद्र ने अद्वैतवाद पर शास्त्रार्थ करके उन्हे पराजित कर दिया था और पटना पहुचने पर मडन मिश्र की धर्म पत्नी विद्योत्तमा ने भी पराजित कर दिया था, यह हरिजन और स्त्री से हार जाने के पश्चात् शकराचार्य को चाहिए तो यह था कि वह शूद्र और स्त्री की विद्वत्ता से प्रभावित होकर यह घोषणा करते कि वेद पढने का अधिकार मनुष्य मात्र को है परन्तु यह यश प्राप्त करना तो उनके भाग्य मे न था। वेद पढने पढाने सुनने सुनाने का अधिकार दिलाने का श्रेय तो देवदयानन्द को ही मिलना था। उनके द्वारा सस्थापित आर्य समाज ने शूद्रो मे से अनेको वेद के विद्वान उत्पन्न किए जिन्होने वैदिक धर्म का प्रचार करके हिन्दू जाति की रीढ की हड्डी और जन समाज को जाग्रत करके देश और समाज का शक्तिशाली पहरेदार बना दिया। आज जब निर्धन समाज के इन लोगो पर विदेशी धन के डोरे डाले जा रहे हैं,वे लोग जिन पर दयानन्द केविचारो की छाप हैं,अपने धर्म को किसी भी सूरत में छोडने को तैयार नहीं है। आज जब कि देश स्वतन्त्र है और आर्य समाज की छत्र-छाया इन पर है, ये लोग जो समाज का एक पिछडा अग है किसी भी कीमत पर अपने धर्म को त्याग नही सकते।

इस अवसर पर यदि आज से पचास वर्ष पूर्व घटी एक घटना का उल्लेख मैं यहां करू तो मेरे इस विचार की पुष्टि हो जाती है जो एक बार दयानन्द की शरण में आ गया उसे कोई भी पथ भ्रष्ट नही कर सकता।

जिला गुरुदास पुर मे एक गाव कालाघेटी था जो आज पाकिस्तान मे चला गया है। उस गाव के जैलदार के तीन पुत्र थे एक रियासत बहावल पुर में मन्त्री था, दूसरा रियासत भूपाल में मन्त्री था तीसरा रियासत हैद्राबाद में एक उच्च अधिकारी था। तीनों की अत्यन्त सुन्दर तीन पुत्रिया थी, एक निर्धन महाशय के तीन पुत्र थे सुन्दर परन्तु अनपढ़ थे, जैलदार ने घोषणा की कि वह अपनी तीनो पोतियो का विवाह उस महाशय के पुत्रों के साथ करने को तैयार है, गाव मे हरिजनो की आबादी लगभग चार सौ की थी, यह भी घोषणा की गयी जो हरिजन बहावलपुर अथवा भोपाल मे जाकर खेती करने को तैयार हो उन्हे १००-१०० बीघे कृषि भूमि बैलों की जोडी और मकानादि बनवाने के लिए एक-एक हजार रुपए दिए जायेंगे। तिथि निश्चित की गई जिस पर बडे बडे मौलवी एकत्र हुए, भोजन के लिए शुद्ध घी के पुलाव आदि तैयार किए गए, उधर हरिजनों ने भी अपनी बिरादरी के लोगो को एकत्र किया और आर्य समाज धारामधम के प्रधान ने दिल खोलकर चावल और चने की दाल दी। जैलदार आशा लगाए बैठा था कि सब हरिजन मुसलमान हो जायेंगे। परन्तु एक भी हरिजन ने न जैलदार का भोजन स्वीकार किया और न किसी प्रलोभन मे फसकर मुसलमान होना स्वीकार किया।

महाशयो के चौधरी ने भरी सभा में घोषणा की कि हमे स्वामी दयानन्द ने डोमों से महाशय बनाया है धर्म के लिए जीना और मरना सिखाया है, हम भूखे मर सकते हैं परन्तु जैलदार का पुलाव या प्रलोभन स्वीकार नहीं कर सकते। हम मेहनत मजदूरी करके रूखी सूखी रोटी खाकर मस्त रहेंगे परन्तु जैलदार की ओर से दिलवाई जाने वाली भूमि स्वीकार नही करेंगे। चौधरी ने घोषणा की कि अगर जैलदार को मेरे सुन्दर बच्चे प्यारे लगते हैं तो अपनी पौत्रियो का विवाह उनके साथ करदे। चौधरी का इतना कहना था कि उन पर चारो ओर से लाठियों का प्रहार होने लगा। वह सब कुछ उन हरिजनो ने सहन किया और सिद्ध कर दिया जो दयानन्द की शरण मे आ गए हैं वे दयानन्द के ही रहेगे किसी और के नही। मेरे जीवन मे ऐसी अनेको घटनायें घटी हैं जहा हरिजन अपने धर्म पर अडिग रहे हैं। वह युग ऐसा था जब प्रत्येक आर्यसमाजी अपने कर्तव्यका पालन करता था तथा समय निकालकर उनमे जाता था इस पिछडे वर्ग को जाग्रत करने प्रशिक्षित औरधर्म प्रेमी बनाने के लिए आ स के सैकडो उपदेशक थे परन्तु आज कुछ इनेगिने व्यक्ति ही स्वा. दयानन्द के आदेश का पालन करते हैं आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने गुरु के इस आदेश का कि ससारका उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्यहै यदि पूर्णरूपसे पालन नही कर सकते तो कम से कम इतना तो अवश्य करे कि गुरुवर दयानन्द के इस बलिदान के अवसर पर व्रत लें कि प्रत्येक आर्य समाज अपने नगर की हरिजन बस्ती अथवा अपने नगर के समीप के गाव को अपना कार्यक्षेत्र बनायें और उन लोगों मे दयानन्द की विचारधारा का प्रचार करके उन्हें उन सस्कारों से बाहर निकाले, जो उनके समाज को पतित और भ्रष्ट बना रहे हैं। यदि आर्य समाजी भाई इनकी बस्तियो और ग्रामो मे सस्कार केन्द्रों की स्थापना करें तो इन लोगों को समाज का एक सुसस्कृत सदस्य बनाया जा सकता है, वह एक ही रचनात्मक कार्यक्रम उनके दिलों मे वह पवित्र अग्नि प्रज्वलित करेगा जिसके लिए महर्षि दयानन्द ने आ स. की स्थापना की थी और जो लोग पथभ्रष्ट करने की आशा लगाए बैठे हैं वे सब मुह देखते रह जायेंगे और हमारे सामने जो सन २००० मे पेश आने वाला खतरा है कि भारत की बहुसख्यक जाति अल्पसख्यक जाति बनकर रह जायगी, सदा सदा के लिए टल सकता है, आवश्यकता केवल इस बात की है कि आर्य जन अपने कर्तव्य पालन के लिए तैयार रहें जिस तरह महर्षि को उनसे आशायें थी।'

[आज भारत मे पिछडे वर्ग, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजातियो के सामने पैट्रोडालर दर्शों के अनेक प्रकार के प्रलोभन उपस्थित हो रहे हैं, उनका आकर्षण साधारण हरिजनों को चकाचौंध कर रहा है और स्थान स्थान पर उनके धर्म परिवर्तन के समाचार जब तब सुनने में आते हैं यद्यपि आर्य समाज और उसके कार्यकर्ता इस ओर सजग और सावधान हैं, तथापि श्री पृथ्वीसिंह आजाद का यह लेख हरिजन एव अनुसूचित जाति को मार्ग दर्शन करने में समर्थ होगा।—सम्पादक]

प्रवृत्ति हो और न किसी को साहस हो सके। व्यक्तियो के उत्थान मे समाज बाधक न हो और समाज के उत्थान मे व्यक्ति बाधक न हों। इसके लिये मनुष्य के देवत्व को विकसित और पशुत्व को निरुत्साहित करना अनिवार्य होता है। यही धर्म और धार्मिक जीवन की अनिवार्यता स्वीकार करनी पडती है। यह भी मानना पडता है कि शासन का अभिप्राय धर्म की रक्षा और अभिवृद्धि होती है। हमारा शासन इस उद्देश्य की पूर्ति में सफल हो इसके लिए महर्षि दयानन्द सरीखे महान नेताओ की अत्यन्त आवश्यकता है जो देश का श्रेष्ठ धार्मिक सामाजिक और राजनैतिक मार्ग प्रदर्शन करते हुए उसी भारत के निर्माण का कारण बन सकें जो कभी ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशल, उद्योग-धन्धों, धन-वैभव और आध्यात्मिक सम्पदा मे सब देशो का सिरमौर था।

अप्रतिम महर्षि दयानन्द

—श्री पं० वीरसेन वेदश्रमी, इन्दौर

१. महान् वैज्ञानिक–महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द महान् वैज्ञानिक थे। उन्होने विश्व के पर्यावरण को शुद्ध कर प्राणिमात्र को जीवन देने के लिये रूढ़िवादी यज्ञ पद्धतियो के बजाय वैज्ञानिक अग्निहोत्र पद्धति को व्यावहारिकता प्रदान की। प्रदूषित सकल्प एव विचारों तथा रूढ़िवादी चिन्तन ग्रस्त मानव जाति को मुक्ति दिलाकर शिव सकल्प के विशाल क्षेत्र में विचरण करने को अवसर किया। विश्वशान्ति के लिए शिव सकल्पमय अमृतरूपी वेदवाणी के अध्ययनाध्यापन का अधिकार सब को प्रदान किया।

२. महान् विश्वभिषक्–महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द महान् विश्व चिकित्सक थे। त्रिविध तापो–आध्यात्मिक आधिभौतिक एव आधिदैविक दुखो से प्राणिमात्र को मुक्त करने के लिए, शारीरिक, सामाजिक, मानसिक एव आत्मिक क्लेशो को दूर करने के लिए आसन, प्राणायाम, ध्यानादि की योग चिकित्सा पद्धति का सन्ध्या के द्वारा अनुष्ठान प्रचलित किया तथा भेषज चिकित्सा द्वारा रोगादि निवृत्ति एव शारीरिक बल, बुद्धि की वृद्धि के लिए अग्नि होत्र सदृश सर्वश्रेष्ठ, अतिशीघ्र प्रभावकारी कार्य को नित्य साय प्रात करने और यज्ञ शेष घृतादि पदार्थों के सेवन का सुलभ मार्ग बताया।

३. महान् इंजीनियर–महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द महान् वैज्ञानिक एव यान्त्रिक इन्जीनियर थे। अग्नि, वायु, विद्युत, जल आदि के द्वारा यन्त्रो के सचालन, कल कारखानो के निर्माण, औद्योगिक प्रगति करने का उन्होने अपने वेदभाष्य में सर्वाधिक बल दिया। जब विमानों का निर्माण भी नहीं हुआ था उससे अनेक वर्षों पूर्व विमानो के निर्माण का वेदों से प्रतिपादन किया। पृथिवी, अन्तरिक्ष और समुद्र तीनो स्थानो मे एक ही प्रकार के विमान से गमना-गमन करने की प्रेरणा महर्षि दयानन्द ने सन् १८७५ में दी।

४. महान् यन्त्राविष्कर्ता–महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द यन्त्रो के महान् आविष्कर्ता थे। सेमन काममापृण गोभिरश्वै ऋग्वेद के इस मन्त्र में गोभिरश्वै इन शब्दो से सर्वोत्तम विमानादियुक्त अश्वविद्या की प्रेरणा यन्त्र निर्माण के लिये महर्षि ने प्रदान की है। यजुर्वेद अध्याय तीन के चौतीसवें मन्त्र मे—श्येनोभूत्वा परापत यजमानस्य गृहान्गच्छतन्नो सस्कृतम्—इसका भाष्य करते हुए महर्षि लिखते हैं कि यजमान और वेदज्ञ ऋत्विजो, शिल्पादि द्वारा निर्मित सुसस्कृत विमान यजमान के गृह पर उतरे, पहुचे, ठहरे यह भाव प्रकट कर छोटे और हलके विमानो के निर्माण और उनके ऊपर से सीधे नीचे बाज पक्षी के समान उतरने उतारने की कुशलता का ज्ञान आज से ११० वर्ष पूर्व तथा विमानो के प्रथम आविष्कार से लगभग २५-३० वर्ष पूर्व महर्षि ने दिया। अत नि सन्देह महर्षि दयानन्द महान् वैज्ञानिक, महान् यान्त्रिक एव महान् आविष्कर्ता थे।

५. महान् शिक्षक–महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द महान् शिक्षक थे, आचार्यों के भी आचार्य, आचार्यों के भी आचार्य और कुलाधिपतियों के भी कुलाधिपति थे। उन्होंने उस शिक्षा की स्थापना का प्रबल प्रतिपादन किया जिसके द्वारा शारीरिक, सामाजिक एवं आत्मिक उन्नति ससार की हो सके। बालको को गर्भावस्था से ही सस्कारित एव सुशिक्षित करने के लिये, उनके मन एव आत्मा को सुसंस्कृत स्वास्थ्ययुक्त बनाने के लिये तथा आत्मा को मोक्षाभिमुख करने के लिये सोलह सस्कारों का क्रम मानव जाति को प्रदर्शित किया।

६. सर्वोच्च साम्यवादी–महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द महान् समाजवादी थे उनका समाजवाद वैदिक आदर्शों पर आधारित था। परिस्थितियों से प्रभावित होकर जो भी समाजवाद या अन्य कोई वाद उत्पन्न या विकसित होगा वह प्रतिक्रियात्मक एवं एकांगी ही होगा, अत वह कभी सर्वांगीण उन्नति का आदर्श एव पथ प्रदर्शक नहीं हो सकता। महर्षि ने परिस्थितिवश समाजवाद की स्थापना नही की थी – अपितु वेद मे परमात्मा ने वह सुपथ प्रतिपादित किया है जो शाश्वत उन्नति का आदर्श है, इस दृष्टि से वैदिक मार्ग का प्रतिपादन किया था। सारे समाजवादी या साम्यवादी विचारक वैदिक समाजवाद या साम्यवाद के सम्मुख जुगनू की भाति ही महान्धकार मे भटक रहे हैं। अत महर्षि दयानन्द साम्यवादियों मे शिरोमणि हैं।

७. सर्वश्रेष्ठ साम्यवादी–महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द ने समाजवाद या साम्यवाद अथवा समत्वभावकी स्थापना एव प्रचार के लिए आर्यसमाज की स्थापना की और उसमे सबको समान अधिकार देकर प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहकर सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिये—यह आर्य समाज का नवमा नियम घोषित किया। गुरुकुलादि शिक्षण सस्थाओ मे राजा और निर्धन जनो के बालको के वस्त्र, रहन-सहन, खान-पान व्यवहार आदि मे बिना भेद भाव के एक समान बर्ताव रखने का महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास मे तीव्र शब्दो मे प्रतिपादन किया। राज्य की ओर से ही सबकी शिक्षा की समान व्यवस्था बिना जातिभेद एव गरीब, अमीर या राजपुत्र भेद को समाप्त करने का महर्षि ने प्रतिपादन किया। शिक्षा के लिये किसी वर्ग या व्यक्ति विशेष को सुविधा न देकर सभी को समान अवसर महर्षि दयानन्द प्रदान करते हैं। विलासमय शान शोकत के विद्यार्थी जीवन को तप, सादगी तथा ब्रह्मचर्य पूर्ण बनाने का महर्षि ने सन्देश दिया।

महान् गुरु–महर्षि दयानन्द

वर्तमान समय की शिक्षा और विद्यार्थी जीवन मे सदाचार, ब्रह्मचर्य एव सयम अवाछनीय तथा उपहास योग्य माने जाते हैं। गुरु शिष्य का सम्बन्ध भाव बिरला ही दृष्टिगोचर होता है। गुरुओ मे गुरुत्व की गरिमा का प्राय अभाव ही है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे एव तीसरे समुल्लास मे शिक्षा के मूल सिद्धात और आदर्शो का प्रतिपादन करते हुए—मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्य देवोभव की भावनायुक्त होने का सन्देश दिया। यान्यस्माक सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि, नो इतराणि—अर्थात् हमारे जो अच्छे आचरण हैं जो धर्मयुक्त कार्य हैं उनका शिष्य नित्य अनुष्ठान करें—जो निन्दित कर्म हैं उनका अनुष्ठान या आचरण कदापि न करें। यह प्राचीन ऋषियो का आचार घोष महर्षि ने पुन शिक्षा के क्षेत्र में घोषित किया। विद्या एव विज्ञान परपीडन के लिए नही अपितु दुखियो के दुख दूर करने के लिए, शान्ति और सबको सुखी करने के लिए है इस भावना के साथ विद्या की वृद्धि करने तथा अविद्या के विनाश करने का आर्य समाज का आठवा नियम बनाया।

९. अक्षर तत्व का दर्शक–महर्षि दयानन्द

साक्षर होने से अविद्या का नाश नही होता है और न विद्या की वृद्धि होती है। साक्षरता एवं उच्च शिक्षा की व्यवस्था होने पर भी विद्या क्या है और अविद्या क्या है इसका ज्ञान प्राय नही होता है। स्कूल, कालेज, विश्वविद्यालयो के माध्यम से साक्षरता बढती है, परन्तु अक्षर तत्व का बोध नहीं होता है। अक्षर तत्व के बोध के अभाव मे साक्षरता तो राक्षस भाव मे परिणत होती जाती है। अत महर्षि ने अविद्या का नाश और जिस विद्या की वृद्धि के लिए कहा है, वह पराविद्या है। उसी के लिए उपनिषद में कहा—यया तदक्षरमधिगम्यते—अर्थात शिक्षा के साथ पराविद्या की प्राप्ति के द्वारा उस अक्षर, अविनाशी तत्व परमात्मा की प्राप्ति करनी चाहिये। वर्णात्मक अक्षर से वर्णनातीत अक्षर तत्व के वरण करने की साधना का उपदेश महर्षि दयानन्द ने – तत्सवितुर्वरेण्यभर्गो देवस्य धीमहि है इस गायत्री मन्त्र से करने का प्रचार किया।

१०. सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य भावना प्रसारक–महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द ने व्यक्ति, समाज, राष्ट्र के साथ सार्वजनिक उन्नति के लिए सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित करने के लिए आर्यो को प्रेरणा दी। बिना आर्य बने ससार के उपकार की भावना उदय नही होगी। स्वार्थों की सीमाओ को सार्वजनिक उन्नति के आगे त्याग कर कार्य करने का आदर्श महर्षि ने आर्य समाज के दसवें नियम द्वारा ग्रहण करने का आदेश दिया कि

तेजस्वी दयानन्द

एक रोचक संस्मरण

—सत्यदेव शास्त्री, ११२ वी, सिगल स्टोरी रमेशनगर

मैं १९२२ में ओरियण्टल कालेज लाहौर में शास्त्री कक्षा में पढ़ता था। पं० शिवदत्त जी महामहोपाध्याय हमें व्याकरण पढ़ाते थे। पढ़ाते समय वह कतिपय विद्वानों के उदाहरण देते थे कि अमुक विद्वानने यह लिखा है पर प्रतिदिन साथ ही कहते थे कि स्वामी जी ने यह लिखा है। एक दिन भी खाली न जाता कि स्वामी जी का मत प्रकट न करें। एक दिन हमने उनसे पूछा कि आप सदा स्वामी जी तो कहते हैं पर उनका नाम नहीं लेते।

छात्रों द्वारा यह प्रश्न करने पर वह आवेश मे अपनी कुर्सी से उठे और लकड़ी के बल पर इतने ज़ोर से पांव मारा कि न केवल कमरा ही गूंज उठा बल्कि उस भवन के ऊपरी भाग मे ला कालेज के छात्रों मे भी हलचल हो गई कि कोई बम फटा है। ऊपर सारे छात्र नीचे आकर कमरे के चारों ओर साश्चर्य खड़े होकर देखने लगे।

इस भरे जलसे मे पं० शिवदत्त जी सिंह गर्जना कर रहे थे कि इस संसार मे दयानन्द को छोड़कर और कौन 'स्वामी' हो सकता है। उन्होने एक घटना सुनाई। वह जयपुर निवासी थे उन्होने बताया कि जब स्वा. दयानन्द जयपुर मे पधारे तो उनके साथ शास्त्रार्थ करने के लिए एक दिन सौ पंडित एकत्रित हुए और अनेक प्रश्नों को लेकर वे आज स्वामी जी को परास्त करके छोड़ेंगे।

चली तो थी सौ की पंडित-मंडली, पर मार्ग में किसी को प्यास लग गई और किसी को लघुशंका आ गई। पंडाल पहुंचने तक केवल २५ पंडित शेष रह गए अब आपस में परामर्श होने लगा कि कौन प्रश्न करे जब कोई तैयार न हुआ तो बड़ी कठिनाई से उन्हें खड़ा किया गया। पं० शिवदत्त जी ने यों वर्णन किया, "मैं केवल पांच मिनट बोला पर नीचे सिर करके। उनके तेज से मैं तिरोहित हो गया। स्वामी दयानन्द सूर्य के समान प्रकाशमान हो रहे थे। जब स्वामी जी ने उत्तर देना प्रारम्भ किया तो ज्ञान-गंगा बह चली। वेद मन्त्रों तथा शास्त्रों के प्रमाणों की झड़ी लग गई। एक घण्टा नहीं दो घण्टे नहीं, २॥ घण्टे वह आध्यात्मिक प्रवाह चलता रहा। सहस्रों की संख्या में लोग, हिन्दू भी, मुसलमान भी अंग्रेज भी। संस्कृत न जानते हुए भी सब मन्त्र-मुग्ध हो रहे थे उस दिव्य वाणी को सुनकर। इसलिए मैं कहता हूं कि संसार मे दयानन्द को छोड़कर और कौन 'स्वामी' कहलाने योग्य है।"

पं० शिवदत्त जी कितने बड़े विद्वान थे विशेषत: व्याकरण के इसकी झांकी देखकर ही पाठक स्वामी दयानन्द के महत्व को समझ सकेंगे।

ओरियण्टल कालेज में स्थान रिक्त हुआ और विज्ञापन निकाला गया कि शास्त्री कक्षा को संस्कृत व्याकरण अध्यापन हेतु एक सुयोग्य व्याकरणाचार्य की आवश्यकता है। बड़ी २ देशी विदेशी डिग्रियों वाले आवेदन पत्र आए पर पं० शिवदत्त जी ने जयपुर से अपना लिखा एक व्याकरण-ग्रन्थ भेजा जिस पर लिखा था 'मैं यह पास हूं" हमारे प्रिंसिपल ए. सी. वुल्नर एक अंग्रेज थे उन्होंने जब उस ग्रन्थ को पढ़ा तो उन्हे उसमें मौलिकता दृष्टिगत हुई। उस ग्रन्थ में 'स्वीकृतवान' के स्थान पर प्रयोग किया था 'मञ्जूरीकृतवान' और उसे व्याकरण से सिद्ध कर दिया था। अत: उनकी कालेज में नियुक्ति हो गई।

हमे पढ़ाते समय वह कहा करते थे कि संसार के सब शब्द संस्कृत व्याकरण द्वारा सिद्ध हो सकते हैं। उन दिनों हमारे पाठयक्रम में एक वेद की पुस्तक पढ़ाई जाती थी उसे लाहौर के रईस आजिम भाई मनोहर लाल छपवाकर संस्कृत विद्यालयों मे छात्रों के लिए भेजते थे। एक दिन हमने पं० शिवदत्त जी से कहा कि इस वेद की पुस्तक पर लिखा—रईस आजिम भाई मनोहरलाल, तो रईस शब्द कैसे संस्कृत का हुआ तो उन्होंने उत्तर दिया कि रईस के स्थान पर रयीश कर दो—रयीणां धनिनां स्वामीति रयीश:। हमने कहा आजिम तो शुद्ध फारसी का शब्द है वह कैसे संस्कृत का हो सकता है तो उनका उत्तर था —आ-समन्तात जेमयति-भोजनं कारयति ब्राह्मणान् छात्रान् वा इति आजिम:।

प० शिवदत्त जी की अद्भुत विद्वत्व के देखकर उन्हें विश्व विद्यालय ने 'महामहोपाध्याय' की उपाधि से विभूषित किया था। पं० शिवदत्त जैसे प्रकाण्ड विद्वान भी न टिक सके मेरे महर्षि के सामने।

सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्व हितकारी नियम पालने मे परतन्त्र रहना चाहिए—ऐसी सार्वजनिक सार्वभौम, सर्वहितकारी भावना का महर्षि ने उदघोष करके क्षुद्र जातीय साम्प्रदायिक या क्षेत्रीय सीमित राष्ट्र की भावना के बदले सार्वभौम भावना का मन्त्र प्रदान किया। वेद भाष्य एव आर्याभिविनय के प्रार्थना के मन्त्रों मे बार-बार सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापना का महा-घोष प्रदान किया।

११. महर्षि की तुलना किसी से नहीं की जा सकती

महर्षि दयानन्द की तुलना—न भूतो न भविष्यति—किसी से नही की जा सकती है। सूर्य की तुलना क्या दीपक से हो सकती है? सुवर्ण की तुलना पीतल से कभी नहीं हो सकती। ब्रह्मचारी की तुलना विलासीजनों से नहीं की जा सकती है। विद्वान की तुलना मूर्खों से नही की जा सकती। आदर्शवादी की तुलना अवसरवादियों से नही की जा सकती। ऋषि की तुलना दानवों से नही की जा सकती। ऋषि तो ऋषि ही था। वह महर्षि था, महायोगी था, परम तपस्वी था, परमज्ञानी था। समाधि सिद्ध था। भर्गोदेवस्य धीमहि—की स्थिति में स्थित प्रज्ञ होकर प्रज्ञा के आलोक से विश्व को आलोकित करने वह इस धारा पर आया था। महर्षि की तुलना मे सर्वांगीण व्यक्तित्व वाला कोई है ही नही, परन्तु आंशिक रूप से भी उस उच्चता का स्पर्श भी कोई नही कर सकता। न तस्य प्रतिमा अस्ति उस महर्षि दयानन्द का कोई प्रतिमान प्रतीत नहीं होता।

१२. दिव्य, ज्ञान-चक्षुप्रदाता—महर्षि दयानन्द

वेद के दिव्य सन्देश को देने के लिए उसने अपने जीवन को अर्पित कर दिया था। संसार के उपकार के लिए वह जिया और संसार के उपकार के लिये ही वह मरकर अमर हो गया तथा मरती हुई मानवता को अमरत्व का सन्देश दे गया। वह क्रान्ति का पुंज था। साम्प्रदायिकता के दुर्भेद्य किलो को वैचारिक क्रान्ति से उसने ध्वस्त किया। अज्ञानता एवं रूढ़िवाद के भवर से मानव जाति का उसने उद्धार किया। आंखें होते हुए भी ज्ञान दृष्टि के अभाव मे मानव जाति भटक रही थी—महर्षि ने उसे ज्ञान दृष्टि रूपी दिव्य चक्षु प्रदान की। महर्षि ने मनु के दशकं धर्म लक्षणम्—के रूप में आर्यसमाज के १० नियम प्रदान किए। यही दशसूत्री कार्यक्रम कुछ वर्तमान समय के लिये सर्वथा उपयुक्त है तथा सर्वांगीण उन्नति का कार्यक्रम है।

गुरु-दक्षिणा

—धर्मवीर विद्यालंकार, पीली भीत (उ. प्र.)

(जिसकी पूर्ति में समस्त आयु सहर्ष समर्पित)

प्राचीन भारत में गुरु-शिष्य सम्बन्ध की अद्भुत परम्परा रही है। आज का शिष्य विद्यालयों में मासिक फीस देता है और शिक्षा ग्रहण करता है। भारत के प्राचीन काल में (लगभग १०० वर्ष पूर्व तक) शिष्य फीस नहीं देते थे। नगर-नगर, ग्राम से भिक्षा द्वारा अन्नादि लाकर दैनिक आवश्यकताएं पूर्ण करते थे और शिक्षा समाप्ति पर अपने सामर्थ्य के आधार पर, तथा गुरु महाराज की रुचि अथवा आवश्यकता के अनुसार, स्वयं ही निर्णय लेकर, गुरु-चरणों में अपनी श्रद्धा के सूचक के रूप में कुछ विशेष वस्तु, अर्पण करते थे। उसे "गुरु दक्षिणा" के रूप में जाना जाता है।

इसी परम्परा का निर्वाह करते हुए, स्वामी दयानन्द ने अपने गुरु स्वामी विरजानन्द को भी दक्षिणा देने का निश्चय किया। गुरु-दक्षिणा रूप में दी जाने वाली वस्तु द्वारा गुरु को प्रसन्न करने के साथ साथ, अचम्भित करने का भाव भी शिष्य के निर्मल हृदय में रहा करता था। स्वामी दयानन्द के पास पार्थिव सम्पत्ति तो थी नही। अपनी दैनिक आवश्यकता—भोजनादि एवं रात्रि अध्ययन हेतु दीपक के तेल के लिए भी वे महाजनों की अनुकम्पा पर आश्रित थे। एक दयालु सज्जन से भिक्षा रूप लेकर, स्वामी विरजानन्द जी की प्रिय वस्तु "लौंग" एक थाली में सजाकर, अत्यन्त श्रद्धा और भक्ति से आप्लावित होकर, बाल-ब्रह्मचारी स्वामी दयानन्द ने उसे गुरु-चरणों में अर्पित किया। लौंग की सुगन्ध कमरे को सुवासित कर रही थी। गुरु विरजानन्द प्रज्ञा-चक्षु थे। परन्तु सुगन्ध से पहिचान गये। दयानन्द से बोले—

"वत्स, दयानन्द, यह क्या लाये हो ?"

स्वामी दयानन्द ने अत्यन्त हर्ष से मुदित होकर कहा—"गुरु जी, कुछ नही। मात्र थोड़ी-सी लौंग है।"

गुरु जी ने अपने को संयत रखते हुए कहा—"अच्छा ! तो तुम इसे जुटाने में ही पिछले तीन दिन से प्रयत्न कर रहे थे !! बहुत अच्छा है। लौंग मुझे अत्यन्त प्रिय है। तुम ठीक समझे।"

फिर थोड़ी देर रुक कर, और भी अधिक धीर-गम्भीर वाणी से बोले—"वत्स ! तुमने मेरी रुचि को खूब पहचाना। इससे अधिक तुम दे भी क्या सकते थे ? इसके लिए भी तुमने कितना श्रम किया है, इसे मैं अनुभव करता हूं। परन्तु······" थोड़ा रुक कर पुनः बोले—"परन्तु मैं तुमसे कुछ और वस्तु दक्षिणा के रूप में चाहता हूं।" और गुरु महाराज रुक गए।

इस समय स्वामी दयानन्द की बड़ी विचित्र अवस्था थी। गुरु को प्रसन्नता पूर्वक अचम्भित करने हेतु उन्होने "लौंग" का चयन कियाथा। बड़े ही श्रम, अनुनय-विनय से भिक्षा में प्राप्त किया था। श्रम की चिन्ता नही। पर प्रसन्नता के अनुमान का मिथ्या हो जाना अजीब कष्ट-प्रद हो रहा था। और इस कल्पना से कि कौन सी वस्तु गुरु महाराज मांग लेंगे, स्वामी दयानन्द अपने शारीरिक सामर्थ्य, बौद्धिक प्रतिभा और व्यावहारिक दक्षिणा की परीक्षा के लिए अपने को तैयार करने मे दृढ़ता धारण करने का प्रयास करने लगे थे। निःशब्द, अवाक् स्तम्भित होकर, गुरु जी की ओर एकचित्त ध्यान से सुनने लगे।

स्वामी विरजानन्द ने अत्यन्त शांत स्वर में अपनी बात को आगे बढ़ाया—"आज ही नहीं, विश्वभर में मानव अज्ञान-अविद्या के घोर अन्धकार में निमग्न हो, अतिकष्ट पाकर दुःखी है। उसे सुखी देखना चाहता हूं। वे अपनी कुरीतियों—कुप्रथाओं की बेड़ियां झटके से तोड़ दें, ज्ञान के, विद्या के प्रखर प्रकाश में उन्हें सत्यज्ञान हस्तामलक के समान प्राप्त हो। वे सत्य-असत्य, नित्य-अनित्य, सुख-दुःख, राग-द्वेष के प्रति विवेक-ज्ञान पा लें, और नित्यानन्द में आनन्दित रहें। यह कार्य वेद के सत्यार्थ-प्रकाश से सम्भव है। वह तुमने पा लिया है। योग की समाधि में तुमने उस नित्यानन्द का अनुभव भी कर लिया है। संसार के मानव-मात्र को वेद ज्ञान रूपी सूर्य की प्रखर-किरणों का प्रकाश तुम्हीं दे सकते हो। इस मानव की उन्नति के साथ ही जीव-मात्र की, स्वाभाविक की उन्नति आश्रित है। मैं चाहता हूं कि जो विद्या तुमने अब तक अर्जित की है, उसका प्रसार, संसार भर मे, संसार के जीव-मात्र के लिए करो।"

इतना कह, गुरु विरजानन्द शान्त हो गए।

स्वामी दयानन्द के चेहरे के भाव बदलने लगे थे, जैसे २ गुरु जी की वाणी आगे बढ़ती गई। वे जिस परीक्षा के लिए अपने को तैयार कर रहे थे, अब उसकी आवश्यकता नही थी। वे प्रसन्न हो रहे थे। यह विद्या दान उनके लिए अत्यन्त सरल कार्य था, जो कुछ पढ़ा है, उसे पढा देना भी क्या कठिन है ? फिर विद्या तो एक-मात्र ऐसा धन है, जो "दान" से बढ़ता है।

गुरु श्री विरजानन्द को अपनी प्रदत्त विद्या के लुप्त होने की चिन्ता व भय था। कितने ही शिष्यों को उन्होने पढ़ाया है। कोई शिष्य दयानन्द के समान मेधावी और पूर्ण शुद्ध ब्रह्मचारी एवं पर हित चिन्ता व्यग्र नहीं मिला। दयानन्द को "सच्चे शिव की खोज थी। वह इसने पा लिया हैं। समाधि में उस नित्य, शुद्ध, पवित्र, आनन्दमय, ज्ञानस्वरूप के सान्निध्य में परम पवित्र आनन्द का प्रसाद भी पा चुका है। यह सांसारिक चिन्ताओं से विरक्त, स्थिर समाधि मे आनन्द मग्न रह गया, तो इस सत्य विद्या का प्रकाश और कौन फैलाएगा। क्या यह एक दीपक अपने प्रकाश से स्वयं ही प्रकाशित रहेगा ? संसार के दु.खी जीव-मात्र को गाढ़ अन्धकार से और कौन निकालेगा ? अपनी आशाओं को मूर्त रूप देने मे समर्थ, इस दयानन्द को, वेद-सूर्य के प्रकाश-विस्तार में लगाने का निश्चय कर, गुरु ने दक्षिणा के रूप मे यह प्रस्ताव किया।

स्वामी दयानन्द पुलकित हो, गुरु-चरणो मे गिर पड़े। गुरु उसमे वही प्रतिज्ञा करा रहा है, जिसका संकल्प उन्होंने स्वयं किया था। गुरु शिष्य हृदय से एक जो थे।

तब गुरु विरजानन्द ने आशीर्वाद का, स्नेह भरा हाथ, दयानन्द के सिर, पीठ पर फेरा और उसे उठाया।

इसी स्वामी दयानन्द ने, जो सच्चे शिव को खोज लेने के उपरान्त, गुरु-दक्षिणा को चुकाते २, सत्य विद्याओं का प्रसार करने, सत्य के ग्रहण और असत्य के त्यागने में सदा उद्यत, एक ही ईश्वर के सत्य स्वरूप की स्थापना करते, प्रीति पूर्वक धर्मानुसार व्यवहार करते, अपनी ही उन्नति ने सन्तुष्ट न रहकर सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझते, अनेको कष्टो को सहा, विरोधों को सहा, विषपान किया, कभी भी विचलित नहीं हुआ। वेदो के सत्यार्थ प्रकाश के कारण, अनुपमेय विद्या-बल बुद्धि से प्रदीप्त महर्षि कहलाया।

दीपावलि के शुभ अमावस्या के दिन वेद मन्त्रो 'सृष्टि के एकमात्र रचयिता परमपिता का स्तवन कर, ओ३म् का दीर्घ उच्चारण कर, इस नश्वर शरीर को इसी संसार मे छोड़ अपनी पवित्र आत्मा को लेकर चला गया। ईश्वर की इच्छा पूर्ति में जीवन भर प्रयत्न शील रहा और अन्तिम समय भी "ईश्वरेच्छा" का उच्चारण कर संसार से विदा हो गया।

इस महर्षि दयानन्द को, जो आयुभर गुरु-दक्षिणा चुकाने मे श्रद्धा पूर्वक सतत् प्रयत्नशील रहा, शत शत प्रणाम है :

मौरिशस में गिरमिट के १५० वर्ष और आर्य समाज

—प्रद्युम्न स्नातक

पूर्व मे कलकत्ते का मटिया बुर्ज एक ऐतिहासिक काला स्मारक है। इसके अतिरिक्त मद्रास और बम्बई के बन्दरगाह भी इस कोटि के हैं वहा से भारतीय श्रम के विदेश की औपनिवेशिक शक्तियो द्वारा निर्यात का इतिहास वस्तुत पिछले दो सौ और तीन सौ सालो का मिलता है, जबकि समुद्री एव स्थल मार्ग से आजीविका की खोज मे दो जून चना चबैना खाने असगठित रूप मे भारत से बाहर जाते रहे। नया अध्याय शर्तबन्द (कुलीप्रथा के तहत १८३४ से शुरू होता है। गुलाम बनाकर श्रम के लिए देश से बाहर ले जाए जाने अथवा स्वय ही उसके लिए निकल पड़ने के इतिहास मे बहुत से प्रमाण खोज करने पर मिलते हैं। अरबो, फ्रासीसियो, पुर्तगालियो और डचो द्वारा भी अगरेजो के अतिरिक्त, भारतभूमि से बाहर कुशल एव अकुशल मजदूरो को ले जाया जाता रहा है। उनकी स्थिति लगभग गुलामो की सी थी। १८३३ मे ब्रिटिश पार्लियामेंट मे दास प्रथा को कानूनन समाप्त कर देने के बाद एक लगभग उतनी ही घृणित प्रथा शर्तबन्द कुली प्रथा के नाम से चालू हुई जो अत्यन्त अमानवीय परन्तु पहले से कुछ नरम थी। इसके अन्तर्गत ५ साल तक घोर, यातनाओ के बाद स्वेच्छया मजदूरी या खेती करने का अधिकार उनको प्राप्त होता था। इसलिए अधिकाश ऐसे मजदूर उन नये देशो मे बस गये। परन्तु मूल देश की परम्पराओ और गौरव भरसक बनाए रखने का वे लोग उद्योग बराबर करते रहे। दास प्रथा समाप्त होने के एक साल बाद ही मोरीशस मे शर्तबन्द मजदूर पहुचने शुरू हो गए। परन्तु इसका अर्थ यह नही है कि भारतवासी उससे पूर्व मोरीशस मे नहीं मौजूद थे। प्राप्त विवरण के अनुसार १८१० मे फ्रासीसी शासन की समाप्ति पर मोरीशस मे भारतीयो की सख्या ५००० थी। इनमे से दास बनाकर लाए भारतीयो के अतिरिक्त बादमे अगरेजो की सेना के वे भारतीय सैनिक भी जुड़ गए जिन्होने रिटायरमेंट लेकर नये देशो मे बस ने की सुविधा ले ली थी। ईस्ट इण्डिया कम्पनी बहादुर की सेना मे उन भारतीयो के मौरिशस को अगरेजो के लिए जीता था। अगरेजो ने १८०८मे सामरिक महत्त्व की दृष्टि से मोरीशस पर अपनी धाक जमाई और निकट सेशिल और बर्नो द्वीप पर कब्जा किया था। डियो गार्सिया द्वीप समूह के अग ये द्वीप हिन्द महासागर मे आज अमेरिका की युद्ध सामग्री के सबसे बड़े अड्डे हैं। इन्हे ब्रिटन ने पट्टे पर अमेरिका को दिया था। इसके बाद भारत से भारी सख्या में सैनिक मगाकर अगरेजो ने मौरिशस पर कब्जा कर लिया। कुछ भारतीय प्रवासी और सैनिक वहीं रह गए। १८१० में यह ब्रिटिश उपनिवेश बन गया। यहा का बाद में बना गवर्नर गोर्डन भारत में अफसर रहा था और उसने भारतीय कृषकों की परिश्रमशीलता और गरीबी देखी हुई थी। उसके ही प्रयत्नों से गिरमिट काल में और उसके बाद भारतीय मजदूर मौरिशस में आते रहे। स्मरण रहे कि यही गोर्डन १८७१ में जब गवर्नर बनाकर फीजी भेजा गया तब उसने भारत एव मौरिशस से गिरमिट प्रथा के तहत भारतीय मजदूर मगाए। कुछ लोग स्वतन्त्र रूपसे भी मजदूरी, नौकरी, छोटी मोटी दुकानदारी करने भी वहा पहुच गए। यह गोर्डन हिन्दुओं के मन्दिरो की घन्टी की आवाज को सुनकर इतना दुखी होता था कि उसने यूरोपीय और कुछ दक्षिण भारतीय तमिल भाषी ईसाई मिशनरियों को बुलाकर दोनों देशों में ईसाई बनाने का कार्य जोरो से चलाया। वस्तुत १८१५ में नैपोलियम के पतन और सैंट हेलेना द्वीप में उसके कैद होने के बाद फासीसी जमीदार धीरे धीरे मौरिशस छोड़ कर जाने लगे।

१९०१ में गांधी जी (तब तक वे महात्मा नहीं बने थे) की प्रेरणा पर डाक्टर मणिलाल मौरिशस पहुचे और उसके बाद वे फीजी भी पहुचे और रहे थे। उन्होंने १९०९—१४ तक 'हिन्दुस्तानी' नाम से पहले साप्ताहिक और बाद में दैनिक पत्र निकाला। यह वहां का पहला समाचार पत्र था जो हिन्दी व अंग्रेजी में निकलता था। उन्होंने ही विधिवत् यहां सर्वप्रथम आर्य समाज और यंगमैन (हिन्दुस्तानी एसोसियेशन की स्थापना करके मौरिशस वासियों की सेवा निष्ठा के साथ की। आज भी वहा उनको श्रद्धा से याद किया जाता है। बाद मे मौरिशस आर्य पत्रिका, आर्यवीर, आर्योदय, जागृति रसनातन धर्मार्क वसन्त, प्रभात आदि पत्र पत्रिकाए और दैनिक पत्र मौरिशस इण्डियन टाइम्स, मौरिशस मित्र जनता वहां से निकले और कुछ अभी निकल रहे हैं। यो वहा तमिल तेलगू, मराठी और उर्दू भाषी भारतीय भी हिन्दी का व्यवहार करते हैं। अधिकांश भारतीय बिहार एव पूर्वी यू० पी० से वहा पहुचे थे।

१९२४ मे कुवर सर महाराजसिंह ने मौरिशस पर रिपोर्ट तैयार करके भारत सरकार को दी, जिस पर ब्रिटिश सरकार ने भारतीय मजदूरों की स्थिति मे सुधार किया। भारत मे श्री बनारसीदास चतुर्वेदी, दीनबन्धु एन्ड्रूज और राइट आनरेबिल श्री निवास शास्त्री और गोपाल कृष्ण गोखले ने भी इन प्रवासियो की दशा सुधारने मे महान प्रयत्न किया।

संवैधानिक एवं आर्थिक प्रगति

डा० मणिलाल के अथक प्रयत्नो के बाद पहली बार वहा की विधान सभा मे एक मनोनीत भारतीय सदस्य १९२१ मे डा० के० बुधन बने। १९२६ मे पहली बार २ भारतीय राजकुमार गजाधर और धनपत लाल वहीं चुनकर सदस्य बने। १९३५ मे गिरमिट शताब्दी दयानन्द भवन में मनायी गयी। इससे पूर्व डा० चिरजीव भारद्वाज स्वामी स्वतन्त्रानन्द आदि ने भारत से वहा जाकर नैतिक पुनरुत्थान का काम किया। अधिक सुधार बड़े वेग से उसके बाद हुए।

१९५९ में पहली बार मौरिशस मे वयस्क मताधिकार के आधार पर जो चुनाव हुआ उसमे डा० रामगुलाम प्रधान मन्त्री बने। भारतीय बहुल इस सरकार के प्रयत्नो से १९६७ मे नये चुनाव होने पर भारत विरोधी दल को पूर्ण पराजय हुई और अन्त मे १२ मार्च १९६८ को डेढ़ सौ साल की गुलामी के बाद मौरिशस स्वतन्त्र हो गया। इसके साथ ही उस देश के साथ भारत के सास्कृतिक आर्थिक और राजनैतिक सहयोग के अध्याय बढते चले गए। बीच में भारत विरोधियो का पलड़ा भारतीयो के बीच मत भेद से भारी हो गया था। इनमे मुख्यत फासीसी मूल के क्रियोल तथा मुस्लिम देशो से समर्थित सतिपय तत्त्व थे, जिनका अब सफाया हो गया है। श्री जगन्नाथ अनिरुद्ध अब वहाँ के प्रधान मन्त्री हैं और राष्ट्रपिता कहलाने के योग्य डा० रामगुलाम वहां के राष्ट्रपति हैं। राष्ट्रीय समारोह में भारतीय भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह और अन्य मन्त्री तथा अधिकारी वहा पहुच रहे हैं। श्री अनिरुद्ध के शब्दो में इस समारोह के जरिए सरकार यह चाहती हैं कि मौरिशस की युवा पीढ़ी अपने पूर्वजों के सघर्षमय जीवन के इतिहास से शिक्षा ग्रहण करे। हम सभी भारतवासी इस अवसर पर मौरिशस निवासियों को अपना हार्दिक अभिनन्दन देते हैं।

हैदराबाद के सत्याग्रहियों को स्वाधीनता सेनानी सम्मान देना होगा

—रामगोपाल शालवाले

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में १९३८ में एक [वि]शाल आर्य महासम्मेलन शोलापुर में लोकनायक माधव श्रीहरिअणे [के] सभापतित्व में हुआ था। इसमें सारे देश के आर्य समाजी नेताओं [के] अतिरिक्त राष्ट्रीय नेताओं ने भी भाग लिया था। आर्य [हि]न्दू जनता का उत्साह और मनोबल उस अवसर पर तरगे ले रहा [था]। सब प्रकार के संवैधानिक उपायों के असफल होने पर राष्ट्र[ीय ने]ताओं से सलाह और सहयोग के बाद सन् १९३९ मे शक्तिशाली [अं]ग्रेज सत्ता के परममित्र एवं देशी नरेशो में सर्वोपरि हिज एग्जा[ल]टेड निजाम की सरकार के विरुद्ध सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में [आ]र्यसमाज ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सत्याग्रह तब चलाया था। [आ]र्यसमाज के रियासती कार्यकर्त्ता उससे पूर्व ही इस मुगलिया वंश [के] शासकों की सरकार की क्रूर धर्मान्धता अन्याय और अत्याचार [के] शिकार हो चुके थे। बड़ा कठोर संघर्ष था। परन्तु महर्षि दयानन्द [के] अनुयायियों और आर्य हिन्दू जनता की त्याग और बलिदान की [भा]वना ने हार मानना नहीं जाना। इससे पूर्व पटियाला और धौल[पु]र रियासतों के अलावा अंग्रेजों के भारत में भी आर्यसमाज ने अपने सम्मान पर कभी आंच नहीं आने दी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूज्य प्रधान महात्मा नारा[य]ण स्वामी जी महाराज ने सर्वप्रथम सत्याग्रह द्वारा उस आन्दोलन का श्री गणेश किया था। इसके बाद राजस्थान प्रतिनिधि सभा के प्रधान कुंवर चांदकरण शारदा पजाब के मिलाप के सम्पादक और प्रादेशिक सभा के प्रधान ला० खुशहालचन्द जो बाद मे आनन्द स्वामी बनें) उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान राजगुरु पं० धुरेन्द्र शास्त्री बिहार के पण्डित श्री वेदव्रत जी (स्वामी अभेदानन्द) पंजाब से महाशय कृष्ण जी प० गुजरात से प० ज्ञानेन्द्र जी के नेतृत्व में हजारों व्यक्तियों ने सत्याग्रह मे भाग लिया।

फीजी, स्याम (थाईलैंड) बर्मा तक के प्रवासी और सभी प्रदेशों और धर्मावलम्बियो ने इसमे भाग लिया था। कुल मिलाकर १२ हजार व्यक्ति जेल में पहुचे और जब आठवे नायक बैरिस्टर विनायकराव विद्यालंकार अपने विशाल जत्थे के साथ सत्याग्रह के लिए जाने वाले थे निजाम ने आर्यसमाज की मांगों को स्वीकार करके सत्याग्रहियों को रिहा कर दिया। उस काल मे बहुत से आर्य वीर शहीद हो गये। स्वर्गीय सरदार पटेल ने ठीक ही कहा था—"यदि आर्यसमाज का यह सत्याग्रह न होता तो निजामरियासत का भारत में विलय इतनी आसानी से नहीं होता।"

स्वाधीनता के बाद आशा हुई थी कि भारत सरकार और राज्य सरकारें इनका उचित सम्मान करेगी, यद्यपि आर्य वीरों ने इस कामना से इसमें भाग नहीं लिया था। बाद में सम्मानार्थ पेंशन की योजना भी १९७२ में लागू हुई। उसमें हिंसावादी साम्प्रदायिक आन्दोलन खिलाफत तहरीक, मोपला विद्रोह के अलावा रियासत में नागरिक अधिकारों और उत्तरदायी शासन के लिए काम करने वाली शेख अब्दुल्ला की मुस्लिम कांफ्रेन्स एवं सिखों के धार्मिक अकाली आन्दोलनों, यथा जैतो नाभा) को भी सरकार ने स्वाधीनता सेनानी सम्मान के लिए स्वीकार कर लिया, परन्तु आर्यसमाज द्वारा अंग्रेजी शासनकाल में सिन्ध में सत्यार्थप्रकाश की रोक तथा धोलपुर और पटियाला रियासतों में धार्मिक स्वतन्त्रता के लिए सरकार के विरुद्ध किये गये आन्दोलनों को इस श्रेणी में अब तक नहीं रखा गया।

सार्वदेशिक सभा ने इस दिशा में लगातार सरकार से सम्पर्क रखा हैं और हैदराबाद के आर्यसमाज के सत्याग्रहियों को अन्य रियासती आन्दोलनों की भांति पेंशन व सम्मान देने की मांग की है। प्रधानमन्त्री और गृहमन्त्री को इस हेतु पत्र लिखें गये। परन्तु अब तक इस विषय में इसको अनिर्णीत ही बताया जाता रहा है। यह बड़े खेद की बात है कि इन ४५ वर्षों में अधिकांश आर्य वीर मर गये और जो जीवित है वे भी ६२-८० साल की आयु के हो चुके हैं। राजनैतिक दलों की भेद-भाव पूर्ण नीति इसमें मुख्य कारण है।

सार्वदेशिक सभा की यह प्रबल कामना और प्रयत्न रहा है कि इस चुनाव वर्ष में आर्य समाज के उन सत्याग्रहियों को भी राष्ट्रीय सम्मान मिले। इस सम्बन्ध में बराबर प्रयत्न किये जा रहे है और आशा है कि ईश्वर कृपा व आप सबके सहयोग से उसमें सफलता मिलेगी। मामला विचाराधीन तो है ही। इस आर्य सत्याग्रहमें भाग लेने वालों को इस विषय में अपना पूर्ण विवरण यथा नाम-पिता का नाम, सत्याग्रह के समय और अबका निवास स्थान, गिरफ्तार होने की और छूटने की तिथि, तथा न्यायालय के आदेश की प्रमाणित प्रति और जेल में रहने व छूटने का प्रमाणपत्र तथा अन्य आवश्यक विवरण इस सभा में भेज देना चाहिये, जिससे कि सरकारी घोषणा के बाद यथासम्भव शीघ्र यह कार्यवाही की जा सके। यदि इस विषय में राज्य केन्द्र सरकार को आवेदन पहले दिया गया हो या उस पर जो निर्णय हुआ हो, उसकी प्रति भी सभा में भेजना उपयोगी होगा। प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों और संस्थाओ को इस विषय में सचेष्ट होकर, सबको सूचना देनी चाहिये।

पण्डित ब्रह्मदत्त स्नातक जो उक्त सत्याग्रह में भाग लेने के बाद १९७६ में भारत सरकार में एक ऊंचे पद से रिटायर हो चुके हैं, वे भी १९९५ से इस बारे में आवश्यक प्रयत्न करते रहे हैं। सभा के पते पर उनसे पत्र व्यवहार किया जाना चाहिए। आगे की सूचना के लिए प्रतीक्षा कीजिये। —ब्रह्मदत्त स्नातक



थोड़ा सा वानप्रस्थ

गोपाल भिक्षुवानप्रस्थी प्रधान
महात्मा रसीलाराम वैदिक वानप्रस्थाश्रम, आनन्दधाम गढी [ऊधमपुर]

३१ अक्तूबर १६८२ को मैंने थोडा सा वानप्रस्थ लिया था। यह वानप्रस्थ जैसा ऋषि दयानन्द ने लिखा है उसके अनुसार बहुत थोडा था। महर्षि दयानन्द लिखते हैं ५० वर्ष की आयु मे वानप्रस्थ लो, वानप्रस्थ लेकर जगल मे रहो जगल मे जाकर वृक्षो के नीचे रहो, और वृक्ष के नीचे जमीन पर सोओ जगल के ही फूल फल खा कर निवाह करो। किन्तु मैंने भी ५० वर्ष की बजाय ५५ वर्ष की आयु मे वानप्रस्थ लिया। ना ही जमीन पर सोया ऐसा करना मेरे लिये बहुत कठिन था। इसलिए मैने थोडा सा वानप्रस्थ लिया। अपना कारोबार छोडा और अपने परिवार से मोह को तोडा और वेदप्रचार के साथ अपने आपको जोडा। ऐसा करने से बहुत से लोगो ने मुझे सम्मान दिया किन्तु कुछ लोगो ने कडा विरोध भी किया कि आपने पूरा वानप्रस्थ क्यो नही लिया। जिस दिन मैं वानप्रस्थ ले रहा था आर्य समाज कोटली कालोनी जम्मू मे, आर्यसमाज के बाहर मेरा विरोध किया जा रहा था और मेरे विरुद्ध पत्र लिखे जा रहे थे। विरोध करन वालो ने अभी तक मुझ नही छोडा और मेरा विरोध करते जा रहे है। इस विरोध से कई बार डर जाता हू घबरा जाता हू कि मैने क्या मुसीबत मोल ले ली है। मैं तो चाहता था कि वानप्रस्थी बनकर वेदप्रचार के लिए वानप्रस्थियो की एक सेना तैयार करूगा। मगर जिसस भी बात करना हू कि आप परिवार से और कारोबार से फारिग हो गए हैं इसलिये आप वानप्रस्थ ल तो वह व्यक्ति डरा हुआ घबराया हुआ यही कहता है कि हम वानप्रस्थ नही लगे क्योकि पूरा वानप्रस्थ तो हम ले नही सकते और थोडा वानप्रस्थ ल ता विरोध होना है लोग तरह तरह की बात करते है। विरोध करन वाले व्यक्तियो को इतनी भी समझ नही कि उनका अपना ब्रह्मचय आश्रम भी अधूरा था और गृहस्थ आश्रम भी अधूरा है। ये दोनो आश्रम ऋषि दयानन्द के अनुसार अधूरे है इस बात का ध्यान रहे कि अधूरी चीज मे से पूरी चीज नही निकल सकती और ब्रह्मचर्याश्रम तथा गृहस्थाश्रम अधूरा है तो वानप्रस्थ और सन्यासाश्रम कैसे पूरा हो सकेगा?

एक बार मै पूज्य महात्मा हरिराम जी वानप्रस्थ के चरणो मे बैठा था वे उन दिनो आर्य समाज कोटली बस्ती जम्मू मे रहते थे। मैंने प्रश्न किया कि आपकी आयु ६० वष हो गई आपने अभी तक सन्यास नही लिया। उन्होने उत्तर दिया कि सन्यास लेना कोई आवश्यक नही और अभी मेरा वानप्रस्थ ही पूरा नही हुआ मैं सन्यास कैसे लू मैने पूछा यह वानप्रस्थ कब तक पूरा होगा? उन्होने उत्तर दिया कि एक जन्म और लेना पडेगा। उनकी बात मुझ समझ आ गई कि ऋषि दयानन्द के लिखने के अनुसार वानप्रस्थ को पूरा करने क लिये एक जन्म और लेना पडेगा और मैं सोचता हू कि मुझे वानप्रस्थ को पूरा करने के लिये दो जन्म लेने पडेंगे और तीसरे जन्म सन्यास ले सकू गा।

वक्त की पुकार

यदि हम वक्त की आवाज को न सुनें तो हमारी भूल होगी। समय के अनुसार बदलना अनिवार्य है। आज के ब्रह्मचारी और गृहस्थी के पास वेद प्रचार करने के लिये समय बिल्कुल नही। गृहस्थियो के लिये तो अपना गृहस्थ चलाना मुश्किल हो रहा है। ये लोग आर्य समाज को कैसे चलायेंगे जैसे गृहस्थी अपने गृहस्थ को चलाने की बजाय घसीट रहे हैं वैसे ही लोग आर्य समाजो को भी घसीट रहे हैं। आर्य समाज को चलाने वाली बात खत्म हो रही है। आर्य समाजो को चलाने के लिए और वेद प्रचार करने के लिए वानप्रस्थो और सन्यासी ही काम आ सकते हैं और मैं तो यह भी कहता हू कि अगर कोई गृहस्थी एक मास के लिए या ३ मास के लिए या ६ मास के लिए या एक वर्ष के लिए वानप्रस्थ लेना चाहे तो ऐसा करना वक्त की आवाज को सुनना होगा और इस समय उचित यही होगा जो व्यक्ति थोडा सा वानप्रस्थ ले सकता है वह पूरा भी कभी न कभी कर सकता है। यदि हम सोचते हैं कि पूरा ही वानप्रस्थ लगे वर्ना नही लगे फिर तो आप इस जन्म मे क्या किसी भी जन्म मे वानप्रस्थ नही ले सकते? पूरा वानप्रस्थ लेने की प्रतीक्षा करते-करते कई जन्म बीत जायगे।

सार्वदेशिक सभा से प्राथना

ज्यादा वानप्रस्थी बनाने मे सबसे बडी अडचन है उन लोगो की जो थोडा सा वानप्रस्थ लेने का विरोध करते हैं। इस विरोध को समाप्त करने का अधिकार सार्वदेशिक सभा को है। यदि सार्वदेशिक सभा थोडा सा वानप्रस्थ लेने वालो के लिए उपनियम बना दे तो यह विरोध समाप्त हो सकता है या कम हो सकता है। उपनियम इतने सरल होने चाहिए कि हर गृहस्थ आश्रम से एक वानप्रस्थी तैयार हो। बस यही एक तरीका है ज्यादा से ज्यादा धम प्रचार और वेदप्रचार करने का कि हम हर गृहस्थ से ज्यादा वानप्रस्थी और सन्यासी पैदा कर। ऋषि दयानन्द बलिदान शताब्दी पर यही हमारी सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

आवश्यकता है जीवन दान की

महात्मा रसीलाराम वैदिक वानप्रस्थाश्रम मे बहुत से ऐसे काम हैं जिनको करने के लिए ऐसे व्यक्तियो की आवश्यकता है जो आश्रम को जीवन दान कर सके। जीवनदान करने वालो के भोजन रहने का प्रबन्ध तथा अन्य सारा खच आश्रम की ओर से होगा। जीवन-दान करने वाले कोई भी स्त्री पुरुष या वानप्रस्थी और सन्यासी हों आश्रम के साथ पत्र व्यवहार करें। आश्रम की 'निर्माण और योजना' पुस्तक मुफ्त मगावे। पत्र-व्यवहार 'गोपाल भवन कच्ची छावनी जम्मू' के पते पर कर।

टिप्पणी—लेखक की भावना ठीक होते हुए भी ये उनके अपने विचार हैं। महर्षि दयानन्द के मन्तव्यो और आर्य धर्म की रीति नीति के साथ इनकी पूर्णत: संगति नहीं बैठती। आर्य समाज मे ऐसे अनेक आर्य हुए हैं जिन्होने पूर्ण वानप्रस्थ और सन्यास को निभाया है, निभा रहे हैं। और ऐसे भी हैं जो इन दोनो आश्रमो के पूर्णत: निर्वाह के लिए उत्सुक और सक्षम हैं।

—सम्पादक

धर्म-रक्षा महाभियान

आर्यजन लक्ष्य पूर्ण करे

शुद्धि आन्दोलन की महत्ता : गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में उत्सव

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में महर्षि दयानन्द शताब्दी धूमधाम से सम्पन्न हुई। शनिवार १३-१०-८५ को प्रात शुद्धि सम्मेलन मे लाला रामगोपाल शालवाले ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सभी उपस्थित आर्यजनो से आर्यसमाज के उद्देश्यो को अपने जीवनकाल मे पूरा कर दिखाने का सकल्प लेने का अनुरोध किया। उन्होने बताया कि 'शुद्धि आन्दोलन' आज के समाज मे व्याप्त कितनी ही बुराइयो को दूर करने मे समर्थ है। उसी दिन अपरान्ह काल मे राष्ट्र रक्षा सम्मेलन हुआ जिसमे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने सभी देशवासियो को धार्मिक, जातीय-प्रान्तीय, क्षेत्रीय सकीर्णताओ से ऊपर उठकर राष्ट्रीय एकता एव अखण्डता के लिए कटिबद्ध होकर कार्य करने का आह्वान किया। उन्होने बताया कि वेद ही ऐसा ज्ञान है जिसको पाकर व्यक्ति इन छोटी-छोटी बातो से ऊपर उठ सकता है। उन्होने राष्ट्रीय एकता के लिए आर्यसमाज द्वारा आज तक किए गए कार्यों पर प्रकाश डाला और आज की परिस्थितियो मे आर्यसमाज की आवश्यकता पर जोर दिया। इस अवसरपर श्री कुलतारसिंह, श्री रामचन्द्र विकल और श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी ने भी आर्य जनता को सम्बोधित किया।

शुद्धि समारोह में तीन मुस्लिम व ईसाई परिवारों द्वारा वैदिक धर्म ग्रहण

कानपुर, आर्यसमाज मन्दिर गोविन्द नगर मे एक विशेष शुद्धि समारोह मे केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर के प्रधान आर्यसमाजी नेता श्री देवी दास आर्य ने दो मुस्लिम व एक ईसाई परिवारो के १२ सदस्यो को शुद्ध करके वैदिक धर्म ग्रहण कराया।

शुद्ध होने वाला एक परिवार डिफस कालोनी लाल बगला निवासी सरकारी कर्मचारी मोहम्मद हसन का है। उनके परिवार मे उनकी प नी नाजमा ने दो पुत्र व दो पुत्रिया शामिल हैं। पति-पत्नी के नाम महेन्द्र व नन्दनी तथा बच्चो के रामकृष्ण दुलारी व उर्मिला रखे गये।

काकादेव निवासी ईसाई जोजफ जान के परिवार के ४ सदस्यो पत्नी, पुत्र व पुत्री ने भी समारोह मे वैदिक धर्म ग्रहण किया। उनके नाम जितेन्द्र ज्योति, सुशीला, सुनील रखे गये।

तीसरा परिवार के० के० कालोनी निवासिनी स्नातक तक शिक्षा प्राप्त अध्यापिका श्रीमती हुस्ना बेगम का है। उसका नाम मुन्नी देवी तथा उसकी पुत्री शगुफ्ता का नाम शशि रखा गया।

श्री देवीदास आर्य ने शुद्ध होने वालो को यज्ञोपवीत (जनेऊ) पहना कर गाय गायत्री मन्त्र का उच्चारण कराकर स्वागत किया।

—मन्त्री, आर्य समाज
गोविन्द नगर, कानपुर

तीन बालिकाएं वेश्यालय से रहस्यमय ढंग से बरामद

कानपुर, सुप्रसिद्ध महिला उद्धारक आर्यसमाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने यहा के वेश्यालय मे छापा मार तीन नाबालिग बालिकाएं कु० रीमा मुकर्जी, कु० राजुल व कु० माया को रहस्यमय तथा नाटकीय ढग से बरामद करने मे सफलता प्राप्त की। रीना बीकानेर (राजस्थान), राजुल (पटना बिहार) तथा माया नैपाल की हैं। इनको हाल मे जिस्म फरोशो ने दो हजार से चार हजार रुपये मे बेचा था। मूलगज पुलिस ने बालिकाओ से अवैध धधा कराने तथा अपहरण करने के आरोप मे मोहम्मद रज्जाक तथा शबाना को बदी बना लिया है।

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा तथा केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने बताया उन्हे गुमनाम पत्र द्वारा बालिकाओ पर होने वाले अत्याचार की सूचना मिली थी। तब फर्जी ग्राहक भेजकर प्रमाणित होने पर यह छापा मारा गया। श्री आर्य ने बताया कि वैश्यालय मे १०० बालिकाए व महिलाए हैं जिनसे ५) पाच रुपये प्रति के हिसाब से २५००) रुपये नित्य वसूल करती है।

—श्यामप्रकाश शास्त्री, मन्त्री केन्द्रीय आर्य सभा, कानपुर

नहीं भुलाए जा सकते है ऋषि दयानन्द उपकार तेरे

ले०—सरला गोयल
मन्त्राणी, स्त्री समाज, आढ़री गेट जींद

जब ऋषि दयानन्द का समाज में पदार्पण हुआ उस समय पाखण्ड लीला जोरों पर थी बहुत से पाख ड ऐसे थे जिन्होने समाज मे घर कर लिया था और उनसे छुटकारा पाना बहुत कठिन था। परन्तु ऋषि दयानन्द ने हिम्मत करके इन पाखण्डो के विरुद्ध आवाज उठाई और उसमे सफल हुए।

(१) विधवा विवाह—स्वामी दयानन्द के आने से पहलेविधवा महिलाओं की हालत बहुत खराब थी। कोई विधवा जेवर आदि नही पहन सकती थी। बल्कि २४ घण्टे उनको बहुत बुरा जीवन व्यतीत करना पडता था। विधवा विवाह का प्रचार करके ऋषि दयानन्द ने समाज पर बडा भारी उपकार किया।

(२) महिला शिक्षा—इससे पहले औरतो को पढाना बेकार समझा जाता था वेदो के पढने मे यह समझा जाता था कि हरिजनो व महिलाओ को वेद पढने का कोई अधिकार नही है। जबकि ऋषि दयानन्द ने साफ तौर से कहा कि वेद हर व्यक्ति पढ सकता है। और हर एक व्यक्ति को पढ़ने का अधिकार है। महिला शिक्षा की बदौलत महिलाए लगभग हर पोस्ट पर कार्य कर रही है।

(३) हरिजनो का उद्धार—ऋषि दयानन्द ने हरिजनो को सम्मान के साथ जीना भी सिखाया, अछूत शब्द का नामोनिशान मिटाया और हरिजनों को हिन्दुओ के साथ बराबर के हक देकर जीवित रखा। इससे पहले समाज मे हरिजनो की हालत बहुत पतली थी। ऋषि दयानन्द ने उनको बराबर के हक देकर जीना सिखाया। इसके अलावा ऋषि दयानन्द के उपकार भुलाए नही जा सकते।

धन्यवाद ज्ञापन

हैदराबाद ६ अक्टूबर, आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश के प्रेस नोट मे दर्शाया गया कि इस वर्ष के निकलने वाले दशहरा जुलूस के प्रबन्ध मे जिन कार्यकर्त्ताओ ने और समाजों के अधिकारी गण जुलूसो को लाने का सहयोग दिया है। सभा के प्रधान श्री रामचन्द्रराव कल्याणी ने सभी को सभा की ओर से धन्यवाद दिया है। वर्तमान शहर की परिस्थिति अनुकूल न होने पर पुलिस अधिकारियो ने भारतीय परम्परा को निभाने के लिए जुलूस निकालने की जो स्वीकृति प्रदान की है और पुलिस का प्रबन्ध भी जो उत्तम ढग से रखा गया और सहयोग मिला सभा उनके लिए भी धन्यवाद प्रेषित करती है। पत्रकार समुदाय ने जो सदैव आर्य समाज के प्रचार व प्रसार मे सहानुभूति रखताहै उनके प्रति तथा नगर के नागरिक जो उत्साह के साथ सम्मिलित होकर पर्व का महत्व देते है इन सभी को सभा धन्यवाद देती है।

आर्य समाजों की गतिविधियां

श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय ११९ गौतम नगर, नई दिल्ली (४९) में स्वर्ण जयन्ती समारोह

८-९ दिसम्बर १९८४ को बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है। इस उपलक्ष्य मे रविवार १८ नवम्बर से पूज्यपाद श्री स्वामी दीक्षानन्द जी की अध्यक्षता में चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आयोजन भी पूर्व वर्षों की भांति किया गया है जिसकी पूर्णाहुति ९ दिसम्बर रविवार को होगी। ८ दिसम्बर को नवीन स्नातकों का दीक्षान्त समारोह १० बजे से १२ बजे तक होगा। स्वर्ण जयन्ती समारोह के पावन दिनों में विद्वानों द्वारा अनेक गोष्ठियो एवं सार्वजनिक सम्मेलनों का आयोजन भी किया जायगा।

वैदिक प्रचारक पं० महेशचन्द पाराशर का देहावसान

श्री पं० महेशचन्द पाराशर आर्य भजनोपदेशक का १६ अक्टूबर सन् १९८४ की मध्य रात्रि में देहावसान हो गया। वे आचार्य पं० दिनेशचन्द पाराशर शास्त्री के ज्येष्ठ भ्राता थे। अपना समस्त जीवन वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में व्यतीत किया। आपने राजस्थान की प्रतिनिधि सभा में एवम् दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा में कई वर्षों तक वैदिक प्रचार भजनोपदेश का ओजस्वी कार्य किया। आचार्य पं० दिनेश शास्त्री व उनके परिवार ने महान सेवा की। परमात्मा दिवंगत आत्मा को सदगति प्रदान करे तथा परिवार में शान्ति व धैर्य स्थिर करे।

उत्सव

आर्य समाज नारायणा के नवनिर्मित भव्य मन्दिर के उदघाटनके उपलक्ष्य में विशेष महोत्सव ४ नवम्बर से ११ नवम्बर ८४ तक मनाने का निश्चय हुआ है। शोभायात्रा ४ नवम्बर को दोपहर २ बजे आर्य समाज मन्दिर नारायणा से निकाली जावेगी। प्रातः प्रतिदिन यजुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं रात्रि को वेद कथा श्री स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती करेंगे। पूर्णाहुति ११ नवम्बर की प्रातः १० बजे होगी। पूर्णाहुति के तुरन्त पश्चात् श्री दीनानाथ गुप्त मन्त्री, आर्य समाज नारायणा सपत्नीक वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा लेंगे।

श्री रामगोपाल जी शालवाले प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आशीर्वाद देंगे और भव्य भवन का उदघाटन करेंगे। —मन्त्री

आर्यसमाज हरदोई स्थापना शताब्दी-समारोह

आर्य समाज हरदोई अपने कार्यकाल के एक सौ वर्ष पूर्ण कर रहा है। यह समारोह १५ से १८ नवम्बर १९८४ को आर्य कन्या इन्टर कालिज के प्रांगण में बड़े धूम-धाम से मनाया जायेगा।

श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती की एक सप्ताह तक वेद कथा होगी। १५ नवम्बर को शोभायात्रा निकाली जायेगी। आर्य महासम्मेलन की अध्यक्षता श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले करेंगे।

महापारायण-यज्ञ तथा ब्र० विश्वपाल जयन्त द्वारा व्यायाम प्रदर्शन होगा। अन्य अनेक सम्मेलनों के आयोजन भी किये गये हैं।

—शिवकुमार शास्त्री प्रधान

नया प्रकाशन

BANKIM-TILAK DAYANAND (English)

By-Sri Aurobindo

Rs. 4/-

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

आदर्श विवाह सम्पन्न

सोमवार दिनांक १-१०-८४ई० को वेदों के मूर्धन्य विद्वान, पुरोहित द्वारा बरतल नवाबगंज फर्रुखाबाद निवासी श्रीकृष्ण जी के सुपुत्र चि० अमरसिंह (मुन्नू) का पाणिग्रहण संस्कार ६५/५ न्यू लेबर कालोनी बाबू पुरवा किदवई नगर निवासी स्व० इन्दरसिंह की सुपुत्री सौ० आशा देवी के साथ वैदिक रीति से आर्य समाज मसवानपुर" कानपुर में सम्पन्न हुआ। उपस्थित विद्वानों ने पिता श्रीकृष्ण तथा माता सरला जी की भूरि-भूरि प्रशंसा की, कि जिनके पुत्र ने दहेज बन्धन तोड़कर माता-पिता से हीन अनाथ कन्या को अपना जीवन-साथी चुनकर वैदिक परम्परा का पालन किया। इस पवित्र कार्य की संरक्षता पं० सतीशकुमार शास्त्री ने की। आचार्यों ने वेद मन्त्रों द्वारा वर-वधू को आशीर्वाद दिया। उपस्थित नर-नारियों ने मंगल गीतों द्वारा फूलों की वर्षा की।

—ज्ञानप्रकाश शास्त्री (विदेह)

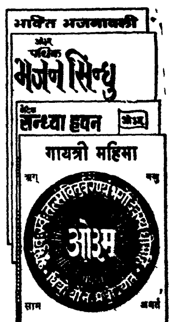
सार्वदेशिक' पत्र के आजीवन सदस्य बनिये

किसी साप्ताहिक पत्र के ग्राहक बनने पर पत्र की ओर से चन्दे की बार बार मांग बार-बार मनिआर्डर भेजना आदि कठिनाइयां प्रायः सामने आती रहती है—इन कठिनाइयों से बचने के लिए पत्र का आजीवन सदस्य बन जाना ही श्रेयस्कर होता है। १०० रुपये देकर सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र आजीवन सदस्य बन जाइये। —व्यवस्थापक।

ऋषि का सन्देश घर-घर पहुँचाएं

वैदिक मन्त्रों और भजनों के कैसेट मंगायें

मधुर संगीतमय उच्च भावनाओं से भरपूर ईश्वर भक्ति, आर्यसमाज और महर्षि से सम्बन्धित भजनों के कैसेट मंगवाकर आर्य समाज का प्रचार गली-गली, कूचे-कूचे में करें और अपने इष्ट-मित्रों व सम्बन्धियों को विवाह, जन्म दिन आदि शुभ अवसरों पर भेंट देकर यश के भागी बनें।



१. भक्ति भजनावली मूल्य रु० २५

शास्त्रीय संगीत के आधार पर ईश्वरभक्ति के भजन, गायक गणेश विद्यालंकार व वन्दना वाजपेयी।

२. पथिक भजन सिन्धु मूल्य रु० ३०

गीतकार व गायक आर्यसमाज के ओजस्वी भजनोपदेशक श्री सत्यपाल पथिक।

३. वैदिक सन्ध्या हवन मूल्य रु० २५

स्वस्ति वाचन शांतिकरण बृहद् यज्ञ एवं पूजनीय प्रभो प्रार्थना सहित।

४ गायत्री महिमा मूल्य रु० २५

गायत्री महामन्त्र की विशद व्याख्या, पिता-पुत्र के रोचक सरल, मनोहर व प्रामाणिक संवाद में।

मूल्य-प्रति कसेट ३०) रु० डाक-व्यय अलग।

विशेष—चारों कैसेटों का अग्रिम धन आनेके साथ भेजने पर डाक-व्यय माफ।

वी०पी०पी० के द्वारा भी मंगवा सकते हैं।

अन्य बहुत से कैसेटों का विवरण निःशुल्क मंगवाये।

प्राप्ति स्थान:—आर्य सिन्धु आश्रम

विविध समाचार

विदेशी जोड़ का विवाह भारतीय पद्धति से

जयपुर २ अक्टूबर। बरसों तक यहां एक विदेशी युगल का राजस्थानी परम्परा से एक दूसरे का पति-पत्नी के रूप में स्वीकारना चर्चा का विषय बना रहेगा क्योंकि इस शादी ने शाही खानदान की याद ताजा करा दी।

बोस्टन (अमरीका) के करबपति हैर्बट मेलार्ड तथा टैक्सास के रायल कासटेली परिवार की कैमेला क्लेफर का बरसों से संजोया सपना कल उस समय साकार हो गया जब उन्होंने यहां के ऐतिहासिक सिसोदिया रानी के बाग में वैदिक मन्त्रोच्चार के बीच सात फेरे लिए तथा जीवन भर ईमानदारी और निष्ठा के साथ एक दूसरे का साथ निभाने का संकल्प लिया।

देश-विदेश के दर्जनों पत्रकारों तथा फोटोग्राफरों की मौजूदगी में हुए अपने ढंग के पहले इस शाही विवाह समारोह मे यदि कोई कमी थी तो सिर्फ यही कि जोड़ा सुदूर पश्चिम का था, वरन वहां का समूचा माहौल ऐसा ही था जैसा शाही विवाह में होता है।

बैंडबाजों की धूम धाम, सतरंगी आतिशबाजी और शहनाई की मनोहारी धुनों के बीच हाथी, ऊंट, घोड़ों के काफिले के साथ एक सजे संवरे हाथी पर चूड़ीदार पाजामा, अचकन पहने, खूबसूरत साफा बांधे, कमर मे तलवार लटकाये दूल्हे राजा हर्बर्ट मेलार्ड ने जब सिसोदिया रानी का बाग के मुख्य द्वार पर आकर तोरण चटकाया तो समूचा माहौल बडरफुल एक्सीलेंट की आवाज से गूंज उठा।

मुख्य द्वार पर परम्परागत राजस्थानी परिधान पहने महिलाओं व युवतियों ने दूल्हे राजा की आरती उतारी। हौले-हौले मुस्कराते, धीमी चाल से दूल्हे राजा विवाह मंडप में आए। बाग के ही एक कक्ष में सजी संवरी बैठी दुल्हन कैमेला क्लेफर को भी वहां लाया गया।

पंडित द्वारका प्रसाद तथा पंडित लक्ष्मी नारायण ने ...श्म अपवित्रा पवित्रोंवा वोमे मन्त्रों के ... विवाह की रस्म अदायगी शुरू की तथा लगभग २५ मिनट मे आवश्यक औपचारिकताओं को पूरा करने के बाद दोनों को विधिवत परिणय सूत्र में बांध दिया। कन्यादान की रस्म निभाई जयपुर के प्रतिष्ठित राजपूत कर्नल गोविन्द सिंह ने।

पैंतालिस वर्षीय हर्बर्ट मेलार्ड तथा बयालिस वर्षीय कैमेला क्लेफर परम्परागत राजस्थानी परिधान में अपनी उम्र तक को धोखा दे रहे थे। उनका मन इतना आल्हादित था कि फेरों के बाद भारतीय दूल्हा-दुल्हन के स्वाभाविक संकोच को छोड़कर एक दूसरे से लिपट गए। इस तरह भारतीय रीति रिवाजों और परम्पराओं को अपनाने के बाद भी वे अपने पश्चिमी संस्कार को त्याग नही सके।

फेरों के बाद विवाहित जोड़े ने लगभग आधा घण्टे तक बाग में आयोजित रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का लुत्फ उठाया। उसी समय वहां पहुंची जयपुर की राजमाता गायत्री देवी ने जोड़े को शुभकामना स्वरूप फल भेंट किए तथा आशीर्वाद दिया।

इस विवाह समारोह में हिस्सा लेने के लिये अमरीका से लगभग ५० लोग आये थे। ये सभी वैसे तो पाश्चात्य परिधान मे थे किन्तु उनमें से अनेक के सिर पर बंधा राजस्थानी साफा काफी जम रहा था।

जूता चोरी

अमरीकी करोड़पति सेठ हर्बर्ट मेलार्ड को इस शादी समारोह की एक याद जिन्दगी भर नहीं भुलेगी। उसे भारतीय विवाह के दौरान अपनाई जाने वाली एक ऐसी परम्परा हमेशा याद रहेगी जिसके चलते उसे लगभग दो घण्टे तक नंगे पांव चलना पड़ा।

हर्बर्ट मेलार्ड केमेला क्लेफर के साथ फेरे लेने के बाद जब विवाह मण्डप से बाहर आया तो उसके जूते गायब थे।

'व्हेयर इज माई शू' 'व्हेयर इज माई शू' (मेरे जूते कहां हैं, मेरे जूते कहां हैं) की रट लगाते हर्बर्ट को उसके जूते दो घंटे बाद तभी मिल पाए जब उसने जूता छुपाने वाली युवती सुनयना को २५१ रुपये दिये।

गुरु गोविन्द सिंह रचित रामावतार हिन्दी में

नईदिल्ली, ६-१०-८४। लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यिक सांस्कृतिक प्रतिष्ठान भारतीय ज्ञानपीठ ने दशमेश, गुरु गोविन्दसिंह द्वारा विरचित रामावतार को हिन्दी (देवनागरी) मे प्रकाशित कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। गुरु गोविन्द सिंह साहित्य प्रकाशन-प्रसारण समिति, उ. प्र. ने दशम ग्रंथ में संकलित इस रचना को गुरुमुखी लिपि से हिन्दी में रूपान्तरित किया है।

ज्ञान पीठ के ट्रस्टी श्री रमेशचन्द्र ने आज बताया कि रामावतार का विधिवत विमोचन राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह मंगलवार को दिन के ११ बजे राष्ट्रपति भवन में करेंगे। रामावतार की प्रस्तावना उ०प्र० के राज्यपाल श्री चन्द्रेश्वर प्रसाद नारायण सिंह ने लिखी है।

गुरु गोविन्द सिंह साहित्य प्रकाशन—प्रसारण समिति के अध्यक्ष डा० जे डी. शुक्ल और महासचिव स. शमशेर सिंह ने बताया कि दशम ग्रन्थ इतना ही बृहद है, जितना गुरु ग्रन्थ साहब। इसमे धार्मिक प्रेरणा तो है ही, साहित्य की दृष्टि से भी यह अनुपम है।

उन्होने बताया कि गुरु गोविन्द सिंह स्वयं को श्री राम के पुत्र लव-कुश का वंशज मानते थे। उन्होंने जो प्रथम पांच सिंह सजाए, उनमे सिर्फ एक पंजाब का था, शेष चारों देश के अन्य भागों से और भिन्न भाषाएं बोलने वाले थे।

यह दावा किया गया कि सिखों को पृथक बताने की हाल की कुचेष्टाओं का गुरु गोविन्द सिंह विरचित दशमग्रन्थ के देवनागरी मे प्रकाशन से निराकरण हो सकेगा।

दक्षिण वाले ज्यादा भावुक होते हैं !

नई दिल्ली, ४ अक्तूबर (जी एस चावला) पिछले चार सालो के दौरान राजधानी मे हुई आत्महत्याओ से अगर कोई सकेत मिला है तो दक्षिण, विशेषत बगलौर और मद्रास के लोग देश के अन्य भागो के लोगों की अपेक्षा ज्यादा भावुक हैं और 'कम्युनिस्ट कलकत्ता के लोग सबसे कम आत्म-हत्याए करते हैं।

सरकारी सूत्रो के अनुसार पिछले ४ वर्षो के दौरान सबसे अधिक आत्म-हत्याए बगलौर मे हुई और उसके बाद मद्रास का क्रम आता है। इस वर्ष के पहले ६ महीनो में आत्महत्याओ के इतिहास मे बगलौर मे पुराने सभी कीर्तिमान भग कर दिये हैं। आकडो के अनुसार वर्ष १९८१ मे बगलौर में ६९० व्यक्तियो ने आत्महत्या की, १९८३ में ७५४ और इस वर्ष के प्रथम ६ महीनों में ६६४ आत्महत्याए हुई। वर्ष १९८२ के आकडे उपलब्ध नहीं हुए। मद्रास में वर्ष १९८१ मे ६९९ व्यक्तियो ने आत्महत्या की ११७२ मे ४६२ और इस वर्ष जून तक २७८ व्यक्तियो ने आत्महत्या की। मद्रास मे वर्ष १९८३ मे हुई आत्महत्याओ के आकडे उपलब्ध नही हैं।

दक्षिण के इन दो महानगरो के बाद दिल्ली का नम्बर आता है, जहा १९८१ मे ३४६ व्यक्तियो ने आत्महत्या की १९८२ मे ४१२ और १९८३ में ९८२ व्यक्तियों ने आत्म हत्या की और इस वर्ष जून मास तक ११९ व्यक्तियों ने आत्महत्या की।

बम्बई के लोग अधिक सवेदनशील दिखाई नही देते क्योंकि बम्बई मे वर्ष १९८१ मे २१० व्यक्तियो ने आत्महत्या की, १९८२ मे २०७ और १९८३ मे २९७ और इस वर्ष के पहले ६ महीनो के दौरान १०८ व्यक्तियो ने आत्महत्या की।

महानगर कलकत्ता मे सबसे कम आत्महत्यायें की जाती है और इस शहर के लोग अनावश्यक भावुक होने की बजाय अधिक कार्यशील हैं। कल-कत्ता मे वर्ष १९८१ मे २५, १९८२ मे ४१, १९८३ में १७ व्यक्तियों ने आत्महत्या की। इस वर्ष के आकडे उपलब्ध नही हुए।

अहमदाबाद मे वर्ष १९८१ मे १७८ व्यक्तियो ने आत्महत्या की, १९८२ मे १८५, १९८३ मे २१३ और इस वर्ष जून माह तक ७९ आत्महत्यायें हुई। नागपुर मे १९८१ मे १८३, १९८२ मे १९६, १९८३ मे २४६ और इस वर्ष जून महीने तक २० व्यक्तियों ने आत्महत्या की। हैदराबाद में वर्ष १९८१ मे १४१, १९८२ मे १८८ और १९८३ मे २५३ व्यक्तियों ने आत्म-हत्या की।

(प के ५ १० ८४)

वर चाहिए

"सुशिक्षित आर्य निष्ठ चिकित्सक की पी०एच०डी०(अर्थशास्त्र) कर रही अपनी चार बहिनो मे सबसे बडी आकर्षक व्यक्तित्ववाली, ऊचाई १५५ से०मी०, सुपुत्री के हेतु आवश्यकता है आर्य निष्ठ परिवार के उच्चपदासीन नवयुवक की जिसका मासिक कुलवेतन कम से कम रु० १५००) से प्रारम्भ होता हो।" इच्छुक व्यक्ति निम्न पते पर सम्पर्क करे — डा० धर्मपाल राणा एक्स पी० एम० एस०

नगर व पो० आ०—किरतपुर

जिला—बिजनौर (उ०प्र०)



...ता:—
...र्वेदिक
...) म०
...नरल
स्टोर, सुभा... ...टला
मुबारकपुर, (३) मै०... कृष्ण
भवनामल चड्ढा, मेन बाजार
पहाड गज, (४) म० शर्मा आयुर्वे-
दिक फार्मेसी, गडोदिया रोड,
आनन्द पर्वत, (५) म० प्रभात
कमिकल क०, नयी बस्ती,
बाडी बावली, (६) मै० ईश्वर
दास किशन लाल, मेन बाजार
मोती नगर (७) श्री वैद्य भीमसैन
शास्त्री,५१७ लाजपतराय मार्किट
(८) दि-सुपर बाजार, कनाट
सर्कस, (९) श्री वैद्य मदन लाल
११-शकर मार्किट, दिल्ली।

शाखा कार्यालय:—
६३, गली राजा केदारनाथ,
चावडी बाजार, दिल्ली-६
फोन न० २६९८३८

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली-२ में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

ओ३म्
सार्वदेशिक
साप्ताहिक

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८५] | सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र | दयानन्दाब्द १६० दूरभाष : २७४७७१
वर्ष १९ अंक ४८] | कार्तिक शु० ११ सं० २०४१ रविवार ४ नवम्बर १९८४ | वार्षिक मूल्य १६) एक प्रति ४० पैसे

अस्थिरता पैदा करने वाली विभाजक शक्तियां

देश की अखण्डता, एकता और राष्ट्रीयता को भंग वा कमजोर करने वाले भीतरी व बाहरी षड़यन्त्रों और विभाजक शक्तियों से सावधान रहो

समय रहते इनको निरस्त्र करो

सार्वदेशिक सभा का आह्वान

(सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों की एक बैठक २३-१०-८४ को सभा प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता में हुई। उसमें हुए निश्चय के अनुसार निम्न वक्तव्य प्रचारित किया जा रहा है।)

वक्तव्य

लगभग गत दस वर्षों में हमारे देश को छोटे-छोटे टुकड़ो मे बाटने का षडयन्त्र देश के शत्रुओं द्वारा किया जा रहा है। इस बात के पुष्ट प्रमाण हैं कि इन विभाजनकारी शक्तियो को कतिपय देशो से शस्त्रो का प्रशिक्षण तथा गोलाबारूद की सप्लाई और धन मिल रहा है।

इस सभा के नेताओ ने न केवल इस देश के सब भागों मे ही नही अपितु अमेरिका, इंग्लैण्ड और पश्चिम जर्मनी मे भी घूमकर देखा है और पाया है कि इस बारे मे गहरे षडयन्त्र किए जा रहे हैं।

इस सम्बन्ध मे १७ अक्तुबर १९७३ को अकाली सिक्खो ने आनन्दपुर साहब मे प्रस्ताव पास करके अपना ध्येय ऐसी परिस्थितियो का निर्माण घोषित किया था जिनके द्वारा सिक्खो की कौमी भावनाओ और आकाक्षाओं की पूरी अभिव्यक्ति हो सके। गत १० वर्षों मे इस ध्येय को पाने के लिए जो कुछ हुआ और अन्त मे सैनिक कार्यवाई करनी पड़ी, उसका भी अभीष्ट परिणाम नही निकला।

इसी प्रकार खाड़ी देशों द्वारा देश में पहुचे धन से और धर्मान्तरण के द्वारा तथा साम्प्रदायिक दगो के माध्यम से कट्टरतावादी मुस्लिम इस देश का शासन अपने हाथ मे लेने के लिए बराबर दबाव [illegible]

[illegible] क्षेत्र मे जन-जातिया विद्रोह के लिए अधिक सगठित हैं। नागालैण्ड और मिजोरम मे स्वायत्त राज्य बनाने की उनकी कार्रवाई जोरों पर है। वहा भी पजाब की भाति कठिन परिस्थितिया बन गई हैं। [illegible] द्वारा मिजोरम मे हिसात्मक कार्रवाइयों को [illegible] बन्द करके केन्द्रीय सरकार से बात-चीत के लिए भारत आने का कदम इसी दिशा मे उठाया गया है। यह एक चतुरतापूर्ण सैनिक पग है। नागालैण्ड की प्रतिबन्धित सरकार के तथाकथित राष्ट्रपति ब्रिगेडियर शिडग्न्या भारत-बर्मा सीमा के उस पार से अपनी शत्रुतापूर्ण कार्रवाइयो का सचालन कर रहे है। वे भी केन्द्रीय सरकार से बात-चीत के इच्छुक हैं।

पिछले अनुभवो के आधार पर हमे इन मामलो मे सावधानी बरतने की जरूरत है। क्षेत्रीयता और कठमुल्लापन की प्रवृत्ति देश मे बढ़ रही है। १९४७ ४८ मे जिस प्रकार हैदराबाद के निजाम ने प्रतिरक्षा, सचार और विदेश नीति के अलावा अन्य विषयो पर भारत के साथ स्वाधीनता का प्रस्ताव रखा था वैसी ही मागे देश मे अलग-अलग रूपो मे सिर उठा रही है। इन सबका कठोरता से दमन किया जाना चाहिए।

पाकिस्तान की भाति दक्षिण मे श्रीलका विदेशी शक्तियो को आधार देकर भारत के विरोध मे काय कर रहा है। इस प्रकार देश के चहु ओर हम लोग दुश्मनो से घिरे हुए हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का सुझाव है कि देश की समस्त राजनैतिक पार्टिया-विरोधी एव शासक दल अपने मतभेदो को भूलाकर और एक जगह बैठकर इन मौजूदा परिस्थितियो पर देश भक्ति की भावना से विचार करे।"

रामगोपाल शालवाले
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती निर्वाण दिवस

प्रतिवर्ष की भाति दीपावली के शुभ दिन २४ १० ८४ बुधवार को दिल्ली की आर्य जनता ने रामलीला मैदान मे माननीय श्री रामगोपाल जी शालवाले वानप्रस्थ प्रधान सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के सयोजकत्व मे सोल्लास महर्षि जी की पुण्य स्मृति मे निर्वाण दिवस मनाया।

सासद श्रीमती कुमुद बेन जोशी ने मुख्य अतिथि के आसन से बोलते हुए महर्षि को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए राष्ट्रीयता का उदबोधन एव क्राति की मूल प्रेरणा के देने वाला प्रथम मनीषि बताया, जिस प्रेरणा से प्रेरित हो हजारो देशभक्त बनकर शहीद हो गए।

(शेष पृष्ठ २ पर)

[illegible] [illegible]

धर्म-रक्षा महाभियान

शुद्धि

४ ६-८४ को मेहन्दिया बारी जिला बेतिया पश्चिमी चम्पारण बिहार मे श्री रामा तिवारी एव उनके भ्राता श्री लछमन तिवारी स्व पत्नियो-क्रमश सलमा एव नजमा और अपने एक पुत्र तथा दो पुत्रियो के साथ पुन वैदिक धर्म मे दीक्षित हुए हैं।

ज्ञातव्य है कि उक्त महानुभाव हिन्दू से मुस्लिम धर्म में चले गए थे किन्तु हिन्दू नाम इन्होने नही बदले थे। पुत्र पुत्रियो के नाम भी सस्कृत हिन्दी मे ही रखे लक्ष्मण एव कु० शोभा तथा तारा।

यह शुद्धि सस्कार श्री रामचन्द्र आर्य पुरोहित एव महथ प्रसाद आर्य मन्त्री आर्य समाज बेतिया द्वारा सम्पन्न कराया गया।

श्री विमल कुमार जी आर्य महालक्ष्मी कालोनी, हैबतपुर नाला ग्राम मुर्शिदाबाद पश्चिम बगाल के प्रयासों से उन्हीं के घर पर सात युवक वैदिक धर्म मे दीक्षित हुए। शुद्ध हुए युवकों के नाम-स्वपन सरकार, रञ्जन वैराग्र, वैराग्र, रामन सीएच ड नन्दा सिन्हा, सर्वेश्वर सिन्हा, आनन्द सिन्हा दुलाल सीध डे।

श्री पं० आशुराम जी का महान् कार्य

श्री प० आशुराम जी जहा एक कर्मवीर व्यक्ति हैं वहा महान् स्वाध्याय शील भी हैं। श्री पण्डित जी ने महर्षि दयानन्द जी के भाष्यानुसार यजुर्वेद का उर्दू तर्जुमा लिखा है अभी उसके प्रथम चार अध्यायो की जिल्द मेरे पास आई है। उसको देखकर मैं इस कार्य की प्रशसा किये बिना नही रह सकता हू। यह अत्यावश्यक और सुन्दर कार्य है। कही कहीं आवश्यकतानुसार अधिक व्याख्या भी की गई है।

मैं इस पवित्र कार्य के लिये श्री प० आशुराम जी को बधाई और धन्यवाद देता हू तथा आर्य जनो से यह आशा करता हू कि इस ग्रन्थ का अधिक से अधिक प्रचार करेंगे। ऋग्वेद का उर्दू तर्जुमा भी छपाना प्रारम्भ हो गया है।

वैदिक धर्म का सेवक
अमर स्वामी सरस्वती
वेद मन्दिर विवेकानन्द, गाजियाबाद
अध्यक्ष—सार्वदेशिक दयानन्द सन्यासी वानप्रस्थ
मण्डल ज्वालापुर (हरिद्वार)

साहित्य-समीक्षा

श्री गुरु रविदास शतकम्—सस्कृत रचना हिन्दी अनुवाद सहित, रचयिता डा० शिवप्रसाद भारद्वाज डी लिट सम्पादन तथा हिन्दी अनुवाद आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद २३×३६/१६ पृष्ठ सख्या ११०, प्रकाशक—श्री धर्मसिंह चन्द्र श्री गुरुरविदास सस्थान ११७८/२२ बी चण्डीगढ़।

८०वें वर्षमे प्रवेश करते समय श्री आजादजी ने इस ग्रन्थको जनसाधारण के लिए मुद्रित कराकर प्रस्तुत किया और इसके प्रस्तुतीकरण का कारण बताते हुए लिखा है कि सस्कृत सन्त साहित्य में गुरु रविदास पर कोई रचना न होने से अन्त प्रेरित हो अपनी भावाभि व्यक्ति हेतु डा० शिवप्रसाद जी को विवश किया कि वे सुर भारती के अभाव को पूरा करें। ग्रन्थ रचना मे सम्पादक श्री पृथ्वीसिंह द्वारा रचित रविदास-दर्शन, विशेष सहायक सिद्ध हुई हैं। डा० भारद्वाज ने अनुपम शतक रचना करके रविदास जी के अनुयायियो को प्रेरणा की है कि "स्वे स्वे कर्मण्यभिरत ससिद्धि लभते नर.।

अर्थात् भगवान कृष्ण के योग कर्मसु कौशलम्" को रूपान्तरित कर दिया है। रविदास शतकम् मे प्रकरणानुकूल छन्द प्रयोग तथा दार्शनिक व उपदेशपरक सिद्धान्तों की सहजता डा० भारद्वाज की अपनी प्रतिभा है जो स्तुत्य है।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

केन्द्रीय गवर्नमेन्ट द्वारा आर्यसमाज की मांग का स्वीकार किया जाना स्वागत योग्य

सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने स्वर्ण मन्दिर अमृतसर से सेना के हटाए जाने का स्वागत करते हुए केन्द्रीय गवर्नमेंट से पजाब मे सामान्य स्थिति कायम होने तक एक विशेष पत्र के द्वारा उस राज्य से सेना न हटाने का औचित्य प्रतिपादित करते हुए, सेना न हटाने का अनुरोध किया था।

प्रसन्नता है कि इस अनुरोध का औचित्य स्वीकार किया गया है जैसा कि केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री पी० वी० नरसिंह राव के आश्वासन से सुस्पष्ट है जो उन्होंने १८ अक्टोबर को स्वतन्त्रता सेनानियो के एक शिष्ट मडल से दिल्ली मे बातचीत करते हुए दिया है और जो १९ अक्तूबर के पत्रो में अकित है। उन्होंने यह कहा बताते हैं कि 'जब तक प जाब मे स्थिति पूरी तरह से सामान्य नही हो जाती वहा से सेना हटाने का सवाल पैदा नहीं होता।"

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

(पृष्ठ १ का शेष)

नारी शिक्षा, अछूतोद्धार आदि अनेक आन्दोलन महर्षि दयानन्द से ही प्रारम्भ हो सके हैं। साथ ही श्रीमती जोशी ने आर्य समाज के दस नियमों को भी प्रत्येक परिवार के बच्चो को कण्ठस्थ करने कराने की अनिवार्यता पर जोर दिया।

प्रो० डा वाचस्पति उपाध्याय, रीडर सस्कृत विभाग दिल्ली विश्व वि० ने श्रद्धाजलि अर्पित की और महर्षि जी को गुरु विरजानन्द की पर्णकुटी से उत्पन्न होकर महलो मे विराजमान गोरी सरकार के सिंहासन को एव रूढ़ियों के दुर्ग को धूलि धूसरित करने वाला विश्व नायक बताया।

यज्ञ के ब्रह्मा श्री धर्मपाल सुधांशु बने। यज्ञशेष वितरण के उपरान्त श्री धर्मपालजी ने ध्वजोत्तोलन किया और श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ने आर्य वीर दल का उदबोधन किया। आर्य जगत के नेता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले वानप्रस्थ ने महर्षि दयानन्द सरस्वती को ईश्वर सत्य तथा वेद की शिक्षाओ का प्रथम प्रचारक बताते हुए देश पर मडरा रहे साम्प्रदायिक एव सांस्कृतिक रूप से होने वाले खतरो से अवगत कराते हुए आर्य समाज को चुनौतियां स्वीकार करने के लिए तैयार रहने का आह्वान किया।

माननीय श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी, महामन्त्री-सार्वदेशिक आर्य प्र नि. सभा ने कहा कि मैंने योरोप और अमेरिका की प्रचार यात्राओ के मध्य अनुभव किया है कि महर्षि स्वामी दयानन्द और आर्य समाज के विचार व आधार अब न केवल भारतीय सीमा मे रहे है अपितु यूरोप अमेरिका एव अफ्रीका आदि द्वीपों मे गहरे बैठ चुके है। श्री स्वामी ने नवगठित आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका की स्वय उन्ही की दौड़ धूप का फल है सूचना के साथ साथ वहां २० हजार डालर मूल्य मे उस भूमि की प्राप्ति की भी सूचना दी जो कि सभा भवन के लिए निश्चित की गई है।

पूर्व सासद श्री शिवकुमार जी शास्त्री ने कहा—उन लोगो को सदैव आर्य समाज को स्मरण रखना चाहिए जो इस झण्डे के नीचे उन्नत हुए, अब सम्पन्न औरसमृद्ध होकर उदासीन दिखाई देते हैं। इस प्रसगमे उन्होंने माली, बेल, वृक्ष और बालक का सुन्दर आख्यान प्रस्तुत किया।

श्री क्षितीश जी वेदालकार पूर्व सम्पादक दैनिक हिन्दुस्तान ने पंजाब आपरेशन के सन्दर्भ में अनेक रहस्यों का उदघाटन करते हुए मारीशस की दो सौ आर्य समाजो के विषय मे बताया। मारीशस को आर्य समाजों प्रशासन मे चलने वाला प्रथम देश बताया। आर्य सस्थाओं पर होने वाले [illegible] व्यय के आंकड़े प्रस्तुत करते हुए बताया कि दस लाख रुपए मासिक व्यय होता है जो कि आर्य समाज के विकास और अनुसंधान कार्यक्रमों का द्योतक है। अभी हाल में प्रकाशित अपनी पुस्तक "तूफान के बाद पंजाब" [illegible] (इ) सांसद श्रीमती कुसुम लेन जोशी को भेंट की।

माननीय शालवाले के शब्दों में इस निर्वाण दिवस का [illegible] [illegible] कि—इसके पूर्व आज की तुलना में आर्य नर-नारियों की इतनी बड़ी संख्या कभी नहीं हुई। इस बार आर्य जनता में अपूर्व उत्साह [illegible] [illegible] रहा।

सम्पादकीय

आर्य भाषा (हिन्दी) को राजनीति और प्रादेशिकता के चक्रव्यूह से बचाओ

अभी हाल मे हमारे कतिपय राजनेताओ ने हिन्दी को संस्कृत और फारसी शब्दों के स्थान में प्रादेशिक भाषाओं के शब्दो से समृद्ध बनाने और व्यापक प्रचार और प्रसार की अवस्थाए उत्पन्न करने का परामर्श दिया है।

ऐसा ही परामर्श कई वर्ष पूर्व कांग्रेस के कुछेक मनीषियो ने दिया था जिसकी हिन्दी प्रेमियों की ओर से कटु आलोचना हुई थी, इस आधार पर कि ऐसा करना हिन्दी की समता एव सर्वोपरिता के साथ खिलवाड़ करने के साथ साथ इसे विविध प्रदेशों मे न समझने योग्य बनाना भी होगा।

इस प्रसग में एक हिन्दी कोविद की समीक्षा दृष्टव्य है जो इस प्रकार है—

"हिन्दी मे एक भी अनावश्यक संस्कृत शब्द नहीं लिया जाता। हिन्दी मे जहां 'अपने' अव्यय 'जब' जहा आदि हैं वहा संस्कृत के 'यदा' 'तत्र' आदि चल ही नहीं सकते। जब वहा के आए को 'यदा तत्र' वे आए' कोई पागल भी हिन्दी वाला न लिखे-बोलेगा। परन्तु सर्वत्र 'अन्यत्र' संस्कृत शब्द जहा चलते हैं, चलेंगे क्योंकि हिन्दी ने इनकी जगह अपने स्वतन्त्र अव्यय नहीं बनाए हैं। उर्दू में 'सर्वत्र' अन्यत्र' नहीं चलते। हम समीक्षको से पूछेंगे कि क्या हिन्दी मे 'सर्वत्र' 'अन्यत्र' न चले? ऐसी अवस्था में उन मनीषियों या राजनेताओं की सलाह मानने को हम तैयार नहीं।

परन्तु वे यही सलाह बंगला, गुजराती और मराठी आदि के लिए क्यों नहीं देते? बंगला आदि में संस्कृत शब्दों का जो अनुपात है, हिन्दी में उसके आधा भी कठिनाई से मिलेगा। हिन्दी आवश्यक शब्द ही लेती है। 'शब्द' की जगह 'लफ्ज' का शब्द हमें 'लफ्ज' उन्हें पसन्द नहीं। बंगला मराठी, गुजराती आदि मे भी शब्द चलते हैं। आशा है वे महानुभाव अपने विचारों के अनुसार कोई आदर्श हिन्दी दें जिसका अनुगमन हम सब लोग करें।

बहुत दिन हुए आचार्य प० महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी के स्वरूप पर विचार प्रकट करते हुए लिखा था.

'ऐसे प्रादेशिक शब्द न देने चाहिए जो अन्यत्र न समझे जा सके।" उनकी आज्ञा हमने शिरोधार्य की और अपने (उ प्र.) बिहार राजस्थान, मध्य प्रदेश आदि के 'प्रादेशिक' शब्द हिन्दी मे देना हमने बन्द कर दिया। इससे हिन्दी ने व्यापकता ग्रहण की।

हम हिन्दी वालों के लिए कोई प्रतिबन्ध तो नहीं है कि प्रादेशिक भाषाओ के शब्द न लें परन्तु यह काम तो हमारे समीक्षक राजनेता या मनीषी ही कर सकते हैं। उनका मतलब 'प्रादेशिक से गुजराती, मराठी, आदि के शब्दो से है। अत गुजराती और महाराष्ट्र बन्धु ही ऐसे प्रादेशिक शब्दों का प्रयोग हिन्दी में कर सकते हैं उन्हें करना चाहिए। जो लोग बंगला के लिए ही हिन्दी में कुछ लिखेंगे वे यदि बंगला शब्दों का प्रयोग करेंगे तो ठीक होगा परन्तु केवल बंगालियों के लिए हिन्दी मे कोई कुछ लिखेगा क्यो?

हिन्दी में लिखने का अर्थ तो यही है कि सम्पूर्ण देश में बात फैले और इस प्रयोजन से लिखी जाने वाली हिन्दी में बंगला आदि के प्रादेशिक शब्द [illegible] ? यदि संस्कृत शब्द होंगे तो सर्वत्र सब लोग समझ लेंगे।"

यदि उर्दू से अनावश्यक अरबी फारसी के शब्द हटा दिए जाएं तो वह हिन्दी भाषा ही है। यदि उर्दू वाले राजनेताओं या मनीषियो की सलाह [illegible] अरबी फारसी के शब्दों की भरमार से बचत रखने को [illegible] सारा झगड़ा तो नहीं आता झगड़ा हिन्दी उर्दू का समाप्त हो जाय। यदि वे लोग इतना और कह देते—

"उर्दू की लिपि भी दोषपूर्ण है और अराष्ट्रीय (विदेशी) है अत इसे छोड़कर इसी देश की 'नागरी' लिपि ग्रहण करनी चाहिए न केवल उन्हे ही अपितु समस्त प्रादेशिक भाषाओं वालो को भी तो सचमुच उनके विचार एक सच्चे राष्ट्रवादी के विचार हो जाते।" परन्तु ऐसे विचारक, मनीषी या राजनेता अपने मन की बात घोंट जाते हैं आत्म हत्या करते हैं जो बहुत बड़ा पाप है।"

कई भाषाविदो ने सत्यार्थ प्रकाश की हिन्दी को अपनाने की सलाह दी थी जो ठीक थी।

हिन्दी की गरिमा एवं उपादेयता

उल्लेखनीय है कि आर्य भाषा 'हिन्दी' अपनी शक्ति से आगे बढ़ी है। अपनी सरलता और व्यापकता के कारण राष्ट्र भाषा बनी है। किसी ने इस पर दया करके इसे इतने ऊचे पर नहीं बैठा दिया। बंगाली लोग अपनी मातृ भाषा के कितने भक्त होते हैं यह सर्वविदित है। उन्ही के सिर ताज बंकिम चन्द्र, राजा राममोहन राय जी, तथा शारदा चरण आदि ने विगत शती में ही भविष्य वाणी की थी कि हिन्दी समस्त देश की सामान्य (राष्ट्र भाषा) बनेगी क्योंकि उसी मे यह शक्ति है। उन्होंने इसके लिए उद्योग भी किया था।

महर्षि दयानन्द और महात्मा गांधी गुजराती थे परन्तु देश भर की एक सामान्य भाषा हिन्दी हो इसके लिए उन्होने आजन्म यत्न किया।

संविधान सभा में बंगाली, मराठे, गुजराती, मदरासी, आदि सभी प्रदेशों के राष्ट्रवादी थे और सबने हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा के रूप में ग्रहण किया। यह सब इसलिए कि हिन्दी अपनी सरलता के कारण सर्वत्र पहले ही पहुंच चुकी थी।

परन्तु संविधान द्वारा हिन्दी स्वीकृत हो जाने के बाद वह प्रादेशिकता एव वोटो की राजनीति के चक्रव्यूह मे फंस गई जिसे उससे निकालने के लिए प्रत्येक राष्ट्रवादी को प्रयत्नशील होना चाहिए। इतना ही नहीं वर्तमान क्लिष्ट हिन्दी को जो अंग्रेजी के अनुवाद का स्वरूप लिए हुए है परिष्कृत करके उसे अपना स्वरूप भी दिया जाना चाहिए जो सभी के लिए बोधगम्य हो।

प्रशंसनीय

मदरास के पुलिस कमिश्नर श्री के सम्बा माराव ने यातायात के एक सिपाही को उसकी ईमानदारी और कर्तव्य निष्ठा के आदर स्वरूप १००) का पारितोषिक दिया।

बाल कृष्णम् नामक इस सिपाही की सामयिक सहायता से एक देवी की प्राण रक्षा हुई जो एक दुर्घटना मे आहत हो गई थी।

पुलिस सूत्रो के अनुसार मलेशिया की प्लैन्टेशन कम्पनी के श्री ऐन ऐस शंकर की पत्नी श्रीमती राधामणि शंकर ६ जून को आटो रिक्शा के उलट जाने से जिसमे वह यात्रा कर रही थी, घायल और बेहोश हो गई थी।

ड्यूटी पर तैनात इस सिपाही ने यह दुर्घटना देखी और तुरन्त देवी को हस्पताल ले गया। इसके बाद उसने उस देवी की डायरी से उसके पति का पता लगाकर उसे कैश व आभूषण जो लगभग १०००) के थे सोप दिए। आटो रिक्शा ड्राइवर गिरफ्तार कर लिया गया।

निश्चय ही कृष्णम के इस उदाहरण से राष्ट्रीय चरित्र एव ईमानदारी के उदाहरणों मे एक भव्य वृद्धि हुई है। क्या ही अच्छा हो इस प्रकार के उदाहरणों मे दिन प्रतिदिन वृद्धि होती रहे और प्रशासन तथा राष्ट्र का मुख उज्ज्वल होता रहे उस देश में जो ससार का गुरु रहा है और अब व्यक्तिगत सार्वजनिक एव राजनीतिक जीवन मे व्याप्त भ्रष्टाचार से अभिशप्त है।

सामायिक चर्चा–

क्रान्तिकारी शहीद भगत सिंह पर उर्दू पुस्तक

श्री के० के० खुल्लर कृत क्रान्तिकारी श्री भगतसिंह की जीवनी से सम्बद्ध एक उर्दू पुस्तक अभी हाल मे छपी है। उसका निम्न अवतरण दृष्टव्य है —

"शहीद भगतसिंह जिन्हे अबसे ५३ वर्ष पूर्व लाहौर की सैन्ट्रल जेल मे फासी के तख्ते पर लटकाया गया था फासी लगने से एक दिन पूर्व जेल से फरार हो सकते थे परन्तु उन्होने भारत माता को स्वतन्त्र कराने के लिए अन्य क्रान्तिकारियो को बलिदान की भावनाओ से अधिकाधिक प्रेरित करने के लिए स्वय की बलि देना पसन्द किया था।

भगत सिंह और उनके दो साथियो राजगुरु और सुखदेव को इस भय से कि कही वे जेल से भाग न जायें, नियत दिन से एक दिन पूर्व ही फासी के तख्ते पर लटका दिया गया था। २४ मार्च १९३१ के दिन उन्हे फासी दी जाने वाली थी परन्तु यह २३माच को ही लगादी गई थी।

एक दिन पूर्व जबकि उनके मित्रो ने जेल से भाग जाने की अपनी योजना उन्हे बताई थी तो उस वीर ने धोखे से जेल से निकल भागना स्वीकार न किया। उसने कहा "मैं मरना ही चाहता हू जिससे कि माताए भविष्य मे अपने बच्चो को भगतसिंह बनने की प्रेरणा कर सके।"

मुख्य ग्रन्थी निर्दोष व्यक्तियों की हत्या के खिलाफ फरमान जारी करें

पूर्व केन्द्रीय मन्त्री श्री इन्द्र कुमार गुजराल ने सिखो के प्रधान ग्रन्थियोसे अपील की है कि वे पजाब मे निर्दोष व्यक्तियो की हत्या के खिलाफ कोई न कोई फरमान निकालने की सम्भावना पर विचारकरे

उन्होने (१४ अक्टोवर को जालन्धर मे एक प्रेस कान्फ्रेन्स मे) यह भी कहा कि पजाब के हिन्दुओ मे असुरक्षा की भावना व्याप्त है। अकाली नेतृत्व को दोनो समुदायो मे फिर से मित्रता पूर्ण सम्बन्धो की स्थापना के लिए यत्न करना चाहिए।

सन्त लौगोवाल बनाम हिन्दू सिख एकता शीर्षक के अन्तर्गत पजाब केसरी ने (देखे १७-१०-८४ का अक) श्री लौगोवाल की इस पेशकश का कि जेल से बाहर आने पर वे हिन्दू सिख एकता के लिए कार्य करेगे स्वागत करते हुए, उग्रवादियो द्वारा निर्दोष हिन्दुओ या सिखो की हत्या, लूट-पाट सम्पत्ति, विनाश आदि पर उग्रवादियो के भय या दबाव आदि किसी भी कारणसे उनके मौन रहने या अनदेखा करने की शिकायत करते हुए मुख्य ग्रन्थियो से उपयुक्त प्रकार का हुकमनामा जारी करने का निम्न प्रकार अनुरोध किया है —

"रिहाई के बाद कहा तक सन्त लोगोवाल उन उग्रवादी तत्वो के दबाव मे आये बगैर जो आज भी पजाब मे मौजूद हैं हिन्दू-सिख एकता के लिए काम कर सकेंगे यह तो समय ही बतायेगा परन्तु हम उनकी भावनाओ का सम्मान एव स्वागत करते हुए उनसे यह अनुरोध अवश्य करेंगे कि वे अपने प्रभाव का प्रयोग करते हुए मुख्य ग्रन्थियो से यह हुकमनामा जरूर जारी करा दे कि स्वर्ण मन्दिर परिसर के अन्दर-बाहर तथा देश के अन्दर एव बाहर चलाई जा रही देशद्रोहिता पूर्ण गतिविधियो मे सलिप्त लोग गुरु के सिख नही है और निर्दोषो का खून बहाना सिखो के विरुद्ध है। केवल ऐसा करके ही सन्त लोगोवाल का हिन्दू-सिख एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव की बहाली का सकल्प पूरा हो सकता है कोरे ऐलानो और सद्भावना समिति की स्थापना से नही।"

पंजाब में संस्कृत की हत्या

प्रख्यात विधिवेत्ता तथा सर्वोच्च न्यायालय के अधिवक्ता डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी ने पंजाब के राज्यपाल द्वारा स्कूल स्तर पर संस्कृत की शिक्षा के समाप्त करने के आदेश पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए इसे भारत की सांस्कृतिक तथा भाषायी विरासत के प्रति घोर अन्याय बताया है। डा० सिंघवी ने एक प्रेस वक्तव्य में कहा कि स्कूल स्तर पर संस्कृत की पढ़ाई को समाप्त करने का राज्य पाल का आदेश सकीर्ण मनोवृत्ति का परिचायक है। उन्होंने कहा कि संस्कृत न केवल हमारे समृद्ध साहित्य की जननी है अपितु हमारी सांस्कृतिक, साहित्यिक, दार्शनिक और धर्म निर्पेक्ष विरासत का मूलाधार है।'

रजनीश के भक्तो के वोटर बनने पर रोक जारी

पोर्ट लैंड, २३ अक्तूबर। स्थानीय अदालत ने नए वोटरों के रजिस्ट्रेशन पर अभी रोक जारी रखी है। रजनीश के भक्तों ने यह रोक उठाने की मांग की थी। यहां के लोगों ने स्थानीय सरकार पर रजनीश के भक्तों द्वारा कब्जा किये जाने के अंदेशे से यह रोक लगवाई थी।

इस रोक से ३०००लोगो भक्तो को वोटर का दर्जा नहीं मिला था इसके बाद भी रजनीश के भक्तों ने वोटर बनने के लिए आवेदन किया था।

(जनसत्ता २४ १०-८४)

प्रेरक संस्मरण

दोपहर के लगभग १ बजे हम विरजानन्द कुटी केस विषयक जो सुप्रीम कोर्ट मे चल रहा था और जिसकी पैरवी सार्वदेशिक सभा की ओर से श्री बख्शी टेकचन्द जी तथा जस्टिस महाजन नि शुल्क कर रहे थे एक प्रारूप दिखाने श्री बख्शी जी की नई दिल्ली स्थित कोठी पर गए। उस समय बख्शी जी आराम कर रहे थे। जब हमने अर्दली को अपने आने का उद्देश्य बताकर, इसकी सूचना बख्शी जी को देने के लिए कहा तो उसने कह दिया कि "बख्शी जी सो रहे हैं अत इस वक्त उनसे भेंट नहीं हो सकती, दोपहर बाद ३-४ बजे आना आराम करते समय वे किसी से भेंट नही करते।"

हमारी बात चीत की भनक श्री बख्शी जी के कानो मे पड गई। उन्होने तुरन्त अर्दली को हमे भीतर ले आने का आदेश दिया और जब हम उनके पास पहुचे तो उन्होंने कहा "आर्य समाज के काम के लिए मैं सोता नही हमेशा जागता रहता हू।"

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

नि:शुल्क अन्तर्जातीय विवाहों के लिए सम्पर्क करें

वेदपाल शास्त्री संयोजक
अन्तर्जातीय विवाह विभाग
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन
रामलीला मैदान, नई दिल्ली-११०००२
फोन : २७४७७१-२६०९८५

सार्वदेशिक पत्र के आजीवन सदस्य बनिये

किसी साप्ताहिक पत्र के ग्राहक बनने पर पत्र की ओर से चन्दे की बार बार मांग बार-बार मनिआर्डर भेजना आदि कठिनाइयां प्रायः सामने आती रहती है—इन कठिनाइयों से बचने के लिए पत्र का आजीवन सदस्य बन जाना ही श्रेयस्कर होता है। १०० रुपये भेजकर सार्वदेशिक साप्ताहिक के आजीवन सदस्य बन जा [illegible]

—[illegible]

महर्षि दयानन्द का वार्त्तालाप और उपदेश

(१)

जब पूरा जोर लगाने पर भी पिंडलियों का मांस हाथों में न आता था

जहांगीराबाद निवासी ओंकारदास बहरा गंगा स्नानार्थ चासी (बुलन्दशहर) गया। उस समय स्वामी जी महाराज वहीं विराजमान थे।

वह जब दर्शनार्थ स्वामी जी के पास गया तो उनके पवित्र स्वरूप से ऐसा प्रभावित हुआ कि उसके हृदय मे स्वामी जी के प्रति श्रद्धा का स्रोत प्रवाहित हो आया। उसने कुछ खाद्य-पदार्थ स्वामीजी को समर्पित किया जिसे महाराज ने ग्रहण कर लिया।

एक दिन तो सत्संग मे अपने आत्मा की प्यास को शान्त करू, इस संकल्प से उसने स्वामी जी की कुटी के पास डेरा डाल दिया। वह व्यायाम करने वाला था पुष्ट, सुगठित और बलवान था। सायंकाल होने पर उसके हृदय मे यह भाव पैदा हुआ कि चलो स्वामी जी के पैर दबाकर उनकी सेवा करू। इससे स्वामी जी के बल का भी पता लग जायेगा।

ओंकारदास ने प्रार्थना की कि सेवक को पांव दबाने की सेवा प्रदान कीजिए। स्वामी जी ने उत्तर दिया "हमारे पांव दबे दबाए हैं।" परन्तु वह अत्याग्रह से चरण-सेवा करने लग ही गया। उसने जब महाराज की पिंडलियो पर हाथ लगाया तो वे उसे लोहे के डंडे के समान कड़ी प्रतीत हुई। उनमे हाथ न धसता था कहीं बल न पड़ता था। पूरा जोर लगाने पर भी मांस हाथो मे न आता था। ओंकारदास थोड़ी ही देर मे एड़ी से चोटी तक पसीने मे तर होकर हांपता हुआ पांव दबाने से पीछे हट गया। उसने स्वामी जी जैसा बलिष्ठ व्यक्ति अपने सारे जीवन मे नही देखा था।

(२)

यज्ञोपवीत उतरवाया भी जाता है

प० गंगाप्रसाद (चासी) स्वामी जी के एक श्रद्धालु भक्त थे। वे गांव गांव मे घूमकर राजपूतों और वैश्यो को यज्ञोपवीत देते थे।

एक दिन उन्होने स्वामी जी के चरणो मे उपस्थित होकर निवेदन किया—

"महाराज! मैंने बहुत बड़ी संख्या मे जनेऊ धारण कराए हैं। स्वामी जी ने उनके इस कार्य की आशीर्वाद सहित प्रशंसा करते हुए पूछा—"यज्ञोपवीत देते ही जाते हो कि किसी का उतारते भी हो?" उसने विनय की "भगवन्! क्या जनेऊ उतारा भी जाता है?' स्वामी जी ने कहा "हां! जो जन धर्म-कर्म हीन हो जाय तो उनके यज्ञोपवीत उतार लेने चाहिए।"

(३)

यह अनन्त नहीं सान्त है

प० गंगाप्रसाद का गुरु प्राय स्वामी जी के पास आया जाया करता था।

एक दिन वह स्वामी जी की कुटिया पर कपड़े रख गंगा मे स्नान करने जाने लगा। स्वामीजी की दृष्टि उसकी बाहु मे बंधे 'अनन्त' पर जा पड़ी। स्वामी जी ने विस्मयाकार मे पूछा 'आपकी भुजा मे क्या है?' वह बोला, "महाराज यह अनन्त है।" स्वामी जी झट उसके पास गए और अंगुलियो से नाप कर कहने लगे, यह तो इतने अंगुल का है, अनन्त कहाँ है उसने लज्जा के मारे वह अनन्त तुरन्त उतार कर गंगा में बहा दिया।

(४)

छत्रसिंह वेदान्ती का भ्रम दूर किया

छलेसर गांव का निवासी छत्र सिंह जाट स्वामी जी का प्रेमी तो था परन्तु वैसे था पक्का नवीन मायावादी।

वह एक दिन स्वामी जी के पास आकर वेदान्त विषय पर बातचीत करने लगा। बातचीत के दौरान छत्रसिंह ने कहा "स्वामी जी! आप चाहे जो कहे परन्तु यह दृश्यमान जगत् मिथ्या है, भ्रममात्र है, वन्ध्यापुत्र समान कल्पित है। वास्तव मे यह है ही नही।"

स्वामी जी ने हाथ को थोड़ा सा आगे बढ़ाकर छत्रसिंह के मुंह पर एक हल्का सा थप्पड़ लगाया! उसके खाते ही वह चौंक उठा, और गाल को मलता हुआ कहने लगा —

'महाराज! सिद्धान्त भेद होने पर ही विचार न मिलने पर ही आप जैसे ज्ञानी जनो को गुस्से मे आकर थप्पड़ मार देना शोभा नही देता।"

स्वामी जी ने मन्द-मन्द मुस्कराते हुए कहा "चौधरी जी! जब आपके निश्चयानुसार ब्रह्म ही एक मात्र वस्तु है दूसरी कोई भी नही और जो कुछ दिखाई पड़ता है वह सब मिथ्या है तो यह आपसे भिन्न दूसरा कौन है जिसने आपके थप्पड़ लगाया है आपको मिथ्य की प्रतीति कैसे हुई?"

छत्रसिंह ने यह सुनकर स्वामी जी के चरण पकड़ लिए और कहा —

"महाराज! आपने मेरी आंखे खोल दी है। वास्तव मे हम लो[ग] अनुभव शून्य है। केवल बौड़ाए मनुष्य की भांति वेदान्तवाद की बकवाद करने लग जाते हैं।

—सं० क० रघुनाथ प्रसाद पाठ[क]

अथ सामवेद संहिता

(सो०) दोनों, ईश अदान तेज कांति निमर्ले सकल,
तेजस्वी इन्सान, परे रखे दुर्गुण उभय।

(दो०) दान शूर अतिदान से, सुवीति ऋषि पद पाय,
द्वेषजयी उपकारिजन, ऋषि 'पुरुमीढ' कहाए।
दोनो ऋषियो की विनय 'प्रभो कर आप,
दिव्य तेज निज दानकर, हरो घोर संताप।
कृपणवृत्ति औ द्वेष को करिए हमसे दूर,
सबको राष्ट्र, समाज को करो सुखी भरपूर।

(छ० ७) आन विराजें हे ज्योतिमय, आप यहां उर मे सत्वर,
यह वैदिक लौकिक स्तुति गाकर तुम्हे रिझाऊं मैं प्रभुवर
इन मेरे वन्दन गीतों से आप प्रफुल्लित हो ऐसे,
चन्द्र रश्मियो से सागर उठता बढ़ता रहता जैसे।
प्रभु सामीप्य भक्त जो पाए, वह दृढ सत्यव्रती बन जाए,
सन्निकर्ष प्रभु का सुविलक्षण, अद्भुत क्रांति करे उद्घाटन,
सदा सत्य का पालन करना, प्रभु समीपता की ही स्फुरणा।
जहां उपस्थित सत्यदेव हो, वाणी सत्य अवश्यमेव हो,
नही असत्य तनिक भी भाता, उसे शुद्ध व्यवहार सुहाता,
नही किसी भी भय से बाधित. रहे सत्य पर सदा अविचलित
प्राण जाय पर वचन न जाए भय या लोभ डिगा नहिं पाए
ऐसे जीवन का शुभ दर्शन, जन-जन के विस्मय का कारण।
प्रभु महिमा यों होती मुखरित सत्यनिष्ठ जीवन मे विलसित
सत्यव्रती दृढ सद्गुण धारी भारद्वाज ऋषि वह अधिकारी।
भरद्वाज स्तुति प्रभु की गाता इस विधि विनती उन्हे सुनाता,
हे अग्ने हे प्रभो! पधारो मेरे हिय बसना स्वीकारो।
तब समीपता की बलिहारी हुई सत्य से मेरी यारी,
साधारण भी बात सत्यमय, कहता मैं अब होकर निर्भय,
सत्य पराक्रम इस विधि धारे 'इन्दु' कहाए सज्जन सारे।

—ओमदत्त भारद्वाज ब्यावरा

प्रभु सामीप्य का परिणाम

(७) एह्यषुब्रवाणि तेऽग्न इत्थेतरा गिर।
एभिर्वर्धास इन्दुभि॥

जात-पात के उन्मूलन का एकमात्र समाधान

अन्तर्जातीय-विवाह

—धर्मदेव चक्रवर्ती
१९, माडल टाउन दिल्ली

मेरे एक केशरहित सिख के केशरहित सिख रिश्तेदार जो देश के विभाजन के बाद भी पाकिस्तान मे पाकिस्तानी नागरिक बन कर रावलपिण्डी के समीप एक कस्बे मे सपरिवार रहते हैं—कुछ दिन पूर्व भारत मे आकर मेरे मित्र के पास कुछ दिन के लिए आकर रहे। दिल्ली आने का उनका उद्देश्य जहां अपने उन अनेक रिश्तेदारो से मिलकर देश के विभाजन से पहले की मधुर स्मृतिया हरी करने का था वहा यहा के पवित्र तीर्थों के दर्शन करना भी था। यह सिख सज्जन तीर्थ यात्रा करने अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर मे भी गए और बाद मे हरिद्वार ऋषिकेश आदि तीर्थों पर भी गए।

यह सज्जन यहा यह देख सुन कर हैरान परेशान हो गए कि पंजाब के अकाली सिख स्वयं को हिन्दुओ से पृथक कौम होने का ऐलान करते हैं और उनके कुछ उग्रपथी सिर फिरे साथी हिन्दू मन्दिरो के आगे गाय का मांस फैकने की चेष्टा तक कर बैठे हैं बात चीत के दौरान में वह बोले 'हमारे सिख पन्थ के गुरु साहिबान ने तो खालसा पन्थ सजाया ही इसलिए था ताकि गौ, ब्राह्मण एवं हिन्दू धर्म की रक्षा की जाए। गुरु ग्रन्थ साहिब की वाणियों मे जगह-जगह वेदो की महिमा गो ब्राह्मण की रक्षा का उपदेश तथा हिन्दू धर्म की महानता का वर्णन है। अपनी घिनौनी करतूतों से ये अकाली पथभ्रष्ट लोग गुरु साहबान और गुरु पन्थ का अपमान कर रहे हैं।

उन्होने आगे बताया कि यद्यपि हमारे गांव में रहने वाले कई हिन्दू-सिख कुछ मजबूरी से और कुछ आर्थिक प्रलोभनों के जाल मे फंसकर मुसलमान हो गए हैं लेकिन उन्होने आज तक कभी गांव मे न गौ-हत्या ही की है और न कभी गोमास ही खाया है। हमारे गांव के मुसलमान उन हिन्दू सिखो की बजाय जो मुसलमान बन गए हैं हम लोगो की अपने धर्म पर डटे रहने पर अधिक इज्जत करते हैं।

मेरे यह पूछने पर कि आप वहा अपने बाल बच्चों की ब्याह-शादी का प्रबन्ध अपने गांव की हिन्दू सिखों की सीमित आबादी में कैसे करते हैं वह बोले—"यही दुःख वहा हम लोगों को खाए जा रहा है। गांव मे कुल चार-पांच सिख घर हैं। उनके साथ खून का नजदीकी रिश्ता होने के सबब हम उनके साथ विवाह-शादी का रिश्ता नही बांध सकते अलबत्ता कुछ हिन्दू परिवार हैं लेकिन वे लोग अपनी जाति से बाहर किसी सिख से रिश्ता तय करने से इंकार कर देते हैं और पाकिस्तान में अन्य नगरो मे बसे इक्के दुक्के जात भाइयों की खोज मे लगे रहते हैं। काश ! ये हिन्दू लोग जात-पांत के बखेड़ों को तिलांजलि देकर हम केश रहित मोने सिखों के परिवारों मे ब्याह शादी का प्रचलन करें तो बेटी-बेटियों की शादी की समस्या ही न रहे।

इसी सिलसिले मे उन्होने आगे बताया कि यूं तो मुसलमानो मे भी जात बिरादरी के अन्दर ही ब्याह शादी करने का रुझान है किन्तु वे लोग इस मामले मे हिन्दुओं की तरह कट्टर नही। वह सज्जन बोले—कुछ वर्ष पूर्व येन केन प्रकारेण हमारे गांव के एक सिख भाई को वहां मुसलमान बनाया गया तो मुसलमानो ने वहा हजारों की संख्या में इकट्ठे होकर उस नव-मुसलमान का इतनी धूम धाम से स्वागत-सम्मान किया कि हम लोग दंग रह गए। बाजे-बाजे के साथ फूलों से लदी खुली कार में उसका जुलूस निकाला गया। अल्लाह-अकबर के गगन-भेदी नारों के बीच उसे जगह जगह कीमती उपहार दिए गए। एक खानदानी रईस ने अपनी इकलौती बेटी की उससे शादी रचा दी और साथ ही एक लाख रुपए की पूंजी लगाकर उसे नया कारोबार खोल दिया।

प्रस्तुत लेख के लेखक ने उस पाकिस्तानी सिख से यह घटना सुनी तो दांतो तले उंगली दबा कर रह गया। कहां हम हिन्दू लोग हैं कि कुएं के मेढ़क की तरह अपनी अपनी जाति बिरादरी के कुएं मे फंसे रहते हैं और कहां मुसलमान हैं कि उनके मजहब मे कोई विधर्मी शामिल हो तो उसकी राह आंखे बिछाते हैं। अपनी बेटिया तक उनसे ब्याह देते हैं। मुसलमानों की आबादी दिन दूनी रात चोगुनी बढ़ रहीहै तो इसका कारण यह भी है कि गैर मुस्लिम को इस्लाम के आगोश मे लाना वे लोग खुदा की इबादत की तरह मुकद्दस समझते हैं। इसके विपरीत हिन्दुओं की आबादी दिन दूनी रात चोगुनी इसलिए घट रही है कि हम लोग गैर हिन्दुओं को अपने में शामिल करना तो एक तरफ अपने ही धर्म बन्धुओं को अपने में पचाने को तैयार नही। जात-पांत के शिकजे मे हम लोग इस बुरी तरह जकड़े हैं कि सूरज पूर्व के बजाय पश्चिम से भले ही उगने लगे, हम लोग जात-पांत के बंधन तोड़ने को तैयार नहीं।

जात-पांत की वजह से हिन्दू-धर्म की नीव खोखली होती चली जा रही है। कहने को हम 'वसुधैव कुटुम्बकम्' तथा जात पांत पूछे नहीं कोय—हरि को भजे सो हरि का होय" का दिन रात गला फाड़ फाड़ कर ऐलान करते हैं लेकिन जब अपने ही पददलित भाइयों तथा गैर हिन्दुओं को अपने में मिलाने का अवसर आता है हम चुप चाप किनाराकशी कर जाते हैं। इस पर गिला यह कि हमारी सख्या दिनों दिन कम हो रही है। हम धीरे-धीरे दुनिया के नक्शे से मिट रहे है।

इतिहास गवाह है कि न रामायण काल मे न महाभारत काल मे जन्म-मूलक जात-पात की बीमारी थी। जन्म परक जात-पांत की बीमारी बुद्ध-काल से शुरू हुई और मुगल-काल और उसके बाद भयानक रूप धारण कर गई।

जन्म परक जात पात ने हिन्दुत्व के शरीर को क्षत विक्षत कर के जिन्दा लाश बना दिया और इस जिन्दा लाश को विधर्मी गिद्ध नोंच नोंच कर खा रहे हैं।

ऊपर मैंने पाकिस्तान के एक गांव में एक सिख नव मुस्लिम को जिस प्रकार सिर आंखों पर बिठाया इसका जिक्र किया है। अब एक किस्सा ग्राम उजियार पुर जिला समस्तीपुर बिहार का सुनिए। उस गांव मे एक ठाकुर के बेटे का और एक मुसलमान लड़की का प्रेमालाप हो गया। पहले यह बात चुपके चुपके चोरी चोरी हुई। फिर बात फैलने लगी। ठाकुर युवक के बाप को पता चला तो उसने बेटे से कहा कि अगर तू इस हरकत से बाज न आया तो तुझे गोली से उड़ा दूंगा। मुसलमान लड़की के बाप को इस प्रेमालाप की भनक पड़ी तो उसने बेटी से कहा—"तू बेशक ठाकुर से शादी करले लेकिन इस शर्त पर कि ठाकुर मुसलमान बन जाए।'

कहते हैं— "हजरते इश्क की जिस पर इनायत हो गयी।
अक्ल रुखसत हो गयी होश गायब हो गयी।

और क्योंकि हजरते इश्क मजहब और जात-पांत के झगड़े से हमेशा दूर रहते हैं, यह दोनों अपने गांव से भाग निकले ताकि मजहब इनके रंग में भंग न डाल दे। वहां से ये दोनों दिल्ली, कलकत्ता आदि नगरों की खाक छानते रहे। अमीर बाप का लडका ठाकुर किसी होटल में बेयरा बना तो कहीं होटल के बर्तन साफ करने लगा। एक दिन अचानक उन पर अपने गांव के एक साथी की नजर पड़ गई। तब दोनों वहां से भाग खड़े हुए। पेट की आग ने हजरते इश्क के हौंसले पस्त कर दिए।

जब रंज दिया बुतों ने तो खुदा याद आया।
हाय कम्बख्त को किस वक्त खुदा याद आया॥

और खुदा के साथ-साथ मां-बाप भी याद आने लगे। लड़की के प्रस्ताव पर लड़की को एक आर्य समाज मे शुद्ध कर दोनो का नियमित रूप से वैदिक पद्धति से विवाह हो गया।

अब ये दोनो पति-पत्नी के रूप मे अपने गांव लौटे। ठाकुर के बाप ने क्योंकि बेटे को गोली से उड़ा देने की धमकी दी हुई थी अतः ये दोनों अपने गांव की हरिजन बस्ती में रहने लगे। गांव के ठाकुरों और मुसलमानों को यह पता लगा तो ठाकुरों की भीड़ लड़के को हरिजन बस्ती से ले उड़ी और दूर खेत मे ले जाकर उसके टुकड़े-टुकड़े करके गाड़ दिया। लड़की को मुसल-मानों ने भयंकर यातनाएं देकर गांव से खदेड़ दिया और यूं जात-पांत के राक्षस ने दो निरीह प्राणियों की बलि ले ली।

यह बड़े हर्ष का विषय है कि हिन्दुओं में व्याप्त जात-पांत के कोढ़ को निर्मूल करने के लिए आर्यों की शिरोमणि संस्था-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अभी हाल ही में एक अन्तर्जातीय विवाह विभाग की स्थापना की है। महर्षि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी के इस पुनीत अवसर पर महर्षि के प्रति इससे बढ़कर श्रद्धांजलि और क्या हो सकती है कि जात-पांत के जिस कलंक को मिटाने के लिए महर्षि ने जान की बाजी तक लगाने में संकोच नहीं किया हम हिन्दू समाज में अन्तर्जातीय विवाह का प्रचलन कर के महर्षि के सपनों को साकार करें।

महिला-जगत्

भेंट

वैद्य जी—माई घबराने को कोई बात नहीं। ईश्वर ने चाहा तो बच्चे को बहुत जल्द आराम हो जायगा। तारपीन का तेल मलकर फलालैन के कपड़े से पेट पर फोमेण्ट करना। पेशाब भी होगा और टट्टी भी। दवा मैं दिए जाता हूं। शाम तक कोई फर्क न हुआ तो दूसरी दवाई बदल दूंगा।

रुक्मिणी—वैद्य जी इसे बीमारी क्या है ?

वैद्य जी—माई इसका रोग पुराना है। इसे ३-४ महीने से कब्ज है। जिगर बढ़ गया है और फेफड़े भी खराब हो गये हैं। घबराना नहीं आराम देर में होगा। धैर्य रखना।

बालक प्रवीण पिछले पांच दिन से चारपाई पर पड़ा है। रोग पीड़ा से बेचैन है। अबोध है, बोल सकता नहीं। केवल रोकर ही अपनी व्यथा प्रकट कर देता है। जब चैन पड़ता है तो बा! 'दा' पुकार उठता है। रुक्मिणी के दु:खी हृदय को बालक के ये शब्द कुछ शान्ति अवश्य देते हैं। रुक्मिणी पागल सी हो रही है। चारपाई पर बैठी देवी देवताओं को मना रही है। कभी नजर उतारती है। कभी उतारा उतारती है।

बूढ़े बालकराम उदास फिर रहे हैं। उनका जी उचाट हो रहा है। आजाद पार्क की ओर गए चार पांच दिन हो गए हैं। जाय तो कैसे जायें ? प्रवीण साथ नहीं जा सकता। जमुना की मित्र मंडली में तो बैठे आज १५ दिन से भी अधिक हो गए हैं। खोंमचे वाला आता है, आवाज लगाता है। बूढ़े बालक राम दिल मसोस कर रह जाते हैं और कह देते हैं—'भाई जान। मुन्नू बीमार है। जरा चंगा हो जाय तो तुम निरास नहीं लोटोगे' तुम्हारी चाट बड़ी बढ़िया बनती है। मुन्नू तो छोड़ता ही नहीं था। तुम्हारी पूड़ी और हलुवा खा लिया करता था। बस उसे न अपनी मां की याद आती थी और न दूध की परवाह करता था। अब क्या करें। लाचार हैं।"

कौन ऐसी माता होगी जिसे अपने पेट के बालक की ममता न हो और जो मृत्यु शय्या पर पड़े अपने बच्चे की सेवा परिचर्या में अपने को विलीन न कर दे। परन्तु भगवती इसका अपवाद थी। वह प्रवीण की ओर से बिल्कुल ही लापरवाह थी। लापरवाह क्यों न होती ? प्रवीण के जन्म दिवस के कुछ समय बाद ही से प्रवीण से न उसका कोई विशेष सम्बन्ध और न उस पर कोई अधिकार ही रह गया था।

उस पर अपना अधिकार तो वह उस समय से नहीं समझती थी जब वह सास के गई और उसके माता पिता के आग्रह पूर्वक लिखने और प्रार्थना करने पर भी उसके साथ नहीं भेजा था। वह समझने लगी थी कि मैं केवल इसे जन्म देने के लिए थी। मुझे न घर पर कोई अधिकार है और न अपनी सन्तान पर।

प्रवीण ऊपरी दूध पर ही पाला जा रहा था। दूध भैंस का हो या गाय का, ठंडा हो या गर्म, मीठा हो या फीका इसकी किसी को परवाह न थी। बच्चा भी मां की परवाह नहीं करता था। आठो पहर बालक राम का पीछा नहीं छोड़ता था। उसे गोद मे लिए इधर-उधर फिरते रहना बालकराम की दिनचर्या थी। बूढ़े सास-श्वसुर के अत्यधिक मोह और अन्ध विश्वास के विरुद्ध भगवती को मुंह खोलने की आज्ञा न थी। उसकी अनुपस्थिति मे बूढ़े बालकराम ने प्रवीण को हलुवा, पूरी आदि गरिष्ठ पदार्थों पर रखा, मानो एक कोमल पौधे को जल-धारा के प्रवाह पर छोड़ दिया। परिणाम यह हुआ कि कब्ज रहने लगा और उसका जिगर बढ़ गया। वैद्य जी के इलाज को पूरे दो दिन हो गए हैं। प्रवीण की हालत मे अन्तर है। उस अन्तर को देखने में बालकराम और रुक्मिणीके नेत्र समर्थ नहीं हैं। घबराहट ने रोग के उतार-चढ़ाव को धैर्य पूर्वक देखने की क्षमता भी उनसे छीन ली। प्रवीण आखें बन्द करके सोता है तो वे उसे बेहोशी में बतलाते हैं। उसका पेट कुछ हो जाता है तो किसी दूसरे वैद्य की दवाई लाते हैं या स्वयं कोई अपनी दवाई दे देते हैं। वह तो वे चाहते हैं कि मुन्नू जल्द राजी होकर हंसे खेले और जमन का हलुवा पूड़ी खाए। भगवती उन्हें ऐसा करने से रोकती है परन्तु उसकी सुनता कौन है ?

प्रवीण चारपाई पर पड़ा था कुलदीप की मां रुक्मिणी के पास बैठी बातचीत कर रही थी। कुलदीप की मां बोली—

"जिठानी जी ? हकीम गिरधरदयाल का इलाज बहुत अच्छा है। उसके हाथ को जस है। इसका इलाज मत छोड़ना। बीमारी तो बीमारी की तरह ही कटेगी। घबराना नहीं।"

रुक्मिणी ने कहा "बहू! मुन्नू को तो उन्नीस बीस का भी फरक नहीं है। उसकी बीमारी तो बढ़ती ही जा रही है। तीन दिन इलाज करते हो गए जौ भर का भी फर्क नहीं है। मुझे तो ऐसा लगता है कि इसे कुछ ऊपरी हो गया है। किसी स्याने को बुलाकर उसका बन्दस कराना चाहिए। मंगलपुर मे एक स्याना रहता है। उसका नाम श्यामा है। "बहू! मैं तुझसे सच कहती हू लोग उसके पास रोते जाते हैं और हसते आते हैं। न जाने उसके हाथ मे क्या करामात है ? जब यह पहले बीमार पड़ा था तो तब भी उसी ने इसे चगा किया था। अब ऐसी घड़ी मे पड़ा है कि उठता ही नहीं। मै और तेरे जेठ जी कल मंगलपुर जायगे और मुन्नू को उसे ही दिखायेंगे। बस वहा से हंसता हुआ चला आएगा। यकीन करियो। भला इस बच्चे को जिगर कहा से आया। कुछ खाता नहीं, पीता नहीं। हकीम तो जिगर, पेट और फेफड़े की खराबी बताकर पाच रुपए ऐंठ कर ले गया। आज से मैने उसका इलाज भी बन्द कर दिया है।" भगवती दिल को हाथ में लिए सास की बात सुनती रही और खून का घूंट पीकर रह गई। गंडा तावीज ले पन्द्रह सोलह रुपए की भेंट चढाकर मंगलपुर से लौट आए हैं। श्यामा ने गले मे बांधने के लिए तावीज दे दिया है और कह दिया है कि इसके परताप से बालक को कोई बला न सतायगी। इसकी मां मंगलवार को हनुमान जी का व्रत रखे और बन्दरो को चने खिलाए। महावीर स्वामी सब भला करेंगे। अभी तो इतना ही अनुष्ठान करना। किसी वैद्य को मत दिखाना, नहीं तो महावीर स्वामी नाराज हो जायंगे। मैं सातवें दिन आऊंगा। और फिर कोई जतन बताऊंगा।"

आज बालक जीवन के अन्तिम श्वास, पूरे कर रहा है। बूढ़े-बुढ़िया औंधा मुंह किए एक कोने में पड़े हैं। भगवती अपने जिगर के टुकड़े को जी भर कर निहार रही है। आज उसके नेत्रो से मातृ-स्नेह टपक रहा है। वह अपने जीवन अपनी अवस्था और अपने पुत्र के दुर्भाग्य पर मन ही मन रो रही है। उसकी आंखों में आंसू नहीं है।

उसने प्रवीण का मुंह चूमकर कहा 'बेटा! तू इस घरके अन्ध विश्वास और अन्ध प्रेम की वेदि पर बलि किया गया है। वह कोने मे पड़े तेरे 'बा' और 'दा' तेरे हितू नहीं वरन् दुश्मनहै। अन्ध विश्वास और मोह ने उन्हे खेल खिलाया। तुझे गोद में लिए वे खेल खेलते रहे। मैंने इस मोह के थोथे बनावटी और आकर्षक आवरण को दूर करने और उसके सच्चे स्वरूप को प्रकाश में लाने की चेष्टा की परन्तु मैं विनय और भय से दबी थी इसलिए मैं सफल न हो सकी। इस विश्वास और प्रेम ने भेंट मागी और उन्होने तेरे को अर्पण कर दिया। मैं भी तेरे प्रति कम अपराधिनी नहीं। मैं इसका प्रायश्चित करूंगी। प्रायश्चित क्या होगा यह तुझे नहीं बताऊंगी।"

—डा. भारती पी. एच. डी.

सम्पादक के नाम पत्र

कुरान में भी पुनर्जन्म

क्या सही मे मानव मरने के बाद जन्म लेते हैं ? दुनिया के कुछ लोग मान्ते हैं और कुछ लोग नही मानते हैं। जैसा कि वैदिक धर्म के लोग इस बात को मानते हैं सिर्फ मुसलमान जो कुरान को मानने वाले नही मानते तो क्या कुरान ने इस विषय मे कुछ खुलासा नहीं किया। जो किताब ईश्वर के बनाए हुए हैं या ईश्वरीय ज्ञान है तो उसमे वह अपने आप पूर्ण होना चाहिए। जैसा कि वेद है। यानि कुरान में इसी तरह खुलासा होना चाहिए कि दुनिया कब से पैदा हुआ और कब खत्म होना है। फिर आदमी मरने के बाद दोबारा जन्म लेगा या नही ? लेकिन एक बात कुरान में है दुनिया पैदा होने का वह तो साईंस के आधार पर भी नहीं मिलता। न ही वेद के आधार पर मिलता है। कुरान मे दुनिया खत्म होने के बारे मे कुछ नही बताया। अब रही पुर्नजन्म की बात, कुरान भी कहता है पुनर्जन्म होना या दूसरी योनि मिलना जरा गौर से सुनिये। कुरानकी ही भाषा में सुनाता हूं।

देखें पः ६ रूकू ११

"हे मोहम्मद आप कह दीजिए क्या मैं तुमको ऐसा तरीका बतलाऊं जो इससे भी खुदा के यहा सजा मिलने में ज्यादा बुरा होगा। वो उन शख्स का तरीका है कि जिनको अल्लाहताला ने दूर कर दिया और उन पर गजब फरमाया हो और उनको बन्दर और सूअर बना दिया हो कि जिन्होंने शैतान की परिस्तिश की" इस आयत से यह पता चला कि जो लोग शैतान की परिस्तिश करेगा तो अल्लाह उनको बन्दर और सूअर बना देंगे। तो शैतान क्या चीज है ? यानि जो पापी है, पाप करता है लोग उसे शैतान कहते हैं। मतलब यह हुआ कि जो आदमी जैसा कर्म करेगा उसी हिसाब से उसे फल मिलेगा। सबको अपने अपने हिसाब से योनि मिलेगी तो मुसलमान फिर इस बात को क्यों नहीं मानते। जब कुरान खुद बता रहा है—अगर मुसलमान कुरान की इस बात को नहीं मानते तो वो मुसलमान नही हैं बल्कि कुरान को न मानने वाले ही काफिर होते हैं तो फिर मुसलमान का असलियत क्या रहा। इसलिए मैं कहता हूं अपने भाईयों ! दुनिया मे अलग-अलग मत क्यों फैला रहे हो ? तथा लोगों को गुमराह कर रहे हो। आजाओ हम सब एक वेद के मानने वाले बन जायें और परमेश्वर का सुख भोग करें। कुरान में अल्लाह ने बताया।

"वल्लाहू लायो हिब्बुल फसाद" दुनिया में फसाद फैलाने वालों को अल्ल ह० ताला पसन्द नही करते हैं। इसीलिए हम सबको एक होकर के रहना चाहिए।

—महेन्द्रपाल आर्य
(भूतपूर्व ईमाम सैयद महबूब अली)
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, नई दिल्ली-४४

क्या खोया क्या पाया ?

कहते हैं, छल रही सुराही, फिर क्यों जन-जन प्यासा।
मेरे मन में पीर कसकती, कैसे करूं दिलासा॥
बाहर तो जगमग दीवाली, घर मे घोर अंधेरा।
मन मन्दिर मे छिपा हुआ क्या ? कोई चोर लुटेरा॥

वह प्रकाश की किरण कहां है ? जो आलोक बखेरे।
जिसकी ज्योति-शिखा से ज्योतित, हो हम सांझ सबेरे॥
आज हो गई संस्कृति बैरिन, धर्म हुआ बीराना।
राजनीति मे बदल पैतरे, पनपा जाति-तराना॥

सुप्त चेतना, नव समाज की, स्वार्थ तुड़ाती डोरी।
युवक-वृन्द पथ भूल भटकता, करता रस की चोरी॥
लज्जा अनावरण सड़कों पर, खेले आंख मिचौली।
पनप रही है कुटिल कलाएं जलो सत्य की होली॥

अनुशासन ने टिकट कटाया, शिक्षा हुई रूआंसी।
ज्ञान कर्म की मिटी कुंडली, पति की परित्यक्ता सी॥
स्वार्थ हुआ सर्वोपरि, बढ़ती दुष्प्रवृत्तियां प्रति पल।
आर्थिक रूप से आज देश की, हुई व्यवस्था छिन्नभिन्न॥

हैं वैज्ञानिक प्रगति बढ़े है, बड़े बड़े सरमाये।
किन्तु न उससे हुई तृप्ति, मंहगाई ने दुख ढाये॥
देख दशा यह आज देश की, प्रश्न उभर कर आया।
आजादी के इन वर्षों में, क्या खोया ? क्या पाया ?

सावित्री रस्तोगी
'ज्ञान लोक' जवाहर नगर, मेरठ

दुःखी हृदय की पुकार

श्री सन्तोख सिंह रिटायर्ड लेफ्टिनेन्ट कर्नल (गोवा)लिखते हैं:—(देखें टाइम्स आफ इण्डिया १३-१०-८४)

"मैं एक रिटायर्ड सिख सैनिक हूं जिसने दूसरे विश्व युद्ध के मध्य बर्मा की लड़ाइयों में हिस्सा लिया और मुझे इस बात का अभिमान है कि मैंने १९४७ में काश्मीर में अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना रक्त बहाया। मैं इन दिनों पंजाबको परिस्थितियों को अत्यन्त दुःखी दिल से पढ़ रहा हूं। आज मै यह नही कह सकता कि किसी चीज की निन्दा करू । हिन्दुओं और सिखों में मत भेद फैलाने का प्रयास अपने पवित्र स्थानों को अपराधियों, हत्यारो और देशद्रोहियों की शरणस्थली बनाने की आज्ञा या धार्मिक भावनाओं को राजनैतिक हितों के लिए प्रयोग करने की कोशिश को यह सब कुछ इन दिनों पंजाब में हुआ है और मैं अत्यन्त दुःख से कहता हूं कि न हमने अपने पवित्र ग्रन्थ की शिक्षा को ही दृष्टि से ओझल किया है बल्कि अपने दूसरे देश भाईयों को भी धोखा दिया है।

एक सिपाही के नाते मुझे इन सिख जवानों पर सख्त दुःख हुआ जिन्होंने हरमन्दिर साहब पर सैनिक कार्यवाही के बाद अपने यूनिट छोड़ दिये, अफसरों को मार दिया। तो भी जिस बात का मुझे इससे भी अधिक दुःख हुआ वह पांच प्रसिद्ध सिख जनरलों की आश्चर्यजनक अपील थी उन पथभ्रष्ट नवयुवक को माफ कर दिया जाये और इन्हे फिर से सेना में सम्मिलित कर लिया जाए।

मेरी आयु आज अस्सी वर्ष की हो चुकी है इसलिए मुझे किसी सन्त या जत्थेदार का डर नही है क्योंकि मुझे बहुत शीघ्र वाहे गुरु की शरण में पहुच जाना है। इसलिए हो सकता है कि मैं दूसरे भाईयों के मुकाबले पर तनिक अधिक हिम्मत से बात कर सकू। आज हम सिख अपने देशवासियों की दृष्टि मे संदिग्ध हो चुके हैं इसके लिए हमें कांग्रेस और अपने सन्त राजनीतिज्ञों की चालों का धन्यवाद करना चाहिए हम हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए पैदा हुए हमने देश की स्वतन्त्रता के लिए युद्ध लड़ा और स्वतन्त्र भारत के प्रत्येक युद्ध में हम आगे रहे लेकिन यह सब भिंडरावाला और इसके साथियों की काली करतूतों से ओझल हो गया है।

आज जब मैं स्वाभिमान रूप मे अपनी पगड़ी और कृपाण और सफेद दाढ़ी के साथ बाजार से गुजरता हू तो अपने देश भाइयो की वह शंकापूर्ण निगाहें दृष्टि से ओझल नही कर सकता जिनसे वे मुझे देखते हैं। इनकी नजरें यह प्रश्न कर रही हैं कि क्या यह कोई उग्रवादी है या कोई अपहरणकर्त्ता है या देश के शत्रुओं से मिला हुआ कोई गद्दार है। अपनी आंखों के आंसुओं से खुद यह प्रश्न करता हूं कि क्या हम इस सबके लायक हैं। धीरे-धीरे मेरे दिल के किसी कोने से आवाज निकलती हैं कि हां।"

"हिन्दू सिख एकता और पंजाब की समृद्धि को काफी हानि पहुच चुकी है और अब राष्ट्रीय एकता की बुनियादें ही खतरे में पड गई हैं। हमारे शत्रुओं ने भी अपने स्वप्नों में भी इससे अधिक की आशा न की होगी। मुझे इस बात का दुःख है कि दुर्भाग्य की इस लहर ने हमारी अनोखी भारतीय सेना को भी नही छोड़ा। बहराल इस अन्धेरी घड़ी में हमारे देश में आशा की एक ही किरण है और वह है हमारी सेना की हिम्मत ईमानदारी और अनुशासन। आइये हम सबके कल्याण के लिए इस पवित्र भावना को स्थापित कर रखे। संसार भर में कहीं भी कोई सैनिक गद्दारों, भगोड़ों और कातिलों को माफ करके ज्यों की त्यों स्थिति में नहीं रह सकता। जैसा कि पांच जरनलों ने कहा है कि भारतीय जवान धर्म और परम्पराओं के ढांचे में [illegible] केवल सिखों को ही नहीं बल्कि हिन्दुओं मुसलमानों, ईसाईयों को अपने धर्म ग्रन्थों पर हाथ रख कर कसम खानी पड़ती है। रेजीमेंट के मन्दिरों, मस्जिदों, गिरजों और गुरुद्वारों में वह अपनी-२ प्रार्थना करते हैं और धार्मिक नारों के साथ युद्ध में कूद पड़ते हैं लेकिन इसके साथ ही इनमे से हर एक झंडे पर भी हाथ रखना पड़ता है और देश के प्रति वफादारी की शपथ लेनी पड़ती है। जो कोई इस प्रतिज्ञा को तोड़ता है या अपने अफसर पर हाथ उठाता है इसे सेना में गद्दार या नमक हराम कहा जाता है। यह बात मई १८५७ से चली आ रही हैं जब मंगल पांडे ने अपने अफसर पर गोली चलाई। विद्रोह किसी भी स्थिति में सहन नहीं किया जा सकता चाहे गुस्सा कैसा भी हो।

इसलिए मेरी इन प्रसिद्ध जनरलों से अपील है कि वे देश में शान्ति और सद्भावना लाने के लिए अपने प्रभाव को ठीक प्रकार से प्रयोग में लायें लेकिन वाहे गुरु के लिए धर्म को भारतीय सेना को बदनाम करने के लिए प्रयोग न करे। मेरे दो बेटे इस समय सेना में हैं और मैं पूरे विश्वास से कह सकता हूं कि यह ठीक सम्भव है कि वे दोनों पथभ्रष्ट हो चुके है।"

देश और पन्थ के पथभ्रष्ट अकाली शत्रुओ का सही मार्ग-दर्शन करने के लिए लेखक बधाई के पात्र है। उन्होने अपने विचारो को स्पष्ट करने में जिस साहस का परिचय दिया है वह भी प्रशसनीय है।

कर्नल महोदय के विचारों में से एक बार फिर सैनिक कार्यवाही करने वाले सिख जरनलों एवं सैनिको आदि के साहस, बलिदान देश और पन्थ प्रेम की झांकिया मिली हैं।—सम्पादक

इस प्रसंग में एक पत्रकार की प्रतिक्रिया भी ध्यान देने योग्य है जो इस प्रकार है:—

कर्नल गिल ने जो कुछ कहा है इस पर ध्यान देनेकी आवश्यकता हैं। ठीक है कि हमारे स्वतन्त्रता संग्राम के अन्तिम दिनों मे भारतीय समुद्री सेना के कुछ जवानों ने विद्रोह किया था हो सकता है कि इन नौजवानों के इस कार्य की भी निन्दा हो लेकिन इस बात को दृष्टि से ओझल नही किया जा सकता कि उस विद्रोह और आज के विद्रोह में जमीन आकाश का अन्तर है। उस समय के विद्रोह को केवल अंग्रेजों ने विद्रोह कहा जिसके विरुद्ध सारी भारतीय कौम युद्ध में संलग्न हो चुकी थी। अंग्रेज एक विदेशी शासक था जिसका भारत पर जबर्दस्ती शासन करने का कोई हक नही था। इसके विरुद्ध विद्रोह एक बात थी लेकिन पंजाब में जो कुछ हुआ और जिस पर हमारी सेना को कार्यवाही करनी पडी यह बिल्कुल दूसरी प्रकार की बात है। अगर भिंडरावाला और उसके साथी हिन्दुओं को कत्ल करते तो भी समझ आने वाली बात थी मगर इन्होने तो इन सिखों को भी नही बक्शा जो इनके आतंकवाद और गुण्डागर्दी के सम्मुख सिर झुकाने को तैयार न हुए थे। धर्म के नाम पर इन्होंने सिखसन्तों को भड़काने की कोशिश की। मैं यह मानता हू कि इन्हे इसमें काफी सफलता मिली किन्तु मैं भी कर्नल महोदय की तरह से भगवान से प्रार्थना करता हूं कि हमारे देश भाई किसी प्रकार के भडकाने से पथभ्रष्ट हो गए हैं इन्हें सही मार्ग दिखाई दे ताकि आज जो हमारे देश में बेचैनी फैली है वह दूर हो। जो उग्रवादी सिख खालिस्तान का नारा लगा रहे है इन्हे मैं यह ही कहूगा कि इतिहास के पन्ने उलट पलट कर देखे कि जिन लोगों के सकेत पर ये लोग यह कर रहे हैं वे पहले ही अवसर पर इनकी गर्दनों पर सवार होगे।"

आर्य समाजों की गतिविधियां

वीर बन्दा वैरागी जन्म दिवस समारोह

दिनांक २-१० १९८४ को डा० भाई महावीर, भूतपूर्व सांसद ने वीर बन्दा वैरागी के जन्म दिवस समारोह का उद्घाटन करते हुए कहा कि वीर बन्दा वैरागी जैसे महापुरुषों के त्याग व बलिदान के कारण ही हिन्दू समाज जीवित है। उन्होंने कहा वीर बन्दा वैरागी जो शिकार के समय हिरनी के बच्चों को दम तोड़ते देख न सका और सीधा जंगलों में तपस्या करने चला गया और जब गुरु गोविन्दसिंह के दो बच्चों को दीवारों में चुनवाया गया और दो बच्चे युद्ध में मारे गये, उस समय गुरु गोविन्दसिंह दक्षिण में वीर बन्दा वैरागी से मिले और पंजाब में हिन्दुओं पर हो रहे जुल्मों का विवरण दिया तो उसी समय बन्दा वैरागी जंगलों से निकल पड़ा और वीर के रूप में सीधा पंजाब में आकर दुश्मन के छक्के छुड़ाये और गुरु पुत्रों के वध का बदला लिया। परन्तु अपने ही समाज के लोग दुश्मन से मिल गये और बन्दा वैरागी को पकड़वा दिया और उस समय के हुक्मरान मुगलों ने बन्दा वैरागी के अंग-अंग काट-काट उनकी हत्या की परन्तु बन्दा वैरागी ने मुंह से आह नहीं की और शहीद हो गये। ऐसी बहादुरी का उदाहरण आज तक संसार में कोई नहीं मिलता।

डा० महावीर ने कहा कि आज बन्दा वैरागी जैसे त्यागी और बलिदानी लोगों की आवश्यकता है। उन्होंने लोगों से अपील की कि अपने समाज में त्याग और बलिदान की भावना को बनाये रखने के लिए काम करें।

इस अवसर पर दिल्ली महानगर परिषद में विपक्ष के नेता श्री मदनलाल खुराना ने कहा कि मैं वीर बन्दा वैरागी समिति, दिल्ली का धन्यवाद करता हूं कि जिसने उस वीर त्यागी महापुरुष का जन्म दिवस मना कर उस वीर पुरुष का जीवन परिचय जनता के सामने रखा जिनसे अधिकांश जन भूलते जा रहे हैं।

श्री खुराना ने कहा कि जब-जब हिन्दू समाज कमजोर हुआ सत्ताधीशों ने उसे ठुकराया और अपनी मर्जी से उस पर कानून थोपे। परन्तु जब-जब हिन्दू समाज जागृत हुआ और सत्ताधीश उसके सामने झुके। उन्होंने कहा कि आज ३७ वर्ष देश को आजाद होने को हो रहे हैं, परन्तु देश का बहुसंख्यक हिन्दू अपने भगवान राम के जन्मस्थान पर राम की पूजा नहीं कर सकता—पूजा स्थल सरकार ने सील कर दिया है। रामनवमी व जन्माष्टमी जैसे प्रमुख त्यौहारों पर सार्वजनिक अवकाश नहीं। ऐसा दुर्व्यवहार हिन्दुओं के साथ अंग्रेजों के समय में भी नहीं था।

श्री खुराना ने हिन्दुओं को आह्वान किया कि वे छोटे मोटे आपसी भेद भुलाकर संगठित होकर अपने अधिकारों की रक्षा के लिए स्वयं खड़े हों। श्री खुराना ने कहा कि आज इस वीर त्यागी व बलिदानी महापुरुष वीर बन्दा वैरागी के जन्म दिवस पर उनके जीवन से त्याग व बलिदान की प्रेरणा लेना ही सच्चे अर्थों में उनके प्रति श्रद्धांजलि है।

इस अवसर पर श्री द्वारका नाथ, श्री सुन्दरदास, श्री बहादुरचन्द तथा अन्य महानुभावों ने अपने भाषणों व कविताओं द्वारा वीर बन्दा वैरागी के जीवन की घटनाओं का वर्णन किया और उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। जन्म दिवस समारोह सभा का आयोजन वीर बन्दा वैरागी समिति, दिल्ली की ओर से किया गया। इस अवसर पर भण्डारे का भी आयोजन किया गया।

—सुन्दरदास, मन्त्री

आर्य समाज सान्ताक्रुज ट्रस्ट

आर्य समाज सान्ताक्रुज ट्रस्ट की दिनांक १९-९-८४ की बैठक में युवा नेता एवं सक्रिय कार्यकर्ता कैप्टिन देवरत्नजी आर्य को आर्य समाज सान्ताक्रुज ट्रस्ट का "आजीवन ट्रस्टी" सर्वसम्मति से निर्वाचित किया गया।

आर्य समाज सान्ताक्रुज अपनी सक्रिय गतिविधियों के कारण आर्य जगत में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संस्था है।

—प्रधान व महामंत्री

वेद प्रचार सप्ताह एवं योग साधना शिविर सम्पन्न

आर्य जगत के स्तम्भ श्री पुष्कर लाल जी आर्य संचालक वैदिक प्रचार समिति की सरपरस्ता में आर्य समाज नलवा (हिसार) ने अपने वार्षिक उत्सव पर योग साधना शिविर और वेद कथा सप्ताह का आयोजन १६ से २२ सितम्बर, १९८४ तक किया। इस अवसर पर योगासन, ध्यान, प्राणायाम, यज्ञ, प्रवचन, भाषण भजन आदि कार्यक्रमों से जनता प्रभावित हुई।

हरियाणा आदि के साधु सन्यासी विद्वान, भजनोपदेशकों के मधुर व्याख्यान व भजन हुए। २१ सितम्बर को गोरक्षा सम्मेलन और शराब बन्दी सम्मेलन का आयोजन हुआ। जिसमें अनेक विद्वानों ने अपने विचार और सुझाव रखे। आर्य समाज के इस कार्यक्रम से प्रभावित होकर अनेक व्यक्तियों ने, यज्ञोपवीत धारण, दुर्व्यसनों का त्याग, ईश्वर उपासना, ध्यान, योगासन, प्राणायाम, करने का सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय, सदाचार पालन आदि का संकल्प लिया। श्री पुष्कर लाल आर्य ने इस अवसर पर वैदिक साहित्य का वितरण किया और कम कीमत में भी विद्यार्थियों और जनता में बिक्री की। इस शिविर का नलवा ग्राम व आस पास के गांवों पर तथा आर्यसमाज का पर्याप्त प्रभाव पड़ा। यह सब कार्य वेदराज आर्य प्रधान आर्य समाज नलवा व सतरसिंह आर्य प्रधान आर्य समाज कवारी के सहयोग से हुआ।

गोरक्षा सम्मेलन स्वामी सत्यानन्द जी की और शराबबन्दी सम्मेलन श्री स्वामी विद्यानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए।

—वैद्य सहदेव आर्य
मन्त्री-आर्य समाज, नलवा (हिसार)

विविध समाचार

मुफ्त कमरा, मुफ्त भोजन, काम क्रीड़ा के सिवा कोई काम नहीं—रजनीशपुरम

मियामी (अमरीका) १६ अक्तूबर। मुफ्त कमरा, मुफ्त खाना, काम कुछ नहीं अपराध से मनाही और भरपूर सैक्स की आचार्य रजनीश के चेलों की पेशकश का भरपूर फायदा उठाकर आये एक संवाददाता ने बहुत तारीफ की है।

मियामी हेराल्ड का संवाददाता, जायमेडेर स्वयं को बेरोजगार और बेसहारा व्यक्ति बताकर उस बस द्वारा रजनीशपुरम पहुंचा जो तेरह अन्य व्यक्तियों को वहां ले जा रही थी। चार हजार से अधिक अमरीकी नागरिक आचार्य रजनीश द्वारा स्थापित इस केन्द्र की अब तक मुफ्त यात्रा करके वहां आनन्द ले चुके हैं।

मियामी हेराल्ड के गत रविवार के अंक में प्रकाशित जाय मेडेर के एक लेख के अनुसार रजनीशपुरम ऐसा नगर है जहां कोई चोरी नहीं करता और कोई किसी से द्वेष नहीं रखता। वहां पहुंचने वालों का एक ही रात मे कायाकल्प हो जाता है।

संवाददाता जाय मेडेर के अनुसार रजनीशपुरम में रहने वाले लोग वहां से बाहर रहने वाले लोगों की तुलना मे अधिक प्रसन्नचित और मधुर-भाषी हैं।

संवाददाता का कहना है कि वह स्थान एक ऐसे मन्दिर जैसा है जिसका मठाधीश अपने अनुचरों के कानों मे हर सुबह यह बात भरता हैं कि उनके मन्दिर के बाहर की दुनिया एक ऐसे जंगल की तरह है जिसमे वहशी लोग उन्हें तबाह कर देंगे।

जाय मेडेर के अनुसार रजनीशपुरम के लोग एक पैगम्बर के इस कथित कथन पर यकीन करते हैं कि बीसवी शताब्दी के अन्तिम भाग मे अचानक प्लेग फैलेगी जो विश्व की दो तिहाई आबादी को बर्बाद कर देगी। रजनीश-पुरम के लोग बच जायेंगे।

खालिस्तान समर्थकों का सफाया होना चाहिए —देसाई

पुणे ६ अक्तूबर। भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री मोरार जी देसाई ने कहा है कि जो लोग तथाकथित 'खालिस्तान' का समर्थन कर रहे हैं उनका सफाया किया जाना जरूरी है।

संवाददाताओं से अनौपचारिक बातचीत में उन्होने कहा कि पंजाब में कानून व्यवस्था को देखरेख पुलिस द्वारा की जानी चाहिए।

संवाददाताओं ने उनका ध्यान इस बात की ओर आकृष्ट किया कि स्वर्ण मन्दिर फिर से खुलने और उसका प्रशासन गुरुद्वारा अधिकारियो को सोंपे जाने के बाद से उग्रवादी गतिविधियां फिर से बढ़ गई है।

उन्होंने इस धारणा को गलत बताया कि पंजाब में यदि चुनाव कराए गए तो बड़े पैमाने पर गड़बड़ी फैलने की आशंका रहेगी।

पंजाब से अभी सेना नहीं हटेगी—राव

नई दिल्ली १८ अक्तूबर। गृह मन्त्री श्री पी. वी. नरसिंहराव ने कहा कि जब तक पंजाब में स्थिति पूरी तरह से सामान्य नहीं हो जाती, वहां से सेना हटाने का सवाल पैदा नहीं होता।

श्री राव ने आज यहां पंजाब के स्वतन्त्रता सेनानियों के एक शिष्ट मंडल से बातचीत करते हुए यह आश्वासन दिया।

शिष्टमण्डल का नेतृत्व पंजाब के स्वतन्त्रता सेनानियो की एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री नन्दलाल बाहुजा कर रहे थे। शिष्ट मंडल ने गृहमन्त्री को बताया कि सेना की उपस्थिति के कारण आतंकवादियों की गतिविधियों मे भारी कमी आई है।

शिष्टमंडल ने बढ़ती हुई मंहगाई को ध्यान में रखते हुए स्वतन्त्रता सेनानियों की पेंशन में वृद्धि करने की भी मांग की।

३०२ जोड़ों की बिना दहेज शादियां

कोच्चिन १५ अक्तूबर। एर्नाकुलम के कीरमपारा में ५ नवम्बर को ३०२ युवकों तथा युवतियों की बिना दहेज शादी की जाएगी और राष्ट्रपति जैलसिंह जी ने इस अवसर पर उपस्थित होकर इन्हे आशीर्वाद देना है।

राज्य के शिक्षा मन्त्री टी. एम. जैकब ने बताया कि ग्रामोत्सव कार्यक्रम के अन्तर्गत आयोजित इस विवाह मे २३ अन्तरजातीय विवाह होगे। इनमे १०० हरिजन, १४८ ईसाई तथा ६ मुसलमान होगे।

प्रत्येक जोड़े को सरकार की ओर से सोने की एक सिकडी, कपड़े तथा बर्तन दिये जायेंगे। सरकार ने उन नव दम्पत्तियों को, जो भूमिहीन होगे, जमीन भी देने का निश्चय किया है। इस अवसर पर एक भोज दिया जाएगा जिसमें ५ हजार लोग शामिल होगे। (प० केसरी १६-१०-८६)

गांवों के सिख नाराज़

अमृतसर २३ अक्तूबर। गांवो के सिखो मे श्री गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के खिलाफ काफी क्रोध है। इसकी वजह यह है कि कमेटी सैनिक कार्रवाई के दौरान प्रताड़ित लोगों को आर्थिक सहायता देने में एकदम विफल रही है।

अन्तरंग सूत्र बताते हैं कि इन लोगों की सहायता के लिये करीब ३० लाख रु० इकट्ठे हुए हैं। सहायता अभी और आ रही है। ४०० आवेदन पत्र भी सहायता के लिये आ चुके हैं, पर कमेटी अभी तक सहायता के मान-दंड तय नही कर पाई है। भाई अमरीक सिंह को असहाय मां भी कई बार कमेटी अधिकारियों के दरवाजे भी खटखटा चुकी है पर वह हमेशा खाली हाथ ही लौटी है। (पंजाब केसरी २४-१०-८४)

नव निर्मित भवन तथा यज्ञशाला का समारोह उद्घाटन

आर्य समाज नारायण विहार (जी ब्लाक) नई दिल्ली का उद्घाटन समारोह रविवार, दिनांक ४ नवम्बर से रविवार ११ नवम्बर १९८४ तक चलेगा रविवार ४ नवम्बर, १९८४ को दोपहर २ बजे उद्घाटन भवन लाला रामगोपाल जी शालवाले, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा श्री बलराज कपूर एवम् उद्घाटन यज्ञशाला पूज्य स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती तथा श्री लाजपतराय ग्रोवर के कर-कमलों द्वारा होगा।

—दीनानाथ गुप्त, मन्त्री

दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुना नगर

संगीत प्रशिक्षण पाने के इच्छुक प्रत्याशी प्रवेश लें। संगीत प्रशिक्षण विभाग—दयानन्द उपदेशक विद्यालय, यमुना नगर। प्रवेश योग्यता 'संस्कृत विषय के साथ हाईस्कूल पास। आयुसीमा १६ से ३० वर्ष के मध्य। प्रार्थना पत्र प्रेषण की अन्तिम तिथि ३१ दिसम्बर १९८४। प्रार्थना पत्र इस पते पर प्रेषित करें—आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, दयानन्द मठ, रोहतक आचार्यत्व पन्नालाल जी पीयूष —रणजीतसिंह, मन्त्री

नेत्र चिकित्सा शिविर

शिविर. ३१ अक्तूबर से ४ नवम्बर तक आंख, कान, नाक एवं गले के रोगियों के उपचारार्थ निःशुल्क चिकित्सा का आयोजन किया जा रहा है। डा० श्री आर. एम. सहाय तथा डा. श्री प्रकाश गोलेचा जयपुर क्रमशः आंख एवं नाक, कान तथा गले की शल्य क्रिया सम्पन्न करेंगे। औषध तथा भोजन भी निःशुल्क होगा। आयोजक आर्य समाज मेरठ

इन्द्रराज, मन्त्री

गढ़मुक्तेश्वर मेला प्रचार शिविर

४ नवम्बर से ८ नवम्बर तक, गंगा मेला गढ़मुक्तेश्वर में आर्य समाज का प्रचार शिविर लगेगा। —इन्द्रराज, मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा ने पं० श्री ब्रह्मप्रकाश विद्यावाचस्पति द्वारा वेद प्रचार करवाया।

औषध वितरण

औषध वितरणः शरद् पूर्णिमा पर आर्य-समाज नागौर ने दमा पीड़ितों को निःशुल्क औषध वितरण किया। —ओम्प्रकाश पारासर

पंजि० सं० डी० (डी०) १७८ सार्वदेशिक साप्ताहिक (४-११-१९८४) बिना टिकट भेजने की आज्ञा सं० ९३
Licensed to post without prepayment License No, 93 Post in D.P.S.O. on 2-11-84

न्यूयार्क में सिखों द्वारा भारतीय स्वतन्त्रता दिवस समारोह में गड़बड़

न्यूयार्क, २० अगस्त। न्यूयार्क की घुड़सवार पुलिस की एक टुकड़ी ने २०० सिख प्रदर्शनकारियों की उस भीड़ को रोके रखा जिसने रविवार दोपहर को मैडिसन एवेन्यू के साथ मार्च कर रही भारत की स्वतन्त्रता दिवस परेड को भंग करने की कोशिश की।

भारतीय ऐसोसियेशनों के परिसंघ द्वारा आयोजित रंगारंग शोभायात्रा को एक मील लम्बे मार्ग पर १०,००० से अधिक लोगों ने देखा। शोभायात्रा के आगे आगे प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता राज कपूर, कुर्ता पहने हुए, न्यूयार्क के महापौर श्री ऐडवर्ड कोच वाशिंगटन में भारतीय राजदूत श्री के. एस. बाजपेयी चल रहे थे। जिन अन्य व्यक्तियों ने यात्रा में भाग लिया, उनमें राष्ट्र संघ में भारतीय राजदूत श्री एन. कृष्णन और कौंसल जनरल श्री अरुण पटवर्धन भी सम्मिलित थे।

प्रदर्शनकारियों ने कुछ झांकियों को क्षति पहुंचाई और विशिष्ट व्यक्तियों के मंच को तोड़ने की कोशिश की। इन्हें पुलिस ने हिरासत में ले लिया। कुछ स्थानों पर हाथापाई भी हुई।

उग्र प्रदर्शनकारियों पर क्रुद्ध होकर श्री कोच ने कठोर चेतावनी दी कि किसी भी हालत में हिंसा को सहन नहीं किया जायगा। महापौर ने कहा कि तुर्कों और आर्मेनियनों में ईसराइलियों और अरबों के बीच मतभेद हो सकते हैं, परन्तु हम सभी एक हैं। उन्होंने आगे कहा कि इस देश ने प्रत्येक को जीवन की स्वतन्त्रता, शान्तिपूर्वक प्रदर्शन करने की स्वतन्त्रता प्रदान की है और यही कारण है कि "मैं यहां आपके साथ हूं।

पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को शोभायात्रा की समाप्ति पर उसी रास्ते पर मार्च करने की अनुमति दी थी। काले झण्डे फहराते और 'खालिस्तान' के पट्ट उठाए प्रदर्शनकारियों ने प्रधानमन्त्री के पुतले को नष्ट कर दिया। प्रदर्शनकारियों में महिलाएं और बच्चे भी थे [illegible] नारे भी लगा रहे थे।

सिख प्रदर्शनकारियों के एक प्रवक्ता ने कहा कि उनकी कार्रवाई 'टकराव' नहीं अपितु अमृतसर में हाल की सैनिक कार्रवाई के विरुद्ध प्रतीकस्वरूप प्रदर्शन' था।

इस वर्ष राज कपूर समारोह के मुख्य आकर्षण थे। उन्होंने भारतीयों को याद दिलाया 'हम उस देश के वासी हैं जिस देश में गंगा बहती है।' उन्होंने कहा कि बिना धार्मिक भेदभाव के हम सब भारतीय हैं और एकता हमारी शक्ति है।

श्री बाजपेयी ने कहा— विभिन्नता में एकता ही हमारी शक्ति है और इसी में हमारा भविष्य सुरक्षित है।' वे झांकियां भारतीय विद्या भवन, एयर इण्डिया राज्य व्यापार निगम, गुजरात समाज, राजयोग केन्द्र, हिन्दू केन्द्र, अमरीका में एशियाई भारतीय महिलाएं और भारतीय एसोसिएशनों के परिसंघ ने प्रदान की थी। इस वर्ष की यात्रा में दो अमरीकी बैंडों ने भी भाग लिया। समारोह सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर राष्ट्रपति रीगन, राष्ट्रपति जैलसिंह और प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की ओर से सन्देश प्राप्त हुए।

मुद्रक तथा प्रकाशक ... सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

ओ३म्

सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सृष्टिसम्वत् १९७२९४९०८५] वर्ष १९ अंक २१]

मार्गशीर्ष शु० १ सं० २०४१ रविवार २५ नवम्बर १९८४

दयानन्दाब्द १६० दूरभाष : २७४७७१

वार्षिक मूल्य १६) एक प्रति ४० पैसे

पाकिस्तान की नई शरारत : भारत को खतरा बढ़ा

ब्रिटेन और अमेरिका के सिक्ख बीसा के बिना पाकिस्तान आ सकेंगे

नई दिल्ली, १९-११-८४

प्रेस ट्रस्ट से प्राप्त समाचारके अनुसार पाकिस्तान ने तथा-कथित खालिस्तान के जाने-पहिचाने समर्थकों के, उनके देश में आने पर सब प्रकार की पाबन्दी हटाने का फैसला कर दिया है। क्योंकि पाकिस्तान की सीमा-भारत से मिली हुई है अतः उनको भारत में प्रवेश-करके नई हरकतें पैदा करने में सुविधा हो जायेगी। इस प्रकार यह स्पष्ट हो गया है कि देश की एकता को भंग करने वाले और नये खालिस्तान का निर्माण करने वालों को पाकिस्तान की सरकार ने सभी सहूलियतें और समर्थन देना खुले तोर पर मान लिया है।

पाकिस्तान विदेश सचिव श्री अब्दुल सत्तार के अनुसार राष्ट्रपति जियाउल हक ने दिल्ली में आयोजित एक पत्रकार सम्मेलन में आश्वासन दिया था कि डा० चौहान को पाकिस्तान आने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

स्पष्ट है कि इस प्रकार पाकिस्तान की शत्रुता पूर्ण कार्यवाहियों में तेजी आयेगी और उग्रवादी सिख इस प्रकार पाकिस्तान की मुट्ठी में आ जायेंगे।

सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले ने सरकार और देशवासियों का ध्यान पाकिस्तान समर्थकों और खालिस्तान की मांग करने वालों के इस षड़यन्त्र की ओर आकृष्ट किया है।

सच्चिदानन्द शास्त्री
संयुक्तमन्त्री सार्व० सभा

उनकी हत्या अन्तरराष्ट्रीय साजिश का हिस्सा थी : राजीव

प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने कहाहै कि श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या एक गहरी अन्तरराष्ट्रीय साजिश का हिस्सा थी।

श्रीमती इन्दिरा गांधी के जन्मदिन पर,दिल्ली प्रशासन द्वारा बोट क्लबपर(१९-११-८४)आयोजित एक विशाल सभामें भाषण कररहेथे।

श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या का उद्देश्य केवल एक व्यक्ति की हत्या करना नहीं था बल्कि पूरे देश के टुकड़े-टुकड़े कर देना था। विदेशी ताकतें भी इसमें लगी हुई हैं। वे नही चाहतीं कि हमारा देश मजबूत रहे।

लेकिन हमने दिखा दिया है कि एक हत्यारे की गोलियों से इस देश के टुकड़े नहीं किए जा सकते। कोई हम पर कितना भी दबाव डाले लेकिन हमारा देश किसी के दबाव में आने वाला नहीं। पंडित जवाहरलाल नेहरू और इन्दिरा जी ने इस देश को शक्तिशाली बनाया है। वह दुनियां की हर विध्वंसकारी शक्ति का सामना करेगा। हमारी पूरी ताकत ऐसी शक्तियों को खत्म करने में लगेगी। इसके लिए जनता का सहयोग जरूरी है। जनता को इन ताकतों से निपटने के लिए शक्ति देनी होगी लेकिन साथ ही उसे शान्त भी रहना होगा।

श्री गांधी ने कहा कि इन्दिरा जी की हत्या एक गहरे षड़यन्त्र का परिणाम थी जिसका उद्देश्य देश को विखण्डित करना था।

श्री राजीव गांधी ने लोगों से शान्ति बनाए रखने की अपील करते हुए कहा कि हमें क्रोध और रंज से कोई काम नहीं करना है। ऐसा करने से हम देश के टुकड़े करने में लगी ताकतों को ही फायदा पहुंचायेंगे। हमें इस हत्या का बदला लेना है लेकिन यह बदला हिंसा और आक्रोश से नहीं बल्कि देश में मौजूद आपसी मतभेद खत्म करके एकता बनाकर और देश को मजबूत बनाकर।

श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद हुए दगे-फसादो पर टिप्पणी करते हुए राजीव गांधी ने कहा : इस हत्या से लोगो मे क्रोध उबला, अबला, गुस्से मे थी। लोगों को लगा भारत हिल रहा है। जब भी कोई बड़ा पेड़ गिरता है तो धरती थोड़ी हिलती ही है। लेकिन देश टूटा नहीं। वह दोबारा एक होकर खड़ा हो रहा है। पूरे विश्व को पता चल आएगा कि भारत एक शक्तिशाली लोक तन्त्र बन गया है। हमारा देश हर तरह से आज़ाद है। विश्व में बहुत कम देश हैं जिनमें लोकतन्त्र है। भारत उनमें से एक है। पंडित जवाहरलाल नेहरू और इन्दिरा गांधी जी ने इसे दुनिया की शक्तियों का सामना करने लायक बनाया हैं।

श्री गाधी ने कहा : पहली बार अपने जन्म दिन पर इन्दिरा जी हमारे बीच नहीं हैं। लेकिन जब एक व्यक्ति एक स्तर से ऊपर उठ जाता है तो वह हमे छोड़कर नहीं जाता। इन्दिरा जी मरी नहीं। उनकी ताकत आज भी हमारे साथ है। वह ताकत देश को मजबूत कर रही है और देश को आगे बढ़ायेगी।

सम्पादक—[illegible]

स्वाधीनता सेनानी सम्मान योजना के अन्तर्गत गृहमंत्रालय ने आर्यसमाज के हैदराबाद सत्याग्रह को माना

—भद्रदत्त स्नातक

सन् १९७२ में स्वतन्त्रता रजत जयन्ती के अवसर पर केन्द्रीय सरकार ने स्वतन्त्रता सेनानी पेंशन का श्री गणेश किया। यह ५००० रुपए वार्षिक आय से कम वालों को ६ मास का कारावास, भूमिगत नजरबन्द (भारत की भूमि में होने पर) या सम्पत्ति जब्त होने, आन्दोलन के दौरान अपंग होने अथवा रोजगारके स्रोत समाप्त हो जाने पर मिलती थी। आजादी के पूर्व के रियासतों में प्रजातन्त्री अधिकारों तथा भारत में विलय के प्रश्न पर पीड़ितों को भी इसमें शामिल किया गया था। बाद मे १९८० में ५००० रुपए की सीमा हटाकर अन्य रियायते भी दिया जाना शुरू करके उसका नाम सेनानी पेंशन की बजाय स्वाधीनता सेनानी सम्मान योजना १९८० कर दिया गया। इस दिशा में आवश्यक प्रशासनिक एवं वित्तीय कदम केन्द्रीय सरकार ने उठाए। भारत में विलय के प्रश्न पर पीड़ितों को भी इसमें शामिल किया गया था। बाद में १९८० में ५०००) की सीमा हटाकर अन्य रियायते भी दिया जाना शुरु करके उसका नाम स्वतन्त्रता सेनानी पेंशन की बजाय स्वाधीनता सेनानी सम्मानयोजना १९८०कर दियागया,इस दिशामें आवश्यक प्रशासनिक एव वित्तीय कदम केन्द्रीय सरकार ने उठाए। भारत सरकार ने इस काम को करने के लिए गृहमन्त्रालय के अन्तर्गत गृहमन्त्री और राज्य गृहमन्त्रियो के अतिरिक्त आठ ससद सदस्यो की एक समिति गठित की। इससे पहले यह नही बनी हुई थी। गत वर्ष तक इसकी ६ बैठकों मे स्वीकृत अनेक सुझावो को सरकार ने माना है। भूतपूर्व ससद सदस्यो को यह सम्मान पेंशन अतिरिक्त दी जाती है। वर्तमान में केन्द्र सरकार इन सम्मानितो को ३००) और इनकी विधवा पत्नी को २००) मासिक देती है।

१९७२ की ताम्रपत्र देने की योजना १९७६ में बन्द कर दी गई। परन्तु १९८० मे वह पुन जारी की गई और केन्द्रीय सरकार के अनुरोध पर उनको नि शुल्क चिकित्सा, यात्रा आदि की सुविधा भी बहुत सी राज्य सरकारे दे रही हैं। पेंशन की सीमा जो राज्य सरकारो के द्वारा दी जाती है, भिन्न-भिन्न है। १००-१५० के बीच। इस सम्बन्ध में धार्मिक आन्दोलन मानकर आर्यसमाज ने सामूहिक रूप से हैदराबाद आर्य सत्याग्रह १९३९ के पीड़ितो के लिए कोई मांग नही की। भूतपूर्व निजाम रियासत के अधिकांश आर्य समाजी पीडितो ने व्यक्तिगत रूप मे आन्ध्रप्रदेश कर्नाटक और महाराष्ट्र राज्यों के कांग्रेसी नेताओं के प्रमाण पत्रों, जेल तथा यातनाओं के प्रमाण स्वरूप १९७२ की योजनाओं के तहत यह लाभ उठाया है। शेष भारत मे भी कुछ लोगों को आर्य समाज नाम के छोड़ देने पर पेंशन मिली है। खेद यही है कि आज तक इस सम्बन्ध में समवेत रूप मे कोई प्रयत्न नही हुआ है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्तमान प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने गत वर्ष २० नवम्बर को तत्कालीन प्रधानमन्त्री स्व० श्रीमती इन्दिरा गांधी को एक विस्तृत पत्र लिखकर ध्यान खीचा। जिस पर गृहमन्त्रालय ने हैदराबाद के आर्यसमाज के १९३९ के सत्याग्रह को इस योजना के अन्तर्गत अस्वीकार कर दिया।

इन पक्तियों के लेखक ने भारत सरकार की सेवा में प्रविष्ट होते समय १९५३ मे स्पष्ट रूप से सघ लोकसेवा आयोग को लिख दिया था कि हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में लगभग ६ मास वह जेल में रहा था। जब १९७२ की योजना स्वतन्त्रता सेनानियों के लिये निकली तब उसने १९७४ मे ताम्रपत्र पाने (वेतन ५००० वार्षिक से ज्यादा था) और इस श्रेणी के सरकारी कर्मचारियों के लिये दी जाने वाली रियायतों के लिए न्याय पूर्वक मांग की परन्तु कुछ नहीं बना। सरकार का उत्तर था कि उक्त आन्दोलन को सरकार ने स्वतन्त्रता आन्दोलन का अंश अभी तक नही माना है। इस सम्बन्ध में तत्कालीन सूचनामन्त्री को इससे पूर्व भी जो आवेदन दिए गए थे और गृहमन्त्रालय से उनका उत्तर नकारात्मक मिला। मेरे इस मामले के बारे में सार्वदेशिक सभा के भू०पू० प्रधान एवं संसद सदस्य (स्व०) घनश्यामसिह गुप्त एवं० भू०पू० संसद सदस्य और मेरे जेल के सहयात्री श्री नरदेव स्नातक ने सम्बन्धित मन्त्रियों को पत्र लिखे और आर्यसमाज आन्दोलन के दूरगामी राष्ट्रीय प्रभाव का उल्लेख किया, परन्तु सरकार ने कुछ नही माना। जनता गवर्नमेन्ट के गृहमन्त्री चौ० चरणसिह से आवेदन करने पर भी परिणाम शून्य रहा।

अन्त मे मैंने २८-१२-८३ को स्व० प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी को अन्तिम पत्र डाक द्वारा व्यक्तिगत सबोधन के साथ लिखा जिसमे सरकार के पिछले निर्णयो की असफलता और पुनर्विचार के लिए लिखा गया था। उन्होने वह पत्र गृहमन्त्रालय को आवश्यक कार्यवाही के लिए भेजदिया। उधर मैंने अखिल भारतीय स्वाधीनता सेनानी सगठन को विशद नोट और परिशिष्टों के साथ भेजने के अलावा इस सम्बन्ध मे हिन्दी अंग्रेजी पत्रों में आवाज उठाई और संगठन के सदस्यो के साथ बैठके की।

आर्य समाजी जनता को यह जानकर हर्ष होगा कि गृहमन्त्रालय की सम्बन्धित सलाहकार समिति ने सर्वसम्मति से हैदराबाद के आर्य समाज सत्याग्रह को स्वाधीनता सघर्ष के रूप मे स्वीकार कर लिया है और मन्त्रिमण्डल की मजूरी के लिए भेजने का निश्चय किया है।

आशा है कि स्व० इन्दिरा गांधी के जीवनकाल में जो निर्णय लिया गया है, उसे मन्त्रिमण्डल की भी स्वीकृति अवश्य प्राप्त होगी। सभा प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले इस काम को शीघ्र सम्पन्न कराने के लिए उद्योग कर रहे हैं। एक युग के बाद उन स्वाधीनता सेनानियों और उनके वारिसों के लिए यह एक सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

सम्पादकीय

गंगा और हिमालय की भांति ही वेद से भारत का निर्माण हुआ : इन्दिरा गांधी

देश के कोने-कोने में वेदों का डंका बजा देने का आह्वान

वेदों के सच्चे ज्ञान से विरत हो जाने से हमारा देश कमजोर हो गया है और हमारी आन्तरिक शक्ति नष्ट हो गई है। जब कभी भी और जहां कहीं भी बड़ी संख्या में लोगों को ज्ञान के स्रोत तक पहुंचाने से रोका गया और चन्द लोग शक्ति तथा ज्ञान के भण्डारी समझे गए हैं पतन शुरु हुआ है। यही भारत में हुआ।

वेदों से भारत का निर्माण

हिमालय और गंगा की तरह ही वेदों से भारत का निर्माण हुआ है। इनके बिना ऐसा भारत नहीं होता। वेदों ने हमें जो सबसे महान् मूल्य प्रदान किये हैं वे हैं ऋत् जिसका अर्थ होता है शास्वत नियम, सत्य, तपस और अनुशासन।

इस देश में हमारे पूर्वजों ने अपनी सन्तान को, वेद रामायण और महाभारत जैसी महान् पुस्तकें विरासत में दीं जिनमें प्राचीन ज्ञान का भंडार है। ऐसे परिवार जो बहुत शिक्षित नहीं हैं, उनमें भी ये ग्रन्थ काफी प्रचलित हुए।

जिन लोगों ने कई महान् आध्यात्मिक मार्गों का अनुसरण किया है उनका स्रोत वेदों में मिलताहै जैसे ज्ञान-मार्ग, कर्म-मार्ग भक्ति-मार्ग वेदों में न केवल ईश्वर सृष्टि और आत्मा के सम्बन्ध में विचार प्रकट किये गये हैं बल्कि ये सबसे उत्तम काव्य के स्रोत भी हैं।

श्रीमती गांधी ने कहा कि वेदों में हमें उत्कृष्ट ज्ञान के उदाहरण मिलते हैं। उनमें से एक ऐसी पंक्ति है जो हमारे देश के संचित ज्ञान का सार है।

"एकम् सत्यम् विप्रा बहुधा वदन्ति'।

अर्थात् सत्य एक ही है लेकिन ज्ञानी पुरुष इसे कई प्रकार से कहते हैं। ऋग्वेद कहता है—'सभी दिव्य नाम हमारी श्रद्धाञ्जलि, प्रशंसा और पूजा के योग्य है। प्राचीन ऋषियों का रुढ़िवादिता से मुक्ति का एक सुन्दर उदाहरण सृष्टि-सूक्त में मिलता है।

वेदों ने हमें यह शिक्षा दी कि जाति और वर्ग के प्रति अपनी संकीर्ण निष्ठा से हम ऊपर उठे। उन्होंने सम्-ज्ञानम् का हमे उपदेश दिया, जिसका अर्थ है कि न केवल अपने लोगों बल्कि सारे संसार के प्राणियों को समझकर हम एकता की खोज करें—"हमारा मन एक हो, हमारे उद्देश्य एक हों और हमारे अन्दर जो दिव्यता है, उसके विरुद्ध संघर्ष न करें। क्या इससे कोई उत्तम विचार हो सकता है कि "हमारे हृदय समान हों और द्वेष से हम मुक्त रहें।"

विडम्बना है कि इतनी महान् विरासत से हमारी जनता वंचित रही। कुछ इस प्रकार से कहा गया था कि वेदों की शिक्षा स्त्रियों को न तो देनी चाहिए, न उन्हें लेनी चाहिए। इसके साथ हमारी अधिकांश जनता जिनमें किसान शिल्पकार आदि हैं, उन्हें भी वेदों की शिक्षा के अधिकार से वंचित रखा गया। आवश्यकता इस बात की है कि वेदों की शिक्षाका प्रचार देश के कोने-कोने में किया जाए।

समय-समय पर सन्त महात्मा हुए, जिन्होंने यह दीवार तोड़ी और लोगों को इस प्रकार का ज्ञान पाने के लिये प्रोत्साहन दिया। पिछली शताब्दि में महर्षि दयानन्द जैसे प्रवर्तकों ने हमारे ज्ञान के स्रोत के बारे में उपदेश दिए।

(११-४-१९७३ को करोल बाग दिल्ली में आयोजित वेद स्थापना समारोह में दिए भाषण का सार)

नमस्ते का महत्व

मास्को का प्रेस ट्रस्ट द्वारा १७-२-१९६५ को प्रसारित समाचार।

"रुस के राष्ट्रपति मिकोयान से मिलने के बाद उन्होंने यह रहस्य खोला कि हाथ जोड़कर नमस्ते करने से हाथ मिलाने की परम्परा से पैदा हुई छूत नहीं लगती। यदि रुस के नागरिक नमस्ते करने लगे तो उन्हें फसली बुखार न आए।"

—इन्दिरा गांधी

गो महत्व

"गऊ धर्म का अंग नहीं है। यह प्राचीन काल से ही हमारी खेती और आर्थिक समृद्धि का मूलाधार रही है साथ ही जनता इसके सर्वोपरि दूध और दूध उत्पादन पर निर्भर रही है। इसी कारण से हमारी जनता इसका विशेष ध्यान रखती है।"

—इन्दिरा गांधी

(गार्डनर अमेरिका के एक जूनियर हाई स्कूल के विद्यार्थी समूह के बहुसंख्यक पत्रों मे पूछे प्रश्नों के उत्तर का अंश जो उन्हे १-११-८४ को प्राप्त हुआ और जो छात्रों ने मौन रहकर सुना—४-११-८४ को प्रसारित समाचार से)

एकला चालो रे

(१) यदि तुम्हारी आवाज को कोई न सुने तब अकेले ही चल पड़ो।

(२) यदि वे मारे डर के चुपचाप आपत्ति का सामना न करें तो प्रसन्न रहना।

(३) अपने मस्तिष्क को खोलो और अकेले ही बोलो।

(४) यदि बीहड़ जंगल से पार निकलने में तुम्हारा साथ न दें या तुम्हे अकेला छोड़ दे तब भी प्रसन्न चित्त रहना।

(५) रक्त से सिंचित एवं चिन्हित मार्ग के कांटों पर दृढ़ता पूर्वक पैर रखो और अकेले ही चल पड़ो।

(६) यदि तूफान से आच्छादित रात में उन्हे रोशनी दिखाने की हिम्मत न हो तब भी प्रसन्न रहो।

(७) अपने ही हृदय में प्रकाश की ज्योति जगाओ और इस प्रकार तुम स्वयं मार्ग दर्शक रोशनी बनो।

(श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर की इस सुप्रसिद्ध बंगला कविता के अंग्रेजी अनुवाद का हिन्दी रुपान्तर)

ग्रन्थियों की हां, ना

प्रमुख ग्रन्थियों के बयानों से लोग हैरान हैं। सभ्य कहे जाने वाले संसार में ऐसे लोग नहीं होगे जो धोखेबाजी और कायरता से की गई इन्दिरा गांधी की हत्या पर चुप रहे हों। ग्रन्थियों की तरफ से भी एक बयान हिंसा की निन्दा और मृत्यु पर शोक का आया था। पर अकाल तख्त के जत्थेदार कृपाल सिंह ने यह बताना जरुरी समझा कि उन्होंने ऐसा कोई बयान नही दिया है। फिर हिन्दू-सिख एकता को लेकर राष्ट्रपति को उनके एक तार की खबर छपी। ग्रन्थियों ने फिर कहा कि उन्होने ऐसा कोई तार नही भेजा। दिल्ली अकाली दल के बख्शी जगदेव सिंह को बल्कि उन्होने अपने सामने पेश होने को कहा है क्योंकि तार की खबर उनके बयान मे छपी थी। अब या तो प्रमुख ग्रंथियों को इस पर एतराज हो सकता है कि जो वे कहते और करते

सामायिक चर्चा–

एक जिज्ञासा का समाधान

बिहार के एक सज्जन लिखते हैं :

"जब कि वेद में आर्य और दस्यु शब्द पाए जाते हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि वर्णाश्रम की व्यवस्था स्मृति कालीन है परन्तु यह कृत्रिम और अहितकर है।

वर्तमान आर्यों (हिन्दुओं) की पूरी संख्या अगर ४० करोड़ की भी मानी जाए तो करीब ८ करोड़ लोग क्षत्रिय हो सकते हैं जिनमें ४ करोड़ करीब स्त्रियां होंगी फिर तीन अन्य आश्रम मे रहने के कारण करीब क्या संख्या १ करोड़ रहेगे। गृहस्थ क्षत्रिय जिन्हे वास्तव में लड़ने का अधिकार और कार्य होगा इनमे रोगी आदि निकालकर और सैन्य संगठन के अन्य दो भागों पर नियुक्ति के पश्चात करीब २०-२१ लाख क्षत्रिय फील्ड सैनिक हो सकेंगे। क्या रुस इत्यादि देशो के वर्तमान करोड़ों सैन्य डिवीजन तथा ऐसे ही अन्य शत प्रतिशत जन सैन्य देश के सामने ये टिक सकते है ?

अगर नही तो यह वर्ण व्यवस्था निस्सन्देह त्रुटि पूर्ण, अहितकर और त्याज्य है। यो तो आश्रम तथा वर्ण के पक्षपाती तथा धर्मावलम्बी नही है परन्तु बौद्धिक क्रांति करने वाला आर्य समाज भी इसी का पक्षपाती और प्रचारक है। धर्म के नाम पर इस व्यवस्था का स्थायित्व कहां तक हितकर है ?"

निस्सन्देह

"निस्सन्देह इस समय वैदिक वर्णव्यवस्था के सांचे में संसार के किसी भी समाज का संगठन ढला हुआ प्रतीत नहीं होता। भारत वर्ष में यह जन्मगत जात पांत के रूप में परिणत हुई है जो वैदिक वर्णाश्रम धर्म की भावना के विरुद्ध है परन्तु इसका अर्थ यह नही है कि वर्णाश्रम व्यवस्था स्वयं त्रुटिपूर्ण है। त्रुटि तो उसके विशुद्ध रूप के विकृत हो जाने और उसके दुरुपयोग से उत्पन्न हुई है।

वर्ण व्यवस्था वेद प्रतिपादित है इसके प्रमाण के लिए निम्नलिखित वेद मन्त्रो को देखें।

ब्राह्मणोस्य मुखमासीद बाहू राजन्यः कृतः।
उरु तदस्य यद वैश्य, पद्भ्यांशूद्रो अजायत ॥
ऋ० १०।९०।१० मनु० ३१।१०

ब्राह्मणे ब्राह्मण, क्षत्राय राजन्यं,
मरुद्भ्यो वैश्यं तपसे शूद्रम् तमसे ॥यजु० ३०। ४

इन तथा अन्य अनेक मन्त्रो मे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र ये शब्द स्पष्ट आए हैं और उनके कर्तव्यों का उत्तमता से निर्देश किया गया है।

वेद में मनुष्यों का "आर्य और दस्यु" का विभाजन मानवीय विकास का द्योतक है और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र का विभाजन कार्य विभाजन की दृष्टि से है। इन चारो वर्णों के व्यक्तियों को अपनी योग्यता और शक्ति के अनुसार कार्यों का अनुष्ठान करते हुए भी आर्य बना बना बने रहना परमावश्यक होता है और यही उनके जीवन के विकास का पैमाना होता है।

नही उसकी खबर क्यों छपती है या फिर वे कुछ कहते हैं और दबाव आता है तो उसका खंडन कर देते हैं।

इन दोनों ही सूरतो मे उनकी छवि कोई सुधरती नही और उनके बारे मे देश के लोगों के मन मे तरह-तरह के संदेह पैदा होते हैं। इन्दिरा गांधी की हत्या की निन्दा और हिन्दू सिख एकता की अपील कोई विवाद के विषय नहीं है जिन पर प्रमुख ग्रन्थियों का चुप रहना ही बेहतर है। हत्या की भर्त्सना और हिन्दू-सिख एकता की अपील कर के वे गुरु नानक के धर्म का ही पालन करेंगे। सच पूछिए तो इस पर चुप रहना धर्म से विमुख होना है। और इस बात पर जोर देना कि उन्होने वह सब नही कहा जो उनके नाम से छपा है यही बताता है कि या तो उग्रवादियों का डर उन पर बना हुआ है या अकालियों और शिरोमणि कमेटी के नेता उन्हे आगे कर के ऐसे काम करना चाहते हैं जिनसे तनाव बना रहे। कल्पना करना भी मुश्किल है कि धार्मिक नेता पिछले सप्ताह की घटनाओं के बावजूद चुप रह सकते हैं और अपने समाज को नेतृत्व देने मे एक कदम आगे और दो कदम पीछे हट सकते हैं। (जनसत्ता ९-११-८४)

वैदिक वर्ण व्यवस्था की पुनः स्थापना ही आज के अशान्त संसार की महौषधि है। यह बात देश विदेश के विद्वानों और समाज शास्त्रियों के लेखों भाषणों और ग्रन्थों से प्रमाणित है।

वैदिक वर्ण व्यवस्था किसी एक देश के निवासियों के लिए अभिप्रेत नहीं हैं यह तो विश्व के प्राणियों के लिए अभिप्रेत है।

इसलिए उसका प्रभाव केवल भारत वर्ष तक सीमित रखना और उसके उदाहरण से इसकी निस्सारता सिद्ध करना ठीक नहीं है।

आजकल की सेना के सिपाहियों के चुनाव या भरती में यह ख्याल नहीं रखा जाता कि सैनिक जन्म गत क्षत्रिय वंश का ही होना चाहिए। इस भेद-भाव के बिना सब वर्ण के लोग भरती होते और सेना मे लिए जाते हैं। क्षत्रियों की वीरता की परीक्षा भी अब भूतकाल की वस्तु बन गई। आज का युद्ध शारीरिक पुरुषार्थ व शक्ति का युद्ध नही रह गया है। अब तो एटम बम, उदजन बम आदि बमों, गैसों, बारूदों, कीटाणुओं आदि साइन्स के आविष्कारों का युद्ध है। जय और पराजय का निर्णय सैनिक की संख्या व वीरता पर नहीं अपितु अधिक से अधिक मारक और घातक युद्धोपकरणों के संग्रह पर निर्भर है। ऐसी अवस्था मे कौन क्षत्रिय है कौन नहीं है। क्षत्रिय कम है या अधिक हैं, इस प्रकार की जिज्ञासाओ का महत्व नही है।

वर्ण व्यवस्था के सिद्धान्तानुसार क्षत्रियों की भारत मे संख्या के विषय में जो मनघडन्त कल्पना की गई है उसमे कुछ सार नही। विशेष आपत्ति के समय तो ब्राह्मण, वैश्य और शूद्र भी शास्त्रानुसार शस्त्र ग्रहण कर सकते है। ऐसी विशेष अवस्था में भी कहा है कि : विशं विशं युद्धाय सन्निशाधि।

अर्थात प्रत्येक प्रजाजन को युद्ध के लिए तैयार करो पर वेदव्यवस्था विशेष आपत्ति के अवसरों के लिए है सामान्यतः वर्णाश्रम व्यवस्थानुसार कार्य करने से सबका कल्याण हो सकता है।

राजनैतिक दखलंदाजी के खिलाफ

प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी का यह आश्वासन अपनी जगह सही है कि दिल्ली में लूट के मामलों की पुलिस छानबीन में राजनैतिक दखलन्दाजी नहीं होगी। पर सिर्फ इतने से बात नहीं बनेगी। लूट का माल बरामद करने या लुटेरों की गिरफ्तारी मे आगे भी कुछ मुद्दे है। इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद जो बातें सामने आ रही हैं उनसे इस तथ्य की पुष्टि होती है कि यह हत्या किसी क्षणिक आवेश का नतीजा नहीं थी बल्कि किसी गहरी साजिश की मुखर कड़ी थी। यदि यह निष्कर्ष सही है तो यह समझना गलत न होगा कि प्रधानमन्त्री की हिफाजत के लिए बनाई गई मशीनरी कई जगह टूटी हुई थी या टूट रही थी। इससे आगे यह भी संकेत मिलता है कि उस मशीनरी पर नजर रखने वाला पुलिस तन्त्र भी पूरे तरह काम नही कर रहा था। दिल्ली ही नही वह सारे देश मे सड़ा गला हो रहा है। आखिर ऐसा क्यों कर हुआ ? क्या यह मानना गलत होगा कि पुलिस और प्रशासन मे राजनीति करने वालों की दखलन्दाजी से पुलिस और प्रशासन के हाथ पैर बंध गए हैं और वह चाहकर भी अपनी ड्यूटी करने मे असमर्थ हो चली है।

मसलन निरंकारी बाबा और उसके बाद लाला जगतनारायण की हत्या के जुर्म मे गिरफ्तार भिंडरावाले को कानून से ऊपर रखने की कोशिश नहीं की जाती और स्वर्ण मन्दिर के दरवाजे पर अटवाल की हत्या के साथ पुलिस हरकत मे आगे आ गई होती तो वह सब होने की नौबत नहीं आती जो जून मे हुआ। दरअसल हत्या और हत्या में फर्क करने का सिलसिला ही गलत है। अपराध अपराध है और जुर्म करने वाला हर कोई कानून की निगाह में मुजरिम है इस सोच में खम पड़ जाने की वजह से ही कई बार कुछ अपराध क्षम्य हो जाते हैं। इन्दिरा गांधी की हत्या भी एक तरह से उसी माहौल का नतीजा है जिसमे पुलिस और प्रशासन को हर बात के लिये 'ऊपर' से आदेश का इन्तजार रहता है। लोगों की जानमाल की हिफाजत का जिम्मा जिस तन्त्र पर है यदि वह अपना कानूनी फर्ज अदा करने को आजाद नहीं है तो उसके अस्तित्व का क्या मोल रह जाता है ? जहां शासक खुद नीतिबद्ध नहीं है, वहां शासन के विभिन्न अंगों से नीति बद्धता की उम्मीद करना आकाशकुसुम उगाने की कोशिश करने के बराबर है। पुलिस क्रूर अथवा निकम्मी है तो इसकी कोई वजह तो होगी ? असली मुद्दा यही है। इस नजरिये से देखें तो श्री राजीव गांधी को प्रशासन में पूरी सफाई का संकल्प करना पड़ेगा। (न० भा० ८-११-८४)

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

अछूतोद्धार के व्रती हुतात्मा :

भक्त फूलसिंह

भक्त फूलसिंह का जन्म ग्राम माहरा तहसील सोनीपत जिला रोहतक में मार्ग शीर्ष सम्वत् १९४० (सन् १८८३ ई०) में चौधरी बाबर सिंह के घर में हुआ। चौधरी बाबर बड़े परिश्रमी, साहसी और उपकारी मनुष्य थे। वे न तो किसी पर अत्याचार करते थे और न किसी का अत्याचार ही सहन करते थे।

शिक्षा व सर्विस

फूलसिंह ने सम्वत् १८५७ में मिडिल पास किया। १९०१ में पटवारी की परीक्षा पास करके ग्राम उनीला जिला करनाल में पटवारी हो गए।

बूचड़खाना न बनने दिया

१९१६ मे करनाल के संभालका ग्राम में सरकार ने बूचड़खाना खोलने की आज्ञा निकाली भक्त फूलसिंह उन दिनों ग्राम बुवाना जिला रोहतक में पटवारी थे। जब उन्हें गोहत्यागृह खुलने का समाचार मिला तो उन्होंने छुट्टी लेली और दिन रात घूम घूम कर इस बूचड़खाने के विरुद्ध लोकमत तैयार किया और २०००) दो हजार रुपए भी एकत्र कर लिए। बूचड़खाना खुलने की नियत तिथि पर हजारों नवयुवकों को उस स्थान पर ले गए जो मरने मारने के लिए उद्यत थे। जब अधिकारी गोहत्या करने के लिए नियत स्थान पर आए तो हजारों हथियारबन्द नवयुवकों को देखकर उन्हें गोहत्या करने की हिम्मत न पड़ी और कलक्टर को इस योजना को निरस्त करने की घोषणा करनी पड़ी। भक्त फूलसिंह की यह विजय सर्वसाधारण मे विख्यात हो गयी।

आर्य समाज में

पानीपत में भक्त फूलसिंह पटवारी थे। वहां किसी पंजाबी मित्र की प्रेरणा पर मांस भक्षण करने लग गए। उनके साथियों को जब इस बात का पता लगा तो वे एक दिन फूलसिंह को आर्य समाज मे ले गए और वहां उनका यज्ञोपवीत संस्कार कर दिया। यज्ञोपवीत पहनते ही फूलसिंह एक सभ्य आर्य बन गया और १९१७ में पटवारगिरि छोड़कर आर्य सेवक बन गए। आर्य बनते ही सबसे पहले फूलसिंह का ध्यान "कृतज्ञता" के अनुसार अपने किये कर्मों की ओर गया और उनके समक्ष रिश्वत आ गयी, जिस से पश्चाताप की ज्वाला हृदय में भभक उठी। अन्दर से आवाज आई कि यदि मैं कुछ समय पहले आर्य समाज में आ जाता तो इस पाप का भागी न बनता। इस बात का चिन्तन फूलसिंह कर ही रहा था कि मन में एक विचार उठा और जहां तक संभव था रिश्वत का अन्दाज लगाया और अपनी भूमि पांच हजार रुपये में बेचकर पंचों के सामने जिस जिससे रिश्वत ली थी उस उसको वापस करके क्षमा मांग ली, हिसाब करने पर रिश्वत का जो रुपया वापस किया गया वह पांच हजार के ही लगभग था। रिश्वत का पैसा चुकाने के बाद मन में कुछ सन्तोष हुआ और कहा कि अब मैं आर्य समाज का काम करने के योग्य हो गया हूं।

गुरुकुल भैंसवाल की स्थापना

भक्त फूलसिंह अब अपने को धर्म सेवा के कुछ योग्य समझने लगे थे। उन्होंने प्रस्ताव किया कि वैदिक धर्म के प्रचारक तैयार करने के लिए एक उपदेशक विद्यालय इस प्रान्त में खोला जाय श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जिन्हें हरियाणा में वैदिक धर्म प्रचार का बड़ा श्रेय प्राप्त रहा था। उन्हें गुरुकुल खोलने की सम्मति दी। इसके अनुसार भक्त जी ने २३ मार्च १९२० को गुरुकुल भैंसवाल की स्थापना की।

कन्या गुरुकुल की स्थापना

स्त्रियों में शिक्षा प्रचारार्थ उन्होंने १९२६ में खानपुर(रोहतक) के जंगल में कन्या गुरुकुल की स्थापना की। बाद में भक्त जी की दो पुत्रियों सुभी सुभाषिणी तथा गुणवती जी ने इसके संचालन का भार संभाला।

एक हिन्दू कन्या को जो एक गरीब विधवा की पुत्री थी भक्त जी चंदेली गांव के मुसलमानों से छुड़ा कर लाए और उसकी माता के सुपुर्द किया।

अथ सामवेद संहिता

(दो०) गुणपोषी हिय पुष्कर, ज्ञान कोष भरपूर,
इन दो साधन के बिना, समझो प्रभु अतिदूर।
(छं. १०) ज्योति रूप अग्रनेता ! है विनय करो करुणा हम पर,
करे नष्ट अज्ञान-तिमिर जो चमका दो वह तेज प्रखर।
महत्सुरक्षा हमें दीजिए निज प्रकाश का देकर दान,
आप हमारे अन्तरंग के परम इष्ट हैं ज्योति निधान।
'देव' नाम बहु अर्थवान पद, दान और द्योतन आशयप्रद,
दानी परम, परम ज्योतिर्मय, प्रभो ! देव हो तुम निःसंशय,
हमें कराओ सुलभ सुदानी, 'विवस्वन्त' इक जन विज्ञानी,
तीन प्रयोजन सिद्ध हमारे, करे, हरे अभाव जो सारे,
उत्तम ज्ञान हमें वह देवे, विषयादि से बचा जो लेवे,
तत्त्व ज्ञान संसार-सार में हम अबोध, बिन गुरु, विचार में,
विषय जाल की चमक लुभाती, प्रतिपल पथ से हमे डिगाती
हमें मिले ज्ञानी का रक्षण, सिद्ध करो यह प्रथम प्रयोजन,
तेज हमें ज्ञान ही दिलाए, विषय-पंक से हमें बचाए,
हमें न फंसने दे भोगों में, जीर्ण न होने दे रोगों में,
भोगासक्ति न भोगे हमको जब सदज्ञान मेट दे भ्रम को,
इस प्रकार हम तेजस्वी बन, सिद्ध करे दूसरा प्रयोजन
हमें न ज्ञान सृष्टि-विद्या का भान नहीं प्रभु तव महिमा का,
शब्द ब्रह्म का पीकर आसव, देख सके तव रचना-वैभव,
इस विधि तव महिमा अनुभव कर तवदर्शन साक्षात् किए पर
निर्मल हो सब गुणगण लाएं 'वामदेव' ऋषि हम बन पाएं।
(दो०) ज्ञानी के सम्पर्क से, विषय-जाल से मुक्त,
भोग-जयी तेजस्वि बन हो हम प्रभु से युक्त।

—ओमदत्त भारद्वाज ब्यावरा

ज्ञानी का सम्पर्क

(१०) अग्ने विवस्वदा भरास्मभ्यमूतये महे।
देवो ह्यसि नो दृशे॥

हैदराबाद सत्याग्रह

हैदराबाद सत्याग्रह के लिए भक्त जी जा रहे थे। सत्याग्रहियों ने जत्था भी उनके साथ तय कर लिया था परन्तु लोगों की इस प्रेरणा पर कि उनकी अनुपस्थिति मे सत्याग्रहियों की भरती का काम सुचारु रूप से न हो सकेगा। भक्त जी ने जाना स्थगित कर दिया। स्वामी ब्रह्मानन्द जी ११ मई १९३९ को एक सौ सत्याग्रहियों का जत्था लेकर हैदराबाद जा रहे थे। उन्हें मानपत्र व ४००) की थैली भेंट करने के लिए भक्त जी ब्रह्मचारियों और कार्यकर्ताओं के साथ गुरुकुल भैंसवाल से रोहतक आ रहे थे। रोहतक की सड़क जो बड़ी मस्जिद के पास से गुजरती है वहां पर मुसलमानों ने अकारण ही इनकी मंडली पर आक्रमण कर दिया। भक्त जी पर अनेकों लाठियां बरसीं। इनके सहयोगी श्री हरिद्वारी सिंह का सिर फट गया तथा श्री स्वरूप लाल जी का हाथ टूट गया अन्यों के भी भारी चोटें आईं। घायलों को हस्पताल पहुंचाया गया। मुकदमा चला परन्तु मुसलमानों के सरदारों ने मुआफी (क्षमा) मांग लेने पर भक्त जी ने उन्हें क्षमा कर दिया और कोई कठोर शब्द नहीं कहा। इस सत्याग्रह के लिये भक्त जी ने १००० सत्याग्रही भेजे थे।

हरिजनोद्धार

हरिजनों की शुद्धि उनके सुधार, उद्धार और उनके नागरिक अधिकारों की रक्षार्थ भक्त जी ने महान एवं सराहनीय कार्य किया था। मुसलमान रांघड़ों के ग्राम मोठ (हिसार) में मुसलमानों ने चमारों के खोदे हुए कुए को मिट्टी आदि से बन्द कर दिया था भक्त जी वहां पहुंचे और कुए को खुलवाने का प्रयास किया। भक्त जी एक मुसलमान के दरवाजे पर जा बैठे और मुसलमानों से कुआ खोलने की प्रार्थना करने लगे। जब तीन दिन तक भक्त जी वहां भूखे प्यासे पड़े रहे और दरवाजे से न उठें तो दस बारह मुसलमान इन्हें जबरदस्ती उठाकर ले चले और बेइज्जती करते हुए तथा मारने की धमकी देते हुए गांव से बाहर १ मील दूर जंगल मे छोड़ आए। वहां से एक

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सार्वदेशिक सभा-प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले तथा महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी का आसाम, नागालैंड का दौरा

मैं बहुत समय से इस प्रतीक्षा मे था कब वह शुभ दिन आयेगा जब आर्यसमाज सेवा योजनाओ के माध्यम से राष्ट्र के पिछडे हुए भागो मे पहुच कर वेद की विचारधारा का परिचय देगा। स्वर्गीय श्री लाल बहादुर शास्त्री ने अपने प्रधानमन्त्री काल मे प्रेरणा देकर सार्वदेशिक सभा के आज के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले और मुझे बुलाकर नागालैण्ड और आसाम मे ईसाइयो की बढती गतिविधि की ओर हमारा ध्यान दिलाया और प्रेरणा की कि इन राष्ट्र-विरोधी गतिविधियो पर केवल आर्यसमाज ही ऐसी संस्था है जो रोक लगा सकता है। उनकी प्रेरणा से हम दोनों ने डंफू मे सर्वप्रथम एक विद्यालय की स्थापना की जिसका कार्य धीरे-धीरे विकसित होता रहा। विषय के विस्तार मे न जाते हुये मुझे प्रसन्नता है कि आज भारत के उत्तर पूर्वाञ्चल भाग में अखिल भारतीय दयानन्द सेवा आश्रम संघ के माध्यम से सार्वदेशिक सभा ने जो सेवा कार्य और प्रचार योजना उस क्षेत्र में चलाई है। उसे देखकर प्रसन्नता ही नही अपितु विश्वास होता है कि आर्य समाज उस क्षेत्र मे बढती ईसाईकरण की बाढ को रोक सकेगा तथा उस क्षेत्र के भोले भाले पिछडे वर्ग को ईसाइयत का शिकार न होने देगा।

श्री पृथ्वीराज शास्त्री पर्याप्त समय से उस क्षेत्र मे संघ के माध्यम से शिक्षा एव सेवा का विस्तार करते हुए वेद प्रचार कार्य भी कर रहे हैं। उनकी साधना का फल है कि उन क्षेत्रो मे आज आर्यसमाज की स्थापना हो चुकी है लोग सन्ध्या उपासना का पुनीत कर्म करते है संघ द्वारा दयानन्द विद्या निकेतन नाम से चलाये जा रहे विद्यालयो मे सन्ध्या यज्ञ का कार्यक्रम भी होता है। मैं सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी को लेकर गत मास अक्तूबर १५ को श्री शास्त्री जी के निमन्त्रण पर वहा जब पहुचा तो उस क्षेत्र मे विधिवत चल रहे विद्यालयो को देखा उनमे लगभग ७०० सौ छात्र पढते हैं। यज्ञ करते हैं। यह देखकर प्रसन्नता हुई वहा निर्धन छात्रो के लिए छात्रावास की व्यवस्था भी है। प्रधान जी वहा के विद्यालयो और छात्रो की सुव्यवस्था से सन्तुष्ट एव प्रसन्न हुए। वहा के अध्यापको द्वारा माग करने पर उन्होने ग्यारह पखो के दान का वचन दिया इसी प्रकार बोकाजान विद्यालय मे भी यज्ञशाला निमित्त १२०००) की सहायता राशि घोषित की।

उस क्षेत्र मे कार्य करने का परिणाम यह भी हुआ कि गुहाटी मे लडके-लडकियो का एक बहुत बढिया स्कूल चल रहा है उसमे लगभग पाच सौ बच्चे शिक्षा पा रहे हैं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने उस क्षेत्र के प्रचार के लिए एक प्रचारक भी रखा हुआ है। माननीय डा० नारायणदास जी, श्री ओम्प्रकाश आनन्द के पुरुषार्थ से प्रतिनिधि सभा की स्थापना भी हो चुकी है जिसे सार्वदेशिक सभा ने स्वीकार कर लिया है। वहा प्रचारक तैयार करने एवं आर्य वीर दल के शिविर लगाने का भी भावी कार्यक्रम है जिसके लिए यथा सम्भव सभा सहयोग करेगी।

मैं सार्वदेशिक सभा तथा संघ की ओर से संघ के कार्यो मे सेवा-दान के लिए श्री पृथ्वीराज शास्त्री, श्रीमती प्रेमलता शास्त्री, श्री वेदव्रत मेहता, श्रीमती ईश्वर देवी महन्त तथा श्री तनेजा जी का बहुत आभारी हू जो तन, मन, धन से इस कार्य को प्रगति दे रहे हैं।

—ओम्प्रकाशत्यागी



डी०बी०एन० बाकाजान मे प्रवेश करते हुए सार्वदेशिक सभा-प्रधान श्री लाला रामगोपाल शालवाले सभा-मन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी एव श्री पृथ्वीराज शास्त्री।



डी०बी०एन० बोकाजन के विद्यालय के प्रागण मे सभा-प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले ओ३म् पताका फहराते हुए।



डी०वी०एन० दीमापुर (नागालैण्ड) मे विद्यालय के प्रवेश द्वार पर सभा-प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले तथा सभामन्त्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी का स्वागत।

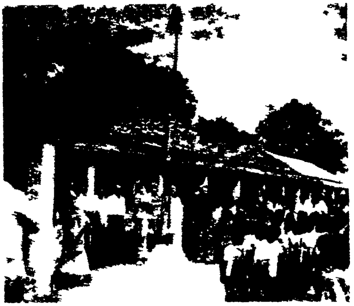
'सार्वदेशिक' पत्र के आजीवन सदस्य बनिये

किसी साप्ताहिक पत्र के ग्राहक बनने पर [illegible] बार-बार मनिआर्डर भेजना आदि कठिनाइयां [illegible] इन कठिनाइयों से बचने के लिए [illegible] १०० [illegible] सार्वदेशिक साप्ताहिक के [illegible] आजीवन सदस्य बन [illegible]।

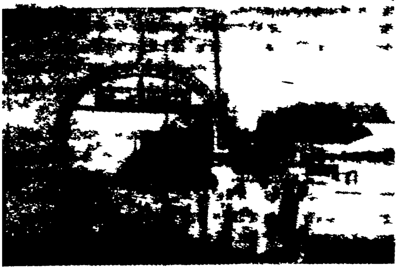
—'सार्वदेशिक'



श्री लाला रामगोपाल द्वारा डी०वी०एन० दीमापुर में अभिनन्दन स्वीकार करते हुए तथा नागा बच्चों को दुलार देते हुए।



डी०वी०एन० दीमापुर म श्री स्वा० दीक्षानन्द जी द्वारा ओ३म ध्वजारोहण।



डी०वी०एन० बोकाजान क प्रवे द्वार पर सभ -प्रधान श्री लाला रामगोपाल श लव ने तथा म -न्त्र श्री ओम्प्रकाश त्यागी क स्वागत।



डी० वी एन० दीम पुर के प्रिंसिपल द्वारा यज्ञ



श्री स्वामी दीक्षान " जी श्री शास्त्री जी डी०वी०एन० दीमापुर के प्रवेश द्वार पर



यज्ञ मे बैठ हुए नागा बच्चे (डी०वी•एन०) दीमापुर

(पृष्ठ ५ का शेष)

सहृदय मुसलमान तथा एक वैश्य की सहायता से २ मील पैदल चलकर नारनौद ग्राम पहुचे। वहा यह घोषणा कर के कि जब तक मोठ के चमारों का कच्चा पक्का नही बनता और वे बेरोकटोक उससे पानी न पीने लगें गे तब तक सिवा जल के अन्य ग्रहण न करेंगे। ६ सितम्बर १९४० के दिन अनशन पर बैठ गए। इस व्रत से बडी सनसनी फैली। भक्त जी के सैंकडो प्रेमी नारनौद के पुलिस इन्सपेक्टर ने मोठ के अपराधी मुसलमानो को अपने साथ लाकर भक्त जी से मुआफी मगवाई और आश्वासन दिलाया कि कुआ शीघ्र ही बनने दिया जायगा। परन्तु यह कोरा आश्वासन सिद्ध हुआ जब १८ दिन तक उपवास रखते हुए भक्त जी की दशा चिन्तनीय हो गयी तो सरकारी और सामाजिक क्षेत्रो मे बडी चिन्ता व्याप्त हो गयी। श्री युगल किशोर बिडला तथा श्री वियोगी हरि नारनौद आए और उपवास तोडने की प्रार्थना की। सर छोटूराम भी लाहौर से आए कि भक्त जी को उपवास तोड देना चाहिये उन्होने उनके प्राण बचाने के अन्य भी अनेक उपाय किये। फिर डिपुटी कमिश्नर हिसार ने पुलिस की एक गारद मोठ भेजी और अनेक प्रतिष्ठित मुसलमानो को समझाया तब जाकर वह कुआं तैयार हुआ। चमारों ने उससे पानी भरा। भक्त जी ने उसी कुए का जलपान कर चौबीसवे दिन २९ सितम्बर का अपना उपवास तोडा।

महात्मा गाधी ने १२ अक्तूबर १९४० के हरिजन में लिखा था बगैर अधिकार के किसी को उपवास न करना चाहिये। उसी व्यक्ति के सामने उपवास हो सकता है जिसका उपवास के साथ सम्बध हो।

ऐसा उपवास भक्त फूलसिंह का था उसका सम्बन्ध मोठ वालो के साथ अच्छा था वहा के हरिजनो की सेवा उन्होने काफी की थी। वहा का अत्याचार प्रसिद्ध ही था सब उपाय न्याय पाने के लिए हो चुके थे। उपवास के सिवा अन्य कोई चारा न था, उपवास सफल हुआ।"

लोहारुकांड और शहादत

लोहारु की मुस्लिम स्टेट मे आर्य समाज के नगर कीर्तन पर स्टेट की ओर से पाबन्दी लगा दी गयी थी। इस पाबन्दी के हटवाने के लिए श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के नेतृत्व मे अनेक आर्यजन व आर्यनेता वहा पहुचे थे। भक्त फूलसिंह जी भी अपने कुछेक साथियो के साथ वहां गए।

२९ मार्च १९४१को पाबन्दी तोडकर नगरकीर्तन निकाला गया। वहां मुसलमानो ने पुलिस की शह पर जलूस पर अकारण लाठियों से हमला किया जिससे अनेक आर्यबन्धुओ को चोटें आई। श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी तथा भक्त फूलसिंह जी की चोटें अधिक गम्भीर थी। इन दोनो की सहिष्णुता ने आक्रामको के दिलो को भी झकझोर दिया था और स्वय लोहारु के नवाब ने इनसे क्षमा याचना की थी। दोनो महानुभावो को इर्विन हस्पताल दिल्ली मे भरती किया गया था। जहा कुछ दिन बाद, स्वस्थ हो गए थे। भक्त फूल सिंह जी के साथ चौधरी नौनिध सिंह भी हस्पताल मे दाखिल हुए थे। इर्विन हस्पताल से मुक्त होकर भक्त जी गुरुकुल खानपुर भि आ गए थे। वहां १४-८-१९४२ को रात को ७ बजे भक्त जी को गोलियों का निशाना बनाया गया और आर्य समाज की वेदी पर अपने प्राणों की बलि चढा गए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की आज्ञानुसार ११ सितम्बर १९४२ को आर्य जगत ने फूलसिंह जी का बलिदान दिवस मनाकर उन्हें श्रद्धाजलि अर्पित की थी।

भक्त फूलसिंह का जीवन वृत्त लिखने वाले के शब्दो में उनका जीवन पवित्रता और त्याग का जीवन था। वे बडे उदार नेता, सहृदय, साधु स्वभाव के व्यक्ति थे। उनका सारा समय जनता की सेवा में व्यतीत होता था। मुकद्दमे बाजी के वे सख्त खिलाफ थे और रिश्वतखोरी के जानी दुश्मन थे। जुल्म के खिलाफ उनके दिल मे विरोध का जबर्दस्त तूफान खडा हो उठता था। आपसी झगडों को मिटाने और प्रेमभाव से रहने की लोगों को प्रेरणा दी। अछूत कहे जाने वाले बन्धुओं के अपहृत अधिकार दिलाने के लिए चार पाच बार लम्बे अनशन किये और सफल हुए। रिश्वत का पैसा लौटा देना उनके उच्च विचारो और पवित्र आर्य जीवन यापन का भव्य प्रतीक है। वे जीवित शहीद रहे और उनकी शहादत ने इस तथ्य को तो बहुत ही उजागर किया।

महिला जगत्

महादेवी वर्मा

लखनऊ मे आयोजित उत्तर प्रदेश हिन्दी सस्थान के एक विशेष समारोह में हिन्दी की महान कवयित्री श्रीमती महादेवी वर्मा को प्रधान मन्त्री स्व श्रीमती इन्दिरा गांधी ने 'भारत भारती' के सर्वोत्तम पुरस्कार से अलकृत किया था। यह सम्मान किसी देवी का नहीं, छायावादी कवियो में अग्रणी महादेवी जी का नहीं, अपित हिन्दी का, साक्षात् सरस्वती का, हिन्दी साहित्य का और भारती का था।

महादेवी जी प्रथम पक्ति के उन साहित्य सृष्टाओं में हैं जिन्होंने हिन्दी वाङमय को विश्व साहित्य के स्तर पर लाकर प्रतिष्ठित किया है। उन्होंने मात्र कवि कर्म ही नहीं किया वरन आजीवन सही-अर्थों में मा सरस्वती की अविराम साधना की है। उनका जीवन काव्य, समाज और नारी उत्थान के लिए समर्पित है। साहित्य के माध्यम से उन्होने नारी विशेषकर भारतीय नारी उसके विषाद पूर्ण जीवन के प्रति गहरी सवेदना अनुभूति के प्रवाह और गहन अन्तर्मन को वाणी दी है। समाज की अनेक वर्जनाओ के बावजूद उस युग मे जब किसी युवती का घर से बाहर झांकना तक वर्जित था, महादेवी जी आई और समाज मे नारी ससार के लिए दीपशिखा सी जल उठी।

अभी कलकत्ते में भारतीय भाषा परिषद के एक समारोह मे नारी मुक्ति आदोलन की लक्ष्यहीनता के प्रति उनका आक्रोश इन शब्दों में फूट पडा — 'नारी स्वय मे एक सस्कृति है। जो स्त्री पढी लिखी नहीं हैं बिल्कुल ग्राम्य हैं वही आदमी के अधिक निकट है। स्त्रिया यदि पुरुषो के साथ नहीं रहना चाहतीं तो न रहें। पहले भी ब्रह्मवादिनी हुआ करती थी जो पुरुषों से अलग रहती थीं लेकिन वे पुरुषो को अपना शत्रु कैसे कह सकती हैं। डेली टैलीग्राफ को भेंटवार्ता के दौरान उन्होने कहा पश्चिमी देशो का नारी मुक्ति आन्दोलन एक बडा स्वाग बनकर रह गया है। आज नारी मा, बहिन व पुत्री नही बल्कि पशुजगत की मादा प्रजाति बनाकर रह गई है।"

महादेवी जी का जन्म सन १९०७ मे फर्रुखाबाद मे हुआ था। इनके पिता बाबू गोविन्द प्रसाद वर्मा भागलपुर कालेज के प्राचार्य थे तथा इनके नाना ब्रजभाषा में कविता करते थे। १३ १४ वर्ष की छोटी-सी आयु मे ही महादेवी जी मे कविता और गीत के सस्कार पड़े। प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा इन्दौर में हुई और सस्कृत में एम ए करने के बाद वह प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या बनी जिस पद पर आज भी आसीन है। उनके आदर्शों एव भावनाओ को महात्मा गाधी के स्वाधीनता आन्दोलन से बल मिला। छायावादिनी बनकर उन्होने मीरा की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए जो कुछ लिखा वह इस शताब्दी के दूसरे व तीसरे दशक में ही अमर साहित्य की कोटि में अपना स्थान बना चुका था।

वह केवल कवयित्री ही नही समाज सेविका, नारी जागरण की कर्णधार शिक्षा शास्त्रिणी और गहन दार्शनिका भी है।

एक श्रद्धांजलि

भारत रत्न इन्दिरा गांधी

डा० आनन्द प्रकाश, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

राष्ट्रीय एकता की प्रतीक, विलक्षण प्रतिभा की धनी एव विश्व मानवता की हितैषी, भारतरत्न माननीया प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की नृशस हत्या कर दी गयी। महात्मा गाधी की तरह उनकी भी गोली मारकर हत्या की गयी। देश की अखण्डता की रक्षा के लिये उन्होने अपना बलिदान दे दिया। राष्ट्रपिता महात्मा गाधी के विवेक, शान्तिदूत जवाहरलाल नेहरू की उदारता और लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की दृढता ने भारत के आधुनिक स्वरूप की नीव डाली। श्रीमती इन्दिरा गाधी ने अपने लम्बे प्रधान-मन्त्रित्व काल मे भारत को एक विश्व-शक्ति का गौरवपूर्ण स्थान दिलाया और देश मे लोकतन्त्र को सुदृढ किया। उनके शासनकाल मे, वैज्ञानिक और औद्योगिक क्षेत्रोमे अभूतपूर्व प्रगति हुयी। विकास-शील एव गुटनिरपेक्ष देशो की सशक्त नेता के रूप मे श्रीमती गाधी ने सभी को प्रभावित किया और राष्ट्र के लिये सम्मान एव कीर्ति अर्जित की। एक महान् विभूति के रूप मे उनका नाम भारतीय इतिहास के साथ ही विश्व-मानवता के इतिहास मे भी स्वर्ण अक्षरो मे सदा अंकित रहेगा।

माननीया इन्दिरा जी ने अपने शासनकाल मे राष्ट्रीय एकता, अखण्डता और सुरक्षा में अपने अदम्य साहस सकल्प, निर्णय क्षमता एव अद्भुत कूटनीति का परिचय दिया। उन्होने भारत-पाकिस्तान युद्ध मे विजय प्राप्त की, बगलादेश के निर्माण मे सफलता प्राप्त की और पजाब समस्या पर काबू पाया (अपना बलिदान भी दिया)। भावी इतिहासकार यह लिखने पर मजबूर होगे कि यदि इन तीन सकटो मे से एक मे भी भारत पराजित हो गया होता तो भारत की सीमायें वह नही होती जो इस समय हैं, तथा देश पुन विखण्डित हो चुका होता। मुझे इन्दिरा जी का वह रेडियो भाषण याद आ रहा है, जो उन्होने बगला देश मे युद्ध की समाप्ति और "बगला देश" का अस्तित्व स्वीकार हो जाने पर दिया था। उन्होने उस भाषण मे कहा था कि "हमने बगला देश का युद्ध छिड जाने पर तीन बात कही थी – बगला देश बनेगा, पाकिस्तान की जेल मे बन्द शेख मुजीबुर्र हमान मुक्त हो जायेगे और बगला देश से भारत मे आये एक करोड विस्थापित लोग वापस जायेंगे। हमने इन बातो को पूरा कर दिखाया है।" इन वाक्यो ने भारत माता का सिर आकाश मे ऊचा उठा दिया।

इन्दिरा जी ने विश्व मे शान्ति की स्थापना, साम्राज्यवाद की समाप्ति, आर्थिक समानता की प्राप्ति, शोषण व्यवस्था के विरुद्ध सघर्ष, मानवता के कल्याण, रगभेद की नीति के विरुद्ध युद्ध एव अणुयुद्ध के खतरे को टालने के पक्ष मे जीवनपर्यन्त कार्य किया। उन्होने किसी भी लाभ, भय या धमकी के समक्ष झुककर सिद्धान्तो से समझौता नही किया। अमेरिका और रूस जैसी महाशक्तियो से भी उन्होने तात्कालिक लाभ प्राप्त करने की नीयत से कोई समझौता नही किया। आज गुटनिरपेक्ष और विकासशील देशो के प्रवक्ता के रूप मे भारत की आवाज इसलिये सुनी जाती है, क्योकि पूरे विश्व मे भारत ही एकमात्र ऐसा राष्ट्र है, जो सदा पक्षपातरहित बात कहता है और मानवता की रक्षा के लिये तत्पर रहता है। दक्षिण अफ्रीका और फिलिस्तीन जैसे मसलो मे भारत ने कभी अपनी नीति मे परिवर्तन नही किया। विश्व समुदाय के अविकसित समुदाय के देशो मे रहने वाले और साम्राज्यवाद के शिकन्जे मे जकडे करोडो लोग अपने को अनाथ अनुभव कर रहे होगे और इन्दिरा जी के रूप मे सबल एव साहसी नेतृत्व के चले जाने पर शोक मना रहे होंगे। पता नही विश्व को ऐसी आत्मा पुन कब प्राप्त होगी।

आर्यसमाज के प्रति उनकी श्रद्धा और इसके कार्यक्रमो का समर्थन भी सर्वविदित है। पिछले वर्ष अजमेर मे "महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी" के अवसर पर उन्होने कहा था कि "एक वर्ष के बाद हम भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस की शताब्दी मना रहे हैं और इस अवसर परकाग्रेस का सौ वर्षों का इतिहास भी प्रकाशित कर रहे है, परन्तु काग्रेस के इस इतिहास मे यदि आर्यसमाज का इतिहास सम्मिलित नही किया गया तो वह अधूरा रहेगा।" इन वाक्यो से यह स्पष्ट प्रकट होता है कि आर्यसमाज आन्दोलन के प्रति उनकी कितनी गहरी आस्था थी। सार्वदेशिक सभा के प्रधान, श्रद्धेय राम-गोपाल वानप्रस्थ की कृपा से मुझे इस वर्ष ३० मई को जीवन का वह अविस्मरणीय अवसर प्राप्त हुआ, जब उनके साथ मैं एक शिष्ट-मण्डल मे इन्दिरा जी से उनके कार्यालय मे एक घटे तक मिला और उनके निकट से दर्शन प्राप्त किये। पडित जवाहर लाल नेहरू का एक अमर वाक्य है—"इतिहास पढना अच्छा है, लेकिन इतिहास बनाने मे मदद करना उससे भी बहतर है।" कहने की आवश्यकता नही कि यह वाक्य उनकी बेटी ने ही सबसे अधिक चरितार्थ किया। अपने अन्तिम भाषण मे, ३० अक्तूबर को भुवनेश्वर मे इन्दिरा जी ने कहा था, "मैं लम्बी जिन्दगी नही चाहती। मुझे इस बात का गर्व है कि अपना जीवन देश की सेवा मे लगाया। अगर आज मैं मर जाऊ तो मेरे खून की हरेक बूद से देश को स्फूर्ति मिलेगी।" लगता है कि जैसे उन्हे अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था। इन्दिरा जी को एक कविता की यह पक्तिया बहुत पसन्द थी, जैसा कि उन्होने एक अमेरिकी भेंट वार्ता मे कहा था —

न बहाओ अपने आसू उन पर,
जो इस जहा से चले गये हैं।
मातम करो उन बुजदिलो पर,
जो दुनिया के जुल्मो से आख बन्द कर लेते हैं॥

बम्बई महानगर में आर्यों की ओर से श्रीमती इंदिरा गांधी के निधन पर शोक-सभायें

बम्बई, ४ नवम्बर। आज यहा विभिन्न आर्य समाजों में श्रीमती इन्दिरा गाधी के निधन पर शोक सभायें सम्पन्न हुई, आर्य समाज माटुगा, श्री दयानन्द बालक विद्यालय आर्य समाज घाटकोपर, आर्य समाज भान्डुप तथा आर्य समाज चैम्बूर इन स्थानों मे बडी सख्या में स्थानीय आर्यो ने भाग लिया और सबने एक स्वर में निर्मम हत्या की कडी निन्दा की और बताया कि इस हत्या के लिए जिम्मेवार लोगो ने न केवल देश सस्कृति के लिए कलक पैदा किया अपितु, स्वय अपने भविष्य को भी समाप्त कर दिया है, सभी स्थानो पर शाति यज्ञ और स्वर्गीय श्रीमती गाधी के आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थनायें की गयी।

देश के राजनैतिक नेताओं से निवेदन

आर्य समाज सान्ताक्रुज मे सम्पन्न एक सभा में, आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ओकरनाथ आर्य ने कहा कि यदि देश के राजनैतिक नेता महर्षि दयानन्द सरस्वती के बताए मार्ग पर देश को ले चलते, तो देश की आज यह दुर्दशा नही होती, एक ओर तो ये ही लोग साम्प्रदायिकता और जातीयता, प्रातीयता इत्यादि भावनाओ को अपने सकीर्ण स्वार्थ के लिए प्रोत्साहन देते हैं और जब ये तत्व भस्मासुर का रूप धारण करते हैं तब देश के लोगों को एक होने का आवाहन करते हैं आपने निवेदन किया कि सब लोगों को मिलकर देश मे एकात्मता और समानता की भावनाओं का प्रचार करना चाहिए।

आर्य समाज माटुगा मे श्रीमन मिठई लाल सिह जी ने, आर्यो को देश मे फूट परस्त और हिंसक तत्वो के विरुद्ध लडने का आवाहन किया।

बम्बई महानगर में एक और नए आर्यसमाज की स्थापना

बम्बई महानगर के उत्तर पश्चिमी समुद्र तीर मे स्थित वर्सोवा में आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से एक नया आर्यसमाज स्थापित किया गया है। इस समाज का उदघाटन सभा के महामन्त्री श्री ज्येष्ठ वर्मन ने, श्रीमान पडवाल जी के बगले मे आयोजित एक निराडम्बर सभा में यज्ञ के साथ इस समाज की स्थापना की घोषणा की और कहा कि यद्यपि आज से एक सौ साल पहले स्थापित कोई भी सस्था आर्य समाज के बराबर शक्तिशाली नहीं है, तथापि, यहा फूटपरस्त और स्वार्थी तत्व इतने बढ गए हैं कि उनका मुकाबला करने के लिए आर्य समाज को और भी शक्तिशाली बनाने की आवश्यकता है यही नही आर्यो को केवल सध्या हवन और भाषण और उत्सवो से ही तृप्ति न पाकर कार्यरत (एक्टिविस्ट) बनना अत्यावश्यक है, आपने आशा व्यक्त की कि श्रीमती इन्दिरा गाधी की निर्मम हत्या से लोगों मे इस दिशा मे नयी जागृति उत्पन्न होगी।

श्रीमती शकुन्तला देवी बजाज ने अपने स्वर्गीय पति के स्मरण में वर्सोवा में स्थित अपने तीन कमरे वाले मकान को आर्य समाज के लिए दान के रूप में देने का वायदा किया।

इस समाज के सगठन में डा० अरुण कुमार ने विशेष उत्साह से कार्य किया और डा० आर. बी कपूर जी एव श्रीमान पडवाल जी ने विशेष सहयोग दिया।

श्री दयानन्द बालक विद्यालय एव जूनियर कालेज आफ कामर्स माटुंगा मे आयोजित एक शोक सभा मे वहा के प्रधानाचार्य जी ने श्रीमती इन्दिरा के प्रति भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि श्रीमती इन्दिरा गाधी न केवल भारत की बल्कि समस्त विश्व की प्रिय नेता थीं, उनके स्नेह, सदाचार, सद्भाव एव भ्रातृत्व का समस्त विश्व ऋणी है, श्री मिठाईलाल जी ने कहा कि श्रीमती इन्दिरा गाधी के निधन से न केवल हमारे देश की अपितु सारे मानव जगत की एक अपूरणीय क्षति हुई है।

गोबर से बिजली पैदा कर रेडियो चलाया

बुलन्दशहर, लखावटी के अमर सिंह इण्टर कालेज के कक्षा १२ के प्रतिभाशाली छात्र राजेन्द्र प्रताप सिंह ने गोबर से विद्युत उत्पन्न कर, ट्रांजिस्टर, रेडियो तथा इलैक्ट्रोनिक घडी आदि चला कर सभी को आश्चर्यचकित कर दिया।

उक्त छात्र ने इस अनूठे प्रयोग का प्रदर्शन स्थानीय राजकीय इन्टर कालेज मे किया। इस छात्र के पिता भी ऊर्जा के गैर परम्परागत स्रोत के प्रभारी हैं।

१८ वर्षीय इस छात्र ने दावा किया है कि वह ऐसे शक्तिशाली क्षमता वाले यन्त्र का शीघ्र निर्माण कर लेगा जिससे गोबर से उत्पन्न शक्ति का प्रयोग टेलीविजन और टेप रिकार्डर आदि के चलाने में भी हो सकेगा।

यदि छात्र राजेन्द्र अपने इस प्रयोग के यन्त्र बनाकर सफलता प्राप्त कर लेगा तो ये ग्रामो के लिए एक अत्यन्त उपयोगी यन्त्र सिद्ध होगे। इस यन्त्र की सहायता से ग्रामीण क्षेत्र मे विद्युत आपूर्ति के अभाव मे टेलीविजन आदि पर कार्यक्रम देखे जा सकेंगे।

छात्र राजेन्द्र प्रताप सिंह ने शासन और प्रशासन से साधन व सुविधाए सुलभ कराने का अनुरोध किया है।

(हिन्दु० २१-१०-८४)

श्रीमती इन्दिरा गांधी के बलिदान पर

आर्य समाजों के शोक प्रस्ताव

१—आर्यसमाज रानी तालाब मु० बिसान फिरोजपुर शहर मे एक शोक सभा आयोजित हुई जिसमे श्रीमती इन्दिरा गाधी की नृशस हत्या की भर्त्सना की गयी एव दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए सामूहिक शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया। —जगदीशचन्द्र आर्य, प्रधान

२—आर्य समाज मन्दिर सिविल लाइन्स वैदिक आश्रम रामघाट रोड अलीगढ ने श्रीमती इन्दिरा गाधी की हत्या का कडा विरोध किया एव उनकी आत्मा की शान्ति हेतु शान्ति यज्ञ का आयोजन किया।

— ज्वाला प्रसाद गुप्त, मन्त्री

३—आर्य समाज फतेहपुर के तत्वावधान मे प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की दु खद एव निर्मम हत्या की निन्दा की गयी और दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए २ मिनिट का मौन रखा। नवीन प्रधान मन्त्री राजीव गाधी के हाथ मजबूत करने का निश्चय किया।

—डा० हर्षवर्धन मन्त्री

४—श्रीमती इन्दिरा गाधी की नृशस हत्या पर आर्य समाज रामकृष्णपुरम सैक्टर १ नई दिल्ली ने शोक प्रकट किया एव भारत के शान्तिप्रिय नागरिकों ने प्रधानमन्त्री राजीव गाधीको यह विश्वास दिलाया हैं कि राष्ट्रीय हित के किसी भी कार्य मे उनके साथ हैं। — ओम्प्रकाश, मन्त्री

५—आर्य समाज सम्भल अपने राष्ट्र की स्व० प्रधान मन्त्री इन्दिरा गाधी के असमय मे चले जाने से दु खी है। जबकि राष्ट्र को उनकी परमावश्यकता थी एव विश्व भी उनसे प्रेरणा ले रहा था प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि दिवगत आत्मा को शान्ति मिले। — मन्त्री

६—आर्य समाज हरदोई की यह सभा अपने देश की जनप्रिय नेता माननीया प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाधी की निर्मम हत्या की कठोर शब्दो मे निन्दा करती है और आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करती है। —मन्त्री

७—आर्य समाज सदर बाजार की यह शोक सभा माननीया प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की निर्मम हत्या की तीव्र भर्त्सना करते हुए अपनी हार्दिक शोक सवेदना प्रकट करती है, राष्ट्र की सुरक्षा एव अखण्डता के लिए अपने प्राणों की आहुति देकर अमर हो गई। परमपिता परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे। —गोपीचन्द

८—आर्य समाज सीताराम बाजार दिल्ली की यह साधारण सभा भारत की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरागाधी की निर्मम हत्यापर गहरा शोक प्रकट करती है। यह सभा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे। प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी को जिन्होंने इन कठिन परिस्थितियो मे राष्ट्र के प्रधान मन्त्री का कार्य भार सम्भाला है देश को सगठित और उन्नत करने की क्षमता प्रदान करे।

—बाबूराम आर्य, मन्त्री

९—आर्य समाज चादपुर जिला बिजनौर श्रीमती इन्दिरा गाधी की जघन्य हत्यापर शोक एव क्षोभ प्रकट करता है। साथही प्रार्थना करता है कि दिवगत नेता की आत्मा को शान्ति प्रदान करे। —मन्त्री

१०—आर्यसमाज पुरानी गोदाम गया (बिहार) श्रीमती इन्दिरा गाधी के आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करता है तथा आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करता है। —मन्त्री

११—आर्य समाज भिलाई नगर के समस्त सदस्यगण प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी के असामयिक निधन पर गहन शोक व्यक्त करते हैं। उनके साथ हुए षडयन्त्र एव क्रूरतापूर्ण आक्रमण की घोर निन्दा करते हैं।

— बीरेन्द्र कुमारसिंह, मन्त्री

१२—श्रीमती इन्दिरा गाधी प्रधानमन्त्री भारत सरकार की उनके अगरक्षक हत्यारो द्वारा की गई निर्मम हत्या के समाचार सुनकर सभा को अत्यन्त दु ख हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश इस प्रकार के कुकृत्य की घोर निन्दा करती है। हम सभी सत्तर करोड देशवासियों की इन्दिरा गाधी के प्रति हार्दिक श्रद्धाजलि है। यह सभा उनकी इस हत्यापर रोष प्रकट करते हुए शोक सवेदना प्रकट करती है। —रामचन्द्र राव कल्याणी, प्रधान



रमेशचन्द्र कपूर
अमरीका



बालकृष्ण शर्मा
कैलीफोर्निया

भजन

टेक—रैन उजाला ना होता कभी प्यारे चन्द्र बिना।
भारत मे उजाला ना होता उस स्वामी दयानन्द बिना॥
वेद की विद्या छोड छोड देई सब उल्टे रास्ते दौड चले।
कर्म धर्म और देश सेवा बिलकुल ही मुख मोड चले॥
ना आपस मे प्रेम रहा करते घर २ झोड चले।
देश मे दगा झगडा होता ठीक देख प्रबन्ध बिना॥१॥
सन्ध्या हवन करना छोडा पत्थरो मे मारे टक्कर।
वेद का रास्ता भूल गए उल्टे खाते थे चक्कर॥
टोना टोना यहा चली थी और चले थे मक्कर।
सुलफा गाजा और धतूरा उडा रहे हैं वही फक्कर॥
बल बुद्धि बने कोनी ठीक हवन के सुगन्ध बिना॥२॥
हवन से शुद्ध पवन हो फिर वर्षा हो अच्छा अन्न होगा।
उस अन्न को खाये सबका अच्छा मन होगा॥
नही कोई कगाल रहे घर२ के माय धन होगा।
कायर और कमजोर नही बलवान सभी का तन होगा॥
गृहस्थ धर्म ठीक चले ना घर के माय आनन्द बिना॥३॥
देश प्रान्त कोने-२ मे वेद धर्म प्रचार करो।
वेद शास्त्र की शिक्षा से आर्य सब नर नार करो॥
१० (दस) नियम आर्य समाज के उनको सारे धार करो।
मुर्दा पन अब छोडो भाई नवजीवन सचार करो।
रामजस कहें गाना ना अच्छा सामवेद के छन्द बिना॥४॥

—रामजस आर्य सत्यार्थ प्रचारक

धार्मिक सिद्धांत हिन्दी की परीक्षाएं

धर्म के मर्म और धार्मिक सिद्धातो को समझने धर्म और धार्मिक सिद्धातों के विषय म भ्रातियो से बचने तथा अपनी प्रिय सन्तानो को बचाने व वर्तमान भ्रष्ट वातावरण मे नैतिक मूल्यो की रक्षा के लिये भारतीय सिद्धात परिषद नजीबाबाद (बिजनौर) द्वारा सचालित सिद्धात प्रवेश, सिद्धात कोविद, सिद्धात शास्त्री तथा सिद्धात वाचस्पति परीक्षाओ के केन्द्र स्थापित कीजिए तथा निम्न पते पर नियमावली मगाइए।

—विद्यारत्न आर्य, मन्त्री

भारतीय सिद्धात परिषद नजीबाबाद (बिजनौर) उ०प्र०

१३—आर्य समाज रीवा के सदस्य अपने देश की यशस्वी प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाधी की अत्यन्त हृदय विदारक निर्मम हत्या पर हार्दिक शोक प्रकट करते हैं। प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—इन्द्रभान कुमनानी, मन्त्री

हमें अनेक आर्य सस्थाओ एव आर्य समाजो से शोक सभाओ एव श्रद्धाजलियो की सूचना आ रही है। सभी को एक साथ प्रकाशित करने में हम असमर्थ है।

भारत के विरुद्ध गहरे षड़यन्त्र

नई दिल्ली, २१ अक्तूबर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने देश में विघटनकारी तत्वों की गतिविधियो में हुई वृद्धि पर गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुए इन तत्वो के पीछे विदेशी शक्तियों का स्पष्ट हाथ होने के मामले को सरकार द्वारा गम्भीरता से लेने की माग की है।

इस आशय का प्रस्ताव आज श्री रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता मे हुई एक सभा मे लिया गया। सभा द्वारा पारित प्रस्ताव मे कहा गया है कि सभा के नेताओं के विदेश प्रवास के दौरान ऐसे अनेक उदाहरण मिले, जिनसे भारत के विरुद्ध किये जा रहे गहरे षडयन्त्र की पुष्टि हुई है।

प्रस्ताव मे कहा गया है कि खाडी देशो से धन प्राप्त कर इस देश के कुछ कट्टर पन्थी मुसलमान धर्मपरिवर्तन और साम्प्रदायिक दगो के माध्यम से देश का शासन अपने हाथ मे ले लेने के लिए बराबर दबाव डाल रहे हैं। इसके अलावा आनन्दपुर साहिब मे पारित प्रस्ताव के परिणाम भी देश की जनता के सामने हैं।

प्रस्ताव मे देश की आन्तरिक परिस्थितियो की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए कहा गया है कि उत्तर पूर्वी क्षेत्र मे जनजातीय विद्रोह नागालैंड और मिजोरम को स्वतन्त्र राज्य बनाने की माग तथा लालडेगा की मिजोरम मे हिंसात्मक गतिविधिया चिन्ता का विषय है।

(प० के० २४ १० ४)

...तो भारत क्यों नहीं ?

पुणे, ९ अक्तूबर। अगर जापान एक विदेशी भाषा के बिना रह सकता है और विज्ञान तथा औद्योगिक क्षेत्र मे उल्लेखनीय प्रगति कर रहा है तो भारत क्यों नहीं ?

यह सवाल भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री मोरार जी देसाई ने आज यहा एक समारोह को सम्बोधित करते हुए किया।

भारतीयों पर 'अ ग्रेजी के भूत' का जिक्र करते हुए श्री देसाई ने कहा कि मैं निजी तौर पर किसी भाषा को सीखने के खिलाफ नही लेकिन उसे मातृभाषा की जगह हरगिज नहीं दी जा सकती।

वर चाहिए

राजकीय सेवा से राजपत्रित पदाधीन तथा आर्य वीर दल के प्रान्तीय स्तर के अधिकारी की बी एस ए तक शिक्षित कुमार गौरवर्ण आर्य ब्राह्मण कन्याओ के लिए योग्य आर्य ब्राह्मण वर चाहिए। दहेज तथा जाति बन्धन नही आयु क्रमश २२ एव २० वर्ष।

पता:—श्री रामचन्द्र आर्य ...
मोहल्ला कस्बा
सीहोर बाया भोपाल (म० प्र०)
पिन ४६६००१

सार्वदेशिक प्रेस पटौदी हाउस दरियागंज नई दिल्ली-२ में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।

ओ३म्

सार्वदेशिक

5-12-84 साप्ताहिक

दूरभाष्य [२७२१४१०८१]
वर्ष ११ अंक ४२]

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

मार्गशीर्ष कृ० १० सं० २०४१ रविवार २ दिसम्बर १९८४

दयानन्दाब्द १६० दूरभाष । २७४७७१
वार्षिक मूल्य १६) एक प्रति ४० पैसे

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले वानप्रस्थ की सिंह गर्जना

माननीय प्रधान का बिहार प्रांत का व्यस्त दौरा—दिनांक २४ नवम्बर ८४ को प्रात गया रेलवे स्टेशन पर सैकडो की सख्या मे विभिन्न आर्य समाजो के कार्यकर्त्ता फूल मालाओ के साथ वैदिक धर्म की जयघोष करते हुई पहुचे थे। ज्यो ही डीलक्स ट्रेन पहुची कार्यकर्त्ताओ के नारो से पूरा प्लेट फार्म गू ज उठा। माननीय प्रधान एयर कन्डीशन डब्बे से जैसे ही नीचे उतरे कार्य कर्त्ताओ ने उन्हे फूल मालाओ से लाद दिया। सर्वप्रथम आर्य वीर दल के प्रान्तीय सचालक श्री रामाज्ञा वैरागी तथा जिला आर्य सभा नवादा के मन्त्री श्री द्वारकाप्रसाद ने माला पहनाई उसके बाद सैकडो आर्यजनो की भीड उमड पडी, जिसमे सर्वप्रथम बिहार प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प० वसुदेव शर्मा एव मन्त्री श्री हरिदास जवाल ने माला पहनाकर स्वागत किया, उसके बाद गया आर्यसमाज के तथा अन्य समाजो के कार्यकर्त्ताओ ने माला पहनाकर स्वागत किया। स्टेशन के बाहर फिएट कार तथा अम्बेसडर कार खडी थी बाहर भी सैकडो व्यक्ति कतार मे झण्डा लिये हाथ मे फूल माला लेकर दो कतारो मे खडे थे, माननीय प्रधान जी कतार के बीचो बीच माला स्वीकार करते हुये बाहर खडी, कार मे बैठ गये, आर्य समाज मे पधारे जहा हजारो की सख्या मे लोग उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। लोगो ने हार्दिक स्वागत किया एव पुन पुष्प मालाओ से लाद दिया, थोडी देर बाद अल्पाहार के बाद माननीय प्रधान का ओजस्वी भाषण हुआ।

तब वे वहा से नवादा के लिये कार से चल पडे, निकटस्थ मानपुर आर्यसमाज के हजारो लोगो ने जिनमे बच्चे, बूढे एव जवान शामिल थे हर्षोल्लास एव उत्साह के साथ बाजा गाजा लेकर उनका भव्य स्वागत किया, भीड देखकर प्रधान जी स्वय गाडी से बाहर निकले एव बडे प्रेम से उनकी मालाओ को स्वीकार किया, इतनी भीड इकट्ठी हो गई कि मेले का दृश्य लगने लगा उसके बाद वे १२ बजे दिन मे नवादा पहुचे मार्ग मे भी कई स्थानो पर भी माननीय प्रधान जी का हार्दिक स्वागत किया गया, दोपहर के भोजनोपरात ३ बजे से ५ बजे तक माननीय प्रधानजी ने शोभायात्रा मे पदयात्रा कर आदर्श उपस्थित किया जिसका जनता पर अनुकूल प्रभाव पडा, जिससे रात्रि की सभा मे हजारो की भीड लग गई ८ बजे रात्रि से ९ बजे रात्रि तक लोगो ने शान्ति पूर्वक प्रधान जी के भाषण को श्रवण किया, सभा में सरकारी तथा विद्वान लोगो की सख्या अधिक थी और भाषण के क्रम मे बार-बार तालियो की गड-गडाहट से पडाल गू ज उठता था, यह सभा बिहार प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प० वसुदेव शर्मा की अध्यक्षता मे हुई। सार्वदेशिक सभा प्रधान अपने ने भाषण मे राष्ट्रीय, अन्तराष्ट्रीय सामाजिक, सास्कृतिक, धार्मिक आदि विषयो पर प्रकाश डालते हुए वैदिक धर्म की विशेषता पर जोर डाला।

दूसरे दिन २५ नवम्बर को प्रात साढ सात बजे जीप लेकर रजोली आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता पहुचे। प्रधानजी उन लोगो के साथ

(शेष पृष्ठ २ पर)

भारत की महानता

महाशक्तिया महान् राजनीतिज्ञता के बल पर महान बनी हैं। हम इन शक्तियो की पसन्द के लिए बहुत ज्यादा महान बन रहे हैं। वे हमारी एकता को नष्ट कर देना चाहती है। जिस समय हम अपने को एक महान शक्ति और महान राष्ट्र के रूप मे परिवर्तित करने के काम मे लगे हुए हैं तभी हम उनकी दुरभि सन्धियो के शिकार बन रहे हैं।

पाकिस्तान या अन्य किसी शक्ति को भारत के विरुद्ध युद्ध करने के लिए प्रोत्साहित करना कारगर न होगा क्योंकि वे भारत और भारतीयो की क्षमताओ से भिज्ञ हैं। देश की महान उन्नति को रोकने और इसकी शक्ति और नेतृत्व को कमजोर करने का उनकी दृष्टि मे उपाय गृह युद्ध, साम्प्रदायिक झगडे और परस्पर मे एक दूसरे को लडाना ही दिखाई पडता है।

अमेरिका ग्रेट ब्रिटेन और पाकिस्तान ने हमारे उन शत्रुओ को गले लगाया है जिन्होने हमारे उच्चकोटि के नेताओ को खत्म करने और खून की होली खेलने का व्रत लिया हुआ है। इतना ही नही उन्होने इस काम में अपने सचार साधनों को भी लगाया हुआ है।

प्रत्येक अल्प सख्यक वर्ग को यह जान लेना चाहिए कि महान राष्ट्र का हिस्सा बने रहने से ही वह महान् है और जैसे ही वे इस राष्ट्र से कट जायेंगे तो वे महान शक्तियो के हाथ के खिलौने और यहा तक कि उनके हाथ के शिकार बन जायेंगे।

इस देश ने किसी भी राजनैतिक समस्या के हल के उपाय के रूप मे हिंसा का सदैव खण्डन किया है।

हत्या करने व अन्य किसी साधन से किसी व्यक्ति के हटा दिए जाने से न तो किसी समस्या का समाधान हो सकता है और ना ही किसी आन्दोलन को सहायता मिल सकती है। राजा मरने पर भी राज लम्बे समय तक जीवित रहता है इस कहावत को ध्यान मे रखना चाहिए। हमारा राजतन्त्र गणतन्त्र है और हमारी शासन प्रणाली ससदीय है और सत्ता परिवर्तन बडी शांति और बिना किसी रक्तपात के हो जाता है। यदि कोई चुनाव व नियुक्ति अस्वीकार्य होती है तो हम गुप्त मतदान द्वारा समयानुसार समस्या को हल कर लेते हैं।

(हिन्दू मद्रास १७-११ ८४)

सम्पादक—ओमप्रकाश पुरुषार्थी

सहसम्पादक—रघुनाथ प्रसाद पाठक

विविध समाचार

चौहान को भारत सरकार के हवाले करो
रांची के सिखों की मांग

राची के सिख समुदाय ने खालिस्तान के स्वयभू नेता जगजीत सिह चौहान के प्रयत्न हानिकर और अनर्गल बयानों की घोर निन्दा करते हुए केन्द्रीय गवर्नमेंट को प्रेरणा की है कि वह जगजीत सिंह को ब्रिटेन से निकलवाकर अपने कब्जे मे करे।

सिख वर्ग ने एक प्रस्ताव मे कहा कि उनकी देश की एकता एव अखडता में दृढ आस्था है देश के बाहर कुछ व्यक्तियो द्वारा चलाए गए अलगाव वादी आन्दोलन की भर्त्सना करता है।

मीटिंग मे यह भी कहा गया कि राची के सिख समुदाय का इस प्रकार के पृथकतावादी किसी भी आन्दोलन के साथ कोई सम्बन्ध नही है।

जगजीत के लिए बी. बी. सी. के दरवाजे बन्द

लन्दन, १६ नवम्बर। बी०बी०सी० के स्टाफ को निर्देश दिया गया है कि वह तथाकथित खालिस्तान के स्वयभू नेता जगजीत सिंह चौहान को भारत के विरुद्ध धमकिया देने या प्रचार करने के लिये बी०बी०सी० का प्रयोग न करने दिया जाए।

हाल ही मे बी०बी०सी० से एक भेंटवार्ता मे जगजीत सिह चौहान द्वारा श्रीमती गाधी की हत्या पर की टिप्पणी पर भारत सरकार द्वारा रोष प्रकट करने पर बी०बी०सी० के महानिदेशक ने भारतीय उच्चायोग से क्षमा मांगी थी। बी०बी०सी० के सहायक महानिदेशक श्री एलन प्रोथेरिनो ने अब बी० बी० सी० के समाचार विभाग को निर्देश भेजा है कि सिख उग्रवादियो से इन्टरव्यू लिये जाने से पूर्व उनकी (श्री प्रोथेरिनो की) अनुमति ली जाए। 'गार्जियन' के अनुसार निर्देश मे कहा गया है कि आप को मालूम होना चाहिए कि डा० चौहान मेरी अनुमति के बिना बी०बी०सी० का प्रयोग नही कर सकता। किसी को धमकिया देना और किसी के विरुद्ध प्रचार करना बी०बी०सी० का काम नही है। इस बात को सुनिश्चित किया जाए कि कोई इसका दुरुपयोग न कर सके।'

(पृष्ठ १ का शेष)

रजौली आर्य समाज गये। वहा उनका भव्य स्वागत किया गया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान जी एव विहार आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान को खुली जीप मे बैठाकर रजौली बाजार का भ्रमण कराया गया, मार्ग मे हजारो लोगो ने वैदिक धर्म की जय तथा अपने प्रिय नेता का जयघोष कर इलाके को गुजायमान कर दिया। शोभायात्रा परिभ्रमण के बाद आर्य समाज रजौली के खुले भवन में सभा हुई जिसकी अध्यक्षता श्री प० वसुदेव शर्मा अध्यक्ष विहार आर्य प्रतिनिधि सभा ने की। मन्त्री हरिदास ज्वाल तथा रामाज्ञा बैरागी सचालक प्रान्तीय आर्य वीर दल ने भी अपने विचार प्रकट किये। वहा के कार्यकर्त्ताओ के अतिरिक्त भारी सख्या मे स्त्री पुरुषो की भीडइकट्ठी हो गई थी, उन्हे सम्बोधित करते हुये सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल वानप्रस्थ ने वैदिक धर्म के पुनर्जन्म एव वैदिक यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डाला तथा सगठित होकर रहने पर जोरदिया। यह भी निश्चय हुआ कि प्रत्येक आर्यसमाज मे आर्य वीर दल का गठन किया जाय, तत्पश्चात् शिविर लगाया जाय। वहा से अल्पहार के पश्चात् उसी जीप से नवादा लौटकर भोजनोपरान्त मध्याह्न मे पटना के लिये प्रस्थान किया गया, सभा भवन मे पहुच कर सार्वदेशिक सभा प्रधान जी डा० डी० राम से भेट करने के पश्चात् स्टेशन पहुचे जहा से दिल्ली के लिये प्रस्थान किया गया। इन सारे कार्यक्रमो मे विहार आर्य प्र० सभा के प्रधानश्री प० वसुदेव शर्मा तथा मन्त्री श्री हरिदास ज्वाल एव प्रातीय सचालक आर्य वीर दल के श्री रामाज्ञा बैरागी साथ रहे, अन्त मे,सहायक मन्त्री विहार आर्य सभा के श्री रामलखन आर्य ने भी रेलवे स्टेशन पहुचकर उन्हें विदाई दी। (सम्वाददाता द्वारा)



आर्यसमाज अमरोहा के प्रधान तथा आर्योपप्रतिनिधि सभा जि० मुरादाबाद की तदर्थ समिति के सयोजक प्रधान श्री वीरेन्द्रकुमार आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के प्रधान माननीय प० इन्द्रराज जी का स्वागत करते हुए।

उत्सव

दिनांक १८, १९, २०, नवम्बर १९८४ को आर्य समाज अमरोहा का ८३वां वार्षिकोत्सव सोल्लास मनाया गया। उल्लेखनीय है कि इस अवसर पर म० श्री आर्य भिक्षु जी द्वारा आर्य समाज अमरोहा की ओर से गरीबों को लिहाफ वितरित कराए गए। समारोह मे माननीय प० श्री इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ प्र एव अखिल भारतीय आर्य वीर दल के प्रधान सचालक माननीय श्री बाल दिवाकर जी हस भी पधारे।

—गत वर्षों की भाति ३ से १० दिसम्बर १९८४ तक आर्य समाज ग्रेटर कैलाश I का वार्षिकोत्सव मनाया जायगा। दिल्ली नगरीय सब समाजें ९ दिसम्बर को सम्मिलित सत्सग ग्रेटर कैलाश में ही करें। उल्लेखनीय है कि अथर्ववेदीय महायज्ञ, सत्यार्थ प्रकाश रामायण, सगीत आदि सम्मेलनों के अतिरिक्त राष्ट्ररक्षा' सम्मेलन का भी आयोजन पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में किया जायगा।

महिला सम्मेलन अध्यक्षा श्रीमती ईश्वरी देवी। विषय 'दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाने मे नारी का सहयोग। रामायण सम्मेलन में श्री बी० डी० स्नातक भी भाषण करेंगे।

उदबोधन श्री रामगोपाल जी शालवाले वानप्रस्थ प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली करेंगे।

मुख्य वक्ता श्री सूर्यदेव जी प्रधान-दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा।

डा० श्री धर्मपाल जी मन्त्री दि. आ प्र नि सभा।

बस रूट न० ४०१, ४११ ४/६ ४२२ ४२४ ४२५ ४३० ४४० ४६०

आर्य सभा का गठन

देश की राजनीति को महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यो से प्रभावित करने के उद्देश्य से आर्य सभा का गठन।

न्याय के आधार पर समाज का निर्माण करने, शिक्षा प्राप्त करने का सबको समान अवसर प्रदान करने, छूत-अछूत, जात-पांत के भेद भाव को मिटाने, आर्थिक विषमता को दूर करने और राज्य सत्ता को सच्चे अर्थों में लोक हितकारी बनाने के सम्बन्ध मे जो विचार महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रतिपादित किए थे उन्हीं को क्रियान्वित करने का पूरा-पूरा प्रयत्न आर्य सभा द्वारा किया जायेगा।

इसी प्रयोजन से लोक सभा चुनाव में आर्य सभा अनेकों स्थान पर अपने उम्मीदवार खड़े कर रही है। इतने बड़े कार्य को आपके सहयोग के बिना कैसे पूरा किया जा सकता है ? हमे आशा है आप बिना देर किए (क्योंकि समय बहुत थोड़ा है) कार्यकर्ताओं वाहन आदि साधनों और धन देकर हमारा सहयोग करें। निवेदक

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार
ए १/३२ सफदरजंग एन्क्लेव
नई दिल्ली
फोन ६०१२११

स्वामी अग्निवेश
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ
नई दिल्ली-४४
फोन : ८२ ५१५८

सम्पादकीय

विश्वास आदमी में आदमी का होता है

महीप सिंह की भाभी पूरे भारत को सूनी-सूनी आंखों से ताक रही हैं। वे महीप सिंह से नहीं पूरे भारत के सिखों की ओर से पूछ रही हैं—बताओ अब हमारा भविष्य क्या है ? भाभी के सवाल को मैं आज के भारत का यक्ष प्रश्न मानता हूं। अगर हम इसका समाधान नहीं कर पाए तो हमारा वही होगा जो युधिष्ठिर के चारों पांडव भाइयों का हुआ था। भारत आज जैसा है वैसा नहीं रहेगा।

लेकिन एक और यक्ष प्रश्न है जो मेरी बेटी महीप सिंह से पूछना चाहती है। इन्दिरा गांधी को बेअन्त और सतवंत पर अपनी रक्षा के लिए पूरा भरोसा था। बावजूद बड़े अधिकारियों के शक के इन्दिरा गांधी ने उन्हें हटाने नहीं दिया। इन्ही 'बहादुर' रक्षकों ने साजिश कर के और घात लगा कर बिना बचाव की निहत्थी इन्दिरा गांधी को उनके घर के सामने छलनी कर दिया। है ऐसे विश्वासघात का दुनिया के इतिहास मे कोई उदाहरण ? ब्रूटस और जूलियस सीजर दोनों पुरुष और योद्धा थे। बघनखों से शिवाजी ने जिस अफजल खां को फाड दिया उसके हाथ में भी कटार थी और दोनों जानते थे कि वे खेल क्या खेल रहे हैं।

मेरी बेटी का यक्ष प्रश्न है कि बेअन्त और सतवन्त ने इन्दिरा गांधी के साथ जो किया उसके बाद क्या सिखों पर भरोसा किया जा सकता है ? ब्रिटेन, कनाडा और अमेरिका में इस 'बहादुरी' पर जश्न मनाने वालों से लेकर जालन्धर और लुधियाना मे हिन्दुओं को जबर्दस्ती मिठाई खिलाने वालों को गुरुओं का बन्दा कहा जा सकता है ? क्या उन्हे किसी भी सभ्य समाज मे जगह दी जानी चाहिए ?

खुशवन्त सिंह को बताने की जरूरत नही है कि बेअन्त और सतवन्त कोई सिख समाज के प्रतिनिधि नहीं थे और उनके किये का पाप सभी सिखो पर नही है। अपनी मां की छलनी लाश के पास खड़े राजीव गांधी तक यह सच्चाई देश को बता चुके हैं। लेकिन इसी दलील से यूथ कांग्रेस के गुंडे और उनके बदमाश लुटेरे साथी भी क्या हिन्दू समाज के प्रतिनिधि रह जाते हैं ? क्या उनके काले कारनामे पूरे भारत की करतूत थी ? तो फिर महीप सिंह के समझे सिखों को पंजाब ही अपनी कर्मस्थली क्यों लगता है : पंजाब में हैं सिख ५२ प्रतिशत पर पूरे देश मे वे सिर्फ दो प्रतिशत हैं। बहुसंख्यक हिन्दू समाज की नीयत में खोट होती और अगर खालिस्तान को राई नही समझते तो इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद पंजाब के अलावा सिख कही बच सकते थे ? सच्चाई यह है कि ज्यादातर सिखों को उनके हिन्दू पड़ोसियों और दोस्तों ने बचाया है जबकि अकाल पुरुष तख्त के जत्थेदार के लिए यह बताना जरूरी था कि उन्होंने इन्दिरा गांधी की हत्या पर शोक प्रकट करने वाला कोई बयान नहीं दिया है। फिर भारत और हिन्दू समाज की भलमनसाहत में महीपसिंह के विश्वास की सभी चूलें क्यों हिल गई हैं ? और अगर महीपसिंह सही हैं तो इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद भारत और हिन्दू बहुसंख्यकों को सिखों पर भरोसा क्यो करना चाहिए ? ये दोनों यक्ष प्रश्न हैं और इनके उत्तर हिन्दू को भी देना है और सिख समाज को भी।

सिखों को बुरा लगता है कि देश के ज्यादातर लोगो के लिए संत भिंडरावाले आतंकवादी खलनायक थे और स्वर्ण मन्दिर मे सैनिक कार्रवाई को मोटे तौर पर पूरे देश का समर्थन था। इसी तरह अकालियो और अपने को समझदार मानने वाले सिखों की समझ मे आना मुश्किल है कि इन्दिरा गांधी अकालियों को छकाने वाली और स्वर्ण मन्दिर मे 'सैनिक हमला' करने वाली खलनायिका ही नहीं थी। सन्त भिंडरावाले की तरह वे जान बचाने के लिए अकाल तख्त में छुप कर नहीं बैठी थी। वे प्रचण्ड बहुमत से निर्वाचित देश की प्रधान मन्त्री थीं और उनकी देशभक्ति और बहादुरी में उनके दुश्मनों को भी कोई शंका नहीं था। ऐसी इन्दिरा गांधी को घात लगाकर धोखे से मारना देश को अगर अपने साथ हुआ विश्वासघात लगता है तो यह कोई हिन्दू साम्प्रदायिक प्रतिक्रिया नहीं है। पूरे सभ्य संसार ने इस हत्या में विश्वासघात देखा है।

इन्दिरा गांधी की हत्या से कुछ और गहरी और बड़ी मान्यताएं भी जुड़ी हुई हैं। हिन्दुओं में आम धारणा है कि सिख गुरुओंने हथियार उनकी व धर्म की रक्षा के लिए उठाए थे और सिख धर्म के रक्षक हैं। दूसरी धारणा यह है कि सिख भारत की खड्ग भुजा हैं और वे सदियों से देश के लिए लड़ते रहे हैं। सिख गुरु हिन्दू थे और ज्यादातर सिख धर्म और देश की रक्षा के लिए हिन्दू परिवारों मे से गये जवान थे। ऐसे सिखों में से कुछ लोग जब अलगाव का नारा देकर हिन्दुओं को मारने लगे और विदेशी मदद से खालिस्तान बनाने की कोशिश होने लगी तो हिन्दुओं को शक से ज्यादा दुःख हुआ। बेअन्त और सतवन्त के हाथों इन्दिरा गांधी की हत्या इसलिए गैर कांग्रेसी हिन्दुओं और गैर हिन्दू भारतीयों को भी भारत और मूल मानवीय धर्म के साथ विश्वास घात लगता है।

पिछले दिनों एक सभा में खुशवन्त सिंह ने कहा कि एक सिख के नाते उनका सिर शर्म से झुका है और मैंने कहा कि एक भारतीय के नाते मेरा भी। सिर्फ इन्दिरा गांधी की हत्या पर नही बल्कि उसके बाद हुए नरसंहार पर भी। खुशवन्त सिंह ने कहा कि हमे मिलकर तय करना चाहिए कि यह देश अब फिर विभाजित नहीं होगा। ऐसे विभाजन को रोकने का एक ही तरीका है कि महाभारत की तरह कौरवों-पांडवों और दोनों तरफ से लड़कर मरे लोगों का सामूहिक श्राद्ध किया जाय और पंजाब को लेकर पिछले चार साल से जो चल रहा था उसके लिये पूरा देश प्रायश्चित करे। शुरुआत के लिये सिख मान ले कि उन्होंने बदला ले लिया और हिन्दू मान लें कि उन्होंने सबक सिखा दिया। राष्ट्रीय त्रासदी और शोक की इस घड़ी मे मन से किया गया प्रायश्चित ही जहर निकाल कर मन और शरीर को शुद्ध कर सकता है। मलबे को हटाकर आपसी विश्वास की नींव पर फिर से नई ईंट रखी जा सकती है। क्या इसके लिए हम तैयार हैं ?

जिन सिखो के विश्वास की चूलें हिल गई हैं उनसे बात कीजिए तो इन्दिरा गांधी की हत्या की वे न टाले जा सकने वाले एक तथ्य की तरह बताकर सिखो पर हुए अत्याचार पर आ जाते हैं। सुनकर दुःख होता है कि ३१ अक्तूबर से ४ नवम्बर तक के दंगों ने उन्हें किस बुरी तरह झिंझोड़ दिया है। और आम तौर पर विश्वास और उत्साह से बलबलाने वाले लोग किस कदर भयभीत हैं। इन लोगों का पंजाब और दोगली अकाली राजनीति से बरसो से रिश्ता कटा हुआ है। ये सिख जरूर हैं लेकिन किसी पंजाबी हिन्दू से भी कम पंजाबी हैं। फिर क्यों वे अपने गैर पंजाबी परिवेश और जड़ो को छोड़कर पंजाब जाने की बात करते हैं ? क्या उन्हे डायस बनाने और फिर से बसाने के लिए शिरोमणि कमेटी, अकाली और पंजाब के रईस जाट सिख आगे आ रहे हैं ? एक गैर जाट और मध्य प्रदेशी सिख ने मुझे बताया कि पंजाब के बाहर के सिखों का एक जत्था संत भिंडरावाले से मिलने गया था। इस जत्थे ने संत जी से कहा था कि पंजाब मे वे जो कर रहे हैं उससे अपने शहर, गांव और प्रांत में उनकी हालत खराब होती है। अगर उनके साथ भी हिन्दू वही करने लगे जो हिंदुओं के साथ पंजाब मे संत जी के मरजीवड़े कर रहे हैं तो वे क्या करेंगे ? संत जी ने कहा 'कि बाहर के इन सिखों के लिए वे अंतिम अरदास करेंगे।

जालंधर से आए एक पंजाबी हिन्दू ने बताया कि गैर पंजाबी सिखों पर जो गुजरी उससे पंजाब के जाट सिख कोई बहुत चिंतित और परेशान नही दिखते। वे लालों (हिन्दू) और भापों (शहरी गैर जाट सिखों) मे वैसे भी कोई खास फर्क नही करते। किसी मजहबी सिख से पूछिए तो वह बताता है कि सैनिक कार्रवाई और उसके बाद के सरबत खालसा के लिये समान रूप से दोषी किसी जाट को तनखइया घोषित नही किया गया जबकि गैर जाटों ने राष्ट्रपति जैलसिंह और बूटा सिंह को भी नही छोड़ा। काफी गैर पंजाबी सिख मानते हैं कि प्रमुख ग्रन्थियों ने अगर इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद दो टूक बयान दिया होता और दुनिया भर के सदमे और शोक मे भागेदारी की होती तो हम लोगों पर इतना कहर नहीं गिरता। लेकिन पंजाब में बैठे ग्रन्थियो और अकालियों को समझ नही आता कि उनकी सरायो और

(शेष पृष्ठ ९ पर)

सामायिक चर्चा–

शवदाह अस्थि विसर्जन और स्मारक

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने स्वीकार पत्र (वसीयत) मे अपने शवदाह की व्यवस्था अङ्कित की थी और आदेश दिया था कि उनके शव को न तो जमीन मे गाडा जाय न किसी नदी मे बहाया जाय और न जगल आदि मे सुरक्षित रखा जाय।

अस्थि विसर्जन के विषय मे जब एक श्रद्धालु भक्त ने महाराज से पूछा तो उन्होने स्पष्ट रूप मे कहा था कि उन्हे खेतो मे बिखेर दिया जाय जिससे कि वे खाद का काम दे सके और उनका सदुपयोग हो। साथ ही उनकी कोई समाधि आदि स्मारक न बनाया जाय।

श्री प० जवाहरलाल नेहरू ने महर्षि की लाइन पर अपनी वसीयत मे शवदाह की और अधिकाश अस्थियो के खेतो मे बिखरे जाने की व्यवस्था अकित की थी। उनकी वसीयत का निम्न प्रासगिक भाग ध्यान देने योग्य है —

'मैं जब मरू तब चाहूगा कि मेरा दाह सस्कार हो। यदि मैं विदेश मे मरू तो मुझे कही जलाया जाय परन्तु मेरी अस्थिया इलाहाबाद लाई जाये। उनमे से कुछ मुट्ठी भर गगा मे प्रवाहित की जाये और उनके अधिकाश भाग का जैसे नीचे लिख रहा हू उस मुताबिक उपयोग किया जाय। इनका कोई अश सुरक्षित न रखा जाय।

मुट्ठीभर भस्मी इलाहाबाद मे गगा मे प्रवाहित किए जाने की मेरी इच्छा के पीछे कोई धार्मिक बात नही है। इस बारे मे मेरी कोई धार्मिक आस्था वा भावना नही है।

बचपन से ही इलाहाबाद मे गगा और यमुना से मेरा लगाव रहा है। जैसे-जैसे मै बडा होता गया हू वैसे-वैसे यह लगाव बढता ही गया है। मैंने मौसम बदलने के साथ उनके बदलते रगो और मूडो को देखा है और इतिहास की कथाओ परम्पराओ, गीतो और कहानियो की उन सभी वार्तो पर अक्सर सोचा है जो युगो से इनसे जुडती चली आई हैं। गगा हमारी शताब्दियो पुरानी सभ्यता और सस्कृति की प्रतीक रही है हर दम बदलती और हर दम बहती हुई।

यद्यपि मैंने अतीत की बहुत सी परम्पराओ को त्याग दिया है और मैं चाहता हू कि भारत उन सभी बधनो से मुक्त हो जो उसे जकडे हुए हैं और सकुचित करते हैं फिर भी यह सब कुछ चाहते हुए भी मैं अतीत से पूरी तरह अपने को काटना नही चाहता। उस महान् विरासत और परम्परा के लिए जो हमारी है मुझे गर्व है। मेरी भस्मी का अधिकाश भाग दूसरी तरह काम मे लायाजाय। मैं चाहता हू कि इसे आकाश मे ऊचे एक विमान मे ले जाया जाय और खेतो के ऊपर जहा हमारे किसान मेहनत करते हैं बिखराया जाय और वह भारत का एक अनचीह्ना विनीत अश बन जाय।"

स्मारक

पण्डित जी ने एक बार चिन्ता की अवस्था मे बडी विनम्रता से अपने स्मारक के विषय मे कहा था —

"मुझे इसकी जरा भी चिन्ता नही है कि मेरे बाद लोग मेरे विषय मे क्या सोचेंगे। मेरे लिए तो बस इतना ही काफी है कि मैंने अपने को अपनी शक्ति को अपनी सामर्थ्य को भारत की सेवा मे लगा दिया है।"

'मुझे इसकी भी परवाह नही है कि मेरे बाद मेरी प्रतिष्ठा का क्या होगा? यदि मेरे बाद कुछ लोग मेरे विषय मे सोचें तो मैं चाहूगा कि वे कहे—

"वह एक ऐसा आदमी था जो अपने पूरे हृदय से और मस्तिष्क से भारत और भारवासियो से प्रेम करता था और देशवासी भी उसकी कमजोरियों को भुलाकर उससे अत्यन्त प्रेम करते थे।"

स्वर्गीय श्रीमती इन्दिरा गाधी की अस्थियो के विसर्जन मे उपर्युक्त परम्परा का निर्वाह किया गया है।

विदेशी धन पर प्रतिबन्ध

भारत सरकार द्वारा निर्मित एवं उद्घोषित अध्यादेश (आर्डीनेन्स) का जिसके अन्तर्गत तमाम राजनीतिक दल उनके अधिकारी तथा चुनाव चिन्ह आदेश के अन्तर्गत न आने वाले सस्थान विदेशी पैसा लेने से प्रतिबन्धित कर दिए गए हैं व्यापक स्वागत हुआ है और अब भी हो रहा है यद्यपि इसका निर्माण देर से हुआ है।

अध्यादेश विस्तृत एव सारगर्भित है। इसके अनुसार उन तमाम सस्थाओं को जो अपनी प्रवृत्तियो के लिए विदेशो से धन प्राप्त करती है केन्द्रीय गृहमन्त्रालय मे अपने को रजिस्टड कराना होगा। धन प्राप्त करने से पूर्व प्रत्येक अवसर पर सम्बद्ध सस्था व उसके अधिकारी को गृहमन्त्रालय की पूर्व स्वीकृति लेनी होगी। तमाम सघटनो एव सस्थानो के लिए जो विदेशी सहायता प्राप्त करती है बैंको की किसी प्रमाणित शाखा के माध्यम से पैसा प्राप्त करना अनिवार्य होगा।

जानकार परिवेक्षको का यह कहना ठीक है कि यह खुला रहस्य है कि देश मे साम्प्रदायिक, वर्गीय आग भडकाने तथा अन्यान्य समाज विरोधी कार्यो के लिए विदेशो से मुक्त रूप से धन आ रहा है। रिपोर्टो के अनुसार धार्मिक शिक्षा की उन्नति, समाज कल्याण तथा अन्य उद्घोषित विशिष्ट कार्यो की आड में विदेशी पैसा प्राप्त करने वालो की सख्या ५०० से ऊपर है।

यह धन प्रायश सदिग्ध क्षेत्रो से आता है। पजाब की अशान्ति के दौरान यह बात बहुत स्पष्ट हो चुकी थी, जिसके पीछे बडी सीमातक विदेशों मे बसे भारतीयो का, सुप्रसिद्ध गुप्तचर एजेन्सियो का और भारत विरोधी प्रशासनों तक का पैसा था।

विदेशी पैसा परोपकारी दानियो से सदैव नही मिलता। तथाकथित अधिकाश दानियो को अपना स्वार्थ सिद्ध करना होता है चाहे वह धार्मिक हो, राजनीतिक हो वा आर्थिक हो। इस प्रसग मे सहयोगी पायोनियर लखनऊ १० अक्टोबर ८४ की समीक्षा दृष्टव्य है—

'दक्षिण भारत के एक राज्य मे तथाकथित पिछडे वर्ग के बहुसख्य लोगो के सामूहिक धर्मान्तरण पर विदेशी धन का जो उपयोग किया गया वह सर्वविदित है। इसके दुहराये जाने की जरूरत नही है।

(सहयोगी का इशारा मीनाक्षीपुरम, रामनाथपुरम आदि से स्पष्ट देख पडता है—सपादक साव०)।

अभी हाल मे इस देश के कई साम्प्रदायिक एव शैक्षिक सस्थानों को तेल से बने धनी खाडी के कुछेक देशो से जो पैसा मिला था उसका उपयोग प्राप्तकर्त्ताओ ने आपत्तिजनक उद्देश्यो के लिए किया।

चीन को जिसकी विगत काल मे विदेशी घुस पैठ (धन एव सैनिक) के कारण अखण्डता खतरे मे पड गई थी, बडी निराशा और घृणा के स्वर में तमाम विदेशियो को विशेषत पाश्चात्य मूल के विदेशियोको 'विदेशी शैतान' की सज्ञा देनी पड गई थी। यह सुपरीक्षित कहावत है कि" उसे लम्बा चम्मचा प्रयोग मे लाना चाहिए जो शैतानो के साथ घूट भरता है।"

अध्यादेश ने विदेशी धन के प्रवाह पर जिससे उचित कार्यों एवं प्रवृत्तियों के मार्ग में भयावह बाधाए उपस्थित होती है प्रतिबन्ध नहीं लगाया है। इसका ध्येय विदेशी पैसा प्राप्त करने वाले सगठनों की गतिविधियों को निरीक्षण में रखना और नियमित रूप से उनके आय व्यय के हिसाब की जाच पडताल करना है।

प्रशासन का यह कर्त्तव्य है कि वह अध्यादेश का ठीक रूप से प्रचलन करे और यह देखे कि 'विदेशी शैतानों को इस देश में पैसा भेजने के लिए अध्यादेश के किसी छिद्र से लाभ उठाने का अवसर न मिले।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

महर्षि दयानन्द का वार्त्तालाप और उपदेश

(१)

राव कर्णसिंह का मान मर्दन

ज्येष्ठ वदि १२ सम्वत १९२५ के दिन महर्षि कर्णवास में पुरानी कुटिया में ठहरे थे। वहीं राव कर्णसिंह ने उन पर झपट की थी और स्वामीजी द्वारा उसे विखण्डित कर दिए जाने पर उसे मुंह की खानी पड़ी थी। उसने उसी समय गंगा के मेले कणवास पर रासलीला रचाई थी और स्वामीजी महाराज के उसमे सम्मिलित न होने पर क्रुद्ध होकर उन्हें बुरी भली सुनाने उनके पास गया था। इस दुर्घटना का विवरण इस प्रकार है —

कर्णसिंह— आप हमारे यहा रास मे क्यो नहीं आए ? सन्यासी होकर ऐसा करना अत्यन्त बुरी बात है। हमारे स्थान पर जब रास लीला होती है तो सभी पण्डित सन्यासी सम्मिलित होते हैं।

महर्षि—आपके समक्ष आपके पूज्य पुरुषार्थों के रूप भरकर मलिन मनुष्य आते हैं नाचते हैं और आप लोग बैठे बैठ देखा करते हैं। उस समय आप लोगो को लज्जा नही आती ? आश्चर्य है। आप कैसे क्षत्रिय है ? किसी साधारण पुरुष के माता पिता परिजन का स्वरूप भरकर कोई न चाए तो उसे कितना बुरा लगता है। परन्तु आप कुलीन लोग अपने मान्य महापुरुषो के स्वाग रचकर नचाते हैं और प्रसन्न होते हैं।

कर्णसिंह—हम तुमसे बातचीत करने आए हैं। हमने सुना है कि तुम अवतारों की और गगा की निन्दा करते हो। याद रखो। यदि मेरे सामने निन्दा की तो मैं बुरी तरह पेश आऊ गा।

महर्षि—मैं निन्दा नही करता किन्तु जो वस्तु जैसी है उसे वैसी ही कहता हू। गगा भी जैसी और जितनी है उसे वैसी ही और उतनी ही वर्णन करता हू। सत्य के कथन करने मे सवथा निभय हू।

कर्णसिंह—तो फिर गगा कितनी है ?

महर्षि —मेरे लिए तो कमण्डलु भर जल उपयुक्त है। सो वह इतनी ही है।

कर्णसिंह—गगा गगेति इत्यादि श्लोको मे नाम कीर्तन, दर्शन स्पर्श से पाप नाश कहा है।

महर्षि—वे श्लोक साधारण लोगो के कपोल कल्पित है। माहात्म्य सब गप्प हैं।

पाप नाश और मोक्ष प्राप्ति वेदानुकूल आचरण से होगी अन्यथा नही। राव महाशय ! आपके भाल पर यह रेखा सी क्या है ?

कर्णसिंह—यह श्री है। जो इसे धारण नहीं करता वह चाण्डाल हैं।

महर्षि —आप कबसे वैष्णव हुए हैं ?

कर्णसिंह—कुछ वर्षों से।

महर्षि—क्या आपके पिता जी वैष्णव सम्प्रदाय मे दीक्षित हुए थे ?

कर्णसिंह—नही, वे नही हुए थे।

महर्षि—तब तो आप ही के कथनानुसार आपके पिता और कुछ वर्षो के पहले आप भी चाण्डाल सिद्ध हो गए।

इस बात पर राव महाशय को क्रोध आ गया और वे तलवार पर हाथ रखकर बोले "मुंह सम्भाल कर बोलो।

उनके साथी दस बारह जन भी शस्त्र सन्नद्ध थे। इसलिए टीकाराम भयभीत हो गए। परन्तु स्वामी जी ने उसे कहा—डरते क्यो हो ? कोई चिन्ता की बात नही। हमने जो कुछ कहा है सत्य कहा है।

राव महाशय क्रोध में भरे हुए थे। उसने स्वामी जी पर गलियो की झड़ी लगा दी परन्तु स्वामी जी हसते हुए कहने लगे— राव महाशय ! यदि शास्त्रार्थ करना अभीष्ट है तो वृन्दावन से रगाचाय जी को बुलवाइए। उसमें जो हार जायगा वह दूसरे के सिद्धान्त को स्वीकार करेगा, यह प्रतिज्ञा हो जानी चाहिए।"

कर्णसिंह ने क्रोध में भड़क कर कहा— तुम रगाचार्य से क्या वाद-विवाद कर सकते हो ? तुम्हारे जैसे लोग तो उनकी जूतियां चाटते हैं।

इत्यादि बातो मे साथ राव महाशय गालिया भी देते जाते थे और बाए हाथ मे थामी हुई तलवार की मुटठी पर बार बार दाहिना हाथ रखते थे।

इस पर स्वामी जी ने हसते हुए कहा— शास्त्राथ करना हो तो अपने गुरु जी को बुला ले आइए। हम तय्यार है। परन्तु यदि आपको शास्त्राथ करने का चाव है तो सन्यासी से क्यो टकर ते हो ? जयपुर जोधपुर से जा भिडो।'

फिर क्या था राव महाशय आपे से बाहर हो गए और उचितानुचित का कोई विचार किए बिना मुंह से खरी खोटी बातें सुनाते, तलवार लिए

मन्त्रानुसार आचरण

ओ३म्। नकिर्देवा मिनीमसि नकिरा योपयामसि मन्त्रश्रुत्य चरामसि। पक्षेभिरपि कक्षेभिः स रभामहे॥

ऋ० १०। १३४। ७

हे (देवा) दिव्यगुणसपन्न महात्माओ ! (नकि) न तो हम (मिनीमसि) हिंसा करते हैं घातपात करते हैं और (नकि) न ही (आ+योपयामसि) फूट डालते हैं, वरन (मन्त्रश्रुत्यम) मन्त्र के श्रवणानुसार (चरामसि) आचरण करते हैं चलते हैं (कक्षभि) तिनकों के समान तुच्छ (पक्षभि) साथियो के साथ भी (सम एक होकर एकमत होकर मिलकर (रभामहे) वेग पूर्वक कार्य करते है।

वेद हिंसा, घातपात का अत्यन्त विरोधी है। साधारण जीवन में हिंसा वेद को अभिमत नही है। वास्तव मे हिंसा प्राय सपूर्ण दुर्गुणो का निदान है। इस वास्ते ऋषियो ने यमो मे अहिंसा को प्रथम स्थान दिया है। योगियो का सिद्धात है कि सत्य अस्तेय, और अपरिग्रह अहिंसा को ही उज्ज्वल और परिष्कृत करने के लिए हैं।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। इसे अपनी जीवन यात्रा चलाने के लिए समाज बनाकर रहना होता है। समाज निर्माण का प्रयोजन मनुष्य का सर्वविध विकास है। उसके लिए कुछ नियम विधान बनाने पडते हैं ताकि समाज का सचालन भली भाति होता रहे। विचित्ररूपा खलु चित्तवृत्तय (मनुष्य के मन के स्वभाव अदभुत होते हैं) के अनुसार कई कुटिल प्रकृति मनुष्य अपनी कुटिलता के कारण समाज मे गडबड उत्पन्न कर देते हैं उससे समाज मे फूट पड जाती हैं। इस भेद के कारण समाज की शक्ति क्षीण हो जाती है। वैदिक लोग कहते हैं—

नकिर्देवा मिनीमसि नकिरा योपयामसि=न हम घातपात करते है और न ही फूट डालते हैं।

ठीक है निषिद्ध कर्मों से बचना निस्सन्देह उत्तम है। किन्तु मनुष्य का हित तो विहित कर्मो मे है, अत कहा—

मन्त्रश्रुत्य चरामसि=मन्त्र के श्रवणानुसार हम चलते हैं।

अर्थात् जैसा मन्त्र मे-वेद मे विहित है मनुष्यमात्र को वैसा आचरण बनाना चाहिए भगवान ने मानव के कल्याण के लिए ही वेदवाणी का विधान किया है। वेद मे मन्त्र को (वेद को) गुरु कहा गया है—

मन्त्रो गुरु पुनरस्तु (ऋ० १।१४७।४)=मन्त्र ही फिर गुरु होवे।

अर्थात् जहा कर्तव्य अकर्तव्य का बोध न हो वहा मन्त्र की शरण लेनी चाहिए।

मन्त्र का एक अर्थ विचार भी होता है। अर्थात् बिना विचारे कुछ नहीं करना चाहिए।

वेद की शिक्षा का एक छोटा सा नमूना इसी मन्त्र मे दे दिया है—

पक्षेभिरपि कक्षेभि स रभामहे

तिनको के समान तुच्छ साथियो के साथ एक होकर हम वेगपूर्वक कार्य करते हैं।

अर्थात् किसी को भी घृणा या तुच्छता की दृष्टि से नही देखना चाहिए। तुच्छ से तुच्छ पदार्थ भी अपना उपयोग रखता है। समझदार मनुष्य उससे भी अपनी कार्यसिद्धि कर लेते हैं।

सकेत से यह मन्त्र उच्च नीच भाव को समाज के लिए घातक मान उसके त्यागने की प्रेरणा कर रहा है।

५०१ वें जन्म दिवस पर विशेष—

दयानन्द और लूथर एक सरल अध्ययन

लेखक : हरिओ३म् सि० आचार्य उपाचार्य
उप० वि० टंकारा राजकोट सौराष्ट्र

"परिस्थितियां ही विचारकों की जननी होती है।"

सम्भवत इसी उक्ति के अनुसार युग प्रवतक महर्षि और अपने समय के युग प्रवर्तक मार्टिन लूथर या किसी अन्य विचारक का समुचित और सन्तुलित मूल्यांकन ऐतिहासिक परिस्थितियो के परिपेक्ष्य मे ही किया जा सकता है।

१४ वी शताब्दी की उपज मार्टिन लूथर और १८ वीं शताब्दी की उपज महर्षि दयानन्द सम्भवत एक ही समान हृदय लेकर ससार मे प्रकट हुए थे। क्योंकि दोनो का दृष्टिकोण प्रबल क्रान्तिकारी तथा तथाकथित सड़े-गले धर्म के प्रति विद्रोही था। धार्मिकता की सडी गली कुरीतियो के विरोधाभास धर्म के नाम पर अमानवीय कृत्यों को देखकर इन दोनों महान समाज सुधारकों ने जो भी महान कार्य किया उसका तत्कालीन समाज पर इतना बडा प्रभाव पडा कि लोग यह मानने को मजबूर हो गये कि ये दोनों एक ही ऐतिहासिक वातावरण के उत्पादन थे। इतिहास इसका चिर साक्षी और स्थिर, ऋणी भी रहेगा।

जिस तरह आर्यावर्त की उन्नति और सुधार के लिए महर्षि ने आजीवन कुरीतियों के प्रति विद्रोह का डका बजाया ठीक वैसे ही कैथोलिक चर्च की बर्बरता नृशसता एव अनैतिकताके विरुद्ध लूथर ने भी यावत जीवन बजाया। जिसमे तथाकथित समस्त धार्मिक बुराइया जलकर भस्म हो गयी। इन्ही परम्पराओ और प्रमाणो के आधार पर सर्वांश मे सत्य न होते हुए भी लूथर और दयानन्द को समान समाज सुधारकों की श्रेणी मे रखा जा सकता है।

१४ नवम्बर १४८३ को जन्मे मार्टिन लूथर ने उस जमाने की यूरोप की सबसे बडी शक्ति होली रोमन एम्पायर (Holy Roman Empire) जिसके सम्राट चार्ल्स पञ्चम् थे के विरुद्ध १५ शताब्दी के पूर्वार्द्ध में सघर्ष किया। इसी समय के यूरोपीय पूंजीवाद के समर्थकों में अन्य महान विचारकों कलाकारों जैसे लियो नार्डो दविंची, एल्बरन्ट, ड्यूरर आदि के साथ ही लूथर ने भी सामन्ती वैचारिकता के ऊपर कठोर प्रहार करके उसे सुधारने की कोशिश की। ठीक उसी प्रकार शोषणरूप भयानक पूंजीवाद के विरुद्ध १९वी सदी में जन्मे दयानन्द ने भी मनु और वैदिक आर्थिक व्यवस्था को लेकर बडा कडा सघर्ष किया। वे वास्तविक पूंजीवाद को जन सामान्य का शोषक नमान कर पोषक मानते थे।

इतिहासानुसार लूथर के समय मे कैथोलिक चर्च की जगह भ्रष्टाचार स्थली मे ले ली थी। चरित्र भ्रष्ट पोप एलेक्जेण्डर बोर्जियो ने अपने भ्रष्ट पुत्र सीजर और पुत्री ल्यूक्रेजिया बोर्जियो के कारण खूबधन कमाया था। किन्तु लूथर के पादरी बनकर आने तक ये तीनो मर चुके थे। उसके उत्तराधिकारी जुलियस द्वितीय तथा लियो दशम एव कैथोलिक चर्च पूंजीवाद के द्वारा लाई हुई आर्थिक शक्तिरूप समस्याओं का सामना नही करपा रहे थे। कहते हैं कि चर्च के खाली खजानें को भरने के लिए लियो ने इण्डल्जेन्स का व्यापार करना प्रारम्भ किया जिसे देकर वह अपने भक्तो के नरक को कम करता था। लूथर भी दयानन्द के सम धर्म के नाम पर धार्मिक समुदाय मे व्याप्त इस प्रकार की जनपीडा व ठगी को सहन न कर सका। उसका हृदय, चीत्कार करने लगा। फलत दयानन्दकी पाखण्ड खण्डिनी की तरह विटेन बर्ग के चर्च पर उन्होंने इन्डल्जेन्स के कटु आलोचक एक ९५ सूत्रीय कागज ३१ दिसम्बर १५१७ ईस्वी को चिपका दिया। फलत उन्हें बागी घोषित कर धर्म से बहिस्कृत कर दिया गया। परन्तु ऋषिवर जैसे अडिग लूथर ने भी अनेको अत्याचार तथाकथित धर्माधिकारियों के, सहकर भी उफ् तक न की।

उस समय सेक्सनी के राजा नें उनका साथ दिया। जब चार्ल्स पञ्चम के आदेशानुसार वार्म की सासद ने उनके अकाट्य तर्कों के बाद भी उन्हें ईश्वर और मानव के प्रति बागी करार कर दिया। अब वह आडम्बर विरोधी दयानन्द के ही तरह शान्ति स्थापक की जगह बागी लूथर बन गये। उनके ऊपर अनेको प्रतिबन्ध लगाये गये जिसका उत्तरी जर्मनी की जनता ने विरोध किया और सेक्सनी के राजा ने उन्हे वटिवर्ग मे शरण दी। जहा से उन्होने सर्वसाधारण के लिए बिना अनुवादक के पढ़ने पढ़ाने के लिए लैटिन से जर्मन भाषा मे बाईबल का अनुवाद किया। इसी प्रोटेस्ट के कारण जमनी हजारो छोटे टुकडो मे विभक्त हो गया। अब कैथोलिक व प्रोटेस्टैण्ट शब्दो की लडाई न रहकर राजनैतिक व आर्थिक हो गयी जिसके परिणाम स्वरूप गिरजाघरो पर जबर्दस्ती हमला करके अधिकार कर लिये गये।

मजदूर अपने मालिको के घर मे हमले करने लगे और २९ वर्षों तक इस महान सुधारक का दयानन्द की तरह अन्ध श्रद्धा, आडम्बर वाद, धार्मिक ठेकेदारी और सामाजिक धार्मिक राजनैतिक एवम् आर्थिक शोषण-रूप कलक को निष्कलक रहकर धोने के बाद १५४७ में उसका निधन हो गया।

दयानन्द के प्रबल शास्त्रार्थों व पाखण्ड खण्डन वेदमत मण्डन रूप जन्म-जात मे पौंगापन्थी जन्मजात निरक्षर ब्राह्मणो के लाखो वर्षों से अधिकार रूप अन्धविश्वासो की गढ भगवान शकर की नई काशी के जिस प्रकार अस्थिपिञ्जर हिल गये थे ठीक वैसे ही प्रोटेस्टैण्ट लूथर के आन्दोलन के परिणामत सैकडो वर्षों का साम्राज्य होली रोमन इम्पायर भी पूरी तरह आन्तरिक टकराव से जजर सा हो गया था और दयानन्द की चुनौती के फलस्वरूप मठाधीशों की तरह लूथर के कारण पोप की भी विश्वव्यापी शक्ति और असीमित अधिकारो को चुनौती मिलने लगी थी। कैथोलिक और प्रोटैस्टैण्ट एक दूसरेकी हत्यायें सडकों तक पर करने लगे थे। लूथर का आन्दोलन भी दयानन्द की तरह धार्मिक कुरीतियों, और अन्ध विश्वासों, भ्रष्टाचारो जिसका समर्थन तत्कालीन बड़े बडे धर्म गुरु करते थे के खिलाफ था। जिसका समर्थन सामान्य जनता ने भी जान से किया।

जिस तरह दयानन्द ने भारत की धर्मरीति और कुछ आज धर्म, समाज और वैज्ञानिक व्यवस्था पर करारी चोट देकर व व्यवहार सर्वहित, करते

वार करने के लिए स्वामी जी की ओर लप के।

स्वामी जी ने 'अरे धूर्त कहते हुए उन्हें हाथ से धकेल दिया। इससे राव महाशय एक बार तो लुढक गए परन्तु फिर सभल कर चौगुने कोपा वेश में महाराज पर तलवार का वार करवे के लिए आगे बढे। वह वार करना ही चाहते थे कि महाराज ने झपट कर उसे उनके हाथ से छीन लिया और जमीन पर टिका कर उसके दो टुकडे कर डाले।

स्वामी जी ने राव का हाथ पकड कर कहा—क्या तुम यह चाहते हो कि मैं भी आततायी पर वार कर बदला लू?'

राव का मुह पीला पड गया शरीर पर मूर्च्छा सी आ गई। उस समय स्वामी जी ने कहा—

'मैं सन्यासी हू, तुम्हारे किसी भी अत्याचार से चिढ़कर तुम्हारा अनिष्ट चिन्तन न करूगा। जाओ तुम्हे प्रभु सुमति प्रदान करें।" महाराज ने तलवार के दोनो टुकडे दूर फेंक कर राव महाशय को विदा कर दिया।

जिस समय यह घोर घटना घटित हुई स्वामी जी के पास कोई पचास मनुष्य बैठे थे। वे सब राव कर्णसिह के कुकर्म की निन्दा करते हुए स्वामीजी को सलाह देने लगे कि पुलीस को सूचना देकर इसका पूरा परिणाम निकल वाला चाहिए।

स्वामी जी ने कहा—"हम अभियोग कदापि न चलायेंगे। हमारा धर्म तो सन्तोष करना है। यदि वह अपने क्षत्रियत्व का पालन नहीं कर सका तो हम अपने ब्राह्मणत्व से क्यों गिरे? जो धर्म का हनन करता है अन्त को उसका अपना हनन हो जाता है। इस पर स्वामी जी ने मनु का यह श्लोक सुना कर सब को शान्त कर दिया—

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षित।
तस्माद धर्मो न हन्तव्यो मानो धर्मो हतोऽवधीत्॥

संकलनकर्ता—रघुनाथ प्रसाद पाठक

दक्षिण-पूर्वी एशिया की सांस्कृतिक तीर्थ यात्रा

—श्री सत्यकेतु विद्यालंकार

हजारों पर्यटक प्रतिमास भारत से थाईलैण्ड और सिंगापुर जाते हैं। उनमें से कुछ पूर्व दिशा में और आगे बढ़कर हागकाग तक चले जाते हैं और कुछ जापान तक पर्यटकों के लिये ये देश विशेष आकर्षण रखते हैं। सिंगापुर और हागकाग कस्टम-फ्री (आयात कर से मुक्त) नगर हैं। वहां टेलीविजन, घड़िया, ऊनी वस्त्र और वीडियो आदि सस्ते मूल्यपर प्राप्त किये जा सकते हैं। आधुनिक भौतिक सभ्यता का चरम उत्कर्ष जापान मे देखने को मिलता है, और हागकाग तथा पटाया (थाईलैण्ड की एक नगरी) विलासिताका प्रसिद्ध केन्द्र हैं। इन सबकी ओर पर्यटको का आकृष्ट होना सर्वथा स्वाभाविक है।

पर सिंगापुर के दक्षिण पूर्व में इन्डोनेशिया के जो बहुत से द्वीप है उनकी ओर भारत के पर्यटकों का अभी तक ध्यान नही गया। प्रकृति की रमणीयता तथा आधुनिक सुख साधनो की दृष्टि से ये द्वीप विश्व के किसी भी पर्यटन-स्थल से कम नहीं हैं। बाली द्वीप मे अमेरिका, आस्ट्रेलिया, जापान और यूरोप से लाखो पर्यटक भ्रमण के लिये आते हैं और दक्षिण-पूर्वी एशिया मे एक पर्यटन केन्द्र के रूप मे उस की बहुत ख्याति है। पर भारत से कोई भी पर्यटक या यात्री वहा नही जाते। यह बात इस कारण और भी अधिक आश्चर्य की है, क्योकि बाली द्वीप के ६५ प्रतिशत निवासी हिन्दू धर्म के अनुयायी हैं और धर्म तथा सस्कृति की दृष्टि से भारत के साथ उसका घनिष्ठ सम्बन्ध है। केवल बाली मे ही नही, अपितु इण्डोनेशिया के जावा व लम्बक आदि द्वीपो मे भी लाखो हिन्दुओ का निवास है और ये सब द्वीप सास्कृनिक दृष्टिसे अब तक भी भारत से प्रभावित हैं। सोलहवी सदी के प्रारम्भ तक इण्डोनेशिया के प्राय सभी द्वीपो मे हिन्दू धर्म का प्रचार था और वहा के राजा हिन्दू धर्म के अनुयायी थे। उस समय तक दक्षिण-पूर्वी एशिया का यह क्षेत्र बृहत्तर भारत का ही अ ग था। पिछली चार सदियो मे इण्डोनेशिया के बहुसख्यक निवासी इस्लाम को अपना चुके है, पर अपनी प्राचीन सास्कृतिक परम्पराओं का उन्होने परित्याग नही किया है। वहा की भाषा, कला रीति-रिवाज, त्योहार, उत्सव, मनोरजन आदि सब पर भारत का पूरा-२ प्रभाव अब तक भी विद्यमान है। हिन्दू धर्म का भी अभी वहा लोप नही हुआ है। इण्डोनेशिया के जो लोग हिन्दू धर्म के अनुयायी है, उनकी सख्या ८० लाख के लगभग हैं जिनम से पच्चीस लाख के लगभग बाली द्वीप मे निवास करते है और दस लाख के लगभग लम्बक द्वीप मे। इण्डोनेशिया के ये हिन्दू फीजी मारीशस, सुरीनाम और केनिया आदि के हिन्दुओ के समान गत सौ डेढ सौ वर्षों मे वहा जाकर नही बसे है। भारतीय हिन्दुओ के समान वे भी हजारो वर्षों से हिन्दु धर्म का अनुकरण कर रहे है। बाली द्वीप ता सच्चे अर्थों मे हिन्दू प्रदेश या आर्य राज्य है। कोई कोई भारतीय हिन्दू पिछली सदी मे वहा अवश्य गये है और वहा के भी कोई कोई विद्यार्थी शान्ति निकेतन व हिन्दू विश्वविद्यालय सदृश सस्थाओ मे शिक्षा के लिये आये है। पर सुदूर दक्षिण पूर्वी एशिया के इन लाखो हिन्दुओ के साथ भारत का सम्बन्ध नाम मात्र का ही रहा है। गुप्त वश के काल (चौथी, छटी सदी) के पश्चात् विद्वानो व पण्डितो की कोई भी मण्डली इस क्षेत्र मे नही गई जिसके कारण इण्डोनेशिया के हिन्दूधर्म का भारत के हिन्दू धर्म के साथ सम्पर्क नही रह गया और मध्यकाल मे भारत मे जिस भक्ति आन्दोलन का प्रादुर्भाव हुआ और कृष्ण ने विष्णु के अवतार के रूप मे जो महत्वपूर्ण स्थान इस देश के हिन्दू धर्म मे प्राप्त कर लिया, इण्डोनेशिया के हिन्दू उससे अपरिचित रहे।

यह प्रसन्नता की बात है कि इस क्षेत्र के हिन्दुओ के साथ सपर्क स्थापित करने की ओर कतिपय महानुभावो का ध्यान गया, जिसके परिणाम स्वरूप हिन्दू पर्यटको की एक मण्डली भारत से दक्षिण-पूर्वी एशिया की यात्रा के लिये गई और थाईलेंड तथा सिंगापुर के साथ-साथ वह जावा और बाली द्वीपो मे भी गई। इस मण्डली मे बीस नर-नारी थे जो सभी सुशिक्षित एव उद्बुद्ध वर्ग के थे। परोपकारिणी सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती (अपने दो उच्च शिक्षित शिष्यो तथा एक शिष्या के साथ) चित्र कला के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकर श्री बेन्द्रे, धर्मस्थल कर्नाटक के प्रतिनिधि श्री लक्ष्मी नारायण आल्वा, विश्व-हिन्दू परिषद् के प्रचार मन्त्री श्री दत्तात्रेय तिवारी, आर्य वानप्रस्थ आश्रम हरिद्वार के डा०मेहता,लखनऊ विश्व विद्यालय की प्रोफेसर डा० शान्ति देवबाला, कानपुर के प्रसिद्ध पत्र-कार श्री सत्यनारायण जायसवाल, डा० कमला प्रधान श्रीमती रुक्मिणी देवी, श्री रामाज्ञा ठाकुर आदि कितने ही सम्भ्रान्त एवं

एक नयी दिशा दी ठीक वैसे ही १५ वी शताब्दी की जर्जरित और भ्रष्ट यूरोपीय ईसाई परम्परा को तोडकर पू जीवाद को वैचारिक स्तर तक लाने के लिए लूथर ने अपने तन, मन और जीवन को अर्पण कर दिया और एक ऐसा मोड दिया जो कि बुद्धिजीवी समाज को सतत् प्रकाश प्रदान करता रहेगा।

इन दोनो सुधारकों के चरित्र का तुलनात्मक अध्ययन करने से ऐसा लगता है कि लूथर का सघर्ष के पू जीवाद का समर्थन और धार्मिक आडम्बर के विरोध स्वरूप ही था। जब कि महर्षि देव दयानन्द के आन्दोलन का लक्ष्य सर्वतोमुखी था। चाहे राजनीतिक हो या धर्म, समाज हो या शिक्षा सभी क्षेत्रो मे महर्षि ने एक परिपूर्ण मानव के विकास पर पूरा ध्यान दिया।

कुछ विचारक लूथर को यह कहते हुए अधिक श्रेय देते हैं कि उसने कोई कानून बनाने के लिए राजाश्रय को नही लिया था जिस कारण लूथर का सघर्ष दयानन्द की तुलना मे काफी सफल और सार्थक रहा और प्रगतिशील सामयिक आन्दोलन के कारण ही राजा राममोहनराय, अरविन्द घोष, बकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय और दयानन्द के सुधार आन्दोलन और पिछडी हुई सगठन नीति को कभी सफलता नही मिली क्योकि ये सब राजाश्रय की चाहना को कर अ ग्रे जो के पिट्ठू बन गये थे। यहां तक कि गोवध के विरुद्ध हस्ताक्षर अभियान मे ऋषि अपने अन्तिम समय तक व्यस्त रहे। हालाकि दोनो के समय पजीवाद का ह्रास हो चुका था। मेरे विचार से यह सोचना भी गलत है। क्योकि तत्कालीन सरकार इन सुधारको की विचारधारा को समाज हितैषी मानते हुए भी अपना राज्य जमाने के लिए कुचलने के लिए कटिबद्ध थी। लूथर युग की तुलना मे अ ग्रे जो द्वारा लाया गया पू जीवाद एक लुटेरे और डाकू की तरह भारत की तरफ मु ह फाड़कर आया अत उसने सामन्तशाही को प्रोत्साहित किया।

(स्वय अ ग्रे जी राज्य भी इसी पर आधारित था) इसी कारण भूमिकर की वसूली का ठेका सामन्तों और जमीनदारो को देकर उसने कल तक के विश्वशिरमौर भारत भूमि को कगालों का गरीबतम देश बना दिया। परन्तु इन सब ऐतिहासिक परिपेक्ष्य मे देखने से लगता है कि लूथर और दयानन्द ने मतों और आडम्बरो से जकडी विश्व जनता को एक प्रगतिशील सामयिक विचारधारा को देकर समाज को एक नई दिशा दी।

इसी कारण यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि जहा लूथर को केवल आर्थिक सामाजिक और धार्मिक पक्ष का वरण करके सन्तोष करना पड़ा वही दयानन्द को मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष को दृढ़ता पूर्वक सिद्धि करने पर चतुर्दिक सफलता मिली। इन दोनो सुधारको के उदय से अन्धकार भ्रमित विश्व जनता ने विश्व गगन पर प्रकाश की एक किरण देखी और उसका सहर्ष स्वागत किया।

आज इगलैण्ड के बिशप भी धर्म ग्रन्थो के अनर्गल और सृष्टि क्रम के विरुद्ध बातों को धर्म पुरुषों के साथ जोडने में हिचकिचा रहे हैं। यह इन दोनो महापुरुषो के अमर बलिदान का फल नही तो और क्या है?

सुशिक्षित नर नारी इस यात्रा मण्डली मे सम्मिलित हुए थे। मैं भी इस यात्रा मे साथ गया था। यात्रा की सब व्यवस्था ट्रेवल ट्रस्ट (बी, २४ निजामुददीन ईस्ट, नई दिल्ली) द्वारा की गई थी और इस कम्पनी की ओर से यात्रा का प्रबन्ध श्रीमती ऊषा त्रिखा के हाथों मे था। इण्डोनेशिया की यात्रा पर गई इस पर्यटक मण्डली को सच्चे अर्थों मे भारतीय हिन्दुओ का प्रतिनिधि कहा जा सकता है।

तीन दिन बैंकाक तथा पराया का परिभ्रमण कर २५ सितम्बर, १९८४ की रात के नौ बजे हम जकार्ता पहुचे। जकार्ता जावा का सबसे बडा नगर है, और इण्डोनेशिया की राजधानी है। उसकी जनसख्या ७५ लाख से भी अधिक है। शान शोकत और सास्कृतिक पैमाने मे वह किसी भी आधुनिक नगर से पीछे नही है। जकार्ता की भूमि पर पैर रखते ही मुझ राजा पूर्ण वर्मा का ध्यान आया जो छटी सदी मे इस प्रदेश का शासक था उस समय इस नगरी का नाम जकार्ता न होकर तारूम था। राजा पूर्ण वर्मा ने वहा एक नहर का निर्माण कराया था, जिसका नाम गोमती था। चन्द्र भागा नामकी एक नहर वहा पहले से विद्यमान थी, जिसे पूर्ण वर्मा के पिता राजाधिराज ने बनवाया था। गोमती नहर के निर्माण के पूरा हो जाने पर राजा पूर्ण वर्मा ने एक हजार गौव ब्राह्मणो को दक्षिणा मे प्रदान की थी। मैं तारूम नगरी क प्राचीन शिलालेखो के स्मरण मे मग्न था, कि नमस्ते शब्द सुनकर मेरा ध्यान भग हुआ। सामने देखा, तो इण्डोनेशिया के पार्लियामेट के हि दू सदस्य श्री पुण्यात्मज हमारा स्वागत करने के लिये खड थे। भारत से आये इतने विद्वानो को अपने देश मे देखकर उन्होने प्रसन्नता प्रकट की और अगले दिन का कार्यक्रम निधारित कर हम अपने होटल मे चले गये। जकार्ता मे हमने बहुत कुछ दखा पर ६५ एकड के विस्तृत क्षेत्र मे निर्मिन लघु इण्डोनेशिया ने हमे विशेष रूप से आकृष्ट किया। इण्डोनेशिया का निर्माण बहुत से छोट बड द्वीपो से मिल कर हुआ है। इनके निवासियो की सभ्यता, सस्कृति रहन सहन तथा खान पान आदि मे बहुत अन्तर है। लघु इण्डोनेशिया मे विविध द्वीपो की सस्कृति को सजीव रूप से प्रस्तुत किया गया है। जावा, बाली, सुमात्रा कलिमन्थन (बोर्नियो) आदि सभी द्वीपो के लिये उसी शैली के भवन बनाये गये हैं। उन्ही वस्त्रो को धारण किये हुए नर-नारी वहा रखे गये हैं, और उसी प्रकार के भोजन आदि की वहा व्यवस्था की गई है, जैसे कि उन द्वीपो मे यथार्थ मे पाये जाते हैं। उनके प्राकृतिक दृश्य भी वास्तविकता के अनुरूपहैं। इण्डोनेशिया का अवलोकन कर सारे देश का यथार्थस्वरूप आखो के सामने स्पष्ट हो जाता है।

लघु इण्डोनेशिया के समीप ही एक भव्य हिन्दू मन्दिर है। इस सुदूर देश के हिन्दू किस ढग से दैनिक प्रार्थना-उपासना करते हैं, इसे देखने का अवसर हमे इस मन्दिर मे जाकर प्राप्त हुआ। सायकाल का समय था। साठ से अधिक नर-नारी वहा उपस्थित थे। मन्दिर के प्रागण मे एक ऊचे चबूतरे पर सब बैठ हुए थे। हम भी एक ओर बैठ गये। प्रार्थना उपासना प्रारम्भ हुई। ओ३म् भूर्भुव स्व के गायत्री मन्त्र के साथ सन्ध्या के मन्त्रो का उच्चारण प्रारम्भ हुआ। सब उपस्थित नर नारियो ने समवेत स्वर मे वेद के मन्त्रो तथा पुराण महाभारत आदि के श्लोको से प्रार्थना-उपासना की। जकार्ता के हिन्दुओ की सन्ध्या के बाद हम सबने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा विहित विधि से सन्ध्या तथा प्रार्थना मन्त्रो का पाठ किया। कैसा अदभुत दृश्य था। हम इण्डोनेशिया की भाषा नही समभ्क्ते थे और वहा के लोग हिन्दी से अनभिज्ञथे परह मे परस्पर जोडने वाली, हम सबम एकता की भावना उत्पन्न करने वाली वेद शास्त्रो की वे धार्मिक एव सास्कृतिक परम्पराए थी, जिन्हे हमने समान रूप से विरासत मे प्राप्त किया था। ओ३म् के नाम, गायत्री मन्त्र तथा वैदिक सूत्रो व महाभारत के श्लोको ने हमे इस ढग से एक मजबूत सूत्र मे बाध रखा था, कि सैकडो वर्ष बीत जाने पर भी उसके सुदृढ बन्धन में ढील नहीं आयी थी। श्री पुण्यात्मज इस अवसर पर हमारे साथ थे। वे भी अपने देश के हिन्दुओं के पूजा पाठ मे अन्य पण्डितो के समान ही भाग ले रहे थे। पार्लियामेट के सदस्य होने के नाते उनमे अपने उच्च व श्रेष्ठ होने की भावना प्रादुर्भूत नही हुई थी। हमारे स्वागत मे जकार्ता के हिन्दू मन्दिर मे जलपान की भी व्यवस्था की गई थी। हमने इण्डोनेशिया से हिन्दू भाइयों के साथ बैठ कर फल, मिष्टान, चाय, दूध आदि ग्रहण किये। सब कोई यह अनुभव कर रहे थे कि दो सुदूरवर्ती देशो के हिन्दू सैकडो वर्षों के पश्चात् आज फिर मिलकर एक साथ बैठ हैं। धर्म और सस्कृति की उनमे ऐसी एकात्मता है, जिसे न हजारो मीलोकी दूरी शिथिल कर सकी है और न सैकडो वर्षो का अन्तराल।

दो दिन जकार्ता का परिभ्रमणकर हम लोग बोरोबदूर गये। यह मध्य जावा का प्रधान नगर है। बोरोबदूर का विशाल बौद्ध महा-चैत्य उसके समीप ही है। उसकी गिनती ससार के सात आश्चर्यों मे की जाती है, जिसे देखने के लिये अमेरिका, यूरोप, जापान आदि सब देशो से लाखो पर्यटक प्रति वर्ष लोग जकार्ता जाते हैं। इण्डिनेशियो का एक अन्य द्वीप सुमात्रा है। जिसके शैलेन्द्र वर्मा राजा बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। इनकी राजधानी श्री विजय थी। शैलेन्द्र राजा बडे प्रतापी थे। अपनी शक्ति का विस्तार करते हुए आठवी सदी मे उन्होने जावा को भी जीत लिया था। श्री विजय (सुमात्रा) के इस वैभवशाली बौद्ध सम्राटो ने ही जावा मे जोग जकार्ता के समीप बोरोबदूर के महाचैत्य का निर्माण कराया था। यह महाचैत्य नौ विशाल चबूतरो या चक्करो से मिलकर बना है, जिनमे से प्रत्येक ऊपर का चक्कर अपने से नीचे वाले चक्कर की तुलना मे थोडा भीतर की ओर सिमटा हुआ है। नौ चक्करो या चबूतरो मे से निचले छ समकोण चतुर्भुज के रूप मे हैं और ऊपर के शेष तीन चक्कर गोलाकार हैं। सबसे निचजे चबूतरे या चक्कर की लम्बाई ४०० फीट है और सबसे ऊपर वाले की ९० फीट। महाचैत्य के चबूतरो की दीवारो पर रूपावलिया बनाई गई हैं, जिनमे बुद्ध की जीवनी को प्रस्तरो पर उत्कीर्ण किया गया है। मूर्तिकला की दृष्टि से ये रूपा-वलिया अत्यन्त उत्कृष्ट हैं। इस प्रकार जो चित्रावलिया बोरोबदूर के महाचैत्य पर उत्कीर्ण हैं, उन्हें यदि एक साथ एक पक्ति मे लगा दिया जाए तो उनकी लम्बाई साढे तीन मील हो जाएगी। चित्रा वलियो के बीच-बीच मे गवाक्ष बने हैं, जिनमे से प्रत्येक मे ध्यानी बुद्धो की एक-एक मूर्ति प्रतिष्ठापित हैं। (क्रमश)

(पृष्ठ १ का शेष)

राजनीतिक आर्थिक और सामाजिक हित-स्वार्थों से अलग सिख देश भर मे बिखरे हुए हैं। शायद उनके लिए तो हम पर ज्यादतियां राजनैतिक तवे पर सेंके जाने वाली कुछ और रोटियां हो जाएं थी।

वोटों और नोटों को भुनाने की अकाली राजनीति आजादी के पहले की साम्प्रदायिक राजनीति की कोख से जन्मी और लोकतन्त्र में पली पनपी है। यह कहना गलत है कि खालिस्तान का नारा पिछले दो तीन सालों मे उठा। मुसलमानों को मिले पाकिस्तान की तरह सिखो के लिए खालिस्तान पर अंग्रेजो और जिन्ना से बाकयदा बातें हुई हैं जिनके दस्तावेज मौजूद हैं। लेकिन तब भौगोलिक और जनसंख्यीय कारणों से अंग्रेज उसे बना नहीं सकते थे, जिन्ना को वह मंजूर नहीं था और सिख खास पंजाब से निकाले जाने से स्तब्ध हतप्रभ और शरणार्थी थे। वे अपनी मर्जी से भारत मे रहे लेकिन बाद मे अकाली नेताओ ने कुछ ऐसे बरतना शुरू किया जैसे उन्होंने भारत पर ऐहसान किया हो। १९७३ मे पारित आनन्दपुर साहिब प्रस्ताव विकेन्द्रीकरण और राज्यों की स्वायत्तता की राजनैतिक दस्तावेज नहीं है। अगर होता तो पश्चिमी बंगाल मे राज करती मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी और तमिलनाडु मे अलग देश की मांग से निकली द्रविड मुनेत्र कडगम जनता पार्टी के राज में उस पर जरूर विचार करती क्योंकि ये दोनों पार्टियां राज्यों को स्वायत्त बनाना चाहती हैं। लेकिन अकाली मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल की कोशिशों के बावजूद उस पर बहस करने के लिए कोई तैयार नहीं हुआ। आनन्दपुर प्रस्ताव संघीय बनाने का आवाहन नहीं खालसा का वर्चस्व चाहने वाला मसविदा है। वह राज्य को स्वायत्त नहीं धार्मिक बनाना चाहता है इसीलिए उसे कोई दूसरी राजनैतिक पार्टी विचार के हाथो से नहीं उठाती।

आनन्दपुर साहिब प्रस्ताव, पंजाब मे हरित क्रांति से आई विपुलता के बाद आया। उसका इरादा पंजाब की विपुलता का देश मे वितरण रोकना और उस पर अकाली कब्जा कायम करना था। बेशक जाट सिख किसानो की मेहनत से हरित क्रांति हुई लेकिन क्या देश के साधनो और विकास की नीति के बिना वह हो जाती ? हरित क्रांति के साधन पंजाब के नहीं पूरे देश के थे। लेकिन अकालियों ने ऐसा रवैया अपनाया जैसे उनकी निजी संपत्ति छीन कर कमलो मे बांटी जा रही हो। धीरे धीरे एक ऐसा वातावरण पंजाब मे बना कि जो सिखो का है वह तो धरोहर और योग्यता से उनका है ही लेकिन जो वे चाह रहे हैं उसे भी हंसी खुशी न देना उनके साथ अन्याय है। यानि 'चित भी मेरी, पट भी मेरी और बेटा मेरे बाप का है।' संत भिंडरावाले इसी रवैए को अपनाकर हीरो बने। उनकी उद्दंडता और दंभ ने सिखों को बाकी हिन्दुस्तानियों से अपने को श्रेष्ठ मानने को प्रेरित किया। जब मामला यह था कि एक तरफ तो अकाली सिखो के खिलाफ हो रहे अत्याचारों और अन्याय पर छाती पीटते थे और दूसरी तरफ संत भिंडरावाले सिखों को चुनिंदा कौम बताकर दीमक की बन्दूक के जरिए देश को कपकपाना चाहते थे।

ये दोनों रवैए साथ नहीं जा सकते थे और इसीलिए खुशवन्त सिंह सरीखे इतिहासकार को भी मानना पड़ा कि सिखों के साथ आजाद भारत मे न अत्याचार हुआ है न भेदभाव बल्कि वे जरा ज्यादा मिले प्यार-सम्मान से बिगड़ गये हैं। खुद खुशवन्त सिंह अगर स्वर्ण मन्दिर मे सैनिक कार्रवाई से विवेक खो बैठे तो इसलिए कि वे भी उसे राष्ट्र से ऊपर मानते थे और वहां से सन्त भिंडरावाले और उनके मरजीवड़े जो भी कर रहे थे उसे इतना सर्व विरुद्ध नहीं मानते थे कि कार्रवाई के लिए कमर कस के तैयार हों। देश भर के हिन्दुओं और गैर हिन्दू भारतीयों को जिस रवैए ने सबसे ज्यादा परेशान किया वह यही था कि सन्त भिंडरावाले और मरजीवड़े स्वर्णमन्दिर का चाहे जो करें अकाली दल, शिरोमणि कमेटी और प्रमुख ग्रन्थी कुछ नहीं करते और सिख समाज भी चुप रहता। लेकिन वहां सैनिक कार्रवाई होते ही—वह दिल्ली की 'हिन्दू' केन्द्र सरकार के हुकम पर 'हिन्दू सेना का 'सिख कौम पर हमला' हो जाता है। इससे भड़क कर सिख रंगरूट अगर विद्रोह करें तो उन्हें माफ किया जाना चाहिए, राष्ट्रपति और प्रधान मन्त्री को माफी मांगनी चाहिए और बदले में सिख खालिस्तान की मांग भी उठाए तो उसे वाजिब माना जाना चाहिए। नतीजे के डर से दूर सिखों को इन्दिरा [illegible]

लोक लाज से डरे काफी सिखो ने राहत की सांस ली। खुद सिखों का इतिहास गवाह है कि गुरुओ और सिखों से बदला लेने वालो की तलवार से सिक्खी नहीं मिटी। फिर क्यो इन्दिरा गांधी की हत्या को एक अप्रिय तथ्य की तरह नजरअंदाज करने की कोशिश हो रही है और क्यो वह सिखो के हार्दिक शोक का कारण नहीं बनती ? अगर इंदिरा गांधी की हत्या आत्म निरीक्षण के लिये सिख नेताओ को प्रेरित नहीं करती और उनमें पछतावे और प्रायश्चित की भावना नहीं जगाती तो भारत ही नहीं सभ्य संसार मे उनके लिए क्या जगह होगी ? मैं जानता हूं कि इन दलीलो और अपेक्षाओं को हिन्दू सम्प्रदायवादी कहा जाएगा। लेकिन धर्म निरपेक्षता अगर हमारे लिये फैशन नहीं है और सर्व धर्म समभाव हमारी एक मूलभूत आस्था है तो ऐसे असुविधाजनक लेकिन ईमानदार सवाल पूछे जाने चाहिये।

लेकिन ऐसा ही सवाल मैं राष्ट्रप्रेमी हिन्दुओ से पूछना चाहता हूं। पागल हिंसा से सबक सिखाये जा सकते हैं यह पाठ उनके इतिहास संस्कृति और धर्म मे कहां है ? कौरव पांडवो ने एक महाभारत लड़कर सर्वनाश कर लिया। कुरुक्षेत्र के धर्मक्षेत्र मे जीतकर खड़े युधिष्ठिर भी कितने पराजित और अकेले थे। और जिस कृष्ण ने जाति का जहर निकालने के लिये महाभारत करवाया उसी के यादव लोगो ने क्या सबक सीखा ? क्यो वे आपस मे लड़कर खत्म हो गये ? क्यों कृष्ण की रानियो को अर्जुन जैसा योद्धा डाकुओ से नहीं बचा पाया और क्यो अपने वंश का नाश देखने के बाद ही कृष्ण एक साधारण बहेलिये के बाण से मरे ? और क्यो युधिष्ठिर को छोड़कर द्रौपदी समेत सारे पांडव गल गए ? ईर्ष्या और प्रतिहिंसा दुधारी तलवारें हैं। इन्हे दोनों हाथो से लेकर जो बाहर के लोगो से लड़ते हैं वे आखिर अपने ही एक हाथ से दूसरा हाथ काट लेते हैं। क्या हिंदू अपने दोनो हाथ काटकर धड़ की तरह पड़ रहना चाहते हैं ?

इकतीस अक्तूबर से चार नवम्बर तक पाशविक से भी गई गुजरी जो पागल हिंसा हमने देखी उसमे क्या हिंदुओ की छाती कुछ ठंडी नहीं हुई ? और जिस हद तक वे समझते हैं कि सबक सिखाना जरूरी था क्या उतना ही बेकसूर खून उनके हाथो पर नहीं लगा है ? क्या वे इंदिरा गांधी के खून और सिर पर सवार हुए पागल पन से मुक्त होकर अपने पापा का प्रायश्चित करने को तैयार हैं ? अपने धार्मिक उग्रवाद और आतंकवाद का समाधान सिख अगर नहीं निकाल पाएंगे तो उसकी कीमत उन्हे खुद चुकानी होगी। लेकिन अपनी प्रतिहिंसा की आग से खुद हिंदू कैसे बचेंगे ? महीप सिंह की भाभी के यक्ष प्रश्न का उत्तर उन्हे देना है। अगर सिखो का इस देश मे भविष्य नहीं है तो आज जो भारत हमने बनाया है उसका भी भविष्य नहीं है। और अगर सिख भारत मे भरोसा नहीं पैदा कर सकते तो पूरी दुनिया तो क्या खालिस्तान मे भी कोई बेअन्त और सतवन्त वही करेंगे जो दिल्ली मे उन्होने इन्दिरा गांधी के साथ किया। आपसी भरोसा आदमी का आदमी मे होता है सिखो का हिन्दुओ मे या हिन्दुओ का मुसलमानो मे या मुसलमानो का ईसाइयो मे नहीं होता। अगर होता तो धार्मिक राज्यो मे हिंसा का नाम नहीं होता और धर्म निरपेक्ष राज्य की कल्पना भी नहीं होती। जिस युधिष्ठिर ने यक्ष प्रश्नो के उत्तर दिये उसका धर्म ईर्ष्या और प्रतिहिंसा पर नहीं आदमी मे आदमी के भरोसे पर टिका था। —प्रभाष जोशी

(जनसत्ता २२ ११ ८४)

आर्य समाज बरमिंघम (इंग्लैंड)

स्वर्गीय आर्यवीर हरिकृष्ण दत्ता

"१४ सितम्बर को श्री दत्ता जी पीछे से आती हुई मोटर की लपेट में आ गये तो उन्हें गहरी चोटें लगीं और वे बेहोश हो गये। उन्हें तत्काल अस्पताल मे प्रविष्ट करवाया गया। उनकी पूरी चिकित्सा व सेवा सुश्रूषा की गई किन्तु उनकी हालत नही सुधरी और २४ सितम्बर को ५४ वर्ष की आयु मे उनका स्वर्गवास हो गया।"

श्री दत्ता जी सफल गृहस्थी निष्काम सेवक, परिश्रमी और सच्चरित थे। उनके घर नं० ७३ ग्रोव लेन (हैण्ड्सवर्थ बरमिंघम, इंग्लैंड) के द्वार अतिथियो, उपदेशको, साधुओ और सन्यासियों के लिये सदा खुले रहते थे। जब कभी मासिक सत्संग के लिये स्कूल का कमरा सुलभ न होता तो उनके घर पर सत्संग लगता। अपने जीवन काल मे वे सच्चे आर्य वीर की भांति आर्य समाज की बहुमुखी सेवा करते रहे। कुर्सी का मोह तो उन्हे छू तक न गया था। पिछले दिनों उपप्रधान के पद के लिये कोई और सज्जन तय्यार न हुआ तो उन्हें अनिच्छा पूर्वक यह स्वीकार करना पड़ा। धनसंग्रह के लिये झोली फैली फैलानी हो पिकनिक का प्रबन्ध करना हो गायत्री महायज्ञ का आयोजन करना हो, ऋषि लंगर की व्यवस्था करनी हो, पंडाल सजाना हो या किसी दीन दुखी की सहायता करनी हो तो उन्हें कहा जाता तो ऐसे लगता जैसे वे इसके लिए पहले से ही तय्यार है। उनकी भजनों की कापी जेब मे रहती थी। उत्सवो और सत्संगों मे उनके भजनो या कविताओं को जनता मन्त्र मुग्ध होकर सुनती थी।

वैदिक संस्कार करवाने मे पूरा सहयोग देते थे। जो दान दक्षिणा मिलती वह आर्य समाज को भेंट कर देते। वे वैदिक सभ्यता, संस्कृति व हिन्दी भाषा के पुजारी थे। आर्य समाज की ओर से जब हिन्दी श्रेणियां प्रारम्भ की गईं तो आवश्यकता पड़ने पर उनके परिवार के सभी सदस्य बच्चों को हिन्दी पढाते। स्थानीय हिन्दी साप्ताहिक "अमर दीप" उनकी मेज पर पड़ा होता था।

"मातृ देवो भव" की शिक्षा का उन्होंने अक्षरशः पालन किया। अपनी वृद्धा माता जी को स्वयं भारत से ले से आये यहां मां-बेटा और सारा परिवार मासिक सत्संगों में नियम पूर्वक उपस्थित होता तो हवन से शान्ति-पाठ तक के सारे कार्यक्रम में उत्साह से भाग लेता। दत्ता जी की नम्रता, सेवाभाव, तथा बड़ों का आदर मान इन सब गुणों का प्रभाव उनकी सभी सन्तानों पर अपनी छाप छोड़ गया है। प्रसिद्ध आर्य विद्वान् श्री गोवर्धनलाल जी दत्त श्री हरिकृष्ण जी के बुजुर्गों में से एक थे। दत्त परिवार के सद्गुण उन्हें उनसे विरासत मे मिले थे।

श्री दत्ता जी के निधन से उनके परिवार तथा आर्य समाज को असह्य क्षति पहुंची है। किन्तु परमात्मा की न्याय व्यवस्था के सामने मस्तक झुकाना ही पड़ता है। हम दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिये तथा उनके शोक सन्तप्त परिवार के साथ हार्दिक सहानुभूति प्रकट करते हैं। प्रभु दत्त परिवार को इस असह्य दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—धर्मेन्द्रनाथ वेदालंकार

तुम्हें प्रणाम

दीन दलित की तुम थीं माता,
शोषित-उत्पीड़ित की त्राता,
आंसु बहा रही है अविकल-
जो तुमकी, अब भारतमाता।

गौरवमण्डित हुआ स्वदेश,
प्रगति पथों पर बढ़ा विशेष,
अपराजेय शक्ति साहस से-
हुआ प्रतिष्ठित भारत देश।

दृढ़ संकल्प अजेय महान,
जाग उठा भारत अभिमान।
राष्ट्र एकता की वेदी पर-
दिया पवित्र अमर बलिदान।

शक्ति पुञ्ज हे! अजित अवाम,
ज्योति पुञ्ज! निर्भय निष्काम,
भारत की हे भाग्य विधाते-
देवि 'इन्दिरा' तुम्हें प्रणाम॥

—राधेश्याम आर्य

धार्मिक सिद्धांत हिन्दी की परीक्षाएं

धर्म के मर्म और धार्मिक सिद्धांतों को समझने, धर्म और धार्मिक सिद्धांतों के विषय में भ्रांतियों से बचने तथा अपनी प्रिय सन्तानों को बचाने व वर्तमान भ्रष्ट वातावरण में नैतिक मूल्यों की रक्षा के लिये भारतीय सिद्धांत परिषद नजीबाबाद (बिजनौर) द्वारा संचालित सिद्धांत प्रवेश, सिद्धांत कोविद, सिद्धांत शास्त्री तथा सिद्धांत वाचस्पति परीक्षाओं के केन्द्र स्थापित कीजिए तथा निम्न पते पर नियमावली मंगाइए। —विद्यारत्न आर्य मन्त्री

भारतीय सिद्धांत परिषद नजीबाबाद (बिजनौर) उ०प्र०

प्रभु से प्रार्थना करें

परोपकारिणी यज्ञ समिति दिल्ली के सरक्षक आर्य युवक परिषद् दिल्ली (रजि०) के प्रधान आर्य अनाथालय दरियागज के मन्त्री सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड के डायरेक्टर आर्य जगत् के वयोवृद्ध नेता श्री प० देवव्रत धर्मेन्दु जी आर्योपदेशक जो आजीवन आर्य जगत् की सेवा में सर्वप्रकारेण लगे रहे हैं काफी समय से अस्वस्थ है। इस बीमारी के कारण कमजोर भी अत्यधिक हो गए हैं।

श्री धर्मेन्दु जी का उपचार अब उनके निवास स्थान पर ही किया जा रहा है। आप से निवेदन है कि श्री धर्मेन्दु जी के पूर्ण स्वास्थ्य एव दीर्घायु के लिए अपनी आर्यसमाज, स्त्री समाज, आर्य कुमार सभाओ मे प्रभु से प्रार्थना करे कि श्री "धर्मेन्दु" जी पूर्ण स्वस्थ होकर आर्य समाज तथा समाज सेवी सस्थाओ को अपना पूर्ण नेतृत्व पहले की भान्ति प्रदान करते रहे।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

साहित्य-समीक्षा

यजुर्वेद का उर्दू भाष्य

अनुवादक—श्री आशुराम आर्य
१५९४ से० ७ सी० चडीगढ

श्रीयुत वीरेन्द्र जी प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की सम्मति

महर्षि के पश्चात कई लोगो ने समय समय पर वेदो के भाष्य तैयार करके प्रकाशित किएहैं। इसी सम्बन्ध मे अब एक नई कोशिश भी हुई है। चण्डीगढ़ के प्रसिद्ध आर्य समाजी विद्वान् और ऋषि दयानन्द के परमभक्त श्री पडित आशुराम आर्य ने यजुर्वेद के एक भाग का उर्दू अनुवाद किया है। हिन्दी और अ ग्रेजी मे तो पहले ही उसके अनुवाद हो चुके है। कुछ पुराने जमाने के लोग उर्दू मे आसानी से पढ सकते हैं और समझ सकते हैं। पडित आशुराम के इस अनुवाद की एक विशेषता यह है कि इसका आधार महर्षि दयानन्द का भाष्य है। पण्डित आशुराम ने अपनी ओर से कोई नई चीज पेश नही की। महर्षि दयानन्द के भाष्य को उर्दू का लिबास पहना दिया गया है। पण्डित आशुराम वर्षों से वेद प्रचार कर रहे हैं। उन्होने अपना जीवन इसको समर्पित कर रखा है। इसलिए आयुर्वेद का उर्दू अनुवाद उनसे बेहतर और कोई नही कर सकता था।

पण्डित जी का यह प्रयास नया नही है। जो लोग उर्दू के माध्यम से कुछ ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिए यह आसान हो जायेगा। पण्डित आशुराम जी ने अपने धर्म और समाज की बहुत बडी सेवा की है जो एक नई भाषा मे वेद प्रस्तुत कर दिए है। कुरान और बाइबिल तो विश्व की लगभग सभी भाषाओ मे प्रकाशित हो चुके है। वेद बहुत कम भाषाओं में इस समय तक प्रकाशित हुए हैं। पण्डित आशुराम ने यजुर्वेद का उर्दू अनुवाद प्रकाशित करके एक बहुत बडी कमी को पूरा कर दिया है। आशा करनी चाहिए कि वह शेष वेद भी इसी तरह शीघ्र प्रकाशित करने का प्रयास करेगे। जो कुछ उन्होंने अब किया है उसके लिए मैं उन्हेंबधाई देता हू और यह आशा करता हू कि उनके द्वारा वेदो का प्रकाश वहां भी पहुच जायेगा जहा इस समय तक अन्धेराहै।

गुजरात प्रान्तीय आर्य वीर दलके संचालक

श्री रमण भाई का प्रान्त व्यापी भ्रमण

भावसार। सर्वप्रथम गुजरात प्रान्तीय आर्य वीर दल के सचालक को स्थान स्थान पर स्वागत तथा कार्यक्रमो से गुजरना पडा आनन्द मे आर्य वीर दल स्थापनार्थ आगमन के आर्य वीरो को उत्तरदायित्व सौंपा गया। आणन्द से लौटते समय आर्य समाज काकरिया अहमदाबाद मे योग शिविर मे भाग लिया धमनपुरा आर्य समाज की आर्य वीर दल शाखा शानदार ढग से चल रही है उसका निरीक्षण किया। वहा बाबू भाई शाखा नायक लगन से कार्य कर रहे हैं।

बापुनगर आर्य समाज के अन्दर स्थान का अभाव है ऋषि शाखा नायक सुभाष और मनोज कार्य कर रहे हैं उत्साही हैं।

चादोलिया आर्य समाज ने आर्य वीर दल का कार्य भार शाखा नायक अजयसिह के कन्धो पर है। उत्साही वीर है कार्य बढ़ेगा ऐसा विश्वास है। सेजपुर आर्य समाज के लोगो को भी दल शाखा के लिये उत्साहित किया। श्री कमल कुमार ने कार्य करने का आश्वासन दिया।

सभी स्थानो पर वीर पर्व मनाने के लिए उत्साहवर्द्धन किया। आर्यजनो ने मेरे इस भ्रमण का भारी स्वागत किया और भावी योजनाए भी बनाई गई।

—मन्त्री

सात वर्षीय अ० भा० गोरक्षा गोसेवा प्रचार पदयात्रा

(१९८१ से १९८७ तक जन जागरण अभियान)

भारत मे महर्षि दयानन्द सरस्वती, महात्मा गांधी, सन्त विनोबा जी इन महानुभावो की अनन्त इच्छा थी, कृषि प्रधान, धर्म प्रधान, सस्कृति प्रधान देश मे गाय बैल जैसे अनन्य उपयोगी उपकारी जीव की हत्या न हो। इसके लिए सरकार की तरफ से सम्पूर्ण गोहत्या बन्दी कानून बनाना चाहिए। स्वस्थ जीवन, उत्तम खाद उर्जा का अखण्ड स्रोत, गोरक्षा मे निहित है। ७५ प्रतिशत भारत मे किसान हैं। किसान की सम्पति गाय बैल हैं। गोहत्या का सीधा अर्थ होगा धर्म सस्कृति व किसानो की हत्या।

'साच बराबर तप नही, झूठ बराबर पाप

भारत सरकार ने सम्पूर्ण गोहत्या बन्दी के लिए दो बार वचन दिया पर अभी पूरा करने मे समर्थ नही हो पायी, इसे याद दिलाने के लिए देवनार (बम्बई) मे रोज ढाई साल से और दिल्ली मे डेढ साल से प्रति सोमवार को सत्याग्रह हो रहा है। इस पवित्र यज्ञ मे पवित्र मन से हम सभी को भाग लेना चाहिए। शराब, मासाहार, मादक द्रव्यो, मुलायम चमडे का त्याग करना होगा। हर घर एक एक गाय पालें।

इसी उद्देश्य को लेकर सन्त विनोबा जी की प्रेरणा से योगिराज देवराहा बाबा जी के आशीर्वाद से तथा अखिल भारत कृषि गोसेवा सघ वर्धा के सहयोग से १८ अप्रैल १९८१ को देहरादून (उ० प्र०) से उत्तर-प्रदेश के श्री प्रकाशचन्द्र जोशी, कर्नाटकके श्री सिद्धराम गुरुजी सात साल की पदयात्रा पर निकले हैं। हरियाणा से सहयात्री श्री भीमसिंह, श्री हरलाल साहू और सुरेश कुमार वत्स हैं।

अभी तक उ० प्र०, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, पांडिचेरी, दिल्ली, हरियाणा हिमाचल प्रदेश, १० दिन पजाब, चण्डीगढ होकर पुन हरियाणा में घूम रहे हैं। अब दिल्ली प्रदेश की पदयात्रा करेंगे। अभी तक २०००० हजार कि० मी० की पदयात्रा हुई।

—प्रकाशचन्द्र जोशी

आर्य वीर दल की बैठक

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश की एक अत्यावश्यक बैठक दिनांक ९ दिसम्बर १९८४ रविवार को प्रात ११ बजे आर्य समाज चूना मण्डी पहाडगंज, नई दिल्ली-५५ मे होगी। सभी आर्य बन्धुओ से विनम्र अनुरोध है कि समय पर पधार कर आर्य वीरो का उत्साह बढावें। प्रत्येक आर्य समाज के प्रधानों तथा मन्त्रियो से विशेष प्रार्थना है कि निश्चित समय पर अवश्य पधारें तथा अपनी आर्य समाज से कम से कम दो आर्य वीरो को साथ लायें।

—श्याम सुन्दर बिरमानी, मन्त्री

श्रीमती इन्दिरा गांधी की शहादत पर आर्य समाजों एव विविध संस्थानों के शोक प्रस्ताव

आर्य समाज असराना—मैनपुरी आर्य समाज सासनी द्वार हाथरस आर्य उपप्रतिनिधि सभा कानपुर सर्वखाप सर्वजातीय पचायत बेरी (रोहतक), विश्व हिन्दू परिषद बम्बई, आर्य समाज रामपुर मनिहारान (सहारनपुर) ने श्रीमती इन्दिरा गांधी की नृशस हत्या पर रोष क्षोभ प्रकट करते हुए हत्यारों के कायरता एव विश्वासघात पूर्ण कुकृत्य की घोर निन्दा की है तथा षडयन्त्र का ठीक २ पता लगाकर अपराधियो को कडे से कडा दण्ड देने की माग की है।

आर्य समाज सासनी द्वार हाथरस ने प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी पर जो महान उत्तरदायित्व आ पडा है उसे सफलतापूर्वक वहन करने की क्षमता प्रदान करने की भी प्रभु से प्रार्थना की है।

सार्वदेशिक प्रेस दरियागंज नई दिल्ली में मुद्रित तथा रघुनाथ प्रसाद पाठक मुद्रक और प्रकाशक के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द भवन, नई दिल्ली-१ से प्रकाशित।